भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P RTK

मुद्रित संवत १.९६,०८,१३,०९०



ओ३म्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालङ्कार, एम. ए.   पौष १४ २०४६ वि०

वर्ष १७   अङ्क ७   ७ जनवरी, १९९०   वार्षिक शुल्क २५)   आजीवन शुल्क २५१)   विदेश में ८ पौंड)   एक प्रति ६० पै०

वेद मार्ग पर बढ़ते चरण

—प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) १३६०२१

अपने गुरु ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी दण्डी की आज्ञा पर जब महर्षि दयानन्द जी सरस्वती प्रचार क्षेत्र में आए तो भारतीय समाज में पुराण, रामायण, महाभारत की ही चर्चा थी। दो चार विद्वान् ही कभी कभार उपनिषदों या वेदान्त की बात करते थे। प्रायः सर्वत्र यही विश्वास था कि शंखासुर वेदों को पाताल लोक ले गया है। वेदों के पढ़ने-पढ़ाने की बात तो क्या, वेद के दर्शन ही दुर्लभ थे। इसीलिए सर्वत्र कर्मकाण्ड में भी इधर उधर के जैसे-कैसे कल्पित मन्त्र या श्लोक प्रचलित थे। कुछ विशेष विद्वान् ही कर्मकाण्ड के कुछ वेदमन्त्रों से परिचित थे।

महर्षि ने वेदों के प्रचार के लिए अत्यधिक प्रयास किया। गुरु-मन्त्र के रूप में गायत्री मन्त्र तभी तो आज यत्र-तत्र-सर्वत्र गूंजने लगा है।

पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कारविधि, हवन मन्त्र की पुस्तकों के माध्यम से कर्मकाण्ड के अन्दर वेदमन्त्रों का प्रयोग साधारण जन भी करने लगे हैं, क्योंकि इससे पूर्व अनेकों के लिए वेदों का उच्चारण और श्रवण भी दण्डपूर्वक प्रतिबन्धित था। वैदिक यन्त्रालय, अजमेर से महर्षि ने वेदसंहिता, वेदभाष्य, वैदिक वाङ्मय के प्रकाशन की भी व्यवस्था की।

वेदार्थ को जन-जन तक पहुंचाने के लिए महर्षि ने स्वयं जनता में वेदमन्त्रों की व्याख्या प्रारम्भ की और वेदभाष्य का क्रमशः प्रकाशन भी प्रारम्भ किया। इस कार्य को सामूहिक एवं स्थायी रूप देने के लिए महर्षि ने १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की। प्रारम्भिक काल से आज तक आर्यसमाज ने वेद सम्बन्धी प्रकाशन एवं प्रचार के लिए काफी कार्य किया। चारों वेदों का भाषाभाष्य हजारों की संख्या में (दो संस्करण) आज सर्वत्र उपलब्ध हैं। वेदों के चुने हुए मन्त्रों की व्याख्या के रूप में बीसों पुस्तकें भिन्न-भिन्न लेखकों की उपलब्ध हैं। महर्षि दयानन्द के पश्चात् आज अनेक अन्य विद्वानों के वेदभाष्य सामने आ चुके हैं। शास्त्री, आचार्य और संस्कृत एम. ए. के पाठ्यक्रम में वेद के कुछ सूक्त सभी विश्वविद्यालयों में निर्धारित हैं। अनेक आर्यसमाजें प्रतिवर्ष वेदसप्ताह का विशेष आयोजन करती हैं और अनेक पत्रिकायें वेद-विशेषांक प्रकाशित करती हैं।

वेदप्रचार के पीछे महर्षि की मूलभावना यही थी कि—'कहने, सुनने, सुनाने, पढ़ने, पढ़ाने का फल यही है कि (जो) वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित धर्म का आचरण करना, इसलिए धर्माचार में सदा युक्त रहें ॥१॥ क्योंकि जो धर्माचरण से रहित है, वह वेद प्रतिपादित धर्मजन्य सुखरूप फल को प्राप्त नहीं हो सकता और जो विद्या पढ़ के धर्माचरण करता है वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है ॥२॥

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च।
तस्मादस्मिन् सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः ॥१॥

आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते।
आचारेण तु संयुक्त सम्पूर्णफलभाग्भवेत् ॥२॥

(मनुस्मृति १, १०८, १०९)

सत्यार्थ प्रकाश समु ३, पृष्ठ ५२ (वेदानन्द सम्पादित)

निःसन्देह महर्षि के आगमन काल की अपेक्षा आज वेद का प्रकाशन तथा प्रचार अपने बढ़ते चरणों पर है। पुनरपि हमारी स्थिति हवन मन्त्र के पाठ तक ही सीमित होकर रह गई है। आचरण की बात तो दूर अर्थज्ञान की ओर भी विशेष प्रवृत्ति नहीं। यह ठीक है कि पुराने आर्य बन्धु अधिकतर उर्दू आदि भाषाओं के ज्ञाता थे। कुछ ने वेद के प्रति श्रद्धा रखते हुए देवनागरी लिपि सीखी और कुछ ने अपनी परिचित लिपि में ही वेदमन्त्रों का रूपान्तरण करा लिया और वेदपाठ करने का यथाशक्ति प्रयास किया।

आज पहले की अपेक्षा हिन्दी-संस्कृत या देवनागरी लिपि का बहुत अधिक प्रसार है। अतः वेदमन्त्रों के पाठ में सरलता रहती है। हां, शुद्धता और अर्थज्ञान तो किसी से सीखने पर ही आ सकता है। आर्यसमाज के क्षेत्र में वेदभाष्य, वेदव्याख्या, हवनमन्त्र की अनेक पुस्तकें प्रायः छपती रहती हैं। यह कार्य अधिकतर व्यक्तिगत स्तर पर हो रहा है सामूहिक रूप में कम है। कोई विरली ही ऐसी आर्य-प्रतिनिधि सभा होगी, जिसने प्रचारकों की तरह कोई लेखक भी रखा हुआ हो। ऐसा क्यों? जब यह प्रश्न उभरता है, तो एक समाधान यह सामने आता है कि हम यह समझते हैं, यह तो स्वतः हो जाएगा। इसके लिए किसी विशेष व्यवस्था या एतदर्थ साधना की जरूरत नहीं।

वस्तुतः आज की परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में बहुत कम लोग ही इस ओर ध्यान देते हैं। अधिकतर के पास इसके लिए समय, रुचि ही नहीं है। हां, यह तो स्पष्ट बात है कि आज पहले की अपेक्षा वेद पढ़ने की ओर रुचि कम हो रही है। इस रुचि के कम होने के अनेक कारण हैं। जैसे कि—पहली बात तो यह है कि आर्थिक स्थितिवशात प्रत्येक व्यक्ति को अधिक से अधिक समय धन कमाने के लिए कारोबार को देना होता है, क्योंकि आए दिन जीवन का स्तर उठ रहा है।

दूसरी बात यह है कि वेद पढ़ने की योग्यता बहुत कम में है, वे संस्कृत नहीं जानते या बहुत थोड़ी जानते हैं। उस पर भी तीसरी बात यह है कि वेद का स्वरूप, वर्णनशैली सरल-स्पष्ट नहीं। अर्थों में बहुत ही खींचतान है। अतः वेद का मार्ग (बोध) इतना सपाट नहीं है कि प्रत्येक सरलता से समझ ले।

इस पर पुनः प्रश्न उभरता है कि आखिर ऐसी स्थिति कब तक बनी रहेगी? हां, नेताओं का उत्तर तो हो सकता है कि, जब तक निभे तब तक ही सही' पर यह उत्तर वेदप्रेमियों का नहीं कहा जा

(शेष पृष्ठ ४ पर)

अश्वमेध यज्ञ का स्वरूप

(गतांक से आगे) —सुखदेव शास्त्री

अग्नाधेयमथो दीक्षा काम प्रच्छन्दसा सह ।
उत्सन्नायज्ञाः सत्राण्युच्छिष्टेऽधि समाहिताः ।।८।।

अर्थ—(अग्नाधेयम) अग्न्याधान=अग्नि की यज्ञ में स्थापना (अथ) और, (दीक्षा) नियम पालन का व्रत, (छन्दसा सह) वेद के साथ (कामप्रः) कामनाएं पूर्ण करने वाला व्यवहार, (उत्सन्ना) ऊंचे चढे हुए (यज्ञाः) यज्ञ, पूजनीय व्यवहार, और (सत्राणि) बैठके, (उच्छिष्टे) उस शेष में, (अधि) अधिकार पूर्वक, (समाहिता) एकत्र किए गए हैं।

अग्निहोत्रं च श्रद्धाच वषट्कारो व्रतं तपः ।
दक्षिणेष्टं पूर्तं चोच्छिष्टेधि समाहिताः ।।९।।

अर्थ—(अग्निहोत्रम्) अग्निहोत्र - अग्नि में हवन, (च) और, श्रद्धा भक्ति, च और (वषट्कारः दानकर्म, (व्रतम्) व्रतनियम, तपः तप, चित्त की एकाग्रता (दक्षिणा) प्रतिष्ठा, (इष्टम्) वेदाध्ययन, अतिथि सेवा आदि (च) और (पूर्तम्) अन्नदानादि पुण्यकर्म, (उच्छिष्टे) उस शेष परमात्मा में, (अधि) अधिकार पूर्वक, (समाहिताः) एकत्र किए गए हैं।

चतुर्होतार आप्रियश्चातुर्मास्यानिनीविदः ।

यह मन्त्र दसवां न होकर उन्नीसवे मन्त्र का प्रथम अर्ध चरण (चतुरहोतारः) चार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्णो से ग्राह्य व्यवहार, (चातुर्मास्यानि) चार महीनों मे सिद्ध होने वाले यज्ञादिकर्म (नीविद) निश्चित विद्याएं, यज्ञ श्रेष्ठ व्यवहार, लेने देने योग्य वेदवाचाएं, प्राणियो के प्रबन्ध तथा सब यज्ञादि इष्टक्रियाएं परमात्मा के ही अधीन स्थित है।

इन मन्त्रों में राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, अश्वमेव अग्निहोत्र अग्न्याधान, और चातुर्मास्य यज्ञों का वर्णन आता है। अथर्व वेद का गोपथ ब्राह्मण इन यज्ञों का जो क्रम बतलाता है, उस क्रम में अग्न्याधान, पूर्णाहुति अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रहायण नवसस्येष्टि, चातुर्मास्य, पशुबन्ध, अग्निष्टोम, राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध दक्षिणा वाले, बहुत दक्षिणा वाले और असख्य दक्षिणा वाले यज्ञों का वर्णन है। गोपथ ब्राह्मण में लिखा है कि—

अथातो यज्ञ क्रमाः। अग्न्याधेयमग्न्याधेयात् पूर्णाहुतिः—पूर्णाहुतेरग्निहोत्रमग्निहोत्रात् दर्शपूर्णमासौ दर्शपूर्णमासाभ्यामाग्रहायण मा ग्रहायणाच्चातुर्मास्यानि चातुर्मासेभ्यः पशुबन्ध पशुबन्धादग्निष्टोम, अग्निष्टोमात् राजसूयो राजसूयात् वाजपेय. वाजपेयात् अश्वमेध अश्वमेधात् पुरुषमेधः पुरुषमेधात् सर्वमेधः सर्वमेधात् दक्षिणावन्तो दक्षिणावद्भ्योऽदक्षिणा, अदक्षिणा सहस्रदक्षिणे प्रत्यतिष्ठन्ते वा एते यज्ञक्रमाः स य एवमेतान् यज्ञक्रमान् वेद यज्ञे स आत्मा स लोको भूत्वा देवानप्येतीति ब्राह्मणम् ।।गोपथ १।५ ७।।

इन यज्ञ क्रमों को जो जानता है, वह यज्ञो के साथ एक आत्मा होकर और एक निवास होकर दिव्य गुणो को पाता है।

इन यज्ञों का विवरण इस प्रकार है —

(क) गोपथ ब्राह्मण (२।५।८) में

अग्नीन् आधाय पूर्णाहुत्यायजेत् ।

अर्थात् पूर्णाहुतिस्य त अग्न्याधान करे, यह अग्न्याधान है। अग्निहोत्रम् ।

(ख) शतपथ ब्राह्मण में (२।२।४ १७)

अग्नये एव सायं सूर्याय प्रातः एव हवे अग्निहोत्रं जुहोति।

अर्थात् अग्नि के लिए सन्ध्यासमय और सूर्य के लिए प्रात.काल जो हवन किया जाता है। वह अग्निहोत्र है।

(ग) दर्शपूर्णमास (तैत्तिरीय सं. (२।२।५)

सुवर्गाय हि वैलोकाय दर्शपूर्णमासौ इज्येते।

अर्थात् अमावस्या और पूर्णिमा के दिन के हवन को दर्शपूर्णमास कहते हैं।

(घ) चातुर्मास्य गोपथ ब्राह्मण (३।१।११)

फाल्गुन्यां पौर्णमास्यां चातुर्मास्यानि प्रयुञ्जीत मुखं वा एतत् संवत्सरस्य यत् फाल्गुनी पौर्णमासी।

अर्थात् फाल्गुनी पौर्णमासी आषाढी पौर्णमासी और कार्तिकी पौर्णमासी जो यज्ञ किए जाते हैं, वे चातुर्मास्य कहलाते हैं।

(ङ) आग्रहायण वा नव सस्येष्टि—

उत्तरायण दक्षिणायन के प्रारम्भ में जो यज्ञ होते हैं, वे आग्रहायण या नव सस्येष्टि कहलाते हैं।

च) अग्निष्टोम—ताण्डच ब्राह्मण (६।३।८)

शतपथ ब्राह्मण (१०।१।२।९)

एष वै ज्येष्ठो यज्ञाना यदग्निष्टोमः, (तस्मात् उ ह वसन्ते-वसन्ते ज्योतिष्टोमेन एव अग्निष्टोमेन यजेत् ।

अर्थात् जो प्रतिवर्ष वसन्त में वार्षिक यज्ञ होता है, उसे अग्निष्टोम कहते है। उसके अग्निष्टोम, उक्थ वाजपेय, अतिरात्र आदि अनेक प्रकार हैं। यह उपर्युक्त यज्ञों में सबसे श्रेष्ठ कहलाता है।

(छ) पितृ यज्ञ शतपथ ब्राह्मण (६ ७।३।७)

अयद्यत् प्रजां इच्छते यत् पितृभ्यो निर्‌गाति।

अर्थात् जो पुत्र चाहता है। और जो पितरो को तृप्त करता है। पुत्रार्थी को पितृ यज्ञ आवश्यक है। यही पुत्रकामेष्टि यज्ञ है।

(ज) पंच महायज्ञ तैत्तीरिय आरण्य (२।१०)

पच वै एते महायज्ञाः सततं प्रतायन्ते।

अर्थात् ये पंच महायज्ञ हैं, जो सदा प्रारम्भ किए जाते हैं।

पंच महायज्ञ सम्बन्धी दैनिक होम

शतपथकार याज्ञवल्क्य जी कहते हैं—

"पंचैव महायज्ञाः तान्येव महासत्राणि भूतयज्ञो, मनुष्य यज्ञः पितृयज्ञो देव यज्ञो ब्रह्मयज्ञ इति" (शतपथ ११।५।५)

अर्थात् पाच ही महायज्ञ हैं। इन्ही को महासत्र—भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ कहते हैं।

देवयज्ञ—अहरहः स्वाहा कुर्यात् आकाष्ठात् तथैव देवयज्ञं समाप्नोति" (शतपथ (११।५।५।२)

अर्थात् प्रतिदिन स्वाहा करे काष्ठ से इस प्रकार देवयज्ञ को प्राप्त अथवा समाप्त करता है।

"आज्याहुतयो हवा देवाऽना देवानाम्" यद आहुतिभिरेव तद् देवांस्तर्पयति (शतपथ ११ ५ ५ २)

अर्थात् घृत की आहुतियों से देवताओं को तृप्त करता है। दूध की आहुतियों से देवों को तृप्त करता है।

राजसूय और अश्वमेध यज्ञ

(१) राजसूय—राज्ञः एव सूय कर्म। राजा वै राजसूयेन इष्टवा राजा भवति (श.प. १३ २।२)

अर्थात् राजसूय से ही राजा होता है। यह राजतिलक के समय का यज्ञ है।

(२) अश्वमेध—राजा वे एष यज्ञानां यद् अश्वमेधः (१३।२।८)

सर्वा वै देवताः अश्वमेधे अन्वायत्ता तस्माद् अश्वमेधयाजी सर्वदिशो अभियजन्ति (शतपथ १३।१ ८ ९।३) (क्रमशः)

पंजाब समस्या को उलझाने के लिए ज्ञानी जैलसिंह का नया शोशा

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने एक नया शोशा छोडा है कि केवल यही नही कि फाजिलका अबोहर के इलाके पंजाब में रहें और चण्डीगढ भी उसे दे दिया जाए बल्कि इन के अलावा सिरसा, कुरुक्षेत्र, अम्बाला आदि जिलों का बडा भाग भी पंजाब में मिला दिया जाए और उसके बदले में हरयाणा को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के दो जिले मेरठ और सहारनपुर दे दिए जाये। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इन जिलों के हरयाणा में मिलाकर हरयाणा को पानी भी यमुना नदी से ही दिया जाए और रावी तथा ब्यास का पूरा पानी पंजाब के पास रहने दिया जाए।

पंजाब समस्या के समाधान को प्राथमिकता देकर सभी दलों की सहमति से हल निकालने की प्रधान मन्त्री की कोशिश को असफल करने के लिए इससे अधिक शरारत पूर्ण तथा समस्या को उलझाने वाला शोशा और कोई नही हो सकता था। सन्त फतहसिंह की पेशकश के आधार पर जनवरी १९७० के श्रीमती इन्दिरा गांधी के फैसले को उलझाने के लिए भी ज्ञानी जैलसिंह उस समय ऐसा ही खेल खेल चुके हैं। अकालियों की अपनी पेशकश के आधार पर चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को फाजिलका अबोहर के इलाके दिए जाने के फैसले से अकालियों को भटकाने और उलझन में फसाने के लिए ज्ञानी जी ने शोशा छोडा था कि अकालियों ने फाजिलका अबोहर रूपी भैंस हरयाणा को दे दी और चण्डीगढ रूपी तोता उसके बदले में ले लिया। १९७२ के विधान सभा के चुनावों में अकालियों को हराने के लिए इस 'शोशे' को इस्तेमाल करने की छूट लेकर स्वयं इन्दिरा जी को भी अपने ही फैसले पर अमल न करने के लिए राजी कर लिया। अगले कदम के रूप में जनवरी १९७५ में पंजाब को चण्डीगढ देने के लिए उन पर जोर डाला और फाजिलका अबोहर हरयाणा को देने से इन्कार कर दिया। इस प्रश्न पर समाचार पत्रों में मेरे साथ उनकी बहस छिड गई और मुझे अक्टूबर १९७४ में केन्द्रीय सरकार के मन्त्री पद से त्यागपत्र देना पडा। चण्डीगढ तो पंजाब को नहीं मिला परन्तु जनवरी १९७० का फैसला खटाई में पड गया।

पंजाब में जहां आतंकवाद, अलगाववाद और कुछ धार्मिक तथा राजनैतिक समस्यायें खडी की गई हैं, वहा क्षेत्रीय तथा रावी ब्यास के पानी के बटवारे को लेकर भी समस्यायें फिर से खडी की गई हैं। क्षेत्रीय समस्या तो चण्डीगढ के बदले हरयाणा को फाजिलका अबोहर दिए जाने के फैसले को लेकर है और रावी ब्यास के पानी के बटवारे की दूसरी समस्या है जिसका सम्बन्ध हरयाणा के साथ है। इन दोनों समस्याओं के सम्बन्ध में ज्ञानी जैलसिंह का नया वक्तव्य, अकालियों के विचारों से भी बहुत दूर प्रतिवादी और उग्रवादी है। अकाली दल सिद्धांत रूप से चण्डीगढ के बदले हरयाणा को इलाका देना तथा रावी ब्यास के पानी में हिस्सा देना मानता है, विवाद केवल मात्रा का है। परन्तु ज्ञानी जी तो दोनों (इलाका और पानी) पर हरयाणा का दावा खत्म करने की बात कहकर अकालियों को भटकाना चाहते हैं और कब पुराने फैसलों और नई सोच से मुकरने के लिए जनमत के बल पर बाध्य करना चाहते हैं। जनता तो प्रतिवादी को ही अपने हितों का सच्चा पोषक मानने लगती है। ऐसे माहौल में किसी भी न्यायसंगत फैसले की सम्भावना नहीं रह जाती। यह स्पष्ट है कि ज्ञानी जी का ताजा बयान शरारत पूर्ण और पंजाब-हरयाणा की समस्या को उलझन में डालने वाला है। ज्ञानी जी फार्मूला वैसे भी अव्यवहारीय तथा सभी सम्बन्धित लोगों के लिए मानने लायक नही है।

प्रजातन्त्र में तो फैसले वही हो सकते हैं जिनके पीछे सम्बन्धित क्षेत्रों की जनता की सहमति हो। दिल्ली हरयाणा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ और आगरा डिवीजन और रोहिलखण्ड के तीन जिलों तथा राजस्थान के अलवर भरतपुर को मिलाकर विशाल हरयाणा का एक प्रदेश बनाने की बात पचास के दशक में जरूर चली थी परन्तु १९६६ में हरयाणा प्रदेश के गठन के पश्चात् यह मांग सदा सदा के लिए समाप्त हो चुकी है। कारण यह कि हरयाणा छोटा होते हुए भी अपने पैरों पर खडा होने लायक एक समृद्ध प्रदेश बनकर उभरा है और इसके फलस्वरूप एक धारणा देश में बनी है कि हरयाणा [illegible] छोटे या उससे थ डे और बडे प्रदेशों में विकास के कामों में आसानी से तेजी लाई जा सकती है, इसलिए बड़े प्रदेश विकास के कामों में पिछड जाते हैं, उत्तर प्रदेश, बिहार मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों के पुनर्गठन की बात आज बहुत से बुद्धिजीवी करने लगे हैं। वर्तमान उत्तर प्रदेश में से चार या पांच प्रदेश बने, बिहार में से तीन, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में दो या तीन प्रदेश बनने चाहिए पश्चिमी उत्तरप्रदेश तो अपने आप में ही हरयाणा से लगभग दुगने क्षेत्र और जनसंख्या का प्रदेश बनेगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के तथा मेरठ और सहारपुर जिलों की जनता यह नही चाहेगी कि उनके दो जिले अलग निकल कर हरयाणा में मिला दिए जाएंगे। कोई भी इलाका केवल जमीन का टुकडा ही नही होता है जिसको जहां चाहे और जब चाहें, इधर उधर करदे। सभी इलाकों में पंजाब की तरह ही इन्सान बसते हैं और उन की इच्छा के विरुद्ध उनको इधर उधर नही किया जा सकता। यह बात जहां मेरठ और सहारनपुर जिलों पर लागू होती है, वहां सिरसा, अम्बाला, कुरुक्षेत्र तथा फाजिल्का, अबोहर, पर लागू होती है। इन इलाकों को ज्ञानी जैलसिंह जी के सुझाव पर या किसी दल, व्यक्ति या सरकार के कहने पर वहा के निवासियों की इच्छा के विरुद्ध इधर से उधर किया जाना न तो उचित है और न ही सम्भव।

एक अनुचित और असम्भव बात कहकर ज्ञानी जी कुछ लोगों के चिन्तन को भटका तो सकते हैं, परन्तु समस्या को सुलझाना तो दूर रहा उल्टा उसे उलझाने में ही सहायक होंगे। ज्ञानी जी से तो हमारी यही प्रार्थना है कि पंजाब के मुख्यमन्त्री के रूप में और फिर भारत के गृहमन्त्री तथा राष्ट्रपति के रूप में पंजाब की समस्या को उलझाने में उन्होंने जो निन्दनीय भूमिका अदा की वह अब न करें। कृपा करके पंजाब और भारत के हित में वे अपना यह नया खेल बन्द करदें और अपने द्वारा ही जटिल की गई इस समस्या को सुलझने दें।

जहां तक रावी ब्यास के पानी का सम्बन्ध है, ज्ञानी जी को यह पता है कि रावी ब्यास की परियोजनाओं में पंजाब के पुनर्गठन से पहिले और उसके बाद भी हरयाणा वित्तीय और निर्माण कार्यों में हिस्सेदार रहा है और केन्द्रीय जल तथा विद्युत आयोग तथा दूसरे तकनोकी अफसरों की समितियों ने हरयाणा को रावी ब्यास के पानी मे जो हिस्सा देना माना वह इराडी पंचाट के फैसले से कहीं ज्यादा रहा है। ज्ञानी जी जो देश के राष्ट्रपति रह चुके उनको क्षेत्रीय राजनीति को या नीतियों मे ऊपर उठकर न्याय की बात करनी चाहिए। दो भाई जब अलग-अलग घर बसाते है तब संयुक्त धन सम्पत्ति तथा समाधनों में से न्यायोचित हिस्सा दोनों को मिलना चाहिए। क्या कोई एक भाई को संयुक्त साधनों में हिस्सा देने की बजाए उसे पडौसी का घर दिखाकर कह सकता है कि तुम अपना हिस्सा उससे मागो मै नही दूंगा? ज्ञानी जी तो हरयाणा को मेरठ और सहारनपुर के पडौसियों से यमुना नदी का पानी मांगने के लिए कह रहे हैं, जिस रावी ब्यास के पानी के हरयाणा और पंजाब दोनों हिस्सेदार है उस मे से हरयाणा का हिस्सा देने की बात को ही हवा में उडा देना चाहते है। ज्ञानी जी जरा अंदर झांककर देखें और अपने मे सवाल करें, कि क्या ऐसा सोचना उनके रुतबे के आदमी को शोभा देता है?

स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीयता के प्रतीक थे

६३वें बलिदान दिवस पर दिल्ली में विशाल शोभा यात्रा

आर्य समाज के तीन सूत्रीय महाभियान के क्रियान्वयन पर विशेष बल

दिल्ली २५ दिसम्बर—स्वामी श्रद्धानन्द के ६३ वें बलिदान दिवस के अवसर पर आज श्रद्धानन्द बाजार से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में एक विशाल एवं भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। शोभा यात्रा बड़ी ठण्ड के बावजूद अपने निश्चित समय १० बजे से प्रारम्भ हो गई थी। प्रातः से ही गुरुकुलों व डी०ए०वी० स्कूलों के बच्चे बड़ी संख्या में शोभा यात्रा में भाग लेने के लिए श्रद्धानन्द बलिदान भवन के सामने पहुंच चुके थे। हंसराज कुलाची माडल स्कूल की ओर से अनेक सुन्दर झांकियों का प्रदर्शन किया गया गाजियाबाद, बहादुरगढ़, नरेला, फरीदाबाद आदि के आर्यसमाजों के लोग तथा गुरुकुलों के बच्चे भी समय पर अपने बैनर के साथ यहां पहुंच चुके थे। आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल शोभा यात्रा कार्यक्रम का आदेश दे रहे थे।

शोभा यात्रा में बड़ी संख्या में घोड़े, हाथी, बैंड बाजे तथा सुसज्जित झांकियां सम्मिलित थे। फूलमालाओं से सुसज्जित टेम्पुओं पर संगीत कलाकार संगीत प्रस्तुत कर रहे थे। स्कूलों तथा गुरुकुलों के बच्चे अपने कार्यक्रम पेश कर रहे थे। आर्यवीर दल और आर्य वीरांगना दल के युवक व युवतियों ने अनेक प्रकार के शारीरिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया।

श्रद्धानन्द बलिदान भवन में यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् शोभायात्रा का संचालन प्रारम्भ हुआ यह शोभा यात्रा श्रद्धानन्द बाजार नयाबास, लालकुआं, चावड़ी बाजार, नई सड़क, चांदनी चौक आदि क्षेत्रों से होती हुई लगभग आठ किलोमीटर का मार्ग तय करते हुए लालकिला मैदान पहुंची। जब शोभायात्रा अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के विशाल प्रतिमा के सामने घण्टाघर पहुंची तो वहां विशाल मंच पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य जनता तथा देशवासियों को सम्बोधन देते हुए कहा चांदनी चौक क्रान्तिकारियों की क्रीडा स्थली रही है। इसी जगह स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अंग्रेज सिपाहियों के संगीनों के सामने छाती खोलकर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया था। इसी चांदनी चौक में वीर वैरागी, गुरु तेगबहादुर, भाई सतीदास और भाई दयाला का बलिदान हुआ था।

भाई-मतीदास को यहीं आरों से चीरा गया था। इसी वीर स्थली पर रास बिहारी बोस ने कटरा धुलिया से लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीयता के प्रतीक थे। हिन्दू-मुस्लिम इतिहास में वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने प्रथम गैर मुस्लिम नागरिक के रूप में दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद के मेम्बर से हिन्दू-मुस्लिम एकता का सन्देश राष्ट्रवासियों को दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। उन्होंने हिन्दी के प्रचार तथा अछूतोद्धार के लिए महान् कार्य किए थे। मंच पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल और प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु भी उपस्थित थे। यह मंच आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के सौजन्य से विशेष रूप से बनाया गया था, जिसका संचालन आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव जी कर रहे थे।

तीन सूत्रीय महाभियान पर विशेष बल

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने सम्बोधन में देशवासियों से अपील की कि वह अंग्रेजी के मोह तथा भ्रमजाल से मुक्त होने का प्रयत्न करें। शराब हमारे शारीरिक और मानसिक पतन का कारण है, इसलिए शराबबन्दी आवश्यक है। गाय हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की प्रतीक है। देश का आर्थिक ढांचा गोवंश की रक्षा करने से सुदृढ़ होना सुनिश्चित है। इसलिए गोहत्याबन्दी तथा गो रक्षा देशवासियों का मुख्य कर्तव्य होना चाहिए। आर्यसमाज अपने ३ सूत्रीय महाभियान के माध्यम से इन कार्यक्रमों पर विशेष बल दे रही है। स्वामी जी ने जन समूह के साथ ३ नारे भी लगाए—गो की रक्षा करो, अंग्रेजी छोड़ो-देशी भाषाएं लाओ और शराब बन्द करो।

ऐतिहासिक लालकिले के सामने जब शोभा यात्रा पहुंची तो वहां विशाल जन सभा का आयोजन श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर लालकिला मैदान में सांसद सुश्री उमा भारती ने स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे एक आदर्श महात्मा थे जिनके जीवन मूल्य आज भी हमारे लिए अनुकरणीय है। संसद सदस्य श्री विजय कुमार मल्होत्रा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रो० राजेन्द्र सिंह जिज्ञासु तथा डा० शशि प्रभा आदि वक्ताओं ने भी श्रद्धानन्द द्वारा समाज व राष्ट्र के प्रति की गई बहुमूल्य सेवाओं का स्मरण कराते हुए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

—प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

वेद मार्ग पर बढ़ते चरण

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सकता। ऋषि भक्तों की भावना इस उत्तर से कभी भी सन्तोष नहीं कर सकती। ऐसे वेद प्रेमियों से निवेदन है, कि वे अपने हृदय की भावनाओं को केवल हृदय में ही न रख, अपितु मिल-जुल कर प्रयास करें और कम से कम वर्ष में एक बार तो एक पग वेदमार्ग पर आगे बढ़ाएं।

आज की स्थिति में आवश्यकता इस बात की है, कि वेद की भाषा और वर्ण्य शैली को हृदयंगम कराने के लिए विशेष प्रयास हो। क्योंकि वेद की भाषा व शैली लौकिक संस्कृत से भिन्न भी है। अतः क्रमशः ऐसे पग सामने आयें, जिससे वेद का शब्दार्थ, पर्याय, परिचय, पठन-प्रकार और शैली स्पष्ट हो। अत जो वेदप्रेमी इस योजना को साकार करना चाहते हैं वे लेखक से सम्पर्क करें।

धोखेबाज से सावधान

एक लड़का ब्रह्मपाल सिंह पुत्र गजेसिंह ग्राम-पोस्ट इटावा जिला मुजफ्फर नगर (उ. प्र.) का रहने वाला लगभग डेढ़ दो मास से श्री आनन्द मित्र शास्त्री जी के साथ मेरे वैदिक आश्रम भादस में आया था और मेरे आश्रम का निर्माण कार्य चल रहा है। मैं चिनाई करवा रहा था। २-१२-८९ को पांच हजार रुपए बैंक से निकलवा कर लाया था। ५-१२-८९ को वह प्रातः लगभग साढ़े सात बजे बक्से से ढाई हजार रुपए निकाल कर फरार हो गया। यहां पर वह कहता था, मैं गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली और गुरुकुल झज्जर में भी पढ़ा हूं। स्वामी ओमानन्द जी की बहुत बुराई करता था। स्वामी जी को तो मैं ३५-४० वर्षों से जानता हूं परन्तु वह ब्रह्मपाल सिंह स्वयं ही चरित्रहीन था और बहुत ही आवारा व बदमाश था। मैंने उसके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा दी है। यदि गुरुकुल झज्जर या गुरुकुल भैंसवाल में पहुंच जाए तो ऐसे व्यक्ति को बन्द करवा देना चाहिए।

—मा० वेदप्रकाश आर्य

हिन्दी के तारों तथा हिन्दी में पता लिखे पत्रों के वितरण में देरी

हरि बाबू कंसल सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, डाक विभाग
ई—9/23, वसन्त विहार, नई दिल्ली—110 057

अनेक व्यक्तियों की यह धारणा है कि कई डाकघरों अथवा तारघरों में हिन्दी तारों को लेने में आनाकानी की जाती है अथवा उनके प्रेषण में विलम्ब होता है। इसी प्रकार कई बार सुना जाता है कि जिन पत्रों के पते हिन्दी में लिखे होते हैं वे अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में देर से पहुंचते हैं अथवा उनका वितरण ठीक प्रकार नहीं होता। कई बार इस प्रकार की शिकायतें तथ्य पर आधारित होती हैं और कई जगह यह धारणा भ्रान्ति पर आधारित होती है।

कुछ समय पूर्व मैंने यह प्रश्न डाक विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में समिति की बैठक में उठाया था। सभी पाठकों एवं देश की हिन्दी संस्थाओं से अनुरोध है कि जहां कहीं उनके सामने ऐसे उदाहरण आएं कि किसी भी डाक घर अथवा तार घर ने हिन्दी में लिखे तार को लेने में आनाकानी की हो, उसके प्रेषण में विलम्ब हुआ हो, सन्देश विकृत रूप में पहुंचा हो अथवा किसी असामान्य परेशानी का सामना हुआ हो तो उसके सम्बन्ध में अपने क्षेत्र के अधिकारियों को तो लिखना ही चाहिए, उसकी सूचना यदि तथ्यों सहित मुझे भी भेज दी जाए तो यह मामला डाक विभाग अथवा दूर संचार के उच्च अधिकारियों के साथ भी रखा जा सकता है।

जहां तक हिन्दी में पता लिखे पत्रों के वितरण का प्रश्न है, देश के अधिकांश डाकघरों में डाकिए देवनागरी लिपि जानते हैं, अतः हिन्दी में लिखे पत्रों का लिप्यंतरण रोमन में अथवा किसी अन्य लिपि में करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए और यदि ऐसी आवश्यकता पड़े भी तो वितरण में एक दिन से अधिक विलम्ब नहीं होना चाहिए। फिर भी जहां ऐसा विलम्ब होता है, उसके विषय में भी सम्बन्धित क्षेत्रों के अधिकारियों को लिखा जाना चाहिए। ऐसे मामलों के उदाहरण भी मुझे भेज दिए जाएं तो समस्या को तथ्यों के आधार पर उच्च अधिकारियों के समक्ष रखने और समस्या का समाधान करने में सहायता मिलेगी।

सभी पाठकों एवं संस्थाओं से अनुरोध है कि इन दोनों विषयों से सम्बन्धित जो तथ्य उनकी जानकारी में हैं उन्हें भेजने की कृपा करें।

अनोखा दहेज माँगा

नई दिल्ली ३० दिसम्बर। उसने अपनी शादी से पूर्व बातचीत होते वक्त दहेज के रूप में ससुर से एक ऐसी चीज मांगी, जिसका कम से कम मूल्य 25 पैसा था अधिक से अधिक उच्चवर्गीय परिवारों में दो रु० है। किसी को यकीन नहीं हुआ कि सम्भावित वर क्या मांग रहा है पर जब उसने अपने भावी ससुर से दहेज के रूप में मात्र सिगरेट पीने की आदत छोड़ देने का वचन दहेज में मांगा तो उपस्थित दोनों पक्षों के लोगों की आंखें नम हो गई।

गांव बुढेला, विकास पुरी, नई दिल्ली की कुमारी मोनिका के पिता गिरिराज त्यागी ने शर्त मंजूर करते हुए अपनी बेटी का रिश्ता गांव हथवाला (करनाल) हरियाणा के मास्टर ब्रह्मदत्त त्यागी के पुत्र अजय के साथ पक्का कर दिया।

दहेज में अनोखे और मनमुराद उपहार पाने वाले अजय की बारात २३ जनवरी को होगी। वह अपने साथ जीवन संगिनी सहित ससुर की वर्षों पुरानी 'आदत' को भी ले जाएगा।

वर पक्ष ने निमन्त्रण पत्र में छपाया है कि विवाह एक पवित्र संस्कार है। बाह्य आडम्बर तथा नशीली वस्तुओं के प्रयोग से इसे कलंकित न करें। एक सामाजिक कार्यकर्ता ने वर का सामाजिक सम्मान करने की घोषणा की है।

सिरसा में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस

आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सिरसा में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस २३-१२-८९ को गीत एवं भाषण प्रतियोगिता के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर वार्षिक पारितोषिक वितरण उत्सव का भी आयोजन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि श्री कान्हा राम जी चेहरवाल जिला शिक्षा अधिकारी सिरसा मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर चल विजयोपहार आर्य कन्या हाई स्कूल की छात्राओं ने प्राप्त किया। अन्य प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री दलीपसिंह ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। मुख्य अतिथि ने विद्यालय के प्रतिभावान छात्रों को पुरस्कार वितरित किए और उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द जी के मार्ग पर चलने का आह्वान किया, इस अवसर पर प्रिंसिपल महोदय ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों को स्वामी श्रद्धानन्द जी के समान कर्मयोगी बनने का आह्वान किया। उन्होंने निर्णायक मण्डल के सदस्यों, बाहर से आई टीमों के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद सभी प्रतिभागियों तथा अन्य विद्यालय में आए महानुभावों को जलपान करवाया गया।

विद्यार्थियों के अनुशासन एवं विद्यालय की उपलब्धियों को देख कर मुख्य अतिथि महोदय अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रिंसिपल श्री दलीपसिंह जी एवं स्टाफ को व्यवस्थित एवं बहुत अच्छे कार्यक्रम के आयोजन के लिए हार्दिक बधाई दी। विद्यालय प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डा० परमानन्द जी ने भी मुख्य अतिथि, निर्णायक मण्डल के सदस्यों का धन्यवाद किया।

दो नव युवकों ने दुर्व्यसनों का त्याग किया

ग्राम जुगलान (हिसार) में दिनांक २२-१२-८९ को प्रातः ७ बजे से ६ बजे तक शराब, मांस, धूम्रपान से हानियों पर बातचीत के बाद श्री जलबाल सिंह जी के घर पारिवारिक यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ सभा उपदेशक श्री प्रतापसिंह आर्य क्रांतिकारी ने किया। क्रांतिकारी जी की विशेष प्रेरणा से जलबाल सिंह जी ने शराब, अंडे, धूम्रपान आदि दुर्व्यसनों का त्याग किया। श्री जयपाल सिंह ने भी भविष्य में शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। आर्य जी ने पंच महायज्ञ एवं आर्यसमाज क्या है पर भी विचार रखे। सारे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। यज्ञ पर निकट के अन्य परिवारों के सदस्यों ने भी भाग लिया। —मांगेराम आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

दिनांक २३-१२-८९ को आर्यसमाज कंवारी (हिसार) की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रातःकाल चौपाल में यज्ञ किया गया। प्रधान श्री प्रतापसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने स्वामी जी के जीवन एवं कार्यों पर विस्तार से विचार रखे। श्री महेन्द्रसिंह आर्य ने नवयुवकों का प्रेरणाप्रद भजन सुनाया। यज्ञ पर काफी संख्या में लोगों ने उत्साह से भाग लिया।

—ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

आर्यकुमार सभा रादौर का चुनाव

प्रधान श्री विक्रम शर्मा, उपप्रधान श्री आनन्द आर्य, सरदार सत्यविन्द्र सिंह, मन्त्री श्री सचिन पराशी, उपमन्त्री श्री संजय कुमार कोषाध्यक्ष श्री राकेश सैनी, पुस्तकाध्यक्ष श्री संजीव शर्मा, खेल मन्त्री श्री संजीव कुमार। —स्वामी सेवकानन्द

दूरदर्शन पर अश्लील संवाद रोके जाएं

१७ दिम्बर को धारावाहिक महाभारत और विश्वामित्र के संवादों को सुनकर सिर शर्म से झुक गया और हैरानी हुई कि दूरदर्शन ने ऐसे सवादों को प्रसारित करने की इजाजत कैसे दे दी ? महाभारत में एक स्थान पर धृतराष्ट्र से कहलवाया गया—कृष्ण को भेंटस्वरूप सौ कुंवारी दासियां दी जायेगी तथा विश्वामित्र में एक स्थान पर प्रियम्वदा से कहलवाया गया—अब तुम्हारे वक्षस्थल पर कुंचकी रुकती ही नहीं । सयोगवश इन दोनों सवादों के लेखक एक ही व्यक्ति हैं ।

कृष्ण को सौ कुंवारी दासियां भेंटस्वरूप दिलवाने की बात कहलवा कर संवाद लेखक क्या साबित करना चाहते हैं ? केवल कुंवारी दासियों को ही उपहार स्वरूप प्रदान किया जाए महाभारत के कौनसे अध्याय में लिखा है ? क्या यह अश्लीलता नहीं ? कुंवारी शब्द प्रयोग करके राजा साहेब यह जताना तो नहीं चाहते कि कुंवारी स्त्रियों का महत्व उस समय अत्यधिक था और यह भी कि कृष्ण कुंवारी स्त्रियों के रसिया थे तथा लोग कुंवारी स्त्रियों के पीछे पागलों की तरह टहलते थे ? मेरे मत में इस सवाद में कुंवारी शब्द अनावश्यक रूप से प्रयोग किया गया । यह केवल बबइया फिल्म की तरह अश्लीलता लाने और स्त्री जाति का अपमान करने के लिए एक घटिया प्रयोग किया गया है ।

दूसरा सवाद भी राजा साहेब का है । वक्षस्थल पर कुंचकी नहीं रुकती सवाद कहलवा कर राजा साहेब क्या सन्देश देना चाहते हैं ? क्या वे पारिवारिक नवयुवतियों को यह जतलाना चाहते थे कि अब काम का वेग सताता है तो वक्षस्थल पर कुंचकी भी नहीं बन्ध पाती । क्या वे इन लडकियों को काम वेग का प्रशिक्षण तो नहीं दे रहे ? राही मासूम रजा ने विश्वामित्र के जीवन के कौनसे ग्रन्थ से यह सवाद निकाला, क्या वे मेरी तुच्छ बुद्धि में यह बात घुमाने का अनुग्रह करेंगे । (पके)

ग्रामीण आँचल में जागृति के संकेत

रोहतक २२ दिसम्बर । यहां से १० कि०मी० दूर स्थित गांव किलोई के अन्दर लगे खुले दरबार में एक सुखद किन्तु ग्रामीणों के लिए विचित्र दृश्य तब उपस्थित हुआ जब ग्राम स्तर पर कार्यरत चरित्र निर्माण युवासगठन के कार्यकर्ताओं ने जिला प्रशासन के समर्थन में तथा अपनी मांगों के समर्थन में अचानक नारेबाजी आरम्भ कर दी ।

सगठन के सदस्यों ने अध्यक्ष श्री राजेश कुमार के नेतृत्व में नारे बाजी की कि स्कूलों में व्यवसायिक प्रशिक्षण दो—'रोजगार के प्रबंध करो ।' शिक्षा को आसान करो । अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करो, अश्लीलता और शराब पर प्रतिबन्ध करो । चरित्र विकास के प्रबन्ध करो । लोग नारे-बाजी की प्रशसा करते देखे गए । बाद में श्री महावीर सिंह फोगाट ने युवकों को अनुशासित रहकर उपायुक्त को ज्ञापन देने के लिए प्रेरित किया तथा आगे भी अनुशासित रहकर इस कार्य के लिए लोगों को सगठित करके आगे बढने की प्रेरणा दी । बाद में युवकों ने उपायुक्त को शान्तिपूर्वक अपनी मागों के समर्थन ज्ञापन भी दिया ।

—नरेश कुमार हुड्डा सयोजक,
चरित्र निर्माण युवा सगठन गांव किलोई (रोहतक)

अंग्रेजी हटाओ
देश बचाओ

आर्य विद्या सभा गुरुकुल काँगड़ी का निर्वाचन

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगडी हरिद्वार का साधारण सभा की बैठक शनिवार २३-१२-८९ को गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के आर्य विद्यासभा भवन, सीनेट हाल में सम्पन्न हुई । इसमें आगामी तीन वर्षों के लिए निम्न अधिकारी निर्वाचित हुए । प्रधान श्री सूर्यदेव (दिल्ली), उपप्रधान डा० रणजीतसिंह (हरयाणा), श्री वीरेन्द्र (पजाब) मन्त्री डा० धर्मपाल (दिल्ली), उपमन्त्री श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हरयाणा), श्री बालमुकन्द (पंजाब), कोषाध्यक्ष डा० योगानन्द (सार्वदेशिक सभा) तथा श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट तथा श्रीमती प्रभात शोभा पडिता ।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगडी तथा सम्बन्धित संस्थाओं की वर्तमान परिस्थितियों, में आवश्यकताओं तथा प्रबन्ध व्यवस्थाओं पर भी विचार किया गया तथा उनकी सुचारू रूप से सचालन करने के लिए प्रबन्ध समितियों का भी गठन किया गया ।

(साप्ताहिक आर्य सन्देश से)

वीर हकीकत

तर्ज—प्यार के मोड पर मिल गए हो अगर —

देखो वीर हकीकत क्या कर गया ।
धर्म हित अपनी जान फिदा कर गया ॥

वर्ष पन्द्रह का बालक वो वीर था ।
मुसलमानों के लिए वो शमशीर था ॥
धर्म का था जो मूल्य अदा कर गया ।
देखो वीर—

सुनके मौत की खबर वो न विचलित हुआ ।
आत्मा को अमर जान न चिन्तित हुआ ॥
सारे दुःख द्वेष को वो विदा कर गया ।
देखो वीर—

माता पिता बोले क्यों होता तू नादाँ ।
तरस खा हम पर बन जा तू मुसलमा ॥
रोता दोनों को वो अनदेखा कर गया ।
देखो वीर—

मेरे माता पिता क्यों हो इतने अधीर ।
आत्मा न मरती मरना है ये शरीर ॥
समझा कर उनको अलविदा कर गया ।
देखो वीर—

हे जल्लाद ! निभा तू अपना धरम ।
अत्याचारी करता है कब सुकरम ॥
जल्लाद सुनके गरदन जुदा कर गया ।
देखो वीर—

ऐसे वीर बालकों पर भारत को नाज है ।
इनसे शिक्षा लेनी चाहिए आज है ॥
'कमल' वो भारत बाग में खिजा कर गया ।
देखो वीर—

अरविन्द कुमार 'कमल'
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरयाणा)

✱ प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।—महर्षि दयानन्द

मनुष्य का भोजन

जीवित रहने के लिए या यूं कहो कि शरीररूपी गाडी को चलाने के लिए वायु और जल के पश्चात् भोजन की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए अर्थात् भूख की अग्नि को शांत करने के लिए कुछ सेवन करना जरूरी है।

भोजन प्राप्ति के लिए मध्य वर्ग के लोग रात दिन परिश्रम करते हैं परन्तु बहुत से भाई ऐसे भी हैं जो केवल खाने के लिए ही जीते हैं और परिश्रम करने से जी चुराते हैं। ऐसे भाई भी हैं जो स्वाद के वशीभूत होकर अधिक खा जाते हैं और कई बार इसी कारण मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। इस प्रकार भोजन करने से क्या लाभ है जो हमारे लिए घातक बन जाए। वह भोजन नहीं यदि उसे विष कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी जैसे उर्दू में लिखा है—

ऐसे भोजन को खाने में लज्जत ही क्या ?
जिसमें एक दिन गिजा और दस दिन दवा।

हमारा भोजन हमारे लिए अमृतमय होना चाहिए। खाते समय विशेष ध्यान देना चाहिए कि जो कुछ हम खा रहे हैं वह किसी प्रकार हानिकारक तो नहीं है। ऐसा भोजन जिसका स्वास्थ्य और मन पर अच्छा प्रभाव नहीं पडता उसे जबान के चस्के में आकर कदापि सेवन नहीं करना चाहिए। भोजन में निम्नलिखित गुण होने चाहियें—

(क) सुपाच्य हो अर्थात् शीघ्र हजम होने वाला हो।

(ख) शुद्ध और पवित्र हो, दूषित न हो।

(ग) बल बुद्धिवर्धक हो और सतोगुण से भरपूर हो।

(घ) अन्याय और अत्याचार से प्राप्त किया गया भोजन भी नहीं करना चाहिए। मन पर कुप्रभाव पडता है।

ऐसा भोजन जो ताकत तो देता है परन्तु बुद्धि (अकल) को खराब करता है उसे नहीं खाना चाहिए जैसे मांस, मछली, अण्डे इत्यादि। इनके अन्दर तमोगुण भरा हुआ है। इनके सेवन करने से बुद्धि भ्रष्ट होती है, मन मलिन होता है और काम क्रोध आदि के कुविचार उत्पन्न होते हैं जो जीवन के महा शत्रु है। इसलिए ऐसे पाशविक भोजन को त्यागकर उससे दूर रहना ही हितकर है।

मनुष्य के लिए परमात्मा ने पृथ्वी पर अन्न, वनस्पतियां, फल-फूल, दूध आदि पौष्टिक एवं गुणकारी पदार्थ उत्पन्न किए हैं। इनका प्रयोग करना ही लाभदायक है। लाल मिर्च, खटाई, अचार इत्यादि अधिक मात्रा में सेवन करना हानिकारक है।

भोजन समय पर अर्थात भूख लगने पर दांतों से चबा चबा कर शान्तिपूर्वक खाना चाहिए। जल्दी जल्दी बिना चबाए भोजन को निगलना आंतो के लिए दुखदायी है। पाचन क्रिया में देर लगती है। अजीर्ण और बदहजमी जैसे अनेक रोग उत्पन्न हो जाते है। दांतो का काम आंतों को करना पडता है।

दोपहर का भोजन करने के बाद थोडा विश्राम करना चाहिए, सांयकाल भोजन करने के बाद टहलना चाहिए। खाने-पीने की चीजों को धूल-गर्द और मक्खियों से बचाकर रखें। बाजार में बिकने वाली चीजों से बचें। बाजार में बिकने वाली मिठाइयां खाने से हैजा पेचिश जैसे भयंकर रोग हो जाते हैं।

—देवराज आर्य, आर्यसमाज बल्लभगढ

- मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द
- मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी
- मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

जय जय हे बलिदानी

ऋषिवर दयानन्द के सच्चे—
सैनिक, हे अभिमानी !
सत्य-धर्म की बलिवेदी के,
जय जय हे बलिदानी !

स्वप्न सत्य हों दयानन्द के,
तुमने यही लिया संकल्प !
'शुद्धियज्ञ' का सूत्रपात कर,
खोज लिया दृढ़तर विकल्प।

गुरुकुल की शिक्षा पद्धति के,
बने तुम्ही उद्धारक !
किया अछूतोद्धार तुम्ही ने,
वेद ज्ञान के अहे प्रचारक।

स्वतन्त्रता की यज्ञ-शिखा में,
तुमने हवन चढ़ायी।
मां के आंचल में ले आए,
तुम अजेय अरुणायी।

सत्य-धर्म के पथ पर तुमने,
नव चेतन बिखराया।
भारत के प्रांगण में तुमने,
जाग्रत ज्योति जगाया।

धर्म वेदि पर तुमने निर्भय,
अपना शीश चढ़ाया।
प्राणों का उत्सर्ग स्वयं कर,
बलिपथ हमें दिखाया।

हे अजेय सन्यासी ! तुमने—
किया सुपावन जन मन
'श्रद्धानन्द' तपस्वी को है,
युग का कोटि नमन् ॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

शराब हटाओ
देश बचाओ।

अन्धविश्वास

ऋषिकेश में गंगा के किनारे स्थित एक आश्रम में एक भूरे रंग का पत्थर एक जल के बर्तन में तैरता हुआ दिखाया गया है। दर्शकों को यह कहकर मूर्ख बनाया जाता है कि यह पत्थर इसलिए तैरता है क्योंकि यह उस पुल का पत्थर है जो श्रीराम ने माता सीता की वापसी के लिए लंका पहुंचने के लिए बनाया गया था। इस विश्वास के साथ लोग इस पत्थर पर धन फेंकते हैं और इसके मालिक जनता की मूर्खता का अनुचित लाभ उठाकर उस धन से मौज लूटते हैं। ऐसे पत्थर की वास्तविकता यह है कि यह एक ज्वालामुखी के फटने के समय फेंका हुआ बहुत गर्म द्रव्य रूप में होता है जोकि हवा के मेल से जल्दी ठंडा हो जाता है। ठण्डा होने से पहले गैसों के बुलबुले द्रव्य में भर जाते हैं और उसको झागदार बना देते हैं और फिर वह ठण्डा होकर सख्त चट्टान का रूप धारण कर लेता है। क्योंकि पत्थर में हवा होती है इसलिए वह पानी से हलका होता है और पानी पर तैरता है। ऐसे पत्थर को कुरून पत्थर कहते हैं और विदेशों में यह नहाने के पानी के टब्बों में प्रायः देखे जा सकते हैं और लोग उन्हें एड़ी रगड़ने के काम में लाते हैं।

● हमें अपने महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलकर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करना चाहिए।

आइये, हम आज से ही अपने सभी कार्य जैसे निमन्त्रण पत्र हिन्दी में छपवाना तथा हस्ताक्षर आदि हिन्दी में करने का प्रण लें।

पण्डित जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित

आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने दिनांक १७—१२—८८ की अन्तरंग सभा की बैठक में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित जगदेवसिंह सिद्धान्ती के जीवन चरित लिखने का निर्णय लिया है। पूज्य सिद्धान्ती जी के श्रद्धालु आर्यजनों से निवेदन है कि उनसे सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटना एवं जानकारी निम्नलिखित पते पर भेजकर इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग प्रदान करें।

सुदर्शनदेव आचार्य
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक।

सोनीपत के ग्रामीण क्षेत्रों में शराब की अवैध बिक्री जोरों पर

सोनीपत—इस नगर के अनेक गांवों में अवैध रूप से शराब की बिक्री का धन्धा बड़े पैमाने पर हो रहा है। इससे समाज के प्रतिष्ठित तथा बुजुर्ग व्यक्ति बहुत चिंतित हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार कुछ लोगों ने गावों में शराब बेचना अपना धन्धा बना लिया है। वे शहर के शराब के ठेकों से बीस-बीस या इससे अधिक शराब की बोतलें ले जाते हैं और जहां लोगों से फालतू पैसे वसूल करते हैं वहां शराब में पानी मिलाकर बेचते है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३   [illegible] नं० [illegible]/RTK [illegible]   फोन ४५१२   मूल्य [illegible]

ओ३म्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार, एम. ए.   पौष २१ २०४६ वि०

वर्ष १७   अङ्क ८   १४ जनवरी, १९९०   वार्षिक शुल्क २५)   आजीवन शुल्क २५१)   विदेश में ८ पौंड)   एक प्रति ६० पैं०

पंजाब समस्या का समाधान करते समय हरयाणा के हितों की उपेक्षा न की जाए

हरयाणा रक्षावाहिनी का शिष्टमण्डल भारत सरकार से मिलेगा

—केदारसिंह आर्य

हरयाणा रक्षावाहिनी की एक आवश्यक बैठक प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में ७ जनवरी ९० को दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई। इस बैठक में महाशय भरतसिंह, श्री अमीरसिंह एडवोकेट, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, श्री पूर्णचन्द आजाद पूर्व एम०एल०सी०, श्री श्यामसुन्दर कतियाल प्रचार मन्त्री सनातन धर्म सभा, प्रि० गुगनसिंह (रोहतक), श्री आर्यव्रत शास्त्री एडवोकेट (झज्जर), प्रो० धर्मचन्द विद्यालंकार प्रलवल जि० फरीदाबाद, श्री जयनारायण पूर्व विधायक चरखीदादरी (भिवानी), प्रि० लाभसिंह, श्री जगतसिंह शास्त्री, श्री धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक (पानीपत), राव रामचन्द्र आर्य (रेवाड़ी), श्रीमती किरणमयी आर्या (जींद), श्री दीपचन्द आर्य छिक्कारा जूआं (सोनीपत), प्रि० दलीपसिंह सिरसा, श्री धर्मचन्द शास्त्री पाथरी जि० करनाल। ने हरयाणा के हितों की रक्षा करने पर अपने सुझाव दिए। अबोहर से पधारे चौ० तेगराम जी पूर्व विधायक तथा उनके साथ प्रो० विश्वबन्धु शास्त्री ने हरयाणा की जनता को स्मरण करवाया कि १९७० में भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने एवार्ड में चण्डीगढ़ के बदले में पंजाब के अबोहर फाजिलका के हिन्दीभाषी क्षेत्र हरयाणा को दिए थे परन्तु हरयाणा न तो चण्डीगढ़ और न ही अबोहर फाजिलका के हिन्दी भाषी क्षेत्र प्राप्त कर सका। इसी कारण अबोहर फाजिलका के हिन्दी भाषी छात्रों को पंजाबी भाषा जबरन पढ़नी पड़ रही है, जबकि हमारे सभी धर्म ग्रंथ संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में हैं। उग्रवादियों के आतंक के कारण वहां आर्यसमाज का प्रचार नहीं हो रहा है। आर्थिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र भारत का कैलोफोरनिया (अत्यन्त उपजाऊ भूमि) है। अतः हमें इस क्षेत्र को हरयाणा में मिलाने के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करना चाहिए।

इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किए गए।

प्रस्ताव संख्या १ :

भारत सरकार की पहल तथा सद्भावना का वातावरण बनाने के लिए उठाए गए ठोस कदमों का यह हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक स्वागत करती है। साथ ही यह बैठक अकालियों विशेष रूप से मान धड़े तथा दमदमी टकसाल और सिख विद्यार्थी संघ की ओर से सकारात्मक तथा सुस्पष्ट अनुक्रिया न आने पर चिन्ता व्यक्त करती है।

हरयाणा रक्षावाहिनी का यह निश्चित मत है कि पिछले ७ वर्षों में जो भी हत्यायें पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और पूना आदि में की गई हैं, वे सभी हत्यायें भारत के नागरिकों की हैं और उन हत्याओं के सभी दोषियों को सजा दी जाए तथा मरने वालों को परिवारों को उचित मुआवजा दिया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में कोई भी रूह रियायत बरतना न तो न्यायसंगत है और न ही देश के हित में। देश के किसी भी वर्ग या क्षेत्र के साथ किसी प्रकार का अन्याय संविधान की भावना के विरुद्ध है तथा देश की एकता के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

समय आ गया है जब इस तथ्य को खुलकर उजागर किया जाए कि पाकिस्तान भारत पर दो तरफा हमला कर रहा है, एक तरफ तो आतंकवादियों तथा अलगाववादियों को प्रशिक्षण, हथियार तथा अन्य साधन देकर भारत को तोडने की साजिश करके और दूसरी तरफ पंजाब तथा गुजरात की सीमाओं से मादक द्रव्यों की तस्करी करके। पाकिस्तान की इन वर्षों से चली आ रही विदेशी हरकतों को बन्द करने के लिए भारत सरकार को कडी चेतावनी देनी चाहिए तथा सीमाओं की तुरन्त सील करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो सीमा के साथ सुरक्षा पट्टी बनाने में संकोच नहीं करना चाहिए। मजबूत से मजबूत कदम उठाकर देशद्रोही आतंकवाद और अलगाववाद को समाप्त करना अब अनिवार्य हो गया है।

प्रस्ताव संख्या २ :

हरयाणा रक्षावाहिनी भारत सरकार के उन सभी प्रयासों में रचनात्मक सहयोग और समर्थन देगी, जिनके द्वारा पंजाब की जटिल से जटिलतर होती जा रही पंजाब की समस्या का स्थाई तथा न्यायसंगत हल निकल सके। परन्तु वह ऐसे सभी प्रस्तावों और निर्णयों का विरोध करेगी जिससे देश की एकता प्रभुसत्ता को ठेस पहुंचती हो या हरयाणा के साथ अन्याय होता हो। हरयाणा के साथ अन्याय करने का अर्थ होगा हरयाणा का मनोबल गिराना। देश और देश की [illegible] मनोबल गिराना आज की परिस्थितियों में देशकी सुरक्षा तथा एकता के लिए घातक सिद्ध होगा। १९६६ में पंजाब का पुनर्गठन भाषा के आधार पर हुआ था। आजादी के बाद भारत के सभी प्रदेशों का निर्माण भाषा के आधार पर हुआ, पंजाबी सूबा और हरयाणा के नए प्रान्त भी उसी आधार पर बने। यदि वहां सिखों का बहुमत हो गया, इसलिए उसे सिख सूबा कहकर पुकारना साम्प्रदायिकता से प्रेरित है। पंजाब की समस्या को उलझाने में यह चिन्तन सहायक हुआ है। पंजाब हरयाणा और हिमाचल को मिलाकर एक प्रांत बनाने की बात करने वाले लोग साम्प्रदायिक हैं और देशवासियों के बीच भावात्मक एकता स्थापित करने में बाधक है। वैसे भी उनकी बात किसी तरह भी युक्तियुक्त नहीं है, बल्कि विवेकहीन है। ज्ञानी जैलसिंह जी की भूमिका १९७० से से ही पंजाब के मामले को उलझाने वाली रही है। पिछले दिनों दिया गया उनका वक्तव्य साम्प्रदायिक विवेकहीन तथा असंगत ही नहीं शरारतपूर्ण भी है।

(शेष पृष्ठ दो पर)

पंजाब समस्या का समाधान——

(प्रथम पृष्ठ से आगे)

उत्तर प्रदेश के दो जिलों को हरयाणा में मिलाना और हरयाणा तथा हिमाचल के हिन्दीभाषी इलाकों को उन प्रदेशों से निकालना, झगड़े को बढ़ाना और आग लगाने जैसा शरारती सुझाव है। हरयाणा रक्षावाहिनी राष्ट्रहित से प्रेरित तथा भावात्मक एकता की पोषक इस प्रकार के सुझावों का घोर विरोध करती है।

प्रस्ताव संख्या ३ :

क्षेत्रीय तथा जल विवाद:—अकालियों ने अक्तूबर १९५६ के क्षेत्रीय तथा जल विवाद के फैसले में, १९६५ में अकालतख्त के फैसले में, १९६६ में हरयाणा और अकालियों की संयुक्त बैठक में, १९७० में सन्त फतहसिंह की पेशकश के आधार पर श्रीमती इन्दिरा गांधी के फैसले में, १९८५ में सन्त लोंगोवाल के फिरोजपुर के वक्तव्य में, १९८६ में मैथ्यू आयोग की रिपोर्ट में यह माना है कि फाजिल्का अबोहर के करीब १०० गांव हिन्दीभाषी हैं और इसलिए हरयाणा को मिलने चाहिये। १९८५ के तथाकथित पंजाब समझौते की धारा ७.२ और धारा ७४ को ध्यान से पढ़ने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ७२ के अनुसार चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को दिए जाने वाले गांव और ७४ के अनुसार सीमा समायोजन में दिए जाने वाले गांव अलग अलग होंगे। ७४ के अनुसार वे गांव दिए जायगे जो सीमा से जुड़े हुए हैं। इसलिए यदि अक्तूबर १९५६ के फैसले के अनुसार कन्दूखेड़ा गांव हिन्दीभाषी माना जाए तो अबोहर फाजिल्का के गांव सीमा समायोजन के लिए ७४ के अनुसार हरयाणा को मिल जायेंगे यदि कन्दूखेड़ा को मैथ्यू आयोग के सर्वेक्षण के अनुसार पंजाबीभाषी मानें तो ७२ के अनुसार हरयाणा को मिलने क्योंकि एक गांव बीच में आने से वे सीमा के साथ लगे हुए न होने से सीमा समायोजन में मिलने वाले गांव से अलग हैं। धारा ७२ के अन्तिम वाक्य में वर्णित सिद्धांत का समर्थन न्यायमूर्ति वेंकटरमैया ने भी किया है। उन्होंने ३२ सीमा से जुड़े हुए गांव चण्डीगढ़ के बदले में दिए जाने को इसलिए नहीं माना।

पंजाब का पुनर्गठन भाषा के आधार पर किया गया था। इसलिए शाह आयोग की रिपोर्ट के अनुसार हिन्दीभाषी होने के नाते चण्डीगढ़ पर भी हरयाणा का अधिकार बनता है। चण्डीगढ़ पंजाब को देने की कोई तुक नहीं बनती। हरयाणा रक्षावाहिनी यह भी मांग करती है कि यदि क्षेत्रीय मामले के अन्तिम निर्णय होने में विलम्ब हो तो फाजिल्का अबोहर के हिन्दी भाषी क्षेत्र का केन्द्रशासित प्रदेश बना दिया जाए।

रावी ब्यास का पानी—जहां तक रावी ब्यास के पानी के बटवारे का सवाल है उसके सम्बन्ध में मार्च 1976 के भारत सरकार के फैसले पर ही अमल होना चाहिए। इराडी पंचाट के फैसले के विरुद्ध हरयाणा सरकार ने निगरानी की हुई है। उस मामले को ठण्डे बस्ते से निकालकर उस पर तुरन्त फैसला करना चाहिए। सतलुज यमुना लिंक नहर का काम भी जून 1990 तक पूरा होना चाहिए ताकि हरयाणा की प्यासी धरतियों को पानी मिल सके और पंजाब की उपजाऊ भूमि को निरन्तर सेम की लपेट में आने से बचाया जा सके।

प्रस्ताव संख्या ४ :

पंजाब समस्या का समाधान करने पर जो वार्ताएं होती हैं, उनमें भारत सरकार द्वारा केवल पंजाब के नेताओं को विशेषकर अकालियों को बुलाना हरयाणा की उपेक्षा की जा रही है।

अतः हरयाणा रक्षावाहिनी भारत सरकार से अनुरोध करती है कि पंजाब समस्या के समाधान हेतु जो सर्वदलीय बैठक आयोजित की जा रही है, उनमें जहां अकाली दलों के सभी गुटों को सम्मिलित करने का यत्न किया जा रहा है, वहां हरयाणा रक्षावाहिनी को भी वार्ता में सम्मिलित किया जावे, क्योंकि पंजाब समस्या का समाधान करते समय हरयाणा पर भी उसका प्रभाव पड़ेगा। हरयाणा रक्षावाहिनी को पूर्व भी इन वार्ताओं में सम्मिलित किया जाता रहा है। यह हरयाणा की सभी राजनैतिक तथा सामाजिक संघटनों की एक संस्था है जो कि गत वर्षों से हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु कार्य कर रही है।

प्रस्ताव संख्या ५ :

भारत सरकार को हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए शीघ्र ही प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में १५ सदस्यीय (१० हरयाणा के ५ अबोहर फाजिल्का के) एक शिष्ट मण्डल भेंट करेगा और हरयाणा की जनता में अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए जागृति लाने के लिए जिलेवार बैठकों का आयोजन किया जावेगा।

आर्यों को शादी के वर्जित कुल

लेखक—लालचन्द 'विद्यावाचस्पति', श्री मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम, खेड़की, पत्रालय-बेरावास जि. महेन्द्रगढ़

गाना धुन—हरयाणा .....

मांसाहारी और शराबी व्यभिचारी जिस कुल में।
आर्यों को वर्जित है रिश्तेदारी ऐसे कुल में।। टेक।।
सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास में ऋषि जी ने बतलाया है।
मनुस्मृति अध्याय तीन में लेख लिखा हमें पाया है।
दश दोष हों जिस कुल में साफ-साफ दर्शाया है।
गुण-कर्म-स्वभाव मिलाने चाहियें वेदों ने फरमाया है।
सत्क्रियावान् और विद्वान् न धर्मधारी जिस कुल में।। १।।
क्षय रोग और कुष्ट रोग की जिस कुल में बिमारी हो।
पांच यज्ञ नहीं जिस कुल में, कामी, क्रोधी, अहंकारी हो।
बवासीर, मिरगी आदि गलित कुष्ट भी भारी हो।
आप्त पुरुषों का नहीं आवागमन घर में कलिहारी नारी हो।
स्वाभिमानी दानी ना सदाचारी जिस कुल में।। २।।
आमाशय तन पर भालू ज्यों बाल ऐसे रोगों का भी ख्याल करो।
दे हाथी घोड़े जवाहरात पर ऐसे कुलों की भी टाल करो।
पुरुषार्थ और परमार्थ से देश को मालामाल करो।
महापुरुषों की संगति करके जीवन अपना विशाल करो।
आलसी और प्रमादी हों नरनारी जिस कुल में।। ३।।
आर्यो वीरो जागो जगादो ऋषि सन्देश घर घर में।
वेदों की विद्या बिन छाया हा-हाकार नारी-नर में।
धर्म-कर्म को भूल गए फंस रहे आज फैशन जर में।
परमाणु बम एटम बम से सब देश लग रहे अग्रसर में।
"लालचन्द" हो आनन्द पैदा बलकारी घर-घर में।। ४।।
आर्यों को वर्जित है रिश्तेदारी बुरे कुल में ....

नोट—दस दोष इस प्रकार हैं—

१. सत्क्रियाहीन २. सत्पुरुषों से रहित ३. वेदाध्ययन से विमुख ४. शरीर पर बड़े बड़े लोम ५. बवासीर ६. क्षयी- दम खांसी ७. आमाशय (अजीर्ण) ८- मिरगी ।९. श्वेतकुष्ट १०. गलित कुष्ट।

संकलनकर्त्ता—महात्मा सुशीलदेव आर्य
श्री मंगल भवन खेड़की, पत्रालय-बेरावास
जिला - महेन्द्रगढ़ (हरयाणा)

१९९० नववर्ष शुभ एवं कल्याणकारी हो।

हरयाणा के मुख्यमंत्री महोदय को पत्र

शराब की आय का त्याग करें, इससे गरीब किसान और मजदूर बरबाद हो रहा है।

सेवा में,

मुख्यमन्त्री जी महोदय हरयाणा प्रदेश सादर नमस्ते।

आपके प्रदेश को शराब से ८० करोड की आय होती है। ठेकेदारों को इससे दोगुनी चार गुनी हो जाती होगी। गांव में आप जांच कराके देखवाले कितने घर बरबाद हो गए हैं हो रहे हैं, और होंगे। उन घरों में चौबीस घण्टे देवियां रोती हैं, बूढे-बूढियां चिन्ता में पड़े अपने कर्मों को रोते हैं। यदि कोई दयालु मुख्यमन्त्री होता तो बिना भोजन किए पहिले शराब की बोतलों को भूमि में गडवा कर ठेकेदारों का धन जब्त कर लेता। नशे की चोरी से बिक्री करने वालों के सब प्रकार की सम्पत्ति जब्त कर नशे से बरबाद हुए खानदानो में बांट देता। इससे जो राहत मिलती, उसके सहारे बरबाद परिवार का बालक सुख को सांस लेता। समगलर सदा के लिए खत्म हो जाता।

आज का हाकिम नेता मन्त्री मौत से डरता है, किसी भी भ्रष्ट, आतंकवादी ठेकेदार का सामना नही करता। उनसे बचने के उपाय ढूंढता रहता है। लाखो जनता जिसके बल पर जीती हो, लाखों पुलिस फौज कमचारी उसके रक्षक हों, प्रभु की दयासे ऊंचा पद मिला हो, फिर भी गुण्डो से दबकर रहना कहां की मनुष्यता है? मुट्ठी भर गुण्डे भ्रष्टाचारी आतंकवादी नशीली चीजों का व्यापार करने वाले भारत में छाए हुए हैं। यहा राज्य अधिकारियों द्वारा नहीं चल रहा, यह तो भगवान् की दया और डरपोक जनता के दब्बूपने के कारण राज्य चलता दिखाई दे रहा है। धन्य है भारत की संस्कृति तथा सहनशीलता जिसने सब प्रकार के जुल्म सहकर भी हकूमत के कर्णधारों की आज्ञा का पालन किया है, कर रहे हैं। जब तक कोई श्रद्धानन्द, सुभाष जन्म नही लेगा तब तक सहेंगे।

मेरी आप से प्रार्थना है, कि आप कुछ पुण्य आत्माओं की आत्म कथा पढ कर उनसे प्रेरणा लें, और सर्वप्रथम पापों की जड शराब को खत्म करके पुण्य प्राप्त करे। इस कुलघातनी देशनाशनी के जाते ही भ्रष्टाचार, दुर्व्यवहार, आतंकवाद, जातिवाद खत्म हो जाएगा। भारत मात्र गिने दिनों में संसार का शिरोमणी देश बन जाएगा। आशा सहित। —आपका सद्‌भावी

दीपचन्द आर्य कासनी (रोहतक)

कसाईयों से ५० गाएं मुक्त कराई गई

सुरेहती (महेंद्रगढ) नव वर्ष की प्रथम वेला। जनवरी १० को राजस्थानी कसाई बन्जारों से १५० गऊएं छुडाई गई। गोवंश रक्षा समिति के सदस्य शास्त्री रामपाल सुरेहती ने अपने साथियों के साथ मिलकर इन बन्जारों को घेरकर गऊयें मुक्त कराई। तुरन्त सूचना मिलते ही समिति के अध्यक्ष ब्र० ओमस्वरूप आचार्य गुरुकुल डिकाडला सुरेहती पहुंचे और तीन चार दिन में गांव-गांव गऊओं को बांटा गया। श्री गोशाला लोहारू में भी २५ गाय छोडी गई। इसमें सुरेहती गाँव का विशेष योगदान रहा।

इसी गोरक्षक दल ने दीपावली से पहले बाढडा में भी ३०० गायें को छुडवाया था। हरयाणा राज्य गोशाला संघ ने कई बार हरयाणा सरकार से इन बन्जारों पर रोक लगाने की मांग की है। संघ ने सभी हरयाणा की गोशालाओं की एक बैठक २१ जनवरी को गोशाला भिवानी में बुलाई है ताकि हरयाणा से जा रहे गोवंश पर प्रतिबन्ध लगाया जावे। —ब्र० ओमस्वरूप

उपाध्यक्ष हरयाणा राज्य गोशाला संघ

अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की दूरदर्शन द्वारा उपेक्षा

सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, त्यागमूर्ति, गुरुकुल कांगडी विश्व-विद्यालय के संस्थापक, जलियांवाला बाग काड के बाद सर्वप्रथम कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पूर्ण भारतवर्ष में धूमधाम से मनाया जाता है। दिल्ली में एक विशाल शोभायात्रा तथा श्रद्धांजलि का लाल किला मैदान में आयोजित किया जाता है। २५ दिसम्बर १९८९ को एक भव्य शोभायात्रा तथा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें हजारों लगभग आठ किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा में आर्य बहन भाइयों तथा स्कूल के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। इस समस्त आयोजन की सूचना दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के अधिकारियों को पूर्व दी गई। परन्तु दूरदर्शन के अधिकारियों ने लाखों हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाते हुए इतने भव्य कार्यक्रम के बारे में एक भी शब्द प्रसारित नही किया। इससे आर्य हिन्दू जनता में काफी रोष व्याप्त है।

आर्य हिन्दू जनता भारत सरकार तथा दूरदर्शन अधिकारियों से नम्रता पूर्वक मांग करती है कि भारतवर्ष में बहुसख्यक हिन्दू समाज के कार्यक्रमों दूरदर्शन तथा आकाशवाणी पर उतना ही स्थान दिया जाए, जितना अन्य मतावलम्बियों के कार्यक्रमों को दिया जाता है।

३५ ग्रामों के इलाके में शराब की अवैध बिक्री

पन्चकूला, एक जनवरी (निम)। पिंजौर ब्लाक के ३५ गावों की आबादी इस क्षेत्र में अवैध रूप से हो रही शराब की बिक्री से बुरी तरह प्रभावित है। प्रशासन से इसे रोकने के अनुरोध का अभी तक कोई प्रभाव न होने से यहां के लोगों में रोष व्याप्त है।

पिंजौर से कर्णपुर जाने वाले मार्ग पर स्थित कीरतपुर, भोलूमल कर्णपुर, मानकपुर, माजरी, पपलोया, धमाला, माजरा-महताब आदि लगभग ३५ गावों में यहां से दस तथा पन्द्रह किलोमीटर दूर पिंजौर तथा मढावाला स्थानो पर खुले अधिकृत शराब के ठेकों से अवैध रूप से शराब की आपूर्ति हो रही है। इन गावो के कुछ दुकानदार सरेआम मार्ग पर शराब को दुकाने चला रहे हैं जहां आते-जाते लोग सरेआम शराब पीते देखे जा सकते हैं। यहां के लोगों का कहना है कि उक्त शराब के ठेकेदार अपनी जीप में इन दुकानदारों को शराब की आपूर्ति करते हैं। बताया जाता है कि इन दुकानदारों को उक्त ठेकेदार २६ रु. प्रति बोतल बेचते हैं और आगे यही बोतल बत्तीस रु. में बिकती है।

गांव कर्णपुर के सरपंच श्री गुरदयाल सिंह का कहना है कि गत वर्ष इस क्षेत्र के कीरतपुर गाव मे सरकार द्वारा खोले गए शराब के ठेके को इस क्षेत्र के लोगों ने पथराव करके उठाया था। किन्तु अब उस से भी अधिक समस्या पैदा हो गई है। सरपंच का कहना था कि इस क्षेत्र में खुली विभिन्न औद्योगिक इकाइयों में लगभग तीन हजार श्रमिक काम करते है जिनमें से अधिकाश काम पर आते-जाते इन अवैध शराब की दुकानों पर शराब पीते हैं। इस कारण जहां पास-पास का वातावरण प्रभावित हो रहा है वहा गरीब परिवारों पर भी बुरा असर पड रहा है। इस क्षेत्र को कुछ ग्राम पंचायतों ने एक ज्ञापन इस समस्या से छुटकारा दिलाने के लिए अम्बाला के उपायुक्त को भेजा है।

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। —महर्षि दयानन्द

अश्वमेध यज्ञ का स्वरूप

(गतांक से आगे)

—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य सभा मौरिशस



अर्थात् सब देवता अश्वमेध में आते हैं। अश्वमेध यज्ञ करने वाला सब दिशाओं का जीतने वाला होता है।

श्री वै राष्ट्रम्। राष्ट्रं वा अश्वमेधः। तस्माद् राष्ट्री अश्वमेधेनयजेत्।

अर्थात् ऐश्वर्य ही राज्य है। राष्ट्र ही अश्वमेध है। इस लिए राष्ट्र की उन्नति के लिए सम्राट् अश्वमेध यज्ञ करें। इसे अश्वमेध यज्ञ कहते हैं।

(३) गोमेध यज्ञ—पृथ्वी को उर्वरा बनाना, नई भूमि तैयार करना और नए-नए द्वीप तैयार करना। इस यज्ञ का प्रधान कार्य है। इसे गोमेध यज्ञ कहते हैं।

सारांश रूप से यही यज्ञों का क्रम और प्रकार है। इस सारांश में बतला दिया गया है कि किस यज्ञ के बाद कौनसा यज्ञ करना चाहिए और कितने यज्ञ विशेष रूप से महत्व वाले हैं।

यहां तक तो हमने सभी यज्ञों की रूपरेखा उनका क्रम और प्रकार लिखा है। अब हम राष्ट्र की उन्नति के लिए तथा महान् परोपकार के कार्य अश्वमेध यज्ञ के विषय में विचार करते हैं।

अश्वमेध यज्ञ

वैदिक आर्य सभ्यता में अश्वमेध अर्थात् चक्रवर्ती राज्य की अभिलाषा करना भी एक विशेष महत्वपूर्ण यज्ञ माना जाता है। सब से बड़ा यज्ञ अश्वमेध को ही माना जाता है। एक राष्ट्र में संसार भर के मनुष्यों का सुख दुःख सम्मिलित करके 'सब से सबका लाभ पहुंचाना' ही इस यज्ञ का अभिप्राय होता था। यज्ञ की कामना करने वाले याजिक के मन में ऐसे सर्वोपकारी राज्य को प्राप्ति के लिए विचारों का पैदा होना भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात होती थी। क्योंकि बिना राज्य प्राप्ति के कोई भी यज्ञ सफल नहीं हो सकता। यज्ञ की रक्षा का भार भी तो राजा के ही ऊपर होता है। स्वराज्य में ही जनता सुखी रह सकती है। इस यज्ञ के लिए शूरवीरता और युद्ध में कुशलता पैदा करना प्रथम कर्त्तव्य होता था। ब्राह्मण जहां देश की समृद्धि के लिए अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करते थे, तो क्षत्रिय हाथ में हथियार लेकर उनके यज्ञ की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे। वही देश सौभाग्यशाली माना जाता था जहां ब्राह्मण और क्षत्रिय परस्पर मिलकर राज्य व्यवस्था द्वारा प्रजा के सुख का सम्पादन करते थे। जैसा कि वेद में कहा गया है कि—"यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।" इस प्रकार इस अश्वमेध यज्ञ के महान् आयोजन से अपने राष्ट्र की समृद्धि तथा संसार का उपकार किया जाता था। अपने राज्य के बिना तथा सुसज्जित शस्त्रों के बिना किसी यज्ञ की सफलता नहीं हो सकती।

भारत के दक्षिण में स्थित बम्बई प्रदेश के नासिक में महर्षि विश्वामित्र ने अपने सिद्धाश्रम में जिस वेदों के ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन किया था, उसकी भी राक्षसों से रक्षा राम ने ही शस्त्रों के द्वारा ही की। क्योंकि 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चर्चा प्रवर्त्तते।' अर्थात् जितने भी यज्ञों का विधान ऋषियों ने किया है, उनकी सफलता भी अब तक शस्त्रों से सुसज्जित राष्ट्र के कर्णधारों द्वारा ही की जाती थी। यज्ञ प्रवचन भी तभी हो सकते हैं, शास्त्र की चर्चा भी तभी हो सकती है, जब राष्ट्र शस्त्रों से सुसज्जित हो।

जिस समय विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को अपने आश्रम में यज्ञ की रक्षार्थ ले आए तो, विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को अपने आश्रम में निर्मित ७२ हथियारों को उन्हें दिया और हथियारों को देते हुए महर्षि विश्वामित्र ने कहा—

अग्रतश्चतुरोवेदाः पृष्ठतः सशरंधनुः।
इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि॥

अर्थ—संसार के उपकार के लिए वेदों का सन्देश प्रसारित करने के लिए हमारे आगे आगे वेद होने चाहिएं और उन वेदों और यज्ञ की रक्षा के लिए हमारे पीछे-पीछे वीर धनुषधारी क्षत्रिय होने चाहिए ब्राह्मणों का कार्य लोगों को 'शाप' अर्थात् समझाना होता है। यदि वे ब्राह्मणों के समझाने से भी ठीक मार्ग पर नहीं आते तो उन्हें शस्त्र से (शर से) ठीक कर देना चाहिए। इस प्रकार से महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा शास्त्रों द्वारा हो की गई थी, और राम ने सभी राक्षसों को समाप्त कर दिया था। जो भारत भूमि में प्रवेश कर गए थे।

देश के लोगों में अच्छे विचारों का प्रचार करना ब्राह्मणों का काम है और क्षत्रियों का कार्य उनको रक्षा करना होता है। अतः अश्वमेध यज्ञ की अनिवार्यता मानी जाती है। राष्ट्र की रक्षा करना ही अश्वमेध यज्ञ होता है। जिस राष्ट्र में हम बसते हैं, उसकी रक्षा करना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है। राष्ट्र की रक्षा करने हेतु कईबार दुश्मन से लड़ना भी पड़ता है। उस युद्ध से कभी भी आर्य लोग मुंह नहीं मोड़ते थे।

महाभारत के युद्ध में मोह में पड़े हुए अर्जुन को देखकर श्री कृष्ण ने कहा था—"अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यं अकीर्तिकरमर्जुन। अर्थात् हे अर्जुन तेरी ये कायरपने की बातें अनार्यों की हैं। अतः उठ खड़ा हो, हथियार सम्भाल, अर्जुन उठा और उसने शत्रुओं का नाश किया, और राज्य प्राप्त होने पर राजसूय यज्ञ तथा अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया था।

छोटे से छोटे परिवार के व्यक्ति भी सभी मिलकर प्रातः सायं दैनिक यज्ञ का आयोजन किया ही करते थे। इसे अग्निहोत्र कहा जाता था। अमावस्या और पूर्णमासी के पाक्षिक यज्ञ को 'दर्शपूर्णमास' की पद्धति से करते थे। इसके पश्चात् फाल्गुनी पूर्णमासी आषाढ़ी पूर्णमासी और कार्तिकी पूर्णमासी के चतुर्मास्य आदि यज्ञों की भी आयोजना की जाती थी। उत्तरायण और दक्षिणायन के यज्ञ भी नवसस्येष्टि नाम से किए जाते थे। वसन्त ऋतु में पवित्र अग्निहोत्र का आयोजन होता था। जिसे उक्थ, वाजपेय, अतिरात्र अनेक प्रकार हैं, किया करते थे।

पंच महायज्ञ—ब्रह्म यज्ञ, देवयज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ, बलि वैश्वदेव यज्ञ आदि तो प्रतिदिन प्रत्येक गृहस्थी करता था। पुत्रेष्टि, गोमेध, राजसूय, वाजपेय अश्वमेध यज्ञादि भी यथाधिकार राजा और प्रजा मिलकर किया करते थे।

कहने का अभिप्राय यह है कि यज्ञ के बिना किसी कार्य की सफलता न मानते थे। सब का जीवन यज्ञमय होता था। आयुर्यज्ञेन कल्पताम् की भावना को जीवन में साक्षात् धारण करते थे।

इस यज्ञप्रक्रिया में सर्वोत्कृष्ट एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण 'अश्वमेध' यज्ञ को ही मान्यता दो गई। क्योंकि इसी यज्ञ से परिवार से लेकर राष्ट्र तक का तथा सारे विश्व का उपकार सम्भव है। इस यज्ञ में ब्राह्मण तथा क्षत्रिय एवं वैश्य तथा शूद्र का सम्मिलित रूप से सहायता पक्ष प्रबल रूप में होता है। ये चार ही वर्ण समाज के होते हैं ये ही अपनी उन्नति के लिए अपने-अपने अधिकार के अनुसार इसमें अपनी हवि-आहुति देकर कृतकृत्य होते थे। इस से समाज में संगठन की भावना तथा सभी प्रकार के सुख-दुःखों के भोगने की सम्भावना होकर आपसी सहयोग की प्रेरणा प्राप्त होती है।

वेद के प्रमाणों के आधार पर ही हमें अश्वमेध यज्ञके विषय में विचार करना चाहिए—

(क्रमशः)

वैदिक धर्म के प्रचार कार्य को गति देने के लिए कुछ सुझाव—

आर्यसमाज के क्षेत्र में यह निर्विवाद सत्य है कि वेद के सिद्धांत संसार में सर्वोत्कृष्ट एवं पूर्ण सत्य हैं। फिर भी आर्यसमाज की ओर से वैदिक धर्म का प्रचार किया जा रहा है, उसमें पिछले कुछ वर्षों से प्रचार के प्रभाव की न्यूनता प्रायः सभी लोग अनुभव करते हैं। जब मैं इसके कारणों पर विचार करता हूं, तो मुझे मुख्य रूप से दो कारण समझ में आते हैं।

पहला—वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कम करने के कारण आर्यों को 'वैदिक सिद्धांतों का ठीक से ज्ञान न होना।'

दूसरा—जिन्हें वैदिक सिद्धांतों का ठीक से ज्ञान है, उनकी 'कथनी और करनी में एकता कम होना।'

इन कारणों को ध्यान में रखते हुए आर्यों के व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की उन्नति के लिए तथा वैदिक धर्म के प्रचार को प्रभावशाली बनाने के लिए मैं यथामति कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा हूं। आशा है बुद्धिजीवी लोग इन सुझावों से बहुत लाभ उठायेंगे।

(१) प्रत्येक आर्य यह नियम बनाए कि प्रतिदिन यज्ञ और सन्ध्या किए बिना प्रातः सायं भोजन नहीं करूंगा। इसी नियम को अपनी सन्तानों पर भी लागू करे।

(२) प्रत्येक आर्य व्यवहार काल (दैनिक जीवन) में यथाशक्ति यम-नियमों का पालन करे और अपनी सन्तानों से भी कराए।

(३) प्रतिदिन रात्रि में शयन से पूर्व परिवार के सदस्य इकट्ठे होकर 'आत्म-निरीक्षण' करें तथा अपनी-अपनी त्रुटियों को स्वयं सुनायें उन त्रुटियों का प्रायश्चित करें और 'अगले दिन वे त्रुटियां न हों' ऐसा संकल्प और पुरुषार्थ करें। इस कार्यक्रम का संचालन परिवार का मुख्य व्यक्ति करे।

(४) प्रतिदिन परिवार का प्रत्येक सदस्य कम कम १५-२० मिनट वैदिक साहित्य का स्वाध्याय अवश्य करे। स्वाध्याय के लिए वेद, दर्शन, उपनिषद और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के या अन्य ऋषियों के बनाए ग्रन्थ हो सकते हैं।

(५) प्रत्येक आर्य अपनी आय का कम से कम शतांश (बराबर सौ में से एक रुपया) वैदिक धर्म के प्रचार में दान अवश्य दे। इससे अधिक भी दे, तो अच्छा है।

(६) प्रत्येक आर्य का खान-पान शुद्ध हो (मांस मदिरा आदि रोगोत्पादक एवं बुद्धिनाशक पदार्थों का सेवन न करे)।

(७) प्रत्येक वेद-प्रचारक, आर्यसमाज के प्रधान, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान, मन्त्री और इसी प्रकार के अधिकारी लोग अपनी सन्तानों में से कम से कम एक सन्तान को ऋषि निर्दिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से वेद आदि शास्त्रों का विद्वान् बनायें। (इससे गुरुकुलों की स्थिति में सुधार होगा, आर्यसमाज को प्रचारक मिलेंगे और वैदिक धर्म का सच्चा प्रचार होगा। अन्यथा वैदिक धर्म के ठोस प्रचार की आशा कम ही है। क्योंकि आज पत्र-पत्रिकाओं में जो लेख छपते हैं, उनके बारे में अधिकांश पाठकों की मान्यता यह बन चुकी है कि-जैसा लेख यह लेखक लिख रहा है, क्या ऐसा आचरण लेखक स्वयं करता भी होगा या नहीं!) अतः 'कथनी-करनी में एकता' लाने की आवश्यकता है।

(८) आर्यसमाज द्वारा संचालित सभी विद्यालयों में सह-शिक्षा (Co-Education) समाप्त हो। इससे अनेक हानियां समाज को हुई हैं और हो रही हैं।

(९) प्रत्येक आर्यसमाज में कम से कम एक विद्वान् स्थाई रूप से रहे, जो वैदिक रीति से संस्कार कराए और प्रतिदिन आर्यसमाज में सत्यार्थ-प्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रंथों का अध्यापन भी कराए। आर्य सभासद् इस कार्यक्रम से सैद्धांतिक ज्ञान बढाएं और यथाशक्ति आचरण भी करें।

(१०) प्रत्येक प्रचारक की योग्यता का परीक्षण हो। अर्थात् उस के पास आर्यसमाज के किसी भी विद्यालय अथवा गुरुकुल का दिया हुआ कोई प्रमाण-पत्र के आधार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा सम्बद्ध प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं उस प्रचारक को एक प्रचारक को एक परिचय-पत्र (Identity Card) जारी करके देवें, जिसे दिखाने पर किसी भी आर्यसमाज या आर्य संस्था में उस प्रचारक के ठहरने, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था हो सके। यह परिचय-पत्र दुर्घटना होने या मिथ्या आरोप लगा दिए जाने जैसे अनेक आपत्ति कालों में भी लाभदायक है।

(११) जो व्यक्ति ऐसा संकल्प ले कि—मैं आजीवन ब्रह्मचारी रह कर केवल वैदिक धर्म का ही प्रचार, अध्यापन, लेखन आदि कार्य करूंगा। अन्य किसी सम्प्रदाय का कार्य नहीं करूंगा। उसके अध्ययन काल में उसका भोजन, वस्त्र, पुस्तक आदि का समस्त व्यय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओर से दिया जाए। परन्तु यह तभी दिया जाए, जब उस ब्रह्मचारी का आचार्य उसकी परीक्षा करके उसकी योग्यता का प्रमाण-पत्र सम्बन्धित आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजे।

(१२) आर्यसमाजों में वार्षिकोत्सवों के अतिरिक्त वेद कथा, दार्शनिक प्रवचन, वैदिक दर्शनों का अध्यापन और योग प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन समय-समय पर किए जायें, जिससे सब प्रकार की उन्नति हो सके।

(१३) महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हठ योग का निषेध और पातञ्जल योग को स्वीकार किया है। अतः आर्य समाजों में हठ योग की क्रियाएं छोडकर पातञ्जल योग के अनुसार 'यम' नियम, आदि आठ अंगों का ही प्रशिक्षण दिया जाए।

(१४) आकाशवाणी (रेडियो) और दूरदर्शन (टेलीविजन) पर आर्यसमाज की ओर से वेद प्रचार कार्यक्रम प्रस्तुत किए जायें।

(१५) जो प्रचारक कम से कम २५ वर्ष तक केवल वैदिक धर्म का प्रचार, अध्यापन, लेखन आदि करे और इसके अतिरिक्त कोई व्यवसाय न करे, उसे आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओर से मासिक पुरस्कार राशि (पेंशन) आजीवन मिलती रहे। यह व्यवस्था केवल उन्हीं प्रचारकों के लिए हो, जिन्हें अन्यत्र कहीं से भी कोई पेंशन न मिलती हो। जो प्रचारक सरकारी विद्यालयों या महाविद्यालयों में अध्यापन आदि कार्य भी करते रहे हों और उन्हें वहां से, पेंशन भी मिलती हो, तो उन्हें इस योजना में सम्मिलित न किया जाए।

(१६) जो प्रचारक वृद्धावस्था के कारण प्रचार करने में असमर्थ हो जायें, ऐसे वानप्रस्थी और सन्यासी प्रचारकों के लिए वृद्धाश्रमों की व्यवस्था की जाए, जहां उनकी चिकित्सा और सेवा आदि की समुचित व्यवस्था हो तथा वे अपने जीवन का अन्तिम काल सुखपूर्वक व्यतीत कर सकें। (इस सुविधा के अभाव में वानप्रस्थी और सन्यासी प्रचारकों को विवश होकर अपने पूर्व सम्बन्धियों (पुत्र-पौत्रादि) की शरण लेनी पडती है, जिससे वैदिक आश्रम व्यवस्था भंग होने से समाज पर बुरा प्रभाव पडता है।)

मैं नम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि धर्म प्रचारकों पर आधारित होता है। अतः प्रचारकों को यथोचित सुविधायें अवश्य ही देनी चाहिए, जिससे वे अधिक उत्साहित होकर अधिक प्रचार कर सकें।

—वैदिक धर्म का सेवक
ब्र० विवेक भूषण दर्शनाचार्य

आइये, हम आज से ही अपने सभी कार्य जैसे निमन्त्रण पत्र हिन्दी में छपवाना तथा हस्ताक्षर आदि हिन्दी में करने का प्रण लें।

हरयाणा के आर्य विद्यालयों में धार्मिक परिक्षाएं ३१ जनवरी को

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की विद्या परिषद् की ओर से हरयाणा के आर्य विद्यालयों में धार्मिक परीक्षाएं ३१ जनवरी ९० बुधवार को होंगी। इन परीक्षाओं की पूर्व तिथि १६ जनवरी को रखी गई थी, परन्तु यह तिथि स्थगित करके ३१ जनवरी की नियत की गई है।

हरयाणा के सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से निवेदन है कि इन परीक्षाओं में अधिक से अधिक छात्र-छात्राओं को बैठाकर उन्हें वैदिक धर्म से परिचित कराने में सभा को सहयोग देवे। परीक्षाओं विषयक जानकारी कार्यालय से प्राप्त करें।

—प्रि० लाभसिंह प्रस्तोता

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक।

दाँत की सुरक्षा के लिए सरल चिकित्सा

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

दात दर्द

बडका दूध निकाल कर, लीजे रूई भिगोय।
दांत दर्द पल में मिटे, रखे दात पर जोय।।

दांत के कीडे मारना

सत्यानाशी दूद्र जो, वाय विडग कमीस।
मजन करिए दांत पर, सब चीजों को पीस।।

मसूडो की सूजन पर

लाल पिटकरी भूनकर, फूला लेओ बनाय।
काली मिर्च सैंधा नमक, दोनों लेओ मिलाय।।
महीन पीस कर उसमें तेल सरसों का डालो।
मलो मसूडों पर बादी सब दूर निकालो।।

दांतों की सफाई को

पात जलाकर नीम के, सेंधा नमक मिलाय।
दृढ हो जाते दात सब, मैलापन मिट जाय।।

दात दर्द पर

काले चने उबाल कर, काला नमक मिलाय।
पानी से कुल्ला करो, रोग समूल नसाय।।

वेदोक्त विवाह संस्कार

मानव जीवन के चार आश्रमों—ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गृहस्थ आश्रम की श्रेष्ठता स्वीकृत की है। इस आश्रम का 'विवाह संस्कार' से शुभारम्भ होता है। हमें वेदोक्त विवाह पद्धति अपना कर इस आश्रम की दिव्यता, भव्यता, उत्कृष्टता प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाना चाहिए। इसके लिए अथर्ववेद के प्रस्तुत दो मन्त्र द्रष्टव्य और अनुकरणीय हैं।

मन्त्र

स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः।
सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत् पुरोगवः।।
सोमो वधूयुरभवदश्विना स्तामुभा वरा।
सूर्यां यत् पत्ये शंसन्तीं मनसा सविताददात्।।

अथर्ववेद चतुर्दशकाण्डम् प्रथमोनुवाकः मन्त्र ८-९

भावार्थ—ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी युवक-युवती पूर्ण ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्त करके, स्वस्थ-स्वच्छ यौवनपूर्ण होकर, समानगुण, कर्म, स्वभाव वाले कुलों में विवाह करें। जगत्-पिता जगदीश्वर की स्तुति-प्रार्थना करते हुए शुभ कर्म करते हुए सुखमय, आभा, शोभा और प्रभायुक्त जीवन व्यतीत करें।

—सकलित कर्त्ता

महात्मा सुशीलदेव आर्य मगल भवन खेड़की

आर्यसमाज कोसली का चुनाव

प्रधान—श्री अमरसिंह जी बादल, उपप्रधान—हरिसिंह जी, सूबेदार रामपाल भाकली, मन्त्री—श्री सुजान सिंह भूतपूर्व डी.एस.पी. उपमन्त्री—सूबेदार भगवान सिंह जी, प्रचार मन्त्री—श्री भगवानसिंह नठेडा, कोषाध्यक्ष—श्री रायसिंह, निरीक्षक—श्री मंगतराम जी भू पू. डी०एम०पी०, प्रबन्धक—श्री श्योलाल सिंह जी।

आदर्श गृहस्थ परिवार

सानंदम सदन सुताश्च सुधिय कान्ता न दुर्भाषणी सन् मित्रम् सुधनम् सुजिषी रथिश्चाज्ञा परा सेवका अतिथि शिवपूजनम् प्रतिदिनम्, मिष्ठान्न पान गृह। साधो सग मुपासते ही सतत. धन्यो गृहस्थ आश्रम। कविता भाव (राजर्षि चाणक्य)

आनन्ददायक घर बने, बुद्धिमान सन्तान।
गृहणी मृदुभाषिणी, मित्र सत्य गुणवान।
पवित्र कमाई धन भला, शुभचिन्तक दरबान।
अतिथि सेवा है भली, शिवपूजन कल्यान।
मीठा भोजन घर बने, करे परिश्रम जान।
साधु सन्तन आगमन, धन्य गृहस्थि का धाम।
'केवल' प्रभु का नाम है, ओ३म् नाम चितलाय।
हे मानव! भज प्रेम से, भवसागर तर जाय।

स्वामी केवलानन्द सरस्वती, वेद मन्दिर
वैदिक सत्सग आश्रम, पुष्कर

युवा खेल समिति कंवारी (हिसार) की तरफ से सभा का आयोजन

दिनाक १-१-९०—नव वर्ष शुभ अवसर पर गांव कवारी में खेल समिति की ओर से एक सभा का आयोजन किया गया। प्रातः दस बजे पंचायत भवन में आर्यसमाज कंवारी के प्रधान एवं सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने हवन किया। तथा बाद में नवयुवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नवयुवकों को चरित्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नवयुवकों के कर्तव्य, सगठनात्मक कार्य करते हुए गाव में सफाई एवं अन्य सामाजिक कार्यों को बडी श्रद्धा से आगे आकर करना चाहिए। तथा शराब एवं धूम्रपान से दूर रहना चाहिए। तथा गत वर्ष की भाँति सगठित होकर इस वर्ष भी खेलों का आयोजन होना चाहिए। उपरोक्त विषयों पर सुझाव रखे। जो सभी सैकडों नवयुवकों ने सहर्ष प्रधान जी के सुझाव पर कार्य करने का आश्वासन दिया। इसी अवसर पर श्री शमशेर सिंह हुड्डा ने भी प्रत्येक सप्ताह सायकाल मीटिंग करने तथा प्रतिदिन हाई स्कूल में खेलने के बारे में सुझाव रखे।

वजीरसिंह प्रधान

जि. भिवानी के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में जिला भिवानी के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह की अध्यक्षता में २१ जनवरी ९० रविवार को प्रातः ग्यारह बजे आर्य समाज घण्टा घर भिवानी में होनी निश्चित हुई है।

इस बैठक में जि० भिवानी के आर्यसमाज के कर्मठ तथा लगनशील कार्यकर्ताओं पर आधारित जि. वेदप्रचार मण्डल का गठन किया जावेगा और आर्यसमाज के सघटन को सुदृढ करने, सामाजिक बुराइयां यथा शराब, मांस, दहेज आदि को बन्द कराने, अवैदिक मतों का खण्डन करने आदि का रचनात्मक कार्यक्रम तैयार किया जावेगा। अतः जिला भिवानी के सभी आर्यसमाज के अधिकारी तथा कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि इस बैठक में पधार कर अपना सुझाव तथा सहयोग प्रदान करें।

वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य सभासदों से मार्च १० तक का वार्षिक चन्दा उनकी आय के शतांश के अनुसार प्राप्त कर लेवें और उन्हें रसीद दे देवें। जिन समाजों के पास रसीद बही नहीं है, वे छपवा लेवें अथवा सभा कार्यालय रोहतक से ४)०० रुपए प्रति रसीद बुक (१०० रसीद) के लिए रोहतक भेजकर मंगवा लेवें। सभा ने रसीद बही छपवा दी है।

आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार वही आर्य सभासद चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं, जिनका नाम सदाचारपूर्वक आर्यसमाज के रजिस्टर में २ वर्ष तक अंकित रहा हो और वे अपने समाज को अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) चन्दा देते हों और सत्संगों में उनकी कम से कम २५% उपस्थिति रही हो।

अतः सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को इसी नियम के अनुसार आगामी चुनाव में मत देने वाले आर्यसभासदों से मार्च तक चन्दा प्राप्त करके सूची सभा को भेजें तथा अप्रैल मास में नियम अनुसार अपने आर्यसमाजों का वार्षिक चुनाव करें।

जो आर्यसमाज इस कार्य में सभा की सहायता चाहते हों, वे सभा को पत्र लिखें ताकि सभा की ओर से उपदेशक को भेजा जा सके।

—सभा मन्त्री

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर रोहतक का

हीरक जयन्ती महोत्सव

यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आपकी प्रिय संस्था उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए अपनी स्थापना के ७५वें वर्ष में पहुंच गई है। इस उपलक्ष्य में २२ से २५ फरवरी १९९० ई० में संस्था के हीरक जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत् के अनेक धुरन्धर विद्वान्, तपःपूत वीतराग साधु-संन्यासी, प्रांतीय तथा केन्द्र सरकार के प्रमुख राजनेता तथा उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

● चतुर्वेद पारायण महायज्ञ ●

१ फरवरी १९९० से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। पूर्णाहुति २५ फरवरी को प्रातः १० बजे होगी। श्रद्धालुजन यज्ञ हेतु पुष्कल घृत सामग्री भेजकर पुण्य के भागी बनें।

संस्था में विशाल पुरातत्त्व संग्रहालय, आयुर्वेदिक रसायनशाला आदर्श गोशाला, साहित्य प्रकाशन विभाग पुस्तकालय तथा वाचनालय आदि अनेक विभागों को परिष्कृत करने के लिए एक करोड रुपए की आवश्यकता है—

१-	महाविद्यालय तथा छात्रावास	३० लाख रुपए
२-	आयुर्वेदिक रसायनशाला	२० ,, ,,
३-	साहित्य प्रकाशन विभाग	२० ,, ,,
४-	पुरातत्त्व संग्रहालय	१० ,, ,,
५-	छात्रवृत्ति तथा वृद्ध साधु-सेवा हेतु	१० ,, ,,

गुरुकुल के चार प्रकार के सदस्य बनाए जा रहे हैं:—

साधारण सदस्य २५१ रुपए विशिष्ट सदस्य ११०० रुपए

संरक्षक सदस्य ५१०० रुपए विशिष्ट संरक्षक सदस्य ११००० रुपए

सभी दानी सज्जनों से नम्र-निवेदन है कि इस आदर्श गुरुकुल की उन्नति के लिए मुक्तहस्त से दान भेजकर कृतार्थ करें।

प्रो० शेरसिंह	स्वा. ओमानन्द सरस्वती	वैद्य बलवन्तसिंह	वेदव्रत शास्त्री
कुलपति	आचार्य	प्रधान	मन्त्री

विशेषांक संग्रहणीय रहा

सर्वहितकारी का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। स्वामी जी के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। इस पत्र के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। पत्र बड़ी तेजी से अपनी लोकप्रियता की ओर अग्रसर है। आशा है भविष्य में भी यह पत्र पाठकों की इसी तरह सेवा करता रहेगा।

विशेषांक को सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य, मन्त्री,
आर्य युवक परिषद, गोहाना (सोनीपत)

नशे के विरुद्ध एक नए अभियान की शुरुआत

नई दिल्ली ७ जनवरी (प्रेट्र)। देश में तम्बाकू, शराब और अन्य नशों से उत्पन्न बुराइयों के प्रति जनता में चेतना जगाने के लिए आकाशवाणी और भारतीय चिकित्सा अनुसन्धान संस्थान संयुक्त रूप से 'रेडियो डेट' कार्यक्रम का प्रसारण करेंगे।

यह कार्यक्रम १६ भाषाओं और २८ भागों में प्रसारित किया जाएगा। कार्यक्रम में नशा करने से होने वाली शारीरिक और सामाजिक बुराइयों को उजागर किया जाएगा।

आकाशवाणी और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान केन्द्र द्वारा आयोजित दो दिन की कार्यशाला में यह निर्णय किया गया। इस कार्यशाला में स्वयसेवी सगठनों के प्रतिनिधियों, चिकित्सा जगत् और जन-सचार माध्यम विशेषज्ञों ने भाग लिया था।

कार्यक्रम की दस कड़ियों में सिगरेट और तम्बाकू से उत्प[illegible] उतरों का चित्रण होगा। पाच कडिया एल्कोहल और नशीले पदार्थों की बुराइयों पर आधारित होगे।

संस्था[illegible] की अतिरिक्त महानिदेशक डा उषा लूथरा ने कहा कि हमने नशाबन्दी और शराबबन्दी से स्वास्थ्य को जो खतरे होते हैं, उनके लिए क[illegible] काम किया है, लेकिन आम लोगों तक पहुचने के लिए संस्थान पहली बार प्रयास कर रहा है। (पके)

ग्राम तलाव में शराबियों का आतंक

चोरियों का जोर, गन्दगी का ढेर, पंचायत में भ्रष्टाचार। हमने बी. डी. पी. ओ. झज्जर से लेकर मुख्यमन्त्री हरयाणा तक लिख लिया, कोई सुनवाई नहीं है। बड़े बड़े अधिकारियों तक आवाज लिखते रहे। सरकार ध्यान दे, चुस्त दुरुस्त गपौड़ सरकार लठ दल सरकार में यह हाल है।

—तारीफ सिह आर्य, प्रधान,
भूतपूर्व सैनिक यूनियन, झज्जर (रोहतक)

लेघाँ आर्यसमाज मन्दिर में वेदप्रचार

दिनांक १७—१२—८९ से २०—१२—८९ तक आर्यसमाज मन्दिर लेघां में वेदप्रचार का आयोजन किया गया। इस प्रचार से गांव के बच्चों से लेकर बूढ़ों तक विचारों में परिवर्तन हुआ। आर्यसमाज को तन-मन-धन से सहयोग देने का वचन दिया। प्रातःकालीन हवन पर १० युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया। आर्यसमाज के सिद्धांतों को मानने तथा उन पर चलने का सकल्प किया।

—कृष्ण कुमार आर्य मन्त्री आर्यसमाज लेघां जिला भिवानी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय [illegible] रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३

मुद्रित मवन् १९३०८५३

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालङ्कार, एम. ए.   पौष ०८ २०४६ वि०

वर्ष १७   अङ्क ९   २१ जनवरी, १९९०   वार्षिक शुल्क २५)   आजीवन शुल्क २५१)   विदेश मे ८ पौंड)   एक प्रति ६० पै०

आर्यसमाज का अनोखापन

—प्रा० भद्रसेन शाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) १४६०२१

एक दिन कुछ वकील बैठे बातें कर रहे थे। बातों बातों में अजय ने अपने साथियों से कहा—मित्रो ! कल हमारे घर मेरे जन्म दिन पर एक आयोजन हो रहा है। अतः आप सब से अनुरोध है, मेरे घर पर आयें। तभी अभय ने पूछा, यह आयोजन किस प्रक्रिया के अनुसार होगा ? तब अजय ने कहा—मेरे पिता जी ने अपने एक पुराने दोस्त को बुलाया है और वे मेरे इस कारोबार के गुरु भी हैं। अतः जहां तक मुझे पता है, वह आर्यसमाज की मान्यता के अनुसार ही होगा।

यह सुनते ही विजय ने कहा—यह आर्यसमाज की नई पद्धति कहां से आ गई, पहले तो ऐसी कोई बात प्रचलित नहीं थी। भारत के इतिहास के धार्मिक जगत् में वेदों की ही बात चलती थी, हां, उस को शैव, वैष्णव आदि कुछ शाखायें हैं, पर वे भी वैदिक विधि से ही सारा विधि-विधान करती हैं।

सोमेश—क्यों मित्र ! क्या तुझे आर्यसमाज के सम्बन्ध में कुछ भी पता नहीं ? भाई ! तीसरी श्रेणी से ही सामाजिक अध्ययन में कुछ न कुछ इसकी चर्चा आती ही है, कि १८७५ में स्वामी दयानन्द जी ने बम्बई में इसकी स्थापना की थी।

सर्वेश—जिस प्रकार हजरत मूसा ने यहूदी मत, हजरत ईसा ने ईसाई मत, हजरत मुहम्मद ने इस्लाम मत तथा गुरु गोविन्द सिंह जी ने खालसा पन्थ सजाया है। क्या ऐसे ही स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज के रूप में एक और पंथ खड़ा की है ? क्योंकि स्वामी दयानन्द जी से पहले आर्यसमाज की कोई चर्चा या अस्तित्व नहीं था ?

अभिषेक—इसका यह अभिप्राय हुआ, जैसे यहूदी, ईसाई आदि मत को चलाने वाले उस-उस मत, धर्म के केन्द्र बिन्दु हैं, ऐसी ही आर्यसमाज की बात होगी। ये आर्यसमाजी भी स्वामी जी की मूर्ति, चित्र या उनकी कोई पुस्तक रखकर कीर्तन करते या गीत गाते होंगे। जैसे अन्यत्र उन का प्रवर्तक ही उनका सर्वस्व होता है। यही बात ही यहां भी होगी ?

अजय—साथियो ! कई बार पिता जी के निर्देश पर मैं उनके साथ आर्यसमाज मन्दिर गया हूं। उनके सत्संगों में भाग लिया है, अपने घर पर भी जब-जब पिता जी ने कोई आयोजन किया, तो वहां कोई मूर्ति, चित्र या पुस्तक सामने नहीं आई। अतः आर्यसमाज की वैसी स्थिति नहीं है। न तो वे ऋषि दयानन्द को अवतार मानते हैं, और न ही भगवान्। उनको वे केवल पथप्रदर्शक ही मानते हैं ?

विजय—फिर ये आर्यसमाजी अपने आयोजन कैसे करते है ?

सोमेश—ये अपने कार्यक्रम में यज्ञ-हवन करते हैं और प्रभु-भक्ति के भजन बोलते हैं।

अभय—हवन तो पहले भी होते थे, फिर इनमें क्या अन्तर होता है ?

सोमेश—एक बार मैंने भी यही प्रश्न अपने गुरु जी से किया था। तब उन्होंने बताया था, कि हवन में जहां अग्नि जलाकर उसमें देशी घी तथा हवन सामग्री की आहुति देते हैं, वहां साथ-साथ ही वेदमन्त्र बोलते हैं। अर्थात् वे सब से पहले ईश्वर की भक्ति में प्रार्थना मन्त्र बोलते हैं। उनके हवन का अभिप्राय होता है—जल, वायु आदि की शुद्धि। जैसे हम प्रायः अपने घरों में धूप जलाते हैं, उसमें भी यही दृष्टि होती है। हां, ये भी प्राचीन साहित्य के अनुरूप ही अपने धार्मिक आयोजन करते हैं।

अजय—जब दोनों वैदिक विधि को मानते हैं, तब इन दोनों में क्या अन्तर है ?

सोमेश—मैंने भी यही प्रश्न एक दिन गुरु जी से पूछा था, तब उन्होंने बताया कि आर्यसमाज प्राचीन काल के यज्ञ साहित्य के आधार पर अपना कर्मकाण्ड करता है। जबकि दूसरी पद्धति में बाद की विधियां भी मिली हुई हैं। अतः वहां अनेक देवी-देवताओं की भी पूजा होती है। पर आर्यसमाज केवल प्रभु की ही भक्ति करता है और यज्ञ को देवताओं की प्रसन्नता का साधन नहीं मानता। यज्ञ को जल, वायु की शुद्धि के साधन के साथ प्रभु-भक्ति का अवसर भी स्वीकार करता है। भक्ति के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द जी की यह विशेष देन है, कि जिन्होंने केवल ईश्वर की ही उपासना का ही निर्देश किया है। इस रूप में किसी अन्य को किसी रूप में भी स्वीकार नहीं किया। हां, इसका स्पष्ट चित्रण 'मुण्डक श्रीमद्भाग' के भूमिकावाद में देखा जा सकता है, तथा महर्षि के निम्न शब्द पहली बात को स्पष्ट करते हैं—

जो 'वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं, जिनको कि मैं भी मानता हूं, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं, मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है।

मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता। किन्तु जो-जो आर्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चालचलन है, उनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हूं।

स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश पृष्ठ ५८३

अश्वमेध यज्ञ का स्वरूप

(गतांक से आगे)

—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य सभा मौरिशस



ऋग्वेद

सबसे पहले ऋग्वेद के सर्वप्रथम मन्त्र 'अग्निमीले पुरोहितम' के अर्थों पर विचार करेंगे। ऋग्वेद के प्रथम सूक्त में नौ ऋचायें हैं। इनका मधुच्छन्दा ऋषि है और अग्नि देवता है। देवता मन्त्र के विषय को कहते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस मन्त्र में आए अग्नि शब्द से ईश्वर तथा दाहगुण वाला अग्नि इन दो ही अर्थों का ग्रहण किया है।

भौतिक अर्थ के ग्रहण करने में महर्षि दयानन्द सरस्वती शतपथ ब्राह्मण का प्रमाण देते हुए दिखलाते हैं कि—'यदश्वम्' इत्यादि प्रमाणों से अग्नि शब्द से भौतिक अग्नि का ग्रहण होता है। यह अग्नि बैल के समान सब देश देशान्तरों में पहुचाने वाला होने के कारण वृष और अश्व भी कहलाता है। क्योंकि सब कलाओं के द्वारा अश्व अर्थात् शीघ्र चलाने वाला होकर शिल्पविद्या के जानने वाले विद्वान् लोगों के विमान आदि यानों को वेग से वाहनों के समान दूर दूर तक पहुचाता है। 'तूर्णी' इस प्रमाण से भी भौतिक अग्नि का ग्रहण है, क्योंकि वह उक्त शीघ्रता आदि हेतुओं से हव्यवाट् और तूर्णी भी कहाता है। 'अग्निर्वैयो०' इत्यादिक और भी प्रमाणों से 'अश्व' नाम से भौतिक अग्नि का ग्रहण किया गया है। 'वृषो०' जबकि इस भौतिक अग्नि को शिल्पविद्या वाले विद्वान् लोग यन्त्रक लाओं से सवारियों में प्रदीप्त करके युक्त करते हैं, तब 'देववाहन.' उन सवारियों में बैठे हुए विद्वान् लोगों को देशान्तर में बैलों वा घोड़ों के समान शीघ्र पहुचाने वाला होता है।

आगे महर्षि दयानन्द लोगों को प्रेरणा देते हुए कहते हैं—हे मनुष्यो! तुम लोग "हविष्मन्तम्" वेगादि गुणवाले अश्वरूप अग्नि के गुणो को खोजो। इस प्रमाण से भी अग्नि शब्द से भौतिक अग्नि का ग्रहण है। अग्नि शब्द से फिर शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'अश्व' शब्द का ग्रहण होता है। ऐसा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने भाष्य में इस अग्निमीले मन्त्र का अर्थ ईश्वर तथा भौतिक अग्नि के रूप दर्शाया है। साथ ही अग्नि का अर्थ प्रमाण देकर 'अश्व' भी प्रकट किया है।

"अग्निमीले" परमार्थ और व्यवहार विद्या की सिद्धि के लिए अग्नि शब्द से परमेश्वर और भौतिक अर्थ लिए जाते हैं। जो पहले समय में आर्य लोगों ने अश्वविद्या के नाम से शीघ्रगमन का हेतु शिल्प विद्या उत्पन्न की थी वह अग्निविद्या की ही उन्नति थीं।

निरुक्तकार महर्षि यास्क भी स्थौलाष्ठीविऋषि के मत के अनुसार अग्नि का अर्थ लिखते हुए कहते है—"अग्रणीभवति अग्र यज्ञेषु नीयते"। अर्थात् जिसका सब यज्ञो में पहले प्रतिपादन होता है। अत: अग्नि शब्द से अश्व अर्थात् जो यज्ञो में आशुगति से तीव्र गति से ले जाया जाता है। उसे अश्वमेध यज्ञ कहते हैं। वैसे भी अश्वमेध का अर्थ व्याकरण की दृष्टि से "मेधृसंगमने हिंसा यां च" इस धातु से सिद्ध होता है जिसका अर्थ है—सगतिकरण, अनेक पदार्थों के मिलाने से शिल्पविद्या का प्रकाशन, शिल्पविद्या द्वारा अनेक वैज्ञानिक पदार्थों का निर्माण करके हिंसा अर्थात् दुष्ट हिंसक लोग जो अत्याचारी है, देशद्रोही हैं उनकी हिंसा करना अश्वमेध यज्ञ के नाम से राष्ट्ररक्षा करना, समाज के नेताओं और राजा या राष्ट्रपति अथवा सेनापति का मुख्य कर्त्तव्य है। यह इस प्रकार का अश्वमेध यज्ञ समाज के अन्दर शान्ति स्थापना करने के लिए, जनता के जान माल की रक्षा करने के लिए सर्वोत्तम यज्ञ है। यदि यह यज्ञ न हो तो सारे ही यज्ञ इस अश्वमेध यज्ञ के बिना असफल हो जाते हैं। इसके साथ ही हमारे शरीर की इन्द्रियों को भी उपनिषदों में घोडे की संज्ञा दी गई है। यदि शारीरिक इन्द्रियों रूप घोडों की संयमरूपी लगाम, सधे हुए मन से न पकडी जाय तो वह भी न जाने कितने गहरे अन्धेरे में शरीररूपी रथ को डाल सकता है। यह शारीरिक आत्मिक सामाजिक संरक्षण भी अश्वमेध यज्ञ जानना चाहिए।

राजा के लिए प्रजापालन रूप जो कर्त्तव्य है उसे भी एक पवित्र कर्त्तव्य होने के कारण अश्वमेध यज्ञ ही कहा जाता है।

यजुर्वेद

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में पंचमहायज्ञ विषय में लिखते हुए यजुर्वेद का मन्त्र प्रस्तुत करते हैं—

ये समाना: समनस: पितरो यमराज्ये।
तेषां लोक: स्वधानमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥यजु. १९।४५॥

इस मन्त्र का वैखानस ऋषि है और पितर देवता है। इसके अन्तिम पद 'यज्ञो देवेषु कल्पताम' का अर्थ लिखते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं—'यह सत्यधर्म सम्बन्धी प्रजापालनरूप जो अश्वमेध यज्ञ है, सो परमात्मा की कृपा से विद्वानों के बीच में सत्यव्यवस्था की उन्नति के लिए सदा समर्थ अर्थात् प्रकाशमान बना रहे।

इसी प्रकार ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के सृष्टिविद्या विषय में यजुर्वेद का मन्त्र महर्षि दयानन्द लिखते हैं—

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्य ग्रीष्मइध्म: शरद् हवि: ॥यजु. ३१।१४॥

इस मन्त्र के संस्कृत भाष्य में महर्षि लिखते हैं—

"यत्पुरुषेण - देवा: विद्वास: पूर्वोक्तेन पुरुषेणहविषा गृहीतेन दत्तेनचाग्निहोत्राद्यश्वमेधान्तं शिल्पविद्यामय च यद् यं यज्ञ प्रकाशितवन्तविस्तृतं कृतवन्त: कुर्वन्ति, करिष्यन्ति च।" अर्थ देव जो विद्वान लोग होते है, उनको ईश्वर ने अपने-अपने कर्मों के अनुसार पैदा किया है और वे ईश्वर के दिए पदार्थों का ग्रहण करके पूर्वोक्त (अश्वमेधादि) यज्ञ का विस्तारपूर्वक अनुष्ठान करते हैं और जो ब्रह्माण्ड का रचन पालन और प्रलय करना रूप यज्ञ है उसी को जगत् बनाने की सामग्री कहते है। इस यजुर्वेद के मन्त्र में अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध (शिल्पविद्यादि) का यज्ञ करना सबके लिए करने का आदेश है न कि केवलमात्र राजा के द्वारा अश्वमेध का कोई घोड़ा छोड़कर यज्ञ किया जाय।

अथर्ववेद

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में 'वेदोक्तधर्म' विषय पर अथर्ववेद का मन्त्र उद्धृत करते हुए लिखते हैं—

"स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा, दीक्षया गुप्ता, यज्ञे प्रतिष्ठिता लोकोनिधनम्" अथर्व १२।५) इस मन्त्र के 'यज्ञे प्रतिष्ठिता' पद का भावार्थ लिखते हुए महर्षि कहते हैं—

'यज्ञे प्रतिष्ठिता' यज्ञ जो सबमें व्यापक अर्थात् परमेश्वर अथवा सब ससार का उपकार करने वाला अश्वमेधादि यज्ञ अथवा शिल्पविद्या सिद्ध करके उपकार लेना जो यज्ञ है इस तीन प्रकार के यज्ञ में सब मनुष्य यथावत् प्रवृत्ति करें। जब तक तुम लोग जीते रहो, तब तक सदा सत्यकर्म में ही पुरुषार्थ करते रहो किन्तु इसमें आलस्य कभी मत करो। ईश्वर का यह उपदेश सब मनुष्यो के लिए है।

(क्रमश.)

(गणतन्त्र दिवस पर विशेष)

दिशा बदलेगी तो दशा सुधरेगी

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

२६ जनवरी को संविधान को स्वीकृत किए हुए चार दशक पूरे हो जायेंगे। अंग्रेज ने भारत छोडने से पहिले भारत को मजहब के आधार पर बांट दिया था। लार्ड माउन्ट बैटन को ब्रिटिश सम्राट् प्रधानमन्त्री और चर्चिल ने सहमति से भारत को बांटने के लिए भेजा था और उसने अपना काम शीघ्र ही पूरा कर दिखाया। महात्मा गांधी और भारत के अन्य राष्ट्रीय नेता तो पथ निरपेक्षता के सिद्धांत के आधार पर भारत की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे, इस उद्देश्य के लिए बडे से बडे बलिदान भी अनेक भारत के सपूतों ने दिए थे। परन्तु अंग्रेज की कूटनीति सफल हुई और उन्होंने ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर दी कि देश के विभाजन को मानने के अलावा और कोई चारा नहीं रहा। परन्तु मजहब के आधार पर देश का विभाजन स्वीकार करने पर मजबूर भारत के राष्ट्रीय नेताओं ने पथ निरपेक्षता (धर्म निरपेक्षता) के सिद्धांत को नहीं छोडा और संविधान की रचना भी इसी सिद्धांत को मानकर की, जबकि विभाजित भारत का दूसरा अंग अपने आपको मजहबी (इस्लामी) राज्य कहने में संकोच नहीं करता यही नहीं बल्कि गर्व करता है।

भारत के राष्ट्रीय नेताओं की इस उदारता की अनुक्रिया तो होनी चाहिए थी, कि भारत में बसने वाले सभी सम्प्रदाय अपने आपको पथ निरपेक्षता के रंग में रंग लेते और किसी भी वर्ग के लोग अपने आपको अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक के नाम से न पुकार कर भारतवासी कहकर पुकारते। संविधान के निर्माता तो इतने उदार हो गए कि अंग्रेजी शासन में तथाकथित अल्पसंख्यकों को दी जाने वाली विशेष सुविधाओं और सुरक्षाओं का प्रावधान संविधान में कर दिया। आज देश के निष्पक्ष विचारक इस उदारता को बहुत बडी भूल मानते हैं, क्योंकि इन विशेष सुविधाओं और सुरक्षाओं को प्राप्त करने लिए स्वामी विवेकानन्द के शिष्य कहलाने वाले रामकृष्ण मिशन वाले और महर्षि दयानन्द के शिष्य कहलाने वाले डी०ए०वी० संस्थाओं वाले अपने आपको अल्पसंख्यक कहने लगे।

तथाकथित अल्पसंख्यक सम्प्रदायों की शिक्षा संस्थायें साम्प्रदायिकता के अड्डे बन गए हैं, जहां साम्प्रदायिक विचार और भावनायें पनपती हैं और फलती फूलती हैं। यह सर्वविदित है कि भारत के विभाजन में मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ और उसमें पढकर निकलने वालों का बहुत बड़ा योगदान रहा। इसी संस्था के निजाम की सरकारी नौकरियों पर छाए हुए अधिकारियों ने हैदराबाद के राज्य में भी साम्प्रदायिकता का नंगा नाच करवाया था। भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों की शिक्षा संस्थाओं के साथ-साथ धर्म स्थान भी साम्प्रदायिकता के अड्डे बनते जा रहे हैं। यही नहीं कि ईश्वर पूजा के ये पवित्र माने जाने वाले स्थान अपराधियों की शरण स्थली बनते जा रहे हैं, इन्हें अवैध हथियारों और व्यभिचार के स्थान बना डालने में भी संकोच नहीं किया जा रहा।

जो प्रगति देश ने कृषि और उद्योग के क्षेत्रों में पिछले ४२ वर्षों में की है, उससे देश सम्पन्न और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरता दीखने लगा है, परन्तु जनसंख्या की बाढ इसकी सम्पन्नता को बहा रही है और अलगाववाद तथा आतंकवाद रूपी रोग देश की काया को क्षीण और दुर्बल ही नहीं कर रहे, अंग भंग करने की कुचेष्टा कर रहे हैं।

पथ निरपेक्ष (धर्म निरपेक्ष) राज्य में निरन्तर बढती हुई जनसंख्या और साम्प्रदायिकता तथा अलगाववाद पर नियन्त्रण करना अति आवश्यक है। जनसंख्या की बाढ के लिए गरीबी और अज्ञानता तो जिम्मेदार हैं ही, साम्प्रदायिकता भी अपना गुल खिला रही है। अपनी संख्या बढ़ाने की होड में कुछ सम्प्रदाय लगे हैं और कुछ इसकी प्रेरणा दे रहे हैं। आवश्यकता है गरीबी और अज्ञान को दूर करने के साथ-साथ सम्प्रदायों की होड को खत्म करने के लिए सब के लिए चीन की तरह कानून बनाने की और उस पर अमल करने की।

साम्प्रदायिकता तथा अलगाववाद—देश की आर्थिक प्रशासनिक तथा देशवासियों की भावात्मक एकता में बाधक समस्याओं की जड में है हमारी साम्प्रदायिक समस्या (जो अलगाववाद को भी जन्म देती है) और कृषि और उद्योगों के क्षेत्र में राष्ट्र की उपलब्धियों को कारगर नहीं होने देती तथा उसे महाशक्ति के रूप में नहीं उभरने देती। संविधान की रचना करने वाले मनीषियों ने साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर सर्वसम्मति से भारत को पथ निरपेक्ष (धर्म निरपेक्ष) संविधान दिया था। आशा की जाती थी कि उस संविधान के चलने जिस साम्प्रदायिकता ने भारत को तोडा था, वह सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाएगी और भारत के सब नागरिक बिना भेदभाव के अपने मौलिक अधिकारों का परस्पर सद्भावना के वातावरण में उपभोग कर सकेंगे। मानव अधिकारों का जब और जहां हनन होगा सब मिलकर उसका निराकरण करेंगे, और संकीर्ण सम्प्रदाय और जातिवाद सिर नहीं उठा पायेंगे। परन्तु संविधान बनने के ४० वर्ष बाद आज स्थिति उससे उलटी होती जा रही है। राज नेताओं पर तो यह आरोप सिद्ध हो ही जाता है कि राजनैतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए वे साम्प्रदायिकता और जातीयता का सहारा ही नहीं लेते उसे भडकाते भी हैं। परन्तु इस खेल में तथाकथित धर्माचार्य भी पीछे नहीं है। यह कहना कठिन है कि वे राजनेताओं का हथियार बनते हैं या उन्हें अपने वर्चस्व को बढाने के लिए हथियार बनाते हैं।

इतना तो स्पष्ट है कि अपने आपको धर्म का ठेकेदार कहने वाले ये लोग गीता के शब्दों में कामात्मा कहे जा सकते हैं धर्मात्मा नहीं। राजनेताओं और तथाकथित धर्माचार्यों में जो सौदा होता है उसका नाम है तुष्टिकरण। राजनेता इस सौदे करने की कहिए या तुष्टीकरण की नीति को जब अपनाते है तब साम्प्रदायिकता का भाव बाजार में बढने लगता है। सभी कामात्मारूपी धर्माचार्य फिर बाजार में इसी वस्तु को लेकर उपस्थित होने लगते है और उसकी कीमत चुकाने लगते है। जीवन की न्यूनतम और मौलिक इच्छाओं (आवश्यकताओं) की तृप्ति तो होनी ही चाहिए, परन्तु ये सौदा करने वाले लोगों का इन इच्छाओं और आवश्यकताओं से मतलब नहीं है, इनकी इच्छायें तो आवश्यकताओं की श्रेणी में नहीं वासनाओं की श्रेणी में आती हैं। जिस शराब की सभी धर्मगुरुओं ने एक दूसरे से बढकर निन्दा की, और जिसकी लत और फलाव के कारण करोड़ों बच्चे और महिलायें जीवन की न्यूनतम आवश्यकतों से वंचित हो रही हैं, उनके बारे में ये धर्माचार्य कभी आंदोलन नहीं करते, नरक का जीवन जीने के लिए बाध्य करोडों गरीबों के लिए तो इनकी आत्मा नहीं तडपती, ये तो वही मांगे रखते है और प्रश्न उठाते हैं जिनसे मानव-मानव के बीच घृणा फैले और वे एक दूसरे के खून के प्यासे हो जायें और अंधे होकर अमानुषिक कृत्यों को करने में न संकोच करें और न अन्तरात्मा की आवाज मुखर हो सके।

ऐसी इच्छाएं जो जीवन की मौलिक आवश्यकताओं से जुडी हुई हैं, वासनाएं ही कहलाएंगी। जैसे एक व्यक्ति की वासनाएं होती है वैसे ही सम्प्रदायों और वर्गों की भी होती हैं। वासनाओं की तृप्ति कभी नहीं होती, यदि एक की तृप्ति हो गई तो दूसरी पैदा हो जाती है और यह सिलसिला कभी रुकता नहीं, अन्त में वे वासनाएं मनुष्य को पुरुषार्थ के मार्ग से हटाकर उसके सर्वनाश का कारण बनती है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

उपायुक्त के प्रयास से आर्य विद्यालय सभागार का कार्य आरम्भ

पानीपत, १४ जनवरी (निस)। पानीपत जिला उपायुक्त विजय कुमार ने यहां एक शिलान्यास समारोह में लगभग ६० हजार रु० कुछ ही मिनटों में एकत्रित करा दिए। जिला उपायुक्त आर्य कन्या उच्च विद्यालय में एक सभागार के शिलान्यास समारोह में भाग लेने आए थे। विद्यालय के प्रबन्धक लाला योगेश्वर चन्द ने उपायुक्त से आग्रह किया था कि विद्यालय में दो कमरों की आवश्यकता है। उपायुक्त ने एक कमरे के लिए धन प्रदेश सरकार की ओर से देने की घोषणा की। उन्होंने उपस्थित लोगों से कहा कि दूसरे कमरे के लिए आप सब लोग यही धन देने की घोषणा कर दें।

उपस्थित लोग उपायुक्त के आग्रह पर कुछ समय तक अवाक रह गए, लेकिन उपायुक्त मच से धन सग्रह की अपील करते रहे। उपायुक्त के आग्रह पर धनिक वर्ग ने रुपया देने की घोषणा शुरू की। एक दूसरे को धन देते देख वहां उपस्थित अधिकांश लोगों ने धन सग्रह सूची में अपना नाम लिखवा दिया।

दिलचस्प बात यह रही कि विद्यालय की प्रिंसिपल, अध्यापिकाएं व छात्राएं भी धन देने में पीछे नहीं रही। दो छात्राओं ने पांच-पांच सौ रुपए दिए।

विद्यालय की महिला सेवक व आर्यसमाज बड़ा बाजार के सेवक ने भी आर्थिक सहयोग दिया। जिला उपायुक्त के साथ आए पुलिस जवान ने भी ५१ रुपए दिए। पुलिस सिपाही द्वारा दान देने पर जिला उपायुक्त ने कहा कि पुलिस जवान की दान देने की सोच बनी, यह भी एक महत्वपूर्ण बात है। ६० हजार रुपए की धनराशि पर जिला उपायुक्त ने अनुदान दिलाने का भी आश्वासन दिया।

इस अवसर पर उन्होंने महर्षि दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने उपस्थित छात्राओं से कहा कि वह अपने जीवन में आर्य शिक्षण संस्थाओं की पहचान बनाए रखें। सभागार का शिलान्यास करने से पूर्व उन्होंने सभागार के शिलान्यास पर चार वर्ष की हुई चोरी पर दुःख प्रकट किया। उन्होंने कहा कि लालफीताशाही के कारण सरकारी अनुदान फाइलों में अटका रहा।

उल्लेखनीय है कि चार वर्ष पूर्व कांग्रेसी शासन के वित्त-मंत्री कटार सिंह छोकर ने विद्यालय द्वारा सवा लाख रुपए की धन राशि जमा कराने पर मेचिंग ग्रांट दी थी। कन्या विद्यालय के सभागार का यह रुपया स्थानीय नगरपालिका को पूर्व सरकार ने भेज दिया था। परन्तु अधिकारी वर्ग ने विद्यालय प्रबन्धक समिति को धन नहीं दिया। पालिका अधिकारी वर्ग का तर्क था कि सभागार का निर्माण पालिका कराएगी।

विद्यालय की प्रबन्धक समिति पालिका की देख-रेख में सभागार का निर्माण कराने के लिए तैयार नहीं थी। इस कारण धन पिछले चार वर्षों से पालिका बैंक खाते में जमा रहा। पानीपत जिले के गठन के पश्चात् जिला उपायुक्त विजय कुमार की यहां नियुक्ति के पश्चात् विद्यालय की प्रबन्ध समिति ने यह मामला उनके सम्मुख रखा। उपायुक्त ने यह मामला एक ही दिन में निबटा दिया। उन्होंने ढाई लाख रुपए प्रबन्धक समिति को ब्याज सहित दिलवाया।

सभागार का नाम श्रीमती मिश्री देवी सभागार रखा गया है। श्रीमती मिश्री देवी द्वारा आर्यसमाज को दान दी गई जमीन को बेच कर ही सवा लाख रुपए पर अनुदान प्राप्त किया गया है। सभागार की नीव में एक कांच के मर्तबान में 'सत्यार्थ प्रकाश' रखा गया है। चांदी की दो तश्तरियों पर वेदों के नाम लिखकर दबाए गए हैं।

उपमण्डल अधिकारी ने बताया कि सभागार निर्धारित समय से भी कम समय में बनेगा। नभाटा

टंकारा का ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि में २२, २३, २४ फरवरी १९९० शिवरात्रि पर विशाल ऋषि मेला का आयोजन किया गया है। आर्य परिवारों को टंकारा ले जाने के लिए २०-२-९० को आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से स्पेशल बस चलेगी। टंकारा के साथ यात्री देखेंगे—दादर, नगरहवेली, दमन, बम्बई, खांडला, महाबालेश्वर, गोवा, वास्कोडिगामा, अजन्ता, एलोरा की गुफाओं, इंदौर का कांच मन्दिर, आगरा का ताजमहल, मथुरा की कृष्ण जन्म भूमि। आज ही १०३५ रुपए प्रतियात्री किराया देकर अपनी सीट सुरक्षित करा लें। निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्यसमाजों में होगी। जहां ऐसा न होगा यात्री अपने व्यय से करेंगे। यह केवल किराया है।

—रामचन्द्र आर्य यात्रा प्रबंधक
466 भीम नगर, गुडगावा हरयाणा
फोन : 01272-23523 पी०पी०

रोहतक में मकर सक्रांति पर्व पर यज्ञ

१४.१.९० को महर्षि दयानन्द विद्यालय आर्यसमाज जींद रोड रोहतक में सक्रांति के पर्व पर एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ का समापन सभा के पं० अर्जुनदेव द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्यालय के ४० छात्रों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा धूम्रपान आदि बुराइयों का त्याग किया।

ओमप्रकाश सिंह प्रधान, मन्त्री बहन सुमित्रा देवी उपप्रधान चौ. वजीरसिंह, प्रचार मन्त्री बलराज शास्त्री उपमंत्री बहन धर्मोदेवी

—आर्यसमाज महर्षि दयानन्द विद्यालय जींद रोड रोहतक

आर्यसमाज के पर्वों की सूची वर्ष १९९०

1	मकर संक्रांति	रविवार	14-1-90
2	बसन्त पंचमी	बुधवार	31-1-90
3	सीताष्टमी	रविवार	18-2-90
4	दयानन्द बोध रात्रि	शुक्रवार	23-2 90
5	लेखराम तृतीया	बुधवार	28-2-90
6	नव सस्येष्टि (होली)	रविवार	11-3-90
7	आर्यसमाज स्थापना दिवस	मंगलवार	27-3-90
8	राम नवमी	मंगलवार	3-4-90
9	हरि तृतीया	मंगलवार	24-7-90
10	श्रावणी उपाक्रम	सोमवार	6-8-90
11	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	मंगलवार	14-8 90
12	विजया दशमी (पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जयन्ती)	शनिवार	29-9-90
13	गुरु विरजानन्द दिवस	मंगलवार	2-10-90
14	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	गुरुवार	18-10-90
15	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	रविवार	23-12-90

नोट—इनके अतिरिक्त स्वतन्त्रता दिवस 15 अगस्त, 1990, गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी, 1990 और प्रत्येक रविवार को अवकाश रहेगा। —वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री

- मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द
- मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी
- मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

आर्यसमाज की प्रगति में अवरोध और उसके उपाय

(आचार्य वेदभूषण, अधिष्ठाता—अंतर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-५०००२७)

हम भटक रहे हैं। हमारे सामने कोई सुनिश्चित ध्येय नहीं है। हम संगठन की दृष्टि से एकदम खोखले हो चुके हैं, हमारा नेतृत्व संदेह और आशंकाओं में कुण्ठाग्रस्त हो चुका है। वास्तविकता तो यह है कि हमारे तथाकथित नेताओं में दिशा निर्देश की योग्यता का अभाव है। अपने महान् उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमें किस पथ से जाना है इस का बोध उन्हें नहीं है। केवल एक विद्या उन्होंने सीख ली है कि गद्दी पर दीर्घकाल तक कैसे चिपके रहें, पर हमारा उद्देश्य गद्दी नहीं प्रगति है।

स्वार्थी चाटुकारों के टोले में जब नेता या राष्ट्र फस जाता है तब समाज और राष्ट्र के दुर्भाग्य का उदय होने लगता है। आज आर्य-समाज के सगठन की स्थिति ऐसी हो चुकी है। पर आर्यसमाज सगठ-नात्मक दृष्टि से भले ही जर्जर हो रहा है, पर सैद्धांतिक दृष्टि से प्यारे महर्षि दयानन्द सरस्वती का तप और बलिदान रंग ला रहा है। वह कभी व्यर्थ नहीं जाएगा, और न हम व्यर्थ जाने देंगे। महर्षि दयानन्द ने जिन सिद्धातों का प्रतिपादन किया और वेदों का पुनरु-द्धार किया आज समूचे विश्व पर उसका प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। वेदों पर आज सारे विश्व में कार्य हो रहा है। वेदों के बढते हुए प्रचार को देखकर वेदों के प्रच्छन्न विरोधियों ने अब एक नया नारा दिया है। पहले वे कहते थे कि वेद गडरियों के गीत थे, पर अब वे कह रहे हैं कि वेद केवल अध्यात्म विद्या के ग्रन्थ हैं।

झूठ के पैर नहीं होते। असत्य निराधार होता है। हमें उन लोगों के चिन्तन के स्तर पर हसी आती है, जो वेदों को केवल अध्यात्म ज्ञान के ग्रंथ कहते हैं।

यह बात वैसी ही हास्यास्पद है जैसे कि कोई कहे कि अमुक व्यक्ति गणित का श्रेष्ठतम ज्ञाता है, पर उसे एक से दस तक की गिनती का ज्ञान नहीं है।

समझदार व्यक्ति को जान लेना चाहिए कि अध्यात्म विद्या भौतिक विद्या की ही चरम स्थिति है। भौतिक ज्ञान के बिना अध्यात्म जाना ही नहीं जा सकता।

पर हम सैद्धांतिक दृष्टि से संसार के मस्तिष्क पर छा रहे हैं। किन्तु संगठनात्मक दृष्टि से हम दुर्बल और जर्जर हो गए हैं। इसका कारण हम बतला चुके हैं कि केवल कोई अकेला व्यक्ति ही इसके लिए उत्तरदायी नहीं है। हम सब इस शिथिलता के लिए न्यूनाधिक जिम्मेदार हैं।

यदि हम किसी क्षात्रवृत्ति वाले को नेता बनायेंगे तो वह अपनी वृत्ति के अनुरूप ही समाज को ले जाएगा। यदि वणिक् वृत्ति वाले को नेता बनायेंगे तो वह अपनी वृत्ति के अनुरूप ही कार्य करेगा। इस में नेता का दोष नहीं है, दोष है बनाने वालों का। श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले (आनन्द बोध) के युग में मानना पड़ेगा कि—सार्वदेशिक सभा में धन और सम्पत्ति में भारी मात्रा में प्रगति हुई है। यह परिणाम उनकी वृत्ति का ही है।

आज हमारी स्थिति ऐसी ही है जैसे कि—मान लीजिए कि अपने घर में एक सदस्य बीमार पड गया है, उसके लिए वैद्य ने बहुमूल्य औषधियां लिख दीं। गृह के स्वामी ने उन औषधियों को मंगवा लिया है, पर गृह स्वामी रोगी को औषधि सेवन नहीं कराना चाहता। उसकी मान्यता है कि—यदि बहुमूल्य दवा अभी खिला दी गई तो फिर रोगी की मृत्यु के समय इतनी बहुमूल्य दवा खरीदी न जा सकेगी। यदि बीमार को समय पर उचित दवा दे दी जाए तो वह स्वस्थ हो जाएगा। वह क्योंकर मरेगा? स्वस्थ हो जाएगा तो और भी धन कमा लेगा।

पर हमारा गृहस्वामी कुण्ठाग्रस्त है। आज यदि मैं पद त्याग कर दूं तो यह सारी जमा पूंजी लुट जाएगी? इसलिए वह तिजोरी की चाबी को अपनी कमर में ही लटकाए घूमना चाहता है? खराबी नीयत की नहीं समझ की होती है। यह तमाशा हर घर में पिता पुत्र में भी देखा जा सकता। यद्यपि उस बूढे को पता है कि तेरे सिर पर मौत मण्डरा रही है। एक पैर कब्र में लटक रहा है, पर चाबी छोडने को वह तैयार नहीं होता।

ये ही स्थितियां आज हमारी संस्थाओं की हैं। पर हम कहते हैं कि—बूढे को हटाए बिना भी आर्यसमाज का उद्धार सम्भव है? आवश्यकता है कि—आत्म निरीक्षण करें और उन दोषों को दूर करें जिन दोषों के कारण हम शिथिल हो चुके हैं।

प्रथम आवश्यकता—आर्यसमाज की नियमावली में पहले मण्डल पद्धति थी। हर दस सदस्यों का एक मण्डल होगा, वह मण्डल अपने में से किसी एक को अन्तरग सभा के लिए बहुमत से निर्वाचित कर भेजेगा। इस नियम को पूर्ववत् स्वीकार किया जाना चाहिए।

दूसरा नियम प्रति व्यक्ति अपनी आय का दशांश भाग सदस्यता शुल्क के रूप में देगा। अब यह भी बदला गया, इसे भी पूर्ववत् ही रखना चाहिए।

तीसरा नियम सत्सग में पच्चीस प्रतिशत उपस्थिति का है। यह नियम अभी भी है, किन्तु इसमें पच्चीस प्रतिशत की बजाए ७५ प्रतिशत उपस्थिति का प्रावधान कर दिया जाए। इन तीनों नियमों का दृढता से पालन करना अनिवार्य कर दिया जाए।

सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता

आर्यसमाज की नियमावली के इन्हीं आधारों को लेकर प्रांतीय सभा और सार्वदेशिक सभा की नियमावली में एकरूपता लाई जाए। प्रांतीय सभाएं अपने नियम स्वयं बनाये वाला प्रावधान समाप्त कर सबकी समान नियमावली बने। नीचे से ऊपर तक प्रतिनिधि सदस्य भी आनुपातिक रूप से ही आए, न कि—सब प्रांतों से समान सख्या में प्रतिनिधि लिए जाएं। सर्वत्र मण्डल पद्धति रखी जाए। इस से एकाधिकार नष्ट हो जाता है।

तीसरी आवश्यकता—प्रत्येक प्रांतीय सभा में आय-व्यय लेखा निरीक्षक दल हो। प्रत्येक आर्यसमाज अपना आय-व्यय प्रांतीय आय-व्यय लेखा निरीक्षक दल द्वारा प्रमाणित कराकर प्रमाण-पत्र प्राप्त करे। कोई आर्यसमाज अपनी स्वतन्त्र रसीद बुकें न छपवाएं। प्रांतीय सभाएं ही रसीद बुकें छापें और समाजें उन्हीं से रसीद बुकें क्रय कर के प्राप्त करें और उन्हीं रसीद बुकों पर धन संग्रह हो।

इसी प्रकार प्रांतीय सभाएं और सार्वदेशिक सभा से अपने आय व्यय की जांच करा प्रमाण-पत्र लें। आर्यसमाज कोई राजनीतिक संस्था नहीं है। हमें सिद्धान्तहीन व्यक्तियों की सख्या नहीं बढानी है, अपितु सच्चे ईमानदार, चरित्रवान् आदर्श व्यक्तियों का निर्माण करना है। अतः आर्यसमाज के समारोहों में अवसरवादी और राज-नैतिक लोगों को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए।

भले ही हम संख्या में कम रहें पर भले लोगों का आदर्श पुरुषों का सगठन बनाकर शांतिपूर्वक मानव निर्माण के कार्य को गतिशील बनाएं।

सबसे महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य

(१) प्रत्येक आर्यसमाज में संस्कृत की सायंकालीन पाठशालाएं चलाई जाएं। इन पाठशालाओं में संस्कृत की ऐसी पुस्तकें तैयार करके पाठ्यक्रम में रखी जाएं, जिनसे संस्कृत भाषा के ज्ञान के साथ-साथ सैद्धांतिक ज्ञान भी हो जाए। (क्रमशः)

स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन

१. ११ जनवरी को हवन यज्ञ के पश्चात् आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल बठिण्डा में श्री निरजनलाल जी आर्य मानसा मण्डी वालों की प्रधानता में स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन मनाया गया। श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी ने गुरुवर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जीवन सम्बन्धी सेवाओं का वर्णन करते हुए और हैदराबाद आर्य सत्याग्रह को फील्ड मार्शल के रूप में सफलता दिलाने को इनके तप और त्याग की घटनाओं को बताते हुए उनके चरण चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

२. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी द्वारा स्थापित दयानन्द मठ रोहतक में भी १० से १४ जनवरी तक स्वामी प्रेमानन्द जी की अध्यक्षता में स्वामी जी का जन्म दिन मनाया गया। प्रतिदिन प्रात. विशेष यज्ञ तथा स्वामी प्रेमानन्द जी के वेदप्रवचन होते रहे।

१४ जनवरी को स्वामी जी की जीवनी तथा उन द्वारा किए गए सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों पर म० भरत सिंह जी वानप्रस्थी मन्त्री दयानन्द मठ रोहतक, चौ सूबेसिंह पूर्व उपमण्डल अधिकारी रोहतक, आचार्य बलवीर सिंह जी, श्री वेदप्रकाश जी साधक, श्री वेदपाल जी वाचस्पति ने प्रकाश डाला। सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी शास्त्री ने इस अवसर पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को श्रद्धांजली देते हुए उन्हें एक आदर्श नेता, सन्यासी, उपदेशक तथा सुधारक बताया और सुझाव दिया कि दयानन्द मठ में स्वामी जी का भव्य स्मारक बनाया जावे, जिससे सारे हरयाणा में आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार हो सके। यहां सेवानिवृत्त अध्यापकों को वैदिक धर्म प्रचार से दीक्षित करके प्रचारार्थ ग्रामों में भेजा जावे और स्वामी जी के नाम पर धर्मार्थ औषधालय तथा आयुर्वेदिक फार्मेसी भी चलाई जा सकती है।

—केदारसिंह आर्य

हरयाणा में आर्यसमाज तथा गुरुकुलों के उत्सव

गोशाला बाबा फुल्लनाथ गोशाला उचाना खुर्द जि० जींद	(यजुर्वेद पारायण यज्ञ)	२२ से २८ जनवरी
आर्यसमाज औरगाबाद मितरोल जि. फरीदाबाद		२ से ४ फरवरी
,, कंवारी जिला हिसार		६ से ११ ,,
,, कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत		१०, ११ ,,
,, तिगाव जिला फरीदाबाद		२४ से २६ ,,
,, गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक (हीरक जयन्ती)		२२ से २५ ,,
,, सौलधा जिला रोहतक		२२ से २३ ,,
,, गुरुकुल धीरणवास जि. हिसार		२४ से २६ ,,
,, गुरुकुल गदपुरी जि. फरीदाबाद		२ से ४ मार्च

आर्यसमाज तथा गुरुकुलों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने वार्षिक उत्सव तथा वार्षिक वेदप्रचार फरवरी या मार्च मास में रख कर सभा को शीघ्र सूचित करें, जिससे उपदेशकों तथा भजन मण्डलियों का कार्यक्रम बनाने में सुविधा रहे।

—सत्यवीर शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

◉ हमें अपने महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलकर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करना चाहिए।

हिन्दीप्रेमी छात्रा का अपमान

गत १४, १५—११—१९८९ को नेहरू जन्मशताब्दी समारोह में हमारे तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने देश के कोने-कोने से आए हजारों बालक बालिकाओं को अंग्रेजी भाषा में भाषण देना प्रारम्भ किया। तब गुजरात प्रदेश की एक साहसी बालिका अम्बिका ने उनसे अनुरोध किया कि क्योंकि अधिकांश बच्चे अंग्रेजी नहीं जानते इसलिए आप हम सबको राष्ट्रभाषा हिन्दी में सम्बोधित करें, इस पर समारोह के प्रबन्धक तथा सुरक्षा कर्मचारियों ने उस बालिका को घेर लिया तथा उसे डरा धमका कर सभा कक्ष से बाहर निकाल दिया इतना ही नहीं उस निपुण तथा असाधारण योग्य अम्बिका को पारितोषिक लेने के लिए तीनमूर्ति भवन नई दिल्ली में घुसने तक नहीं दिया गया, राष्ट्रभाषा हिन्दी की इस प्रकार अवहेलना बहुत खेदजनक है। जब विदेशों से आने वाले शासक—रूसी, जापानी, चीनी, फ्रांसिसी इत्यादि अपनी राष्ट्रभाषा में यहां आकर बोलते हैं हमारे देश के शासकों को राष्ट्रभाषा हिन्दी में अपने देश के बच्चों को सम्बोधित करने में संकोच कैसा?

—दीनानाथ सेठ, प्रधान
आर्यसमाज सैक्टर १५ फरीदाबाद

दिशा बदलेगी तो दशा सुधरेगी

(पृष्ठ ३ का शेष)

यही बात सम्प्रदायों की वासनाओं की पूर्ति के सम्बन्ध में लागू होती है। जैसे-जैसे साम्प्रदायिक वासनाएं पूरी होती जाती हैं और नई पैदा होती रहती हैं और उनकी पूर्ति की प्रक्रिया में राष्ट्र में भावात्मक एकता, पुरुषार्थ और कर्मठता कम होती जाती है, राष्ट्र कमजोर होता जाता है और टुकड़े-टुकड़े होता जाता है। तुष्टीकरण की नीति जब-जब बरती गई देश कमजोर हुआ और न्याय बुद्धि से काम लिया तो राष्ट्र मजबूत बना। तुष्टीकरण से यदि एक की वासना पूरी होती है तो किसी दूसरे से अन्याय होता है। देश की दशा तुष्टीकरण से बिगड़ेगी और बिगड़ी है। चिन्तन की दिशा न्याय की ओर होनी चाहिए तुष्टीकरण की ओर नहीं। राष्ट्र को महान् राष्ट्र बनाने के लिए, भावात्मक एकता के लिए, सब को समान रूप से न्याय देने के लिए चिन्तन की दिशा बदलने की जरूरत है।

शोक प्रस्ताव

श्री प० जयदेव जी जतोई वाला नम्नौर की धर्मपत्नी श्रीमती गणेशी बाई का २५-१२-८९ सोमवार को प्रात. १०-१५ बजे देहान्त हो गया है। जिनका दाह संस्कार वैदिक रीति अनुसार किया गया और इनके पार्थिव शरीर की शोभायात्रा के साथ हजारों लोगों ने भाग लिया तथा पं० जी ने अपनी धर्मपत्नी की स्मृति में 2100/- रु० की धन राशि विभिन्न-विभिन्न संस्थाओं को दान रूप में दान दिया।

गोशाला का वार्षिक उत्सव मना

बहादुरगढ़, १६ जनवरी (निस)। आज यहां के निकटवर्ती गांव मांडोठी में श्री आर्यावत गोशाला का वार्षिक उत्सव ब्लाक समिति बहादुरगढ़ के पूर्व चेयरमैन चौधरी सूरजमल की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें बहादुरगढ़ के आसपास के लगभग सौ ग्रामों के प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सभी वक्ताओं ने गोहत्या बन्द करने की पुरजोर मांग करते हुए गोशाला के लिए दिल खोलकर दान दिया। स्थानीय विधायक चौधरी मांगेराम ने यज्ञ में भाग लिया व ११,०० रुपए गोशाला में दिए। युवा जनता दल श्री सतपाल राठी 25,00 रुपए दान मे देते हुए गोशाला में एक बछिया भी दान में दी। सेठ हरकिशन, चौधरी ओमप्रकाश तहलान आदि दानवीरों ने गुप्त दान दिया।

नभाटा

धूम्रपान का शैतान

धूम्रपान मद्यपान की तरह भयंकर दुर्व्यसन है। धूम्रपान करने वालों ने भी नाक में दम कर दिया है। वह स्वयं तो मरता ही है आस पास के लोगों को भी मारता है। उन्हें भी धूम्रां पिलाता है। वह अपनी आदत से मजबूर है। चाहे कहीं सभा सोसायटी में बैठा हो चाहे किसी दफ्तर में डयूटी पर हो, इसे अपने आस-पास बैठे व्यक्तियों का जरा भी ख्याल नहीं है। यात्रा के समय बस, रेल में नियमानुसार धूम्रपान करना मना है फिर भी कानून का उल्लंघन करके धूम्रपान करता है।

यह हाल है पढ़े-लिखे एजुकेटिड अपटूडेट लोगों का, जो जरा नहीं सोचते कि सार्वजनिक स्थानों में धूम्रपान नहीं करना चाहिए। इनको अपनी मूर्खता का परिचय देने में जरा भी लज्जा नहीं आती। जब जलती हुई बीडी सिगरेट के टुकडों को लापरवाही से फेंक देते हैं। मैं अपने एक मित्र के साथ पौराणिक मन्दिर में गया जहा कथा कीर्तन हो रहा था। मैंने देखा वहा भी लोग धूम्रपान कर रहे थे। मैंने जोर से आवाज लगाकर कहा ओ धूम्रपान करने वालो कुछ तो शर्म करो, कम से कम धार्मिक स्थानों का वातावरण तो दूषित मत करो। सब लोग मेरी ओर देखने लगे। तभी पण्डित जी बोले, भई धूम्रपान मत करो, जिसे करना है बाहर जाकर करो।

धूम्रपान करने वाला मानता भी है कि यह गन्दी आदत है, सेहत के लिए खतरनाक है फिर भी नहीं छोडता, बडा दुःख होता है जब मैं छोटे-छोटे नाबालिग लडको को चोरी-चोरी बीडी सिगरेट पीते देखता हू। उनके फूल जैसे चेहरे धूम्रपान करने से मुरझा जायगे और उभरती जवानी ठप हो जाएगी।

धूम्रपान करने वालों से निवेदन है यदि वे अपनी आदत को नही छोड सकते तो कम से कम इतना जरूर करें कि सार्वजनिक स्थानों में धूम्रपान न करें और दूसरे लोगों का ध्यान रखें जो धूम्रपान नही करते। बच्चों के सामने कभी धूम्रपान न करें यदि अपने बच्चों से प्यार है।

धूम्रपान करने से आंखों के देखने की और कानो के सुनने की शक्ति क्षीण हो जाती है। फेफडों में कार्बन जम जाता है जिससे टी.बी और दमा जैसी बीमारी बन जाती है। डाक्टरों की रिपोर्ट है कि कैंसर और हर्ट अटेक धूम्रपान करने वालों को अधिक होता है।

भला इसी में है कि इस खतरनाक आदत को फौरन छोड देना चाहिए। जिन लोगों ने छोड दिया है उनका कहना है कि जो दिमाग में तनाव हमेशा बना रहता था वह अब नहीं है और हाथ पाव में शिथिलता रहती थी वह भी दूर हो गई है। जब कभी तलब लगे तो दो तीन फाक मीठे सन्तरे की चूस लो, तलब मिट जाएगी। एक महीने में ही आपको धूम्रपान से नफरत हो जाएगी। चेहरे पर चमक आएगी और खुशी महसूस होगी।

कानून की दृष्टि से सार्वजनिक स्थानों में धूम्रपान करने वाला व्यक्ति भी एक शराबी की तरह सदाचार की श्रेणी में रखने योग्य नही है।

—देवराज आर्यमित्र
वैद्य विशारद, आर्य सभा बल्लबगढ

अवैध शराब की बिक्री धड़ल्ले से होरही है

हसनपुर, (निस)। हसनपुर ब्लाक के गांव रसूलपुर व बघोला में इन दिनों अवैध शराब की बिक्री धड़ल्ले से हो रही है।

पता चला है कि उक्त मिलावटखोर शराब की बोतलें पलवल से खरीद कर ले जाते हैं। बाद में गांव में ले जाकर शराब में पानी तथा नशे के इंजैक्शन मिलाकर इसे बेचते हैं, अपनी कमाई के स्वार्थ में लिप्त धन्धेबाजों का उत्तर होता है कि यह धन्धा स्थानीय ठेकेदार और पुलिस की मिलीभगत से हो रहा है। शराब की आपूर्ति कुछ निजी वाहनों से हो रही है। दैनिक वीर अर्जुन

१३ जनवरी नेता जी सुभाष चन्द्र बोस पर विशेष--

आजादी का परवाना—बोस

आजादी का परवाना था देश का वीर सिपाही।
नेता जी ने हिन्द की खातिर मुसीबत उठाई॥
ऊंचे पद को ठोकर मारी मिट्टी में अरमान मिले।
नजर बन्द जेल सही देशभक्ति की खान मिले।
जा जर्मन में नेता साथी हिटलर से आन मिले।
आजाद हिन्द फौज बनाई जयहिन्द करते जवान मिले।
दिल्ली चलो, बढो आगे नेता ने बात बताई॥१॥
खून के बदले आजादी दूंगा हौसला बुलन्द कराया।
भूखे प्यासे जवान मिले ना भूलके कदम हटाया।
करो मरो का मन्त्र देकर आगे कदम बढाया।
एक आवाज मे दस करोड जब तुलादान करवाया।
सुहाग बिन्दी गहने सोंपे थी हिन्द में ऐसी लुगाई॥२॥
होवेंगे आजाद अब देर नही लागण की।
जुल्म ज्यादती करण आल्या की हकूमत भागण की।
कही गाधी नेहरू कही लक्ष्मी ब्रिगेड लागण की।
गर्दन कटवा लेगों ना पीछे भागण की।
वीर बोस का नाम सुन अंग्रेजो के चढी निवाई॥३॥
काप गए अंग्रेज अब यहा रहना मुश्किल होग्या।
जाते-जाते जुल्मी वो बीज विघ्न के बोग्या।
भारत देश से न्यारा ये पाकिस्तान होग्या।
देख सका ना आजादी वीर वो पहलम ही सोग्या।
रामचन्द्र नलवे वाले थोडी हकीकत गाई॥४॥

—रामचन्द्र आर्य, बडवा (भिवानी)

शहीदों का स्मरण

डबवाली, दिसम्बर महीने की १६ से २३ तक की तारीख शहीद सप्ताह के रूप मे जानी जाती हैं। १६ दिसम्बर को भाई श्याम लाल शहीद हुए थे जबकि तेईस दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने शहादत प्राप्त की थी। इसी मध्य काकोरी काण्ड के सन्दर्भ में पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाखां, राजेन्द्र लाहिडी तथा ठाकुर रोशन सिंह हंसते-हंसते फांसी पर झूल गए थे। इन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए आर्यसमाज गिदडबाहा, वैदिक सत्संग सभा मण्डी डबवाली तथा आर्यसमाज गांव रुईयां मल्काणा मे देश के इन शहीदों को याद किया गया। गिदडबाहा की सभा मे प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु तथा शेष दोनो सभाओं मे प्रो० अशोक आर्य ने शहीदों के जीवन पर विशद प्रकाश डाला।

—अशोक आर्य पत्रकार गिदडबाहा

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य सभासदों से मार्च ९० तक का वार्षिक चन्दा उनकी आय के शतांश के अनुसार प्राप्त कर लेवें और उन्हें रसीद दे देवें। जिन समाजों के पास रसीद बही नहीं है, वे छपवा लेवें अथवा सभा कार्यालय रोहतक से ४)०० रुपए प्रति रसीद बुक (१०० रसीद) के लिए रोहतक भेजकर मंगवा लेवे। सभा ने रसीद बही छपवा दी है।

आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार वही आर्य सभासद चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं, जिनका नाम सदाचारपूर्वक आर्यसमाज के रजिस्टर में २ वर्ष तक अंकित रहा हो और वे अपने समाज को अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) चन्दा देते हों और सत्संगों में उनकी कम से कम २५% उपस्थिति रही हो।

अतः सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को इसी नियम के अनुसार आगामी चुनाव में मत देने वाले आर्यसभासदों से मार्च तक चन्दा प्राप्त करके सूची सभा को भेजें तथा अप्रैल मास में नियम अनुसार अपने आर्यसमाजो का वार्षिक चुनाव करे।

जो आर्यसमाज इस कार्य में सभा की सहायता चाहते हों, वे सभा को पत्र लिखे ताकि सभा की ओर से उपदेशक को भेजा जा सके।

—सभा मन्त्री

अभिनन्दन तेरा नववर्ष

दनुज वृत्ति की हटे कालिमा, हो मनुजत्व प्रसार सुपावन।
जन—जन में नवजीवन आए, हो व्यवहार मधुर मनभावन।
सारी वसुधा पर छा जाए—
सौम्य सरस सा अतुलित हर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष॥
वैदिक धर्मध्वजा लहराए,
भूमण्डल पर अमर अजेय।
ज्योति जगे वेदों को फिर से,
वसुन्धरा पर अपराजेय।
जन जन को हो मंगलदायक—
मानवता का शुचि उत्कर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष॥
सुखी तथा समृद्धिशील हो,
प्रगति पथो पर बढ़े स्वदेश।
गूंज उठे भू पर, अम्बर में,
ऋषियों का पावन उपदेश।
विश्वगुरु के पद पर फिर से—
बने प्रतिष्ठित भारत वर्ष।
अभिनन्दन तेरा नव वर्ष।

राधेश्याम 'आर्य विद्यावाचस्पति सुलतानपुर (उ०प्र०)



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २१२०७/७३   पंजि० नं० I

सम्वत् १९६,०८,१३,०८०

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालङ्कार, एम ए   माघ १६ २०४६ वि०

वर्ष १७   अङ्क १०   २८ जनवरी, १९९०   वार्षिक शुल्क २५)   आजीवन शुल्क २५१)   विदेश मे ८ पौंड)   एक प्रति ६० पै०

भिवानी मे आर्यसमाज के प्रचार का प्रसार करने के लिए कार्यकर्त्ता बैठक

वेदप्रचार मण्डल जिला भिवानी का गठन

दिनाक २१ जनवरी को आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी में जिला भिवानी के आर्यसमाजों के अधिकारियों एव प्रमुख कार्यकर्त्ताओ की एक बैठक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

जिला भिवानी में आर्यसमाज के सघटन को सुदृढ करने, वेद प्रचार कार्य का प्रसार करके अवैदिक मतों का खण्डन करने तथा शराब, मास, दहेज तथा गोहत्या जैसी सामाजिक बुराइयो का मुकाबला करने का कार्यक्रम बनाने पर बैठक में श्री रामरख आर्य भजनोपदेशक पूर्व सूबेदार मेजर श्री हरिसिह आर्य ग्राम चन्देनी, श्री सत्यवीर शास्त्री सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता एव उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा श्री महावीर प्रसाद आर्य प्रभाकर मन्त्री आर्यसमाज बवानी खेडा, श्री अतरसिह आर्य क्रातिकारी सभा-उपदेशक, श्री ओमदर्शन बालसेवा आश्रम भिवानी, श्री बिशनसिंह आर्यसमाज सरक कला, श्री भरतसिह शास्त्री अधिष्ठाता कन्या गुरुकुल पचगाव, डा० रामनारायण चावला चरखी दादरी, श्री फतेह सिह भिवानी, डा० अमीरसिह मीथाथल, प० फूलचन्द शर्मा निडर भिवानी, श्री टेकराम आर्य मन्दोला, श्री सूरतसिह लोहारू, श्री रामलाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज कृष्ण नगर भिवानी ने अपने-अपने सुझाव दिए।

आर्य महिला विदुषी श्रीमती प्रभातशोभा विद्यालकृता ने इस अवसर पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि [illegible] हो सकता है। [illegible] दूषित हो गई है कि जो भी पार्टी सत्ता में आती है वो वही शराब की आमदनी के लालच मे फसकर जनता के कल्याण से खिलवाड करती है और मतदाताओ को शराब के नशे में मस्त करके शासन करना चाहती है। आपने कार्यकर्त्ताओं को सुझाव दिया कि वे अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करें तथा उसकी शिक्षाओं पर आचरण करे। सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश से ही मानवता बच सकती है। यदि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता पूरी लगन तथा परिश्रम से वेद मार्ग पर चलते हुए कार्य करे तो समाज का कल्याण हो सकता है।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिह ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे जिला भिवानी के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को परामर्श दिया कि वे अपने जिले में आर्यसमाज के सघटन को सुदृढ करे। आर्यसमाज के पास विशाल शक्ति है परन्तु हमारी शक्ति बिखरी हुई है। कार्यकर्त्ता सघटित नहीं हैं। परन्तु वैदिक धर्म विरोधी शक्तिया अनेक प्रकार के सम्प्रदाय बनाकर अपना प्रचार करके जनता को भ्रमित कर रही हैं। अत हम इन पाखण्डों तथा सम्प्रदायो से टक्कर लेने के लिए वेदप्रचार मण्डल का गठन करें। जहा भी वैदिक सिद्धान्तों के विद्वान् मिले उन की सेवाओं का लाभ उठाया जावे।

वे इस कार्य के लिए जितना भी समय दे सकें, उसका लाभ उठाया जावे। सेवानिवृत्त शास्त्री अध्यापको से सभा ने वेदप्रचार कार्य मे सहयोग मांगा है। आजकल ग्रामों में वैदिक सस्कार करवाने के लिए पुरोहित नही मिल रहे। इस कमी को पूरा करने के लिए सभा पुरोहितो की सेवाय प्राप्त कर रही है जोकि २०, २५ ग्रामो को केन्द्र बनाकर आर्यसमाज का प्रचार करगे। प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डलो के अन्तर्गत उपदेशक तथा भजन मण्डलियो की नियुक्तिया की जावगी। आर्यसमाज के तीन सूत्रीय कार्यक्रम (शराब हटाओ, अग्रेजी हटाओ तथा गोहत्या बन्द करो) को पूरा करने के लिए प्रत्येक आर्य को तन मन तथा धन से प्रयत्न करना चाहिए।

प्रो० शेरसिह ने सभा के प्रचार को प्रभावशाली बनाने के लिए विद्वानो तथा भजनोपदेशको के कैसेट तथा आर्यसमाज के समारोह आदि की वी०डी०ओ० फिल्में तैयार करने की योजना की घोषणा करते हुए आर्य जनता से सहयोग की माग की। अन्त मे पजाब समस्या के समाधान का उल्लेख करते हुए बताया कि हरयाणा रक्षावाहिनी की ओर से केन्द्र तथा हरयाणा सरकार को पत्र लिखकर माग की है कि उग्रवादियो से समझौता करते समय हरयाणाके हितों की उपेक्षा न की जावे। हरयाणा को अपने हिस्से का पानी मिलना चाहिए, क्योकि पानी हरयाणा का प्राण है। यदि सूखे खेतों को पानी न मिला तो [illegible] हो जाएगी। इसी प्रकार पजाब के हिन्दीभाषी अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र हरयाणा को मिलने चाहियें। चण्डीगढ़ की आबादी अधिकतर हिन्दी भाषी है और इसके निर्माण में हरयाणा प्रदेश का धन लगा है। अत चण्डीगढ को समझौते मे पजाब को सौपना हरयाणा के साथ अन्याय होगा। सन्तोष की बात है हरयाणा के मुख्यमन्त्री ने हरयाणा रक्षावाहिनी के प्रस्तावो की सराहना करते हुए विश्वास दिलाया है कि हरयाणा के हितो की पूर्व को भाति रक्षा की जावेगी और जब भी पजाब समझौते का सर्वदलीय वार्ता होगी उसमें हरयाणा रक्षावाहिनी को अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर दिया जावेगा।

बैठक में विचार विमर्श के पश्चात् जिला भिवानी वेदप्रचार मण्डल का गठन निम्न प्रकार किया गया —

१- प० फूलचन्द शर्मा निडर भिवानी —सरक्षक
२ डा० गणपत सिह आर्य भिवानी —सयोजक
३- श्री महावीर प्रसाद प्रभाकर आर्यसमाज बवानी खेडा —सदस्य
४- श्री विमलेश आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी —सदस्य

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अश्वमेध यज्ञ का स्वरूप

(गताक से आगे)

—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य सभा मौरिशस

ऊपर लिखे मन्त्र के भावार्थ में महर्षि ने स्पष्ट रूप से लिख दिया है कि 'सब ससार का उपकार करने वाला अश्वमेधादि यज्ञ' इससे पूर्व पंक्ति में महर्षि ने सर्वव्यापक परमेश्वर को भी यज्ञ रूप में प्रतिष्ठापित किया है। नीचे की पंक्ति में शिल्पविद्या सिद्ध करके उपकार लेना यज्ञ बतलाया है। शिल्प से अभिप्राय, अनेक प्रकार के विमानों, शस्त्रो-यन्त्रो तथा कलाओं से है जिनसे समाज सुखी तथा राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुच जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि सर्वव्यापक परमात्मा की मान्यता तथा सर्वोपकारी, सर्वोत्कृष्ट अश्वमेध यज्ञ का आयोजन, तथा सब प्रकार की शिल्प विद्याओं की रचना करके ही ससार मे सुख शाति का साम्राज्य लाया जा सकता है। ईश्वर की मान्यता के कारण सर्व पापों से छुटकारा, अश्वमेध यज्ञ से सभी दुर्वासनाओ दुर्भावनाओं, दूषित पर्यावरणों से मुक्ति तथा राजा द्वारा दुष्टो के दलन से प्रजा में सुखशान्ति का पवित्र वातावरण पैदा हो सकता है। इन सब सामाजिक सुखो की प्राप्ति के लिए अश्वमेध यज्ञ सब के लिए सदैव अनिवार्य कार्य है।

इस यज्ञ के आयोजन से समाज में शासन व्यवस्था, राज्यसंगठन सेना तथा अन्य बडी-बडी राष्ट्रीय भावनाओ का उदय किया जा सकता है। इस यज्ञ के द्वारा निर्वाचित कोई भी राजा या प्रधानमंत्री, सेनापति, इस तत्व को ग्रहण करके सारे ससार मे एक ही शासन प्रणाली हो ऐसा सोच सकता है। इस प्रकार की राज्य शासन प्रणाली आर्यावर्त्त के सम्राटों द्वारा सदैव करोड़ों वर्ष तक चालू रखी थी। अतएव उन्होंने अश्वमेध यज्ञ का आविष्कार किया था।

सत्यार्थप्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती से ग्यारहवें समुल्लास में प्रश्न किया गया है कि—अश्वमेध यज्ञ, गोमेध, नरमेध आदि शब्दो का क्या अर्थ है ?

महर्षि ने उसका उत्तर देते हुए लिखा—इनका अर्थ तो यह है कि—

"राष्ट्रं वा अश्वमेधः। अन्नं हि गौः। अग्निर्वा अश्व। आज्यं मेध (शतपथ ब्राह्मण)"

देखो ! राजा न्याय धर्म से प्रजा का पालन करे, विद्यादि का देने हारा यजमान और अग्नि में घी आदि का होम करना (अश्वमेध), अन्न, इन्द्रियां, किरण, पृथिवी आदि को पवित्र रखना गोमेध, जब मनुष्य मर जाए तब उसके शरीर का विधिपूर्वक दाह करना 'नरमेध' कहाता है। अग्नि को अश्व भी कहा है।

इन उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर में महर्षि ने अग्नि में घी का होम करना अश्वमेध यज्ञ माना है। जो कि होम परोपकार के लिए ही होता है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

इसी विषय को महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के राजधर्म विषय में पुन उठाते हुए कहते है—

'राष्ट्रं वा अश्वमेध.' राष्ट्रपालनमेव क्षत्रियाणां अश्वमेधाख्यो यज्ञो भवति नाश्वं हत्वा तदङ्गानां होमकरणं चेति।

जो न्याय से राज्य का पालन करना है वही क्षत्रियों का अश्वमेध कहाता है। किन्तु घोडे को मारकर उसके अगों का होम करना यह अश्वमेध नही है। महर्षि ने कितने अच्छे ढग से परोपकारी यज्ञ अश्वमेध का वर्णन किया है।

इसी प्रकार राजा प्रजाधर्म विषय में ही महर्षि यजुर्वेद अध्याय बीस, मन्त्र दस—'प्रतिक्षत्रे प्रति तिष्ठामि ···' आदि के अन्तिम पद-प्रतिष्ठावा पृथिव्यां प्रति तिष्ठामि यज्ञे' की व्याख्या करते हुए लिखते हैं –

जितना सूर्यादि प्रकाशरूप और पृथिव्यादि अप्रकाशरूप जगत् तथा जो अश्वमेधादि यज्ञ हैं इन सब के बीच में भी मैं सर्वदा व्यापक होने से प्रतिष्ठित रहता हूं। यह परमात्मा ने मनुष्यों के लिए स्वयमेव कहा कि मैं अश्वमेध यज्ञ में प्रतिष्ठित रहता हूं, परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है।

विशेषरूप से अश्वमेध यज्ञ के अति उपकारी कार्य होने के कारण परमात्मा अपनी प्रतिष्ठा दिखाता हुआ अश्वमेध यज्ञ करने की प्रेरणा सब मनुष्यों को देता है। इसी की प्रेरणा अथर्ववेद के ग्यारवें काण्ड के ७वें मन्त्र में भी अश्वमेध यज्ञ के ईश्वर में निहित होने के कारण दी गई है। साथ ही इस यज्ञ को 'जीवबर्हिर्मदिन्तम' अर्थात् जीवो की उन्नति करने वाला व्यवहार जो कि मदिन्तम—बहुत ही हर्ष देनेवाला माना गया है।

एक भ्रम और उसका निवारण



मुख्यत: यज्ञ के पर्यायवाची 'मेध' शब्द को अजमेध गोमेध, पुरुषमेध, अश्वमेध इत्यादि शब्दों को देखकर, असल में तो-वेदों में अश्वमेध शब्द को छोडकर अन्य शब्दों का प्रयोग नहीं पाया जाता। वैदिक यज्ञों में पशुहिंसा—विधान का भ्रम हुआ यह स्पष्ट प्रतीत है।

मेधृ धातु के 'मेधा संगमने हिंसायां च' इस धातुपाठ के अनुसार मेधा वा शुद्ध बुद्धि को बढाना, लोगों में एकता व प्रेम को बढाना और हिंसा ये तीन अर्थ होते हैं, हिंसा ही उसका एक मात्र अर्थ नही है जैसा कि प्राय: लोग भ्रम से समझ लेते हैं। ऐसी अवस्था में कोई कारण नहीं कि हिंसा अर्थ पर ही क्यों आग्रह किया जाए जब कि निम्नलिखित तथा अन्य पुष्ट प्रमाणों से और सामान्य बुद्धि द्वारा हिंसा अर्थ का ग्रहण सर्वथा असगत प्रतीत होता है।

पुरुषमेध, पुरुष यज्ञ और नृयज्ञ ये तीनों शब्द पर्यायवाचक हैं, और मनुस्मृति मे नृयज्ञ की व्याख्या 'नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्' (मनु ३·७०) इस प्रकार की गई है। जिसका अर्थ यह है कि नृयज्ञ वा नृमेध से मनुष्यों की यज्ञ में बलि देने का तात्पर्य नही, बल्कि उत्तम विद्वानों विशेषत: अतिथियों की पूजा का उस में भाव है।

मेधृधातु के संगमनार्थ को लेने से मनुष्यों को उत्तम कार्यों के लिए संगठित करना, उनमें प्रेम और एकता को बढाना नृमेध का तात्पर्य है। प्रमाण के रूप में—

सामवेद उत्तरार्चिक अध्याय ४२ मन्त्र देखें—

"आहरय: समृज्रिरेऽरुपीरधिबर्हिषी। यत्राभिसंनवावहे"

इस मन्त्र के नृमेध पुरुमेध ऋषि हैं। अष्टम प्रपाठक के 'परि तोकं तनयम्' इस मन्त्र का ऋषि नृमेध है।

उसका अर्थ मनुष्यों की यज्ञों में बलि चढाने वाला नहीं, अपितु मनुष्यो में संगतिकरण वा मेलमिलाप को बढाने वाला है। यह स्पष्ट हो गया है। ऐसे ही गोमेध के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

इसी प्रकार अश्वमेध के अर्थ भी वास्तविक रूप से अन्य अर्थ हैं, इस बात का ब्राह्मण ग्रन्थों तथा महाभारत आदि में स्पष्ट निर्देश दिया गया है। उदाहरणार्थ देखिए— शतपथ ब्राह्मण (१३-१-६) में कहा है—राष्ट्रं वा अश्वमेध। 'वीर्यं वा अश्व·।' (क्रमश)

श्री मान की उखड़ी-उखड़ी बातें

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

सरदार सिमरणजीत सिंह मान लोकसभा में अपने दल के छः प्रत्याशी जिताकर लाए हैं और ३ स्वतन्त्र उम्मीदवार उनके समर्थन से जीतकर आए हैं। श्री इन्द्रकुमार गुजराल का समर्थन तो उनके गुट के अलावा दूसरे अकाली गुटों ने भी किया था। चुनावों के परिणाम आने के तुरन्त पश्चात् उनके वक्तव्य बड़े सन्तुलित और उत्साह वर्धक थे, उनसे ऐसा लगने लगा था कि शायद दमदम टकसाल और सिख छात्रसंघ के प्रतिनिधि भी उनकी सलाह मानकर हिंसा का रास्ता छोड़ देंगे और संविधान के अन्तर्गत ही पंजाब की समस्या का न्यायसंगत हल निकल आएगा। प्रधानमन्त्री, उपप्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री, विदेशमंत्री आदि स्वर्णमंदिर जाकर श्रद्धापूर्वक माथा टेककर आए और खुले दिल से सुरक्षा के बन्धन तोड़कर लोगों से मिले। पंजाब की जनता ने भी उनका खुले दिल से स्वागत किया। भारत सरकार ने बड़ी संख्या में कैदियों को छोड़ा और संविधान के ५९वें संशोधन के अनुसार जो कदम उठाए थे वे वापिस ले लिए और वह संशोधन भी वापिस हो गया। इस प्रकार एक सद्भाव का वातावरण बना। परन्तु सरकार के इन सभी सकारात्मक कदम उठाने के बाद उनकी जो सकारात्मक प्रतिक्रिया होनी चाहिए थी वह नहीं हुई। हिंसा कम होने की बजाए बढ़ी, श्री मान के दल के ही एक सांसद की हत्या हुई, दूसरे सांसद के और श्री मान के सहयोगियों में भी आपस में मार-पिटाई हुई। यह स्पष्ट दिखाई दिया कि श्री मान अपने अनुयाइयों और सहयोगियों को सम्भाल नहीं पा रहे हैं। यही नहीं लग तो ऐसा रहा है कि उनके अपने साथियों और समर्थकों का उन पर दबाव बढ़ता जा रहा है और वे अपने मनकी बात जैसे प्रारम्भ में कहने का उन्होंने साहस किया, उसे दोहराने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं।

मैं सिमरण सिंह मान से तो कभी नहीं मिला हूं, परन्तु उनके पिता श्री जोगेन्द्रसिंह मान पंजाब विधान सभा में मेरे साथी रहे हैं। मैं जब सिंचाई तथा बिजली मन्त्री रहा तब वे विधायक थे और फिर वे पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष भी रहे। लोक सभा में आने के बाद भी उनसे कभी-कभी मिलता रहा। उनका स्वभाव सरल तथा उनका व्यक्तित्व उदार है, ग्रामीण जनता तथा किसान की उन्नति के के लिए उनके हृदय में समर्पण की भावना है। मैं अनुमान लगाने में यदि गलती नहीं करता तो कह सकता हूं कि सरलता, उदारता तथा किसान और ग्रामीण जनता के उत्थान की गहरी भावना उनको अपने पिता से विरासत में मिली है। १९७३ वाले स० कपूरसिंह द्वारा तैयार किया हुआ आनन्दपुर साहब प्रस्ताव का उन्होंने इसीलिए समर्थन किया क्योंकि उसमें किसान की उन्नति के कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी गई है। स्वायत्तता की बात तो वे अपने समर्थकों के दबाव में आकर अधिक तथा स्वयमेव करते होंगे। हरयाणा व राजस्थान को रावी व्यास का पानी न देने की बात भी वे शायद बादल और उनके साथियों से कम मांग करने के आरोप से बचने के लिए कह रहे हैं। मैं यह मानता हूं कि अपने पूज्य पिता की तरह वे भी पंजाब और हरयाणा के किसानों के साथ समान रूप से प्यार करते हैं और वे कभी अपने हृदय से यह नहीं चाहेंगे कि एक ओर तो हरयाणा और राजस्थान का किसान अपने सूखे खेतों की प्यास न बुझा सके और दूसरी ओर पंजाब के किसान के खेत सेम की लपेट में आते चले जायें।

यह एक तथ्य है कि श्री सिमरणजीत सिंह मान को ५ वर्ष तक काफी मानसिक यातना भुगतनी पड़ी है और शारीरिक यातनायें भी न्यूनाधिक मोबेश भुगतनी पड़ी होंगी, और उनके कारण इनके हृदय में कटुता आ जाए तो स्वाभाविक है, परन्तु ऐसा लगता है कि उन्होंने बहुत हद तक उस कटुता को अपने व्यवहार में प्रदर्शित नहीं होने दिया। अपने व्यक्तिगत दुःख से उत्पन्न होने वाली उद्विग्नता को तो उन्होंने दबा लिया, परन्तु अपने साथियों और समर्थकों के दबाव के सामने वे लड़खड़ा गए हैं।

संविधान के प्रति पूर्ण आस्था प्रकट करने के बाद भी शपथ ग्रहण अपने साथियों को साथ लेकर ही करना चाहते हैं। संविधान के अन्तर्गत और भारत के दूसरे नागरिकों के बराबर अधिकारों और न्याय प्राप्त करने की बात कहकर, स्वायत्तता और प्रतिरक्षा, विदेशी मामलों, संचार, वित्त को छोड़कर सब विभाग प्रदेश की सरकार को देने की बात अपने समर्थकों के दबाव में उनको साथ लेकर चलने के लिए ही जोर देकर कहते हैं। स्वयम् सीधी बात करने की बजाए, कार्टर जैसे विदेशी नेताओं को बिचौलिया बनाने की बात भी अपने समर्थकों को सन्तुष्ट करने के लिए कह रहे हैं। ये सब बातें, उखड़ी-उखड़ी सी हैं। कहने को तो वे भारत सरकार को मजबूत इरादे से दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की तरह बात करने को कहते हैं, परन्तु वह मजबूती और दूरदर्शिता से एक नेता की तरह बात करने का साहस स्वयम् नहीं जुटा पा रहे हैं। उखड़ी-उखड़ी बातें छोड़ कर यदि वे हिम्मत से काम नहीं लेंगे तो न तो समस्या हल होगी और न वे स्वयं जो अवसर उनको विधाता ने दिया है, उसका लाभ उठाकर पंजाब के एकमात्र नेता बन सकेंगे। पंजाब के ही नहीं, सिखों के और अकाली दल के सर्वमान्य या शक्तिशाली नेता भी नहीं बन सकेंगे।

भारत सरकार की सद्भावना और उत्कट इच्छा के बावजूद तथा पंजाब की सिख और हिन्दू जनता की हार्दिक कामना के बावजूद तथाकथित पंजाब की समस्या शीघ्र हल होने की कोई सम्भावना नजर नहीं आ रही। दो कारण स्पष्ट हैं। प्रथम तो कोई नेता पंजाब और अकालियों के पास ऐसा नहीं जिसकी बात को सब मान लें और दूसरे नित नई बढ़ती हुई मांगों की धुन्ध में कोई उचित और न्यायसंगत हल नजर ही आना सम्भव नहीं लगता। इस समस्या के समाधान का रास्ता लम्बा है और कण्टकाकीर्ण भी उसके लिए धैर्य और दृढ़ता जरूरी हैं। इनके अभाव में ही यह समस्या उलझती गई और जब तक इनका अभाव रहेगा यह उलझती ही रहेगी।

शेरे बबर पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

तर्ज—जहां डाल-डाल पर सोने की

पंजाब प्रान्त से उदय हुआ क्रान्ति का एक सितारा।
इस देश का था वो प्यारा॥
था जिसने भारत भूमि पर मानवता का रंग बिखेरा।
इस देश का था वो प्यारा॥

१- अकाल ग्रस्त क्षेत्रों में जिसने सेवा कार्य निभाया।
ईसाई के चंगुल से जिसने हिन्दुओं को बचाया॥
जो थे पतन के गड्ढे में उनको फिर से उबारा।

२- कांगड़ा भूकम्प में जिसने राहत कार्य दिखाया।
गुलाब देवी तपेदिक अस्पताल भी खुलवाया॥
जिसने मानवता के हित तन मन धन सब वारा।

३- लाल बाल और पाल की बनी थी अद्भुत जोड़ी।
बड़ा प्यार इन तीनों कटुता न थी थोड़ी॥
इन सबने मिलकर दुष्ट अंग्रेजों को ललकारा।

४- साईमन कमीशन के विरोध में एक सभा बुलवाई।
पापी साण्डर्स ने जनता पर थी लाठी बरसाई॥
मेरे तन पर पड़ी हर लाठी कफन को कील बनेगी उचारा।

५- अंग्रेजों की लाठी खाकर जिसने दी कुर्बानी।
थे भारत के अमरपूत वो आजादी के सेनानी॥
निर्भय होकर आर्यसमाज को माता कहके पुकारा।

६- जब तक है इतिहास देश का तेरा नाम रहेगा।
भारत के छाती पर अंकित तेरा नाम रहेगा॥
'कमल' सा था जीवन तेरा गुण गाता जग सारा।

अरविन्दकुमार कमल, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरयाणा)

आर्यसमाज की प्रगति में अवरोध और उनके उपाय

(आचार्य वेदभूषण, अधिष्ठाता—अंतर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद ५०००२७)

(गतांक से आगे)

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द संस्कृत विद्यापीठ नाम से एक संस्था स्थापित की जाए और इस विद्यापीठ से संचालित संस्कृत परीक्षाओं की भारत सरकार से प्रशासनिक व शिक्षा सेवाओं में मान्यता प्राप्त की जाए।

संस्कृत भाषा की इन पाठशालाओं के लिए भारत सरकार से अनुदान लिया जाए और संस्कृत शिक्षकों के लिए अच्छे वेतनमान स्वीकृत कराकर संस्कृत अध्यापकों की नियुक्तियां दी जाएं। यही अध्यापक आर्यसमाज में पौरोहित्य का दायित्व भी संभालें। इस प्रकार हमारी सारी समाजें संस्कृत व संस्कृति के प्रचार में सक्रिय हो जायेंगी।

(२) दूसरी ओर इसी विद्यापीठ के अन्तर्गत प्रारम्भ में प्रत्येक प्रांत में ऐसे गुरुकुलों की स्थापना की जाए, जहां अंग्रेजी व संस्कृत दोनों माध्यम से केन्द्रीय सरकार की परीक्षायें दिलवाई जायें। साथ में संस्कृत भाषा का ज्ञान महर्षि दयानन्द के वेदांग प्रकाशों के आधार पर दिया जाए। हमारे गुरुकुलों में हाईस्कूल स्तर की केन्द्रीय सरकार की उपाधि व संस्कृत का ठोस ज्ञान करा दिया जाए। जिससे आगे छात्र कालेजो मे किसी भी ऐच्छिक योग्यता को अर्जित कर सके। डाक्टर इन्जिनियर आदि भी बन सकें। नारेबाजी से दूर रचनात्मक रूप में हर आर्यसमाज मानव निर्माण के केन्द्र बन जायें।

(३) दूसरी ओर हर आर्यसमाज में गोकृष्यादि रक्षिणी सभायें स्थापित की जायें। गोशालाओं की स्थापना शुरू में व्यवसायिक आधार पर की जाए जनता में गाय का दूध, मक्खन व घी के प्रयोग का प्रचार किया जाए। सहकारिता के आधार पर गोशालायें चलाई जायें इस में भी हमें प्रशासन से व बैंकों से आर्थिक योगदान मिल सकता है। देशी ही खाद को कृषि मे महत्व दिलाया जाए। सामूहिक कृषि योजना को प्रोत्साहित कर शुरू में अन्न उत्पादन और उचित मूल्य पर सीधे अन्न का जनता मे वितरण हेतु केन्द्र स्थापित किए जायें। इस रोजगार में आर्य युवक-युवतियो को लिया जाए।

(४) हमारी तीसरी योजना स्वास्थ्य निर्माण की हो। व्यायाम शालायें, शारीरिक आसनों के प्रशिक्षण केन्द्र खोले जायें। जनता में प्रात शीघ्र उठने का आंदोलन चलाया जाए। इन केन्द्रो मे किसी प्रकार का साम्प्रदायिक भेदभाव न बरता जाए।

भारतीय खेलों को व भारतीय कुश्ती पर बल दिया जाए। शाकाहार व निर्व्यसनी बनने के आंदोलन छेड़े जायें।

(५) आर्यसमाज जनता में बुराइयों के विरुद्ध आंदोलन करे। सरकारो मे न उलझे। अच्छे मनुष्य बनाने का उद्देश्य स्वस्थ युवकों का निर्माण, गोकृषि पर आधारित व्यवसाय को प्रोत्साहन व संस्कृत और वेदों का प्रचार यही हमारा ध्येय और उद्देश्य हो।

इस प्रकार संस्कृत और सांस्कृतिक प्रचार कार्य दूसरा बच्चों और युवकों के स्वास्थ्य निर्माण का कार्य तीसरा गोपालन व कृषि व अन्न वितरण की व्यवस्था इन तीनों उद्देश्यों को लेकर यदि हम पूरी सक्रियता और शान्त भाव से जुटे रहें तो हम सशक्त वैदिक संस्कृति की आधारशिला स्थापित कर सकते हैं। इसके आधार सत्य व्यवहार न्याय पक्षपात रहितता और सभी से मित्रता का व्यवहार हो।

हिंदी भाषा या रजनीतिक पदलिप्सा, भारत की राजनीतिक समस्याओं मे उलझना या हिन्दू सगठन राम जन्म-भूमि विवाद आदि मे उलझकर अपने ही पैरो पर व मौलिक सिद्धांतो पर कुठाराघात न करें। सस्ती लोकैषणा व भ्रष्ट उपायों से अपनी संस्था को मठ न बनावें नित नए चेहरे नया खून नवोन्मेष लिए कार्यकर्त्ताओं को कार्य करने का अवसर दें।

यह वही मार्ग है जिसके माध्यम से महर्षि संसार में वैदिक व्यवस्था व सिद्धांतो को फैलाना चाहते थे। हमारे बुद्धिजीवी—जन व कार्यकर्त्ता व शीर्षस्थ नेताओं से हमारा निवेदन है कि वे सभ्य उपायों द्वारा पारस्परिक विचार विनिमय व सरल शुद्ध नीति से अपने विवादों को आर्योचित ढंग से सुलझावें। जो वयोवृद्ध हैं उनके अनुभवों का और उनकी प्रतिष्ठा को रखते हुए लाभ भी उठाना पितृयज्ञ का अंग है।

प्रधान कोई भी बने या मन्त्री कोई बने इस बात पर न झगड कर योजनाओं, कार्यक्रमों के लिए वातावरण बनायें और हर आर्य यह सोचे कि मैं कितना ऋषि ऋण उतार रहा हूं? तो विवाद बीभत्स रूप नही लेंगे।

हम किसी व्यक्ति से नही अपितु सार्वदेशिक सभा के सभी मान्य सदस्यों से अपील करते हैं कि आर्य जगत् को नई दिशा व प्रेरणा देने के अपने दायित्व पर विचार करें और हिम्मत व साहस से आर्यसमाज के विराट् रथ को सही मार्ग पर लाकर खड़ा करें। जिस से आर्य जनता को किसी के नाम से रोना न पड़े बल्कि वे पूर्ण श्रद्धा से आपकी सेवाओं की सराहना करें।

हमें विश्वास है कि सभी आर्यजन इस योजना पर सामूहिक चर्चा करें और एक गतिशील स्थाई मार्ग पर चलें, जिससे हम अपने महान् उद्देश्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को साकार कर सकें। किसी भी समस्या पर विचार करते समय यदि हम राग द्वेष से बचकर तथा व्यक्तिगत दोषारोपण से बचकर शुद्ध हित भावना से विचार करेंगे तो समस्या का समाधान खोजा जा सकता है। प्रत्येक आर्य, आर्य संस्था, आर्यसमाज व प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक सगठन इस योजना को आधार बना इसमें आवश्यक व उचित संशोधन परिवर्धन कर विचार करें प्रस्तावों व व्यक्तिगत पत्रों द्वारा तथा आर्य पत्र-पत्रिकाओं मे अपने विचारों की अभिव्यक्ति द्वारा एक अच्छे हितावह वातावरण का निर्माण कर अपने ही मुख पर अपने हाथों लगाई जा रही कालिख वाली प्रवृत्ति से बचकर इस पवित्र संगठन के गौरव की रक्षा कर और मिलजुल कर एक गतिशील रचनात्मक शुद्ध वातावरण को ओर अग्रसर हों।

आवश्यकता है

आर्यसमाज नलवा जिला हिसार के लिए एक सेवक की जोकि भोजन बनाना भी जानता हो, आर्यसमाज मन्दिर में आवास की व्यवस्था की जावेगी। आर्यसमाज के लिए ही एक पुरोहित की भी आवश्यकता है जो कि वैदिक रीति से संस्कार आदि करवाने का अनुभवी हो। दक्षिणा योग्यता के अनुसार दी जावेगी।

सम्पर्क करने तथा पत्र व्यवहार का पता :
द्वारा सम्पादक सर्वहितकारी साप्ताहिक,
दयानन्दमठ गोहाना मार्ग रोहतक।

सोनीपत मे संक्रांति महोत्सव सम्पन्न

आर्य वीर दल सोनीपत मण्डल एवं हिन्दू मंच सोनीपत के तत्वावधान में संक्राति महोत्सव श्रद्धेय श्री रामगोपाल जी आर्य (प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत) की अध्यक्षता में शान्ति नगर कालोनी सोनीपत मे धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संक्राति यज्ञ से किया गया।

हरिश्चन्द्र स्नेही
आर्य वीर दल सोनीपत (हरयाणा)

बसन्त पंचमी के अवसर पर

वेदमित्र हापुड़ वाले, मन्त्री, वैदिक प्रचार मण्डल, अम्बाला छावनी

बहुत कम व्यक्तियों को पता है कि बसंत पंचमी एवं आर्यसमाज स्थापना दोनों एक साथ पडते है क्योंकि आज के दिन ऋषि दयानन्द ने एक ऐसे मानव वर्ग आर्य बनाने वाले सर्वहितकारी संगठन को जन्म दिया। आर्य बनना ही सत्य सनातन धर्म है, जिसे सभी ने अपनाया परन्तु आर्यसमाज 'शब्द' से चिढ़ते रहे। यह कटु सत्य है कि महात्मा गांधी जी भी ऋषि के सिद्धांतों में विश्वास रखते थे, परन्तु ऋषि का अनुयायी कहने पर झिझकते थे। ऋषि ने हर क्षेत्र में वह कार्य किया, दूसरा क्या करेगा। स्वराज्य शब्द सत्यार्थप्रकाश में ५०-५५ बार आया तथा स्वदेश, स्वभाषा तथा स्वलिपि शब्द भी आए। स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग सत्यार्थ प्रकाश में है। इसलिए आर्यसमाज व आर्यों के लिए बसन्त पंचमी का महत्व और भी बढ़ जाता है।

आर्यसमाज इस दिन को अज्ञानान्धकार को मिटाने के त्यौहार के रूप में मनाता है जबकि भारतवर्ष में ही सरस्वती पचमी के नाम से भी पुकारा जाता है। भारतवर्ष में छः ऋतुएं होती हैं, परन्तु अन्य पाच में वह उल्लास नही होता जो इस बसन्त ऋतु में होता है। इसे ऋतुराज की भी संज्ञा दी जाती है। शीत से तंग व्यक्ति भी अपने अन्दर चेतना पाते हैं। भूमि में सर्वत्र रस भर जाने से नर नारिया भी उमग रस में भर जाती हैं।

यजुर्वेद में १३वें अध्याय के मन्त्रो में कितना सुन्दर चित्रण है—इस बसन्त में वायु मधुर सुगन्धित चलता है, नदिया सुगन्धित पानी वाली बहती हैं। औषधियों में सर्वत्र गन्ध भरा होता है, रात और उषा काल माधुर्य बिखेरते हैं, और तो और पृथ्वी का कण-कण मधुरता से ओत प्रोत हो जाता है, आकाश में सर्वत्र सुगन्ध व्याप्त रहती है। वृक्ष लतायें जहां मधु से परिपूर्ण होकर मधुमक्खियों को मधु प्रदान करती है, वहां सूर्य की किरणें भी वनस्पति जगत् से माधुर्य उडाकर मधुभानु बन जाता है। गऊओं के दूध में मिठास आ जाता है। इस प्रकार चहुं ओर प्रमाद का वातावरण से मनुष्य मधुर बन जाता है।

बाल हकीकतराय का बलिदान भी इस दिन के साथ जुड़ा है। जिसने ईश्वर को साक्षी मानकर अपने कहे शब्दों को अदालत में स्वीकार किया तथा लाहौर के शालीमार बाग में वह वीर सत्य का पुजारी फांसी पर लटका दिया गया। आज की बसन्त पचमी हिन्दुओं को चेतावनी देने वाली है तथा गुरु तेगबहादुर ने यही सबक लिया कि सिख अपने को हिन्दू कहें तथा गुरुनानक तो वैदिक तथा वेदभक्त थे, हिन्दू थे। उन्होंने हिन्दुओं के हितों के लिए कार्य किया।

आर्य वीरो! बसन्त पचमी विश्व को आर्य बनाने का पावन सन्देश लाई है। अब हमें धर्म सम्बन्धी कामना करनी चाहिए तथा आर्यसमाज के इस विशाल सगठन में जो शिथिलता आई है उसे दूर करने का सकल्प लें तो हमें खुशी होगी तथा महाकवि शकर के शब्दों मे खुशी से गा सकते हैं—

कट गए कंटीले कपट जाल के फन्दे
खुल गए लोक लीला के गोरख धन्धे
भ्रम सागर में गिर गए गपोड़ी गन्दे
परमार्थ को समझे स्वार थके वदे
विपरीत मतों का घोर घमण्ड घटाया
समझो समाज ने क्या कर दिखलाया
फल खाते हैं लाखों फल खाने वाले
पय पीते हैं बारुदी उड़ाने वाले→
बन गए जती जगलों में जाने वाले
छूटे छल बल से पाप कमाने वाले
शुभ समाचार का शख निशख बजाया है
समझो समाज ने क्या कर दिखलाया है।

पं० सुखदेव शास्त्री धूम मचा रहे हैं

(आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक आजकल मोरीशस आर्यसमाज के निमन्त्रण पर वहा वेद प्रचारार्थ गए हुए हैं। उनका एक पत्र सभा कार्यालय में प्राप्त हुआ है। पाठकों की जानकारी हेतु पत्र प्रकाशित किया जा रहा है। उन्होंने पुरानी कहावत को स्मरण करवा दिया है कि "आगे पत्र अब से ब्रह्मचारी धूम मचा रहा है")

माननीय भाई केदारसिंह, नमस्ते।

मैं यहां मौरीशस में वेदप्रचार कार्य को घर-घर में जाकर प० रामशाह जी के साथ आंदोलन मचा रहा हू। सारे मौरीशस में, जोकि सिर्फ नौ जिलों तथा सौ ग्रामो का देश है, सात सौ कि०मी० लम्बा और अड़तीस किमी० चौड़ा है, उसमें हलचल तथा धूम मचा रहे हैं। अभी दिसम्बर मास में ही छः स्थानों पर—

१- यजुर्वेदीय महायज्ञ किए गए हैं जिनमें बहुत बडी सख्या में स्त्री पुरुषों ने भाग लिया है। मैंने वेदप्रवचन किए हैं। लोग बडे लाभान्वित तथा प्रभावित हुए हैं।

२- एक ईसाई परिवार को शुद्ध किया गया है। इस पर हवन किया गया, जनेऊ दिए गए। उनके नाम बदले गए। उनके नाम थे—१- मरियम २- मिचिला मुत्त ३- रामेश्वर वेदानन्द मुत्त ४- जनीफर ५- दीपा मुत्त ६- नताशा मुत्त। मरियम का नाम—सुवेदा, जनीफर-सुलोचना, नताशा का नाम सुमेधा रखा गया। ये फलाक जिले के निवासी हैं। इन्हें सर्वहितकारी में छपवा दे।

३- यहा जून में जन गणना होने वाली है, उसके लिए हम बडी तैयारी कर रहे हैं, हमने सभा की तरफ से फार्म छपवा लिए है, जिन में भाषा के खाने में हिन्दी, धर्म के खाने में वैदिकधर्मी हिन्दू, ये निर्णय सनातन धर्म सभा, आर्यसभा—रविवेद प्रचारिणी सभा आर्य राजपूत सभा के द्वारा लिए गए हैं। हम दिन रात गाडी लेकर घर घर फार्म दिखाते फिर रहे है, इलेक्शन जैसी हालत हो गई है। मुस्लिम, ईसाई, क्रियोल, हब्शी—चीनी भी सक्रिय हो गए हैं। दो दशक पहले आर्यसमाजी सौ हजार थे फिर पचासी हजार रह गए थे। अब की बार हम पूरी कोशिश कर रहे हैं सौ हजार से ऊपर चले जावें। यदि कम रह जाते है तो हमारा हिन्दू राज्य समाप्त हो जाएगा। यदि मुस्लिम-ईसाई-हब्शी मिल जाएं तो हमें कठिनाई हो सकती है। अतः हमे दिन रात एक करनी पड रही है।

४- फरवरी मास को हम महर्षि दयानन्द की जयन्ती मना रहे हैं, इस मास को हमने 'दयानन्द मास' घोषित कर दिया है।

५- फरवरी महीने में मेरे ६ महीने पूरे हो जाएगे, मेरा कार्यकाल पूरा हो जाएगा, मैं पहली मार्च को भारत लौट आऊंगा, मैंने पुरोहितो को कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण, भाषणमाला व अब तक रेडियो पर ६० व्याख्यान दिए हैं, सभाओ में १०० व्याख्यान हुए हैं जिनके १५० घण्टे बनते हैं। मेरा लोग बहुत ही मान करते हैं, ये चाहते है कि मै यहां लगातार १० वर्ष तक रहूं। अतः मैंने सभा के आशीर्वाद से छः मास तक खूब काम किया है। प्रो० साहब व स्वामी ओमानन्द के आशीर्वाद के ऋण से उऋण होकर ही वापिस आ रहा हू। अफसोस है कि मैं गुरुकुल झज्जर के उत्सव में न आ सका। मेरे ५००/- रु० वेदव्रत जी से कहना कि सुना दे, मैं आकर दे दूंगा।

आपका भाई, सुखदेव शास्त्री
आर्यसभा मौरीशस पोर्टलुई

आधुनिकता के जनक महर्षि दयानन्द जी

रामचन्द्र आर्य, विकास शिक्षा समिति (रजि०) बडवा (भिवानी)

भजन तर्ज—हरयाणवी

कई साल पहलम कहदी जो बात दयानन्द नै।
आज साची होती आवै मैं काट कै फन्द नै।।

शिक्षा के प्रचार बिना ना जागृति आवेगी।
बचपन की शादी करो ना बरबादी आवेगी।
भेंट, बलि, झूठी पूजा, तै खराबी आवेगी।
हवन यज्ञ करे बिना ना खुशहाली आवेगी।
झूठे परपंच झगडे सारे खत्म करे आनन्द नै।।

अवतारवाद झूठा विवाद फण्डी गुरु सारे।
वेद धर्म का सार बाकी सब फण्ड म्हारे।
पाखण्डी बनके योगी झूठे नाम धरारे।
आदर बिन गऊ मे उपकारी दुख पारे।
आयुर्वेद की चिकित्सा कर दृढ मूल कन्द नै।।

कन्या पढे देश आगे बढे इनका पढाना जरूरी सै।
योग्य वर मिलै तभी दहेज हटाना जरूरी सै।
श्रद्धा बिन भक्ति कोन्या पाखण्ड हटाना जरूरी सै।
अछूत कह सके ना कोई वर्ण बनाना जरूरी सै।
जात पात का जहर फैला जो मिटा दो बन्द नै।।

पहलम ना मान्या करते आज मानै दुनिया सारी।
पहले तो बकवास लगे थी आज साची मैं सारी।
रामचन्द्र नै मानते ऋषि की होती जान खारी।
आजादी का मन्त्र फूका स्वराज का प्रचारी।
नलवे आले अनपढ रहके तू क्यूं बिगाडे छन्द नैं।।

जि० फरीदाबाद के आर्यसमाजों की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल में दिनांक ४ फरवरी ९० रविवार को प्रातः ११ बजे जिला फरीदाबाद के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक आयोजित की गई है। इसकी अध्यक्षता सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह करेंगे। बैठक में आर्यसमाज के सघटन को सुदृढ करने, आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने के लिए जिला वेद प्रचार मण्डल का गठन किया जाएगा और शराब, माँस, दहेज तथा गोहत्या आदि को बन्द कराने का कार्यक्रम बनाया जावेगा।

—सभामन्त्री

वेदप्रचारमंडल जि. भिवानी का गठन—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सदस्य—सर्वश्री ५- रामलाल आर्य ६- चमनलाल आर्यसमाज मन्दोला ७ टेकराम आर्यसमाज मन्दोला ८- डा० रामनारायण चावला आर्यसमाज चरखी दादरी ९- नवीन मिश्रा आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी १० भरतसिंह शास्त्री गुरुकुल पचगाव ११ शिवलाल आर्य राजकीय विद्यालय लेघा १२ ओमदर्शन बालसेवा आश्रम भिवानी १३ मा० चन्द्रभानु आर्यसमाज ऊण १५ महावीर प्रसाद आर्यसमाज बोन्द १६ मा० कुलवन्त आर्य आर्यसमाज नीमडी १७ हनुमान आर्यसमाज भिवानी मण्डी १८ बनीसिंह आर्यसमाज प्रेमनगर १९ चन्द्रभानु आर्यसमाज कृष्णकालोनी भिवानी २० ज्ञानचन्द शास्त्री राजकीय विद्यालय कुम्भों २१ बलबीरसिंह आर्यसमाज दातोली २२ रामावतार आर्यसमाज लोहारू २३ ओमप्रकाश आर्यसमाज बहल।

—केदारसिंह आर्य

स्व० मुंशी प्रभुदयाल जी आर्य की पहली पुण्यस्मृति



गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल कलां (रोहतक) की निरन्तर छप्पन वर्ष तक निःस्वार्थ सेवा करने वाले, अतुलनीय सूझ-बूझ के धनी, व्यवहार कुशल, गुरुकुल संस्था की अपने घर की तरह रखवाली करनेवाले, सर्वजनहृदय सम्राट्, प्रजातन्त्र सूरा कलोई (नं० झज्जर) निवासी स्व० मुन्शी प्रभुदयाल जी आर्य की प्रथम पुण्य स्मृति सभा का आयोजन 30 जनवरी, 1990 को गुरुकुल भैंसवाल में किया जा रहा है। स्मृति सभा का शुभारम्भ प्रातः 8.30 पर विशेष यज्ञ से होगा। सभी संस्था प्रेमियों से निवेदन है कि समय निकालकर अवश्य पधारें।

निवेदक—

शेरसिंह मलिक, (कुलपति)
महेश्वरसिंह मलिक (प्रधान)
सत्यवीर सिंह हुड्डा (उपप्रधान)
होशियार सिंह मलिक (उपप्रधान)
अमरसिंह मलिक (उपप्रधान)
हृदयराम मलिक (महामन्त्री)
चान्दराम मलिक (मन्त्री)
प्रकाशवीर दलाल (मन्त्री)
बीरबल शास्त्री (मन्त्री)
धर्मवीर मलिक 'वीर जी' (उपमन्त्री)
धर्मवीर मलिक बीधाल (चीफ ओडिटर)
रामदत्त शास्त्री (कोषाध्यक्ष)

सत्यवीर सिंह मोखरिया,
मुख्याधिष्ठाता
देवराज विद्यालंकार,
उपमन्त्री
प्रतापसिंह मलिक
आचार्य
सत्यपाल शास्त्री
सहायक मुख्याधिष्ठाता

समस्त अध्यापक, ब्रह्मचारी व अन्य कर्मचारी गण

अमर रहे गणतन्त्र महान्

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

भारत का गणतन्त्र हमारा
प्राणों से हमको है प्यारा।
इसकी गरिमा महिमामण्डित-
सारी धरती पर यह नारा।
आज दिशाओं में गुंजित है—
जिसकी शुचि गर्वीली शान।
अमर रहे गणतन्त्र महान्।।

इसे शहीदों ने दे शोणित,
किया नया अंकुर था पोषित
भगत, सुभाष तथा बिस्मिल ने
देकर लहू, किया लोहित,
इसकी पृष्ठभूमि पर अंकित-
त्याग, तपोमय नव बलिदान।
अमर रहे गणतन्त्र महान्।।

भेदभाव का यही निवारक,
निर्माणों का यही नियामक,
जन जन को अधिकार दिलाने
का है बना यही कारक,
अम्बर मे भारत के इसने—
किया रश्मि नव ज्योतिष्मान
अमर रहे गणतन्त्र महान्।।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर रोहतक का

हीरक जयन्ती महोत्सव

यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आपकी प्रिय संस्था उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए अपनी स्थापना के ७५वे वर्ष में पहुंच गई है। इस उपलक्ष्य में २२ से २५ फरवरी १९९० ई० में संस्था के हीरक जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत् के अनेक धुरन्धर विद्वान्, तप.पूत वीतराग साधु-संन्यासी, प्रांतीय तथा केन्द्र सरकार के प्रमुख राजनेता तथा उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक पधार रहे है।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

१ फरवरी १९९० से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। पूर्णाहुति २५ फरवरी को प्रात १० बजे होगी। श्रद्धालुजन यज्ञ हेतु पुष्कल घृत सामग्री भेजकर पुण्य के भागी बने।

संस्था में विशाल पुरातत्त्व संग्रहालय, आयुर्वेदिक रसायनशाला आदर्श गोशाला, साहित्य प्रकाशन विभाग. पुस्तकालय तथा वाचनालय आदि अनेक विभागों को परिष्कृत करने के लिए एक करोड़ रुपए की आवश्यकता है—

१-	महाविद्यालय तथा छात्रावास	२० लाख रुपए
२-	आयुर्वेदिक रसायनशाला	२० ,, ,,
३-	साहित्य प्रकाशन विभाग	२० ,, ,,
४-	पुरातत्त्व संग्रहालय	२० ,, ,,
५-	छात्रवृत्ति तथा वृद्ध साधु-सेवा हेतु	२० ,, ,,

गुरुकुल के चार प्रकार के सदस्य बनाए जा रहे हैं—

साधारण सदस्य २५१ रुपए विशिष्ट सदस्य ११०० रुपए

संरक्षक सदस्य ५१०० रुपए विशिष्ट संरक्षक सदस्य ११००० रुपए

सभी दानी सज्जनों से नम्र-निवेदन है कि इस आदर्श गुरुकुल की उन्नति के लिए मुक्तहस्त से दान भेजकर कृतार्थ करे।

प्रो० शेरसिंह	स्वा० ओमानन्द सरस्वती	वैद्य बलवन्तसिंह	वेदव्रत शास्त्री
कुलपति	आचार्य	प्रधान	मंत्री

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य सभासदों से मार्च ९० तक का वार्षिक चन्दा उनकी आय के शतांश के अनुसार प्राप्त कर लेवे और उन्हें रसीद दे देवे। जिन समाजों के पास रसीद बही नहीं है, वे छपवा लेवे अथवा सभा कार्यालय रोहतक से ४)०० रुपए प्रति रसीद बुक (१०० रसीद) के लिए रोहतक भेजकर मंगवा लेवे। सभा ने रसीद बही छपवा दी है।

आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार वही आर्य सभासद चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं, जिनका नाम सदाचारपूर्वक आर्यसमाज के रजिस्टर में २ वर्ष तक अंकित रहा हो और वे अपने समाज को अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) चन्दा देते हों और सत्संगों में उनकी कम से कम २५% उपस्थिति रही हो।

अत सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को इसी नियम के अनुसार आगामी चुनाव में मत देने वाले आर्यसभासदों से मार्च तक चन्दा प्राप्त करके सूची सभा को भेजें तथा अप्रैल मास में नियम अनुसार अपने आर्यसमाजो का वार्षिक चुनाव करे।

जो आर्यसमाज इस कार्य में सभा की सहायता चाहते हों, वे सभा को पत्र लिखे ताकि सभा की ओर से उपदेशक को भेजा जा सके।

—सभा मन्त्री

आर्यसमाज पिंजौर (अम्बाला) का चुनाव

प्रधान श्री प्रेमचन्द शर्मा, उपप्रधान श्री धर्मपालसिंह, श्री रघुबीर सिंह चौधरी, मन्त्री श्री राजेशसिंह आर्य, उपमन्त्री श्री रविनन्दन पटवारी, कोषाध्यक्ष श्री रामगोपाल तायल।

आर्यसमाज कौल (कुरुक्षेत्र) का चुनाव

संरक्षक महाशय खेमचन्द आर्य, स० किशन सिंह आर्य, श्री राम कृष्ण आर्य. प्रधान डा० ताराचन्द आर्य, उपप्रधान श्री महावीर सिंह आर्य, महामन्त्री श्री मधुसूदन आर्य, स०म० श्री जगवीर सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलबीर सिंह आर्य सह० कोषाध्यक्ष सू० मनशाराम आर्य. प्रचार मन्त्री श्री ब्र० रणवीर सिंह आर्य, मा० ओमप्रकाश आर्य मा० ईश्वर सिंह आर्य।

अश्लील सिनेमा प्रचार बन्द हो

कैथल १६ जनवरी (निस) भारती युवा मोर्चा कैथल ने जिला उपायुक्त को एक ज्ञापन देकर यहां मांग की है कि नगर में बढ रही अश्लीलता पूर्ण सिनेमा प्रचार को तुरन्त रोका जाए। युवा जनता के प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री दिनेश गुप्ता ने बताया कि ज्ञापन में यह कहा गया है कि पिछले कुछ सप्ताहों से नगर के सिनेमाघरों में अश्लील फिल्मों को दिखाने का प्रचलन बढा है। जिनके प्रचार प्रसार के लिए अश्लील पोस्टरों का प्रयोग किया जाता है। ये पोस्टर भारतीय संस्कृति और सभ्यता के बहुत ही प्रतिकूल होते हैं।

नगर के अनेक स्थानों पर ऐसे अश्लील पोस्टर लगे हुए हैं जिस से स्कूल व कालेज आते-जाते छात्रों के कोमल मस्तिष्क पर बुरा असर पहुचता है। इन पोस्टरों से प्रेरित और प्रभावित होकर नैतिक पतन की ओर अग्रसर होते हैं। वस्तुतः मनोरंजन के नाम पर ये युवा पीढी और आने वाली पीढियों को व्यवहारिक रूप से विकलांग बनाने का षड्यन्त्र देश और समाज के लिए घातक सिद्ध होगा।

युवा मोर्चा द्वारा मांग की गई है कि इन पोस्टरों को सार्वजनिक स्थानों पर लगाने पर रोक लगाई जाए तथा लगाए हुए पोस्टरों को तुरन्त हटाने का आदेश दिया जाए।

(नवभारत टाइम्स)

क्या जाने

रचनाकार—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री नई दिल्ली

करुणा जिसके उर जाग उठी दुखियों को सताना क्या जाने।
सत्संग का रंग चढा जिस पै वह कुसंग में आना क्या जाने॥

भोगी न गरीबी हो जिसने नित शाही जीवन जीता हो।
दुखियों पर वह पाषाण हृदय जन दया दिखाना क्या जाने॥

निष्पक्ष न हो हृदय जिसका और मिथ्या भाषण करता हो।
वह स्वार्थ में अंधा होकर के सच कहना कहाना क्या जाने॥

पर नारी हरण मद्यपान करे अंडे व मांस जो खाता हो।
ऐसा व्यभिचारी भ्रष्ट पुरुष ब्रह्मचर्य की महिमा क्या जाने॥

संकल्प का पक्का हो नर जो और धैर्य विपत्ति में रखता हो।
उत्साह से आगे बढता है दुःख में घबराना क्या जाने॥

बन देश धर्म के दीवाने खुश होकर फांसी पर झूले।
क्या बीती और किस पर बीती जल्लाद बताना क्या जाने॥

संघर्ष में जीवन बीता हो टक्कर ले जो तूफानों से।
जिसने मरना है सीख लिया वह मौत से डरना क्या जाने॥

जो खून गैर का पीता हो शोषण करता हो गरीबों का।
निज देश पै "छाजूराम" कभी वह खून बहाना क्या जाने॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ पंजी० सं०   मूल्य ५ ११.८०



सर्वहितकारी साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार, एम. ए.   माघ २३ २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क ११ ७ फरवरी, १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

देश पर गहराता संकट-पूरा राष्ट्र एक बनकर खड़ा हो

—प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पाकिस्तान ने पिछले दो वर्षों में प्रशिक्षण, हथियार और अन्य सब प्रकार के साधन देकर पंजाब से भी बहुत अधिक संख्या में अलगाववादी तथा पाकिस्तानी घुसपैठिए जम्मू कश्मीर में भेजे है। पिछले दो महीनों में तो कश्मीर घाटी में ये लोग खुलकर खेल रहे हैं। अब तो पाक अधिकृत तथाकथित आजाद कश्मीर की सरकार ने घोषणा कर दी है कि भारत के अभिन्न अंग जम्मू कश्मीर को वे युद्ध करके भी भारत से छीन लेंगे और उसे एक स्वतन्त्र राष्ट्र बना डालेंगे। इतना ही नहीं पाकिस्तान के सभी दलों के नेता एक दूसरे से बढ़-चढ़कर कश्मीर को हथियाने के लिए वक्तव्य दे रहे है। पाकिस्तानी पंजाब के मुख्यमन्त्री नवाज शरीफ मुजाहिदीन के नेता तथा दूसरे विरोधी दलों के नेताओं ने यह अभियान आरम्भ तो इस लिए किया था कि बेनजीर भुट्टो को चलता करे, परन्तु बेनजीर भुट्टो की पीपल्ज पार्टी के लोग भी उनसे पीछे नहीं रहे। अब वहां के समाचार पत्रों ने एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए नहीं बल्कि कश्मीर को भारत से छीन कर पाकिस्तान में मिलाने के लिए एक जुट होकर लड़ने के लिए अपील की है। उनकी इस अपील के फलस्वरूप अब शीघ्र ही पाकिस्तान के सभी राजनैतिक दलों की बैठक बुलानी पडी है और यह निश्चित है कि उनको अपने भेदभाव भुलाकर एक होकर भारत से दो-दो हाथ करने का फैसला करना पड़ेगा। 'जर्बे मोमिन' कहलाने वाला सब से बड़ा युद्ध अभ्यास अभी पिछले दिनों पाकिस्तान की सेना कर चुकी है और वह पूरी तैयारी में है।

अमरीका ने भी पाकिस्तान के लिए ९ अरब ६० करोड़ रुपए की सहायता देने की घोषणा की है जिसमें से करीब ४ अरब रुपए की सैनिक सहायता होगी। भारत जैसे बडे देश को केवल विज्ञान तकनीकी के रूप में ही एक अरब पचास करोड के लगभग सहायता देना तय किया है, सैनिक सहायता का तो प्रश्न ही नहीं उठता। अमरीका एक तरफ भारत को पाकिस्तान के साथ मधुर सम्बन्ध करने का उपदेश भी देता रहता है और दूसरी तरफ पाकिस्तान को सैनिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी देता रहता है। आजकल का युद्ध तो सारी अर्थव्यवस्था को ही युद्धोन्मुख बना देता है और अमरीका द्वारा दी गई सब प्रकार की सहायता युद्ध में पाकिस्तान के काम ही आएगी।

संकट इसलिए भी गहरा रहा है कि बंगला देश के राष्ट्रपति जनरल इरशाद (जो पाकिस्तान के जनरल असलम बेग के मित्र है) ने कहा है कि उनको यदि खतरा है तो केवल भारत से। बंगला देश की फौज की सिखलाई युद्ध की तैयारी आदि में पाकिस्तान के साथ तालमेल है और उसने यह कहा है कि उसे अपनी सुरक्षा के लिए एक डिवीजन सेना नई खडी करनी पड़ेगी। वह बेशक भारत के साथ सब मामलों का हल बातचीत से करने की बात कहे, परन्तु वह तो केवल भारत से कुछ अधिक गंगा के जल आदि की सुविधा लेने के लिए हो सकती है। पाकिस्तान और भारत के बीच युद्ध होने की अवस्था में वह क्या करेगा इस पर वह चुप है परन्तु इस में तनिक भी सन्देह नहीं कि वह जो भी कठिनाइयां हमारे लिए उत्पन्न कर सकता है वह करेगा और भारत के विरुद्ध युद्ध की घोषणा किए बिना जो मदद पाकिस्तान को दे सकता है वह देगा और कम से कम भारत की कुछ सेना को तो अपनी सीमाओं पर उलझाए रखेगा।

पाकिस्तान अफगान मुजाहीदीन से भी इस्लामी युद्ध का नाम लेकर कश्मीर में लडने के लिए भेजेगा। ईरान का राष्ट्रपति रफसान जानी से जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी की बात हुई है और ईरान के राष्ट्रपति ने भी जम्मू कश्मीर के मामले में भारत का विरोध करने की बात कही है। साथ ही साऊदी अरब तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रों की सहायता लेने के लिए भी पाकिस्तान की गतिविधियां आरम्भ हो गई है।

इन सब परिस्थितियों को देखते हुए यही मानकर चलना चाहिए कि पाकिस्तान कभी भी युद्ध का बिगुल बजा सकता है। युद्ध छेडने से पहले या साथ-साथ वह इस मामले को अमरीका और मुस्लिम राष्ट्रों का समर्थन लेकर राष्ट्रसंघ में भी इस प्रश्न को जोर शोर से उठाएगा। राष्ट्रसंघ में रूस ही हमारा साथी रहेगा, उसके साथ-साथ और कुछ राष्ट्र भी हमारी सहायता कर सकते है, परन्तु इस कूटनीतिक समर में भी हमारे देश को सक्रिय होना पड़ेगा।

राष्ट्रीय एकता और एकजुटता अनिवार्य

दो मोर्चों पर (कूटनीतिक और सैनिक) लडी जा रही इस लडाई में देश के सभी राजनीतिक नेताओं और सभी दलों को अपने संकीर्ण चिंतन को छोडकर तथा अपने तात्कालिक स्वार्थों से ऊपर उठकर और एक होकर इस महान् राष्ट्रीय संकट का हिम्मत के साथ मुकाबला करना होगा। मेरी सभी दलों के कुछ नेताओं और विचारकों से बातें हुई हैं और मुझे प्रसन्नता है कि करीब-करीब सब ने ही समय की इस मांग का हृदय से समर्थन किया है। समय की मांग है कि प्रत्येक भारतवासी चाहे वह किसी भी मजहब को मानने वाला हो, किसी भी क्षेत्र का रहने वाला हो, किसी भी राजनैतिक दल से सम्बन्ध रखता हो, सब को ही तंगदिली और संकीर्णता को छोडकर, एकजुट होकर दोनों मोर्चों को संभालना चाहिए। आजादी के बाद हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि १९४८, १९६५ और १९७१ तीनों युद्धों में भारत की जनता एक होकर लडी और अपनी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अश्वमेध यज्ञ का स्वरूप

(गतांक से आगे)

—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य सभा मौरिशस

अर्थात् अश्व शब्द वीर्यवाचक भी है, अत: देशवासियों के वीर्य वा बल की वृद्धि करना और राष्ट्र का अच्छी प्रकार संचालन करना यह अश्वमेध यज्ञ का तात्पर्य है।

इसी तात्पर्य को जानकर आर्यों की शिरोमणि सभा आर्यसभा मौरिशस ने अश्वमेध ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आरम्भ किया है।

अश्वमेध यज्ञ अहिंसात्मक

अश्वमेध के विषय में प्राय: यह विचार प्रचलित है कि इसमें अश्व की बलि दी जाती थी। इसका स्पष्टीकरण अभिगत पृष्ठों में कर दिया गया है। घोड़े को मारकर यज्ञ में हवन करना महाभारत युद्ध के बाद जब वेदों का प्रचार न रहा तब से वाममार्गी, सनातनी आदि लोगों ने प्रचलित किया। महाभारत से पहले यह प्रचार न था। उदाहरण व प्रमाण के रूप में प्रस्तुत है—

महाभारत शांतिपर्व अध्याय ३३६ में वसु महाराज के अश्वमेध यज्ञ का जो वर्णन पाया जाता है और जिसमें उस समय के सब सुप्रसिद्ध बड़े-बड़े ऋषियों तथा विद्वानों ने भाग लिया था उससे यह स्पष्ट है कि अश्वमेध में अश्व की हिंसा न की जाती थी। इस सम्बन्ध में यह ऐतिहासिक वर्णन पढ़िये—

तस्य यज्ञो महानासीद् अश्वमेधो महात्मनः।
बृहस्पतिरुपाध्याय, तत्रहोता बभूवह ॥
प्रजापतिसुताश्चात्र, सदस्याश्चाभवंस्त्रय: ।३४॥

ऋषिर्मेधातिथिश्चैव ताण्ड्यश्चैव महानृषि: ।
ऋषिशान्तिर्महाभाग., तथा वेद शिराश्च य ।
ऋषिश्रेष्ठश्च कपिल , शालिहोत्र पिता च य. ।
आद्य: कठस्तैत्तिरिश्च, वैशम्पायन पूर्वज: ।
कण्वोऽथ देवहोत्रश्च, एते षोडश कीर्त्तिता ॥६॥

सम्भूता: सर्वसंभारा. तस्मिन् राजन् महाक्रतौ।
न तत्र पशु घातोऽभूत् स राजैवस्थितोऽभवत्।
अहिंस्र: शुचिरक्षुद्र निराशी: कर्मसंस्तुत ॥११॥

अर्थ:— वसु राजा का अश्वमेध नामक यज्ञ अत्यन्त महत्वपूर्ण था। बृहस्पति उपाध्याय उसमें होता था। प्रजापति के तीन पुत्र तथा अन्य अनेक सुप्रसिद्ध ऋषियों के अतिरिक्त, ऋषियों में श्रेष्ठ कपिल, कठ, तैत्तिरी, कण्वादि उसके ऋत्विक् थे। वह सर्वथा हिंसा रहित (अहिंस्र) पवित्र, महान् यज्ञ था जिसमें पशुओं का घात सर्वथा न किया गया था। न तत्र पशुघातोऽभूत्—**जो लोग अश्वमेध का अर्थ घोड़े की बलि देना समझते हैं उन्हें आंखें खोलकर इस ऐतिहासिक** अहिंसात्मक यज्ञ का वर्णन पढ़ना चाहिए। इसके होताओं में आचार्य बृहस्पति, ऋषिश्रेष्ठ कपिल तथा कठसंहिता, तैत्तिरीयसंहिता, काण्वसंहितादि के प्रवक्ता ऋषि थे जिन्होंने पूर्ण अहिंसात्मक रीति से इस महान् यज्ञ को करवाया।

इस यज्ञ से इस बात का भी पता चलता है कि अश्वमेध यज्ञ के करने के लिए यज्ञ का घोड़ा छोड़ने की कोई बहुत आवश्यकता न समझी जाती थी, ऋषि मुनि विद्वान् एवं साधारण जनता जब भी समाज को पुन: संगठित करने, पर्यावरण को शुद्ध करने, संगठित होकर दुष्टों को दण्ड देने की जब भी आवश्यकता समझती थी, उसी समय राजा सब ऋषियों एवं विद्वानों को निमन्त्रित करके यज्ञ का सब सामान घृत, सामग्री, समिधा आदि देकर इस महान् उपकार अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवा लेता था।

यज्ञ में पशु प्रदर्शनी

यहां यह बात भी साथ ही उल्लेखनीय है कि "मेधृ" का "संगमन" रूप जो अर्थ है उसका समर्थन महाभारतादि के यज्ञ विषयक अनेक प्रकरणों में होता है। उदाहरण व प्रमाण के लिए पढ़िये महाभारत अश्वमेध पर्व अध्याय ८५ में निम्न वर्णन पाया जाता है—

स्थलजा जलजा ये च, पशव: केचन प्रभो।
सर्वानेव समानीतान्, अपश्यन् तत्र ते नृपा: ॥३२॥
गाश्चैव महिषीश्चैव तत्र वृद्धस्त्रियोऽपि च।
औदकानि च सत्त्वानि, श्वापदानि वयांसि च ॥३३॥
एव प्रमुदितसर्वं, पशुगोधन धान्यत: ।
यज्ञ वाट नृपा दृष्ट्वा परं विस्मयागता: ॥३४॥

अर्थात् यज्ञ मण्डप में जितने भी स्थल और जल के पशु हैं उन सबको लोगों ने देखा। वहां अनेक प्रकार की गौएं, व भैंसे थी और वृद्धस्त्रियां थी। इस प्रकार पशु गोधन और धान्य से भरपूर और आनन्दित यज्ञ मण्डप को देखकर राजा आश्चर्य को प्राप्त हुए। इस से यज्ञ के साथ पशु पालन के लिए प्रदर्शनी भी लगाते थे। इसे ही गोमेध भी कहते थे। इसके अतिरिक्त यज्ञ के लिए "अध्वर" शब्द का प्रयोग चारों वेदों में प्रयुक्त हुआ है। जिसका अर्थ है हिंसा रहित। महर्षि यास्क ने निरुक्त में लिखा है—

अध्वर इति यज्ञ नाम—ध्वरतिर्हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेध: ।

(निरुक्त २/७)

अर्थात् अध्वर यज्ञ का नाम है जिसका अर्थ हिंसा रहित कर्म है।

जो यज्ञ नहीं करते

इस यज्ञ को न करने करने वालों की कितनी दुर्गति होती है, किस प्रकार वे गिरते चले जाते हैं इस बात को ऋग्वेद मण्डल दस, सूक्त ४४, मन्त्र ६ में और यही मन्त्र अथर्ववेद काण्ड २०, सूक्त ९४, मन्त्र ६ में भी आया है—

"न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहम् ईर्मैव ते न्यविशन्तकेपय."—

जो लोग यज्ञमयी नौका पर चढ़ने में समर्थ नहीं होते वे कुत्सित, अपवित्र आचरण वाले होकर यहीं इस लोक में नीचे नीचे गिरते चले जाते हैं।

वेद के इन आदेशों को मानकर सदैव दैनिक सामान्य यज्ञ से लेकर अश्वमेध पर्यन्त महायज्ञों को सदैव करते रहना चाहिए। अब तक वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों तथा निरुक्तादि के प्रमाणों से यही सिद्ध होता है अश्वमेध यज्ञ अवश्यमेव सदैव जनता के द्वारा करते ही रहना चाहिए।

और यह भी प्रमाणित हो गया है कि व्याकरण के अनुसार यज्ञ शब्द के अर्थ—देवपूजा, संगतिकरण, दान हैं, इन में "संगतिकरण" से शिल्पविद्या का प्रयोग करके राष्ट्र की रक्षा तथा समाज को सुखी सम्पन्न बनाने के लिए राजसूय व वाजपेय यज्ञ राजा को अवश्यमेव करना चाहिए।

अश्वमेध की स्थापना

महर्षि पाणिनि के धातु—'मेधृ संगमनेहिंसायां च' इससे भी यह प्रमाणित हो गया है कि जनता में शुद्धि-बुद्धि को बढ़ाना, एकता व प्रेम का पाठ पढ़ाना तथा हिंसक दुष्टजनों व देश द्रोहियों को दण्ड देना आदि मेध शब्द के अर्थ हैं। अश्व शब्द का प्रयोग वेदों में अनेक स्थानों में प्रयुक्त हुआ है। किन्तु अब तक के वेदों के प्रमाणों तथा शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाणों से अश्व शब्द अग्नि, राष्ट्र, वीर्य के अर्थ में प्रयोग किया गया है।

इन्हीं शब्दों से हमने भी अश्वमेध यज्ञ का अभिप्राय समझा है। इन्हीं शब्दों से ही अश्वमेध यज्ञ की सार्थकता सिद्ध होती है। अश्वमेध का आयोजन सभी के द्वारा किया जा सकता है। यदि इसे राजा करता है तभी वह जनता के पूर्ण सहयोग से कर सकता है। चाहे वह घुड़सवार सैनिकों द्वारा संसार में आर्य राज्य के विस्तार के लिए ही क्यों न किया जाए। सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की प्राप्ति पर ही वेदों

(शेष पृष्ट ७ पर)

जिला फरीदाबाद में वेदप्रचार मण्डल का गठन तथा कुछ उपयोगी सुझाव

जिला फरीदाबाद के सभी आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक 4 फरवरी 1990 रविवार को आर्यसमाज मन्दिर जवाहर नगर पलवल में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक में आर्यसमाज की वर्तमान समस्याओं के समाधान करने तथा शराब, मांस, दहेज, गोहत्या आदि बन्द कराने के लिए निम्नलिखित महानुभाव ने अपने सुझाव प्रस्तुत किए। श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री सभा उपदेशक ने आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने के लिए जिला वेदप्रचार मण्डल के गठन करने का सुझाव दिया जिस से जिले के कर्मठ तथा लगनशील कार्यकर्ताओं के सहयोग से आर्यसमाज का प्रत्येक ग्राम में प्रचार किया जा सके।

डा० रणजीतसिंह पूर्व सभामन्त्री ने कहा कि आर्यसमाज की पुरानी पीढ़ी के कार्यकर्ता शनैः शनैः हम से विदा हो रहे हैं। अतः हमें उन द्वारा चलाई गई आर्य संस्थाओं की सुरक्षा करनी चाहिए और उनके त्याग, तपस्या तथा लगनशीलता का अनुसरण करके आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। सभी कार्यकर्ताओं को समाज सुधार के कार्यों में तन, मन तथा धन से योगदान करके ऋषि ऋण चुकाने का यत्न करना चाहिए।

प्रो० धर्मचन्द विद्यालंकार पूर्व सभाउपदेशक ने कहा कि संघर्ष करने से आर्यसमाज की शक्ति बढ़ती है। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा हिन्दी रक्षा आंदोलन से आर्यसमाज की शक्ति तथा संगठन का परिचय सारे राष्ट्र को मिला था। अतः हमें अब शराब आदि बुराइयों के विरुद्ध आंदोलन करके रचनात्मक कार्य करना चाहिए। आपने वेदप्रचार तथा शराब विरोधी आंदोलन में समय देने का वचन दिया।

श्री आनन्द स्वरूप भाटिया मन्त्री आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल ने सुझाव दिया कि हमें पहले अपनी त्रुटियों को दूर करके अन्यों की त्रुटियां दूर कराने का यत्न करना चाहिए। आर्य विद्यालयों में केवल आर्य अध्यापकों की नियुक्तियां करके विद्यालयों को आर्यसमाज के प्रचार का केन्द्र बनाना चाहिए। दूरदर्शन पर महाभारत में पाखण्ड दिखाया जा रहा है। आर्यसमाज के विद्वानों को शुद्ध महाभारत की घटनाओं पर लेख लिखने चाहियें। हमें विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओं से सावधान रहें जोकि नमस्ते के स्थान पर नमस्कार तथा मूर्ति पूजा का प्रचार करके आर्यसमाज को हानि पहुंचा रहे हैं।

श्रीमती राजबाला आर्या उपदेशिका ने आर्यसमाज के प्रचार में सहयोग देने का वचन देते हुए सुझाव दिया कि वर्ण तथा आश्रम व्यवस्था पुनः लागू की जावे और आर्य कुमार सभा तथा आर्य युवती दलों की स्थापना करके आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करना चाहिए।

श्री संजीव मंगला एडवोकेट एवं पत्रकार ने आर्यसमाज के संघटन में युवकों को समुचित स्थान देने की मांग की और सभा द्वारा चलाए जा रहे शराबबन्दी आंदोलन में पूरा सहयोग देने का वचन दिया।

श्री यशपाल भाटिया आर्य वीरदल के कार्यकर्त्ता ने शिकायत करते हुए कहा कि आर्यसमाज के अधिकारी आर्य वीरदल को प्रोत्साहन नहीं दे रहे। हम आर्यसमाज के संघटन में कार्य करना चाहते हैं।

श्री हेतराम आर्य पलवल ने श्री कन्हैया लाल जी महता द्वारा चलाए जा रहे दयानन्द विद्यालयों की सराहना करते हुए कहा कि फरीदाबाद में छात्र तथा छात्राओं को आर्यसमाज के सिद्धांतों से पूरी जानकारी दी जावे।

श्री रामरंग प्रधान आर्यसमाज पलवल शहर ने सभा प्रधान जी से अनुरोध किया कि आर्यसमाजों तथा आर्य विद्यालयों की गतिविधि तथा आय-व्यय की जांच पड़ताल करनी चाहिए।

अर्जुनदेव गुलाटी पलवल ने आर्यसमाज के प्रचार कार्यों में सहयोग करने का वचन देते हुए सुझाव दिया कि पद न मिलने पर भी आर्यसमाज का पूर्ववत् कार्य करते रहना चाहिए।

श्री लक्ष्मीचन्द आर्य फरीदाबाद का सुझाव था कि आर्यसमाज के सेवानिवृत्त नेता वानप्रस्थी तथा सन्यासी बनकर आर्यसमाज का कार्य करें। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्यसमाज का प्रचार केन्द्र बनाया जावे और सभी आर्यों के घरों तथा आर्यसमाज मन्दिरों पर ओ३म् के झंडे लगाए जावें।

श्री कृष्ण कुमार भुटानी पलवल ने आर्यसमाज के आर्यसभासदों को ईमानदारी से अपनी मासिक या वार्षिक आमदनी का शतांश (सौवां भाग) अपने आर्यसमाज को सदस्यता शुल्क देना चाहिए। आपने दुःख प्रकट किया कि अनेक बड़े-बड़े अधिकारी तथा व्यापारी अपनी आमदनी का शतांश न देकर एक रुपया देकर आर्यसमाज को हानि पहुंचाते हैं। हम आर्य हैं। अतः हमें अपनी आय नहीं छिपानी चाहिए। शतांश देने पर स्थानीय आर्यसमाज की आय बढ़ेगी और सभा को दशांश की राशि भी अधिक मिलेगी। इस प्रकार आर्यसमाज की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धन के अभाव की शिकायत न रहेगी। मा० हेतराम आर्य मानपुर ने शहरी आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से गिला प्रकट किया कि हम ग्रामीण कार्यकर्ता शहर आर्यसमाज के उत्सवों आदि में सम्मिलित होते हैं परन्तु शहरी कार्यकर्ता ग्रामीण आर्यसमाजों के उत्सवों पर नहीं पहुंचते। हमें सभी को मिलकर आर्यसमाज के कार्यों में सामूहिक रूप से भाग लेना चाहिए।

चौ० राजेन्द्र सिंह पूर्व विधायक ने सभा द्वारा आयोजित जिलेवार कार्यकर्ता बैठकों के आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि शहरों तथा ग्रामों में अनेक ऐसे आर्य नर-नारी हैं जो आर्यसमाज के प्रचार तथा संघटन के कामों में सहयोग दे सकते हैं। अतः वेदप्रचार मण्डल आदि गठन करके उनसे सहयोग लिया जा सकता है। सरकार अपनी आमदनी बढ़ाने के लालच में शराब के ठेके गांव-गांव में खोल रही है जिनसे शराब पीने का रिवाज बढ़ रहा है। शराबी लोग गांवों में आर्यसमाज का प्रचार करने में अड़चन डालते हैं। अतः सभा को प्रत्येक जिले में प्रचारकों की संख्या बढ़ाकर कार्यकर्ताओं के सहयोग से शराब, मांस, दहेज तथा गोहत्या आदि बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए।

श्री सत्यदेव आर्य फरीदाबाद ने सुझाव दिया कि सभा के चुनाव के अवसर पर सभी प्रतिनिधियों को बोलने का अवसर दिया जावे तथा समय देने वाले प्रतिनिधियों को अधिकारी चुना जावे।

श्री बलवन्त सिंह गांव घोडी ने शराबबन्दी आंदोलन में पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाया।

श्री कन्हैया लाल महता संचालक दयानन्द विद्यालय ने सुझाव दिया कि हमें आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को संघटन में रहकर कार्य करना चाहिए। उन्होंने बताया कि फरीदाबाद में बीस के लगभग दयानन्द विद्यालय चलाए जा रहे हैं। मैं चाहता हूं कि प्रत्येक विद्यालय में आर्य वीरदल की स्थापना हो। जो कार्यकर्ता इस कार्य में सहयोग करेगा उसे हर प्रकार की सुविधा दी जाएगी।

श्री जयप्रकाश आर्य पलवल ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि डी०ए०वी० स्कूल तथा कालेज दयानन्द के नाम से चलाए जा रहे हैं, परन्तु उनमें दयानन्द के सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य हो रहा है। पहली कक्षा से अंग्रेजी तथा लड़के तथा लड़कियों को ईसाई मत की निशानी नेकटाई का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जा रहा है। अतः हमें ऐसे विद्यालयों का बहिष्कार करना चाहिए। (शेष पृष्ठ ६ पर)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर रोहतक का
हीरक जयन्ती महोत्सव

यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आपकी प्रिय संस्था उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए अपनी स्थापना के ७५वे वर्ष में पहुंच गई है। इस उपलक्ष्य में २२ से २५ फरवरी १९९० ई० में संस्था के हीरक जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत् के अनेक धुरन्धर विद्वान्, तप.पूत वीतराग साधु - संन्यासी, प्रांतीय तथा केन्द्र सरकार के प्रमुख राजनेता तथा उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

१ फरवरी १९९० से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। पूर्णाहुति २५ फरवरी को प्रात १० बजे होगी। श्रद्धालुजन यज्ञ हेतु पुष्कल घृत सामग्री भेजकर पुण्य के भागी बनें।

संस्था में विशाल पुरातत्त्व संग्रहालय, आयुर्वेदिक रसायनशाला आदर्श गोशाला, साहित्य प्रकाशन विभाग पुस्तकालय तथा वाचनालय आदि अनेक विभागों को परिष्कृत करने के लिए एक करोड रुपए की आवश्यकता है—

१- महाविद्यालय तथा छात्रावास	२० लाख रुपए
२- आयुर्वेदिक रसायनशाला	२० ,, ,,
३- साहित्य प्रकाशन विभाग	२० ,, ,,
४- पुरातत्त्व संग्रहालय	२० ,, ,,
५- छात्रवृत्ति तथा वृद्ध साधु-सेवा हेतु	२० ,, ,,

गुरुकुल के चार प्रकार के सदस्य बनाए जा रहे हैं—

साधारण सदस्य २५१ रुपए विशिष्ट सदस्य ११०० रुपए
संरक्षक सदस्य ५१०० रुपए विशिष्ट संरक्षक सदस्य ११००० रुपए

सभी दानी सज्जनों से नम्र-निवेदन है कि इस आदर्श गुरुकुल की उन्नति के लिए मुक्तहस्त से दान भेजकर कृतार्थ करें।

प्रो० शेरसिंह	स्वा० ओमानन्द सरस्वती	वैद्य बलवन्तसिंह	वेदव्रत शास्त्री
कुलपति	आचार्य	प्रधान	मंत्री

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य सभासदों से मार्च ९० तक का वार्षिक चन्दा उनकी आय के शतांश के अनुसार प्राप्त कर लेवें और उन्हें रसीद दे देवें। जिन समाजों के पास रसीद बही नहीं है, वे छपवा लेवें अथवा सभा कार्यालय रोहतक से ४)०० रुपए प्रति रसीद बुक (१०० रसीद) के लिए रोहतक भेजकर मंगवा लेवें। सभा ने रसीद बही छपवा दी है।

आर्यसमाज के नियमों उपनियमों के अनुसार वही आर्य सभासद चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं, जिनका नाम सदाचारपूर्वक आर्यसमाज के रजिस्टर में २ वर्ष तक अंकित रहा हो और वे अपने समाज को अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) चन्दा देते हों और सत्संगों में उनकी कम से कम २५% उपस्थिति रही हो।

अत सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को इसी नियम के अनुसार आगामी चुनाव में मत देने वाले आर्यसभासदों से मार्च तक चन्दा प्राप्त करके सूची सभा को भेजें तथा अप्रैल मास में नियम अनुसार अपने आर्यसमाजों का वार्षिक चुनाव करें।

जो आर्यसमाज इस कार्य में सभा की सहायता चाहते हों, वे सभा को पत्र लिखें ताकि सभा की ओर से उपदेशक को भेजा जा सके।

—सभा मन्त्री

टंकारा यात्रा का विस्तृत कार्यक्रम

प्रस्थान	पहुंच
20-2-90 सायं 4 बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से	21-2-90 प्रातः उदयपुर रात्रि अहमदाबाद
22-2-90 प्रातः 6 बजे अहमदाबाद से	22-2-90 प्रातः 11 बजे टंकारा 23-2-90 टंकारा
23-2-90 सायं 5 बजे टंकारा से चलकर	23 को रात्रि पोरबन्दर
24-2-90 दोपहर 12 बजे पोरबन्दर से सोमनाथ होकर	25-2-90 प्रातः दमन
26-2-90 प्रातः दमन से	26-2-90 दोपहर बम्बई 26, 27-2-90 बम्बई
28-2-90 प्रातः बम्बई से खंडाला लोनोवाला दिखाकर	रात्रि पूना
1-3-90 प्रातः 6 बजे पूना से महाबलेश्वर होकर	2-3-90 गोवा 2, 3-3-90 गोवा
4-3-90 प्रातः 6 बजे गोवा से	4-3-90 रात्रि पूना
5-3-90 प्रातः 6 बजे पूना से अलोरा देखकर	5-3-90 रात्रि औरंगाबाद
6-3-90 प्रातः 6 बजे औरंगाबाद से अजन्ता देखकर	6-3-90 रात्रि इन्दौर
7-3-90 प्रातः 6 बजे इन्दौर से	7-3-90 रात्रि ग्वालियर
8-3-90 प्रातः 6 बजे ग्वालियर से ताज तथा कृष्ण जन्मभूमि देखकर	रात्रि देहली।

नोट—कार्यक्रम में परिवर्तन करने का प्रबन्धक को अधिकार होगा। निवास व भोजन की व्यवस्था स्थान-स्थान पर आर्यसमाजों में होगी। यदि कहीं ऐसा न हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेंगे। यह 1035/- रु० केवल किराया है। समय का विशेष ध्यान रखें रह जाने पर यात्री स्वयं जिम्मेवार होगा। आधी सवारी को सीट नहीं मिलेगी, खरीदा हुआ टिकट वापिस नहीं होगा। आप आज ही 1035/- रु० प्रति यात्री भिजवाकर अपनी सीटें रिजर्व करा लें कहीं ऐसा न हो कि आप चलना चाहें हमारे पास सीटें न हों।

रामचन्द्र आर्य, प्रबन्धक यात्रा
466, भीम नगर, गुडगांवा
फोन - 23523 पी. पी.

सोनीपत में ला० लाजपतराय की जयन्ती

आर्यवीर दल सोनीपत मण्डल एवम् हिन्दू मंच सोनीपत के तत्वावधान में 28—1—1990 को श्रद्धेय महात्मा प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थी की अध्यक्षता में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की जयन्ती पर श्री खानचन्द जी मुञ्जाल (उपप्रधान आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत) के निवास स्थान 99-एल माडल टाऊन सोनीपत में यज्ञ एवम् सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री ओमानन्द बधवा (संचालक हिन्दू मंच), श्री शोभराज आर्य (संरक्षक आ० स० शांति नगर), हरिश्चन्द्र स्नेही (मण्डलपति आ०वी० दल), श्री राजकुमार अरोड़ा, श्रीमती सुनीता अरोड़ा, श्री तेजभान 'नश्तर' श्री देवराज पुरछड़ा, महात्मा प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थी, श्री मा० प्यारेलाल जी आदि विद्वानों ने प्रवचन एवम् गीतों के माध्यम से जनता जनार्दन को लाभान्वित किया।

—हरिश्चन्द्र 'स्नेही'
मण्डलपति, आर्यवीर दल सोनीपत

हमें अपने महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलकर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करना चाहिए।

हिन्दी बनाम अंग्रेजी-अंग्रेजी देश की जनता की भाषा नहीं

—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल ।

अंग्रेजी पिछले दो सौ वर्षों से इस देश में पढ़ाई जाती रही है परन्तु दो से चार प्रतिशत लोग ही इसे अब तक जान पाए हैं। इस से देश की सांस्कृतिक एवं आर्थिक सम्पदा का भारी अपव्यय हुआ है। यदि हम अंग्रेजी वर्चस्व के सामाजिक एवं आर्थिक कुप्रभाव का विश्लेषण करे तो इसके परिणाम भयावह हैं। देश के अधिकांश लोग अपनी बौद्धिक एवं मानसिक क्षमता का उपयोग नहीं कर पाए हैं। क्योंकि वे अंग्रेजी नहीं जानते। कुछ विशिष्ट गिने-चुने व्यक्ति ही समाज में उच्च पद प्राप्त करते हैं। पब्लिक स्कूल एवं अंग्रेजी में शिक्षा कुछ लोगों तक ही सीमित है। अंग्रेजी के कारण देश के सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में भारी असमानता फैली है। अध्येताओं का कहना है कि अंग्रेजी के कारण देश में वर्ग प्रभुता तथा पूंजीवाद को बढ़ावा मिला है, नगर और ग्राम के लोगों में विभाजन हुआ है। अधिकांश नौकरियां अंग्रेजी पढ़े-लिखे शिक्षित शहरी लोगों को प्राप्त होती हैं जिससे ग्रामीण जनता पिछड़ रही है। (देखें—'दी ट्रीब्यून' चण्डीगढ़ ३० ३ ८६, २५-४-८६, पालिटिक्स आफ इंगलिश)।

अंग्रेजी का इस देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। इससे एक विशेष वर्ग को प्रोत्साहन मिलता है, अंग्रेजी प्रतिष्ठा या बड़प्पन का प्रतीक हो गई है। आंकड़े यह बताते है कि यह अल्पसंख्यक सम्पन्न वर्ग ही चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्राविधि, प्रशासनिक तथा शिक्षा आदि सेवाओं के उच्च पदों पर अधिकार किए हुए है। इसके विपरीत देश की ६६% जनता के बच्चों की शिक्षा माध्यमिक तथा पूर्वमाध्यमिक स्तर पर ही समाप्त हो जाती है।

स्कूल स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर पर सैकड़ों, हजारों विद्यार्थी अंग्रेजी मे फेल होते हैं। छात्र वर्ष का अधिकांश समय अंग्रेजी पढ़ने में लगाते हैं फिर भी परीक्षा में अंग्रेजी का डर बना रहता है। केरल देश का सर्वाधिक पढ़ा-लिखा प्रदेश माना जाता है किन्तु वहा भी अंग्रेजी अध्ययन के जो दुष्परिणाम सामने आए है वे चौका देने वाले हैं। एक अध्ययन—'फैक्टर्स रिलेटिंग टु अण्डर अचीवमेंट इन इंगलिश—इन दी स्कूल्ज आफ केरल— ले० भर्सी अब्राहम—इण्डियन बुक क्रानिकल नई दिल्ली जुलाई १६/१६७६ के अनुसार अंग्रेजी के कारण राष्ट्र की मानवीय एवं बौद्धिक—क्षमता का भारी अपव्यय हुआ है। यद्यपि यह अध्ययन केरल तक सीमित है परन्तु यह स्थिति पूरे भारत पर लागू होती है।

जब केरल की यह स्थिति है तो देश के अन्य प्रदेशों का तो कहना ही क्या है? यहां तक कि बंगाल में जिसे देश का सबसे जागरूक प्रांत कहा जाता है और जो कभी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का गढ़ था वहां भी बच्चे अंग्रेजी को भली भांति नहीं समझते। एक अध्ययन के अनुसार इंगलिश एजुकेशन इन इण्डिया एसपेसियली इन दी कंटेक्टस आफ बंगाल—ले० के० के० चटर्जी (इण्डियन बुक क्रानिकल १ मई ७७) कलकत्ता जैसे महानगर में अंग्रेजी जानने का अर्थ कुछ शब्दों तक सीमित है।

यदि केरल और बंगाल जैसे प्रांतों में अंग्रेजी अध्ययन की यह दशा है तो देश के अन्य प्रांतों में अंग्रेजी शिक्षा के विषय में कहना ही क्या? हरयाणा का उदाहरण दिया जा सकता है। हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड (भिवानी) द्वारा प्रकाशित मैट्रिक परीक्षा परिणाम गजट, मार्च १६८१ (भाग दो पृष्ठ १६३०) तथा मार्च १६८२ (भाग तीन पृष्ठ १०८७) की पास % तालिका के अनुसार दसवी में अंग्रेजी में फेल होने वाले विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक है। दशक के अन्त में स्थिति यहा तक बिगड़ गई कि १६८८ की दसवी परीक्षा में छात्र अंग्रेजी में भारी संख्या में फेल रहे जिसके कारण बोर्ड को निर्णय लेना पड़ा कि अंग्रेजी में पास होना अनिवार्य नहीं है।

यह तो रही स्कूल स्तर की बात। कालेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर भी अधिकांश छात्र अंग्रेजी में फेल होते है। विद्यार्थी सारा साल अंग्रेजी पर लगाते हैं, अंग्रेजी में ट्यूशन भी पढते हैं। फिर भी परिणाम निराशाजनक होते हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की १६८१-८२ की स्नातक कक्षाओं के परिणाम यही दर्शाते हैं। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अप्रैल १६८२ के रिजल्ट गजट (i) प्री-यूनिवर्सिटी, पृष्ठ २१६ (ii) बी०ए०/बी०एस०सी०-I पास कोर्स पृष्ठ १६६ (iii) बी०ए०/बी० एस०सी०-III पृष्ठ १५६ की पास % तालिका के अनुसार इन परीक्षाओं में अंग्रेजी के परिणाम ४४% से ५३% तक रहे हैं। दशक के अन्त में कालेजों में स्थिति यहा तक आ गई कि कक्षाओं मे वही अध्यापक सफल हैं जो अंग्रेजी को हिन्दी माध्यम में पढ़ा सकते हैं जबकि अंग्रेजी के लिए अन्य विषयों की तुलना में पीरियड भी अधिक दिए जाते है। ग्यारहवी तथा बारहवी हिन्दी (कोर) के लिए तीन-चार पीरियड दिए जाते हैं जबकि अंग्रेजी (कोर) के लिए आठ-नौ पीरियड प्रति सप्ताह दिए जाते हैं। आज से बीस वर्ष पूर्व भी जब लगभग पूरे पंजाब तथा हरयाणा में पंजाब यूनिवर्सिटी का क्षेत्राधिकार था, अंग्रेजी की यही स्थिति थी।

पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित प्री-यूनिवर्सिटी (ह्यूमेनिटिज) रिजल्ट गजट, अप्रैल १६७३, पृष्ठ ८८६ ८७ के अनुसार १६६६ से ७३ तक की प्री-यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में अंग्रेजी के परिणाम क्रमशः ५६% ४८%, ५३%- ५७% तथा ५४% रहे हैं। यह उस समय की बात है। आज तो स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि वर्ष १६८८-८६ से पंजाब के सभी विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी का अध्ययन अनिवार्य विषय के रूप में समाप्त कर दिया गया है। इससे अधिक पंजाब, हरयाणा में अंग्रेजी की स्थिति के बारे में कहने की आवश्यकता नहीं।

इस प्रकार देश तथा देश की जनता एवं विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी शिक्षा के भयानक परिणाम हुए है। अंग्रेजी देश मे आर्थिक एवं सामाजिक विषमता का कारण बनी है, एक वर्ग विशेष के प्रभुत्व का कारण बनी है फिर भी यह कहा जाता है कि हिन्दी लोगों पर थोपी जा रही है। स्थिति सर्वथा विपरीत है। वास्तव में अंग्रेजी देश पर लादी गई है। अंग्रेजी के लगातार प्रयोग ने हिन्दी के राष्ट्र भाषा, देशकी सम्पर्क भाषा बनने के मार्ग में रोड़ा अटकाया है।

यह भी कहा जाता है कि हिन्दी भारतीय भाषाओं पर हावी हो रही है, हिन्दी के कारण देश की अन्य भाषाओं का विकास रुक जाएगा। वस्तुत: स्थिति इसके विपरीत है। हिन्दी के विकास मे भारतीय भाषाएं बाधक नहीं है जितनी कि अंग्रेजी। हिन्दी का भारतीय भाषाओं से टकराव नहीं है अपितु वे इसके विकास मे सहायक हैं। इसलिए त्रिभाषा फारमूला लागू किया गया था। त्रिभाषा फारमूला राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ करने वाला है। यह विद्यार्थियों के लिए बोझ नहीं है। केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सी०आई०आई०एल०) मैसूर द्वारा किए गए एक अध्ययन 'दी लेंग्वेज लीड' पृष्ठ १२६ के अनुसार भारत जैसे विशाल विविध भाषायी देश के लिए अनेक भाषाओं का अध्ययन आवश्यक एवं अनिवार्य है। आवश्यकता है आज त्रिभाषा फारमूले को दृढ़ता से लागू करने की।

विज्ञान एवं तकनीकी साहित्य के सन्दर्भ में भी हिन्दी पर दोष लगाया जाता है कि उसमें विज्ञान सम्बन्धी साहित्य का अभाव है परन्तु यहां भी अंग्रेजी आगे आ रही है। (क्रमशः)

वेद प्रचारमंडल का गठन—

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्री अमरचन्द पुरोहित ने कहा आर्यसमाज के नेतृत्व में त्रुटियां आ रही हैं। अतः नेताओं को सर्वप्रथम अपना सुधार करना होगा।

श्री ओमप्रकाश शास्त्री ने सुझाव दिया कि जाति पाति को खत्म करें क्यों कि हम सबकी एक ही जाति है। सबको आर्य बनना चाहिए

प्रो० साहब ने सभा के कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुये बताया कि गत ५-६ वर्षों से हरयाणा में शराबबन्दी अभियान चलाया जा रहा है। इसे सफल करने के लिए आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को तन मन धन से सहयोग देना चाहिए। सभा के प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज का सन्देश फैलाने के हेतु ही वेदप्रचार मण्डलों के गठन करने का कार्यक्रम बनाया है। प्रत्येक जिले में उपदेशक तथा भजन मण्डलियों को प्रचारार्थ नियुक्त किया जावेगा। सेवानिवृत्त अध्यापकों की भी इस कार्य में सहयोग लेने का प्रयत्न किया जा रहा है।

सभा के मुख्यकार्यालय के साथ स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया है। इस पुस्तकालय में आर्य समाज के मूल्यवान साहित्य संग्रह किया जावेगा जिसके स्वाध्याय करने पर वैदिक विद्वान तैयार किये जावेंगे। सभा की ओर से मई मास में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की अर्धशताब्दी समारोह मनाया जावेगा। इस सत्याग्रह में भाग लेने वालों का जीवन परिचय प्रकाशित किया जावेगा। प्रत: जिन्होंने अभी तक अपना परिचय सभा को नहीं भेजा है वे शीघ्र लिखकर अपने चित्र के साथ भेज देवें।

आपने आर्यजनता को आह्वान करते हुये कहा कि पूर्व की भांति राष्ट्र रक्षा हेतु तैयारी करें। पाकिस्तान भारत पर दो तरफा आक्रमण कर रहा है। वह एक ओर भारत के साथ युद्ध करने का अभ्यास कर दूसरी ओर पाकिस्तान भारत में हेरोइन जैसे नशीले पदार्थों की तस्करी करके हमारे नवयुवकों को बेहोश रखना चाहता है। प्रतिदिन यहां उग्रवादियों को शिक्षित करके गडबडी कराने का यत्न कर रहा है आपने बताया कि पाकिस्तान ने स्वयं अपने देश में शराब आदि नशीले पदार्थों के सेवन पर पाबन्दी लगा रखी है। यही कारण है कि खेलों में भारतीय युवक पराजय और पाकिस्तानी युवक विजय प्राप्त कर रहे हैं। भारत के सभी राजनैतिक दल शराब समर्थक हैं और इनके नेता अपने आपको स्वामी दयानन्द तथा महात्मा गांधी के भाषणों में गुणगान करते हैं और आचरण उनके विरुद्ध कर रहे हैं। बैठक के अन्त में आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल के प्रधान श्री धनपतराय आर्य ने सभा के अधिकारियों का इस बैठक के आयोजन करने पर स्वागत किया।

—केदार सिंह आर्य

आवश्यकता है

फुटकर विचार

—आनन्द स्वरूप भाटिया मन्त्री,
आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल

देश भक्तो सावधान !

बड़े दुःख की बात है कि जिन कारणों से हमारा देश दासता की जंजीरों में जकडा गया था आज वही सब कारण फिर से सिर उठाने लगे हैं। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने देश की गुलामी के कारण मूर्ति पूजा, जातिवाद, छुआछूत, एक धर्म, एक ईश्वर तथा एक भाषा को न मानना तथा अन्ध विश्वास माने हैं, और इन कारणों को दूर करने के लिए उन्होंने सर-धड़ की बाजी लगादी और अन्त में विषपान करके देश के लिए शहीद हो गए। स्वामी जी के इस कार्य को उसके अनुयाइयों ने आर्यसमाज के माध्यम से आगे बढ़ाया और इस रास्ते पर चलते हुए अनगिनत वीरों ने शाहदत का जाम पिया—अन्त में तपस्या रंग लाई और देश स्वतन्त्र हो गया। विचार था कि जिन कारणों से देश गुलाम हुआ अब उन कारणों को पनपने न दिया जाएगा, परन्तु देश का दुर्भाग्य है कि सत्ता ऐसे नेताओं के हाथ में आ गई जिन्होंने भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का ज्ञान नहीं था अतः उनकी कमजोरी के कारण ४३ वर्ष की स्वतन्त्रता के बाद भी जातिवाद, छुआछूत, मूर्तिपूजा, प्रांतवाद तथा भाषावाद ने देश को फिर दासता की खाई में धकेलना प्रारम्भ कर दिया है। हम सब देशवासी संकल्प करें कि इन कारणों को समाप्त करके ही दम लेंगे - देशभक्तो सावधान !

जो जितने गुलामी के कारण बने,
वही आज फिर सिर उठाने लगे।
बिगड़ने न दो, शक्ल अपने वतन को,
बनाने को इसमें जमाने लगे॥

स्वतन्त्रता सेनानी बहन लक्ष्मीदेवी आर्या का निधन

स्वतन्त्रता सेनानी एवं आर्य महिला समाज सेविका बहन लक्ष्मी देवी आर्या का ग्राम रोहणा जिला रोहतक का लम्बी बीमारी के बाद 3 फरवरी की रात्रि को 1990 को निधन हो गया। उनकी आयु 80 वर्ष से अधिक थी। उनका जन्म ग्राम रोहणा के एक आर्य परिवार में हुआ था। उनका विवाह रोहतक में हुआ था, परन्तु वे थोडे समय में विधवा हो गई। इसके बाद उन्होंने अपना सारा जीवन समाज सेवा में लगा दिया। वे 1930 में महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में चली गई और स्वतन्त्रता संग्राम के लिए संघर्ष करती हुई जेलयात्रा की। उन्हें भारत सरकार से पेंशन तथा ताम्रपत्र दिया गया था।

आपने अपनी रोहतक स्थित 5 एकड भूमि को भूदान यज्ञ तथा समाज सेवा के कार्यों के लिए दान कर दिया। हरयाणा के गुरुकुलों को उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग दिया। पेंशन आदि से प्राप्त धनराशि को एक ट्रस्ट बनाकर गुरुकुल कालवा जिला जीन्द को दान में दे दिया। उनकी समाज सेवा को सदा स्मरण किया जायेगा।

उनकी अन्त्येष्टि संस्कार 4 फरवरी को ग्राम रोहणा में वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल कालवा के आचार्य बलदेव जी, गुरुकुल झज्जर से ब्र० जीवानन्द जी, विजयकुमार जी तथा आर्यसमाजों और दयानन्दमठ के कार्यकर्त्ता भारी संख्या में उपस्थित थे परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

वीर हकीकत से बनें, बालक वीर महान्

देश, धर्म पर वीर जो, होते हैं बलिदान।
गाता है सारा जगत्, उनके यश के गान॥

उनके यश के गान, धन्य हैं वे बलधारी।
उनको करते याद, श्रद्धा से सब नर नारी॥
मानवता के लिए, काम जो कर जाते हैं।
"नन्दलाल" वे अमर विश्व में हो जाते हैं॥

भारत में था उस समय, मोहम्मद शाही राज।
महा घोर अंधेर था, था सभी दुखी समाज॥

था तब दुखी समाज, दुष्ट शासक थे भारी।
करते थे नित जुल्म, प्रजा पर अत्याचारी॥
अबला, दीन, अनाथ, कष्ट भारी पाते थे।
हिन्दुओं पर जुल्म, भयानक जो ढाते थे॥

भारत में था उस समय, नगर बड़ा लाहौर।
उसका एक नवाब था, सुनो सभी कर गौर॥

सुनो सभी कर गौर, हकीकत से यों बोला।
जिसने धर्म, अधर्म कहीं किंचित भी तोला॥
एक हकीकत बात, मानले बेटा मेरी।
बच जाएगी जान, कीमती निश्चित तेरी॥

मुसलमान बन मौज ले, मत बन तू नादान।
पाएगा तू राज सुख, हित, अनहित पहचान॥

हित, अनहित पहचान, व्यर्थ मारा जाएगा।
कर, कर मेरी बात, याद तू पछताएगा॥
अपनी लडकी तुझे, हकीकत मैं ब्याह दूंगा।
तेरी खातिर कष्ट, झेल मैं सारे लूंगा॥

वीर हकीकत शेर सम, बोला सीना तान।
मत कर बद बकवास तू, करले बन्द जुबान॥

"करले बन्द जुबान, दिखा मत लालच पापी।
धर्म तजूंगा नहीं, कभी भी सुन सन्तापी॥
अमर आत्मा कभी, नहीं मारे मरती है।
धर्म वीर को याद, सदा दुनियां करती है॥"

सुन ये दुष्ट नवाब ने, बुलवाया जल्लाद।
इसकी गरदन काटदे, दिया उसे इरशाद॥

दिया उसे इरशाद, 'हकीकत ना दहलाया।'
किया सार्थक नाम, जगत में नाम कमाया॥
मर कर भी हो गया, अमर जग में बलिदानी।
भूलेगा ना विश्व, कभी उसकी कुरबानी॥

कृपा भारतवर्ष पर, करिए कृपानिधान।
वीर हकीकत से बने, बालक वीर महान्॥

—प० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री,
भजनोपदेशक ग्राम पो० बहीन जि० फरीदाबाद

- मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द
- मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी
- मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

उझाना में खुलेआम शराब की अवैध बिक्री

नरवाना (जींद) २४ जनवरी। इस उपमण्डल के गांव उझाना में शराब की अवैध बिक्री आम हो गई है। इससे सारे गांव का माहौल खराब हो रहा है। वैसे गांव का सरपंच शराब की अवैध बिक्री रुकवाने के लिए जी तोड कोशिश कर रहा है।

गांव के सरपंच ने बताया कि उनकी पंचायत ने सर्वसम्मति से गांव से शराब का ठेका हटवा दिया था और गांव में शराब बेचने पर पाबन्दी लगा दी थी। इसके बावजूद भी इस गांव में शराब की अवैध बिक्री के लगभग बीस अड्डे हैं।

शराब की इस अवैध बिक्री को रोकने के लिए पिछले दिनों गांव का सरपंच जींद के पुलिस अधीक्षक से भी मिला था। तब पुलिस ने गांव में एक दो स्थानों पर छापा मारा था। लेकिन इसके बावजूद गांव में शराब की अवैध बिक्री जारी है। —दैनिक जनसत्ता

अश्वमेध यज्ञ का स्वरूप

(पृष्ठ २ का शेष)

का मानवता का सन्देश दिग्दिगन्त में द्वीप द्वीपान्तर में प्रसारित किया जा सकता है। अश्वमेध उसकी आदि भूमिका है। उसका सर्वप्रथम आधार है। यह आधार तभी तैयार किया जा सकता है जब जनता का ध्यान अश्वमेध की ओर किया जाए। इसकी आधार शिला मोरीशस के आर्यों की शिरोमणि सभा आर्यसभा द्वारा रखी जा चुकी है। यह अश्वमेध यज्ञ सिर्फ अश्वमेध ही नहीं है, उसके साथ ही चारों वेदों से ब्रह्म पारायण महायज्ञ का भी संचालन किया जा रहा है। जिससे आर्यों का संगठन सुदृढ होगा, वेद प्रवचनों से जनता का सुधार होगा। दूषित पर्यावरण शुद्ध होगा। परस्पर सहभोज से प्रीति बढेगी, अतिथि सेवा से समाज के अंदर सद्भाव बढेगा। घी, सामग्री, समिधाओं में जो धन व्यय होगा, उससे वैभव बढेगा। इससे लाभ ही लाभ होगा हानि कुछ भी नहीं।

मेरी सलाह से—इतना उच्च एवं पवित्र निर्णय लेने के लिए आर्यसभा मोरिशस बधाई की पात्र है।

इसके प्रधान व मन्त्री तथा अंतरंग सदस्य तथा साधारण सदस्य एवं महिला आर्य सदस्य भी बधाई के अधिकारी हैं, जो इसमें दिन रात सहयोग करके तन, मन, धन से इसमें जुटे हुए हैं। विशेषकर पुरोहितों का कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। उनकी भूमिका इसमें परम सम्माननीय रही है।

एक आदर्श जिलाधीश

पानीपत के उपायुक्त श्री विजय कुमार आई.ए.एस. एक महान् आदर्श जिलाधीश हैं। पूरे जिला क्षेत्र में उनकी चर्चा है। १८ जनवरी को आर्य गुरुकुल डिकाडला (पानीपत) में श्री ला० परमानन्द ब्लाक भवन का शिलान्यास करने के बाद एक रंगीन दूरदर्शन गुरुकुल को भेंट दिया। एक कमरा लगभग पचास हजार रुपए मूल्य का भी बनाया जाएगा और कुछ शौचालय भी बनाए जायेंगे। उपायुक्त महोदय ने उपस्थित क्षेत्र वासियों को शराब से बचे रहने की प्रेरणा दी।

—ओ३म्स्वरूपार्य आचार्य,
आर्य गुरुकुल डिकाडला

शराब हटाओ
देश बचाओ।

देश पर गहराता संकट—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सेनाओं को सब प्रकार का सुख और मदद पहुंचाने में देशका कोई भी व्यक्ति पीछे नहीं रहा, सबने बढ़-चढ़कर और पूरी तन्मयता से अपने कर्त्तव्य का पालन किया।

इस अवसर पर श्री वी०पी० सिंह और श्री राजीव गांधी की मुलाकात सामयिक है और स्वागत योग्य भी। इस बार ऐसा लगता है कि यदि युद्ध हुआ तो पिछले सब युद्धों से अधिक भीषण होगा और अपने राष्ट्र की विजय और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए देश को पहले युद्धों से कहीं अधिक त्याग और बलिदान करने पड़ेंगे। आज जरूरत है सारे देश को जागने की, सब प्रकार की तैयारी पकड़ने की और विश्वशान्ति की खोज में लगी हुई मानवता के शत्रुओं को सबक सिखाने की ताकि वे फिर कभी सिर न उठा सकें।

अंग्रेजी हटाओ
देश बचाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि०नं० P/RTK ३२ फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १ ९६…



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालङ्कार, एम. ए. माघ ३० २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क १२ १४ फरवरी, १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

राजप्रजाधर्मविषया:

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पृष्ठ २३८ से)

(जनिष्ठा उग्र:०) राजसभायां, जनिष्ठा अतिशयेन जना विद्वांसो धर्मात्मान:, श्रेष्ठप्रकृतीन्मनुष्यान्प्रति, सदा सुखदास्सोम्या भवेयु:। तथा दुष्टान् प्रत्युग्रो व्यवहारो धार्य्य इति। कुतो यद्राजकर्मास्ति तद् द्विविधं भवत्येकं सहस्वद, द्वितीयमुग्रवदर्थात्क्वचिद्देशकालवस्त्वनुसारेण सहनं कर्त्तव्यम्, क्वचित्तद्विपर्यये राजपुरुषदुष्टेषूग्रो दण्डो निपातनीयश्चैतत्क्षत्रस्य धर्मस्य स्वरूपं भवति। तथा (मन्द्रओजिष्ठ:) उत्तमकर्मकारिभ्य आनन्दकरो, दुष्टेभ्यो दु:खप्रदत्वात्पुत्तमवीरपुरुषसेनादिपदार्थसामग्र्या सहितो यो राजधर्मोऽस्ति स च क्षत्रस्य स्वरूपमस्ति।१।

(जनिष्ठा उग्र०) राजाओं की सेना और सभा में जो पुरुष हों वे सब दुष्टों पर तेजधारी, श्रेष्ठों पर शान्तरूप, सुख दु:ख सहन करने वाले और धन के लिए अत्यन्त पुरुषार्थी हों। क्योंकि दुष्टों पर क्रुद्धस्वभाव और श्रेष्ठों पर सहनशील होना, यही राज्य का स्वरूप है। (मन्द्र ओजिष्ठ०) जो आनन्दित और पराक्रमयुक्त होना है, वही राज्य का स्वरूप है ॥१॥ क्योंकि राज्यकर्म सबसे बड़ा है। इसमें शूरवीर आदि गुणयुक्त पुरुषों को सभा और सेना रखकर अच्छी प्रकार राज्य को बढ़ाना चाहिए ॥२॥

(ब्रह्म वै रथन्तरं०) ब्रह्म अर्थात् परमेश्वर और वेदविद्या से युक्त जो पूर्ण विद्वान् ब्राह्मण है, वही राज्य के प्रबन्धों में सुखप्राप्ति का हेतु होता है। इसलिए अच्छे राज्य के होने से ही सत्यविद्या प्रकाश को प्राप्त होती है ॥३॥

उत्तम विद्या और न्याययुक्त राज्य का नाम ओज है। जिसको इच्छा से कोई उल्लंघन वा अन्यथा कोई नहीं कर सकता। क्योंकि ओज अर्थात् बल का नाम क्षत्र और पराक्रम का नाम राजन्य है। ये दोनों जब परस्पर मिलते हैं, तभी संसार की उन्नति होती है ॥४॥

इसके होने और परमेश्वर की कृपा से मनुष्य के राजकर्म, चक्रवर्ती राज्य, भोग का राज्य, अपना राज्य, विविध राज्य, परमेष्ठिराज्य, प्रकाशरूप राज्य, महाराज्य, राजों का अधिपतिरूप राज्य और अपने वश का राज्य इत्यादि उत्तम उत्तम सुख बढ़ते हैं ॥५॥

जो क्षत्र अर्थात् राज्य परमेश्वर आधीन और विद्वानों के प्रबन्ध में होता है वह सब सुखकारक पदार्थ और वीर पुरुषों से अत्यन्त प्रकाशित होता है। (सप्रजापतिका०) और वे विद्वान् एक अद्वितीय परमेश्वर के ही उपासक होते हैं। क्योंकि वही एक परमात्मा सब देवों के बीच में अनन्त विद्यायुक्त और अपार बलवान् है। तथा अत्यन्त सहनस्वभाव और सबसे उत्तम है। वही हमको सब दु:खों के पार उतार के सब सुखों को प्राप्त कराने वाला है। उसी परमात्मा को हम लोग अपने राज्य और सभा में अभिषेक करके अपना न्यायकारी राजा सदा के लिए मानते हैं तथा जिसका नाम इन्द्र अर्थात् परमैश्वर्य्ययुक्त है ॥७॥

वही हमारा सम्राट अर्थात् चक्रवर्ती राजा और वही हमको भी चक्रवर्ती राज्य देने वाला है। जो पिता के सदृश सब प्रकार से हमारा पालन करने वाला, स्वराट् अर्थात् स्वयं प्रकाशस्वरूप और प्रकाशरूप राज्य का देनेवाला है। तथा जो विराट् अर्थात् सबका प्रकाशक, विविध राज्य का देने वाला है, उसी को हम राजा और सब राजाओं का पिता मानते हैं। क्योंकि वही परमेष्ठी सर्वोत्तम राज्य का भी देने वाला है। उसी की कृपा से मैंने राज्य को प्रसिद्ध किया अर्थात् मैं क्षत्रिय और सब प्राणियों का अधिपति हुआ। तथा प्रजाओं का संग्रह दुष्टों के नगरों का भेदन, असुर अर्थात् चोर डाकुओं का ताडन, ब्रह्म अर्थात् वेदविद्या का पालन और धर्म की रक्षा करने वाला हूं ॥८॥

जो क्षत्रिय इस प्रकार के गुण और सत्य कर्मों से युक्त होता है, वह सब युद्धों को जीत लेता है। तथा सब उत्तम सुख और लोकों का अधिकारी बन कर सब राजाओं के बीच में अत्यन्त उत्तमता को प्राप्त होता है। जिससे इस लोक में चक्रवर्ती राज्य और लक्ष्मी को भोग के मरणान्तर परमेश्वर के समीप सब सुखों को भोगता है। क्योंकि ऐन्द्र अर्थात् महाऐश्वर्ययुक्त अभिषेक से क्षत्रिय को प्रतिज्ञापूर्वक राज्याधिकार मिलता है। इसलिए जिस देश में इस प्रकार का राज्यप्रबन्ध किया जाता है, वह देश अत्यन्त सुख को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

राजसभाप्रबन्ध से जो यथावत् प्रजा का पालन किया जाता है, वही स्विष्टकृत् अर्थात् अच्छी प्रकार चाहे हुए सुख का करने वाला होता है। (क्षत्रं वै सा०) जो राजकर्म दुष्टों का नाश और श्रेष्ठों का पालन करने वाला है, (साम्राज्य०) वही साम्राज्यकारी अर्थात् राजसुखकारक होता है ॥१०॥

(ब्रह्म वै) जो मनुष्य ब्रह्म अर्थात् परमेश्वर और वेद का जानने वाला है, वही ब्राह्मण होने के योग्य है। (सर्व०) सब शत्रुओं का जीतने वाला, पण्डित, शूरतादिगुणयुक्त श्रेष्ठ, वीरपुरुष क्षात्रधर्म को स्वीकार करता है, सो क्षत्रिय होने के योग्य है। (तदस्य ब्रह्मणा०) ऐसे ब्राह्मण और क्षत्रियों के साथ न्यायपालक राजा को अनेक प्रकार से लक्ष्मी प्राप्त होती है और उसके खजाने की हानि कभी नहीं होती (युद्ध वै) यहां इस बात को जानना चाहिए कि जो राजा को युद्ध करना है वही उसका बल होता है। उसके बिना बहुत धन और सुख की प्राप्ति कभी नहीं होती। क्योंकि निघण्टु में संग्राम ही का नाम 'महाधन' है। सो उसको महाधन इसलिए कहते है, कि उससे बड़े-बड़े उत्तम पदार्थ होते हैं, क्योंकि बिना संग्राम के अत्यन्त प्रतिष्ठा और धन कभी नहीं प्राप्त होता ॥ ११ ॥

राष्ट्र०) और जो न्याय से राज्य का पालन करना है, वही क्षत्रियों का 'अश्वमेध' कहाता है। किन्तु घोड़े को मार के उसके अङ्गों का होम करना यह अश्वमेध नहीं है ॥१२॥ (शेष पृष्ठ २ पर)

राजप्रजाधर्मविषयाः—

(प्रथम पृष्ठ से आगे)

(राजन्य एव०) पूर्वोक्त राजा जब शूरतारूप कीर्ति को धारण करता है, तभी सम्पूर्ण पृथिवी के राज्य करने को समर्थ होता है। इसलिए जिस देश में युद्ध को अत्यन्त चाहने वाला, निर्भय, शस्त्र अस्त्र चलाने में अति चतुर और जिसका रथ पृथिवी, समुद्र और अन्तरिक्ष में जाने वाला हो, ऐसा राजा होता है, वहां भय और दुःख नहीं होते ॥ १३ ॥

(श्रीर्वै राष्ट्र) श्री जो है लक्ष्मी, वही राज्य का स्वरूप, सामग्री और मध्य है। तथा राज्य का जो रक्षण करना है, वही शोभा अर्थात् श्रेष्ठभाग कहाता है। राज्य के लिए एक को राजा कभी नहीं मानना चाहिए। क्योंकि जहां एक को राजा मानते हैं, वहां सब प्रजा दुःखी और उसके उत्तम पदार्थों का अभाव हो जाता है। इसी से किसी की उन्नति नहीं होती ॥ १४ ॥

इसी प्रकार सभा करके राज्य का प्रबन्ध आर्यों में श्रीमन्महाराज युधिष्ठिरपर्यन्त बराबर चला आया है, जिसकी साक्षी महाभारत के राजधर्म आदि ग्रन्थ तथा मनुस्मृत्यादि धर्मशास्त्रों में यथावत् लिखी है। उनमे जो कुछ प्रक्षिप्त किया है उसको छोड के बाकी सब अच्छा है, क्योंकि वह वेदों के अनुकूल है। और आर्यों की यह एक बात बडी उत्तम थी कि जिस सभा वा न्यायाधीश के सामने अन्याय हो, वह प्रजा का दोष नही मानते थे, किन्तु यह दोष सभाध्यक्ष, सभासद् और न्यायाधीश का ही गिना जाता था। इसलिए वे लोग सत्य न्याय करने मे अत्यन्त पुरुषार्थ करते थे, कि जिससे आर्यावर्त के न्यायधर में कभी अन्याय नही होता था। और जहा होता था वहा उन्ही न्यायाधीशो को दोष देते थे। यही सब आर्यो का सिद्धात है अर्थात् इन्ही वेदादि शस्त्रो की रीति से आर्यो ने भूगोल मे करोडो वर्ष राज्य किया है, इसमें कुछ सन्देह नही है।

—पुष्करलाल आर्य
१२१, काटन स्ट्रीट कलकत्ता-७

यमुना का शुद्धिकरण

पिछले दिनो यह समाचार पढ़कर कि किसी शकराचार्य के नेतृत्व मे कुछ अन्धविश्वासी लोगों ने यमुना नदी को शुद्ध करने हेतु उसमें दो हजार लीटर दूध डाला—यह शेर जबान पर आगया कि—

हंसी आती है मुझे—
हजरते इन्सान पर
फेले—बद तो खुद करे—
और नाम ले शैतान का।

प्रकृति ने शुद्ध मीठा तथा पवित्र जल नदियों द्वारा हमारे उपयोग के लिए भेजा परन्तु हमने उस जल में नगरो का मल-मूत्र, कारखानो का कचरा तथा गन्दा पानी तथा लाशों व हड्डियों को डाल डालकर उसे अपवित्र कर दिया फिर स्वय ही उसे पवित्र करने के लिए देवताओ को दूध बहाकर प्रसन्न करने का ढोंग रचने लगे।

क्या दूध को गगाजल में डालकर वह पानी शुद्ध हो जाएगा? यदि नही तो फिर दूध को इस प्रकार नष्ट करने से क्या लाभ? काश यही दूध यदि हस्पताल के गरीब मरीजो मे बाट दिया जाता या उन अनाथ बच्चो को दिया जाता जिन्हे दूध का स्वाद स्वप्न मे भी याद नहीं या उन विद्यार्थियो को दिया जाता जो भारत मा का भविष्य बनने जा रहे है तो कितना सार्थक होता। परन्तु हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) का दुर्भाग्य कि यह जगाने पर भी नही जागता। आर्यसमाज आरम्भ से पुकार पुकार कर कह रहा है कि हे हिन्दू धर्म के ठेकेदारो इसे अब और रसातल मे मत फेंको। वेदो का स्वय स्वाध्याय करो और उसी का जनमानस में प्रचार करके अन्ध विश्वास, पाखण्ड और जहालत को दूर करने में आर्यसमाज का साथ दो।

—आनन्द स्वरूप भाटिया, मन्त्री
आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज	भैंसी जिला मुजफ्फर नगर	१६ से १८ फरवरी
”	बालू जिला कैथल	१७ से १९ ”
”	भादस जिला गुड़गांव	२० से २१ ”
”	सेक्टर 22-ए चण्डीगढ	१९ से २६ ”
”	मीसा जिला फरीदाबाद	२३ से २५ ”
”	गुरुकुल झज्जर हीरक जयन्ती	२४ से २६ ”
”	सोलधा तह बहादुरगढ जि रोहतक	२२ से २३ ”
”	गुरुकुल धीरणवास जिला हिसार	२४ से २६ ”
”	तिगांव जिला फरीदाबाद	२४ से २५ ”
”	गुरुकुल गदपुरी जिला फरीदाबाद	२ से ४ मार्च
”	कन्या गुरुकुल लोवा माजरा (रोहतक	१ से ४ ”
”	छानी बडी जिला गगानगर	३ से ५ ”
”	मानपुर जिला फरीदाबाद	३ से ४ ”
”	मस्थार जिला कुरुक्षेत्र	११ से १२ ”
”	सुदकैन कलां जिला जींद	१६ से १८ ”
”	मुवाना जिला जींद	१९ से २१ ”
”	भाऊ अकबरपुर जिला रोहतक	22 से 25 ”
”	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	३०, ३१ मार्च १ अप्रेल
”	आहूलाना तह गोहाना जि रोहतक	३०, ३१ मार्च १ अप्रेल

—सत्यवीर शास्त्री, वेदप्रचाराधिष्ठाता

पंचम वेद वेदाँग पुरस्कार १९९०

आर्यसमाज सान्ताकुन्ज द्वारा प्रवर्तित वेद वेदांग पुरस्कार 1990 हेतु आर्यजगत् के प्रकाण्ड विद्वान् एवं अनेक ग्रन्थों के रचियता, गुरुकुल कागडी के स्नातक श्री प० हरिशरण जी सिद्धांतालंकार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार के लिए जीवनपर्यन्त भजनोपदेशक के रूप में आर्यजगत् की सेवा करने वाले माननीय श्री ओमप्रकाश जी वर्मा का चयन किया गया है।

पण्डित हरिशरण जी सिद्धांतालकार को वेद वेदांग पुरस्कार के रूप में 21000/- इक्कीस हजार की थैली, सम्मान पत्र, रजत ट्राफी एवं शाल से तथा श्री ओमप्रकाश जी वर्मा को वेदोपदेश पुरस्कार के रूप में 11000/- ग्यारह हजार की थैली, सम्मान पत्र, रजत ट्राफी एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया।

उपरोक्त समारोह का आयोजन दिनांक 31-1-90 को सांय 6बजे भारतीय विद्या भवन के विशाल वातानुकुलित सभागार में किया गया। काफी विद्वान् इस समारोह में सम्मिलित हुए।

कैप्टन देवरत्न आर्य,
संयोजक वेद वेदांग पुरस्कार समिति

वैदिक यतिमण्डल की सूचना

वैदिक यतिमण्डल के सभी माननीय सदस्यों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर की हीरक जयन्ती महोत्सव के अवसर पर 23, 24 एवं 25 फरवरी 1990 को गुरुकुल मे वैदिक यतिमण्डल की बैठक होगी। अध्यक्ष महोदय पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का आग्रह है कि इस अवसर पर सभी सदस्य अवश्य पहुंचें।

—स्वामी सुमेधानन्द मन्त्री
वैदिक यतिमण्डल दयानन्दमठ चम्बा

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फाम ४८१२ सृष्टि सम्वत् १९६,०८,५३ ,०८८



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक — वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक — प्रकाशवीर विद्यालङ्कार, एम. ए. ६ फाल्गुन २०४५ वि०

वर्ष १७, अङ्क ~~१२~~ 14 २८ फरवरी, १९८९ वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड, एक प्रति ६० पैसे

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज

लेखक—यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४०३२

सत्य पथ के प्रदर्शक वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने कोई नवीन मत, पंथ अथवा मजहब नहीं चलाया। उनके कार्यों, कार्य प्रणालियों, रचनाओं, मन्तव्यों आदि के निष्पक्ष अनुशीलन से यही तथ्य प्रमाणित होता है, कि उनको कोई नवीन मत बनाना लेशमात्र भी अभीष्ट नही था। उन्होंने स्वयं भी घोषणा की थी कि—'मेरा कोई नवीन कल्पना व मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है, उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश) स्पष्ट है कि महर्षि को कोई नवीन मतमतान्तर न चलाकर संसार को असत्य से छुड़ा सत्यपथ का अनुयायी बनाना ही अभीष्ट था। यही कारण है कि उन्होंने आर्यसमाज के नियमों में सत्य पर अत्यधिक जोर दिया है।

महर्षि की मान्यता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसीलिए सत्य को जानने के लिए उन्होंने आर्यों के लिए वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म निश्चित किया था। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि महर्षि ने अपने अनुयायियों के लिए स्वरचित ग्रंथों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म नही कहा अपितु वेद के ही पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म घोषित किया है। इसी बात से यह सिद्ध होता है कि उन्होंने अपने संगठन का मूलाधार वेद ही रखा है। आर्यसमाज की स्थापना के पीछे महर्षि की जो भावना काम कर रही थी, वह वेद-प्रचार की उत्कट भावना ही थी। उन्होंने अपने संगठन का नाम भी वेद से लिए शब्द "आर्य" पर आर्यसमाज रखा था। यदि उन्हें कोई नवीन मत चलाना अभीष्ट होता तो वे अपने संगठन का नाम भी दयानन्द पंथ आदि रख सकते थे। महर्षि की इस दूरदर्शिता पर स्वामी धर्मानन्द जी ठीक ही लिखते हैं कि—"मेरा दृढ़ विश्वास है कि अपने द्वारा प्रवर्तित समाज के लिये आर्यसमाज शब्द का चुनाव न केवल महर्षि दयानन्द की महामनीषिता और दूरदर्शिता है अपितु उनकी गम्भीर आर्य दृष्टि अथवा ऋषित्व को सूचित करता है।" (द्रष्टव्य-महर्षि दयानन्द के आदर्श का आर्यसमाज कैसे बने ? पृष्ठ १०) महर्षि एक सच्चे वीतराग आर्य संन्यासी थे जो लोकैषणा से कोसों दूर थे। वे स्वयं को आर्यसमाज का संस्थापक कहलवाना भी पसन्द नहीं करते थे।

आर्यसमाज लाहौर के साधारण अधिवेशन में महाशय शारदा प्रसाद ने एक प्रस्ताव रखा था कि महर्षि दयानन्द सरस्वती को आर्यसमाज के संस्थापक की पदवी से विभूषित किया जाये। सब सभासदों ने इस प्रस्ताव को सुप्रसन्नता से अनुमोदन भी कर दिया था परन्तु स्वामी जी महाराज ने हंसकर कहा—"मैंने कोई नया पन्थ चलाकर गुरु-गद्दी का मठ नहीं बनाया है। मैं तो लोगों को मतवादियों के मठों से स्वतंत्र करना चाहता हूं। ऐसी पदवियों से अन्त में हानियां ही हुआ करती हैं।" इस पर शारदा प्रसाद जी ने दूसरा प्रस्ताव किया कि महाराज को इस समाज का परम सहायक नियत किया जाये। इस पर महर्षि ने कहा—"यदि मुझे परम सहायक मानोगे तो उस परम-पिता परमेश्वर को क्या कहोगे ? परम सहायक तो वह जगदीश्वर ही है। हाँ, यदि आप मेरा नाम लिखना ही चाहते हैं, तो सहायकों की पंक्ति में लिख लीजिये।" (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश, पृष्ठ ५२६-५२७) इस पर आर्यसमाज के इतिहास लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी का यथार्थ कथन है कि—"यही ऋषि दयानन्द का ऋषिपन था। जिन लोगों को मौका मिला, वे पैगम्बर और रसूल बनने में नहीं कतराये। जिन्हें इतनी बड़ी हिम्मत न हुई, वे आचार्य या नबी बन गये। ऋषि का ही हृदय था कि आचार्य, गुरु या परम सहायक तक के पदों को न स्वीकार किया। कारण यही था कि ऋषि दयानन्द अपने को परमात्मा के ज्ञान का प्रचारक, सत्य का साधनमात्र समझते थे, इससे अधिक कुछ नहीं। वहां न बड़प्पन की चाह थी, न गुरुपन की बू। वहां तो एक ईश्वर पर विश्वास था और सत्य पर अटल श्रद्धा थी। यही कारण था कि इस वीर की एक ही गरज से सदियों के खड़े किये हुये गुरुडम के गढ़ हिल जाते थे, और झुक जाते थे। यदि ऋषि में अपनी बड़ाई या लौकिक बढ़ती की कुछ भी कामना होती तो उन्हें ऐसी अद्भुत सफलता प्राप्त न होती।" (आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग)

पाठक विचारें। जो व्यक्ति उस संस्था का संस्थापक अथवा परम सहायक कहलाया जाना भी पसन्द न करे और स्वरचित ग्रथों की अपेक्षा ईश्वरीय ज्ञान वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना अपने अनुयायियों के लिए परम धर्म निश्चित करे, उसके सम्बन्ध में यह सोचा भी कैसे जा सकता है, कि उसे कोई नवीन मत चलाना अभीष्ट हो सकता है। सत्य तो यह है कि महर्षि वैदिक धर्म के ही पुनरुद्धारक तथा प्रचारक थे। भक्तों द्वारा पूछे जाने पर कि हम अपना धर्म क्या बतावें,—महर्षि का स्पष्ट निर्देश था कि—"भाई ! तुम सब का वेद मत है। यदि ऐसा कहोगे कि हम दयानन्द स्वामी के मत में हैं, तो कोई तुमसे प्रश्न करेगा कि दयानन्द स्वामी और उनके गुरु का क्या मत है, तो तुम उत्तर नहीं दे सकोगे।" (पं० लेखराम आर्य मुसाफिर कृत महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र, पृष्ठ ४७५)

जहां तक महर्षि का अपना प्रश्न है, वे भी स्वयं को वैदिक धर्म का उपदेशक अथवा प्रचारक मानने में गौरव अनुभव करते थे। महर्षि कर्नल अल्काट को १९ मार्च सन् १८७७ को अपने एक पत्र में लिखते हैं कि—मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार वेद का उपदेश करता हूं। सिवाय उपदेश के मैं कुछ अधिकार नहीं चाहता। तुम मुझको कहीं सभासद लिख देते हो, कहीं कुछ लिख देते हो। मैं बड़ाई और प्रतिष्ठा नहीं चाहता।" (द्रष्टव्य—दयानन्द सिद्धान्त भास्कर, पृष्ठ १७५) महर्षि ने एक दिन यह भी कहा था कि—"वैदिक धर्म-प्रचार का कार्य बहुत बड़ा है। हम जानते हैं कि वह हमारे इस सारे जीवन में पूर्ण न हो

(शेष पृष्ठ ११ पर)

चौधरी छोटूराम और आर्यसमाज

लेखक :—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर १५२११६

गतांक से आगे

'सर्वहितकारी' के एक लेखक ने यह दिया है कि इंगलेण्ड के एक अधिनियम के आधार पर चौधरी छोटूराम जी ने रविवार के दिन सब दुकानों के बन्द रखने का अधिनियम लागू किया।

पाठक इस अधिनियम की पृष्ठ भूमि नहीं जानते। हम यहां संक्षेप से यह घटना भी देते हैं। चौधरी छोटूराम जी स्वामी जी के दर्शन करने दयानन्द मठ दीनानगर आए। सब बड़े-बड़े अधिकारी मठ में पहुंचे गये। कुटिया में गुरु शिष्य की गम्भीर वार्ता होती रही। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज भी दूर बैठे कुछ देख रहे थे। जब चौधरी जी चलने लगे तो कहा, "स्वामी जी मेरे योग्य कोई विशेष सेवा ?" साधु को मन्त्री से क्या काम हो सकता है ?

स्वामी जी बोले, इन दुकानदारों की दुर्दशा देखिए। रात्रि देर तक दुकान खुली रहती है। प्रातः सूर्योदय से पूर्व खुल जाती हैं। इनके बच्चे इनके घर जाने तक सो चुके होते हैं, इनके आने के समय सोये होते हैं। ये लोग कभी भी अपने बच्चों से घुलमिल नहीं सकते। बस तत्काल विचार बनाकर उसी समय वहीं दीनानगर में राज्याधिकारियों को आदेश दे दिया कि इस रविवार से यहां दुकानें बन्द हुआ करेंगी। अधिनियम तो बाद में बना सबसे पहले दीनानगर में Shop Act लागू हुआ। स्वामी सर्वानन्द जी व दीनानगर के पुराने वृद्धों से हमने यही सुना है।

गाड़ी नहीं चाहिए

श्री सिद्धान्ती जी के एक लेख के आधार पर हमने यह घटना अपने ग्रन्थ में दी है। सिद्धान्ती जी से कई बार सुनी भी। स्वामी जी ने देश धर्म सम्बन्धी किसी विशेष विचार विमर्श के लिए श्री सिद्धान्ती जी को चौधरी जी को बुलवाने भेजा। स्वामी जी फोन भी कर सकते थे परन्तु सिद्धान्ती जी को भेजा और कहा कि शीघ्र मिलिए। प्रातः का समय था। सिद्धान्ती जी चौधरी जी की कोठी पहुंच गये। सन्देश दिया। चौधरी छोटूराम सब काम छोड़कर तत्काल गुरुदत्त चलने लगे। उन दिनों कारों का इतना प्रचलन न था। कोठी में कार न देखकर (कहीं गई होगी) सिद्धान्ती जी ने कहा, "मैं टांगा लाऊं ?"

चौधरी छोटूराम ने कहा, "नहीं, महाराज के पास पैदल चलूंगा।"

अपना प्रसिद्ध कीकर का लट्ठ हाथ में उठाकर पंजाब का लौह पुरुष चौधरी छोटूराम अपने गुरु की कुटी को चल पड़ा। वज़ीर पैदल फ़कीर के पास चल रहा है। पाठक कल्पना तो करें कि चौधरी छोटूराम के हृदय में उस समय श्रद्धा का सागर कैसे ठाठें मार रहा होगा। क्या आज भी कोई ऐसा राजपुरुष है, जिसमें इतनी श्रद्धा व धर्म भाव हो ? राजपुरुषों की तो छोड़िए, जिनके पास थोड़ी-सी भी पद, प्रतिष्ठा, व सम्पदा है, अपने आप को धर्म सभाओं के अधिकारियों में भी आज ऐसी प्रवृत्ति कम ही देखने को मिलती है।

यह सारा वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ में पाठक पढ़ें। वहां इसी प्रसंग में यह भी हमने दिया है कि कश्मीर के श्री चिरञ्जीव जी वानप्रस्थ व चौधरी छोटूराम की प्रथम भेंट में उस समय कुछ बातचीत हुई तो चौधरी छोटूराम ने तब जाटों में आर्यसमाज द्वारा जागृति के प्रसंग में कहा, पौराणिक तो हमें शूद्र ही कहते थे। आर्यसमाज ने कहा तुम क्षत्रिय हो। हमने अपने को पहचाना सो आर्यसमाज ने जब क्षत्रिय बना दिया तो फिर लड़ाई भी तो करेंगे ही। ऐसा सारांश है उस वार्ता का।

चौधरी जी ही बता सकते हैं

जब वायसराय के आदेश से द्वितीय विश्व युद्ध में महाराज को सेना में विद्रोह फैलाने आदि आरोपों में बन्दी बनाया गया तो यह बड़ा गुप्त रखा गया कि स्वामी जी को कहां ले जाया गया है महात्मा रामचन्द्र जी (स्वामी श्री सर्वानन्द जी) महाशय कृष्ण जी के पास गये कि पता लगाओ कि स्वामी जी कहां हैं ? किस जेल में हैं ?

महाशय जी ने कहा, यह तो मुझे भी पत्रकार होते हुए पता नहीं चल सका कि उन्हें कहां ले जाया गया है ? चौधरी छोटूराम जी से आप मिलिए, वही पता लगा सकते हैं। महाशय जी के कहने पर महात्मा रामचन्द्र जी चौधरी जी के पास गये। उनके पास (उस युग में मन्त्रियों का बड़ा रोब होता था) जाने में महात्मा रामचन्द्र जी को कोई कठिनाई न थी। वे उन्हें पहचानते थे। चौधरी साहिब ने कहा, 'यह तो मुझ से भी छुपाकर रखा गया है। स्वामी जी को तो सीधा वायसराय के आदेश से पकड़ा गया है। वे कहां हैं, इसका मैं पता लगाऊंगा।

यह चौधरी छोटूराम जी ही थे जिन्होंने अपनी सूझबूझ व पुरुषार्थ से महात्मा रामचन्द्र जी द्वारा आर्यजगत् को यह बताया कि स्वामी जी को शाही किला लाहौर में यातनायें दी जा रही हैं।

इसी प्रसंग में पाठक यह नोट कर लें कि जब स्वामी जी ने जेल का बिस्तरा लेने से इन्कार कर दिया तो जेल के अधिकारियों ने कहा, फिर आप ही बता दें हम आपको किसी के यहां से बिस्तरा ला देते हैं।"

स्वामी जी ने किसी साधारण आर्य का नाम तब न लिया। ऐसा करने से उसे सरकार का कोपभाजन बनना पड़ता। स्वामी जी ने महाशय कृष्ण व चौधरी छोटूराम आदि चार चोटी के आर्यों के नाम लिए और कहा कि इनमें से किसी के घर से जा कर ले आओ। जेल अधिकारी ने कहा, ये सब लोग तो बड़े नामी हैं किसी साधारण गृहस्थी का पता दो। स्वामी जी ने कहा, फिर रहने ही दो। जेल वालों का कहना था कि महाशय कृष्ण तो कल ही प्रताप में छाप देंगे कि आप यहां हैं और चौधरी छोटूराम इतने बड़े व्यक्ति के घर जाकर भी हमने मरना है। सरकार ने आप के बारे सब सूचनायें गुप्त रखी हैं इसलिए इन लोगों के घर हम नहीं जावेंगे। इस सारे वृत्तान्त में भी चौधरी जी के आर्यत्व का परिचय मिलता है।

सोनीपत वाली घटना

सर्वहितकारी में सोनीपत वाली घटना भी ठीक-ठीक नहीं छपी। सिद्धान्ती जी भी उस समारोह में उपस्थित थे। चौधरी जी जानते थे कि सिद्धान्ती जी उस व्याख्यान के प्रतिवाद के लिए उठेंगे परन्तु चौधरी जी ने स्वयं ही इसका प्रतिवाद करते हुए कहा, "भाई हरयाणा का बाबा तो दयानन्द ही है।"

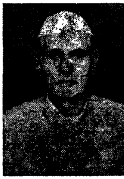
हैदराबाद सत्याग्रह के समय

जब हैदराबाद सत्याग्रह प्रचण्ड रूप धारण कर गया तो पंजाब के प्रधान मन्त्री (तब पंजाब के मुख्यमन्त्री को प्रधान मन्त्री ही कहते थे) सर सिकन्दर हयात खां ने शोलापुर जाकर सत्याग्रह के विरुद्ध बड़ा ज़ोरदार भाषण दिया। ऐसा लगता था कि सर सिकन्दर हयात का सरकार पंजाब से सत्याग्रहियों को हैदराबाद जाने ही न देगी। इससे आर्य नेताओं का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था। तब आर्य नेताओं ने सत्याग्रह के फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से कहा कि चौधरी छोटूराम से सम्पर्क करके वही इस समस्या का समाधान करें। स्वामी जी ने चौधरी जी के पास अपने किसी विशेष दूत को (जो हरयाणा का ही कोई आर्य था) यह सन्देश देकर भेजा कि पहले आपकी सरकार से निपटें या निज़ाम से ?

चौधरी छोटूराम जी ने उत्तर में कहा, "स्वामी जी से कहें कि वे अपना कार्य करते जावें। इधर की चिन्ता न करें। ऐसे भाषणों का ध्यान न दें। कहने की बात और है। कोई सत्याग्रह का विरोध न करेगा।"

पाठक इस प्रसंग में यह भी ध्यान रखें कि दिखावे के लिए चौधरी जी ने सत्याग्रह का कुछ विरोध किया। वक्तव्य तो नहीं दिया। ऐसा स्वामी नित्यानन्द जी महाराज (चौधरी नौनन्दसिंह जी) बताया करते थे। स्वामी नित्यानन्द जी को स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के चौधरी छोटूराम के नाम सन्देश आदेश का पता नहीं था। स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सर्वानन्द जी, महाशय भरतसिंह जी आदि श्री महाराज के सब पुराने भक्त इस घटना को जानते हैं। शास्त्री कपिलदेव जी भी पुराने पत्रकार हैदराबाद के सत्याग्रही व स्वामी जी के भक्त हैं। उन्हें भी ये सब पता है। सर्वहितकारी में यह जो छपा है कि सर सिकन्दर हयात खां महात्मा हंसराज के शिष्य थे। यह असत्य है। सर सिकन्दर महात्मा जी के शिष्य नहीं थे।

स्व० श्री वीरेन्द्र जी वीर द्वारा लिखित शिवरात्रि गीत



आपने आर्यसमाज के प्रचार तथा ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रसार के लिए अपने जीवन में अनेक भजन पुस्तकें लिखी हैं।

अवसर की पहिचान

भजन १

आता है जिन्दगी में अवसर कभी-कभी,
देते हैं पलट काया दो अक्षर कभी-कभी।

खूंखार डाकुओं से साधु व महात्मा,
देती है बना ज्ञान की ठोकर कभी-कभी।१

होकर के मनुज कर तब करते हो दानवों के,
सोचो तो बैठकर के इस पर कभी-कभी।२

ईश्वर की है यह कृपा पाई है मनुष योनि,
गुण उसके गालिया कर आखिर कभी-कभी।३

औरों की नुकता चीनी करने से पेश्तर तुम,
देखो तो झांक अपने अन्दर कभी-कभी।४

ओ मूक प्राणियों पर छुरियां चलाने वाले,
खुद को तो ताके देखो नश्तर कभी-कभी।५

'कवि वीर' खोके अवसर रोते ही देखा अक्सर,
देता है चांस ऐसा ईश्वर कभी-कभी।६

भजन २

अवसर को जो अपनाते, कुछ कर जाते काम वह।

भारत में शिवरात्रि आती हर साल है,
चूहे भी रोज कूदते नहीं आता ख्याल है।
यूहीं समय नष्ट कर जाते, हैं बस आठों याम वह।१

देखा यह मूलशंकर ने कैसा अन्धेर है,
नीचे को और ज़बर है ऊपर को जेर है।
शंकाओं में बह जाते तमाशा लखकर आम वह।२

सच्चे शिव को ढूंढने की दिल में ठन गई,
घर छोड़कर संन्यास लूं खोजूं बन-बन कहीं।
स्वामी मुड़दौड़ लगाते, रातभर रहे तमाम वह।३

थी बात यह छोटी-सी पर काफी स्थूल था,
"वीरेन्द्र" मूलशंकर का तो शंकर मूल था।
महर्षि की पदवी पाते, सत्य का था परिणाम वह।४

राधेश्याम

गुजरात प्रांत में राज्य मोरवी टंकारा था ग्राम सुनो,
पिता कृष्ण जी मात रुकमणि मूलशंकर था नाम सुनो।
सम्वत् अठारह सौ इक्यासी सुदि भादों नवमी को आई,
जन्म हुआ इस बालक का जिसकी जग में प्रतिभा छाई।
औदिच्य वंश शिवभक्ति परायण यह ब्राह्मण परिवार रहा,
मूलशंकर को मूल से ही बस देता यही विचार रहा।
पांच वर्ष की आयु से ही अक्षर ज्ञान कराने लगे,
स्तुति प्रार्थना शिव उपासना कर्मकांड सिखलाने लगे।
व्याकरण के छोटे-छोटे ग्रन्थ और यजुर्वेद को कंठ किया,
चौदह वर्ष की आयु तक ही घर में बहुत कुछ सीख लिया।

दोहा

मनावें को शिवरात्रि का विख्यात ये पर्व।
गये शिवालय में पिता सुत के साथ से गर्व॥

पहुंचे भक्त अनेक पर था किसको यह ज्ञात।
कभी रात यह लायेगी नूतन पुण्य प्रभात॥

वीर छन्द

जग का कल्याण करनेवाले वह गौरिपति शंकर स्वामी,
आशा थी मूलशंकर को कि दर्शन देंगे अन्तर्यामी।
वह ध्यान लगाये बैठा था घटी घटना एक विचित्र बड़ी,
एक उदंड चूहों की टोली हो निर्भय शिव पर आन चढ़ी।
किंचित् न चेष्टा शंकर ने अपनी रक्षा में दिखलाई,
आश्चर्य चकित होगया मूल यह कैसा शिवजी है भाई।
इस घटना से उस बालक के जीवन ने था पलटा खाया,
होगया बोध खुल गई आंख झट इस अवसर को अपनाया।

भजन ३

है झूठा पिता जी तेरा शंकर—शंकर यूं बोला।

कैसे करलूं भक्ति जची ना—इसमें कोई शक्ति जची ना,
कहते जिसे हो प्रलयंकर शंकर यूं बोला।१

चूहों ने मलमूत्र बखेरा—सर पर शिव नहीं सर का तेरा,
दुर्गति हुई है भयंकर—शंकर यूं बोला।२

सहन भूख का कष्ट करो क्यूं—उठो समय यूं नष्ट करो क्यूं,
फेंको इस कंकर पे कंकर—शंकर यूं बोला।३

वीर कवि मत खाओ धोखा—लाभ उठाओ मिल गया मौका,
नींद रहे क्यूं भंग कर—शंकर यूं बोला।४

दोहा

कहा पिता ने पुत्र से है यह तेरी भूल,
परम्परा के चल रहे हो अपनी प्रतिकूल।

बहकी बहकी बातें कर तुम तोड़ना व्रत को चाहते हो,
शिव शंकर भगवान् है यह पाषाण जिसे बतलाते हो,
कहा मूल ने पिताजी मैं तो मूल में जाना चाहता हूं;
विश्वास न इसमें रहा मेरा मैं सच्ची बात बताता हूं।

भजन ४

शिवरात्रि के व्रत का पर्दाफाश होगया
मेरे हृदय मन्दिर में प्रकाश होगया

आपकी आज्ञा से पिता जगता रहा मैं बराबर
ठीक आधी रात एक चक्कर में पड़ गया मगर
ऊपर शिव के चूहों का रंग रास होगया॥१

चढ़ावा जो चढ़ा था उस पर चूहे आकर चखने लगे
शिव पिंडी के ऊपर बल्कि मल और मूत्र करने लगे
फिरने लगे निर्भय मैं निराश होगया॥२

कल्याण जग का करता है शिव आपने बताया है
किन्तु यह तो अपना भी कल्याण करना पाया है
हिलाया है न करवट बल का ह्रास होगया॥३

जग की रक्षा करनेवाला शिव चूहों से हार गया
नींद खोना भूखों मरना 'वीरेन्द्र बेकार' गया
विचार गया बदल भ्रम का नाश होगया॥४

(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्वामी ने दिया

आदर्श मन्तव्यों एवं सिद्धान्तों के प्रबल पोषक; प्राचीनतम आर्यावर्तीय संस्कृति सभ्यता एवं वाङ्मय के उद्धर्ता तथा आर्यसमाज के संस्थापक का उद्भव लगभग पौने दो सौ वर्ष पूर्व गुजरात में हुआ तथा इस महात्मा के हृदय में वैचारिक क्रान्ति का उद्भव उस दिन हुआ जिस दिन शिवरात्रि नामक पर्व को श्रद्धालुओं सहित मनाया जा रहा था उसी दिन से वह झूठे शिव को छोड़ वास्तविक शिव की खोज में निकल पड़ा तथा स्थान-स्थान पर भ्रमण करता हुआ मथुरा में व्याकरण विद्या का अर्जन कर पुन: नाना प्रकार के शास्त्रों में पारंगत हो तथा राष्ट्र समाज एवं मानव जाती हेतु आपका सम्पूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। ऋषिवर कहा करते थे इन मत पन्थ वालों ने मनुष्य को मानवता वेद और अस्तित्व की सीमा से हटाकर दानवता अज्ञान की खाई में डाल दिया है बात बिल्कुल वास्तविक एवं सत्य है क्योंकि मूर्ति पूजकों ने भाग्य को प्रधानता देकर यह बात बताते थे कि "यत् किमपि ललाट लिखितम् तत्लप्स्यतेव" अर्थात् जो भाग्य में लिखा है वह तो मिलेगा ही इस प्रकार के वचनों से इन्होंने मनुष्य को सर्वथा पुरुषार्थ हीन बना दिया परन्तु इसके सर्वथा विपरीत तथा युक्ति संगत बात उस गुरु ने वेद को प्रमाण देकर कहा "न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा" अर्थात् परिश्रम के बिना देवी शक्तियां भी मित्र नहीं बनती।

स्वामी जी ने नाना मत-पन्थों-मजहबों एवं मठाधीशों के चुंगल में फंसे मनुष्यों को उबारा तथा उन्हें सत्य, वास्तविक तथा प्रामाणिक वेदोक्त मार्ग का दर्शन कराया और कहा "सत्य का प्रचार कर सबको एकयमत में करा द्वेष छुड़ा परस्पर दृढ प्रीतियुक्त करा के सबको सुख लाभ पहुंचाने के लिये मेरी भावना है, क्योंकि भिन्न-भिन्न, पृथक्-पृथक् अलग व्यहार का विरोध छूटे बिना परस्पर का पूरा उपकार सिद्ध होना कठिन है। ये थी स्वामी की उदात्त एवं उत्कृष्टतम् भावनायें और इसी कारण से ऋषिवर ने समाज को ही नहीं अपितु विश्वमानव को नयी दिशा का आभास कराया।

इसी कारण से उस ऋषि का सन्देश मानव मात्र को युगों तक प्रेरणा देता हुआ भारत राष्ट्र की नीव को दृढ़तम करता रहेगा।

आदित्य "अनन्तांशु" वैय्याकरण
आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल, कालवा

'सर्वहितकारी' के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण

फार्म ४ (नियम ८ देखिए)

१. प्रकाशन स्थान	दयानन्दमठ, रोहतक
२. प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३. मुद्रक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है?	है
पता	आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना रोड, रोहतक
४. प्रकाशक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है?	है
पता	दयानन्दमठ, रोहतक
५. सम्पादक का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है?	है
पता	दयानन्दमठ, रोहतक
६ उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचारपत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझीदार या हिस्सेदार हों।	आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

मेरा निवास परिवर्तन

मैंने विश्वविद्यालय परिसर के अपने निवास को छोड़ दिया है और अब मैं कोठी नं० ४१ सैक्टर १५ ए. में गत १४ जनवरी १९८९ से रह रहा हूं। आपसे निवेदन है कि भविष्य में मेरे नाम पत्र दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय (कोठी नं० ई-१/११५) सैक्टर १४, चण्डीगढ-१६००१४ या उक्त निवास के पते पर भेजने की कृपा करें।

—भवदीय, भवानीलाल भारतीय

(पृष्ठ ३ का शेष)

दोहा

मन्दिर से आया चला होकर मूल निराश,
आकर कहने लगा तुरत मात के पास।

भजन ५

झूठा है शिव मन्दिरवाला गया राज आज यह जाना है
सच्चा शिव कोई और ही है अब मैंने उसे पहिचाना है
मन्दिर में जा इस रात मैंने रत जगा किया री मात मैंने
वहां चूहों का उत्पात मैंने देखा और अचरज माना है ॥१
मिष्ठान जो गया चढ़ाया था, चूहों ने चढ़कर खाया था
नहीं शिव ने कान हिलाया था, शिव बुत मन्दिर बुत खाना है ॥२
चूहे मलमूत्र गये करके, ऊपर सर के शिव ना सरके
है रक्षक वह जगतिश्वर के, नहीं मान सके जो दाना है ॥३
शंकर की मूल में शंकर मूल पहुंचेगा अब ना करे भूल
बस करूं तोड़ क्यूं दिया तल, कवि वीर यह निश्चय ठाना है ॥४

भजन ६

अरे हाय-२ बेटा मेरे जो बोल सुने मैं तेरे
मत फेर इन्हे दोहराओ
अरे शंकर-शंकर के ऊपर कंकर फेंकों मत जाओ
व्रत का पालन है यदि मुश्किल तो यह नहीं जरूरी
शिव पूजा में मन नहीं लगता या है कुछ मजबूरी
पूरी तरह तुम्हें छुट्टी है मनको ना उलझाओ ॥१
हमने शादी करने का तेरी निश्चय ठहराया
तू साधु बनना चाहता है क्या तेरे मनभाया
माया है घर में लाखों की बैठे मोज उड़ाओ ॥२॥
क्यों साधू बनना चाहता है तज के बता अमीरी
तड़प-२ कर मां मर जागी बेटे मत धार फकीरी
आखीरी है बात लाड़ले मां को मत तड़पाओ ॥३॥
नहीं फकीरी के काबिल है अभी बाल उमर है
मां के नैनों का तारा घर में है तो बस घर है
वीरेन्द्र कथन सही है यह इसको ना बिसराओ ॥२॥
नोट:—माता से निवेदन करता है

भजन नं० ७

हुई कौम सुर्दे गर्ज मर्ज हैं यहीं मर्ज हटावन दे
हर्ज न कर तेरा फर्ज वतन का कर्ज चुकावन दे
सब फर्ज अदा हुआ तेरा—अब तो नम्बर आया मेरा
भारत में घोर अंधेरा वेद का दीप जलावन दे
ज्ञान का कोने-कोने में प्रकाश फैलावन दे ॥ १ ॥
दिन रात गजब यहां होते, विधवा अनाथ अछूत रोते
मुद्दत से आर्य सोते उन्हें ऐ मात जगावन दे,
भटक रहे दिन रात तू सीधी राह दिखावन दे ॥ २ ॥
वतन पर चढ़ने दे आहुति तुझको दुनिया कहे सपूती
हुआ देश पैर की जूती सर का ताज बनावन दे
आर्य राज की दोबारा यहां नींव जमावन दे ॥ ३ ॥
कहे "वीरेन्द्र" आज पाखंडी-खोल रहे हैं पापों की मण्डी
वेदों की गाड़कर झंडी पोप किले को ढावन दे,
अज्ञान अविद्या का दुनिया से खोज मिटावन दे ॥४॥

शिवरात्रि पर चिन्तनीय लेख—

अगर महर्षि को बोध न होता ?

ले०—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जिस समय—सारा भारत देश परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था।

जिस समय—अलग-अलग रियासतों में देश विभाजित था।

जिस समय—पौराणिक अन्धकार के घनघोर बादल भारत पर छा रहे थे।

जिस समय—पत्थरों को परमेश्वर मानकर पूजा जारहा था।

जिस समय—गंगा आदि नदियों में स्नान करने मात्र से मुक्ति मानी जारही थी।

जिस समय—स्त्री और शूद्रों को पशुवत् मानकर धिक्कारा जारहा था।

जिस समय—बाल विधवाओं को बलात् पुनर्विवाह से वंचित किया जारहा था।

जिस समय—सतीप्रथा के नाम पर नवयौवनाओं को चिता पर चढ़ाया जारहा था।

जिस समय—वर्णाश्रम की वैदिक मर्यादा को लुप्त करके केवलमात्र ब्राह्मण कुल में जन्मे अनपढ़ ब्राह्मण पूजे जारहे थे।

जिस समय—वेद विद्या पर केवलमात्र ब्राह्मणों का अधिकार था।

जिस समय—देश में भूत-प्रेत शाकिनी-डाकिनी का भय चारों ओर व्याप्त था।

जिस समय—आर्ष विद्या का प्रचार समाप्त होकर विदेशी साहित्य का प्रचार जोरों पर था।

जिस समय—बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह जोरों पर थे।

जिस समय—नाममात्र के संन्यासी देश को ठग रहे थे।

जिस समय—राजनीतिक रूप से देश मुसलमानों और ईसाइयों के कुचक्र में फंसा था।

जिस समय—मुक्ति के नाम पर अनेक जड़ देवी-देवताओं का पूजन होता था।

जिस समय—सृष्टि उत्पत्ति स्थिति प्रलय के विषय में कोई ज्ञान न था।

जिस समय—अनेक मतमतांतर देश को गहरे अन्धेरे में डाल रहे थे।

जिस समय—मूर्तिपूजा जोरों पर थी। अनेक भगवान् माने जाते थे।

जिस समय—ब्रह्मा, विष्णु, महेश की मूर्तियां बनाकर पूजी जारही थीं।

जिस समय—अलग-अलग मठ मन्दिर स्थापित थे।

जिस समय—देश की सारी सम्पत्ति मन्दिरों को समर्पित हो चुकी थी।

जिस समय—राजा राममोहनराय का ब्रह्मसमाज हिन्दुओं को ईसायत से बचाने के अभिप्राय से स्थापित होकर केशवचन्द्रसेन द्वारा ईसायत की शाखा का रूप धारण कर रहा था।

जिस समय—ईसाई व मुसलमान हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन कर रहे थे।

जिस समय—हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए सरेआम गोहत्या हो रही थी।

उस समय

उस समय—जगन्नियन्ता के नियमानुसार महाभारत युद्ध के पांच हजार वर्षों के बाद १२ फरवरी १८२४ को गुजरात प्रांत के टंकारा ग्राम में औदीच्य ब्राह्मण परिवार में महर्षि दयानंद का जन्म हुआ। जिसने पैदा होकर फिर से वैदिक ज्योति दिखलाई। उस दिव्य दीन-हीन-मलीन, परमुखापेक्षी, विदेशियों एवं विधर्मियों के पैरों को ठोकरें खाती हुई आर्य सन्तानों को आत्म-निर्भरता, स्वावलम्बन, आत्म-गौरव एवं स्वदेशाभिमान का पाठ पढ़ाकर सजग और सचेत किया था। जिससे आर्यों ने ऐसी जोरदार अंगड़ाई ली कि हजारों वर्ष की दासता की मजबूत सांकलें कमलनाल की तरह टूक-टूक होकर दूर जा गिरी और पुनः स्वदेश-स्वदेशी, स्वधर्म-स्वजाति, स्वाभिमान-स्वावलम्बन, स्वातन्त्र्य-स्वराज्य और सुराज्य का जीवनप्रद उद्घोष करते हुए हम सावधान होकर खड़े होगये और "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वराग्निबोधत" के महामन्त्र का जाप करते हुए विश्वभर को चकित करने लगे।

इसमें कारण बनी शिवरात्रि

शैव परिवार में जन्म होने के कारण महर्षि १४ वर्ष की अवस्था में शिवरात्रि का व्रत करने के लिए शिव मन्दिर में गये। वहां पर एक निकृष्ट चूहे को शिवलिंग पर चढ़ते देखकर व शिवमूर्ति पर मूत्र करते हुए चूहे को देखकर उन्हें बोध होगया कि यह शिव नहीं हो सकता। जो अपनी रक्षा न कर सके वह कैसा दैत्यसंहारी शिव ? उसी समय वह पूजा छोड़कर घर पहुँचे। उन्होंने निश्चय किया कि जीवन में सच्चे शिव के दर्शन करूंगा। पुनः बहन और चचा की मृत्यु से भी उन्हें पूर्ण वैराग्य होगया। १८४५ में घर से भाग खड़े हुए। १०-१२ वर्ष तक इधर उधर योगियों की खोज में घूमते रहे। १८५६ में स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यास की दीक्षा लेकर पश्चात् १८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम का पूर्ण रूप से नेतृत्व किया। स्वातन्त्र्य समर के असफल होने पर १८६० में गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द से मथुरा में शिक्षा-दीक्षा लेकर १८६३ में वेदप्रचार करने के लिए कार्यक्षेत्र में उतरे। १८६६ में सर्वप्रथम काशी में मूर्तिपूजा के विरुद्ध जोरदार शास्त्रार्थ हुआ। जिससे महर्षि की धाक बैठ गई। १८७२ में कलकत्ता में जाकर देश की स्वतन्त्रता के लिए वायसराय नार्थब्रुक से बातचीत की। वायसराय घबरा गये। उसी समय से महर्षि की कठोर निगरानी अंग्रेजी सरकार करने लगी। कलकत्ता में रहते हुए अनेक ब्रह्मसमाज के नेताओं से मिले, जिसकी चर्चा सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में महर्षि ने की है। १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना करके महर्षि ने स्वतन्त्रता का सर्वप्रथम नारा दिया। जिससे प्रेरणा पाकर अनेक क्रांतिकारी मैदान में उतरे। अनेकों बलिदान हुए। १८७५ में सत्यार्थप्रकाश की रचना करके देशवासियों के लिए सुधार का मार्ग प्रशस्त किया।

३० अक्तूबर १८८३ में महर्षि का महाबलिदान हुआ। उनके बलिदान के बाद आर्यसमाज ने देश में सभी सुधारक कार्य जोरों से किये। अनेक आंदोलनों में, अनेक शास्त्रार्थों में आर्यसमाज विजयी रहा। आर्यसमाज का संगठन बहुत ही मजबूत था। इसलिए आर्यसमाज ने देश में नये कीर्तिमान कायम किये। स्वतन्त्रता का नारा सर्वप्रथम आर्यसमाज ने ही देश को दिया। शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज का योगदान महान् है। विशेषकर स्त्री-शिक्षा का प्रचार करके आर्यसमाज ने देश निर्माण का महान् कार्य किया है।

यदि शिवरात्रि को महर्षि को बोध न होता तो हमारे देश की क्या हालत होती, इसकी सम्भावनाओं के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

महर्षि को तो शिवरात्रि को बोध होगया, किंतु अनेक शिवरात्रियां बीत जाने पर भी आज आर्यसमाज के लोगों को पता नहीं क्यों बोध नहीं होता ? आज आर्यसमाज खतरे में है, उसके वैदिक सिद्धांत खतरे में हैं, उसका संगठन खतरे में है, उसके नेता खतरे में हैं। आज फिर से शिवरात्रि की आधी रात को हम उठ बैठकर क्या कुछ बोध प्राप्त करेंगे ?

वेदप्रचार में आई शिथिलता को दूर करने के लिए क्या कुछ सोचेंगे ? आर्यसमाज के संगठन को पुनः मजबूत बनाने की क्या कुछ सोचेंगे ?

शराब पीना सामाजिक अभिशाप है।

ऋषि बोध पर्व

लेखक:—प्रतापसिंह शास्त्री

जिस तरह सिद्धार्थ को बोध प्राप्त हुआ तो वे बुद्ध बन गये। इसी तरह मूल शंकर को ऋषि की पदवी तक पहुँचाने वाला बोध इसी पर्व पर हुआ। १४ वर्ष की आयु में सम्भवतः सन् १८३८ में शिवरात्रि के दिन शिवमन्दिर में रात्रि जागरण करते हुए बालक मूल शंकर के मन में जो प्रश्न उत्पन्न हुआ—क्या यही सच्चा शिव है? उसी प्रश्न ने उसे सच्चे शिव की खोज के लिए प्रेरित किया। ऋषि दयानन्द का सारा जीवन उसी प्रश्न के उत्तर को समर्पित है इसीलिए वह शिवरात्रि अमर होगई। अब वह शिवरात्रि न रह कर ऋषि बोध पर्व बन गया। मूलशंकर द्वारा ऋषि पदवी तक पहुंचने के लिए प्राप्त किया गया बोध। ऋषि ने 'शिवम्" के साथ "सत्यम्" को जोड़कर कल्याणकारी बना दिया। न जाने कितने युगों से हिन्दू लोग शिवरात्रि का पर्व मनाते चले आरहे हैं। पुराणों ने तो इस पर्व का सम्बन्ध लाखों वर्ष पूर्व के रामायण काल से जोड़ दिया है। किन्तु जो विद्वान् वाल्मीकि रामायण को "युद्ध काण्ड" तक ही मानते हैं उस वाल्मीकि रामायण में इस बात का कोई संकेत नहीं कि पत्थर के शिवलिंग की पूजा अर्चना के लिए उस काल में शिवरात्रि नाम से कोई पर्व मनाया जाता था। किन्तु रामायण में "उत्तर काण्ड" में जिस को कुछ विद्वान् वाल्मीकि रचित नहीं मनाते, में शिवजी महाराज का वर्णन मिलता है यथा—

ततो वृषभमास्थाय पार्वत्या सहितः शिवः।
वायुमार्गेण गच्छन् वै शुश्राव रुदितस्वनम्॥

अर्थात्—शिवजी महाराज पार्वती के साथ वृषभाकार वायुयान पर बैठकर आकाश मार्ग से जा रहे थे कि उन्हें एक राक्षस बालक का आर्तनाद सुनाई दिया दिया। माता पार्वती को दया आगई और विमान रुकवाकर उस बालक की सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया। बड़ा होने पर उस राक्षस जाति के बालक को एक नगर के आकार वाला आकाशचारी विमान पुरस्कृत किया। शिवजी का विमान कभी बादलों के ऊपर तो कभी बादलों को चीरता हुआ भ्रमण करता था। इसी कारण शिव के १२६ वायुवाहन १२७ महामेघवासी १२८ खचर १२९ खेचर (आकाश में विचरने वाला) इत्यादि अनेक पर्यायवाची नाम पड़ गये थे। महर्षि दयानन्द जी ने पूना के व्याख्यान में कहा है कि जब आर्यावर्त की संख्या अधिक हुई तो उसे न्यून करने के लिए आर्य लोग (शिवादि) अपने साथ मूर्ख शूद्र अनार्य लोगों को लेकर विमान उड़ाते फिरते जहाँ सुन्दर प्रदेश देखते झट वहीं पर बस जाते थे। महाभारत में शिवजी महाराज के बारे में विस्तृत उल्लेख मिलता है। हरयाणा के पूर्वज यौधेयों ने भी अपनी मुद्राङ्क पर "महेश्वर" नाम अंकित किया और शिवजी के प्रिय शस्त्र त्रिशूल तथा परशु का भी चित्र अंकित कर डाला। ब्राह्मीलिपि की ये मुद्राएँ स्वामी ओमानन्द गुरुकुल झज्जर को दुर्ग सुनेत से प्राप्त हुई। एक अन्य मोहर नन्दी (सांड) का चित्र है जो यह प्रमाणित करता है कि महासेनापति शिवजी महाराज का एक प्राचीन दुर्ग रोहतक भी था जिसका नाम "वीर द्वार" था तथा शिवजी के पुत्र देव सेनापति कार्तिकेय का प्रिय नगर और भवन "कार्तिकेयस्य दयितं (भवनम्) रोहितकम्" रोहतक था। इस पर नन्दी के चित्र पर ब्राह्मीलिपि में लिखा है—"महासेनापतस्य वीर द्वारे" यह ईसा से पूर्व का प्रतीत होता है। शिवजी महाराज तथा उनके परिवार को हरयाणे के रोहतक आदि नगर ऐसे ही प्रिय थे जैसे कैलाश पर्वत और काशी प्रिय थी।

इस इतिहास वृत्तान्त से शिवलिंग की पूजा कहीं सिद्ध नहीं होती। किन्तु १८ पुराणों में एक पुराण शिव पुराण भी है इसमें स्थान-स्थान पर शिवलिंग की उपासना से होने वाले अनेकानेक लाभों का वर्णन है और शिवजी की पूजा अर्चना को उचित ठहराया गया है। शिवलिंग की पूजा का सर्वाधिक प्रचलन महाभारत काल के पश्चात् रहा और इतिहास के पृष्ठों से ज्ञात होता है हिन्दू-धर्म में तब से आज तक विविध मतमतान्तरों का उद्भव और विकास होता चला गया।

हिन्दुओं के व्रत और त्योहारों के इतिहास का जब हम समालोचनात्मक अध्ययन करते हैं तो पता चलता है फाल्गुन बदी त्रयोदशी को शिवरात्रि का व्रत रखा जाता है। यह व्रत लगभग समस्त भारत और नेपाल में इस व्रत का प्रचार है। कहीं-कहीं फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी महाशिवरात्रि व्रत मनाया जाता है। इस व्रत में रात में जागरण करने का विशेष माहात्म्य है। प्रातःकाल स्नानादि से निवृत होकर अनशन व्रत रखा जाता है। मिट्टी के बर्तन में जल भरकर ऊपर से बेल पत्र आक धतूरे के फूल और अक्षत आदि डालकर शिवजी को चढ़ाया जाता है। यदि आस पास शिव मूर्ति न हो तो शुद्ध गीली मिट्टी से ही शिवलिंग बनाकर उसे पूजने का विधान है। अनेक गांवों में शिवाले (शिव मन्दिर) बने हैं जो यह संकेत देते हैं कि किसी जमाने में शिवजी महाराज का बड़ा भारी साम्राज्य व प्रभाव अवश्य रहा है। नगरों में बने विशाल भव्य शिव मन्दिरों में रात को जागरण करके शिवपुराण का पाठ सुनना सुनाना प्रत्येक व्रती का धर्म माना जाता है दूसरे दिन प्रातःकाल जौ, तिल, खीर तथा बेल पत्र का हवन करके व्रत समाप्त किया जाता है। इसकी कथा शिवलिंग पुराण में विस्तृत रूप में मिलती है। शिवरात्रि के दिन ऊपर लिखित ढंग से सनातन धर्मावलम्बी हिन्दुओं में शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है इस दिन आर्यसमाजी ऋषि बोधोत्सव मनाते हैं। इस विषय पर व्याख्यानादि देने के लिए समस्त आर्यजनता समाज-मन्दिर में एकत्रित होकर ऋषि के गुणगान करती है और उनके उपदेशों का प्रचार करती है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ की अमर वाणी के अनुसार—

"मैं सादर प्रणाम करता हूं उस महा गुरु दयानन्द को, जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत की आत्मगाथा में सत्य और एकता का बीज देखा, जिसकी प्रतिभा ने भारतीय जीवन के विविध अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिसका उद्देश्य इस देश को अविद्या, अकमण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्वविषयक अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता के जागृति लोक में लाना था, उस गुरु को मेरा बार-बार प्रणाम है" ये ज्वलन्त शब्द विश्वकवि द्वारा अभिव्यक्त अपने उस महान् युगपुरुष के प्रति नवीन भारत की श्रद्धांजलि के प्रतीक हैं जो एक पाश्चात्य समीक्षक की दृष्टि में आया था। हमारे कारागार की दीवारें तोड़ने, हमारी आत्मा के बन्धन छुड़ाने हमारे समाधि-स्थानों के पाषाण हटाकर हमें पुनर्जीवन का दान देने। ऋषि दयानन्द का आधुनिक भारत के निर्माण में कितना गहरा हाथ है, उनके द्वारा प्रस्तुत की गई सर्वतोमुखी क्रान्ति का स्वरूप कितना उज्ज्वल है, और अपने इस पुनरुद्धार के लिए हम उनके कितने अधिक ऋणी हैं। दयानन्द प्राचीन और अर्वाचीन के बीच के हमारे युग-सेतु के एक महत्त्वपूर्ण आधार स्तम्भ हैं। वह हमें अपने भव्य अतीत के महान् आदर्शों के अनुरूप अपने भविष्य को रचने के लिए प्रेरित करने वाले इस युग के प्रधान आचार्य हैं। उन्होंने ही हमें वैदिक कर्म-योग का पाठ पढ़ाकर सदियों से बिसराए हुए अपने पुरातन धर्म मार्ग पर जाने का सबसे सबल प्रयास किया और उस पाश्चात्य भौतिकवादी आंधी के संकट से सचेत करने में भी महत्त्वपूर्ण योग दिया। जिसने हमारी संस्कृति भाषा, वेषभूषा आदि सभी कुछ पर छापा मारना शुरु किया था और जिसकी लपेट में आकर हम अपनापन खो क्या से क्या होते चले जा रहे थे। इसी शिवरात्रि की घटना ने दयानन्द के जीवन में सदैव के लिए एक दिशा विशेष की ओर मोड़कर धर्म और समाज के क्षेत्र में प्रचलित अंध-भावनाओं का कट्टर विरोधी और एक सच्चा सत्यान्वेषक दिया। ऋषि दयानन्द का राष्ट्रीय इतिहास में वही स्थान है, जो यूरोप के इतिहास में मार्टिन लूथर का है। हमारे पुनर्जागरण के महायज्ञ में जो महत्त्वपूर्ण भाग दयानन्द ने लिया और उसके कारण हमारे इतिहास में जो उच्च आसन सदा के लिए उन्हें प्रदान किया गया, उसकी महत्ता और गौरव-गरिमा को कौन अस्वीकार करेगा? ऋषि दयानन्द, राममोहनराय और गांधी के बीच की युग-संधि के हमारे सबसे महान् राष्ट्र निर्माता हैं। यदि दयानन्द न हुए होते तो हम बहककर कहां से कहां जा पहुंचते इसकी कल्पना मात्र से हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

फागुण की शिवरात

टेक—फागुण की शिवरात जो टंकारे में ना आती।
तो आजादी देवी देश म्हारे में ना आती॥

इसी रात को ज्ञान हुआ था मूलशंकर को,
चूहे खायें मिठाई ऐसे धूल शंकर को,
किया दिल से दूर तभी तर्क प्रतिकूल शंकर को,
सच्चे शिव को ढूंढू फिजूल शंकर को,
यदि दिल में शंका शिव के बारे में ना आती।१

विरजानन्द से पढ़कर शुद्ध वेदों का भाष्य किया,
देकर वेद व्याख्यान दूर सब अन्धविश्वास किया,
ग्रंथ बड़ा एक उत्तम सत्यार्थप्रकाश किया,
वेद धर्म की गूंज यदि नारे में ना आती।२

मतमतांतर पक्षपात की दूर को बुराई,
मात-पिता के सम्मान जो करता भलाई हो,
दया भाव रखे प्रजा पर पूर्ण न्याई हो,
फिर भी विदेशी राज्य बताया ना सुखदायी हो,
यहीं ज्योति चमक व वैता प्यारे में ना आती।३

नहीं देर थी रामराज हो जाता,
आर्यावर्त सब देशों का सरताज हो जाता,
रहती कमी ना सब सुखों का साज हो जाता,
मगर जगन्नाथ उस दिन विष देने से नाट जाता,
बलराजसिंह इतनी मुश्किल आज थारे में ना आती,
फागुण की शिवरात जो टंकारे में ना आती।
तो आजादी देवी देश म्हारे में ना आती॥

—ब्र० बलराज आर्य, गिवाना

शिवरात्रिव्रत—ऋषिबोध

पिता दिवस शिवरात्रि, कहा 'मूल' समझाय,
त्रयोदशी की सुन कथा, व्रत को खूब निभाय,
सुनी कथा जो 'मूल' जो कर शिव पर विश्वास,
रखने का निश्चय किया, रात समय उपवास,
चतुर्दशी की शाम को, बस्ती पुरुष विशेष,
बेटा ले मन्दिर गये, जागन के उद्देश्य,
अर्धरात को नींद में, लगे झूमने लोग,
मन्दिर में ही सो गये, लगा मूर्ति भोग,
कर्षन जी भी सो गये, सोया नाहि 'मूल',
व्रत का फल ना नष्ट हो, हो ना ऐसी भूल,
जल के छींटे डालकर, निद्रिया दूर भगाय,
देखा तब इक मूल ने, चूहा भोग उड़ाय,
यह सब लीला देखकर, मनमें उठा विचार,
क्या यही शिव देव है, जो पाले संसार,
निज रक्षा न कर सके, मिट्टी का भगवान्,
सच्चा शिव तो और है, जिसका नहीं ज्ञान,
भ्रम निवारण के लिये, बालक पिता जगाये,
मन को लगी न एक भी, पिता बहुत समझाय,
एक सिपाही साथ ले, बालक घर में आये,
ले खाने को मात से, लीनो भूख मिटाये,

—वेदमित्र हापुड़वाले
सदस्य हरयाणा विद्या सभा, अम्बाला छावनी

शराब हटेगी तो

देश बचेगा।

शिवरात्रि पर्व

शिवरात्रि पर्व आयी।
सन्देश ऋषि का लायी॥

शिवरात्रि का व्रत मूल ने ठाना।
शिवलिंग पे देखा चूहे का खाना।
जिसे पूज रहे नरनारी॥ सन्देश ऋषि ·····

क्या यही शंकर है जिस पे चूहा चढ़ जाये।
अपनी भी रक्षा स्वयं न कर पाये।
मूलशंकर को चिन्ता छायी॥ सन्देश ऋषि······

जो शंकर है कुशल अविनाशी।
नित्य पवित्र अमर सुखराशी।
दर्शन करने की हृदय समाई॥ सन्देश ऋषि ·····

पिता की अकूत सम्पत्ति है त्यागी।
माता की ममता नहीं है जिसको प्यारी।
देशहित प्राण गंवाई॥ सन्देश ——

वन-वन विचरे घुमे नगर में।
आखिर गये विरजानन्द के शरण में।
सच्ची विद्या पायी॥ सन्देश······

स्वयं को जगाया दुनियां को जगाया।
ओ३म् की पताका लेकर विश्व में फहराया।
सारे जग में धूम मचायी॥ सन्देश······

ऋषि ऋण चुकाने के लिए।
कुशल ज्ञान का बोध कराने के लिए।
शिवरात्रि पव आयी॥ सन्देश ·····

—ब्र० धर्मप्रकाशार्य 'कुशल'
विद्यानिधि दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

करनाल में वसन्त महोत्सव

दिनांक ९ फरवरी, ८९ को आर्यसमाज होली मौहल्ला करनाल के प्रांगण में करनाल नगर की समस्त आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की ओर से श्री रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता की अध्यक्षता में वसन्त महोत्सव का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम दोपहर २ बजे यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। उसके पश्चात् पं० चिरंजीलाल सभा भजनोपदेशक के शिक्षाप्रद भजन हुए। उसके पश्चात् आर्य कन्या विद्यालय करनाल की छात्राओं का भाषण एवं भजनों का बड़ा प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ। चौ० जसवन्तसिंह व सुन्दरसिंह प्रधान आर्यसमाज होली मौहल्ला करनाल एवं श्री रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस अवसर पर चौ० छोटूराम एवं वीर हकीकतराय के जीवन पर प्रकाश डाला। श्री अमरसिंह भजनोपदेशक प्रादेशिक सभा ने भी वसन्त के ऊपर अपना मधुर कार्यक्रम किया। इस महोत्सव में डा० यज्ञदत्त वर्मा मन्त्री, श्री प्रेमस्वरूप कोषाध्यक्ष और रतनसिंह लाठर, चमनलाल मित्तल उपप्रधान, हरिनारायण प्रचारमन्त्री, ईश्वरसिंह मलिक व सुभाषचन्द्र गुप्ता उपमन्त्री एवं प्रादेशिक सभा के प्रो. वेदसुमन तथा आर्य कन्या विद्यालय की मुख्याध्यापिका तथा उसके सहयोगी स्टाफ ने इस महोत्सव में पूरा योगदान दिया। —प्रचारमन्त्री

आवश्यकता

एक धार्मिक प्रवृत्तिवाले धर्म-शिक्षक की (नए सत्र से) आवश्यकता है। जो आर्यसमाज नयाबांस, दिल्ली द्वारा संचालित दाऊदयाल आर्य वैदिक पाठशाला में धर्म-शिक्षक के रूप में कार्य करने के इच्छुक हों। वांछित दक्षिणा/वेतन व पूर्ण विवरण सहित तुरन्त सम्पर्क करें।

—धर्मपाल आर्य, मन्त्री आर्यसमाज नयाबांस, दिल्ली-६
दूरभाष : २३८३६०; २३८३८०

ऋतुराज ऋषि दयानन्द

—प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर-१४६०२१

अजय ! इधर आना,

अजय—हां, जी

प्राध्यापक—यहां एक हस्तलेख था ?

अजय—क्या 'ऋतुराज ऋषि दयानन्द' वाला ?

प्रा०—हां,

अजय—मैंने उसको सामान्यतः देखा था, अब वह, सोमेश के पास है। हां, ऋतुराज का क्या अर्थ है ?

प्रा०—ऋतुओं का राजा

अजय—ऋतुओं का राजा तो वसन्त कहलाता है ?

प्रा०—यहां उसी का ही प्रकरण है।

सोमेश—पर इस को ऋतुओं का राजा क्यों कहते हैं ?

प्रा०—सर्दी गर्मी आदी हर ऋतु का अपना-अपना स्वरूप और प्रभाव है। इन सब का प्राणियों और प्राकृतिक जगत पर जो प्रभाव है, वह हर तरह से स्पष्ट है। इन सब के प्रभाव से वसन्त का प्रभाव प्रत्येक प्रकार से अनोखा है अर्थात फूल, फल, आना, हरेभरेपन और बसने की दृष्टि से वसन्त की कोई तुलना नहीं। हर भाषा के साहित्य में इस की चर्चा मिलती है। सभी इस को नवजीवन का संचार करनेवाली ऋतु कहते हैं।

अजय—वसन्त का स्वरूप, परिणाम, प्रभाव पूर्णतः प्रत्यक्ष है। पर इस लेख में यह ऋषि दयानन्द का विशेषण कैसे है ?

प्रा०—वसन्त के पूर्व दर्शन में एक वाक्य आया है, कि नवजीवन का संचार करनेवाली ऋतु। इससे पूर्ववर्ती ऋतु की सर्दी पतझड़ ला देती है। एक तरह से यह सब को सुला देती है, पर वसन्त आकर सब में नव-जीवन का संचार करती हुई हरा-भरा पन ला देती है। महापुरुष भी वसन्त की तरह अपने-अपने क्षेत्र में नव-जीवन का संचार कर देते हैं। ऋषि दयानन्द का जीवन और विचार-धारा इसके स्पष्ट प्रमाण है, कि मध्यकालीन परिस्थियों के कारण सोए हुए भारत को ऋषि ने ऋतुराज बन कर जगा दिया।

सोमेश—आर्य बन्धु अपने नगर कीर्तन में प्रायः एक गीत बोलते हैं—

धन्य-धन्य है, ए ऋषि तूने हमें जगा दिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें बचा दिया॥

प्रा०—सोमेश ! तू ने मेरे कहने से पहले ही गीत का स्मरण करा दिया। वस्तुतः गीत की इन पंक्तियों के पीछे यही सारी कहानी छुपी हुई है।

अजय—हां, ऋषि दयानन्द के साथ ऋतुराज शब्द का विशेषण पर्याप्त सार्थक सिद्ध होता है। पुनरपि ऋषि ने किस-किस क्षेत्र में नव-जीवन का संचार किया है ?

प्रा०—वैसे तो कोई भी क्षेत्र ऋषि के प्रभाव से अछूता नहीं बचा। हां, यदि एक छोटे से वाक्य में कहना हो, तो कह सकते हैं, कि—धर्म, संस्कृति, वेद का शुद्ध स्वरूप दर्शाना।

अजय—यह तो कुछ ऐसे लगता है, जैसा कि 'जिन खोज्यां तिन पाइयां—गहरे पानी पैठ' अर्थात इस के लिए गहरे में पैठना पड़ेगा। हां, कोई सर्वप्रसिद्ध संकेत पहले करें, तो यह बात भी स्पष्ट हो सकती है ?

प्रा०—देखो ! यह सब स्वीकार करते हैं, कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने, छुआ-छूत को दूर करने, स्त्री शिक्षा का प्रचार आदि क्षेत्रों में ऋषि दयानन्द ने नई दिशा दिखाई है क्या यह नव-जीवन संचार का स्पष्ट उदाहरण नहीं है ? जहां-जहां ऋषि ने सोतों को जगाया।

सोमेश—आर्य बन्धु एक चौकीदार की कई बार कहानी सुनते हैं। जो कि अन्तिम शब्दों को स्पष्ट करती है। हां मैंने पहले तो इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया, उस को आप स्पष्ट कर दें, तो हो सकता है, वह इस अवसर पर स्मरणीय सिद्ध हो ?

प्रा०—कहते हैं, एक चौकीदार था, वह दूसरे पहरेदारों की तरह रात को जहां यह कहता, कि जागते रहो ! वहां प्रातः चार बजे से यह कहना शुरू कर देता। 'पांच हजार साल से सोने वालो जागो ! उस के इस वाक्य पर जैसे-जैसे लोगों का ध्यान गया, वैसे-वैसे लोग उस से पूछते, तू प्रातः-प्रातः यह क्यों कहता है ? हम कोई पांच हजार साल से सो रहे हैं ? तब चौकीदार हर एक को यही उत्तर देता, कि भाई मैं अधिक पढ़ा-लिखा नहीं हूं। मैंने तो एक सत्संग में सुना था। हां, आप ऋषि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश पढ़ें, वहां आप को इसका उत्तर मिलेगा।

अजय—आपकी दृष्टि से चौकीदार का भाव क्या है ?

प्रा०—जीवन से जुड़ी बातों के सम्बन्ध में सही ज्ञान न होना ही सोना है। इस निद्रा से हमें सत्यार्थप्रकाश जगा देता है क्योंकि उस में जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डाला गया है। यह अज्ञान, अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता हमारे यहां महाभारत के बाद से शुरू होगई थी। अत एव वह ऐसा कहता था।

सोमेश—हां, तो क्या 'ऋतुराज ऋषि दयानन्द' में उन बातों को स्पष्ट किया है। जहां-जहां ऋषि ने नवजीवन का संचार किया है ?

प्रा०—हां, तूने ठीक ही कहा, इस रचना में उन-उन क्षेत्रों की उदाहरण सहित चर्चा की है, जहां-जहां ऋषि के प्रभाव से पुनर्जागरण हुआ और तभी तो फ्रेंच विचारक रोमां रोलां ने लिखा है—'दयानन्द ने भारत के निष्प्राण शरीर में अपना अदम्य उत्साह, अपना दृढ़ निश्चयात्मक संकल्प और सिंह जैसा रक्त भरकर उसे सजीव किया।

वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जन्म और जागरण में जो इस समय इस देश में अपने पूर्ण यौवन में देख पड़ रही है। उसको सब से प्रबल प्रेरणा दयानन्द से प्राप्त हुई।'

अजय—क्या रोमां रोलां ने ऋषि का जीवन चरित लिखा है ?

प्रा०—नहीं, अपितु उन्होंने 'रामकृष्ण परमहंस' का जीवन-चरित लिखा है। इसमें प्रसंगवश दयानन्द की इन प्रबल शब्दों में चर्चा की है।

अजय—तो फिर यह रचना हमारे अनेक प्रश्नों का स्वतः ही समाधान करेगी। क्योंकि ऊपर की चर्चा में और भी कई प्रश्न उभरते हैं। हां, इसके प्रकाशन की क्या योजना है ?

प्रा०—यदि कोई प्रकाशक तैयार हो तो यह रचना दी जा सकती है, अन्यथा 'एक पन्थ दो काज' के अनुसार जो सज्जन ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करना चाहते हैं, वे अपने नाम दें। जैसे इस लेख में ये दो नाम हैं और प्रत्येक अपने-अपने नाम के लिए कम से कम एक सौ एक रुपया दे। इससे उन व्यक्तियों का नाम भी होगा और रचना भी प्रकाश में आ जाएगी। देखें ! ऋषि दयानन्द के कार्य को योजनाबद्ध रूप से स्पष्ट करने के लिए कौन-कौन आगे आते हैं ?

---

१० दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर

महोदय !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी ३०-३-८९ से ८-४-८९ तक यहां पर क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है। शिविर शुल्क २००) रु० होगा। १५ मार्च से पूर्व (अपनी योग्यता एवं व्यवसाय सहित) आवेदन-पत्र उपर्युक्त पते पर लिखकर अनुमति प्राप्त कर लेवें। शिविरार्थी सीमित संख्या में लिये जावेंगे।

पता—आर्यवन विकास क्षेत्र, रोजड़
पत्रा सागपुर, जि० साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

धनजीभाई पटेल (प्रधान आर्यवन)

स्वामी सत्यपति (शिविराध्यक्ष)

महिमा महान् है

टंकारा महालय की, उपदेशक विद्यालय की,
शिव के शिवालय की, महिमा महान् है ॥१
लक्ष्मण के भ्रात की, भादों में बरसात की,
बोध शिवरात की, महिमा महान् है ॥२
नन्द के गोपाल की, पंचों की चौपाल की,
मूलशंकर बाल की, महिमा महान् है ॥३
पवन सुत हनुमन्त की, ऋतुराज बसन्त की,
दयानन्द सन्त की, महिमा महान् है ॥४
विदेह कुमारी की, शिव के पुजारी की,
बाल व्रतधारी की, महिमा महान् है ॥५
गंगा के नीर की, भोजन में खीर की,
दयानन्द फकीर की, महिमा महान् है ॥६
सुबह के वक्त की, काया में रक्त की,
मूर्ख शिव भक्त की, महिमा महान् है ॥७
बालई के बात की, स्वस्थ सुन्दर गात की,
टंकारा गुजरात की, महिमा महान् है ॥८
चन्दन के बाग की, मारवाड़ी पाग की,
दयानन्द वीतराग की, महिमा महान् है ॥९
तारों में चन्द की, कविता में छन्द की,
स्वामी दयानन्द की, महिमा महान् है ॥१०

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सवों की सूची

आर्यसमाज	मिर्जापुर बाछोद जि० महेन्द्रगढ़	२५-२६ फरवरी
,,	ददलाना जि० करनाल	२५ से २७ ,,
,,	सोहना जि० फरीदाबाद	२४ से २६ ,,
,,	मोती चौक रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	३ से ५ मार्च
,,	रेलवे मार्ग यमुनानगर जि० अम्बाला	४ से ६ ,,
,,	चरखी दादरी जि० भिवानी	६ ,,
,,	गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक	५-६ ,,
,,	सांघी जि० रोहतक	४ से ६ ,,
,,	चिरवाड़ी जि० फरीदाबाद	७-८ ,,
,,	माजरा दुबलधन जि० रोहतक	९ से १२ ,,
,,	घतीर जि० फरीदाबाद	१२-१४ ,,
,,	गुरुकुल टटेसर जोन्ती (दिल्ली)	१० से १२ ,,
,,	गुरुकुल भैंसवाल जि० सोनीपत	११-१२ ,,
,,	माहूलाना (गोहाना)	१७ से १९ ,,
,,	बहराना जि० अलवर (राजस्थान)	१७ से १९ ,,
,,	मुजेसर जि० फरीदाबाद	१८-१९ ,,
,,	सालवन जि० करनाल	१७ से १९ ,,
,,	बराणेंदी जि० अम्बाला	२०-२१ ,,
,,	कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)	२५-२६ ,,
,,	मण्डार जि० कुरुक्षेत्र	२२ से २४ ,,
,,	मुआना जि० जींद	२५ से २७ ,,
,,	कौल जि० कुरुक्षेत्र	२४ से २६ ,,
,,	गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल	२४ से २६ ,,
,,	ठौल जि० कुरुक्षेत्र	२४ से २६ ,,
,,	गोहाना मण्डी जि० सोनीपत	२४ से २६ ,,
मेला	भटगांव जि० सोनीपत	२८-२९ ,,
आर्यसमाज	फरल जि० कुरुक्षेत्र	२९ से ३१ ,,
,,	घरौण्डा जि० करनाल	७ से ९ अप्रैल
,,	माडल टाउन सोनीपत	७ से ९ ,,
,,	नरवाना जि० जींद	७ से ९ ,,
,,	गोपाल नगर नजफगढ़ (दिल्ली)	११ से १४ ,,
,,	नारायणगढ़ जि० अम्बाला	१४ से १६ ,,

—रघुवीरसिंह वेदप्रचाराधिष्ठाता

पंचायतों के शराब कर लालच से मद्यपान को बढ़ावे का षड्यन्त्र

नारनौल, २१ फरवरी (निस)। आर्यसमाज की स्थानीय शाखा का आरोप है कि हरयाणा सरकार जानबूझ कर राज्य में शराब को बढ़ावा दे रही है। शराब की प्रत्येक बोतल पर सम्बन्धित ग्राम पंचायत को एक रुपया कर के रूप में देने की योजना चलाकर सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में शराब विरोधी दल को समाप्त करने का षड्यन्त्र रच रही है।

आर्यसमाज के प्रचार सचिव मास्टर प्रह्लाद आर्य ने लिखित बयान में बताया कि राज्य सरकार ने शराब की बिक्री की इतनी खुली छूट दी हुई है कि लाइसेंसधारी ठेकेदार केवल मंजूरशुदा ठेकों पर ही शराब नहीं बेचते, अपितु अनेक गांवों में उन्होंने अवैध रूप से अपने उप-ठेकेदार बनाये हुए हैं। इन उप-ठेकेदारों को शराब की पेटियों की पेटियां दे दी जाती हैं, जो गांवों में सरेआम बेची जाती है।

आरोप है कि सरकार ने शराब की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए गतवर्ष तो 'अहातों' के लाइसैंस देने की योजना लागू की थी और अब ग्रामीण ठेकों पर बिकनेवाली शराब पर संबंधित ग्राम पंचायत को एक रुपया प्रति बोतल कर के रूप में देने की योजना बनाई जारही है।

आरोप है कि यह केवल शराब के प्रतिवाद को खत्म करने की योजना है, क्योंकि जो ग्राम पंचायतें अब तक शराब के ठेकों का विरोध करती रही है, वो भी एक रुपया बोतल के राजस्व के चक्कर में ठेकों का विरोध करना छोड़ देंगी। श्री आर्य की मांग है कि सरकार को शराब की बिक्री व प्रचार पर रोक लगानी चाहिए वरना वह दिन दूर नहीं, जब 'देशों में देश हरयाणा जहाँ शराब पी मर जाणां' कहावत प्रचलित हो जाएगी।

(दैनिक नवभारत टाइम्स)

आर्यसमाज सोलधा जि० रोहतक का चुनाव

प्रधान—सर्वश्री हजारीसिंह महाजन, मन्त्री—रिसालसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—कप्तान रामानन्द, कोषाध्यक्ष—सुखपाल आर्य।

आर्यसमाज मन्दिर पीलूखेड़ा का शिलान्यास



आर्यसमाज मन्दिर पीलूखेड़ा का निर्माण कार्य ५ फरवरी को आरम्भ करने के अवसर पर श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती को मन्दिर के लिए भूमिदाता श्री रामकला जी के सुपुत्र श्री दयानन्द जी ईंटें नींव में रखने के लिए दे रहे हैं। उनके साथ उनके भाई श्री पालेराम जी, श्री फतेहसिंह जी के अतिरिक्त ब्र. रामस्वरूप जी, श्री भगवानसिंह, श्री केदारसिंह आर्य, स्वामी योगानन्द जी, श्री अर्जुनदेव आर्य, श्री महावीर शास्त्री आदि दिखाई दे रहे हैं।

फुटकर विचार

१- घातक निर्णय:—हरयाणा सरकार की यह घोषणा कि प्रत्येक पंचायत को उसके क्षेत्र में बिकने वाली शराब की प्रत्येक बोतल पर एक रुपया विकास कार्य हेतु दिया जायेगा न केवल हरयाणा निवासियों के लिये स्वास्थ्य के लिये घातक होगी अपितु नैतिक मूल्यों का भी पतन कर देगी। इस तथ्य को झुटलाना नहीं चाहिये कि इस निर्णय से प्रत्येक पंचायत अपने-अपने क्षेत्र में अधिक शराब की बिक्री के लिये प्रयत्नशील रहेगी ताकि ज्यादा से ज्यादा आय हो भले ही उसके क्षेत्र के लोग शराबी बन जायें—यह बात किसी से छिपी नहीं कि इस नामुराद शराब ने कितने घर तबाह किये कितनों का स्वास्थ्य बिगाड़ा और कितने शानदार राज्य नष्ट हो गये। हरयाणा जैसे प्रांत में जहां के युवक दूध दही का प्रयोग करके इतिहास में बहादुरी तथा शूरवीरता के लिये अपना नाम सुनहरी अक्षरों से लिखाया है वहां अब यही युवक हाथ में शराब की बोतल लेकर नैतिक पतन की ओर अग्रेसर होंगे। यदि यहां युवक ही पथभ्रष्ट हो गया तो इन विकास कार्यों का क्या होगा? जनता दल की यह सरकार जोकि हरयाणा निवासियों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये वचनबद्ध है तुरन्त इस घोषणा को वापिस ले लेना चाहिये। ऐसा न हो बाद में पछताना पड़े।

२- हिन्दी का प्रयोग:—देर से ही सही परन्तु हरयाणा सरकार का यह आदेश सराहनीय है कि हरयाणा में प्रत्येक स्तर पर हिन्दी का प्रयोग किया जाये। मैं रहयाणा सरकार से यह अनुरोध करूंगा कि वह आदेश निकालकर आंखें न मून्द ले बल्कि सर्वदा सतर्क रहते हुए यह देखे कि इस आदेश का पालन भी हो रहा है कि नहीं। इसे यह न भूलना चाहिये कि सचिवालय से जो भी परिपत्र जारी होते हैं वे सब अंग्रेजी में होते हैं। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय हिसार तथा महालेखाकार चण्डीगढ़ से सब पत्र व्यवहार अंग्रेजी में होता है जोकि न केवल राष्ट्रभाषा का अपमान है अपितु हिन्दी भाषी हरयाणा वासियों से एक भद्दा मजाक भी है। अब देखना यह है कि हरयाणा सरकार अपने आदेश का कितना पालन करती है?

३- आर्यसमाजी बस:—हरयाणा के आर्यों के लिये यह शुभ समाचार है कि प्रेमनगर करनाल से जो लोकल बस चलती है वह बस आर्यसमाजी होगई है आप सोचते होंगे कि मनुष्य तो आर्यसमाजी हो सकता है परन्तु यह बस कैसे आर्यसमाजी होगई है लीजिये विवरण उपस्थित है। पिछले दिनों मुझे प्रेम नगर करनाल में एक विवाह में सम्मिलित होना पड़ा। वापिसी पर मुझे सुझाव दिया गया कि करनाल बस स्टैंड के लिये लोकल बस पकड़ लूं। थोड़ी देर में वह बस आती दिखाई दी दूर से ही उस बस की छत पर ओ३म् का ध्वज लहराता दिखाई दे रहा था अन्दर घुसते ही जब सामने दृष्टि गई तो महर्षि दयानन्द जी का चित्र टंगा हुआ दिखाई दिया—मैं आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता से भावविभोर हो रहा था क्योंकि आज तक हमने हर बस में 'माता का' हनुमान का या किसी दूसरे देवता का चित्र तो लगा हुआ देखा था परन्तु सरकारी बस में ओ३म् का ध्वज और ऋषि दयानन्द का चित्र पहली बार दिखाई दिया—पूछताछ पर पता चला कि कोई भी व्यक्ति इस बस में बीड़ी आदि नहीं पी सकता। बस चालक ऋषि भक्त है अनपढ़ होते हुए भी अपने कृत्यों द्वारा वैदिक-धर्म का प्रचार करते हुए यश का भागी बना हुआ है। चालकों के बारे में यह प्रसिद्ध है कि वे भक्ष्य अभक्ष्य की परवाह नहीं करते परन्तु यह चालक आर्य (श्रेष्ठ) है। यह सारी बातें जानकर सिर श्रद्धा से उस चालक के प्रति नतमस्तक होगया—काश ऐसा प्रत्येक बस में हो। आप समझ गये होंगे कि मैंने इस बस को आर्यसमाजी बस क्यों कहा है?

आर्यसमाज रामनगर गुड़गांव

प्रधान—श्री राजेन्द्रप्रसाद, मन्त्री—श्री ओम्प्रकाश, कोषाध्यक्ष—श्री ताराचन्द

भजन

देव दयानन्द याद तेरी सताये।
खुद को मिटाके दीपक वतन के जलाए॥

टंकारा में एक रात आई थी हिन्दुस्तान की
भ्रम भूत भाग गया बालक के शुद्ध ज्ञान की
कीर्ति महान् की यहां ज्योत जग-मगाये—

मूल से बना दयानन्द दया का भण्डार था
दुष्ट—पापियों के लिए तीव्र तेज धार था
एक चमत्कार था कभी ना घबराये—

देव ने सुना था जब विधवा का क्रन्दन
हरिजनों को गले लगा ऋषि होगये धन-धन
विश्व करे अभिनन्दन तेरा चमत्कार ये दिखाये—

काशी में ललकार कर में लेकर वेद मुसण्डी
पोप पाखण्डियों की सभी तोड़ दई मण्डी
सन्त आया झण्डो कोई जन-जन गुन-गुनाये—

वेद-ज्ञान मन्दिर यहां बहुत से बनवाये
ईंट, पत्थर, रोड़े, पुष्प समक्ष सर पर खाये
गरल पान किया हंस-कर शत्रु शरमाये—

दीपों का त्योहार दीवाली बन गई रात काली
जगन्नाथ पापी ने विष की भरके दे दी प्याली
दे गया चमन को ताकि महक पुष्पों में है आये—

सन्ध्या हवन करना हमको प्यार भी सिखाया
शत्रु ना किसी का कोई सत्कार भी सिखाया
कथनी-करनी देख जग की श्रीराम घबराये—

देव दयानन्द याद तेरी सताये।
खुद को मिटाके दीपक वतन के जलाये॥

सूबेदार श्रीराम खटाणा कवि, ग्राम—खरकड़ा
पोस्ट—धनौदा जिला महेन्द्रगढ़।

तुम्हें बोध कब होगा, ऐ हिन्द वालो

('नाज' सोनीपत)

ज़रा सोचो, समझो, उठो, देखो-भालो।
ज़रूरत यही है कि खुद को सम्भालो॥

गरेबां में झांको टटोलो इसे तुम।
हक़ीक़त नज़र आएगी नौनिहालो॥

यह वक़्त है कि भागा चला जा रहा है।
कि वर वक़्त तुम अपनी बिगड़ी बना लो॥

बचा लो, बिगड़ने से सूरत वतन की।
निकालो, कोई इस की सूरत निकालो॥

बनाओगे तुम, विश्व को आर्य, क्योंकर।
नज़र अपनी, आमाल अपने पे डालो॥

दयानन्द के गीत, गाते हो लेकिन।
तुम्हें बोध कब होगा, ऐ हिन्द वालो॥

जो शिवरात्रि का है पैग़ाम दिलकश।
सुनो, इस को, जीवन के सांचे में ढालो॥

सदाक़त का डंका बजाने की खातिर।
जो संकट भी आए, गले से लगा लो॥

ऋषिवर ने जो 'नाज' रस्ता दिखाया।
उसी पर चलो खोज शिव को निकालो॥

(पृष्ठ १ का शेष)

सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े, मैं इस महत् कार्य को अवश्य पूर्ण करूंगा।" (श्रीमद्दयानन्दप्रकाश, पृष्ठ १७५) जैसे योगेश्वर श्रीकृष्ण धर्म-संस्थापन के लिए बार-बार जन्म लेने की भावना से भावित थे, वैसे ही योगेश्वर दयानन्द भी वेदप्रचार के लिए बार-बार जन्म लेने की भावना से भावित थे। इतना ही नहीं उनकी तो हार्दिक इच्छा थी कि—"आर्य धर्म की उन्नति के लिये मुझ जैसे बहुत से उपदेशक आपके देश में होने चाहियें। ऐसा काम अकेला आदमी भली प्रकार नहीं कर सकता, फिर भी यह दृढ़ निश्चय कर लिया है कि अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार जो कुछ दीक्षा ली है, उसे चलाऊंगा।" (उपदेश मंजरी, पृष्ठ १७५)

उपर्युक्त सभी तथ्यों और प्रमाणों की निष्पक्ष विवेचना करने के पश्चात् हम ही नहीं, कोई भी निष्पक्ष विवेचक इस परिणाम पर पहुंचे बिना नहीं रह सकता कि महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना कोई नवीन मत चलाना कदापि अभीष्ट नहीं था। सत्य तो यह है कि—"महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कोई नई बात नहीं कही, प्रत्युत ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त प्राचीन ऋषि-महर्षि जो कुछ भी कहते आये, काल-क्रम से उस पर पड़े आवरण को हटाकर उन्होंने उसी उद्घोष को दोहराया और वेद प्रतिपादित शाश्वत सत्य-सनातन धर्म की रक्षा के लिये ही आर्यसमाज की स्थापना की। इस दृष्टि आर्यसमाज को कोई पृथक् मत, मजहब, या सम्प्रदाय न रहकर एक ऐसा आन्दोलन कहना चाहिये, जो बुद्धिवाद का आश्रय लेकर वैदिक धर्म के शुद्ध स्वरूप को जनता के सामने उपस्थित करता है। इसलिये यदि आर्यसमाज को समझना हो तो वेदादि सत्य शास्त्रों में प्रतिपादित सच्चाइयों को समझना पर्याप्त है। (आर्यसमाज की विचारधारा, पृष्ठ ३)

इतिहास साक्षी है कि महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व पहले से विद्यमान अन्य सुधारात्मक आन्दोलनों से सहयोग करने की इच्छा भी व्यक्त की थी और उनसे सम्पर्क भी किया था किन्तु उनमें से किसी की भी वेद-विषयक मान्यता ऐसी नहीं थी जो महर्षि की मान्यता से मेल खाती हो। और वे महर्षि की वेद-विषयक मान्यता को या तो मानने के लिये तैयार नहीं थे, या वेदों के आधार पर सुधार करने को तैयार नहीं हो रहे थे। इसलिए मजबूर होकर महर्षि को आर्यसमाज रूपी एक नवीन संगठन अपितु यूं कहिये कि आन्दोलन की आधारशिला रखनी पड़ी। सुप्रसिद्ध आर्यगवेषक डा० भवानीलाल भारतीय का इस सम्बन्ध में कथन है कि—"जिस समय स्वामी दयानन्द बम्बई में विराजमान थे तथा उनके शिष्य, भक्त, अनुयायी तथा प्रशंसक एक ऐसी संस्था को जन्म देने की बात सोच रहे थे, जो स्वामी जी की विचारधारा का अनुगमन करते हुए देशोत्थान तथा समाज सेवा को अपना मुख्य लक्ष्य बनाने तथा वैदिक धर्म की पुन: स्थापना के लिए कृतसंकल्प हो, उसी समय एक प्रस्ताव यह भी आया था कि इसी कार्य में संलग्न पूर्व से ही संस्थापित ब्राह्मसमाज से ही सहयोग किया जाय। इस प्रस्ताव पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया, परन्तु निष्कर्ष यह निकला कि ब्राह्म समाज तथा स्वामी दयानन्द के मूलभूत सिद्धांतों में बहुत अधिक अन्तर है। स्वामी दयानन्द की वेद के प्रति अगाध निष्ठा थी। वे यह मानकर चलते थे कि भारत में सुधार एवं संस्कार के आंदोलन तब तक सफल नहीं हो सकते, जब तक कि वैदिकधर्म को उसके पुरातन रूप में प्रतिष्ठित न कर दिया जाये। ......परन्तु ब्राह्मसमाज वेदों के प्रति इतना अधिक आस्थावान तथा दृढ़ नहीं था।" (द्रष्टव्य आर्यसमाज का अतीत और वर्तमान, पृष्ठ १३-१४) भारतीय जी अन्यत्र भी लिखते हैं कि—"जिस समय बम्बई में स्वामी में स्वामी जी अपने शिष्यों और अनुयायियों को संगठित करते हुए किसी ऐसी संस्था को प्रारम्भ करने की सोच रहे थे, जो उनके द्वारा निर्देशित मार्ग और कार्य प्रणाली के द्वारा उनके न रहने पर भी उनके कार्य को आगे बढ़ाती रहे। उस समय लोगों ने यह परामर्श दिया था कि ब्रह्मसमाज के साथ मिलकर भी यह कार्य किया जा सकता है। स्वामी दयानन्द इससे सहमत भी हो जाते, परन्तु ब्रह्मसमाज के नेताओं से कुछ सैद्धांतिक मतभेद था। यह मतभेद भी किसी साधारण प्रश्न पर न होकर वेद के प्रमाणकित्व के विषय में था। महर्षि जहां प्राचीन शास्त्रीय परम्परा का अनुसरण करते हुए वेद को अपौरुषेय फलत: स्वत: प्रमाण मानते थे, वहां ब्राह्म नेता वेदों को इतना उच्च स्थान देने के लिए तैयार नहीं थे।" (द्रष्टव्य—महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द, पृष्ठ १३४-१३५)

महर्षि वेदों के अनन्य भक्त थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि कोई भी सुधार-कार्य तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक कि वेद के शुद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाया नहीं जाता। विशेषकर भारत में कि जिसके जनमानस में अब भी वेद के प्रति अगाध श्रद्धा एवं आस्था विद्यमान हो। उनका यह भी विश्वास था कि वेद के झण्डे तले ही भारतवासी अपने मतभेद भुलाकर इकट्ठे हो सकते हैं। वेद ही धर्म का आदिमूल और सत्य का भंडार है। इसीलिए वेद प्रतिपादित सत्य सनातन धर्म की रक्षा और प्रचार के लिए आर्यसमाज को महर्षि ने स्थापना की थी। आर्यसमाज भी वेद के प्रचार को अपना मुख्य उद्देश्य और कर्त्तव्य मानता है। अत: आर्यसमाज कोई मत, मजहब, पंथ अथवा सम्प्रदाय नहीं कहा जा सकता।

ज्ञान की गरिमा बढ़ाएं

बोध का यह पर्व पावन,
बोध की आभा बिखेरे।
दूर हों भू से निरन्तर,
हैं घिरे जो घन घनेरे।
ज्ञान के ज्योतिर्पथों पर-
हम चलें, जगती जगाएं।
ज्ञान की गरिमा बढ़ाएं॥

ऋषि दयानन्द ने इसी दिन,
बोध की थी ज्योति पायी।
उस ऋषि के उर-विमल में,
ज्योति नूतन जगमगायी।
ऋषि सदृश हम भी हृदय-
में, बोध की आभा जगाएं।
ज्ञान की गरिमा बढ़ाएं॥

यामिनी तम की धरा पर,
तीव्र गति से बढ़ रही है।
दनुजता की वृत्तियां सब,
शृंग ऊंचे चढ़ रही हैं।
आर्य प्रत्रो! अब बढ़ो तुम-
यामिनी भू से भगाएं।
ज्ञान की गरिमा बढ़ाएं॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

फिर ओ३म् पताका ले कर में दयानन्द की सेना आई है

टेक—शिवरात्रि आज फिर आई है नूतन संदेशा लाई है।
तुम पड़े हुए जिस उलझन में ग्रन्थियां लगी हैं सुलझाओ।
सत्यार्थ कसौटी लो कर में सत्यार्थ बताने आई है॥
मजहबी दीवारें चमकें हैं भगवान् बहुत आचमके हैं।
पाखण्ड खण्डिनी लो कर में ऋषि स्मरण कराने आई है॥
एक भगवानों की फौज चली उस परमेश्वर को छोड़ चली।
वैदिक सन्मार्ग दिखाने को खण्डन की बारी आई है॥
श्री राम लक्ष्मण और सीता भगवान् कृष्ण की जो गीता।
रामायण और महाभारत का इतिहास बताने आई है॥
अश्लील ग्रन्थों को पढ़ने से हो पतन राष्ट्र का होता है।
स्वाध्याय करो नित वेदों का जो देववाणी कहलाई है॥
फिर मतवालों का जोर हुआ गुरुडम का फिर से शोर हुआ।
चुनौति करो स्वीकार पुनः शास्त्रार्थ कराने आई है॥
मस्जिद गुरुद्वारे बनते हैं मन्दिर भी बहुत पनपते हैं।
घर-घर में बसा अन्तर्यामी उपनिषद् बताने आई है॥
निज धन बल के बल बूते पर मतवाले जोर पकड़ते हैं।
श्रद्धानन्द के अनुयायी हो यह बिगुल बजाने आई है॥
झूठे ये तान्त्रिक आये हैं जो नर बलियां करवाते हैं।
बहिष्कार करो इन धूर्तों का यह भाव जगाने आई है॥
अय ! जग के मत वालो तुम यह कान खोल कर सुनलेना।
फिर ओ३म् पताका ले कर में दयानन्द की सेना आई है॥

ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन-११/१२४ पश्चिम आजाद नगर दिल्ली-११००५१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक, वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : २८७४)
रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

'छोटूराम गौरव-गाथा' का विमोचन

फरीदाबाद में चौ० छोटूराम जन्म दिवस (वसन्त पंचमी) पर चौ० ओमप्रकाश चौटाला मुख्यमन्त्री हरयाणा ने छोटूराम गौरव गाथा नामक पुस्तक का विमोचन किया। साथ में खड़े हैं लेखक प्रिंसिपल डा० रणजीत सिंह। डा० रणजीत सिंह ने इससे पूर्व चौधरी छोटूराम कृत 'बेचारा जमींदार' का अनुवाद एवं सम्पादन किया है।



इन्हीं द्वारा लिखित 'जाट इतिहास' छपने लग रहा है। इसके इलावा हरयाणा साहित्य ने इनको हरयाणा के प्रसिद्ध सन्त निश्चल दास की ग्रन्थावली लिखने के लिए अनुबन्धित किया है।

शराबबंदी अभियान के तहत सरपंचों ने उपायुक्त से सहायता मांगी

(जनसत्ता संवाददाता)

जींद 9 फरवरी। पिछले दिनों जिले के 14 गांवों की पंचायतों के नुमाइन्दे अपने-अपने गावों में शुरु किए गए शराबबन्दी अभियान के तहत उपायुक्त जींद से सहायता के लिए मिले।

ललित खेड़ा, शामलो, निडाना, निडानी, पडाना, पिंडारा, पाथरी व रामकली आदि 14 गावों की पंचायतों ने 28 अक्टूबर 1989 से शराबबन्दी अभियान चलाया हुआ है, पर इन गांवों में शराब की अवैध बिक्री करने वाले व कुछ शराबी तत्व उनके इस प्रयास को सफल नहीं होने दे रहे।

सरपंचों ने बताया कि इन गांवों में शराब की अवैध बिक्री पूरे जोरों पर है। उन्होंने यह भी बताया कि सबसे ज्यादा शराब गतौली गांव के ठेके से उनके गांवों में आती है। उन्होंने कहा कि गाव में रोक के बाद भी जब कुछ लोगों ने शराब पी और पचायतों ने उस पर जुर्माना आदि किया तो कुछ लोगों ने जुर्माना देने से मना कर दिया।

इन पंचायतों ने उपायुक्त से गावों में इस तरह से शराब पीने वालों को दण्ड देने व शराब की अवैध बिक्री रोकने की मांग की है। उपायुक्त ने उन्हें आश्वासन दिया है कि प्रशासन उनकी हर सम्भव सहायता करेगा।

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जिला महेंद्रगढ़ का चुनाव

प्रधान-मा सत्यवीर आर्य, उपप्रधान-म. जयप्रकाश, मन्त्री-डा. महेंद्रकुमार आर्य उपमन्त्री-मा. दयाराम आर्य, कोषाध्यक्ष-मा. शमशेर सिंह सरपच, लेखानिरीक्षक-पं. ज्ञानचन्द आर्य, प्रचारमन्त्री-हरिसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-डा. महेंद्रकुमार।

आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन विकास फार्म में 22 से 31 मार्च 1990 तक 10 दिन का प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के साथ योग, सांख्य तथा न्याय दर्शन के चुने हुए सूत्रों का अध्यापन भी किया जाएगा। शिविर शुल्क दो सौ रुपए रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होंगे उनको यथा जानकर शुल्क में छूट दी जा सकेगी। शिविरार्थी 15 मार्च से पूर्व ही अपनी योग्यता, व्यवसाय, आयु सहित आवेदन पत्र निम्न पते पर लिखकर स्वीकृति ले लेवें तथा मन्त्री, आर्य वन के पास शुल्क जमा करा देवें।

पता:—
दर्शन योग विद्यालय, आर्य वन विकास-रोजड,
पो. सागपुर, जि. साबरकांठा, (गुजरात) 383307

धन जी वाल जी पटेल
प्रधान, आर्य वन)

स्वामी सत्यपति
(शिविराध्यक्ष)

हैदराबाद सत्याग्रहियों को आवश्यक सूचना

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सभी सम्बन्धित सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है कि सत्याग्रहियों की ओर से जो दावा सुप्रीम कोर्ट में कर रखा है उसकी पेशी ३०—१—९० को थी। इस दिन भारत सरकार ने जवाब देना था। परन्तु भारत सरकार के अटार्नी जनरल और अधिकारियों ने यह कह दिया कि जवाबदावा अभी तैयार नहीं हुआ है। अतः तीन सप्ताह का और समय की मांग की है। आशा है कि भारत सरकार अपना जवाबदावा २१ या २२ फरवरी को दे देगी या अधिक से अधिक फरवरी का अन्तिम सप्ताह होगा। जो भी कार्यवाही सुप्रीम कोर्ट में होगी उसकी सूचना सभी सत्याग्रहियों को सर्वहितकारी के द्वारा दे दी जाएगी।

—म० भरतसिंह संयोजक
ह० स० सैनिक सम्मान पेंशन समिति हर०

ऋषिबोध विशेषांक

२३ फरवरी को ऋषि दयानन्द बोध दिवस सारे आर्यजगत् में मनाया जाएगा। अतः सर्वहितकारी की ओर से २१ फरवरी का ऋषिबोधाङ्क प्रकाशित किया जावेगा।

—सम्पादक

वधू की आवश्यकता

एक आर्य परिवार के मैट्रिक पास युवक के लिए जो कि ५ फुट ८ इंच लम्बा सुन्दर स्वस्थ है के लिए गुरुकुल की पढ़ी सुन्दर स्वस्थ कन्या जोकि ५ फुट ४ इंच की हो तथा दैनिक सन्ध्या हवन करने में रुचि रखती हो की आवश्यकता है। लड़के के पास काफी उपजाऊ भूमि तथा मकान किराये की आय है। दहेज नहीं चाहिए। दहिया गठवाला तथा सिन्धु गोत्र हैं। इच्छुक निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

सम्पादक सर्वहितकारी साप्ताहिक दयानन्दमठ रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय १० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ पंजि०नं० P RTK २४ फोन ४८१२

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

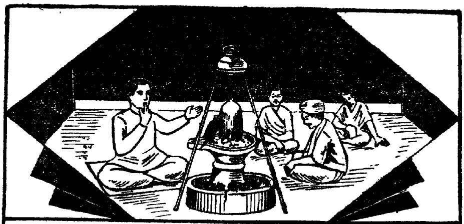
सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री | सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालङ्कार, एम. ए. | फाल्गुन २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क १३ २१ फरवरी, १९९० वार्षिक शुल्क ३५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

बोध—शिवरात्रि का व्रत

ऋषि-बोध विशेषांक

✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲



शिव रात्रि के पूजन पर बालक मूलशंकर को ईश्वरीय ज्ञान होना



पिता—मूलशंकर अगर महा शिव रात को,
रात भर जाग कर व्रत निभायेगा तू।
अति प्रसन्न महादेव हो जायेंगे,
दर्श शंकर का निश्चय पायेगा तू।
सुन कर पितुवर की आज्ञा का पालन किया,
अन्न जल त्याग कर व्रत धारण किया।
जहाँ शिवालय बना डेमी दरिया के तट,
बैठकर नाम शिव का उच्चारण किया।
शिव के पूजार्थ मिष्ठान्न बिल्वादि ले,
भक्तजन शिव के मन्दिर पै आने लगे।
ढोल, डफ, झांझ, घड़ियाल और शंख ले,
गीत गाने लगे और बजाने लगे।
टकटकी लग रही मूल की शिव की पिण्डी तरफ,
अभी पिण्डी से शिवजी निकल आयेंगे।
ये नयन हैं बड़े भाग्यशाली मेरे,
जग रचियता दर्शन भी कर पायगे।
रात आधी गई भक्तजन सो गये,
चूहा निकला चढ़ावा को खाने लगा।
नहीं शंकर का डर इतना था वो निडर,
और उछल कूद ऊपर मचाने लगा।
यह नजारा लखा मूलशंकर ने जब,
बोला पगले तेरी है कुशलता नहीं।
तीखे त्रिशूल से छेद देंगे तुझे,
उस जटा जूट धारी से डरता नहीं।
जिसे अपने बदन की हो सुध-बुध नहीं
मानो चूहे की कोई खता ही नहीं।
यह अचेतन खड़ी पिण्डी पाषाण की,
पारबती के पति का पता ही नहीं।
खुल गये ज्ञान चक्षु ये शंकर नहीं,
इस जग का रचियता कोई और है।
सच्चे शंकर की भक्ति करूँगा सदा,
वह प्रभु न्यायकर्त्ता कोई और है।

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग दिल्ली सभा

✲ ज्योतिष्मान् ✲

पुष्प सदृश विहँसे धरती का मानव सारा
सदा बिखेरे कण-कण में इस महिमामण्डल के
सुगन्ध - सुवास।
करे धरा पर नाम अमर निज सत्कर्मों से
अपने पावन बने मनुज सब मानवता का
रक्षक प्रहरी।
निकले सूर्य नवल आशा का अभिलाषा का
स्वर्णिम सुन्दर प्राची से आलोकित हो भू का कन-कन
ज्योतिष्मान्॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुफाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

महर्षि दयानन्द का सार्वभौमिकता सूत्र

—भगवानदेव चैतन्य, एम० ए० साहित्यालंकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपने उद्‌गार महान् क्रांतिकारी तथा योगी श्री अरविन्द घोष जी ने इस प्रकार से प्रकट किए हैं कि यदि हम सभी समाजसुधारकों को यदि पर्वतों की चोटियां मान लें तो महर्षि दयानन्द जी को सबसे ऊंची चोटी मानना पड़ेगा। वास्तव में यह उपमा देव दयानन्द पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। इतिहास में जितने भी महान् सुधारक हुए उन्होंने कहीं न कहीं अपनी ऐषणा के वशीभूत होकर कार्य किए हैं मगर दयानन्द जी के जीवन में हमें एक भी प्रसग ऐसा नहीं मिलता है जिससे यह आभास हो कि उन्होंने अपने बड़प्पन और किसी अन्य ऐषणा की पूर्ति के लिए कार्य किया हो। इसी प्रकार बाहर बाहर से भले ही कुछ भी लगे मगर अधिकतर महापुरुषों ने किसी जाति या सम्प्रदाय विशेष के लिए ही कार्य किया है मगर दयानन्द जी ने मनुष्यमात्र की भलाई के लिए ही अपना समूचा जीवन लगा दिया। चाहे वह राष्ट्र की बात हो, समाज की बात हो या आध्यात्मिकता की बात हो दयानन्द ने कहीं भी अपने आप को बीच में नहीं रखा है अर्थात् उन्होने जिस ढग से भी कार्य किया उसमें यह कहीं नहीं आता है कि आप दयानन्द का नाम जपो या उसके दिए हुए गुरुमन्त्र का ही जाप करो आदि आदि।

उन्होंने समूची समस्याओं के समाधान के लिए जिस ग्रन्थ को चुना वह किसी जाति या सम्प्रदाय विशेष का है ही नहीं। उन्होने वेद को इसी आधार पर चुना कि वह स्वय परम पिता परमेश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है। वेद में कहीं भी किसी जाति या मजहब का नाम नहीं है। वेद सार्वभौमिक हैं और वेदों की शिक्षाएं भी सार्वभौमिक हैं, वेदों को आधार मानकर दयानन्द जी ने भी सार्वभौमिकता का ही सन्देश दिया। दयानन्द की यह सार्वभौमिकता ही उन्हें अन्य सभी महापुरुषों और समाज सुधारकों से अलग खड़ा करती है। आज राष्ट्र का ढाचा कुछ ऐसा बनता जा रहा है कि सम्प्रदाय विशेष के तुष्टीकरण की नीतियों में समूची मानवता खण्ड खण्ड हो रही है। इसी के कारण क्षेत्रवाद और अलगाव के कीड़े पनप रहे हैं। हमारा राष्ट्र ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में ही ऐसी भावनाएं अपना सिर उठा रही हैं। इससे व्यक्तिवाद और सकुचितता का वातावरण बनता जा रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम् के स्वप्न बिखरने की कगार पर हैं। दयानन्द ने जिस सार्वभौमिकता का मार्ग प्रशस्त किया था वही आज हमें इस विनाशकारी वातावरण से मुक्ति दिला सकती है।

हम अपने ही देश को ले पता नहीं प्रतिदिन कितने ही नए मत और मजहब पनपते जा रहे हैं। नित नए गुरु बन रहे हैं जिन्होंने व्यक्ति की स्वतन्त्र विचारधारा को कुण्ठित कर दिया है। दयानन्द ने हमें विचारों की स्वतन्त्रता दी थी मगर उस विचारधारा पर स्वयं परमात्मा की विचारधारा का अकुश भी लगा दिया था। इसी आधार पर उन्होंने इस सिद्धांत की स्थापना की—व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र मगर उसका फल भोगने में परतन्त्र है। इस सिद्धांत को यदि हम गहराई से देखें तो हमें धर्म के सही स्वरूप का पता भी लग सकता है। महर्षि की दृष्टि से धर्म मात्र कुछ ग्रन्थों को रट भर लेना नहीं था बल्कि वे व्यक्ति की क्रियात्मकता पर अधिक बल देते थे अर्थात् हम यदि धर्म के तत्वों को अपने जीवन के रग ढग में उतार कर तद्वत् आचरण करते हैं तभी हम सच्चे धार्मिक कहला सकते हैं और फिर हमें फल की चिन्ता से घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही किसी बाहरी कर्मकांड या ढोंग के करने की ही जरूरत है। उन्होंने व्यक्ति के आचार व्यवहार और कथनी व करनी की समता पर भी बल दिया है। उनकी दृष्टि में जिस प्रकार सत्य केवल एक ही हो सकता है।

उसी प्रकार व्यक्ति का दोहरा व्यक्तित्व नहीं होना चाहिए। आज दुर्भाग्य यही है कि व्यक्ति धार्मिक बनने के स्थान पर धार्मिक दीखना अधिक पसन्द करता है। इसी दोहरी प्रवृति के कारण आज धर्म भी अपना वास्तविक स्वरूप खो चुका है। महर्षि की नीति थी—व्यक्ति का चरित्र निर्माण। इसी लिए उन्होंने वेदों के आधार पर व्यक्ति को अपने चरित्र का उतरोतर विकास करने की प्रेरणा दी है। उन्होंने हिन्दू, सिख, मुसलमान या ईसाई बनने के स्थान पर मानव बनने पर अधिक बल दिया। हम ईमानदारी से सोचें तो आज सभी व्यक्ति यदि मानव बन जायें तो देश या विदेश में जितना भी अनाचार और दुराचार तथा मानवता का जो लहू बह रहा है वह रुक सकता है मगर ऐसे में लोगों की अपनी अपनी चौधराहट को अन्तर पड़ता है। ये तथाकथित धर्म के ठेकेदार ही अन्ततः मानव मानव में दीवार बने रहते हैं। महर्षि दयानन्द ने इस ठेकेदारी के विरुद्ध बहुत ही सार्थक कदम उठाए हैं। बल्कि देखें तो उनका समूचा प्रयास यही रहा है कि ईश्वर और भक्त में से दलालों का पूरी तरह से सफाया कर दिया जाए। इसी प्रयास के फलस्वरूप उन्होंने एक धर्म और एक ईश्वर की बात हमारे समक्ष रखी थी।

मजहब और सम्प्रदाय की दीवारों का उन्होंने अपने समय में गिराने की कोशिश की थी और एक ऐसे सार्वभौमिक धर्म की छाया तले सभी को इकट्ठा करना चाहा था जो मानवता को एक सूत्र में पिरो सके। मगर सभी सम्प्रदायों के लोग उनकी सद्‌भावना को नहीं समझ सके और सर्वधर्म सम्मेलन का उनका यह सपना साकार नहीं हो सका था। उनका एक ही तर्क था कि प्रत्येक मत में जो जो बातें वेद विरुद्ध, मानवता विरुद्ध और सार्वभौमिकता के विपरीत हैं उन्हें छोड दिया जाए शेष जो भी बचेगा वही धर्म का उत्कृष्टतम रूप है। इस प्रकार से धर्म पर छाए सभी प्रकार के ढोंग और पाखण्ड ध्वस्त हो जाने थे तथा मानव मात्र के कल्याण की एक ऐसी परम्परा का शुभारम्भ होना था, जिस से अपने आप धर्म, गुरु और ईश्वर की समस्त दुकानें बन्द हो जानी थी। दुकानें बन्द हो जाने के डर से ही तथाकथित धर्माचार्यों ने दयानन्द की इस बात को महत्व नहीं दिया और एक बहुत बड़ा स्वप्न साकार होते-होते रह गया मगर महर्षि दयानन्द जी का वह सपना कभी न कभी अवश्य ही साकार होगा और मैं तो यह समझता हूं कि उसके साकार हुए बिना रोती बिलखती हुई मानवता कभी भी चैन की सांस नहीं ले सकेगी।

आज समाज के समस्त बुद्धिजीवियों और राजनेताओं को उस मनीषी की विचारधारा को गहराई से समझना चाहिए और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए सबसे अधिक प्रयास किए जाने चाहियें। आमतौर पर ऊपर ऊपर से देखकर ही लोग दयानन्द की विचारधारा को देखकर नकार देते हैं मगर यदि गहन चिंतन किया जाए तो मजहब और धर्म या अपनी अपनी अलग अस्मिता की जो लड़ाई आज गलियों और बाजारों में लड़ी जा रही है वह एक ऐसे सौहार्दमय वातावरण में बदल सकता है जहां कोई भी एक दूसरे के खून का प्यासा नहीं होगा। दयानन्द जी ने मानव को किसी दायरे में बांटकर कभी देखा ही नहीं था यही कारण है कि उनके प्रशसकों में सभी मजहबों के खुले दिमागों के लोग हैं मगर जिन्हें मानवता को अलग अलग दायरे में बांटकर ही अपनी रोटियां सेकने का शौक है वे उनके कट्टर विरोधी भी बने। आज पुनः उनकी विचारधारा को गहराई से समझने और अपनाने की आवश्यकता है। अपनी वाह वाही या लोगों की सद्‌भावना प्राप्त करने के लिए उन्होंने कहीं भी कभी समझौता नहीं किया।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

कुरुक्षेत्र में शराबबन्दी सम्मेलन तथा मण्डल का गठन

हरयाणा प्रदेश के धार्मिक तथा ऐतिहासिक नगर कुरुक्षेत्र में ११ फरवरी की रात्रि को कृष्णधाम धर्मशाला में हरयाणा प्रदेश सर्वोदय मंडल (पट्टी कल्याणा पानीपत) के तत्वावधान में शराबबंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री रूपनारायण जी अध्यक्ष अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् नई दिल्ली श्री खुशीराम लोकसेवक रिवाड़ी, श्री महावीर त्यागी संयोजक हरयाणा प्रदेश सर्वोदय मण्डल हरयाणा, महात्मा शीतल जी के अतिरिक्त आर्य महिला नेता पं. प्रभात शोभा विद्यालंकृता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह मुख्यवक्ता के रूप में पधारें।

इस सम्मेलन में कुरुक्षेत्र के निकट के ग्रामों से भारी संख्या में नर-नारी उपस्थित हुए। स्कूल के छात्र तथा छात्राओं ने शराब के विरुद्ध गीत सुनाए तथा नशाबन्दी के कार्यकर्ताओं ने हरयाणा में शराब की बढती हुई खपत तथा पीने की आदत पर चिन्ता प्रकट की। पं० प्रभात शोभा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि शराब के कारण सबसे अधिक कष्ट महिलाओं को झेलने पड़ते हैं। पुरुषों को इसकी चिन्ता नहीं है। अतः शराब रूपी राक्षस को पराजित करने के लिए महिलाओं को आगे आना होगा, सरकार तथा सरकारी कर्मचारी व्यापारियों के सहयोग से जनता को शराब पिलाने में पूरी शक्ति लगा रहे हैं जिससे शराब के नशे में अन्धी होकर जनता अपने अधिकार न मांग सके। आपने कहा कि शीघ्र ही शराब के ठेकों की नीलामी की जावेगी। अतः महिलाओं को शराब की लानत को समाप्त करने के लिए नीलामी के अवसर पर पूरी शक्ति के साथ प्रदर्शन करके शराब के ठेकेदारों को चेतावनी देनी चाहिए कि शराब रूपी जहर को बेचकर धन संग्रह करने वाले जनता का जो विनाश कर रहे हैं, उसके परिणाम हानिकारक होंगे। शराब पिलाकर बुद्धि तथा सम्पत्ति नष्ट करने वाली सरकार जनकल्याणकारी न होकर जनविरोधी बनती जा रही है। जो भाई बहन इस बुराई को समाप्त करना चाहते हैं, उन्हें चुनाव में किसी ऐसे उमीदवार को वोट नहीं देना चाहिए जो स्वयं शराब पीता है और अपने समर्थकों को पिलाता है।

प्रो० शेरसिंह ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि हरयाणा दूध दही का खाने वाला प्रदेश माना जाता था, परन्तु जो भी सरकार बनती है, वही हरयाणा में अधिक से अधिक शराब बेचकर राजस्व कमाना चाहती है। इस बुराई को समाप्त करने के लिए हमारी सभा गत ५, ६ वर्षों से शराबबन्दी अभियान चला रही है। अनेक ग्रामों में धरणा आदि दिलवा कर ठेके बन्द करवाए गए हैं। ग्राम पचायतों को शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने की प्रेरणा दी जाती है। सभा के प्रचारक शराबबन्दी प्रचार कर रहे हैं, परन्तु हरयाणा की वर्तमान सरकार ने शराबबन्दी करने के स्थान पर उलटा पचायतों तथा नगर पालिकाओं को शराब बेचने पर दण्ड देने की बजाए इनाम देना शुरू कर दिया है। भारतवर्ष में सरकार जितनी राशि राष्ट्र की सुरक्षा तथा शिक्षा पर व्यय करती है, उतनी राशि की जनता शराब पी जाती है।

पाकिस्तान, रूस, अमेरिका तथा चीन आदि की सरकार शराब पीने पर पाबन्दी लगा रही है, परन्तु हमारी सरकार शराब पिलाने में वृद्धि कर रही है। हमारे खिलाड़ी शराब पीने के आदि होने के कारण खेलों में हार रहे हैं। यदि हमारे सैनिक शराबी हो गए तो राष्ट्र की रक्षा खतरे में पड़ जावेगी। अतः हमें राष्ट्र की रक्षा के लिए शराब पीने पर पाबन्दी लगानी होगी। आपने नशाबन्दी कार्यकर्ताओं को हरयाणा सभा के साथ मिलकर कार्य करने की अपील की।

जिला कुरुक्षेत्र वेदप्रचार मण्डल का गठन

१२ फरवरी को दोपहर १२बजे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में जिला कुरुक्षेत्र तथा कैथल के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में उपस्थित सभी कार्यकर्त्ताओं ने समाज में फैलती जा रही बुराइयों को दूर करने के लिए वेदप्रचार तथा इसके प्रसार पर बल दिया। सभी के सुझाव सुनने के बाद सर्वसम्मति से जिला कुरुक्षेत्र, कैथल वेदप्रचार मण्डल का गठन किया गया।। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के युवा आचार्य श्री देवव्रत जी शास्त्री को संयोजक तथा श्री बलजीतसिंह आर्य कौल को इसका सहसयोजक मनोनीत किया गया। यह भी निश्चय किया गया कि वेदप्रचार मण्डल का कार्यालय गुरुकुल कुरुक्षेत्र में स्थापित किया जावेगा तथा जिला कुरुक्षेत्र तथा कैथल के हर गांव में वेदप्रचार करने के लिए एक प्रभावशाली भजन मण्डली की शीघ्र ही नियुक्ति की जावेगी। इस मण्डल में दोनों जिलों के आर्यसमाजों की एक बैठक बुलाकर मण्डल के अन्य अधिकारियों तथा सदस्यो को मनोनीत किया जावेगा। चौ० सत्यदेवसिंह जी प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा श्री बाबूराम गुप्त स्वतन्त्रता सेनानी एवं लाला जीवनदास वधवा शाहबाद मारकण्डा, श्री यशपाल आर्य ठोल आदि नेताओं ने वेदप्रचार मण्डल को पूर्ण सहयोग देने का विश्वास दिलाया।

सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री, सभा के पूर्व मन्त्री प्रिंसिपल रणजीत सिंह तथा सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने इस महत्वपूर्ण कार्य में प्रत्येक आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को सगठित होकर वेदप्रचार के लिए अधिक से अधिक समय देने की अपील की।

—केदार सिंह आर्य

कन्या गुरुकुल खानपुर का वार्षिक उत्सव

१०, ११ फरवरी को हरयाणा की सबसे बड़ी कन्याओं की शिक्षण सस्था कन्या गुरुकुल खानपुर का वार्षिक उत्सव बहन सुभाषिणी देवी की देख-रेख में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा की ओर से प० चिरञ्जीलाल तथा स्वामी देवानन्द की भजन मण्डलियों ने भजनोपदेश द्वारा वेदप्रचार किया। गुरुकुल की कन्याओं ने गुरुकुल के संस्थापक भक्त फूलसिंह की जीवनी पर प्रकाश तथा सामाजिक बुराइयां, शराब, मास तथा दहेज आदि का खण्डन किया।

इस अवसर पर सभा के वेद-प्रचाराधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री ने भक्त फूलसिंह जी को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि भक्त जी ने अपना सारा जीवन गुरुकुल शिक्षा तथा समाज सुधार के कार्यों पर बलिदान कर दिया। हमें उन द्वारा छोड़े गए अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए तथा गुरुकुल को एक आदर्श सस्था बनाने के लिए बहन सुभाषिणी जिन्होंने अपने पिता जी के आदेश पर अपना जीवन गुरुकुल की सेवा में लगा रखा है, पूर्ण सहयोग देना चाहिए। आपने आर्यसमाज के ३ सूत्री कार्यक्रम शराब हटाओ, अग्रेजी हटाओ तथा गो रक्षा के कार्य में तन, मन तथा धन से सहयोग देने का अनुरोध किया।

—केदारसिंह आर्य

शराब हटाओ
देश बचाओ।

ऋतुराज स्वामी दयानन्द

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्वयं ही कार्य नहीं किया, अपितु श्री सावरकर मदन लाल धींगरा आदि के रूप में युवकों की परम्परा इस क्षेत्र में प्रारम्भ कर दी। क्रांतिकारियों के पितामह के रूप में उनका एक प्रतिष्ठित स्थान है। इसी प्रकार रामप्रसाद बिस्मिल अनेको क्रांतिकारियों के नाम गिनाए जा सकते हैं, जो आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित हो कर इस क्षेत्र में आए। अब तो इस बारे में काफी साहित्य भी प्रकाशित हो चुका है।

श्री मोहनदास गांधी को दक्षिण अफ्रीका में गुरुकुल कांगड़ी के छात्रों ने मजदूरी करके धन भेजा था। इसी से प्रभावित होकर भारत आने पर गांधी जी सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी में आकर रहे, गुरुकुल के अनुकरण पर ही सेवाग्राम की स्थापना की तथा यहीं पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनको महात्मा की उपाधि से विभूषित किया था। स्वा० श्रद्धानन्द और लाला लाजपतराय आदि स्वाधीनता के कार्य में सदा ही अग्रगण्य रहे। सामूहिक रूप में चलाए गए सत्याग्रहों, असहयोग आंदोलनों में सब से अधिक आर्यबन्धुओं ने भाग लिया। भारतीय कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले सभी इतिहासकारों ने इस बात को स्वीकार किया है। एक बार गुरुकुल कुरुक्षेत्र के वार्षिक समारोह पर श्री मूलचन्द जैन भू०पू० वित्तमन्त्री हरयाणा ने कहा था, जब हम कांग्रेस के कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य करने के लिए कहीं जाते थे, तो हमें आर्यसमाज के बन्धुओं से आवास, भोजन और कार्य में हर प्रकार का सहयोग प्राप्त होता था। उन दिनों के आर्य देशभक्तों के विश्वस्त सहायक होते थे। आज भी हजारों स्वाधीनता संग्रामी हैं, जो आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित होकर इस क्षेत्र में आए थे। भारत की सभी धर्मसंस्थाओं में से आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है। जिसने अपने साप्ताहिक सत्संगों, सभी पर्वों और वार्षिक समारोहों में बड़े उत्साह के साथ 'भारत माता की जय' का घोष किया है तथा आज भी करता है।

केवल स्वाधीनता संग्राम के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु जीवन के अन्य क्षेत्र में भी आर्यसमाज ने इससे भी अधिक कार्य किया है। चाहे वह सामाजिक छुआ-छूत की बात हो या जन्मगत जात-पात की भावना हो। सामाजिक जीवन का इतिहास इस बात का गवाह है कि छुआ-छुत का आर्यों ने डट कर विरोध किया और इस के लिए अनेक प्रकार का विरोध भी सहा। शहीद भक्त फूलसिंह का बलिदान इस बात का जीता-जागता उदाहरण है। अस्पृश्य समझे जाने वाले वर्गों को उभारने के लिए उनमें शिक्षा और संस्कार (सदाचार) का खुल कर प्रचार किया। आर्यसमाज ने अपने सत्संगों और शिक्षा संस्थाओं में इन वर्गों को औरों के समान ही स्थान और अधिकार दिया तथा इस के लिए हर प्रकार का विरोध भी सहा। ऐसे ही सामाजिक क्षेत्रों में जात-पात के आधार पर ऊंच-नीच की भावना को दूर करने के लिए आर्यसमाज ने अत्यधिक कार्य किया। क्योंकि आर्यसमाज का मूल मन्तव्य है कि सारे मनुष्यों की एक ही मानव जाति है। केवल गुण, योग्यता और कार्य के कारण ही किसी का समाज में स्थान होना चाहिए।

आर्यसमाज ने अपनी कार्य व्यवस्था एवं प्रशासन प्रक्रिया के लिए प्रजातन्त्रात्मक पद्धति को अपनाया। भारत की सभी धार्मिक संस्थाओं में से आर्यसमाज ही पहली संस्था है, जिस ने १८७५ से ही प्रजातन्त्र की पद्धति को अपना कर अपने हर सदस्य को प्रजातन्त्र के मूलभूत सिद्धांत, सुरक्षा, स्वतन्त्रता और न्याय का समान अधिकार दिया। केवल अपने यहां प्रजातन्त्र पद्धति का प्रचलन ही नहीं किया, अपितु सभी को प्रशिक्षण भी दिया।

यह सर्वसम्मत बात है कि भारत एक प्राचीन और विशाल देश है। यहां प्रारम्भ से ही विद्या का विकास प्रत्येक प्रकार से फूलता-फलता रहा है। इसीलिए भारतीय साहित्य भी प्राचीन और विशाल है। मानव जीवन से सम्बद्ध कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसका यहां सामान्य वर्णन ही नहीं अपितु उस पर अनेकों ग्रन्थ भी मिलते हैं। यहां तक कि अर्थशास्त्र, वस्तु शास्त्र, कामशास्त्र और चौर्यशास्त्र भी मिलते हैं। इस सारे भारतीय साहित्य के अनुशीलन से स्पष्ट होता है, कि धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु शैक्षणिक, सामाजिक क्षेत्रों में भी यहां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के आधार पर सारी व्यवस्थायें अलग-अलग चलती थी। यहां तक कि अपराधों के दण्डों का निर्धारण भी वर्णों के आधार पर ही होता था। आज भी इसका प्रभाव कभी-कभार सामने आ जाता है। केवल संस्कृत साहित्य में ही नहीं अपितु आधुनिक भारतीय भाषाओं के पुराने साहित्य में भी इसकी झलक मिल जाती है। तभी तो गुरुवाणी में आता है—ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सब वास्ते उपदेश' इस सब के होने पर भी भारतीय संविधान में सभी के लिए एक समान व्यवस्था का प्रावधान है। हां कुछ विशेष वर्गों की सन्तुष्टिकरण के लिए इसके अपवाद भी मिलते हैं।

भारतीय इतिहास का मध्यकाल बाह्य आक्रमणों से भरा हुआ है। आए दिन की लूटपाट के कारण सारी सामाजिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त थी। जिसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव महिला वर्ग पर पड़ा। असुरक्षा के कारण घरों में बन्द होकर रह जाने से महिलाओं के शि[illegible] प्राप्ति और विकास के अन्य मार्ग भी बन्द हो कर रह गए। उत्तरवर्ती साहित्य में नारी शिक्षा के दो चार उदाहरण ही प्राप्त होते हैं, हां उनकी शिक्षा पर प्रतिबन्ध सूचक और निन्दा विषयक स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होते हैं। केवल संस्कृत साहित्य के अध्येता होते हुए भी महर्षि दयानन्द ने मानव समाज में महिला वर्ग के सहयोग और स्थान को अनुभव करके महिलाओं के प्रति सम्मान भावना, समान अधिकार और शिक्षा प्राप्ति की स्पष्ट बात की। महर्षि के अनुयायियों ने अपने गुरु की आज्ञा को कार्यान्वित करते हुए स्थान-स्थान पर महिला विद्यालय, महाविद्यालय और गुरुकुल जहा चलाए वहां सतीप्रथा, अनमेल विवाह का भरपूर विरोध किया। और इसके साथ विधवा विवाह का रचनात्मक कार्य भी किया। इन सभी सुधारों और कार्यों के कारण भी भारतीय संविधान के निर्माताओं ने भारतीय नारियों को समान अधिकार अवसर, सम्मान, शिक्षा और प्रगति का हर अवसर प्रदान किया।

भारत प्राचीन और विशाल होने से बहुभाषा भाषी देश है। निःसन्देह यहां प्राचीनकाल में संस्कृत भाषा व्यवहारिक भाषा थी, वह न केवल विद्वानों के लेखन का माध्यम थी, अपितु राजकार्य का भी माध्यम थी। समय के साथ भारत में प्राकृत, पाली, अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय भाषाएं हिन्दी, तमिल, तेलगू, कन्नड, गुजराती, पंजाबी आदि प्रकाश में आई। व्रज और अवधी भाषा ही सेना संगठन और यातायात, संचार आदि कार्यों के कारण १८वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में आधुनिक हिन्दी के रूप में परिवर्तित हुई। महर्षि की प्रादेशिक भाषा गुजराती थी और उनकी सारी शिक्षा संस्कृत भाषा में हुई थी और प्रारम्भ में महर्षि संस्कृत भाषा में ही भाषण और लेखन कार्य करते थे। प्रचार करते हुए महर्षि जब अनेक नगरों में गए, तो देश की एकता और जनता की सुविधा की दृष्टि से महर्षि ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया। महर्षि की भावना के अनुसार आर्यसमाज ने भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया, जिससे सारे देश की एक राष्ट्रभाषा होने से परस्पर जनता में एकता की भावना सुदृढ़ हो। एतदर्थ हिन्दी के विकास में भरपूर सहयोग दिया। अपने स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई की व्यवस्था की तथा इसके लिए हर प्रकार की पुस्तकें लिख कर और पत्रिकाएं प्रकाशित कर के खूब कार्य किया। तभी तो भारत में जहां-जहां आर्यसमाज फैला वहां-वहां राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा उसके साथ राष्ट्रीय भावना और एकता का अत्यधिक विकास हुआ। इस प्रकार हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए आर्यसमाज ने हर प्रकार स[illegible] पूरा प्रयास किया।

अगले पृष्ठ पर जारी......

इसी प्रकार आर्यसमाज ने वेदप्रचार, भारतीय संस्कृति के प्रसार, विधवा अनाथ के परित्राण, संस्कृत भाषा के विकास और गोरक्षा आदि अनेक क्षेत्रों में सराहनीय कार्य किया। आर्यसमाज द्वारा किए गए इन सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक कार्यों को सामने रख कर ही भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी ने कहा था— स्वामी दयानन्द की सब से बड़ी विशेषता उनकी दूरदर्शिता थी। यह देख कर आश्चर्य होता है कि विदेशी शासन के विरोध में सक्रिय संघर्ष के समय जिन बातों पर महात्मा गांधी ने अधिक बल दिया और उन्हें रचनात्मक कार्य की संज्ञा दी। प्राय: वे सभी काम स्वामी दयानन्द के कार्यक्रम में ५० वर्ष पूर्व शामिल थे।

देशभर के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता स्वामी दयानन्द ने महसूस की और हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा अथवा आर्य भाषा होने योग्य माना।

इसके अतिरिक्त अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा, हाथ के बने कपड़े अथवा स्वदेशी का प्रयोग इत्यादि बातों पर भी उन्होंने काफी बल दिया और वे स्वयं भी जीवनभर इन बातों पर पूरा अमल करते रहे।

उनकी कृतियों और उपदेशों से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है, कि वे विचारों से राष्ट्रवादी थे और विदेशी शासन के स्थान पर स्वराज्य अथवा भारतीयों के ही राज्य का स्वप्न देखते थे।

समाज सेवा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज ने जो कार्य किया, उसके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। उस कार्य के लिए और देश को जो उससे लाभ हुआ, इसके लिए हम सब स्वामी दयानन्द के ऋणी हैं।

इसी तरह भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा था—

'स्वामी दयानन्द भारतीय संस्कृति, स्वतन्त्रता और क्रांति के अग्रदूत थे। वे बड़े दृढ़ व्यक्ति थे। उन जैसा क्रान्तिकारी नेता होना विरले ही लोगों का काम होता है। उन्होंने ऐसे समय में देश का नेतृत्व किया जिस समय बुराइयों की ओर संकेत करना भी कठिन काम था। हमें श्रद्धापूर्वक उनका स्मरण करना चाहिए। स्वामी जी ने देश में धार्मिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में जो कार्य किया, वह अभूतपूर्व है। उन्होंने जो काम पकड़ा उसे पूरी तरह निभाया।'

इस दृष्टि से महर्षि दयानन्द के कार्य का महत्व स्वीकार करते हुए स्वयं महात्मा गांधी ने स्वीकार किया है कि—

'मुझे (गांधी) से पहले भारत में आकर स्वामी दयानन्द स्वदेशी आंदोलन, अछूतोद्धार, समाज सुधार आदि क्षेत्रों से मैदान साफ न कर देते तो मुझे इतनी शीघ्रता से सफलता मिलना कठिन था।'

अत: इस विवेचन से स्पष्ट होता कि महर्षि दयानन्द ऋतुराज बसन्त थे।

शुद्धि समाचार

स्वामी सेवानन्द जी महामंत्री शुद्धिसभा हरयाणा के प्रयत्न से आर्यसमाज सीतापुर जिला सरगजा मध्यप्रदेश में दिनांक ५ जनवरी को आदिवासी भाइयों के १७७ सदस्यों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया गया गया। इससे पूर्व भी ३१ दिसम्बर १९८९ को २६४ सदस्यों को हवन यज्ञ के अवसर पर वैदिक धर्म में सम्मिलित किया गया था और उन में वस्त्रादि वितरित किए गए गए थे। इसी प्रकार ५ जनवरी को ग्राम मजजगा सीतापुर में ६६६ आदिवासियों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी और यज्ञ पर उनसे भविष्य में मांस तथा शराब आदि सेवन न करने की प्रतिज्ञा करवाई।

● मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी

शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से आवश्यक निवेदन

शराब के ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन करें

शराब एक जहर है, जो इसका सेवन करेगा, उसे शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक हानि होगी। शराबी मस्त नशे में बेहोश होकर बहन बेटियों की इज्जत के लिए खत[illegible] बनेगा। शराबी के बच्चे बिगड़ सकते हैं। अत: इस बुराई [illegible] समाप्त करने के लिए हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए।

हरयाणा सरकार ने शिवरात्रि के पवित्र पर्व २३ फरव[illegible] से ९ मार्च तक प्रत्येक जिला केन्द्र आबकारी कराधान के काय[illegible]लयोंपर शराबके ठेकों की नीलामी का कार्यक्रम बनाया है। [illegible] प्रकार सरकार तथा व्यापारी हरयाणा की जनता को ज[illegible] पिलाने के ठेके लेकर धन से मालामाल होने का प्रयास करें[illegible] उनकी बला से जनता जाये भाड़ में। उन्हें तो केवल शराब क[illegible] बिक्री करके धन कमाना है। इसी में वे जनता का कल्याण मानते हैं। पाकिस्तान, रूस, चीन तथा यूरोपियन देशों में शरा[illegible] पीने पर पाबन्दी लगाने की योजना बना रही है।

जहां दूध दही का खाणा प्रसिद्ध था परन्तु वहां हरयाण[illegible] जैसे प्रदेश में शराब की नदियां बहाने का षड्यन्त्र रचा जा रह[illegible] है। सारे संसार में हरयाणा ऐसा प्रदेश है जहां पर नगर पालि[illegible]काओं तथा ग्राम पंचायतों को इस बात पर इनाम दिया जात[illegible] है कि वे अधिक से अधिक संख्या में शराब की बिक्री करके इनाम प्राप्त करें।

अत: शराबबन्दी कार्यकर्ताओं से हमारी अपील है कि वे अपने-अपने जिलों में शराब की नीलामी वाले दिन आबकारी कराधान के कार्यालयों पर प्रदर्शन करें तथा शराब विरोधी नारे लगाकर सरकार व ठेकेदारों को जनकल्याण विरोधी काय[illegible] से सावधान करें।

निवेदक :

प्रो शेरसिंह, प्रधान — वेदव्रत शास्त्री, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

ऋषि दयानन्द थे सन्त निराले

कर्म प्रधान जगत् में, स्वामी दयानन्द जी ने था माना।
सत्य, असत्य, उचित, अनुचित को, उस योगी ने था पहचाना॥

अनूप शहर में, एक दिवस यों, कहने लगा उमेदा नाई।
स्वामी जी महाराज आपने, मिटती आर्य जाति बचाई।
भोजन करो आज मेरे घर, दया करो मुझ पर तपधारी।
"स्वामी जी बोले जा, ले आ चिंता क्यों करता है भारी।

भोजन तभी उमेदा लाया, नहीं ध्यान रहा ठिकाना।
सत्य, असत्य, उचित, अनुचित को, उस योगी ने था पहचाना।१।

स्वामी जी ने पहला ही था ग्रास हाथ में तभी उठाया।
ठहरो हे स्वामी जी ठहरो, शब्द कान में उनके आया।
"ये तो नाई की रोटी है, एक ब्राह्मण ने फरमाया।"
"स्वामी जी बोले ये गेहूं, की रोटी है क्यों घबराया।"

लज्जित होकर ब्राह्मण बोला, 'अजब आपका है समझाना।'
सत्य-असत्य, उचित-अनुचित को, उस योगी ने था पहचाना।२।

अनूप शहर में एक दिवस, उनसे आकर एक धुनिया बोला।
पाप-पुण्य ऋषिराज आपने, तो है ज्ञान तुला पर तोला।
जीवन बने सार्थक मेरा, मुझको वैदिक ज्ञान दीजिए।
'मैं हूं निर्धन, धुनिया भगवन मेरा भी कल्याण कीजिए।'

जग से जाते समय पड़ेगा, हे ऋषिवर, मुझको पछताना।
सत्य-असत्य, उचित-अनुचित को, उस योगी ने था पहचाना।३।

स्वामी जी बोले तू सुन ले, बात हमारी ध्यान लगाकर।
'लौटा उतनी रूई उसे तू, जितनी जो देता है लाकर।'
सन्तोषी बन सुख पाएगा, जन्म सफल ये हो जाएगा।
'वैदिक पथ अपना ले भाई', ये जग तेरा यश गाएगा।

'जैसी करनी, वैसी भरनी' सृष्टि का है नियम पुराना।
सत्य-असत्य, उचित-अनुचित को, उस योगी ने था पहचाना।४।

भारत मां के तपः पूत ऋषि दयानन्द थे सन्त निराले।
हो जाए कल्याण जगत् का, यदि उनकी शिक्षा अपनाले।
वीर, साहसी, महा तपस्वी, वे थे देश भगत मतवाले।
वेदामृत पिलाया जग को, स्वयं पिए थे विष के प्याले।

कर्म प्रधान जगत् में केवल 'लक्ष्य था उनका वेद पढ़ाना।'
सत्य-असत्य, उचित-अनुचित को, उस योगी ने था पहचाना।५।

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री
ग्राम पो० बहीन जिला फरीदाबाद (हरि०)

आज का नौजवान

गल का जनेऊ सर की चोटी साफ है नौजवान की।
ये शकल नौजवान की॥
धर्म कर्म को तो ये व्यर्थ की बात बताता है।
खाना पीना ऐश उड़ाना ये जीवन बतलाता है।
मद्य-मांस उड़ाना आदत बीड़ी सिगरेट पान की।१।
सन्ध्या का इसे वक्त मिले ना पर नावल से फुरसत ना।
ताश खेले सारा दिन गन्दे गीतों से फुरसत ना।
वेद का प्रचार सुने ना तैयारी सिनेमा स्वांग की।२।
मण बोझ जुल्फों का सिर पे इसने कुरड़ी बनाई है।
गर्दन हिलाके चले मिटा दी शान खानदान की।३।
मात पिता की सेवा छोड़ लव मैरिज करवाता है।
विषयों के वश हो करके वृथा जन्म गवाता है।
'बलवन्त' आर्यों के गान को ना कभी पहचान की।४।

—बलवन्तसिंह आर्य गांव ठसका जि० अम्बाला

इसी शिव रात्रि आई

रचियता—रामचन्द्र आर्य 'नलवा'

इसी शिव रात्रि आई।
इसे दिन ते शिक्षा पाके ऋषि दयानन्द ने जोत जलाई॥टेक॥

वेद धर्म को भूल सारे मूर्ति पूजा करया करते।
अंधविश्वासी बन के नै वो पाखण्ड में मरया करते।
भूखे को अन्न नहीं पर पत्थर आगे धरया करते।

उसी माहौल में आके दयानन्द ने ये मान लिया।
श्रद्धा ते जागरण कर ईश पत्थर को जान लिया।
पिता की मान बालक मूलशकर नै ध्यान किया।

फेर चूहे नै शिक्षा लाई।
मूर्ति ऊपर बैठ के नै चट कर गया सारी मिठाई॥१॥
के करेगा रक्षा म्हारी खुद ही मोहताज से।
छोटे से चूहे का भाई इसके ऊपर राज से।
मस्ती ते खेल कूदे मौज का बड़ा काज से।

मूलशकर नै शिक्षा मिलगी घर को त्याग दिया।
भगवान् नहीं पत्थर से उसने ये ही जान लिया।
ढूंढूंगा सच्चे ईश्वर नै मन में ठान लिया।
घर त्याग दिया भाई।
जा पूर्णानन्द तैं दीक्षा लेके विरजानन्द तैं शिक्षा पाई॥२॥

गुरु विरजानन्द महान् सही ज्ञान बताया था।
सत्य सनातन धर्म ए वेद को ही पाया था।
निराकार ईश्वर एक ओम नाम बताया था।

मूर्ति पूजा फिजूल सब ईश्वर तो निराकार से।
जन्म मरण में आता कोन्या कैसे कह साकार से।
पाप धर्म का लेखा सब ईश ही आधार से।

यूं ईश्वर गाथा गाई।
ब्रह्मर्षि ते शिक्षा पाके वेद की जोत जलाई॥३॥
मूलशकर तैं दयानन्द बन धर्म को पहचान लिया।
विश्व का कल्याण हो यूं वेदों का ज्ञान दिया।
जाति प्रथा खत्म करके कर्म को ही जान लिया।

स्त्री शिक्षा जरूरी से इतिहास गाथा गावै से।
सती सीता, सावित्री का इतिहास बतावै से।
प्रथम गुरु माता होती लिखया वेद में पावै से।
दूजे पिता श्री की बात बताई।
गुरु तीजे स्वयं शिक्षा देते जिनकी वेद करे बड़ाई॥४॥

शिव से कल्याण कर्ता ईश्वर का ही नाम है।
मानलो वे निराकार ये वेदों का पैगाम है।
रामचन्द्र आर्य का नलवा खास मुकाम है।

दयानन्द के बनो अनुयायी सुख पाओगे।
पाखण्ड में पड़के नै घणा दुःख ठाओगे।
पर्ण करो आज ते आर्य ही कहलाओगे।

या वेद की बात सुनाई।
सत्य सनातन धर्म एक तुम बनो इस के अनुयायी॥५॥

प्रेषक का पता—
नकास शिक्षा समिति रजिस्टर्ड, बड़वा (भिवानी)

मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

ऋतुराज ऋषि दयानन्द

—प्रा० भद्रसेन, वेद दर्शनाचार्य, होशियारपुर

केवल साहित्य में ही हम वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरत्, शिशिर, हेमन्त ऋतुओं की चर्चा नहीं पढ़ते, अपितु हमारे चारों ओर भी एक के बाद एक ऋतु अपने-अपने समय पर आती है। सर्दी, गर्मी और वर्षा को तो कोई कभी भी भुला नहीं सकता। जब कोई ऋतु आती है तो उसका प्रभाव चारों ओर होता है। तब बागों खेतों की शकलें बदल जाती हैं। कभी किसी प्रकार के फूल, फल आते हैं तो कभी दूसरी तरह के। वृक्षों और फसलों पर ही नहीं प्राणियों पर भी ऋतुओं का प्रभाव पड़ता है। इन सभी ऋतुओं में से वसन्त ऋतुराज कहलाता है। केवल साहित्यिकों को ही वसन्त अपनी विविधता के कारण प्यारा नहीं लगता, अपितु प्रकृति प्रेमियों को भी यह अपनी ओर आकर्षित करता है। कोई विरला ही किसी भाषा का कवि होगा, जिसने वसन्त की शोभा पर अपनी लेखनी न चलाई हो। वसन्त की दृष्टि से यह ऋतु जहां सभी को प्रिय है, वहां इसके पुष्पों की बहार, फलों की अधिकता और प्रकृति का मनोरम रूप सभी को स्वतः अपनी ओर आकर्षित करता है। अतः अन्य ऋतुओं से बढ़चढ़ कर ऋतुराज वसन्त अपने प्रभाव से सभी को प्रभावित करता है। तब इस के प्रभाव से प्रभावित जन अपने-अपने ढंग से इसके रंग में रंग कर गुन-गुना उठते हैं।

ऋतुओं की तरह ही महापुरुषों का जीवन होता है। महापुरुष भी अपने जीवन और विचारों से अपने सम्पर्क में आने वालों को सदा ही प्रभावित करते रहे हैं। इस दृष्टि से जब हम आधुनिक भारत के नव जागरण पर एक दृष्टिपात करते हैं, तो आधुनिक भारत के पुरोधाओं में से ऋषि दयानन्द सरस्वती ऋतुराज वसन्त के रूप में प्रतिभासित होते हैं। उन्होंने आधुनिक भारत के नवजागरण के सभी क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। मध्यकालीन भारत के साथ आधुनिक भारत की तुलना करने पर आधुनिक भारत की थोड़े से शब्दों में खूबी बतानी हो तो वह भारतीय संविधान के मूल सिद्धांत हैं। जिन पर स्पष्ट रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती की छाप है।

कुछ वर्ष हुए आर्यसमाज के सम्बन्ध में अनुसन्धान करने के लिए एक आस्ट्रेलियन डा० जानसन भारत आए। इस सम्बन्ध में वे विविध नगरों में गए, इसी भ्रमण में जब वे जालन्धर आए तो सभी के कार्यालयों और आर्यसमाजों के पर्यवलोकन के साथ वे स्थानीय आर्यजनों से भी मिले। श्री वीरेन्द्र जी 'वीर प्रताप' ने बताया कि मुझसे भी वे मिले और काफी देर तक उनसे इस सम्बन्ध में बातचीत हुई। श्री वीरेन्द्र जी ने उनसे पूछा, कि आपने आर्यसमाज के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी प्राप्त की है। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज का भारत पर क्या प्रभाव हुआ है। इस बारे में आपका क्या विचार है? क्योंकि 'घर का जोगी जोग ना' अन्य गांव का सिद्ध, के अनुसार कई बार समीपवर्तियों की अपेक्षा दूरवर्ती किसी चीज को अधिक अच्छी तरह से समझते हैं। तब उन्होंने अपने उत्तर में बताया कि मेरी दृष्टि में भारतीय संविधान के जो जो मूलभूत सिद्धांत हैं और उनके आधार पर नारी शिक्षा, उसका समान अधिकार, सामाजिक क्षेत्र में छुआ-छूत की प्रचलित भावना के निवारण, जन्मना जात-पात के आधार पर ऊंच-नीच भावना का अपसारण और हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में स्वीकृति आदि इसके जीते जागते उदाहरण हैं, कि ये सारी बातें महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के कार्य के कारण ही आधुनिक भारत में प्रचारित और मान्य हुई हैं। आइए इस निष्कर्ष के लिए भारतीय इतिहास के कुछ पृष्ठों को पलटें।

आधुनिक भारत का नव-जागरण १५ अगस्त १९४७ को हुआ, जब भारत स्वाधीन हुआ। पर भारत में नवजागरण की प्रभात तभी प्रारम्भ हो गई थी, जब मुसलिम शासकों की पराधीनता के पश्चात् भारत पुनः अंग्रेजों के पराधीन हुआ। इस दूसरी पराधीनता से सारा भारत एक साथ छट-पटा उठा। जिससे भारत में प्रथम स्वाधीनता संग्राम १८५७ की हलचल शुरू हो गई। उन्हीं दिनों विद्या और विज्ञान के विशेष विकास के कारण भारत में भी यातायात एवं संचार के विविध कार्यक्रम सामने आए। संयोग से इन्हीं दिनों ही १८२४ में महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव की कहानी प्रारम्भ होती है।

महर्षि के जीवन से परिचित पाठक अच्छी प्रकार से जानते हैं कि १८४५ तक मूलशंकर ने संस्कृत भाषा की शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए मूल ने जब माता-पिता को कहा, तो उन्होंने मूल की बदली स्थिति को देख कर विवाह के बन्धन में बांधना चाहा। तब एक दिन मूल अपनी सच्चे शिव दर्शन और अमरता की चाहना की पूर्ति के लिए योग सिखाने वाले गुरु की खोज में चुपचाप घर से निकल पड़े। लगातार चौदह वर्ष मैदानों, पहाड़ों और जंगलों की खाक छानते रहे। जहां भी योग सिखाने वाले गुरु, साधु, योगी का पता चला वहीं मूल से शुद्ध चैतन्य और फिर दयानन्द बन कर पहुंचे। योग और शास्त्र के नाम पर जो कुछ सिखाया और पढ़ाया गया, उसे एक विनीत शिष्य की तरह ग्रहण किया। अन्त में मथुरा में ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी कुटिया पर पहुंचे। वहां नियमित रूप से ढाई-तीन वर्ष तक अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अध्ययन किया।

इस लम्बे समय तक घूमते और पढ़ते हुए स्वामी दयानन्द ने खुली आंखों से भारत के भी दर्शन किये। अपने जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए एक दिन गुरुचरणों में प्रणाम कर विदा मांगी। पर प्रज्ञा चक्षु ने स्वामी दयानन्द के जीवन का कांटा ही बदल दिया और आर्ष ज्ञान की ज्योति जगाने का सन्देश दिया। गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करके स्वामी दयानन्द अनेक वर्ष तक भारत के अनेक नगरों में गए। 1875 में भारत का महानगरी बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। जिससे आर्ष ज्ञान की ज्योति आगे से आगे जगमगाती रहे। इसकी सिद्धि के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने घूम-घूम कर वेद प्रचार की अलख जगाई और वेदभाष्य सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि आदि छोटे बड़े बीस के लगभग ग्रन्थों की रचना भी की।

महर्षि की प्रेरणा से आर्यसमाज कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुआ। भारतीय साहित्य, संस्कृति, धर्म के प्रचार के साथ सामाजिक सुधार, शिक्षा प्रसार और स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के कार्य से आधुनिक भारत में नव जागरण की लहर आई, जिसका भारतीय समाज और जीवन के सभी पहलुओं पर अमिट प्रभाव हुआ। उन दिनों आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित व्यक्ति ही सभी क्षेत्रों में अग्रणी बने उन दिनों के अग्रगण्यों के जीवन चरित इसके जीते जागते प्रमाण हैं।

जब महर्षि कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुए उन दिनों भारत अंग्रेजों के पराधीन था। 1857 की असफलता और इस विद्रोह के बदले में किए गए अत्याचारों के कारण भारतीय जनमानस केवल भयभीत ही नहीं उदास और हताश भी था। महर्षि ने अपनी वाणी और लेखनी के माध्यम से भारत के प्राचीन गौरव की भावना जहां भारतीयों में जगाई वहां देश प्रेम तथा स्वाधीनता की भावना भी भरी। हर प्रकार से भारतीयों में आत्मविश्वास और सम्मान की भावना जगाई। जिसके उदाहरण सत्यार्थ प्रकाश आदि में यत्र-तत्र-सर्वत्र प्राप्त होते हैं। इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर आर्य-बन्धुओं ने स्वाधीनता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। महर्षि के पट्टशिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा विशेष अध्ययन के लिए जब विदेश गए, तो उनको महर्षि ने स्वधर्म और स्वराज्य की भावना को साथ रखने की प्रेरणा दी थी। अन्त में श्याम जी वहीं बस गए और भारत की स्वाधीनता के लिए केवल उन्होंने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी दयानन्द के जीवन की कुछ घटनाएं

—डॉ० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम०ए०,एल०टी० आर्यसमाज गोरखपुर

(१)

अपने काशी-वास में स्वामी जी ने अन्य साम्प्रदायों की आलोचना के साथ ही साथ मुसलमान मत की भी आलोचना की। इससे वहां के मुसलमान बहुत रुष्ट हो गए। एक दिन सांयकाल स्वामी जी गंगा तट पर समाधि में निमग्न बैठे थे कि एक मुसलमानों की टोली वहां आ निकली। उस टोली के कुछ मनुष्यों ने उन्हें पहचान लिया और आवेश में आकर आगे बढ़े और स्वामी जी महाराज को गंगा में डुबो देने की ठानी दोनों हाथों से स्वामी जी की दोनों भुजाएं कन्धों के पास से दृढ़तापूर्वक पकड़ ली। वे झुलाकर स्वामी जी को गंगा-धार में फेंकना ही चाहते थे कि उन्होंने अपनी दोनों भुजाएं सिकोड कर अपने शरीर के साथ लगा ली और बलपूर्वक उछलकर दोनों मनुष्यों सहित गंगा में कूद पड़े। परन्तु दया के आनन्द दयानन्द ने दयापूर्वक उन्हें छोड दिया।

वे दोनों मनुष्य तब भी अपनी घातक-वृत्ति से बाज नहीं आए। पानी से बाहर निकल कर अपने साथियों सहित हाथों मे ईंट, पत्थर लिए बड़ी देर तक गंगातट पर खड़े रहे कि बाबा अपना सिर बाहर निकालें और वे उसे मारें। स्वामी जी इस घातक-वृत्ति को ताड गए थे, इसलिए वे अपने प्राणों को रोके हुए नदी तल पर हो पद्मासन लगाए हुए बैठे रहे। अन्धेरा होने पर वह टोली यह समझकर कि बाबा डूब चुका है, वहां से चल दी और स्वामी जी जल से बाहर निकले और अपने आवास पर लौट आए।

(२)

काशी में एक दिन स्वामी जी घूमने जा रहे थे। एक हट्टा-कट्टा, महामल्लमान बलिष्ठ गुण्डा उनके पीछे हो लिया। उसके हाथ में एक मोटा लठ भी था। स्वामी जी ने पीछे फिरकर देखा तो उन्हें वह लठैत घातक स्वभाव का जान पड़ा। स्वामी जी वहीं ठहर गए और उसकी ओर हुंकार-नाद इतनी जोर से गुंजाया कि वह गुण्डा अत्यन्त भयभीत होकर चीत्कार करता हुआ, उल्टे पांव भाग निकला।

(३)

एक दिन स्वामी जी कर्णवास ठहरे हुए थे। बरौली के राव कर्णसिंह भी गंगा स्नान के लिए आए हुए थे। यहां राव की ससुराल थी। कट्टर वैष्णव थे और रंगाचार्य जी के चेले थे। वे स्वामी जी की कुटिया के पास ठहरे हुए थे। कर्णसिंह की प्रवृत्ति उग्र थी। उसने अपने उतारे पर रासलीला का आयोजन किया उसमें स्वामी जी को भी आमन्त्रित किया। पर स्वामी ने रासलीलाओं को एक निन्दनीय कर्म बतलाते हुए उसमें आने में असमर्थता प्रकट की। इधर उन्हीं दिनों स्वामी जी वैष्णव सम्प्रदाय का खण्डन भी बहुत कर रहे थे। राव के बैठकबाजों ने वैष्णव आलोचना को खूब बढ़ा-चढ़ा कर स्वामी जी के विरुद्ध कर्णसिंह को भड़काया। फिर क्या था, अगले दिन सायंकाल राव साहब चमचमाती तलवार बांधे तलवारों से लैस १०-१२ साथियों के साथ स्वामी जी के स्थान पर आ पहुंचे। पहुंचते ही राव तथा वैष्णव मत विषयक होने लगे। परन्तु कर्णसिंह क्रोध में बेतुकी बातें कहने लगा और स्वामी जी को धमकाने लगा।

स्वामी जी ने धमकी के उत्तर में चक्रांकित सम्प्रदाय का खण्डन किया और कहा "राव जी यदि शास्त्रार्थ करना अभिष्ट है तो कृपया वृन्दावन से अपने गुरु रंगाचार्य जी को बुला लाओ। जो हार जाएगा दूसरे के सिद्धांत को स्वीकार करेगा। प्रतिज्ञा हो जानी चाहिए।" कर्णसिंह के एक पहलवान साथी ने स्वामी जी पर हाथ डालने की कोशिश की। ब्रह्मचारी दयानन्द ने एक झटके से पहलवान को दूर फेंक दिया और शेर के समान गर्जकर कर्णसिंह से कहा "अरे धूर्त, यदि शास्त्रार्थ करना है तो जयपुर और धौलपुर के राजाओं से जाकर लड़ो, यदि शास्त्रार्थ करना है तो अपने गुरु रंगाचार्य को वृन्दावन से बुला लो।" दोनों में से जो हार जाए, वह दूसरे के सिद्धांत को स्वीकार कर ले।

इस पर कर्णसिंह का पारा तेज हुआ। गालियों की वर्षा और तलवार से हवा को काटना जारी रहा। कर्णसिंह आपे से बाहर हो गया। स्वामी जी ने अरे धूर्त इतना कहते हुए राव को हाथ से धकेल दिया। सम्भल कर कर्णसिंह तलवार का वार करने के लिए दुबारा आए। राव तलवार चलाना चाहते ही थे कि स्वामी जी झपट कर तलवार छीन ली और भूमि पर टेक कर बीच से दो टुकड़े कर दिए और कहा "राव! क्या तुम चाहते हो कि क्या मैं आततायी पर बदला लूं? मैं सन्यासी हूं तुम्हारे किसी भी अत्याचार से चिढ़कर मैं तुम्हारा अनिष्ट चिन्तन कभी न करूंगा। जाओ! ईश्वर तुम्हें सुमति प्रदान करे।" स्वामी जी से अभियोग चलाने को लोगों ने कहा पर स्वामी जी ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया।

(४)

सम्वत् १९३७ के आश्विन मास में महर्षि दयानन्द जी मेरठ से देहरादून पधार रहे थे। मार्ग में सहारनपुर रेलवे स्टेशन पर अनेक भक्त लोग महर्षि के स्वागत सत्कार के लिए जमा थे, उन्होंने महर्षि को सूचित किया "महाराज आपको जैन लोग कंदखाने में डलवाने का षड्यन्त्र रच रहे हैं।"

महर्षि ने निर्भयता से उत्तर दिया। भाई, सोने को जितना तपाया जाता है उतना ही कुन्दन बनता है। विरोध की आंच से सत्य की कांति चौगुनी चमकती है। दयानन्द को अगर तोप के मुंह के आगे रखकर भी पूछेगा कि बता सत्य क्या है तो भी उसके मुंह से वेद की श्रुति ही निकलेगी। अब तो मैंने जैन मत के बहुत से ग्रन्थ देख लिए हैं वे लोग मेरे प्रश्नों का समाधान कदाचित नहीं कर सकते।"

(५)

महर्षि दयानन्द के तेज ने भी एक चमत्कार दिखाया। उनके विरोधी उन्हें ज्ञान तथा तर्क में जब हरा न सके। उन्होंने एक चाल चली। सोचा, एक बाजारी औरत को उनके पास भेजो। वह शोर मचा दे कि दयानन्द ने मुझे छेड़ा है, फिर हम दयानन्द पर टूट पड़ेंगे। उसे बदनाम भी करेंगे। नगर से बाहर भी निकाल देंगे। एक सुन्दर युवती स्त्री उन्होंने ढूंढी। उसे आभूषण दिए और रुपयों का लोभ दिया। सब कुछ समझकर वह महर्षि की कुटिया के समीप पहुंची तो महर्षि कुटिया के बाहर भगवान के ध्यान में मग्न थे। उनके मुखमण्डल पर उभरते आध्यात्मिक तेज को देखकर उस स्त्री की आत्मा जाग उठी। उसने आभूषण उतार कर फेंक दिए, महर्षि के चरणों में गिर पड़ी, रोती हुई बोली—मेरी रक्षा करो महाराज, मेरे अपने आप से, मेरे लोभ से, मेरे पाप से मेरी रक्षा करो।

उस स्त्री की आंखों से जो अश्रुधारा बही उस से उसका हृदय निर्मल हो गया और वह महर्षि की भक्त बन गई। उसने वैदिक धर्म के प्रचार में भाग लिया।

(६)

अमृतसर की एक घटना है। महर्षि दयानन्द के सत्यकथन को न सह सकने के कारण कुछ व्यक्ति उनके शत्रु बन गए थे। महर्षि के भक्तों को महर्षि पर घातक हमला होने का खतरा था। अतः उनकी रक्षा के लिए कुछ एक भक्तजन रात को उन्हीं की डेरे पर सोया करते

(शेष पृष्ठ १० पर)

दयानन्द बोध रात्रि एवं आर्यसमाज बोध-शतक

ऋषि बोध दिवस यह आया है आर्यों को बोध कराने को।
सो रहे हैं दिन में जग कर भी ऐसे आर्यों को जगाने को।
शिवरात्रि के दिन रात्रि भर वह मूलशंकर जागा था।
ज्ञान नेत्र खुल गए चूहा शिवपिंड पे चढ जब भागा था।
सच्चे शिव व सद्ज्ञान हेतु तब दयानन्द घर से निकले।
योगी-गुरुजन की करते खोज सच्चे गुरु विरजानन्द से मिले।
गुरुवर ने दयाकर दयानन्द को दिया दिव्य वेदों का ज्ञान।
इसके प्रचार में दयानन्द ने कर डाला जीवन बलिदान।
सत्यार्थप्रकाश असत्-मत-अंधकार सब मिटा गये।
शिवरात्रि को वे क्या जागे जग के जन-जन को जगा गये।

जिस वैदिक धर्म के लिए दयानन्द, श्रद्धानन्द और लेखराम।
बलिदान हुए, अति कष्ट सहे, त्यागे सुख सम्पत्ति और धाम।
इनके सच्चे अनुयायी आर्यों ने भी त्याग महान किए।
भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन में भी भारी बलिदान किए।
क्या हैदराबाद का धर्मयुद्ध, पंजाब का हिन्दी आंदोलन।
गोरक्षा सत्याग्रह देहली में भी गए थे सहस्रों आर्यजन।
उस महायशस्वी संगठन का क्या पहला सा अब दल बल है?
ऋषिवर के बताये वेदमार्ग पर आर्यसमाज क्या अविचल है।
यह प्रश्न व और समस्या है उन पर सब आर्य विचार करें।
जो करना था वह नहीं किया तो अब करना स्वीकार करें।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का हमने जो लगाया था नारा।
उसके अनुसार बनाया क्या यह वैदिकधर्मी जग सारा?
जो हिंदू यवन ईसाई बने क्या उनको आर्य बनाया है।
मंदिर मस्जिद सागर पर्वत क्या ओम् का ध्वज फहराया है।
गाते रहे यह गीत जगत् में वैदिक ज्योति जलाएंगे।
पाखण्ड, अंधविश्वास, अविद्या अंधकार मिटाएंगे।
पर कर न सके यह पूर्ण ऋषिवर दयानन्द की आशाएं।
कर्त्तव्यहीन दर्शक बन कर ही देख रहे सब घटनाएं।
यह आर्यावर्त महान देश भारत से हिंदुस्तान बना।
इंडिया बना फिर एक भाग खंडित हो पाकिस्तान बना।

अब ऐसे ही षड्यन्त्र हैं कि यह भारत पुनः विभाजित हो।
इस्लामी राज्य हो भारत में, आर्य जाति निष्कासित हो।
इस कार्य हेतु ईसाई, मुस्लिम देशों से धन आता है।
जो हिन्दू धर्म का परिवर्तन व दंगे नित करवाता है।
कश्मीर और पंजाब प्रांत में होती हैं नित हत्याएं।
लूटपाट, हिंदुत्व नाश की बढती जा रही घटनाएं।
ये पाक समर्थक हिंदू मंदिर व सम्पत्ति बर्बाद कर।
भारत का तिरंगा जला रहे और भारत मुर्दाबाद करें।
मजहब व राज्य विदेशी ही इन लोगों को लगता प्यारा।
सद्भाव एकता भाईचारे का इनका झूठा नारा।

जिस भारत में यह जन्मे हैं जिसके अन्न जल से पलते हैं।
उस देश धर्म की संस्कृति के विपरीत सदा यह चलते हैं।
गंगा-यमुना-काशी-मथुरा, श्रीराम जन्म भूमि को तज।
मक्का व मदीना अरब देश में जाकर यह करते हैं हज।
यह हिंदू जैन-सिख-ईसाई व बौद्ध, मुसलमान सभी।
भारत माता, श्रीराम कृष्ण व आर्यों की संतान सभी।
थोड़े से विदेशी मुसलमान भारत को लूटने आये थे।
उन लोगों ने ही छल बल से यह मुसलमान बनाए थे।
भारत में शासन करने को उन लोगों ने यह चली चाल।
इस भांति हिंदू-हिंदू में ही सदा इन्होंने फूट डाल।

यह हिंदू जाति की संतानें खुद को हिंदू न समझते हैं।
निज बन्धुगण में मिलने की यह बात कभी न करते हैं।
ये भूल गए अपना स्वरूप स्वधर्म और स्वबन्धुजन।
ऐसे भटके अपनों के ही ये गए प्रबल विरोधी बन।
इनकी हमदर्दी पाक से हैं भारत के प्रति घृणा करना।
भारत के भीतर घुसी हुई यह पाकिस्तां की है सेना।
भारत से बाहर लडने को फिर पाकिस्तां तैयार खडा।
पर भीतर कुछ गद्दारों से है देश को खतरा बहुत बड़ा।
सरकार ने वोटों के कारण ही इन्हें बहुत पनपाया है।
भारत में राष्ट्राध्यक्ष और गृहमंत्री आदि बनाया है।

इनको प्रसन्न रखने के लिए इनकी सुविधा पर बल देती।
सुप्रीम कोर्ट तक के निर्णय व संविधान बदल देती।
संस्कृत हिन्दी का मान घटा इंगलिश-उर्दू अपनाई है।
जिसने बिहार, उत्तरप्रदेश साम्प्रदायिक आग जलाई है।
श्रीराम जन्मभूमि विवाद ने कितने जन मरवा डाले।
अरुणाचल, मेघालय आदि ईसाई राज्य बना डाले।
हिंदुत्व विरोधी रीति-नीति सरकार को लगती है प्यारी।
नेपाल और इजरायल तज मुस्लिम राष्ट्रों से है यारी।
पर ध्यान रहे इन देशों का इस्लाम से है पक्का नाता।
जब तक भारत से स्वार्थ इन्हें तब तक भारत इनको भाता।

जिस बंगला देश की आजादी को भेजी थी हमने सेना।
इस्लामी राज्य बनने से वहां है कठिन हिंदुओं का रहना।
परिवार नियोजन करने से हिंदू संख्या ही घटती है।
पर मुस्लिम पत्नि तो अनेक दस-दस बच्चे तक जनती हैं।
यह हाल रहा तो भारत में हिंदू ही अल्पसंख्यक होंगे।
तब प्रजातंत्र में बहुसंख्यक ही भारत के शासक होंगे।
तब यहां धर्मनिरपेक्ष राज्य क्या राम कृष्ण का नाम रहेगा?
क्या वेद शास्त्र जलने से बचेंगे, हिंदू रक्त क्या नहीं बहेगा।
क्या मंदिर फिर न टूटेंगे, नारी सतीत्व क्या नहीं लुटेगा?
ऋषि दयानन्द, गांधी, सुभाष व भारत का क्या नाम बचेगा।

आर्यत्व रहा तो हिन्दू बचेंगे भारत अखण्ड, स्वराज्य रहेगा।
आर्य राज्य बना भारत तो निश्चय ही अभिमान रहेगा।
इससे भारत मिट जाएगा तो नेतागण यह कहते हैं।
वे हिन्दू नहीं कुछ और ही हैं हिन्दू को धोखा देते हैं।
जातिवाद, साम्प्रदायवाद यह नेता बुरा बताते हैं।
पर इनके नाम व आरक्षण पर वोट बटोरे जाते हैं।
टी. वी. पर यह करते प्रचार इस्लाम और ईसायत का।
अश्लील और हिंसा के फिल्म कर रहे पतन इस भारत का।
परिवार नियोजन हेतु घोर निर्लज्ज शब्द सुनाते हैं।

यह देश धर्म की दुर्दशा अब तक जा रही पाई है।
सरकार और हिन्दू ही नहीं, आर्यसमाज भी उत्तरदायी है।
है भूल हमारी भी हमने भूले, बिछुड़े अपनाए नहीं।
श्री श्रद्धानन्द स्वामी के चलाये शुद्धि चक्र चलाये नहीं।
हिन्दू व आर्य मंदिर, भवनों पर अरबों रुपया लगाते हैं।
पर देश-धर्म रक्षार्थ शस्त्र और सैनिक नहीं बनाते हैं।
फस कांग्रेस की राजनीति, वैदिक रीति सब बिसराई।
इन दलदल में ही फसने से राज्यार्य सभा न बन पाई॥
हे आर्यजनों अब शीघ्र उठो स्वधर्म व स्वदेश बचाने को।
यह बोध-दिवस का सन्देश 'भास्कर' घर-घर पहुचाने को।

—भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर, प्रधान

नगर आर्यसमाज १४३-१८ हिन्दौन मार्ग कृष्णपोल, जयपुर

स्वामी दयानन्द के जीवन की घटनाएं

(पृष्ठ ४ से आगे)

थे। एक दिन एक भक्त ने महर्षि को सूचित किया कि आपने जो सिख पंथ पर आक्षेप किए हैं, उससे चिढ़कर कुछ निहंग आपके वध के लिए तुले बैठे हैं, रात को कुछ आर्य सोते हैं। अतः निहंगों का दाव नहीं चल रहा।

यह सुनकर उसी दिन से वहां आर्यों का सोना बन्द कर दिया और कहा, हम अकेले ही रहेंगे। जिसकी आज्ञा का मैं पालन कर रहा हूं, वही परमेश्वर मेरा रक्षक है।

(७)

बम्बई की बात है कि खण्डन से चिढ़कर कुछ एक वैष्णवों ने स्वामी जी को मार डालने की ठानी। उन्होंने स्वामी जी के सेवक को अपने पास बुलाया और लालच देकर कहा अगर तुम विष देकर दयानन्द को समाप्त कर दो तो हम तुम्हें एक हजार रुपए देंगे। सेवक लालच में फंस गया और उसे प्रनोट लिखने के साथ पांच रुपए और पांच सेर मिठाई उसी समय दे दी गई। डेरे पर आते ही स्वामी जी ने प्राज्ञ-नेत्रों से गुप्तभेद को ताड़कर उससे पूछा, क्या तुम आज गोकुलियों के यहां गए थे? उत्तर 'हां' में मिलने पर दुबारा प्रश्न किया—देखो सच-सच बताना वहां क्या ठहरा कर आए हो?

अब सेवक भेद को छिपा न सका उसने सही-सही स्वामी जी को बता दिया। स्वामी जी ने सेवक को समझाते हुए कहा—"जिस को परमेश्वर न मारे उसे मारने के लिए कोई भी समर्थ नहीं हो सकता। बनारस में मुझे हलाहल विष दिया गया, राव कर्णसिंह ने पान में विष मिलाया, अन्य भी अनेक स्थानों पर विष के विषम प्रयोग किए गए परन्तु मेरा प्राणान्त नहीं हुआ। स्मरण रखो, अब भी मैं मारा नहीं जाऊंगा।

स्वामी जी के प्रेमरसपूर्ण वचनों को सुनकर सेवक पानी-पानी हो गया। क्षमा याचना की और प्रतिज्ञा की कि अब कभी ऐसे निन्दनीय दाव पेचों में नहीं रहूंगा।

(८)

बम्बई की एक और घटना है। एक दिन एक पन्थाई ने चार बलवान् मनुष्यों को स्वामी जी के वध के लिए तैयार किया। स्वामी जी प्रतिदिन समुद्र की ओर घूमने जाया करते थे। वे चारों हत्यारे भी प्रतिदिन उधर जाने लगे। एक दिन स्वामी जी ने इस कुचक्र को ताड़ लिया। उन्होंने गरज कर पूछा तुम कौन हो? वे स्वामी जी की गर्जना से भयभीत होकर कम्पायमान हो गए। बिना कुछ कहे सुने एक दम भाग गए।

(९)

सम्वत् के अन्त में महाराज अपने निश्चय के अनुसार जोधपुर पहुंच गए। उस समय वहां के महाराजा श्रीमन्त यशवन्त सिंह जी और राजकुमार श्रीयुत् प्रतापसिंह जी थे। कई बार स्वामी जी से महाराज ने राजभवन में पधार कर कृतार्थ करने को कहा। एक दिन स्वामी जी पहले कोई सूचना दिए बिना राजभवन पहुंच गए। उन्होंने देखा कि वहां एक वेश्या मौजूद। स्वामी जी को आते देख वेश्या को पालकी में बैठाया और स्वयं पालकी पर कन्धा लगा उसे वहां से विदा किया। स्वामी जी ने यह देख लिया और वेश्या संसर्ग पर बहुत अधिक फटकारा और कहा "वीर शार्दूल का कृपणा कुतिया पर प्रेम करना और आशक्त हो जाना सर्वथा अनुचित है, आर्य जाति की कुल मर्यादा के विपरीत है। केसरी की कन्दरा में, ऐसी कलुष कलुषित कुक्करी के आगमन का क्या काम है? इस कुव्यसन के कारण धर्म, कर्म भ्रष्ट हो जाता है, मान-मर्यादा को कलंक लगता है। इस पाप सोपान पर प्रथम रदार्पण करते ही, पुनः यह पुरुष का अधः पतन आप ही आ होता चला जाता है। इस दुर्व्यसन को तिलांजलि दे देनी चाहिए।

स्वामी जी अपने स्थान से राजकुमार प्रतापसिंह को जोधपुराधीश के लिए पत्र लिखा। उसमें दिनचर्या के सुधार के लिए भी कहा। परिणामतः वेश्या की उसकी पूछ राजदरबार से उठ गई। उसने स्वामी जी के पाचक को लालच देकर छोड़ा। पाचक ने आश्विन बदी चतुर्दशी सम्वत् १९४० को दूध में हलाहल विष घोल कर पिला दिया।

स्वामी जी को कालकूट विष पीने के बाद उदर-शूल के साथ-साथ वमन प्रारम्भ हो गए। पीड़ा इतनी असह्य थी कि बड़े बड़े वैद्य भी देखकर दांतों तले अंगुली दबाते थे कि इतना असह्य कष्ट? ऐसे भयानक कष्ट में तो वीर से वीर पुरुष भी जीवित नहीं रह सकता। ये कैसे प्राण धारण कर रहे हैं?

स्वामी जी को विष का भान हो गया। पाचक को बुलाकर पूछा तो उसने सारी बात स्वीकार कर ली। दया [illegible] का अनुभव करने वाले दयानन्द ने उस पाचक का ताडन तर्जन तो दूर कुछ नहीं कहा। वे बोले "जगन्नाथ! मेरे मरने से मेरा कार्य अधूरा रह गया। आप जानते हैं इससे लोकहित की कितनी हानि हुई? अच्छा, विधाता के विधान में ऐसा ही होना था। इसमें आपका भी क्या दोष है? जगन्नाथ! लो ये कुछ रुपए हैं, मैं आपको देता हूं। आपके काम आएगे। परन्तु जैसे भी हो राठौर राज्य की सीमा पार हो जाओ। नेपाल राज्य में छिपने से आपके प्राणों का परित्राण हो सकता है। यदि यहां के नरेशको घुणाक्षर न्याय से भी इस बात का पता लग गया तो वे आपका चिन्ह निसर्ग तक विनष्ट करके विश्राम लेंगे। जगन्नाथ अब जाओ, अब देर मत करो, चुपचाप भाग जाओ, देखना किसी को स्थाली पुलाक न्याय से भी आपका कर्म ज्ञात न हो जाए। इस हृदय सागर से किसी प्रकार कभी भी आपका भेद प्रकाशित न होगा।"

यह स्वामी जी का सत्य अहिंसा का अन्तिम प्रयोग था। आश्विन बदी चतुर्दशी को जहर दिया गया था। ठीक एक मास एक दिन बाद हंसते-हंसते ओ३म् का जाप, गायत्री मन्त्र का उच्चारण और 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुए कार्तिक की अमावस्या मंगलवार दिवाली के दिन ६ बजे सूर्यास्त के साथ-साथ भगवान् दयानन्द भास्कर भी तिरोहित हो गए और लाखों दीपकों का प्रकाश छोड़ गए। यह प्रकाश सत्य और अहिंसा का प्रकाश था।

ठेके की नीलामी नहीं होने देंगी महिला कमेटियाँ

गोहाना (निस)। नशाबन्दी अभियान की नेत्री श्रीमती, शोभा पण्डित जो पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री शेरसिंह की पत्नी हैं ने घोषणा की है कि हरयाणा में २३ फरवरी से ९ मार्च के बीच प्रस्तावित शराब के ठेकों की नीलामी नहीं होने दी जाएगी। चूंकि इस 'महामारी' से सर्वाधिक पीड़ित महिलाएं हैं, अतः उनकी कमेटियां बनाई जाएंगी जो नीलामी स्थलों पर प्रदर्शन करेंगी।

उन्होंने बताया कि जहां-जहां नीलामी होगी, वहां के ठेकों पर शराब नहीं बिकने दी जाएगी तथा वहां धरने दिए जाएंगे। इसके अलावा इस लाल परी के दीवानों को इसकी हानियों से अवगत कराने के लिए जन-जागरण अभियान छेड़ा जाएगा। उनका लक्ष्य दूध-दही की नदियों वाले हरयाणा को शुष्कक्षत्र बनवाना है।

श्रीमती पंडित ने महम व थानेसर के मतदाताओं से अपील की है कि वे उन्हीं उम्मीदवारों को वोट दें जो न तो खुद पीते हों और न ही इस रोग को असाध्य बनाने के हिमायती हों। यदि बदकिस्मती से सभी उम्मीदवार शराबी-कबाबी हों, अपने वोट को यूं ही जाया न करें तथा किसी को वोट न दें (वीर अर्जुन)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर रोहतक का

हीरक जयन्ती महोत्सव

यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आपकी प्रिय संस्था उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए अपनी स्थापना के ७५वें वर्ष में पहुंच गई है। इस उपलक्ष्य में २२ से २५ फरवरी १९९० ई० में संस्था के हीरक जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत् के अनेक धुरन्धर विद्वान्, तपःपूत वीतराग साधु-संन्यासी, प्रांतीय तथा केन्द्र सरकार के प्रमुख राजनेता तथा उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

● चतुर्वेद पारायण महायज्ञ ●

१ फरवरी १९९० से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। पूर्णाहुति २५ फरवरी को प्रातः १० बजे होगी। श्रद्धालुजन यज्ञ हेतु पुष्कल घृत सामग्री भेजकर पुण्य के भागी बनें।

संस्था में विशाल पुरातत्त्व संग्रहालय, आयुर्वेदिक रसायनशाला आदर्श गोशाला, साहित्य प्रकाशन विभाग, पुस्तकालय तथा वाचनालय आदि अनेक विभागों को परिष्कृत करने के लिए एक करोड़ रुपए की आवश्यकता है—

१-	महाविद्यालय तथा छात्रावास	२० लाख रुपए
२-	आयुर्वेदिक रसायनशाला	२० ,, ,,
३-	साहित्य प्रकाशन विभाग	२० ,, ,,
४-	पुरातत्त्व संग्रहालय	२० ,, ,,
५-	छात्रवृत्ति तथा वृद्ध साधु-सेवा हेतु	२० ,, ,,

गुरुकुल के चार प्रकार के सदस्य बनाए जा रहे हैं:—

साधारण सदस्य २५१ रुपए 	विशिष्ट सदस्य ११०० रुपए

सरक्षक सदस्य ५१०० रुपए विशिष्ट सरक्षक सदस्य ११००० रुपए

सभी दानी सज्जनों से नम्र-निवेदन है कि इस आदर्श गुरुकुल की उन्नति के लिए मुक्तहस्त से दान भेजकर कृतार्थ करें।

प्रो शेरसिंह	स्वा. ओमानन्द सरस्वती	वैद्य बलवन्तसिंह	वेदव्रत शास्त्री
कुलपति	आचार्य	प्रधान	मंत्री

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य सभासदों से मार्च १० तक का वार्षिक चन्दा उनकी आय के शतांश के अनुसार प्राप्त कर लेवें और उन्हें रसीद दे देवें। जिन समाजों के पास रसीद बही नहीं है, वे छपवा लेवें अथवा सभा कार्यालय रोहतक से ४)०० रुपए प्रति रसीद बुक (१०० रसीद) के लिए रोहतक भेजकर मंगवा लेवें। सभा ने रसीद बही छपवा दी है।

आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार वही आर्य सभासद चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं, जिनका नाम सदाचारपूर्वक आर्यसमाज के रजिस्टर में २ वर्ष तक अंकित रहा हो और वे अपने समाज को अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) चन्दा देते हों और सत्सगों में उनकी कम से कम २५% उपस्थिति रही हो।

अतः सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को इसी नियम के अनुसार आगामी चुनाव में मत देने वाले आर्यसभासदों से मार्च तक चन्दा प्राप्त करके सूची सभा को भेजें तथा अप्रैल मास में नियम अनुसार अपने आर्यसमाजों का वार्षिक चुनाव करें।

जो आर्यसमाज इस कार्य में सभा की सहायता चाहते हों, वे सभा को पत्र लिखें ताकि सभा की ओर से उपदेशक को भेजा जा सके।

—सभा मन्त्री

ऋषि दयानन्द के उपकार

सोयी हुयी जनता जगाई दयानन्द ने।
वेदों की शिक्षा बताई दयानन्द ने॥

● पाखण्ड था छाया हुआ मूर्ति पूजी जाती थी।
नारी तो बस शूद्र और नीच कहाती थी॥
सच्ची मूर्ति पूजा बताई दयानन्द ने।१।

● जाति पांति भेदभाव द्वेष ऊंच नीच का।
अन्तर काफी था मानवों के बीच का॥
सभी की एक जाति बताई दयानन्द ने।२।

● नारी यहां पैरों की जूती समझी जाती थी।
वह यहां दर-दर की ठोकरें खाती थी॥
नारी शिक्षा की रीति चलाई दयानन्द ने।३।

● वेदों को कहते थे शखासुर ले गया।
बदले में पुराणों के गपोड़ों को दे गया॥
वेद की ज्योति फिर जलाई दयानन्द ने।४।

● लोग दासता की जजीरों में जकड़े थे।
पण्डे और पुजारी बस पेट ही भरते थे॥
स्वराज की हुंकार लगाई दयानन्द ने।५।

● सच्चे शिव पूजक दयानन्द की मान लो।
वेद है वाणी सच्चिदानन्द की जान लो॥
'कमल' सच्ची भक्ति सिखाई दयानन्द ने।६।

—अरविन्द कुमार 'कमल'
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

महर्षि दयानन्द का सार्वभौमिकता सूत्र

(पृष्ठ २ का शेष)

उनकी इस कट्टरता को कभी कभी गलत ढंग से भी आंका जाता है। इस गलत आंकलन ने ही उनकी विचारधारा का सही सही मूल्यांकन नहीं होने दिया है। वे ऐसी चतुर्दिक प्रतिज्ञा के मालिक थे कि धर्म के साथ साथ उन्होंने राजनीति और साहित्य एवं भाषा आदि क्षेत्रों में भी बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। उन्होंने कभी भी ऐसी बातों का प्रचार नहीं किया जिनमें विरोधाभास हो। वे जानते थे कि ऐसी बातें देखने और सुनने में तो भली लगती हैं मगर इनके दूरगामी परिणाम इतने अधिक भयानक होते हैं कि आने वाली पीढियों को उनका अभिशाप भोगना पडता है। अनेकता में एकता जैसी लुभावनी बाते उनके पास नहीं थीं बल्कि उन्होंने तो स्पष्ट शब्दों में कहा—एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहां भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाए वहां सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक एक करके प्रवेश करने लगते हैं।

चाहे विश्व का प्रश्न हो, चाहे समाज का और चाहे राष्ट्र या परिवार का महर्षि के इन उद्गारों को आत्मसात करने की परम आवश्यकता है। और जब किसी भी इकाई से इस सूत्र का कार्यान्वयन ईमानदारी के साथ होगा तो धीरे-धीरे फैलता हुआ यही सूत्र सार्वभौमिकता का ऐसा प्रेम और सौहार्द का वातावरण बना देगा जिसमें वैर-विरोध नहीं बल्कि एक नैसर्गिक आनन्द का स्रोत फूटेगा जो समूची मानवता को सराबोर कर देगा।

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ

आर्य जगती को बनाएं

शुभ्र यह शिवरात्रि का शुचि
पर्व है पावन हमारा
निहित है इसमें सन्देशा
जागरण का दिव्य नारा।

सत्य - शिव - सुन्दर समन्वित
दे रही सन्देशा है।
नवल हो आलोक भू पर
पुण्यतम उपदेश है।

था इसी शिवरात्रि ने ऋषि-
वर दयानन्द को जगाया।
तिमिर जो फैला धरा पर
दूर था उसको भगाया।

आज इस शिवरात्रि पर हम उठ पड़े सकल्प ले।
मनुजतापूरित पुनः हम सुदृढ विशुद्ध विकल्प दें।

भोगवादी वृत्ति का—
छाया धरा पर है अन्धेरा।
रश्मियों के देश को ही
तिमिर ने क्यों आज घेरा।

है घिरा पाखण्ड भू पर—
धर्म आडम्बर घना है।
सत्य के पथ हो गए, विस्मृत—
मनुज मन अनमना है।

हम बढ़ें कटिबद्ध होकर,
आर्य जगती को बनाएं।
ऋषि दयानन्द के अधूरे—
कार्य को पूरा कराएं।

हो धरा जाग्रत - सुनिर्मल
धर्म का हो दीप्त दीपक
हो प्रकाशित अवनि-अम्बर
जग उठे जग का जनक॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ.प्र.)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि०नं० P/...

१४९



सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए० फाल्गुन २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क १४ २८ फरवरी १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैं०

आर्यसमाज और वेदप्रचार

लेखक—स्व० श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज

वेदप्रचार को ग्रामीण जनता में ले जाने के साधनो को चिरकाल से अन्वेषण किया जा रहा है। आर्यसमाजों में जितने सम्मेलन होते हैं, उन सबमें प्राय अधिक प्रस्ताव ग्राम प्रचार के सम्बन्ध में ही होते हैं। परन्तु जहा तक मेरा अनुभव है ये सब प्रस्ताव उसी समय की कार्यवाही के अङ्ग होते हैं, कार्यक्षेत्र मे आने का अवसर उन्हे कहीं भी मिलता देखने में नहीं आया। ऊपर की पक्तियां मैंने अपने अनुभव को ध्यान में रखकर लिखी हैं, और प्रातो का मुझे विशेष अनुभव नही। समाजों के अधिकारियो से पूछने पर पता लगता है कि इसमें कारण धन का अभाव है, धन के न होने से उपदेशक नही रखे जा सकते और उपदेशकों के बिना प्रचार नही हो सकता। परन्तु मैं इस उत्तर को सन्तोषजनक नही समझता। यथार्थ उत्तर यह है कि [illegible] वेदप्रचार को अपना मुख्य उद्देश्य अभी समझा [illegible] । [illegible] को आर्यसमाजे सभा की चीज समझती हैं और [illegible] वेदप्रचार [illegible] धन निकालते समय व्यापार का ढग स्वीका[illegible] उत्सव में यदि दो तीन सौ रुपया व्यय कर दिया जावे [illegible] वेदप्रचार के समय बीस से लेकर पचास तक कितनी ही कहा सुनी के बाद दिया जा सकेगा। एक ही स्वतन्त्र उपदेशक या भजनीक आकर पचास या सौ रुपया बिना कठिनाई के ले जावेगा, परन्तु सभा के पाच-छ कार्यकर्त्ताओ को सभा का इतना मार्ग-व्यय करने के बाद भी मिलेगा पचास रुपया।

यू० पी० प्रात की सभा आर्थिक दृष्टि से इसीलिए निर्बल हो गई कि वहा स्वतन्त्र प्रचारकों की बहुसख्या है। आर्यसमाजो का सब धन वे लोग ले जाते हैं और सभा देखती रह जाती है। पजाब में इस विषय में प्रारम्भ से नियन्त्रण रहा, परन्तु अब स्वतन्त्रता बढती जा रही है। कई स्वतन्त्र प्रचारक विरक्त कहलाने वाले भी धन सग्रह की चिन्ता में रहते हैं। सुना है कि पेशावर सदर समाज मे एक विरक्त महानुभाव को कथा के उपलक्ष में पचास रुपये और वस्त्रादि मिले। ऐसे महानुभाव प्रचारक भी सभा के नियन्त्रण मे होने चाहिये। उन्हें यदि अपने निर्वाह के लिए कुछ धन की आवश्यकता पड़े तो वे सभा से ले लिया करें। जो सज्जन सर्वथा विरक्त हैं और भोजन के अतिरिक्त कुछ भी ग्रहण नही करना चाहते वे स्वतन्त्रता से प्रचार कर सकते हैं परन्तु उन्हे अपने प्रचार का क्षेत्र ग्रामो को बनाना चाहिए और जिन स्थानो [illegible] ग्रामो मे प्रचार के लिए जैसी आवश्यकताए हों उनसे सभा को [illegible] करते रहना चाहिए। समाज अपने उत्सवों के [illegible] का अधिक से अधिक [illegible] सभा को दे और उस धन को [illegible] जिस प्रान्त से वह धन आवे उस प्रान्त के ग्राम प्रचार-फण्ड में सयुक्त किया जावे। जो साधारण वेदप्रचार → के वार्षिक दातव्य से अधिक समाजो ने दिया हो। इस रुपये को स्थिर कोष न बनाकर प्रतिवर्ष उस प्रान्त के ग्राम प्रचार मे ही व्यय कर दिया जावे। इसी प्रकार के और उपाय भी विचार मे आ सकते हैं। परन्तु यह सब कुछ वेदप्रचारक महानुभावो के सगठन और आर्थिक नियन्त्रण के बाद ही हो सकता है। और यह सब भी तब होगा जब कि वेदप्रचार को अपना काय समझगी और सभा को समाज से पृथक् वस्तु न समझगी। यह ध्यान रहे कि वेदप्रचार ही समाजो का मुख्य उद्देश्य है।

एक योजना

आ० भद्रसेन, डाक०-साधु आश्रम (होशियारपुर) १४६०२१

भारत की समृद्धि, सुरक्षा और प्रगति के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारो के जहा अनेक मन्त्रालय होते हैं, वहा अनेक आयोग, निगम भी होते हैं। इन्ही आयोगों में से एक आयोग—योजना आयोग है। जिसका अन्यो की अपेक्षा एक विशेष महत्व एव स्थान है क्योंकि इसका अध्यक्ष प्रधानमन्त्री होता है। जिसके सदस्य देश के सबसे वरिष्ठ व्यक्ति होते हैं। देश के प्रत्येक बडे कार्य पर सबसे पहले योजना आयोग विचार करता है और स्वीकृति देता है।

योजना आयोग ने सर्वपक्षीय विचार के बाद देश की प्रगति के लिए विशेष रूप से पचवर्षीय योजनाये चलाई। इन सातो पचवर्षीय योजनाओ पर विशेष समय श्रम धन बुद्धि लगा कर प्रथम इनका प्रारूप तैयार किया गया और फिर उनको समय समय पर क्रमश प्रारम्भ किया गया। आजकल आठवी पचवर्षीय योजना पर विचार-विमर्श चल रहा है।

प्रत्येक कार्य की योजना के प्रारूप से यह स्पष्ट हो जाता है कि कौनसा काय—कब, किस तरह किया जाएगा? इससे जहा कार्य करना सरल-स्पष्ट हो जाता है, वहा उसका परिणाम भी सुखद रहता है। जैसे कि हम अपने मकानो के नक्शे बनवाते हैं। जो काय जितना बडा होता है उसका नक्शा भी उसके अनुरूप ही पहले बनाया जाता है। जिस पर अनेक व्यक्ति पर्याप्त समय, बुद्धि लगाते हैं। ऐसे नक्शे हजारो और लाखो मे तयार होते हैं। मानचित्र, योजना मे किसी कार्य का निश्चित, व्यवस्थित रूप होता है। इसलिए फिर उसमें कोई भ्रम, सशय, उलझन पैदा नही होती।

आज हजारो ऐसे आर्य बन्धु हैं जो अपने जीवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा की महत्ता को अनुभव करते हैं, और चाहते हैं कि 'महर्षि के विचारो का भव्य भवन" साकार हो।

महर्षि ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे आर्यता लाने का प्रयास किया, क्योंकि आर्यता=अच्छाई, भलाई ही हर व्यक्ति सर्वत्र चाहता है और

(शेष पृष्ठ २ पर)

असेवनीय मादक द्रव्य

आजकल हरेक व्यक्ति भौतिकवादिता में परिलिप्त होता जा रहा है। वह अपने क्षणिक सुख से ही आनन्द का अनुभव करता है। चार्वाक के सिद्धांत को मानकर खाओ, पीओ और मौज मनाओ को ही अच्छा समझकर आहार और विहार बिगाड रखा है।

"मासं रूक्षाहार मद्यपान च वर्जय।" गृह्य सूत्रों के अनुसार। महर्षि देव दयानन्द जी ने "संस्कार विधि" के अन्दर इन अभक्ष्य चीजों के सेवन का निषेध किया है। अर्थात् स्पष्ट है कि प्राचीन काल में मांस, रूक्षाहार तथा मद्य वर्जित था। किन्तु वाममार्गियों की नकल करके—

पीत्वा-पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति न भूतले।
पुनरुत्थाय वै पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥ तन्त्र सूत्र॥

इसी सांचे में आज लोग ढलते आ रहे हैं। उन्हें अपनी स्त्री और बच्चों का जरा भी ध्यान नहीं रहता है। वह बोतल को अपने फटे वस्त्रों के अन्दर छिपाने में ही शान और शौकत समझता है।

प्राचीन स्थिति से जब हम वर्तमान का अवलोकन करते हैं तो बड़ा दुःख होता है साथ ही एक घटना याद आ जाती है कि जिस समय उद्दालक ऋषि के सामने एक राजा बड़े हो स्वाभिमानपूर्वक इस बात की घोषणा करता है—

न मे स्तेनो जनपदे, न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्नि नाविद्वान्, न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

इसका अभिप्राय यही है कि मेरे राज्य में न कोई चोर, न कजूस न कोई शराबी और न कोई अविद्वान् है। इसके अतिरिक्त कोई स्वेच्छाचारी पुरुष नहीं तो स्वेच्छाचारिणी स्त्री कहां होगी? सम्भव ही नही है।

इस प्रकार का आदर्श प्राचीन काल में हमारे आर्यवर्त का रहा। परन्तु दुर्भाग्य का कालचक्र बड़ा ही प्रबलतम होता है।

उस काल चक्र ने सभी मनुष्यों को अपने में समाहित कर लिया। नहीं तो किसी समय हरयाणा की भूमि, वीर भूमि, धर्म भूमि और कर्म भूमि से जाती रही। परन्तु वर्तमान में सुरा, सुन्दरी से युक्त अधर्म भूमि बनकर रह गई। किवदन्ति है कि जब मनुष्य शराबी हो जाता है तो उसकी मास और व्यभिचार की तरफ स्वतः इच्छा होती है। अपने को वह भूल जाता है, घरबार की परवाह किए बिना ही कगाली की ओर कदम बढ़ता चल पडता है। एक समय ऐसा आता है कि जब घर का घर तबाह हो जाता है। उस समय कोई भीख भी नही देता है।

अत. हमें अपने समाज या राष्ट्र को समृद्धशाली तथा सम्पन्न करने के लिए इन जाम की बोतलो को फेंकना अथवा तोड़ना ही पडेगा। क्योंकि इस से शराबी के परिवार को दुःख होता ही है साथ में आसपास के पडौसियों को व अन्य लोगो को पीडा एव दुःख पहुंचाता है। अतः यह एक अधर्म की कोटि है। इस गर्त में गिरकर व्यक्ति निश्चित् रूप से अधर्मी, पापी, व्यभिचारी तथा नीच हो जाता है। तो हमें भी दर्द भरे स्वर में कहना ही पड़ता है—

प्यारे मित्र! की बात यारो मानना ही पडेगा।
इस पापिनी से तो अपने को छुडाना हो पडेगा॥

यह रही शराब की बात अब थोडा, ये बीड़ी, सिगरेट और हुक्का वालों की कहना ही क्या है? ताऊ जी अपने साथ अपने नन्हे-मुन्ने प्यारे बच्चो का जिन्दगी से खिलवाड़ कर उन्हें भी बर्बाद कर रहे हैं। कहा भी गया है—

हाथ जले और मुह जले, जले पेट की आंत।
तनिक धुआ के कारण, फिरत निपोरे दात।

यह अवाधुन्ध विशेषता धुआं उडाने वालों की रही। सावधान हो जाओ अभी समय है यदि बिमारियों से, मृत्यु के कगार से कुछ समय के लिए छुटकारा चाहते हो तथा दीर्घायु की कामना है तो निश्चित् रूप से शराब पीना और धूम्रपान करना छोड़ दो। तभी कल्याण सम्भव है, अन्यथा नही।

लेखकः—आचार्य बलमित्र,
आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ़ फरीदाबाद

एक योजना

(प्रथम पृष्ठ से आगे)

एतदर्थ सर्वविध प्रयत्न करता है। आर्यता के लिए ही महर्षि ने मानव-२ का ध्यान आकर्षित किया। एतदर्थ विचारशीलता को उभारा, क्योंकि विचार ही आधार का आधार होते हैं। विचारशीलता की दृष्टि से महर्षि का निम्न वाक्य सर्वथा स्पष्ट और सारी रूपरेखा को स्वय ही बता देता है—'इसलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दे, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है।'

सत्यार्थप्रकाश भूमिका पृ. २

इस बात को साकार करने के लिए ही महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना की। महर्षि ने स्वयं भी आजीवन विचारशीलता को उभारने के लिए वाणी तथा लेखनी का खुलकर प्रयोग किया। महर्षि का यह सारा कार्य एक योजनाबद्ध रूप में ही था।

वस्तुतः महर्षि का केन्द्रबिन्दु 'विचारशीलता' ही है। अतएव महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ की भूमिका, अनुभूमिकाओं और स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में अपना अन्तःस्थल ही खोलकर रख दिया है। इन सब में विचारशीलता की ओर विशेष ध्यान दिलाया गया है।

इस पत्रिका के पिछले अंकों में लेखक के अनेक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें कार्य की योजना सामने लाई गई है। जो पाठक तथा आर्यसमाज के अधिकारी महर्षि के विचारों एवं महान् काय को साकार करना चाहते हैं वे लेखक से सम्पर्क करें। समाज के अधिकारी अपने सत्संगों में आमन्त्रित करके भी इस रूपरेखा को सामने ला सकते हैं। तभी आपस के सहयोग से इसको चरितार्थ किया जा सकता है, कि 'लहराएगी—लहराएगी खेती ऋषि दयानन्द की।' जहां एक-एक समाज एक-एक योजना को ले सकती है। वहां महर्षि के विचार एवं कार्य के भव्य भवन को सजाने की एक योजना यह भी हो सकती है, कि जो आर्यबन्धु अपना व्यक्तिगत योगदान देना चाहते हैं, वे अपने पूरे पते के साथ एक सौ रुपया भेजें। जिससे अपने बल पर एक के बाद एक योजना क्रमशः प्रकाशित की जा सके। यह लेखन कार्य तब संवादशैली में होगा और संवादों में उन आर्य बन्धुओं के नाम दिए जाएगे। इससे 'एक पन्थ दो काज' के अनुसार सरलता से वह पुस्तक भी प्रकाशित की जा सकेगी।

हां, जरूरत है कि कुछ आर्यबन्धु आगे आयें और आज के योजनामय युग में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती की अपूर्व देनों' को योजनाबद्ध रूप मे सामने लाकर स्पष्ट करें और उसके बाद उनको साकार करने में भी सहायक हों। वस्तुत. महर्षि के सकल्प को पूर्ण करने के लिए प्रथम विचारों को योजनाबद्ध रूप में प्रसारित करना ही श्रद्धाञ्जलि की दिशा में प्रथम पग कहा जा सकता है। ✱

अंग्रेजी हटाओ　　देश बचाओ

साहित्य समीक्षा

पुस्तक : वैदिक धर्म एवं संस्कृति

(ब्रह्मप्रकाश सहरावत, प्रवक्ता, छोटूराम किसान महाविद्यालय, जींद)

भारतीय धर्म संस्कृति पर पर्याप्त साहित्य लिखा गया है। भारतीय संस्कृति के नाम पर एक प्रकार से पौराणिक (ब्राह्मणवादी) संस्कृति का प्रचार-प्रसार अब तक होता रहा है। वैदिक संस्कृति तो एक प्रकार से गंगोत्री से निसृत गंगा की तरह से है। जो मूल रूप से शुद्ध सलिला है। लेकिन हरिद्वार से बनारस-कानपुर और हुगली तक पहुंचते-पहुंचते जिसमें कितने ही नदी-नाले मिलकर के उसको रूपाकार देते हैं। जिससे उसका स्वरूप विराट् तो होता है लेकिन किंचित् विकृत भी। क्योंकि भारतीय संस्कृति से तात्पर्य अब तक हिन्दू (पौराणिक) संस्कृति ही लिया जाता रहा है जिसमें मूर्तिपूजा, जन्मगत जात-पात की भी मान्यता विद्यमान रही है। जबकि वैदिक धर्म और संस्कृति में उपरोक्त दोनों मान्यताओं के लिए किंचित् भी स्थान नहीं रहा है।

इसी प्रकार से हम अवतारवाद और बहुदेववाद की परिकल्पना को ले सकते हैं। वैदिक धर्म में इनके लिए भी कोई स्थान नही रहा और न ही वैदिक संस्कृति अवतारवाद और बहुदेवतावाद का समर्थन करती है। लेकिन दुर्भाग्य से हुआ यह कि अब तक ब्राह्मणवादी पौराणिक धर्म और संस्कृति को ही भारतीय धर्म और संस्कृति के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। आश्चर्य का विषय तो यह है कि इसी पौराणिकवाद को वैदिक धर्म व संस्कृति के प्रतिनिधि रूप में व्याख्यायित किया जाता रहा है। और वैदिक धर्म व संस्कृति का जो शुद्ध सनातन स्वरूप है उसके विलोपन को सर्वथा असफल प्रयास किए गए हैं। प्रस्तुत पुस्तक इसी अभाव की पूर्त्यर्थं लिखित एवं प्रकाशित है जिसमें वैदिक धर्म और संस्कृति को ही भारतीय धर्म और संस्कृति के प्रतिनिधि रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक डा० धर्मचन्द विद्यालंकार हैं। लेखक गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का सुयोग्य स्नातक है। अतएव वैदिक धर्म व संस्कृति से उसका परिचय कोई नया नहीं है। विद्यालंकार जी ने जहां इस पुस्तक में अपने गम्भीर पांडित्य का परिचय दिया है, वहीं पर अपनी मौलिक चिंतन का भी। वैदिक धर्म और संस्कृति के मूल स्वरूप को उन्होंने बड़े ही निर्व्याज रूप से पाठकों के समक्ष रखा है। लेखक की शैली सरल व सुगम है। इतना गम्भीर विषय भी हस्तामलकवत् प्रतीत होता है। धर्म जैसे रूक्ष विषय को पढ़ने में भी काव्यात्मक सरसता का आनन्द मिलता है क्योंकि विद्यालंकार जी मूलतः कवि हैं।

अलग-अलग अध्यायों में बांटकर विषय को क्रमबद्ध ढंग से व्याख्यायित और विश्लेषिताओं का विस्तार से वर्णन किया गया है। वर्ण-व्यवस्था जैसे अपेक्षाकृत विवादास्पद विषय को विद्वान् लेखक ने इतनी उत्तमता के साथ रखा है कि कोई उंगली नहीं उठा सकता। वर्ण-व्यवस्था को जन्मजात जाति व्यवस्था से अलगाना और वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता का आकलन समीचीन बन पड़ा है जाति प्रथा के दुष्परिणामों का भी बेबाक वर्णन किया है। धर्म सम्प्रदाय या भाषा के विवाद में लेखक ने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के महत्त्व को सर्वोपरि महत्व दिया है। संकीर्ण साम्प्रदायिक सोच से लेखक सर्वथा मुक्त है।

मुख्य विषयों के साथ साम्प्रदायिकता, धर्म निरपेक्षता और भाषावाद जैसे आनुसंगिक विषयों को भी लेखक ने बारीकी से उठाया है। सती प्रथा जैसे नवीन विषय पर भी आर्यसामाजिक दृष्टि से विहगम अवलोकन किया गया है। विद्यार्थी जीवन और शिक्षा तथा आश्रम व्यवस्था और सन्तुलित जीवन व भारतीय चिंतन में समन्वय का स्थान जैसे व्यवहारिक विषय पुस्तक को अवश्य ही उपयोगी सिद्ध करते हैं। प्रूफ रीडिंग में शुद्धता का अभाव जरूर खटकता है। तदापि पुस्तक लघुकाय होकर भी बहुत महत्वपूर्ण बन पड़ी है। अतएव सभी स्वाध्यायशील पाठकों और पुस्तकालयों को इसे मंगवाना चाहिए।

पुस्तक का नाम : वैदिक धर्म एवं संस्कृति, लेखक का नाम : डा० धर्मचन्द विद्यालंकार, पृष्ठ संख्या : ८४, मूल्य : १० रुपए, प्रकाशक : अमर ज्योति प्रकाशन, ३०२, पंचशील गली नं० १, गढ़ रोड़, मेरठ—२५०००२।

हरयाणा की जागृति

हरयाणा भारतवर्ष का एक अनोखा पवित्र प्रदेश है, जिसका जयघोष ही यह है कि हरयाणा 'दूध घी का खाना' किन्तु आज वहां शराब के ठेकों को आजादी के प्राप्त होने के पश्चात् बढावा दिया जा रहा है। जहां दूध की नदियां बहती थीं वहां उसका स्थान शराब को मिल रहा है। आर्यों और आर्यसमाज के लिए यह असह्य है।

आजादी प्राप्ति का युद्ध लड़ा जा रहा था और शराब की दुकानों का बहिष्कार कराया जा रहा था। तो मुझे एक सत्याग्रही मिले जो जेल में कई मास का दण्ड भुक्त कर छूटे थे। उन्होंने बताया कि मुझे शराब पीने का व्यसन था तो मुझे वहां जेल में शराब की बोतल भी चोर मार्ग से मिल जाती थी। मैंने कहा जिस कांग्रेस के नाम से यह सत्याग्रह किया जा रहा था कि शराब न पियो तो आप कैसे देश भक्त हैं ? कहने लगा कि देश भक्ति तो धर्म है और शराब पीना व्यसन है। शराब पर सत्याग्रह करने में जेल गया था।

वहां शराब खुले रूप से अन्दर आ सकती थी। अतः चोरी से यह कार्य हो जाता था। जेल में सगे सम्बन्धी मिलने आते तो दे जाते थे।

वेद में मांस, शराब, जूआ और दुराचार का एक ही मन्त्र में खण्डन है। यह चार दोष जिस राष्ट्र में हों वह चमक नहीं सकता। शराब तो ऐसा व्यसन है कि शेष व्यसनों का जनक है। भारत भर में सबसे अधिक आर्यसमाज का प्रचार हरयाणा प्रांत में है। वहां इन चारों व्यसनों को उखाड़ फेंकना चाहिए। शासक वर्ग ने यह कार्य करना होता तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही शराब की बन्दिश कानून द्वारा शीघ्र हो जाती।

भारत के लोग समझते हैं कि हरयाणा में आर्यों का राज्य है। आर्यों के राज्य में इन चारों का प्रचलन कदापि नहीं हो सकता। हरयाणा में आर्यसमाज एक प्रबल शक्ति है। इस में कोई सन्देह ही नहीं। किन्तु आर्य लोग शराबबन्दी के लिए तो पूर्ण शक्ति लगा रहे हैं और सफलता प्राप्त नहीं हो रही तो आर्यसमाज का अगला कार्यक्रम यह होना चाहिए कि वहां आर्य विचार के दृढ लोगों को वोट दिलाने का पूर्ण परिश्रम किया जाए। आगामी चुनाव में आर्यसमाज सक्रिय भाग ले।

हरयाणा में आर्यसमाज के बहुत संस्थान हैं। चुनाव से एक मास पूर्व सब संस्थाओं में अवकाश घोषित करके सब स्त्री-पुरुष, लड़के-लडकियां प्रचार में पूर्णशक्ति लगाकर अनुकूल व्यक्तियों को सफल बनाएं तो सरकार की पहली बैठक में ही मांस, शराब दुराचार चोरी तथा बूढे पशुओं का सन्दिग्ध हत्यों में जाना रुक जाए।

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् अपने ही देश में अनुकूल परिस्थिति बनाने के लिए भी संघर्ष की आवश्यकता है। आर्य लोग अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जेलें भर सकते थे तो शराब जैसे महापाप के लिए भी संघर्ष करना ही होगा।

शिवरात्रि को ऋषि की आत्मा में बोध हुआ और उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया तथा सफलता प्राप्त की। ऋषि शिष्यों के लिए भी यही मार्ग है। नान्यः पन्था। माननीय चौधरी शेरसिंह जी को आगे के निर्वाचन में केन्द्र में न जाकर हरयाणा की राजनीति में कूद कर सरकार अपने ही हाथ लेनी अथवा शराब की पूर्ण बन्दिश करानी चाहिए। —शांतिप्रकाश आर्य

हिन्दी बनाम अंग्रेजी-अंग्रेजी देश की जनता की भाषा नहीं

—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
दयालसिंह कालेज, करनाल ।

●

(गतांक से आगे)

अंग्रेजी जानने वालों का ही विज्ञान एवं तकनीकी पर एकाधिकार बना हुआ है। जनसाधारण विज्ञान के लाभों से वंचित है। राष्ट्रीय विज्ञान, तकनीकी एवं विकास अध्ययन संस्थान द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण(इकोनामिक टाइम्स नई दिल्ली २०-१-८९) के अनुसार कृषि को छोड़कर अन्य क्षेत्रों में विज्ञान एवं तकनीकी का लाभ आम जनता तक बहुत कम पहुंचा है। विद्यार्थी भी अंग्रेजी नहीं समझ पाते। ऐसी स्थिति में युवा पीढ़ी के लिए अंग्रेजी के सहारे विज्ञान के गूढ़ विषयों को समझ पाना अत्यन्त कठिन हो गया है. क्योंकि अंग्रेजी उन की भाषा नहीं है। वे जबरदस्ती उसको पढ़ रहे हैं।

वैज्ञानिक क्षेत्रों में भी हमारे देश में सर्वोच्च कोटि का वैज्ञानिक काय नहीं हो पाता क्योंकि उसका माध्यम अंग्रेजी है। मौलिक अनुसंधान अंग्रेजी या विदेशी भाषाओं में नहीं हो सकता। इसके लिए हमें रूस और चीन की तरह अपनी भाषाओं को अपनाना होगा।

अंग्रेजी देश की भाषा नहीं है। इसका पठन-पाठन उद्देश्यविहीन है। वह देश की परम्पराओं से जुड़ा हुआ नहीं है। इसका अध्ययन इसके पढने वालों की व्यवहार को भाषा के साथ जुड़ा हुआ नहीं है और साहित्य रचना भी इसमें नहीं हो सकती। साहित्य रचना तो मातृभाषा में होती है या फिर राष्ट्रभाषा में हुआ करती है। किसी विदेशी या बाहरी भाषा में हम मौलिक लेखन नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में अंग्रेजी का अध्ययन राष्ट्र के भाषाई, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा आर्थिक लक्षणों से जुड़ा हुआ नहीं है।

इसके विपरीत हिन्दी जनता की भाषा है। वह देश की सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराओं से जुड़ी हुई है। वह फिल्मों की भाषा है देश की सर्वाधिक प्रचलित फिल्में हिन्दी में ही होती हैं। हिन्दी रेडियो की भाषा है, आकाशवाणी के गानों की भाषा है। यह दूरदर्शन की भाषा है, लोकप्रिय धारावाहिकों की भाषा है। रामायण की भाषा क्या थी ? हिन्दी। अंग्रेजी क्यों नहीं ? क्योंकि वह जनता की भाषा नहीं। देश की सांस्कृतिक एवं भाषाई परम्पराओं से जुड़ी हुई नहीं। दूरदर्शन के अन्य महत्वपूर्ण धारावाहिक सीरियल की भाषा हिन्दी ही क्यों चुनी गई ? क्योंकि देश की अधिकांश जनता इसको समझती।

अत: यदि हम हिन्दी को देश की, राष्ट्र की, जन-जन की सम्पर्क भाषा बनाना चाहते हैं तो हमें सभी स्तरों—सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक आदि स्तरों पर हिन्दी को अपनाना होगा। हिन्दी का विरोध राष्ट्र का विरोध है। हिन्दी का टकराव भारतीय भाषाओं से नहीं है, उसका विरोध अंग्रेजी के साथ है और वह भी राष्ट्रभाषा के प्रसंग में, भाषा के रूप में नहीं। यदि हम १८५७ से लेकर १९४७ तक देश की आजादी की लड़ाई लड़ सकते हैं और देश को आजाद करा सकते हैं, तो क्या आज अपनी भाषा को जनता की भाषा को भारत की भाषाओं को नहीं अपना सकते।

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य सभासदों से मार्च ९० तक का वार्षिक चन्दा उनकी आय के शतांश के अनुसार प्राप्त कर लेवें और उन्हें रसीद दे देवें। जिन समाजों के पास रसीद बही नहीं है, वे छपवा लेवें अथवा सभा कार्यालय रोहतक से ४)०० रुपए प्रति रसीद बुक (१०० रसीद) के लिए रोहतक भेजकर मंगवा लेवे। सभा ने रसीद बही छपवा दी है।

आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार वही आर्य सभासद चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं, जिनका नाम सदाचारपूर्वक आर्यसमाज के रजिस्टर में २ वर्ष तक अंकित रहा हो और वे अपने समाज को अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) चन्दा देते हों और सत्संगों में उनकी कम से कम २५% उपस्थिति रही हो।

अत: सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को इसी नियम के अनुसार आगामी चुनाव में मत देने वाले आर्यसभासदों से मार्च तक चन्दा प्राप्त करके सूची सभा को भेजें तथा अप्रैल मास में नियम अनुसार अपने आर्यसमाजो का वार्षिक चुनाव करें।

जो आर्यसमाज इस कार्य में सभा की सहायता चाहते हों, वे सभा को पत्र लिखें ताकि सभा की ओर से उपदेशक को भेजा जा सके

—सभामन्त्री

ओ३म् विश्वानि देव सवित:- इत्यादि मन्त्र

प्रार्थना

दूर करो प्रभु दुरित हमारे ।
आये हम सब शरण तुम्हारे ।

काम - क्रोध - मद मोह का चक्कर ।
छाया हम पर महा भयंकर ।
कैसे लें हम इनसे टक्कर ।
हमला करते मिलकर सारे । दूर० १ ।

सत्य मार्ग हम भूल गए हैं ।
धर्म के हो प्रतिकूल गए हैं ।
पाते दु:ख हम नित्य नए हैं ।
हम मतिमन्द महा दुखियारे । दूर० २ ।

झूठ कपट - छल चक्र में नस कर ।
पाप अविद्या पंक में धस कर ।
कुमति कुरीति में सब फंस कर ।
तुम बिन हमको कौन उभारे । दूर० ३ ।

आत्म ज्ञान की ज्योति जला दो ।
दुर्गुण सकल कुभाव भगा दो ।
'छाजूराम' सत्पथ दिखला दो ।
कर दो उज्ज्वल भाव हमारे । दूर० ४ ।

—छाजूराम शर्मा शास्त्री

● मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

● मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

● मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानताहूं। —महात्मा गांधी

आर्यवीरों की षड्यन्त्रकारियों को चेतावनी

भजन—तर्ज हरयाणवी

रचयिता—रामचन्द्र आर्य 'नलवा'

हम आर्य वीर सें कुर्बानी दे देंगे।
देश धर्म पै अपनी जवानी दे देंगे॥

विदेशी ताकत नें म्हारे आपस में फूट डाली क्यूं।
भाई-भाई लड़ा-भिड़ा के गल में डोर घाली क्यूं।
के हक था उनका दे रहया जंग झाली क्यूं।
लागरी जो आग देश में वा इनकी लगाई सै।
दे हथियार भड़कावन की इनकी सफाई सै।
कदे पंजाब कदे कश्मीर कदे असम की लड़ाई सै।

पर याद राख इसा पानी दे देंगे।
पीले ही मरज्यागा ध्यान सयानी दे देंगे॥ हम आर्य वीर——
दुश्मन तै व्यवहार करया के थारे याद नहीं सै।
लगिज्या सै चोट इसी फेर करे फरियाद नहीं सै।
टिक जाओ जल्दी ना तै होवे आबाद नहीं सै।
मत सोचो पाछै हटज्याओ कर देखल मतना।
लगज्यागी चोट ऐसी छेड़िए जग मतना।
आर्य हिन्दू करे अपना बरबाद बरुत ना।
दही के बदले रूई खानी दे देंगे।
पर शान आपणी बचाणी ले लेंगे॥ हम आर्य वीर——

शहीदों का खून हम तो वीरों की सन्तान हैं।
वेद शास्त्र धर्म प्रथम सबका ही ज्ञान है।
बच्चा-बच्चा जाणे से रखणा देश का मान है।
स्वराज के पुजारी हम अहिंसा के अग्रदूत हैं।
दयानन्द के सैनिक वीर हकीकत से पूत हैं।
मरज्यांगे देश धर्म पै भारत माता के सपूत हैं।

देश खातिर बात स्याणी दे देंगे।
शांति तै रहो ना इसी हानि दे देंगे॥ हम आर्य वीर——
आर्यों का देश भारत शांति का पुजारी है।
मानवता है धर्म हम वेद के प्रचारी हैं।
कर देंगे बरबाद जब भी युद्ध की तैयारी है।
सुलगती चिंगारी को कदे हाथ लगाओ मतना।
जला के भस्म कर देंगे भ्रम फैलाओ मतना।
करदेंगे बरबाद दुश्मनी का हाथ बढाओ मतना।
आवेगी मुसीबत हाथ कुल्हाड़ी ले लेंगे।
वतन खातिर या कसम उठाणी ले लेंगे॥ हम आर्य वीर——

हम झूठी करे बडाई तै ठाके नै इतिहास देख।
चन्द्रशेखर भगतसिंह शहीद वीर सुभाष देख।
वीर हकीकत बालक धर्म रक्षक खास देख।
सोया था देश जब दयानन्द ने आन जगाया था।
आजादी के पाछे भी कई देशों नै धमकाया था।
जवाब मिल्या भाग गए ना कदम बढ़ाया था।

लाजपत सी लाठी खाणी ले लेंगे।
लड़के मरण की खास पहचानी दे देंगे॥ हम आर्य वीर——
छुप-छुप कै बकवास करे ये मर्दों का काम नहीं।
वीर सैं तै बस आगे क्यूं लड़ें सरे आम नहीं।
रामचन्द्र कह दिए के आर्य म्हारा नाम नहीं।
वीर हैं सदा से हम इतिहास ने बताया है।
मर जाओ पर हटो मत वीरों ने सबक सिखाया है।
'आर्य मास्टर' ने अपना नलवा गाम बताया है।
के सोचै सै बात खास बताणी दे देंगे।
वीरों की हकीकत गाणी दे देंगे॥ हम आर्य वीर——

पता— कार्यालय
विकास शिक्षा समिति रजि० बड़वा (भिवानी)

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्यसभा मोरीशस पोर्ट लूई से पत्र

श्रीमान् माननीय भाई केदारसिंह जी आर्य,

सादर सप्रेम नमस्ते।



निवेदन है कि मैं आर्य सभा मोरीशस के विशेष निमन्त्रण पर २७अगस्त१९८९ को वैदिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार करने के लिए मोरीशस पहुंचा था। इस आर्यों के देश में ६ मास तक गली-गली में वैदिक धर्म का प्रचार आर्यसभा के माध्यम से बहुत ही लगन एवं तत्परता से किया।

इन महीनों में अश्वमेध ब्रह्म पारायण महायज्ञ चारों वेदों से देश के अनेक भागों में किया गया जिसमें हजारों नर नारियों ने भाग लेकर लाभ उठाया तथा आर्य समाज के संगठन का परिचय दिया। इसके अतिरिक्त सारे देश के अनेक भागों में यजुर्वेद पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया गया। जिन में यज्ञ के पश्चात् मेरे वैदिक प्रवचन बहुत ही प्रभावशाली रूप से पसन्द किए गए। पुरोहितों को यज्ञ एवं वैदिक कर्मकाण्ड के विषय में जानकारी दी गई। आर्यसमाज के वार्षिक उत्सवों में भी अनेक भाषण दिए। प्रत्येक रविवार को प्रात: ६ बजे आकाशवाणी से वैदिक प्रवचन तथा अनेक सामाजिक सुधारों के लिए भाषण हुए। जिन्हें देश के लाखों लोगों ने सुना और वे बहुत प्रभावित हुए। इस प्रकार सारे मोरीशस में जागृति फैली। आर्यसमाज के संगठन पर विशेष बल दिया गया।

इस प्रकार मुझे वैदिक धर्म के प्रचार में पूरी सफलता प्राप्त हुई उसका कारण आर्यसभा के अधिकारियों तथा पुरोहितों द्वारा पूरा सहयोग देना ही है। साथ ही आपकी शुभ कामनाएं भी मुझे वैदिक धर्म का प्रचार करने में उत्साहित करती रही हैं।

मैं अब ६ महीने के बाद मोरीशस के ५० आर्य भाइयों को साथ लेकर एक मार्च १९९० को दक्षिण भारत में प्रचार करता हुआ १२ मार्च को दिल्ली पहुंचूंगा। आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में ठहरेंगे।

—आपका अपना ही

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्यसभा मोरीशस पोर्ट लूई

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजु: ३६।३ ॥

अर्थ— तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू।
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान।
तेरा ही ध्यान धरते हम, मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धियों को, श्रेष्ठमार्ग पर चला।
तूने ही वेद ज्ञान का सागर बहा दिया।
ऋषि ने दिव्य वेद का, दीपक जला दिया।
ईश्वर का ज्ञान वेद है, तूने बता दिया।
केवल है ओ३म् नाम, जो मन में बसा लिया।

—केवलानन्द सरस्वती वैदिक सत्संग आश्रम, पुष्कर

सम्पादक के नाम पत्र

यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि आज "सर्वहितकारी" पत्र उच्चकोटि के पत्रों में गिना जाने लगा है। इसके लेख अब गहन विचारों वाले सामयिक तथा सत्यपूर्ण हैं। इसके पढ़ने से व्यक्ति अपने विचारों में नवीनता तथा उत्तेजना अनुभव करता है। शराब अश्लीलता तथा अंग्रेजीयत की थोथी दम्भना की पोल यह छोटासा पत्र बखूबी खोल रहा है। निम्नलिखित उक्ति इस पत्र पर बिल्कुल खरी उतरती है:—

सुतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगे घाव करें गम्भीर।।

सर्वहितकारी के छोटे तीर रूपी लेख सामाजिक बुराई तथा सामयिक समस्याओं पर गहरे घाव करके उनका सही सही खुलासा सर्वसाधारण के सामने रखते हैं। ७ फरवरी १९९० का अंक अत्यन्त अनूठे समाचारों व प्रयत्न को दर्शाता है। प्रो० शेरसिंह जी के सामयिक लेख, श्री चन्द्रप्रकाश जी का अंग्रेजी पर अपव्यय सम्बन्धी आंकड़े सही तथ्य हैं। श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी के सुझाव जो पिछले अंकों में आते रहे अत्यन्त ठोस थे।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी जिला स्तर पर जो वेदप्रचार मण्डलों को सक्रिय करने का प्रयास कर रहे हैं वह तो बहुत ही सराहनीय कदम है। फरीदाबाद की बैठक का विवरण पढ़कर दिल उछलने लग गया। प्रो० साहब जैसे आर्यसमाज के कार्य को ठोस गति देंगे हम उनका पुरजोर सहयोग करें। जवान काम चाहता है। यदि आर्यसमाज सामाजिक बुराइयों, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार तथा शिक्षा-नीति, संचार-नीति आर्थिक नीतियों को भी मद्दे नजर रखते ठोस कार्यक्रम निरन्तर चलाए तो दूसरी संस्था और संगठनों में गए व्यक्ति भी आर्यसमाज का सहयोग देने में पीछे नहीं रहेंगे। और नौजवान आर्यसमाज से जुड़ने में गौरव महसूस करेंगे। जब जब आर्य समाज में शिथिलता आती है तो नौजवान उससे दूर हट जाता है। लेकिन ठोस कार्यक्रम चलेगा तो नवयुवक उससे फिर जुड़ जाएंगे।

हमें सर्वहितकारी के ग्राहक बढ़ाने का भी विशेष ध्यान देना चाहिए। मैं सर्वहितकारी के २० ग्राहक बनाने का संकल्प लेता हूं। सम्पादक महोदय को समय-समय पर यह निवेदन छापना चाहिए कि सर्वहितकारी में अपने-अपने ग्राम व नगर की संघर्षपूर्ण घटनाओं के समाचार भेजें तथा कभी-कभी किसी मुद्दे को लेकर लेख आमन्त्रित करना भी उचित होगा। आशा है नववर्ष में सर्वहितकारी में और तेजी से अग्रसर होगा। —महावीर सिंह फोगाट

आर्यसमाज प्रेमनगर रोहतक

× × ×

आदरणीय सभा प्रधान जी, यह जानकर अति हर्ष हुआ कि आप वेद प्रचार कार्य को उन्नत बनाने के लिए हरयाणा प्रांत के सभी जिलों में आर्यसमाजों का तूफानी दौरा कर रहे हैं। इस पुनीत कार्य के लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

दिनांक 21-1-1990 रविवार को जो आपने भिवानी जिले की बैठक में सभा की ओर से एक भजनमण्डली तथा एक उपदेशक की नियुक्ति करने की घोषणा की है इसके लिए आपका हार्दिक धन्यवाद है। अब भिवानी जिले में वेदप्रचार का कार्य सुचारू रूप से चल सकेगा। वेदप्रचार की दिशा में यह आपका एक ऐतिहासिक निर्णय है जो कि बहुत ही सफल सिद्ध होगा। हम पूर्ण रूप से आपको सहयोग देते रहेंगे। --आमुदर्शन योगाचार्य

आचार्य बाल सेवा आश्रम (अनाथालय) भिवानी

६ मार्च को रोहतक में शराबबंदी प्रदर्शन

हरयाणा सरकार की ओर से ६ मार्च १९९० मंगलवार को रोहतक में शराब के ठेकों की नीलामी का कार्यक्रम है। अतः जिला रोहतक के आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि वे ६ मार्च को सुबह ९ बजे तक दयानन्दमठ रोहतक अथवा आबकारी कराधान कार्यालय माडल टाउन रोहतक अधिक से अधिक संख्या में पधार कर शराबबन्दी प्रदर्शन में भाग लेकर रचनात्मक कार्य में सहयोग करें।

—सभा मन्त्री

वैदिक आश्रम आर्यसमाज न्यायना जिला हिसार का उत्सव

वैदिक आश्रम आर्यसमाज न्यायना जिला हिसार का वार्षिक उत्सव २०, २१ जनवरी ९० को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री प्रतापसिंह शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज हिसार, स्वामी अग्निदेव भीष्म, श्री दलबीर सिंह आर्य हिसार के व्याख्यान तथा सभा की ओर से प० ईश्वर सिंह तूफान, पं० जयपाल सिंह आर्य तथा श्री रामनिवास आर्य हिसार के प्रभावशाली भजन हुए। शराब, दहेज, मांस आदि सामाजिक बुराइयों का खण्डन किया। सभा को ६६० रुपए दान दिया निकटवर्ती ग्रामों से भी भारी संख्या में नर-नारियों ने प्रचार सुना।

स्वामी राममुनि जी ने २० सत्यार्थप्रकाश नवयुवकों में वितरित किये। वैदिक आश्रम सेवक सभा के कार्यकर्त्ताओं ने इस उत्सव को सफल करने के लिए दिन रात कार्य किया। आर्य जनता से अपील है कि इस आश्रम की चारदीवारी तथा यज्ञशाला निर्माण हेतु उदारता पूर्वक दान देकर सहयोग प्रदान करें।

—पं० राममुनि वानप्रस्थी
संचालक वैदिक आश्रम न्यायना जि० हिसार

नौजवानों को सन्देश

करना इधर को ध्यान जवानों हुई देश की हान जवानों।
देश को तुम्हें बचाना पहले जैसा बनाओ।।

१ सोने की चिड़िया कहलाता था ये कभी देश तेरा।
आज मिट्टी की चिड़िया भी नहीं रहा ये देश तेरा।
करना नव निर्माण जवानों - ठानों कठिन ठान जवानों।
देश को ....

२ आर्यवर्त कहलाता था ये विश्व में महान् देश।
वेदों का सुनाया इसने सारे विश्व को सन्देश।
था सबसे धनवान जवानों बलवान और विद्वान जवानों।
देश को ....

३ हम थे सब आर्य भाई - नहीं थे मुस्लिम, सिख, ईसाई।
वेदों के पुजारी थे सब नहीं करते थे द्वेष लड़ाई।
आज बने शैतान जवानों - स्वार्थी और बेईमान जवानों।
देश को ....

४ विषय विकारों में ना खोना अनमोल जीवन तुम्हारा।
देश धर्म पर मोवो मरना हो सफल जीवन तुम्हारा।
सुनो वेद का ज्ञान जवानों - बलवन्त का व्याख्यान जवानों।
देश को तुम्हें बचाना ....

—बलवन्तसिंह आर्य
गांव टसका जिला अम्बाला

अबोहर, फाजिल्का क्षेत्र की पंचायतों के प्रस्ताव

यह ग्राम पंचायत/सभा उप-प्रधानमन्त्री चौ० देवीलाल से मांग करती है कि पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के २९ जनवरी १९७०के एवार्ड को लागू करके हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र को हरयाणा में मिलाकर इस क्षेत्र की न्यायोचित मांग पूरी की जावे। इस क्षेत्र को हरयाणा में मिलाने की प्रक्रिया में कुछ समय लगे तब तक इस क्षेत्र को चण्डीगढ की भांति, फौरन यू० टी० (यूनियन टैरीटरी) बनाकर इस क्षेत्र को भी केन्द्रीय शासन के अधीन रखा जाए।

चण्डीगढ व हिन्दीभाषी अबोहर फाजिलका क्षेत्र के बारे में २५ जुलाई १९८५ को जो राजीव लोंगोवाल समझौता हुआ, उसमें हरयाणा को न पूछा गया तो आपने उसे ठुकराते हुए, अबोहर फाजिल्का क्षेत्र की जनता की भावना जानने के लिए १६-१७ अगस्त १९८५ को इस क्षेत्र के गांवों का दौरा कर बडी-बड़ी जनसभाओं में घोषणा की कि हम पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के २९ जनवरी १९७० के एवार्ड को मानते हैं जिसके अनुसार चण्डीगढ पंजाब को व १०५ गांव हिन्दी-भाषी गांव व अबोहर फाजिल्का शहर हरयाणा को एक साथ दिए जावे। तब आपने हरयाणा संघर्ष समिति बना हिन्दी-भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा में मिलाने का जोरदार आंदोलन चलाया। आज आप भारत के उप-प्रधानमन्त्री हैं, व आपके सुपुत्र हरयाणा के मुख्यमन्त्री हैं। अत: इस क्षेत्र का हरयाणा में मिलाने के आपके उद्देश्य को सफल बनाने का यह सबसे अनुकूल अवसर है, जिसे आप यथाशीघ्र पूरा करेंगे ऐसी इस क्षेत्र की जनता को पूरी आशा है। मा० तेगराम पूर्व विधायक

—मेजर सुरेन्द्र मार्ग अबोहर

आर्य लेखक कोष के लिए आर्यजगत् से अपील

आर्यजगत् को यह प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के विख्यात शोध विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय आर्यसमाज के लगभग १००० लेखकों, साहित्यकारों, कवियों और विद्वानों का जीवन परिचय तथा उनकी साहित्य साधना का एक विशाल परिचयात्मक ग्रन्थ आर्य लेखक कोष के नाम से तैयार कर रहे हैं। इस महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थ को शीघ्र ही मुद्रण के लिए प्रेस में दिया जा रहा है। इसमें पर्याप्त धन व्यय होगा और यह महत् साहित्यिक अनुष्ठान आर्यजनों के सहयोग एवं सहायता से ही पूरा होगा।

देश के प्रत्येक आर्य एवं आर्यसमाज से मेरी अपील है कि वह भारतीय जी को इस उत्तम कार्य में पूर्ण आर्थिक सहयोग दे। इस ग्रंथ का अग्रिम मूल्य सौ रुपए अविलम्ब भारतीय जी को भेज दें ताकि वर्षान्त तक ग्रन्थ छपते ही यह उनकी सेवा में भेजा जा सके। आर्य-समाजें अधिक सहायता न्यूनाति न्यून १००० रुपए भेजें, ताकि सहस्र बजट का यह ग्रन्थ शीघ्र पाठकों को प्राप्त हो सके।

निवेदक:—

सुमेधानन्द मन्त्री,	स्वामी सर्वानन्द प्रधान,
वैदिक यतिमण्डल,	वैदिक यतिमण्डल,
दयानन्दमठ चम्बा (हि०प्र०)	दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब)

शराब हटाओ देश बचाओ।

१४ वां वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ३ जनवरी से ७ जनवरी रविवार तक झाडौदा कलां नई दिल्ली में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस ग्राम में आर्यसमाज की ओर से यज्ञ समिति प्रतिवर्ष एक-एक वेद से यज्ञ कराती है। इस वर्ष ब्रह्मचारी चेतनदेव जी नैष्ठिक और पं धर्मदेव 'मनीषी' वेदमार्तण्ड (गुरुकुल कालवा) से सामवेद पारायण यज्ञ कराया। जिसका ग्रामवासियों पर अच्छा प्रभाव रहा।

—भक्त शीशराम झाडौदा कलां

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।—महर्षि दयानन्द

वैदिक धर्म प्रचारक

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

वैदिक धर्म प्रचारक है तुझको शतबार बधाई।
मृतकों में दी जान डाल और वृद्धों में तरुणाई।
सोई हुई बेसुध जनता को जाकर तू ही जगाता।
विपदाओं के तूफानों से जाकर के टकराता।
पाखण्डों का गढ़ ढा देता सत्य मार्ग दर्शाता।
दयानन्द ऋषिवर का घर-घर में सन्देश सुनाता।
सूरज बन अज्ञान तिमिर को तूने रात हटाई।
वैदिक धर्म प्रचारक है तुझको शतबार बधाई।१।

सुना वीर रस युवकों का तू गर्म रक्त कर देता।
कायर सुस्त निकम्मों में भी चेतनता भर देता।
मधुर सुधामय वाणी से तू मन सबका हर लेता।
तेरे दम से बने अनेकों नेता और विजेता।
आर्यसमाज वाटिका सुरभित सुमनों से सरसाई।
वैदिक धर्म प्रचारक है तुझको शतबार बधाई।२।

देश विदेश नगर गांवों में वैदिक नाद बजाता।
लट्ठ तेग तलवार जेल फांसी से नहीं घबराता।
बन्धु विधर्मी हुए शुद्ध करके फिर आर्य बनाता।
यथाशक्ति तूही ऋषि का पावन आदेश निभाता।
करता नहीं प्रचार कोटिजन बनते यवन ईसाई।
वैदिक धर्म प्रचारक है तुझको शतबार बधाई।३।

घूम रहे हैं आज सहस्रों जन जीवन उद्धारक।
वानप्रस्थ संन्यासी जग में विचरें आर्य प्रचारक।
तजकर प्रिय परिवार प्रचार संलग्न सुविप्र विचारक।
महोपदेशक भजनोपदेशक सुकवि विविध गुणधारक।
देश विदेशों में जाकर के ओम ध्वजा फहराई।
वैदिक धर्म प्रचारक है तुझको शतबार बधाई।४।

वैदिक धर्म प्रचारक तू वैदिक प्रचार किए जा।
ऋषि सम अमृत पिला और को खुद विषपान किए जा।
आर्यसमाजोन्नति हित तन मन सर्वस्व दिए जा।
कहे 'स्वरूपानन्द' ईश का तू आधार लिए जा।
आर्य जगत् में होगी तेरी निश्चय कीर्ति बड़ाई।
वैदिक धर्म प्रचारक है तुझको शतबार बधाई।५।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए वीर प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २१२०७/७१ रजि०न-

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

संपादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए० फाल्गुन ११, २०४६ वि०

वर्ष १७ अंक १५ ७ मार्च, १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

प्रेम-प्रसार का पर्व—होलिकोत्सव

—[illegible]

●

संस्कृत में अग्नि में भुने हुए अर्द्ध-पक्व अन्न को "होलक" कहते हैं, हिन्दी का प्रचलित "होला" शब्द इसी का अपभ्रंश है। प्राचीन नवान्नेष्टि में नवागत अन्न के अर्धों के होम के कारण उसको "होलिकोत्सव" कहते थे।

एक समय राजा पृथ्वीराज चौहान ने अपने दरबार के राजकवि चन्द से पूछा कि हम लोगों में जो होली के त्योहार का प्रचार है, वह क्या है? हम सभ्य आर्य लोगों में ऐसे अनार्य महोत्सव का प्रचार क्योंकर हुआ कि आबाल-वृद्ध सभी उस दिन पागल से होकर बीभत्स रूप धारण करते तथा अमंगल और कुत्सित वचनों को निर्लज्जतापूर्वक उच्चारण करते हैं। यह सुनकर कवि बोला—"राजन! इस महोत्सव की उत्पत्ति का विधान होली की पूजा विधि में पाया जाता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा में (होलिकोत्सव) होली का पूजन कहा गया है। उसमें लकड़ी और घास-फूस का बड़ा भारी ढेर लगाकर वेदमन्त्रों से विस्तार के साथ होलिका-दहन किया जाता है। इसी दिन हर महीने की पूर्णिमा के हिसाब से इष्टि (छोटा सा यज्ञ) भी होता है। इस कारण भद्रा रहित समय में होलिका-दहन होकर इष्टि यज्ञ भी हो जाता है। पूजन के बाद होली की भस्म शरीर पर लगाई जाती है।

होली के लिए प्रदोष अर्थात् सायंकाल व्यापिनी पूर्णिमा लेनी चाहिए और उसी रात्रि में भद्रारहित समय में होली प्रज्वलित करनी चाहिए। चन्द कवि आगे कहने लगे—फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन जो मनुष्य चित्त को एकाग्र करके हिंडोले में झूलते हुए श्री गोविन्द पुरुषोत्तम का दर्शन करता है वह निश्चय ही बैकुण्ठ में जाता है। यह उत्सव होली होने के दूसरे दिन होता है। यदि पूर्णिमा की पिछली रात्रि में होली जलाई जाए तो यह उत्सव प्रतिपदा को होता है और इसी दिन अबीर गुलाल की फाग होती है। उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त इस फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन चतुर्दश मनुष्यों में से एक मनु का भी जन्म है। इस कारण यह मन्वादि तिथि भी है। अतः उसके उपलक्ष्य में भी उत्सव मनाया जाता है। कितने ही शास्त्रकारों ने तो संवत् के प्रारम्भ एवं वसन्तागमन के निमित्त जो यज्ञ किया जाता है और जिसके द्वारा अग्नि के अधिदेव स्वरूप का पूजन होता है वही पूजन इस होलिका का माना है। इस कारण कोई कोई होलिका दहन को संवत् के प्रारम्भ में अग्निस्वरूप परमात्मा का पूजन मानते हैं।

वैदिक धर्मावलम्बियों में प्राचीन काल से यह प्रथा चली आती है कि नवीन वस्तुओं को देवों को समर्पण किए बिना अपने उपयोग में नहीं लाया जाता है। जिस प्रकार मानव देवों में ब्राह्मण वर्ण सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार भौतिक देवों में अग्नि सर्वप्रधान है। वह विद्युत रूप से ब्रह्माण्ड में व्यापक है। देवयज्ञ का प्रधान साधन भौतिक अग्नि ही है। क्योंकि वह सब देवों का दूत है। वेद में उसको अनेक बार 'देवदूत' कहा गया है। वही सब देवों को होमे हुए द्रव्य पहुंचाता है। इसलिए यज्ञ के माध्यम से होलिकोत्सव पर नवागत अन्न सर्वप्रथम अग्नि के ही अर्पण किए जाते हैं और तदन्तर मानवदेव ब्राह्मण वर्ण के विद्वद जनों को भेंट करके अपने उपयोग में लाए जाते हैं। इसलिए अब तक भी जन साधारण में यह प्रथा प्रचलित है कि जब तक नवीन अन्नों को व फलों को पूजा के प्रयोग में न लाया जाए, तब तक

(शेष पृष्ठ २ पर)

'होली आयी! होली आयी'

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

●

आपस का हम प्रेम बढ़ाएं,
भेदभाव सब दूर भगाएं,
जाति-पाति के काले बादल-
इस धरती से दूर हटाएं,
यही सन्देशा है यह लायी।
होली आयी, होली आयी॥

सुखी-समृद्ध हो जन-जीवन,
ऐश्वर्यों से पूरित भू-कण,
नई सफलता, समरसता से,
आह्लादित हो मानव-अभिमन,
जाग्रत, जग में, ज्योति जगायी।
होली आयी, होली आयी।

फैले धरती पर अपनापन,
विस्तृत हो शुचि प्यार अप्रमन,
दूर हटे इन महाशक्तियों--
का सब आपस का कडुवापन,
जगा रही युग की तरूणायी।
होली आयी, होली आयी।

इसके स्वागत में बसन्त नव,
हर्षित कोकिल करती कलरव,
नव आशा-अभिलाषाओं के--
निकल रहे डालों पर पल्लव,
प्रकृति वधू नव, गई सजायी।
होली आयी, होली आयी॥

प्रेम प्रसार का पर्व—होलिकोत्सव

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उनको लोकभाषा में 'अछूत व छूते' कहते हैं। तदनुसार ही आषाढी की नवीन फसल आने पर नए यवों (अन्नों) को होमने के लिए इस अवसर पर प्राचीन काल में नवसस्येष्टि होलिकेष्टि या होलिकोत्सव होता था।

वर्तमान समय में लकड़ी और उपलों के ढेरों के रूप में होली जलाने की प्रथा प्राचीन सामूहिक नवसस्येष्टियों का विकृत रूप है। आर्यसमाज के दृष्टिकोण से होलिकोत्सव इस आषाढी नवान्नेष्टि का उपर्युक्त देवयज्ञ द्वारा देवपूजन, विद्वसमादर वायु-संशोधन, गृह परिमार्जन तथा नवीन वस्त्र परिवर्तन धार्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप है।

वस्तुतः होली प्रेम प्रसार का पर्व है। इस पर्व पर सब लोग ऊंच-नीच, छुटाई-बड़ाई का विचार छोड़कर भारत के सभी प्रांतों में हिन्दू-सिक्ख, ईसाई, मुसलमान आदि सभी नागरिक स्वच्छ हृदय से आपस में मिलते हैं। यदि किसी कारणवश वर्ष में वैर-विरोध ने मनों को अपना आवास बना लिया है तो उनको अग्निदेव की साक्षी में भस्मसात कर लिया जाता है। यह होली दो फटे हृदयों को मिलाती है एकता का पाठ पढ़ाती है। होली का पवित्र पर्व आनन्द और उल्लास का महोत्सव था किन्तु काल की कराल गति से आजकल उस में भी कदाचार और अभद्र दृश्य प्रवेश पा गए हैं। आजकल भाभियों से होली खेलने के रसिया शराब के नशे धुत्त होकर शिक्षित, अर्ध-शिक्षित, अनपढ़ सभी तरह के लोग राक्षसीय लीलाएं करते हुए त्योहारों की रक्षा की दुहाई देते हुए इस होलीकोत्सव (फाग) पर जो हुल्लड़ मचाते हैं उन्हें देखकर लज्जा को भी लज्जा आती है। फाग के बहाने अपने इष्ट मित्रों साथी संगियों के श्रेष्ठ वस्त्रों को लाल, पीले, हरे रंग से लतपत करके उनके मुंह पर गुलाल लपेट कर तथा आंखों में अबीर झोंक कर उनकी वह दुर्गत बनाते हैं कि उनको देख कर दया आती है।

इस आधुनिक रंग बखेरने और गुलाल उड़ाने की कुप्रथा का मूल प्राचीनकाल में यह प्रतीत होता है कि पुराने भारतवासी इस पवित्र पर्व पर सुगन्धित द्रव्यों को परस्पर उपहार रूप में देते थे। इस अवसर पर जबकि बसन्त यौवन पर होता है पीताम्बर धारण करते थे गुलाब जल का छिड़काव भी शायद होता हो, इस अवसर पर शिक्षाप्रद नाटकों (अभिनयों) के खेलने की रीति प्रचलित थी। महाभारत काल के बाद इस पर्व पर कुछ वाममार्गी प्रथाएं प्रचलित हो गई जो अशोभनीय हैं।

भविष्य पुराण के अनुसार नारद जी ने राजा युधिष्ठिर से होली के सम्बन्ध में कहा था—फाल्गुण की पूर्णिमा को सब मनुष्यों के लिए अभय दान देना चाहिए। पौराणिक इस पर्व से दैत्यराज हिरण्यकशिपु की भगिनी और प्रहलाद की भुआ, जो प्रहलाद को लेकर अग्नि में बैठी थी, जिसका नाम होलिका था वह जल गई और भक्त प्रहलाद बच गया था, प्रतिवर्ष होलिका नाम से होली जलाने का सम्बन्ध मानते हैं। तथ्य चाहे कुछ भी हों हवन, यज्ञ को तो इस अवसर पर सभी धर्म व सम्प्रदाय मतमतान्तर वाले स्वीकार करते हैं। होली भी एक यज्ञ का विकृत रूप है जो हमें यज्ञीय (यज्ञ रूप) जीवन की प्रेरणा देता है।

आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, उपप्रधान—श्री ज्ञानी राम आर्य एवं श्री भरतसिंह आर्य, मन्त्री—डा० ओमप्रकाश आर्य, उपमन्त्री—श्री करणसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री महेन्द्रसिंह आर्य, लेखानिरीक्षक—सूबेदार रामेश्वरदास आर्य, संगठन मन्त्री—श्री बाजेराम आर्य।

होली पवित्रता से मनाएं

फाल्गुन मास की पूर्णिमा को प्रतिवर्ष होली का पर्व मनाया जाता है। आधुनिक युग में हमारा प्रत्येक पर्व विकृत हो चुका है। होली को जितना हुल्लड़ होता है उतना अन्य पर्व पर नहीं होता। शराब पीकर परस्पर गन्दे रंग, पानी कीचड़ आदि फेंकना कहां की शालीनता है? आजकल तो युवक इतने बिगड़ गए हैं कि होली से कई दिन पहले ही विशेषकर माता बहनों पर पानी के गुब्बारे अनैतिक ढंग से मारते हैं और भद्दी आवाजें कसते हैं और बेचारी मां बहनें शर्म में डूबकर रह जाती हैं। अनेक जगह इन्हीं कारणों से सिर फुटौव्वल भी होती है। खुशी गमी में बदल जाती है और परस्पर पक्की शत्रुता हो जाती है। यह विष-क्रीड़ा यहीं नहीं रुकती बल्कि बढ़ती जाती है। परस्पर शत्रु भाव रखने वाले व्यक्ति त्योहारों पर धोखे से वार करते देखे गए हैं। अनेक नवयुवकों की जानें होली और दिवाली पर जाती हैं।

होली दिवाली पर जो बम पटाखे छोड़े जाते हैं एक तो यह देश का करोड़ों रुपया बर्बाद करने का साधन बन गया है। दूसरे इनसे इस दिन जो भयावह प्रदूषण फैलता है वह अलग। हजारों टन प्रदूषित द्रव्य वायु में भर जाते हैं जो सीधे श्वास में पीए जाते हैं। इसके अतिरिक्त बम पटाखों से अनेक भाई बहनों के अंग भंग हो जाते हैं तथा अनेक जगह आगजनी की घटनाएं होती हैं और अनेक व्यक्ति तो जान से हाथ धो बैठते हैं। यह भी कैसा त्योहार (मजाक का ढंग) जो हंसते खिलते घरों के दीपक को भी बुझा डाले? हा! भारतीय जन! तेरी बुद्धि पर तरस आता है।

मैं प्रत्येक प्रबुद्ध भारतीय से, सामाजिक संगठनों से, नेताओं से सभी धार्मिक लोगों से प्रार्थना करता हूं कि स्वयं अपने परिवार को तथा अन्य लोगों को होली पवित्रता व शालीनता से मनाने का प्रेरणा दें। सरकार को भी बम पटाखे और अश्लीलता पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। इस दिन शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध होना चाहिए।

यह ठीक है कि होली वसन्त (बसन्त) का उमंग भरा पर्व है। सर्दी गर्मी से दूर वातानुकूलित ऋतुराज का मस्ती भरा प्रेम, एकता व पुष्टि का सन्देश है। इसे निम्न प्रकार से मनाना ही युक्तिसंगत होगा—

१- होली का हवन से सीधा सम्बन्ध है। बसन्त पंचमी से ही सभी लोग उत्तम वृक्षों की समिधाएं श्रद्धानुसार सामूहिक स्थल पर डालते लगते हैं। पूर्णिमा के दिन उत्तम सामग्री, घृत व नए अन्नों की बालियां सभी पहले मन्त्रोच्चारपूर्वक अग्नि में समर्पित की जाएं जिस से देव (प्रकृति) पुष्ट हो तथा असमय वर्षा व ओले न गिरें। बाद में सभी हव्य पदार्थों (होले हलवा) आदि परस्पर बांटें और खाएं। परस्पर यज्ञ शेष हव्यों के आदान प्रदान के अतिरिक्त गुलाब जल व इत्र का परस्पर छिड़काव किया जा सकता है। सभी गले मिलें। घर-घर हव्य तथा शुभकामना बांटें। विद्वानों के उपदेश सुनें तथा उन्हें अन्न धन दान करें।

२- दोपहर बाद शारीरिक प्रतिस्पर्धाएं आयोजित करें तथा विजयी लोगों व युवकों को इनाम दें तथा उनकी शोभा यात्रा भी निकाली जा सकती है।

३- शाम को श्रेष्ठ भजन गीतों, गजलों और कविता सुनने व श्रेष्ठ नाटकादि खेलने के कार्यक्रम करें।

इस प्रकार होली पवित्रता व शालीनता से मनाएं। आशा है भारतीय लोग भारतीय पर्वों की पवित्रता और गरिमा को बिगड़ने से अवश्य बचायेंगे।

निवेदक—

भारतीय संस्कृति प्रसार संघ रोहतक आर्यसमाज प्रेमनगर रोहतक

जनवादी नौजवान सभा, रोहतक

प्रजातन्त्र मांगता है आत्मानुशासन और संयम

—प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जिन देशों में प्रजातन्त्र नहीं है, वहां उसकी स्थापना के लिए भूख जाग चुकी है। परन्तु जहां प्रजातन्त्र है वहां वह बना रहे, उसके लिए जिस मनोवृत्ति की जरूरत है उसका अभाव होता जा रहा है। चुनाव के कानून और उसके साथ जुड़ी हुई आचार संहिता की अवहेलना करना आज बहादुरी तथा सफलता की कुंजी मानी जाने लगी हैं और उन नियमों और आचार संहिताओं का पालन करना कमजोरी और असफल राजनीति मानी जाने लगी है। अकबर इलाहबादी का शेर बरबस याद आ जाता है:—

"कद्रदानों की तबीयत का अजब रंग है आज,
बुलबुलों को यह हसरत है कि उल्लू न हुए।"

जनता में घृणा फैलाने वाले गन्दे नारे लगाना, उनको धड़ों में बांट कर जाति-पाति के या दूसरे संकीर्ण विचार फैलाना, जनता को उत्तेजित करके हिंसा के लिए हथियारबन्द करना और चुनाव जीतने के लिए भोली जनता को हिंसा की आग में झोंक देना, ऐसे घृणित कार्य हैं जिनको रोकना स्वस्थ प्रजातन्त्र के लिए अनिवार्य है।

१९६२ में मुझे हराने के लिए कैरोंशाही लगी हुई थी और उधर ग्रामीण जनता मुकाबले के लिए तैयार खड़ी थी। पुलिस भी काफी संख्या में आ चुकी थी। सारा दृश्य देखकर मैं समझ गया था कि उत्तेजित जनता को यदि वहां से हटाया न गया तो पता नहीं कितने लोग मरेंगे और कितने घायल होंगे। उत्तेजना में मतपत्रों को गिनती करने वालों, जनता और पुलिस का क्या हाल होता, कहा नहीं जा सकता था।

चुनाव हारने की सम्भावना तो निसन्देह समाप्त हो सकती थी परन्तु क्या चुनाव की कृत्रिम हार से बचने के लिए मुझे लोगों को हिंसा की आग में झोंककर उनको मरवा देना चाहिए? यह प्रश्न मेरे मन में आया और मैंने निर्णय लिया कि अपने स्वार्थ के लिए मैं नरसंहार नहीं होने दूंगा। 'मैं जीत रहा हूं', कह कर जनता को निकाल ले गया। कुछ लोगों ने मुझे कमजोर और भीरू भी कहा। परन्तु समझदार लोगों ने बाद में मेरे इस कदम को ठीक ही कहा। मुझे उस चुनाव में तो थोड़े से मतों से हरा दिया गया, परन्तु १९६७ में जनता ने डेढ़ लाख वोटों से जिता कर लोकसभा में भेज दिया।

महम चुनाव क्षेत्र में जो हिंसा हुई। जनता के भोले उत्तेजित लोग मरे, पुलिस कर्मचारी भी मरे, जो भी मरे वे हमारे अपने बेटे और भाई हैं। उन सबके लिए समान रूप से मेरे हृदय मे सहानुभूति और संवेदना है। क्यों ऐसा हुआ इस पर सोचना चाहिए और फिर कभी ऐसा न होने पाए ऐसे उपाय करने चाहिए। आत्मानुशासन और संयम तो प्रजातन्त्र के लिए अनिवार्य हैं, यह बात सब को हृदयंगम करनी चाहिए।

इन दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं से जो तनाव लोगों के मनों में है, वह समाप्त होना चाहिए। न्यायिक जांच की घोषणा हो चुकी है, उसमें सब को सहयोग देना चाहिए। उससे जो भागता है, वह तनाव बनाए रखना चाहता है तथा जो जनता के हित में नहीं है। तनाव दूर करने का एक ही रास्ता है कि यह पूरा चुनाव रद्द कर दिया जाए, तनाव खत्म होने पर, शांत वातावरण में नए सिरे से अधिसूचना जारी करके सबको नामांकन पत्र दाखिल करने का अवसर दिया जाए और नियमित ढंग से चुनाव की सारी प्रक्रिया निभानी चाहिए।

हरयाणा के लोगों से एक बात मैं और कहना चाहता हूं। चौ० देवीलाल अपने संघर्ष से और मेलमिलाप से राष्ट्रीय स्तर के नेता के रूप में उभरे हैं। जहां उनका यह कर्त्तव्य बनता है कि वे ऐसी कार्य शैली अपनाएं जिससे उनके प्रति जनता का विश्वास बढ़ता जाये, वहां हरयाणा की जनता का यह कर्त्तव्य है कि उनको राष्ट्रीय स्तर के नेता के पद पर बनाए रखने के लिए अपना भरपूर सहयोग दें। जिन लोगों को उन्होंने विधायक और नेता बनाकर खड़ा किया है उन्हें अपना सहयोग देना चाहिए। और ऐसे ढंग से काम करना चाहिए जिससे उन की अपनी और उनके नेता की छवि को चार चांद लगें। यदि ऐसा होगा तो इस में सन्देह नहीं कि हरयाणा का हित तो होगा ही देश का भी हित होगा।

कश्मीर से पलायन करने वालों की सहायता करें

दुर्भाग्य से कश्मीर में पाकिस्तान के घुसपैठियों, उनके द्वारा प्रशिक्षित और समर्थित आतंकवादियों तथा साम्प्रदायिक तत्वों ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि वहां पर हिन्दुओं का एक सम्मानित नागरिक के नाते ठहरना कठिन होता जा रहा है। आतंक और दुर्व्यवहार के कारण सैकड़ों ही नहीं हजारों परिवार अपने घर छोड़ कर देश के दूसरे भागों में आ रहे हैं। हो सकता है कुछ परिवार हरयाणा के नगरों में भी आ जाए। यदि ऐसे विस्थापित परिवार यहां आए तो उनके निवास, भोजन आदि का प्रबन्ध आर्यसमाजों को दूसरी संस्थाओं का सहयोग लेकर करना चाहिए।

मेरा सभी आर्यसमाजों से यह निवेदन है कि वे अपने-अपने नगरों में दूसरी समान उद्देश्य वाली संस्थाओं से मिलकर समिति का गठन करें और विस्थापितों के लिए सब प्रकार का प्रबन्ध करें।

दयानन्द मठ रोहतक में दस परिवारों के अस्थाई आवास का प्रबन्ध कर दिया गया है। अन्य आर्यसमाजें अथवा आर्य संस्थाएं भी प्रबन्ध करके सभा को सूचित करें।

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	वेदव्रत शास्त्री
कार्यकर्त्ता प्रधान	प्रधान	मन्त्री
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	

हिसार में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठक

जिला हिसार के आर्यसमाज तथा आर्य संस्थाओं के सभी अधिकारियों एवं कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक दिनांक १३ मार्च, १९९० मंगलवार को दोपहर बाद एक बजे आर्यसमाज मन्दिर नागोरी गेट हिसार में होगी। इस बैठक की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी करेंगे तथा बैठक में जिला हिसार में आर्यसमाज के प्रचार तथा प्रसार करने तथा शराब, मांस, दहेज आदि सामाजिक बुराइयां समाप्त करने के लिए जिला हिसार वेद प्रचार मण्डल बनाया जावेगा। अतः जिला हिसार के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि इस सामाजिक कार्य में सहयोग देने हेतु बैठक में अपने साथियों सहित पधारें।

आपके सहयोग का इच्छुक
वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

अंग्रेजी हटाओ
देश बचाओ

शराब जहर है

पीता है जो शराब उसकी होती है दुर्दशा ।
शराब पीना छोड़ दो, इसमें ही है भला ।।

उनकी ही हालत देख लो जो छोडते नहीं ।
जलीलो बरबाद हो रहे हैं पर मानते नहीं ।।

लुट जाएगा सब कुछ जब आएगा होश में ।
उस वक्त इसके पास कुछ न होगा जेब में ।।

मांगेगा भीख लोगों से हाथ पसार कर ।
रोएगा, पछताएगा, सब कुछ उजाड़ कर ।।

अब भी समय है छोड़ दो पीना शराब को ।
यह जहर है, इससे बचाओ अपने आपको ।।

न छोड़ोगे शराब को तो समाज तुम्हें बाहर करेगी ।
पाओगे सजा कर्मों की, न दुनिया माफ करेगी ।

—देवराज आर्य, आर्यसमाज बल्लबगढ़

सर्वहितकारी के आजीवन सदस्य

सभा के भजनोपदेशक पं० मुरारीलाल बेचैन ने वर्ष १९८९-९० में निम्नलिखित सर्वहितकारी के आजीवन सदस्य बनाए हैं:—

१- रामजीलाल सोनी/गिन्दोडी देवी सोनी भुंगारका जिला महेंद्रगढ
२- श्री बलबीर सिंह मलिक म० न० ३८२ सैक्टर १० फरीदाबाद ।
३- मन्त्री आर्यसमाज पुरानी मण्डी फिरोजाबाद (उ०प्र०)
४- महाशय मदनलाल आर्य नम्बरदार ग्वालपहाड़ी वाले द्वारा डा० राकेश दूबे गांव पो० मांडी दिल्ली—४७
५- चौ० राजकुमार सुपुत्र श्री रामेश्वर सरपच ग्राम लूलवाड़ी जिला फरीदाबाद
६- मन्त्री आर्यसमाज कालांवाली जिला सिरसा
७- मुख्याध्यापक आर्य विद्या मन्दिर डबवाली जिला सिरसा
८- श्रीमती मुख्याध्यापिका आर्य कन्या हाई स्कूल सिरसा
९- प्रिंसिपल आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा
१०- श्री नौरंगसिंह एडवोकेट १०२ द्वारिकापुरी सिरसा

सर्वहितकारी के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म—४ (नियम ८ में देखिए)

१- प्रकाशन स्थान	—सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, रोहतक
२- प्रकाशन अवधि	—साप्ताहिक
३- मुद्रक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ रोहतक
५- सम्पादक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
६- उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के १% से अधिक के साझीदार या हिस्सेदार हो ।	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक इस का समस्त आय-व्यय वहन करती है ।

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है ।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

शिव पूजा

कौन कहता है कि आर्यसमाज शिव की पूजा नहीं करता। आर्यसमाज शिव शकर की भक्ति भी करता है और पूजा भी करता है। प्रतिदिन करता है। प्रातः सायं दोनों समय शिव शंकर को नमस्कार करता है। सच पूछो तो आर्यसमाज शिव के दर्शन करने का मार्ग दर्शाता है। यदि आप शिव तक पहुंचना चाहते हैं तो अपने आप को तैयार करलो। शिव पूजा की सामग्री एकत्र करो।

मैं देख रहा हूं, शिव पूजा के लिए आपके हृदय में अटूट श्रद्धा है जो भक्ति का एक आवश्यक अंग है परन्तु भक्ति का दूसरा परम आवश्यक अंग तो लुप्त है। जब तक उसे चालू नहीं करोगे तब तक शिव के दर्शन करना असम्भव है। उस अंग का नाम है ज्ञान चक्षु। आप चक्षु द्वारा जब चाहें शिव के दर्शन कर सकते हैं। ज्ञान चक्षु खोलने के लिए योग साधना कीजिए। अपने आपको शिव का सच्चा भक्त बनाओ। भक्त का अर्थ है जोडना, मिलाना और इसका विपरीतार्थक शब्द है, विभक्त अर्थात् भाग करना, काटना, अलग करना।

अब स्वयं ही अपनी जांच करो कि आपका मन भक्ति में लगा हुआ है या विभक्ति में। यदि भक्ति में लगा हुआ है तो जीवन को शुद्ध सरल और पवित्र बनाओ जो भी दुर्व्यसन (बुरी आदत) है उन्हें छोड़ो तभी आपकी भक्ति सफल होगी।

आओ आज शिव रात्रि के अवसर पर हम सब मिलकर ऐसा व्रत धारण करें जिसके द्वारा शिव के दर्शन कर सकें। याद रखो, सुबह से रात तक भूखे मरने का नाम व्रत नही है। व्रत का अर्थ है "प्रतिज्ञा करना।" कैसी प्रतिज्ञा ? जो हमें आनन्द और कल्याण के स्रोत शिव भगवान् की भक्ति में मग्न रखे। जब आपका मन शिव सकल्पमय हो जाएगा तो शिव का दर्शन भी सुलभ हो जाएगा। शिव कही दूर नहीं है। आपके ही पास है। बस मनके दर्पण को निर्मल बनाने की आवश्यकता है। उर्दू में कवि ने लिखा है:—

यार की तस्वीर दिल के आयने में है,
जब चाहो गर्दन झुकाकर देख लो ।

—देवराज आर्य, आर्यसमाज बल्लभगढ़ जिला फरीदाबाद

आ गई होली

राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

आ गई होली सुपावन,
प्यार बरसाती हुई ।
शस्य से पूरित धरा को,
मधुर दुलारती हुई ।
भेद—भावों को तजें हम
स्रोत समता का बहाएं ।
द्वेष—ईर्षा की प्रवृत्ति को,
होलिका के सग जलाएं ।
अब दनुजता के पथों पर,
बढ रहा संसार है ।
बढ़ रहा अन्याय अविकल,
बढ रहा व्यभिचार है ।
आज मानव में मनुजता—
के गुणों को जगमगाएं ।
तिमिर आच्छादित भुवन को,
नव प्रभामण्डल दिखाएं ।
अब परस्पर प्रेम का हो,
मनुज में व्यवहार हो ।
प्रेम से पूरित सुपावन,
दिव्य यह त्यौहार हो ।।

स्वर्गीया महान् समाज सेविका बहन लक्ष्मीदेवी आर्या

आचार्य बलदेव नैष्ठिक गुरुकुल कालवा

बहन लक्ष्मी देवी आर्या, जो आरम्भ से ही स्वतन्त्रता संग्राम एवं आर्यसमाज की धार्मिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रही हैं का निधन एक सौ एक वर्ष की अवस्था में दिनांक ४-२-१९९० को प्रातः लगभग दो बजे हो गया। उनका अन्त्येष्ठि संस्कार आचार्य बलदेव (नैष्ठिक) गुरुकुल कालवा की देखरेख में पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार जन्म स्थान रोहणा में किया गया। अन्त्येष्टि संस्कार में गुरुकुल झज्जर एवं गुरुकुल कालवा के ब्रह्मचारीगण दयानन्दमठ के श्री मामचन्द जी आर्य, रोहणा ग्राम के श्री दरियाव सिंह जी, श्री सूरजमल जी, आर्यसमाज के सदस्य गण एवं गांव के अन्य व्यक्ति अत्यधिक संख्या में उपस्थित थे। तदोपरान्त उनके घर में यज्ञ किया गया। गांव में इतने उत्तम ढंग से प्रथम वैदिक अन्त्येष्टि सस्कार देखकर लोग बड़े प्रसन्न हुए। बहन लक्ष्मी देवी का समस्त जीवन समाज सेवा के लिए तन, मन व धन से समर्पित रहा। वह समाज सेवा के लिए वसुन्धरा पर आई और अन्तिम श्वास तक समाज सेवा करती रही। स्वतन्त्रता संग्राम में एक कर्मठ कार्यकर्त्री के रूप में उसने महात्मा गांधी के साथ मिलकर काम किया। स्वतन्त्रता सग्राम में वह हरयाणा की प्रथम महिला थी।

इस निमित भारत के राष्ट्रपति एवं हरयाणा के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री बन्सीलाल जी के द्वारा विशेष पदक से सम्मानित की गई। हिन्दुस्तान पाकिस्कान विभाजन के समय मुसलमानों ने अनेक आर्य (हिन्दू) युवतियों को रख लिया था। उस समय बहन जी बहनों का जत्था बनाकर पाकिस्तान गई थी एवं उन बहनों को अपनी सरक्षता प्रदान कर उन्हें वापिस भारत में उनके माता पिताओं को सौप दिया था। इसी प्रकार कैरों सरकार की पुलिस ने ग्राम जागसी (गोहाना) में आर्य (हिन्दू) बहनों के साथ अनेक प्रकार के पैशाचिक दुराचार किए, जिसकी जांच के लिए स्वतन्त्रानन्द ने बहनो की एक समिति बनाई जिसका प्रधान न्यायधीश बहन जी को ही बनाया गया था।

बहन जी ने बड़ी कुशलता के इस उत्तरदायित्व को निभाते हुए आर्य (हिन्दू) बहनों को न्याय प्रदान करवाया। इस प्रकार अन्य अनेक कार्यक्रमों में इस देवी ने अपनी भूमिका निभाकर हरयाणा एव देश की बहनों के नाम को ऊंचा कर दिया है। आयसमाज के हिन्दी रक्षा सत्याग्रह, गो-रक्षा सत्याग्रह आदि कार्यों में बहनों की तरफ से अग्रणी रही एवं सैंकड़ो व्यक्तियों को प्रेरणा देकर तैयार किया। इन सभी कार्यों में तन, मन से ही नहीं बल्कि धन देकर भी सहयोग किया एव अन्यों से भी दिलवाया।

बहन जी ने अपनी समस्त चल तथा अचल सम्पत्ति को जिसमें (४० एकड़ जमीन, दो मकान) गुरुकुल एव अन्य शिक्षण सस्थाओ, भूमि रहित किसानों तथा हरिजनों को सहर्ष दे दिया।

बहन जी का सारा जीवन त्यागमय रहा। वह अपने हाथ से कते हुए सूत के कपड़े बनाकर पहनती रही। इस प्रकार समस्त स्वात्र-लम्बी जीवन स्वय सेवक बनकर साधिका के रूप में व्यतीत करती हुई यह महान् विभूति अमर पद को प्राप्त कर गई।

कहा भी है:— "कीर्तिर्यस्य स जीवति।"

इस प्रकार बहन जी का जीवन विशेषकर महिलाओं के लिए विशेष शिक्षाप्रद रहेगा।

हमें अपने महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलकर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करना चाहिए।

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य सभासदों से मार्च १० तक का वार्षिक चन्दा उनकी आय के शतांश के अनुसार प्राप्त कर लेवें और उन्हें रसीद दे देवें। जिन समाजों के पास रसीद बही नहीं है, वे छपवा लेवें अथवा सभा कार्यालय रोहतक से ४)०० रुपए प्रति रसीद बुक (१०० रसीद) के लिए रोहतक भेजकर मंगवा लेवे। सभा ने रसीद बही छपवा दी है।

आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार वही आर्य सभासद चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं, जिनका नाम नियमपूर्वक आर्यसमाज के रजिस्टर में २ वर्ष तक अंकित रहा हो और वे अपने समाज को अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) चन्दा देते हों और सत्सगों में उनकी कम से कम २५% उपस्थिति रही हो।

अतः सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को इसी नियम के अनुसार आगामी चुनाव में मत देने वाले आर्यसभासदों से मार्च तक चन्दा प्राप्त करके सूची सभा को भेजें तथा अप्रैल मास में नियम अनुसार अपने आर्यसमाजो का वार्षिक चुनाव करे।

जो आर्यसमाज इस कार्य में सभा की सहायता चाहते हों, वे सभा को पत्र लिखे ताकि सभा की ओर से उपदेशक भेजा जा सके।

—सभामन्त्री

अम्बाला कैंट में ऋषिबोध पर्व

वैदिक प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में, दान में मिले प्लाट पर ऋषिबोध पर्व बडे उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री जगतप्रिय वेदालकार भू०पू० आचार्य टंकारा तथा श्री देवव्रत जी, आचाय गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने ऋषि के घटनाओं पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष पद मे बोलते हुए श्री सतीश मित्तल (भू० पू० प्रधान नगर-पालिका) ने इस पर्व पर सगठित होकर वैदिक विचारधारा का प्रचार प्रसार करने का आह्वान किया। उन्होंने मण्डल की सड़क शीघ्र बनवाने का भी आश्वासन दिया।

मन्त्री ने सभी का धन्यवाद करते हुए बताया कि मार्च के अन्तिम सप्ताह में भवन निर्माण शिलान्यास का समारोह श्री० बनारसी दास गुप्त, उप-मुख्यमन्त्री जी द्वारा किया जाएगा। सभी से अधिक से अधिक धन देने की अपील की गई। मण्डल के उपप्रधान श्री वेदप्रकाश जी ने और पाच हजार देने का आश्वासन दिया। सभी से अपील है कि अधिक से अधिक दान भिजवाये।

इस कडी में स्वामी दयानन्द मार्ग में भी यह पर्व मनाया गया जिसमें श्री श्याम सुन्दर जी स्नातक ने विचार रखे।

कच्चा बाजार समाज में श्रीमती शातिदेवी जी प्रधाना के प्रयास से यह पर्व मनाया गया। —वेदमित्र हापुड वाले

मिलावटी शराब बेच रहे हैं ठेकेदार

नारनौल, (निस) अटेली मण्डी में देशी व अंग्रेजी शराब के ठेकेदार आजकल शराब में मिलावट करके सरेआम मिलावटी शराब बेच रहे हैं। शराब में मिलावट की वारदात बढने से विशेष तौर से वह लोग परेशान हैं जो रोजाना पीने के आदी हैं। उनकी शिकायत है क्योंकि उन्हें असली व नकली पहचान है।

दूसरी ओर ठेकेदार अपने निजी वाहनों में देशी व अंग्रेजी शराब गांवों में भी सप्लाई कर रहे हैं। गांव के लोगों ने इस बात पर गहरा आपत्ति प्रकट की कि ठेकेदार गाव में जाकर शराब बेचते हैं, जोकि कानूनी तौर पर कानून के विरुद्ध है।

बैंक परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम उत्साहजनक

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् और अन्य संस्थाओं का यह प्रयत्न है कि भारत सरकार की परीक्षाओं में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा दी जाए। फलस्वरूप भारतीय स्टेट बैंक के कुछ भर्ती बोर्डों द्वारा १९८५, १९८६ और १९८७ में आयोजित भर्ती प्रतियोगिताओं में हिन्दी माध्यम अपनाने वालों के आंकड़े उपलब्ध हो गए हैं जो अत्यन्त उत्साहजनक हैं।

भारतीय स्टेट बैंक भर्ती बोर्ड, अहमदाबाद द्वारा लिपिक के पद के लिए आयोजित भर्ती परीक्षा में, जिसमें अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम का विकल्प भी अनुमत्य था, कुल ४७, ४१७ प्रत्याशियों में से किसी भी प्रत्याशी ने अंग्रेजी माध्यम नहीं अपनाया। कुल प्रत्याशियों में से २,८४९ ने हिन्दी माध्यम तथा ४५, ५६८ ने गुजराती माध्यम अपनाया।

भारतीय स्टेट बैंक भर्ती बोर्ड, बम्बई द्वारा लिपिक, रोकड़िया सह टेंकक एवं लिपिक टेकक के पदों के लिए आयोजित परीक्षाओं में, जिसमें अंग्रेजी के साथ हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषा के विकल्प की छूट थी, कुल सफल प्रत्याशियों की सफलता का अनुपात केवल दो प्रतिशत था जबकि हिन्दी माध्यम से शतप्रतिशत एवं क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से ७१ प्रतिशत प्रत्याशी सफल घोषित हुए। कितने-कितने प्रत्याशियों ने अंग्रेजी, हिन्दी अथवा क्षेत्रीय भाषा अपनाई, उसके आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

क्षेत्रीय भर्ती बोर्ड, भारतीय स्टेट बैंक, नई दिल्ली में लिपिक, रोकड़िया तथा लिपिक टेकक के पदों के लिए आयोजित परीक्षा में, जहां अंग्रेजी के साथ हिन्दी माध्यम के विकल्प की भी अनुमति थी, कुल ५७, ८८५ प्रत्याशियों ने हिन्दी माध्यम अपनाया, जबकि अंग्रेजी माध्यम अपनाने वाले प्रत्याशियों की संख्या केवल १९, २९५ थी। दोनों माध्यम से सफल घोषित प्रत्याशियों की सफलता का अनुपात बराबर-बराबर था।

हिन्दी माध्यम के विकल्प का अभी आरम्भ ही है। जब परीक्षा उपयोगी साहित्य हिन्दी में पूरी तरह उपलब्ध हो जाएगा और कोचिंग क्लासों की व्यवस्था हो जाएगी तब हिन्दी माध्यम को लोकप्रियता और भी बढ़ेगी। इस कार्य में स्वयंसेवी संस्थाओं और हिन्दी प्रेमी विशेष सहयोग प्रदान कर सकते हैं। —जगन्नाथ

संयोजक राजभाषा कार्य केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्,
एक्स०वाई०—६८, सरोजिनी नगर नई दिल्ली २३

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह का भ्रमण कार्यक्रम

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, प्रिंसिपल लालसिंह जी प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा तथा सभा के सम्पत्ति सुरक्षा अधिकारी श्री सूबेसिंह जी का निम्न प्रकार भ्रमण कार्यक्रम है:—

१२ मार्च, १२ बजे आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना (जींद) आर्यसमाज नरवाणा तथा आर्य संस्थाओं का निरीक्षण १२ मार्च, रात्रि के ७ बजे सिरसा में विश्राम।

१३ मार्च, प्रातः ९ बजे आर्यसमाज सिरसा में जिला सिरसा के कार्यकर्त्ताओं की बैठक तथा आर्यसंस्थाओं व आर्यसमाज का निरीक्षण।

१३ मार्च दोपहर बाद एक बजे जिला हिसार के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठक में जिला वेदप्रचार मण्डल का गठन कराना।

—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री

बवानी खेड़ा में गणतन्त्र दिवस राष्ट्रीय समारोह सम्पन्न

बवानी खेड़ा (भिवानी) में प्रथम बार गांव के बड़े चौक में महावीर प्रसाद प्रभाकर के प्रयत्न एवं पुरुषार्थ से तथा देखरेख में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्रीमती कुसुम मिश्रा मुख्याध्यापिका ने दीपक प्रज्ज्वलित किया। तत्पश्चात् प्रभाकर जी का उद्घाटन भाषण हुआ जिसमें उन्होंने गणतन्त्र दिवस का महत्व तथा हिन्दी रक्षा एवं गोरक्षा पर अपने विचार रखे। बाद में पांच स्थानीय स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने अलग-अलग ढंग से रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम से प्रभावित होकर लोगों ने बच्चों को दिल खोलकर आर्थिक सहयोग देकर हौंसला बढ़ाया।

ज्ञातव्य है कि 24-25 जनवरी को हरयाणा स्टाईल कबड्डी का भी आयोजन किया जिसमें पांच गांव की टीमों ने भाग लिया, जिसका उद्घाटन नगरपालिका सदस्य ठाकुर सूरतसिंह जी ने किया। महाशय जी की तरफ से प्रथम टीम को एक शील्ड तथा प्रत्येक खिलाड़ी को एक अटेची, 21 रु० तथा द्वितीय टीम को एक हैण्डबेग तथा 11 रु० इनाम दिया गया। इसी अवसर पर प्रभाकर की धर्मपत्नी ने मुख्य अध्यापिका को एक सत्यार्थप्रकाश भेंट की। अन्त में सभा अध्यक्ष श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक ने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रीय पर्व का उद्देश्य तथा शराब से होने वाली हानियों एवं शराबबन्दी बारे इतिहास के उदाहरण देकर लोगों को सब पापों की जड़ शराब से दूर रहने का आह्वान किया। साथ में गणतन्त्र दिवस आत्म-निरीक्षण करने व एकता के रूप में मनाने पर बल दिया। इस कार्यक्रम में गांव के सभी वर्गों का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम बड़ा प्रेरणाप्रद एवं सराहनीय रहा।

—सत्यनारायण कौशिक, मुख्याध्यापक
लालबहादुर शास्त्री विद्यालय बवानी खेड़ा

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) का उत्सव सम्पन्न

गुरुकुल धीरणवास का १८वां वार्षिकोत्सव दिनांक २४, २५, २६ फरवरी १९९० को विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी (धूरी) स्वामी सर्वानन्द जी, वानप्रस्थी ताराचन्द जी, प्रो० ओमकुमार आर्य, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, बहन राजकुमारी आर्या आदि विद्वानों ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों आत्मा-परमात्मा, मनुष्य के कर्त्तव्य, आर्यसमाज का संगठन, राष्ट्र-रक्षा, गो-रक्षा, नारी-शिक्षा, गुरुकुल-शिक्षा, परदा प्रथा, दहेज प्रथा तथा शराबबन्दी बारे विस्तार से विचार रखे।

इसके अतिरिक्त पं० रामनिवास जी, महाशय जयपालसिंह जी, पं० आशाराम जी, पं० रामकुमार जी, महाशय मामेराम आदि के शिक्षाप्रद समाजसुधार के प्रेरणाप्रद क्रांतिकारी मधुर भजन हुए। लोगों ने दिल खोलकर गुरुकुल की सहायतार्थ दान दिया। प्रमुख:—चौ० जगन्नाथ समाज कल्याण मन्त्री हरयाणा सरकार की तरफ से श्री सूबेसिंह आर्य प्रधान युवा जनतादल हिसार ने २५ हजार का अनुदान देने की, घोषणा की दस हजार रुपए डाक्टर बहल (हिसार) ने ने दिए, ५ हजार रुपए प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी (धूरी) ने किसी दानी से दिलवाए एक गऊ खरीदने बारे। इक्कीस सौ रु. श्रीमती कमला चौ० सहायक आबकारी कराधान अधिकारी हिसार ने दिए, प्रातःकाल यज्ञ पर १५ नवयुवकों ने जनेऊ धारण किए। जो गुरुकुल के छात्र कुश्ती में प्रथम या द्वितीय स्थान वालों को श्री बदलू आर्य ने इनाम दिया। श्री हरवीर शास्त्री आचार्य गुरुकुल भटिण्डू द्वारा सरिया मोड़ना, भाली फाड़ना, बेल तोड़ना, छाती पर पत्थर तुड़वाना, कार रोकना आदि व्यायाम प्रदर्शन किया जिसकी सभी दर्शकों ने भूरि-२ प्रशंसा की तथा सभा को ५०० दान दिया गया।

मद्यपान अभिशाप या वरदान

डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

भारत सरकार आजकल अपने देश के प्राकृतिक पर्यावरण को सुधारने पर जितना जोर दे रही है उतना बल वह सामाजिक प्रदूषण को समाप्त करने पर क्यों नहीं देती ? यह समझ में नहीं आ रहा है। आज यदि हमारे सामाजिक वातावरण को विकृत करने वाली सबसे बड़ी कोई बुराई है तो वह एकमात्र मद्यपान की आदत है। मद्यसारों के प्रयोगों से गली-मोहल्लों और सड़क-चौराहों पर आज इस सुरा देवी का एक छत्र साम्राज्य स्थापित है। जहां जाओ वहीं पर आपको लोग आपस में गाली-गलौच और लड़ाई-झगड़ा करते हुए मिलेंगे। यह सब इस सुरा देवी का ही चमत्कार है। आज सारे ही लोग समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की बातें बढ़ा-चढ़ा कर करते हैं। लेकिन उनकी दृष्टि कभी इस बात पर नहीं जाती कि जिस भ्रष्टाचार को वे पानी पी-पी कर कोस रहे हैं उसकी जननी तो शराब है। आज बड़े से बड़ा अधिकारी इस सुरा देवी के एक चषक के आलिंगन भर के लिए लालायित होकर बडे से बड़ा अवैध काम करने के लिए तैयार हो जाता है। किसी से चाहे आपको कितना ही बड़ा काम क्यों न लेना हो, आप उसके साथ बैठकर एक बार मधुचषक (शराब का प्याला) का पान कर लीजिए, फिर देखिए आपका वह कार्य सिद्ध होता है या नहीं। अतएव आज तो यह सुरा देवी समाज में सर्वसाधिका बन गई है। अवसरवादी और व्यावसायिक बुद्धि के लोगों के लिए तो वह वर्तमान में कामधेनु सिद्ध हो रही है।

इतना ही नहीं आजकल तो मद्यपान एक फैशन और सामाजिक प्रतिष्ठा की वस्तु बन गया है। समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग इसका सेवन करने लगे हैं। क्या बुद्धिजीवी पत्रकार क्या अध्यापक क्या डाक्टर क्या इञ्जिनीयर क्या राजनेता आज सभी इस की गिरफ्त में हैं। जब समाज का प्रबुद्ध वर्ग ही इस महारोग से ग्रस्त है तो अनपढ़ आम जनता तो फिर बच ही कैसे सकती है ? आज हमारा व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सारा ही जीवन इस अकेली महामारी के कारण अस्त-व्यस्त हो गया है। आखिर इसके प्रचलन का मूल कारण क्या है, हमें सोचना होगा।

प्राचीनकाल में मद्यपान को महापाप माना जाता था। किसी भी धर्मग्रन्थ ने शराब सेवन करने की अनुमति नहीं दी, बल्कि इसे वर्जित और निन्द्य ठहराया। मनु स्मृति ने इसे सात महापातकों में से एक मुख्य पातक बताया था। सुरासेवी ब्राह्मण को भी शूद्र का दर्जा देने का विधान था। इसके लिए मृत्युदण्ड तक निर्धारित था। मार्कण्डेय पुराण में सुरापान को ब्रह्महत्या के समान पापकर्म बताया है। इस्लाम में भी खम्र (शराब) को अपराध योग्य दण्ड घोषित किया हुआ है। इतना ही नहीं कि केवल नीति और धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों ने ने ही मद्यसारों के प्रयोग को निषिद्ध ठहराया हो, अपितु आर्थिक और राजनैतिक ग्रंथों और विद्वानों ने भी मद्यसेवन को अवैध और अनुचित बतलाया था। कौटिल्य के अर्थ-शास्त्र में भी सुरा को राज्य से बाही-निष्कासन का विधान है।

किसी भी देशी या विदेशी शासक ने मध्यकाल तक भारत में शराब के सेवन को वैध स्वीकृति नहीं दी। आर्य और हिन्दू (वैदिक धर्मी या बौद्ध जैन भी) राजाओं की तो बात क्या है, विदेशी और विधर्मी मुस्लिम शासकों तक ने इस देश में पूर्ण मद्य-निषेध रखा। कभी आबकारी राजस्व प्राप्ति की लालसा से इसे बढ़ावा नहीं दिया। अलाउद्दीन खिलजी का उदाहरण हमारे सामने है उसने १३२० ई० में दिल्ली सल्तनत में पूर्ण मद्यनिषेध लागू किया। रजिया बेगम, टीपू सुलतान और तो क्या औरंगजेब के राज में भी सुरापान की सख्त रोक थी। न ही किसी हिन्दू राजा और न ही किसी मुस्लिम नवाब ने शराब को अपने राज्य की आय का साधन नहीं बनाया, अपितु सामाजिक और धार्मिक तथा नैतिक दृष्टि से प्रेरित होकर समाज कल्याण को अपना उद्देश्य समझते हुए इस पर पूर्ण प्रतिबन्ध रखा था।

लेकिन जैसे ही मध्यकाल की मध्यरात्रि का अन्त हुआ और दुनिया ने आधुनिक युग की ओर चरण-निक्षेप किया तो भारत-वसुन्धरा पर अंग्रेज व्यापारियों का आगमन हुआ। व्यापार करने के लिए आया हुआ अंग्रेज हमारी राजनैतिक फूट का लाभ उठाकर यहां का शासक भी बन बैठा। उसका उद्देश्य सुशासन द्वारा भारत का जन-कल्याण करना नहीं था, अपितु उसका तो एकमात्र लक्ष्य धन बटोरना था। अतएव सर्वप्रथम १८६० ई० में अंग्रेज सरकार ने ही राजस्व वसूली करने के लिए भारत में सुरापान की छूट दी, क्योंकि इंगलैण्ड में भी १७९० से शराब से राजस्व ग्रहण की नीति लागू थी, वही दुर्नीति हम पर भी थोंप दी गई।

ब्रिटिश सरकार की इस अनैतिक नीति का भारत के समाज सुधारकों और राष्ट्रीय नेताओं ने डटकर विरोध भी किया था, जिनमें सर्वश्री महर्षि दयानन्द सरस्वती, राजाराम मोहनराय, डा० केशव चन्द्रसेन, बालगंगाधर तिलक और महात्मा गांधी का नाम उल्लेखनीय है। इन महापुरुषों ने समय-समय पर इस कुरीति का विरोध किया, लेकिन अंग्रेज बनियों के सामने उनके वे सुधारवादी स्वर अरण्य-रोदन मात्र ही सिद्ध हुए। जिन लोगों का एकमात्र उद्देश्य अर्थ-संग्रह हो उनके लिए नैतिक-अनैतिक या उचित-अनुचित आखिर अर्थ भी क्या रख सकता था। ऐसी स्थिति में अंग्रेजों के मानस पुत्र रूप नव शिक्षित धनाढ्य सामन्त वर्ग में सुरा देवी को भरपूर समादर मिला और यह भारत के लिए एक राष्ट्रीय सामाजिक समस्या बन गई, जब कि अंग्रेजों के लिए मद्यपान की यह प्रथा दुधारू गाय थी।

राष्ट्रीय कांग्रेस का उदय भारत के राजनैतिक क्षितिज पर होने पर उसने भी भारतीय परम्परा के अनुसार मद्य-निषेध की नीति को अपने सामाजिक और राजनैतिक कार्यक्रमों में सम्मिलित किया। पहले १९०८ में बाल गंगाधर तिलक ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई। बाद में महात्मा गांधी ने तो इसे एक विधिवत् रूप से आंदोलन का ही स्वरूप दे दिया। १९२१ के अहमदाबाद अधिवेशन और १९२८ के कलकत्ता अधिवेशन में इस विषय में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव इस तथ्य के जीते जागते सबूत हैं। इन प्रस्तावों के तहत जगह-जगह पर शराब के ठेकों को बन्द कराने हेतु धरने दिए गए और देशवासियों को आबकारी राजस्व देने से रोका गया। यह कार्यक्रम भी असहयोग आंदोलन का एक अनिवार्य और अपरिहार्य अंग था। कांग्रेस के आंदोलन की उपयोगिता और लोकप्रियता को देखकर बहुत-सी देशी रियासतों ने भी अपने राज्यों में मद्यपान को सर्वथा अवैध अपराध घोषित कर दिया था।

(क्रमश)

ग्राम खानक (भिवानी) की महिलाओं का साहसिक कदम

गांव खानक में कई क्रेसर हैं, हजारों मजदूर वहां कार्य करते हैं। वैसे भी गांव में हरिजन एव बैकवर्ड जाति के लोग ज्यादा हैं। यहां एक शराब का ठेका है। गरीब लोग सारा दिन पहाड़ पर मजदूरी करते हैं। रात को सारी कमाई ठेके पर देकर घर आकर पत्नी से झगड़ा करते हैं और तरीदार सब्जी मांगते हैं। शराबी से बच्चे बेहद दु:खी रहते हैं।

गत दिवस ९ फरवरी रविदास जयन्ती पर समाज कल्याण मंत्री चौ० जगन्नाथ गांव में आए। सैंकड़ों दु:खी महिलायें एकत्रित होकर सभा में आई। मन्त्री जी से गांव का ठेका बन्द करवाने तथा शराबी पतियों के प्रतिदिन के कारनामों बारे शिकायत की। मन्त्री जी के जाने के बाद महिलाओं ने साहसिक कदम उठाया। सब महिलायें शराबबन्दी नारे लगाती हुई ठेके पर गई। वहां सारी बोतल निकाल कर सडक पर फोड़ दी। इस मौके पर ठेके में दो नौकर थे वह भाग गए। लेकिन ठेकेदार बाज नहीं आया। पुलिस को साथ लेकर सायंकाल तोशाम के ठेके से बोतल लाकर और रख ली और अब फिर धड़ल्ले से ठेके में शराब बिक रही है।

कितनी बड़ी विडम्बना है कि शराबी के बच्चे रो रहे हैं। सरकार किसान मजदूर की खून पसीने की कमाई सरे आम इस जहरीले पानी के जरिए लूट रही है। महिलाओं के दु:ख एवं उनकी भावनाओं को देखते हुए सरकार को तुरन्त यह शराब का ठेका बन्द करना चाहिए।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

वेदप्रचार मंडल, अंबाला कैंट का चुनाव

संरक्षक—पं० देवदत्त शर्मा, प्रधान—श्री सोमदत्त आर्य, उपप्रधान—श्री वेदप्रकाश शर्मा, श्री खैरातीलाल, मन्त्री—वेदमित्र हापुड़ वाले, उपमन्त्री—श्री ओ० पी० सिंगला, श्री देशराज, श्री कैलाश गुप्ता, कोषाध्यक्ष—श्री कृष्ण कुमार, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुरेश गुप्ता, आय-व्यय निरीक्षक—श्री जयप्रकाश आर्य।

—वेदमित्र हापुड़ वाले

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ रजि०न० PR1 मुद्रित मत्र



सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए० फाल्गुन २३, २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क १६ १४ मार्च, १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

रोहतक में शराब के ठेकों की नीलामी पर आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदर्शन

ठेकेदारों को शराबरूपी जहर के ठेके लेने पर महिलाओं द्वारा फटकार

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

रोहतक में ६ मार्च को शराब के ठेकों की नीलामी की गई। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशानुसार जि. रोहतक के आर्य नर-नारियों की ओर से विख्यात आर्य महिला नेता श्रीमती प्रभात शोभा के नेतृत्व में नीलामी का विरोध करने के लिए दयानन्द मठ से एक जलूस निकाला गया। जिस में ग्राम किलोई हुड्डा, चमारियां, मकड़ौली कलां, अयपल, गुमाना, गढीबोहर, सुन्दरपुर, टिटोली, गुरुकुल सिंहपुरा, गुरुकुल झज्जर, दयानन्द पब्लिक स्कूल रोहतक, श्रीपाल भारतीय स्कूल, आर्यसमाज पाड़ा मोहल्ला रोहतक, आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक, आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक, आर्यसमाज प्रेमनगर रोहतक, आर्यसमाज जींद रोहतक, सभा तथा दयानन्दमठ रोहतक आदि के कार्यकर्त्ता भारी संख्या में ओ३म् ध्वज तथा शराब विरोधी नारों की तख्तियां थी। ट्रैक्टर तथा मोटर साईकल भी जलूस के साथ चल रहे थे। जलूस ने गोहाना अड्डे पर पहुंचकर मांस की दुकानें हटाने की मांग की। इसी प्रकार आकाशवाणी के पास पहुंचने पर आकाशवाणी द्वारा पं० लखमीचन्द आदि की अश्लील रागनियों के प्रसारण के विरुद्ध भी नारे लगाए, इसके बाद जलूस किला कचहरी होता हुआ माडल टाउन गया। और मार्ग में आने वाले सिनेमा-घरों के पास भी नगर में अश्लील सिनेमा पोस्टर चिपकाने तथा अश्लील फिल्मों के प्रदर्शन के विरुद्ध भी शराब, मांस, अंग्रेजी हटाओ, संस्कृत अपनाओ तथा गोरक्षा के नारे लगाकर आर्यसमाज के तीन सूत्री कार्यक्रम को अपनाने की प्रेरणा की।

जलूस ने आबकारी एवं कराधान कार्यालय दौलता मार्केट माडल टाउन पहुंच कर शराबबन्दी सम्मेलन का रूपधारण कर लिया। जलूस के माईक को रिक्शा पर रखकर मच बनाया गया और श्रीमती प्रभात शोभा ने इस अवसर पर उपस्थित शराब के ठेके लेने वाले सैकड़ों व्यापारियों तथा नीलामी करने वाले हरयाणा सरकार के अधिकारियों को फटकार डालते हुए कहा कि आप अपने स्वार्थ के लिए जनता को शराबरूपी जहर पिलाने के ठेकों की नीलामी करवा रहे हैं। यह कल्याणकारी सरकार को शोभा नहीं देता। शराब की बिक्री करके जनता का कल्याण नही अपितु सर्वनाश हो रहा है। सरकार तथा व्यापारियों के पास तो शराब की बिक्री से धन के खजाने भर जायेंगे, परन्तु बेचारे किसान-मजदूरों की खून-पसीने की कमाई शराब में बर्बाद कर रहे हैं। सरकार की नई नीति के कारण गली-गली में शराब बिक रही है। हमारे नव-युवक शराबी बन रहे हैं। इस प्रकार उनकी जवानी समाप्त हो रही है। इसी कारण हम विदेशी मुकाबलों में खेलों में हार रहे हैं। यदि हमारे पुलिस तथा सेना के जवान शराब पीने के आदी हो गए तो राष्ट्र की सुरक्षा खतरे में पड़ जावेगी। इसी कारण मैं शराब के ठेके लेने वालों को राष्ट्र-द्रोही मानती हूं। सरकार भी धन के लालच में फसकर जनता का कल्याण नहीं कर रही। इस पाप से हरयाणा की आने वाली पीढियां व्यापारियों तथा सरकार को क्षमा नहीं करेगी। अतः सरकार को जनता के कल्याण के लिए हरयाणा में पूर्ण नशाबन्दी करनी चाहिए।

सभा के उपदेशक श्री भजनलाल आर्य, श्री अर्जुनदेव आर्य, श्री सत्यवीर शास्त्री वेदप्रचाराधिष्ठाता, श्री महावीर शास्त्री, श्री ईश्वरसिंह तूफान, श्री जयपाल आर्य, स्वामी देवानन्द जी, श्री झाबेराम आर्य, ब्रह्मचारी जीवानन्द जी, वानप्रस्थी दलीप जी आदि ने भी शराबबन्दी पर अपने विचार जनता तथा व्यापारियों को सुनाए। इस प्रकार हजारों की संख्या में शराब के विरुद्ध प्रचार सुना।

इसके बाद ठेकों की नीलामी में सम्मिलित हुए ठेकेदारों के विरुद्ध राष्ट्र के गद्दार, लालची कुत्ते, बेशर्म आदि शब्दों से सम्बोधित करके दो घण्टे तक फटकारा तथा उन्हे लज्जित किया गया। उपस्थित जनता इस दृश्य को देखकर आर्यसमाज के इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुई। इस अवसर पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी सभा कार्यालय के कार्यकर्त्ता श्री नत्थूसिंह आदि तथा रोहतक के प्रतिष्ठित नेता भी उपस्थित थे।

प्रदर्शन की समाप्ति पर हरयाणा के मुख्यमन्त्री को एक ज्ञापन उपमण्डल अधिकारी रोहतक के द्वारा दिया गया।

(ज्ञापन पृष्ठ ३ पर पढ़ें।)

सोनीपत में जिला उपायुक्त को शराबबन्दी ज्ञापन

९ मार्च को जिला सोनीपत की आर्य जनता की ओर से हरयाणा के मुख्यमन्त्री को जिला उपायुक्त द्वारा शराबबन्दी करने का ज्ञापन दिया गया। उस दिन शराब के ठेकों की नीलामी की जा रही थी। आर्यसमाज सोनीपत शहर के प्रधान ला० रामगोपाल आर्य के नेतृत्व में जिला के आर्यसमाजों का एक शिष्टमण्डल जिसमें ला० पंजूराम आर्य तथा सभा के उपदेशक प० हरिश्चन्द्र शास्त्री एवं कुछ आर्य महिलाएं भी सम्मिलित थी, जिला उपायुक्त को मिला तथा उन्हे शराबबन्दी का ज्ञापन दिया। इसी प्रकार जिला भिवानी में भी शराबबन्दी प्रदर्शन करने का समाचार मिला है।

—केदारसिंह आर्य

सफलता का मन्त्र

प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) १४६०२१

प्रत्येक सफल होना चाहता है, इसीलिए जीवन के हर क्षेत्र में वह कोई न कोई सिद्धि साधना चाहता है। वह इतिहास में जब कुछ सफल व्यक्तियों के सफलता का चित्रण पढ़ता है या किसी की सिद्धि की चर्चा सुनता है, तो उसके मन में वह इच्छा और तीव्र हो जाती है। वह तब इसके लिए सोचता है और ऐसा मार्ग ढूंढता है, जिससे उस प्रयास के द्वारा मन की साध पूरी हो। इसी मन: स्थिति में अनेकधा उसके सामने ऐसी घटनाएं आती हैं जिनमें यह दर्शाया गया होता है, कि अमुक को यह सफलता, सिद्धि, वरदान इस मन्त्र के बल से प्राप्त हुआ था। जैसे कि इन दिनों धारावाहिक महाभारत और इससे पूर्व रामायण में हमने देखा, कि जब श्रीराम, लक्ष्मण आदि कोई मन्त्र बुद-बुदा कर निशाने लगाते थे, थे तो वह पूर्ण सिद्ध होता था। ऐसा ही लव-कुश का शिक्षा प्राप्त करना, द्रौपदी-धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति और सजय को दूरदृष्टि की प्राप्ति आदि मन्त्र के रूप में चमत्कार के अनेक उदाहरण सामने आते है। इसी विश्वास के आधार पर प्रतिदिन हम अनेकों को मन्त्र जाप, मन्त्रपाठ आदि में जुटे हुए देखते हैं। अत: यह जिज्ञासा उभरती है, कि मन्त्र क्या है? और किस मन्त्र से, कैसे, कौनसी सिद्धि होती है? क्योंकि योगदर्शनकार ने कहा है:—

'मन्त्रौषधितपः समाधिजाः सिद्धयः ४,१

मन्त्र शब्द मन और मन्त्रि दो धातुओं से बनता है। मन धातु मनन (मन्त्रा मननात् निरुक्त ७. १) विचार, ज्ञान अर्थ में है और मन्त्रि धातु रहस्य अर्थ में है। जैसे कि कोई व्यक्ति जब मन्त्री पद की शपथ लेता है, तो वह दो शपथे लेता है। पहली उस पद=काय निर्वहन की और दूसरी उससे सम्बद्ध रहस्य संरक्षण की। अतएव मन्त्र से ही मन्त्री शब्द बनता है। इसलिए मन्त्र का सीधा सा भाव हुआ कि एक रहस्यभरा ज्ञान, विचार। वेद के (गायत्री आदि छन्दों के अनुरूप पद्यमय) वाक्यों को हम विशेष रूप से मन्त्र कहते हैं। यज्ञ, संस्कार आदि धार्मिक कृत्यो मे वेदमन्त्रो का विशेष रूप से विनियोग (पारस्परिक सम्बन्ध) होता है। सामान्यत: तो यही कहा जा सकता है, कि उस-उस मन्त्र में एक विचार, ज्ञान होता है।

शास्त्रों में वर्णित मन्त्रों से होने वाली सिद्धियो के परिप्रेक्ष्य में इस पर एक प्रश्न उभरता है, कि क्या विशेष प्रक्रिया को अपनाने से किसी मन्त्र से कोई सिद्धि हो सकती है? या यह केवल अपनी चीज के प्रभाव को प्रचारित करने के लिए एक विश्वास, मान्यता मात्र ही है, क्योंकि व्यवहार में हम ऐसा कहीं भी नहीं देखते, कि किसी ने किसी कार्य की प्रक्रिया को बिना अपनाए ही धन, शिक्षा, पुत्र आदि प्राप्त कर लिया हो। जबकि शास्त्रों में, कथा=चर्चा में ऐसे वर्णन अवश्य मिलते हैं। इसीलिए प्राय: सभी अपने-अपने मन्त्रों का पाठ खूब करते है।

आचार्य चाणक्य ने अपने सूत्रों में मन्त्र के स्वरूप को स्पष्ट करने वाले दो सूत्र दिए हैं। पहला सूत्र है—

'मन्त्रमूलास्सर्वारम्भाः (२२)=सभी कार्यों का मूल मन्त्र ही है, अर्थात् मन्त्र=विचार, ज्ञान के द्वारा ही कार्य होता है। इसका सीधा सा भाव यह हुआ कि किसी कार्य की जड मन्त्र है और दूसरा सूत्र है-

कार्यान्धस्य प्रदीपो मन्त्र: (२१) जैसे अन्धेरे में दीपक किसी को वस्तु, कार्य, बात को स्पष्ट कर देता है। ऐसे ही उलझे, रुके कार्य को मन्त्र स्पष्ट कर देता है। इन दोनों सूत्रों में मन्त्र को स्पष्ट करने के लिए दो उदाहरण दिए गए हैं। आइए! 'गहरे पानी पैठ' की भावना से इन पर विचार करें। यहां पहले प्रदीप वाला दृष्टान्त लेते हैं—दीपक (प्रकाश) का प्रत्येक प्रतिदिन अनुभव करता है, कि अन्धकार में कुछ भी दिखाई नहीं देता और न ही अन्धकार में कोई कार्य सरलता से किया जा सकता है। प्रकाश के होते ही उपस्थित का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है और कार्य भी सरलता से किया जा सकता है। प्रकाश के न होने पर या अधूरा होने पर ही प्राय: भ्रम, भय, संशय होता है तथा किसी को अन्धेरे में रखकर ही उसके साथ धोखा, अन्धेर किया जाता है। हां, प्रकाश केवल वस्तु के स्वरूप या कार्य करने के अवसर को ही प्रस्तुत करता है, कार्य को स्वयं नहीं साधता। अत: इस दृष्टान्त के अनुसार प्रकाश की तरह मन्त्र उस-उस कार्य के स्वरूप को स्पष्ट करके कार्य के अवसर को प्रस्तुत करता है, न कि कार्य को साधता है।

सूत्रों में सकेत किया गया दूसरा दृष्टान्त मूल है। जिसका अर्थ है जड़, कारण। कृषि, बागवानी की प्रक्रिया में हम देखते हैं कि जड़ के हरा-भरा, सजीव होने पर उससे शाखा, तना, पत्ते, फूल, फल समय के साथ विकसित होते हैं, बिना मूल के नहीं। ऐसे ही इस दृष्टान्त का दार्ष्टान्त भी यहां रही है कि मन्त्र, विचार, ज्ञान रूपी जड़ से ही क्रमश: कार्य की सिद्धि होती है। अत: यहीं कहीं भी ऐसा कथन नहीं है, कि किसी विशेष ढग से मन्त्र के जाप, पाठ, स्मरण से ही वह वह कार्य सिद्ध हो जाता है।

यह सत्य है कि धर्म में विश्वास रखने वाली जनता में अपने-अपने शास्त्रों के आधार पर यह दृढ विश्वास है कि मन्त्र-तन्त्र-जन्त्र से सिद्धि होती है। इस शास्त्रीय सन्देश का यह भी तो अभिप्राय हो सकता है, कि इस मन्त्र के विचार, ज्ञान के अनुसार प्रयास करने से सिद्धि होती है। सम्भवत: इसी दृष्टि से गीताकार ने कहा है—शास्त्र की विधि को छोड़कर जो मनमर्जी करते हैं, उनको सिद्धि प्राप्त नहीं होती १६, २३। अत: सिद्धि के साधक को शास्त्र के प्रमाण को मानकर तदनुरूप ही आचरण करना चाहिए। इसीलिए ही नाटककार भास ने कहा है—'मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलन्ति' दूतघटोत्कच १, १८ सही ढग को अपनाने से ही बात बनती है।

जनता की भावना और शास्त्र के कथन के भाव को सामने रखकर इन दोनों के सुन्दर, सुमगन रूप को दर्शाते हुए ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में प्रश्न—उत्तर के ढग से इस चर्चा को इस प्रकार चलाया है—

'(पूर्व०) क्या ये देवताओं के मन्त्रों से सिद्ध होते थे? (उत्तर०) नहीं, ये सब बाते जिन से अस्त्र-शस्त्रो को सिद्ध करते थे, वे 'मन्त्र' अर्थात् विचार से सिद्ध करते और चलाते थे। जो मन्त्र अर्थात् शब्दमय होता है, उससे कोई द्रव्य उत्पन्न नहीं होता। वैसा मन्त्र अर्थात् विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार के पदार्थ और क्रिया-कौशल उत्पन्न होते हैं। ११, २३७

—स्वा० वेदानन्द सम्पादित संस्करण

विशेषाँक संग्रहणीय रहा

सर्वहितकारी का ऋषिबोध विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एव आकर्षक था। इसमे सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अत: पत्रिका का यह अक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा सग्रहणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य, मन्त्री
आर्य युवक परिषद् गोहाना (सोनीपत)

शराब हटाओ देश बचाओ।

श्री रामेश्वरानन्द जी के स्वास्थ्य की कामना



गुरुकुल घरोण्डा के आचार्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व प्रधान श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती आजकल अस्वस्थ हैं और पानीपत के हस्पताल में उपचार करवा रहे हैं। इसकी सूचना मिलते ही सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी १२ मार्च को पानीपत पधारे और हस्पताल पहुंच उनसे भेंट की और स्थानीय आर्यसमाज के अधिकारियों को उनकी देखभाल करने का निर्देश दिया। जिला उपायुक्त श्री विजय कुमार ने भी हस्पताल के डाक्टरों से स्वामी जी के उपचार का विशेष ध्यान रखने का आदेश दिया है। परमात्मा से प्रार्थना है कि स्वामी जी को शीघ्र स्वस्थ करे। —सभा मन्त्री

ठेके बंद करवाने के लिए प्रदर्शन

नारनौल, १० मार्च (निस)। आज यहां चादपुरा, घनियार और सुजानपुर गांवों के सैंकड़ों लोगों ने बस स्टैण्ड चांदपुरा के निकट खुले शराब के ठेके को बन्द करवाने की मांग करते हुए जलूस निकाला। जलूस का नेतृत्व बलबीरसिंह एवं छात्र नेता ओमप्रकाश कर रहे थे।

लोकतांत्रिक युवा मोर्चा और अखिल भारतीय खेत मजदूर संगठन के कार्यकर्त्ताओं ने ढाकरी गांव में भी सार्वजनिक क्षेत्र पर शराब का ठेका खोलने का विरोध किया।

प्रदर्शकारियों के नेता ओमप्रकाश ने कहा कि अधिकारियों को सार्वजनिक क्षेत्र पर खुले ठेकों को बन्द करने के लिए ज्ञापन पत्र भेजे गए थे परन्तु अभी तक कोई कदम नहीं उठाया गया। प.के

मातृ—शोक

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) के प्रसिद्ध स्नातक प्रो० सुरेन्द्रकुमार मकड़ौली कलां (रोहतक) की पूज्या माता की ६५ वर्ष की अवस्था में दिनांक २६-२-१९९० को स्वर्गवास हो गया। दिनांक ९-३-१९९० को एक शांति महायज्ञ किया गया। जिसमें पं० सुदर्शनदेव आचार्य का संसारी दुःख एवं क्लेशों की निवृत्ति विषयक प्रवचन हुआ। महाशय बलवन्तसिंह जी आर्य ने वैदिक सिद्धान्तों के पालन की प्रेरणा दी। दिवंगत आत्मा को परमात्मा सद्गति और शोकाकुल परिवार को शांति प्रदान करे। —वेदव्रत शास्त्री मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जिला भिवानी वेदप्रचार मंडल की बैठक

जिला भिवानी वेदप्रचार मण्डल की एक आवश्यक बैठक १८ मार्च रविवार को प्रातः ११-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर घण्टाघर भिवानी में होगी।

अतः जिला भिवानी के सभी आर्यसमाज के अधिकारियों तथा मण्डल के सदस्यों से निवेदन है कि वे समय पर पहुंचकर वेदप्रचार के प्रसार तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर कराने के कार्यक्रम बनाने हेतु अपने सुझाव देवें। —गणपतसिंह आर्य संयोजक

हरयाणा के मुख्यमंत्री चौ. ओमप्रकाश चौटाला की सेवा में ज्ञापन

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय नमस्ते।

हरयाणा प्रदेश ऋषि मुनियों तथा महात्माओं की पवित्र धरती रही है। यहां दूध दही की नदियां बहा करती थी और यहां के नवयुवक संसार भर में अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे, परन्तु आज हरयाणा की इस पवित्र धरती पर दूध-दही के स्थान पर शराब की नदियां बहने लग गई हैं। शराब पीकर हमारे नवयुवक अपनी पुरानी वैदिक सभ्यता को भूलकर अपनी ही बहन बेटियों की इज्जत के लिए खतरा बन रहे हैं। शराब पीने से ही ५०% अपराध तथा अन्य दुर्घटनाएं हो रही हैं जिनके कारण खून पसीने की कमाई मुकदमे आदि में नष्ट हो रही है। शराब सभी बुराइयों की जड़ है। गत दिनों महम के चुनाव में जो दंगे अनैतिक कार्य हुए हैं, उनके लिए भी शराब की नीति जिम्मेदार है।

बड़े दुःख की बात है कि हरयाणा सरकार शराब अधिक से अधिक बेचकर उससे होने वाली आय से विकास कार्य करना चाहती है। परन्तु विकास के स्थान पर हरयाणा की जनता का विनाश हो रहा है। प्रतिदिन शराब पीने के कारण ग्रामों में आपसी झगड़े हो रहे हैं। ग्राम के बच्चे भी शराब पीने के आदी हो रहे हैं और अपने माता पिता की कमाई से शराब की बोतल, पव्वे खरीदने लग गए हैं। इसी कारण उनकी पढ़ाई तथा नैतिकता समाप्त हो रही है। सरकारी अफसर शराब पीकर अपने कर्त्तव्य की अनदेखी करके भ्रष्टाचार फैला रहे हैं। इस प्रकार विकास कार्यों में व्यय होने वाला धन शराब के नशे में खर्च हो रहा है। हरयाणा सरकार ने शराब पीने तथा पिलाने की इतनी सुविधाएं दे दी हैं कि पीने के लिए दूध दही तो दरकिनार पानी भी अनेक स्थानों पर नहीं मिलता परन्तु आज शराब प्रत्येक नगर तथा ग्राम की गली-गली में आसानी से मिल जाती है। अतः हम जिला रोहतक के आर्य नर-नारी आपसे अनुरोध करते हैं कि:—

१- हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी नीति लागू की जाए।

२- रूस तथा चीन आदि देशों की भांति शराब सेवन करने वाले मन्त्रियों तथा उच्च अधिकारियों को उनके पदों से तुरन्त हटाया जावे।

३- लोकसभा तथा विधानसभा के चुनावों में किसी भी शराब पीने वाले प्रत्याशी को चुनाव लड़ने की अनुमति न दी जावे।

४- अवैध रूप से शराब निकालने तथा बेचने वालों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जावे।

५- सरकारी सेवाओं में किसी भी शराबी का चयन न किया जावे। यदि कोई बाद में पीने लग जावे तो उसे सेवा से से हटा दिया जावे।

निवेदकः—
प्रभात शोभा पण्डिता

आर्यसमाज सुदकैनकलाँ जि. जींद का चुनाव

सर्वश्री राजेन्द्र जी—प्रधान, जगदीश जी—मुख्य उपप्रधान, कुलकुमार जी—उपप्रधान, दिलबाग सिंह जी—मन्त्री, डा० महावीर जी—मुख्य उपमन्त्री, प्रेमदास जी—उपमन्त्री, सुरेन्द्र जी कोषाध्यक्ष, रघबीरसिंह जी पुस्तकाध्यक्ष।

सर्वसदस्य रामफल जी, मेजासिंह जी, भीमसिंह जी, मजीद जी, रमेशकुमार जी आर्य, रघबीर सिंह जी, सुरेश जी।

—दिलबाग सिंह मन्त्री
आर्यसमाज सुदकैनकलां (जींद)

मद्यपान : अभिशाप या वरदान ?

—डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार
(गतांक से आगे)

कांग्रेस की यही नीति बाद तक भी जारी रही थी। जब १९३५ के एक्ट आफ इण्डिया के संविधान के तहत १९३७ ई० में प्रांतीय विधान सभाओं ने मद्यसार के प्रयोग को दण्डनीय अपराध घोषित किया था और आबकारी राजस्व वसूली को लगभग पूर्णत: स्थगित कर दिया था। लेकिन दुर्भाग्य से १९३९ में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ने पर उसमें भारतीय प्रतिनिधियों की सलाह के बिना भारत को युद्ध में झोंक देने के विरोध में अंग्रेज सरकार से विद्रोह करके कांग्रेसी प्रांतीय सरकारों ने त्यागपत्र दे दिए और वह नीति अधर मे लटकी रह गई। पंजाब और बंगाल की गैर कांग्रेसी सरकारों ने भी उस समय मद्य-निषेध को अवैध घोषित किया था। लेकिन फिर से अंग्रेजों के हाथ में सारी शक्ति आने पर उन्होंने अपनी पूर्व नीति इस विषय में लागू कर दी। युद्ध के समय तो उन्हें और भी ज्यादा धन की जरूरत थी, इसलिए मद्यपान की आदत और मद्यसारों के प्रयोग को और भी प्रोत्साहन दिया गया। इतना ही नहीं मद्यसारों के उत्पादन और बिक्री को एक व्यवस्थित उद्योग का रूप दे दिया गया, क्योंकि यह उनका कमाऊ पूत सिद्ध जो हो रहा था।

१९४७ में जब भारत स्वतन्त्र राष्ट्र बना तो भारतीय संविधान के निर्माता महामनीषियों ने भारत के संविधान के ४७वें अनुच्छेद में इस विषय में यह प्रावधान किया कि : "राज्य अपनी जनता के पोषक भोजन और जीवन निर्वाह के स्तर को ऊंचा करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्रारम्भिक कर्त्तव्यों में मुख्य समझेगा और विशेषतया राज्य यह प्रयत्न करेगा कि नशीले पेयों और नशीली दवाइयों के जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, प्रयोग का निषेध हो, सिवाय उनके जो चिकित्सा के काम की हैं।"

भारतीय संविधान, धारा ४७ : शुरू-शुरू के वर्षों में तो आजाद भारत की कांग्रेसी सरकारों ने इन नीति-निर्देशक नियमों का पालन किया। लेकिन जैसे ही पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश के योजनाबद्ध विकास का शौक चर्राया तो इन सरकारों ने इन योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए अर्थलाभ के लिए मद्यनिषेध की अपनी नीतियों में ढिलाई बरतनी शुरू कर दो। जिसके चलते धीरे-धीरे १९६४-७४ तक मद्य-निषेध पर लगे सभी प्रबन्ध लगभग समाप्त हो गए। शुरू में सभी प्रांतों में पूर्ण-निषेध लागू था, लेकिन आज अकेला गुजरात प्रांत ऐसा है जहां पर पूर्ण मद्य-निषेध जारी है। इस शिथिलता का एकमात्र कारण हमारी सरकार का समाज के नैतिक अथवा सामाजिक पक्ष की तुलना में आर्थिक पक्ष को अधिक महत्व देना ही था। उससे लिए विकास की परिधि में मात्र आर्थिक विकास ही आ पाता है, सामाजिक नैतिकता और शारीरिक स्वास्थ्य उसकी सीमा से बाहर हो है। यही अवधारणा मद्यपान को राजकीय प्रोत्साहन दे रही है।

यदि आज की इस सरकार और तथाकथित प्रगतिशील बुद्धिजीवियों और अर्थ-शास्त्रियों की इस बात को हम मान भी लें कि विकास के लिए यह राजस्व भी जरुरी है तो हमें यह भी देखना होगा कि आखिर यह राजस्व कितना भयंकर और महगा है। इसके लिए हम अमेरिका से नशाबन्दी का उदाहरण ले सकते हैं। वहां पर १९२१-२६ तक नशाबन्दी के वर्षों में उस देश में कितना विकास हुआ और इस नीति के स्थापित कर देने पर कितना ह्रास हुआ ? यह हम देख सकते हैं वहां पर नशाबन्दी के दिनों में प्रति व्यक्ति बचत १४४ डालर से २२१ डालर तक हो गया था। इतना ही नहीं राष्ट्रीय उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। शराब में लग जाने वाले उत्तम खाद्यानों अन्न रस, फल खांड, अंगूर आदि का उत्पादन और प्रयोग समाज में बढ़ा था। सब तरह के अपराधों में उल्लेखनीय कमी हुई थी, क्योंकि पियक्कडों की संख्या में १९% तक की कमी आई थी।

लेकिन जैसे ही पूंजीवादी शराबी लाबी ने प्रेस और राजनेतिकों को खरीद लिया तो १८वां संशोधन वापिस ले लिया गया और नशाबन्दी उठा ली गई। नशाबन्दी का कानून समाप्त होते ही वहां पर प्रतिवर्ष २ लाख ५० हजार लोग शराब के आदी होने लगे। मारकाट चोरी-जारी, लूट-फरेब और बलात्कार तथा वेश्यावृति जैसे अपराधों की भरमार हो गई। हालत यह बनी कि यदि उस समय शराब से राजस्व ५ अरब डालर प्राप्त हुआ तो लगभग ७५ अरब डालर शराब की दुर्घटनाओं और दंगों में ग्रस्त लोगों की चिकित्सा, जेलों में देख-रेख और न्याय व्यवस्था में खर्च हो गए। तब बताइए इससे क्या लाभ हुआ ?

आज अपने देश में भी एक ऐसी शराब की लाबी तैयार हो रही है जोकि मद्यसारों के प्रयोग के लिए प्रेस और नेताओं को खरीद लेती है। ये राजनेता मद्यसारीय राजस्व को ही विकास के पर्याय के रूप में प्रचारित करते हैं। उनके हिसाब से यह राजस्व प्रतिवर्ष वर्धमान है। १९७८-७९ में ५०० करोड था तो अब वह १५०० करोड़ हो गया है। यह १५०० करोड़ की छोटी रकम पर तो उनकी नजर है लेकिन इससे जो मोटी हानि लोगों के स्वास्थ्य और पारिवारिक जीवन की हो रही है उस पर भूलकर भी उन की दृष्टि नहीं जाती। न्यायमूर्ति टेकचन्द और श्रीमन्नारायण जैसे अन्वेषकों के अनुसार भारत की गरीबी के मुख्य कारणों में से मद्यपान एक है। दुर्गापुर और अहमदाबाद के मिल मजदूरों का अध्ययन करने पर पाया गया कि वे लोग अपने वेतन का ४०% मात्र सुरा सेवन पर खर्च करते हैं। तब परिवार के लिए अन्य जरूरी चीजें अत्यल्प वेतन में से कैसे जुटा सकते हैं। शराब के कारण लोग बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। कच्ची शराब पीने पर मृत्यु तक हो रही हैं। जिस पर भी बीयर की वकालत शीतल स्वास्थ्य वर्द्धक पेय के तौर पर की जा रही है। जबकि कोई भी २% से ज्यादा मद्यसार युक्त पेय हानिप्रद है। बीयर में इसकी मात्रा ५% तक है लेकिन सरकार को लोगों के स्वास्थ्य या चरित्र अथवा सामाजिक-पारिवारिक जीवन से क्या लेना-देना, उस का तो एकमात्र लक्ष्य पैसा है। आखिर लोगों का स्वास्थ्य और चरित्र बिगाड कर लिया गया यह रुपया भी कितना कल्याणकर हो सकता है ? यह हम सोच सकते हैं। तभी तो महात्मा गांधी ने शराब को वेश्यावृति से भी बढ़कर अपराध माना था और पूर्ण नशाबन्दी का आदेश दिया था, लेकिन आज उनके अनुयायियों ने उनके आदेश को मात्र उपदेश अथवा सुझाव ही रखकर छोड दिया है।

—प्रवक्ता, सनातन धर्म महाविद्यालय,
पलवल नगर—१२११०२

श्री पं. सुखदेव शास्त्री भारत लौटे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अवैतनिक महोपदेशक तथा अन्तर्राष्ट्रीय वेदपीठ की ओर से स्वीकृत उपदेशक के रूप में, आर्यसमाज मोरीशस के निमन्त्रण पर श्री सुखदेव शास्त्री २५ अगस्त १९८९ को वेदप्रचारार्थ मोरीशस गए थे। वे वहां छः मास तक वेद प्रचार करके गत सप्ताह भारत आए हैं। उन्होंने ५ मार्च को सभा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक पहुंचकर सभा प्रधान प्रो० शेर सिंह, सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री आदि सभा अधिकारियों को मोरिशस में अपने प्रचार कार्यक्रम का विवरण सुनाया। सर्वहितकारी के पाठकों की जानकारी हेतु वे वहां के आयसमाज की गतिविधियों पर एक लेख प्रकाशित करेंगे। —सम्पादक

शोक समाचार

आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी जि. महेंद्रगढ़ के मंत्री राधेश्याम आर्य के सुपुत्र १० वर्षीय ब्रह्मप्रकाश आर्य का निधन २८-२-९० को हो गया, आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी शोक प्रकट करता है।

—जगमालसिंह बेधड़क

'योगदर्शन के अनुसार चार प्रकार के दुःख'

—ब्र० विवेक भूषण दर्शनाचार्य

इस संसार में प्रत्येक प्राणी दुःख से छूटकर सुख को प्राप्त करना चाहता है। मनुष्य से भिन्न योनियों में दुःख अधिक और सुख कम मिलता है। मनुष्य योनि में दुःख कम और सुख अधिक मिलता है। फिर भी (चाहे कोई मनुष्य-शरीर भी प्राप्त कर ले, तब भी) दुःखों से पूर्णरूप से नहीं छूट पाता। जब तक जीवित रहता है, तब तक सामान्य परिस्थितियों में किसान न किसी दुःख से आक्रांत रहता ही है। हां, इन दुःखों से पूर्णतया छूटने का उपाय तो मनुष्य जन्म में कर सकता है। वह उपाय है—"योगाभ्यास"। इस उपाय से जीवित रहते हुए समाधि-काल में सम्पूर्ण दुःखों से व्यक्ति छूटकर ईश्वरीय-आनन्द को प्राप्त कर लेता है। और इसी उपाय का अभ्यास करते-करते जन्म-मरण के चक्र से छूटकर सम्पूर्ण दुःखों से निवृत्ति और मोक्षानन्द की प्राप्ति कर लेता है। जब तक व्यक्ति योगाभ्यास के ईश्वरीय-आनन्द की अनुभूति नहीं कर लेता, तब तक उसकी रुचि सांसारिक-सुख की ओर प्रायः रहती ही है। जीवात्मा स्वभाव से ही सुख को चाहता है, अतः ईश्वरीय आनन्द जब तक उसे प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक वह सांसारिक सुख से ही अपनी इच्छा पूर्ण करने का प्रयत्न करता है। परन्तु जैसा कि विशुद्ध सुख जीवात्मा चाहता है, वैसा उसे संसार में कहीं भी उपलब्ध नहीं हो पाता। वह विशुद्ध सुख केवल ईश्वर से ही मिल सकता है, इसीलिए योगाभ्यास करने की आवश्यकता पड़ती है। संसार में जो सुख प्राप्त होता है, उसमें अनेक प्रकार के दुःख मिश्रित रहते हैं। महर्षि पतञ्जलि जी महाराज के अनुसार सांसारिक सुखों में चार (४) प्रकार के दुःख मिले रहते हैं। आइये, इन्हें समझने का प्रयत्न करें।

परिणाम तापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः ॥ (योग० २।१५)

सूत्रार्थ—परिणाम, ताप और संस्कार दुःख के कारण तथा सत्वादि गुणों के स्वभाव में विरोध होने के कारण विवेकी=(योगी) व्यक्ति के लिए समस्त पदार्थ दुःख से युक्त हैं=(उसे पूर्ण सुख किसी भौतिक पदार्थ से नहीं मिल सकता।

व्याख्या:—प्रश्न हो सकता है कि वैदिक मान्यता के अनुसार पुण्य कर्मों का फल सुख और पाप कर्मों का फल दुःख मिलता है तो हम पुण्य कर्म करके सुखदायक=(मनुष्य के) जाति, आयु और भोग रूपी फल को प्राप्त करते रहेंगे, इसमें क्या हानि है? प्रस्तुत प्रश्न का उत्तर इस सूत्र के माध्यम से दिया गया है, कि चाहे मनुष्य बनकर सुखदायक जाति, आयु व भोग भी क्यों न प्राप्त कर लेवें, इन सांसारिक सुखों में तब भी ४ प्रकार के दुःख मिश्रित होने के कारण सभी भौतिक सुख त्याज्य ही हैं। अतः इनसे पूर्ण रूप से छूटने के लिए 'योगाभ्यास' के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करना ही चाहिए।

(१) परिणाम दुःख—जब कोई व्यक्ति अपनी इन्द्रियों रूप, रस आदि का सेवन करके कुछ समय के लिए थोड़ी सी तृप्ति जैसी अनुभव करता है, तो वह भौतिक सुख कहलाता है। और इन्द्रियों को चचलता के कारण कुछ अशान्ति सी अनुभव करता है, तो वह दुःख कहलाता है। व्यक्ति यह सोचता है कि मैं इन्द्रियों से इन भोगों को भोग-भोग कर अपनी इच्छाओं को शान्त कर लूंगा। परन्तु ऐसा होता नहीं है। बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि—'भोगों को बार-बार भोग कर इच्छाओं को शान्त कर देना' असम्भव है। कारण—कि भोगों के भोगने पर उस वस्तु से जो सुख प्राप्त होता है, उस सुख में व्यक्ति का राग बढ़ जाता है तथा इन्द्रियों की भोगने की शक्ति भी बढ़ जाती है। परन्तु इच्छा कुछ देर के लिए तो शान्त हो जाती है, पूर्ण रूप से शांत नहीं हो पाती। इसका कारण यह रहता है कि—इन्द्रियों का भोगों को भोगने का सामर्थ्य सीमित है। कुछ देर तक किसी भोग को भोगते रहने पर उस इन्द्रिय का सामर्थ्य समाप्त हो जाता है। परन्तु मन की (आत्मा की) इच्छा पूरी नहीं हो पाती। व्यक्ति और भोगना चाहता है, इन्द्रिय का सामर्थ्य समाप्त हो जाने से वह भोग नहीं पाता। परिणामस्वरूप उस व्यक्ति को दुःख होता है। यह दुःख भोगों को भोगने के परिणामस्वरूप होता है, इसलिए इसे 'परिणाम दुःख' कहते हैं।

एक बार उस वस्तु का भोग करने पर इन्द्रिय का जो सामर्थ्य समाप्त हो जाता है, कुछ काल के पश्चात् इन्द्रिय में वह सामर्थ्य पुनः संचित हो जाता है। अब की बार व्यक्ति और अधिक वेग से उस भोग को भोगता है, परन्तु परिणाम फिर भी वही रहता है। थोड़ी ही देर में इन्द्रिय फिर से शिथिल हो जाती है तथा इच्छा होते हुए भी व्यक्ति भोग नहीं पाता। इससे उसे दुःख होता है। इस प्रकार बार-बार इन भोगों का अभ्यास करते रहने से इन्द्रियों का भी भोगों को भोगने का सामर्थ्य बढ़ता जाता है और साथ-साथ इच्छा भी बढ़ती जाती है। इन्द्रियों का सामर्थ्य चाहे जितना भी बढ़ जाए तब भी भोगों को भोगने से इच्छाएं शान्त नहीं हो पाती, परिणाम-स्वरूप दुःख ही हाथ लगता है। इसीलिए इसे 'परिणामदुःख' कहते हैं। अतः सुख का उपाय भोगों का अभ्यास करना नहीं है, बल्कि 'योग का अभ्यास करना' है।

उदाहरण—जैसे एक व्यक्ति को रसगुल्ला खाना अच्छा लगता है। वह पहली बार दो-चार रसगुल्ले खाकर सुख का अनुभव करता है। वह और खाना चाहता है, परन्तु रसना इन्द्रिय का सामर्थ्य समाप्त हो जाने के कारण और खा नहीं पाता। दो-चार दिन के पश्चात् पुनः रसगुल्ला खाने की इच्छा होती है। अब की बार पांच-छः रसगुल्ले खा जाता है, परन्तु इच्छा और अधिक खाने की बनी ही रहती है। सामर्थ्य न होने से खा नहीं सकता। यदि जबरदस्ती खा भी लेवे तो पेट खराब हो जाने से रोग के कारण सुख के स्थान पर दुःख ही बढ़ता है। इस प्रकार वह अभ्यास करते-करते १०-१० अथवा १२-१४ रसगुल्ले तक खा लेने का सामर्थ्य बढ़ा लेता है। परन्तु इच्छाएं पूर्ण रूप से फिर भी शांत नहीं होतीं। परिणाम 'दुःख' ही रहता है। इसी प्रकार से सिगरेट, शराब आदि पीने वालों तथा सिनेमा आदि देखने वालों के दृष्टांत भी समझ लेने चाहिए। इसीलिए महर्षि व्यास जी ने इस सूत्र के भाष्य में कहा है—"तस्मादनुपायः सुखस्य भोगाभ्यास इति।" अर्थात् सुख का उपाय भोगाभ्यास नहीं है, (बल्कि योगाभ्यास है)।

(२) ताप दुःख—भोजन, वस्त्र, मकान, यान आदि जड़ पदार्थों तथा पुत्र-परिवार आदि चेतन प्राणियों से मनुष्य सुख प्राप्त करता है। जब कोई व्यक्ति इन जड़-चेतन पदार्थों से प्राप्त होने वाले सुख में बाधा डालता है, तो उस सुख भोगने वाले व्यक्ति को दुःख का अनुभव होता है। यह दुःख बाधा डालने के बाद भी होता है और यदि बाधा डालने से पहले ही पता चल जाए कि 'अमुक व्यक्ति मेरे अमुक सुख में बाधा डालेगा' तो बाधा डालने से पहले भी दुःख होता है, चाहे वह व्यक्ति बाद में बाधा डाल सके या न डाल सके। यदि बाधा डाल देवे, तो और अधिक दुःख होता है। इसे 'ताप दुःख' कहते हैं।

उदाहरण—कल्पना कीजिए, हमारे पास एक बहुत उत्तम 'ध्वन्यंकन-यन्त्र' (टेप-रिकार्डर) है। हमारा पड़ोसी हमसे वह यन्त्र मांग कर ले जाना चाहता है। हम उसे देना नहीं चाहते। जब हमें पता चलेगा कि 'कल वह यन्त्र मांगने के लिए आएगा' तो हमें सूचना मिलते ही दुःख होना प्रारम्भ हो जाएगा। यदि वह अगले दिन मांगने आ ही गए और पड़ोसी होने के नाते से, इच्छा न होते हुए भी हमें यन्त्र देना ही पड़े, तो और भी दुःख होगा।

(क्रमशः)

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का ६४वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार के ६४वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आठ दिवसीय कार्यक्रम १८ फरवरी रविवार को प्रारम्भ हुआ। प्रतिदिन आर्यसमाज से प्रात: ६ बजे प्रभात फेरी प्रारम्भ होकर गली-गली एवं नगर-कीर्तन करती हुई, लुधियाना के विभिन्न क्षेत्रों में पारिवारिक सत्संग के रूप में सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर वेद-मनीषी श्री हरवंस लाल जी महता को लखनऊ से वेदकथा के लिए विशेष रूप से आमन्त्रित किया था उन्होंने पारिवारिक सत्संगों में वेद की वाणी को बहुत ही रोचक व सरल ढंग से जनता तक पहुंचाया। जनता पर उनके प्रवचनों का विशेष प्रभाव पड़ा और जनता के विशेष आग्रह पर एक दिन में तीन तीन बैठकों को आयोजित किया गया।

ऋषि बोधोत्सव

२३ फरवरी को प्रात: ६ बजे आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार से प्रभात फेरी आरम्भ हुई जो कि चौड़ी सड़क, डिवीजन नं ३, बेजमन रोड से होती हुई सी०एम०सी० चौक पर पहुंची जहां आर्य समाज किदवई नगर के कार्यकर्त्ताओं ने जो कि नगर-कीर्तन करते हुए वहां पहुंचे थे, आर्य नेताओं का स्वागत किया उसके पश्चात् दोनों आर्यसमाजों की प्रभात फेरी कीर्तन करती हुई आर्यसमाज किदवई नगर पहुंची।

ऋषि-बोधोत्सव का मुख्य समारोह यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। जिस की अध्यक्षता श्री रणवीर जी भाटिया महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने की।

इस अवसर पर श्री सत्यानन्द जी मुंजाल उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने ध्वजारोहण किया। समारोह को श्री बलराज जी भजनोपदेशक, श्री विजयकुमार जी शास्त्री तथा वेद-मनीषी श्री पं० हरबसलाल महता ने सम्बोधित किया। विभिन्न वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला तथा उपस्थित जनता ने उनके मिशन को पूरा करने का संकल्प किया।

मुख्य समारोह

वार्षिकोत्सव का मुख्य समारोह २५ फरवरी को आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना में आयोजित किया गया। हाल को ओ३म् की झण्डियों से माटो लगाकर बहुत सुन्दर ढग से सजाया था। महर्षि दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, शहीदे आजम भगतसिंह के बड़े चित्र जनता के लिए विशेष आकर्षण थे। इस अवसर पर जन-कल्याण की भावना से ग्यारह हवन कुण्डों पर हवन किया गया जिसमें ३५ दम्पति परिवारों ने यजमान-पद को सुशोभित किया।

आर्यसमाज की गतिविधियों का विवरण करते हुए आर्यसमाज के महामन्त्री श्री रोशनलाल शर्मा ने कहा कि जनता की भलाई के लिए आर्यसमाज ने असहाय लोगों की सहायता के लिए निर्धन सहायता निधि, निशुल्क औषधालय, पुस्तकालय तथा अन्य कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि युवकों को रचनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित करने के लिए सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जनमत तैयार करने तथा जनता को देश की एकता और अखण्डता की रक्षा हेतु तैयार करने के लिए समय-समय पर समारोह एव विचार-गोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा है।

इस समारोह में श्री हरबसलाल शर्मा प्रधान संस्कृत विद्यालय करतारपुर, श्री सत्यानन्द जी मुंजाल उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा० के०पी० सिंह अध्यक्ष सर्जरी-विभाग दयानन्द हस्पताल लुधियाना, श्रीमती इन्दुपुरी जी मोगा को उनकी कर्तव्य-परायणता, धर्मनिष्ठा तथा समाज के प्रति की गई सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

भारत के गौरव महर्षि दयानन्द सरस्वती

● ऋषि तेरे एहसां ●

देव दयानन्द मेरे कितनी कृपा की तूने।
सोयी थी आर्य जाति क्षण में जगाई तूने॥

● माने न माने एहसां दुनिया के भोले मानस।
मचती थी त्राहि-त्राहि चहुं दिशि फैला था तामस॥
विद्युत सा तेज लेकर अग्नि भड़काई तूने।
सोयी थी आर्य जाति क्षण में जगाई तूने॥१॥

● सरिता सरोवर गहरे ऊंचे से पर्वत में भी।
शेर और चीते जैसे खतरीले जीवों से भी॥
निर्भय हो घूमा पाकर प्रभु की दुहाई तूने।
सोयी थी आर्य जाति क्षण में जगाई तूने॥२॥

● मुगलों फीसदियों का फैला हुआ जाल था।
ब्रिटिश साम्राज्य यहां बना बैठा काल था॥
देशद्रोही शासन की सत्ता हिलाई तूने।
सोयी थी आर्य जाति क्षण में जगाई तूने।३।

● याद रहेगा वह दिन सच्चे शिव की खोज का।
नहीं भूल सकते वो दु:ख दिवाली के रोज का॥
'जीवन' की कीमत प्यारे शिवरात्रि को पाई तूने।
सोयी थी आर्य जाति क्षण में जगाई तूने॥४॥

—ब्र० रामसुफल आर्य 'जीवन' विद्यानिधि
दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय, हिसार

तीसरा गायत्री महायज्ञ

हिन्दू मंच सोनीपत के तत्वावधान एवं आर्य वीरदल सोनीपत मण्डल तथा सत् जिन्दा कल्याण रामलीला क्लब सोनीपत के सहयोग से सोनीपत में तपोमूर्ति महा. दयानन्द जी महाराज की पुण्यस्मृति में तीसरा गायत्री महायज्ञ आचार्य रविदत्त जी गौत्तम शास्त्री, साहित्य आचार्य वेदोपदेशक के ब्रह्मत्व एवं स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज के संरक्षण में दिनांक ६-४ १९९० से १५-४-९० तक आयोजित किया जाएगा। इसमें श्री आशानन्द जी भजनीक, श्री रामलाल जी शास्त्री, श्री रघुनाथ जी शास्त्री, श्री दर्शनलाल जी, श्री कृष्णदत्त जी ब्रह्मचारी, श्री महाबीर जी बत्रा, श्रीमती सुनीता अरोडा, श्री सोमराज आर्य, श्री हरीशचन्द्र नाज सोनीपती, श्री तेजभानु नय्यर, श्री महात्मा प्रेम भिक्षु जी वानप्रस्थी (गन्नौर) आदि महानुभाव पधार रहे हैं। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन किया जाएगा। दानी महानुभाव अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।

आदर्श विवाह

हिन्दू मंच सोनीपत के संयोजक एवं बेसहारा लोगों के मसीहा श्री आशानन्द बधवा के सुपुत्र चि० राजकुमार एवं आयु० आशा सुपुत्री स्व० श्री मुरलीधर टुटेजा का विवाह श्री हरिचन्द स्नेही (मण्डलपति आ०वी०द०) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। बारात में इक्कीस बाराती थे तथा दहेज नहीं लिया गया। हजारों नर-नारियों ने सोनीपत में वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

शराब हटाओ देश बचाओ।

आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर (रोहतक) का हीरक जयन्ती महोत्सव

आर्यसमाज भाऊ अकबर अपनी हीरक जयन्ती 21 मार्च से 25 मार्च 1990 तक हर्षोल्लास के साथ मना रहा है। इस अवसर पर उत्तर भारत के आर्य भजनोपदेशकों की गायन प्रतियोगियता होगी।

इस शुभ अवसर पर कुछ प्रतिष्ठित आर्य भजनोपदेशकों को पुरस्कारों से सम्मानित करने का भी निश्चय किया गया है।

आर्य भजनोपदेशकों की गायन प्रतियोगिता 22, 23, 24 मार्च को रात्रि 8 बजे से 12 बजे तक होगी। इसके अतिरिक्त 22 मार्च को दिन के समय छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता 12 बजे से 2 बजे तक तथा गायन प्रतियोगिता 2 बजे से 4 बजे तक होगी।

23 मार्च को आर्य संस्थाओं के छात्रों की भाषण प्रतियोगिता दिन के 12 बजे से 2 बजे तक तथा गायन प्रतियोगिता 2 बजे से 4 बजे तक होगी। केवल वैदिक सिद्धांतों पर आधारित राष्ट्र एवं ईश्वर भक्ति व समाज सुधार के भजन/गीत प्रतियोगिता में गाये जा सकेंगे। भाषण प्रतियोगिता आर्यसमाज के कुरीति विरोधी अभियान पर आधारित होगी। भाषण व गायन का समय 5 मिनट होगा।

प्रथम भजनोपदेशक को 3100/-, द्वितीय को 2100/-, तृतीय को 1100/- रु० एवं 500/- रु० का सान्त्वना पुरस्कार दिया जाएगा। इसी प्रकार छात्र और छात्राओं में प्रथम को 500, द्वितीय को 300, तृतीय को 100 रु० और सान्त्वना पुरस्कार 50 रु० का दिया जाएगा। एक संस्था से केवल २ प्रतियोगी ही प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे। भाग लेने वाले भजनोपदेशकों छात्र-छात्राओं की सूचना मन्त्री आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर (रोहतक) के पास 15 मार्च 1990 तक पहुंच जानी चाहिए।

आवास तथा भोजन की व्यवस्था भाऊ अकबरपुर की ओर से होगी। ग्राम भाऊ अकबरपुर रोहतक-हिसार रोड पर पहला गांव रोहतक से 10 किलोमीटर पर स्थित है। हर समय बस स्टैण्ड से स्कूटर तथा बसें मिलती रहती हैं।

प्रधान	मन्त्री	अध्यक्ष	व्यवस्थापक	संयोजक
प्रतापसिंह	जगदेवसिंह	रघुबीरसिंह	मेहरसिंह	मोहरसिंह

हीरक जयन्ती प्रबन्ध समिति आर्यसमाज भाऊ अकबरपुर (रोहतक)

वार्षिकोत्सव पर सामवेद-पारायण यज्ञ सम्पन्न

फरीदाबाद—गत दिवस श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद) के ५३वें २, ३, ४ मार्च को आयोजित त्रिदवसीय वार्षिकोत्सव पर सामवेद-पारायण-महायज्ञ श्री रामकिशोर जी वैद्य वानप्रस्थी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर भारत के प्रसिद्ध उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों द्वारा वेदामृत पान कराया गया।

आयोजित पुरोहित-प्रशिक्षण-शिविर में प्रशिक्षित पुरोहितों को श्री सोमराज जी गुप्त निदेशक लायन्स क्लब फरीदाबाद ने अपने कर कमलों द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किए तथा एक प्रकाशित 'स्मारिका' का विमोचन किया। अपने भाषण मुख्य अतिथि के रूप में गुप्ता जी ने फरीदाबाद में चल रहे इस गुरुकुल के कार्यकारिणी के अधिकारियों को साधुवाद दिया और संस्कृत के प्रचार में कमी न आने देने पर जोर दिया। लायन्स क्लब की ओर से गुरुकुल के बाहर पानी की टंकी तथा विद्यापीठ में बोर्ड, टाट पट्टी व औषधियां देने का आश्वासन दिया।

डा० धर्मपाल जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने वक्तव्य में आर्यसमाज के प्रचार में विशेष योगदान की अपील की। जिससे देश के विकास में प्रगति हो सके। साथ ही वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी ने देश की रक्षा के लिए गौ सेवा और शराबबन्दी की अपील की।

अन्त में आगन्तुकों तथा अतिथिवर्ग का धन्यवाद करते हुए विद्यापीठ के प्रधान डा० धर्मदेव शर्मा शास्त्री ने आश्वासन दिया कि हम सभी गुरुकुलवासी आर्यसमाज के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए आगे बढ़ने में प्रयत्नशील रहेंगे।

- मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द
- मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद
- मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी

हरयाणा में आर्यसमाजों के उत्सवों का कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में आर्यसमाजों के उत्सव निम्नलिखित स्थानों पर हो रहे हैं।

आर्यसमाज सुदकान कलां जिला जीन्द	१५ से १८ मार्च
,, मुआना जिला जीन्द	२१ से २३ ,,
,, भाऊ अकबरपुर जिला रोहतक	२२ से २५ ,,
,, बरोदा मार्ग, गोहाना	३०, ३१ मार्च, १ अप्रैल
,, गुरुकुल कुरुक्षेत्र	,, ,,
,, गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत	,, ,,
,, माडल टाऊन सोनीपत	२ से ८ अप्रैल
,, बिलासपुर जिला अम्बाला	२ से ४ ,,
,, ठोल जिला कुरुक्षेत्र	६ से ८ ,,
,, धादस जिला गुड़गांव	६ से ८ ,,
,, नारायणगढ़ जिला अम्बाला	१३ से १५ ,,
,, श्रद्धानन्द नगर पलवल जिला फरीदाबाद	,, ,,
,, अर्बन इस्टेट सैक्टर ४, ७ गुड़गांव	बीस से बाइस अप्रैल
,, उर्वरक कालोनी पानीपत	पच्चीस से सत्ताइस ,,

—सत्यवीर शास्त्री वेदप्रचाराधिष्ठाता

सहारनपुर में गोमांस बिक्री

१६ फरवरी को हरयाणा राज्य गोशाला संघ के कुछ सदस्य सहारनपुर गए थे वहां एक मुसलमान ने एक करोड़ रु० का ऋण स्वीकृत करा एक ऐसा कारखाना बनाना प्रारम्भ किया है जिसमें मांस को डिब्बों में पैक करके निर्यात किया जाएगा। वहां की गोरक्षा समिति सक्रिय है उसे सहयोग देने हम गए थे।

केन्द्र तथा उत्तरप्रदेश सरकार से अनुरोध है कि इस गोहत्या के कारखाने को तुरन्त बन्द करने का आदेश देवें। ब्र० ओमस्वरूप

आर्यसमाज बालू (जींद) का सफल उत्सव

आर्यसमाज बालू जिला जीन्द का उत्सव १७ से १९ फरवरी को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सभा के उपदेशक पं० भजनलाल आर्य, भजनोपदेशक पं० चिरञ्जीलाल व पं० ईश्वरसिंह तूफान आदि के भजन हुए तथा ब्र० रामस्वरूप आर्य ने योग प्रदर्शन करके जनता को आकर्षित किया।

आर्यसमाज के प्रचार का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा।

—मन्त्री आर्यसमाज

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंहसिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा र०नं० न० २३२०७/७३ रजि०न०।

मुद्रित मवत् १,६६ ०८,५३,०६०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री .सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए० चैत्र ८, २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क १७ २१ मार्च, १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैं०

आर्यसमाज—परिचय

—प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) १४६०२१

एक दिन बी०एड० के कुछ छात्र बैठे हुए थे। बातों-बातों में अजितेश ने साथियों से कहा—मैं दो दिन से देख रहा हूं, कि सोमेश कालेज के बाद आर्यसमाज जाता है। तभी अमितेश ने कहा—देखो! सोमेश इधर ही आ रहा है। अतः उसी से ही पूछते हैं? सबकी अपनी ओर प्रश्नभरी आंखें देखकर सोमेश ने साथियों से पूछा, क्या बात है? पूर्व प्रसंग सामने आने पर सोमेश ने बताया। आजकल अभी पढ़ाई का कोई दबाव नहीं है। अतः इस नए नगर के दर्शनार्थ मैं कई बार निकल पड़ता हूं। जैसे कि आप सब जानते हैं, कि मैं भारत के दक्षिण भाग का वासी हूं। मेरे पिता जी तो अपनी सर्विस के स्थानान्तरण के कारण कई बार उत्तरभारत में आते रहते हैं, पर शिक्षा के व्यवधान को देखते हुए परिवार उधर ही रहता है।

स्नातक होने पर बी०एड० की जब बात चली तो मैंने अपना विचार रखा, कि मैं यह उत्तर भारत में ही रह कर क्यों न करूं? इससे पिता जी के समीप भी रहूंगा और उत्तर भारत का भी कुछ अनुभव हो जाएगा। मुझे दूसरे प्रान्त के अनुभाग से सरलता से प्रवेश मिल गया। इस नगर में भ्रमण करते हुए मुझे बाजार, कारखाने तो अपने प्रान्त जैसे ही लगे। मन्दिरों की व्यवस्था में भी बहुत कम ही अन्तर अनुभव में आया। हां, अपने प्रांत में एक-दो गुरुद्वारे भी देखे थे और यहां भी दो बार गुरुद्वारे हो आया हूं। अपने यहां से भिन्न इस नगर में एक नई चीज देखी, कि इस जगह 'आर्यसमाज मन्दिर' का नामपट्ट है। मैं उसको देखकर रुक गया और मन्दिर की भावना के अनुरूप उसके अन्दर प्रविष्ट हुआ।

वहां मैंने देखा कि दूसरे मन्दिरों की तरह न तो किसी भाग में कोई मूर्ति प्रतिष्ठित है और न ही गुरुद्वारे की तरह किसी ग्रन्थ की प्रतिष्ठा है। अतः जेब से निकले पैसों और सिर झुकाने, मस्तिष्क नमाने की भावना को जब कोई रूप न मिला, तो मैंने वहां के सेवक से कहा—मैं बाहर से आया हूं और इसको देखना चाहता हूं। सेवक ने हाल का द्वार खोला, मैं भी उसके साथ जूते उतार कर अन्दर प्रविष्ट हुआ। मैंने चारों ओर नजर दौड़ाई और देखा, दिवारों पर काफी ऊंचे कुछ चित्र टंगे हैं पर उनके आस-पास कोई फूल-माला, धूप-अगरबत्ती आदि भी नहीं है। तब मैंने सेवक से पूछा, यहां पूजा-पाठ कहां होता है? तो वह मुझे यज्ञशाला में ले गया। वहां मैंने देखा रेखागणित के अनुरूप यज्ञकुण्ड बना हुआ है, पर वहां भी चढ़ावे, मस्तिष्क नमाने वाली कोई रूपरेखा दिखाई न दी। यह सब देखने के बाद मैंने उससे पूछा—यहां कभी पूजा-पाठ होता है? तो उसने कहा—कल रविवार है, अतः आठ बजे प्रातः आइए तब सत्संग होगा।

मैं अगले दिन यथासमय वहां पहुंच गया। सत्संग में यज्ञ की प्रक्रिया देखी उसके बाद दो सामूहिक प्रभु-भक्ति के भजन हुए और उन में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता और भक्त भगवान् के निकट सम्बन्ध की चर्चा थी। इसके पश्चात् एक व्यक्ति ने ऋग्वेद के एक मन्त्र के आधार पर कुछ विचार दिए। सत्संग सम्पन्न होने पर वहां उस विद्वान् से मिला। पारस्परिक परिचय के बाद मैंने कुछ जिज्ञासा प्रकट की। तब उन्होंने कहा—अभी मैंने कार्यवश कहीं जाना है और आपके कालेज के समय के अनन्तर मैं प्रायः यहीं रहता हूं, तब आप आइए; आप भी प्रातः से यहां आए हुए हैं। अतः लौटने की आपको भी जल्दी हो सकती है। फिर कभी बैठकर निश्चिन्तता से विचार-विमर्श करेंगे। इसीलिए दो दिन से मैं आर्यसमाज जा रहा हूं।

सर्वेश—उस विद्वान् से क्या चर्चा हुई? कुछ हमें भी तो सुना?

सोमेश—सब से पहले आर्यसमाज के इतिहास की चर्चा हुई और उस विद्वान् ने बताया कि १८७५ में महर्षि दयानन्द ने भारत की महान् नगरी बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। तब मैंने पूछा कि ये महर्षि कौन थे? तो विद्वान् प्राध्यापक ने बताया—

भारत के गुजरात प्रांत में एक टंकारा नामक कस्बा है। वहां १८२४ में मूलशंकर नामक बालक उत्पन्न हुआ। उसका १३ वर्ष तक का बालपन दूसरे बच्चों की ही तरह बीता, चौदहवें वर्ष में पिता जी ने मूल को कहा—कल शिवरात्री है, अतः शिवपुराण की कथा सुनने के लिए चलते हैं। मूल पिता जी के साथ वहां गया, कथावाचक ने शिव जी की वीरता की कई घटनाएं सुनाईं और शिवव्रत रखने की पद्धति तथा महिमा बताई। लौटते समय मूल ने अपने पिता जी से कहा—इस बार मैं भी शिवरात्री का व्रत रखूंगा।

व्रतवाली रात को जब मूल ने चूहे को शिव पर अर्पित मिठाई, फल खाते हुए देखा तो पिताजी को उठाकर पूछा, शिवजी इनको हटाते क्यों नहीं? पिता जी ने मूल के प्रश्नों का उत्तर देते हुए प्रसंगवश कहा—सच्चे शिव तो कैलाश में रहते हैं। प्रश्नों के उत्तरों से सन्तुष्ट न होकर मूल ने पिता जी से घर जाने की आज्ञा ली और अपने मन में सच्चे शिव के दर्शन करने की प्रतिज्ञा करते हुए वह घर लौट आया। इसके दो वर्ष बाद मूल की बहिन की मृत्यु हो गई, मूल के लिए मौत का यह पहला अनुभव था, अतः गुम-सुम होकर वह सब कुछ देखता रहा। इसके दो वर्ष बाद मूल के चाचा की मृत्यु हो गई। चाचा जी मूल से बहुत अधिक प्यार करते थे। अतः मूल को तब अनुभव हुआ कि किसी प्रिय की मृत्यु होने पर क्या स्थिति होती है? मूल बहुत रोया, सब चुप कराते ही रह गए और इस घटना से मूल के मन में वैराग्य पैदा हुआ।

इसके कुछ दिनों बाद मूल ने पिता जी से कहा—मैं संस्कृत का विशेष अध्ययन करने के लिए काशी जाना चाहता हूं। पर समीप की पाठशाला में पढ़ने का निर्णय हुआ और वहां मूल ने पढ़ना प्रारम्भ कर दिया, मूल अपनी पढ़ाई के साथ-साथ कभी-कभी एकान्त में गुरु जी के पास आता और पूछता, सच्चे शिव के दर्शन कैसे होते हैं? मौत को कैसे जीता जा सकता है। तब गुरु जी ने योगाभ्यास की बात को बताकर टाल दिया, पर यह क्रम जब बार-बार चलने लगा, तो शिक्षक ने मूल के पिता को कहा—आपका बेटा कुछ अनोखे-२ प्रश्न पूछता है। अतः अभी से इसका प्रबन्ध कर लो। (शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज को क्या हो गया है ?

● डॉ० धर्मचन्द विद्यालंकार

आजकल आर्यसमाज की गतिविधियां और स्थितियां बहुत उत्तम और आशाप्रद नहीं है। जो आर्यसमाज एक जीवित जागृत समाज सुधारात्मक जन आंदोलन था जिसने समाज को जराजीर्ण गलित दलित दशा में से उबारने का प्रबल प्रयास किया था। छुआछूत निवारण, अछूतोद्धार नारीमुक्ति और जातीय अस्तित्व की जागृति और सुरक्षा आर्यसमाज के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम थे। रूढ़ि रोगों और अन्धविश्वासों के गहन तमोमण्डल को विदीर्ण करके वेदालोक को जन जन तक पहुंचाया था। मृतप्राय आर्यजाति में नवजीवन का संचार उसको सदियों की गहन तमिस्रा से कठोर कर खड़ा कर दिया था। दूसरों के राजनैतिक और धार्मिक वारों को झेलते-झेलते जिस जाति की कमर टूट गई थी उसके हृदय में संघर्ष का ओज भर कर हाथों में तर्क की तलवार देकर इस मरणासन्न समाज को समर सेनानी बना दिया था।

कहां वह विगत काल का स्वर्णिम आर्यसमाज का इतिहास—जबकि दूसरे मत पंथों के लोग उसकी ओर दिशा निर्देश के लिए ताका करते थे। धार्मिक विषयों में ही क्यों राजनैतिक विषयों और राष्ट्रीय जीवन में भी आर्यसमाज का संगठन अग्रणी था। उसने भारतीय राष्ट्र को प्रत्येक क्षेत्र में नवजीवन और गतिशीलता प्रदान की थी। लेकिन आज की उसकी इस दुर्दशा और जड़ता को देखकर यह कल्पना करना भी कठिन है कि क्या आर्यसमाज वास्तव में ही ऐसा प्रगतिशील और संघर्षशील संगठन रहा होगा। आज जो स्थिति इस संगठन की है वह हम और आप भली-भांति देख ही रहे हैं। सबसे दुखद और विचारणीय विषय तो यह है आर्यसमाजों और आर्यसमाजियों की गिनती दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। पुरानी समाजे बन्द होती जा रही हैं। और यदि घिसट कर जैसे तैसे चल भी रही हैं तो उनकी सदस्य संख्या नगण्य है। दैनिक सत्संगों की तो बात ही छोड़िए साप्ताहिक सत्संग में भी मुश्किल से दस बीस ही पहुंच पाते हैं। पहले थोड़े और ज्यादा हो जाया करते थे लेकिन अब दूरदर्शन पर प्रसारित महाभारत का समय ऐसा है कि कइयों को उसने जकड़ लिया। अब जो दो चार लोग पहुंच भी पाते हैं वह भी पुरानी पीढ़ी के ही स्त्री पुरुष जो बेचारे अपनी आस्था के वशीभूत होकर या समाज के अस्तित्व की चिन्ता से आतुर होकर यज्ञ के पुनीत कार्य में उपस्थित हो जाते हैं।

इसके इलावा जो लोग अब आर्यसमाज से जुड़े हुए हैं उनमें भी जात-पात दूसरी जातियां रूढ़ियां घर करती जा रही हैं। अभी तक वही जन्मजात जातिगत मान्यता और शादी-ब्याह चले आ रहे हैं। दान-दहेज के मामले में आर्यसमाजी अब किसी से पीछे नहीं लगते। घरों में अन्धविश्वास और रूढ़िवाद भी बराबर पनपता जा रहा है। आर्यसमाजी परिवारों के बच्चों में भी विनयशीलता और संस्कारों का अभाव खटकता है। कुछ लोग सुना है मद्य-मांसादि का भी सेवन करने लगे हैं। अब आप ही सोचिए ऐसी दीनहीन दशा में आर्यसमाज को जीवित माना जाए या मृत? आर्यसमाज ने शिक्षा के क्षेत्र में धूम मचाकर रख दी थी। उसके डी०ए०वी० स्कूल और कालेज तथा गुरुकुलों की अपनी विशिष्ट पहचान थी, लेकिन वे भी तेजी से अपनी प्रभावशीलता खोते जा रहे हैं। अब उनमें आर्य पद्धति की शिक्षा-दीक्षा या संस्कारों का शिक्षण नहीं है। उनमें और दूसरे संस्थानों में अन्तर नहीं रह गया है। जो शिक्षण संस्थाएं आर्यधर्म के प्रचार-प्रसार के लिए केन्द्र के रूप में स्थापित किए गए थे उनमें उन्मुक्त अंग्रेजीयत पनप रही है, गरीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा न देकर मोटी फीसों पर अमीरजादों को पढ़ाया जा रहा है।

आर्यसमाज के प्रचार के दो ही तरीके थे। शास्त्रार्थ और संघर्ष-शास्त्रार्थों से सत्य का प्रकाश किया जाता था और मेले की तरह लोग इसमें भाग लिया करते थे। बड़ी रुचि होती थी, क्योंकि प्रत्येक स्थान पर पक्ष-विपक्ष के लोग तो होते ही हैं। हमारे मन्तव्य से सहमत होकर एक पक्ष तो हमारे साथ रहता ही था। अब जबकि सत्य के प्रति आग्रह नहीं तो सहयोग कैसा? पहले पक्ष-विपक्ष में किसी विषय पर शास्त्रार्थों के साथ ही लिखित शास्त्रार्थ भी होता था पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से। अब आर्यसमाज के पत्रों में वह आन कहां है?

टी० वी० पर डटकर पौराणिकवाद और अन्धविश्वासों का प्रचार रामायण और महाभारत सीरियल में किया गया। लेकिन मजाल कि किसी भी पत्र-पत्रिका ने जबान खोली हो। महाभारत में द्रोपदी को यज्ञकुण्ड से उत्पन्न दिखाया गया है, उसके पांच पति दिखाए जा रहे हैं। कृष्ण द्वारा चीरहरण के अवसर पर किसी मदारी की तरह थान के थान पहनाते दिखाया गया है। लेकिन क्या किसी भी आर्यसमाजी पण्डित या पत्रिका ने आवाज उठाई। हम लोग जो दिल्ली से दूर बैठे हैं वे तो यही सोचते रहे कि दिल्ली के धुरन्धर बैठे हैं, कुछ न कुछ तो बोलेंगे - लिखेंगे ही। लेकिन उफ तक नहीं हुई। हम लिखें तो उसे छापे नहीं और आप न लिखें न लिखवायें। कैसी विचित्र विडम्बना है? तब कहां गया हमारा सत्य के प्रति आग्रह! अमर स्वामी जी की पुस्तिका 'क्या द्रोपदी के पांच पति थे' ही छाप देते। यदि आपने असत्य के विरुद्ध आवाज नहीं उठाई तो इसका मतलब हम सब भी उस गुनाह में शामिल हैं। अब यदि द्रोपदी के पांच पति थे फिर वेश्या किसे कहा जाए? लगता है आर्यसमाज को तो अब सांप सूंघ गया है। आर्यसमाज की पहली शक्ति यदि शास्त्रार्थ थी तो दूसरी थी संघर्ष की। शराबबन्दी है, गोकशी की रोकथाम है, अश्लीलतादि कितने ही ऐसे मुद्दे हैं जिन पर आंदोलन छेड़ा जा सकता है।

हिन्दूवाद की अन्धी आंधी में बहकर खण्डन-मण्डन भी आर्यसमाज ने छोड़ दिया। उसके समाजों और समाज मन्दिरों में संकीर्ण सम्प्रदायिक सोच के लोग छद्मवेश में घुस गए हैं। आर्यसमाज की सत्याग्रही सद्धान्तिक निष्ठा कुन्द कर दी गई है। जबानों पर ताले लगे हुए हैं। हम हिन्दुओं के एकीकरण या संगठन के विरुद्ध नहीं है। लेकिन हमारी मान्यता है कि हिन्दुओं के संगठन के साथ-साथ उनका सुधार भी होना चाहिए। उनका आचार-विचार, अंधविश्वास और अन्धश्रद्धा से रहित होना चाहिए। खान-पान भी शुद्ध होना चाहिए।

यदि आज आर्यसमाज को अपने आपको जीवित रखना है तो उसे सबसे पहले अपनी आन्तरिक दुर्बलताओं से ऊपर उठना होगा। अपने सामूहिक चरित्र को संघर्ष शील और सत्यशील बनाना होगा। भूलना न होगा कि संघर्ष और जनअभियानों ने आर्यसमाज को जीवनी शक्ति दी थी। यदि आर्यसमाज को पुर्नजीवन देना है तो उसकी संघर्षशील प्रगतिपरक चेतना को पुनः जागृत करना होगा।

शराब हटाओ
देश बचाओ।

- मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द
- मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद
- मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी

मुंह में राम - बुगल में छुरी

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

जम्मू कश्मीर की हालत बद से बदतर होती जा रही है और देश के राजनैतिक दल अपने-२ चक्के से बाज नहीं आ रहे। आवश्यकता इस बात की है कि सभी दलों के नेता मिलकर बैठें और एक सांझी समर नीति बनाकर उस पर तत्परता से अमल करें। सर्वदलीय प्रतिनिधि मण्डल कश्मीर में जाकर वहां के हालात को बारीकी से देखता और वस्तुस्थिति को पूरी तरह समझकर सर्वसम्मत समरनीति बनाता और उस पर अमल करने की पूरी प्रक्रिया तय करके उसके अनुरूप शीघ्र ठोस कदम उठाने के लिए सरकार को प्रेरित करता।

सर्वदलीय प्रतिनिधिमण्डल के कश्मीर जाने का उद्देश्य तो था देश की सीमाओं की सुरक्षा और राष्ट्र की अखण्डता बनाए रखने के उपायों पर गहराई से विचार करना, और जो निष्कर्ष निकले उनको कार्यान्वित करने के लिए एक दूसरे का भरपूर सहयोग करना। परन्तु इन विषम परिस्थितियों में वहां का राज्यपाल प्रशासन को चुस्त करने और रचनात्मक दृष्टिकोण से जनसाधारण की रोज-रोज की समस्याओं को सुलझाने और उनका समाधान निकालने में दिन-रात लगा हुआ है, उसको अनुचित रूप से लताड़ने में ही इस समस्या को सुलझाने के लिए जिम्मेदार नेताओं ने वाहवाही लूटनी चाही। ऊपर से रचनात्मक सहयोग की बात कहना और सर्वदलीय प्रतिनिधि मण्डल में शामिल होकर नोंक-झोंक के सिवाय कुछ न करना, 'मुंह में राम - बगल में छुरी' को चरितार्थ करता है।

आज कश्मीर की घाटी में आतंक का माहोल है, सुरक्षा बल आतंकवादियों, पाकिस्तानी घुसपैठियों और कट्टरपंथी साम्प्रदायिक अलगाववादी तत्वों से निपटने के लिए खूनी मुठभेड़ों में लगे हुए हैं, लोगों के जान-माल की सुरक्षा का कोई आश्वासन नहीं, और इसी कारण हजारों परिवार अपने घरबार छोड़कर देश के दूसरे भागों में पलायन करने के लिए मजबूर हो रहे हैं, उस समय अपने आपको शीर्षस्थ नेता कहलाने वाले यदि इलजामतराशी और नोंक-झोंक में लगे हों तो उनकी ऐसी हरकतों को गैर जिम्मेदाराना ही कहा जाएगा, जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए इलजामतराशी नहीं, कर्तव्य-पालन की जरूरत है। देश की सुरक्षा और राष्ट्र की अखण्डता के लिए आज सबको मिलकर यही करना चाहिए।

जिला करनाल, पानीपत तथा सोनीपत में बैठकों का आयोजन

जिला करनाल तथा पानीपत के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं तथा अधिकारियों की सम्मिलित बैठक एक अप्रैल रविवार को प्रातः ११ बजे आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत में तथा जिला सोनीपत के आर्यसमाजों की बैठक उसी दिन एक अप्रैल को दोपहर बाद दो बजे आर्यसमाज मन्दिर सोनीपत शहर में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में होगी। इसकी सूचना सभा कार्यालय की ओर से सभी आर्यसमाजों को परिपत्र द्वारा भेजी जा रही है। इन बैठकों में जिलावार वेद प्रचार मण्डलों का गठन तथा आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने पर विचार किया जावेगा।

अतः सम्बन्धित आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि इन बैठकों में समयानुसार सम्मिलित होकर वेदप्रचार कार्य में सहयोग प्रदान करें।

—वेदव्रत शास्त्री
सभामंत्री

अबोहर का हत्याकाण्ड

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

७ मार्च की शाम को दिन छिपे सदर बाजार में अचानक आतंकवादियों ने चीनी राइफलों से गोलियां चलाकर अबोहर के शांतिप्रिय नगरिकों को मौत के घाट उतार दिया और थोड़ी देर बाद बम का धमाका करके अन्य लोगों को मारा और घायल किया। यह वीभत्स खेल खेलकर तुरन्त बिजली गुल करदी और दूरभाष के तार काटकर बेकार कर दिया। उधर समाचारों के अनुसार पुलिस वाले अपने पुलिस स्टेशनों में दरवाजे बन्द करके बैठ गए और आतंकवादी आराम से शहर का आधा रास्ता पैदल चलते रहे, पुलिस का कोई सिपाही उनको पकड़ने या उन का पीछा करने के लिए बाहर नहीं आया। ३१ लोगों के मरने और उनसे काफी लोगों के घायल होने के समाचार मिले हैं। इनसे कुछ अधिक भी मरे हों तो आश्चर्य नहीं।

पिछले सप्ताह कुछ नवयुवकों की दुकानदारों से हुई अनबन को इस हत्याकाण्ड का कारण मान लेना कहां तक सही है यह नहीं कहा जा सकता। परन्तु खालिस्तान के नारे लगाने वाले या अपने संगठन के नेता के नारे लगाने वाले किसी छोटी-मोटी कहा-सुनी होने पर किसी के कहने पर इतना बड़ा कांड करदें यह बात नहीं मानी जा सकती। पंजाब समस्या के हल के लिए कुछ दिन से बातें चली हैं और कभी भी वे बातें आगे बढ सकती हैं। अबोहर फाजिल्का का सवाल तो महत्वपूर्ण है ही, और अभी तक आतकवाद की आग से बचा हुआ रहा है। यहां के लोग हरयाणा में मिलने के लिए बहुत ही उत्सुक हैं। यह पता लगाना चाहिए कि कहीं यह खेल यहां के लोगों में दहशत फैलाने के लिए ही किया गया हो। निश्चय से कुछ नहीं कहा जा सकता।

परन्तु एक बात तो स्पष्ट है कि पंजाब की पुलिस इस क्षेत्र के लोगों की रक्षा के लिए कुछ करना जरूरी नहीं समझती। पंजाब सरकार इस क्षेत्र की पिछले बीस वर्षों से हर दृष्टि से उपेक्षा ही करती आ रही है और इसको मजबूर करना चाहती रही है कि वे पंजाब में बने रहने की घोषणा करे। पंजाब सरकार के इस रवैये से मजबूर होकर अबोहर फाजिल्का के लोग पंजाब में बने रहने के लिए घोषणा कर देंगे यह तो होने वाला नहीं है। इस उपेक्षा और अन्याय-पूर्ण व्यवहार से तो वे और भी तीव्रता से अनुभव करने लगे हैं कि उन को उसी क्षेत्र में जाना चाहिए जिनके साथ उनकी भाषा मिलती है। और रहन-सहन तथा रस्मरिवाज मिलते हैं।

आतंकवादियों की दहसत तथा पंजाब सरकार की उपेक्षा और भेदभावपूर्ण व्यवहार से छुटकारा पाने और पाकिस्तान से लगी हुई २० मील की सीमाओं को पाकिस्तान के घुसपैठियों और अलगाववादियों की देशविरोधी गतिविधियों से बचाने के लिए इस क्षेत्र को शीघ्र १९७० के निर्णय के अनुसार हरयाणा से मिला देना अब और भी जरूरी हो गया है। अबोहर फाजिल्का के लोगों को सम्मानपूर्वक और निःशंक होकर जीने का यही रास्ता है।

अनुकरणीय कार्य

महर्षि दयानन्द विद्यालय जींद मार्ग रोहतक के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने निश्चय किया है कि वे किसी भी कागज कार्यवाही पर अंग्रेजी भाषा में अपने हस्ताक्षर नहीं करेंगे। सभी ने हिन्दी भाषा में हस्ताक्षर करने का संकल्प लिया है।

आशा है कि हरयाणा में स्थित अन्य आर्यसंस्थाएं भी इस हिन्दी प्रेम का अनुकरण करेंगी।

हरयाणा के आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन

अप्रैल मास में अपने वार्षिक चुनाव करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बधित आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने वार्षिक चुनाव अप्रैल मास में करें। सभा का आर्थिक वर्ष ३१मार्च को समाप्त हो रहा है। आशा है सभा के सर्वहितकारी में प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार अपने आर्य सभासदों से उनकी वार्षिक अथवा मासिक आय (शतांश) के अनुसार सदस्यता शुल्क प्राप्त कर लिया होगा और जिनकी आर्यसमाज के सत्संगों में कम से कम २५% उपस्थिति हो अपनी अन्तरंग सभा की स्वीकृति लेकर सूची तैयार करें और आर्यसमाज के नियम उपनियम के अनुसार १५ दिन के चुनाव की सूचना (नोटिस) आर्य सभासदों को दे देवें और वार्षिक चुनाव करके सभा के पत्र सर्वहितकारी में छापने के लिए भेज देवें।

प्राय: देखा गया है कि कुछ आर्यसमाज, आर्यसमाज के नियम उपनियम की धारा ४ के अनुसार अपने आर्य सभासदों से उनकी आय का शतांश रूप में शुल्क प्राप्त नहीं करते। इस प्रकार सम्पन्न आर्य सभासद अपनी आय कम दिखाकर कम शुल्क देते हैं। इससे जहां स्थानीय आर्यसमाज को आय कम प्राप्त होती है वहां सभा को भी दशांश कम प्राप्त होता है और धनके अभाव में आर्यसमाज के आवश्यक कार्य अधूरे पड़े रहते हैं। आर्यसमाज के चौथे नियम (सत्य ग्रहण करने असत्य को त्यागने के लिए सवदा उद्यत रहना चाहिए) का हम सभी आर्यों को पालन करना चाहिए।

आर्यसमाज के नियम पालन करने में जो आर्यसमाज ढील देते हैं, उनमें प्राय: चुनाव को लेकर झगड़े होते रहते हैं और रचनात्मक कार्यों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

अत: समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे नियम के अनुसार आर्य सभासद बनावें और नियमानुसार अपने चुनाव करें। वर्ष में कम से कम एक बार वार्षिक उत्सव अथवा वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन करके आर्यसमाज के सघटन को सुदृढ करें। —सभा मन्त्री

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा प्रिं० लाभसिंह का आर्य संस्थाओं का भ्रमण

सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह १२ मार्च को आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत पधारे और वहा स्वामी रामेश्वरानन्द जी के स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त करके आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता प्रिंसिपल लाभसिंह के साथ १२ बजे आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना जिला जींद पहुंचे और वहां स्थानीय आर्यसमाज तथा आर्य विद्यालयों की प्रबन्ध समिति के अधिकारियों की बैठक में भाग लिया। आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की कई समस्याओं का समाधान किया। सभी अधिकारियों ने विद्यालय के संचालन में सभा को पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया।

१२ मार्च की रात्रि को सभा प्रधान जी तथा प्रस्तोता जी सिरसा पहुंचे। वहां रातभर विश्राम किया और १३ मार्च को आर्यसमाज के प्रधान डा० रणधीर सिंह सांगवान, श्री नोरगसिंह एड्वोकेट, प्रिंसिपल दलीपसिंह जी वानप्रस्थी ओमप्रकाश जी आदि आर्यसमाज के अन्य अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया तथा आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, आर्य कन्या उच्चविद्यालय एवं आर्य प्राइमरी स्कूल की नवीन प्रबन्ध समितियों का गठन किया गया। जिला सिरसा में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार करने का भी कार्यक्रम बनाया गया। श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी ने जिला सिरसा मे प्रचार कार्य में पूरा सहयोग देने का वचन दिया।

जिला हिसार में वेद प्रचार मण्डल का गठन

१३ मार्च को दोपहर बाद एक बजे सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह विद्यापरिषद् के प्रस्तोता प्रिंसिपल लाभसिंह तथा वानप्रस्थी ओमप्रकाश जी (संचालक आर्य वानप्रस्थाश्रम मटिण्डा) आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार पहुंचे। वहां आर्यसमाज के उत्साही नवयुवक मन्त्री श्री प्रतापसिंह शास्त्री, श्री छाजूराम जाट कालेज हिसार के प्रिंसिपल सत्यवीर सिंह विद्यालंकार, गुरुकुल धीरणवास के संचालक स्वामी सर्वानन्द, श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक आदि ने हिसार पधारने पर सभा अधिकारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर जिला हिसार के प्राय: सभी आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। बैठक आरम्भ होने से पूर्व सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल आर्य तथा श्री दीपचन्द आर्य के वेद प्रचार की महिमा पर भजन हुए।

बैठक की कार्यवाही सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य ने जिला हिसार में वेद प्रचार मण्डल बनाने का सुझाव रखते हुए कहा कि आर्यसमाज के प्रचार की कमी के कारण अवैदिक मतों का प्रसार हो रहा है। वेद प्रचार मण्डल का गठन करके प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना करके वेदप्रचार हो सकता है। प्रि. लाभसिंह, प्रि. सत्यवीर विद्यालंकार, श्री बदलूराम मुकलान, श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी, श्री मोहनलाल बालावास, सूबेदार हरचन्द आर्य बालावास, श्री हरिसिंह आर्य कंवारी, श्री जयसिंह योगी हिसार, पं. लालचन्द माइयड, श्री तुलसीराम आर्य, श्री ज्ञानीराम आर्य मिरजापुर, श्री संग्राम आर्य दडोली, बहन राजकुमारी आर्या हिसार स्त्री समाज, श्री दीवान सिंह आर्य बालसमन्द, प्रि. धर्मदेव टोहाना, श्री मातूराम आर्य कालीरावण, श्री मानसिंह पाठक गुरुकुल आर्य नगर, वानप्रस्थी राममुनि स्याहड़, वानप्रस्थी हरिदेव उमरा, श्री दयानन्द शास्त्री दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार, श्री देशराज आर्य पटेल नगर हिसार, श्री फूलचन्द आर्य माडल टाऊन हिसार, श्री कर्णसिंह आर्य खोखा, श्री सूबेसिंह आर्य सिसाय, श्री हरफूल आर्य मसूदपुर, श्री कलीराम आर्य महजत, श्री माडलाल आर्य बालसमन्द, श्री गुलाब सिंह अगाना, श्री [illegible] टोकस, श्री रामकिशन बाड़ा मा पट्टी, श्री निहालसिंह वाचस्पति खिरसाना, पं. लालचन्द शुरकनी, डा० रामनारायण धींसड़ा टोहाना, श्री प्रेमी भजनोपदेशक (खेड़ा), श्री रणवीर एव श्री नत्थूराम माइयड, श्री युद्धवीर सिंह कवारी आदि आर्य कार्यकर्त्ताओं ने आर्यसमाज के प्रचार कार्य का प्रत्येक ग्राम में विस्तार करने तथा सामाजिक बुराइयों को समाप्त कराने के कार्यक्रम में सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सभी कार्यकर्त्ताओं के सुझाव सुनने के पश्चात् सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने कायकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज का कार्य सफलता पूर्वक करने के लिए आप सभी कायकर्त्ताओं के सहयोग की आवश्यकता है। आर्यसमाज का संगठन सुदृढ़ होने पर ही हमारी शक्ति बढ़ती है। आपने बालावास ग्राम में शराब का ठेका हटवाने का उल्लेख करते हुए कहा कि वहां आर्य नर-नारियों ने सम्मिलित रूप में जो सघर्ष किया था उसके सामने शराब के ठेकेदार तथा सरकार को झुकना पड़ा था। अत: ऐसी सामाजिक बुराई को समाप्त करने के लिए शराब के ठेकों पर धरना आदि देने का कायक्रम चालू रखना चाहिए। अपने वतमान राष्ट्र पर संकट का उल्लेख करते हुए कहा कि विदेशी शक्तियां कश्मीर तथा पंजाब में तोड़-फोड़ करने के लिए उग्रवादियों को भेज रही है। हरयाणा राष्ट्र की सुरक्षा चौकी है। अत: हमें हरयाणा के नवयुवकों को शराब आदि व्यसनों से दूर रखने का प्रयत्न करना होगा और इस कार्य के लिए केवल आर्यसमाज को पूर्व की भांति आगे आना होगा (शेष पृष्ठ ५ पर)

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को
आवश्यक सूचना

जिन हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों ने सुप्रीम कोर्ट में भारत सरकार से पेंशन पाने के लिए दावा किया हुआ है उन सबको सूचित किया जाता है कि इस केस में तारीख १४-३-९० लगी थी, परन्तु भारत सरकार ने इस तारीख पर भी रिट का कोई उत्तर नहीं दिया और एक आखिरी पेशी और कोर्ट से मांग ली। सुप्रीम कोर्ट ने अब अन्तिम तारीख १७-४-९० भारत सरकार को दे दी है और साथ ही भारत सरकार के वकील को यह आदेश दे दिए हैं कि यदि इस [illegible] पर भी जवाबदावा नहीं दिया तो भारत सरकार को और कोई मौका नहीं दिया जाएगा। अगली तारीख पर जो फैसला होगा [illegible] द्वारा सूचित कर दिया जाएगा।

—म० भरतसिंह, [illegible]
हैदराबाद स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान पेंशन समिति

शराब ठेकों के विरुद्ध मुहिम

कैथल १५ मार्च (निस)। पीपल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टीज की कैथल जिला इकाई ने एक प्रस्ताव पारित करके प्रशासन और सरकार से मांग की है कि कैथल के गहन आबादी क्षेत्र में स्थित शराब के ठेकों और अहातों को प्रशासन तुरन्त आबादी से बाहर करे।

संगठन के प्रधान एडवोकेट बृजभूषण भारद्वाज एवं महासचिव एडवोकेट दिनेश त्यागी ने एक संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि यदि प्रशासन ने संगठन की उक्त मांग पर शीघ्र कार्यवाही नहीं की तो आंदोलन चलाया जाएगा। जिला संगठन संयुक्त प्रो. श्रीमती उज्ज्वला शर्मा एवं उपप्रधान कुमारी संजया ने महिलाओं से शराब के ठेकों के विरुद्ध संगठन की मुहिम में सहयोग देने की अपील की है। इस सम्बन्ध में संगठन ने शहर में पोस्टर भी वितरित किए हैं।

(नवभारत टाइम्स)

शराबी पति की हत्या

मद्रास, १२ मार्च (एस०) पति की शराब पीने की आदत से तंग आकर एक २८ वर्षीया गृहिणी ने अपने पति को चाकू मार कर हत्या कर दी। यह घटना पिछले सप्ताह तमिलनाडू के दक्षिण अरकोट जिले के गांव वालसई में हुई।

प्राप्त खबरों के अनुसार इस गृहिणी के ३३ वर्षीय पति ने शराब पीने के लिए सारी सम्पत्ति या तो बेच दी अथवा उसे गिरवी रख दिया था। पत्नी जब उसे शराब को मना करती तो वह उसे पीटता था। गत बृहस्पतिवार की सुबह जब वह सो रहा था तो पत्नी ने तीन बार चाकू मारकर उसकी हत्या कर दी। —पंजाब केसरी

जिला हिसार में वेद प्रचार मण्डल का गठन

(पृष्ठ ४ का शेष)

अन्त में विचार-विमर्श के बाद जिला वेद प्रचार मण्डल हिसार का गठन करने का कार्यभार प्रिंसिपल सत्यवीरसिंह विद्यालंकार, श्री प्रतापसिंह शास्त्री तथा श्री अतर सिंह आर्य क्रांतिकारी को सौंपा गया। वे शीघ्र ही अन्य कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क करके इसका विस्तार करेंगे। श्री प्रतापसिंह शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज हिसार ने श्री राम निवास आर्य की मण्डली को अस्थाई रूप में जिला हिसार में वेदप्रचार कार्य पर मनोनीत करने की घोषणा की।

कालांवाली मंडी जिला सिरसा में
प्रेरणादायक यज्ञ

श्री महाशय त्रिलोकचन्द जी आर्य की माता श्रीमती चानो देवी का निधन ५ मार्च को हुआ और उनका अन्त्येष्ठि संस्कार वैदिक रीति से हुआ और उनके परिवार में १० दिन प्रतिदिन हवन यज्ञ किया गया। १४ मार्च को अन्तिम शोक दिवस पर श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा द्वारा सैंकडों स्त्री पुरुषों की उपस्थिति में हवन यज्ञ के माध्यम से १६ संस्कारों एवं जीवन-मृत्यु पर बड़ा प्रभावशाली उपदेश हुआ। इस अवसर पर श्री पूर्णचन्द जी, श्री हाकमचन्द जी, श्री त्रिलोकचन्द जी ने अपनी माता जी के निधन पर उनकी आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए आर्यसमाज की संस्थाओं को दान दिया।

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने आर्य सभासदों से मार्च ९० तक का वार्षिक चन्दा उनकी आय के शतांश के अनुसार प्राप्त कर लेवें और उन्हें रसीद दे देवें। जिन समाजों के पास रसीद बही नहीं है, वे छपवा लेवें अथवा सभा कार्यालय रोहतक से ४)०० रुपए प्रति रसीद बुक (१०० रसीद) के लिए रोहतक भेजकर मंगवा लेवें। सभा ने रसीद बही छपवा दी है।

आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार वही आर्य सभासद चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं, जिनका नाम सदाचारपूर्वक आर्यसमाज के रजिस्टर में २ वर्ष तक अंकित रहा हो और वे अपने समाज को अपनी आय का शतांश (१००वां भाग) चन्दा देते हों और सत्संगों में उनकी कम से कम २५% उपस्थिति रही हो।

अत: सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को इसी नियम के अनुसार आगामी चुनाव में मत देने वाले आर्यसभासदों से मार्च तक चन्दा प्राप्त करके सूची सभा को भेजें तथा अप्रैल मास में नियम अनुसार अपने आर्यसमाजों का वार्षिक चुनाव करें।

जो आर्यसमाज इस कार्य में सभा की सहायता चाहते हों, वे सभा को पत्र लिखें ताकि सभा की ओर से उपदेशक भेजा जा सके।

—सभामन्त्री

सत्यमेव जयते

—रामचन्द्र आर्य नलवा

सच्चाई का इस दुनिया में दिन-२ पलड़ा भारी हो से ।
मूढ़पने में झूठ पकड़ले तै आखिर जान ख्वारी हो से । टेक॥

हिरण्याकश्यप राजा था जिसने झूठ तैं प्यार किया ।
पागलपन में उस मूर्ख ने ईश्वर को विसार दिया ।
प्रजापालक बन बैठा पर ना प्रजा तैं प्यार किया ।
अहंकार के बस होकै पाखण्ड घणा उभार दिया ।
के कर लेगा ईश्वर एक भ्रड़े पूजा म्हारी हो से ॥१॥

एक सुत प्रहलाद जिसने निराकार को मान लिया ।
सत्य है ईश्वर वो ही कर्त्ता-धर्त्ता जान लिया ।
धर्म शास्त्र वेदादि पढके धर्म को पहचान लिया ।
ध्यान मग्न श्रद्धा स्वाध्याय तै सच्चा ज्ञान लिया ।
जलता था वो बाप कहा के ईश्वर भण्डारी हो से ॥२॥

सारे जग का कर्त्ता-धर्त्ता वो ही सरताज सै ।
थारे ऊपर भी पिताजी एक राजा का राज सै ।
न्यायकारी सर्वव्यापक वही सिद्धकर्त्ता काज सै ।
आत्मा होती अमर इस चमड़ी पर के नाज सै ।
यूं कहके समझावण लाग्या हार तुम्हारो हो से ॥३॥

बेटे के उपदेश सुण बाप को घणा अहकार होया ।
तेरै बाप तै बढकै बतादे ईश्वर तनै कोण टोहया ।
इतने दिन तेरे तै हमनै करकै प्यार खोया ।
क्यूं भूलाता मैंने पूजले बनकै मैं बाप रोया ।
भगवान मैं प्रजा भक्त रोज पूजा की तैयारी हो से ॥४॥

मान्या नहीं सुत जब वो मरवाणा चाहवै था ।
जला कै अपने सुत नै नाम मिटाणा चाहवै था ।
सत्य के पुजारी नै भूला सत डिगाणा चाहवै था ।
कष्ट देके भक्त से झूठ उगलाणा चाहवै था ।
मानै केसै भक्त बता ईश्वर का आज्ञाकारी हो से ॥५॥

आखिर में हो तंग राजा ने बहन को बुलाया था ।
प्रहलाद को जला दें उसको आदेश सुनाया था ।
होलिका ने भी वश होके पाप को सही बताया था ।
ले गोदी बैठी होलिका बच्चे को जलाना चाहया था ।
मेर में आकै पाप करैं वो भी धर्माहारी हो सै ॥६॥

ईश्वर का करना ऐसा होग्या होलिका फिर दहन होगी ।
थोड़ी बहुत आंच आई वो भक्त को सहन होगी ।
पाप [illegible] आली चन्द्रमा ज्यूं ग्रहन होगी ।
भक्त बच्चा ईश्वर सरणे फिर याहे बात कहन होगी ।
होली मनी प्रायश्चित में न्यू खुशी घणी प्यारी हो से ॥७॥

हिरण्याकश्यप मरा दु:ख पाकै यूं इतिहास बतावै सै ।
सारी प्रजा खुश होगी न्यूं होली याद दिखावै से ।
रामचन्द्र नलवे आला कथके कविता गावै से ।
ईश कृप तै आर्य बन घणा सुख पावै सै ।
आर्यों का कहन यो ही दिन-दिन जीत हमारी हो से ॥८॥

प्रेषक:—
विकास शिक्षा समिति (रजि०) बडरा (भिवानी)

रोहतक में शराबबन्दी प्रदर्शन की झाँकियाँ



गत ६ मार्च को जिला रोहतक के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर प्रदर्शन करते हुए आर्य आर्य महिला नेता श्रीमती प्रभात शोभा, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, श्री अर्जुनदेव आर्य उपदेशक, श्री विजय कुमार सुपुत्र श्री वेदव्रत शास्त्री, श्री महावीर शास्त्री, श्री केदारसिंह आर्य, वानप्रस्थी महावीर तथा दयानन्द पब्लिक विद्यालय रोहतक के छात्र ।



आर्यसमाज फरमाणा के प्रधान श्री पूर्णसिंह, श्री केदारसिंह आर्य, श्री रोहतास मन्त्री आर्यसमाज पाडा मोहल्ला रोहतक तथा ऊपर की पंक्तियों में श्रीमती सुकेशा देवी आर्या धर्मपत्नी श्री वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री, श्री बाल भारतीय विद्यालय के छात्र तथा [illegible] सहित ट्रैक्टर पर खड़े होकर शराबबन्दी नारे लगा रहे हैं ।

दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना दिवस

दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना दिवस २४ मार्च ९० शनिवार मध्याह्नोत्तर २ से ५ बजे तक सप्रू हाऊस बाराखम्बा मार्ग नई दिल्ली में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति की अध्यक्षता में समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है । इसमें स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री गजानन्द आर्य, डा० रामसिंह सांसद, श्री रामनाथ सहगल तथा श्रीमती शकुन्तला आर्या आदि आर्यसमाज पर अपने व्याख्यान देंगे ।

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ

'योगदर्शन के अनुसार चार प्रकार के दुःख'

—ब्र० विवेक भूषण दर्शनाचार्य

(गतांक से आगे)

और यह तब तक होता रहेगा, जब तक कि वह यन्त्र हमारे पास सुरक्षित लौट नहीं आवेगा। साथ ही यह भी मन में भय बना रहेगा कि कहीं पड़ोसी व्यक्ति हमारा यन्त्र खराब न कर देवे। इसे 'ताप-दुःख' कहते हैं। इसी प्रकार से कोई अन्य कीमती वस्तु (कपड़े, करदीप (टार्च), कार आदि वाहन) मांगने पर होने वाले दुःख के उदाहरण भी समझे जा सकते हैं। यदि हम कपड़े के व्यापारी हैं, और हमारे बाजार में एक और नई दुकान कपड़े की खुलने वाली हो, तो उस से हमारे व्यापार में धन की कमी होने से हमें दुःख होगा, वह भी ताप दुःख, इत्यादि।

(३) संस्कार दुःख—जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु से सुख भोगता है, तो मन पर सुख के संस्कार पड़ जाते। ये ही संस्कार कुछ समय के पश्चात् उस व्यक्ति को पूर्व भोगे हुए सुख की ओर पुनः प्रेरित करते हैं। परन्तु जब किन्हीं कारणों से उस सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती, तो व्यक्ति दुःख का अनुभव करता है। यह दुःख संस्कारों के कारण होता है, इसलिए इसे 'संस्कार दुःख' कहते हैं। इसी प्रकार से जब व्यक्ति किसी वस्तु से दुःख प्राप्त करता है, तो मन पर दुःख के संस्कार पड़ जाते हैं। जब वह दुःखदाई वस्तु पुनः सामने उपस्थित हो जाती है, अथवा वह व्यक्ति उस दुःखदाई वस्तु का स्मरण कर लेता है, तो वे ही दुःख के संस्कार पुनः दुःख को उत्पन्न कर देते हैं। यह दुःख भी संस्कारों के कारण होता है, अतः इसे भी संस्कार दुःख कहते हैं।

उदाहरण—कल्पना कीजिए, कोई व्यक्ति प्रतिदिन कार से अपने कार्यालय में जाता है। कार में यात्रा करने पर वह सुख का अनुभव करता है। यदि किसी दिन उसकी कार रास्ते में खराब हो जाए अथवा पहिया पंचर हो जाए और उसे टैक्सी भी न मिले बस में ही यात्रा करनी पड़े, तो उसे दुःख होगा। उसने कार से होने वाले सुख के संस्कार अपने मन पर डाल लिए थे। जब वह सुख किसी दिन नहीं मिला, तो उन संस्कार के कारण उसे दुःख उठाना पड़ा। इसी प्रकार से चाय, पान, बीड़ी का सेवन करने वालों को जब ये वस्तुएं यात्रा आदि में अथवा अन्य किन्हीं कारणों से उपलब्ध नहीं हो पातीं तब उन्हें जो दुःख होता है, उसे प्रायः सभी लोग जानते हैं। यह सब 'संस्कार दुःख' कहलाता है। दूसरे पक्ष में—एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति का अपमान कर दिया। उससे उसे दुःख हुआ। जब अपमान करने वाला व्यक्ति उसके सामने आयेगा अथवा वह अपमानित व्यक्ति उस अपमान करने वाले व्यक्ति का स्वयं स्मरण कर लेगा, तो उसे उन संस्कारों के कारण दुःख होना आरम्भ हो जाएगा, जो संस्कार उसने अपमान होते समय अपने मन पर डाल लिए थे। इसी प्रकार से किसी से धोखा खाने वाला व्यक्ति, किसी से मार खाने वाला व्यक्ति, किसी अन्य प्रकार की हानि उठाने वाला व्यक्ति भी, सम्बन्धित धोखेबाज या पीटने वाले व्यक्ति के सम्मुख उपस्थित हो जाने पर अथवा उनका स्मरण कर लेने पर जिस दुःख का अनुभव करता है, वह भी 'संस्कार-दुःख' कहलाता है।

(४) गुणवृत्तिविरोध दुःख—योग दर्शन के व्यास-भाष्य के आधार पर इस दुःख के दो स्वरूप समझ में आते हैं। 'गुण' का अर्थ है=सत्व, रज और तम नामक सूक्ष्मतम कण, जिनके समुदाय का ही नाम 'प्रकृति' है। 'वृत्ति' का अर्थ है=स्वभाव।

गुणवृत्तिविरोध दुःख का पहला स्वरूप

(क) चित्त में गुणों का परिवर्तन—प्रकृति से उत्पन्न सभी पदार्थ त्रिगुणात्मक हैं। चित्त (अथवा मन) भी त्रिगुणात्मक है। इन तीनों गुणों=(सत्व, रज और तम) की वृत्तियों=(स्वभाव) में परस्पर विरोध है। यथा—सत्व सुख को उत्पन्न करता है और तम मिथ्याज्ञान को उत्पन्न करता है। इसी प्रकार से सत्व धार्मिक प्रवृत्तियों=(न्याय, दया और परोपकार, कर्तव्यपालन आदि) को उत्पन्न करता है और रज अधार्मिक प्रवृत्तियों=(पक्षपात, हिंसा, चोरी, स्वार्थ आदि) को उत्पन्न करता है। चित्त में स्थित इन गुणों का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है। इन गुणों का व्यापार=(कार्य करना) चंचल है। इनका व्यापार चंचल होने से चित्त में स्थित इन गुणों के प्रभाव में भी परिवर्तन होता रहता है। जब कभी व्यक्ति सत्वगुण के प्रभाव से परोपकार, न्याय, दया, धर्म आदि से युक्त होता है, तो वह सुख का अनुभव करता है। परन्तु किसी कारणवश रजोगुण या तमोगुण के प्रभाव से उसको यह स्थिति छूट जाती है और वह स्वार्थ, पक्षपात हिंसा, चोरी आदि के विचारों से युक्त हो जाता है तो उसे दुःख होना आरम्भ हो जाता है। यह दुःख इन गुणों की वृत्तियों=(स्वभाव) के परस्पर विरुद्ध होने से होता है, इसलिए इसे 'गुणवृत्तिविरोध दुःख' कहते हैं।

उदाहरण—सत्वगुण के प्रभाव से मन=(चित्त) में यह विचार उत्पन्न होता है कि—'चोरी नहीं करनी चाहिए, मेहनत से काम कर खाना अच्छा है।' रजोगुण के प्रभाव से मन में एक विरुद्ध विचार उत्पन्न होता है कि—'एक बार चोरी कर लो, क्या फर्क पड़ता है। बीस हजार रुपए मिल जाएंगे, आगे फिर चोरी नहीं करेंगे।' अब इन दोनों वृत्तियों में परस्पर विरोध होने से युद्ध चलता है। इस युद्ध के परिणामस्वरूप व्यक्ति व्याकुल=(दुःखी) हो जाता है। क्योंकि यह वृत्तियों के विरोध से होता है, अतः 'गुणवृत्तिविरोध' दुःख कहलाता है। इसी प्रकार से—सत्वगुण='समय हो गया है, अब घर चलना चाहिए।' रजोगुण='घर तो रोज समय पर ही जाते हैं, आज तो सिनेमा देख ही लेते हैं। कुछ देर से घर पहुंच जाएंगे।' फिर इन वृत्तियों में युद्ध और फिर चित्त की व्याकुलता आदि होना—सर्वत्र समझ लेना चाहिए।

गुणवृत्तिविरोध दुःख का दूसरा स्वरूप

प्रत्येक भौतिक पदार्थ दुःख से युक्त हैं—प्रकृति से उत्पन्न सभी पदार्थ सत्व, रज और तम से युक्त हैं। प्रत्येक भौतिक पदार्थ में कम या अधिक मात्रा में इन तीनों गुणों=(सूक्ष्मतम परमाणुओं) का समावेश है, और प्रत्येक पदार्थ में विद्यमान होते हुए, अपने-अपने स्वभाव के कारण सुख-दुःख और अज्ञान को ये तीनों गुण कम या अधिक मात्रा में उत्पन्न करते ही रहते हैं। क्योंकि रजोगुण भी इन तीनों में से एक है, अतः यह भी प्रत्येक पदार्थ में रहता हुआ कम या अधिक दुःख को उत्पन्न करता ही है। जिस पदार्थ में जिस गुण की अधिकता होती है, वह पदार्थ उसी गुण के नाम से कहा जाता है और उसका प्रभाव भी उसी गुण के अनुसार होता है। जैसे—

उदाहरण—चावल, दूध, बादाम, घी आदि पदार्थ यद्यपि तीनों गुणों के सम्मिश्रण से बनते हैं, फिर भी इनमें सत्वगुण की अधिकता होने और 'सुख देना' रूपी सत्वगुण का प्रभाव विशेष होने से ये 'सत्व-प्रधान' पदार्थ कहलाते हैं। इसी प्रकार से 'मिर्च मसाले' आदि 'रजः प्रधान' पदार्थ तथा 'मद्य-मांस' आदि 'तमः प्रधान' पदार्थ कहलाते हैं।

इतना होने पर भी चावल, दूध, घी, बादाम आदि सात्विक पदार्थों में, रजोगुण की अल्प मात्रा होने पर भी वह अल्प दुःख को उत्पन्न करता ही है। यद्यपि इन सात्विक पदार्थों का सेवन करते समय रजोगुण से उत्पन्न उस अल्प दुःख की सामान्य व्यक्ति को कोई स्पष्ट अनुभूति नहीं होती। फिर भी उपादान कारण के नियम से योगाभ्यासी व्यक्ति उस दुःख का बुद्धि से अनुभव कर लेता है कि—(उपादान का नियम) जब इसमें रजोगुण विद्यमान है, तो दुःख को भी अवश्य ही उत्पन्न करेगा। (क्रमशः)

आर्यसमाज—परिचय

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस चेतावनी के बाद माता-पिता ने मूल को घर पर वापस बुला लिया और उसके विवाह की तैयारियां शुरु कर दीं। मूल ने जब यह नया रूप देखा तो उसका अपना आपा छटपटा उठा। अतः घर छोडने का निश्चय करके एक दिन सायंकाल मूल ने जल का पात्र लिया और चल पडा। योग सिखाने वाले गुरु की खोज में मूल पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बना। लगातार चौदह वर्ष जंगलों, नदियों, पहाड़ों की खाक छानी और जहां कहीं पता चला कि अमुक स्थान पर विशेष विद्वान्, साधु, योगी, महात्मा रहता है, वहीं विनीत शिष्य बन कर पहुंचा। शास्त्र के नाम पर जिसने जो कुछ पढाया सो पढा तथा योग के नाम पर जिसने जो सिखाया सो सीखा। अन्त में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया पर मथुरा में पहुंचा। वहां लगभग तीन वर्ष अष्टाध्यायी, महाभाष्य का विशेष रूप से अध्ययन किया।

एक दिन किसी से कुछ लौंग लेकर गुरुचरणों में बिदाई लेने के लिए दयानन्द पहुंचे और निवेदन किया कि अब सच्चे शिवदर्शन की साधना और मृत्यु विजय का पथ पकड में आया लगता है। अतः मुझे इस पथ का पथिक बनने की आज्ञा दीजिए। यह सुनते ही गुरु विरजानन्द जी ने कहा—मैंने तुझे इन लौंगों के लिए नहीं पढ़ाया था, मुझे इन लौंगों की जरूरत नहीं है। तब दयानन्द ने कहा—मेरे पास इन मांगी हुई लौंगों के अतिरिक्त और देने के लिए है ही क्या? तब बड़े विश्वास के साथ गुरु जी ने कहा—दयानन्द तू युवा है, तेरे पास स्वस्थ शरीर है, तू शिक्षित और विचारशील है तथा भावना भरा दिल रखता है। तू आंखें और दिमाग रखते हुए भी अपने चारों ओर क्या नहीं देखता, कि जनता किस प्रकार अन्धकार में ठोकरें खा रही है? तब दयानन्द जी ने पूछा, गुरुदेव मेरे लिए क्या आज्ञा है? ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी ने अपने हृदय की भावनाओं को उण्डेलते हुए कहा—दयानन्द! आर्षज्ञान के प्रकाश से सभी को प्रकाशित करो। शिष्य ने बिना ननुनच के इस आज्ञा को शिरोधार्य किया और अन्तिम श्वास तक प्राणपन से निभाया।

स्वामी दयानन्द ने पहले सामान्य विचारों के प्रचार के साथ भारत के एक बड़े भूभाग की जनता को समझा और भारतीय साहित्य का गहरा अवलोकन किया। बहुत कुछ देखने, पढने, सोचने के बाद ऋषि दयानन्द ने १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की। जिससे आर्षज्ञान की ज्योति सदा जगमगाती रहे।

(क्रमशः)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए हीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय १० अनददीमहृसिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं. २३२०७।७३

४८१२ संवत् १,९६,०८,५३,०९०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए.   चैत्र २५, २०४७ वि०

वर्ष १७   अंक १८   ७ अप्रैल १९९०   वार्षिक शुल्क २५)   आजीवन शुल्क २५१)   विदेश में ८ पौंड)   एक प्रति ६० पैसे

वेद मनुष्यमात्र के लिए

—पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा

प्रश्न—वेदादि शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने, सुनने और सुनाने में सब मनुष्यों का अधिकार है वा नहीं ?

उत्तर—सबका है। क्योंकि, जो ईश्वर की सृष्टि है, उसमें किसी का अनधिकार नहीं हो सकता। देखिये कि जो जो पदार्थ ईश्वर से प्रकाशित हुये हैं, सो सो सबके उपकारार्थ हैं। इसमें यजुर्वेद का प्रमाण—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः
समृध्यतामुप मादो नमतु ॥ यजुर्वेद अ० २६। मन्त्र २ ॥

(यथेमां वाचं कल्याणीं०) इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि वेदों के पढ़ने पढ़ाने का सब मनुष्यों को अधिकार है और विद्वानों को उन के पढ़ाने का। इसीलिए ईश्वर आज्ञा देता है कि हे मनुष्य लोगो! जिस प्रकार मैं तुमको चारों वेदों का उपदेश करता हूं, उसी प्रकार से तुम भी उनको पढ़के सब मनुष्यों को पढ़ाया और सुनाया करो। क्योंकि वह चारों वेदरूपी वाणी सबका कल्याण करने वाली है। यथा (आवदानि जनेभ्यः) जैसे सब मनुष्यों के लिए मैं वेद का उपदेश करता हूं, वैसे ही तुम भी किया करो।

प्रश्न—'जनेभ्यः' इस पद से द्विजों ही का ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि जहां कहीं सूत्र और स्मृतियों में पढ़ने का अधिकार लिखा है, वहां केवल द्विजों ही का ग्रहण किया है ?

उत्तर—यह बात ठीक नहीं है, क्योंकि जो ईश्वर का अभिप्राय द्विजों ही के ग्रहण करने का होता तो मनुष्यमात्र को उनके पढ़ने का अधिकार कभी न देता। जैसा कि इस मन्त्र में प्रत्यक्ष विधान है—

(ब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय) अर्थात् वेदाधिकार जैसा ब्राह्मणवर्ण के लिये है वैसा ही क्षत्रिय, अर्य—वैश्य, शूद्र, पुत्र, भृत्य और अतिशूद्र के लिये भी बराबर है। क्योंकि वेद ईश्वर प्रकाशित है। जो विद्या का पुस्तक होता है, वह सबका हितकारक है। और ईश्वररचित पदार्थों के दायभागी सब मनुष्य अवश्य होते हैं। इसलिए उसका जानना सब मनुष्यों को उचित है। क्योंकि वह माल सबके पिता का सब पुत्रों के लिए है, किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं। (प्रियो देवानाम्) जैसे मैं इस वेदरूप सत्यविद्या का उपदेश करके विद्वानों के आत्माओं में प्रिय हो रहा तथा (दक्षिणायै दातुरिह भूयासम्) जैसे दानी वा शीलमान् पुरुष को प्रिय होता हूं वैसे ही तुम लोग भी पक्षपातरहित होकर वेदविद्या को सुनाकर सबको प्रिय हो। (अयं मे कामः समृध्यताम्) जैसे यह वेदों का प्रचार रूप मेरा काम संसार के बीच में यथावत् प्रचरित होता है, इसी प्रकार की इच्छा तुम लोग भी करो, कि जिससे उक्त विद्या आगे को भी सब मनुष्यों में प्रकाशित होती रहे। (उप मादो नमतु) जैसे मुझ में अनन्त विद्या से सब सुख हैं, वैसे जो कोई विद्या का ग्रहण और प्रचार करेगा, उसको भी मोक्ष तथा संसार का सुख प्राप्त होगा।

यही इस वेदमन्त्र का अर्थ ठीक है। क्योंकि इससे अगले मन्त्र (बृहस्पते अति यदर्यं०) में भी परमेश्वर ही का ग्रहण किया है। इससे सबके लिये वेदाधिकार है। वर्णाश्रम व्यवस्था भी गुणकर्मों के आधार विभाग से होती है। इसमें मनुस्मृति का भी प्रमाण है कि—

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद् वैश्यात्तथैव च ॥

(मनु०अ०१०।श्लोक ६५)

शूद्र ब्राह्मण और ब्राह्मण शूद्र हो जाता है। अर्थात् गुण कर्मों के अनुकूल ब्राह्मण हो, तो ब्राह्मण रहता है तथा जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हो जाता है। वैसे शूद्र भी मूर्ख हो तो वह शूद्र रहता और जो उत्तम गुणयुक्त हो तो यथायोग्य ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य हो जाता है। वैसे ही क्षत्रिय और वैश्य के विषय में भी जान लेना।

जो शूद्र को वेदादि पढ़ने का अधिकार न होता तो वह ब्राह्मण क्षत्रिय वा वैश्य के अधिकार को कैसे प्राप्त हो सकता? इससे निश्चित यह जाना जाता है कि २५वें वर्ष वर्णों का अधिकार ठीक-ठीक होता है, क्योंकि २५ वर्ष तक बुद्धि बढ़ती है। इसीलिए उस समय गुण कर्मों की ठीक-ठीक परीक्षा करके वर्णाधिकार होना उचित है।

आपस्तम्ब सूत्र में भी ऐसा लिखा है—

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ।१।
अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ।२।

(प्रपाठक २।पटल ५। खं० ११। सूत्र० १०, ११)

अर्थात् धर्माचरण करने से नीचे के वर्ण पूर्व पूर्व वर्ण के अधिकार को प्राप्त हो जाते हैं। सो केवल कहने ही मात्र को नहीं किन्तु जिस जिस वर्ण को जिन जिन कर्मों का अधिकार है, उन्हीं के अनुसार (आपद्यते जातिपरिवृत्तौ) वे यथावत् प्राप्त होते हैं। तथा अधर्माचरण करके पूर्व पूर्व वर्ण नीचे नीचे के वर्णों के अधिकारों को प्राप्त होते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि वेदों के पढ़ने सुनने का अधिकार सब मनुष्यों को बराबर है।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज सफीदों के लिए एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा। पूर्ण जानकारी के लिए शीघ्र मिलें।

ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री आर्यसमाज सफीदों, जिला जींद।

महाभारत - अधर्म पर धर्म की विजय

—महावीर 'नीर' विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

[गतांक से आगे]

चेदि के शिशुपाल, मगध के जरासंध, मथुरा के कंस और हस्तिनापुर के कौरवों के अत्याचारों से अपनी कूटनीति के द्वारा यदि कृष्ण अत्याचारियों से सज्जनों को त्राण न दिलाते और एकछत्र राज्य की स्थापना न करवाते तो उन्हें कौन याद करता ? लाक्षागृह में सम्भावित मृत्यु से बचने पर भी धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ सरल व्यवहार रखने वाले पाण्डव, क्या सचमुच अधर्मात्मा हैं ? क्या द्रोण पुत्र अश्वस्थामा द्वारा क्रोधांध हो रात में पाण्डव शिविर में घुसकर द्रौपदी के पांच पुत्रों और धृष्टद्युम्न को सोते हुए मार देने के अधर्मपूर्ण कृत्य को भी दयावश माफ कर, उसका वध न कर, छोड़ देना भी पाण्डवों को धर्महीन सिद्ध करता है ? क्या कृष्ण के दूत बनकर जाते समय समस्त पाण्डवों का एक स्वर से यह कहना कि 'कृष्ण युद्ध न हो, शान्ति हो' उन्हें अधर्मात्मा सिद्ध करता है ? क्या आधा राज्य प्राप्त करने के स्थान पर, केवल जीवन निर्वाह के लिए पांच गांव मांगना अधर्म है ? क्या अपने स्वत्व को लेना अधर्म है ? भीष्म, द्रोण, कृप और स्वयं धृतराष्ट्र के समझाने और हितकारी बात कहने पर भी अधर्म को धर्म समझने वाले दुर्योधन के पलड़े पर ही पाण्डव-पक्ष को रखकर तोलना क्या न्यायसंगत है ? युद्ध पश्चात् भी गांधारी और धृतराष्ट्र को महान् सम्मान देने वाले तथा धृतराष्ट्र पुत्र युयुत्सु को युवराज पद देने वाले पाण्डवों को अधार्मिक या छली बताना क्या न्यायसंगत है ? सोचिए—यदि कोई आजकल का (किंग) राजा होता तो विजयी होने पर सबको जेल में डाल, स्वयं राज करता या कत्ल करवा देता। क्या कृष्ण की सब प्रकार से संधि व शांति के लिए प्रयत्न करना छल है ? कौरवों ने पाण्डवों को इतने कष्ट दिए, मारने के अनेक उद्योग किए किन्तु इस कार्य के लिए कभी भी, कहीं भी दुर्योधन ने प्रायश्चित का एक शब्द नहीं कहा।

इसलिए यदि हम महाभारत की आधारभूमि धर्म व अधर्म की कसौटी पर परखें तो देखते हैं कि एक पक्ष प्रारम्भ से ही अधर्म-प्रवृत्ति में लीन है तथा दूसरा अनेकों कष्ट सहकर भी अपने सत पर डटा है। भीष्म क्यों लड़े ? द्रोण क्यों लड़े ? कृप क्यों लड़े ? अन्दर से पाण्डवों के प्रति प्यार का नाटक रचते हुए भी और उन्हें युद्ध में न मारने की प्रतिज्ञा करते हुए भी, क्यों दुर्योधन के पक्ष में खड़े हुए ? क्यों अधर्म का पक्ष लिया ? विदुर के समान तटस्थ हो जाते। एक ओर तो वे कहते हैं—दुर्योधन तुम पाण्डवों का आधा राज्य दे दो तथा दूसरी ओर सारा ही हड़पने के लिए दुर्योधन के पक्ष मे खड़े हो गए ? इसमे अधिक धर्म की हानि क्या होगी ? इसलिए अधर्मी व्यक्ति को मारना कोई अधर्म नहीं। अधर्म है—अधर्मी के आचरण को और प्रोत्साहन देना। घर की लड़ाई में बड़े-बूढ़े भी बेइमानों की ओर हो गए। क्या, यदि भीष्म, द्रोण, कृप—दुर्योधन को नकार कर पाण्डु-पुत्रों अर्थात् अपने पौत्रों व शिष्यों की ओर हो जाते क्या महाभारत का रूप दूसरा ही न होता ?

इसलिए महाराज कृष्ण ने अर्जुन को गीता के द्वारा उस धर्म का उपदेश दिया जो अध्यात्म के साथ व्यवहारिक धर्म भी है तथा शाश्वत मानव-धर्म भी। अर्जुन, अगर तू इन पापियों को, धर्म से घृणा करने वालो को, मानव-मूल्यो के शोषकों;-चाचा, ताऊ, दादा, भाई, भतीजे समझकर नहीं मारेगा, तब भी ये पापी अपने अधर्ममय पापमय कर्म से मरे हुए ही हैं। अतः इन दुष्टों को मारकर राज्य भोग। क्षत्रिय का दायित्व निभा। अपने स्वधर्म व स्वत्व को प्राप्त कर और मानवधर्म की स्थापना कर।

महाभारत शान्तिपर्व २५।१५, १६ में स्पष्ट है कि यदि बड़े-बूढ़े, भाई-भतीजे, आचार्य भी मिथ्याचार व समाज के उच्चतम मूल्यों के विघटक हों तो उन्हें युद्ध में मारना कोई पाप नहीं। इसलिए युधिष्ठिर का अभिनन्दन करती हुई प्रजा कहती है—"दिष्ट्या राज्यं पुनः प्राप्तं धर्मेण बलेन च। शा०प० ३८।१ अर्थात् सौभाग्य से धर्म व बल के द्वारा स्वराज्य की पुनः प्राप्ति हुई। और युधिष्ठिर भी श्रीकृष्ण से कहते हैं—जयं प्राप्ता यशश्चाग्र्यं न च धर्मच्युताः वयम्। शा०पर्व ४५।२० कृष्ण आपकी कृपा से हमें जय प्राप्त हुई और हम धर्म से भी नहीं हटे।"

इसी धर्म-अधर्म के सन्दर्भ में लेखक ने राज्याधिकार सम्बन्धी आरोप भी लगाए हैं। जहां तक राज्याधिकार का प्रश्न है या राजा के बेटे के ही राजा बनने का प्रश्न है वहां भी उद्योग पर्व के १४८।१४९ अध्याय में स्पष्ट है कि यदि राजा का पुत्र अयोग्य, नालायक, अहंकारी, अधर्मी, किसी रोग से पीड़ित या अंगहीन हो तो वह राजा बनने योग्य नहीं। ययाति के पांच पुत्र थे। यदु सबसे बड़ा तथा पुरु सबसे छोटे थे। यदु हस्तिनापुर के सिंहासन पर आरुढ होते हुए भी बड़े घमण्डी और अभिमानी थे, वे किसी का आदर नहीं करते थे। इसलिए ययाति ने उन्हें हटाकर छोटे पुत्र पुरु को राजा बनाया था। इसी प्रकार महाराज प्रतीप के तीन पुत्र थे—देवापि, वाह्लीक व शान्तनु। देवापि सबसे बड़े व धर्मात्मा थे किन्तु चर्मरोग के कारण नगरवासियों और ब्राह्मणों ने उनका राज्याभिषेक रोक दिया। तदनन्तर शान्तनु वाह्लीक की आज्ञा लेकर हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठे। वे भी सबसे छोटे थे। इसी प्रकार भीष्म बड़े होते हुए भी छोटे भाई विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाकर सदा नीचे खड़े रहे। ऐसे ही धृतराष्ट्र नेत्रहीन थे। प्रजा ने उन्हें राजा न बनाकर पाण्डु को राजा बनाया। इसीलिए धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से कहा कि—"मैं तो राजा था ही नहीं, फिर तू राज्य का अधिकारी कैसे हो गया ? तुझ में राजा के गुण भी नहीं हैं, तू अहंकारी, ईर्ष्यालु व घमण्डी है। इसलिए झगड़ा न कर पाण्डवों को आधा राज्य दे दो।"

इसी प्रकार द्रोणाचार्य के वध में भी लेखक को अधर्म नजर आया है किन्तु द्रोणाचार्य ने ही अधर्म का कार्य किया। इसमें हम अनेक हेतु देखते हैं जैसे—(१) द्रोण परजीवी होने के कारण अधर्म का पक्ष ले रहे थे। (ये धर्मस्य लोप्तारो बध्यास्ते मम पाण्डव), जो धर्म का लोप करने वाले हैं, वे मेरे लिए वध्य हैं। (२) ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रिय धर्म का पालन। (३) क्रोध में आकर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना (युद्ध नियम भंग)। (४) शिष्यद्रोही (अर्जुन आदि अपने शिष्यों से ही युद्ध)। (५) अभिमन्यु वध में मुख्य भूमिका (द्रोण द्वारा ६ महारथियों को एक साथ अभिमन्यु पर आक्रमण करने की प्रेरणा देना (युद्ध-नियम-भंग)।

वास्तव में द्रोण-वध प्रसंग महाभारत का सबसे विषम प्रसंग है। यहां द्रोण का वध करवाने में श्रीकृष्ण ने एक युक्ति सुझाई। द्रोण भयंकर संहार कर रहे थे। कृष्ण ने शत्रु को हतोत्साहित करने, उसे भ्रम में डालने, उसके बल को क्षीण करने अर्थात् द्रोण के युद्ध-उत्साह को कम करने के लिए "जय-यौगी १९०।११" विजय की कामना से योग (युक्ति) - योगः कर्मसु कौशलम् - चतुराई का प्रयोग ही उचित बताया। उन्होंने कहा कि अश्वत्थामा नाम के हाथी को मार कर घोषित करो कि अश्वत्थामा मारा गया। इससे पुत्र-स्नेही द्रोणाचार्य निरुत्साहित होकर क्षीण-बल हो जायेंगे या भयंकर क्रोधित हो जायेंगे। इस युक्ति को युधिष्ठिर और अर्जुन ने ठीक नहीं समझा किन्तु भीम व धृष्टद्युम्न ने इसे चला दिया। भीम के पुनः पुनः कहने पर द्रोणाचार्य अपने पुत्र की मृत्यु की बात सुनकर बौखला गए और उन्होंने अपने पुत्र के मारे जाने के भ्रम में 'ब्रह्मास्त्र' का प्रयोग कर डाला। (क्रमशः)

धरती पर स्वर्ग

—यज्ञदेव याज्ञिक, गुरुकुल कालवा

वर्तमान सृष्टि में कुल तीन पदार्थों की सत्ता दिखाई देती है। १- परमात्मा २- जीवात्मा ३- प्रकृति। जिसमें प्रकृति केवल सत्ता मात्र है। दूसरे स्थान पर है जीवात्मा, जिसके नाम से ही यह विदित होता है कि यह किसी बड़े सत्ता के अनुकूल चल रहा है। क्योंकि जीवात्मा शब्द का अर्थ ही होता है कि जो जीव जन्म ले उसे जीवात्मा कहेंगे। यही बहुत बड़ा भेद है जो ईश्वर और जीव की सत्ता को पृथक् पृथक् बनाए हुए हैं। जब जीवात्मा को जीवन की आवश्यकता है, तो वह जीवन शक्ति उसे अपने से बड़े शक्तिशाली से प्राप्त हो सकती है। और वह है परमात्मा जो कि सब से श्रेष्ठ आत्मा है। जिसे किसी से कुछ चाह नहीं क्योंकि वह स्वभाव से सर्वसामर्थ्य युक्त तथा सत्-चित और आनन्द इन तीनों गुणों से परिपूर्ण है। इसके विपरीत जीवात्मा केवल सत् तथा चित् मात्र है। इसके पास आनन्द नहीं, सुख नहीं। यह सुख की तलाश में रात-दिन भटकता रहता है। कभी स्वर्ग सुख आकाश विशेष स्थान पर मानता है तो कभी विषय वासनाओं में ही सुख मानने लगता है। आज मानव की अवस्था ठीक उसी तरह हो गई है कि जैसे एक बहुत बड़ा जंगल है। जिसमें शेर-चीते-भालू आदि भयंकर जानवर रहते हैं। पथिक इस भयानक जंगल में अपना पथ भूल जाता है। सूर्यदेव भी मानो रात्रि के आगमन की सूचना देते हुए अस्ताचल की ओर जा रहे हैं। यह देखकर पथिक की व्याकुलता बढ़ती जा रही है। इतने में कोई बता देता है कि पथिक तुम्हारा रास्ता इधर है इस रास्ते से चलकर इस वीरान जंगल से पार जा सकते हो, इतना सुनते ही पथिक अपनी पूरी शक्ति लगाकर दौड़-धूप करता है। ठीक उसी प्रकार हम सब स्वर्ग सुख की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं। सुख-शांति न मिलने के कारण व्याकुल हैं इतने में कोई आकर कहता है कि सुख तो धन से प्राप्त होता है। तो हम धन की प्राप्ति के लिए पूरे जोर-शोर से लग जाते हैं। आज हम जिधर देखते हैं, उधर यही नजर आता है कि लोग धन की चाह से अपने भाई और पिता के भी नहीं होते। आज कोई भी किसी पर विश्वास नहीं करता। यहां तक कि मां का बेटी पर, पिता का पुत्र पर भी विश्वास समाप्त हो गया है। जो साधन था उसे अपनी समझ व भूल के कारण साध्य मान लिया है।

पाठक बन्धुओ! आओ विचार करें कि हम उस स्वर्ग सुख को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? हमारे शास्त्रों में बार-बार आता है कि स्वर्ग इसी पृथ्वी पर है तथा इसी शरीर और इन्हीं इन्द्रियों द्वारा भोगा जा सकता है। शास्त्रकार लिख रहा है कि—

स्वर्गस्थितस्य इह जीवलोके चत्वारि चिह्नानि वसन्ति देहे।
दानप्रसंगोमधुरा च वाणि देवार्चन ब्राह्मणतर्पणम् वा ॥

इस संसार में रहते हुए जो लोग स्वर्ग-सुख का उपभोग कर रहे हैं। उनके जीवन में निम्नलिखित चार लक्षण पाए जाते हैं।

१- दान की प्रवृत्ति, २- मधुर वाणी, ३- देवताओं की पूजा, ४- ब्राह्मण तर्पण। इन चारों गुणों से विभूषित मनुष्य ही स्वर्ग-सुख का आनन्द ले सकता है। तो सबसे पहली बात दान की आती है। दान शब्द का अर्थ होता है कि अपनी किसी भी वस्तु पर अपना अधिकार हटाकर उस पर दूसरों का अधिकार करा देना। व्यक्ति के पास चाहे कितना ही धन हो जाए, बल हो जाए या विद्या, परन्तु तब तक उन सब के द्वारा सुख को नहीं पाता, जब तक कि उससे दूसरों की सेवा न करें, दान न करें। हम पहले ही कह आए हैं कि धनादि सुख के साधन है। साध्य नहीं। जैसे किसी व्यक्ति को दो मंजिले मकान पर जाकर वहां का आनन्द लेना है तो उसे सीढ़ियों के द्वारा जाना पड़ता है। और सीढ़ियों को भी एक के बाद एक को छोड़ना पड़ता है। यदि कोई व्यक्ति पहली सीढ़ी पर ही पहुंचकर उसे छोड़े नहीं तो वह कभी भी छत पर नहीं जा सकता। इसी प्रकार धनादि का बिना त्याग किए अर्थात् दानादि कर्मों को किए बिना हम स्वर्ग-सुख को प्राप्त नहीं कर सकते। अतः हमें पूरी लग्न के साथ स्वर्ग प्राप्ति हेतु अपने धन, विद्या तथा बलादि साधनों से सदा तैयार रहना चाहिए। ध्यान रहे इसके विपरीत चलने से नरक का मार्ग बनता है। क्योंकि गीता में भगवान् श्री कृष्ण जी महाराज ने कहा है—

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

अर्थात् यज्ञ से बचा हुआ खाने वाला ही सब पापों से बचता है। जो लोग केवल अपने लिए ही पकाते है अर्थात् स्वार्थ के लिए ही जीते दान आदि कर्म छोड़ देते हैं वे निरा पाप का ही उपभोग करते हैं।

हंसराज दिवस पर प्रधानमन्त्री मुख्यअतिथि

डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प्रो० वेदव्यास जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने २८-३-९० को प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से भेंट कर उन्हें १५-४-९० को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में मनाए जाने वाले महात्मा हंसराज दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के पद को सुशोभित करने की प्रार्थना की। प्रधानमन्त्री ने इस निमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

प्रतिनिधि मण्डल ने जम्मू कश्मीर की वर्तमान दुखद एवं भयावह स्थिति पर भी विचार-विमर्श किया और उन्हे सूचित किया कि प्रबन्धकर्त्री समिति तथा प्रादेशिक सभा ने भी कश्मीरियों की सहायतार्थ अनेक पग उठाए हैं और दिल्ली के विभिन्न आर्यसमाजों में उनके भोजन, वस्त्र तथा निवास की व्यवस्था की है।

प्रधानमन्त्री महोदय के सुझाव पर समिति तथा सभा ने जम्मू में एक सहायता शिविर स्थापित करने का भी निश्चय किया है।

अखिल भारतीय गोशाला मुहूर्त सम्मेलन

दिनांक २०-४-१९९० शुक्रवार को गांव पहरावर जिला रोहतक हरयाणा में होने जा रहा है। गौओं पर बढ़ रहे अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए हमारे गौ सेवा संगठन ने उक्त गोशाला का निर्माण कार्य शुरू किया है। आप सबसे सहयोग के लिए प्रार्थना है। डाक सेवा भी उपलब्ध है, तुरन्त सम्पर्क करें। २०-४-९० को भारी संख्या में पहुंच कर धर्म लाभ उठायें। धन्यवाद!

विनीत:—गौसेवा संगठन
अखिल भारतीय गोशाला पहरावर (रोहतक)

एक वर्ष के लिए संस्कृत और दर्शन अध्यापन

वैदिक साधनाश्रम, नालापानी तपोवन (देहरादून) में श्री स्वामी सत्यपति जी के निर्देशन में १६ मई १९९० से एक वर्ष के लिए संस्कृत भाषा तथा वैदिक दर्शनों के अध्यापन का कार्यक्रम निश्चित किया गया है। यह कार्य ब्र० आनन्द प्रकाश जी दर्शनाचार्य (स्नातक, दर्शन-योग-विद्यालय, आर्यवन विकास क्षेत्र रोजड, पत्रा० सागपुर, जिला साबरकांठा गुजरात) सम्पन्न करेंगे।

इसके साथ ही १६ मई से एक मास के लिए श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज तपोवन आश्रम में ही क्रियात्मक योग प्रशिक्षण भी करेंगे। इच्छुक धार्मिक महानुभाव जो यम-नियम का पालन करने वाले हों, अनुशासन में रहने वाले तथा दर्शन पढ़ने की योग्यता रखने वाले हों, वे स्त्री-पुरुष अपने आने की सूचना तपोवन आश्रम में भेज देवें।

आचार्य, दर्शन-योग-विद्यालय आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड़,
पत्रा० सागपुर, जिला साबरकांठा गुजरात (३८३३०७)

जि० पानीपत, करनाल तथा सोनीपत में वेदप्रचार मण्डल गठित

जनगणना में वैदिक धर्म तथा मातृभाषा हिन्दी लिखवाने का निर्देश तथा शराब की तीनों फैक्ट्रियों पर धरणा देने का सुझाव

एक अप्रैल को प्रातः ११ बजे आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत में जिला पानीपत तथा करनाल के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठक सभाप्रधान प्रो. शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में दोनों जिलों के कार्यकर्त्ता भारी संख्या में उपस्थित हुए।

आर्य विद्यापरिषद् हरयाणा के प्रस्तोता एवं आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रिंसिपल लाभसिंह ने बैठक की कार्यवाही का संचालन करते हुए सभा द्वारा प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डलों के निर्णय की जानकारी दी जिससे प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज का प्रचार तथा प्रसार हो सके। सभा के वरिष्ठ अन्तरंग सदस्य ला रामानन्द सिंहल ने सभाप्रधान जी तथा सभी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि पानीपत आर्यसमाज सभा के इस महत्वपूर्ण कार्य में तन, मन तथा धन से सहयोग देगा। आपने चालू जनगणना में सरकारी कर्मचारियों को अपना धर्म वैदिक (आर्य) तथा मातृभाषा हिन्दी अथवा संस्कृत लिखवाने पर बल दिया। हमारे सभी संस्कार संस्कृत में होते हैं। युवा विद्वान् तथा सभा के पूर्व वेद प्रचाराधिष्ठाता पं. रणवीर सिंह शास्त्री ने सभा द्वारा वेदप्रचार मण्डल बनाने की योजना का स्वागत करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने अपना सारा अमूल्य जीवन वेदप्रचार में लगाया था।

प्रो शेरसिंह सभा प्रधान ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि वेदप्रचार के इस महत्वपूर्ण कार्य में सभी को सहयोग करना चाहिए। शराब, मांस, दहेज आदि की सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए वेदप्रचार की आवश्यकता है। इस कार्य में केवल आर्यसमाज ही सौ वर्ष से संघर्ष कर रहा है। परन्तु आज पाखण्डों तथा अवैदिक मतों की वृद्धि हो रही है। राष्ट्र की एकता भंग करने के लिए विदेशी शक्तियां उग्रवादियों को भारत में भेज रहे हैं और इसी कारण कश्मीर तथा पंजाब से हिन्दू भयभीत होकर दिल्ली तथा हरयाणा में आकर शरण ले रहे हैं। इस कार्य में भी आर्यसमाज मन्दिरों तथा आर्य संस्थाओं में अपने भाइयों को आवास आदि की सुविधा दी जावे। वेदप्रचार मण्डल गठित करके हमें सामूहिक रूप से पूरी शक्ति से कार्य करना होगा। आर्यसमाज के तीन सूत्री कार्यक्रम अंग्रेजी तथा शराब हटाओ और गोरक्षा करो को सफल करने में सभी को योगदान करना चाहिए। आर्य अध्यापक जो सेवानिवृत्त हो चुके है, सभा उनका सहयोग तथा समय लेना चाहती है। सभा के विख्यात विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव जी कालेज के अवकाश के दिनों में दयानन्दमठ रोहतक में वैदिक सिद्धान्त तथा वैदिक संस्कारों में आर्य कार्यकर्त्ताओं को दीक्षित करने के लिए शिविर लगावेंगे। इस प्रकार आर्यसमाज का प्रचार कार्य बढ़ेगा। सुप्रसिद्ध आर्य उपदेशक एवं आर्य वीरदल के नेता प्रो. उत्तमचन्द शरर ने सभा के कार्यक्रम की सराहना करते हुए आर्यसमाज के अधिकारियों को आर्यसमाज में नया खून लाने के लिए नवयुवकों को कार्य करने हेतु समाज के पदाधिकारी चुनकर उन्हें कार्य करने का अवसर देने का सुझाव दिया। आर्य कन्या गुरुकुल मोरमाजरा के संचालक श्री लेखराज ने ५५ वर्ष से अधिक आयु वाले आर्यों को आह्वान किया कि वे घरबार का लालच छोड़कर आर्यसमाज के प्रचार के लिए अधिक से अधिक समय देवें। आर्य महाविद्यालय पानीपत के पुस्तकाध्यक्ष श्री धर्मवीर सिंह विद्यालकार ने वैदिक साहित्य के स्वाध्याय करने पर बल देते हुए कहा कि आसान भाषा में तथा सस्ते भाव में ट्रैक्ट छपवाकर जन-जन में वितरित करने से आर्यसमाज के प्रचार में वृद्धि होगी।

स्वामी सेवानन्द ने अपने पिछड़े हुए मूले जाटों को पुनः वैदिक धर्म में शामिल करके उनके साथ रोटी तथा बेटी का व्यवहार करना चाहिए। श्री सूर्यमल आर्य बला ने प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना कराने तथा प्रचार करवाने में सभा को सहयोग का आश्वासन दिया।

वयोवृद्ध नेता श्री धर्मसिंह राठी सदस्य अन्तरंग ने कहा कि आज के नेता धार्मिक नहीं रहे। वे धर्म के विपरीत कार्य करते हैं। शराब का प्रयोग करते हैं और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। आपने सुझाव दिया कि हरयाणा में तब तक शराब बन्द नहीं होगी जब तक शराब की तीनों फैक्ट्रियों पर मुरथल (सोनीपत) हिसार तथा यमुनानगर धरणा देकर अथवा आंदोलन करके उन्हें बन्द नहीं किया जावेगा। इस प्रकार शराब बन्दी आंदोलन में सफलता मिलेगी और आर्यसमाज में नवजीवन आवेगा। अतः प्रत्येक आर्यसमाज को इस आंदोलन के लिए स्वयं सेवक सत्याग्रही तैयार कर सभा को सूची भेजनी चाहिए जिससे आंदोलन का कार्यक्रम तैयार किया जा सके। आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के प्रचार मन्त्री मा. जसवन्त सिंह ने आर्यों को कथनी तथा करनी एक रखने का सुझाव दिया। आपने स्मरण करवाया कि पूर्व के आर्यों पर न्यायालय पूरा विश्वास करता था। अतः हमें सत्यके मार्ग पर अडिग रहना चाहिए। प्रत्येक को यज्ञोपवीत तथा अपने घरों पर ओ३म् का झण्डा रखना चाहिए जिससे हमारी पहचान रहे। आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत के मन्त्री श्री मेघराज आर्य ने कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध किया कि जो आर्यसमाज के प्रचार के लिए समय न दे सके वे धन देकर योगदान करे। आर्यसमाज की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु अपनी आय का सौवां भाग अवश्य देना चाहिए और नियमानुसार चुनाव आदि करने चाहियें। कन्या गुरुकुल मोरमाजरा की आचार्या कु० सन्तोष आर्या ने वेदप्रचार कार्य में सहयोग का वचन दिया।

आर्यसमाज पट्टी कल्याणा के प्रधान श्री मुख्त्यार सिंह ने कार्यकर्त्ताओं को शराबबन्दी आंदोलन की तैयारी के लिए ब्लाक स्तर पर सूची बनाकर सभा को भेजनी चाहिए।

श्री रामस्वरूप आर्य उपमन्त्री आर्यसमाज मनाना ने सुझाव दिया कि निकट के ५ अथवा १० ग्रामों को मिलकर आर्यसमाज का प्रचार कार्यक्रम तैयार करें और अपने बच्चों को आर्य बनाने के लिए गुरुकुलों में पढ़ावें। श्री रामगोपाल आर्य एडवोकेट पानीपत ने कहा कि आर्य जहां भी रहे वही आर्यसमाज के तीन सूत्री कार्यक्रम को सफल करने का कार्य करें।। श्री शिवनाथ प्रचार मन्त्री आर्यसमाज देशराज कालोनी पानीपत ने कहा कि हमें नवयुवकों की समस्याओं का समाधान करने में सहयोग देकर उन्हें आर्यसमाज के समीप अवश्य लाना चाहिए।

श्री कर्मवीर शास्त्री तथा श्री मानसिंह आर्य कालखा ने आर्यसमाज के आंदोलनों में सम्मिलित होकर अपने सगठन में नया जीवन डालना चाहिए।

श्री ओमप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज सालवन का सुझाव था कि प्रत्येक आर्यसमाज ने वर्ष में कम से कम एक बार वेदप्रचार करवाना चाहिए। इस मांग को पूरा करने के लिए प्रत्येक मण्डल में दो मण्डली तथा दो उपदेशकों का प्रचार केन्द्र बनाया जावे। प्रत्येक आर्य को अपने बच्चों को सत्संग में सम्मिलित करके उनपर वैदिक सिद्धांतों के संस्कार डालने चाहियें। आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के प्रधान श्री सुन्दरसिंह आर्य ने सुझाव दिया कि हमें अपनी त्रुटियों को दूर कर आर्य बनना चाहिए। आर्यसमाज की पहली पीढ़ी की भांति ऋषि के सिद्धांतों पर आचरण करें। श्री कस्तूरीलाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज खेल बाजार पानीपत ने विद्वानों से निवेदन किया कि वे दैनिक समाचार पत्रों में लेख भेजें तथा शहर के आर्यों को ट्रकों आदि में ग्रामीण उत्सवों पर जाना चाहिए। बैठक का समापन करते

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

का ९०वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक ९ अप्रैल से १४ अप्रैल, १९९० तक

महत्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन

*** कार्यक्रम ***

सोमवार ९ अप्रैल १९९० से शनिवार १४ अप्रैल १९९० तक प्रतिदिन प्रातः ७-३० बजे से १०-३० बजे तक यजुर्वेदपारायणयज्ञ एवं प्रवचन
ब्रह्मा—पं. मदनमोहन विद्यासागर (आन्ध्रप्रदेश)
वेदपाठी— वेद महाविद्यालय के छात्र
प्रवचन—पं. मदनमोहन विद्यासागर, पं. श्यामसुन्दर स्नातक, महा. आर्य भिक्षु, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
संयोजक—१- श्री श्यामसुन्दर स्नातक २- डा. महावीर

बृहस्पतिवार, १२ अप्रैल १९९०

७-३० बजे से १०-३० बजे तक—यजुर्वेदपारायण यज्ञ
भजन—श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री श्यामसिंह हितकर
प्रवचन—पं. मदनमोहन विद्यासागर
११ बजे — ध्वजारोहण (द्वारा) प्रो. शेरसिंह कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
संयोजक— प्रेमचन्द, रंजीतसिंह
११-३० बजे—वैदिक प्रदर्शनी उद्घाटन—श्री सूर्यदेव मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली। संयोजक—आचार्य विद्यारत्न वानप्रस्थ
मध्याह्नोत्तर—२-३० से ३ बजे तक—भजन श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री श्यामसिंह हितकर ३ बजे से ५-३० बजे तक—वेद एव संस्कृत सम्मेलन विषय—(वर्तमान युग में वेद एवं संस्कृत की प्रासंगिकता)
अध्यक्ष—डा रामनाथ वेदालंकार भूतपूर्व आचार्य एव कुलपति
मुख्य अतिथि—आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति भूतपूव कुलपति
वक्ता—श्री श्यामसुन्दर स्नातक, डा. भारत भूषण, डा महावीर, डा वेदप्रकाश। संयोजक—डा. सत्यव्रत राजेश
रात्रि ८ बजे से ८-३० बजे तक—भजन श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री श्याम सिंह हितकर। ८-३० बजे से १० बजे तक—विशेष व्याख्यान वक्ता - डा. प्रशान्त कुमार वेदालकार, स्वामी ओमानन्द सरस्वती
संयोजक—डा. महावीर

शुक्रवार, १३ अप्रैल १९९०

प्रातः ७-३० बजे से ११ बजे तक—यजुर्वेदपारायण यज्ञ
भजन—श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री श्यामसिंह हितकर इत्यादि।
प्रवचन—पं. मदनमोहन विद्यासागर, महात्मा आर्य भिक्षु स्वामी ओमानन्द सरस्वती
मध्याह्नोत्तर २-३० से ५-३० तक भजन व वैदिक प्रश्न मंच, अध्यक्ष-स्वामी आनन्दबोध सरस्वती संयोजक- आचार्य विद्यारत्न वानप्रस्थ
रात्रि ८ से ८-३० बजे तक—भजन श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री श्याम सिंह हितकर
८-३० से १० बजे तक—विशेष व्याख्यान वक्ता—श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, संयोजक—श्री वेदप्रकाश

शनिवार, १४ अप्रैल १९९०

प्रातः ७-३० बजे से १० बजे तक यजुर्वेदपारायणयज्ञ (पूर्णाहुति)
१० बजे से १२ बजे तक—वेदारम्भ संस्कार, श्री श्यामसुन्दर स्नातक डा. दीनानाथ, डा. भारतभूषण, संयोजक—श्री जनेश्वरपाल
मध्याह्नोत्तर २-३० बजे से ३ बजे तक—भजन श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री श्याम सिंह हितकर। ३ बजे से ५-३० बजे तक—राष्ट्रीय एकता सम्मेलन। अध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब। मुख्य अतिथि—श्री शेरसिंह जी कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय। वक्ता—डा. धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्रीमती प्रभात शोभा, डा. विष्णुदत्त राकेश। संयोजक—डा. जयदेव वेदालंकार
रात्रि ८ से ८-३० बजे तक भजन- श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री श्यामसिंह हितकर। ८-३० बजे से १० बजे तक—व्यायाम सम्मेलन (गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा)। अध्यक्ष—डा. धर्मपाल जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली। संयोजक—डा. दीनानाथ/ईश्वर भारद्वाज
सहसंयोजक—श्री रणजीतसिंह।
नोट—आवश्यकतानुसार कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।

निवेदक

वीरेन्द्र	डा. धर्मपाल आर्य	प्रो० शेरसिंह
प्रधान	प्रधान	प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा	हरयाणा एवं कुलाधिपति
पंजाब	दिल्ली	गुरुकुल कांगडी वि.विद्यालय

प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार
कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता

आचार्य एवं उपकुलपति (रामप्रसाद वेदालंकार)	श्यामसुन्दर स्नातक
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय	आचार्य गुरुकुल विद्यालय विभाग
डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार	डा० सत्यदेव आयुर्वेदालंकार
अध्यक्ष, श्रद्धानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय	व्यवसायाध्यक्ष
	गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

वेदप्रचार मण्डल का गठन- - - - (पृष्ठ ४ का शेष)

हुए प्रो शेरसिंह ने सुझाव देने वालों का धन्यवाद किया तथा शराब बन्दी आंदोलन को तीव्र करने हेतु शराब की फैक्ट्रियों पर आंदोलन करने के लिए सत्याग्रहियों की सूची सभा को भेजने की अपील की। सूची तैयार होने पर कार्यक्रम बनाया जावेगा। आर्यसमाज के प्रचार में समय देने वालों को अपने नाम भेजकर वेदप्रचार के पुनीत कार्य में सभा को सहयोग देना चाहिए।

विचार विमर्श के पश्चात् जिला पानीपत वेदप्रचार मण्डल के संयोजक ला० रामानन्द सिहल पानीपत, सहसंयोजक श्री ओमप्रकाश आर्य ग्राम पावटी को मनोनीत किया। आर्य कालेज के पुस्तकाध्यक्ष प्रो० धर्मवीरसिह विद्यालकार मण्डल के कार्य में अधिक से अधिक समय देंगे। मण्डल में जिला पानीपत के आर्यसमाज से एक अधिकारी को भी सम्मिलित किया गया है। अनेक कार्यकर्त्ताओं ने इस मण्डल को सफल करने के लिए अपने नाम प्रस्तुत किए। संयोजक महोदय शीघ्र ही इनकी एक बैठक बुलाकर कार्य आरम्भ करेंगे। जि० करनाल मण्डल के सयोजक श्री जसवन्त सिह तथा सहसंयोजक श्री रणधीर शास्त्री आर्यसमाज शेखपुरा, सहायक श्री रामचन्द्र नरू खेड़ी को मनोनीत किया गया।

केदारसिंह आर्य

मुलायमसिंह यादव बधाई के पात्र

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव को सारा हिन्दी जगत् हृदय की गहराइयों से बधाई दे रहा है। २२ वर्ष के बाद फिर से उन्होंने राजभाषा के रूप में हिन्दी को अपने प्रदेश में एकमात्र राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया है। उनके आदेश के अनुसार सभी कार्यालयों में हर स्तर पर सब काम हिन्दी में होगा और कोई भी अधिकारी या कर्मचारी अंग्रेजी का उपयोग किसी हालत में नहीं करेगा। उन्होंने यह भी आदेश दिया है कि सब पत्र तथा पत्रों के उत्तर हिन्दी प्रदेशों तथा भारत सरकार के पास केवल हिन्दी में ही भेजे जाएंगे। अहिन्दी भाषी प्रांतों में भी मूलपत्र तो हिन्दी में ही भेजे जाएंगे, साथ में उन पत्रों का अंग्रेजी अनुवाद भेज दिया जाएगा। उनका यह निर्णय संविधान की भाषा और भावना की सही तरजमानी करता है। आज तक हिन्दी प्रदेशों तथा केन्द्रीय सरकारों ने संविधान की भाषा और भावना की अनदेखी ही नहीं अवहेलना भी की है। श्री यादव ने निहित स्वार्थों की मनमानी को चुनौती देकर साहस का काम तो किया ही है, भारत के ग्रामों और शहरों में बसे साधारण और गरीब नागरिकों की भावनाओं का भी प्रतिनिधित्व किया है और एक मायने में उनका दिल जीत लिया है। अंग्रेजी के पक्षधर १ प्रतिशत लोग अंग्रेजी के माध्यम से अपने लड़कों को पढा कर अंग्रेजी सदा के लिए राज भाषा के रूप में बनाए रखना चाहते हैं ताकि नौकरशाही पर उनका एकाधिकार बना रहे। हथियार के रूप में इन को इस्तेमाल करने के लिए मिल गए हैं द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम के राजनेता जिन्होंने हिन्दी विरोध को ही ब्राह्मण के खिलाफ नफरत फैलाने का साधन बनाया है। यह उनके ब्राह्मण विरोधी अभियान का प्रतीक बना दिया गया है। परन्तु वे आवेश में इतने अंधे बना दिए गए हैं कि हिन्दी साम्राज्यवाद का नाम लेकर राजनेता चुपके से ब्राह्मणों द्वारा सदियों तक रही अपमानित जनता का वोट बटोर ले जाते हैं

यदि वे थोडा सा भी विचार करने लगें तो बड़ी आसानी से समझाए जा सकते हैं कि हिन्दी का किसी भी भारतीय भाषा से कोई विरोध नही है। भारत की सभी भाषाओं को अपने आसन से अंग्रेजी ने अपदस्थ कर रखा है और वे अपने आसन पर विराजमान तभी हो सकती हैं जब अंग्रेजी हटे। भारत की सभी भाषाएं हमारे राष्ट्र की भाषाएं हैं और वे सभी एक दूसरी की सहेलियां ही नहीं, सगी बहिनें हैं। सभी भारतीय भाषाओं की लिपियां ब्राह्मी लिपि से ही निकली हैं और सब की वर्णमाला एक है, तथा ४० प्रतिशत से लेकर ८० प्रतिशत तक शब्द सब भाषाओं में संस्कृत से ही लिए गए हैं। इसी लिए हिंदी कम या ज्यादा सभी प्रदेशों में बोली और समझी जाती रही है। जिन तीर्थ स्थानों पर सभी कोनों से आए हुए भारत के साधारणजन इकट्ठे होते हैं वे हिंदी के द्वारा एक दूसरे को कामचलाऊ ढंग से समझ लेते हैं। अहिंदी प्रदेशों में हिंदी के विरुद्ध निहित स्वार्थों ने ही वातावरण बनाने का प्रयास किया है, परन्तु उनका प्रचार तमिलनाडू के अलावा कही भी टिक नही पाया है।

तमिलनाडू सरकार के एक मन्त्री श्री अनबड़गन ने श्री मुलायम सिंह के फैसले पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि वे हिंदी भाषी प्रदेशों से चाहेंगे कि वे उनके साथ अंग्रेजी या तमिल में पत्र-व्यवहार करें। मेरी तो यह इच्छा है कि जहा तक सम्भव हो हिन्दीभाषी प्रदेश तमिलभाषी लोगों और वहा की सरकार से तमिल में ही पत्र व्यवहार करें। सभी हिन्दी भाषी प्रदेशों के कुछ चुने हुए विद्यालयों में दूसरी भाषा के रूप में सभी दूसरी भारतीय भाषाओं के पढ़ाने का प्रबन्ध करें, साथ लगते हुए प्रदेशों की भाषाओं को पढ़ाने का प्रबन्ध अधिक विद्यालयों में हो और दूर प्रदेशों की भाषाओं का थोड़े विद्यालयों में, परन्तु प्रबन्ध सभी भाषाओं के सिखाने का हो। सभी हिन्दी भाषी प्रदेशों के सचिवालयों में अन्य भारतीय भाषाओं के जानकारों के लिए कुछ स्थान आरक्षित किए जाएं। ऐसा करने से सभी भाषाओं की अच्छी जानकारी रखने वाले कर्मचारी मिल जाएंगे जो सभी अन्य भाषाओं में आए पत्रों का उत्तर उसे उस भाषा में दे सकें। परन्तु इसके बदले में अहिन्दी भाषी प्रदेशों की ओर से भी हिंदी में उत्तर आने चाहिएं और मूलपत्र भी।

यदि यादव जी इस ओर ध्यान दें तो कुछ वर्षों में तमिलनाडू की सरकार के पास अंग्रेजी की बजाए हिन्दी के पत्र का अनुवाद तमिल में भेजना सम्भव हो जाएगा। ऐसा हो जाने पर आशा है तमिलनाडू के लोग भी हिन्दी का विरोध छोड़ देंगे और नफरत के प्रचार में से चुभने वाला डंक निकल जाने पर राजनेता भी जनता को भ्रमित नहीं कर पाएंगे। यह काम और भी सरल हो सकता है यदि हिन्दी प्रदेशों में अन्य भाषाओं को पढ़ने वाले विद्यार्थी छुट्टियों में उन प्रदेशों की भाषा बोलने का अभ्यास करने के लिए एक महीने के लिए उन प्रदेशों में जाकर रहें। सरकार इसके लिए रेल के किराए में विद्यार्थियो को आधे से अधिक छूट भी दे सकती है। देनी भी चाहिए, क्योंकि देश की एकता में इस कदम का बड़ा योगदान होगा।

यह हर्ष का विषय है कि मध्यप्रदेश और हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्रियों ने भी वही सब कुछ करने के आदेश दे दिए हैं जो श्री मुलायम सिंह यादव ने अपने प्रदेश में दिए हैं। क्या हरयाणा और राजस्थान दूसरे हिन्दी प्रदेशों से पीछे रहेंगे? हम आशा करते है कि वे शीघ्र ऐसा फैसला करेंगे और भारत के जन जन को जनतंत्र में जो मिलना चाहिए वे उसे देने में संकोच नहीं करेंगे जनतन्त्र में सब काम जनता की अपनी भाषा में ही होने चाहियें। विदेशी भाषा के द्वारा किया गया शासन जनतांत्रिक नहीं कहला सकता।

आदर्श विवाह

आज के इस भौतिक युग में जहां कि प्रायः हर व्यक्ति धन प्राप्ति को ही जीवन का ध्येय समझ रहा है और विलासिता के साधन जुटाने के लिए पागल हुआ घूम रहा है। अपनी प्राचीन वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति की ओर ध्यान आकृष्ट होना किसी अत्युत्तम कर्म का ही फल कहा जा सकता है।

झज्जर बिजली बोर्ड के उपमण्डल अधिकारी (एस.डी.ओ.) श्री सुरेश कुमार छिल्लर सु. चौ. धनसिंह जी आर्य, ग्राम बराही, त. बहादुरगढ़ धन्य हैं जिनका विवाह पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ है।

यह आदर्श विवाह ८ मार्च १९९० को सुशीला देवी (स्नातिका गुरुकुल नरेला) सुपुत्री चौ. टेकराम जी आर्य ग्राम बराहणा जिला रोहतक के साथ हुआ।

इस विवाह के समारोह में केवल ११ सदस्य थे। किसी भी प्रकार का दहेज नही लिया-दिया गया। १ रुपया दान का तथा गोदान ही लिया गया। कई गुरुकुलों को पर्याप्त दान दिया गया। एक कर्त्तव्यपरायण, ईमानदार तथा कर्मठ अधिकारी श्री सुरेश कुमार जी एस.डी.ओ. ने इस आदर्श विवाह से बड़े समझे जाने वाले मन्त्रियों, राज्याधिकारियों तथा पूंजीपतियों के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। आज के नवयुवक तथा उनके अभिभावक इससे प्रेरणा लें कि हमारा समाज समस्त वैवाहिक समस्याओं व दहेज रूपी पिशाच से छूट कर सुखी एवं सम्पन्न होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। भगवान् नवदम्पत्ती का इहलोक व परलोक मंगलमय करे।

—हरिदत्त उपाध्याय, गुरुकुल झज्जर

आर्यसमाज—परिचय

(गतांक से आगे)

होमाग्नि द्वारा नीचे स्थित वायु का हल्का होकर निकल जाना, शुद्ध वायु का प्रवेश, उस का होम द्रव्यों द्वारा सुगन्धित होकर आकाश में चढ़ कर वृष्टि जल को शुद्ध कर देना।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका - वेदविषय विचार

जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होके वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त करता है, उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिये। और खिलाने पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है। जितना घृत और सुगन्धादि एक मनुष्य खाता है उतने द्रव्य के होम से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है। परन्तु जो मनुष्य घृतादि उत्तम पदार्थ न खावें तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके। इससे अच्छे पदार्थ खिलाना पिलाना भी चाहिए।

(पूर्व०) तो मन्त्र पढ़कर होम करने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर—मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जायें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें, वेद पुस्तकों का पठन पाठन और रक्षा भी होवे। पृ० ४४

अभिषेक—देखिए, आज वैज्ञानिक युग है। अतः उस की हर बात सम्बद्ध, स्पष्ट है और तभी तो उसकी देनों को सभी बिना ननुनच के बरतते हैं। क्या महर्षि की विचारधारा विज्ञान जैसी है ?

प्रा.-महर्षि की सारी की सारी विचारधारा विज्ञान की पद्धति के अनुरूप कार्य-करण से सम्बद्ध, तर्कसंगत, प्रमाण परिपुष्ट है। अतएव महर्षि जी हर सिद्धांत की सिद्धि के लिए जहां शास्त्रों के प्रमाण देते हैं, वहां तर्क, युक्ति का भी उतना ही प्रयोग करते हैं। महर्षि ने कहीं भी चमत्कारों, वरदानों का सहारा नहीं लिया। जबकि भारतीय साहित्य में अनेकत्र यज्ञ, जप, तप, योग, मन्त्र, तन्त्र, व्रत, कामधेनु, कल्पवृक्ष, कल्पलता जैसे लगते हैं। पुनरपि महर्षि ने एक भी शब्द ऐसा नहीं लिखा। इस प्रसंग की दृष्टि से महर्षि के निम्न विचार बिल्कुल स्पष्ट हैं। जैसे कि— (पूर्व) जो आग्नेयास्त्र आदि विद्या लिखी है—

प्रश्न—क्या ये देवताओं के मन्त्र से सिद्ध होते थे ?

उत्तर—नहीं, ये सब बातें जिनसे अस्त्र-शस्त्रों को सिद्ध करते थे, वे 'मन्त्र' अर्थात् विचार से सिद्ध करते और चलाते थे. और जो मन्त्र अर्थात् शब्दमय होता है, उससे कोई द्रव्य उत्पन्न नहीं होता।

जैसा मन्त्र अर्थात् विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार के पदार्थ क्रिया कौशल उत्पन्न होते हैं। समु० ११ पृष्ठ २३७

अनुरोध—महर्षि की दृष्टि से धर्म का क्या अभिप्राय है ?

प्रा.- महर्षि ने अपनी रचनाओं में यत्र-तत्र-सर्वत्र जीवन को अच्छा बनाने की प्रक्रिया के रूप में धर्म का प्रतिपादन किया है।

अनुराग—ऐसी स्थिति में महर्षि ने सारे साहित्य के आधार पर धर्म के क्या-क्या मूलमन्तव्य माने हैं ?

प्रा.—जब हम आर्यसमाज की दृष्टि से धर्म के मूलमन्तव्यों की बात करते हैं, तो हमारा सब से पहले ध्यान ईश्वर की ओर जाता है क्यों कि—

ईश्वर

सभी एक स्वर से इस बात स्वीकार करते हैं, कि इस दुनिया को बनाने और चलाने वाला ईश्वर ही है। हम सब के भले के लिए ही ईश्वर ने सूर्य, वायु, जल, धरती और उसके अन्न, फूल, फल, वनस्पति, धातु, खनिज आदि पदार्थ दिए हैं। केवल ये भौतिक पदार्थ ही नहीं, अपितु जीवों के जन्म-मरण की व्यवस्था भी वही चलाता है। अतः ईश्वर का सरल-स्पष्ट सा स्वरूप वही है, जो दुनिया की सारी व्यवस्था के अनुरूप है। जैसे कि—

ईश्वर के प्राकृतिक पदार्थ, कार्य सभी जगह हैं, अतः ईश्वर सर्वव्यापक ही है और तभी वह सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान और कर्मफलदाता हो सकता है। सर्वव्यापक को एक सीमित आकार में बांधा नहीं जा सकता अतएव आर्यसमाज में ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं होती। यहां ईश्वर को सर्वान्तर्यामी मानकर हृदय मन्दिर में उसकी पूजा करनी बताई जाती है। ईश्वर के ये काम अन्य कोई नहीं कर सकता, अतएव अन्य किसी देवी-देवता, पीर, पैगम्बर, गुरु, अवतार को ईश्वर के रूप में नहीं माना जाता है। यही आर्यसमाज का पहला मूलमन्तव्य है।

सोमेश—ईश्वर भक्ति से क्या अभिप्राय है ?

प्रा०—जिस ईश्वर ने हमारे भले के लिए एक से एक अद्भुत भौतिक पदार्थ दिए हैं। उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना हर समझदार का काम है। अतः भक्ति का सब से अच्छा रूप यही है, कि जिसके द्वारा हम अपने दिल से जुड़े शब्दों से ईश्वर का धन्यवाद कर सकें।

इसकी दूसरी उपयोगिता यह भी है, कि ईश्वर जगत् का कर्त्ता होने से हमारा पिता भी है। भक्ति द्वारा हम अपना ईश्वर से निकट का सम्बन्ध भी अनुभव करें। अतः भक्त और भगवान् में निकट सम्बन्ध का अनुभव कराना ही भक्ति की खूबी है।

सर्वेश—इसके विस्तार का कोई अन्त नही। अतः दूसरा मन्तव्य बताइए ?

प्रा०—आर्यसमाज का दूसरा मन्तव्य है—धर्म (अच्छे आचरण का नाम है) सभी यह स्वीकार करते हैं, कि नदी को सफलता से पार करने के लिए जैसे पुल या नौका सहायक होती है। ऐसे ही जीवन नदी को तैरने के लिए धर्म नौका का काम करता है। धर्म का अर्थ है (धारण, पालन और इसका फल है) सुख। अतः जिन बातों के अपनाने से सुख मिलता है, वही धर्म है। जैसे कि आपस में सही बोलने और परस्पर के सम्बन्धों को सच्चाई से निभाने पर सुख होता है।

सभी धर्मों वाले यह स्वीकार करते हैं, कि धर्म का ही दूसरा नाम सच्चाई है। अतः व्यक्ति को सच्चा-सुच्चा बनाना ही धर्म का उद्देश्य है। धर्म के पूजा-पाठ आदि के कर्मकाण्ड सड़क के बोर्डों की तरह सही रास्ते की ओर संकेत करने के लिए ही हैं। 'परहित सरिस धर्म नही भाई' ही धर्म की पहचान है अतः जिन बातों से अधिक से अधिक का भला होता है, वे सच्चाई, ईमानदारी, भलाई, स्नेह, सहयोग आदि बातें ही असली धर्म हैं।

अमितेश—श्रीमान् जी ? आप तीसरा मूलमन्तव्य किसे कहते हैं ?

प्रा०—आर्यसमाज का तीसरा मूलमन्तव्य हम 'मानव जाति की एकता' को कह सकते हैं। जगत् का कर्त्ता परमेश्वर जब सब का पिता है, तो एक पिता की सन्तान होने से स्वतः सभी मनुष्य एकसे सिद्ध हो जाते हैं। हम सब मानवों के शरीर एक ही 'माटी के भाण्डे' या एक कुदरत के बन्दे हैं। सभी के शरीर उसकी इन्द्रियां और उनका अपना-अपना कार्य एक ढंग का ही है। तभी तो सभी के खून का रंग लाल हड्डियां सफेद हैं। सभी के दिलों में दूसरों से सच्चाई, ईमानदारी, भलाई, स्नेह, सहयोग की एकसी चाहना ही झलकती है। सभी मानव सुख; शांति पाने के लिए सोचते और सब कुछ करते है। उन में रंग रूप जात-पात का भेद कोई अन्तर नही डालता। अतः मानव जाति में प्राप्त होने वाली ये एक सी बातें 'मानव जाति की एकता' को ही परिपुष्ट करती हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज—परिचय - - -

(पृष्ठ ७ का शेष)

अत: आर्यसमाज रूप, रंग, जन्मगतजात, देश, धर्म, भाषा आदि के भेद से मानव-मानव में भिन्नता नहीं मानता। केवल संस्कार शिक्षा, योग्यता, कर्म के आधार पर ही परस्पर अन्तर मानता है। मानव जाति की एकता मानने पर जन्मना जात-पात, सामाजिक छुआ-छूत, ऊंच-नीच के वर्गगत कृत्रिम भेद-भाव स्वत: दूर हो जाते हैं।

निक०—कोई चौथा भी मूलमन्तव्य है या इसमें भी त्रित्व है?

भ्रा०—हां चौथा मूलमन्तव्य है—'महापुरुषों का सम्मान'।

हमारा जीवन तभी सफल होता है, जब हमें परिवार, शिक्षा, प्रशासन, कारोबार आदि में दूसरों का सहयोग मिलता है। यह सहयोग मानव समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी मिलता आ रहा है। सहयोग के इन विविध क्षेत्रों में जिसने अधिक से अधिक को सहयोग दिया, भला किया। वस्तुत: वह हमारे लिए पूजनीय है। धर्म, विद्या, विज्ञान, प्रशासन आदि क्षेत्रों के जीवन को सरल-सरस बनाने के लिए जिन्होंने भी महान् कार्य किया, वे हमारे लिए आदर के योग्य हैं। अतएव आर्यसमाज ऐसे महापुरुषों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए रामनवमी कृष्ण जन्माष्टमी, सीताष्टमी आदि पर्व मनाता है। क्यों कि— 'गढ़ते हैं इतिहास देश का
और जिनका दिया अमृत जग पीता।
अत: [illegible]।

सोमेश—आपने सम्माननीय, पूजनीय इनको कहा है। क्या इसके साथ अनुकरणीय शब्द प्रयुक्त नहीं करना चाहिए?

भ्रा०—जिस किसी क्षेत्र में जिस भी व्यक्ति ने अपने समय पर जितना महान् कार्य किया है। वह महापुरुष तदनुरूप सबके सम्मान का पात्र है। हां, समय, स्थान, स्थिति के परिवर्तन की दृष्टि से या विद्या और विज्ञान के विकास के कारण आज बहुत कुछ बदल गया है। अत: क्या अनुकरणीय है? इसका निर्णय तो आज पर निर्भर है।

जैसे कि जेम्सवाट और जार्ज स्टीफैंसन का आविष्कृत इन्जन अपने समय पर महत्वपूर्ण था। अत: वे अपने क्षेत्र में स्मरणीय हैं, उनकी वह सोच भावना तो आज भी अनुकरणीय है पर आज वह इन्जन केवल पुरातत्व की वस्तु है। क्यों कि आज सर्वत्र उस इन्जन के आधुनिक रूप ही अनुकरणीय कोटी में आते हैं। और उसके डेट की अपेक्षा आधुनिक रूप ही अनुकरणीय कहा जा सकता है। यही बात सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में भी सामने रखकर अनुकरणीय का निर्णय लिया जाए, तो अधिक अच्छा हो।

प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) १४६०२१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रैस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ रजि०न० P/

सृष्टि संवत् १ ९६ ०८ ५३,०९०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए० चैत्र १५ २०४६ वि०

वर्ष १७ अंक १८ २८ मार्च १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

महाभारत - अधर्म पर धर्म की विजय

महावीर 'नीर' विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

२८ जनवरी, २५ फरवरी तथा ४ मार्च १९९० के 'नवभारत-टाइम्स' में महाभारत 'अधर्म पर अधर्म की विजय' सम्बन्धी श्री नीरेन्द्र नागर के लेख की प्रक्रिया एवं प्रतिक्रिया में अनेक पत्र लेख निकले हैं। अपना विचार है कि यह 'अधर्म पर अधर्म की नहीं अपितु धर्म की विजय है। लेखकों ने कृष्ण पर अनेक आरोप लगाए हैं और ऐसा चित्रित किया है जैसे संसार के सबसे बुरे व मिथ्याचारी आदमी वे ही हों। उन्हें छली, मायावी, कपटी आदि कहकर अपमानित किया गया है, यह लेखकों की अपनी बुद्धि की कसौटी है। कृष्ण को समझने के लिए कृष्णमय होना पड़ेगा। कृष्ण का व्यक्तित्व सीढ़ी का निचला डण्डा भी है और सीढ़ी का शिखरदण्ड भी है। वे बड़े-बूढ़ों के पांव धोने वाले सेवक भी हैं और राजसूय यज्ञ में सबके द्वारा अभिनन्दनीय स्वामी भी। मान-अपमान से दूर सबके कल्याण के लिए शान्तिदूत भी हैं और महाभारत युद्ध के सूत्रधार भी। उदार इतने कि हस्तिनापुर दूत बनकर जाते समय मार्गस्थ लोगों के द्वारा भेंट की वस्तुएँ उन्हें ही समर्पित करते जाते हैं और अनुदार (निर्भीक) इतने कि अधर्मी दुर्योधन का आतिथ्य भी स्वीकार नहीं करते। छली या मायावी कहने वाले उनके जीवन के वास्तविक पहलू को जान नहीं पाते। कृष्ण का विचार है कि अन्यायी या अत्याचारी अथवा समाज की जीवन-पद्धति बिगाड़ने वाले, धर्म से घृणा या उसका नाश करने वाले व्यक्ति को मारने के लिए इस जन्म को अगले जीवन के लिए भी कुर्बान कर दिया जाए तो कोई हानि नहीं। हम ईश्वरत्व की बात न करके उनके पुरुषत्व या महापुरुषत्व पर ही विचार करें तो उनको बड़े विचित्र से देख सकेंगे। कुछ पत्रों में चीर-हरण की घटना और उस में कृष्ण की भूमिका की बात कही गई है कि कृष्ण यह कर सकते थे, वह कर सकते थे, किन्तु इस सन्दर्भ में हम उनके भ्रम को दूर कर देना चाहते हैं कि जिस समय जुआ (द्यूत) खेला गया उस समय श्रीकृष्ण हस्तिनापुर और द्वारिकापुरी से दूर थे। क्योंकि वे और उनका पुत्र प्रद्युम्न शाल्व से युद्ध में लगे थे। शाल्व ने एक विशालकाय 'सौभ नामक महाविमान' बनाया था, जिसकी संहारक शक्ति भयंकर थी। कृष्ण उसके साथ युद्ध में संलग्न थे और बलराम जी द्वारिका की सुरक्षा में नियुक्त थे। इसलिए द्रौपदी-अपमान के समय वे वहां थे ही नहीं, यदि वे होते तो जुआ न होता और अगर जुआ होता तो दुर्योधन मारा जाता। इस प्रकार एक गन्दे दृश्य में परम बली कृष्ण को चीर बढ़ाते चित्रित करना उनके समस्त जीवन के लक्ष्य को मटियामेट कर देने के समान है। कृष्णने दुराचारियों को तो: कभी सहन किया ही नहीं। साम, दाम, भेद और दण्ड नीति से उन्हें समूल उखाड़ फेंका। इस घटना के सन्दर्भ में हम उद्योग पर्व व वन पर्व के कुछ श्लोक देखें—

> ऋणमेतत् प्रवृद्धं मे हृदयान्नापसर्पति ।
> यद् गोविन्देति चुक्रोश कृष्णा मां दूरवासिनम् ॥

अर्थात् जिस समय कौरव-सभा में द्रौपदी का अपमान हो रहा था (मैं) कृष्ण हस्तिनापुर से बहुत दूर था, उस समय कृष्णा ने आर्त-भाव से गोविन्द कहकर जो मुझे पुकारा था। उसका मेरे ऊपर 'ऋण' बढ़ता ही जा रहा है। अब वन पर्व का एक प्रसंग देखें। जब पाण्डव वनवासी हो जाते हैं तब कृष्ण, सात्यकि आदि दल-बल सहित उनसे मिलने जाते हैं। वहां कुशलक्षेम के बात चीत होने लगी। तब बड़े दुःख से श्रीकृष्ण बोले—कि मैं शाल्व से युद्ध में जूझ रहा था, उसे मार और मित्र-जनों को आनन्द प्रदान करने में लगा था, इसलिए मैं जूए के अवसर पर नहीं आ सका। यदि मैं (कृष्ण) उस अवसर पर पहुंच जाता तो जूआ न होता, यदि ऐसा होता तो दुर्योधन मारा जाता, किन्तु अब नदी पर से पुल टूट जाने के समान मैं आपका क्या हित करूं। पढ़िए और विचारिए—

> एवं निहत्य समरे सौभं शाल्वं निपात्य च ।
> आनर्तान् पुनरागम्य सुहृदां प्रीतिमाहरम् ॥व०प०॥ ४०
> तदेतत् कारणं राजन् यदहं नागसाह्वयम् ।
> नागमं परवीरघ्न न हि जीवेत सुयोधनः ॥ व०प० ॥ ४१
> मय्यागतेऽथवा वीर द्यूतं न भविता तथा ।
> अद्याहं किं करिष्यामि भिन्नसेतुरिवोदकम् ॥व०प०॥ ४५

इस प्रकार कृष्ण के उपरोक्त वचनो की साक्षी के आधार पर इस घटना पर यदि विचार कर तो दूसरे ही रूप से सोचने-विचारने को बाध्य होना पड़ेगा।

*

जरा सोचिए—यदि रामचन्द्र जी जैसे मर्यादित पुरुष अपने पिता का वचन भंग कर गद्दी पर बैठ जाते तो क्या हम उन्हें याद करते? यदि भरत जैसा भाई भाई से विद्रोह करके राजगद्दी हथिया लेता तो क्या हम उसे याद करते? यदि हरिश्चन्द्र जैसा राजा सत्यपालन के लिए कष्ट न उठाता तो क्या हम उसे याद करते? यदि राजपूताने की वीर स्त्रियां अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अग्नि में जौहर की अपेक्षा आक्रान्ताओं को अपना सर्वस्व समर्पित कर देती, तो क्या हम उन वीरांगनाओं को याद करते? अपने स्वत्व की रक्षा के लिए रानी लक्ष्मीबाई तलवारों की झंकार न सुनाती तो क्या हम उसे याद करते? ऐसे ही यदि निज धर्मपालक युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र की आज्ञा का उल्लंघन कर अपने क्षत्रिय धर्म का पालन न कर जूए में छल कपट से हार, अपने सत्यव्रत का पालन न करते तो आज उन्हे कौन याद करता और व्रत का महत्त्व समझता? यदि वे दुःशला के पति जयद्रथ को द्रौपदी के साथ अनीतिपूर्ण अभद्र व्यवहार करने पर कोई कड़ा दण्ड देते तो उन्हे कौन उदारचरित धर्मात्मा कहता?

(क्रमशः)

'योगदर्शन के अनुसार चार प्रकार के दुःख'

—ब्र० विवेकभूषण दर्शनाचार्य

(गतांक से आगे)

द्रव्य और गुण का नित्य सम्बन्ध है । इस प्रकार से योगाभ्यासी व्यक्ति सब पदार्थों को कम या अधिक दुःख से युक्त देखता है । क्योंकि इन पदार्थों में दुःख का कम या अधिक होना, गुणों की परस्पर विरुद्ध वृत्तियों के कारण से होता है, अतः इसे 'गुणवृत्तिविरोध दुःख' कहते हैं ।

जब योगाभ्यासी बौद्धिक स्तर पर प्रत्येक पदार्थ को कम या अधिक दुःख से युक्त अनुभव करता है, तो सूत्र के शब्दों—'दुःखमेव सर्वं विवेकिनः'' के अनुसार सम्पूर्ण जगत् के भौतिक पदार्थ उस विवेकी=(योगाभ्यासी) को दुःखमय दीखते हैं, और उसे इस दुःखमय संसार से 'वैराग्य' उत्पन्न हो जाता है । यही वैराग्य आगे चलकर उसे 'समाधि' और 'मोक्ष' तक पहुंचा देता है । इसके बिना दुःखों से छूटने का का और कोई मार्ग नहीं है ।

यदि व्यक्ति इन दुःखों से छूटने के लिए उपरोक्त वैराग्य-प्राप्ति की प्रक्रिया को नहीं अपनाता, तो वह इतना ही नहीं कि इसी जीवन भर इन दुःखों को भोगता है, बल्कि जन्म-जन्मान्तरों तक इन दुःखों के कीचड़ में गहरा-गहरा धसता चला जाता है और मनुष्य जीवन को व्यर्थ गवा बैठता है । इन दुःखों का विस्तार जन्म-जन्मान्तरों तक होता है जो कि व्यास-भाष्य के आधार पर इस प्रकार से हैं ।

परिणाम, ताप आदि दुःखों का विस्तार—जब कोई व्यक्ति किसी भौतिक सुख को भोगता है तो उसे उस सुख में राग हो जाता है । वह उस सुख की पुनः प्राप्ति के लिए अधर्म, अन्याय, अत्याचार, चोरी, डकैती, रिश्वत आदि कोई भी पाप क्यों न करना पड़े । जैसा कि आजकल प्रायः होता ही है । लोग कार, कोठी, मान-प्रतिष्ठा आदि से सुख प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रिश्वत, चोरी आदि पाप करते ही हैं । इसका परिणाम यह होता है कि इन लौकिक सुखों को भोग-भोग कर भी इच्छाएं तो पूरी होती नहीं । यहां जीते जी भी इच्छाओं के पूरा न हो पाने के कारण परिणाम के रूप में दुःख भोगना पड़ता है और इन पापों के फलस्वरूप अगले जन्मों में भी पशु-पक्षियों आदि की योनियों में विविध दुःख भोगने पड़ते हैं । क्योंकि वैदिक सिद्धांत में— किया हुआ कर्म (कभी) निष्फल नहीं होता ।'' (महर्षि दयानन्द भाष्य—यजुर्वेद ४०/१५ भावार्थ) इन सुखों की प्राप्ति के लिए व्यक्ति सुख के राग से प्रेरित होकर कर्म करता है, अतः 'परिणाम दुःख' के अन्तर्गत 'रागज कर्म' माने जाते हैं ।

परन्तु जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के सुख में बाधक बनता है, तो दूसरा व्यक्ति उस पहले व्यक्ति से द्वेष कर लेता और उस द्वेष के कारण से वह उस व्यक्ति की हानि=(मारना, पीटना, विरोध करना मिथ्या आरोप लगाना, यहां तक कि हत्या भी) कर देता है । फिर इन दुष्कर्मों का फल भी उसे नीच योनियों में जाकर भोगना पड़ता है । इस प्रकार से 'ताप दुःख' के अन्तर्गत 'द्वेषज कर्म' हो जाते हैं ।

'संस्कार दुःख' के अन्तर्गत 'राग और द्वेषज' दोनों ही प्रकार के कर्म होते हैं । क्योंकि सुख भोगने पर सुख के संस्कार पड़ते हैं और दुःख भोगने पर दुःख के संस्कार पड़ जाते हैं । सुख के संस्कार राग को उत्पन्न करते हैं तथा दुःख के संस्कार द्वेष को । फिर व्यक्ति उन राग व द्वेष से प्रेरित होकर पुनः नए कर्म करता है, उस सुख की प्राप्ति के लिए और दुःख की निवृत्ति के लिए राग और द्वेष के कारण किए गए इन सकाम कर्मों=(पाप-पुण्यों) का फल फिर उसे अगले जन्मों में भोगना पड़ता है, और फिर यह चक्र यहीं समाप्त नहीं हो जाता । अगले जन्मों में व्यक्ति पुनः इन संस्कारों से पाप-पुण्य कर्म करता और नया सुख-दुःख भोग-भोग कर संस्कारों को और अधिक बढ़ाता जाता है । इस प्रकार संस्कारों से नए कर्म, नए कर्मों से नया फल=(सुख-दुःख), और फिर इन फलों—(सुख-दुःख) से नए संस्कार बनते जाते हैं तथा जन्म-जन्मान्तरों तक व्यक्ति=(आत्मा) विभिन्न योनियों में विविध दुःख भोगता हुआ अपनी महती हानि कर लेता है ।

प्रश्न—क्या इन दुःखों से छूटने का कोई उपाय है ?

उत्तर—जी हां ! केवल एक ही उपाय है—'योगाभ्यास' जिसका संकेत हम पहले कर चुके हैं । महर्षि पतञ्जलि जी के ही शब्दों में—'विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः'' (योग० २/२६) अर्थात् स्थिर=(दृढ़) तत्त्वज्ञान ही इन दुःखों से छूटने का उपाय है । यह तत्त्वज्ञान उपरोक्त प्रक्रिया से ही सांसारिक सुखों में चार प्रकार का दुःख अनुभव करने से और योग के आठ अंगों का आचरण करने से ही सम्भव है । इस विषय में योग दर्शन का यह सूत्र द्रष्टव्य है—''योगांगानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः.' (योग० २/२८) अर्थात् योग के (आठ) अंगों का अनुष्ठान=(आचरण) करने से अविद्या का नाश और ज्ञान का विकास होता जाता है, जब तक कि विवेक-ख्याति=(तत्त्वज्ञान) न हो जाए ।' और फिर इस तत्त्वज्ञान का निश्चित परिणाम 'वैराग्य-प्राप्ति होता है । वैराग्य से समाधि और समाधि से संस्कारों की दग्ध बीजभाव अवस्था=(भुने हुए बीजों के समान अवस्था) और फिर मोक्ष हो जाता है । मोक्ष में जीवात्मा इन सब दुःखों से छूटकर ईश्वर के नित्य आनन्द को भोगता है । कितने काल तक ? जब तक यह संसार ३६००० बार बने और बिगड़े । एक बार संसार के बनने और बिगड़ने का समय दोनों मिल कर ८ अरब ६४ करोड़ वर्ष होता है । अर्थात् मोक्ष का काल ८ अरब ६४ करोड × ३६०००=३१ नील १० खरब और ४० अरब वर्ष बनता है । इतने लम्बे काल तक सम्पूर्ण दुःखों से छूटकर ईश्वर का नित्य आनन्द भोगने के लिए क्यों न तप=(परिश्रम) किया जाए ! जो भी बुद्धिमान् व्यक्ति इस उपरोक्त प्रक्रिया को समझ लेगा, वह अवश्य ही इसके लिए तप करेगा । क्योंकि 'बुद्धिमान् व्यक्ति का तप से अतिरिक्त और कहीं भी कल्याण नहीं है ।' इसी भाव को महाराज भर्तृहरि जी ने इस पंक्ति में व्यक्त किया है—

'सखे ! नान्यच्छ्रेयो जगति विदुषोऽन्यत्र तपसः ।।'

(भर्तृहरि वैराग्य० ४८)

दर्शन योग विद्यालय, आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड़,
पत्रा० सागपुर, जि० साबरकाठा गुजरात ।

वैदिक परंपरा द्वारा जन्म दिवस की प्रक्रिया

चौ० सुलतान सिंह (पूर्व सांसद एवं पूर्व राज्यपाल) ने सादे समारोहों में अपने पौत्रों चिरंजीव इन्द्रजीत सिंह सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी का जन्म-दिवस ८-२-१९९० एवं चि. अमरदीप सुपुत्र श्री वेदप्रकाश जी का जन्म-दिवस ६-३-१९९० को वैदिक रीति से श्री हरिचन्द स्नेही के ब्रह्मत्व में सम्पन्न कराया । कई गणमान्य व्यक्तियों ने बच्चों की दीर्घायु तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की और बच्चों को आशीर्वाद दिया । आदरणीय चौ० साहब ने कई संस्थाओं को दान भी दिया ।

इसके अतिरिक्त चि० गौरव सुपुत्र श्री सतीश कुमार (सोनीपत) का जन्म-दिवस भी वैदिक परम्परा द्वारा सम्पन्न हुआ । बच्चे को आशीर्वाद दिया गया ।

विनीत—
हरिचन्द स्नेही

आर्यसमाज—परिचय

—प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

इसके बाद मैंने पुनः पूछा—

सोमेश—हां, आपने बहुत सुन्दर ढंग से ऋषि जीवन का परिचय दिया है तथा बताया है, कि उन्होंने एक विशेष उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की है। मैं इस सम्बन्ध में और जिज्ञासाएं प्रकट करूं। अच्छा हो आप पहले यह बताएं, कि आप ऋषि जीवन में क्या अनोखापन अनुभव करते हैं ?

प्रा०—संसार के इतिहास की यह एक अपूर्व घटना है, कि एक पठित २१ वर्षीय युवक लगातार १४ वर्ष भटकने के बाद एक गुरु को प्राप्त करता है। वहां विशेष शिक्षा प्राप्त करके जब अपने पूर्व संकल्प को साधने के लिए विदा मांगता है, तो गुरुदेव उसके जीवन का कांटा ही बदल देते हैं। एतदर्थ अपनी योग साधना को भी गौण करके महर्षि दयानन्द सर्वात्मना जनता जनार्दन को सत्पथ दर्शाने में जुट जाते हैं। आर्षज्ञान की ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने के लिए जहां आर्यसमाज की स्थापना की, वहां महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य आदि बड़े-छोटे बीस ग्रन्थ लिखे।

अगले दिन कालेज के अनन्तर जब सोमेश आर्यसमाज जाने लगा, तो उसके कुछ साथी भी साथ हो लिए। कुछ चर्चा के पश्चात् विश्वेश्वर ने पूछा, आपकी दृष्टि से आर्यसमाज की विचारधारा का सबसे बड़ा लाभ क्या है ?

प्रा०—इसको एक छोटे वाक्य में कहना हो, तो कह सकते हैं कि उलझाव से बचाव।

सोमेश—किस-किस उलझाव से आप बचाव समझते हैं ?

प्रा०—जीवन के हर क्षेत्र के उलझाव से यहां बचाव है। अगर कुछ के नाम ही गिनाने की बात हो तो मैं कहूंगा, कि ईश्वर, धर्म, मानव जाति, महापुरुष, तीर्थ, पर्व आदि। क्योंकि हर एक के भेदों का कोई अन्त नहीं। इन सबका एक सरल - सीधा - स्पष्ट सा रूप यहां हाथ लग जाता है। तब व्यक्ति असम्बद्ध फैलाव में नहीं पड़ता और न ही पत्तों को पानी देने जैसा निरर्थक श्रम। जैसे कि प्रातः उठते ही दिन, तिथि, राशि, ग्रह, दिशा के शुभ-अशुभ के विचार सामने आ जाते हैं।

अमितेश—हां, आपने बचाव की बात की है और उसको स्पष्ट करते हुए शकुन-अपशकुन, मुहूर्त विचार का दृष्टान्त दिया है। इसी प्रकार, अन्य अनेक बातों में बचाव का नाम निर्देश किया है। हां, चमत्कारों के सम्बन्ध में ऋषि जी की क्या धारणा है ?

प्रा०—देखो ! आज हमारे समाज में ईश्वर भक्ति, जप-तप, मन्त्र-तन्त्र, यज्ञ-योग, व्रत-तीर्थ आदि से प्राप्त होने वाले अनेक तरह के चमत्कारों की सर्वत्र चर्चा होती है। ऋषि ने इस सम्बन्ध में सब से पहले इस बात की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया है कि व्यवहार में ऐसा कहीं सामने नहीं आता। शीतला माता, सिरड़ी वाले साईं बाबा जैसे धार्मिक चल-चित्रों से भक्तिमात्र से ही हर सिद्धि की प्राप्ति का दावा किया जाता है। हां, जब कोई इस प्रकार के चमत्कारों पर विश्वास करता है, तो इसका पहला परिणाम यही होता है कि वह उस-उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए अन्य प्रयास नहीं करता। उस-उस व्यावहारिक प्रयास के न करने पर उसको विद्या धन आदि प्राप्त नहीं होते। और तब वह उसी धोखे में ही रह जाएगा। जैसे कि जब कोई यह विश्वास करता है, कि अमुक मन्त्र की सिद्धि से विद्या प्राप्त हो जाती है, तो वह पढ़ने के स्थान पर मन्त्र सिद्धि में लग जाता है।

नवीन—श्रीमान् जी ! सोमेश ने जो आर्यसमाज के सत्संग सम्बन्ध में सुनाया है, उससे ऐसा झलकता है कि जैसे महर्षि दयानन्द ने अपनी खिचड़ी अलग ही पकाई है ?

प्रा०—ऐसी कोई बात नहीं है, क्योंकि आर्यसमाज के सत्संग में सर्वप्रथम यज्ञ होता है, जोकि वैदिक वाङ्मय के श्रौत-गृह्यसूत्रों जैसे यज्ञ साहित्य के अनुरूप ही होता है। वहां अधिकतर वेदों के ही मन्त्र प्रयुक्त होते हैं। वेद भारतीय साहित्य, धर्म, परम्परा के मूल आधार हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान होने से इनमें सार्वभौमिक विचार हैं। अतएव आर्यसमाज के विचारों का वेद ही मूल आधार हैं। हां, यहां के सत्संग में केवल एक ईश्वर की पूजा, भक्ति, उपासना होती है, जोकि वेद और हमारी भावना एवं कथनी के अनुकूल होती है।

आपके इस प्रश्न के सभी पहलुओं का उत्तर महर्षि के 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में इन शब्दों द्वारा प्राप्त होता है। 'जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं, जिनको मैं मानता हूं, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है।

मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।'
पृ. ५८५ [स्वा. वेदानन्द सम्पादित संस्करण)

विवेक—यदि महर्षि ने नई प्रथा नहीं चलाई तो उनका इस क्षेत्र में क्या योगदान है ?

प्रा०—महर्षि ने बारम्बार यही लिखा है कि हमारा धर्म वही है, जो वेद कहता है। (पूर्व०) तुम्हारा मत क्या है ? (उत्तर०) वेद अर्थात् जो जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस उस का हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। जिस लिए वेद हमको मान्य है इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही सब मनुष्यों को विशेष आर्यों को एकमत्य होकर रहना चाहिए। ३, ६७

हां जहां तक महर्षि के योगदान की बात है, तो वस्तुतः महर्षि ने वैदिक साहित्य, धर्म के क्षेत्र को एक निश्चित दिशा और व्यवस्थित रूप दिया है। अतः संशय, अनिश्चय, पारस्परिक विरोध की स्थिति में एक 'सुसंगत जीवनपथ' दर्शाकर महर्षि ने एक अपूर्व योगदान दिया है। श्री परमानन्द शर्मा के शब्दों में इसको ऐसे कह सकते हैं—

'जब ललाट पर चेतनता के
चिह्न अनिश्चय का अङ्कित था,
दिखलाया निश्चय - पथ तुमने
शोषित कर शङ्का का सागर'
'एक बार फिर आओ प्रभुवर'

अभिनव—मुझे तो यज्ञ की प्रक्रिया में भी अन्तर प्रतीत होता है ?

प्रा०—हां, ठीक कहा, आर्यसमाज केवल ईश्वर को ही जगत् कर्त्ता-धर्त्ता मानता है। ये सूर्यादि प्राकृतिक पदार्थ उसी की ही व्यवस्था में बन्धे हुए हैं। आर्यसमाज की दृष्टि से देवी-देवताओं की स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। अतः महर्षि के विचार से यज्ञों का देवताओं की प्रसन्नता से कोई सम्बन्ध नहीं है। हां, ये यज्ञ, धूप, अगरबत्ती की तरह जल, वायु आदि की शुद्धि के लिए किए जाते हैं। इसीलिए इनकी सामग्री उसके अनुरूप होती है। 'एक पन्थ दो काज' के अनुसार ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना विषयक एवं यज्ञ सम्बद्ध मन्त्र भी पढ़े जाते हैं। अतएव महर्षि ने लिखा है—(पूर्व०) होम से क्या उपकार होता है ? (उत्तर०) सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।
सत्यार्थ. समु ३ पृ. ४३

[क्रमशः]

आर्यसमाज सुदकैन कलां का उत्सव सम्पन्न

सुदकैन कलां जिला जींद का प्रथम वार्षिक महोत्सव १६ से १८ मार्च तक बड़े हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। इसमें स्वामी गोरक्षानन्द जी (गोशाला उचाना खुर्द) व धानानन्द जी के मधुर उपदेश हुए तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान (भजनोपदेशक सभा), बहन दर्शना आचार्या गुरुकुल खरल के भजनों तथा ओजस्वी प्रवचनों ने उत्सव के महत्व को और बढ़ाया। कन्या गुरुकुल खरल से कुछ छात्राएं भी आई जिन्होंने बड़े सुन्दर प्रवचनों तथा गीतों से लोगों को प्रभावित किया।

१८-३-९० को व्यायाम प्रदर्शन में ब्रह्मचारी रामस्वरूप जी ने सरिए मोड़ना, नाड़ी रोकना, दो कारें रोकना आदि से लोगों को आकर्षित किया।

इस उत्सव में कुछ लोगों को यज्ञोपवीत दिए गए। आस-पास के गांवों तथा नरवाना से बहुत से लोग उत्सव देखने आए। आर्यसमाज कर्मसिंघु खेड़ा, आर्यसमाज तारखा तथा आर्यसमाज नरवाना के मन्त्री व प्रधान भी उत्सव पर पधारे तथा आर्य विचारों से लोगों को अवगत कराया। अन्त में सभा के प्रधान श्री राजेन्द्र जी ने अपार भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो दान आपने श्रद्धा से दिया है वो आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण हेतु व कन्या पाठशाला के लिए लगाया जाएगा।

दिलबाग शास्त्री
मन्त्री, आर्यसमाज सुदकैन कलां (जींद)

अबोहर की खूनी होली

तेगराम पूर्व विधायक, अबोहर

अबोहर में सरकार के अनुसार अब तक ३५ जानें गई हैं किन्तु गैरसरकारी अनुमान से ६० जानें गई तथा इतने ही लोग गम्भीर रूप से घायल हुए। देश के लोगों ने रंगों का त्यौहार होली अबीर, गुलाल व रंग भरी पिचकारी से मनाया पर यहां तो लोगों के शरीर पर और शहर की नालियों में खून की धाराएं बहीं। देश में उपले-लकड़ी जला कर होली प्रज्वलित की गई किन्तु यहां तो दर्जनों लाशों की श्मशान भूमि में सामूहिक दाह-संस्कार से अग्नि की लपटें उठीं। शहर कर्फ्यू की जकड़ में है। रात-दिन सी०आर०पी०एफ० के जवान बन्दूकें ताने गश्त लगा रहे हैं तथा शहर में अभी भी तनाव है।

महर्षि दयानन्द विद्यालय जींद रोड़, रोहतक में प्रवेश आरम्भ

१ अप्रैल से प्रभाकर की ट्रेनिंग आरम्भ। नर्सरी से दसवीं तक तथा 10+2 B. A. I, II, B. Sc. B.com. उचित शिक्षा का प्रबन्ध है।

१- नैतिक शिक्षा का उचित प्रबन्ध
२- परिश्रमी तथा निष्ठावान अध्यापक
३- पंखे तथा बिजली और पानी का उचित प्रबन्ध
४- पहली से दसवीं तक अंग्रेजी का भी उचित प्रबन्ध

नोट:—इच्छुक विद्यार्थी निम्न पते पर सम्पर्क करें।

निवेदक:—

संरक्षक
बलराज शास्त्री काशी विद्यापीठ

प्रधानाचार्य
महर्षि दयानन्द विद्यालय
जींद रोड रोहतक

शराब नीति की आलोचना

भाजपा के श्री बलबीर सिंह चौधरी ने पिछले सत्र में आबकारी नीति की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि १९८७-८८ में आबकारी से से हुई आय ९ करोड़ रु. अधिक थी जो उससे अगले वर्ष १६ करोड़ रु. बढ़ गई तथा इस वर्ष ४९ करोड़ रु. बढ़ गई। अब गांव-गांव शराब और उससे होने वाली कुरीतियां आम हैं। चर्चा में सर्वश्री टेकचन्द नेन, मांगेराम नम्बरदार, मास्टर महेंद्रसिंह दहिया आदि ने भी भाग लिया।

बुढलाडा मण्डी (जि. बठिण्डा) में पारिवारिक सत्संग

१८-३-९० दिन रविवार को प्रात: साढ़े दस बजे से साढ़े बारह बजे तक श्री मेघराज जी गोयल प्रधान आर्यसमाज बुढलाडा ने अपने परिवार में श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी बठिण्डा द्वारा संध्या-हवन यज्ञ-प्रार्थना- ईश्वर भक्ति के भजन का बड़ा सुन्दर कार्यक्रम सत्संग के रूप में रखा। श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी ने 'पंच महायज्ञ' पर अपने विचार व्यक्त किए। उपस्थित नर-नारियों ने पुष्पों द्वारा प्रधान जी के परिवार को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर श्री मेघराज जी गोयल ने १०० रुपए आर्यसमाज बुढलाडा को और १०० रुपए आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को दान दिया। उपस्थित देवी देवताओं का मिठाई एवं चाय से सत्कार किया गया। ऐसे पारिवारिक सत्संगों से बहुत अच्छा प्रचार होता है।

धन्यवादी
ओमप्रकाश वानप्रस्थी

शराब विरोधी पंचायत

होडल मार्केट कमेटी के चेयरमैन किशोर सिंह रावत ने बताया कि हथीन के विधायक भगवान सहाय रावत के कहने पर मानपुर गांव में शराब विरोधी पंचायत हुई। पंचायत में निर्णय लिया गया कि यदि कोई व्यक्ति शराब बेचता या पीता पाया गया तो उसके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी तथा उसका सामाजिक बहिष्कार किया जाएगा। इस कार्य के निरीक्षण के लिए एक ३१ सदस्यों की कमेटी भी गठित की गई है।

किसान यूनियन का गठन

भारतीय किसान यूनियन की ग्रामीण इकाइयों का गठन कार्य बड़ी तेजी से चल रहा है। मानसिंह को बल्लिला, लेखराम को छपरौला, नत्थीसिंह को दूधौला, गिरधर लाल को कोंडिल, बाबूराम को अहरवां, रतनलाल को नांगल जाट, करणसिंह को बहीन, सुखीराम को मण्डकौल, रूपचन्द पहलवान को ममरौला, धर्मबीर को रूंधी, भूपसिंह को सौंध तथा राधेलाल को मानपुर का अध्यक्ष चुना गया है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जौहर खेड़ा का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विश्व शांति यज्ञ हुआ तथा भजनोपदेश हुए। अनेक वक्ताओं ने लोगों से शराब, मांस व धूम्रपान का प्रयोग छोड़ने की अपील की।

शराब हटाओ देश बचाओ।

अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ

सर्वत्र बेचैनी और बिखराव : चाहिए धैर्य और एकता

प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

देश की अवस्था शोचनीय होती जा रही है। पंजाब और कश्मीर की अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। हत्यायें तो रोज होती ही हैं, अब अपहरण करके आतंकवादी अपने साथियों को छुड़वाने की शर्तें रखने लगे हैं। यह कश्मीर में हो रहा है और आन्ध्र में भी। यह बीमारी और जगह भी फैल सकती है। पंजाब में तो अपहरण पैसा वसूल करने के लिए हो रहा है। एक ओर इस प्रकार की अराजकता फैलती जा रही है और दूसरी ओर इन समस्याओं का हल करने की क्षमता रखने वाले जिम्मेदार संगठन बिखर रहे हैं।

आज आवश्यकता तो है दलों से ऊपर उठकर राष्ट्र की एकता को बचाने का। परन्तु दलों के अन्दर ही बिखराव और संघर्ष चल रहे हैं। सभी दल अपनी अन्दरूनी समस्याओं में ही उलझे है, राष्ट्र की समस्याओं में समय और ध्यान नहीं दे पा रहे हैं।

राजनैतिक दल ही नहीं, सभी आर्थिक और सामाजिक संगठन भी बिखर रहे हैं। किसान की यूनियन तथा मजदूरों की यूनियन भी अपने अन्दर के संघर्षों में लगे हैं। किसान संगठन जात-पात के नाम पर बंटता जा रहा है, मजदूर भी मनमानी शर्तें पेश करने में ही लगे रहते हैं, सौदे करते रहते हैं, मजदूरों का उद्योग का तथा देश का ध्यान किसी के मन में नहीं। जैसी शर्तें असन्तुलित वैसे ही वायदे भी असन्तुलित।

वायदे तो असन्तुलित किए जाते हैं और उनको पूरा करते समय सन्तुलन की बात याद आने लगती है।

बेचैनी, असन्तुलन, हिंसा और बिखराव से ही घिरे हुए हैं संगठन। आवश्यकता है धैर्य, सन्तुलन प्रेम और एकता की।

क्या सभी संगठन, दल, यूनियन आदि समय की नजाकत को देख कर देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे ?

कोटि प्रणाम

मर्यादा पुरुषोत्तम तुम थे, मर्यादाओं के अनुरक्षक।
सत्य धर्म के रहे प्रणेता मानवता के बने सुरक्षक।
विप्र धेनु—सुर—सज्जनों को किया तुम्हीं ने निर्भय।
दूर किया सारी धरती की दानवता—अन्याय—अनय।
निर्बल को दे नया सहारा, नवयुग का आह्वान किया।
जन-जन में जागृति लाकर के चेतना का अनुदान दिया।
स्थापित कर मानवता का, अनुपमेय सा मेरुदण्ड।
मार गिराया समस्त राक्षसों को, जो थे अति तीव्र उदण्ड।
रावण जैसे असुरों का वध करके, भू उद्धार किया।
वैदिक पथी बनाकर सबको जगती का उपकार किया।
ऋणी तुम्हारा सदा रहेगा, महिमण्डल सारा, हे राम।
आज तुम्हारे जन्मदिवस पर युग के कवि का कोटिप्रणाम।

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना,
सुलतानपुर (उ०प्र०)

चैत्र शुक्ल १ (२७ मार्च १९९०) नव वर्ष प्रतिपदा की बधाई

विक्रमी सम्वत् २०४७ आपके लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए, विश्व के लिए मंगलमय होवे।

—हरिश्चन्द स्नेही आर्यवीर दल सोनीपत

अलीपुर में सर्वखाप पंचायत का आयोजन

पालम खाप ३६० ग्रामों की पंचायत है के पंचों ने यह अनुभव किया है कि १२ मार्च को ग्राम बेंसी जिला रोहतक में महम चुनाव के दौरान मृत व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देने हेतु जो शोकसभा आयोजित की गई थी, उसमें मृतकों को श्रद्धांजलि देने तथा संवेदना प्रकट करने के अतिरिक्त कोई नई बात होनी चाहिए थी। शोकसभा के अवसर पर मृतकों तथा उनके सम्बन्धियों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना प्रकट करने का कार्यक्रम ही रहना चाहिए था। वहां राजनैतिक मामले उठाना हमारी सभ्यता और परम्परा के विरुद्ध है। शोकसभा सर्वखाप पंचायत कहकर यदि कोई स्वयम्भू पंच सर्वखाप पंचायत के नाम से मनमाने निर्णय सुनादे तो उसका कोई महत्त्व नहीं है। इस प्रकार की कुचेष्टा से महान संघटन की गरिमा तथा प्रतिष्ठा को भारी आघात पहुंचाना है क्योंकि तथ्य यह है कि उक्त सभा में किसी खाप को पत्र डालकर न बुलाया गया और न खापों के प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित हुए। शोक सभा पर राजनैतिक निर्णय करके भ्रामक प्रचार सर्वखाप पंचायत का नाम लेकर किया जा रहा है। यह सब प्रकार से निन्दनीय है।

अत: ३१ मार्च शनिवार को प्रात: ११ बजे शहीद स्मारक ग्राम अलीपुर (जी०टी० रोड) में खाप पालम ३६० ग्रामों की ओर से एक सर्वखाप पंचायत बुलाई गई है और पंचायत की परम्पराओं के अनुसार सभी खापों को पत्र भेजे गए हैं। अलीपुर के चारों ओर बसे हुए ८१ ग्रामों की पंचायत ने इस पंचायत का प्रबन्ध करने का उत्तरदायित्व लिया है और चौ० हीरासिंह पूर्व कार्यकारी पार्षद दिल्ली को इसका अध्यक्ष बनाया गया है। अत: इस पंचायत में सम्मिलित होकर सर्वखाप पंचायत जैसे महासंघठन की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सभी खापों के प्रतिनिधियों को अधिक से अधिक संख्या में पहुंचना चाहिए। निवेदक—

खाप पालम (३६०) पालम दिल्ली

श्री सोमपाल जी राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं पूर्व सांसद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री के सुपुत्र श्री सोमपाल जी उत्तरप्रदेश से जनता दल की ओर से राज्यसभा के सदस्य चुने गए हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से श्री सोमपाल जी को बधाई भेजी गई है। —सभा मन्त्री

आर्यसमाज खटकड़ (जीन्द) का चुनाव

प्रधान—बलदेव सिंह आर्य उपप्रधान—सरजीत सिंह आर्य
मन्त्री—डा० सतबीर सिंह खटकड़ एम०ए०, एल०एल०बी०
प्रचार मन्त्री—धर्मवीर शर्मा संगठन मन्त्री—बलवानसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—सूरजमल आर्य सलाहकार—महासिंह आर्य
पुस्तकालयध्यक्ष—जयभगवान आर्य

हमें अपने महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलकर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करना चाहिए।

एक मास का अद्भुत पुरोहित प्रशिक्षण शिविर वैदिक धर्म के प्रसार की स्वर्णिम योजना

एक पुरोहित जागृत परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माता होता है। बिना पुरोहित का समाज निष्प्राण देह के समान होता है।

अग्निपुंज आचार्य सन्निध्य में रहने वाले व्यक्ति में एक चिंगारी का सा स्फुरण आ जाता है। देश-विदेश में ख्याति प्राप्त आचार्य वेद-भूषण अपनी अद्भुत शैली से पुरोहितों में एक निखार ला देते हैं।

इस वर्ष १५ मई से १५ जून ९० तक देहरादून के तपोवन आश्रम में अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद की ओर से तृतीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का रचनात्मक आयोजन किया जा रहा है।

नए पुरोहितों के निर्माण का और पुराने पुरोहितों में निखार व नए प्रभाव को भर लेने का यह एक स्वर्ण अवसर है। एक प्रभावशाली पुरोहित संगठन में नवोन्मेष उत्पन्न कर देता है।

आपके ग्राम में, नगर में, जिले में, प्रांत में जितने पुरोहित बढ़ेगे उतना ही आर्यसमाज आगे बढ़ेगा।

हमारी संस्कार विधि स्वस्थ मानव निर्माण के सामर्थ्य से परिपूर्ण है। ससार की उन्नति सस्कारित प्रजा पर ही आधारित होती हैं। अपने बच्चों को, समाज के युवकों को, अपनी पुत्रियों को, ग्रीष्मावकाश के दिनों में एक स्वस्थ पवित्र वातावरण में भेजकर आप सस्कारित कर सकते हैं। एक पुरोहित एक सस्था व मिशनरी जैसा काय करता है। अतः अपने परिवार से, आयसमाज से, आर्य शिक्षण सस्था स, अधिक से अधिक युवक/युवतियों को प्रशिक्षण के लिए सकल्प पूर्वक भेजिए।

एक प्रशिक्षणार्थी का व्यय पांच सौ रुपए मात्र लिया जाएगा। भोजन में शुद्ध गो-घृत का प्रयोग कराया जाएगा। आवेदन-पत्र मगा कर शीघ्र ही स्वीकृति प्राप्त कीजिए। प्रवेश सीमित होगा। अतः शीघ्रता कीजिए।

स्मरण रखिए एक प्रभावशाली पुरोहित अपनी आय भी बढा सकता है। अध्यापक व अध्यापिकाए तथा कालेज के लेक्चरर्स पौरोहित्य के कार्य को सरलता से निभा सकते हैं।

अपने आर्यसमाज अथवा आर्य शिक्षा सस्था द्वारा व्यय वहन कर कम से कम एक बुद्धिमान् स्वस्थ सदाचारी युवक को इस प्रशिक्षण में अवश्य भेजिए। धन अकाउन्टपेयी ड्राफ्ट द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वेद-प्रतिष्ठान के नाम से भेजिए।

इस सूचना को अपने सत्संगों में आर्य परिवारों में एव सदस्यों में प्रसारित कीजिए। युवकों को प्रेरणा देकर भेजिए।

छात्रों व महिलाओं के लिए सर्वथा पृथक् निवास की उत्तम सुविधा रहेगी। मौरिशस की चार महाविद्यालय की छात्राएं भी इस शिविर में भाग ले रही हैं। देश भर से अनेकों युवकों की मांग पर यह आयोजन एक बार फिर किया जा रहा है। डा० सुनीति एम०ए० पी-एच०डी० के संरक्षण में छात्राओं की उत्तम व्यवस्था होगी। महिलाएं, माताएं भी भाग ले सकती हैं आवेदन-पत्र प्राप्ति के लिए ६० पैसे के पांच पोस्ट के टिकट भी साथ भेजिए।

एक महत्वपूर्ण योगदान

प्रत्येक व्यक्ति इस सूचना को संकल्प पूर्वक दस-दस परिवारों में पहुंचाकर हमें रचनात्मक योग दे सकता है।

प्रशिक्षण हेतु आवेदकों की आयु कम से कम १६ वर्ष की होनी चाहिए। हिन्दी पढने व लिखने का अच्छा अभ्यास आवश्यक है। योगाभ्यास वृष्टि यज्ञ, पुत्रेष्टि यज्ञ एवं विशेष रोगों की चिकित्सा के लिए गोमेध आदि यज्ञ की विधियां भी सिखलाई जाएगी। ३० अप्रैल ९० तक शिविर में भाग लेने का पूर्व स्वीकृति-पत्र प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

निवेदक—

आचाय वेदभूषण, आचार्य प्रशिक्षण शिविर
अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद
4-5-753 ज्ञानगगा महर्षि दयानन्द मार्ग, हैदराबाद—27

पानीपत में जि. करनाल तथा पानीपत के आर्यसमाजों की बैठक

जैसा कि आपने सर्वहितकारी के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर ली होगी कि हरयाणा प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा के प्रस्ताव के अनुसार वेदप्रचार को हरयाणा में गति प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। इसी के अन्तर्गत प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डलों का गठन सभा की ओर से किया जा रहा है :

अतः इसी सम्बन्ध में जिला करनाल व पानीपत के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक दिनांक १-४-९० को प्रातः ११ बजे आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल पानीपत में होनी निश्चित हुई है, जिस की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी करेंगे। अतः आप से सानुरोध प्रार्थना है कि इस बैठक में अवश्य पधारने का कष्ट करे और वेद प्रचार के कार्यों में सहयोग देवें और अपने अमूल्य विचार व सुझाव भी देवें। इसकी सूचना अन्य कार्यकर्त्ताओं को भी देने का कष्ट कर ताकि वे भी इस बैठक में भाग ले सकें। इसी प्रकार की बैठक १ अप्रैल को ही दोपहर बाद आर्यसमाज सोनीपत शहर में होगी।

संयोजक—
रामानन्द सिंगला, अन्तरग सदस्य,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, पानीपत।

बारात वापसी

खरखौदा २२ मार्च (निस)। मोरखेड़ी गांव में आई एक बारात को दूल्हे की अजीबो-गरीब हरकतों के कारण बिना दुल्हन के ही लौट जाना पड़ा। बारात पुरखास से आई थी।

बताया जाता है कि बारोठी (विवाहोत्सव की एक रस्म) पर जाते हुए दुल्हे मियां ने मोड (मुकुट) को हाथ में लेकर स्वय ही नाचना शुरू कर दिया। कन्या पक्ष वालों ने इस पर नाराजगी जाहिर की। फिर माला डालते हुए दुल्हन का घूंघट पलट दिया जाने के कारण दोनों पक्षों में कहा-सुनी हो गई।

लड़की वालो की सहनशीलता की उस समय हद हो गई जब फेरो के समय दूल्हे ने कहा कि वह और उसका मित्र साथ-साथ बैठेंगे तथा आध आध फेरे लेंगे। अब तो पानी सिर से गुजर चुका था, कन्या पक्ष ने इस विवाह से साफ इन्कार कर दिया और बारात को बैरंग लौटना पड़ा।

बारात के आगे नाचने पर जुर्माना होगा

गन्नौर २३ मार्च (एस)। गत दिवस उपमंडल के आहुलाना गांव में भारतीय किसान यूनियन के कैलाना हल्के के प्रधान महासिंह की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। इसमें गांव के पूर्व सरपच महेंद्रसिंह भी उपस्थित थे।

बैठक में फैसला लिया गया कि अगर गांव में कोई बारात के आगे नाचेगा तो उसे ५०० रुपए जुर्माना किया जाएगा। इसी प्रकार यदि गांव में कोई व्यक्ति शराब पीकर गलियों में घूमेगा तो उसे दो सौ रु० तथा अवैध शराब बेचने वाले पर ११०० जुर्माना किया जाएगा।

बैठक में एक उपसमिति का भी गठन किया गया, जिसमें मास्टर रामचन्द्र प्रधान, नफेसिंह उपप्रधान तथा जागे राम सचिव बनाए गए।

ग्राम नाहरी (सोनीपत) में कुरीति निवारण सम्मेलन संपन्न

दिनांक ३—३—१९९० को ग्राम नाहरी (सोनीपत) में दिल्ली प्रान्तीय आर्यसभा ने ग्रामीण क्षेत्र में वैदिक प्रचार तथा कुरीति निवारण सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन की समुचित व्यवस्था आर्यसमाज नाहरी ने ग्राम पंचायत तथा कन्या उच्च विद्यालय के सहयोग से बड़े ठीक ढंग से की। इस सम्मेलन के होने से आर्यसमाज की जड़ें और भी ज्यादा गहरी हो गई हैं।

प्रात: १०-३० बजे प्रांतीय आर्य महिलाएं अपने-अपने इलाके से वाहनों द्वारा अपने निर्धारित समय पर सम्मेलन स्थल पर पहुंच गईं। यहां उनका स्वागत आर्यसमाज के प्रधान एवम् मन्त्री द्वारा बड़े हर्ष के साथ किया गया। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए जहां दिल्ली के हर इलाके से आर्य बहनें अपने-अपने बैनरों के साथ काफी संख्या में पधारी थीं वहां कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर का स्टाफ एवम् छात्राएं अपने विशेष परिधान में सैकड़ों की संख्या में आई थीं। इन के अनुशासन की शोभा देखते ही बनती थी।

प्रोग्राम के अनुसार सभा स्थल से समस्त आर्य बहनें, स्कूल का स्टाफ एवम् स्कूल की छात्राएं तथा ग्राम आर्यसमाज के पदाधिकारी एवम् आसपास के ग्रामीण सारे गांव की गलियों में वैदिक धर्म की जय—आर्यसमाज अमर रहे आदि नारे बोलते हुए तथा ईश्वर भक्ति व क्रांतिकारी गीत गाते हुए शोभायात्रा के लिए चल पड़े। गुरुकुल की छात्राओं ने इस शोभायात्रा में जो गीत भजन नारे आदि लगाए उनसे सारा आकाश गुंजायमान होता जा रहा था। सारे गांव की महिलाएं इससे प्रसन्न हुई।

इस शोभायात्रा की अगुवाई श्रीमती शकुन्तला आर्या, शकुन्तला दीक्षित, कृष्णा चड्ढा आदि आर्य महिलाओं के साथ ग्राम कतलूपुर के श्री चन्दन सिंह तथा आर्यसमाज के प्रधान व मन्त्री श्री उमराव सिंह व रामस्वरूप आर्य कर रहे थे। आर्य महिलाओं की प्रेरणा से ग्रामीण महिलाएं भी इस शोभायात्रा में शामिल होकर सभास्थल की ओर निकल पड़ी।

दोपहर कुछ विश्राम के बाद १-३० बजे कुरीति निवारण सम्मेलन अग्निहोत्र यज्ञ से शुरु हुआ, यज्ञ के पश्चात् ओ३म् ध्वज लहरा कर उसका गीत गाया गया। इसके बाद श्रीमती शकुन्तला आर्या ने स्कूल के प्रांगण में वट वृक्षारोपण किया। सभास्थल पर आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने दिल्ली से पधारी समस्त आर्य बहनों का स्वागत किया। इस स्वागत से प्रसन्न होकर आर्य बहनों ने भी आर्यसमाज नाहरी के समस्त पदाधिकारियों का फूलों की माला से स्वागत किया तथा वैदिक साहित्य सप्रेम भेंट किया।

श्रीमती सुशीला जी आनन्द की अध्यक्षता में मंच का संचालन श्रीमती शकुन्तला शर्मा जी ने ग्रामीण छात्राओं एवम् महिलाओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम का तथा श्रीमती शकुन्तला दीक्षित जी ने कुरीति निवारण सम्मेलन का बड़े सुन्दर ढंग से किया। श्रीमती निर्मल शर्मा जी द्वारा तैयार किया गया दहेज विरोधी नाटक तथा गीत सभी ने खूब पसन्द किए तथा उनको वैदिक साहित्य इनाम में दिया गया। इस सांस्कृतिक प्रोग्राम में जहां वैदिक धर्म के गीत गाए गए वहां आर्यसमाज का समाज उत्थान में योग पर भाषण भी कु० रेखा द्वारा दिया गया। श्रीमती किताबकौर ने वैदिक धर्म का लोक गीत गाया तथा श्रीमती सन्तोष शर्मा ने ग्रामीण महिलाओं की समस्याओं की ओर आर्य बहनों का ध्यान आकर्षित किया।

गुरुकुल राजेन्द्र नगर की ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेदमन्त्र-व्याख्यान, भजन आदि महिलाओं ने बहुत ही पसन्द किए। जहां इस शुभ अवसर पर आर्य बहनों ने ग्रामीण छात्राओं एवम् गुरुकुल की छात्राओं को नकद पुरस्कार प्रदान किए वहां श्री श्यामसुन्दर आर्य जी ने दिल्ली से पधारकर श्रीमती नेमवती धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से छात्राओं व ग्रामीण महिलाओं को काफी पुरस्कार नकद तथा साहित्य रूप में बांटे।

कुरीति निवारण सम्मेलन में आर्य बहनों सर्वश्रीमती सरला मेहता, प्रेमशील, प्रकाश आर्या, शकुन्तला दीक्षित, कृष्णा चड्ढा आदि ने अपने-अपने व्याख्यान अन्धविश्वास मिटाने, कुरीति निवारण तथा वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के बड़े सुन्दर तथा सरल भाषा में रखे। ग्रामीण लोगों व महिलाओं ने इन सब बातों को बड़े ध्यान से सुना तथा इन उपदेशों को अपने जीवन में धारण करने का निश्चय किया तथा भविष्य में इसी प्रकार के प्रोग्राम होते रहने चाहिए यह अपनी इच्छायें व्यक्त की।

इस सम्मेलन को सफल बनाने में जहां आर्य बहनों का पूरा-पूरा सहयोग रहा वहां ग्राम के आर्यसमाज में प्रमुख सर्वश्री उमरावसिंह प्रधान, रामस्वरूप आर्य मन्त्री, मौजीराम आर्य पुरोहित, रघुवीरसिंह, जगदीशचन्द्र शर्मा, चन्दनसिंह, इन्द्रजीतसिंह सरपंच की पूरी-पूरी शक्ति लगी हुई थी।

—होश्यारसिंह 'सत्यप्रिय'
विश्वसेवक नाहरी (सोनीपत)

महाबली स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द जी थे निर्भीक, बली, त्यागी तपधारी।
जिनकी महिमा नित श्रद्धा से, गाते हैं जग के नर-नारी ।।
एक दिवस गंगा के तट पर, बैठे थे काशी में ऋषिवर।
ईश ध्यान में मग्न भक्त को, नहीं किसी का भी तो था डर।
मुसलमान दो गुण्डे आए, ऋषि को देख हंसे वे पामर।
स्वामी जी के दोनों हाथों को, गुण्डों ने पकड़ा करा कर।
निकट धार गंगा की पहुंचे, भरे जोश में तब ब्रह्मचारी।
जिनकी महिमा नित श्रद्धा से, गाते हैं जग के नर नारी ।।१।।
स्वामी जी ने उन दोनों को, बगलों में था सुनो दबाया।
कूद पड़े गंगा में लेकर, योगिक चमत्कार दिखलाया।
कई मिनट तक जल में बैठे, रहे योग की थी यह माया।
पानी में दम घुटा पापियों, का भारी हृदय घबराया।
स्वामी जी ने छोड़ दिए वे, दयानन्द थे जग हितकारी।
जिनकी महिमा नित श्रद्धा से, गाते हैं जग के नर नारी ।।२।।
कांशी में ऋषि दयानन्द जी, घूम रहे थे प्रातः उठकर।
मोटा ताजा, हट्टा-कट्टा, गुण्डा आया एक वहां पर।।
स्वामी जी ने देखा उसको, समझ गए थे सब कुछ ऋषिवर।
कोई साथ नहीं था उनके, रक्षक था उनका परमेश्वर।
शेर समान दहाड़ एकदम, महाबली योद्धा ने मारी।
जिनकी महिमा नित श्रद्धा से, गाते हैं जग के नर नारी ।।३।।
जब ऋषि की हुंकार सुनी तो, भाग गया पापी घबराया।
'मुझे बचाओ, मुझे बचाओ हाय मरा मैं' शठ चिल्लाया।
देख उसे योगी मुस्काए, फिर आगे को कदम बढ़ाया।
शठे शाठ्यम् समाचरेत् का, दयानन्द ने सबक सिखाया।
देशभक्त, बलवान्; शूरमा, मान रही है दुनिया सारी।
जिनकी महिमा नित श्रद्धा से, गाते हैं जग के नर नारी ।।४।।
आर्य वीरो अब तो जागो, अपना जीवन सफल बनाओ।
मानवता के उद्धारक, ऋषि दयानन्द का पथ अपनाओ।
वीर लाजपतराय, भक्तसिंह, बिस्मिल बनके आगे आओ।
अन्धकार में भटके जग को, पावन वेद प्रकाश दिखाओ।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, मानवता के बनो पुजारी।
जिनकी महिमा नित श्रद्धा से, गाते हैं जग के नर नारी ।।५।।

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री
भजनोपदेशक ग्राम पो० बहीन (फरीदाबाद)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न. २३२०७/७३ रजि. न. P/RT मूल्य सवत् १९६० ०२ ५३ ६०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा-मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए   चैत्र ३, २०४७ वि.

वर्ष १७ अंक १९ १४ अप्रैल १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ५० पैसे

परमात्मा का मुख्य नाम ओम् व उसका प्रयोग

लेखक—इन्द्रजित 'देव' यमुनानगर

सब प्राणियों का रक्षक होने से परमात्मा का नाम ओम् है किन्तु इस नाम की कई विशेषतायें हैं:—

१- अ, उ व म, इन तीन अक्षरों का यह समुदाय है—अकार, उकार और मकार।

२-ये तीन अक्षर मानवीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला की चरम सीमा हैं, कण्ठ से ओष्ठ तक में अद्भुत वाणी तन्त्र प्रभु ने प्रदान किया है। कण्ठ से बोला जाने वाला प्रथम अक्षर अ है। अन्तिम विशुद्ध स्वर ओष्ठ से बोला जाने वाला अक्षर उ है तथा सम्पूर्ण वर्णमाला में अन्तिम व्यञ्जन अक्षर म् है। समस्त वर्णमाला इस प्रकार अ, उ व म में निहित है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि कोई भी भाषा हो किन्तु उसके सभी वर्ण अ, उ, म् की सीमाओं के ही अन्तर्गत हैं।

३- ओम् शब्द परमात्मा का निजी नाम है। व्याकरण की दृष्टि से यह शब्द स्वतन्त्र नाम अथवा संज्ञा नहीं है। यह अव्यय है। अव्ययों के न तो कारकों में रूप चलते हैं, न क्रिया की तरह कालों में तथा न ही वचनों में। परमात्मा सबका रक्षक है, यह वाक्य शुद्ध है परन्तु ओम् सबका रक्षक है, यह वाक्य अशुद्ध है क्योंकि ओम् शब्द का रूपान्तर कर्त्ता, कर्म, कारण, सम्प्रदान आदि कारकों में नहीं हो सकता। मेरे परमात्मा ! ऐसा प्रयोग किया जा सकता है जबकि मेरे ओम् ! ऐसा प्रयोग किया नहीं जा सकता। ओम् शब्द के सम्बोधन, कर्त्ता आदि रूप सम्भव नहीं हैं अत: किसी व्यक्ति का नाम ओम् नहीं रखा जा सकता। यदि अज्ञानवशात् किसी बालक का नाम ओम् रखा गया तो हे ओम् ! तुम बहुत अच्छे हो, ऐसा वाक्य नहीं बनाया जा सकेगा। ओम् ने परीक्षा उत्तीर्ण की, ऐसा भी प्रयोग नहीं किया जा सकेगा। परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य का नाम ओम् नहीं हो सकता क्योंकि यह शब्द स्वतन्त्र शब्द नहीं है अपितु तीन अक्षरों का समुदाय है जिससे विभिन्न गुणों, कार्यों व स्वभाव का ज्ञान होता है। खेद है, भ्रमवश कुछ लोगों ने ओम् पाल, ओम् कुमार, ओम् प्रकाश, ओम्सिंह अथवा ओम् दत्त जैसे नाम अपने या अपने पुत्रों के रखे हुए हैं जोकि असंगत हैं।

हरयाणा के मुख्यमन्त्री का नाम ओम्प्रकाश है परन्तु सभी समाचार पत्र व हरयाणा का लोक सम्पर्क विभाग आदि इसे ओम-प्रकाश इस प्रकार लिखते हैं। यदि यह नाम रखा ही गया है तो कम से कम इसे लिखते समय तो व्याकरण की शुद्धता के नियमों का पालन किया ही जाना चाहिए तथा इसे ओं प्रकाश, ओमप्रकाश या ओम्प्रकाश लिखना चाहिए। इसी प्रकार 'जनसत्ता' के चण्डीगढ़ संस्करण के स्थानीय सम्पादक का नाम ओम थानवी प्रकाशित होता है जोकि ओं थानवी या ओम् थानवी ही प्रकाशित किया जा सकता है। जब उच्च पदस्थ विद्वानों, नेताओं व सम्पादकों का यह हाल है तो साधारण जन की क्या दशा होगी, यह आप स्वयं सहज ही सोच सकते हैं।

'ओम्' शब्द का प्रचार उपनिषद्काल में बढ़ा। वाक्यों में प्रयोग की सुविधा से ऋषियों ने पर्यायवाची शब्दों का और प्रयोग किया प्रथम उद्गीथ व द्वितीय प्रणव। सदैव नवीन रहने से परमात्मा का सनातन नाम प्रणव है तथा सामगान में उच्च स्वर से गाने के कारण उसे उद्गीथ भी कहते हैं।

वेदमन्त्र के प्रारम्भ में बोलते समय प्लुत के साथ ओम् बोलना चाहिए यथा ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोर-भिस्रवन्तु न:। ३ का अंक प्लुत उच्चारण का द्योतक है। ओ मात्रा को प्लुत से अधिक नहीं खींचना चाहिए। अनेक उत्साही लोग ओ की ध्वनि तब तक खींचते चले जाते है, जब तक उनका सांस साथ दे। ओ—ो—ो—ो—ऐसा बोलना सर्वथा अशुद्ध व असंगत है।

पता:—स्पृहा, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर।

राम जैसा आचरण

—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री

आचरण राम का जीवन में उतारा न गया।
दुर्व्यसन एक भी अब तक तो विसारा न गया॥

'मम्मी' माता को 'डैडी' कहते हैं पिता को अब तो।
तुमसे माता-पिता कह करके पुकारा न गया॥

राम तो भक्त थे गुरु और पिता-माता के।
ऐसा आदर्श जीवन तुमसे यह धारा न गया॥

प्रेम कैसा देखो राम का निज भाइयों से।
त्याग-तप उनका जैसा तुमसे विचारा न गया।

राम ने कितने ही पतितों को लगाया था गले।
तुमसे अब तक भी कोई दीन उभारा न गया॥

फूंकते रावण का प्रतिवर्ष बनाकर पुतला।
असली रावण तो तुमसे आज तक मारा न गया॥

होगी जय राम की बतला तू 'छाजूराम' कैसे ?।
तुमसे जीवन अपना अब तक भी सुधारा न गया॥

महाभारत - अधर्म पर धर्म की विजय

महावीर 'नीर' विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

[गतांक से आगे]

(कृष्ण की युक्ति काम कर गयी)। तब लोगों ने द्रोण के इस कार्य को क्रूर, निकृष्ट तथा अधार्मिक बताया।

द्रोणपर्व १९०।३६, ३९ देखें।

अधर्मतः कृतं युद्धं समयो निधनस्य ते।
नातः क्रूरतरं कर्म पुनः कर्तुमिहार्हसि॥

ब्रह्मास्त्रेण त्वया दग्धा अनस्त्रज्ञा नरा भुवि।
यदेतदीदृशं विप्र कृतं कर्म न साधु तत्॥ इस प्रकार यहां भी द्रोणाचार्य ही अधर्ममय कृत्य वाले सिद्ध हुए।

अब हम कर्ण के प्रसंग पर आते हैं। लेखक ने लिखा है कि कर्ण के उत्साह को भंग करने के लिए अनेक उपाय किए गए। कुन्ती के लिए कहा कि वह षडयन्त्र के तहत कर्ण के पास गयी थी, किन्तु वह विदुर जी के कहने और युद्ध के भावी भयंकर परिणाम को दृष्टि में रखकर कर्ण के पास गई थी। कर्ण के बल पर ही दुर्योधन भावी युद्ध में विजय देख रहा था। इसलिए, कर्ण यदि मान जाए तो शायद शांति हो जाए। वहां भी कुन्ती ने कर्ण से केवल यही कहा कि तू मेरा पुत्र है। पाण्डवों का भाई है, इसलिये उन में मिल जा। तब कर्ण ने ही कहा—मैं कौरवों के लिए ही युद्ध में लडूंगा, किन्तु अपनी प्रतिज्ञा अनुसार अर्जुन से ही युद्ध करूगा, यदि हम में से कोई भी मरता है तो तेरे फिर भी पांच पुत्र ही रहेंगे। उद्यो० पर्व० १४६।१८, १९, २१। महाभारत कहता है कर्ण बड़ा दानी था। ब्राह्मणवेशधारी इन्द्र उसके दान की परीक्षा लेने आए। यहा कवच-कुण्डल (क्षत्रिय की पहचान) का दान करने के बदले 'शक्ति' का दान लेना क्षत्रिय के लिए शास्त्र-विरुद्ध है। दान के बदले दान कौनसा धर्म-काय है? ऐसे प्रतिबन्धित दान लेने देने में कौनसा पुण्य है? धर्म है?

रही बात कि कृष्ण ने अर्जुन की रक्षा की तो इसमें अधर्म या छल, कपट कैसे हो गया। एक अच्छे सारथि और सखा का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने रथ-सचालन की चतुराई से, अपने ज्ञान योग की युक्ति से अपने मित्र व अपने रथारूढ़ योद्धा को विपक्षी शत्रु के वार से बचाए, उसकी रक्षा करे। जहा तक लेखक ने अर्जुन पर कर्ण के हावी होने का जिक्र किया वह कर्ण व अर्जुन युद्ध की यह घटना भी ध्यान चाहती है 'अर्जुन द्वारा घायल होने पर कर्ण मूर्छित हो रथ पर गिर गया, किन्तु अर्जुन वीर पुरुष था, उसने मूर्छित अवस्था में कर्ण का वध करना उचित नही समझा। कर्ण०पर्व० ९०।७०

इसी प्रकार अर्जुन व कर्ण युद्ध में भी 'युद्ध-नियम' भंग करने की पहल कर्ण ने ही की थी। जब उसने 'नागास्त्र' छोड़ा तो कृष्ण ने अपने रथ को चतुराई से नमन कर दिया। जब वे धरती में लचके लचके हुए रथ को ऊपर उठा रहे थे, ठीक उसी अवसर, पर कर्ण ने अर्जुन पर बाण वर्षा कर दी। कर्ण०पर्व० ९०।५५,५६। इधर जब कर्ण के रथ का पहिया फस गया तब उसने अर्जुन से रुकने के लिए कहा, अर्जुन रुक गए, किन्तु कृष्ण ने कर्ण से कहा—अब तुम्हें धर्म की बातें याद आ रही हैं। नीच पुरुष अपने कर्मों से विपत्ति मे फंसते है और दैव को बुरा-भला कहते है। तब कर्ण लज्जा और क्रोध से तमतमा उठा और उसने एक भयकर बाण अर्जुन की ओर चलाया जो अर्जुन के हाथ पर लगा, उसका गाण्डीव ढीला पड़ गया। कर्ण०पर्व० ९१। २९,३०। कर्ण का ध्यान पहिए की ओर गया, अर्जुन को चेतना सी आई तो उसने एक भयकर बाण के द्वारा कर्ण के रथ का ध्वज काट कर उसको सावधान किया (९१।३७) कि यह समय असावधानी या प्रमाद का नही युद्ध का है तदनन्तर कृष्ण की प्रेरणा और अपने पूर्व वैर-भाव की स्मृति रखकर एक अञ्जलिक नामक बाण से उसकी गर्दन काट डाली। इस प्रकार यहा कर्ण अपनी असावधानी, लापरवाही व प्रमाद से मारा गया। उसे जहां दानी और वीर कहा वहां भीष्म द्रोण उसे अहंकारी, घृणी व प्रमादी कहते हैं। उद्यो०१६८।४,६। और प्रमाद मनुष्य के वध का महान् कारण बन जाता है। यह बात भी यहां ध्यान देने योग्य है कि कर्ण युद्ध से विरत नहीं हुआ था, उसका युद्ध और रथ दोनों में ही ध्यान था। इसलिए धर्म, अधर्म की आप जैसी व्याख्या करे वह आपको प्रत्येक घटना के पूर्वापर का सम्बन्ध लगाकर करनी होगी।

भीष्म के मारने में भी छल की बात कही गई कि शिखण्डी को आगे रखकर अर्जुन ने भीष्म को गिराया, किन्तु यह मिथ्यावाद है। इसमें इतना ही सत्य है कि भीष्म और अर्जुन का कई बार आमना-सामना हुआ। अर्जुन ने अपने तीखे बाणों से अनेक बार भीष्म के धनुष को काटा भी और कुछ बाण भीष्म को भी लगे। तब उन्होंने कहा कि ये तीखे-तीखे बाण अर्जुन के हैं, शिखण्डी के नहीं यथा—'अर्जुनस्य इमे बाणा नेमे बाणाः शिखण्डिनः।' सत्य तो यह है शिखण्डी दुर्धर्ष वीर था, दिव्यास्त्रवेत्ता था, उसकी शिक्षा-दीक्षा द्रोण के यहां हुई थी, भीष्म ने उसे पाण्डव सेना का प्रधान सेनापति बनाने का प्रस्ताव रखा था यथा—'शिखण्डिनमृते वीरं स मे सेनापतिर्मतः। उद्यो. १५१।३२ वह एक अक्षौहिणी सेना का सेनापति भी था। उसका अश्वत्थामा आदि से युद्ध भी हुआ। अर्जुन शिखण्डी की सुरक्षा करते थे जैसे कि द्रोण अश्वत्थामा, दुःशासन आदि भीष्म की। अर्जुन स्पष्ट कहते हैं कि (भीष्म पर्व० १५१।१०५) 'मैं दूसरे सब महारथियों को रोक दूंगा शिखण्डी ही भीष्म का वध करे। इसलिए जब भीष्म दो कारणों को लेकर—पाण्डव के पुत्र होने से पांडव अवध्य तथा शिखण्डी का स्त्री रूप स्मरण कर युद्ध से विरत होते है तभी शिखंडी बाण वर्षा कर उन्हें धराशायी कर देता है। ११९।४ देखिए। भीष्म दस दिन तक पांडवसेना का इतना भयंकर संहार करनेके पश्चात् पांडवों पर एका-एक दयालु हो उठे, यह कैसी विडम्बना थी? संजय, द्रोण, दुर्योधन, कर्ण सभी स्थान-स्थान पर कहते है कि—शिखण्डी ने ही भीष्म का वध किया। संजय कहते हैं।

पुनः पुनर्न मृष्यामि हतं देवव्रतं रणे।
न हतो जामदग्न्येन दिव्यैरस्त्रैरयं पुरा॥ १२०।६
स हतो द्रौपदेयेन पाञ्चाल्येन शिखण्डिना॥ ७

इसी प्रकार जयद्रथ वध प्रसंग में भी कृष्ण को बदनाम किया गया और उन्हें मायावी, छली आदि बताया गया, किन्तु वहां स्पष्ट है कि—'सायाह्ने सैंधवं हत्वा राज्ञा पार्थः समेत्य च। द्रो. १५४।८ सायंकाल के समय जयद्रथ को मारा। सायंकाल के पश्चात् कहीं नहीं लिखा। 'मन्दरश्मि सहस्रांशु' सूर्य की किरणों के मन्द पड़ने पर अस्त होने पर नही और दिन को अन्धकार से व्याप्त कर देना (दिव्यास्त्र वेत्ताओं) के लिए क्या असम्भव था। आज भी युद्ध-क्षेत्र में बम-विस्फोट कर इस प्रकार का नकली (मायावी) वातावरण बना देते है कि दूर तक के क्षेत्र में अन्धकार व्याप्त हो जाता है। यह तो युद्ध-कला है। इस में छल कहा से आ गया। अर्जुन ने वहां बड़ा भयंकर युद्ध किया था और ऐन्द्रास्त्र आदि का प्रयोग कर सारे वातावरण को विक्षुब्ध कर दिया था। इसी लिए जयद्रथ वध के पश्चात् श्री कृष्ण युधिष्ठिर से कहते है—'आपके धर्म और उग्र तप तथा सदाचार के प्रभाव से जयद्रथ मार डाला गया। द्रोण पर्व० १४८।४२,४३।

रही रात्रि-कालीन युद्ध की बात, रात का युद्ध भी कौरवों ने ही प्रारम्भ किया, पांडवों ने नहीं। दुर्योधन ने अपनी बहिन (दुःशला)के पति जयद्रथ को मृत्यु से दुःखी और क्रोधित होकर द्रोण को उपालम्भ दिया १५०।१।१५२।१। (क्रमशः)

जिला सोनीपत वेदप्रचार मंडल का पुनर्गठन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देश पर जिला सोनीपत के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं की बैठक १ अप्रैल को दोपहर बाद सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर सोनीपत नगर में सम्पन्न हुई। सभा प्रधान जी पानीपत जिला आर्यसमाज की बैठक से सोनीपत शहर पहुंचे थे। इस से पूर्व सभा के भजनोपदेशक पं० मुरारीलाल बेचैन ने अपने मनोहर भजनों द्वारा वेदप्रचार किया।

सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह ने इस अवसर पर उपस्थित आर्य कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सभा वेदप्रचार को और अधिक प्रभावशाली करने के लिए प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डल का गठन करके सभी कर्मठ तथा लग्नशील कार्यकर्त्ताओं का संगठन बनाकर कार्य करना चाहती है। आर्यसमाज कोई पन्थ अथवा सम्प्रदाय नही है। अपितु एक आन्दोलन है जो कि अपने जन्मकाल से ही सामाजिक बुराइयों को दूर करने हेतु संघर्ष कर रहा है। आज हमारा राष्ट्र संकट से गुजर रहा है। विदेशी शक्तियां जम्मू-काशमीर तथा पंजाब आदि में उग्रवादियों द्वारा हथियार तथा धन भेजकर हमारे राष्ट्र को तोडना चाहती है। जम्मू तथा कशमीर से भारी संख्या में हमारे भाई हिन्दू शरणार्थी बनकर हरयाणा तथा दिल्ली प्रतिदिन आ रहे हैं। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से अपील करते हुए सभाप्रधान जी ने कहा कि उनकी यथासम्भव सहायता करके अपनी पुरानी सेवा भावना को जीवित रखें और आर्यसमाज मन्दिरों तथा आर्य संस्थाओं मे उन्हे शरण देवें। आर्यसमाज जनजागरण का कार्य कर रहा है।

सभा द्वारा चलाए जा रहे शराबबन्दी अभियान का उल्लेख करते हुए प्रो. शेरसिंह ने बताया कि आज शराबबन्दी के महत्व को अन्य राष्ट्र भी समझने लगे हैं। राष्ट्रसंघ की एक बैठक मे इस लानत को समाप्त करने हेतु ४ दिन का एक सम्मेलन हुआ है। कुछ व्यापारी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मादक द्रव्यों की तस्करी कर रहे है। वे अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए मानव को नशीले द्रव्य पिलाकर विनाश कर रहे हैं। रूस तथा चीन आदि देश भी इस समस्या पर चिन्तित है। वहा शराब पीने पर पाबन्दी लगाने के पग उठाए जा रहे हैं। परन्तु हमारे राष्ट्र में विशेष कर हरयाणा प्रदेश में शराब की बिक्री प्रतिवर्ष बढ़ाई जा रही है। केवल आर्यसमाज ही इस भयंकर रोग के निदान हेतु यत्नशील है। अतः आर्यसमाज को इस अभियान को तीव्र करने के लिए प्रत्येक ग्राम मे आर्यसमाज का प्रचार करके नवयुवकों को इस से दूर करने के लिए सचेत करना होगा। यदि नवयुवकों को इस बुराई से नहीं बचाया गया तो राष्ट्र की शक्ति कमजोर हो जावेगी। वेदप्रचार द्वारा ही इस कार्य में सफलता मिल सकती है। आपने सेवा निवृत आर्य अध्यापकों से निवेदन करते हुए कहा कि वेदप्रचार तथा समाज सुधार के कार्यों में भाग लेने के लिए अपने नाम सभा को भेजकर योगदान करें। ग्रामों मे वैदिक रीति से विवाह आदि संस्कार करवावें जिन ग्रामों में अभी तक आर्यसमाज की स्थापना नही हो सकी है, वहां वेदप्रचार करवा कर आर्यसमाज की स्थापना करें। जिला सोनीपत में पूर्व की भांति वेदप्रचार मण्डल को सहयोग देवें। जिन ग्रामों में प्रचार की मांग होगी वहा सभा की ओर से भजन मण्डली तथा उपदेशक भेजे जावेंगे।

श्री अग्रसेन शास्त्री जो कि सेवा निवृत आर्य अध्यापक हैं आर्य विद्या सभा हरयाणा के सक्रिय सदस्य है ने सभा प्रधान जी को वेद-प्रचार कार्य में सहयोग देने का वचन दिया। उन्होंने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज छात्र परीक्षाओं में नकल कर रहे है। उनकी शिक्षा का स्तर गिर रहा है। शराबी अध्यापक परीक्षा की तैयारी करवाने के स्थान पर नकल कराने में छात्रो को सहयोग देकर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो रहे है।

श्री रतनदेव आर्य कुण्डली ने सुझाव दिया कि सभी सेवा निवृत आर्य अध्यापकों की सूची तैयार की जावे। वे वेदप्रचार आसानी से कर सकते हैं। श्री पंजूराम आर्य सोनीपत ने सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को वेदप्रचार कराने के लिये पूरी शक्ति लगाने का अनुरोध किया। नगर आर्यसमाज सोनीपत के नवयुवक मन्त्री श्री रामचन्द्र आर्य ने सभा प्रधान जी तथा अन्य आर्य कार्यकर्त्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि सभा ने वेदप्रचार मण्डल को पुनर्गठित करने का सराहनीय पग उठाया है। वेदप्रचार मण्डल सोनीपत की ओर से पूर्व भी ग्रामों मे आर्यसमाज की स्थापना करके वेदप्रचार करवाया गया था। नवयुवकों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के लिए शिक्षण शिविर आदि लगाए गए थे। सोनीपत के आर्य-समाज कार्यकर्ता सभा को पूर्ण सहयोग देंगे। आर्यसमाज भटगांव के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री महेंद्रसिंह आर्य ने सुझाव दिया कि प्रत्येक आर्य-समाज की ओर से प्रतिदिन प्रातः तथा सायं को लाउड स्पीकर से संध्या हवन तथा वेदप्रवचन का कार्यक्रम बनाना चाहिए। प्रचारार्थ वैदिक कैस्टों का प्रयोग किया जावे। मैं इस शुभ कार्य में सहयोग दूंगा। श्री उमरावसिंह आर्य ग्राम नाहरी ने कार्यकर्त्ताओं को प्रचार कार्य में अधिक से अधिक समय देने की अपील की। स्कूलों मे धर्म शिक्षा दी जावे और छात्रों को हानि लाभ के कार्यों की जानकारी से अवगत कराया जावे। श्री सत्यवीर शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज काठ मण्डी ने प्रत्येक आर्यसमाज में आर्यवीर दल की शाखा लगाने का अनुरोध किया और वेदप्रचार की ओर से शिक्षण शिविर लगाए जावें, ब्रह्मचारी ओमदत्त आर्य ग्राम घसोली ने बताया कि उनका परिवार कट्टर पौराणिक है, परन्तु मुझे सत्यार्थप्रकाश मिल गया और उसे पढ़कर मै कट्टर आर्य बन गया। अपने ग्राम तथा अन्य ग्रामों मे मैं आर्यसमाज का प्रचार कार्य करना चाहता हू वैदिक ट्रैक्ट बांटकर प्रचार करने हेतु मुझे सहयोग दिया जावे।

आर्य वीरदल सोनीपत के मण्डलपति श्री हरिश्चन्द्र स्नेही ने सर्वहितकारी पत्र की सराहना करते हुए कहा कि इसमे जो लेख तथा समाचार, आर्यसमाज की गतिविधियां छपती हैं उन्हे पढकर तथा अन्यों को पढकर आर्यसमाज के प्रचार मे सहयोग मिलता है। बच्चो पर वैदिक संस्कार बनाने के लिए उन्हें अपने साथ आर्यसमाज के प्रचार तथा सत्संग में ले जाना होगा अध्यापको को स्कूली पढाई के साथ-साथ धर्म शिक्षा भी देनी चाहिए। आज घर-घर में माता का प्रचार बढ़ रहा है परन्तु पिताओं का कोई नाम नही लेता। अतः हमें स्वयं आर्य बनकर पाखण्ड दूर करने चाहिये। लग्नशील आर्य कार्य-कर्त्ता श्री होशियारसिंह सत्यप्रिय नाहरी ने सुझाव दिया कि वेद-प्रचार मण्डल के अन्तर्गत हम मिलकर रचनात्मक कार्य करें। शहरी तथा सम्पन्न आर्यसमाजों को कुछ ग्रामो को गोद लेकर वहा आर्य-समाज स्थापित करें। श्री ईश्वर दयाल आर्य ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को बताया कि जिला सोनीपत वेदप्रचार मण्डल कई वर्षों से कार्य कर रहा है। नियमानुसार इसका आय-व्यय का हिसाब रखा जाता है। पंजाब नेशनल बैंक में इसका खाता है किसी कारणवश चौ. सूरजमल आर्य आजकी बैठक में नही आ सके परन्तु उनका वेदप्रचार मण्डल को यथापूर्व पूरा सहयोग रहेगा। श्री वेदप्रकाश अग्रवाल एडवोकेट तथा श्री आशानन्द ने वेदप्रचार मण्डल का पुनर्गठन करने का सुझाव दिया जिससे वेदप्रचार कार्य और गतिशील बन सके।

विचार विमर्श के पश्चात् पं देवप्रिय आर्य संरक्षक श्री हरिश्चन्द्र स्नेही संयोजक तथा श्री होशियार सिंह आर्य नाहरी को मण्डल का सहसंयोजक चुना गया। श्री लाजूराम आर्य अध्यापक ने पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया। जिला के आर्यसमाजो के १-१ अधिकारी वेदप्रचार मण्डल के सदस्य होंगे। शीघ्र ही मण्डल की बैठक बुलाकर कार्यक्रम आरम्भ किया जावेगा। बैठक के अन्त मे सभी उपस्थित आर्य नर-नारियों को फलाहार दिया गया।

—केदारसिंह आर्य

टोकणी

—महावीर सिंह फोगाट

जेठ की तपती हुई दुपहरी। रोहतक से लगभग बीस कि०मी० दूर सिसानागढी गांव का एक परिवार लड़की के विवाह की तैयारी में सलग्न है। लडकी का पिता चन्दन घरवाली की हठ पर ५ हजार रु० उधार और १० हजार रु० ब्याज पर लेकर दहेज का सामान लेने शहर आ जाता है। कपडे, बर्तन, सन्दूक आदि लेकर उसने सब चीजें सन्दूक में रख दी। कुर्सी-मेज आदि तथा एक रेहड़ी में रख दिए। एक पीतल की बाल्टी तथा एक टोकणी किसी भी प्रकार जंचने में नहीं आ रही थी। वह उन्हें एक बोरी मे डाल उन्हें लेकर बस में घुस गया। टोकणी वाली बोरी लोगों के पैरों में पड़ी थी। बार-बार मना करने पर भी एक सज्जन उसी पर खड़ा होने के लिए मजबूर था। टोकणी और बाल्टी के बैठने के डर से चन्दन काप रहा था। चन्दन का गांव आ गया। चन्दन बोरी लेकर उतरना चाहता था लेकिन लोगों ने कहा—पहले खुद उतरले बोरी हम दे देगे। चन्दन नीचे उतर गया और परिचालक ने सीटी दे दी। एक आदमी ने बोरी उठाकर चन्दन की ओर फेंकी। बोरी चन्दन के हाथों मे न आकर नीचे गिर गई और टोकणी काफी बैठ गई। चन्दन सीधा लोहार के पास गया और बैठी टोकणी को उटवा लाया। लोहार ने कहा—चन्दन टोकणी लडकी को देने की नहीं रही, दूसरी टोकणी ले आइयो। चन्दन डरता-डरता घर गया। जिसने भी टोकणी देखी उसे दहेज के लिए ठीक नहीं माना। लडकी की मां ने काफी कलह किया लेकिन चन्दन को पैसों का इन्तजाम किसी ओर से भी होता नजर नही आता था वह माग-मांग कर थक चुका था। फलतः टोकणी ज्यों की त्यों ही दहेज मे दे दी गई।

जो भय था। वही हुआ। ससुराल में दबी जुबान में सभी औरतों ने टोकणी पर टीका टिप्पणी की लेकिन नववधु सुलोचना के सामने इसकी कोई चर्चा नही आई। दिन बीतते गए। एक दिन सुलोचना की सहेली के मुंह से अनजाने में ही निकल गया कि—अरी सुलोचना टोकणी ले आ, पनघट पर भीड बहुत है, मटका टूट जाएगा, तुरन्त सुलोचना की सास ने व्यग बाण का अचूक वार किया और बोली—हा, टोकणी ! कहा से लाए टोकणी, इसके मा-बाप है टोकणी देने वाले। लेने देने का कुछ शहूर ही नही। असल में तो कुछ दिया ही नही जो दिया भी एकदम सस्ता और खस्ता। टोकणी तो फूटी पडी है। कैसे ले जाए टोकणी।

सुलोचना उस दिन के बाद चिन्तित रहने लगी। जब उसका भाई उसे लेने आया तो सुलोचना की सास ने कहा—बेटा जब यह टोकणी काम की नही थी तो अपनी बहन को दी थी क्यो। टोकणी ले जाना और नई टोकणी लेकर अपनी बहन को दे देना। घर पर सुलोचना की मां ने यह कहकर सुलोचना को समझा दिया कि बेटी मेरी ओर से अपनी सास से माफी माग लेना ६ महीने और रुक जाएगी। जब गन्ना बिकेगा तो जरूर दूसरी टोकणी लेकर दे दूंगी। लेकिन सुलोचना ने ससुराल आने पर जब यह सब बताया तो उसकी सास आग बगूला होकर बोली—बेटी को देने के लिए छाती चाहिए। जन्म तो दे दिया। नगे घरों की यही रहाना बनाती है। सुलोचना से नही रहा गया। वह उठी और टोकणी उठाकर बोली—ठीक है भाई रोई। तेरे लिए अभी नई टोकणी लाकर देती हू। टोकणी लेकर वह बिजली की गति से दौड़ी और टोकणी सहित पास के कुए में छलांग लगा दी। जेठ की तपती दोपहरी मे ही बस से गिर कर टोकणी बैठ गई थी और आज ठीक एक वर्ष बाद वही टोकणी तपती जेठ की दुपहरी में सुलोचना को लेकर बैठ गई।

तपोवन का महोत्सव २५ अप्रैल से २९ अप्रैल तक होगा

देहरादून, २१ मार्च। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का ४१ वां वार्षिक महोत्सव बुधवार दिनांक २५ अप्रैल से रविवार दिनांक २९ अप्रैल तक चलेगा।

इस अवसर पर होने वाले वृहद् यज्ञ के ब्रह्मा मथुरा के आचार्य प्रेमभिक्षु जी होंगे। योग-साधना-शिविर के निर्देशक योगधाम ज्वालापुर के संचालक श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती और मुख्य प्रवचनकर्ता नई दिल्ली के आचार्य शिवाकान्त उपाध्याय रहेंगे। इनके अतिरिक्त हरिद्वार से गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य श्री रामप्रसाद वेदालंकार और उदयपुर (राजस्थान) से संगीताचार्य श्री पन्नालाल 'पीयूस' के पधारने की भी आशा की जाती है।

उल्लेखनीय है कि तपोवन का यह वार्षिक महोत्सव एक आध्यात्मिक मेले का रूप ले चुका है और प्रतिवर्ष सैंकड़ों श्रद्धालु स्त्री-पुरुष दूरस्थ स्थानों से इस अवसर पर आया करते हैं।

—देवदत्त बाली मन्त्री,
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नशीले पदार्थों की तस्करी मे १० वर्ष का कारावास

जींद, १२ अप्रैल (निस)। जींद के अतिरिक्त सत्र न्यायधीश बी०एस० शर्मा ने जिला के सिवाहा गांव के दो युवकों को नारकोटिक्स (मादक पदार्थ) अधिनियम की धारा २० के तहत १०-१० वर्ष कठोर कारावास व एक-एक लाख रुपए जुर्माना की सजा सुनाई है।

अपने उपरोक्त निर्णय में माननीय न्यायधीश ने सिवाहा गांव के जयसिंह व कृष्ण को जुर्माना अदा न करने की दिशा में एक वर्ष और कठोर कारावास की सजा सुनाई है। उन्होंने इस मामले में बरामद नशीले पदार्थों के साथ-साथ तस्करी के काम में प्रयोग की गई मोटर साईकल को भी जब्त करने के आदेश दिए हैं।

नवभारत टाइम्स

अबोहर-फाजिल्का क्षेत्र हरियाणा को सौंपने की मांग

अबोहर १० अप्रैल (जनसत्ता)। 'अबोहर-फाजिल्का तहसील हरयाणा सम्मेलन समिति' की एक आयात बैठक पिछले दिनों यहां हरयाणा के पूर्व शिक्षा-मन्त्री जगदीश नेहरा की अध्यक्षता में हुई। बैठक मे अबोहर-फाजिल्का क्षेत्र के पंचों-सरपंचों व दूसरे प्रमुख नागरिको ने भाग लिया।

बैठक में अबोहर गोलीकांड के मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद एक प्रस्ताव पास किया गया जिसमें केन्द्र सरकार से मांग की गई कि वह जनवरी, १९७० के 'इन्दिरा गांधी अवार्ड' पर फौरन अमल करते हुए चण्डीगढ व अबोहर-फाजिल्का क्रम से पजाब व हरयाणा को सौंप दे। प्रस्ताव में कहा है कि इस मामले मे केन्द्र की टलमटोल वाली नीति के कारण ही अबोहर व फाजिल्का की हिन्दी भाषी जनता की सुरक्षा खतरे में पड़ गई है।

बैठक में यह मांग की गई कि यदि फैसले पर तुरन्त अमल करने में कोई कठिनाई है तो फिलहाल चण्डीगढ की तरह अबोहर-फाजिल्का को भी केन्द्र शासित क्षेत्र का दर्जा दिया जाए। —जनसत्ता

हरयाणा में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता समाप्त की जाएगी

कुरुक्षेत्र, ३ अप्रैल (निस)। हरयाणा के शिक्षा मन्त्री चौ० हुकम सिंह ने ऐलान किया है कि हरयाणा में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता समाप्त की जाएगी और भारतीय व प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से परम्परागत शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को अब मेडिकल तथा इन्जीनियरिंग कालेजों में प्रवेश मिलेगा।

चौ० हुकमसिंह ने यह घोषणा गत सायं विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ७८वें वार्षिक समारोह के समापन अवसर पर की। बाद में पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि अगर मेरा वश चले तो मैं एक दिन में अंग्रेजी को जड़ से मिटा दूं। यह पूछे जाने पर कि अगर आपका वश नहीं चला तो, उन्होंने कहा कि अंग्रेजी भाषा समाप्त होकर रहेगी। हम इसे समाप्त करके ही दम लेंगे।

शिक्षा मन्त्री ने अपने भाषण में कहा अंग्रेजों ने हमारी भाषा और संस्कृति को समाप्त किया। अंग्रेजी से शिक्षित डाक्टर और इन्जीनियर किताबी ज्ञान रखते हैं। आज के इन्जीनियर भवन ऐसे बनाते है कि भवन निर्माण पूरा होने से पहले ही टूटने लगता है। अनेक प्रकार की बीमारियों का इलाज ऐलोपैथी मे नही है जबकि आयुर्वेदिक विज्ञान मे सभी रोगों के इलाज का प्रावधान है।

उन्होंने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि अंग्रेजी भाषा मे विज्ञान नही पढने वालों को मेडिकल और इन्जीनियरिंग कालेजों में प्रवेश नही दिया जाता जबकि संस्कृत भाषा के माध्यम से प्राचीन ग्रन्थो मे छुपे ज्ञान को प्रयोग करके जर्मनी आगे बढ गया। उन्होने बडे जोश में कहा कि अब हिन्दी भाषा पढने वाले भी विज्ञान-तकनीकी कालेजों मे प्रवेश पायगे और अंग्रेजी पढे-लिखे कूप में बैठ जायेंगे।' उन्होंने कहा कि वर्तमान मुख्यमन्त्री और राज्यपाल से भी उनको इस मामले में पूर्ण सहयोग मिलने की सम्भावना है।

शिक्षा मन्त्री ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर कडा प्रहार करते हुए कहा कि दुर्भाग्य की बात है कि अंग्रेज भारत छोडकर चले गए मगर अब भारतीय ही अंग्रेज बन रहे है। देश मे दोहरी शिक्षा नीति को आडे हाथों लेते हुए उन्होंने कहा कि एक ओर एक बच्चे पर पाच हजार रुपया मासिक खर्च होता है, उसे अंग्रेजी वाले कान्वेन्ट स्कूल मे पढाया जाता है ताकि वह डी. सी, एस. पी, कलैक्टर बन सके। दूसरी ओर साधारण बालक के पढ़ने के लिए स्कूल में टाट तक नही है। गुरुकुलों का महत्व घट रहा है। किसी की रुचि इस शिक्षा प्रणाली मे नहीं रही, क्योंकि गुरुकुल मे शिक्षित विद्वान् युवक अंग्रेजी नहीं बोल पाने के कारण डी. सी., एस. पी नही बन सकता। यदि यह कमी दूर हो जाए तो भारतीय समाज से एक वर्ग का वर्चस्व ही समाप्त हो सकता है जिसने भारतीय प्रशासन को काबू किया हुआ है।

शिक्षा मन्त्री ने गुरुकुल को ग्यारह हजार रुपए का अनुदान देने की घोषणा करते हुए आशा व्यक्त की कि कुरुक्षेत्र का गुरुकुल राष्ट्रीय स्तर का शिक्षा-संस्थान बने। अभी इस गुरुकुल मे कर्नाटक आदि राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों के केवल पाच बालक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आशा है कि अगले वर्ष उनकी गिनती बढ जाएगी।

इससे पूर्व गुरुकुल की तीसरी श्रेणी के छात्र रजन ने अंग्रेजी भाषा में 'धर्म' के महत्व पर ओजस्वी शब्दों में प्रकाश डाला। सैकडों दर्शक उस समय हैरतपूर्ण खुशी की अनुभूति करने लगे जब नौ छात्रों ने संस्कृत भाषा में एक कव्वाली सुनाई। 'लोक लोकेशपूता सुवासित्विता, अद्य सृष्टिस्थला होमशाला तथा' वाले बोल श्रोताओं को काफी देर तक पुलकित करते रहे। गुरुकुल के छात्रों ने वीर हकीकत-राय पर एक नाटक भी प्रस्तुत किया। बाद में गुरुकुल के युवकों ने जोखिम भरे खेलकूद का प्रदर्शन किया। सांसद सरदार गुरदयाल सिंह ने विजेता छात्रों को पुरस्कार दिए।

इससे पूर्व गुरुकुल के प्राचार्य देवव्रत ने गुरुकुल के कार्यकलापो का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि १९१२ मे स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित इस गुरुकुल के अनेकों छात्रों ने खेलकूद में राष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाया है। अखाड़ा कुश्ती प्रतियोगिता में रामनिवास (२४ किलो) और अजमेर सिंह (२८ किलो) हरयाणा भर में प्रथम रहे जबकि सतबीर सिंह (२६ किलो) दूसरे और सुरेश कुमार (४८ किलो) व ईश्वर सिंह (७० किलो) तीसरे स्थान पर रहे।

हरियाणा स्कूल योग प्रतियोगिता में सुरेश कुमार छत्रपाल, सत्येन्द्र सिंह और शिवकुमार ने अपने करतबों मे प्रथम पुरस्कार जीता। जूडो मे ईश्वर सिंह ने राष्ट्रीय स्तर पर दो बार स्वर्ण पदक और एक बार कुश्ती मे रजत पदक हासिल किया। गुरुकुल मे कुश्ती, वालीबाल, जिम्नास्टिक और जूडो का प्रान्तीय स्तर का प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया गया है।

—नभाटा से साभार

रामनवमी पर्व सम्पन्न

३-४-९० को आर्यसमाज ऋषिकुंज पक्का बाग जालन्धर 'रामनवमी' का पर्व एवं 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' का ११५वा पर्व बडे उत्साह से मनाया गया। समारोह का आरम्भ वैदिक यज्ञ से प० धर्मदेव जी ने किया जिसमें बडी श्रद्धा से नर-नारियों ने आहुतियां डाली जो सैकडों की संख्या में यहां उपस्थित थे।

समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज के प्रधान चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट जो पंजाब सभा के मन्त्री और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के उपमन्त्री है, ने की। विशेष वक्ता आर्यजगत् के विद्वान प० सत्यदेव विद्यालकार एव विदुषी बहन प्रिंसिपल सन्तोष जी सूरी थे जिन्होने इन पर्वों पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला मनोहर भजन देशभक्ति और विश्व शान्ति के बहन कमला शर्मा एवं बहन सुशीला भगत ने गाये।

अपने अध्यक्षीय भाषण में चौ. ऋषिपाल सिंह एडवोकेट ने बताया कि श्री राम और श्री कृष्ण हमारी वैदिक संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ है। आर्यसमाज इन महापुरुषो के चित्र की नहीं "चरित्र" की पूजा करता है। भारत भूमि पर संसार मे सबसे अधिक महापुरुषों ने जन्म लिया यह हमारे लिए गौरव की बात है। आज विश्व भर में ५००० आर्यसमाजें इन महापुरुषों द्वारा वेदमार्ग पर चलकर बनाई मर्यादाओं का प्रचार व प्रसार कर रही है।

कोषाध्यक्ष श्री आर. पी. मित्तल एडवोकेट ने जलपान से सबका स्वागत किया और श्री लालचन्द मेहरा एडवोकेट मंत्री आर्यसमाज ने सभी आये नर नारियों का धन्यवाद किया।

प्रधान—ऋषिपाल सिंह एडवोकेट
आर्यसमाज ऋषि कुंज (पक्का बाग) जालन्धर शहर

आर्यसमाज बठिण्डा में आर्यसमाज स्थापना दिवस

२५-३-९० को साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् आर्यसमाज बठिण्डा में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमे श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि आर्य-समाज क्या है, इसकी स्थापना क्यों की गई और आर्यसमाज ने अपने ११५ वर्षों में क्या कुछ किया। शान्तिपाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई।

—मन्त्री आर्यसमाज बठिण्डा

वीर शहीदों की गाथा

सुनो अब भजन सुनाऊं मैं ।
देश, धर्म के दीवानों की गाथा गाऊं मैं ।।
स्वामी दयानन्द जी ने, जगत् को जगाया सुनो।
वेदों का प्रकाश सर्व, विश्व को दिखाया सुनो ।।
सत्य का प्रचार किया, धर्म को निभाया सुनो।
ऋषि को शीश झुकाऊं मैं ।
देश, धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊं मैं ।।१।।
महारानी लक्ष्मीबाई ने, अंग्रेजों से की थी जंग।
रानी का रण कौशल देख, दुनिया हो गई थी दंग ।।
दुश्मन की सेना की जिसने, निद्रा को किया था भंग ।।
भूल ना उसको पाऊं मैं ।
देश धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊं मैं ।।२।।
वीर चन्द्रशेखर ने, अंग्रेजों के बिगाड़े होश ।
जीवन भर आजाद रहा, जिसका था निराला जोश।
आता आज याद प्यारा, नेता वह बंगाली बोस ।।
वीर पर बलि बलि जाऊं मैं ।
देश धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊं मैं ।।३।।
मदनलाल धींगड़ा ने, लंदन में कमाल किया।
अंग्रेजों का अफसर मारा, जग हैरत में डाल दिया ।।
फांसी के फंदे को चूमा, देश को निहाल किया ।।
गजब की बात बताऊं मैं।
देश, धर्म के दीवानों की, गाथा गाऊं मैं ।।४।।
कान्हा रावत ने भी खौफ, मौत का ना खाया सुनो।
औरंगजेब दुष्ट की जो, चाल में न आया सुनो ।।
चोटी न कटवाई जिसने गर्दन को कटवाया सुनो ।।।
पढ़ो इतिहास, पढ़ाऊं मैं।
देश, धर्म के दीवानों की गाथा गाऊं मैं ।।५।।
वीरों के बलिदान से ये,पाई है आजादी आज ।
नन्दलाल "निर्भय" को,शहीदों पर है भारी नाज ।।
अय नेताओ जाग जाओ,लाओ मंगलकारी राज ।।।
राम की याद दिलाऊं मैं।
देश,धर्म के दीवानों की,गाथा गाऊं मैं ।।३।।

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री,भजनोपदेशक।
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

अबोहर—फाजिल्का के हिन्दी क्षेत्र को केन्द्रीय संरक्षण

गत दिवस ५-४-९० अबोहर में इस प्रख्यात हिन्दी क्षेत्र की समस्याओं और समाधान पर व्यापक विचार करने के लिए क्षेत्र के सम्भ्रान्त नागरिकों व ग्रामपंचो की एक विशाल सभा श्रीयुत जगदीश नेहरा, पूर्व शिक्षा मन्त्री हरयाणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस में दो दर्जन से अधिक ग्रामपंचों एवं नगर के डाक्टरों, वकीलों तथा धार्मिक संगठनों के अधिकारियों के अतिरिक्त अनेक पूर्वविधायकों ने भाग लिया । इस अवसर पर अबोहर के शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करने के साथ क्षेत्र में बिगड़ती हुई स्थिति पर चिन्ता प्रकट की गई। श्रीमती इन्दिरा गांधी के अवार्ड को निष्फल करने के कुप्रयासों की भी चर्चा हुई। श्री हंसराज पूर्व विधायक ने कहा कि इन्दिरा अवार्ड के रूप में इस क्षेत्र की रजिस्टरी तो हरयाणा के नाम पर कर दी गई थी, लेकिन अपनी दुर्बलता के कारण हरयाणा अब तक कब्जा नही ले सका। यह भी आशा की गई कि अब चौ० देवीलाल और मुख्यमन्त्री चौटाला अपनी सामर्थ्य और क्षमता के आधार पर इस क्षेत्र का हस्तान्तरण शीघ्रातिशीघ्र करवाएंगे। इसके लिए शीघ्र ही एक शिष्टमण्डल दोनों महानुभावों से मिलेगा।

हरयाणा के आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन

अप्रैल मास में अपने वार्षिक चुनाव करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बंधित आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने वार्षिक चुनाव अप्रैल मास में करें। सभा का आर्थिक वर्ष ३१मार्च को समाप्त हो रहा है। आशा है सभा के सर्वहितकारी में प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार अपने आर्य सभासदों से उनकी वार्षिक अथवा मासिक आय (शतांश) के अनुसार सदस्यता शुल्क प्राप्त कर लिया होगा और जिनकी आर्यसमाज के सत्संगों में कम से कम २५% उपस्थिति हो अपनी अन्तरंग सभा की स्वीकृति लेकर सूची तैयार करें और आर्यसमाज के नियम उपनियम के अनुसार १५ दिन के चुनाव की सूचना (नोटिस) आर्य सभासदों को दे देवें और वार्षिक चुनाव करके सभा के पत्र सर्वहितकारी में छापने के लिए भेज देवें।

प्रायः देखा गया है कि कुछ आर्यसमाज, आर्यसमाज के नियम उपनियम की धारा ४ के अनुसार अपने आर्य सभासदों से उनकी आय का शतांश रूप में शुल्क प्राप्त नहीं करते। इस प्रकार सम्पन्न आर्य सभासद अपनी आय कम दिखाकर कम शुल्क देते हैं। इससे जहां स्थानीय आर्यसमाज को आय कम प्राप्त होती है वहां सभा को भी दशांश कम प्राप्त होता है और धनके अभाव में आर्यसमाज के आवश्यक कार्य अधूरे पड़े रहते हैं। आर्यसमाज के चौथे नियम (सत्य ग्रहण करने असत्य को त्यागने के लिए सवदा उद्यत रहना चाहिए) का हम सभी आर्यों को पालन करना चाहिए।

आर्यसमाज के नियम पालन करने में जो आर्यसमाज ढील देते हैं, उनमें प्रायः चुनाव को लेकर झगड़े होते रहते हैं और रचनात्मक कार्यों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

अतः समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे नियम के अनुसार आर्य सभासद बनावें और नियमानुसार अपने चुनाव करें। वर्ष में कम से कम एक बार वार्षिक उत्सव अथवा वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन करके आर्यसमाज के सघटन को सुदृढ़ करें।

—मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सेवानिवृत अध्यापकों की आवश्यकता

ग्रामों में वैदिक संस्कार करवाने तथा आर्यसमाज के प्रचारकार्य में सहयोग करने आदि के लिए सेवा निवृत आर्य अध्यापकों की आवश्यकता है। प्रचार कार्य में उन्हें सभा की ओर से पूरी सुविधा दी जावेगी। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें।

—वेदव्रत शास्त्री मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

भूल सुधार

सर्वहितकारी के पृष्ठ ७ के शोक समाचार में २३ वर्ष की आयु के स्थान पर ८३ वर्ष पढ़ें। गलती के लिए खेद है।

शेरसिंह कटारिया व्यवस्थापक सर्वहितकारी

शोक समाचार

प्रो० ओमकुमार जी आर्य के पूज्य पिता श्री किशनलाल जी आर्य का स्वर्गवास ६ मार्च १९९० को हो गया। भगवान् उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

वन्दन है

शोणित से है लिखा हुआ,
जिनका स्वर्णिम इतिहास ।
'जलियांवाला बाग' हमारा
लिए शहीदों का विश्वास ।

अमर सपूतों के बलिदानों
की जो अमिट कहानी ।
जिसका कण-कण गौरव-अन्वित
जो मानी, अभिमानी ।

स्वतन्त्रता के पुण्य पर्व का,
जो निर्भय निर्माता है ।
भारत मां का अनुपमेय—
निश्चय ही भाग्यविधाता है ।

मातृभूमि हित मर मिटने का—
जो देता पावन संदेश ।
धन्य हुआ प्यारा स्वदेश ।

ऊधम सिंह जैसे सेनानी—
जिसकी लाज बचाते हैं ।
अरि से ले प्रतिशोध सदा—
भूमण्डल को दहलाते हैं ।

वही हमारा 'जलियांवाला'
भारत का अभिमान है ।
महिमामण्डल मे जिसकी गरिमा—
रहती सतत् महान् है ।

अपराजेय शहीदों का है,
छिपा जहां अतुलित गौरव ।
शौर्य-पराक्रम-त्याग भरा है
बलिदानी वीरों का वैभव ।

ब्रिटिश गोलियों से निर्भय हों,
बिना शस्त्र के ही सत्वर ।
सीना तान दिया आगे बढ़,
बन साहस की मूर्ति प्रखर ।

मां के अमर सपूतों को इन—
युग-युग का वन्दन, अभिनन्दन ।
जिनमें मिटता रहा युगों से—
क्रूर-गुलामी का कटु क्रन्दन ।।

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

कविता

(पल्लाझाड़ कथा)

भागवत-पुराणों की तुम्हें जो सुनावे गप्प,
ताके हेतु सैंकड़ों ही नोट बरसाते हो ।
नाच-कूद गन्दे गीत तुम्हें जो सुनावे नित,
ताहि सुनने में तुम तनिक न लजाते हो ।।
विश्वहित सत्य बात वेद की सुनावे उस—
आर्यसमाज को तुम क्यों न अपनाते हो ।
"छाजूराम" धर्महेतु द्रव्य नहीं दान करो,
पल्लाझाड़ कथा सुनि आप चले जाते हो ।।

—छाजूराम शर्मा शास्त्री

शोक समाचार

म० विद्यारत्न आर्य क्रांतिकारी स्वतन्त्रता सेनानी का २३ वर्ष की आयु में उनके पैतृक गांव साहिलाबाद में पेट के आप्रेशन से देहान्त हो गया। भगवान दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

— — —

पं० ब्रह्मदत्त शास्त्री आर्य ग्राम लाढ़ौत जिला रोहतक का गत २१ जनवरी १९९० को ग्राम मुण्डका (दिल्ली) मे स्वर्गवास हो गया। आर्य जी अनेकों भाषाओं के विद्वान् थे। भगवान् दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाग्रस्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति देवे।

—निहालसिंह आर्य
नांगलोई, दिल्ली

वेदप्रचार मण्डल गठन करने की सराहना

आदरणीय प्रो० जी, नमस्ते।

बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि आपकी अध्यक्षता में एक बैठक वेदप्रचार मण्डल के गठन हेतु १-४-९० प्रातः ११ बजे पानीपत मे सम्पन्न हुई। आपकी कार्यकारिणी का सराहनीय निर्णय है कि प्रचार को गति देने के लिए जिले स्तर पर मण्डल बनाए जावें। परन्तु करनाल जिले की १८-३-९० की विशेष बैठक में यह निर्णय लिया जा चुका है कि एक उपदेशक तथा भजन मण्डली रखी जावे ताकि करनाल जिले में वेदप्रचार बढ़ सके। जो समाजें बन्द हो गई हैं उन्हें दोबारा चालू किया जा सके तथा निराश बड़ी-छोटी आर्य समाजों में प्रचार करके जान डाली जा सके।

मान्यवर, आजकल जगराते का काफी जोर है, फिल्मी तर्जों पर गाने गाए जा रहे हैं प्रभु को पाने के आसान तरीके बताकर जनता को बहकाया जा रहा है। इस साईंस के युग में पढ़े लिखे नवयुवकों को केवल भाषण या वादविवाद से अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते। ठोस प्रभावशाली कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है।

महर्षि के देहान्त के समय जैसे आर्यसमाजी थे वैसा बनना होगा अर्थात् जो हम कहते हैं उसके अनुसार अपना जीवन भी आदर्श और त्यागमय हो, पूर्ण श्रद्धा से नित्य प्रतिदिन यज्ञ और संध्या आदि करें। समय तथा दशांश आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में लगावें। आर्यसमाज को घरों में लावें। पद तथा मान मर्यादा की परवाह किए बिना कार्य में जुट जावें।

केवल स्कूल और भवन की ओर ध्यान देने से बात नहीं बनने वाली है माँ रूपी आर्यसमाज की जड़ को सींचना होगा, पत्ते स्वयं हरे-भरे हो जायेंगे।

अन्त में प्रार्थना है कि आप बहुत अनुभवी हैं, इस वेदप्रचार मण्डल को क्रियात्मक रूप देना केवल अन्तरंग के प्रस्ताव के कारण, गठन कर देने से कुछ नहीं बनेगा।

वेदप्रकाश आर्य प्रधान,
आर्य केन्द्रीय सभा करनाल।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न २३२०७।७३

नेन ४८१२ सृष्टि सवत् १,६६,०८,५३,०६०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए.   बैसाख ६, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक २० २१ अप्रैल १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

पांच क्लेशों का त्याग

पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा

●

मनुष्य परमेश्वर की उपासना करके अविद्या आदि क्लेश तथा अधर्माचरण आदि दुष्ट गुणों को निवारण करके, शुद्ध विज्ञान और धर्मादि शुभ गुणों के आचरण से आत्मा की उन्नति करके, जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। वे पांच क्लेश ये हैं—

अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः ।।योग २/३।।

एक 'अविद्या', दूसरा 'अस्मिता', तीसरा 'राग' चौथा 'द्वेष', और पांचवां 'अभिनिवेश'।

अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम् ।।योग २/४।।

उनमें से अस्मितादि चार क्लेशों और मिथ्याभाषणादि दोषों की माता अविद्या है, जोकि मूढ़ जीवों को अन्धकार में फंसा के जन्म मरणादि दुःख सागर में सदा डुबाती है। परन्तु जब विद्वान् और धर्मात्मा उपासकों की सत्यविद्या से अविद्या विच्छिन्न अर्थात् छिन्न-भिन्न होके प्रसुप्ततनु—नष्ट हो जाती है, तब वे जीव मुक्ति को प्राप्त होते हैं। अविद्या के लक्षण ये हैं—

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचि सुखात्मख्यातिरविद्या ।।२/५।।

अनित्य अर्थात् कार्य (जो शरीर आदि स्थूल पदार्थ तथा लोक लोकान्तर) में नित्य बुद्धि तथा जो नित्य अर्थात् ईश्वर, जीव, जगत् का कारण, क्रिया क्रियावान्, गुण गुणी और धर्म धर्मी हैं, इन नित्य पदार्थों का परस्पर सम्बन्ध है, इनमें अनित्यबुद्धि का होना, यह अविद्या का प्रथम भाग है। तथा 'अशुचि' मलमूत्र आदि के समुदाय दुर्गन्ध रूप मल से परिपूर्ण शरीर में पवित्र बुद्धि करना, तथा तलाब बावरी, कुण्ड, कुआ और नदी आदि में तीर्थ और पाप छुड़ाने की बुद्धि करना और उनका चरणामृत पीना, एकादशी आदि मिथ्या व्रतों में भूख-प्यास आदि दुःखों का सहना, स्पर्श इन्द्रिय के भोग में अत्यन्त प्रीति करना इत्यादि अशुद्ध पदार्थों को शुद्ध मानना और सत्यविद्या, सत्यभाषण, धर्म, सत्संग, परमेश्वर की उपासना, जितेन्द्रियता, सर्वोपकार करना, सबसे प्रेमभाव से वर्तना आदि शुद्ध व्यवहार और पदार्थों में अपवित्र बुद्धि करना, यह अविद्या का दूसरा भाग है। तथा दुःख में सुख बुद्धि अर्थात् विषयतृष्णा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक, ईर्ष्या, द्वेष आदि दुःखरूप व्यवहारों में सुख मिलने की आशा करना, जितेन्द्रियता, निष्काम, शम, सन्तोष, विवेक प्रसन्नता, प्रेम, मित्रता आदि सुखरूप व्यवहारों में दुःख बुद्धि का करना, यह अविद्या का तीसरा भाग है। इसी प्रकार अनात्मा में आत्मबुद्धि अर्थात् जड़ में चेतनभाव और चेतन में जड़भावना करना अविद्या का चौथा भाग है। यह चार प्रकार की 'अविद्या' संसार के अज्ञानी जीवों को बन्धन का हेतु होके उनको सदा नचाती रहती है। परन्तु विद्या अर्थात् पूर्वोक्त अनित्य, अशुचि, दुःख और अनात्मा में अनित्य, अपवित्रता, दुःख और अनात्मा बुद्धि का होना तथा नित्य, शुचि, सुख और आत्मा में नित्य, पवित्रता, सुख और आत्मबुद्धि करना, यह चार प्रकार की विद्या है। जब विद्या से अविद्या की निवृत्ति होती है, तब बन्धन से छूटके जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाता है ।।

दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता ।। योग २/६ ।।

दूसरा क्लेश अस्मिता कहाता है अर्थात् जीव और बुद्धि को मिले के समान देखना, अभिमान और अहंकार से अपने को बड़ा समझना इत्यादि व्यवहार को 'अस्मिता' जानना। सम्यक् विज्ञान से अभिमान आदि के नाश हो जाने से इसकी निवृत्ति हो जाती है, तब गुणों के ग्रहण में रुचि होती है ।।

सुखानुशयी रागः ।। योग १/७ ।।

तीसरा 'राग' अर्थात् जो जो सुख संसार में साक्षात् भोगने में आते हैं, उनके संस्कार की स्मृति से जो तृष्णा के लोभ सागर में बहना है इसका नाम 'राग' है - जब ऐसा ज्ञान मनुष्य को होता है कि सब संयोग, वियोग, संयोग वियोगान्त हैं अर्थात् वियोग के अन्त में संयोग और संयोग के अन्त में वियोग तथा वृद्धि के अन्त में क्षय और क्षय के अन्त में वृद्धि होती है, तब इसकी निवृत्ति हो जाती है।

दुःखानुशयी द्वेषः ।। २/८ ।।

चौथा 'द्वेष' कहाता है अर्थात् जिस अर्थ का पूर्व अनुभव किया गया हो, उस पर और उसके साधनों पर सदा क्रोध बुद्धि होना। इसकी निवृत्ति भी राग की निवृत्ति से ही होती है।

स्वरसवाही विदुषोऽपि तथा रूढोऽभिनिवेश. ।। योग २/९।।

पांचवां 'अभिनिवेश' क्लेश है जो सब प्राणियों को नित्य आशा होती है कि हम सदैव शरीर के साथ बने रहें अर्थात् कभी मरें नहीं, सो पूर्वजन्म के अनुभव से होती है और इससे पूर्वजन्म भी सिद्ध होता है। क्योंकि छोटे-छोटे कृमि चींटी आदि जीवों को भी मरण का भय बराबर बना रहता है। इसी से इस क्लेश को अभिनिवेश कहते हैं। जोकि विद्वान्, मूर्ख तथा क्षुद्र जन्तुओं में भी बराबर दीख पडता है। इस क्लेश की निवृत्ति उस समय होगी कि जब जीव परमेश्वर और प्रकृति अर्थात् जगत् के कारण को नित्य और कार्य द्रव्य के संयोग वियोग को अनित्य जान लेगा। इन क्लेशों की शांति से जीवों को मोक्षसुख की प्राप्ति होती है ।।

तदभावात्संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम् ।।योग० २/२५।।

अर्थात् जब अविद्यादि क्लेश दूर होके विद्यादि शुभ गुण प्राप्त होते हैं, तब जीव सब बन्धनों और दुःखों से छूट के मुक्ति को प्राप्त हो जाता है ।।

तद्वैराग्यादपि दोषबीजक्षये कैवल्यम् ।।योग० ३/५०।।

अर्थात् शोकरहित आदि से भी विरक्त होके विद्यादि शुभ गुण प्राप्त होते हैं, तब जीव सब बन्धनों और दुःखों से छूट के मुक्ति को

(शेष पृष्ठ ४ पर)

महाभारत - अधर्म पर धर्म की विजय

महावीर 'नीर' विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

[गतांक से आगे]

तब द्रोणाचार्य ने कहा यदि बल और शक्ति है तो रात में भी युद्ध करेंगे। यथा—

त्वं च दुर्योधन बलं यदि शक्तोऽसि पालय।
रात्रावपि च योत्स्यन्ते संरब्धाः कुरु सञ्जयः। १५१।४०

अतः पांडवों ने यहां कोई अधर्म का कार्य नहीं किया।

अब दुर्योधनवध प्रसंग पर आते हैं, यहां भी लेखक ने कृष्ण पर मनमाना दोष लगाया है। भीम की प्रतिज्ञा थी कि मैं दुर्योधन की जांघ तोड़ूंगा क्योंकि उसने भरी सभा में द्रोपदी का अपमान किया था, देखिए—अधार्मिक, भीरु, छली, कपटी, आततायी, दुष्कर्मी, मायावी दुर्योधन समस्त महावीरों को युद्ध में मरवा-कटवा कर एक तालाब में जाकर चोरों की भांति छिप गया। वहां भी कृप, अश्वत्थामा और कृतवर्मा से गुप्त-मन्त्रणा में संलग्न था। गुप्तचरों से पता लगा पाण्डव दल-बल सहित वहां पहुँचे, युधिष्ठिर ने उसे ललकारा, तब बड़े विलम्ब से उसने उत्तर दिया—मैं अब वनवास लूंगा, तुम निश्चिन्त होकर राज्य भोगो। युधिष्ठिर ने कहा मैं क्षत्रिय धर्म में प्रवृत्त हूं, किसी की धरती नहीं लेता, अब तो मैं तुम्हें जीतकर शासन करूंगा, या तुम हमें जीतकर शासन करो। बातचीत के पश्चात् दुर्योधन और भीम का गदा युद्ध वहां से हटकर युद्धक्षेत्र में हुआ। देर तक दोनों योद्धा लड़ते रहे। भीम बल में और दुर्योधन छल में अति निपुण था। कई प्रकार छल करके बचाव करता था। इस अवसर पर कृष्ण ने यही विचार किया कि इस मायावी का वध कर देना चाहिए। तब अर्जुन ने भीम को अपनी प्रतिज्ञा याद दिलाई—"प्रतिज्ञा पालनं धर्मः क्षत्रियस्य वेद्म्यहम्।" शल्यपर्व। ६०।१६। इतने में भीम ने जाना कि दुर्योधन भयंकर छल कर उसे मारना चाहता है। यथा—

'इयेषोत्पतितुं राजन् छलयिष्यान् वृकोदरम्। शल्यपर्व ५८।४४'

तब भीम ने उसकी जंघा पर ऐसे जोर से गदा मारी कि वह भग्नोरु होकर तत्काल धरती पर गिर पड़ा। इस प्रकार एक वैरभाव अन्त हुआ। भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। महाभारत कहता है कि—आततायी शत्रु का वध करना अधर्म नहीं है 'नाधर्मो विद्यते कश्चित् शत्रून् हत्वा आततायिनः।' यहां यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि पांडव यदि अधर्मी होते तो अकेले दुर्योधन को तत्काल मृत्युलोक पहुँचा देते।

तनिक धर्मराज की द्यूत क्रीडा पर भी विचार कर लिया जाए। लेखक ने दुर्योधन और युधिष्ठिर को इस प्रसंग में एक ही पलड़े पर रखा। यह ठीक है कि जुआ खेलना बुरी बात है, युधिष्ठिर ने भी इसे बुरा माना किन्तु जुए का निमन्त्रण देने पांडवों के परम प्यारे विदुर जी को धृतराष्ट्र ने भेजा। शायद वैसे पांडव न आए किन्तु विदुर जी के कथन को टाल नहीं सकेंगे। इसलिए बड़ों की आज्ञा मानते हुए तथा जुए को बुरा समझते हुए भी युधिष्ठिर आमन्त्रण पर हस्तिनापुर पहुँचे। क्योंकि उस समय का यह सर्वमान्य सिद्धांत था कि क्षत्रिय को कोई अगर आह्वान करे तो उसे जाना ही पड़ता था। इसलिए जब शकुनि ने यह कहा कि—'संसार में विद्याहीनों को विद्वान्, मेधाशून्यों को मेधावी, कायरों को वीर जीता करते हैं, कायर क्षेत्र से टलते ही हैं आप भी पीछे हट जाइए। तब धर्मात्मा युधिष्ठिर मायावी शकुनि के इस वाक्जाल को न समझ द्यूत-क्रीड़ा को ही युद्ध समझ बोल उठे यह मेरा व्रत है कि अगर कोई मुझे ललकारेगा तो मैं पीछे नहीं हटूंगा। यथा—आहूतो न निवर्तेयमिति मे व्रतमाहितम्' सभा. ५८।१८ तब क्षात्र धर्म को निभाने के लिए युधिष्ठिर ने द्यूत खेला। सब कुछ देकर भी अपना धर्म नष्ट न होने दिया। आजकल के लोग कुछ भी कहें किन्तु यदि यह न होता तो व्रत के महत्व को कौन समझता।

इसलिए शास्त्रों का वचन है कि मनुष्य जाति के सुख के उद्देश्य से ही प्राणी प्राणी को कार्य-अकार्य का निर्णय लेना श्रेष्ठ है। गीता २।४९ में कहा है—'दूरेण ह्यवरं कर्मबुद्धियोगात धनञ्जयः' अर्थात् बाह्य परिणामों की अपेक्षा नीतिमत्ता एवं बुद्धि का ध्यान होना आवश्यक है। हम एक बात साफ देखते हैं कि श्री कृष्ण अपने बाल्य-जीवन से लेकर महाभारत-कालीन जीवन तक एक लक्ष्य को लेकर चले हैं और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन या तरीके अनेक थे। अत्याचारियों, दुष्टों और अधर्मियों के प्रति बगावत का झण्डा उन्होंने सदैव ऊंचा रखा और अपनी वाणी को सदा बुलन्द रखा। इसीलिए बूढ़े भोजराज के पुत्र अपने मामा कंस का नाश करने में भी उन्होंने कोई विलम्ब नहीं किया तथा सजातीय बन्धुओं, कुटुम्बीजनों और समस्त यादवों को उससे त्राण दिलाया। कृष्ण के पितामह यदु महाराज ययाति के ही तो पुत्र थे, जो हस्तिनापुर के सिंहासन पर आरूढ़ रहे। कुन्ती उनकी बुआ थी। अर्जुन उनके उनके बहनोई थे। इसलिए कृष्ण का इस सिंहासन से गहरा सम्बन्ध था। सारे महाभारत का युद्ध-चक्र उन्हीं के आस-पास घूमता है। कृष्ण क्या थे, यह जानने के सभा पर्व के ये श्लोक पठनीय हैं—

'पूज्यतायां च गोविन्दे हेतुद्वावपि संस्थितौ।
वेदवेदांगविज्ञानं बलं चाप्यधिकस्तथा। सभा. ३८।१९

कृष्ण में वेदवेदांग का विशेष ज्ञान दूसरे बल। इसके अतिरिक्त कृष्ण में दान, दक्षता, श्रुत, शौर्य, लज्जा, कीर्ति, उत्तम योद्धा, श्रेष्ठ सन्तति, श्री, धैर्य, सन्तोष और पुष्टि आदि भी नियम पूर्वक करते हैं। और कृष्ण परम योगी भी थे, भागवत् ११।३१।१० में कहा है—

ब्रह्मरुद्रादयस्ते तु दृष्टवा योगगतिं हरेः।
विस्मितास्तां प्रशंसन्तः स्वं स्वं लोकं ययुस्तदा॥

इस प्रकार कृष्ण ज्ञानी और बली थे। नीतिज्ञों में नीतिवान् थे। इसलिए कौरव जब अधर्म करने लगे पांडवों के स्वत्व को हड़प पारिवारिक मर्यादा का उलंघन करने लगे तब कृष्ण कैसे सहन कर सकते थे। साम, दाम, भेद सब नीति अपनाने पर भी जब दुर्योधन नहीं माना तब उन्होंने दण्ड का विधान ही उपयुक्त समझा। कृष्ण के जीवन का लक्ष्य था, जहां-जहां अन्याय हो, अत्याचार हो, अधर्म हो, जीवन मूल्यों का ह्रास, मानव धर्म का नाश हो। उसकी नीति द्वारा योग युक्ति अर्थात योगः कर्मसु कौशलम्—चतुराई द्वारा विनाश और सचमुच जहां नीति और मति का योग होगा वहीं श्री और विजय की प्राप्ति भी होगी। इसीलिए कृष्ण नीतिवान् ही नहीं मतिमान् भी हैं। वे छली नहीं, बली हैं। मायावी नहीं, महामानव हैं। कपटी नहीं, कूटनीतिज्ञ हैं। वे द्रष्टा नहीं, कर्म-स्रष्टा हैं। वे भोगी नहीं, कर्मयोगी हैं। सबके साथ उनका आत्मवत् व्यवहार है। गोप ग्वाल उनके सखा हैं। वे मित्रों के आदर्श हैं। गरीब सुदामा उनका अभिन्न मित्र है। ब्रह्मचर्य के तप का प्रसाद रूप उनका बली पुत्र प्रद्युम्न है। श्री कृष्ण का जीवन आप्त पुरुषों जैसा है। वे हमारे अत्यन्त निकट हैं किन्तु उनके क्रिया-कलाप बड़े विकट हैं। वे प्रच्छन्न हैं, किन्तु उनकी कोई भी बात हम से छिपी नहीं है। इसलिए वे महान् हैं। उनके आदर्श हमारे निकट हैं। जहां हम राम की मर्यादा को छू नहीं पाते, वहां कृष्ण के सिद्धान्तों को व्यवहार में लाकर कर्मभूमि या कार्यक्षेत्र में उतर जाते हैं। कहा है—यतो धर्मस्ततो जयः। यतः कृष्णस्ततो जयः।

इसलिए ऐसे महामानव को छली और पाण्डवों को अधर्मी बताना बुद्धि का दिवालियापन नहीं तो क्या है? महाभारतकार कहते हैं कि महाभारत ग्रन्थ वेदसम्मत है—"इदं हि वेदसम्मितं पवित्रमपि चोत्तमम्॥ आदि पर्व ६२/१६। स्वर्गा० ५/६७ इसलिए

(शेष पृष्ठ ७ पर)

क्या पाकिस्तान युद्ध करेगा ?

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

कश्मीर और पंजाब में जिस प्रकार पाकिस्तान का हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है और बम विस्फोटों का सिलसिला अब इन दो प्रांतों में सीमित न रहकर अनेक प्रान्तों में शुरु कर दिया गया है तथा पाकिस्तान सरकार के मन्त्री जिस प्रकार के वक्तव्य दे रहे हैं, उससे ऐसा प्रतीत होने लगा है कि पाकिस्तान किसी समय भी युद्ध आरम्भ कर सकता है।

युद्ध की घोषणा किए बिना वैसे तो पाकिस्तान ने युद्ध छेड़ ही रखा है। अब तो अपने पिता के शब्दों को बेनजीर भुट्टो भी दोहराने लगी हैं कि पाकिस्तान भारत से एक हजार वर्ष तक युद्ध करता रहेगा। पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात जब बिगड़ते हैं और सरकार अस्थिर होती है तब भारत के विरुद्ध नफरत का प्रचार तेज हो जाता है। वास्तविकता तो यह है कि पाकिस्तान का निर्माण ही भारत के विरुद्ध निरन्तर युद्ध की स्थिति बनाये रखने के लिए हुआ है। साम्राज्यवादी अंग्रेजों और अमरीकनों ने तीन बार भारत पर आक्रमण करवाया है, परन्तु उसमें विजयी तो सदा भारत ही रहा है।

युद्ध बहुत मंहगा पड़ता है

आजकल विज्ञान के युग मे जब नित्यप्रति एक से बढ़ कर एक विध्वंशकारी अस्त्र शस्त्रों का निर्माण करने की होड लगी है, युद्ध पर होने वाला व्यय इतना बढता जा रहा है कि अमीर देशों की अर्थ-व्यवस्था को हिला देता है। गरीब देशो के लिए तो यह व्यय बर्दाश्त करना असम्भव है, उनका विकास का सब कार्यक्रम रुक जाता है, देश कंगाल हो जाता है और अर्थव्यवस्था इतनी मफलूज हो जाती है कि वहां की जनता को खाने के लाले पड जाते हैं। अमीर देश तो अपने हथियार और दूसरा माल बेच कर मालामाल हो जाते हैं और गरीब देश ऋण के बोझ के नीचे दब जाते हैं। साम्राज्यवादी देशों ने गरीब राष्ट्रो को आपस में लड़ाकर आर्थिक रूप से बर्बाद कर दिया है।

पाकिस्तान को हथियार तथा अन्य सहायता

पिछले दस वर्षों में तो विशेष रूप से अमरीका ने पाकिस्तान को अरबों रुपए के हथियार दिए है और दूसरे कामों के लिए भी सहायता दी है। अफगानिस्तान मे अपनी पिट्ठू सरकार बनाने के लिए अमरीका ने एडी चोटी का जोर लगाया है। हथियार और पैसा दिल खोल कर दिया है। यह सब कुछ भी पाकिस्तान के काम आया है। पाकिस्तान ने इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत पंजाब और कश्मीर के नवयुवकों को प्रशिक्षण, हथियार और पैसा दिया है।

यह सब कुछ पाकिस्तान की सीमा से लगते हुए पंजाब और कश्मीर में गड़बड़ फैलाने के लिए किया है ताकि भारत को अस्थिर तो करे ही साथ ही युद्ध की स्थिति में इन तत्वों की सहायता से इन दोनों प्रदेशों में घुसकर भारत को युद्ध मे भारी आघात पहुँचा सके, और हो सके तो काफी इलाका जीत कर भारत को नीचा दिखा सके।

जनरल जिया का आप्रेशन टोपाक

अप्रैल १९८८ में उस समय के राष्ट्रपति जिया ने एक योजना "आप्रेशन टोपाक" के नाम से तैयार की थी, उस योजना को फौजी अभ्यास जिसे 'जर्बे मोमिन' का नाम दिया गया था, पाक जवानो में खब प्रचारित किया गया। वास्तव में 'जर्बे मोमिन' जिया की योजना के कार्यान्वियन का पहला चरण था। दूसरा चरण था, भारी संख्या में तथाकथित आजाद कशमीर की धाड़ (काफिले) कशमीर में भेजे जाएं और पंजाब में घुसपैठिए। आजकल चल रहा कार्यक्रम उसी योजना का दूसरा चरण है। तीसरा चरण बाकायदा युद्ध का है।

क्या पाक शीघ्र युद्ध करेगा

पाकिस्तान अघोषित युद्ध चलाने के साथ-साथ (मीडिया युद्ध) प्रचार युद्ध भी चला रहा है। पाकिस्तान शिमला प्रस्ताव को छोडकर सुरक्षा परिषद् में और राष्ट्रसंघ में कशमीर के मामले को उठाने के लिए अनेक देशों को अपने साथ मिलाने का प्रयत्न करता रहा परन्तु अभी तक उसे सफलता नही मिल पाई है, अधिकतर देशों ने द्विपक्षीय वार्ता के द्वारा शिमला समझौते को आधार बनाकर कशमीर के मामले को हल करने की राय दी है। परन्तु पाकिस्तान ने अपना "मीडिया युद्ध" (प्रचार युद्ध) अभी जारी रखा हुआ है। माहौल को गर्माने के लिए पाकिस्तान के सभी नेता एक दूसरे से बढ़चढकर बोलते जा रहे हैं और पाकिस्तान के अगवाओं को यह बुखार इतना तेज चढ़ सकता है कि उनके लिए समझौते की बात कहना आत्मघाती लगने लगे। ऐसी अवस्था में युद्ध का बिगुल कभी भी बज सकता है।

इधर भारत भी इन घटनाओं की अनदेखी कैसे कर सकता है, इसलिए इधर भी तैयारी कुछ तो हर समय ही रहती है और युद्ध की सम्भावना के लिए हर तरह की तैयारी करनी पड़ती है, यह सब कुछ करना स्वाभाविक है। भारत पाकिस्तान से बहुत बडा राष्ट्र तो है ही, इसके पास विकसित उद्योग भी हैं जिसके द्वारा युद्ध को सब आवश्यकतायें शीघ्र से शीघ्र पूरी की जा सकती हैं।

यह तो ठीक है कि पाकिस्तान अपने आप तो युद्ध जैसी बडी जोखिम उठाने की स्थिति मे नही है परन्तु अमरीका जोकि अपने देशों में शांति के लिए और सर्वनाश से बचने के लिए रूस मे बात करके हथियारो पर नियन्त्रण कर सकता है, गरीब देशों को लडाने में उस पर कोई खतरा नही आता और वह भारत जैसे देश को जो स्वतन्त्र विदेश नीति अपनाए हुए है और उद्योगो के विकास मे तथा कृषि में आत्मनिर्भरता की ओर बढ रहा है, झटका देने की अवश्य सोच सकता है। ऊपर से ये साम्राज्यवादी देश कुछ कहें, अन्दर से वे क्या चाहते हैं यह वही जाने। पाकिस्तान वही करेगा जो उसके आका चाहेंगे इस लिए भारत निश्चिन्त होकर नही बैठ सकता उसे हर समय युद्ध के लिए तैयार ही नही रहना है बल्कि विजय भी प्राप्त करनी है। आज का युद्ध केवल जल-थल-नभ की सेनाये नही लडती, पूरे राष्ट्र की जनता का हर प्रकार का सहयोग और सहायता आवश्यक है। यदि युद्ध हुआ तो भारत की एकता को नई शक्ति देने वाला सिद्ध होकर वरदान भी हो सकता है। यही आशा और विश्वास भारत के जन-जन के हृदय मे जागना चाहिए।

✱ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

✱ मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

शराबबंदी आँदोलन ने फिर जोर पकड़ा

नई दिल्ली १५ अप्रैल (प्रेट्र) मद्यनिषेध का नारा पुराना पड़ गया लगता है, लेकिन अभी भी इसके कुछ हिमायती महात्मा गांधी, विभिन्न धर्मों व मिखाइल गोर्वाचेव से प्रेरणा लेकर इस आंदोलन को नए सिरे से शुरू करने में जुटे हैं।

एक रष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण के अनुसार लगभग सभी राज्य शराब के व्यापार से मिलने वाले राजस्व से खुश है और वे इसे छोडने को तैयार नहीं है। लिहाजा वे निषेध अधिनियम लागू करने के भी खिलाफ हैं।

गुजरात अकेला ऐसा राज्य है, जहां महात्मा गाधी की शिक्षाओं के अनुरूप, आजादी के बाद से शराबबन्दी रही है, जबकि तमिलनाडु एक बार फिर शराबबन्दी से पीछे हट गया है। उत्तर-पूर्वी राज्यों नागालैण्ड, अरुणाचल प्रदेश व मिजोरम विभिन्न पादरियों के दबाव के कारण शराबबन्दी की घोषणा कर चुके हैं। असम में और उत्तरप्रदेश के कुमाऊ व गढवाल जिलों में आंशिक निषेध है। कांग्रेस सरकारों ने इस मुद्दे को गम्भीरता से नही लिया, लेकिन अब केन्द्र में सरकार बदलने से निषेध समर्थकों को आशायें बधी है।

जनता दल ने अपने गठन के समय घोषणा की थी कि पार्टी मद्यनिषेध नीति पर ईमानदारी से अमल करेगी। इस घोषणा के मद्देनजर अखिल भारतीय निषेध परिषद ने प्रधानमन्त्री को ज्ञापन देकर आग्रह किया है कि पूरे देश में निषेध कानून लागू किया जाए। (दै ट्रि.)

एक दर्जन गांवों में शराबविरोधी अभियान

हांसी १५ अप्रैल (निस)। उपमण्डल के एक दर्जन गावो मे ग्राम पंचायतों तथा ग्रामीणों ने गाव मे शराब के ठेके बन्द कराने का अभियान शुरू कर दिया है।

उमरा गांव की पचायत ने शराब के ठेके पर ताला लगा दिया है। शराब के ठेकेदारो को दुकान के मालिक ने तुरन्त दुकान खाली करने को कहा है। उमरा पचायत ने शराब पीकर गलीं में घुसने वाले पर केवल सवा रुपया जुर्माना तथा गाव की चौपाल और उसी गली को साफ करने का दण्ड निर्धारित किया है। एक युवक को यह दण्ड दिया भी जा चुका है।

सातबास जड़िया खाप के प्रधान मागेराम मलिक ने सातबास के गाव ढढेरी, रामायण डेपल, मामनपुरा कवारी, सुलतानपुर गाव में शराब के ठेके बन्द करने के लिए पचायतो के प्रस्ताव जिलाधीश को भेजे हैं। इन गांवों मे भी ताजा निर्णय लागू किया गया है।

सिसाय गाव की दोनों पचायतो ने भी शराब के ठेकेदारों को ठेका बन्द करने तथा ठेके के लिए स्थान न देने का निर्णय लिया है। सिसाय में प्रभाव वाले ठेकेदार और पंचायतों के बीच तनाव व्याप्त है।

गांव पेटवाड़, मसूदपुर, डाटा और ढाणीराजू में भी शराब के ठेके बन्द कराने के लिए युवक व ग्राम पंचायतें अभियान चला रही हैं। (दैनिक ट्रिब्यून)

नागालैण्ड में पूर्ण शराबबन्दी

(पृष्ठ ५ का शेष)

क्या आर्यसमाजी नागालैण्ड के निर्णय से प्रेरणा लेकर इस आंदोलन को देशव्यापी बनाकर मैदान मे नही उतरेंगे? समय आ गया है जब आर्यसमाजी लोकशक्ति को जगाकर राष्ट्र को शराब के समुद्र में डूबने से बचाए। मैं समुद्र इसलिए कह रहा हू कि जहा पीने का पानी लोगों को उपलब्ध नही, शराब वहा भी पहुंची हुई है।

तनाव बढ़ा तो पूरी ताकत से युद्ध लड़ना होगा —देसाई

बम्बई १५ अप्रैल (भाषा)। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई ने कहा है कि अगर भारत पाक सीमा पर तनाव बढ़ता है तो भारत को पूरी ताकत के साथ पाकिस्तान से युद्ध लड़ना ही पड़ेगा।

अपने निवास सारंग में चुनिन्दा पत्रकारों से बातचीत करते हुए श्री देसाई ने कहा कि पाकिस्तान जिस ढंग से कश्मीर के मामले में रुचि दिखा रहा है उसे देखते हुए साफ जाहिर है कि उसके इरादे नेक नहीं है। प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने युद्ध के लिए मानसिक रूप से तैयार रहने का जो आह्वान किया है वह कश्मीर की घटनाओं की समीक्षा करने के बाद ही किया होगा। श्री देसाई ने कहा कि युद्ध करने या लडाई लड़ने का हमें कभी शौक नहीं रहा, लेकिन पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री जुल्फिकार अली भुट्टो भारत के साथ हजारों साल तक दुश्मनी निभाने की बातें किया करते थे। अभी उनकी बेटी ही पाकिस्तान की बागडोर संभाल रही है।

पूर्व प्रधानमन्त्री ने कहा कि भारत पाक को युद्ध के लिए ललकार नही रहा है। यह तो पाकिस्तान पर निर्भर करता है कि युद्ध हो या नही। अगर युद्ध की नौबत आई तो फिर भारत जरा भी नहीं हिचकेगा। उसे डटकर जवाब देना होगा। पूछे जाने पर कि अगर युद्ध हुआ तो पाकिस्तान की कौन से राष्ट्र मदद देंगे और तब महाशक्तियों की क्या भूमिका होगी, श्री देसाई ने कहा, इस बात का जवाब जल्दबाजी में देना उचित नही होगा और ऐसी बात करने के लिए यह अवसर भी प्रासंगिक नही है। बस भारत को हर हाल में पाकिस्तान का डटकर मुकाबला करना ही पड़ेगा।

—(साभार दैनिक वीर अर्जुन)

पाँच क्लेशों का त्याग

(पृष्ठ १ का शेष)

प्राप्त हो जाता है। यथा

सत्त्वपुरुषयो: शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति ॥योग० ३/५५॥

अर्थात सत्त्व जो बुद्धि, पुरुष जो जीव, दोनों की शुद्धि से मुक्ति होती है, अन्यथा नही॥

तदा विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं चित्तम् ॥योग०४/२६॥

जब सब दोषों से अलग होके ज्ञान की ओर आत्मा झुकता है, तब कैवल्य मोक्षधर्म के संस्कार से चित्त परिपूर्ण हो जाता है, तभी जीव को मोक्ष प्राप्त होता है। क्योंकि जब तक बन्धन के कामों में जीव फंसता जाता है, तब तक उसको मुक्ति प्राप्त होना असंभव है। कैवल्य मोक्ष का लक्षण यह है कि—

पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसव: कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति ॥योग० ४/३४॥

अर्थात् कारण के सत्त्व, रजो और तमोगुण और उनके सब कार्य पुरुषार्थ से नष्ट होकर आत्मा में विज्ञान और शुद्धि यथावत् होके, स्वरूपप्रतिष्ठा जैसा जीव का तत्त्व है, वैसा ही स्वाभाविक शक्ति और गुणों से युक्त होके, शुद्धस्वरूप परमेश्वर के स्वरूप विज्ञान प्रकाश और नित्य आनन्द में जो रहना है, उसी को कैवल्य मोक्ष कहते हैं॥

शराब हटाओ देश बचाओ।

नागालैंड में पूर्ण शराबबन्दी

प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पूर्वोत्तर अंचल में छोटा सा प्रदेश है नागालैण्ड। इस प्रदेश के अधिकतर लोग ईसाई बन गए हैं। इस प्रदेश में अंग्रेजों के जाने के थोड़े समय बाद ही अशांति आरम्भ हो गई थी और फीजो के नेतृत्व में नागालोगों के एक गिरोह की ओर से बगावत चलती रही। फीजो लन्दन में बैठे हुए बगावत चलाते रहे और शांति की स्थापना के लिए वहां हमारी सेना तैनात रही। भूमिगत बागी गिरोह एक-एक करके मुख्य धारा में आए और चुनावों की प्रक्रिया में शामिल होते रहे। आज भी हिंसक वारदातें हो जाती हैं, परन्तु काफी नियन्त्रण में हैं।

नागालैण्ड के पास ही इस से भी छोटा प्रदेश है मिजोरम। मिजोरम में भी भूमिगत रहकर कुछ गिरोह विद्रोह करते रहे, उनको नियन्त्रित करने तथा वहां की जनता को देश की मुख्यधारा से जोडने के लिए सेना ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यहां से विद्रोही नेता लालडेंगा अपने साथियों समेत मुख्य धारा में आ गए और मुख्यमन्त्री भी बन गए। परन्तु दूसरे चुनाव में हार गए और हार का एक कारण यह भी था कि वे चर्च का अनुशासन और प्रभुत्व पूरी तरह मानने को तैयार नहीं हुए।

ईसाई मिशनरियों और चर्च की गतिविधियां आज भी सन्देह के घेरे से बाहर नहीं निकल पाई हैं और अलगाववादी गतिविधियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समर्थन वे करते रहे हैं और आज भी अपने ढंग से कर रहे हैं। परन्तु यह तो मानना ही पडेगा कि वे गरीब जनता की समस्याओं का समाधान करने के लिए साधन भी जुटाते हैं और तन्मयता से सेवा भी करते हैं। पश्चिम के देशों से बड़ी मात्रा में साधन प्राप्त करके उनके द्वारा गरीब बच्चों की शिक्षा और गरीब जनता की चिकित्सा का समुचित प्रबन्ध वे करते हैं और फिर धर्म परिवर्तन भी कर डालते हैं। पूर्वोत्तर अंचल में बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन करके लाखों गरीब लोगों को ईसाई बनाया है और बनाते चले जा रहे हैं। अरुणाचल प्रदेश में धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए वहां की सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं परन्तु वहां भी मिशनरी किसी न किसी कार्यक्रम को लेकर घुसने का रास्ता निकाल रहे हैं।

शराब और नशीले पदार्थों के नित्यप्रति बढते हुए सेवन के कारण लोगों का स्वास्थ्य तथा चलन बिगडता जा रहा है। शराब और दूसरे नशीले पदार्थों का सेवन अब इतना बढ़ चुका है कि उसके कारण बच्चों और महिलाओं का ही नहीं पूरे परिवारों का जीवन नरक के समान हो गया है। काम करने की शक्ति का ह्रास होने से कमाई तो घटती जाती है और घटी हुई आमदनी का अधिक से अधिक भाग शराब और नशीले पदार्थों की नजर हो जाता है। ऐसी अवस्था में बच्चों के लालन-पालन और पढाई आदि के लिए कुछ बचता ही नहीं और वे भूख और बीमारियों का शिकार बन जाते हैं। महिलाएं कुपोषण का शिकार बनती हैं उनकी भी कमाने की शक्ति क्षीण हो जाती है और उनको अपना और बच्चों का पेट भरने के लिए सब मर्यादाएं तोड़कर नारकीय जीवन भुगतना पड़ता है। बच्चों को भी जीवित रहने के लिए समाज विरोधी तत्वों की छत्रछाया में सब प्रकार के अपराध करने के लिए विवश होना पड़ता है। आज हमारा समाज नशाखोरी का शिकार होकर बुरी तरह त्रस्त है और इस दुर्दशा से निकलने के लिए बेताब है। निकले कैसे, जब सरकारें राजस्व बटोरने के लिए उन से भी ज्यादा बेताब हो चुकी हैं। नशीले पदार्थों का उत्पादन करने वाले और उनका वैध और अवैध व्यापार और धन्धा करने वाले लोग सरकारों पर हावी हो चुके हैं।

पिछले दिनों मादक द्रव्यों से विश्व की पथभ्रष्ट जनता को बचाने के लिए राष्ट्रसंघ का ४ दिन का विशेष अधिवेशन न्यूयार्क में बुलाया गया जिसमें १५० से अधिक देश शामिल हुए। वहां पता चला कि सबसे अधिक पैसा तो हथियारों पर खर्च होता है जिसकी मात्रा ६०० अरब डालर (१० हजार अरब रुपए) है और दूसरे नम्बर पर मादक द्रव्यों की खपत पर जो ५०० अरब डालर (८५०० अरब रुपए) बनता है। यह तो तब है जब शराब को इसमें शामिल नहीं किया गया है। पश्चिम देश ही क्या भारत भी आज शराब को मादक द्रव्यों की सूची में से निकाल चुका है। दूसरे मादक द्रव्यों के व्यापार और सेवन पर तो कड़ी बन्दिश लगाने के लिए सख्त कानून बनाया गया है परन्तु शराब के सेवन पर कोई बन्दिश नहीं, क्योंकि इस से राजस्व कमाया जा रहा है। महात्मा गांधी का नाम लेकर राज करने वाले भारत के सभी राजनैतिक दल आज गांधी जी को तो भुला ही बैठे हैं, साथ ही संविधान के नीतिनिर्देशन के सिद्धांतों को भी।

ईसाई मिशनरियों ने जनता की नब्ज को पकड़ लिया है। वे शिक्षा और चिकित्सा को माध्यम बनाकर गरीब जनता के दिलों को जीत कर उनका धर्म परिवर्तन करने रहे हैं। अब उन्होंने यह समझ लिया है कि यदि मद्यनिषेध नहीं किया गया तो उनकी शिक्षा और चिकित्सा के माध्यम से की हुई सेवा शराब के समुद्र में बह जाएगी। इसलिए उन्होंने मिजोरम और नागालैण्ड में शराबबन्दी के कार्यक्रम को प्राथमिकता दी है। यह प्रसन्नता की बात है कि उनके प्रयास के फलस्वरूप नागालैण्ड में पूर्ण शराबबन्दी लागू कर दी है। मिजोरम में वे ऐसा ही करवा देंगे और शायद दूसरे प्रदेशों में भी जहां उनका प्रभाव है। इतना ही नहीं कश्मीर से उजड़कर आए हुए नवयुवकों ने अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति न होने की हालत में ईसाई धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की है ताकि उनकी वे आवश्यकताएं पूरी हो सकें, क्योंकि उनकी नजर सेवापरायण ईसाई मिशनरियों पर ही गई है।

प्रश्न उठता है कि तथाकथित हिन्दू धर्म को बचाने का दावा करने वाली और "गर्व से कहो कि हम हिन्दू हैं" का नारा लगाने वाली संस्थाओं की तरफ कश्मीर के उजडे हुए नवयुवकों की नजर क्यों नहीं गई? उत्तर बहुत सरल है। हिन्दू खैरात तो दे सकता है, किसी को गले नहीं लगा सकता, तिरस्कार तो वह सब का कर सकता है, आदर सत्कार करके अपना नहीं सकता। अपने सिद्धान्तों का बखान तो बडी सुन्दर भाषा में कर सकता है परन्तु उस पर अमल नहीं कर सकता, इसलिए अपने ही लोगों में उसकी विश्वसनीयता कम होती जा रही है।

कट्टरपंथी कहलाने वाले ईसाई और मुसलमान कहते हैं तो कुछ करते भी हैं। पाकिस्तान समेत अनेक मुस्लिम राष्ट्रों ने शराब को हराम कहने वाले इस्लाम धर्म के अनुयायी होने के नाते शराब बन्द कर रखी है। कट्टरपंथी मुस्लिम सगठन शराबबन्दी और दूसरी मर्यादाओं के पालन पर जोर देते हैं। हिन्दुओं के अन्दर ही सिख गुरुओं पर विश्वास करने वाले कुछ कट्टरपंथी नवयुवक चाहे और बुरी तरह भटके हुए हैं परन्तु शराबबन्दी और दूसरी सामाजिक मर्यादाओं के पालन करने पर जोर दे रहे हैं। परन्तु अपना समाज अपने बच्चे अपनी बहु-बेटियां और अपने परिवारों की बर्बादी देखकर भी हिन्दुओं के तथाकथित धर्माचार्य ऊट-पटांग बातें बोलकर समाज को ऊंच-नीच में बांटने और कुप्रथाओं को जीवित रखने की बात तो खूब बोलते हैं परन्तु क्या मजाल कि एक शब्द भी शराबबन्दी के लिए बोलें। क्या छुआछूत और जन्म के आधार पर जात-पांत की तरह शराब पीना भी उन्होंने हिन्दू धर्म का अंग मान लिया है? यदि नहीं तो कट्टरपंथी ईसाई और मुसलमान धर्माचार्यों की तरह वे भी शराबबन्दी के विरुद्ध जहाद क्यों नहीं छेडते?

आर्यसमाज ने इस कार्यक्रम को अपने तीन सूत्री कार्यक्रम में महत्व तो दिया है, परन्तु वह अभी तक देश के स्तर पर केवल प्रस्तावों तक ही सीमित है। (शेष पृष्ठ ४ पर)

शिक्षा के ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन जरूरी : वीपी

नई दिल्ली १५ अप्रैल (वार्ता) प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे आमूलचूल परिवर्तन लाए जाने की महती आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मौजूदा प्रणाली से युवा वर्ग को सिर्फ डिग्रियां ही हासिल हो पा रही हैं।

दयानन्द ऐंग्लो वैदिक (डी०ए०वी०) आंदोलन के संस्थापक और विख्यात शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज की वर्षगांठ पर तालकटोरा इन्दौर स्टेडियम में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाषण करते हुए श्री सिंह ने सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों के अनुकूल शिक्षा नीति तैयार किए जाने का आह्वान किया। श्री सिंह ने कहा कि शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जिस से सभी को मानसिक विकास का समान अवसर मिल सके।

श्री सिंह ने कहा कि शिक्षक समुदाय को अधिक मेहनत करनी होगी ताकि छात्रों का बेहतर विकास हो जिससे देश अधिक मजबूत बन सके। प्रधानमन्त्री ने कहा कि मूल रूप से मौजूदा शिक्षा प्रणाली अंग्रेजी की देन है। अंग्रेजों ने पिछली शताब्दी के दौरान भारत में अपने प्रशासनिक कार्यों के लिए भारतीयों को तैयार करने के उद्देश्य से जो शिक्षा प्रणाली बनाई लगभग वही आज भी चली आ रही है। शिक्षाऐसी हो जो परिवर्तनों की मांग को पूरा कर सके।

उन्होंने डी०ए०वी० आंदोलन शुरू करने पर महात्मा हंसराज की प्रशंसा की और कहा कि देश में इस समय ऐसी पांच सौ से अधिक शैक्षिक संस्थायें उनकी दूरदर्शिता का प्रमाण है। सर्वश्री एम०एल० सिंघवी के अलावा मदनलाल खुराना प्रो० रामसिंह आर्य, प्रो० कैलाशनाथ सिंह तथा सुश्री उमा भारती (सभी सांसद) भी वक्ताओं मे शामिल थे। —साभार दैनिक वीर अर्जुन

हैदराबाद सत्याग्रहियों को आवश्यक सूचना

श्रीमान् जी,

ईश्वर की कृपा से बड़ी प्रसन्नता की बात है कि जो केस हम ५६ सत्याग्रहियों ने सुप्रीम कोर्ट में किया था उस में आज १७-४ लगी थी और हम को सफलता मिल गई है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि पत्र देखते ही अपने प्रमाण-पत्र की ११ (ग्यारह) फोटोस्टेट प्रतियां करवा कर किसी मजिस्ट्रेट से सत्यापित करवाकर इतवार से पहले-पहले कापियां लेकर दयानन्दमठ रोहतक में पहुंच जायें। यह कार्य अत्यन्तावश्यक है। अगर समय पर नहीं आए तो आपकी पेंशन को देर लग सकती है। —भवदीय म० भरत सह

नोट—२२-४-९० तक सभा वर्षी ८३ उपप्रधान एवं संयोजक
हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति हरयाणा

शोक समाचार

बड़े दुःख के साथ हमें सभी सम्बन्धित जनों को सूचित करना पड़ रहा है कि श्री देवदत्त भारती शास्त्री स्नातक गुरुकुल गदपुरी (फरीदाबाद) एवं संस्कृत महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन संगठन दिल्ली के अध्यक्ष का स्वर्गवास दिनांक १—४—९० रविवार को हो गया है। आप गुरुकुल झज्जर की विद्यार्य सभा एवं ज्वालापुर की विद्यार्य सभा के बहुत दिनों तक सदस्य रहे। गुरुकुल गदपुरी के तो आप २५ वर्षों तक महामन्त्री रहे। आपने 'छन्दोलकार मञ्जरी' पुस्तक की भी रचना की। आप वरिष्ठ समाजसेवी संगठनकर्ता, आर्यसमाज के सेवक तथा अनेकानेक संस्थाओं के प्रेरणा स्रोत रहे। हम उनके प्रति 'सर्वहितकारी' द्वारा श्रद्धांजलि पुष्प अर्पित करते हैं।

भवदीय :
जयपाल, नई दिल्ली

स्वप्न साकार करना अभी शेष है

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ०प्र०)

देश के नवजवानों बढ़े ही चलो,
स्वप्न साकार करना अभी शेष है।
मुक्ति हमको मिली राजनीतिक अभी,
मानसिक दासता से कसा है वतन।
आर्य संस्कृति मिली जा रही धूल में,
हो रहा सुतत्वों का अविरल पतन।
देख लो! रो रहा मूल्य मनुजत्व का,
भेद—भावों का होता यहां विष वमन।
खड़ा है दनुजता दुकूलों पर देखो!
बुलाता सभय हो तुम्हें देश है।
बुलाती तुम्हें आर्य संस्कृति की गरिमा,
बढ़े तुम चलो सत्य पथ पर चिरन्तन।
कहीं भी धरा पर पुनः रह न जाए,
किसी भी मनुज का करुणार्द्र क्रन्दन।
दया—प्रेम—समता, सुगमता—सफलता—
का होवे धरा पर पुनः नम्र वन्दन।
मनुजता से पूरित हो प्रिय भूमि सारी-
यही पूज्य ऋषियों का संदेश है।
प्राण—पण से है प्यारी हमें मातृभू!
आंख उस को दिखावे, कहां? कौन है।
देश के सैनिकों के समक्ष यह धरा—
व्योम—तारे—समुन्दर—सभी मौन हैं।
जय गान गाते हैं झरने यहां—
हिंद सागर कहीं पर, कहीं सोन है।
युगों से रही शौर्य-शक्ति हमारी—
क्षितिज में, धरा पर, सदा शेष है।
कुशिक्षा का दानव हटे देश से,
श्रम—परिश्रम—की होवे यहां अर्चना।
जगे वेद की ज्योति फिर धरा पर,
हो सत्यम्—शिवम्—सुन्दरम् वन्दना।
ललकार दो दानवी वृत्तियों को—
कर दो धरा पर न आवें, मना।
गरजते जलधि सा उठो! वीर पुत्रो!
बुलाता तुम्हारा, तुम्हे देश है।
देश के नव जवानों! बढ़े ही चलो—
स्वप्न साकार करना अभी शेष है।

✻ महात्मा बुद्ध की अमर वाणी ✻

मनुष्यो!
तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना,
वह पराक्रम की परीक्षा है।
तुम तलवार के नीचे सिर झुकाने से भयभीत न होना,
वह बलिदान की कसौटी है।
तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ना,
वह तप की साधना है।
तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना,
वह स्वर्ण-परीक्षा है।
पर शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि
यह पाप और अत्याचार की जननी है।

आर्यसमाज कंवारी (हिसार) का ९८वां उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कंवारी का ९८वां उत्सव बड़े हर्षोल्लास के वातावरण में दिनांक ९-१०-११ फरवरी १९९० को विधिवत् सम्पन्न हुआ, जिसमें आर्य-जगत् के अनेक विद्वानों ने भाग लिया। जिन में स्वामी परमानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी अग्निदेव भीष्म, प्रो० ओमकुमार जी आर्य, पं. सत्यवीर शास्त्री, पं. दुलीचन्द जी आर्य, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, महावीर प्रसाद प्रभाकर, स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास जी आर्य आदि विद्वानों ने अपने-अपने ढंगसे महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर, आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, आर्यसमाज का आजादी में योगदान, राष्ट्र-रक्षा गौ-रक्षा, नारी शिक्षा, छूआछात हटाओ, दहेजबन्दी समाज में फैली पत्थर पूजा एव शराबबन्दी के बारे में विचार रखे।

इसके अतिरिक्त पं० मामचन्द पथिक, पं. खेमसिंह क्रांतिकारी, पं. रामनिवास जी, राजबाला आर्या, कुमारी नीलम तथा महाशय हरफूलसिंह आर्य के शिक्षाप्रद समाज सुधार के क्रांतिकारी भजन हुये। इसी अवसर पर आर्यसमाज कंवारी की तरफ से प्रथम बार दो समाज सेवी महापुरुष भगत रामेश्वरदास जी, महावीर प्रसाद प्रचारक जी तथा एक बहन कुमारी नीलम को सम्मानित किया गया। प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने उनको शाल एवं वैदिक साहित्य भेंट किया। हासी तालावास कवारी के कई आर्यों ने माल्यार्पण द्वारा भी उनका स्वागत किया। श्रीमती सुनेहरी आर्या एव श्रीमती लज्जावन्ती आर्या ने नीलम को शाल एवं साहित्य भेंट किया। इस स्वागत अभिनन्दन कार्य की लोगो ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रतिदिन प्रातः हवन पर कई नवयुवको ने जनेऊ धारण किए। आर्य विद्वानों के विचारो का लोगों पर अमिट प्रभाव पड़ा। उत्सव में गांव के अतिरिक्त निकट के गांव के नर-नारियों ने भाग लिया। सभा को ४५० रुपए दान दिया गया।

—डा० ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

आर्ष गुरुकुल डिकाडला (पानीपत) का १९वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्ष गुरुकुल डिकाडला (पानीपत) का १९वा वार्षिकोत्व ३०,३१ मार्च व १ अप्रैल ९० को सम्पन्न हुआ। स्वामी प्रेमानन्द, स्वामी जीवनानन्द, जगत् मुनि आदि सन्यासी विद्वान् व पं. चन्द्रभान, श्री नरदेव. नारायणसिंह, राजेन्द्रसिंह आर्य व रामनारायण आर्य भजनोपदेशकों के अतिरिक्त ब्र गार्गी, अनुराधा एवं विदुषी ने भी अपने विचार प्रकट किये। शराब बन्द करो, अंग्रेजी हटाओ तथा गो हत्या बन्द करो सम्मेलन द्वारा सैकड़ों नर-नारियों ने अपनी बात सरकार तक भेजने का प्रस्ताव पास किया। क्षेत्रीय जनता ने नकद व अन्न भूसा आदि से हजारो रुपए का सहयोग दिया।

गुरुकुल, गौशाला व आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय के सचालक ब्र. ओमस्वरूप को निकट भविष्य में जनता द्वारा जीप भेट करने की भी घोषणा की गई।

—ला. रामनिवास परमानन्द
प्रधान गुरुकुल डिकाडला।

आवश्यकता है

आर्यसमाज जीन्द रोड रोहतक को ऐसे संन्यासी अथवा घर से निवृत व्यक्ति की आवश्यकता है जो आर्यसमाज के लिए बाहर से चन्दा एकत्रित करे तथा आर्यसमाज के बाहरी कार्य भी कर सके। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करे। वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा।

—रणजीतसिंह प्रधान आर्यसमाज जींद रोड रोहतक

पुस्तक समीक्षा

नाम—"अग्निहोत्र यज्ञ विज्ञान की दृष्टि में।"
सम्पादक—वाचस्पति मिश्र।
प्रकाशक—स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला मेरठ (उ.प्र.)
मूल्य—दो रुपए पचास पैसे

यज्ञ हमारे विज्ञानवेत्ता ऋषियों द्वारा सुपरीक्षित एक कल्याणकारी दैनिक नैमित्तिक कर्त्तव्य है। उसकी उपयोगिता हमारे जीवन को स्वस्थ, पुष्ट एव सुखमय बनाने मे भोजन एवं औषधि से भी अधिक उपयोगी है। वर्तमान में पर्यावरण आदि विविध समस्याओं मे उलझे हुए विश्व की रक्षा करने का यह एक निरापद अमोघ उपाय है।

श्री वाचस्पति मिश्र जी ने पुस्तक मे काफी ज्ञानवर्द्धक जानकारी दी है। अग्निहोत्र यज्ञ का प्रभाव व्यक्तिगत और सामाजिक पर्यावरण पर शारीरिक और मानसिक असन्तुलन सब पर पड़ता है। पुस्तक मे पर्यावरण, चिकित्सा, कृषि पर यज्ञ के प्रभावों का वर्णन किया गया है।

हमारा सुझाव है कि प्रत्येक विचारशील बुद्धिजीवी इस पुस्तक को मंगवाये और पढ़े। —शेरसिंह प्रबन्धक सर्वहितकारी

महाभारत—

(पृष्ठ २ का शेष)

धर्म की कसौटी है वेद। धर्म की जिज्ञासा रखने वालों के लिए प्रमाण है वेद और वेद का एक मन्त्र है—यद्धन्यं मायिनं मृगं तमु त्व मायया वधीरर्चन्ननु स्वराज्यम। ऋग्वेद १-८०-३। मायावी का माया के द्वारा वध करके अपने स्वराज्य की स्थापना करो, अर्चना करो। इसी प्रकार महाभारत भी कहता है—

मायाविन इमां मायां मायया जहि भारत।
मायावी मायया वध्य सत्यमेतत् युधिष्ठिरः ॥शल्य ३१।६।

हे युधिष्ठिर इस मायावी दुर्योधन की माया को अपनी माया से नष्ट करो, मायावी मनुष्य तो माया से ही वश मे आता है, यह सत्य समझो। तथा मायाविनं तु राजानं माययैव निकृतन्तु। ५८।८ मायावी राजा को माया के द्वारा उखाड दो। यथायोग्य वर्ताव करना अधर्म नही। इसलिए जो समर्थ होने पर भी सर्वप्रकार से धर्मरक्षार्थ प्रयत्नशील नहीं होता, वह पाप का भागी होता है। वास्तव मे परार्थ ही जिसका स्वार्थ है वही पुरुष सत्पुरुषो मे श्रेष्ठ है।

शोक समाचार

ग्राम आनगडा जिला रोहतक के निवासी श्री लेखराम आर्य का गत दिसम्बर मास में ८५ वर्ष की आयु मे बिजली का करन्ट लगने से देहान्त हो गया। वे विनम्र, इमानदार एव मिलनसार व्यक्ति थे। वे भजनों के द्वारा पाखण्ड का घोर विरोध करते थे। भगवान् दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। तथा उनके शोकाकुल परिवार को इस दु.ख को सहन करने की शक्ति दे।

—सत्यवान हुड्डा, सभा रोहतक

शोक समाचार

चौ० हरपत सिंह आर्य रुदडौल निवासी का स्वर्गवास ९-३-९० को हो गया वे कट्टर आर्य समाजी थे। भगवान् उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—मन्त्री आर्यसमाज
रुदडौल जिला भिवानी

अंग्रेजी हटाओ
देश बचाओ

न जाने क्या हो गया ?

(तर्ज—छुप गया कोई रे·········)

सुनता ना आज कोई वेदों के उपदेश को।
न जाने क्या हो गया ऋषियों के देश को॥

१ आर्य था नाम जिनका वो आर्यों से पूछते।
कौन होते आर्य वो किस ईश को पूजते।
होता वेद ज्ञान क्या जाने इस सन्देश को॥

२ जनेऊ और चोटी जिनके धर्म का निशान था।
आज धर्म कर्म सबको व्यर्थ ही मानता।
छाई है अज्ञानता मन में हमेश को॥

३ एक ईश्वर का पूजक था ये जग सारा।
आज लाखों भगवन् बने फिरे मारा मारा।
गुरुओं से मांगे मुक्ति मेटने क्लेश को॥

४ धर्म हमारे की जो सदा जड़ें काटते।
क्या अजीब बुद्धि फिर भी उनके तलवे चाटते।
स्वार्थी ढोंगियों के सुने थोथे उपदेश को॥

५ अपनी भेष भाषा इन्हें नहीं भाती।
ईसाई बनती जा रही प्यारी आर्य जाति।
होश में ना आती जनता अन्तर नहीं लेश को॥

६ तुमको जगाने में हमने क्या कुछ ना किया।
फांसी, छुरे, गोली खाई विष तक भी पीया।
प्रभु ही बचाये अब इस अज्ञानी देश को॥

७ जागो सोने वालो अब तो बहुत देर सो लिए।
जगाते जगाते हम भी परेशान हो लिए।
खोलिये रे आंखें सुनिये 'बलवन्त' ऋषि सन्देश को॥
न जाने क्या हो गया ······

—बलवन्तसिंह आर्य ठसका (अम्बाला)

शोक समाचार

प्रो० ओमकुमार आर्य के पूज्य पिता श्री किशनलाल जी आर्य गांव रुदड़ौल (भिवानी) का लम्बी बीमारी के कारण ५ मार्च ९० को ७६ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। अनपढ़ होते हुए भी उनकी महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज में गहन रुचि थी। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न ०३३०७/७३ रजि. न P/RTK ४०   सृष्टि सवत् १,६६,०८,५३,०६०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए   वैसाख १६, २०४७ वि०

वर्ष १७   अक २१   २८ अप्रैल १९९०   वार्षिक शुल्क २५)   आजीवन शुल्क २५१)   विदेश में ८ पौंड)   एक प्रति ६० पैसे

जीना सीखें

—लेखक हरिदत्त वि०प्र० बीयू १६० विशाखा एन्क्लेव दिल्ली

●

यह संसार पहेली है। इसमें दो सत्ताएं ऐसी विद्यमान प्रतीत होती हैं जो इसे देखने, समझने और सोचने का सामर्थ्य रखती हैं। पहली सत्ता ऐसी है जो इसके कण-कण में व्यापक है और उसी ने सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थल से स्थूल पदार्थों की रचना की है। यह सत्ता अगोचर अर्थात् इन्द्रियों से ग्रहण नही की जा सकती, केवल आत्मा (दूसरी सत्ता) ही इसे अनुभव कर सकती है। यह सत्ता सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र आदि गुणों वाली है जिसके विषय में दूसरी सत्ता (जो इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख, ज्ञान आदि लक्षण वाली और एकदेशी, परिच्छिन्न, अल्पज्ञ, अल्पशक्ति से युक्त है, जिसकी विद्यमानता का अनुभव शरीर के साथ सयुक्त होने पर ही (जिसे शरीर धारण करना अथवा जन्म कहा जाता है) होता है। इसी दूसरी सत्ता का नाम आत्मा (अत सातत्य गमने) अथवा जीव (जीव्यति इति) है। जीवों के शरीर भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। शरीरों के आकार-प्रकार और सामर्थ्य के अनुसार हर जीव कुछ न कुछ निर्माण कर लेता है। इन्ही शरीरों में से जिस जीव को अपने कर्मों के आधार पर मनुष्य का शरीर मिलता है उस में निर्माण करने की अद्भुत शक्ति उत्पन्न की जा सकती है, परन्तु अपने शरीर की रचना करना उसके वश की बात नही। बहुत से मत-मतान्तरों वाले इसे भी शरीर के साथ उत्पन्न होने वाला और देहावसान के साथ ही नष्ट होने वाला मानते हैं। परतु उनके पास इसका निर्माण किस पदार्थ मे होता है? प्रश्न का कोई उत्तर नहीं, इसी प्रकार बहुत से मतवाले इसे उपरिलिखित प्रथम सत्ता का अंश मानते हैं परन्तु वे भी यह प्रश्न किए जाने पर कि अंशी के गुण अंश में क्यों नहीं, मौन हो जाते हैं। अस्तु।

यदि दूसरी सत्ता जिस शरीर को भी पाती है, वह इसे बहुत अच्छा लगता है और उसे कभी छोड़ना नही चाहती। इसीलिए हर प्राणी को यह भय लगा रहता है कि कहीं उसका शरीर कोई नष्ट न कर दे, इसे बचाने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न करता है। भले ही उसे उस में सफलता मिले या नही। इसी से मिलती-जुलती अवस्था हम मानव शरीरधारियों की है। मानव शरीर प्रथम सत्ता की सर्वोत्कृष्ट रचना है। अतः यह जिस जीव को मिल जाता है, वह चाहे तो प्रयत्नों द्वारा जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है। ऐसे जीव बहुत विरले ही होते है जो इस के प्रयत्न करते हैं। अधिकतर मानव इस शरीर को पाकर भोगों को भोगने में ही लगे रहते है और इन्ही के लिए जीना चाहते है। परन्तु जीने के साधनों की जानकारी के अभाव मे और जीवन के उद्देश्य से परिचित न होने के कारण, 'दुनिया में अगर आए हैं तो जीना ही पडेगा' जीते हैं और असमय ही शरीर को छोड जाते हैं, जबकि मनुष्य की आयु कम से कम १०० वर्ष मानी जाती है और इसे चार सौ वर्ष तक बढाया जा सकता है। पौराणिक जगत् इसे हजारों वर्ष की मानता है। जो असम्भव है। जीना और मरना कई प्रकार का होता है। कुछ तो कदम-कदम पर और क्षण-क्षण में मरते रहते है। कुछ रूप पर, कुछ स्वरों पर, कुछ सुगन्ध पर और कुछ स्पर्श पर मर जाते हैं। इसी प्रकार कुछ केवल अपने लिए, कुछ परिवारों के लिए, कुछ ग्राम और नगर के लिए, कुछ राज्य और देश के लिए तथा विश्व भर के लिए जीते है। दूसरो के लिए जीने वालों को अपने लिए जीने वाले जीने नही देते। इस प्रकार जीवन-मरण प्रायः दूसरो के हाथ में होता है। फिर भी सामान्यतः जीने के लिए सब से आवश्यक साधन है कर्मशील बने रहना। इसीलिए वेद ने आदेश दिया है कि कुर्वन्नेवेह कर्माणिजिजीविषेत् शतं समाः। अर्थात् मनुष्य कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। कर्म करने के लिए जहां स्वस्थ, नीरोग और बलवान् शरीर आवश्यक है क्योंकि 'शरीर माद्यम् खलु धर्म साधन' यह वैद्यक ग्रथ का कथन है, वहां सर्वप्रथम आखों में देखने की शक्ति होना अनिवार्य है। बिना इस शक्ति के कर्म करना बहुत कठिन है इसीलिए जीने से पहले देखने की शक्ति प्रदान करने के लिए वैदिक सध्या में प्रार्थना की गई है कि "पश्येम शरदः शतम्" जीवेम शरदः शतम्।' जो दोनों समय की जाती है देखने की उपयोगिता को बहुत महत्व देती है। देखने की शक्ति के अभाव में मनुष्य पराधीन हो जाता है और पराधीन को सुख नही होता। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है कि 'सर्वं परवशं दुःखम्' जिसे तुलसीदास ने 'पराधीन सुख सुपनेहु नाहिं' शब्दों मे व्यक्त किया है। इसलिए जीने के लिए देखने की शक्ति का होना परमावश्यक है। देखने की शक्ति होने पर यह जानना भी आवश्यक है कि आंखों से क्या और कैसा देखें। जो केवल देखता है वह तो पशु के समान माना जाता है 'पश्यति इति पशुः' देखने का तरीका नीतिकारों ने बताया कि 'मातृवत्परदारेषु लोष्ठवत् आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः॥' यह तरीका तो पण्डितों के देखने का बताया कि दूसरों की पत्नियों को माता की दृष्टि से देखें। इसी को ध्यान में रखते हुए ही तो सुमित्रा ने वन को जाते हुए लक्ष्मण को आदेश दिया था कि 'माम् विद्धि जनकात्मजाम्।' दूसरो की वस्तुओं को मिट्टी के ढेले के समान देखें। जिस प्रकार पडे हुए मिट्टी के ढेले को उठाने की मन में इच्छा भी उत्पन्न नही होती, इसी प्रकार किसी के भी पदार्थ को, चाहे वह कितना ही मूल्यवान्, सुन्दर, उपयोगी क्यों न हो, लेने की इच्छा न करना और सभी प्राणियों को अपने सदृश समझना, जसा कि मनु जी ने कहा कि समदर्शी ब्राह्मण, चाण्डाल, श्वपच, गौ, हाथी और कुत्ते आदि को भी अपने समान समझते है। यह बात तो हुई कि कैसे देखें। क्या देखें, यह वेद बताता है— भद्रं पश्येम अक्षभिः' अर्थात् आखो से भद्र ही देखें यह भद्र क्या है? भद्र कहते है कल्याणकारक को अर्थात् जिसके देखने मे उत्तम गुणों की प्राप्ति हो, श्रेष्ठ कर्मों को करने की प्रेरणा मिले और स्वभाव उत्तम बने। (क्रमशः)

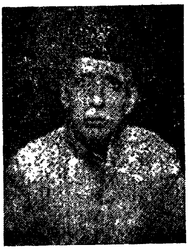
बालसमन्द (हिसार) हरयाणा का सपूत,

हैदराबाद मुक्ति संग्राम के इतिहास का स्वर्णिम किन्तु अज्ञात व्यक्तित्व, उमरी बैंक एक्शन के सूत्रधार,

स्वर्गीय क्राँतिकारी धनराज ईश्वरदास पुरोहित

—प्रा० कुशलदेव शास्त्री, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस महाविद्यालय, नादेड ४३१६०१ (महाराष्ट्र)

"सूरत मे कीरत बडी, बिन पंख उड जाय।
सूरत तो जाती रही, कीरत कबहुँ न जाय॥"
(तुलसीदास)



हैदराबाद स्वाधीनता संग्राम के सेनापति स्वामी रामानन्द जी तीर्थ ने लिखा है कि 'निजामी दमनचक्र जब जनता के लिए असह्य होता जा रहा था, तो ऐसे समय में आर्यसमाज ने इन लोगों का नेतृत्व किया। उस समय जनता का पक्ष लेकर युद्ध करने के लिए आर्यसमाज नामक संस्था सर्वाग्रणी रहती थी[1]। १९३८-३९ में इसी आर्यसमाज द्वारा संचालित आर्य सत्याग्रह से उमरी (त० भोकर जिला नादेड) के श्री धनराज ईश्वरदास पुरोहित भी प्रभावित हुए और उन्होंने १९४० में 'आर्यसमाज उमरी' की स्थापना की[2]।

धन जी पुरोहित निष्ठावान् आर्यसमाजी और निष्ठावान् कांग्रेसी थे इसलिए जब उमरी में 'महाराष्ट्र परिषद्' का २९, ३० तथा ३१ मई १९४१ को तीसरा अधिवेशन हुआ तो उन्होंने उस अधिवेशन मे अपना सक्रिय योगदान दिया। इस समय आर्यसमाजी और स्टेट कांग्रेस के कार्यकर्ता एकरूप होकर निजाम सत्ता से संघर्ष कर रहे थे। सन् १९४४ मे राष्ट्रीय भावनाओ के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से पुरोहित जी ने आर्यसमाज की ओर से एक पाठशाला भी खोली[3]। उक्त संस्थाओ के समारोहों मे समय-समय पर पं० बंसीलाल जी व्यास तथा प० नरेन्द्र जी आदि राष्ट्र-भक्त ओजस्वी वक्ता और भजनोपदेशक पधारते रहे, जिस से उमरी परिसर के नवयुवको की देश-भक्ति दिन-प्रतिदिन और अधिक प्रबल-प्रबलतम होने लगी थी।

उस समय निजामी रजाकारों का आतंक हैदराबाद राज्य के नगर-नगर और गाव-गाव मे बुरी तरह फैल चुका था। भला फिर उमरी गाव तो उस आतंक से कैसे अछूता रहता? १९ दिसम्बर १९४६ की शाम, एक वैश्य दुकानदार और रजाकार ग्राहक मे एक दियासिलाई ६ के स्थान पर सात हाली (पैसे) मे बेचने के कारण कहा-सुनी हो गई। आर्यसमाज उमरी के मन्त्री दिगम्बरराव उत्तरवार बीच मे पडे तो रजाकारों को सहन नही हुआ। शाब्दिक संघर्ष के बाद हाथापाई हुई और फिर दोनों पक्षों के व्यक्तियों ने बन्दूकें तान ली। मौका पाकर हैदराबाद स्टेट बैंक उमरी सशस्त्र चाउस अरब प्रहरी ने पीपल की ओट से दिगम्बरराव उत्तरवार के छोटे भाई दत्तात्रय पर बन्दूक दाग दी। दत्तात्रय वहीं पर शहीद हो गया[4]। उत्तरवार के घर में शोक छा गया। दत्तात्रय का विवाह ८ मास पूर्व ही हुआ था। श्रीमती दत्तात्रय उत्तरवार के लिए तो सारा संसार ही सूना हो गया।

"अभी तो मुकुट बंधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ।
खुले भी न थे लाज के बोल खिले भी चुम्बन-शून्य कपोल॥
हाय! रुक गया यही संसार, बना सिन्दूर अंगार!
वात-हत-लतिका वह सुकुमार, पड़ी थी छिन्नाधार!![5]"

जलती हुई चिता के पास उमरी के नौजवानों ने जहां शहीद दत्तात्रय का बदला लेने का प्रण किया, वहा हैदराबाद मुक्ति आंदोलन को और अधिक तीव्र करने का भी संकल्प लिया। उमरी आर्यसमाज के संस्थापक धनराज पुरोहित ने इस आंदोलन के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने की ठान ली। आंदोलन के लिए जब स्वतन्त्र आकाशवाणी केन्द्र स्थापित करने की बात उठी तो पुरोहित जी ने उसके लिए दस हजार रुपए प्रदान किए। मराठवाड़ा की जनता के लिए यह आकाशवाणी केन्द्र मुम्बई के बोरीवली नामक विभाग में एक निर्जन स्थानीय एकाकी बंगले में शुरू हुआ और ५-६ महीने तक चलता रहा। जब इस बात के लक्षण दिखाई देने लगे कि हैदराबाद का संघर्ष निःशस्त्र प्रतिकार तक ही सीमित न रहेगा अपितु सशस्त्र प्रतिकार के भी क्षण आएंगे। तब इस सन्दर्भ में उमरी बैंक लूटने की योजना बनी। उसमें जहा शहीद उत्तरवार के बलिदान की प्रतिशोध की भावना काम कर रही थी वहा इस लूट से हैदराबाद मुक्ति सैनिकों के लिए शस्त्रास्त्र प्राप्ति कराने का भी प्रयोजन था। पर बैंक लूटने के लिए भी तो शस्त्रास्त्रों का होना जरूरी था, फिर एक बार धन जी पुरोहित सामने आए, और उन्होंने इस बार शस्त्रास्त्रों का संग्रह करने हेतु उदार हस्त से ५५ हजार रुपए प्रदान किए। इस तरह धीरे-धीरे शहीद दत्तात्रय का बदला लेने को और हैदराबाद आंदोलन को और अधिक तीव्र करने की योजना साकार होने लगी।

धन जी पुरोहित स्वयं आठ-दस लाख की निजी सम्पत्ति रखने वाले व्यापारी थे और लगभग एक-डेढ़ वर्ष से उमरी बैंक की आर्थिक स्थिति का जायजा ले रहे थे। बैंक के सभी व्यवस्थापकों को अपने घर पर जलपान के लिए निमन्त्रित कर पुरोहित जी ने पहले यह जान लिया कि बैंक मे सर्वाधिक पैसा किस समय रहता है और एक साथ १ ही समय में, अधिकतम कितनी रकम प्राप्त हो सकती है तथा किस समय उसे डाका डालकर प्राप्त किया जा सकता है। पुरोहित जी की उपस्थिति मे ही उमरखेड शिविर में उमरी बैंक योजना को अन्तिम रूप दिया गया। योजनानुसार ३० जनवरी १९४८ को उमरी स्टेट बैंक पर धावा बोला गया। बैंक पर धावा बोलने वालों में अपने अन्य साथियों के साथ श्री धन जी पुरोहित भी सम्मिलित थे। बड़े ही साहस के साथ उन्होंने बैंक से तत्कालीन हाली सिक्कों के रूप मे—बीस लाख तरेसठ हजार सात सौ उन्नीस रुपए, पन्द्रह आने वसूल किए[7]। जब ये पैसा सुरक्षित विदर्भ (तत्कालीन मध्यप्रदेश) की सीमा मे पहुंचा तो कुछ साथियों ने धन जी से अनुरोध किया कि इस में से तुमने हैदराबाद मुक्ति-संग्राम के लिए जो निजी धन लगाया है, वह वापस ले लो। परन्तु धन जी ने लेने से इन्कार कर दिया। इस असाधारण त्यागवृत्ति का वर्णन करते हुए—आचार्य खडेराव जी कुलकर्णी ने लिखा है— (शेष पृष्ठ ४ पर)

१- हैदराबाद स्वातन्त्र्य संग्रामाच्या आठवणी. स्वामी रामानन्द तीर्थ
२- मुक्ति संग्राम मे नादेड : श्यामलाल राठौर : पृ. ६१
३- मुक्ति संग्राम मे नादेड . श्यामलाल राठौर . पृष्ठ ३०
४- हैदराबाद का मुक्ति संग्राम : कुछ अज्ञातात पृष्ठ आचार्य खडेराव कुलकर्णी १६
५- पल्लव—परिवर्तन : सुमित्रानन्दन पंत : पृ० ८३
६- हैदराबादचा स्वातंत्र्य संग्राम आणि मराठवाडा : अनन्त भालेराव : ३६४—३६५
७- हैदराबादचा स्वातंत्र्य-संग्राम आणि मराठवाडा : अनन्त भालेराव पृ ३८२

पंजाब समस्या अंधी गली में

—प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

पंजाब की समस्या के समाधान का रास्ता ऐसा लगने लगा है कि फिलहाल जैसे बन्द सा हो गया है। अकालियों में वैसे तो दलों की घनी दलदल है, परन्तु एक बार यदि उन में से किसी धड़े का अगुवा कोई उग्रवादी या अतिवादी बात कह देता है तो उसकी होड़ में सब अपने-अपने ढंग से वही बात बोलने लग जाते हैं। यदि सिमरनजीत सिंह मान ने पंजाब में मई से पहले विधान सभा के चुनाव की बात कहदी तो माने हुए नरम पन्थी नेता जनरल अरोडा ने भी वही बात कह डाली और बादल के साथियों ने भी पीछे रहना ठीक नहीं समझा। बादल, बरनाला और अरोडा अच्छी तरह जानते हैं कि आतंकवादियों के सामने आज की अवस्था में वे टिक नहीं सकते और इस माहौल में वही चुनकर आएंगे जिनको आतंकवादी चाहेंगे। इनने के बाद वे क्या बोली बोलेंगे, यह तो सिमरनजीत सिंह मान अभी से बोल गए। वे कह रहे हैं कि पंजाब में जनमत संग्रह करवाया जाए यह जानने के लिए कि पंजाब भारत का अंग रहना चाहेगा कि नहीं। यदि इनके साथियों का बहुमत आ जाए तो वे उसी को जनमत संग्रह मानकर मनचाही घोषणा कर सकते हैं।

यह सब जानते हैं कि पंजाब के सिख और हिन्दू पंजाब को भारत का अभिन्न अंग मानते हैं और सदा मानते रहेंगे। परन्तु आतंक और भय के कारण जन साधारण के लिए निर्भय होकर मतदान करना सम्भव नहीं। तब क्या इस निहत्थी जनता को चन्द हथियारबन्द पथभ्रष्ट नवयुवकों के रहम पर छोड़ना उनके साथ और देश के साथ विश्वासघात नहीं होगा? क्या मूक अधिसंख्यक जनता को भय और आतंक के कारण मुखर न हो पाने की इतनी बडी सजा देना उचित होगा? यह सब जानते हुए भी तथाकथित नरमपन्थी अकाली नेता यदि राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाए जाने और हालात सुधरने तक चुनाव न करवाने का समर्थन करने से डरते हैं, तब सरकार किस से बात करे और कोई समाधान कैसे निकले। जो समाधान निकले भी तो उसके कार्यान्वियन का जिम्मा किसको सौंपें? समाधान का रास्ता अन्धी गली जैसा है आगे अंधेरा नजर आता है और गली भी बन्द नजर आती है।

उधर पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर और पंजाब में पाकिस्तान घुसपैठियों तथा पंजाब और कश्मीर के दिशा भ्रमित तथा उनके द्वारा जबरदस्ती उठाए हुए नवयुवकों को प्रशिक्षित करने और उनको हथियार तथा दूसरे साधन देकर इन इलाकों के बेकसूर लोगों को तथा सुरक्षा दलों के जवानों को मारने के लिए हजारों की संख्या में भेजा जा रहा है। सब प्रमाण उपस्थित करने पर भी अमरीका अभी यह मानने को तैयार नहीं कि पाकिस्तान भारत के आन्तरिक मामलों में दखल ही नहीं दे रहा, बल्कि उसने भारत के विरुद्ध गुरेला युद्ध छेड रखा है। पाकिस्तान के रवैये के विरुद्ध पाकिस्तान के दूतावास के सामने हिन्दू और सिख मिलकर प्रदर्शन कर रहे है तथा प्रधानमंत्री भी पाकिस्तान को अपनी शत्रुता की गतिविधियों से बाज आने की चेतावनियां भी दे चुके है। अमरीका स्वयम् तो हथियारों से और अरबों रुपए से मदद कर ही रहा है, रूस को मध्यस्थ बनाकर भारत की मदद करने से एक प्रकार से रोक ही रहा है और उसे तटस्थ करने की कोशिश कर रहा है।

पंजाब में आतंकवादियों के साथ-साथ सिमरनजीत सिंह मान का धड़ा भी भारत पाक युद्ध छिड़ने पर यदि अन्दर से तोड़-फोड़ की नीति अपना ले तो भारत के लिए मुसीबत खडी कर सकता है। पाकिस्तान में मियां नवाज शरीफ मुख्यमन्त्री पंजाब रावल पिण्डी मे प्रशिक्षण केन्द्र चलाकर कश्मीर और पंजाब के हजारों नवयुवकों को प्रशिक्षण देने में लगा हुआ है। वह एक तरफ भारत की ओर दूसरी तरफ बेनजीर भुट्टो को युद्ध के लिए मजबूर करने में लगा हुआ है। इस स्थिति का लाभ उठाकर ही शायद सिमरनजीत सिंह मान नित नई शर्तें पेश करता जा रहा है। अपनी गतिविधियों से उसने बातचीत का रास्ता एक ढंग से बन्द कर दिया है। यदि प्रकाशसिंह बादल तोहड़ा और बरनाला आदि मिलकर पूरी शक्ति के साथ सिख जनता को मजबूत नेतृत्व देने के लिए खुलकर मैदान मे उतर आए और आतंकवादियों और सिमरनजीत सिंह मान को सिख जनता से अलग थलग करने में जी जान से जुट जायें तो वे पंजाब का प्रतिनिधित्व करके बातचीत करके हल निकालने के रास्ते को खोल सकते है।

क्या वे निकट भविष्य में ऐसा करने के लिए अपने आपको और सिख जनता को तैयार कर पाएंगे, इसमें सन्देह है। जब तक यह सन्देह की स्थिति बनी रहेगी तब तक पंजाब समस्या अंधी गली से बाहर नहीं निकल पाएगी।

हरयाणा के आर्यसमाजों के उत्सव

आर्यसमाज असावटा जिला फरीदाबाद ५, ६ मई
बालानाथ योगाश्रम आदमपुर डाढी जि० महेन्द्रगढ ६ से ६ मई
आर्यसमाज नारग (हिमाचल प्रदेश) ११ से १३ मई
" लोहारू जि० भिवानी १२, १३ "
" नारायणगढ जि० अम्बाला १७ से १९ मई
" भुगारका जि० महेन्द्रगढ १८ से २० मई
" कयोडक गेट कैथल १८ से २० मई
" मेवाना जि० रेवाड़ी १८ से २० मई
" कोण्डल जि० फरीदाबाद १८ से २० मई
मा० ताराचन्द आर्य नारनौल (अभिनन्द समारोह) २४ से २८ मई

सत्यवीर शास्त्री वेदप्रचाराधिष्ठाता

शराब के ठेके को लेकर रोष

(नवभारत टाइम्स)

हांसी २५ अप्रैल (निस)। निकटवर्ती गाव सिसाय मे शराब के ठेके को लेकर ग्रामीणों मे अत्याधिक रोष व्याप्त है। पिछले दिनों उक्त गाव की दोनो पचायतों ने सर्वसम्मति से गाव मे ठेका खुलवाने का विरोध किया था। इसी विषय मे गाव की दोनों पंचायतो के प्रतिनिधि मुख्यमन्त्री ओमप्रकाश चौटाला से ७ अप्रैल को हिसार में भी मिले थे। मुख्यमन्त्री जी ने जाच करवाने का आश्वासन दिया था। पता चला है कि जिला पुलिस अधिक्षक ने भी गाव की पचायत बुलाई थी। शराब का ठेका वैसे तो बन्द है, परन्तु ठेकेदार ग्रामीणो पर अपने पैसे वापस करवाने के लिए दबाव डाल रहा है।

ग्रामीणो मे रोष है कि सरकार ग्रामीणों के न चाहते हुए भी दारू का ठेका खुलवाने के लिए अडी हुई है। ग्राम पचायत के एक प्रतिनिधि ने सवाददाता से बातचीत करते हुए बताया कि ठेके को लेकर पूरे गाव का माहौल बिगडा हुआ है। उनका आरोप है कि ठेकेदार राजनैतिक रूप से प्रभावी है। सरकार सिसाय गांववासियो के इतना विरोध के बाद भी ठेका हटाने का छोटा सा निर्णय नही दे पाई है।

पटवारी की आवश्यकता

हरयाणा भर में स्थित सम्पत्तियों की सुरक्षा करने तथा उर्दू से हिन्दी मे रिकार्ड तैयार करने हेतु एक सेवा निवृत पटवारी की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें।

—सूबेसिंह सम्पत्ति सुरक्षाधिकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक
फोन: ७३५५३ - ७४८१२

स्व० क्रांतिकारी धनराज——

(पृष्ठ २ से आगे)

'हे उमरी के भामाशाह ! इतिहास तुम्हें चाहकर भी न भुला सकेगा। मां भारती की नजरों में तुम सदा गौरवान्वित रहोगे। तुम्हारे त्याग का ऊंचा आदर्श आनेवाली नस्लों को सदा मार्गदर्शन करता रहेगा।' महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध समीक्षक प्राध्यापक नरहर कुरुंदकर के अनुसार —"समस्त भारत के लगभग शतवर्षीय स्वातंत्र्य आंदोलन में इस बैंक प्रकरण के समानांतर अन्य कोई दूसरा प्रकरण नहीं है। जिन स्थानों पर भारतीय स्वयंसेवकों ने थाने अथवा बैंक लूटने का प्रयत्न किया उनमें से लगभग प्रायः सारे प्रयत्न असफल हो गए। किसी न किसी कारण से उन्हें बैंक का पैसा बाहर निकालने में असफलता प्राप्त हुई दो-चार स्थानों पर यदि उन्हें यह पैसा अपने कब्जे में लेने में यश प्राप्त भी हुआ, पर कब्जे में आया पैसा कभी-कभी वे सुरक्षित स्थान पर नहीं पहुंचा पाये। आखिर तक यह पता नहीं चल पाया कि उस राशि का क्या हुआ क्योंकि उसका हिसाब कभी आने वाले समय में प्रस्तुत नहीं किया जा सका, पर उमरी बैंक की उक्त घटना इन सब घटनाओं की तुलना में अपवादात्मक रूप में हमारे सामने उभरकर आती है। पुणे की एक लेखा निरीक्षक कंपनी ने इस हिसाब की जांच की और कांग्रेस के तत्कालीन महासचिव शंकरराव देव के समक्ष उन्होंने 'प्रत्येक पैसे का हिसाब है' का प्रमाण-पत्र प्रदान किया। प्रमाणित हिसाब की एक प्रति लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल को भी दी गई।[9]

हैदराबाद के इस सशस्त्र युद्ध के लिए महात्मा गांधीजी ने अपनी अहिंसा को ताक में रखकर, अपवादात्मक रूप में क्यों न हो, अपनी अनुमति प्रदान कर दी थी। यह एक संयोग ही था कि जिस दिन महात्मा गांधी शहीद हुए उसी दिन उमरी बैंक कांड सम्पन्न हुआ। महात्मा जी की शहादत के कारण इस उमरी कांड की घटना को तत्कालीन समाचार पत्रों में विशेष उल्लेखनीय स्थान नहीं मिल पाया।

स्वाधीनता के यज्ञ में अपना सर्वस्व होम देने वाले आजादी के परवाने धन जी पुरोहित की स्वातंत्र्योत्तर काल में आर्थिक दृष्टि से बहुत ही दुर्वस्था हुई। जिनके पास लाखों की संपत्ति थी, उनके पास अब केवल तन-बदन पर धारण किये सो कपड़े ही शेष रह गये। जीविकोपार्जन के लिए ट्रक-होटल चलाने, रूई का व्यापार तथा वस्त्रादि बेचने के अनेक उपाय किये, पर कुछ न कुछ ऐसे कारण बनते गये कि व्यापारिक दृष्टि से उन्हें सफलता न मिल पायी। प्रा. नरहर कुरुंदकर के शब्दों में—"दस-बारह लाख की संपत्ति रखने वाला यह आर्यसमाजी पूर्णतया निर्धन हो गया[10]" एक बार जो गाड़ी पटरी पर से उतरी तो फिर ठीक ढंग से पटरी पर न आ पायी। खानाबदोश हो उन्होंने कलकत्ता, गुजरात और राजस्थान की खाक छानी, पर फिर भी कभी अपने स्वाभिमान पर आंच न आने दी।

स्वाधीनता संग्राम की रजत जयंती के अवसर पर धन जी पुरोहित को उत्तर भारत से उमरी बुलाया गया और वहां उनका प्रकट सम्मान किया गया। पर उनका यह कहना रहा कि— आप लोगों द्वारा दी जाने वाली निधि मैं नहीं लूंगा। मैं लाखों रुपये कमाने वाला और कार्यकर्त्ताओं को संभालने वाला व्यक्ति रहा हूं। मेरे भाग्य ने पलटा खाया है, मैं अब अपने गांव में रहकर मेरा होटल चलाते हुए शेष जीवन बिताऊंगा, मुझे किसी और चीज की आवश्यकता नहीं है, और न ही मेरी कोई राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा है।' एक अन्य समारोह में भी उमरी परिषद् की ओर से महाराष्ट्र सरकार के तत्कालीन मंत्री माननीय श्री शंकरराव जी चव्हाण के करकमलों द्वारा 'उमरी बैंक एक्शन के सूत्रधार' के रूप में श्री धन जी पुरोहित को सम्मानित एवं प्रमाणित किया गया।

धन जी पुरोहित का जन्म हरयाणा प्रांतीय हिसार जिले के बाल समंद गांव में सन् १९१४ में हुआ था। उमरी स्थित एम्प्रेस मिल के मैनेजर श्री हीरालाल के रिश्तेदार होने के कारण इन्होंने भी उमरी को अपनी कर्मभूमि बनाया। हीरालाल जी के असामयिक निधन के बाद एकमात्र रिश्तेदार होने के कारण अनायास ही आप उनकी सपत्ति के मालिक बन गए। लगभग इसी समय आपने हिसार के शिवदत्त राय फतहचंद की आढत की दुकान का भी उमरी में एक पार्टनर के रूप में संचालन किया। शास्त्रीय आदेश है-शतहस्त समाहार: सहस्रहस्त संकिर.=सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से बांट दो। पुरोहित जी ने इस वेदादेश को अपने जीवन में क्रियात्मक रूप प्रदान किया। जिस प्रकार भामाशाह की सहायता ने महाराणा प्रताप को अत्याचारी यवनों से संघर्ष करने की क्षमता प्रदान की थी, उसी प्रकार धन जी पुरोहित की उदार सहायता ने भी हैदराबाद मुक्ति आंदोलन के सैनिकों को निजामी आतंक से टकराने का अटूट धैर्य और अद्भुत बल प्रदान किया था।

खेद है कि ऐसे उदार महामानव का २७ जनवरी १९९० को सूर्यास्त के समय दुःखद निधन हो गया। वे ७६ वर्ष के थे। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम क्षण —'बी—२१३—जनता कालोनी, जयपुर (३०२००४), राजस्थान में बिताए।' उन के परिवार में अब उनकी ३ संतानें विद्यमान हैं—अमरनाथ, राजेन्द्र और पुष्पा।

दुनियादार व्यक्ति धन जी पुरोहित जैसे व्यक्तियों को जल्दबाज, अधीर, आदर्शवादी, लुटेरे, डाकू न जाने किस नाम और किस गाली से विभूषित करना चाहें, पर मैं तो इतना ही कहूंगा वे खाने-पीने, पहनने-ओढने की वस्तुओं का ही व्यापार करने वाले व्यापारी नहीं थे। अपितु वे स्वातंत्र्य के आदर्श उपासक और अपना सर हथेली पर लेकर चलने वाले उदार, जांबाज, बलिदानी व्यापारी थे। काश एक बार तुम उन्हें देख भी लेते तो कृतकृत्य हो जाते। उमरी बैंक प्रकरण के सूत्रधार क्रांतिकारी स्व. धनराज ईश्वरदास पुरोहित को राष्ट्रकवि रामधारी सिंह जी दिनकर के शब्दों में हार्दिक श्रद्धांजलि और नमन।

"दुःखी स्वयं जग का दुःख लेकर, स्वयं रिक्त सबको सुख देकर,
जिनका दिया अमृत जग पीता, कालकूट उनका आहार।
नमन उन्हें मेरा शत बार।
वीर, तुम्हारा लिये सहारा, टिका हुआ है भूतल सारा,
होते तुम न कहीं, तो कब का उलट गया होता संसार।
नमन उन्हें मेरा शतबार।"

९- हैदराबाद विमोचन आणि विसर्जन . नरहर कुरुंदकर : पृ० १८४
१०- ,, ,, ,, ,, १८५

कर्मयोगी श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को सन्देश

किसका कौन सम्बन्धी अर्जुन, यू ममता का घेरा सै।
आंख खोलकर देख लिये कति, आवागमन का फेरा सै।
शरीर तो यू नाशवान् दखे, जीव अनादि हो सै।
किये कर्म का फल भोगे, पर करने में आजादी हो सै।
पांचां तैं बरबादी हो सै, तूं कित विचार लेरा सै।१।
मोह में फंस ग्या बिना ज्ञान तेरे लायक कहानी कोन्या।
संयम में रहके करते जाना तनै बात पिछानी कोन्या।
मतलब लाभ व हानि कोन्या करना फर्ज तेरा सै।२।
फल इच्छा को छोड़ तोड़ जो भ्रम कोट का ताला सै।
धर्म अधर्म की तरफ निगाह कर तू समझ ले आड़ा सै।
सब योग जोग या हे माला सै कर विश्वास कहन मेरा सै।३।
कपड़े की ढ़ाला चोला बदल दे न्यू जीव कर्म गत हो सै।
एक शरीर छोड़ ले धार दूसरा या वाणी सदा सत हो सै।
कहत जयसिंह किसकी मरगत हो सै संयोग वियोग सेहरा सै।४।

प्रो. शेरसिंह सभा प्रधान के वेद-प्रचार-प्रसार हेतु तूफानी दौरे हेतु सोनीपत द्वारा बधाई

श्रद्धेय श्री प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदवाणी के प्रचार एवम् प्रसार हेतु जिस प्रकार तूफानी दौरे किए जा रहे हैं उससे महर्षि दयानन्द के स्वप्न साकार होंगे। प्रो० साहब की इच्छा है कि वेदप्रचार घर-घर तक हो। यह तभी सम्भव है यदि हम इनके प्रचार कार्य में शहरों के अतिरिक्त ग्राम-ग्राम में पहुँच कर सहयोग दें। सभी आयसमाजो से निवेदन है कि अपने प्रचार कार्य में तेजी लाएं। विभिन्न सामाजिक कुरीतियों और अन्ध-विश्वासो का निवारण केवल वेदप्रचार से ही सम्भव है। सच्ची शांति वेदों के स्वाध्याय से ही मिल सकती है। सोनीपत की सभी आर्यसमाजें एवम आर्य संस्थायें सभा प्रधान प्रो० शेरसिह के इस अभियान की सराहना करती है तथा उन्हें बधाई देते हुए भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि उनका मार्ग-दर्शन दीर्घकाल तक मिलता रहे। परम पिता परमात्मा उन्हें दीर्घायु, स्वस्थ एवम् निरोगी काया, असीम शक्ति प्रदान करे।

सोनीपत जिला की सभी आर्यसमाजो से अपील है कि वेदप्रचार के कार्यक्रम अधिक से अधिक रखें तथा इनकी सूचना जिला स्तर तक भेजी जाए। विनीत —हरिचन्द स्नेही

मण्डल पति आर्य वीरदल सोनीपत,
संयोजक जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत।
महामन्त्री आर्यसमाज शाति नगर सोनीपत,
नगर मन्त्री विश्व हिन्दू परिषद् सोनीपत
१८/५५ भगतपुरा सोनीपत हरियाणा

वैदिक यतिमंडल की बैठक

वैदिक यतिमण्डल के सभी माननीय यतियों की सेवा में निवेदन किया जाता है कि यतिमण्डल की बैठक दिनाक २६, २७, २८ मई को आर्यसमाज मन्दिर आबू पर्वत, जिला सिरोही (राजस्थान) में सम्पन्न होगी। इस अवसर पर वहा आर्यसमाज का उत्सव एवम् श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के संरक्षण में आर्ष गुरुकुल का शुभारम्भ भी होगा।

दिल्ली से अहमदाबाद जाने वाली रेल में आबू रोड़ स्टेशन पर उतर कर बस द्वारा आबू पर्वत पहुंचा जा सकता है। श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने प्रस्ताव किया है कि जो यति मार्गव्यय वहन न कर सके, उन्हें मार्ग व्यय भी दिया जाएगा, कृपया अवश्य पहुंचे।

—सुमेधानन्द मन्त्री, वैदिक यतिमण्डल दयानन्दमठ, चम्बा

धूम्रपान पर प्रतिबन्ध

नई दिल्ली, २३ अप्रैल (प्रट्र)। सरकार ने धूम्रपान पर सीमित प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय किया है। यह निर्णय कुछ चुने हुए सार्वजनिक स्थलों पर लागू होगा। प्रतिबन्ध के अन्तर्गत अस्पतालों, डिस्पेंसरियों और अन्य स्वास्थ्य केन्द्रों, शिक्षा संस्थानों, सम्मेलन कक्षों, वातानुकूलित बसों और घरेलु उड़ानों में धूम्रपान की अनुमति नहीं दी जाएगी।

धूम्रपान पर प्रतिबन्ध लगाने का यह प्रस्ताव पर्यावरण मत्रालय ने प्रधानमन्त्री को भेजा था, उन्होंने इसे स्वीकृति दे दी है।

प्रधानमन्त्री ने निर्देश दिया है कि सीमित प्रतिबन्ध लगाने के निर्णय का कडाई से पालन किया जाए। इसके साथ ही पर्यावरण एव स्वास्थ्य मन्त्रालय लोगों को धूम्रपान से पर्यावरण और स्वास्थ्य पर पडने वाले कुप्रभावों के बारे मे भी आगाह करे। उन्होंने कहा है कि लोगों में जागृति पैदा किए जाने के बाद प्रतिबन्ध को अन्य सावजनिक क्षेत्रो पर भी लागू किया जा सकेगा। (नवभारत टाइम्स)

ग्राम उमरा (हिसार) में शराब के ठेके पर विधिवत् धरना आरम्भ

सातबास के प्रमुख गाव उमरा में गत वर्ष मिन्नी ठेका खोला इस बार बगैर पंचायत के पूछे सरकार ने साढे चार लाख का ठेका विधिवत खोल दिया। गत दिनों इस बारे सारा गांव एकत्रित हुआ। और गांव में पूर्ण शराबबन्दी लागू की साथमें फौजी कार्डों की भी पूर्ण शराब बन्दी लागू की। जो शराब पीएगा या बेचेगा उस पर सवा रुपया जुर्माना तथा चौपाड़ एव चौक की सफाई कर टोकरी सिर पर उठा गांव से बाहर डालेगा। बाद में गाव का एक शिष्ट मण्डल मुख्यमन्त्री ओमप्रकाश चौटाला से मिला और अपने गांव की शराब बन्दी बारे जानकारी दी तथा गाव से शराब का ठेका उठाने का आग्रह किया। साथ मे गाव में शराब से होने वाले नुकसान से भी अवगत कराया। मुख्यमन्त्री जी ने कहा डी०सी० साहब जाच करेंगे। ३ अप्रैल को गांव की पचायत पुन: एकत्रित हुई, और ४ अप्रैल को विधिवत धरना आरम्भ कर दिया और ठेकेदार को नोटिस दे दिया कि ८ अप्रैल तक ठेका उठा ले वरना हम ठेके को अपने अधिकार में ले लेंगे। यही हुआ। ८ अप्रैल को ऐसा ही किया गांव के लोग ठेके पर गए नौकरों को बाहर निकाल ठेके को ताला लगा दिया। ठेका बन्द है धरने पर प्रतिदिन गांव के दस-पन्द्रह लोग बैठते है। बाद में ठेकेदार पुलिस लेकर वहा आया। गाव के प्रमुख श्री मागेराम मलिक ने साफ शब्दो मे कह दिया कि हम यहा ठेका नही चलने देंगे। हमारी लाशो पर ही चल सकता है। वैसे नही। धरने पर बैठने वालों मे प्रमुख श्री बलवन्तसिह आर्य मन्त्री आर्यसमाज उमरा, मा० किताब सिह मलिक, श्री मागेराम मलिक कई पचायत सदस्य तथा चौकीदार आदि है। जब तक ठेका नही उठेगा धरना जारी रहेगा।

ज्ञातव्य है कि सातबास के गाव सुलतानपुर में दो महीने से शराबबन्दी चल रही है वहा शराब बेचने वाले पर पाच सौ रु०, पीने वाले पर दो सो रु० दण्ड तथा बताने वाले को सौ रुपए इनाम दिया जाता है। अब तक लगभग ४हजार रु.जुर्माना एकत्रित हो चुका है। बन्दी विधिवत जारी है। मैंने भी गाव उमरा में जाकर प्रमुखों से बात चीत की साथ मे धरने पर पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया तथा सातबास के ११ गाव की शराबबन्दी बारे शीघ्र ही एक पचायत बुलाने का सुझाव दिया।

ताकि सारे सातबास मे जो अवैद्य तरीके से हासी के ठेकेदार शराब डालते हैं वह भी पूर्ण बन्द हो सके और जो शराब से सातबास में नुकसान एव झगडे हो रहे है वह बन्द हो सके। सातबास के गांव मुहजादपुर के सरपच श्री रामचन्द्र से भी बातचीत की उन्होंने भी कहा कल हमारा गांव एकत्रित हुआ था। आज पुन: एकत्रित होकर शराबन्दी करगे। इस प्रकार शीघ्र ही सातबास की पचायत शराब बन्दी बारे होगी। सरकार को चाहिए कि जनता की भावनाओं की कदर करते हुए गाव उमरा का ठेका तुरन्त बन्द करे और ठेकेदारों की अवैद्य शराब की बिक्री पर रोक लगाए इसी में सरकार एव जनता की भलाई है। अतरसिह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक।

शोक समाचार

महाशय जगन्नाथ आर्य ग्राम शहनाजपुर जिला महेंद्रगढ़ का १३-४-९० को ७० वर्ष की आयु मे स्वर्गवास हो गया परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—म० जगमालसिह वेधड़क

अंग्रेजो हटाओ देश बचाओ

राजस्थानी कसाई बनजारों से २०० गऊवें छुड़ाई

नोलथा (पानीपत) ६ अप्रैल को राजस्थानी कसाई बनजारों से गांव वालों के सहयोग से २०० छोटी बड़ी गऊवे छुड़ाई गई। इन्हीं बनजारों से पहले भी हजारों गऊवे छुड़ाई गई हैं। ये बनजारे मुझे देखते ही भागने लगते है और गऊओं को छोड जाते हैं। सभी गऊवें अच्छी हालत में परन्तु बिना दूध की थी। इसकी सूचना तुरन्त जिला प्रशासन को दे दी गई। ज्ञात हो इन्हीं बनजारों ने हम सात आठ गोरक्षको पर राजस्थान में एक झूठा कत्ल का केस डाल रखा है। भागे हुए बनजारों की तलाश हो रही है। मिलते ही उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया जाएगा।

—ब्र० ओमस्वरूप, अध्यक्ष
गोवंश रक्षा समिति हरयाणा

आदर्श विवाह संस्कार

दिनांक १६—४—९० को श्री रिसलदार इन्द्रसिंह आर्य की सुपुत्री डॉ० यशवन्ती का शुभ विवाह संस्कार डॉ० योगेश के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

विवाह संस्कार आर्यसमाज के वैदिक विद्वान् डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य ने सम्पन्न कराया। संस्कार का बहुत अच्छा प्रभाव रहा। १०१ रु० गुरुकुल झज्जर तथा १०१ रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान दिया। पर्दा प्रथा और दहेज आदि का बहिष्कार किया गया और पंचायतों के नियमों का सत्कार किया गया।

फतेहसिंह भण्डारी, गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

आर्य कन्या विद्यालय सोनीपत का शानदार परीक्षा-परिणाम

पिछले वर्षों की भांति इस पाठशाला की छात्राओं का १९९० का मिडिल परीक्षा परिणाम उत्तम रहा है।

कु. सीमा ६२८ अंक	
कु. सविता ६२८ अंक	कन्याओं में जिले में प्रथम
कु पूजा ६२८ अंक	
कु. वन्दना ६२६ अंक	
कु. कंचन ६२६ अंक	कन्याओं में जिले मे द्वितीय
कु. सोनिया ६२२ अंक	
कु. निशि ६२२ अंक	कन्याओं में जिले में तृतीय

कालांवाली मण्डी (सिरसा) में पारिवारिक सत्संग

१२—४—९० को प्रातः ८ बजे श्री डॉ० नारायणदास के पुत्र के जन्म दिन पर अपने परिवार मे श्री ओ३म्प्रकाश जी वानप्रस्थी द्वारा सध्या, हवन, भजन, प्रार्थना द्वारा बालक को उपस्थित स्त्री पुरुषों ने मिलकर पुष्पों से आशीर्वाद दिया। सभी स्त्री पुरुषों का चाय मिठाई से सत्कार किया गया।

—ओम्प्रकाश वानप्रस्थी वठिण्डा

आर्यसमाज जीन्द शहर का वार्षिक चुनाव

जयप्रकाश प्रधान, ब्रह्मराज उपप्रधान, कर्णसिंह उपप्रधान, मोहन प्रभाकर मन्त्री, प्रो० दयासागर उपमन्त्री, मा० राजबीर सिंह उपमन्त्री, मा० रामचन्द्र गुप्ता कोषाध्यक्ष, मा० रामफल - पुस्तकाध्यक्ष।

आज के दौर में—

नाज सोनीपती

वार ऐसे कजा का भी चल जाए है।
तीर तरकश से जैसे निकल जाए है॥
कोई उलफत के सांचे में ढल जाए है।
कोई नफरत से तेवर बदल जाए है॥
आज के दौर में मछलियों की तरह।
आदमी, आदमी को निगल जाए है॥
आना—जाना है दुनिया में आठों पहर।
कोई आज आए है कोई कल जाए है॥
देर लगती नही है बिगड़ने में कुछ।
जो सम्भल जाए है वह सम्भल जाए है॥
सरफरोशों की सीरत का ले के असर।
मौत सिर पर खड़ी होके टल जाए है॥
न वह दुनिया का है न वह है दीन का।
जो सद्मार्ग से कुछ फिसल जाए है॥
नाज मिलता नही चैन उसको कभी।
अश्क आखों में जो भी मचल जाए है॥

मुक्तक—

आदमी, आदमी का गम खाए।
आदमी, आदमी के काम आए॥
आदमी में यदि हों गुण ऐसे।
आदमी, आदमी न बन जाए?॥

शराब के कारण

भिवानी २२ अप्रैल (निस)। शराब के कारण भिवानी के एक लड़के को शादी के मडप से बिना विवाह के ही वापस आना पड़ा।

विगत दिनों हुई इस घटना में दुल्हा मियां जब अपनी बारात लेकर चले तो वह शराब का दौर शुरू करके चले थे। निकटवर्ती गांव जुई में उन्हें जाना था। वहां पहुंचे तो नशा बढ़ चुका था। लडके के मां बाप ने सोची कि थोड़ी बहुत देर में नशा उतर जाएगा तब लड़की वालों के चलेंगे।

बताते हैं कि रात के दो बजे से ऊपर का समय हो गया। लड़के का नशा ज्यों का त्यों। लड़की वालों के कानों तक बात पहुंची। उन्होंने आपस में सलाह मशविरा किया। तय हो गया कि अब शादी नही करेंगे। आखिरकार चार बजे फैसला हो गया। बाराती भाडा देकर भिवानी लौट आए। आपस मे बैठकर दान दहेज की रकम लौटा दी गई। (नभाटा)

आर्यसमाज के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज नीलो खेड़ी जिला करनाल

प्रधान—श्री हरदेवदत्त तुली, उपप्रधान—ईश्वरसिंह, ओमप्रकाश मन्त्री—सुभाषचन्द्रसिंह, उपमन्त्री—देवेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष—प्रतापचन्द, पुस्तकाध्यक्ष—मनोहरलाल शर्मा

आर्यसमाज दूबलधन जिला रोहतक

प्रधान—श्री भरतसिंह सरपंच, उपप्रधान—वैद्य सन्तराम, मन्त्री—फतेसिंह, उपमन्त्री—रामसिंह, कोषाध्यक्ष—फूलसिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष—जमादार भरतसिंह, प्रचाराधिष्ठाता-मुखत्यारसिंह

हरयाणा सरकार हिन्दी को प्राथमिकता दे

—नत्थूसिंह यादव गणक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

केन्द्र तथा राज्यों में सत्ता परिवर्तन के बाद, विशेषकर उत्तर भारत में हिन्दी के विषय में एक बार फिर बहस छिड़ गयी है। भारत के सबसे बड़े प्रान्त उत्तरप्रदेश से इसकी शुरुआत हुई है, प्रारम्भ से ही इस प्रदेश का राजनीति में वर्चस्व रहा है,उसी कड़ी में वहां के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव ने बड़ी दृढ़ता के साथ सरकार का सभी कार्य हिन्दी में करने के निर्देश दिए है, अहिन्दी राज्यों के पत्र व्यवहार उनकी मातृभाषा में तथा साथ में हिन्दी अनुवाद लगाने के भी आदेश दिए हैं।

उत्तरप्रदेश के साथ साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री सुन्दर लाल पटवा ने भी ऐसी घोषणा की है। मध्यप्रदेश देश में भूभाग की दृष्टि से सबसे बडा राज्य है, और इसे देश का हृदय भी कहते है। हरयाणा से लगता राज्य हिमाचल जिसके मुख्यमन्त्री श्री शान्ता कुमार ने भी हिन्दी में कार्य करने का अपनी सरकार का सकल्प किया है, उपरोक्त सभी सरकारें बधाई की पात्र है जिन्होंने उपेक्षित राष्ट्रभाषा का गौरव बढाया है।

हरयाणा राज्य इस सत्ता परिवर्तन का मुख्य रहा है, और यहा के पूर्व मुख्यमन्त्री चौ: देवीलाल आज केन्द्र में उपप्रधानमन्त्री पद पर आसीन है। हरयाणा हिन्दी राज्य भी है लेकिन आश्चर्य की बात है यहा के मुख्यमन्त्री चौ० ओमप्रकाश चौटाला ने किसी प्रकार की घोषणा हिन्दी के पक्ष में नही की, हां उनके सहयोगी शिक्षामन्त्री मा० हुकमसिंह ने अवश्य हिन्दी की वकालत की है। हरयाणा का उदय ही हिन्दी के कारण हुआ था। तत्कालीन मुख्यमन्त्री प्रताप सिंह कैरों ने समस्त पंजाब में (जिसमें वर्तमान हरयाणा भी शामिल था) शिक्षा का माध्यम गुरमुखी (पंजाबी) बना दिया था, जिसके विरोध में जन-आंदोलन चल पडा। इस आन्दोलन में सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज, सिद्धान्ती जी, प्रो० शेरसिंह जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी आदि नेताओं ने भाग लिया था। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप कैरों सरकार को झुकना पड़ा और वर्तमान हरयाणा मे शिक्षा का माध्यम हिन्दी बना दिया बाद में यही हिन्दी क्षेत्र हरयाणा राज्य बना।

जिस राज्य का उदय ही हिन्दी से हुआ हो और उस राज्य के राजनीतिज्ञ इस सच्चाई को न माने इससे बडा आश्चर्य क्या होगा ? इसमे समय रहते हरयाणा सरकार को अविलम्ब हिन्दी में काम करने की घोषणा करके हरयाणावासियो का गौरव बढाये।

आर्यसमाज चरखी दादरी का वार्षिकोत्सव

महाशय सुमेरसिंह स्वरूपगढिया की अध्यक्षता मे १३, १४ व १५ अप्रैल को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस उत्सव मे राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, धर्म सम्मेलन एव राष्ट्रभाषा सम्मेलन आदि अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया। महाशय बेगराज, आर्या कोकिला राजबाला तथा कविवर बेचैन के शिक्षाप्रद भजनों तथा कविताओं ने श्रोताजनों के मन को मोह लिया। हरयाणा प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्टाता श्री सत्यवीर शास्त्री ने धर्म सम्मेलन में अपने भाषण में कहा कि महाभारत के युद्ध के उपरान्त भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं वैदिक धर्म प्राय नष्ट हो चुका था। यहा पर धर्म के नाम पर यज्ञो मे पशु बलि ही नही अपितु मनुष्य तक की बलि दी जाने लगी थी। युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने पुनः वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप को ससार के सामने प्रकट किया।

अन्त मे श्री शास्त्री ने अपने व्याख्यान मे, उत्सव मे आये विशेष अतिथि हरयाणा सरकार के शिक्षा मन्त्री माननीय चौ० हुकमसिंह से अपील की कि वैदिक शिक्षा के बिना धर्म के सच्चे स्वरूप को समाज अपना नही सकता एव इसी प्रकार वैदिक शिक्षा के बिना समाज में बढती बुराइयो को नही रोका जा सकता है और वैदिक शिक्षा सस्कृत भाषा के बिना प्राप्त नही की जा सकती है।

शिक्षा मन्त्री महोदय ने उपस्थित आर्य सभासदों को आश्वासन दिलाया कि हरयाणा शीघ्र ही अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करके उसकी जगह राष्ट्रभाषा हिन्दी को देने जा रही है तथा हमारी सरकार सस्कृत भाषा के उत्थान के लिए भी कृतसकल्प है।

१५ अप्रैल को हरयाणा के राज्यपाल माननीय धनिकलाल मंडल जी ने आर्यसमाज के उत्सव पर बोलते हुए कहा कि एक आर्य-समाज पर ही ससार की नजर लगी हुई है क्योंकि इस समाज ने देश की आजादी के लिए अनेक कुर्बानिया दी है और सैंकड़ों वर्षों से सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लडाई लड़ रहा है।

—मन्त्री आर्यसमाज

सभा भजनोपदेशक श्री जयपाल आर्य द्वारा वेदप्रचार

१- दिनांक १५-३-९० से १७-३-९० तक गांव छतहैरा जिला रोहतक में श्री जयपालसिंह आर्य की भजनमण्डली ने वेदप्रचार किया। डा॰ जयसिंह ने प्रचार कार्य में सहयोग दिया तथा। सभा को १७० रु॰ दान दिया।

२- १९-३-९० से २१-३-९० तक गांव ऐंचरा जिला जींद में श्री जयपालसिंह आर्य की भजनमण्डली ने वेदप्रचार किया। गांव के सरपंच श्री जिलेसिह ने गांव से शराब का ठेका उठाने के लिए सभा से सहयोग की मांग की। आर्यसमाज के प्रधान श्री विजयसिंह ने शराब के ठेके के बारे में पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाया। सभा १७५ रुपए दान दिया।

३- दिनाक २२-३ ९० से २५-३-९० तक गांव बाघडू खुर्द जिला जींद में श्री जयपाल आर्य की भजनमण्डली ने वेदप्रचार किया। गांव की चौपाल में यज्ञ किया गया तथा दस नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किए। शराब व दहेज पाखण्ड का पुरजोर खण्डन किया गया। प्रचार को सुनकर गाव के लोग बहुत प्रभावित हुए। सभा को २६२ रु॰ दान दिया। —शेरसिंह कटारिया प्रबन्धक सर्वहितकारी

अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक ६ मई १९९० रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय सिद्धांती भवन दयानन्दमठ रोहतक में होनी निश्चित हुई है इसमें आर्यसमाज की वर्तमान समस्याओं आदि पर विचार किया जाएगा। सदस्यों की सेवा में कार्यालय से ऐजण्डा भेजा जा रहा है।

—सभा प्रधान

भजनोपदेशक की आवश्यकता

दयानन्दमठ चम्बा (हि॰प्र॰) के लिए एक उत्साही, सुयोग्य एवं युवा भजनोपदेशक की तुरन्त आवश्यकता है। वैदिक संस्कार कराने एवं उपदेश करने की अच्छी योग्यता हो। शैक्षणिक योग्यता, अनुभव एवं स्वीकार्य वेतन के सम्बन्ध में आचार्य महावीरसिंह एम.ए. प्रबन्धक दयानन्दमठ चम्बा १७६३१० (हि॰प्र॰) से तुरन्त पत्र व्यवहार करें।

नियुक्ति १ जून से होनी है। जून मास के प्रचार कार्य को देखकर दीर्घकाल तक के लिए नियुक्ति कर दी जाएगी।

—स्वामी सुमेधानन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रस. के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन दयानन्दम०, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न. २३२०७।७३   रजि. नं. P/RTK ४६



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए.   वैसाख २५, २०४७ वि०

वर्ष १७   अंक २२   ७ मई १९९०   वार्षिक शुल्क २५)   आजीवन शुल्क २५१)   विदेश में ८ पौंड)   एक प्रति ६० पैसे

आर्यसमाज क्या है ?

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

किसी संस्था को समझने के लिए उसके संस्थापक को समझना अत्यावश्यक है। यही बात आर्यसमाज के विषय में भी चरितार्थ होती है। आर्यसमाज को समझना हो तो पहले आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को समझना पड़ेगा। महर्षि दयानन्द को समझे बिना आर्यसमाज को नहीं समझा जा सकता।

महर्षि दयानन्द को समझने के लिए आवश्यक है, उनके मन्तव्यों को समझना। किसी व्यक्ति को चाहे वह साधारण हो अथवा असाधारण—तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक उसके मन्तव्यों को न समझ लिया जाय।

जिन महापुरुषों ने अपने पीछे अपना कुछ साहित्य छोड़ा है, उन्हें समझने के लिए उनके साहित्य का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। उनके साहित्य में उनका दृष्टिकोण होता है और वह दृष्टिकोण उनके ग्रन्थों के अध्ययन से अध्ययन करने वाले को प्राप्त होता है।

यदि किसी महापुरुष का साहित्य उपलब्ध न हो, उसने साहित्य रचना की ही न हो तो उसका जीवन चरित्र भी उस महापुरुष के मन्तव्यों की जानकारी करा देता है। परन्तु तब—जब किसी निष्पक्ष लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो। यदि किसी पक्षपाती तथा मतवादी स्वार्थी लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो तो उसमें लेखक द्वारा स्व-मान्यताओं का मिश्रण कर दिया होगा तथा स्व-स्वार्थों की सिद्धि के लिए उसमें अनेक बातें अनर्गल बातें भर दी गयी होंगी। ऐसी स्थिति में कभी-कभी तो वास्तविकता का पता लगाना और तथ्य को जानना तथा समझ पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के विषय में ऐसी बात नहीं है। एक तो उसका प्रारम्भिक कुछ अंश स्वयं महर्षि द्वारा वर्णित है। दूसरे जो महर्षि-चरित्र के सर्वप्रथम लेखक थे, वह न तो कभी महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए थे और न उनके द्वारा संस्थापित आर्यसमाज के विषय में कोई जानकारी भी नही थी।

महर्षि दयानन्द के देह-त्याग के पश्चात् ब्राह्मसमाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन बंगाली ने उन्हें महर्षि के विषय में तथा उनके कर्तव्य और व्यक्तित्व के विषय में कुछ बातें बतायी थीं, जिन्हें सुन कर ऋषि के विषय में विशद जानकारी प्राप्त करने की धुन सवार हुई थी। उस धुन में उस बंगाली युवक ने अपनी जीवन भर की अर्जित की हुई समस्त सम्पत्ति होम दी। जहां-जहां ऋषि के जाने और जिस-जिस से भेंट व वार्ता करने का उसे पता चलता गया, वह युवक वहीं-वहीं गया और उन लोगों से मिला, जिनसे महर्षि की भेंट और वार्तालाप हुआ था। इस प्रकार उसने तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर ऋषिवर की जीवन-गाथा का संकलन किया, यद्यपि इस कार्य में उसके स्वास्थ्य का भी विनाश हो गया। जिस व्यक्ति ने अपना स्वास्थ्य और जीवन भर की कमाई इस कार्य के लिए होम दी, वह स्वार्थी तो हो नहीं सकता। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से उसका सम्बन्ध तो क्या परिचय भी नहीं था, इसलिए पक्षपाती भी वह नहीं था। उस धुन के धनी युवक का नाम था देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय।

ऐसी स्थिति में—जब लेखक का न तो स्वार्थ हो और न उसमें पक्षपात हो—जीवन चरित्र में न तो वह अपनी मान्यतायें भर सकता है, और न अनर्गल बातों का प्रवेश कर सकता है। वह तो सत्य को खोज करने वाला होता है। अतः सत्य का ही वर्णन करता है। हां कभी-कभी किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी बात को अपने स्वभाव के अनुसार बढ़ा-चढा कहने के कारण कुछ भ्रान्तियां हो जाना सम्भव हो सकता है, किन्तु ऐसी सम्भावनायें कम ही होती हैं और कुछ हो भी जायें तो भी उनसे भी तथ्य पर पर्दा नहीं पड़ सकता अपितु ध्यानपूर्वक आद्योपान्त पढ़ने से तथ्य उजागर हो ही जाता है।

इतने पर भी ऋषि दयानन्द का विपुल साहित्य उपलब्ध है, जिसका अधिकांश भाग उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो चुका था। सहस्रशः पृष्ठों और विविध विषयों के अनेक ग्रन्थों के रूप में लिखे गए उनके साहित्य के अध्ययन से उनके मन्तव्यों का पता लग जाता है। उन मन्तव्यों के अनुसार ही आर्यसमाज का कार्यक्रम है, अभिप्राय यह है कि उन मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए ऋषिवर ने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस प्रकार से आर्यसमाज अपने संस्थापक महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार का संस्थान है और उसे इसी रूप में समझा जाना चाहिए। जो लोग आर्यसमाज को इस रूप में नहीं समझते, वह भूल करते हैं—महती भूल, ऐसी भूल जो न तो उनके स्वयं के लिए हितकारक है और न मानव समाज की हित-साधक।

यदि आर्यसमाज के सदस्य बन जाने वाले भी इस भूल में फंसे हैं तो और भी खेदजनक बात है और साथ ही भय यह है कि ऐसे लोगों की संख्या वृद्धि के साथ-साथ आर्यसमाज पथभ्रष्ट हो जाएगा। वर्तमान समय में ऐसा परिलक्षित भी होने लगा है और उसका कारण है उपर्युक्त प्रकार के सदस्यों की संख्या वृद्धि।

इस प्रकार के सदस्यों की संख्या वृद्धि हो जाने से समाजों की संख्या की वृद्धि हो जाएगी, किन्तु वह ऋषिवर दयानन्द की आर्यसमाजें न होंगी। वह या तो मतवादियों की, साम्प्रदायिक दृष्टिकोण वालों की समाजें होंगी और या फिर ऐसे लोगों की समाजें जिन्हें कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार एकत्र होकर समय बिताना था और किसी नाम से न सही—आर्यसमाज के नाम से सही। एक क्षेत्र मिला, नेतागिरी भी मिली और इस प्रकार व्यापक रूप से मनबहलाव होने लगा। न स्वय के जीवन में सुधार आया और न स्वपरिवार के—समाज की तो बात ही क्या कहनी ? (शेष पृष्ठ ४ पर)

जीना सीखें

ले० हरिदत्त वि०प्र० बीयू—१६० विशाखा एन्क्लेव दिल्ली

(गतांक से आगे)

जीने के लिए दूसरा साधन है सुनना। सुनना भी देखने की तरह बहुत आवश्यक है। इसके बिना भी मनुष्य अधूरा होता है देखते हुए भी दूसरे के आशय को मनुष्य समझ नहीं पाता। बहुत बार विपरीत अर्थ समझ लेने के कारण मनुष्य हंसी के पात्र बन जाते हैं। इसीलिए वेद मन्त्र में प्रार्थना की गई कि 'शृणुयाम: शरद: शतम्' अर्थात् हम सौ वर्ष तक सुनते रहें। यहां पर भी वही प्रश्न उठते हैं कि क्या और कैसा सुने? वेद इनका भी वैसा ही उत्तर देता है—'भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम:' अर्थात् कानों से हमेशा भद्र ही सुनें। हम कानों से जो कुछ भी अच्छा या बुरा सुनते है—उसका वैसा ही प्रभाव मन पर पड़ता है और फिर वैसा ही स्वभाव बन जाता है। और एक बार जैसा भी स्वभाव बन जाता है उसे बदलना बड़ा कठिन हो जाता है 'स्वभावो दुरतिक्रम'। शायद इसीलिए नीतिकारों ने कहा है कि—

'जीवन्तु मे शत्रुगणा: सदैव येषां प्रसादात् सुविचक्षणोऽहम्।
यदा यदा मे विकृतिं भजन्ते तदा तदा मा प्रतिबोधयन्ति॥'

इसी को गुरु नानक देव जी ने भी कहा कि—'निन्दक नेडे रखिये।' इसलिए जीने की इच्छा करने वाले के लिए यह दूसरा साधन भी बहुत जरूरी है।

जीने के लिए तीसरा आवश्यक साधन है—बोलने की शक्ति। इसी से सब कार्यों को सिद्ध करने में बडी सहायता मिलती है। इसके अभाव में भी मनुष्य अधूरा रहता है और परमुखापेक्षी बना रहता है। इसीलिए मन्त्र में प्रार्थना की गई कि—'प्रब्रवाम: शरद: शतम्'। अर्थात् सौ वर्ष तक बहुत अच्छी तरह से बोलने की शक्ति हम में बनी रहे। ठीक प्रकार से बोलने से ही दूसरा व्यक्ति हमारे कथन का स्पष्ट आशय समझ पाता है। हकलाहट अथवा तुतलाहट के कारण भी मनुष्य अपने को हीन समझने लग जाता है। बोलने की शक्ति के बारे के बहुत कुछ लिखा जा सकता है। इस शक्ति के द्वारा ही मानव अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर पाता है। इस शक्ति का उपयोग भी बहुत सोच समझ कर करना चाहिए। इसी लिए बुद्धिमानों ने कहा कि—'पहले बात को तोलो, फिर मुंह को खोलो'। ऐसा न करने से जीवन से हाथ भी धोने पड़ जाते हैं। मनु जी ने कहा कि—'सत्यपूतां वदेत् वाचम्' अर्थात् सत्य से पवित्र की हुई वाणी को ही बोले क्योंकि 'नहि सत्यात्परो धम. नानृतात्पातकं परम्।' अर्थात् सत्य से बढ़ कर धर्म और अनृत से बढ़कर दूसरा पाप नहीं। इसीलिए मनु जी को आदेश देना पड़ा सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्। अर्थात् हमेशा प्रियसत्य ही बोलना चाहिए अप्रिय सत्य न बोले। इस का कारण बताया महाभारतकार ने—

'सुलभा पुरुषा राजन् सततप्रियादिन: ।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ: ॥'

अर्थात् हमेशा केवल प्रिय बोलने वाले व्यक्ति तो आसानी से मिल सकते हैं, परन्तु अप्रिय सत्य का कहने वाला और सुनने वाला विरला आदमी ही मिलता है। वेद में जहां प्रार्थना की गई हम सौ वर्ष तक अच्छी प्रकार बोलते रहें, वहां उसका प्रकार भी बताया—'वाक् वाक्।' अर्थात् हमेशा सत्य ही बोलें। सत्य का लक्षण बताते हुए भर्तृहरि ने कहा—'सत्यं न तद्यच्छलमभ्युपैति' अर्थात् जिस में छल कपट न हो, वह सत्य कहाता है। दर्शनकार ने कहा—'यन्मनसि, तद्वाची, यद्वाची तत्कर्मणि।' अर्थात् जो मन में हो वही वाणी में हो उसे ही सत्य कहना चाहिए। वाणी मीठी भी होनी आवश्यक है क्यों कि मीठी वाणी से शत्रु को भी वश में किया जा सकता है। अत: वेद में प्रार्थना की गई—'वाचस्पतिर्वाच न: स्वदतु' वाणी का पति परमेश्वर हमारी वाणी मे मिठास भर दे। 'मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्। वाचा वदामि मधुमद्भूयासं मधुसदृश:' की प्रार्थना भी तो यही सन्देश दे रही है कि मनुष्य जब जब घर से बाहर जावे अथवा घर लौट कर आए तो भी मीठी वाणी बोले। यही बात पत्नी को आदेश के रूप में वेद ने इस प्रकार कही है—'जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शांतिवाम्।' अर्थात् पत्नी को चाहिए कि वह पति से हमेशा मीठी वाणी बोले। इसके साथ ही एक और बात भी कह दी कि वाणी जहां मीठी हो, वहां शांति देने वाली भी हो। कठोर न हो।

तीन उत्तम साधन बताने के उपरान्त वेद जीने का चौथा तरीका बतलाता है—'अदीना: स्याम शरद: शतम्।' अर्थात् हम अदीन—दीनता, असहायता, पराधीनता के बिना स्वावलम्बी रहते हुए सौ वर्ष तक जीते रहें। शरीर के किसी भी अंग में न्यूनता न हो, क्योंकि किसी भी अंग में न्यूनता होने पर उस अंग द्वारा किए जाने वाले कर्म के लिए मनुष्य को परमुखापेक्षी होना पडता है और जीवन दूभर हो जाता है। जीने का मजा समाप्त हो जाता है और रो-रोकर जीने का कोई लाभ नहीं। इसीलिए वेद की बात को मानते हुए व्यायाम, प्राणायामादि के द्वारा शरीर को स्वस्थ और नीरोग रखने का भरसक प्रयत्न करें तथा 'भूयश्च शरद: शतात्' अर्थात् सौ वर्ष से अधिक भी जीने की इच्छा को सार्थक करें और 'त्र्यायुषं जमदग्ने: कश्यपस्य त्र्यायुषम्।' आदि वेद मन्त्र के अनुसार भीष्म पितामह की तरह दो सौ, तीन सौ और चार सौ वर्ष तक जीने का प्रयत्न करे और ससार से जाते समय 'हम हंसं जग रोय' की उक्ति को सार्थक कर सकें और 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुए 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द: तुभ्यमेव समर्पये' प्रभु की अमृतमयी गोद में जा विराजें। ओ३म् शम्।

अन्ध विश्वास

कौन समझाएगा इनको, कैसे समझेंगे ये जन?
देखकर इनकी जहालत, कुन्द हो जाता है मन।
इनकी बुद्धि पर न जाने कैसा पर्दा पड़ गया,
पूजते हैं उसको जाकर, जहां पत्थर गड गया।
जो चढाया पत्थरों पर, उसको कुत्ता खा गया,
खाके कुत्ते ने वहां पेशाब अपना कर दिया।
घर में भूखे प्यासे बैठे हैं बहुत से वृद्ध जन,
उनकी कुछ परवाह नहीं चाहे निकल जाए दम।१।
नित्य पढ़ते है, ये अखबारों में अपना राशि फल,
तान्त्रिक इनको फंसा लेते हैं करके कपट छल।
भूतनी या भूत के चक्कर में आ जाते हैं जन,
लूट ले जाते हैं, इनका मान मर्यादा व धन।
अन्धविश्वासों में पड़कर धक्के खाते हैं सजन,
देखकर इनकी जहालत कुन्द हो जाता है मन।२।
एक महिला ने कहीं कोई गुरु धारण कर लिया,
गुरु जी ने कान में कुछ मन्त्र देकर यह कहा।
मत बताना यह किसी को ऐसा पुख्ता कर दिया,
फिर मिलेंगे यूं कहकर गुरु वहां से चल दिया।
ऐसी दीवानी हुई वह गुरु जी के प्रेम में,
गुरु जी का चित्र हो रहता है हरदम जहन में।
हम सोए रह गये और लुट गया प्यारा चमन।
कौन समझायेगा इनको।
घेर लेती हैं इन्हें जब कोई विपदा आन कर,
दूर करवाते हैं उसको झाड़ कर या फूंक कर।
गंडे और तावीज का भी जब न होता है असर,
पण्डित जी से पूछते हैं कौन सा है यह कुफर।
साफ बतलाते हैं वो कोई देवता नाराज है,
उसको खुश करना ही इसका एकमात्र इलाज है।
गंगा जी मे जाके नहाओ और चढ़ाओ धन सुमन।४।

—देवराज आर्य, आर्यसमाज बल्लबगढ़ (फरीदाबाद)

आर्यसमाज सैक्टर नं० ७ फरीदाबाद का वार्षिक उत्सव

आज दिनांक २२-४-९० को आर्यसमाज सैक्टर नं० ७ के प्रांगण में १६-४-९० से चल रहे आर्यसमाज सैक्टर ७ के दसवें वार्षिक उत्सव का समापन समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस एक सप्ताह के अल्प समय में ब्र० राजसिंह व श्री गुलाबसिंह 'राघव' ने बड़े ही अच्छे ढंग से लोगों को धर्मलाभ से लाभान्वित कराया। ब्र० राजसिंह ने यज्ञ, पंच महायज्ञ, यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप, ईश्वर एवं उसको प्राप्त करने के साधन एवं ढंग की विस्तृत व्याख्या की। श्री गुलाबसिंह राघव ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से धर्मोपदेश किया।

२१ अप्रैल को एक प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जिस में पुरुष, महिलाओं एवं बच्चों ने भाग लिया। दो बजे से सायं साढ़े पांच बजे तक एक महिला सम्मेलन किया गया। महिला जागरण का यह एक सफल प्रयास रहा। इस सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती नीलम भल्ला एवं मुख्यातिथि श्रीमती हेमलता चौधरी थी।

आज यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन लगभग दस दम्पत्ति यजमान बने। इसके पश्चात् सभी को ब्रह्मा द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया गया। काफी सदस्यों ने दक्षिणा स्वरूप ब्र० राजसिंह को शपथ पत्र भेट किए जिनमें जीवन को सफल बनाने के लिए लोगों ने भिन्न-भिन्न सकल्प किए। इसके पश्चात् प्रातःराश (नाश्ता) के पश्चात् समापन समारोह का कार्यक्रम शुरू हुआ। आर्यसमाज सैक्टर ७ का प्रांगण धर्म प्रेमियों से खचाखच भरा हुआ था। श्री गुलाबसिंह राघव, ब्र० राजसिंह, श्रीमति सुनीति आर्या, स्वामी सत्यपति परिव्राजक महाराज ने बड़े प्रभावी ढंग से अपने विचार रखकर लोगों को धर्म लाभ पहुंचाया। इसके पश्चात् श्री आर्यवीर भल्ला का अध्यक्षीय भाषण हुआ। अपने भाषण में उन्होंने सभी को आर्यसमाज के प्रति कर्त्तव्य-निष्ठ होने के लिए आह्वान किया एवं आश्वासन दिया कि वे इस प्रकार के आयोजनों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे। आज उन्होंने आर्यसमाज के हाल में ग्रिलों और शीशे का काम पूर्ण कराने की घोषणा की जिसका सभी सदस्यों ने तालिया बजाकर स्वागत किया। इस अवसर पर अनेक धर्म प्रेमियों ने अपनी नेक कमाई में से खुलकर दान दिया।

अन्त में आर्यसमाज के प्रधान श्री जगन्नाथ सोई ने सबका धन्यवाद किया एवं इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी द्वारा दिए गए योगदान की सराहना की। शांति पाठ के साथ उत्सव सम्पन्न हुआ। अन्त में ऋषि लंगर ग्रहण कर सभी ने सम्पूर्ण कार्यक्रम की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। —बलबीर सिंह मलिक मंत्री

शोक सभा

श्री किशोरी लाल जी कामरा प्रधान आर्यसमाज मण्डी डबवाली की पत्नी श्रीमती सरोज रानी कामरा का निधन १८-४-९० को हुआ उस उपलक्ष में राम महिमा का कीर्तन एव यज्ञ हवन २६-४-९० को अन्तिम शोक दिवस के रूप मे किया गया। जिस में दिवगत आत्मा की शांति एवं परिवार को उनके चले जाने से जो वेदना हुई उसको सहन करने की प्रार्थना ईश्वर से की गई।

अन्त्येष्ठी संस्कार

श्री डा० नरेन्द्रदेव जी बबवा के पिता श्री रोशन दास जी का निधन २१-४-९० को हुआ। उनका अन्त्येष्टी संस्कार वैदिक रीति से श्री पुरोहित जी आर्यसमाज मण्डी डबवाली ने कराया। अन्तिम शोक दिवस पर ३-५-९० वीरवार को यज्ञ किया जावेगा।

—ओम्प्रकाश वानप्रस्थी बठिण्डा

उठो ! आर्य वीरो !!

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

धरा है प्रकम्पित, गगन रो रहा है,
भरत भूमि का क्यों, तरुण सो रहा है?

मिटी जा रही है, सुसंस्कृति हमारी,
सहम सी गई है, स्वयम् भूमि प्यारी।

मनुजता डरी सी, यहा छटपटाती,
दनुजता विहंसती, उसे है डराती।

बिलखती है सीता, बिलखता है मनुजत्व,
निडर बन, बढ़ा जा रहा आज दनुजत्व।

पौरुष हमारा पराजित हुआ है,
सघर्ष समुचित कदाचित हुआ है।

अन्याय बढ़ता, अनय है निरन्तर,
हुआ भ्रष्ट जन जन का है आचरण।

लज्जा है लुटती यहां नारियों की,
नही शील संकोच शुचिता है बाकी।

कहा सो रहे हैं, यहां राम वशज,
बढ़े जा रहे हैं असुरो के अशज।

उठो ! आर्य वीरो ! तुम्हें अब शपथ है,
चुनौती है आयी, खुला आज पथ है।

तुम्हें राम बनना, है हनुमान बनना,
दनुजता से बढ कर, तुम्हे आज लडना।

उठो ! मातृभू को, चलो सात्वना दो,
नरक तुल्य धरती को, स्वर्गिक बना दो।

दनुजता के कदमों को, छोटा करो तुम,
दलित—दीन के कष्ट, बढकर हरो तुम।

दयानन्द के स्वप्न साकार करना,
तुम्हें आर्य बनकर, जगत आर्य करना।

आर्यसमाज बड़ौली जि० फरीदाबाद का निर्वाचन

मा० शिवनारायण जी आर्य संरक्षक, मा० रणवीर सिंह जी आर्य प्रधान, रतीराम जी पंचायत मेम्बर उपप्रधान, नम्बरदार जीत राम जी आर्य मन्त्री, महाशय धर्मपाल जी आर्य उपमन्त्री, टेकराम पुत्र भिकन बसल कोषाध्यक्ष, म० राधेलाल जी उप-प्रचार मन्त्री, मा० रमेशचन्द वर्मा पुस्तकाध्यक्ष, मा० हेतराम वरिष्ठ सदस्य, मा० दयाराम सहायक पुस्तकाध्यक्ष, सरपच ज्ञानीराम बसल विशेष सदस्य चौ० जयपालसिंह मेम्बर पंचायत विशेष सदस्य, चन्द्रभान वर्मा भू.पू. मन्त्री विशेष सदस्य, मा० हरिश्चन्द्र बसल उपसरक्षक, पं० गिरधारी लाल महासचिव, पं० नत्थोलाल पुत्र पूर्णचन्द शर्मा भडारी जी, हरेराम बंसल कवि जी आर्य प्रचारक समाज, पं० खिलनचन्द जी उस्ताद प्रचार मण्डल, श्री बद्रीप्रसाद मेम्बर पंचायत लेखा निरीक्षक, श्री नत्थुराम पुत्र मा० रणवीर सिंह।

—मुरारीलाल बेचैन

मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

आर्यो, आओ "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" ऋषि मनोरथ को कार्यरूप दें

समस्त आर्यों को एक आवश्यक क्रियात्मक सुझाव

समस्त आर्य बन्धुओं एवं आर्य सभा-समाजों, संस्थाओं से निवेदन है कि 'प्रभु प्रार्थना' काल में निम्न भावों को आवश्यक रूप से सम्मिलित करें ताकि समस्त आर्य सन्तान - हिन्दू मात्र में आर्यत्व जाग्रत कर एकात्मता का भाव उत्पन्न कर सकें। इस प्रकार सच्चे अर्थों में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की वेद-आज्ञा और महर्षि की हार्दिक अभिलाषा को पूर्ण करने की ओर पग बढ़ा कर्त्तव्य निभावें। देश को फिर से 'आर्यवर्त' बना सच्चा 'आर्य-राज्य' बना पाएं।

प्रार्थना के भाव :

हे परमपिता ! आपकी महान् कृपा से हमें आर्यकुल में जन्म मिला। इस नाते आपने हमें सत्य सनातन वेदज्ञान का अधिकारी बनाया।

हम आपका प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए प्रतिज्ञा लेते हैं कि :—

१. हम सच्चे अर्थों में आर्य बनेंगे। समस्त आर्य सन्तान-हिन्दूमात्र को जाग्रत कर उनमें एकात्मता, सत्यसनातन आर्यधर्म पर चलने को प्रेरित करेंगे।

२. आपकी आज्ञा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' तन, मन, धन से पालन करेंगे।

३. सर्वप्रथम अपने देश को फिर से सच्चे अर्थों में 'आर्यव्रत' बना स्वच्छ 'आर्यराज्य स्थापित करेंगे।

४. समस्त संसार में वेदज्ञान, आर्य सस्कृति फैला भूमण्डल पर पूर्व काल की भांति चक्रवर्ती आर्यराज्य स्थापित करने की ओर अग्रसर होंगे।

प्रभो ! हमें इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए शक्ति दो। हम आप को विश्वास दिलाते है एवं प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम हर चुनौती का अपना सर्वस्व बलिदान कर दृढता से मुकाबला करेंगे।

—भोलानाथ दिलावरी

लुधियाना में वैसाखी पर्व पर बृहद्यज्ञ

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में वैशाखी पर्व पर वृहद्यज्ञ किया गया जिस मे श्री रमनकुमार आर्य, श्री विश्वजीत आर्य सपरिवार एव बहन सरिता जी यजमान बने, यह यज्ञ पं० सुन्दरलाल शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर बहन जनकरानी मन्त्राणी स्त्री आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, श्री देवराज आर्य यज्ञ-अध्यक्ष ने प्रभु-भक्ति के सुन्दर भजन रखे। पं० राजेश्वर शास्त्री ने अपने विचार रखे। श्री रोशनलाल शर्मा प्रधान—आर्य युवक सभा पंजाब ने जलियावाला बाग अमृतसर के बलिदानियों को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए याद किया तथा आह्वान किया कि हमें निहित स्वार्थों को छोड़कर देश को सर्वोपरि समझना चाहिए। —मन्त्री

आर्यसमाज पिंजौर का वार्षिक उत्सव

१२ अप्रैल से आरम्भ हुआ और १५ अप्रैल को सम्पन्न किया गया। इस उत्सव में उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य नरेश जी वैदिक वक्ता व लछमन सिंह जी बेमोल जी जिन्होंने अपनी भजन मण्डली के साथ ४ दिन तक भजनों के माध्यम से वैदिक प्रचार किया। वार्षिक उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। अधिक संख्या में लोगों ने वैदिक प्रचार को सुना। —आर्यसमाज पिंजौर

आर्यसमाज क्या है ?

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आर्यसमाज क्लब नहीं है।

ऐसे लोग कहीं भी जायें ? किसी भी संस्था में जायें ? किसी भी नाम से संगठित हों, मन-बहलाव के साधनों तक ही सीमित रहते हैं। खेल, नाटक, भोज इत्यादि उनका मिशन होता है उनके सामने न सिद्धांत होता है न तथ्यान्वेषण। न वह तथ्य और सिद्धांत को जानते हैं और न जानना चाहते हैं। भोज अर्थात् खाने-पीने के नाम पर धन भी बढ़-चढ़ कर देते है और इस कार्य के लिए परिश्रम भी करते हैं, फिर खाने-पीने में पीछे रहने का तो प्रश्न ही क्या ?

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर समाज भवनों में नाटक और लड़कियों के नृत्यों के आयोजन भी बहुत बढ़-चढ़ कर करते हैं और कराते हैं और आगे बढ़े तो किसी राजनीतिक नेता का स्वागत समारोह समाज भवन में करा दिया, उसे मान-पत्र दे दिया और बस छुट्टी। यह सब कार्य क्लबों के हैं, आर्यसमाज के नहीं। इनसे आर्यसमाज का दूर का भी सम्बन्ध नहीं। यह सब कार्य उन्हीं के द्वारा होते हैं, जिन्होंने न तो ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़ा, न उन के ग्रन्थों का अध्ययन किया अर्थात जिन्होंने ऋषिवर के मन्तव्यों को नहीं समझा। कहना यह चाहिए कि ऐसे लोग आर्यसमाज के सदस्य तो जिस किसी प्रकार भी बन गए। आर्यसमाज को केवल क्लब की भावना से ही स्वीकार किया है और इसी भावना से उसके मंच का उपयोग करते हैं।

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है।

दूसरी प्रकार के लोग वह हैं, जो आर्यसमाज को एक सम्प्रदाय मात्र समझते हैं। इन्होंने भी न तो ऋषिवर दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़ा और न उनके द्वारा लिखे हुए किसी ग्रन्थ को ही पढा। पढना क्या ? ऋषि के ग्रन्थ न देखे और न उनको यह पता कि उन्होंने कोई ग्रन्थ लिखा है। कुछ को ऋषि के लिखने की जानकारी तो है, किन्तु उनके मुख्य ग्रन्थों—संस्कारविधि और सत्यार्थप्रकाश—के नाम तक ज्ञात नहीं। (क्रमशः)

सार्वदेशिक व्यायाम शिक्षक शिविर

१० जून से २४ जून रविवार १९९० तक

स्थान—गुरुकुल झज्जर रोहतक हरयाणा

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक शिविर डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता में दिनांक १० जून से २४ जून १९९० तक लगाया जा रहा है। जिसमें आर्य वीर प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण का ही प्रवेश होगा। प्रवेश शुल्क—५० रुपए। परीक्षा व परिचय-पत्र शुल्क—५ रुपए होगा। आर्यवीर अपना पास पोर्ट साईज का फोटो साथ अवश्य लायें।

नोट—१- आवश्यक सामान—गणवेश, लाठी, भोजन के पात्र तथा नोट-बुक आदि।

२- मार्ग—दिल्ली से झज्जर की बस पकड़ कर झज्जर से रिवाड़ी रोड गुरुकुल मार्ग पर उतरें।

३- रिवाड़ी की ओर से आने वाले गुरुकुल मार्ग पर उतरें।

—कृष्णपाल व्यायाम शिक्षक

आर्यसमाज नारनौल का चुनाव

प्रधान—ताराचन्द आर्य, उपप्रधान—म० मोतीराम, प्रह्लाद आर्य, मन्त्री—रामनरेश, उपमन्त्री—सत्यपाल आर्य, कोषाध्यक्ष—म० अजुध्याप्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष—वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य।

हरयाणा सरकार को खुली चिट्ठी

—दीपचन्द आर्य कासनी

सरकार ने अपनी आय हेतु तीन सरकारी कारखाने शराब के चालू कर रखे हैं। इनसे काफी आय होती है। धन यह सब हरयाणा के लोगों का ही जाता है। यह धन गरीब किसान मजदूर के घर को बर्बाद कर रहा है। मात्र धन की हानि होती तो कोई चिन्ता की बात नहीं थी। यह तो एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रखने मात्र ही कार्य था। एक घर से चला जाता दूसरे घर में आ जाता।

१- मैंने स्वयं दो तीन मास लगातार शराबियों के घरों को देखा है उन घरों में सब से बड़ी हानि कलह की होती है। यह चौबीस घण्टे की कलह पड़ौसियों को भी हानि पहुँचाती है। गाली-गलोच इतना बेहूदा होता है कि सुना नहीं जा सकता, इस प्रकार सामाजिक पतन पूरे क्षेत्र का हो रहा है।

२- कलह के अतिरिक्त घर में बच्चों को भय लगा रहता है। बच्चे घर से दूर छिपे रहते हैं उनकी पढ़ाई सब खटाई में पड़ जाती है इस प्रकार विकास शराबी परिवारों का रुक जाता है।

३- शराबी मनुष्य शराब पीने पर गलतान हो जाता है वह लड़ने को तैयार रहता है। अन्य पाप करने से नहीं हिचकता। दूसरों के घरों में वार सवेर बड़ जाता है।

४- सब बुराइयों की जड़ बुद्धिहीनता है। शराब का पहला आक्रमण बुद्धि पर होता है। शराबी अपने घर वाले मनुष्य, पशुओं को बुरी तरह मारता है। मैंने स्वयं देखा एक शराबी ने अपनी बड़े अच्छे दूध वाली गाय को मार कर सदा के लिए दूध से खो दिया।

५- शराबी का धन आधे मोल पर जाता है। वह चोरी छिपे घर के जेवर को काफी हानि उठा कर बेच जाता है।

६- शराबी का खानदान विकास नहीं कर पाता, उनकी सहायता कोई भी नहीं करना चाहता, क्योंकि वहा से वापिस धन पाने की गुंजाईश नहीं रहती।

७- लगातार शराब पीने से शरीर में अनेक रोग पैदा हो जाते है। शरीर में आलस्य भरा रहता है। अपना कोई धन्धा नहीं चला सकता। इस प्रकार अधमौत मरता है। बच्चे उभर नही पाते। बर्बाद हो जाते है।

८- शराब भ्रष्टाचार की जननी है। इसी की बदौलत शिक्षा जैसा पवित्र महकमा आज शराब के दुर्व्यसन में फंस गया है। परीक्षकों और निगरानी करने वालों को खुली शराब पिलाई जाती है।

९- दिन छिपने के बाद हर बस में शराबी ही यात्रा करते है। उस समय बहिन बेटियों को यात्रा करना दुर्लभ हो जाता है। दुर्घटना शराबी ड्राइवर ही करते हैं।

१०- शराब के कारण चोरी बढ़ती है और लाचार हो व्यभिचारी बन जाता है। बच्चे भिखारी बन जाते हैं। बेईमानी और वेश्यावृत्ति खुली चलती है।

इस सब प्रकार से विनाश करने वाली मदिरा के कारखाने खोल कर देश का विकास कोई भी हकूमत नही कर सकती। अतः राम राज्य तो कभी आ ही नही सकता। जब तक शराब रहेगी तब तक विकास हो नही सकता। अतः अब तो जनता को स्वयं चेतना होगा। आर्यसमाज जो अपने को क्रांतिकारी कहता है उसे सब धार्मिक संस्थाओं को जागृत कर देवियों को चेतावनी दे शराब से आय करने वाली हकूमत को जड़ से उखाड़ देना चाहिए। शराब से गरीब का विनाश हो रहा है। धनी और राज्य कर्मचारी मौज से उन्नति कर रहे हैं। आर्यसमाज को चाहिए जिस प्रकार कुण्डली का बूचड़खाना उखाड़ कर एक घण्टे में फैंक दिया था इसी प्रकार शराब के कारखानों को उखाड़ कर फैंक दे। गरीब देवियों और बच्चों की पिसी हुई आत्माएं आपको आशीश देगी।

अंग्रेज चले गए पर अंग्रेजी नहीं गई

—अशोक कुमार मन्त्री आर्यसमाज सिरसल कैथल

अंग्रेज चले गए, लेकिन अंग्रेजी नही गई। बाबूजी चले गए लेकिन बाबूजियत नही गई। बन्दर चले गए, मगर अपने पीछे नकलची छोड़ गए, सांप चला गया लकीर रह गई। आज भारतवर्ष की सम्पूर्ण संस्थाओं पर अंग्रेजी का भार लदा हुआ है। विद्यार्थियों को अनिवार्यतः अंग्रेजी का अध्ययन करना पड़ता है। तोते की तरह रटने पर भी विद्यार्थी अंग्रेजी को भली भांति ग्रहण नहीं कर पाते। कैसी विडम्बना है। अंग्रेजी को जबरदस्ती थोंपकर विद्यार्थी की स्वतन्त्र विचारधारा पर कुठाराघात किया गया है।

मैकाले ने क्लर्क पैदा करने के लिए अंग्रेजी को अनिवार्य बना कर भारतवासियों पर जबरदस्ती लादने की योजना बनाई थी। उनका उद्देश्य था—भारतवासियों पर अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति को लाद कर उन्हें मानसिक रूप से गुलाम बनाना खैर सन् १९४७ में देश आजाद हुआ। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए तथा अपना विकास करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई गई। देश की राष्ट्र भाषा क्या हो? यह ज्वलन्त समस्या थी। संविधान निर्माताओं ने सविधान की ३४३ वी धारा के अनुसार हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद दिया तथा १४ सितम्बर १९४९ को हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया गया।

उपरोक्त बातों को व्यतीत हुए आज लगभग २८ वर्ष हो चुके हैं। क्या हिन्दी राष्ट्रभाषा पर आसीन हुई? क्या इसे प्रत्येक राज्य में अनिवार्य विषय बनाया गया? १९६५ तक हिन्दी ही भारतसघ की राजभाषा होगी—इस प्रकार की बातो ने भारतीय जनता को आशा की किरणों से आनन्दित किया। आशा निराशा में हो परिवर्तित हुई। आज भी हिन्दी भारत सघ की राजभाषा न बन सकी? कतिपय राज्यों को छोड़कर हिन्दी की वही दशा है जो पहले थी।

आज देश स्वतन्त्र है। उसका स्वतन्त्र झण्डा है, उसका स्वतन्त्र राष्ट्र-गीत है। उसी प्रकार उसको राष्ट्रभाषा भी स्वतन्त्र और अपनी भाषा होनी चाहिए। जिस प्रकार तिरंगा झण्डा देश का गौरव है उसी प्रकार हिन्दी का राष्ट्रभाषा होना देश का गौरव है। हिन्दी राष्ट्रीय एकता की घडी तथा पारस्परिक सद्भावना की प्रेरक है।

यद्यपि भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश में अनेक उपभाषाये और बोलिया प्रचलित है लेकिन हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो सम्पर्क भाषा के रूप में सर्वत्र प्रयुक्त हो सकती है। यह भाषा पारस्परिक विचाराभिव्यक्ति, अन्तः प्रांतीय व्यवहार, पारस्परिक लेन-देन में सुन्दर सम्पर्क स्थापित करने में अपना योग दे सकती है।

इतना सब कुछ होते हुए भी हिन्दी के मार्ग में अनेक बाधाये और रुकावटे है जो हिन्दी को दीन-हीन बनाए हुए है। दक्षिण भारत के कतिपय प्रांत हिन्दी के मार्ग में रुकावट है। इन प्रांतो में तमिल, तेलगू, कन्नड, मलयालम आदि भाषाओं का प्रचार-प्रसार है। ये प्रात हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद देने के पक्ष में नहीं हैं। सरकार प्रयास कर रही है कि इन प्रांतों के लोग हिन्दी को धीरे धीरे सीखे तथा उसे अपनाने का प्रयास करे।

हिन्दी के मार्ग में पुराने अफसर भी रुकावट डालने का प्रयास करते हैं। क्योंकि वे कई वर्षों से अंग्रेजी के भक्त हैं। उन्हें तनिक भी हिन्दी नही आती और न ही वे हिन्दी सीखने का प्रयास करते है। फलतः वे हिन्दी के प्रति उपेक्षापूर्ण भाव रखते है। वे प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी का ही समर्थन करते हैं।

हिन्दी के मार्ग में भी वे बाधक हैं जो हिन्दी में संस्कृतनिष्ठ शब्दों को जबरदस्ती ठूंसते है। इस से हिन्दी अत्यन्त क्लिष्ठ बन जाती है। फलतः ऐसी हिन्दी को लोग नही समझते है। तथा वे विरोध प्रकट करते हैं। (शेष पृष्ठ ६ पर)

बुद्धिजीवी सम्मेलन

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के संयोजक डा० प्रशांत वेदालंकार ने आज-यहां बताया कि उनके पास सैकड़ों पत्र आए हैं जिनमें ३० सितम्बर, १-२ अक्तूबर ८९ को दिल्ली में हुए सम्मेलन में व्यक्त विचारों को क्रियान्वित करने की प्रगति पर प्रश्न दिए गए हैं।

डा० प्रशांत वेदालंकार ने बताया कि अभी उक्त सम्मेलन में व्यक्त विचारों को संकलित व सम्पादित करने का कार्य चल रहा है। ये विचार शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। इनके प्रकाशित होने पर इन्हें क्रियान्वित करने पर शीघ्र ही योजना बनायेंगे। डा० प्रशांत वेदालंकार ने यह भी बताया कि जयपुर में १८ से २० मई १९९० को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान शताब्दी समापन समारोह में भी बुद्धिजीवी सम्मेलन के कार्य को आगे बढाने के लिए इसके संयोजक श्री सत्यव्रत सामवेदी ने कुछ सम्मेलन रखे हैं।

—डा० प्रशान्त वेदालंकार
७/२, रूपनगर, दिल्ली—११०००७

सराहनीय कदम

२४ अप्रैल को दैनिक 'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित समाचार पढकर अपार हार्दिक प्रसन्नता हुई कि केन्द्र सरकार ने हवाई उडानों, शिक्षा संस्थाओं, अस्पतालों और रेल की कुछ श्रेणियों सहित कुछ खास चुने हुए स्थानों पर धूम्रपान करने पर प्रतिबंध लगा दिया है। सरकार द्वारा ऐसा निर्णय करना स्वागत योग्य कदम है। वैसे भी स्वास्थ्य और सुरक्षा की दृष्टि से धूम्रपान पर हर कीमत पर हर एक सरकारी कार्यालयों में प्रतिबन्ध लगा देना उचित व अनिवार्य है। केन्द्र सरकार को चाहिए कि देश भर के सभी सरकारी, गैर-सरकारी कार्यालयों में कर्मचारियों पर धूम्रपान करने पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया जाए। आदेश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाए।

स्वास्थ्य की दृष्टि से धूम्रपान करना कतई ठीक नहीं है। ऐसी बुरी आदत को कड़े सरकारी कानून दण्ड व्यवस्था द्वारा हर कीमत पर रोका जाना चाहिए।

—देशबंधु
सी-४-जी-१४२-बी, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८। (दै. हिन्दुस्तान)

३९वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बिहार राज्य के गया जिला अन्तर्गत चाकन्द बाजार में स्थानीय आर्यसमाज का ३९वां वार्षिकोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सर्वश्री डा० देवेन्द्रकुमार जी सत्यार्थी क्रांतिकारी व्याख्याता, (नालन्दा) वीरेन्द्र जी आर्य भजनोपदेशक गाजीपुर (उ.प्र.) नवलकिशोर जी शास्त्री समस्तीपुर, भूप नारायण शास्त्री समस्तीपुर के प्रोग्राम होते रहे। जनता ने हजारों की सख्या में भाग लेकर उत्सव को सफल बनाया उत्सव ६, ७, ८ अप्रैल को मनाया गया।

—मौजीलाल मन्त्री

राज के सभी निगमों मे हिन्दी में काम होगा

जयपुर १ मई (भाषा)। राजस्थान सरकार ने सभी निगमों और अर्द्ध सरकारी संस्थाओं से बैंकों के साथ-साथ हिन्दी भाषा में काम करने के निर्देश दिए हैं।

भाषा विभाग के एक प्रवक्ता के अनुसार बैंकों को हिन्दी समिति के निर्णय से सभी विभागों, राजकीय निगमों और संस्थाओं को इस बात से अवगत कराया गया है।

बैंकों की आमतौर पर यही शिकायत थी कि वे स्वयं हिन्दी में ही पत्र लिखते हैं जबकि ये निगम और राज्य सरकार के विभाग अंग्रेजी में ही पत्र व्यवहार करते हैं।

धूम्रपान—धीमा जहर

—विनोद बाबा कुरुक्षेत्र

सरकार का सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय समय की कसौटी पर खरा उतरता है, क्योंकि धूम्रपान (निकोटीन युक्त) का सेवन करने वाले स्वयं तो अपने फेफड़े मुंह गले के कैंसर को आमन्त्रित करते ही हैं, परन्तु जो लोग इससे परहेज करते हैं उनके पास कश लगाकर कार्बनयुक्त धूआं पहुंचा कर अपने पड़ोसी के अच्छे भले स्वास्थ्य को भी खराब कर देते हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार धूम्रपान का सेवन करने वाले ही अधिकतर व्यक्ति कैंसर का शिकार होते हैं, फिर भी वे वैधानिक चेतावनी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है का मजाक उड़ाते हुए आधुनिकता की ओट में इसका अधिकतर प्रयोग करते हैं। धूम्रपान का धीमा जहर धूम्रपानी के शरीर को खोखला कर देता है। अतः इस शरीरनाशक के उपभोग में कमी करने के लिए सिगरेट के पैकेटों के ऊपर ये चेतावनी 'सिगरेट पीने से आप कैंसर को आमन्त्रित कर रहे हैं' अंकित की जानी चाहिए और सिगरेट के मूल्यों में वृद्धि की जानी चाहए ताकि इसके शौकीन इसकी कुछ मात्रा कम कर सकें।

(दैनिक ट्रिब्यून)

सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० मुरारीलाल बेचैन

ने मार्च अप्रैल १९९० में सर्वहितकारी के निम्न आजीवन सदस्य बनाए हैं:—

१- प्रधानाचार्या आर्य कन्या गुरुकुल मोर माजरा पानीपत।
२- आर्यसमाज सेवा सदन बल्लभगढ़।
३- आर्यसमाज मेन बाजार बल्लभगढ़ जि० फरीदाबाद।

—शेरसिंह कटारिया
प्रबन्धक सर्वहितकारी

अंग्रेजी नहीं गई——

(पृष्ठ ५ का शेष)

देश के अधिकांश विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में हिन्दी की अवहेलना हुई है पाठ्यक्रमों में हिन्दी को अंग्रेजी के समान सम्मान नही मिला है इसी प्रकार सरकारी नौकरियों के लिए जो परीक्षायें होती हैं उन में भी हिन्दी को उचित स्थान नहीं मिला है।

अंग्रेजों के चले जाने पर भी आज अंग्रेजी की जड़ें हरी-भरी हैं। देशके स्वतन्त्र होने पर भी हिन्दी की नींव डगमगा रही है। इसके लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहियें जिस से हिन्दी समस्त राष्ट्र की राष्ट्रभाषा और सम्पर्क-भाषा बन सके।

वर्तमान परिवेश को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि वह दिन दूर नही जब हिन्दी जन-जन की भाषा होगी। वह दिन दूर नही जब भारत की सम्पूर्ण शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाएगी। हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य कोई भाषा राष्ट्र-भाषा पद पर आसीन नही हो सकती। वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी की अमर-बेल भारत के कोने-कोने में छा जाएगी।

आर्यसमाज मण्डी डबवाली (जि०सिरसा) के समाचार

२२-४-९० प्रातः आठ बजे श्री चिमनलाल जी शील मण्डी डब्वाली की पुत्री सन्तोष रानी का संस्कार विधि अनुसार श्री ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी बठिण्डा ने सीमन्तोन्नयनम् संस्कार कराया। संस्कार पर पधारे स्त्री/पुरुषों का चाय एवं मिठाई से सत्कार किया गया।

यह कैसी विडम्बना ?

—रवि सचदेव 'घायल', अबोहर

आज एक ज्वलन्त समस्या जो मैं अनुभव कर रहा हूं, वह यह है कि कोई भी भारतीय चाहकर भी अपने बच्चों को हिन्दी में शिक्षा नहीं दिला सकता। क्योंकि प्रदेशों के सरकारी स्कूलों में तो शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषायें हैं, जैसे पंजाब में पंजाबी, गुजरात में गुजराती, तमिलनाडू में तेलगू आदि और यदि कोई इन प्रादेशिक भाषाओं में शिक्षा न ग्रहण करना चाहे तो कान्वेन्ट पब्लिक तथा माडल स्कूल हैं जिनमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होता है। यह कैसी विडम्बना है कि हिन्दी माध्यम से हिन्दुस्तान में शिक्षा ग्रहण नहीं की जा सकती, सिवाय कुछ प्रदेशों को छोड़कर जहां की प्रादेशिक भाषा हिन्दी है जैसे उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरयाणा आदि। यह कैसी भाषा नीति है। आज जबकि आशा यह की जाती है कि प्रत्येक को हिन्दी सीखनी चाहिए, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा व राजभाषा है। आज के परिवेश में भी राष्ट्र की एकता के लिए भी जब हिन्दी का अस्तित्व एक अहम् भूमिका निभा सकता है। नेता यह ध्यान तो दे देते हैं कि हिन्दी किसी पर थोपी नही जाएगी। परन्तु वास्तविकता में क्या यह अंग्रेजी थोपना नही क्योंकि आज के परिवेश में अधिकाश लोग अपने बच्चों को प्रादेशिक भाषा की बजाए अंग्रेजी में शिक्षा दिलवाना अधिक श्रेयस्कर समझते हैं। क्या यह एक प्रकार से हिन्दी को देश निकाला देने का षड्यन्त्र नहीं ?

इस लेख के माध्यम से मैं हिन्दी के विद्वानों व समर्थकों को इस षड्यन्त्र के प्रति सचेत करना चाहता हूँ। क्या यह शर्मनाक स्थिति नहीं कि एक भारतीय बच्चा Seventy four तथा Sixty nine तो जानता है परन्तु उसे यह नही पता कि गुनहत्तर या पिचत्तर या चौपन क्या होता है ? आज के भारतीय बच्चे को air की परिभाषा अंग्रेजी में रटनी पड़ती है जबकि उसे यह पता नही कि air क्या होता है ? आज का भारतीय बच्चा तोते की तरह यह तो बता देगा कि I read in D A.V. Model School परन्तु उसे इसका अर्थ मालूम नहीं क्या होता है। नमस्ते, प्रणाम जसे शब्द हमें दकियानूसी लगते हैं तथा Hello, Bi Bi को ही हम अपना कर यह महसूस करते हैं कि सभ्यता की यही पहचान है। क्या यह भारतीय सस्कृति को लुप्त नहीं कर रहे ? आज जब कि हम आदिवासियों की सस्कृति को तो जीवित रखने के लिए प्रयत्नशील है, भारतीय संस्कृति हमें खोखली लगने लगी है। एक और निराधार प्रचार यह किया जा रहा है कि दक्षिण वाले हिन्दी के विरोध में हैं। जब कि वास्तव में ऐसा नहीं है। हमें यह कह कर भरमाया जा रहा रहा है कि अंग्रेजी का मोह दक्षिण में अधिक है जबकि स्थिति इस के विपरीत है। आपको जान कर सुखद आश्चर्य होगा कि केरल से मलयालम मे प्रकाशित होने वाला मलयालम मनोरमा वह दैनिक पत्र है जो भारत मे किसी भी भाषा के पत्र से अधिक छपता व बिकता है। एक सूचना के अनुसार प्रतिदिन इसकी ६ लाख से अधिक प्रतिया बिकती है। इसी प्रकार भारत का दूसरे स्थान पर सबसे अधिक छपने वाला दैनिक पत्र भी मलयालम में केरल से ही प्रकाशित होने वाला 'मातृभूमि' है। यदि दक्षिण में लोंगों को अंग्रेजी के प्रति मोह होता तो कभी भी यह सम्भव नहीं था कि सबसे अधिक छपने वाले पत्र मलयालम में छपते। यह प्रचार मात्र राजनैतिक स्वार्थों से प्रेरित है तथा उत्तर भारत के लोगों को बहकाने की चाल है।

परन्तु दुःख तो इस बात का अधिक है कि उत्तर भारत में जहां हिन्दी भाषी लोग बसते हैं, वहां भी हिन्दी में काम नहीं हो रहा। यह भी बहुत चिन्ता का विषय है। यदि हिन्दी भाषी ही हिन्दी से विमुख होते जाएंगे तो हम यह कैसे कल्पना कर सकते है कि एक दिन भारत में हिन्दी का वर्चस्व होगा।

सरकार से भी एक बात मैं कहना चाहता हूं कि दोहरी नीति को त्यागना होगा। अब नई सरकार से मुझे काफी उम्मीद है। विदेशों में जाने वाले हमारे राजदूतों, भूतपूर्व नेताओं व अन्य प्रतिनिधियों ने जो विदेशों में अपना भाषण अंग्रेजी में देकर हमारे देश की छवि को धूमिल किया है। विदेश मे ही नहीं अपितु स्वदेश में भी बाहर से पधारे विदेशी अतिथियों से बातचीत अंग्रेजी में करके जो हमारी संस्कृति की नाक कटवाई है मैं आशा करता हूं कि नई सरकार ऐसे शर्मनाक कार्य नही करेगी। कितने शर्म की बात होती थी कि रूस के अतिथि तो अपनी बात रूस की भाषा में कहते जिसका अंग्रेजी मे रूपान्तर करके हमारे नेताओं को समझाने का प्रयास किया जाता परन्तु हमें हिन्दी में बात कहने में लज्जा आती थी। एक और निवेदन भी सरकार से करना चाहूंगा कि संविधान को कड़ा कर सरकारी कार्यालयों मे हिन्दी सम्बन्धी नियमों का सख्ती से पालन करवाया जाए। नियमों का उल्लंघन करने वालो के खिलाफ कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाए ताकि हिन्दी में काम करने का वातावरण तैयार हो सके। हिन्दी भाषी क्षेत्रों जैसे दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश उत्तर प्रदेश आदि जिन्हें कि भारतीय संविधान में 'क' क्षेत्र कहा गया है वहा शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में होना चाहिए जबकि ऐसा नही हो रहा। दिल्ली में भी यदि हम सरकारी नीतियों के अनुरूप पूरा कार्य नही करेंगे, जो कि देश की नाक है तथा जहां से सारे देश को प्रेरणा व निर्देश मिलता है तो हम अन्य स्थानों से कोई उमीद कैसे कर सकते है। इसके साथ ही मेरा सरकार से यह अनुरोध भी है कि राजभाषा से सम्बन्धित नीतियों के अनुरूप जो लाभकारी योजनायें तथा पुरस्कार योजनाये जो अभी तक केवल कागजों में ही है उन्हें सभी सरकारी कार्यालयों में लागू किया जाए ताकि इस प्रकार का वातावरण तैयार हो कि लोग स्वयमेव हिन्दी मे काम करने को प्रेरित हों।

अर्थशास्त्र का सिद्धात है कि उत्पादकता पर खपत का व खपत पर उत्पादकता का सीधा प्रभाव पड़ता है। परन्तु यह कैसी अनोखी समीकरण है कि भारत में न तो हिन्दी शिक्षित लोगों का उत्पादन हो रहा है अर्थात् बच्चा को हिन्दी मे शिक्षा नही दी जा रही और न ही हिन्दी शिक्षित लोगों की खपत हो रही है अर्थात् जो हिन्दी जानते हैं वे भी हिन्दी में काम करना नही चाहते। जिन्हें हिन्दी प्रशिक्षण दिया जाता है उनसे भी हिन्दी में काम नही लिया जा रहा (यह वास्तविकता है। जिन्हें विभागीय प्रशिक्षण दिया जाता है उनसे भी काम नहीं लिया जाता) और हम चाहते है कि भारत में हिन्दी का वर्चस्व हो। इसके लिए तो हमें सतत् प्रयास करना होगा। आम नारेबाजी खोखली नीतियों व आकड़े बनाने से कुछ होने वाला नही। आओ सतत् प्रयास आरम्भ करें। आज से और अभी से।

आर्यसमाज बनाया

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

था वातावरण अशान्त सभी ने मिथ्या पथ अपनाया था।
जन-जन के कल्याण हेतु यह आर्यसमाज बनाया था।
फंसे विधर्मियों के चंगुल में जो अपव्यय मन करते थे।
भूले भटके फिरें ईश दर्शन के लिये तरसते थे।
कोटि-कोटि अज्ञानग्रस्त मानव को ज्ञान कराया था।
जन-जन के कल्याण हेतु यह आर्यसमाज बनाया था।१।
निज बुद्धि विवेक तपोबल से पाखण्डों का नाश किया।
वेद विमल वाणी कल्याणी का जग में प्रकाश किया।
ज्ञान कर्म ईश्वर चिन्तन का सारा महत्व बताया था।
जन-जन के कल्याण हेतु यह आर्यसमाज बनाया था।२।
रच सत्यार्थप्रकाश मिथ्या मत पन्थों के दुर्ग हिला दिये।
भूले भटके मानव आकर भाई से भाई मिला दिये।
खिला दिये वहां पुष्प जहां वैदिक उद्यान कुम्हलाया था।
जन-जन के कल्याण हेतु यह आर्यसमाज बनाया था।३।
ऊंच-नीच और भेदभाव का सारा किया सफाया यहां।
सामाजिक करके सुधार जन जन को गले लगाया यहां।
स्वयं किया विषपान देश को वेदामृत पिलाया था।
जन-जन के कल्याण हेतु यह आर्यसमाज बनाया था।४।

—गऊ को तुम्हें बचाना है—

—रामचन्द्र आर्य 'नलवा'

दूध दही खाना आर्यो, गऊ को बचाना आर्यों।
हो जाओ खुशहाल, गऊ को तुम्हें बचाना है।टेक।
राम कृष्ण पैदा होते गऊ का सम्मान था।
अच्छा रहन सहन उनका धर्म गोदान था।
अब हुआ मांसाहार आर्यो कितना गन्दा खाना है।१।
सात्विकता में रह नहीं सकते कई नर-नारी।
गऊ माता का गल कटवाते बनें अत्याचारी।
कैसे दूध पाना आर्यो, पाप का ना ठिकाना है।२।
बल बुद्धि कैसे बढ़े अब इन्सान की।
अमृत छोड़ जहर पीता मूरत हैवान की
वृथा जीवन गंवाना आर्यो राह तुम्हें दिखाना है।३।
'रामचन्द्र' अब चेत करो हो गए बरबाद।
गोपालन से भारत देश होगा खुशहाल।
ऋषि का अफसाना आर्यो हर घर में पहुंचाना है।४।

विकास शिक्षा समिति (रजि) बड़वा (भिवानी)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रैस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न २३२०७।७३ .TK ४६ डिट सबत् १,६६,०८ ५३ ०६०

ओ३म् सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए. ज्येष्ठ १, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक २३ १४ मई १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग के महत्वपूर्ण निश्चय

(केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ६ मई १९९० रविवार को प्रात: ११ बजे सभा कार्यालय सिद्धांती भवन दयानन्दमठ रोहतक में प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान की अध्यक्षता में अन्तरंग सभा की बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण निश्चय किए गए:—

१- प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डलों द्वारा प्रचार योजना

अन्तरंग सभा ने निश्चय किया है कि जिन जिलों में अभी तक वेदप्रचार मण्डलों का गठन नहीं हो सका है, वहां शीघ्र ही जिले के आर्यसमाजों के अधिकारियों की बैठक में मण्डलों का गठन किया जावे और वहां एक उपदेशक तथा एक भजन मण्डली का प्रचार केन्द्र बनाकर जिला के सभी नगरों तथा ग्रामों में वेदप्रचार करवाया जावे। इस कार्य में जिला भर के सेवानिवृत्त आर्य अध्यापक तथा अन्य कर्मठ आर्य कार्यकर्ताओं का भी सहयोग प्राप्त किया जावेगा। इस प्रकार शराब, मांस, दहेज आदि बुराइयां समाप्त कराने में भी और अधिक शक्ति से किया जा सकेगा और आर्यसमाज का संगठन भी सुदृढ़ होगा।

२- पं० जगदेवसिंह सिद्धांती तथा पं० रघुवीरसिंह शास्त्री के जीवन चरित्र छपेंगे।

आर्यजगत् के विख्यात् वैदिक विद्वान् एवं नेता पं० जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री एवं उनके सुयोग्य शिष्य पं० रघुवीरसिंह शास्त्री पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के जीवन चरित्र सम्पादित करने का कार्यभार वैदिक विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव जी शास्त्री को सौंपा गया है। उन्होंने उनके जीवन के सम्बन्ध में सामग्री संग्रह करना आरम्भ कर दिया है। सभा ने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं तथा उनके श्रद्धालुओं से निवेदन किया है कि वे इनके जीवन के सम्बन्ध में जो भी जानकारी अथवा पत्र आदि हैं, वह यथाशीघ्र सभा कार्यालय के पते पर आचार्य सुदर्शनदेव जी के नाम पर भेजने का कष्ट करें।

३- आकाशवाणी रोहतक से वार्ताओं के प्रसारण हेतु उपसमिति गठित

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से समय-समय पर आर्य महापुरुषों तथा अन्य सामाजिक विषयों पर वार्ताओं को प्रसारित कराने तथा सहयोग देने के लिए सभा ने एक उपसमिति का गठन किया है—

१- आचार्य सुदर्शन देव जी संयोजक, २- डॉ० रणजीतसिंह, ३- श्री सूबेसिंह पूर्व उपमण्डल अधिकारी, ४- प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, ५- श्री महावीर शास्त्री, ६- डा० सोमवीर, ७-प्रो०ओमकुमार आर्य। इस उपसमिति की मासिक बैठकें होंगी जिन मे कार्यक्रम तैयार किया जावेगा।

४- वैदिक संस्कार शिक्षण हेतु शिविर का आयोजन

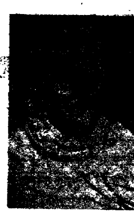
ग्रामों में वैदिक संस्कार कराने की कमी को दूर करने के लिए सभा की ओर से दयानन्दमठ रोहतक में १० से २४ जून तक संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। मैट्रिक पास जिनको संस्कृत का साधारण ज्ञान हो वे इस शिविर में भाग लेने के लिए अपने आवेदन शीघ्र भेजें। आचार्य सुदर्शनदेव जी ने शिक्षा देना स्वीकार कर लिया है।

५- हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की अर्धशताब्दी समारोह का आयोजन

सन् १९३८-३९ में हैदराबाद में आर्य सत्याग्रह में निजाम हैदराबाद से आर्यसमाज ने टक्कर ली थी और विजयी बनकर आर्य-

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आर्यनेता स्वामी रामेश्वरानन्द जी का स्वर्गवास



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रथम प्रधान, गुरुकुल घरौण्डा के संचालक, आर्यसमाज के सभी आन्दोलनों में बढ़चढ़ कर भाग लेने वाले वैदिक सिद्धांतों के प्रबल प्रचारक तथा लोकसभा के पूर्व सदस्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती का लम्बी बीमारी के पश्चात् ९मई पूर्णमासी को स्वर्गवास हो गया। उनके अन्त्येष्टि संस्कार के अवसर पर अन्य आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के साथ सभा के अन्तरंग सदस्य श्री रामानन्द सिंगल तथा विद्या परिषद् के प्रस्तोता प्रि० लाभसिंह ने भाग लिया। २० मई को २ से ४ बजे तक गुरुकुल घरौण्डा में शोकसभा का आयोजन किया गया है। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने उनके निधन पर गहरी शोक संवेदना प्रकट की है।

आर्यसमाज सभी का हितैषी है

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद, (उ०प्र०)

जो लोग आर्यसमाजी नहीं बने हैं, वह आर्यसमाज को अपना विरोधी समझते हैं। चाहे वह हिन्दू हों अथवा मुसलमान, ईसाई हों, जैनी हों अथवा सिख हों, पारसी आदि कोई भी हों, किन्तु इसमें नाममात्र की सच्चाई नहीं है। सत्य तो यह है कि आर्यसमाज सभी लोगों का, समस्त संसार का ही नहीं अपितु विश्व ब्रह्माण्ड और न केवल मनुष्यमात्र का अपितु प्राणीमात्र का हितैषी है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों में "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

विज्ञ पाठक विचार करें कि संसार का उपकार करना जिस संस्था का मुख्य उद्देश्य हो, वह संसार की हितैषी है अथवा नहीं और उससे बढ़कर सबका हितैषी और कौन हो सकता है? और फिर संसार के उपकार की बात कहना एक अलग बात है किन्तु उपकार कैसे हो सकता है, यह दूसरी बात। आर्यसमाज के स्वनाम धन्य संस्थापक ने तो संसार के उपकार का प्रकार अर्थात् उसके सूत्र भी आर्यसमाज के उपरोक्त नियम ही में बता दिए है।

पहला सूत्र है शारीरिक उन्नति करना। शारीरिक से अभिप्राय है स्वास्थ्य सम्बन्धी। आर्यसमाज गुरुकुल शिक्षा पद्धति द्वारा बालकों से ब्रह्मचर्य का पालन कराके और जीवन में संयमपूर्वक रहने के संस्कार डालकर शारीरिक उन्नति का सूत्र लागू करना चाहता है। इससे शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट मानवों का निर्माण होगा। स्वस्थ मानव सन्तानोत्पत्ति करने और वह भी स्वस्थ सन्तान की उत्पत्ति करने में समर्थ होता है।

इस नियम का दूसरा सूत्र है आत्मिक उन्नति करना। गुरुकुलीय शिक्षा के द्वारा बालक-बालिकाओं में आध्यात्मिक भूख जागृत की जाती है उन्हें ईश्वर का ध्यान अर्थात् संध्या करना सिखाई जाती है। और ईश्वर के वास्तविक स्वरूप की जानकारी कराई जाती है।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में परमात्मा के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी करा दी है। वह नियम निम्नलिखित है:—

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

विश्व मानवता परमात्मा के नाम पर भटक तथा बहक रही है। ऋषि दयानन्द ने उक्त नियम में बताया है कि वह सत्-चित् आनन्द स्वरूप है। सत वह सदा रहता है और उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता तथा वह चित् चेतना है, ज्ञानी है और उसका स्वरूप आनन्द है। आनन्द देखने की नहीं, अनुभूति की वस्तु है अतएव उसके दर्शन का नहीं अपितु उसके स्वरूप (आनन्द) के अनुभव का प्रयत्न करना चाहिए वह नेत्रों द्वारा नहीं अपितु मन से होगा। क्योंकि आनन्द की अनुभूति मन का विषय है, इन्द्रियों का नहीं।

दूसरी बात बताई है परमात्मा के निराकार होने की। निराकार अर्थात् जिसका कोई आकार, कोई डील-डौल न हो और डील-डौल न होगा तब जब शरीर न होगा। इसका अर्थ है कि वह शरीरधारी नहीं है, और जो शरीरधारी नहीं है उसकी मूर्ति नहीं बनाई जा सकती। इससे यह सिद्ध हुआ कि मूर्ति-पूजा निरर्थक है। आगे कहा गया है, वह सर्वशक्तिमान् है अर्थात् अपने कर्त्तव्य-कर्मों में किसी के सहयोग की उसे आवश्यकता नहीं और न किसी उपकरण की आवश्यकता है। वह न्यायकारी है अर्थात् जैसा जो करता है, वैसा ही भोगता है। वह न तो किसी को छूट देता है और न अकारण दुःख रूप दण्ड तथा सुख रूप पुरस्कार।

वह दयालु है, उसके स्वभाव में निर्दयता नहीं है। वह अजन्मा है अर्थात् उसका न कभी जन्म हुआ और न होगा। कुछ लोग परमात्मा को अवतार लेने वाला अर्थात् समय-समय पर जन्म धारण करने वाला कहते हैं। यह उनकी भ्रांति है। वह परमात्मा बिना जन्म लिए अशरीरी रहते हुए जड़-चेतनमय विश्व ब्रह्माण्ड को उत्पन्न कर इसकी व्यवस्था बनाए रखता है और जीवात्माओं द्वारा मानव शरीर धारण कर किए गए समस्त अच्छे-बुरे कर्मों की व्यवस्था रखकर उन्हें उसमें से प्रत्येक को स्व-स्व कर्मानुसार त्रिविध योजनाओं और जन्म-जन्मान्तरों में भेजकर यथा योग्य कर्मफल रूपी भोग प्रदान करता है, वह अपने ही उत्पन्न किए किसी व्यक्ति को मारने के लिए जन्म ले अर्थात् बिना शरीर धारण किए उसे मार भी न सके, यह नितान्त नासमझी की बात है। वह अजन्मा ही है, अजन्मा ही रहेगा। उसने कभी जन्म धारण किया है, न भविष्य में कभी जन्म लेगा।

वह अनन्त है अर्थात् उसका कभी अन्त नहीं होगा। वह पहले भी था, सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी था, अब भी है भविष्य में भी रहेगा! अनन्त अर्थात असीम भी है, कहीं उसका अन्त नहीं होता अर्थात् सीमा समाप्त नहीं होती। निर्विकार उसमें विकार, विकृति अर्थात् बिगाड नहीं होता। वह सदैव एकरस बना रहता है। प्रलय काल में भी ऐसा ही था, अब भी ऐसा ही है और भविष्य में भी ऐसा ही— जैसा अब है— ज्यों का त्यों बना रहेगा।

वह अनादि है! उसका आदि अर्थात् प्रारम्भ कभी नहीं था। इसी कारण से उसे अनादि तत्व कहा जाता है। उसकी उपमा का अर्थात् उस जैसे गुण-कर्म-स्वभाव युक्त अन्य कोई तत्व नहीं है, इस लिए वह अनुपम है वह सर्वाधार (सब का आधार), सब का आश्रय, सब का सहारा है और सबका धारण करने वाला है, विश्व ब्रह्माण्ड का उसी ने धारण किया है। सर्वेश्वर (सबका ईश्वर), सबका सबसे श्रेष्ठ शासक अर्थात् न केवल मनुष्यों अपितु मनुष्यों जो शासकगण हैं, उनका भी शासक है। मनुष्यों का ही शासक नहीं अपितु समस्त जड़-चेतनादिकों पर उस सबसे श्रेष्ठ शासक का शासन है।

वह सर्वव्यापक (सबके), न केवल प्राणीमात्र के अपितु प्राणी अर्थात् जड़ पदार्थों के भीतर भी व्याप रहा है और समस्त जड़-चेतन आदिकों से बाहर जो आकाश और जो अन्तरिक्ष हैं, उसमें भी व्याप रहा है। इसी कारण समस्त जड चेतन के भीतर की स्थिति को भी जानता है और इस समस्त जड़ चेतन के भीतर की स्थिति को जानने के कारण उसे सर्वान्तर्यामी कहते हैं।

वह अजर है, उसे कभी जरा, वृद्धावस्था नहीं सताती। वृद्धावस्था शरीर में व्यापती है। परमात्मा क्योंकि अशरीरी है, इसलिए उसे वृद्धावस्था प्राप्ति होने का प्रश्न ही नहीं उपस्थित होता। जरा का अर्थ जीर्णता भी है। परमात्मा के अशरीरी होने से उसमें जीर्णता को अवसर ही नहीं है। जीर्णता अर्थात् निर्बलता भी शरीर के जीर्ण होने पर प्रकट होती है वह अमर है अर्थात् मरता कभी नहीं। क्योंकि शरीर नहीं है। अतः जीर्णता नहीं आती और जब जीर्णता ही नहीं आती तो मृत्यु भी नहीं आ सकती। मृत्यु नाम भी जीव और शरीर के सम्बन्ध विच्छेद होने का है। परमात्मा का शरीर ही नहीं तो विच्छेद किसका होगा? अतः वह अमर है। वह अभय भी है। भय होता है अपने से शक्तिशाली अथवा अपने समान से। परमात्मा से न कोई शक्तिशाली है और न कोई उसके समान अतएव उसे भय नहीं होता।

वह नित्य अर्थात् सदा और प्रत्येक समय रहने वाला है। ऐसा कोई समय नहीं बीता, जब परमात्मा नहीं था। अब भी वह है और भविष्य में भी वह सर्वदा रहेगा, अतएव वह नित्य है। वह पवित्र है इतना पवित्र कि कोई भी किसी प्रकार की अपवित्रता उसे नहीं लगती। अपवित्रताए लगती है शरीर में वह है शरीर रहित। (क्रमशः)

अंग्रेजी के पक्षधर और उनका दुराग्रह

प्रो० शेरसिंह, कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

अंग्रेजी के हिमायतियों में तहलका सा मच गया है और उन्होंने अंग्रेजी के समाचार पत्रों के समर्थन से मुलायमसिंह यादव पर हल्ला बोल दिया है। वे इतने चिन्तित दिखाई दे रहे हैं जैसे कोई वन्य प्राणियों का रक्षक किसी जन्तु के लोप हो जाने का खतरा उपस्थित होने पर हो जाता है। परन्तु क्या अंग्रेजी के लोप होने का खतरा उपस्थित हो गया है? अंग्रेजी के पक्षधर भली-भांति जानते हैं कि अंग्रेजी के बढ़ते प्रभुत्व के कारण शिक्षा के माध्यम के रूप में तथा राजभाषा के रूप में भारतीय भाषाओं के विकास को खतरा पैदा होता जा रहा है। भारत की राजनीति में जिनका वर्चस्व रहा है, महात्मा गांधी से लेकर मुलायमसिंह यादव तक, किसी ने भी सबसे महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में तथा सर्वाधिक प्रेमपात्र पुस्तकालय की भाषा के रूप में अंग्रेजी के पठन-पाठन पर कभी उंगली नहीं उठाई।

संविधान के प्रावधान :

अनुच्छेद ३४३ (१) में स्पष्ट उल्लेख है कि "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।" १६६५ में अंग्रेजी की अतिरिक्त राजभाषा के रूप में मान्यता समाप्त हो जानी चाहिए थी परन्तु नौकरशाही, विशिष्ट वर्ग तथा तमिलनाडू के राजनेता जिन का अस्तित्व ही ब्राह्मणों के प्रति घृणा पर टिका था और जो ब्राह्मण के साथ मनमाने ढंग से संस्कृति और हिन्दी भाषाओं को जोडे हुए थे, इन सबके निहित स्वार्थ के कारण राजभाषा के रूप मे अंग्रेजी दनदनाती रही। ये राजनेता कमजोर वर्गों से सम्बन्ध रखते हैं तथा उनका प्रतिनिधित्व करते हैं परन्तु उनकी तंगदिली का लाभ उठा कर नौकरशाही और विशिष्ट वर्ग ने उनका अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए खूब इस्तेमाल किया। इन राजनेताओं को समय रहते हो यह समझ लेना चाहिए कि अंग्रेजी प्रभुत्व के कारण ही इन विशिष्ट वर्गों ने (जिनमें दक्षिण के ब्राह्मण भी शामिल हैं) प्रशासन के सभी ऊंचे पदों पर ही नहीं, बल्कि व्यापार और उद्योगों पर भी अपना कब्जा जमा लिया है। द्रमुक तथा समान विचार के अन्य राजनीतिक दलों द्वारा अपनाई जाने वाली भाषा नीति के कारण देश के कमजोर वर्ग बंटकर एक दूसरे के विरोधी बनकर खड़े हो गए हैं और इसका पूरा-पूरा लाभ समाज के विशिष्ट और शोषक वर्ग को मिल रहा है। जन साधारण की हिस्सेदारी तो शासन मे तभी सम्भव हो सकेगी जब राज का कामकाज भारत की जनभाषाओं में हो। इसलिए यह अति आवश्यक है कि द्रमुक आदि सगठन अपनी प्रतिक्रियावादी नीति छोड और देश के सभी दूसरे प्रान्तो में बसने वाले अपने कमजोर वर्ग के भाइयों से मिलकर सभी भारतीय भाषाओं को अपने अपने आसनों पर प्रतिष्ठित करें। यह कार्य जितना शीघ्र होगा उतना ही उनका और देश का भला होगा।

भारत ही एकमात्र अभागा देश है जिसमें संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा का एक शब्द भी जाने बिना बड़े से बड़ा पद हासिल किया जा सकता है, परन्तु छोटे-बड़े सभी पदों के लिए अंग्रेजी की उपाधि प्राप्त करना अनिवार्य है। क्या भारत में बसने वाले ८५ करोड लोगो के लिए इससे बढ़कर दुखदायी और शर्मनाक बात हो सकती है कि उनकी आंखों के सामने निहित स्वार्थों द्वारा संविधान की धज्जियां उड़ाई जायें? भारत के जन जन के लिए आशा के युग का सूत्रपात उस दिन होगा जिस दिन इस दस्तूर को पलट दिया जाएगा तथा इसका शीर्षासन करवा दिया जाएगा। जिस दिन यह हो जाएगा उस दिन अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की बाढ़ सूख में बदल जाएगी। तब सभी विद्यालय हिन्दी माध्यम के ही हो जायगे।

अनुच्छेद ३७ के अनुसार "राज्य की नीति के निदेशक तत्व देश के शासन में मूलभूत हैं और इन तत्वों का प्रयोग करना राज्य का कर्त्तव्य होगा।"

अनुच्छेद ३८(२) में प्रावधान किया गया है कि "राज्य का यह प्रयास होगा कि देश के किसी भी क्षेत्र में बसने या कोई भी व्यवसाय करने वाले व्यक्ति या समुदाय को प्रतिष्ठा, सुविधाओं तथा अवसरों में समानता प्राप्त हो सके।"

अनुच्छेद ४६ के अनुसार "राज्य जनता के दुर्बलतर विभागों के शिक्षा तथा अर्थसम्बन्धी हितों की विशेष सावधानी से उन्नति करेगा तथा सामाजिक अन्याय और सब प्रकारों के शोषण से उनका संरक्षण करेगा।"

जब श्री यादव कमजोर वर्गों को सुविधाओं और अवसरों में समानता दिलाने की या उनके शिक्षा तथा अर्थसम्बन्धी हितों के संरक्षण की बात करते है तो वे मुख्यमन्त्री के रूप मे संविधान के आदेशों का तत्परता और निष्ठा से पालन ही तो करते हैं। वे शत-प्रतिशत सही कहते है कि "१४ वर्ष की आयु तक सभी बच्चो की शिक्षा में एकरूपता होनी चाहिए, चाहे वह बच्चा राष्ट्रपति का हो या चौकीदार अथवा चपरासी का।" वे आगे कहते हैं कि "मैं शिक्षा में द्वैत का विरोधी हूं और ऐसी दुरव्यवस्था को दूर करना चाहता हू। जब तक यह व्यवस्था रहेगी तब तब समाज में एक विशिष्ट वर्ग भी बना रहेगा। इसका नतीजा हमारे सामने है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४२ वर्ष बाद भी देहाती युवकों को महत्वपूर्ण और बड़े पद नही मिल पाए हैं, केवल मुट्ठी भर लोगों को ही आई. ए. एस तथा उससे जुडे हुए पद मिल पाए है और वे भी उनको जिनके अभिभावक सरकारी अधिकारी है, शुद्र गाववाले तो इन पदो को प्राप्त करने की बात सोच भी नही सकते है।"

१६६८ में स्वीकृत शिक्षा की राष्ट्रीय नीति मे यह विचार प्रस्तुत किया गया था कि सभी बच्चे अपने पडौस के विद्यालय में बिना भेद-भाव के एक साथ पढे। भारत की जनता का यह दुर्भाग्य है कि नौकरशाही और विशिष्ट वर्ग के लोगों के दुराग्रह के कारण यह विचार अपनी उडान नही भर सका।

यह एक नग्न सत्य है कि तथाकथित प्रतियोगिता और सिफारिश के सहारे अत्यन्त खर्चीले पब्लिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विशिष्ट वर्ग के प्रत्याशी सभी महत्वपूर्ण और बडे पदों पर कब्जा जमाए बैठे है। व्यापार और उद्योगों पर भी एकाधिकार जमाने में भी इसी कारण ये लोग सफल हो गए हैं। चुनावों के दिन-प्रतिदिन बढते हुए खर्चों के कारण तथा राजनीति में अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए इस विशिष्ट वर्ग के द्वारा पेश किए गए प्रलोभनों में राजनेता फसने जा रहे है। श्री यादव के इस कथन को झुठलाना मुश्किल है कि सभी क्षेत्रों मे बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के लिए बहुत हद तक ये विशिष्ट वर्ग ही जिम्मेदार है। इन लोगों के हृदय मे साधारण नागरिक के लिए कोई करुणा नही है। मैं हैरान हू कि नारायण दत्त तिवारी जैसे समाजवादी नेता इन वर्गों के बचाव के लिए समाचार पत्रो में वक्तव्य देते है और अंग्रेजी के चलन को आवश्यक करार दे रहे है।

महात्मा गांधी ने जो बात ५० वर्ष पहले कही थी वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक और सही है। उन्होंने कहा था कि "हम शिक्षित लोगों ने विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की है, आम जनता से उनका कोई लगाव नही है, इसलिए वे जनता का प्रतिनिधित्व करने मे असफल रहे है। हमारी जनता हमको ऐसा ही मानती है जैसा वे अंग्रेज अफसरों को मानते है। वे अपना दिल इन दोनो के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

खुशवन्तसिंह बहके हुए हैं

—महावीरसिंह फोगाट २१/१२२७ प्रेमनगर रोहतक

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्होंने जमीन पर पैर रखने का आनन्द नहीं लिया होता है। वे समझते हैं कि जमीन पर रखेंगे तो गिर जाएंगे। गिरने के डर से वे कभी भी जमीन की ओर देखना भी पसन्द नहीं करते। हमेशा ऊपर ही ऊपर की सोचते है और जब ऊपर ही ऊपर की सोचते है तो उनकी सब बातें ऊपर ही ऊपर की होती हैं। जैसे चलेंगे तो हवाई जहाज में ही। यदि कभी नीचे चलना भी पड़े तो बड़ी बेचैनी से बढ़िया किस्म की कार में बड़े अनमने होकर चलेंगे। यदि कभी इससे भी नीचे गिरना पड़ जाए तो ऐसे पंचतारा होटल-मोटल या महल में हो गिरेंगे कि जिसमें जमीन बहुत नीचे हो और उसके ऊपर चिकना फर्श और फर्श पर फिसलने लायक मुलायम कालीन बिछा हो। लेकिन कभी-कभी इससे भी नीचे गिरने का खतरा हो सकता है इसलिए ऐसे लोग वैसे तो पूरे शरीर पर ही कई-कई कपड़े कसे रहते है लेकिन पैरो पर तो बड़ा भारी प्रबन्ध रखते है जिससे किसी प्रकार से भी जमीन से न छुए पहले मौजे-मौजो पर जूते और जूतों को भी कड़े बांधकर रखते हैं इसलिए कभी भी इन्हें जमीन पर गिरने का खतरा नहीं रहता। जमीन से जुड़े तो ये कभी सकते ही नहीं। हां कभी-कभी जब यह खतरा हो जाए कि लोग कभी यह न समझ लें कि सचमुच ये जमीन से जुड़े हुए नहीं हैं और उन्हें जमीन पर आने से ही न रोक दें, इस लिए ये कभी-कभी लुक छिपकर शाम सुबह के अंधेरे उजाले में जमीन पर चहल कदमी कर लेते हैं लेकिन पैरों को बांधे रखना उस समय भी नहीं भूलते है। इस प्रकार ये लोग जमीन से जुड़ने का झांसा जरूर दिए रखना चाहते हैं लेकिन जमीन से जुड़े नहीं होते हैं। खुद ऊपर की हवा में बहके रहना चाहते हैं लेकिन दूसरों को जमीन से जुड़े रहने के बहकावे में डाले रखना भी चाहते हैं।

ये जमीन से जुड़े लोगों की भाषा से भी उसी प्रकार घबराते हैं जैसे कि जमीन से घबराते है। तभी तो श्री सरदार खुशवन्तसिंह ने कल परसों अखबार में खत लिख मारा कि 'अंग्रेजी ने पहले भी भारत को लाभ दिया है। अब भी दे रही है और आगे भी देती रहेगी।' क्योंकि उन्हें भय है कि यदि जमीन से जुड़े लोगों की भाषा हावी हो गई तो कल जमीन से जुड़े लोग भी हम पर हावी हो सकते है। अत: खत लिख मारा और समझ बैठे कि ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया। अब सब भारतीय भाषाएं और उसके समर्थक खत्म हो जायेंगे। लेकिन यहां भी इन्हें डर है कि कभी जमीन से दूर न समझ लें। अत: ये हिन्दी में लिख देते है लेकिन इन के आचरण और हाव-भाव से ऐसा लगता है कि शायद लिखा तो अंग्रेजी में हीं होगा लेकिन उसका अनुवाद जमीन से जुड़ा हुआ भी कभी सिद्ध करना पड़ सकता है। अत: हिन्दी में कर दिया होगा और उससे भी आगे बढ़कर अंग्रेजी की तुलना भी जमीन से जुड़ी पंजाबी और असमी के साथ यह कहकर कर दी कि 'अंग्रेजी यदि दो प्रतिशत की भाषा है तो पंजाबी असमी तो दो प्रतिशत से भी कम की भाषा है। तो क्या इन्हें भी हटा दिया जाए?'मुझे इस बेचारे खुशवन्त की बुद्धि पर बड़ा तरस आता है जो महामूर्खता से पंजाबी और असमी के कम प्रतिशत फैलाव की घटिया ढंग से बात कहकर अंग्रेजी की शेखी बघार कर उसे भारत पर लादे रखना चाहता है। उसे यह क्यों नहीं पता कि अंग्रेजी थोंपी हुई भाषा है और पंजाबी असमी हमारे प्रदेशों की मातृभाषायें है। सचमुच खुशवन्त आप बहके ही रहते है। आपने पिछले वर्ष लिखा था कि शव को गाड़ने से दुर्गन्ध नहीं होती बल्कि जलाने में होती है अत: हिन्दू नेता इस पर विचार करें। पता नहीं आपकी बुद्धि लिखते समय कहां रहती है। भले आदमी सोचो! शव जमीन में पड़ा-पड़ा कितने दिन तक जमीन के अन्दर की जमीन और पानी को दूषित करता रहेगा और फिर इतने कब्रिस्तान के लिए जमीन कहां से आएगी? क्योंकि शव रोज ही होते रहेंगे। जबकि जमीन रोजाना नहीं बनती है। फिर कितनी जगह में कब्र बनती हैं उतनी जगह में उगे वृक्ष की लकड़ी ही शव जलाने को बहुत है और वह वृक्ष जलने से पहले करोड़ों अरबों रुपए के पत्तों द्वारा खाद तथा आक्सीजन व अन्य प्राकृतिक सन्तुलन भी दे दे चुका होगा। कभी आप पुनर्जन्म पर छींटा कशी करते है। एक बार आपने जाट बिरादरी के बारे में भद्दा चुटकला भी दिया था। तब भी मैं यह समझकर चुप रह गया था कि ऐसे मूर्ख तो हिन्दुस्तान में बहुत हैं। कभी ठोकर लगे तो स्वयं समझ जाएगे लेकिन आपने तो हद ही कर दी कि पंजाबी और हिन्दुस्तानी होकर उन्ही को काटना शुरू कर दिया। जिस थाली में खाते हो उसी में छेद करते हो। आपको जरा सी भी शर्म है? आपने अंग्रेजी की अनिवार्यता को लाभकारी बताया है क्योंकि उसकी अनिवार्यता तोड़ने की ही बातें चल रही हैं लेकिन आपको महान् भारतीय भाषाओं में कुछ भी लाभ नजर क्यों नहीं आता है आश्चर्य है? जिसमें ६५प्रतिशत छात्र असफल हैं। जो भारतीय सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान सबको विकृत कर रहा है और केवल भौतिकता की अंधी दौड़ मानव से लगवा रही है वह तो लाभकारी जिसके अक्षर कोई दो पंक्ति के, कोई तीन के, कोई चार के छापे के अलग, लिखने के अलग, छोटे अलग, बड़े अलग उच्चारण तो उसके बाप दादाओं को भी नहीं भाता। तोता को टोटा कहेंगे 'डब्लू' में ७ अक्षर बोलेंगे और लिखेंगे एक और बोलने में वह भी साईलेन्स। ऐसी बेहूदी भाषा और आप उसे भारत की जमीन से जोड़े रखना चाहते हैं और उसे जमीन से जुड़ी हुई बतलाते है। जिस हिन्दी संस्कृत की विदेशी भी प्रशंसा करते हैं। जो हमारी जमीन से सीधी जुड़ी हैं। उसे आप उखाड़ना चाहते हैं। मैं आप से निवेदन करता हूं कि आप कृपया ऊपर-ऊपर ही रहकर भौंरे की तरह बागों की सुगन्धि लेते रहिए और वर्णन करते रहिए कि 'मुझे स्विटजरलेंड के विमान तल पर तीखे नख-शिख वाली औरत मिली।' मुझे कनाडा में नीली आंखों वाली लम्बी देह वाली चंचल बाला मिली आपके लिए यही ठीक है। पंजाबी असमी का नाम लेकर नीचे क्यों गिरते हैं। बस करो। कभी कन्नड, हिन्दी संस्कृत, तेलगू, बंगाली पर भी आ जाओ। खुशवन्त रहो दु:खवन्त न बनो।

दौर आज हिंसा का

पंजाब जल रहा क्यों कश्मीर जल रहा।
क्यों दौर हिंसा का सर्वत्र चल रहा।।
भावना कहां गई हमारी भाई-चारे की।
ज्वाला क्यों धधक रही द्वेष के अंगारे की।।
इतिहास कह रहा है फिर से आज साथियो।
बचानी आर्य भूमि की तुम्हें लाज साथियो।।
कौन छुपके देखो ये जहर उगल रहा।
पंजाब जल रहा क्यों कश्मीर जल रहा।
भूल गए आज क्या तुम आजाद भगत को।
यह देश दयानन्द का दिखला दो जगत को।।
बलिदान शिवा प्रताप का याद तो करो।
वेदों का वह प्रचण्ड शंखनाद तो करो।।
सांप आस्तिन का कोई कैसे पल रहा।
पंजाब जल रहा क्यों कश्मीर जल रहा।।
हाथ पर हाथ अब धरे न रहो तुम।
अस्त्र सत्य का वही फिर से गहो तुम।।
वक्त है यह कीमती अब देर न करो।
उठो! भू-भारती के शेर न डरो।।
देखो हमारे बीच हमें कौन छल रहा।
पंजाब जल रहा क्यों कश्मीर जल रहा।।

—मोहन लाल शर्मा 'रश्मि'
९०७ ए, प्रीलेड गंज, दाहोद (गुजरात) ३८९१६०

आर्यसमाज क्या है ?

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)
(गतांक से आगे)

●

ऐसे लोग आर्यसमाज को केवल हवन सम्प्रदाय समझते हैं। नई दिल्ली में एक आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष महोदय कहने लगे 'स्वामी जी हम तो यज्ञ·· ·····। मैंने उनकी बात को मध्य में ही काटकर कहा—'आप तो यज्ञ क्या ? यज्ञ शब्द के अर्थ भी नहीं जानते। केवल घी-सामग्री जला देने का नाम यज्ञ नहीं है।' भला जिसे यज्ञ शब्द के अर्थ नहीं आते, वह यज्ञ कैसे हो सकता है 'यज्ञमानो वै यज्ञः' यजमान को यज्ञ होना ही चाहिए, किन्तु जो व्यक्ति यज्ञ के अर्थ नही जानता वह यज्ञ (अग्निहोत्र) की प्रक्रियाओं की संगति नहीं लगा सकता, उन्हे समझने और उनकी संगति लगाने की योग्यता से दूर है, वह यज्ञ कैसे हो जाएगा ? उसका जीवन यज्ञमय कदापि नहीं बन सकता। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक। वह समझता है कि आर्यसमाज हवन करने वालों का संगठन है और किसी प्रकार उसके मस्तिष्क में यह बात बैठ गई है कि हवन करना धर्म है और इसके करने से मोक्ष या स्वर्ग अर्थात् परमात्मा मिल जाता है। बस वह हवन में श्रद्धा रखने लगा—वह श्रद्धा जो वास्तव में श्रद्धा नहीं अपितु अन्धविश्वास है।

हवन करना श्रेष्ठ कर्म है, महान् श्रेष्ठ कर्म है और तथ्य यह है कि हवन मानवमात्र के द्वारा किया जाना चाहिए। इससे सुगन्ध का प्रसारण और दुर्गन्ध का निवारण होकर न केवल मनुष्य जाति का अपितु प्राणिमात्र का लाभ और हित सिद्ध होता है। यह परोपकार का परमोत्कृष्ट साधन है, परन्तु सुगन्ध का प्रसारण तो अग्निहोत्र की क्रियाओं को बिना किए सुगन्धित द्रव्य को जलाकर भी किया जा सकता है। जब सुगन्ध का प्रसारण होगा तो उसके परिणामस्वरूप दुर्गन्ध का निवारण भी हो ही जाएगा। परन्तु यज्ञ का एक अंश अर्थात् सुगन्धि फलाने का यज्ञ (शुभ कर्म) हो जाएगा, किन्तु यज्ञमय जीवन 'यज्ञमानो वै यज्ञः' जो यज्ञ का वास्तविक लाभ है वह नहीं हो पाएगा। साम्प्रदायिक भावना व अभिरुचि की पूर्ति तो हो जाएगी, किन्तु धार्मिक जीवन नहीं बन पाएगा।

पंजाब के जालन्धर नगर की एक समाज के प्रधान ने आर्य समाज भवन में दैनिक यज्ञ के प्रसग में कहा कि 'यदि यहा आकर नित्य यज्ञ न करें तो आर्यसमाज बनाना ही व्यर्थ हुआ।' मैंने उनसे निवेदन किया कि यह आर्यसमाज नहीं है। बिगड़कर बोले—'मैं २२ वर्ष पाकिस्तान में (पाकिस्तान बनने से पहले उस क्षेत्र में जो पाकिस्तान में चला गया है) आर्यसमाज का प्रधान रहा हू और ६ वर्ष से यहां प्रधान हूं। मैंने कहा—'मुझे यही तो आश्चर्य है कि आप २८ वर्ष आर्यसमाज के प्रधान रहकर यह भी नहीं जान सके कि आर्य-समाज किसे कहते हैं ?"

जो व्यक्ति इतनी लम्बी अवधि आर्यसमाज के उत्तरदायी पद पर रहकर आर्यसमाज के अर्थ नहीं समझा और जिसे आर्यसमाज और आर्यसमाज मंदिर का अन्तर तक ज्ञात नहीं, जो भवन को ही संस्था समझता है, क्या वह आर्यसमाजी कहलाने का अधिकारी है ? नहीं, कदापि नहीं। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक और आर्यसमाज भवन में साम्प्रदायिक भावना से ही आकर दैनिक अग्निहोत्र में सम्मिलित हो जाता है। आर्यसमाज के मन्तव्यों को समझने की योग्यता से रिक्त है। आर्यसमाज के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ऐसे व्यक्ति से कोई आशा करना दुराशा मात्र है।

मेरा अभिप्राय यह नहीं कि आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ न किया जाए, किन्तु मैं यह कहना चाहता हू कि आर्यसमाज मंदिर आर्यसमाज का कार्यालय है, आर्यसमाजियों का सभा भवन है। घर में तो यज्ञ न किया जाए, जिसका स्वयं आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द ने 'पंच महायज्ञ विधि सत्यार्थप्रकाश' और 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में वर्णन व विधान किया है—आर्यसमाज मन्दिर में आकर यज्ञ कर लिया जाए। क्या यह ऋषिवर दयानन्द के विधान के विरुद्ध नितान्त साम्प्रदायिक भावना नही है ? और क्या यह ऋषिवर दयानन्द के दृष्टिकोण (अन्ध परम्परा के खण्डन) के विरुद्ध उल्टा उस ऋषि के ही मिशन में काबे में कुफ्र के समान अन्ध परम्परा चलाना नहीं है ? और क्या इस प्रकार की भावना, अभिरुचि और दृष्टिकोण रखने वाले लोग आर्यसमाजी कहलाने के अधिकारी हैं ?

वास्तविकता यह है कि आर्यसमाजी बनने वाले लोग पौराणिक घरों से ही आते है। उनके वही अंध-परम्परा वाले अंधविश्वासी संस्कार होते हैं। यदि आर्यसमाज में प्रवेश के समय ही उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र अथवा वैचारिक क्रांति का स्रोत उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पढने को मिल जाता है या फिर जो सत्यार्थप्रकाश को पढकर ही आर्यसमाजी बनते है तो उनके अंध-विश्वासी संस्कार समाप्त हो जाते हैं और वह अन्ध-परम्पराओं से सर्वथा मुक्त हो जाते हैं।

इसका कारण यह है कि वह महर्षि के दृष्टिकोण और आर्य-समाज को समझ गए होते हैं। ऐसे लोग कहीं भी जायें, किसी भी क्षेत्र में रहें वह न तो कभी अन्ध-विश्वासों में फसते हैं और न किसी के कहने से बहकते है। वास्तविक अर्थों में वही आर्यसमाजी कहलाने के अधिकारी होते है।

अंतरंग के महत्वपूर्ण निश्चय

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

समाज के संगटन और शक्ति का परिचय दिया था। इस सत्याग्रह में हरयाणा के आर्यसमाज ने सर्वाधिक योगदान किया था। कई आर्यवीर शहीद भी हुए थे। अतः हरयाणा सभा की ओर से इस सत्याग्रह का अर्धशताब्दी समारोह रोहतक मे मनाने का निश्चय किया है। इस सत्याग्रह के सभी सत्याग्रहियों को पेंशन दिलाने के लिए उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर कर रखी है। १६ जुलाई को निर्णय होने की सम्भावना है। इसके बाद समारोह की तिथि की घोषणा कर दी जाएगी। इस समारोह के प्रबन्ध के लिए आर्यसमाजो तथा दानी महानुभावों से दान भेजने की अपील की गई। लाला साधु-राम आर्य धनोरी जिला जींद के सत्याग्रही ने इस समारोह के लिए २५० रुपए दान देकर श्रीगणेश किया है अन्य आर्य भाई भी अपना योगदान भेजकर सहयोग देवें।

६- आर्यसमाज के तीन सूत्री कार्यक्रम को क्रियान्वित करने की अपील

आर्यसमाज के तीन सूत्री कार्यक्रम (अंग्रेजी हटाओ), हिन्दी, संस्कृत अपनाओ, गो रक्षा तथा शराबबन्दी लागू करवाने के लिए आर्य जनता से सभा ने अपील की है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में इस आदोलन को सक्रिय तथा क्रियान्वित करने के लिए पूरी शक्ति से कार्य करें। ग्राम पचायतों से सम्पर्क करके सितम्बर मास से पूर्व शराबबन्दी का प्रस्ताव करके हरयाणा सरकार को भिजवावें। शराबबन्दी का प्रस्ताव करवाने का प्रारूप सभा कार्यालय को पत्र लिखकर मंगवा लेवे। आर्यसमाज के उत्सवों पर तीन सूत्री कार्यक्रम पर सम्मेलन करके जन जागरण करें।

नागालैण्ड सरकार द्वारा शराबबन्दी करने की घोषणा का सभा ने स्वागत करते हुए हरयाणा सरकार से शराबन्दी लागू करने पर जोर दिया है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश, म०प्र० तथा हिमाचल प्रदेश आदि सरकारों द्वारा हिन्दी भाषा मे सरकारी कार्य करने के निर्णय का स्वागत किया है और हरयाणा सरकार से भी इनका अनुसरण करने का अनुरोध किया गया है। हरयाणा में गो-वध पर प्रतिबन्ध है परन्तु कसाई तथा लोभी व्यापारी धोखा देकर गायों को हरयाणा सीमा से बाहर भेज रहे है। अतः गोरक्षा कार्यकर्त्ताओं से इस षड्यन्त्र को विफल करने हेतु गो निकासी को रोकने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करने की अपील की है।

अंग्रेजी के पक्षधर और उनका दुराग्रह

(पृष्ठ ३ से आगे)

सामने नहीं खोल सकने और उसका नतीजा है हमारा उनका दुराव।"

"यदि पिछले ५० वर्षों में हमने भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा पाई होती तो हमारे बुजुर्ग, सेवक और पडौसी भी उस ज्ञान में भागीदार हो सकते थे। बोस और राय जैसे वैज्ञानिकों की खोज भी हमारे परिवारों की उसी प्रकार एक निधि होती जैसे रामायण और महाभारत है। यदि सभी विषयों की शिक्षा अपनी भाषाओं के माध्यम से दी गई होती तो हमारी भाषायें भी चमत्कारिक रूप से समृद्ध हो जाती।"

एक भ्रामक प्रचार जानबूझ कर किया जा रहा है कि विज्ञान के अनेक विषयों की शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से नहीं दी जा सकती। शिक्षा के अनुसंधान और प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद ने विज्ञान के विषयों पर हिन्दी में जो पुस्तके प्रकाशित की है, उनसे ऐसे लोगों की आखें खुल जानी चाहिये। वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने सभी भारतीय भाषाओं के विद्वानों के सहयोग से अनुच्छेद ३५ के आदेशों के अनुसार विज्ञान और मानविकी के सभी विषयों की शब्दावलियों पुस्तकों के रूप में प्रकाशित की है। यह स्थाई आयोग नित्य शब्दों को भी शब्दावली में शामिल करता रहेगा। इन शब्दावलियों के ८० प्रतिशत से अधिक शब्दों को सभी भारतीय भाषाओं ने मान लिया है, इसलिए विश्वविद्यालयों में छात्रों के आने जाने में कोई कठिनाई नहीं रह गई हैं। १९६८ में मेरी अध्यक्षता में कुलपतियों, संस्थानों के अध्यक्ष, राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन हुआ था और एक-एक करोड रुपए से साहित्य निर्माण के लिए सब प्रदेशों में अकादमियां बनी थी। उस साहित्य का उपयोग उन विश्वविद्यालयों में हो रहा है जहा उच्चस्तर पर भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम मान लिया गया है। यह काम देश भर में खूबी से चल जाता यदि नौकरशाही और विशिष्ट वर्गों ने इसमें रुकावट न डाली होती। आज जब श्री यादव ने उस कार्यक्रम को गति देने के लिए बोलना शुरू किया तो निहित स्वार्थों ने बावेला शुरू कर दिया है।

अंग्रेजी एक भारतीय भाषा

अंग्रेजी के हिमायतियों ने एक मनघडन्त शोशा इतना प्रचारित किया है, और निहित स्वार्थियों ने उस राग को इतना अलापा है कि उसमें बड़े बडे और तथाकथित बुद्धिजीवी लोग भी फंस गए हैं और वह शोशा है "अंग्रेजी भी एक भारतीय भाषा है" नौकरशाहों द्वारा ही मन्त्रियों के भाषणों का प्रारूप तैयार किया जाता है। कभी-कभी मन्त्रीगण अपने अधिकारियों द्वारा लिखे हुए भाषण के वाक्य वेद-वाक्य समझकर पढ देते है क्योंकि वे अपने अधिकारियों की योग्यता और निष्ठा पर भरोसा कर बैठते है। अंग्रेजी के पक्षधर पूर्वाचल के नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय आदि के निवासियों की मातृभाषा इसलिए बता रहे हैं क्योंकि उनकी बड़ी संख्या ने ईसाई धर्म में प्रवेश कर लिया है। भाषा को मजहब के साथ जोड़ना किसी प्रकार तर्कसंगत तो है ही नहीं, वह तथ्यों के भी विपरीत है, क्योंकि भाषा का सम्बन्ध क्षेत्र से है मजहब से नहीं। बंगलादेश के मुसलमान की भाषा उर्दू नहीं बंगाली है, इसी नाप पर पाकिस्तान का बटवारा भी हुआ है। तमिलनाडु मे रहने वाले हिन्दू, मुसलमान ईसाई सब की भाषा तमिल है, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी नहीं। यही बात सब क्षेत्रों पर लागू होती है। यदि भाषा को मजहब से जोड दे तो अनर्थ हो जाएगा और देश के हर प्रदेश के बिखरने का सामान तैयार हो जाएगा। पूर्वाचल मे बसने वाले अलग अलग कबीलो की अपनी बोलियां है और वे ही वहा के लोगों को मातृभाषाये हैं, अंग्रेजी किसी हालत में नहीं। ये निहित स्वार्थ अंग्रेजी के द्वारा अपने प्रभुत्व जमाए रखने के लिए देश के टुकड़े टुकड़े करने से भी संकोच नहीं करते। ये लोग आजकल एंग्लो-इण्डियनों की भी वकालत करने लगे हैं और उनकी मातृभाषा भी अंग्रेजी बताते हैं। ये एक तथ्य की जानबूझकर अनदेखी कर रहे हैं, वह तथ्य यह है कि इस बिरादरी के लोगों की मातायें सब भारतीय थी, पिता अंग्रेज थे। इसलिए इनकी मातृभाषा कोई न कोई भारतीय भाषा ही है, हां पितृभाषा अंग्रेजी हो सकती है। एंग्लो इण्डियनों के ये वकील यह भी कहते हैं कि यदि अंग्रेजी का चलन बन्द हो गया तो ये लोग अपने देश में ही अजनबी हो जायेंगे। तथ्य तो उल्टा है, ये लोग भारत में अजनबी हो जायेंगे यदि जिन क्षेत्र में ये बसे हैं, वहा की भाषाएं इन्होंने नहीं सीखी। सच्चाई तो यह है कि ये सब लोग अपने अपने क्षेत्रों की भाषाये जानते हैं, यह सब लचर दलीलें तो निहित स्वार्थ अंग्रेजी को इनकी मातृभाषा बताकर उसे एक भारतीय भाषा सिद्ध करना चाहते हैं। परन्तु उनकी इस मनघडन्त कल्पना के पैर नहीं हैं, वह टिक नहीं सकती। परन्तु इस शोशे की कलई खोलना अत्यन्त आवश्यक है और वह विश्लेषण पर पूरी तरह खुल जाती है।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी नहीं रहे

क्षतिपूर्ति बहुत कठिन

स्वामी रामेश्वरानन्द जी काफी समय से बीमार चल रहे थे। उनके निधन का समाचार सुनकर सम्पूर्ण आर्य जगत् में गहरा शोक छा गया। स्वामी रामेश्वरानन्द जी ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन के दौरान जो तहलका सारे देश में मचाया, वह अविस्मरणीय है। स्वामी जी ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लिया और गोरक्षा आन्दोलन में भी बढचढकर भाग लिया। स्वामी जी एक धाकड़ सासद थे और चार वर्ष से अधिक जब वे लोकसभा के सदस्य रहे तो लोकसभा में उनकी अलग ही रौनक रहती थी।

ऐसे कर्मठ संन्यासी जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित किया हुआ था, बिरले ही होते हैं और उनके चले जाने से जो क्षति हो गई है, उसकी पूर्ति होना बहुत कठिन है।

भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके द्वारा जो संस्था चलाई गई वह उत्तरोत्तर उन्नति करती रहे।

—प्रो० शेरसिंह

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

नारनौल तथा रेवाड़ी में वेदप्रचार मण्डल की बैठक

१६ मई १९९० को प्रात: ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर नारनोल में जिला महेन्द्रगढ के आर्यसमाजों की तथा उसी दिन दोपहर बाद २-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर रेवाड़ी में जिले के आर्यसमाजों की बैठक सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में होंगी। अत: सम्बन्धित आर्य कार्यकर्त्ता समय पर पहुंचकर वेदप्रचार कार्य में सहयोग देवे।

—सभा मन्त्री

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश की सार्वदेशिक सभा के खिलाफ याचिका रद्द

श्री रामचन्द्र राव कल्याणी ने आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के प्रधान की हैसियत से दिनांक २५–८–८९ को सिविल कोर्ट हैदराबाद में यह अस्थाई स्थगन आदेश प्राप्त किया था कि उनकी सभा को भंग करके तदर्थ समिति बनाने से सार्वदेशिक सभा को रोका जाए। उन्होंने सार्वदेशिक सभा और सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को प्रतिवादी बनाया।

इस केस में माननीय न्यायाधीश श्री विनोदकुमार देश पाण्डेय ने दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों को गम्भीरतापूर्वक सुनने के बाद सत्यासत्य की घोषणा करते हुए ३० मार्च, १९९० के अपने आदेश में इस स्थगन आदेश को रद्द करते हुए तथा याचिका को खारिज करते हुए कुछ मुख्य टिप्पणियां इस प्रकार की।

१– दोनों पक्षों के तथ्यों से ऐसा लगता है कि वादी आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के प्रधान तथा प्रतिवादी नं० २ 'स्वामी आनन्दबोध सरस्वती' के बीच मुकाबले की भावना है। जबकि ऐसा कोई भी तथ्य सामने नहीं आया जिससे यह साबित होता हो कि प्रतिवादी नं० २ स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के योग्य नही हैं।

२– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सभी राज्य स्तरीय प्रतिनिधि संस्थाओं की नियंत्रक संस्था है, जिसमें निःसन्देह वादी अर्थात् आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश भी शामिल है।

३– आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश को भंग करके तदर्थ समिति बनाने सम्बन्धी स्वामी जी के अनुमानित दौरे का जिक्र करते हुए माननीय न्यायाधीश ने कहा कि रिकार्ड में कोई भी ऐसा तथ्य यह साबित नहीं करता कि प्रतिवादी सार्वदेशिक सभा वादी के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने वाली है। भविष्यत बातों के केवल अनुमान के आधार पर किसी प्रकार का स्थगन आदेश किसी व्यक्ति को नही मिलना चाहिए।

४– विशेष रूप से जहां संस्था के हितों की बात आती है माननीय न्यायाधीश ने टिप्पणी करते हुए कहा कि संस्था के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए, अपने निजी हितों को नहीं।

योग के बिना मानव भटक रहा

—स्वामी सत्यपति

प्रत्येक व्यक्ति वह चाहे किसी भी सम्प्रदाय को मानने वाला हो, सबका ईश्वर, धर्म एक ही है। योग एक ऐसी विद्या है जिससे समस्त देश व विश्व को एक सूत्र में बांधा जा सकता है। इसी योगाभ्यास में अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए मनुष्य अज्ञान, अधर्म व क्लेशों (दुःखों) से मुक्त हो जाता है। [illegible] माध्यम से इन्द्रिय दमन व झूठ छल-कपट, हिंसा को त्यागकर ही मानवमात्र को अपनी आत्मा के समान समझकर पाप नहीं करता है। दैनिक जीवन में सर्वहितकारी कार्यों को निष्काम भाव से यमनियमों का पालन व ओ३म् का जप करते हुए शुद्ध खानपान रखना योगसाधक के लिए अनिवार्य है। ये उद्गार आर्यसमाज बिड़ला लाईन्स में चल रहे 'क्रियात्मक योग प्रशिक्षण कार्यक्रम' में योगसिद्ध संन्यासी स्वामी सत्यपति जी महाराज ने अध्यक्षता करते हुए कहे।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि पातञ्जलि के बताए योग को छोड़ कर चमत्कारों–आडम्बरों के माध्यम से लोगों को भ्रमित किया जा रहा है, जिसका विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। वास्तव में अष्टांग योगपालन से नित्य-आनन्द की प्राप्ति ही योग की सच्ची अनुभूति है।

आर्य बन्धु जयप्रकाश
प्रधान आर्यसमाज बिड़ला लाईन्स दिल्ली

देहरादून [तपोवन] में एकवर्षीय १६ मई ९० से १५ मई ९१ तक योग प्रशिक्षण शिविर

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर के प्रारम्भ में स्वामी सत्यपति जी व दर्शनाचार्य ब्र० अर्जुनदेव जी १६ मई से जून १९९० (एक मास) तक रहेंगे और बाकी समय में शिविर का संचालन दर्शनाचार्य ब्र० आनन्द प्रकाश जी करेंगे।

इस शिविर में योगदर्शन एवं अन्य दर्शनों का अध्ययन कराया जाएगा। इसके साथ संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान भी कराया जाएगा। इसमें स्त्री पुरुष सभी भाग ले सकते हैं।

—मैं मद्यपान को चोरी, यहा तक कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूँ। —महात्मा गाधी

स्वामी समर्पणानन्द स्मृतिग्रन्थ के लिए सामग्री भेजने की अपील

मान्यवर,

आपको गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान्, ख्यातिप्राप्त आर्यनेता, शास्त्रार्थमहारथी एवं महोपदेशक स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती (पूर्वनाम पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार) की स्मृति में प्रकाशित किए जाने वाले ग्रन्थ [मे मेरा पत्र मिला होगा, जिसमें आपसे स्वामी जी के संबन्ध में निम्न प्रकार की सामग्री भेजने का अनुरोध किया गया था :

१. जीवन सम्बन्धी तथ्य : स्वामी जी के संपूर्ण जीवनकाल से सम्बन्धित ऐसे तथ्य, जो उनके जीवन-वृत्त का अंश बन सकें।

२. संस्मरण : [क] यदि आप कभी भी स्वामी जी के संपर्क में आए हों तो उनके जीवन के संबंध में स्वानुभूत संस्मरण।
[ख] निजी या संस्था के पुस्तकालय में पगृहीत ऐसी पत्र/पत्रिका स्मारिका की प्रति, जिसमें स्वामी जी विषयक संस्मरण छपे हों।
[ग] स्वामी जी के निधन के बाद प्रकाशित आर्य पत्र/पत्रिकाओं के विशेषांक।

३. पत्र : स्वामी जी के ऐसे पत्रों की फोटोस्टेट प्रतिलिपि, जिनका सार्वजनिक महत्त्व हो।

४. लेख/शास्त्रार्थ : [क] पत्र / पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों की अविकल प्रतिलिपि (जिस पत्र/पत्रिका से लिया गया हो) उसका विवरण भी अंकित कर दें।
[ख] स्वामी जी द्वारा किए गए शास्त्रार्थों की प्रतिलिपि।

५. व्याख्यान : स्वामी जी के व्याख्यानों की प्रतिलिपि, जो किसी कैसेट में हों या प्रकाशित अथवा लेखबद्ध हों।

६. चित्र : स्वामी जी के बाल्यावस्था से मृत्युपर्यन्त विभिन्न अवसरों पर (अकेले, परिवार के सदस्यों के साथ, उत्सवों, सम्मेलनों, शास्त्रार्थों आदि के समय व्याख्यान देते हुए या समूह के साथ विभिन्न आंदोलनों / सत्याग्रहों में भाग लेते समय) खींचे गए फोटोग्राफ।

अभी तक हमें आपका कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। आपसे पुनः अनुरोध है कि उपर्युक्त में से जो भी सामग्री आपके पास उपलब्ध हो उसे यथाशीघ्र भिजवाने का कष्ट करें। यदि इस कार्य के लिए कुछ समय अपेक्षित हो तो यह सूचित करें कि आप क्या सामग्री और कब तक भेजेंगे। आशा है आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

भवदीय—विनोदचन्द्र विद्यालंकार
I/११६ फूलबाग पंतनगर—२६३१४५ जिला नैनीताल (उ०प्र०)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न २३२०७।७३ ... PRTK · सृष्टि सम्वत् १,६६,०८,५३,०६०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री | सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए. | ज्येष्ठ ८. २०४७ वि०

वर्ष १७ | अंक २४ | २१ मई १९९० | वार्षिक शुल्क २५) | आजीवन शुल्क २५१) | विदेश में ८ पौंड) | एक प्रति ६० पैसे

वेद में—

परमेश्वर के नाम

—पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा

●

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा ।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ।।

(ऋग्वेद १।९०।९)

इस मन्त्र में मित्रादि नाम हैं, वे भी परमेश्वर के हैं, क्योंकि स्तुति, प्रार्थना, उपासना श्रेष्ठ ही की की जाती है। श्रेष्ठ उसको कहते हैं जो गुण, कर्म, स्वभाव और सत्य सत्य व्यवहारों में सबसे अधिक हो। उन सब श्रेष्ठों में भी जो अत्यन्त श्रेष्ठ है उसको परमेश्वर कहते हैं। जिसके तुल्य कोई न हुआ, न है और न होगा। जब तुल्य नहीं तो उससे अधिक क्योंकर हो सकता है? जैसे परमेश्वर के सत्य न्याय, दया, सर्वसामर्थ्य और सर्वज्ञत्वादि अनन्त गुण हैं वैसे अन्य किसी जड़ पदार्थ वा जीव के नहीं है। जो पदार्थ सत्य है उसके गुण, कर्म, स्वभाव भी सत्य ही होते हैं। इसलिए मनुष्यों को योग्य है कि परमेश्वर ही की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें, उससे भिन्न की कभी न करें। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव नामक पूर्वज महाशय विद्वान्, दैत्य दानवादि निकृष्ट मनुष्य और अन्य साधारण मनुष्यों ने भी परमेश्वर ही में विश्वास करके उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना की उससे भिन्न की नहीं की। वैसे हम सबको करना योग्य है।

प्रश्न—मित्रादि नामों से सखा और इन्द्रादि देवों के प्रसिद्ध व्यवहार देखने से उन्हीं का ग्रहण करना चाहिए।

उत्तर—यहां उनका ग्रहण करना योग्य नहीं, क्योंकि जो मनुष्य किसी का मित्र है वही अन्य का शत्रु और किसी से उदासीन देखने में भी आता है। इससे मुख्यार्थ में सखा आदि का ग्रहण नहीं हो सकता। किन्तु जैसा परमेश्वर सब जगत् का निश्चित मित्र, न किसी का शत्रु और न किसी से उदासीन है, इससे भिन्न कोई भी जीव इस प्रकार का कभी नहीं हो सकता। इसलिए परमात्मा ही का ग्रहण यहां होता है। हां, गौण अर्थ में मित्रादि शब्द से सुहृदादि मनुष्यों का ग्रहण होता है।

(ञिमिदा स्नेहने) इस धातु से औणादिक 'क्त्र' प्रत्यय के होने से 'मित्र' शब्द सिद्ध होता है। 'मेद्यति स्निह्यति स्निह्यते वा स मित्रः'। जो सबसे स्नेह करके और सबको प्रीति करने योग्य है, इस से उस परमेश्वर का नाम 'मित्र, है।

(वृञ् वरणे, वर ईप्सायाम्) इन धातुओं से उणादि 'उनन्' प्रत्यय होने से 'वरुण' शब्द सिद्ध होता है। 'यः सर्वान् शिष्टान् मुमुक्षून्धर्मात्मनो वृणोत्यथवा यः शिष्टैः मुमुक्षुभिर्धर्मात्मभिर्व्रियते वर्य्यते वा स वरुणः परमेश्वरः'। जो आप योगी विद्वान् मुक्ति की

(शेष पृष्ठ ४ पर)

ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को ग्रहण करने पर ही भारत सुदृढ़ हो सकेगा

—बनारसी दास गुप्त

वैदिक प्रचार मण्डल ७२-बी गोबिन्द नगर अम्बाला छावनी के तत्वावधान में में वेद भवन का शिलान्यास हरयाणा सरकार के उप-मुख्यमन्त्री माननीय बनारसीदास गुप्त द्वारा दिनांक ६.५.९० को सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री गुप्त ने आह्वान किया कि आर्यसमाज ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य प्रत्येक क्षेत्र में किए हैं जिससे भारत में नई चेतना का उदय हुआ। इसलिए यह आवश्यक है कि हमें ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा में भी आर्यसमाज का मुकाबला कोई नहीं कर सकता। ऋषि की भाषा गुजराती होते हुए भी उन्होंने तमाम ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे। इस अवसर पर उन्होंने डी. ए. वी. पब्लिक स्कूलों द्वारा अंग्रेजी बढ़ाने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया, क्योंकि इस संस्था के साथ ऋषि दयानन्द का नाम जुड़ा है। आगे उन्होंने आर्य जनता को बताया कि मैं इस पद पर जो हूं केवल आर्यसमाज के कारण हूं। मण्डल के कार्य से प्रभावित होकर उन्होंने व्यक्तिगत रूप से ११०० रु० का दान दिया तथा मण्डल को आगे भी हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

मन्त्री जी जब सभास्थल पर पधारे तो मुसद्दिलाल गर्ल्ज हाई स्कूल तथा लक्ष्मी देवी गर्ल्ज हाई स्कूल की कन्याओं ने बैंड के साथ उनका अभिनन्दन किया। मण्डल के उत्साही मन्त्री श्री वेदमित्र हापुड़ वाले ने माला अर्पण के साथ गुप्त जी का स्वागत किया तथा उन्होंने बताया कि ७ वर्ष से यह मण्डल कार्य कर रहा है। अब इस का स्थाई भवन बनने जा रहा है जिसके माध्यम से व्यापक रूप से वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहायता होगी। एक केन्द्रीय सभा बनाने का सुझाव भी रखा गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण से बोलते हुए आर्य बन्धु सतीश मित्तल जी ने मण्डल को पूर्ण सहयोग देने तथा केन्द्रीय सभा के शीघ्र गठन करने पर अपनी सहमति प्रकट की।

समारोह में सभी समाजों के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति और बहुत संख्या में भाई बहनों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर मण्डल के उपप्रधान श्री वेदप्रकाश शर्मा जी ने २५००० रु० दान देने की घोषणा की। अन्य व्यक्तियों ने भी दान दिया जिसमें श्रीमती सुशीला भाटिया २००० रु०, स्त्री आर्यसमाज दयानन्द मार्ग १००० रु० भी शामिल है।

जलपान एवं प्रसाद वितरण के बाद बड़े उत्साह के साथ कार्य-क्रम सम्पन्न हुआ। कृपया दान भेजकर नौजवानों का हौसला बढ़ायें।

सोमदत्त आर्य, प्रधान,
वैदिक प्रचार मण्डल, ७२-बी गोबिन्द नगर अम्बाला छावनी

अंग्रेजी के पक्षधर और उनका दुराग्रह

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

अनुच्छेद २९ (१) और ३० (१)

अपने ही द्वारा गढ़े गए भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों के निगहबान के रूप में अंग्रेजी के पोषक इन दो अनुच्छेदों की शरण ले रहे हैं, इन अनुच्छेदों की ओट शिकार खेलने वाले मेरे मित्र यह नहीं समझ पाए कि इनके सभी प्रावधान और उनके अधीन दी गई सभी सुरक्षायें और सुविधायें केवल भारतीय भाषाओं के लिए हैं। स्वतन्त्र भारत को जो राष्ट्रसंघ का महत्वपूर्ण सदस्य है, सभी देशों में दूतावास बनाए हैं और उन देशों से सीधी वार्ता के लिए उनकी भाषायें अपने लोगों को सिखाना बहुत आवश्यक है। इसी दृष्टि से काफी लोग भिन्न-भिन्न विदेशी भाषायें सीखते हैं, अंग्रेजी तो बड़ी संख्या में सीखते ही हैं। क्योंकि भारत के कुछ लोगों ने विदेशी भाषायें सीख ली, इसीलिए क्या वे अल्पसंख्यकों की भाषायें मान ली जायेंगी, और क्या इसीलिए उनको वे सब संरक्षण और सुविधायें मिलनी चाहियें जिनका उल्लेख २९ (१) और ३० (१) में किया गया है।

इस सम्बन्ध में महान् शिक्षाशास्त्री प्रो०बी०वी० जोन के निम्नलिखित विचार बहुत ही प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है। अपने लेख 'शिक्षा और अल्पसंख्यकों के अधिकार' में वे लिखते हैं कि:—

"अनुच्छेद ३० में वर्णित अधिकार अल्पसंख्यकों के लिए हैं ही नहीं वह तो अनुच्छेद १९ के अनुसार देश के सभी नागरिकों को प्राप्त हैं। शिक्षण संस्थाओं की स्थापना और प्रबन्ध का अधिकार तो अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अधिकार में से पैदा हुआ है। अल्पसंख्यकों और शिक्षा के अधिकार को अलग से लिखने की आवश्यकता तो आजादी से पहले की साम्प्रदायिक अवस्थाओं के कारण महसूस हुई। यह अधिकार मात्र अल्पसंख्यकों के लिए नहीं है यह इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि यदि कुछ अवस्थाओं के कारण यदि संविधान में यह अलग से लिख देने की जरूरत महसूस होती कि अल्पसंख्यकों को अपनी इच्छानुसार पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाओं का अधिकार है तो क्या यह लगाया जा सकता था कि यह 'विशेष' अधिकार बहुसंख्यकों का नहीं रह गया है।"

अंग्रेजी के पोषकों के दुराग्रह से दुःखी होकर कभी-कभी जननेता कठोर भाषा का उपयोग कर देते हैं, उससे बचना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से उनके राष्ट्रहित से प्रेरित महान् उद्देश्य को हानि पहुँच सकती है।

शोषण मुक्ति के लिए एकता आवश्यक

समय आ गया है जब देश के सभी कमजोर और पिछड़े वर्गों को भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिए एक हो जाना चाहिए। इस एकता के हिन्दीभाषी प्रदेशों को अपने विद्यालयों के अलग-अलग समूह क्षेत्रीय भाषाओं को दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाने के लिए बनाने चाहिये ताकि कुछ संख्या में सभी भाषाओं से जानने वाले उपलब्ध हो सकें और उन में से कुछ संख्या में सरकारी कार्यालयों में उन्हें रख लिया जाए, ताकि किसी प्रदेश से कोई पत्र उस भाषा में आए तो उस का उत्तर उसी भाषा में दिया जा सके। भारत सरकार से या हिन्दी प्रदेशी सरकारों की ओर से जो पत्र हिन्दी में अहिन्दी प्रदेशों के पास भेजे जायें, कुछ समय के लिए उनका अनुवाद उन उन प्रदेशों की भाषा में साथ भेज दिया जाया करे। सभी अहिन्दी भाषी प्रदेशों को और विशेषरूप से तमिलनाडु को हिन्दी को दूसरी भाषा के रूप में पूरे ध्यान से पढ़ाने का प्रबन्ध किया जाए। संस्कृत क्योंकि सभी भारतीय भाषाओं की जननी के रूप में उनके विकास के लिए शब्द भण्डार देता रहा है, इसलिए सभी भाषाओं के साथ संस्कृत अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाए और एक स्वतन्त्र विषय के रूप में महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाए।

अंग्रेजी के शिकंजे से भारत का जनमानस छुटकारा पाए और अपने ढंग से आजादी के साथ पूरी गरिमा और आत्म सम्मान के साथ स्वतन्त्र देश के स्वतन्त्र नागरिक की तरह वह अपना जीवन बिताए।

विश्वकवि रविन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में—

"स्वाधीनता के उस स्वर्ग में, हे परमपिता, मेरा देश जागे।"

—

अनमोल छन्द

(१)

समस्या है यह भारी

दिल्ली धू-धू जल रही, व्याकुल हैं नर, नार।
ये चिन्ता का है विषय आओ करें विचार॥
आओ करें विचार, समस्या है ये भारी।
आतंकित है आज देश की जनता सारी॥
अगर दिया ना ध्यान, बढ़ेगी ये बीमारी।
सिर चढ़ते जा रहे, कुकर्मी अत्याचारी॥

हे नेताओ, कदम बढ़ाओ मिल कर ऐसा।
राम, कृष्ण ने ठोस, उठाया था पग जैसा॥
दुष्टों की अब आप, खुशामद करना छोड़ो।
गद्दारों की कमर आप निर्भय हो तोड़ो॥
लातों के जो यार, बात ना माना करते।
देश—द्रोही धर्म, मार्ग ना जाना करते॥

(२)

महंगाई की मार

सारा भारत खा रहा, महंगाई की मार।
जमा-खोर हैं मौज में, महानीच गद्दार॥
महानीच गद्दार, गए बढ़ देश-द्रोही।
जनता को जो लूट, रहे हैं नित निर्मोही॥
भारत की सरकार, भांग पीकर के सोई।
कुर्सी जिन्दाबाद, मरे बेशक से कोई॥
अगर न इस पर ध्यान दिया होगा पछताना।
मिट जाएगा देश, करेगा हँसी जमाना॥
नेताओं को सख्त, फैसला लेना होगा।
गद्दारों को पकड़, जेल में देना होगा॥
महंगाई फिर आप, एकदम रुक जाएगी।
गुण्डा—टोली स्वयं, दोस्तो झुक जाएगी॥

—पं० नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

आर्यसमाज का वर्तमान में महत्व

—डा० धर्मचन्द विद्यालंकार समन्वित प्रवक्ता, सनातन धर्म कालेज, पलवल

कुछ लोग अपने ही दुःखों के गीत गाते हैं,
होली हो या दीवाली, हरदम मातम मनाते हैं।
उन्हीं की रागिनी पर झूमती है दुनिया,
जो जलती चिता पर बैठकर वीणा बजाते हैं।

आर्यसमाज के स्वर्णिम-इतिहास के सन्दर्भ में उपरोक्त पंक्तियां आज कितनी सटीक प्रतीत होती हैं ? वास्तव में ऐसे ही तो घर-फूंक कर तमाशा देखने वाले अलमस्त लोगों का टोला रहा है आर्यसमाज। ऐसे ही तो थे इस संगठन के संस्थापक-आनन्द कन्द, आदित्य ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द। जिन्होंने अपनी अल्हड़ जवानी को लुटा दिया इस भारत देश के पुनर्जागरण के लिए। खोए स्वाभिमान की पुनः प्राप्ति कराने के लिए। किसी लेखक के ये शब्द आज के सन्दर्भ में कितने सार्थक हैं कि "यदि राजनैतिक आजादी देश को महात्मा गांधी ने दिलाई तो वैचारिक स्वतन्त्रता का शंखनाद करने वाले महर्षि दयानन्द थे। सहस्रों वर्षों से बद्धमूल, रूढ़ियों से जराजीर्ण, स्वत्वक्षीण, चिरमलीन मानसिकता वाले मानवसमाज को नवल-धवल-उज्ज्वल आलोक मे लाकर खड़ा करना उन्ही का कार्य था। नारी जाति की मुक्ति का द्वार स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज ने ही खोला था। सबको समान अधिकार मानवता को जीने की राह बताई थी, क्योंकि उनका ध्येय वाक्य था— "असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्यों मा अमृतं गमय। अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर चलो और मृत्यु से अमरत्व की ओर बढो ! अस्तु !

हम किसी भी क्षेत्र में दृष्टि उटाकर देखे आर्यसमाज का योगदान अविस्मरणीय रहा है। क्या समाज सुधार, क्या शिक्षा-प्रसार, क्या दलितोद्धार—सभी में आर्यसमाज की महती भूमिका रही है। राष्ट्र रक्षा और राष्ट्र के नव-निर्माण में भी आर्यसमाज सर्वाग्रणी रहा है। स्वराज और स्वदेश की बात करने वाले स्वामी दयानन्द जी पहले भारतीय थे। उन्ही मे अगणित क्रांतिवीरों को स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर आत्मोत्सर्ग करने की उद्दाम उत्प्रेरणा मिली थी। उन्ही के पद-चिह्नों पर चलकर पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' सरदार भगतसिंह जैसे सैंकड़ों नौजवानों ने अपना गर्म गर्म लहू स्वतन्त्रता की देवी के अर्चन के लिए बहाया था। हिन्दी के सुप्रसिद्ध हास्य कवि काका-हाथरसी ने सच ही कहा है:—

'यदि न देते साथ देश के आर्यसमाजी।
गोरे न जाते छोड देश को राजी-राजी ॥

जाति-रक्षा कार्य भी आर्यसमाज का अहम रहा है। जहां स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज ने इस आर्यजाति (हिन्दू) को हजारों वर्षों की कुम्भकर्णी प्रगाढ निद्रा से झकझोर कर जगाया था, वहीं पर इसके अस्तित्व की रक्षा के लिए भी संघर्ष का बिगुल बजाया था। चाहे हैदराबाद में हिन्दुओं के अधिकार हनन का मामला हो या सिन्ध में सत्यार्थ-प्रकाश के प्रतिबन्ध का—आर्यसमाज ने डटकर लोहा लिया है और अपने जातीय अधिकारों की प्राणपन से रक्षा की है। इतना ही नही आर्यसमाज ने जहां अपने अछूत कहे जाने वाले भाइयों को गले लगाया, वहीं पर साथ ही बिछुड़कर विधर्मी बने बन्धुओं को भी शुद्धि का सुदर्शन-चक्र चलाकर अपना लिया था। क्या यह कोई सामान्य कार्य था ? उस जमाने मे जबकि अस्पृश्य व तथाकथित शूद्र का दर्शन भी द्विजों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण माना जाता था। लेकिन आर्य जाति के सौभाग्य-सूर्य के रूप में आर्यसमाज का उदय हुआ, जिसने उसके सबल तमस्तोम को ध्वस्त करके रख दिया।

इस प्रकार आर्यसमाज के स्वर्णिम अतीत को देखकर हमारा मस्तक गर्वोन्नत हो जाता है। लेकिन कोई भी जीवन्त जाति या सगठन केवल अतीत के गौरव-गान से ही सन्तुष्ट नही रहा करती, उसे तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के निम्नलिखित शब्दों में आत्मालोचन कर अपना मूल्यांकन करना चाहिए'—

कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ मिलकर के विचारें ये समस्याएं सभी ॥

आज हम किस धरातल पर खडे हैं, यह जानना जरूरी है। आज भी आर्यसमाज सर्वथा निष्क्रिय नहीं है। गांव या नगरों में स्थानीय आर्यसमाजों की अपनी भूमिका है। दैनिक या साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संग तथा संस्कार समारोह कराकर जन-जन के लिए वैदिक विधि का मार्ग प्रशस्त करना आर्यसमाज का नित्य-नैमित्तक कार्य है। उसका उद्देश्य ही यही है कि इस आत्म-विस्मृत जाति को पुनः इसके स्वत्व का भान हो। आर्यसमाज का ध्येय है:—

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥

देश के कोने-कोने में आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं का विस्तृत जाल फैला हुआ है। सैंकडों की संख्या में गुरुकुल महाविद्यालय आदि हैं। जिनमें राष्ट्र-भाषा हिन्दी के माध्यम से उच्चशिक्षा दी जाती है जोकि वर्तमान में प्रचलित दोषपूर्ण शिक्षापद्धति का राष्ट्रीय विकल्प सिद्ध हो सकती है, यदि भारतीय सरकार उसे अपना सके।

वर्तमान में प्रासंगिकता

आर्यसमाज का भूतकाल सुहावना रहा है। लेकिन आज नए युग की अपनी नई-नई चुनौतियां है, जिनको उसे स्वीकार करना पड़ेगा और उनका भरपूर उत्तर देना होगा। राष्ट्रकवि के शब्दों में कह सकते है:—

उज्ज्वल अतीत था, भविष्य भी महान् है।
सुधर जाय वह अब जोकि वर्तमान है ॥

आज बहुत से लोग इस तरह की बाते प्राय करते रहते है कि आर्यसमाज तो अब मर गया है ? अब तो विज्ञान का युग है कौन धर्म-कर्म की बाते सुनेगा ? अन्धविश्वास और भेदभाव तो आज स्वयं ही समाप्त होता जा रहा है समाज में अपने आप नई चेतना आती जा रही है और फिर अब तो केवल मात्र हिन्दुओं के सगठित रहने भर की जरूरत है। खण्डन-मण्डन का जमाना भी अब जा चुका है, आदि आदि बाते लोग करते पाए जाते है।

हम समझते है कि इस तरह की बाते वे लोग करते है जो लोग या तो निराशवादी है या फिर वे लोग प्रतिक्रियावादी हैं जो आर्य समाज को या तो अच्छी तरह से जानते नही और जानते है तो ठीक मानते नही। इसलिए अज्ञान या ईर्ष्यावश इस प्रकार की ऊल-जलूल बाते करते हैं। जो लोग यह कहते है कि अब आर्यसमाज की कोई प्रासगिकता नही रह गई है पहले हम उनका उत्तर देना चाहेगे। हम उन लोगों से पूछना चाहते हैं क्या आज भी हमारे समाज मे अंध-विश्वास नही है ? क्या आज भी हमारे समाज मे भेदभाव की दीवारें नही खड़ी हैं ? क्या आज भी हमारे समाज मे सामाजिक कुरीतियां नही हैं ? क्या आज हमारे सामने चरित्र (राष्ट्रीय) का सकट नही है ? क्या समाज के लोगों मे आपस में पूरा मेल-मिलाप है ? लोगो में छल कपट का व्यवहार नही है ? क्या आज भी धर्म के नाम पर यहा पर पाखण्डी मुस्टण्डे लोगों की तोंद नही पल रही हैं ? क्या आज एक से एक बढ़कर अपने को भगवान बनाकर नही उतर आए है ? हम पूछते है क्या यह सत्य है कि नही समाज मे ? और यदि यह है तो इनके निवारण का एकमात्र अमोघास्त्र आर्यसमाज आज क्यों अप्रासगिक हो गया है ? आज उसकी तलवार के पानी को जग लग गया है या उसके तेग की धार कुन्द हो गई है ? नही ऐसा कुछ नही है, यदि संसार में असत्य है तो सत्य उससे संघर्ष करेगा ही ? (क्रमशः)

रोहतक में वेद शिक्षा शिविर

वेद-प्रेमी आर्य-बन्धुओं को यह सूचित किया जाता है कि दिनांक ३ जून से १७ जून ९० तक दयानन्दमठ रोहतक में 'वेद शिक्षा शिविर' का आयोजन किया जा रहा है। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० सुदर्शनदेव आचार्य तथा श्री पं० सुखदेव जी शास्त्री निम्नलिखित वैदिक विषयों का प्रशिक्षण देंगे।

१- चारों वेदों का संक्षिप्त परिचय।
२- वेद-मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण।
३- सन्ध्या, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण आदि के मन्त्रों की व्याख्या।
४- वेद-मन्त्रों के अर्थ की शैली।
५- दैनिक कर्मकाण्ड के मन्त्रों को कण्ठस्थ करना।
६- भाषण - कला की शिक्षा।
७- वैदिक सिद्धान्तों पर शंका समाधान।
८- नामकरण आदि प्रचलित संस्कारों का शिक्षण।

योग्यता :—

प्रवेशार्थी छात्र की योग्यता मैट्रिक (संस्कृत सहित) मध्यमा, विशारद, शास्त्री, बी ए. आदि तथा स्वाध्याय प्रेमी।

उद्घाटन :—

शिविर का उद्घाटन दिनांक ३ जून ९० को प्रातःकाल प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा करेंगे।

आवश्यक निर्देश :—

१- प्रवेशार्थी छात्रों के आवास और भोजन का प्रबन्ध दयानन्द मठ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से किया जाएगा।

२- प्रवेशार्थी छात्र ऋतु अनुकूल वस्त्र, जलपात्र, घृत और पांच व्रत-समिधायें (८ अगुल परिमाण), सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि, कापी और लेखनी अपने साथ लावें और २-६-९० सायं तक दयानन्दमठ पहुंच जायें।

३- प्रवेशार्थी छात्र अपना आवेदन पत्र दिनांक ३० मई ९० तक निम्नलिखित पते पर भेज देवें।

निवेदक :—

वेदव्रत शास्त्री, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, रोहतक फोन ७४८१२

महाशय भरतसिंह मन्त्री, दयानन्द मठ, रोहतक

गाँव से शराब का ठेका हटे

भिवानी, १७ मई (निस)। यहा से लगभग नौ किलोमीटर दूर १२ हजार की आबादी वाले गांव कालोड़ा में हाल ही में खुले एक शराब के ठेके के प्रति ग्रामीणों में भारी रोष है। इस ठेके को हटवाने के लिए यहा के ग्रामीण जिला उपायुक्त से दो बार मिल चुके हैं और ज्ञापन भी दे चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि इस गांव में इससे पूर्व कोई शराब का ठेका नही खुला था। इस विरोध को लेकर गांव की पंचायत के सदस्य सर्वश्री बसेसर, श्रीचन्द, महावीर, रामस्वरूप, ताराचन्द, राजसिंह और महिला पंच श्रीमती अगूरी देवी ने उपायुक्त को ज्ञापन मे लिखा है कि यह ठेका ग्रामीणों की मर्जी के विरुद्ध खोला गया है। ठेका फौरन हटाया जाए अन्यथा ग्रामीण कोई भी कार्रवाई करने पर मजबूर होंगे। (नभाटा से साभार)

पत्नियों द्वारा शराबी पतियों की शिकायत

पूंडरी, १६ मई (निस)। पाई के गांव प्यौदा की दर्जनों महिलाओं ने साप्ताहिक मुक्त द्वार में उपायुक्त को शिकायत की है कि उनके पति शराब पीकर बच्चों को व उन्हे पीटते है। महिलाओं का सायं छः बजे के बाद घरों से निकलना मुश्किल हो गया है।

महिलाओं का आरोप है कि उनके गांव में कोई शराब का ठेका नहीं है। ठेकेदार व पुलिसकर्मी एवं एक्साईज विभाग के अधिकारी मिलकर गांव की लगभग सभी दुकानों पर नाजायज शराब बिकवाते हैं। खुदरा शराब बेचनेवाले ग्रामीणों को शराब उधार देते हैं। महिलाओं ने मांग की है कि गांव में शराब के अवैध खुदरों को तुरन्त हटाया जाए। यदि तुरन्त न हटाया गया तो गांव की सभी महिलायें उपायुक्त के कार्यालय के आगे प्रदर्शन करेंगी। उपायुक्त ने अवैध शराब के धन्धे करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करने के आदेश दे दिए। —दैनिक ट्रिब्यून

कपालमोचन में सर छोटूराम महाविद्यालय

सढौरा १४ मई (निस)। यहां से १६ किलोमीटर दूर प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान कपालमोचन में आज सर छोटूराम महाविद्यालय का शुभारम्भ किया गया। इस महाविद्यालय में बच्चों को आर्यसमाज के बारे में भी शिक्षा दी जाएगी। इस विद्यालय में नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। स्थानीय मार्किट कमेटी अध्यक्ष भरतसिंह ने बताया कि शीघ्र ही इस महाविद्यालय की इमारत का निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया जाएगा। —नभाटा

शराबी दूल्हे को रास्ते में छोड़ दिया

पूंडरी, १५ मई (निस)। गत दिनों पूंडरी फतेहपुर चौक पर उस समय तमाशा बन गया जब एक दूल्हा सेहरा बांधे हुए तथा हाथों में मेंहदी रचाए हुए शराब के नशे में धुत चौक पर पड़ा हुआ था।

प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला कैथल के गांव बाता के राजपूतों की शादी उत्तर प्रदेश के गणियाना गांव में हुई। शादी की रस्म पूरे धूमधाम से सम्पन्न हुई। जब बारात करनाल-कैथल मार्ग पर पूंडरी कस्बे में रुकी, दूल्हे के साथियों ने उसे भरपूर शराब पिला दी। शराबी दूल्हा लगभग एक घण्टे तक बारातियों से झगड़ा करता रहा। गुस्से में आए बारातियों ने दूल्हे को पूंडरी के बस अड्डे पर छोड़ दिया और दुल्हन को अपने साथ गांव ले गए। दूल्हा तीन घंटे तक शराब के नशे में पड़ा रहा। जब दूल्हे को होश आया तो उसने रो-रोकर लोगों को आप-बीती सुनाई। तब किसी ट्रक में पूंडरी के एक व्यक्ति के साथ लोगों ने दूल्हे को उसके घर पहुंचाया। यह घटना जिले भर में चर्चा का विषय बनी हुई है। (दै. ट्रि.)

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज नारनौल

१- प्रधान	—	मा. ताराचन्द जी आर्य
२- उपप्रधान	—	मा. मोतीराम जी
उपप्रधान	—	मा. प्रह्लाद जी
३- मन्त्री	—	श्री रामनरेश जी
मन्त्री	—	श्री सत्यपाल जी
खजाची	—	मा. अजुध्या प्रसाद जी लोहिया
पुस्तकाध्यक्ष	—	वै. हरिश्चन्द्र जी

आर्यसमाज चित्रगुप्तगंज लश्कर

१- श्री मनीराम गुप्त, प्रधान २- श्री डा. सुरेन्द्र भटनागर एवं श्री भरोसीलाल, उपप्रधान ३- श्री प्रकाशचन्द्र अग्रवाल, मन्त्री ४- श्री जगदीश प्रभाकर गोस्वामी एवं श्री नरेन्द्र गुप्त, उपमन्त्री ५- श्री नन्दलाल भोला, कोषाध्यक्ष ६- श्री प्रेम सलोजा, पुस्तकाध्यक्ष ७- डा. मन्जूलता, अन्तरंग सदस्य।

मांग रही है मूल्य भारती

वक्त नहीं है आज साथियो, गानों और तरानों का।
मांग रही है मूल्य भारती, वीरों के बलिदानों का।।
अभी स्नेह के तिनके चुनकर हमको नीड़ बनाना है।
अभी व्यथा के पर्वत ढोकर सुख सागर लहराना है।।
जिसने गौरव सौंपा कि, हम हैं एक लड़े लाखों में।
देखो वीरो आ न जायें, आंसू उस मा की आंखों में।।
ख्याल करो भावी पीढ़ी के मिटते इन अरमानों का।
मांग रही है मूल्य भारती वीरों के बलिदानों का।।
यह शौर्य वीरता का मौसम, दिल में न बेकसी चाहिए।
कुर्बानी की जब बात चले, होठों पर तब हंसी चाहिए।।
ढील-ढाल का काम नहीं, छोड़ों पर जीन कसी चाहिए।
मद-मस्ती का समा नहीं, सीमाओं पर चौकसी चाहिए।।
रण दुन्दुभि बजने को हो, तब मोह तजो तरानों का।
मांग रही है मूल्य भारती वीरों के बलिदानों का।।
इन हथियारों की क्या बात, अण शस्त्रों की होड़ लगी।
हम पर चढ़ आने की कोशिश, शत्रु की जी तोड़ लगी।।
अरिदल की सीमा में घुसकर, तुम विजय पताका गाड़ो।
निकल मांद से बाहर आओ, अब शेरो जरा दहाड़ो।।
बजने दो फिर से बिगुल आज आजादी के दिवानों का।
मांग रही है मूल्य भारती वीरों के बलिदानों का।।
रास रंगों के छंदों को वीर रसों में परिणित कर दो।
कहो कलम से डग भर भर कागज में कोलाहल भर दो।।
मिटने से डरने वालो न बनकर रहना भार जमीं का।
तिमिर पटल पर तिल तिल कर देखो मिटना रश्मि का।।
दिखला दो फिर से एक बार ये देश है वीर जवानों का।
माग रही है मूल्य भारती, वीरों के बलिदानों का।।

—मोहनलाल शर्मा 'रश्मि'
९०७/ए फ्रीलेण्डगंज दाहोद (गुजरात) ३८९१६०

शराब का ठेका नहीं चाहिए

कलायत, ७ मई (नि.स)। जिला जींद के तथा नरवाना उपमण्डल के ढूंढवा गांव वालों ने उपायुक्त से प्रार्थना की है कि उनके गांव में शराब का ठेका न खोलने दें।

प्रार्थना करने वालों में ग्राम पंचायत एवं गांव के कई आदमी मौजूद थे। उनका कहना है कि गांव में अगर सरकार खुशहाली लाना चाहती हैं तो वह ठेकों से लगती सीमा पर गावों में शराब बिकने पर पाबन्दी लगाएं। क्योंकि कुछ ठेकेदार ऐसे होते हैं कि जो पुलिस से मिलकर गांव में शराब बेचने के अड्डे बना देते है जबकि कानून के अनुसार यह बिल्कुल गलत है। (प. के.)

शोक सन्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भूतपूर्व प्रधान लाला दलीपसिंह आर्य के ज्येष्ठ भ्राता लाला जयभगवानदास जी पानीपत निवासी का दिनांक ६-५-९० को स्वर्गवास हो गया। वे सन् १९३५ से आर्यसमाज के महत्वपूर्ण पदों पर रहे तथा आर्य हायर सैकेण्ड्री स्कूल, आर्य बाल भारती और आर्य कन्या उच्च विद्यालय के प्रधान आर्यसमाज में से उच्च स्तर के लग्नशील श्रेष्ठ दानी थे। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा शोक सन्तप्त परिवार को यह असह्य दुःख को सहन करने का साहस प्रदान करे।

—धर्मानन्द आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वेद में परमेश्वर के नाम

इच्छा करने वाले मुक्त और धर्मात्माओं का स्वीकारकर्ता, अथवा जो शिष्ट मुमुक्षु मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है वह ईश्वर 'वरुण' संज्ञक है। अथवा 'वरुणोनाम वरः श्रेष्ठः' जिसलिए परमेश्वर सबसे श्रेष्ठ है, इसीलिए उसका नाम 'वरुण' है।

(ऋ गति प्रापणयोः) इस धातु से 'यत्' प्रत्यय करने 'अर्य्य' शब्द सिद्ध होता है और 'अर्य्य' पूर्वक (माङ् माने) इस धातु से 'कनिन्' प्रत्यय होने से 'अर्य्यमा' शब्द सिद्ध होता है। 'योऽर्य्यान् स्वामिनो न्यायाधीशान् मिमीते मान्यान् करोति सोऽर्यमा' जो सत्य न्याय करने हारे मनुष्यों का मान्य और पाप तथा पुण्य करने वालों को पाप और पुण्य के फलों का यथावत् सत्य सत्य नियमकर्त्ता है इसीसे उस परमेश्वर का नाम 'अर्य्यमा' है।

(इदि परमैश्वर्ये) इस धातु से 'रन्' प्रत्यय करने से 'इन्द्र' शब्द सिद्ध होता है। 'य इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति स इन्द्रः परमेश्वरः जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है इस से उस परमात्मा का नाम 'इन्द्र' है।

'बृहत्' शब्दपूर्वक (पा रक्षणे) इस धातु से 'डति' प्रत्यय बृहत् के तकार का लोप और सुडागम होने से 'बृहस्पति' शब्द सिद्ध होता है। 'यो बृहतामाकाशादीनां पतिः स्वामी पालयिता स बृहस्पतिः' जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्माण्डों का स्वामी है इससे उस परमेश्वर का नाम 'बृहस्पति' है।

(विष्लृ व्याप्तौ) इस धातु से 'नु' प्रत्यय होकर 'विष्णु' शब्द सिद्ध हुआ है। 'वेवेष्टि व्याप्नोति चराऽचरं जगत् स विष्णुः परमात्मा' चर और अचर जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है।

'उरुर्महान् क्रमः पराक्रमो यस्य स उरुक्रम.' अनन्त पराक्रम युक्त होने से परमात्मा का नाम 'उरुक्रम' है।

जो परमात्मा (उरुक्रमः) महापराक्रमयुक्त (मित्रः) सबका सुहृत् अविरोधी है वह (शम्) सुखकारक, वह (वरुणः) सर्वोत्तम (शम्) सुखस्वरूप, वह (अर्यमा) (शम्) सुख प्रचारक, वह (इन्द्रः) (शम्) सकल ऐश्वर्यदायक, वह (बृहस्पति) सबका अधिष्ठाता (शम्) विद्याप्रद और (विष्णुः) जो सबमें व्यापक परमेश्वर है, वह (नः) हमारा कल्याणकारक (भवतु) हो।

शराबी पतियों से पीड़ित पत्नियों की उपायुक्त से बचाव की गुहार

—[जन सन्देश]

कैथल, १६ मई (निस)। गाव प्योदा की कुछ महिलायें खुला दरबार में उपायुक्त कैथल डा० हरबक्श सिंह के यहां पेश हुई उन्होंने कहा कि गांव में ६ बजे के बाद अवैध शराब की बिक्री होती है और उनके पति उन्हें नशे में धुत होकर रोज पीटते हैं।

स्मरण रहे इस गांव में शराब का ठेका नहीं है तथा अन्य स्थानों से पुलिस मिलीभगत से शराब बिकने के आरोप महिलाओं ने लगाए।

उपायुक्त ने गांव की इन महिलाओं को आश्वासन दिया कि भविष्य में ऐसा नहीं होने देंगे। आपने पुलिस तथा आबकारी नियंत्रक से कहा कि इन आरोपों की जांच कर मुझे रिपोर्ट दें।

शराब हटाओ

देश बचाओ।

कानून में हिन्दी की उत्कृष्ट सेवा के लिए शर्मा पुरस्कृत

भोपाल (भाषा)। मध्यप्रदेश के विधि एवं संसदीय कार्यमन्त्री बाबूलाल गौर ने कानून के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से की गई उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राज्य शासन की ओर से श्री बृज किशोर शर्मा को सम्मानित किया है।

विधि मन्त्री ने यहां एक सादे समारोह में श्री शर्मा को शाल, श्रीफल, प्रशस्तिपत्र और दस हजार रुपए की पुरस्कार राशि बैंक ड्राफ्ट के रूप में भेंट कर सम्मानित किया।

श्री गौर ने अधिनियम और विधि सम्बन्धी अनेक पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद करने के लिए श्री शर्मा की सेवाओं की सराहना की। श्री शर्मा वर्तमान में भारत शासन के विधि मन्त्रालय में अपर सचिव के पद पर कार्यरत है। —दैनिक वीर अर्जुन

प्रवेश सूचना

ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट में प्रवेश आरम्भ हैं। सौम्य शिष्ट, अनुशासन प्रिय, प्रतिभाशाली तथा आजीवन वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक कम से कम ८वीं पास युवक और स्वाध्यायशील सदाचारी, प्रचार करने में रुचि रखने वाले वानप्रस्थी प्रवेश के लिए आमन्त्रित है।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें—

कुलाधिपति,
श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री विद्यावाचस्पति,
ब्रह्म कुटी वेदमन्दिर ब्रजघाट—२४५२०५
जिला गाजियाबद (उ० प्र०)

स्वामी रामेश्वरानन्द जी के निधन पर शोक प्रस्ताव

आर्य जगत् के विख्यात् सन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती के निधन पर सभा कार्यालय मे निम्नलिखित स्थानों से शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

१. सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक २. आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत ३. आर्य महाविद्यालय पानीपत ४. आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत ५. श्री रामानन्द सिहल सयोजक जिला पानीपत वेदप्रचार मण्डल ६. स्वामी धर्मानन्द आर्य उपदेशक आर्यसमाज पानीपत ७. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन नई दिल्ली ८. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान मार्ग नई दिल्ली ९. दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा १५ हनुमान मार्ग नई दिल्ली।

हरयाणा में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविरों का कार्यक्रम

२१ से २७ मई तक राजकीय उच्च विद्यालय नान्धा वाया बाढडा (भिवानी), २५ से ३१ तक आयसमाज सिद्धान्ती भवन बरहाणा जि० रोहतक, २५ मई से १ जून आर्य कन्या विद्यालय भिवानी, १ से ७ जून आर्य नवज्योति विद्यालय कौल जि० कैथल, ४ से १० जून तक आर्यसमाज नारनौल जिला महेन्द्रगढ़, १० से २० जून तक गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर जिला रोहतक।

जूआ जि० सोनीपत, करनाल, हिसार, जींद, कैथल, नरवाना, गुड़गांव तथा पलवल आदि स्थानों पर तिथियां निश्चित करके पुन: प्रकाशित की जावेगी। अत: अपने बच्चों को आर्यसमाज के रंग में रंगने के लिए अपने निकट के शिविर में भेजकर धर्म लाभ उठावें।

—वेदप्रकाश आर्य प्रांतीय, मन्त्री
आर्य वीर दल, शिवाजी कालोनी, रोहतक

श्री सुभाष विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के नए कुलपति

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत जी ने तीन सदस्यों की समिति की सिफारिश के आधार पर विश्वविद्यालय के कुलपति पर श्री सुभाष विद्यालंकार को मनोनीत किया है। आप गुरुकुल कांगड़ी के ही स्नातक हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय में विगत दस वर्षों से वकालत कर रहे हैं। १९७८-८० में दिल्ली प्रशासन के जनसम्पर्क एवं सूचना निदेशक के पद पर भी रहे हैं। आप आकाशवाणी से भी सम्बन्धित रहे हैं और सरकारी पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। आपने ५ मई को कुलपति का कार्यभार विधिवत् सम्भाल लिया है।

आशा है आपके कार्यकाल में विश्वविद्यालय और अधिक उन्नति करेगा।

हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका में सम्मेलन

नई दिल्ली, १८ मई (भाषा)। अगली शताब्दी में हिन्दी के प्रचलन को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका में तीन दिवसीय विश्व हिन्दी सम्मेलन जुलाई में होगा। आर्यसमाज मिशिगन के संयोजक गिरीश सी खोसला ने बताया कि सम्मेलन में विश्व के अनेक हिस्सों से हिन्दी और संस्कृत के विद्वान् भाग लेंगे।

श्री खोसला ने एक वक्तव्य में कहा कि सम्मेलन अमेरिका के अनेक विश्वविद्यालयों और सामाजिक सांस्कृतिक सगठनों के प्रतिनिधि सेमिनार और कार्यशाला में भाग लेंगे। इस अवसर पर एक विश्व पुस्तक मेले का भी आयोजन किया जाएगा। —दै. वी. अ.

आर्यसमाज लोहारू का उत्सव सम्पन्न

दिनांक १२ व १३ मई १९९० को श्री धर्मवीर शास्त्री एवं शास्त्री भरतसिंह के तत्वावधान में आर्यसमाज लोहारू (भिवानी) का उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।

आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता त्यागमूर्ति स्वामी ओमानन्द सरस्वती के व्याख्यानों से लोहारु उपमण्डल के आर्य लोगों में नवजागृति एवं ऋषि दयानन्द के अधूरे पड़े कार्यों को पूरा करने की भावना पैदा हुई।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री ने पाश्चात्य शिक्षा एव पाश्चात्य संस्कृति पर कठोर प्रहार करते हुए बताया कि भारतवर्ष के अन्दर शराब, मांस एवं गौ हत्या जैसे पाप पाश्चात्य शिक्षा के कारण ही उत्पन्न हुए हैं। श्री शास्त्री ने आर्य जाति को आह्वान करते हुए कहा कि आयसमाज के त्रिसूत्री कार्यक्रम—अंग्रेजी हटाओ, पापों की जड़ शराब को समाप्त करो एवं गोहत्या बन्द करो के प्रोग्राम को लागू करने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

सम्मेलन में आचार्य ऋषिपाल शास्त्री, श्री मनुदेव शास्त्री, धर्मदेव शास्त्री, सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह क्रांतिकारी, चौ० हीरानन्द आर्य विधायक के व्याख्यान तथा सभा के भजनीक श्री खेमसिंह, वानप्रस्थी राममुनि, श्री हवासिंह क्रांतिकारी कन्या गुरुकुल पंचगांव की छात्राओं के भजन हुए।

—विजयसिंह आर्य, मन्त्री

● दुनिया की सारे शस्त्र, दुनिया की सारी फौजें मिलकर भी उतनी सम्पत्ति नष्ट नहीं कर सकती, जितनी अकेली शराब कर सकती है। —मिल्टन

✱ मदिरा पीने वाला पापी हो जाता है। —ऋग्वेद

आर्यसमाज सभी का हितैषी है

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद, (उ०प्र०)

●

(गतांक से आगे)

अत: उस पर अपवित्रताओं का लगाव नहीं होता, इसीलिए उसे निर्लेप कहते है, वही सृष्टिकर्त्ता अर्थात् सृष्टि का उत्पन्न करने वाला है अतएव उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नही। इस प्रकार से आत्मोन्नति किए हुए व्यक्तियों के द्वारा जो समाज बनेगा, वह आचार-विचार से पवित्र होगा। दूसरे इस प्रकार से शारीरिक और आत्मिक उन्नति किए हुए व्यक्ति ही समाज की उन्नति की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

आर्यसमाज का आठवां नियम है "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।" अविद्या का नाश होगा ही विद्या की वृद्धि से। विद्या की वृद्धि के प्रकार हैं—विद्यालय, पुस्तकालय, उपदेश आदि। आर्यसमाज अपनी स्थापना के समय से ही प्रत्येक प्रकार से विद्या की वृद्धि में लगा है। उसने भारत और भारत से बाहर विदेशों में भी सहस्रों की संख्या में प्राथमिक विद्यालयों से लेकर महाविद्यालय तक खोले हुए हैं। लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए पृथक्-पृथक् लगभग सौ गुरुकुल खोले हुए हैं। सहस्रों पुस्तकालय और वाचनालय आर्यसमाज मन्दिरों में स्थापित किए हुए हैं। दर्जनों पत्र-पत्रिकायें आर्यसमाज की शिरोमणि सभाओं द्वारा तथा अन्य अनेक आर्य-समाजों विचार की संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हो रहे हैं। जहां जहां आर्यसमाजें हैं, वहां वहां वर्ष में एक बार अथवा एक से अधिक बार सत्संगों का आयोजन कर और विद्वानों को उस आयोजन मे आमन्त्रित कर प्रवचनों द्वारा सर्वसाधारण को विद्या (ज्ञान) दान दिया जाता है। यह सभी आर्यसमाज के सर्वहितैषी होने के प्रमाण है।

आर्यसमाज के नौवें नियम में महर्षि ने यह विधान कर कि "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए" आर्यसमाज के सभी के हितैषी स्वरूप को नितान्त उज्ज्वल कर दिया है। आर्यसमाज के दसवें नियम में प्रत्येक हितकारी नियम में सबकी स्वतन्त्रता की चर्चा करके भी सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहने का विधान किया है।

पाठकगण! यह सम्पूर्ण बिवेचन यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि आर्यसमाज सर्वहितैषी संस्था है, यह कोई सम्प्रदाय, मत या पन्थ नहीं है।

आर्यसमाज — आर्यसमाज ही है

प्रिय पाठकगण! अपने पूर्व लेख में हमने यह चर्चा की है कि आर्यसमाज न तो क्लब है और न सम्प्रदाय है। ऊपर आर्यसमाज के सर्वहितैषी रूप का भी संक्षिप्त वर्णन कर दिया है अब हम यह कहना चाहते हैं कि आर्यसमाज—आर्यसमाज ही है।

आपने इससे पहले स्तम्भ में आर्यसमाज के सर्वहितैषी स्वरूप की थोड़ी सी चर्चा पढ़ी है। सबका हितचिन्तन और सर्वहितकारक कार्यों को वही लोग करते हैं, जो आर्य होते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि आर्यत्व परहित चिन्तन और परहित साधन में निहित है। स्वहित तो पशु पक्षी तथा अनार्य मनुष्य सभी करते हैं। आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। जो परहित चिन्तन और परहित साधन न करे, वह आर्य कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।

परहित-चिन्तकों और परहित साधकों से मिलकर बना हुआ समाज—आर्यसमाज कहलाता है। आर्यसमाज का छठा नियम इस की स्पष्ट घोषणा कर रहा है—"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है" न केवल उद्देश्य अपितु मुख्य उद्देश्य है। इसका अर्थ यह हुआ कि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संसार के उपकार के लिए ही की थी।

आर्य शब्द संस्कृत की 'ऋ' गतौ धातु से बना है। जिसमे गति हो, जो आगे बढ़ने के लिए उत्तरोत्तर प्रयत्नशील हो, वह आर्य है अर्थात् आर्य का अर्थ है प्रगतिशील। इस प्रकार आर्यसमाज का अर्थ हुआ प्रगतिशील, उन्नतिशील लोगों का समाज। उन्नति दोनों प्रकार की होती है, भौतिक और आध्यात्मिक भी। अतएव आर्यसमाज का अर्थ हुआ उत्तरोत्तर, आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की उन्नति करने वालों का समाज। इसी प्रकार का समाज श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज कहलाता है।

आर्यसमाज के ९वें नियम में यह कहकर कि 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए'। परहित साधन तथा परोपकार को प्राथमिकता तथा स्वहित पर परहित को वरीयता प्रदान कर दी है। इस प्रकार आर्यसमाज ऐसे लोगों का समाज है कि जो स्वयं तो आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति करें ही इस लोक और परलोक साधन मे, इस लोक के साथ साथ परलोक साधन में भी परम पुरुषार्थ करें ही, किन्तु अन्यों के हित के लिए पूर्ण सामर्थ्य के साथ जुटे रहें।

फिर ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में 'वेद का पढना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म' बताया है क्योंकि वह वेद को 'सब सत्य विद्याओं का पुस्तक' मानते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि ऋषिवर मानवमात्र की उन्नति का साधन वेद को मानते हैं। ऐसी स्थिति में समस्त आर्य जनों और सामूहिक रूप से आर्यजनों का परम कर्त्तव्य हो जाता है कि यथासम्भव स्वशक्ति के अनुसार वेद के अध्ययन और उसके प्रचार-प्रसार में जुट जायं। यही आर्यसमाज का वास्तविक कार्य है, इसी से विश्व मानवता का भला होगा।

यही आर्यसमाज है और यही आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप है। इसीलिए हम यह कहते हैं कि आर्यसमाज—आर्यसमाज ही है, न न क्लब है और न सम्प्रदाय, मत-पन्थ आदि है।

आर्यसमाज के द्वारा किए जाने वाले अन्य समस्त सेवा कार्य तो सम-सामयिक, अल्पकालिक और वेद को जनमानस तक पहुचाने के लिए साधन तथा जनसम्पर्क के सेतु मात्र है।

—०—

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ

हेय वह उपादेय यह

—मेधाव्रत 'सत्यार्थी' शिवशास्त्री एम.ए. हिन्दी संस्कृत
शिमली (भिवानी)

✱

बुरे बुराई नहीं छोड़ते भले भलाई छोड़ चुके।
शेष रहा था उनका सपना हम उसमें अपना सब जोड़ चुके।
अपने घर की अस्मत् हमने बेची आज कोड़ी भाव में—
दाव लगाया घाव गहराया अब तो कर बस बेजोड़ चुके।।

देश की माटी को पहचानता नहीं।
मां की ममता को लाड़ लेकर जो जानता नहीं।
हृदय पर शूल देख पत्थर भी पिघल जाता—
कृतघ्न पर उपकार का बदला कभी मानता नहीं।

जिन हृदयहीनों ने संस्कृति से सौदा किया है।
वेदमाता और गौमाता को असुरों की भेंट में दिया है।
बदले में हलाहल अविद्या द्वेषमाता को करके वरण—
उन्होंने सर्वश्रेष्ठ शाश्वत् सत्य मूल्यों को औंधा किया है।

वे नरसिंहों के शीश पर सेर सब हैं चढ़ चुके।
गीदड़ मांग कब्जाए रहे, चोर तमाशा अड़ चुके।

अपनी माटी अपना देश घाटी में पनपा जो द्वेष—
बीज बोने वाले सौदागर लड़ रहे हैं सड़ चुके।
एक दृष्टि में रामकृष्ण के अये! वंशजों! अतीत को परखो।
बाबर किसका वंशज था वह इल्हाम भी निरखो।
पल्ला थामो पीढ़ियों का, अपने पूरे परिवार का—
इस्लामी भाइयो! दया को वरो पुन: इत्मीनान को परखो।
सृष्टि के नियमों में बंधी मर्यादा सत्कार है।
बलात् प्राणहरण प्रवृत्ति क्रूरता का कर्म घोर
अत्याचार है।
रक्त की भूख केवल भेड़ियों को घिनौना अधिकार है।
जीवमात्र पर दया करना बस कल्याण का व्यापार है।

✱

—मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी

✱ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत स-कार द्वारा रजि न २३२०७।७३ रजि न P R॰ ४९

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए   ज्येष्ठ १। २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक २५ २८ मई १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश मे ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

वैदिक पंचशील बिना मानव दानव होता है

लेखक—लालचन्द विद्यावाचस्पति
श्री मंगल कबीर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेडकी (महेन्द्रगढ)

●

ईशा वास्यमिद सर्वं यत्किञ्च जगत्या जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्य स्विद्धनम् ॥
यजुर्वेद अ० ४०, मन्त्र १

[illegible] — हे मनुष्यो ! इस जगत् में जो भी चराचर वस्तुएं हैं, वे [illegible]र से ही आच्छादित हैं क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक है। सभी वस्तुएं ईश्वर की छत्रछाया विद्यमान है। अत उसी ईश्वर के दिए हुए पदार्थों का, वस्तुओ का साधनो का साधक बनकर साधना करते हुए भोग करो, प्रयोग करो, सदुपयोग करो तभी साध्य मिलेगा। किसी के भी धन का लालच मत करो, लोभ मत करो। क्योंकि किस का है यह धन ? किसी का नहीं, केवल प्रभु का ही सब कुछ है।

प्रस्तुत मन्त्र यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय अथवा ईशोपनिषद् के प्रारम्भ में आता है। यजुर्वेद मे कर्मकाण्ड वर्णित है। कर्म के भी कई रूप हैं जैसे कर्म, विकर्म, कुकर्म, अकर्म, सकाम कर्म निष्काम कर्म, ज्ञानपूर्वक कर्म इत्यादि। गीता मे भी कहा गया है योग कर्मसु कौशलम्।' योग क्या है ?—

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध" (यो० स०, सूत्र २) अर्थात् चित की वृत्तियो के निरोध का नाम ही योग है। योग का ही दूसरा नाम अध्यात्म विद्या है। उपनिषदो में अध्यात्म विद्या का अक्षय भण्डार है। उपनिषद् अर्थात् उप—पास, नि—निश्चय से, सद—बैठना। उपनिषदो का रहस्यात्मक ज्ञान एक बार श्रवण का मनन करने से समझ नहीं आता है। अत प्राचीन समय से ही अध्यात्म विद्या के जिज्ञासु शान्तिमय कल्याणपूर्ण ज्ञान के पिपासु अन्तेवासु सक्षम गुरु के पास निश्चय से बैठकर इनका रहस्य समझते थे। इसी कारण इनका उप—नि—षद् प्रसिद्ध हो गया। उपनिषदों मे पराविद्या है। इनका रस ऐसी रसायन है जिसके सेवन से मनुष्य का जीवन प्रवाह ही बदल जाता है। ईश-उपनिषद् यजुर्वेद का ४०वा अध्याय है। यह साक्षात् वेद का ही भाग है। इसके प्रथम भाग मे पाच कर्त्तव्य बताए गए हैं जिनका पालन करके मनुष्य ब्रह्म विद्या का अधिकारी बन सकता है अन्यथा वह दानव बनता है। इन्ही पाचो कर्त्तव्यो को यहा वैदिक पचशील का नाम दिया गया है। ये इस प्रकार हैं —

१ ईश्वर सर्वव्यापक है

ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। कण-कण मे उसकी शक्ति छिपी हुई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी सत्यार्थप्रकाश के अन्तर्गत 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में तथा आर्यसमाज के दूसरे नियम मे भी ईश्वर को सर्वव्यापक माना है। अत ईश्वर की सर्वव्यापकता जान कर सदैव हमें ज्ञानपूर्वक शुभ शुद्ध एव पवित्र कर्म करने चाहिए।

२ सब भोग्य वस्तुएं भी ईश्वर की है

इस सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता और हर्त्ता ईश्वर ही है। सब भोग करने योग्य वस्तुयें भी ईश्वर की ही हैं। क्योंकि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र होते हुए भी फल के लिए ईश्वर पर आश्रित है।

३ किसी के धन पर कुदृष्टि न करें

मनुष्य का तीसरा कर्त्तव्य है कि वह किसी के धन पर कुदृष्टि न करें क्योंकि अन्याय से प्राप्त धन से कभी भी शांति नही मिलती है। शांति बिना सुख की प्राप्ति भी नहीं होती है।

४ फल की आकांक्षा छोड़कर कर्त्तव्य बुद्धि से कर्म करो

अब चौथा कर्त्तव्य यह है कि मनुष्य कर्म करे फल की आकाक्षा छोडकर। गीता में भी कहा है —

कर्मण्येवाधिकारास्ते मा फलेषु कदाचन। गीता अ० २ श्लोक ४७।

और भी— ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सगत्यक्त्वा करोति य ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥
गीता अ० ४ श्लोक १०

अर्थात् फल की आकाक्षा छोडकर कर्त्तव्य बुद्धि से कर्म करने का ज्ञान प्राप्त भक्त अपने भगवान् से कह उठता है —

जो कुछ किया तने किया मैं कुछ कीन्हों नाही।
जहा भी जो कुछ मैंने किया तो तुम ही थे मुझ माही ॥

५ आत्मा का हनन न करें

आत्मा सदैव सत्य धर्म युक्त पथ पर चलने की प्रेरणा देता है किन्तु दुष्ट मनुष्य आत्मा की आवाज को दबाकर बुरे कर्म कर लेता है। इसी को आत्मा का हनन कहते हैं। मनुष्य को आत्मा का हनन नहीं करना चाहिए।

उपरोक्त वर्णित वैदिक पचशील का पालन करते हुए मनुष्य को चारो पदार्थ धर्म, अर्थ काम मोक्ष पाकर जीवन सफल बनाना चाहिए। सफलता कैसे मिले ? कर्म से। कर्म भी कैसा ? ज्ञानपूर्वक कर्म।

● सत्य-पथ ●

—स्वामी रूपानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग

जब तक वैदिक धर्म न अपनाएगा ।
जीवन सारा तेरा नष्ट हो जाएगा ॥
तुझे पण्ड पुजारी बहकाते रहे राम कृष्ण को ही ईश्वर बताते रहे।
सच्चे ईश्वर का ना भेद तू पाएगा। जीवन—१।
उस निराकार प्रभु को भुलाया हुआ, सबके घट-घट मे समाया हुआ।
वेद विद्या से इसका पता पाएगा। जीवन—२।
तीर्थों मन्दिरो मे लगाया समय, बोलता ही रहा शेरो वाली की जय।
यह करना व धरना व्यर्थ जाएगा। जीवन—३।
जो गई सो गई रखले जो रही, ओ३म् का नाम जप सत्यपथ ये सही।
गर न माना तो फिर पीछे पछताएगा। जीवन—४।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति का परिचय

श्री सुभाषचन्द विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातकों में से हैं। वे आदर्शवादी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका जो ध्येय एक बार बन गया उसकी पूर्ति में जुट जाते हैं। सांसारिक उन्नति धन और मान के लिए अपने आदर्श और संकल्प का बलिदान उन्होंने नहीं सीखा है। भारतीय सूचना सेवा में जनसम्पर्क निदेशक जैसे दिल्ली प्रशासन के प्रतिष्ठित और उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर वे कार्य करते रहे हैं। वे इस कार्य के लिए सर्वथा उपयुक्त थे और उन्हें इस विभाग में प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता था। आर्थिक दृष्टि से भी यह पद वांछनीय था। पर उनसे किसी गलत प्रचार की अपेक्षा की गई तो अपनी आत्मा की पुकार के विरुद्ध वे समझौता नहीं कर सके और उस पद से त्यागपत्र देने में क्षण भर की देरी नहीं लगी। उनमें आत्मविश्वास की कमी न थी। किन्हीं आपात्कालीन स्थिति के लिए उन्होंने वकालत की डिग्री पहले ही प्राप्त कर ली थी। प्रसिद्ध विधिवेत्ता डा० लक्ष्मीमल सिंघवी के जूनियर के रूप में कानून की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग ली और अपने पैरों पर स्वतन्त्र रूप से खड़े होकर आर्यसमाज की सेवा में मन लगाया। सुभाष जी को पद की आकांक्षा कभी नहीं रही वे आर्यसमाज हनुमान रोड से सम्बद्ध हैं। पर वहां अधिकारी पद के चुनाव में टाई होने पर उन्होंने अपने को हमेशा हटा लिया और दूसरे प्रत्याशी को चुने जाने दिया। उनकी आदतें बहुत सरल हैं। अपना काम स्वयं करने में विश्वास रखते हैं। खानपान रहन सहन बहुत सादा है।

यदि बीते दिनों पर दृष्टिपात करें तो गुरुकुल कांगड़ी संस्था का कितना नाम था। आर्य जनता के लिए तो वह तीर्थ के समान था। वहां वार्षिकोत्सव पर जो ज्ञान की गंगा बहती थी उसमें डुबकी लगाने दूर २ से बड़ी संख्या में नर-नारी आते थे। न केवल सर्व-साधारण जनता अपितु स्वामी श्रद्धानन्द के युग में महात्मा गांधी, सी एफ. एन्ड्रूज भारत के तत्कालीन वाइस राय, लार्ड चेम्स फोर्ड इग्लैंड के प्राइममिनिस्टर राम्से मैकडानल्ड, मोतीलाल नेहरु, बा० भगवानदास जैसी जानी मानी हस्तियां इस अद्भुत स्थान का दर्शन करने आती थीं।

गुरुकुल ने अनेक सुयोग्य स्नातक उत्पन्न कर समाज की जो सेवा की है, वह अभूतपूर्व है। पर धीरे धीरे इस संस्था का ह्रास होता गया और यह स्थान लडाई झगडों का केन्द्र बनकर रह गया। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का स्टाफ—वहां के कर्मचारी—आफिस के लोग पन्द्रह बीस वर्षों से बहुत अशांत वातावरण में जिए हैं। उन्हें अपने पद पर बने रहने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा है। इस काल मे जो कुलपति आए हैं, वे भी इस तूफान में अछूते नहीं रहे हैं। उन्हें अपने पद पर बने रहने के लिए कई ऐसे काम करने पड़े जो सामान्य अवस्था में वे कभी नहीं करते। उदाहरणार्थ एक कुलपति का छात्रों ने घेराव किया। उनके साथ दुर्व्यवहार किया। तब अपनी सुरक्षा का एक ही रास्ता उन्हें यह दिखाई दिया कि उन्होंने गुरुकुल में छात्रों के निवास और भोजन की व्यवस्था समाप्त कर दी। कहां स्वामी श्रद्धानन्द का आदर्श कि ब्रह्मचारी आठों पहर गुरु के समीप निवास करता हुआ विद्याध्ययन करेगा। कहां यह स्थिति। परिणाम यह हुआ कि निवास के अभाव में योग्य विद्यार्थी आकर गुरुकुल में प्रवेश नहीं लेते। गुरुकुल के होस्टलों में पुलिस का स्थायी निवास बन गया है। वहां कई स्टाफ क्वाटरों में भी पुलिस आफिसर स्थायी रूप से रहते है।

स्वामी श्रद्धानन्द के युग में जब भारत के तत्कालीन वायसराय गुरुकुल पधारे, तब उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस को बुलाने के प्रश्न पर स्वामी जी ने एक भी सिपाही वहां नहीं आने दिया। उन्होंने कहा था कि हम अपने अतिथि की सुरक्षा में पूर्णतया सक्षम हैं। कालान्तर में जब इस एरिया में सुलताना डाकू का प्रकोप बढ़ा तब भी गुरुकुल में पुलिस नहीं आई और अब तो यहां का चप्पा चप्पा पुलिस के सिपाहियों से व्याप्त है। गुरुकुल के छात्रावास में जहां यज्ञ हवन की सामग्री से सुगन्धी व्याप्त रहती थी और विद्यार्थी पढ़ने पढ़ाने में दत्तचित्त रहते थे अब उनमें पी. ए. सी. रहती है। गुरुकुल का क्या ह्रास हुआ है।

गुरुकुल के अधिकारी वहां के स्टाफ को छात्रों की कमी के लिए दोषी ठहाराते हैं। उनका विचार है कि वहां के प्रोफेसर और अध्यापकगण योग्य नही हैं। अपने पति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के साथ भारत की अन्य यूनिवर्सिटियों में जाने का अवसर मिला और मैं वहां के स्टाफ के सम्पर्क में आई हूं। मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं कि कि गुरुकुल का स्टाफ भारत की अन्य यूनिवर्सिटियों के स्टाफ से किसी तरह कम नहीं। आशा है सुभाष जी गुरुकुल में नया उत्साह और प्रेरणा का वातावरण उत्पन्न कर सकेंगे। आर्य नेताओं ने बड़ी आशा से इस संस्था को सुचारूरूप से चलाने का भार श्री सुभाष जी के कन्धों पर डाला है। आशा है अपनी कार्यकुशलता और योग्यता से सुभाष जी गुरुकुल का विचलित गौरव पुनः स्थापित करने में समर्थ होंगे।

हमारी शुभकामनायें उनके साथ हैं।

—सुशीला सत्यकेतु

आर्यसमाज मंदिर गन्नौर शहर हेतु अपील

एक हाल कमरे के विस्तार के लिए लगभग एक लाख रु० की आवश्यकता है। इस निर्माण के बाद जहां यह विशाल भवन विवाह शादियां एवं दुःख सुख मे महत्वपूर्ण काम करेगा वहां इसमें स्थापित आर्य आदर्श विद्यालय के छात्र,छात्राओं के लिए भी वरदान सिद्ध होगा और आप दानी सज्जनों के पुण्य में वृद्धि करेगा।

अत: आप सभी से विनती है कि अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्यानुसार दान आहुति अवश्य देने का कष्ट कर पुण्य के भागी बनें।

पं० जयदेव जनोई वाला प्रधान
आर्यसमाज गन्नौर शहर सोनीपत (हरयाणा)

स्वामी दयानन्द सेवा केन्द्र

गोहाना (निस) समाज के दरिद्र वर्ग की विपत्तियों का भार हलका करने के लिए कलानौर के उत्साही युवकों ने स्वामी दयानन्द सेवा केन्द्र का निर्माण किया है।

इस केन्द्र के प्रथम अध्यक्ष ईश्वर सिंह, उपाध्यक्ष राजवीर सिंह सचिव जयदेव, संयुक्त सचिव रोशनलाल और खजांची धर्मेन्द्र होंगे।

(दैनिक ट्रिब्यून)

आर्यसमाज मनाना (पानीपत) का चुनाव

प्रधान—श्री रतनसिंह आर्य, उपप्रधान—श्री हरिसिंह आर्य, मन्त्री—मा० सहदेव आर्य, उपमन्त्री—मा० रामस्वरूप आर्य, कोषाध्यक्ष—मा० दलीपसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—मा० बलबीरसिंह आर्य, लेखा निरीक्षक—श्री जयकरण आर्य।

हिन्दुस्तान में हिन्दी को अधिकार नहीं, क्यों ?

—डॉ० सत्यवीरसिंह मलिक, हिसार

पिछले कुछ वर्षों से नयी शिक्षानीति के नाम पर देश की भावी पीढ़ी को गुमराह करने का षड्यन्त्र बड़े जोर-शोर से चलाया जारहा है। इसका मुकाबला और भण्डाफोड़ करने का साहस उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह यादव ने किया है, जो निश्चय ही बधाई के पात्र हैं। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की स्थापना तथा अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान के विकास का लाभ उठाने का बहाना बनाकर अंग्रेजी भाषा के पांव सब जगह फैलाने की चालें चली जा रही हैं। दुर्भाग्य से हमारे देश में प्रमुख स्थानों पर काले अंग्रेज बैठे हैं जो अपना उल्लू सीधा करने में माहिर हैं। उनकी बनावटी बातो को सरलता से समझना कठिन है। उनके हर कार्य-व्यवहार में अंग्रेजियत है, वे अंग्रेजी में सपने देखने के आदी हैं। फिर वे कौनसी कमी छोड़ेंगे ? हिन्दी को अनपढ, गंवारों की भाषा सिद्ध करने और उसे घृणा से बोलने में अपनी झूठी शान समझते है। यहां यह लिखना भी प्रासंगिक है कि स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष पश्चात् भी हमारी गुलामी की मनोवृत्ति बदली नहीं है। हमने बाहर से अंग्रेजी दासता समाप्त कर दी परन्तु मन से उसे साफ नहीं कर पाये।

उत्तरप्रदेश में प्रशासकीय सेवाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करना एक प्रशंसनीय कदम है। क्या हरयाणा के मुख्यमन्त्री बनारसीदास गुप्त, जो स्वय हिन्दीप्रेमी है, ऐसा साहस कर पायेंगे। हरयाणा के जवान अंग्रेजी के भार के कारण शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ रहे हैं। यहां का वातावरण केवल हिन्दी का है फिर विद्यार्थी अंग्रेजी में निपुण हों, ऐसी आशा करना गूलर के फूल के समान है।

नयी शिक्षानीति में भारतीय भाषाओं पर कुल्हाडा चलाया गया है। हमारे आदर्शों और सस्कृति की आधार सस्कृत को बिल्कुल समाप्त कर दिया है। देश के गद्दारों की कुवान देखिये कि हिन्दुस्तान में सर्विस करने के लिए हिन्दी जानना अनिवार्य नहीं है और अंग्रेजी जानना अनिवार्य है। इससे बडी विडम्बना और क्या होगी कि एक प्रतिशत अंग्रेजी जानने वाले देश के सभी बड़े पदों पर कब्जा किये बैठे हैं और शेष जनता का शोषण करके बहुत महगे पब्लिक स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाकर सदा-सदा के लिए देश पर एकाधिकार जमाये रखना चाहते है। हम वह दिन देखना चाहते हैं कि जब सरकार का सारा कामकाज हिन्दी में चले।

विद्यालयों और विश्वविद्यालयों मे पढ़ाई का माध्यम हिन्दी या प्रादेशिक भाषायें हों। हरयाणा जो केवल हिन्दी भाषी है यहा तो देर लगाने का प्रश्न ही नही ? हरियाणा सिविल सर्विस आदि की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता खत्म करने की घोषणा करके उसे तुरन्त लागू करना चाहिए। क्या हमें अपनी भाषा की उन्नति में लज्जा अनुभव होती है ? क्या हिन्दुस्तान मे हिन्दी बोलना गुनाह है ? क्या हिन्दी भाषी देश में अंग्रेजी में काम करना गुलामी की पहचान नहीं ? तो फिर हिन्दी में ही सारा कामकाज चलना चाहिए।

आर्यसमाज थानेसर का चुनाव

प्रधान—श्री डा० रामप्रसाद मल्होत्रा, उपप्रधान—वानप्रस्थी मोतीराम, चौ० अमरसिह एडवोकेट, मन्त्री—श्री रामकृष्ण सेटी, उपमन्त्री—श्री पूर्णचन्द, कोषाध्यक्ष—श्री डा० घनश्यामदास, पुस्तकाध्यक्ष—श्री जीवनदास।

हरयाणा के नए मुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास को बधाई



हरयाणा के मुख्यमन्त्री पद पर श्री बनारसीदास गुप्त के मनोनयन पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो शेरसिह ने उन्हें बधाई दी है और आशा व्यक्त की है कि श्री गुप्त जी हरयाणा राज्य से शराब जैसी बुराई और बर्बादी से छुटकारा दिलाने हेतु पूर्ण शराब बन्दी लागू करेंगे और उ०प्र०, हिमाचल प्रदेश सरकारों का अनुसरण करते हुए यहा भी हिन्दी को प्रशासन की भाषा घोषित करेंगे। इसी प्रकार हरयाणा के विकास हेतु रावी ब्यास का पानी हरयाणा में लाकर इस प्रदेश की धरती को हराभरा करेंगे। जनता दल के घोषणा पत्र के अनुसार पजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिलका आदि को हरयाणा में मिलाने का पूरा यत्न करेंगे।

शराब के ठेके पर ताला

हांसी, २३ मई (निम)। मानवास सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत ने उमरा गांव के शराब के ठेके को ताला लगा दिया है। पंचायत ने सरकार से ठेका तुरन्त रद्द करने की मांग की है।

पंचायत ने सरकार से मांग की है कि शराब के प्रचलन से क्षेत्र में गुण्डागर्दी फैल गई है। पंचायत का कहना है कि मुख्यमन्त्री श्री ओमप्रकाश चौटाला ने ग्राम पंचायत की इच्छा का सम्मान करते हुए सिसाय गांव का ठेका बन्द कराया है, उसी प्रकार उमरा का ठेका भी बन्द कराया जाए।

लोग ठेके के बाहर गत दो मास से धरना लगाए हुए है।

—(नवभारत टाइम्स)

—पहले तुम शराब को पीते हो, फिर धीरे-धीरे शराब तुम्हें पीने लग जाती है और अन्त में सर्वनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर देती है। अतः इस सर्वनाशिनी से दूर ही रहिए।

हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं ईसाईयों को क्यों ?

हरिजनों से ईसाई बने लोगों के लिए भी हरिजनों को दी जाने वाली सुविधाओं की मांग को लेकर ईसाई पादरियों ने आन्दोलन चला रखा है। यदि उनकी यह मांग मान ली जाती है तो हरिजन भाइयों को ईसाई बनाने के काम में ईसाई पादरियों को बहुत लाभ होगा। अधिक मात्रा में लोग ईसाई बनने लगेंगे। भारत के ईसाईकरण के सपनों को जल्दी साकार कर पायेंगे।

भारत के संविधान निर्माताओं ने हिन्दू समाज के हरिजन वर्ग Schduled Castes को कुछ विशेष सुविधायें तथा अधिकार कुछ वर्षों के लिए इस कारण दिए थे कि हरिजन शताब्दियों से अस्पृश्य माने जाते रहे और हिन्दू समाज में इनको बराबर का दर्जा नहीं मिलता रहा। परन्तु ईसाई समाज अथवा अन्य किसी गैर हिन्दू समाज में छुआछूत नहीं है। कोई भी हरिजन जब ईसाई धर्म स्वीकर लेता है तो वह हरिजन नहीं रहता। भारत के संविधान के अनुसार शैड्यूल कास्टस में ईसाई वर्ग के लोग सम्मिलित नही हैं। ईसाई बन जाने के उपरान्त भी हरिजनों वाली सुविधायें दिए जाने से इस प्रावधान का उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा।

यदि ईसाईयों की मांग मान ली गई तो हरिजन समाज को हानि होगी क्योंकि उनको मिलने वाली सुविधाओं को ईसाई भी बांट लेंगे। यह भी खतरा है कि हरिजनों को मिलने वाली सुविधाओं का ८०% भाग ईसाईयों के हाथ में चला जाए, जैसे कि आदिवासियों को मिलने वाली सुविधाओं का ८० प्रतिशत से अधिक भाग ईसाई बन चुके लोगों के हाथ में जा रहा है। कारण यह है कि ईसाई वर्ग बहुत संगठित है। उनके बड़े बड़े कार्यालय हैं जिनमें ऊंचे वेतन प्राप्त बहुत पढ़े लिखे लोग कार्यरत है। किन्तु दूसरे आदिवासी असंगठित और कम शिक्षित है। इसलिए अपने अधिकारो से वंचित रह जाते है।

भारत की जनसंख्या में हिन्दू ८५ प्रतिशत के लगभग हैं। जो धन आदिवासी तथा हरिजनों के लिए व्यय होता है वह प्राय: हिन्दूओं से ही कर के रूप में प्राप्त होता है। ईसाईयों को भी हरिजनों वाली सुविधाएं देने में तो हिन्दूओं का धन ईसाईयों के हाथ अनायास ही चला जाएगा।

भारत के एक करोड़ साठ लाख ईसाईयों में आधे हरिजन वर्गसे धर्मान्तरित किए गए मिजोरम है, आधे प्राय. आदिवासी Scheduled Tribes है। आदिवासियों को मिलने वाली सुविधाएं तथा विशेषाधिकार इन ईसाईयों को भी प्राप्त है। यदि हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं और विशेषाधिकार उन ईसाईयों को, जो पहले हरिजन थे, दे दिए जायें तो भारत मे समस्त ईसाई समाज तो विशेषाधिकार रखने वाला बन जाएगा और हिन्दू समाज अपने ही देश में द्वितीय श्रेणी का नागरिक बनकर रह जाएगा।

भारत में जो आदिवासी क्षेत्र ईसाई बहुल हो गए वहा ईसाई राज्य बन गए। जैसे नागालैंड और मेघालय। नागालैंड और मिजोरम वास्तव मे भारत की धरती पर विदेशी मिशनरियों के अधीन पोप के राज्य है। वे अपने आपको अब भारतीय ही नहीं मानते बल्कि वहां भारत के विरुद्ध एक बड़ी शक्ति खड़ी हो रही है। भारत विरोधी सशस्त्र संगठन बन गए हैं जो आसाम के अन्य क्षेत्रों मे विद्रोह भड़का रहे हैं। बोडो या उल्फा उग्रवादियों को हथियार और प्रशिक्षण देते है। उन्हे गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

भारत सरकार द्वारा इन दोनों राज्यों को अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक धन राशि दी जाती रही। इन दोनों राज्यों को कश्मीर की भांति बल्कि और भी अधिक विशेषाधिकार प्राप्त हैं। यह सारे अधिकार सुविधायें तथा धन भारत विरोधी गतिविधियों में ही लग रहे है जो कि बन्द होना चाहिए।

भारत में पहले ही ईसाई जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। यदि यह प्रक्रिया अधिक तेज हो गई तो हिन्दू समाज सर्वनाश की ओर ही अग्रसर होगा।

अतः हरिजनों को मिलने वाली सुविधायें ईसाईयों को नहीं मिलनी चाहियें क्योंकि—

१. संविधान निर्माताओं ने सोच समझ कर केवल हिन्दू समाज के ही पिछड़े वर्ग S. C. को सुविधायें दीं। ईसाईयों को भी यह सुविधायें देना अवैधानिक है। संविधान की भावना के विरुद्ध है।

२. ईसाईयों में अस्पृश्यता नहीं है और ईसाई बनने के उपरान्त कोई भी व्यक्ति हरिजन S. C. नहीं रहता।

३. हरिजनों को मिलने वाले धन तथा सुविधाओं को ईसाई बांटना चाहते हैं, इससे हरिजन समाज को हानि होगी। हरिजनों के प्रति अन्याय होगा।

४. ईसाईयों को हरिजनों S. C. वाली विशेष सुविधायें और अधिकार प्राप्त हो जाने से ईसाई समाज Privileged Class तथा हिन्दू समाज Unprivileged Class यानि द्वितीय श्रेणी के नागरिक अपने ही देश भारत में बन जायेंगे।

५. हिन्दू समाज का धन ईसाईयों की जेब में चला जाएगा।

६. ईसाई जगत का नियन्त्रण विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों के हाथ में होने केकारण ईसाईयों को मिलने वाले धन का दुरुपयोग भारत विरोधी कार्यों में होता हैं। हिन्दू अपने धन का ऐसा दुरुपयोग नही होने देंगे।

—डा० कैलाश चन्द्र, विश्व हिन्दू परिषद,
संकट लोचन आश्रम, सैक्टर-६, रामा-कृष्णा पुरम, नई दिल्ली-२२

कविता

बिना ज्ञान इन्सान वृथा, भार समझना धरती पर।
मानव नही देखो दानव है, ऐसे नर-नार जो धरती पर॥

येषाम् न विद्या तपो न दानम्, ऋषि चाणक ने बतलाया है।
ऋषि सन्तों का कहन यही और लेख वेद में पाया है।
शुभ कर्मों से मानव तन आया है, करें बैठ विचार धरती पर।१।

आहार, निद्रा, विषय भोग तो प्रत्येक प्राणी करते हैं।
मननशील से मनुष्य बने जो ध्यान देव का धरते हैं।
भगवन् का स्मरण करते है, हो आनन्द अपार इस धरती पर।२।

करें परमार्थ और पुरुषार्थ वह कर्मवीर कहलाते है।
कर्मवीर कर्मों के बल से नाम जगत् में पाते हैं।
झूठे गीत भाग्य के गाते हैं, आलसी लब्बार पड़े धरती पर।३।

मानव करले ध्यान, ज्ञान बिना कर्म नाम नहीं पाएगा।
भजन, उपदेश और सत्सग से जो पैसे लेकर आएगा।
भाड़े का टट्टू कहलाएगा, यह 'लालचन्द' का प्रचार है धरती पर
मानव नही देखो दानव हैं— ।४।

—महात्मा सुशीलदेव श्री मंगल भवन खेड़की
बैराबास (महेंद्रगढ़)

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ

—मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी

रोहतक में वेद शिक्षा शिविर

वेद-प्रेमी आर्य-बन्धुओं को यह सूचित किया जाता है कि दिनांक ३ जून से १७ जून ९० तक दयानन्दमठ रोहतक में 'वेद शिक्षा शिविर' का आयोजन किया जा रहा है। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० सुदर्शनदेव आचार्य तथा श्री पं० सुखदेव जी शास्त्री निम्नलिखित वैदिक विषयों का प्रशिक्षण देंगे।

१- चारों वेदों का संक्षिप्त परिचय।
२- वेद-मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण।
३- सन्ध्या, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण आदि के मन्त्रों की व्याख्या।
४- वेद-मन्त्रों के अर्थ की शैली।
५- दैनिक कर्मकाण्ड के मन्त्रों को कण्ठस्थ करना।
६- भाषण - कला की शिक्षा।
७- वैदिक सिद्धान्तों पर शंका समाधान।
८- नामकरण आदि प्रचलित संस्कारों का शिक्षण।

योग्यता :—

प्रवेशार्थी छात्र की योग्यता मैट्रिक (संस्कृत सहित) मध्यमा, विशारद, शास्त्री, बी. ए आदि तथा स्वाध्याय प्रेमी।

उद्घाटन :—

शिविर का उद्घाटन दिनांक ३ जून ९० को प्रातःकाल प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा करेंगे।

आवश्यक निर्देश :—

१- प्रवेशार्थी छात्रों के आवास और भोजन का प्रबन्ध दयानन्द मठ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से किया जाएगा।

२- प्रवेशार्थी छात्र ऋतु अनुकूल वस्त्र, जलपात्र, घृत और पांच व्रत-समिधायें (८ अगुल परिमाण), सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि, कापी और लेखनी अपने साथ लावें और २-६-९० साय तक दयानन्दमठ पहुंच जायें।

३- प्रवेशार्थी छात्र अपना आवेदन पत्र दिनाक ३० मई ९० तक निम्नलिखित पते पर भेज देवें।

निवेदक :—

वेदव्रत शास्त्री, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन, रोहतक फोन ७४८१२

महाशय भरतसिंह मन्त्री, दयानन्द मठ, रोहतक

जिला हिसार में वेदप्रचार

ढाणी—दिनांक १४ मई को नलवा (खेनों की ढाणी) में सभा को भजनमण्डली महाशय खेमसिंह जी क्रांतिकारी के द्वारा वेदप्रचार किया गया। प्रचार में शहीदों का इतिहास रखा। प्रचार में अन्य ढाणियों के बच्चों के अतिरिक्त नलवा गांव के नवयुवकों ने भी भाग लिया। पं० मनोहरलाल ने भविष्य में बीड़ी न पीने की प्रतिज्ञा की।

कंवारी—१५ मई को गांव कंवारी में वेदप्रचार किया गया। आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री अत्तरसिंह क्रांतिकारी जी ने नवयुवकों को शराब व सुल्फा न पीने की प्रेरणा दी तथा गांव में पशुओं के लिए जोहड़ो में पानी डालने का आग्रह किया, जिससे पशु बीमारी बच सके। महाशय खेमसिंह जी ने रानी पद्मनी का इतिहास रखा। जिसका लोगों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। लोगों ने महाशय जी की भूरी-भूरी प्रशंसा की। प्रचार में ८३ रु० दान आया। प्रातःकाल श्री शमशेर सिंह दुहन की बैठक में हवन किया गया।

उमरा—१६ मई को ग्राम उमरा में वेदप्रचार किया गया। सभा उपदेशक क्रान्तिकारी जी ने शराब का ठेका शील करने के लिए बहादुरी के कारनामों का बहादुर लोगों को धन्यवाद दिया और समय आने पर सभा की तरफ से पूर्ण सहयोग देने का पुनः आश्वासन दिया। साथ मे सातबास से इस शराब के कलंक को जड से खत्म करने पर बल दिया। खेमसिंह जी ने समाज सुधार के भजनों के अतिरिक्त सुन्दरबाई इतिहास रखा। ११२ रु० प्रचार में दान प्राप्त हुआ।

—डा० ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज कंवारी

श्री स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती को श्रद्धाँजलि



गुरुकुल घरोण्डा में २० मई रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रथम प्रधान एवं वेदप्रचाराधिष्ठाता स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती पूर्वसदस्य लोकसभा की स्मृति में एक शोकसभा का आयोजन किया गया। दोपहर बाद दो बजे यज्ञ के पश्चात् गुरुकुल घरोण्डा के आचार्य वेदव्रत विद्यालंकार ने कार्यवाही का संचालन किया। इस अवसर पर ठा० रणधीर सिंह पूर्व विधायक, स्वामी रतनदेव जी संचालक गुरुकुल कुम्भा खेडा एवं खरल, वेद प्रचार मण्डल जिला पानीपत के संयोजक श्री रामानन्द सिहल, श्री सोमदत्त शास्त्री मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा चण्डीगढ, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता प्रि० लाभसिह, वैद्य नारायणदत्त आयुर्वेदालंकार पानीपत, डा० शिवकुमार शास्त्री मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, श्री रामशरण शर्मा करनाल, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व आचार्य पं० हरिदत्त शास्त्री, पुरोहित आर्यसमाज करोलबाग नई दिल्ली, ब्र० रामस्वरूप संचालक गुरुकुल सफीदों, श्री महेन्द्रसिह आर्य भटगांव (सोनीपत), पं. चन्द्रसेन जी वैदिक मिशनरी सोनीपत, बहन उर्मिला आर्य प्रचारक, श्री महासिह वर्मा लाढौत (रोहतक), श्री इन्द्रभानु आर्य, ठा० लक्ष्मण सिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज सालवन जिला करनाल, श्री वेदपाल पूर्व उपाध्यक्ष हरयाणा विधानसभा, बहन शांति देवी पूर्व विधायक, स्वामी धर्मानन्द जी पानीपत, श्री कपिलदेव शास्त्री लोकसभा सदस्य आदि नेताओं ने स्वामी जी के गुणों का गुणगान करते हुए उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित की। प्रमुख वक्ता के रूप में सभा के उपमन्त्री एवं वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री ने स्वामी जी को एक निडर नेता, वैदिक विद्वान्, धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीति के क्षेत्र का कर्मठ योद्धा, गुरुकुल शिक्षा पद्धति का प्रेमी बताया।

श्री रणवीरसिंह शास्त्री मन्त्री हरयाणा मण्डल गुरुकुल झज्जर तथा म० पूर्णसिह आर्य मन्त्री आर्यसमाज नरेला ने भी सभा कार्यालय में शोक प्रस्ताव भेजते हुए स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है और उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा की है।

—केदारसिह आर्य

शराब हटाओ देश बचाओ।

अबोहर फाजिल्का हरयाणा में शामिल हों —तेगराम

फाजिल्का, २३ मई (लीलाधर)। पंजाब के भूतपूर्व विधायक व फाजिल्का तहसील हरयाणा सम्मिलित समिति के अध्यक्ष तेगराम ने प्रधानमन्त्री वी० पी० सिंह और उपप्रधानमन्त्री देवीलाल को पत्र लिख कर माग की है कि पिछले कई वर्षों से पंजाब हरयाणा में झगड़े का कारण बन रहे अबोहर फाजिल्का व चण्डीगढ़ का फैसला जल्दी किया जाए तथा अबोहर फाजिल्का के वह १०७ गांव जिन्हें स्व० श्रीमति इन्दिरा गांधी ने हरयाणा में मिलाने का वायदा किया था, शीघ्र ही हरयाणा को दिए जाये। उन्होंने कहा कि इस देरी के कारण अबोहर फाजिल्का में सभी विकास कार्य ठप्प होकर रह गए हैं। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने इस क्षेत्र के फैसले के लिए मैथ्यु आयोग बिठाया था। जिस पर करोडों रुपए बर्बाद कर दिए गए और मैथ्यु आयोग आतंकवादियों के डर से राजनीतिक दबाव के कारण सही रिपोर्ट पेश नही कर सका। श्री तेगराम ने इस बर्ष हो रहे जनगणना कार्य के लिए अबोहर फाजिल्का में केन्द्र सरकार के कर्मचारी नियुक्त किए जाने की भी मांग की है।

श्री तेग ने दावा किया है कि इन क्षेत्रों की ६५ प्रतिशत आबादी हिन्दी भाषी है और अधिकांश छात्र/छात्राये हिन्दी माध्यम मे ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि इस तथ्य का पता इसी बात से लग जाता है कि फाजिल्का में हिन्दी में हिन्दी माध्यम के पाठ्यकम वाले केवल तीन स्कूल हैं और वे भी गैर सरकारी हैं किन्तु फिर भी इनमें विद्यार्थियों की भारी भीड है जवकि राज्य सरकार का केवल एक हाई स्कूल है, जहा पजाबी माध्यम के कारण पढ़ने वालों की सख्या बहुत कम है। श्री तेगराम ने कहा है कि इस क्षेत्र के अधिक रीति रिवाज हरयाणा व राजस्थान वासियों से मिलते है। और पजाबी भाषायी की बहुत कम सख्या ही इस क्षेत्र में है। इसलिए इस क्षेत्र का जल्द से जल्द निर्णय कर इसे हरयाणा मे शामिल किया जाना चाहिए।

—जन सन्देश से

अंग्रेजी बोलने वालों का प्रतिशत

कुल ०.०४

नई दिल्ली २३ मई (वार्ता)। राजभाषा अधिनियम १९६३ के प्रावधानों तथा सविधान के अनुच्छेद ३४६ के तहत राज्य सरकारें केन्द्र सरकार के साथ हिन्दी या अग्रेजी मे पत्राचार कर सकती हैं।

यह जानकारी आज राज्यसभा में गृहमन्त्री सुबोधकात सहाय ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में दी। उन्होंने बताया कि भारतीय भाषाओं के विकास के लिए सरकार की कई योजनायें चल रहीं हैं। इन में भाषा शिक्षकों का प्रशिक्षण राज्यस्तरीय अंकादमियों तथा चुने हुए विश्वविद्यालयों को सहायता और भारतीय भाषाओं के विकास से जुडी स्वैच्छिक सस्थाओं को वित्तीय सहायता देना शामिल है।

उन्होंने बताया कि १९८१ की जनगणना में घर में मुख्य रूप से बोली जाने वाली भाषा के आधार पर भारत में अग्रेजी बोलने वालो का प्रतिशत ०.०४ था। १९७१ और १९८१ दोनों जनगणनाओं में जनसख्या के ०.०३ प्रतिशत ने अंग्रजी को अपनी मातृभाषा बताया। १९७१ की जनगणना में जिन लोगों ने अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा बताया तथा जिन लोगो ने मातृभाषा के अलावा अंग्रेजी को अपनी द्वितोय भाषा बताया उनका कुल प्रतिशत ४.५८ था।

✱ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षाओं का परिणाम

धर्मप्रवेशिका

क्रमांक १८० ब्र० नरेशकुमार—विद्याविहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने ८२ अंक प्राप्त किए। क्रमांक २१९ अनिल कुमार—दयानन्द आदर्श विद्यालय नारायणगढ़ ने भी ८२ अंक प्राप्त कर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

क्रमांक ४९६ पूजारानी—आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी ने ८१ अंक प्राप्त किए। क्रमांक ५७० बबीता रानी—धनवन्त्री आर्य स्कूल रोहतक ने ८१ अंक लेकर सर्वद्वितीय स्थान प्राप्त किया।

क्रमांक ४६ रमणजीत कौर—मु० लाल आर्य स्कूल अम्बाला छावनी ने ८० अंक लिए, क्रमांक १७४ कुलवन्त सिंह—विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने ८० अंक लिए, क्रमांक २२२ मुक्तारानी—दयानन्द आदर्श विद्यालय नारायणगढ़ ने ८० अंक लेकर सर्वतृतीय स्थान प्राप्त किया।

धर्म-भूषण

क्रमाक ३३ कुमारी सरिता—आर्य कन्या गुरुकुल पंचगांव ने ८३ अंक लेकर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

क्रमांक ३९ ब्र० अक्षयकुमार—विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने ८१ लिए, क्रमांक ४७ ब्र० सुरेन्द्र-विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने ८१ अंक लेकर सर्वद्वितीय स्थान प्राप्त किया।

क्रमांक ५२३ मोनिका—धनवन्तरी आर्य हाई स्कूल रोहतक ने ७९ अंक लेकर सर्वतृतीय स्थान प्राप्त किया।

धर्माधिकारी

क्रमांक २३२ विजयकुमार—आर्य वरि० मा० विद्यालय पानीपत ने ८९ अंक लिए, क्रमांक २३५ अनिलकुमार—आर्य वरि० मा० विद्यालय पानीपत ने ८९ अंक लेकर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

क्रमाक १३ नरेन्द्र कुमार—आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा ने ८३ अंक लिए, क्रमांक २८१ सजयकुमार—आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत ने ८३ अंक लेकर सर्वद्वितीय स्थान प्राप्त किया।

क्रमांक १० कुमारी सोनिया—आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका ने ८२ अंक लिए, क्रमांक २१९ सजीव कुमार—आर्य वरि० माध्यमिक विद्यालय पानीपत ने ८२ अंक लेकर सर्वतृतीय स्थान प्राप्त किया।

प्रस्तोता—
आर्य विद्या परिषद हरयाणा

बल्ले—बल्ले

वाह बल्ले—बल्ले क्या बात हुई है,
बेमौसम की बरसात हुई है।
जब भी हमने हंसना चाहा
महगाई की लात पड़ी है।
वाह बल्ले—बल्ले क्या बात हुई है,
बेईमानों की जीत हुई है।
जब भी हमने ईमान को पूजा,
ईमानदारी की मिट्टी—पलीत हुई है।

—मनोज रभड़ा

आर्यसमाज का वर्तमान में महत्व

—डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार समन्वित प्रवक्ता,
सनातन धर्म कालेज, पलवल

[गतांक से आगे]

यदि अन्धेरे का साम्राज्य है तो देव-दिवाकर को उसे छिन्न-भिन्न करना ही पड़ेगा। रही दूसरी बात खण्डन-मण्डन न करने की और जातीय हिन्दू संगठन की। जहां तक हिन्दुत्व की रक्षा का प्रश्न है, उसमें आर्यसमाज कभी पीछे नहीं रहा, बल्कि अग्रणी रहा है। संगठनशक्ति का परिचय हमने अपने सनातनी या वैष्णव भाइयों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर उस समय में दिया है जबकि उन पर कोई बाहरी या विधर्मियों से संकट आया हो। वह चाहे हैदराबाद हो या दिल्ली या पंजाब हमने दूसरों की धधकती आग में भी कूदकर दिखाया है। बल्कि दूसरे भाई इस मामले में कई बार अपनी संकीर्णता का परिचय हमसे घृणा करके देते हैं और हमें अकेला छोड देते हैं लेकिन घबराते तो वे हैं जो किसी के सहारे पर जीते हैं। आर्यसमाज ने तो सतत संघर्ष करना सीखा है। उसकी तो यह मान्यता रही है कि—

बहादुर लोग कब किसी का आसरा अहसान लेते है।
उसी को कर गुजरते हैं जो मन में ठान लेते है ॥

तो हमें तो किसी से कोई गिला नहीं कि हमारा उन्होंने साथ नही दिया, लेकिन हमने अपने दूसरे भाइयों को कभी भी यह गिला करने का मौका नही दिया। यह ठीक है कि हमारे आपसी सैद्धातिक मत भेद हैं, वे अपनी जगह हैं—वे रहेंगे, लेकिन औरो के लिए 'हम सब एक हैं'—यही कहेंगे। और हमने तो कहा ही नही करके भी दिखाया है। रही बात खण्डन-मण्डन की, वह तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार और कर्त्तव्य है। जब तक ढोंग और पाखण्ड है। आडम्बर और दिखावा और छलावा धर्म के रूप में रहेगा, आर्यसमाज चुप न रहेगा, वह इसके विरुद्ध लडता ही रहेगा। हम ऐसे किसी सिद्धातविहीन संगठन के लिए बिल्कुल भी तैयार नही है, जहा पर हमे समझौता करके अपने वेद प्रतिपादित सत्य-सनातन सिद्धातो की बलि चढानी पडे। हमसे बड़ा कोई भी हिन्दू-हितों का हिमायती या रक्षक विश्व में नही है। इस बात का साक्षी हमारा विगतकाल का इतिहास है। आज हवा मे मुक्का घुमाकर चाहे जो तीस मारखा बन ले।

इसलिए रूढिग्रस्त अन्धविश्वासों से जकड़े भेदभाव की दीवारो में बंधे भारतीय समाज को आज भी आर्यसमाज और वेद के दिव्य आलोक की आवश्यकता है और आर्यसमाज केवल अपनी उन्नति को ही उन्नति नही मानता, वह तो सभी की उन्नति चाहता है। फिर जिस संगठन का ध्येय ही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' हो वह कैसे मौन रहकर दानवता और अन्याय अधर्म का यह क्रूर अट्टहास देख सकती है। निर्झर की धारा मैदान में आकर मध्यम तो पड सकती है, लेकिन रुक नही सकती। आर्यसमाज का वह आलोकदीप जलता ही रहेगा। इस आशा के साथ कि उजाले की यह एक किरण अंधेरे पर भारी होगी, रात उनकी सही सुबह हमारी होगी।

आचार्य उदयवीर शास्त्री अस्वस्थ

गत दिनों अतिसार, ज्वर और शिरःशूल की शिकायत पर आचार्य जी को अजमेर के नेहरू चिकित्सालय में प्रविष्ट कराया गया था। डा० सतीश अरोड़ा के परिश्रम एवं योग्यता से उपद्रवाह तो शांत हुए परन्तु परीक्षण करने पर पेट में बड़ी आतों में ट्यूमर का पता चला है। आचार्य जी की आयु और स्वास्थ्य को देखते हुए शल्य चिकित्सा सम्भव नहीं है अतः चिकित्सकों ने विश्राम एवं घर ही औषधि लेने के परामर्श के साथ चिकित्सालय से छुट्टी दे दी है। आचार्य जी को घर पर चिकित्सा चल रही है। आशा है ईश्वर की कृपा से आने वाले दिनों में स्वास्थ्य में सुधार हो सकेगा। —धर्मवीर
सम्पादक परोपकारी दयानन्द आश्रम केसरगज अजमेर

भारत की महानता

भारत देश महान् हमारा, विदुर युधिष्ठिर आए थे।
भगवान् राम और श्रीकृष्ण जी, दिव्य गुणों को लाए थे॥
भारत नाम भरत से है, जो शकुन्तला का लाला था।
शेरों के संग बचपन ही में, खेल खेलने वाला था॥
अर्जुन, भीम सरीखे योद्धा, इसी धरा पर आए थे।
१५ वर्ष के अभिमन्यु ने, चक्रव्यूह द्वार गिराए थे॥
वीर भूमि हनुमान भीष्म की, परशुराम ने जन्म लिया।
दयानन्द से ब्रह्मचारी ने, आर्यावर्त का उद्धार किया॥
आदर्श नारियां हुई यहां पर, कुन्ती गन्धारिन सीता।
ब्रह्मचारिणी रही गार्गी, सती सावित्री, अनुसूइया॥
लक्ष्मीबाई, मीराबाई, जीजाबाई को देखो।
इतिहास हमारा गौरव, उस हाडा रानी को देखो॥
इतिहास खोलकर वर्तमान से, तुलना जब भी करते हैं।
भारत की इस पुण्य धरा पर, आंसू गिरने लगते है॥
उठो धरा के अमर सपूतों, पूर्वजों की चाल चलो।
सोने की चिड़िया था भारत, 'महेश' जरा कुछ ख्याल करो॥

—महेश चन्द्र आर्य पन्हैड़ा खुर्द बल्लबगढ़ फरीदाबाद (हरयाणा)

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

आर्यसमाज लोहारू का एक और सराहनीय कदम

गत ४ मई को लोहारू में एक सरकारी कार्यालय में सरकारी अधिकारियों द्वारा शराब एवं मास की दावत उड़ाने पर लोहारू में रोष की लहर दौड़ गई। घटना इस प्रकार हुई कि लोहारू में उपायुक्त भिवानी एक पटवार सर्किल का उद्घाटन करने आए थे। लोहारू के तहसीलदार ने प्रीतिभोज का आयोजन किया। प्रति व्यक्ति से ३० रु० लेकर १८०० रु० जमा किए गए। भोज में शराब के अतिरिक्त लगभग ८ किलो मांस परोसा गया। इसमें ब्लोक एवं उपमण्डल अधिकारियों समेत ६० अतिथिजन थे। विशेषकर हिन्दू बैल्ट के नगरजनों को इस सरकारी कार्यालय में उड़े शराब कबाब से गहरी चोट पहुँची।

इधर अतिथि भोजन करके अपने स्थानों तक पहुँचे उधर नागरिकों एवं अन्य धार्मिक संगठनों ने अपनी भावनाओं के विरुद्ध खिलवाड़ समझ आर्यसमाज लोहारू, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् आदि अनेक धार्मिक घटक एकत्रित हो गए। ५ मई से ७ मई तक विचार कर इन संगठनों ने आंदोलन का रूप ले लिया। ८ मई को इसके विरोध में जलूस निकाला और ९ ता० को प्रतिष्ठान एवं बाजार बन्द रहा। इसी मुद्दे पर लोहारू के वकीलों ने भी एक दिन की हड़ताल रखी। लोगों में भारी रोष है। लोगों की मांग है कि सरेआम सरकारी कार्यालय में मीट एवं शराब उड़ाने की घटना को मद्देनजर रखते हुए लोगों की भावनाओं की कद्र करते हुए उपरोक्त तहसीलदार के खिलाफ तुरन्त कार्यवाही हो और इसे यहां से स्थानांतरित किया जावे।

आर्यसमाज के प्रधान श्री रामअवतार एवं विजयसिंह शेरावत ने बताया कि जब तक इस घृणित कार्य करने वाले अधिकारी के खिलाफ कार्यवाही नहीं होगी हम संघर्ष जारी रखेंगे। यह आर्यसमाज लोहारू एवं अन्य संगठनों का सराहनीय कदम है।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न २३१०७/७३ र

प्रेषित सवत् १,६६,०८,५३,०६०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री | सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए. | ज्येष्ठ २५, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक २६ ७ जून १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

'धर्म—अच्छे आचरण का नाम है'

—प्रा० भद्रसेन, होशियारपुर

●

सुसंगत जीवन का तीसरा मूलमन्तव्य है—सदाचार, धर्म। वस्तुत: धर्म=अच्छे आचरण का नाम है१ और आचरण को अच्छा बनाने के लिए ही धर्म की अपेक्षा, पहचान, वर्णन या उसके कर्मकांड आदि भेद हैं। जैसे स्नान का प्रयोजन या लाभ यही होता है, कि स्नान के पश्चात् व्यक्ति का मैल, पसीना, थकावट दूर हो जाती है और उसमें स्वच्छता, हल्कापन तरोताजगी आ जाती है। ठीक ऐसे ही धर्म का उद्देश्य है कि (धार्मिक) मानव के अन्दर सच्चाई, ईमानदारी, स्नेह, सहयोग की भावना आए और वह तब संसार को सुखी, आनन्दित, व्यवस्थित बनाए। नि:सन्देह शास्त्रों में धर्म शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है२, पर धर्म का मुख्य अर्थ और अभिप्राय सत्य, ईमानदारी, स्नेह, सहयोग आदि वे गुण, तत्व, विचार और बातें हैं३ जिनको अपने स्वभाव का अंग बनाने से व्यक्ति, उसका परिवार और समाज सुखी, विकसित, व्यवस्थित और आनन्दित होता है। धर्म [illegible] द्वारा व्यक्ति के स्वभाव को सुन्दर बनाता है, व्यक्ति पर बलात् [illegible] प्रकार से कुछ थोपता नहीं, क्योंकि थोपी हुई चीज स्वभाव का [illegible] नहीं बनती और न ही वह टिकाऊ या स्थाई होती है। भय या [illegible] के हटते ही व्यक्ति फिर वहीं पहुँच जाता है।

धर्म किसी को अपनी इच्छा से ही सदाचारी, संयमी, सेवाभावी प्रेमी बनाकर अपना और संसार का सुख बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। इसीलिए महाभारतकार श्री वेदव्यास जी ने कहा है—धारण, पालन के कारण ही धर्म को धर्म कहते हैं। धर्म से ही सारी प्रजा सुरक्षित है। जो मानव के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन को धारता है, व्यवस्थित करता है। वस्तुत: वही धर्म है४। मानव के जीवन विकास के लिए ही धर्म का विधान, उपदेश किया गया है या उसकी आवश्यकता होती है। अत: जो विकास, सुरक्षा, व्यवस्था का कारण बनता है, वही वास्तव में धर्म है५। प्राणियों में परस्पर

१- आचाराज्जाजले ! प्राज्ञ: क्षिप्रं धर्ममवाप्नुयात्।
महाभारत शांतिपर्व (१२) २५८ २२
जाजलि ! आचरण के द्वारा ही समझदार मानव धर्म को प्राप्त होता है।

२- स्वभाव, कर्तव्य, कर्मकाण्ड, मान्यता, सिद्धांत आदि धर्म के अनेक अर्थ हैं, इसके विस्तार के लिए देखिए— 'सरल-सुखी जीवन' लेखककृत।

३- आचार: परमो धर्म: मनु० १, १०८ में धृति, क्षमा, दम: सदृश आचार को परम धर्म कहा है।

४- धारणाद्धर्म इत्याहुर्धर्मेण विधृता: प्रजा:।
य: स्याद् धारणसंयुक्त: स धर्म इति निश्चय: ॥ शान्ति, ११०,१०
(कर्ण० ४९, ५०)

५- प्रभवार्थाय भूतानां धर्म प्रवचनं कृतम् ८, ४८, ४९

सौहार्द, स्नेह, सहयोग, सहानुभूति, समृद्धि की वृद्धि करना ही धर्म का अभिप्राय है। जो अहिंसा=मनसा, वाचा, कर्मणा दूसरों को कष्ट न देने की भावना से युक्त है, वस्तुत: वही धर्मयुक्त है१। हे जाजलि ! वही धर्म को जानता है जो सदा सबसे मित्रता का व्यवहार करता है और मन, वचन एवं कर्म से सबकी भलाई में लगा हुआ है२। अत: लोकहित और जीवन यात्रा को सरल-सुखी बनाने के लिए ही धर्म का विधान है, इसलिए जो दोनों लोकों के सुखों को साधे वही धर्म है३।

'पर हित सरिस धर्म नहीं भाई' —तुलसी

जैसे कि सामाजिकता के नाते हमारे आपस में माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी, पुत्र, मित्र आदि के रूप में सम्बन्ध हैं। अत: जिसके साथ जैसा सम्बन्ध है, उसके साथ उसके अनुरूप आचरण करने से ही सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्धों के निर्वाह से परस्पर सद्भाव, सहयोग, स्नेह, विकास प्राप्त होता है तथा धर्म का फल सुख भी इसी स्थिति में प्राप्त होता है। मनुस्मृतिकार ने इस सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध को सबसे बड़ा धर्म बताया है४।

१- अहिंसार्थाय भूताना धर्मप्रवचन कृतम्। य: स्यादहिंसायुक्त: ॥

२- सर्वेषां य: सुहृन्नित्य सर्वेषाञ्च हितेरत:।
कर्मणा मनसा वाचा स धर्मं वेद जाजले ॥ २५४, ९ ॥

३- लोकयात्रार्थमेवेह धर्मस्य नियम: कृत:।
उभयत्र सुखोदर्क इह चैव परत्र च ॥ १५१, ४ ॥
यही भाव वैशिक दर्शन में—
यतोऽभ्युदयनि: श्रेयससिद्धि: स धर्म. १, १, २ का है।

४- यं माता पितरौ क्लेशं सहेते सम्भवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृति: शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ॥ २, २२७ ॥
बच्चों की उत्पत्ति और पालन के लिए माता अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जो कष्ट सहते हैं, उस ऋण से वे सौ वर्षों में भी अनृण नहीं हो सकते।
तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य सर्वदा।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तप. सर्वं समाप्यते ॥ २, २२८ ॥
अत: माता-पिता और शिक्षकों के उपकार को ध्यान में रखकर उनको सदा सन्तुष्ट करने का प्रयास करे, क्योंकि उनका सन्तोष सभी प्रकार के तप की तरह लाभप्रद होता है।
त्रिष्वप्रमाद्यन्नेतेषु त्रील्लोकान्विजयेद् गृही।
दीप्यमान. स्ववपुषा देववद् दिवि मोदते ॥२३२॥
किसी प्रकार के आलस्य के बिना इन तीनो के प्रति अपने कर्तव्य को पालता हुआ व्यक्ति यश को प्राप्त करता है और अपने जीवन को भी उज्ज्वल बनाता है।
सर्वेतस्यादृता धर्मा यस्यैतेत्रय आदृता.।
अनादृतास्तु यस्यैते सर्वास्तस्याफला: क्रिया: ॥२३८॥

शेष पृष्ठ ४ पर

—: सौभाग्योदय के साथ आपत्तियां :—

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

कहते हैं कि आपत्ति कभी अकेली नहीं आती अपितु अपने साथ अन्य अनेक आपत्तियों को लेकर आती है किन्तु अनुभव यह बतलाता है कि सौभाग्य के साथ भी कुछ दुर्भाग्य आपत्तियां चली आती हैं। ऐसा ही हुआ भारत में सन् १९४७ के पन्द्रह अगस्त को।

उस दिन विदेशी सत्ता यहां से गयी और देश की बागडोर देशवासियों के हाथ में आयी किन्तु स्वाधीनता का वह सौभाग्योदय अपने साथ-दुर्भाग्य के कुछ ऐसे तत्व भी ले आया जो भारत के नेताओं और उनकी राजनीतिक व शासकीय अयोग्यताओं के कारण भारत राष्ट्र को अभिशाप रूप में प्राप्त हुए। उन अभिशापों को भारत तब से लेकर अब तक भोग रहा है और पता नहीं भविष्य में कब तक भोगता रहेगा ?

इस समय स्थिति यह है कि महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी की जय बोलते रहो, उनकी प्रशंसा करते रहो और वर्तमान नेताओं को उन प्रशंसाओं और जयकारों की ओट में जी भर कर कोसते रहो। परन्तु वास्तविकता यह है कि उन्हीं महात्मा जी की कृपा के फल भारत राष्ट्र को भोगने पड रहे हैं। जिस मार्ग पर यह चलते रहे, जिस प्रकार की गतिविधियां वह अपनाते रहे, वही मार्ग अपनाया उनके शिष्यों ने, वही गतिविधियां अपनायी उनके उत्तराधिकारियों ने। भले ही उन्होंने उन्हें अनिच्छापूर्वक न चाहते हुए या उनके दूरगामी परिणामों को न समझते हुए अपनाया हो। हमारा अभिप्राय यह है कि चाहे राजनीतिक और प्रशासनिक अयोग्यता और अदूरदर्शिता के कारण अपनाया हो या उनकी ओट में अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा अर्थात् लोकेषणा और सांसारिक भोग विलास की प्राप्ति के लिए अपनाया हो। इस समय स्थिति यह है कि प्रत्येक चुनाव के बाद केवल आकृतियां बदलती हैं व्यक्तित्व बदलते हैं किन्तु दृष्टिकोण नहीं बदलता अपितु और प्रत्येक बाद में सत्ता में आने वाला व्यक्ति गांधीवाद के भूत को अपने में पहले सत्ताधारी से बढ़ चढ कर प्रस्तुत करने और लागू करने का प्रयत्न करता है जिससे वह अधिक से अधिक समय तक सत्ता में रहकर अपनी मनोवांछित लोकेषणा और भोग विलास की प्राप्ति कर सके।

गांधी जी से अपनी सन्तपन की धुन में सबसे बडी भूल हुयी—मुस्लिम तुष्टिकरण की, जिसके दूरगामी दुःखद परिणामों की ओर तो उन्होंने कभी दृष्टिपात भी नहीं किया। वकील होने के कारण उनसे जो आशा की जा सकती थी उनकी गतिविधियों का विश्लेषण करके देखा जाय तो वह आशा पूरी हुयी नहीं पायी जाती।

बंगाल में मुस्लिम लीग सरकार बनी और उसके मुख्यमन्त्री बने सोहरावर्दी। सोहरावर्दी ने बंगाल को पाकिस्तान में मिलाने की मांग को लेकर 'डायरेक्ट ऐक्शन' अर्थात् 'सीधी कार्यवाही' की धमकी दी और उसे सत्य भी कर दिखाया। खुलकर हिन्दुओं की हत्यायें की गयीं हिन्दू व नारियों को अपमानित तथा भ्रष्ट किया गया। इस काण्ड में अकेले कलकत्ता नगर में सोलह सदस्य हिन्दू मौत के घाट उतार दिए गए। जब गांधी जी से कलकत्ता जाने के लिए कहा गया तो उन्होंने यह कहकर कि अभी मेरे भगवान की प्रेरणा नहीं है, जब भगवान की प्रेरणा होगी, तब जाऊंगा, जाना अस्वीकार कर दिया। हिन्दू कब तक लुटता-पिटता रहता ? अन्त में 'मरता क्या न करता' के अनुसार हिन्दू भी अपनी सी करने पर उतर आए और हिन्दू के हथियार उठाने के बाद जितने समय में मुसलमानों ने केवल पांच सौ हिन्दुओं की हत्या की, इतने समय में हिन्दुओं ने चार हजार से अधिक मुसलमानों को मौत की नींद सुला दिया तो गांधी जी को तुरन्त उनके भगवान की प्रेरणा हो गयी और इस इल्हाम के होते ही गांधी जी कलकत्ता जा पहुंचे। गांधी जी की दृष्टि में उनकी वकालत और सन्तपन के माप से हत्या करना अपराध नहीं था और हत्यारा अपराधी नहीं था। हां, आत्मरक्षार्थ शस्त्र उठाना वह अपराध और आत्म रक्षार्थ शस्त्र उठाने वालों को अपराधी मानते थे। यह हमारा निर्णय नहीं अपितु गांधी जी की स्वीकारोक्ति है। उन्होंने ऐसे ही एक अवसर पर हिन्दुओं को स्पष्ट शब्दों में यह सम्मति दी थी कि यदि वह (मुसलमान) तुमसे झगड़ा करते हैं तो भी तुम उनसे मत लड़ो, वह तुम्हें मारते हैं तो तुम उनके हाथ से मर जाओ। पाठक ही निर्णय करलें कि यह कानून की कौनसी धारा पर न्याय सिद्ध होता है और कहां का सन्तपन है ? भारतीय दृष्टिकोण का सन्तपन तो 'शठे शाठ्य समाचरेत्' अर्थात् 'जैसे के साथ तैसा' तथा 'यथायोग्य व्यवहार' की शिक्षा देता है। गांधी जी ने कलकत्ता जाकर अपनी न्यायकारिता तथा सन्तपन का परिचय पीडितों को न्याय दिलाने और उनके घावों पर मरहम लगाने में नहीं किया अपितु उस भीषण हत्याकाण्ड और अत्याचार के जनक और मुखिया उस महाहत्यारे पापी सोहरावर्दी को शहीद की उपाधि से सम्मानित करने में किया। सोहरावर्दी से उसे हसन सोहरावर्दी बना दिया।

यह गांधी जी भी जानते थे और उनके शिष्य भी तथा भारत की सम्पूर्ण हिन्दू जनता के साथ साथ संसार के अन्य देशों के निवासी भी भली-भांति जानते हैं कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग की मुसलमानों के लिए पृथक् पृथक् गृहराष्ट्र की मांग की पूर्ति के लिए बनाया गया है तो फिर न्याय यह है कि समस्त मुसलमानों को पाकिस्तान चले जाना चाहिए थे। भारत में उन्हें रहने का न तो नैतिक अधिकार प्राप्त है और न वैधानिक और तथ्य यह है कि मोहम्मद अली जिन्ना ने सेना और पुलिस के बटवारे से पहले जनसंख्या परिवर्तन की बात कही थी। कहना न्याययुक्त होगा कि वह गांधी जी और उनके प्रिय शिष्य जवाहरलाल नेहरू की अपेक्षा अधिक न्यायबुद्धि और सूझबूझ रखता था और श्री डा. अम्बेडकर ने भी जिन्ना के इस सुझाव का समर्थन किया था किन्तु उस समय तो गांधी जी की आंधी चल रही थी और पृथ्वी पर पैर न रखकर वायुमण्डल में विचरण करने वाले गांधी–नेहरू ने जिन्ना का यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। जबकि यह दोनों भी यह भी भली भांति जानते थे कि ९७ प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान के पक्ष में मतदान किया था। उनका यह मत पाकिस्तान की मांग करने वाली मुस्लिम लीग को मिला था। मुसलमानों का शेष तीन प्रतिशत मत भी कांग्रेस को नहीं मिला था। उन तीन प्रतिशत में वह मत भी था, जो खान अब्दुल गफ्फार खां की मांग पर उस चुनाव में प्रयुक्त नहीं हुआ था तो केवल एक या आधा प्रतिशत मत के आधार पर द्विराष्ट्र सिद्धांत को स्वीकार कर अर्थात् मुसलमानों को पृथक् राष्ट्र मान लेने के बाद भी भारत में ही रोके और बसाये रखना कदापि न्यायसंगत नहीं है किन्तु गांधी जी का सन्तपन और उनके शिष्यों की उनके प्रति अन्धभक्ति ने यह अभिशाप भी सदा सर्वदा के लिए भारत के सर पर मढ़ दिया।

फिर उसके बाद——

होना यह चाहिये था कि भारत को 'हिन्दू राष्ट्र' घोषित कर दिया जाता। कारण अतीव स्पष्ट है कि जब द्विराष्ट्र सिद्धांत के आधार पर भारत का बंटवारा किया किया और मुसलमानों ने अपने लिए 'गृहराष्ट्र' के रूप में पाकिस्तान ले लिया तो शेष भाग तो द्विराष्ट्र सिद्धांतानुसार हिन्दुओं का ही 'गृह-राष्ट्र' अर्थात् 'हिन्दू-राष्ट्र' रह गया और ऐसी स्थिति में प्रथम तो मुसलमानों को यहां रहने का न तो वैधानिक अधिकार है और न नैतिक

(शेष पृष्ठ ४ पर)

इस्लामी रूढ़िवाद तथा अलगाववाद

—प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

इस्लामी रूढ़िवाद तथा अलगाववाद उन सभी देशों के लिए गम्भीर समस्यायें खड़ी कर रहा है जहां अच्छी खासी मुस्लिम आबादी है। मजहब के नाम पर पाकिस्तान के गठन तथा अरब देशों की पैट्रोडालरों के कारण समृद्धि से रूढ़िवाद और अलगाववाद की भावना को बहुत बल मिला है। पश्चिम के साम्राज्यवादी देश इस का पूरा-पूरा लाभ उठाने में लगे हैं। मुस्लिम राष्ट्र जहां-जहां भी मुसलमानों की संख्या अच्छी खासी है उन देशों के अन्दरूनी मामलों में दखल देना अपना अधिकार मान बैठे हैं। परन्तु इस प्रकार का अधिकार वे किसी भी दूसरे मजहबों के अनुयाइयों को देने को तैयार नहीं। मजहब के आधार पर अल्पसंख्यक मानकर विशेष सरक्षण देने की बात तो दूर रही, वे उन्हें साधारण नागरिक के अधिकार भी देने को तैयार नहीं। उनकी स्थिति तीसरे दर्जे के नागरिकों जैसी है। जिन पंथ और समुदाय निर्पेक्ष राज्यों में सभी नागरिकों को समान मौलिक अधिकार प्राप्त हैं और जहां अल्पसंख्यक के नाम पर विशेष संरक्षण भी मुसलमान भाइयों को दे रखे हैं, वहां भी मुस्लिम राष्ट्र बेकार में अपनी टांग अड़ाए बिना नहीं मानते, अलगाववाद को बढावा देते है और छोटी से छोटी साधारण घटनाओं को तूल देकर वावेला करने से बाज नही आते। पैसा और हथियार भेजकर विद्रोह भड़काना भी अपना अधिकार मानते है। यदि कोई राष्ट्र उनको अपने अन्दरूनी मामलों मे दखल देने से रोकने की बात कहे तो वे वही कहने लगते है जो पाकिस्तान बनने पर इकबाल ने कहा था—"मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहा हमारा।" हर देश मे जहाद करना वे अपना अधिकार मानते हैं।

मार्च १९८१ में मैंने एक पत्र तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को लिखा था। उसमे मैंने लिखा था कि मुस्लिम राष्ट्रो में बढ़ते हुए रूढ़िवाद और अलगाववाद के कारण उनकी मनोवृत्ति वनती जा रही है, उससे यह स्पष्ट होता जा रहा है कि आने वाले ५ वर्षों के बाद रूम, चीन और भारत को एक दूसरे के करीब आना पड़ेगा और एक समय ऐसा आएगा जब तीनो को मिलकर इस्लामी रूढ़िवाद और अलगाववाद का मुकाबला करना पड़ेगा। वह समय शीघ्र ही आने वाला है।

पश्चिम के साम्राज्यवादी देशों की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक सहायता के बल पर पाकिस्तान तथा ईरान और दूसरे मुस्लिम राष्ट्र, रूस, चीन और भारत में अलगाववाद की गम्भीर समस्या पैदा किए हुए है। अफगान मुजाहिदीन के नाम पर अमरीका आदि से मिलने वाले हथियारो और उनके प्रशिक्षण की सुविधा तथा अपार धन का उपयोग इन तीनों राष्ट्रों मे अलगाववाद की भावना भड़काने में किया जा रहा है। अलगाववाद तब लीग और जहाद के अड्डों के रूप में पुरानी मस्जिदों की मरम्मत और नई मस्जिदो के निर्माण हेतु अरब देशों से भी प्रचुर मात्रा मे धन भेजा जा रहा है इन विदेशी हस्तक्षेपों के कारण ही इन तीनो देशों की मुस्लिम जनता अपने अपने देश की मुख्यधारा से नहीं जुडे हैं। आश्चर्य यह है कि कुछ राष्ट्रवादी उदार तथा बुद्धिवादी लोगों को छोडकर इन देशों का मुसलमान मुस्लिम राष्ट्रों के नागरिकों से कही ज्यादा रूढिवादी और कट्टरपंथी है। इस सन्दर्भ में इन तीनों देशों की परिस्थितियों का अध्ययन बहुत आवश्यक है।

भारत :

भारत का विभाजन हिन्दू और मुसलमान के बीच घृणा फैला कर अंग्रेज ने जानबूझ कर किया था, क्योंकि वह न तो १९४७ में और न ही आज भारत को एक शक्तिशाली देश के रूप मे देखना चाहता है। उस नफरत को कायम रखने के लिए अंग्रेज तीन युद्ध करवा चुका है और चौथे युद्ध के लिए पाकिस्तान को पूरी तरह लेस किया हुआ है। अमरीका का स्वार्थ भी आ जुडा है, इसलिए वह इस काम में अंग्रेज का सबसे बडा सहायक है। अफगानिस्तान में अमरीका अपनी कठपुतली सरकार बनाना चाह रहा है। इसलिए अफगानी मुजाहिदीन को हथियार, प्रशिक्षण और धन खुलकर दे रहा है। इन्ही साधनों से पंजाब और जम्मू, कश्मीर मे अलगाववाद और आतकवाद फैलाया जा रहा है। इसी काम के लिए नवयुवकों को भडका और लुभाकर हथियार, प्रशिक्षण और धन दिया जा रहा है। साथ ही हिरोइन आदि नशीले पदार्थों की तस्करी भी पाकिस्तान की सीमाओं की ओर से भारत में की जा रही है जिनका मूल्य अरबों, खरबों रुपए बनता है। इसके अतिरिक्त बैंकों तथा नागरिको से भी प्रतिदिन लाखों, करोडों मे धन लूटा जा रहा है। अरब देशों से भी अरबों रुपया देश के सब भागों में पहुँच रहा है। इन कारणों से हजारों भटके हुए नवयुवक देश की सीमाओं पर और अब तो देश के अन्दर भी आतंक मचाए हुए हैं। साधन चाहे कहीं से आयें परन्तु सब कुछ होता पाकिस्तान के द्वारा ही है। पाकिस्तान में शरीय्यत बिल पास होने से रूढिवादी और कट्टर पंथी लोग हावी होते जा रहे हैं १९७३ का उनका सविधान भी ऐसा लगता है नाम के लिए ही रह जाएगा, होगा वही जो कटमुल्ले चाहेंगे। उसका प्रभाव भारत मे हुए बिना नहो रह सकता। इसलिए पाकिस्तान तो सभी प्रकार से भारत के लिए बहुत दिनों तक सिरदर्द रहने वाला है। जिस शासक की नाव डोलने लगती है वही भारत के खिलाफ नफरत का नारा लगाकर मझधार में से निकलने की सोचता है। इसीलिए नफरत का प्रचार बन्द नही हो पाता है। पाकिस्तान का नागरिक उस नारे का विरोध करने का साहस तो नही जुटा पाता परन्तु यदि उसको खुली आजादी हो तो वह भारत के नागरिकों के साथ प्यार की डोर से बंधना चाहेगा। मजहबी जनून भड़काने वाले लोग उसको समय-समय पर भटका जरूर लेते हैं। यह उनका और उनके पड़ौसी देशों का दुर्भाग्य है।

चीन :

चीन आजाद होने के बाद ७-८ वर्ष तो भारत का मित्र रहा, परन्तु फिर ईर्ष्या द्वेष मे फस गया और भारत का शत्रु बन बैठा। १९६२ में भारत पर आक्रमण कर दिया और उसके पश्चात् पाकिस्तान का हिमायती बनता चला गया। चीन के मुस्लिम बाहुल्य प्रदेश सिनम्यांग को पाकिस्तान से जोडने के लिए काराकोरम राज मार्ग बना डाला जो खुन्जराव दर्रे से गुजरता है। पाकिस्तान को हथियार दिए और परमाणु बम बनाने की तकनीक भी उसे दी। सभी मामलों मे भारत और रूस का विरोध किया और पाकिस्तान की हिमायत। परन्तु चीन को उसकी ये सब कार्यवाहिया उल्टी पडने लगी है। अबुल कासिम के नेतृत्व मे १३ अप्रैल १९९० को एक साथ सिनम्याग के छः स्थानों से विद्रोह का श्रीगणेश होने वाला था। योजना का रहस्य खुल जाने से वह विद्रोह ५ और ६ अप्रेल को ही फूट पड़ा। चीन को काराकोरम राज मार्ग बन्द करना पडा, क्योंकि यह पता चला कि विद्रोह के लिए हथियार सिल्क रोड से अफगान मुजाहिदीन ने ही सिनम्यांग में भेजे थे। चीन को सिनम्याग क्षेत्र में नई मस्जिदो के निर्माण और विदेशी प्रचारकों पर पाबन्दी लगानी पड़ी है। सिनम्यांग के दूरदर्शन ने २० अप्रैल १९९० को वहा हुई नृशंस हत्याओं और बरबंता पूर्ण लडाई के दृश्य दिखाए है। बी.बी.सी. के संवाददाता साईमन लाग ने बीजिंग से रिपोर्ट भेजी जो लंदन के समाचार-पत्र गार्जियन में छपी है। अब चीन कश्मीर के मामले मे पाकिस्तान की हिमायत नही कर रहा है। सिनम्याग का क्षेत्रफल बहुत बडा है वहां यूरेनियम तथा अन्य खनिज पदार्थ बड़ी मात्रा में उपलब्ध है। चीन इस प्रदेश को अपने हाथ से नही निकलने दे सकता।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सौभाग्य के साथ आपत्तियाँ

(पृष्ठ दो का शेष)

और इतने पर भी यदि उन्हें रखा गया या वह यहां रहे तो उनके लिए जनसंख्या के आधार पर उतना भूभाग पाकिस्तान बनने वाले क्षेत्र में से लिया जाना चाहिए था तथा उन्हें यहां नागरिक अधिकार नही दिए जाने चाहिएं थे। वह तो यहा विदेशी या दूसरी श्रेणी के नागरिक बनकर रहने के अधिकारी हैं किन्तु उन्हें दिए जा रहे हैं अल्पसख्यक होने के नाम पर विशेषाधिकार। यह भारत राष्ट्र और यहां के वास्तविक नागरिकों हिन्दुओं के साथ घोर अन्याय है और इसकी परिणति हिन्दू विनाश के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो सकती। (क्रमशः)

धर्म अच्छे आचरण का नाम है

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वहां के वर्णन का विश्लेषण करने से स्पष्ट सिद्ध होता है कि माता-पिता और आचार्य=पढ़ाने वाले शिक्षक आदि इनके प्रति अपना कर्तव्य अर्थात् सम्बन्धियों के आपस के सम्बन्ध एव व्यवहार ही सब से प्रमुख धर्म है। जिस से स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि आचार=व्यवहार ही धर्म का पहला रूप और अभिप्राय है। इसी भाव को सामने रखकर 'जगत सचाई सार' नामक कविता में कवि श्रीधर पाठक ने लिखा है—

पुत्र, कलत्र, मित्र, बान्धव में फैलाकर सच्चा आनन्द।
काम जगत् का करता है वह रहता है सुख से स्वच्छन्द॥

ऐसे ही व्यसनों के त्याग की बात है, यतोहि व्यसनों के त्याग को व्यवहार में लाने पर ही कोई सुखी होता है। व्यसनों का त्याग एक धार्मिक व्यक्ति की विशेष पहचान है। जो भी व्यक्ति जिस किसी प्रकार के धूम्रपान, हर प्रकार के नशे, मास, जूआ, व्यभिचार आदि को करता है, वह उतना-उतना उसके प्रभाव से उसके परिणाम का भागी होता है। जिसमे दुःख, कष्ट, क्लेश, रोग और धन का नाश आदि ही सामने आते है। जैसे कि शराब के पीने से होने वाली गाली-गलौच, मार-पीट, लड़ाई-झगड़े, दुर्घटनायें और मौत आए दिन सामने आ रही हैं। इन व्यसनों के त्याग की बात व्यवहार में आते ही व्यक्ति व परिवार सुखी होता है। इस से भी यही सिद्ध होता है कि धर्म का आचरण से सीधा सम्बन्ध है।

किसी धार्मिक व्यक्ति का महत्त्व उसके जीवन की शुद्धता से है। अतः धर्म का यम एक प्रमुख अंग है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने कहा है५—थोडा पढा हुआ सदाचारी बहुत अधिक पढ़े हुए कदाचारी से श्रेष्ठ है। तभी तो भारतीय परम्परा में कदाचारी होने से रावण निन्दित है। (क्रमशः)

जो इन तीनों का आदर करता है, वस्तुतः वही अपने धर्म का पालन करता है और जो इनका आदर नही करता, उसका अन्य सब निष्फल हो जाता है।

यावत्त्रयस्ते जीवेयुस्तावन्नान्यं समाचरेत्।
तेष्वेव नित्यं शुश्रूषां कुर्यात्प्रियहिते रतः॥ २३५॥

जब तक ये तीनों जीयें तब तक अन्य कुछ भी धर्म न करे सदा उन की सेवा, आज्ञा पालन, उनको प्रिय लगने वाली बातों में लग रहे

तेषामनुपरोधेन पारत्र्यं यद्यदाचरेत्।
तत्तन्निवेदयेत्तेभ्यो मनो वचन कर्मभि॥२३६॥

इन तीनों की सेवा के साथ मन, वचन, कर्म से परलोक साधक जो कुछ भी करे, वह उनको बता देना चाहिए।

त्रिष्वेतेष्वितिकृत्यं हि पुरुषस्य समाप्यते।
एष धर्म परः साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते॥ मनु० २, २३७॥

इन तीनों की सेवा में ही व्यक्ति का सारा धर्म-कर्म आ जाता है और यही सब मे बडा धर्म है, बाकी तो छोटे धर्म हैं।

५- सावित्रीमात्रसारोऽपिवर विप्रः सुयन्त्रितः।
नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रमी॥ २११८॥

सिगरेट एकदम छोड़ दें

(दैनिक ट्रिब्यून)

विलियम वर्ड्सवर्थ ने कहा था—"यह मेरा विश्वास है कि हर फूल हवा में श्वास लेकर एक विशेष प्रकार की आनन्दानुभूति लेता है।"

—लेकिन मुझे यह समझ नहीं आता कि धूम्रपान करने वाले कश लेते दफा कैसा महसूस करते होंगे। मुझे अक्सर हैरानी होती है कि तथाकथित विद्वान् लोग धूम्रपान सरीखी आदत में कैसे फस जाते है जबकि १७वी शताब्दी में भी इसे आंखों, नाक व गुर्दों के लिए हानिकारक बताया गया है। इससे न केवल, क्रोनिक ब्रोंकाइटस व अन्य छोटी-मोटी बीमारिया ही होती हैं बल्कि इससे दिल का अलसर, गैंगरीन, नेत्रहीनता, गुर्दों का कैंसर सरीखी घातक बीमारियां भी होती है।

जब यह बात सर्वविदित हो गई है तो धूम्रपान करने वाली इस जान लेवा लत को क्यों नही छोड़ देते। हाल ही में पी.जी.आई. चण्डीगढ़ के कुछ विशेषज्ञों द्वारा किए अनुसंधान से यह तथ्य प्रकाश में आए हैं कि धूम्रपान की हानियों के बारे मे सही ज्ञान होने के बावजूद नशेडी इसे छोडना नही चाहते।

इसे छोड़ने का एक ही तरीका है कि धीरे-धीरे छोड़ने की बजाए इसे एकदम छोड़ दीजिए।

डॉ॰ डी.के. शर्मा
प्रोफैसर व विभागाध्यक्ष इन्टरनल मैडिसन पी.जी आई. चडीगढ़

आर्य वीर दल रोहतक का वार्षिक उत्सव समारोह

आर्य वीर दल रोहतक नगर का ३७ वा वार्षिकोत्सव दिनांक १३-५-९० मे बच्चों की भाषण प्रतियोगिता से आरम्भ हुआ। जिसमें विद्यालय एव महाविद्यालय स्तर के प्रथम द्वितीय एव तृतीय स्थान प्राप्त करनेवालों को विशेष पुरस्कार दिया गया। इसके साथ प्रत्येक प्रतिभागी को दल की ओर से प्रोत्साहित किया गया। इस वर्ष का सारा कार्यक्रम वैदिक भक्ति साधन आश्रम में ही मनाया गया।

१४-५-९० से प्रातःकाल यज्ञ का कार्यक्रम स्त्री आर्यसमाज कयस्थान मौहल्ला में हुआ जो कि आदरणीय ब्र॰ अखिलेश्वर जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ रात्रि को वैदिक भक्ति साधन आश्रम में पं॰ वेदव्यास जी के मधुर गीत एव आदरणीय ब्र॰ अखिलेश्वर जी की वेदकथा का कार्यक्रम १७-५-९० तक रहा। १८-५-९० से वार्षिकोत्सव का श्रीगणेश नगर कीर्तन (जलूस) से प्रारम्भ हुआ। जोकि आर्यसमाज झज्जर रोड से प्रारम्भ होकर नगर के मुख्य बाजारो से होता हुआ वैदिक भक्ति साधन आश्रम में जाकर समाप्त हुआ। इस वार्षिक उत्सव में कई सम्मेलनों का आयोजन किया गया। आर्य वीर सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र-रक्षा, वेद सम्मेलन तथा समाज सुधार सम्मेलन इन सम्मेलनों को सम्बोधित करने के लिए उच्च कोटि के वक्ता पं॰ ओमप्रकाश जी, स्वामी संजीवनी आनन्द जी तथा ब्र॰ अखिलेश्वर जी के ओजस्वी व्याख्यान हुए। २०-५-९० को पूर्ण आहुति के पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। समाज सुधार सम्मेलन में कई नवयुवकों ने दहेज न लेने एव न देने की प्रतिज्ञा की तथा इसके साथ मद्यपान एव धूम्रपान जैसी बुराइयों को छोड़ने का संकल्प भी किया गया। श्री महावीर सिह सांगवान ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनाने पर बल दिया।

—मेघराज आर्य

शराब हटाओ

देश बचाओ

सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) में प्रयुक्त 'पौन रोटी' शब्द का अभिप्राय क्या है ?

—डा० भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज में बहुत कम लोगों को सत्यार्थप्रकाश के १८७५ में प्रकाशित प्रथम संस्करण के बारे में ज्ञान है। इसके ११वें समुल्लास (पृष्ठ ३८४) में स्वामी दयानन्द ने ब्रिटिश शासन के बारे में अपनी अपनी धारणा व्यक्त करते हुए लिखा है—

'एक तो यह बात है कि नौन और पौन रोटी में जो कर लिया जाता है वह मुझको अच्छा नही मालूम देता क्योंकि नौन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं होता——पौन रोटी से भी गरीब लोगों को बहुत क्लेश होता है, क्योंकि गरीब लोग कहीं से घास छेदन करके ले आए वा लकडी का भार, उनके ऊपर कौडियों के लगने से उनको अवश्य क्लेश होता होगा। इससे पौन रोटी का जो कर स्थापन करना सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं।'

पाठक महाराज के उक्त कथन का अभिप्राय समझ गए होंगे। स्वामी जी कहते हैं कि अंग्रेजों ने जो नमक के ऊपर कर लगाया है वह अनुचित है क्योंकि भोजन में नमक तो एक आवश्यक पदार्थ है और उसपर कर लगने से गरीबों को कष्ट होना स्वाभाविक ही है। इसी प्रसग में उन्होंने पौन रोट में कर लेना भी अनुचित माना है। क्योंकि जो गरीब लोग जगल से घास छील कर लाते हैं या सूखी लकडियां बीन कर अपनी जीविका चलाते है उन पर भी कर लगाना अनुचित है। यहां महाराज ने 'पौन रोटी' शब्द का प्रयोग किया है। क्या आप बता सकते है कि इस शब्द का क्या अर्थ है ? मैं भी सत्यार्थ-प्रकाश के इस उद्धरण पर बर्षों से विचार करता रहा किन्तु इस पौन रोटी शब्द के रहस्य को नहीं समझ पाया। अब जब मैंने इण्डियन प्रेस प्रयाग से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका का सरस्वती के जनवरी १९३८ के अंक में प्रो० महेशप्रसाद मौलवी का 'गदर और बाद की दिल्ली' शीर्षक लेख पढ़ा तो पौन रोटी (सही शब्द है, पौन रोटी) शब्द का रहस्य हुआ। वस्तुत: पौन रोटी का अर्थ महसूल या चूंगी (चूंगी द्वारा वसूल किया गया कर) प्रो० महेशप्रसाद ने अपने इस लेख में उर्दू के प्रसिद्ध कवि मिर्जा गालिब के ६ नवम्बर १८५९ को लिखे एक पत्र को उद्धत किया है। यह पत्र नवाब जुलफिकरुद्दीन हैदर को लिखा गया है। इसमें पौन रोटी शब्द का प्रयोग इस प्रकार हुआ है—

पौन रोटी (चुगी) के विषय में कौंसिल हुई। परसों सात नवम्बर से जारी हो गई। शालिग्राम खजाची, छन्नामल महेशदास तीन व्यक्तियों को यह काम ठेके पर मिला है। अनाज और उपले को छोड कर कोई और वस्तु ऐसी नहीं है जिस पर महसूल (चूंगी) न हो।'

स्वामी दयानन्द से घास और लकडी पर लगी इसी चूंगी का विरोध किया था। यह "पौन रोटी" शब्द ही सत्यार्थप्रकाश मे "पौन रोटी" के रूप में छपा है।

श्री रतनप्रकाश जी आर्य की माता जी का निधन

आर्यसमाज महम जिला रोहतक के मन्त्री श्री रतनप्रकाश जी आर्य की पूज्य माता श्रीमती सुरजी देवी का ८४ वर्ष की आयु में १८ मई १९९० को स्वर्गवास हो गया। वे शुद्ध धार्मिक विचारों की देवी थी और सदा सामाजिक कार्यों में योगदान करती थी।

उनकी स्मृति में २८ मई को शाति यज्ञ तथा शोकसभा का आयोजन किया गया। उन्हे श्रद्धाजलि दी गई। उनके सुपुत्र श्री रतनप्रकाश आर्य ने उनकी स्मृति मे सभा को १०१ रुपए दान दिया है।

—केदारसिह आर्य

म० धर्मपाल आर्य गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के मानद निदेशक नियुक्त

नई दिल्ली, ३१ मई : आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान एवं एम०डी०एच० के स्वत्वाधिकारी श्री महाशय धर्मपाल को गुरुकुल कांगडी फार्मेसी, हरिद्वार का मानद निदेशक नियुक्त किया गया है। महाशय जी का इस व्यवसाय के सफल संचालन में एक लम्बा अनुभव है। विश्वास है कि उनके निर्देशन में फार्मेसी उत्तरोत्तर उन्नति करेगी।

महाशय धर्मपाल ने २८ अप्रैल ९० को फार्मेसी का निरीक्षण करने के पश्चात् इसके निर्माण एव विक्रय विभाग के सुचारू संचालन के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। महाशय जी ने आधुनिक तक-नीक के आधार पर फार्मेसी में निर्माण व विक्रय कार्यों के लिए दो विशेषज्ञों को काम सौंप दिया है। पुन. २८ मई को फार्मेसी का महा-शय जी ने निरीक्षण किया।

महाशय जी अपने व्यापार कार्य मे समय निकालकर इस संस्था की उन्नति के लिए जो सहयोग दे रहें हैं, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। फार्मेसी से प्राप्त आय गुरुकुल शिक्षा पद्धत्ति को प्रोत्साहन देने के लिए व्यय की जाती है तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए इस का उपयोग किया जाता है।

—विमलकांत शर्मा, प्रचार सचिव

व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिनांक २५-५-९० मे ३१-५-९० तक श्री सिद्धांती भवन आर्य-समाज मन्दिर बरहाणा जिला रोहतक में व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिस में ८५ नवयुवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिनाक २९-५-९० मे ३१-५-९० तक श्री ईश्वरसिंह तूफान के भजनोपदेश हुए।

३१-५-९० को शिविर के नवयुवको का यज्ञोपवीत सम्कार किया गया तथा उन्हे वैदिक साहित्य भेंट किया गया। श्री दयानन्द आर्य तथा श्री मदनलाल शास्त्री एवं ब्र० बलवानसिह ने युवकों को आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, स्तूपनिर्माण एव लाठी संचालन आदि कलाओं का प्रशिक्षण दिया। शिविर का सचालन प्रो० राजपाल आर्य ने किया। सभा को ४०० रुपए दान दिया गया।

—मन्त्री आर्यसमाज बरहाणा

हरयाणा में अब सभी सरकारी पत्राचार हिन्दी में होंगे

चण्डीगढ ३ जून (भाषा)। हरयाणा सरकार ने तय किया है कि अब से सारे सरकारी पत्रचार अधिसूचना और जनहित के विज्ञापन हिन्दी में जारी किए जायेंगे। मुख्यमन्त्री बनारसीदास गुप्ता ने कल रात आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से जनता के नाम अपने सन्देश में कहा कि यह कदम जनहित में उठाया गया है।

श्री गुप्ता ने उप प्रधानमन्त्री देवीलाल और मुख्यमन्त्री ओम-प्रकाश चौटाला द्वारा शुरू की गयी कल्याण योजनाओं की सराहना की और कहा कि इससे लोगों का सामाजिक एवं आर्थिक उत्पादन हुआ है। श्री गुप्ता ने कहा कि वे सारी कल्याणकारी योजनाओं को चालू रखेंगे और अधूरे विकास कार्यों को तेजी से पूरा करेंगे।

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ।

इस्लामी रूढ़िवाद तथा अलगाववाद

(पृष्ठ ३ से आगे)

रूस

सिनम्यांग की सीमायें रूस के मुस्लिम गणराज्यों कजाकिस्तान आदि से सटी हुई हैं और उन गणराज्यों में भी ईरान और अफगानिस्तान के मुजाहिदीन रूढ़िवाद के साथ साथ हथियार और नशीले पदार्थ भेज रहे हैं। इसी कारण रूस के मुस्लिम बाहुल्य गणराज्यों मे भी विद्रोह की आग भडकने लगी है। रूस के ये गणराज्य अफगानिस्तान ईरान और तुर्की से लगे हुए हैं। रूस के बाल्टिक समुद्र के साथ लगे हुए तीन प्रदेश जिस प्रकार रूस से कटकर अलग राष्ट्र बनाने के प्रस्ताव कर रहे हैं, इसी प्रकार मुस्लिम प्रदेश भी रूस से अलग होने की मुहिम छेड चुके हैं। रूस को इन प्रदेशों में विद्रोह और अलगाववाद को रोकने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाना पड रहा हैं। वहां रूस और रूसियों के विरुद्ध नफरत का प्रचार जोरों पर है। रूस में इन एशियाई मुस्लिम प्रदेशों की जनसख्या रूस की कुल जनसख्या की एक चौथाई से अधिक हो चुकी है और वह बढती ही जा रही है। परिवार नियोजन के कार्यक्रम इन प्रदेशों मे नही चल पा रहे हैं। चीन का भी परिवार नियोजन का कार्यक्रम सिनम्याग में नहीं चल पा रहा है। चीन में भी 7 करोड के लगभग मुस्लिम आबादी है और वह बढती जा रही है जबकि चीन अपनी आबादी की बढोतरी रोकने के लिए केवल एक बच्चा पैदा करने की नीति अपनाए हुए है।

समस्या की भयानकता

मुस्लिम रूढ़िवाद और अलगाववाद का हमला दिन-ब-दिन भयानक रूप अख्त्यार करता जा रहा है, भारत, चीन और रूस अकेले अकेले इस हमले का मुकाबला कामयाबी के साथ नही कर पायेंगे बढते हुए रूढ़िवाद और अखिल इस्लामाबाद (Pan-Islamism) से प्रभावित धनी मुस्लिम राष्ट्रों के साथ राजनयिक और व्यापारिक सम्बन्ध बनाए रखने के लिए अपने अपने ढग से सभी विवश है और उनमें तुष्टिकरण के लिए मजबूर। इन परिस्थितियों में कोई भी राष्ट्र अकेला झगडा मोल लेकर अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में अलग थलग नही पडना चाहेगा। परन्तु इस खतरे का मुकाबला करना अपने राष्ट्र की स्थिरता ही नही अस्तित्व के लिए भी आवश्यक होता जा रहा है। इसी कारण अब यह भारत, रूस और चीन के लिए अनिवार्य हो गया है कि तीनों मिलकर इस खतरे का मुकाबला करें।

'जाटवीरों का इतिहास' की सूचना

अध्यक्ष, केन्द्रीय पुस्तकालय समिति एवं निदेशक लोक सम्पर्क विभाग हरयाणा, क्रमांक लो० स० वि० ह० (एल० ए०)-९०/१९११ चण्डीगढ दिनांक २०-४-९०, के द्वारा 'जाट वीरों का इतिहास', (लेखक कैप्टन दलीपसिंह अहलावत), पुस्तक की हरयाणा प्रान्त की नगरपालिका सार्वजनिक, कालेज, पंचायत एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय आदि की सभी लायब्रेरियो के लिए स्वीकृति दे दी है।

कृपया अपनी मांग निम्न पते पर दें—

कैप्टन दलीपसिंह अहलावत मार्फत श्री बलबीरसिंह जे०ई०
कैनाल रैस्ट हाऊस, रोहतक

शोक समाचार

प्रिंसिपल पी० डी० चौधरी (अधिष्ठाता) आर्य अनाथालय एवं निर्देशक स्थानीय डी. ए. वी शिक्षण संस्थान फिरोजपुर का देहान्त २६-५-९० दिन शनिवार को हो गया।

उनकी स्मृति मे शान्तियज्ञ १-६-९० को आर्य अनाथालय में किया गया।

नामकरण संस्कार पर दान

महाशय हरद्वारीलाल जी आर्य के पौत्र एवं श्री यज्ञदत्त आर्य के सुपुत्र चि० ब्रह्मदत्त के नामकरण संस्कार के उपलक्ष्य में २ जून, १९९० शनिवार को यज्ञभवन, आर्य नगर रोहतक में यज्ञ एवं प्रीति-भोज सम्पन्न हुआ, जिसमें कई सौ लोगों ने भाग लिया। यज्ञ के अवसर पर स्वामी सत्यानन्द जी (ज्वालापुर) आदि के प्रभावशाली उपदेश हुए। उनके द्वारा एक बालक हेमन्तप्रताप का यज्ञोपवीत संस्कार भी किया गया जिसका लोगों पर बडा अच्छा प्रभाव रहा। सभा के भजनोपदेशक श्री ईश्वरसिंह तूफान के मनोहर भजन हुए।

इस अवसर पर पांच सौ के लगभग वैदिक पुस्तकें आगन्तुक महानुभावों को भेंट की गई। निम्नलिखित प्रकार से आर्य संस्थाओं को दान दिया गया।

निम्नलिखित प्रत्येक संस्था को १०१/- रु० दान दिया गया—

आर्ष गुरुकुल खानपुर (नारनौल), गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, कन्या गुरुकुल खरल, गुरुकुल डिकाडला, गुरुकुल सिंहपुरा (सुन्दरपुर), गुरुकुल कालवा, स्वामी सत्यपति जी दर्शन योग विद्यालय (गुज०), कन्या गुरुकुल जुलाना, कन्या गुरुकुल खानपुर, गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल नरेला, वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक, महात्मा हरिदेव पतोरीदेवी धर्मार्थ ट्रस्ट, गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली, वेद स्वाध्याय आश्रम शिशोलर (म. प्र.)।

निम्न प्रत्येक संस्था को ५१/- रु० दान दिया गया—

आर्यसमाज प्रेमनगर रोहतक, आर्यसमाज माडल टाऊन रोहतक धन्वन्तरि आर्य कन्या हाई स्कूल, धर्मार्थ अस्पताल गाधी नगर, आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक, शहीद परिवार फण्ड जालन्धर, वैदिक सत्संग सभा, महर्षि दयानन्दमठ रोहतक, आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला, आर्यसमाज काठमण्डी, आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला, आर्यसमाज गोकरण रोड, आर्यसमाज शिवाजी कालोनी, डा. विद्यासागर धर्मार्थ अस्पताल रोहतक, आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक, आर्य वीर दल रोहतक, स्त्री आर्यसमाज शिवाजी कालोनी, स्त्री आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला, आर्य हाई स्कूल बाबरा मोहल्ला, हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा। —महात्मा हरिदेव वानप्रस्थ

ढाणीपाल में वेदप्रचार

दिनांक २९ मई १९९० को आर्य निवास (ढाणी नलवा) में स्वामी जगतमुनि एव महाशय झाब्बेराम जी द्वारा वेदप्रचार किया गया। प्रातःकाल यज्ञ किया गया। यज्ञ पर आर्यसमाज ढालावास के प्रधान सूबेदार हरचन्द आर्य व अन्य सदस्यों ने भी भाग लिया। उपरोक्त विद्वानों के ईश्वर भक्ति के भजन भी हुए।

ब्र० राजवीर आर्य, आर्य निवास नलवा

आर्यसमाज जेकमपुरा गुड़गांव छावनी का चुनाव

प्रधान—श्री हिम्मतराय जी, उपप्रधान—कर्नल सुदर्शन वोहरा मन्त्री—श्री पदमचन्द आर्य (नगीना वाले), उपमन्त्री—मास्टर राजपाल, कोषाध्यक्ष—जगदीश चन्द्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—मास्टर प्रह्लादराय, भण्डारी—श्री जगदीश चन्द्र मोगिया, निरीक्षक—श्री किशनचन्द्र सैनी। —मन्त्री

मा० मंगलीराम आर्य का निधन

श्री मा० मंगलीराम जी आर्य खेडी जट जिला रोहतक का दिनांक २८-५-९० को ८० वर्ष की आयु में निधन प्रातः ७ बजे हो गया। वे काफी दिनों से बीमार थे। उन्होंने गुरुकुल झज्जर तथा आर्यसमाज की बहुत ही लग्न के साथ सेवा की। परमात्मा से प्रार्थना है कि उन की आत्मा को सद्गति प्रदान करे। —सभा मन्त्री

गरीबी दूर करने का सर्वेक्षण

—(नव भारत टाइम्स)

पानीपत २४ मई (निस)। राज्य सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की रेखा के नीचे रह रहे परिवारों की जानकारी एकत्र करने का निर्णय लिया है। जिला प्रशासन ने इस कार्य का सर्वेक्षण कराने के निर्देश दिए हैं। २५ मई से जिले के सर्वेक्षण अधिकारी इस कार्य में जुट जाएंगे। समझा जा रहा है कि इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य राज्य से गरीबी हटाना है।

जिला उपायुक्त विजयकुमार ने जिले के समस्त सरपंचों व ग्राम पंचायतों से आग्रह किया है कि वह सर्वेक्षण अधिकारी की इस मामले में सहायता करें। ग्रामीण क्षेत्रों में एक भी गरीब परिवार सूची से रह न जाए। इस कारण मनादी कराई जा रही है। राज्य सरकार की इस योजना का सर्वत्र स्वागत किया गया है।

जिला उपायुक्त के अनुसार यह राष्ट्रहित का कार्य है। इससे ग्रामीण विकास में एक आधारभूत मील का पत्थर स्थापित होगा।

शराबियों का हुड़दंग

—(जन सन्देश)

गन्नौर, २५ मई (एस)। गन्नौर रोड व रेलवे रोड पर शराब के ठेके होने के कारण लोग बहुत परेशान है इन ठेकों के नजदीक ही शराब पीने का अहाता खुला हुआ है। शराबी अहातो से निकल कर लोगों मे खास तौर पर महिलाओ, लडकियों से बुरा सलूक करते है। कई बार शराबी लोग सडक पर खडे होकर गन्दी मे गन्दी गालियां निकालते हैं। गन्नौर रोड पर स्थित पालिका की कुछ दुकानों में अवैध रूप से शराब पीने/पिलाने का धन्धा चलता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पालिका की एक दुकान मे तो खुलेआम शराब पिलाई जाती है क्योंकि दुकान मालिक के ऊपर स्थानीय विधायक का हाथ है।

श्री बालानाथ योगाश्रम, आदमपुर डाढ़ी का उत्सव सम्पन्न

चरखी दादरी, यहां से १५ कि मी दूर स्थित श्री बालानाथ योगाश्रम आदमपुर डाढी की प्रबन्धक कमेटी द्वारा आयोजित सालाना समारोह के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से वैदिक प्रचारक ईश्वरसिह तूफान के भजन ६ मई से ९ मई हुए। यह जानकारी देते हुए आश्रम कमेटी के कोषाध्यक्ष करतारसिह आर्य ने बताया कि इस अवसर पर सुबह ५ से ८ बजे तक हवन चला। हवन को सम्पन्न उत्तर भारत के महान् आर्यसमाजी सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने किया। बाद में स्वामी जी के प्रवचन हुए।

इस अवसर पर विशाल कुश्ती का दगल लगाया गया जिससे देश भर के बहुत से पहलवानों ने हिस्सा लिया। विजेता पहलवानो को आकर्षक इनाम दिए गए। दंगल के बाद आश्रम के प्रधान आचार्य देवीसिह ने हठ योगिक क्रियाए दिखाकर दर्शकों को हैरान कर दिया, समारोह के मुख्य अतिथि विधायक हीरानन्द आर्य ने विजेताओं को पुरस्कार दिए तथा उपस्थित जन समूह को सम्बोधित किया। उन्होंने योगाश्रम के कार्यों की सराहना की। श्री आर्य ने अपने हाथों से स्वामी ओमानन्द सरस्वती को चादर भेट करके सम्मानित किया।

—करतारसिह सचिव

श्री बालानाथ योग आश्रम आदमपुर डाढ़ी (भिवानी)

✱ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

भारत माँ के ऊपर वारें

—सहदेव शास्त्री, आदर्श नगर, जींद

कितना कठिन हुआ जीवन का सफर बसर लाचार हो गया।
तोड दई सब मर्यादाए, पशुओं सा व्यवहार हो गया॥
नहीं सुरक्षित मानवता और दानवता दनदना रही है,
सत्य, त्याग, सन्तोष अहिंसा से जीना दुश्वार हो गया।
वीर जवानों, उठो नींद से, ये बिगड़े हालात संवारें,
सब जन अपना तन मन और धन भारत मां के ऊपर वारें।

मानवता अब चौराहों पर सरेआम नीलाम हो गई।
चोरी, जारी, ठगी, डकैती बात यहा पर आम हो गई।
सत्य से जिनका न कोई नाता, झूठ सदा जिनके मन भाता,
दानवता के पथगामी जो उनके हाथ लगाम हो गई।
कुपित–दलन दल के कामों से, कितने व्यथित वेदना कितनी!
हाय बचाओ! हाय बचाओ!! दीन दु खी दिन रात पुकारें।
सब जन अपना तन मन और धन भारत मा के ऊपर वारें।

निर्दोषों का खून बह रहा अपराधी बढते जाते है।
अब मानव के चोले पहने, दानव दल चढते आते है।
धर्म, त्याग, सन्तोष पुरानी - बातें है ज्यों एक कहानी,
मानवता के दुश्मन अपनी मनमानी करते जाते है।
हर जा धोखा, सब कुछ शंकित, सभी दिशाएं है प्रकम्पित,
आओ अपने श्रम से लाए, वीराने मे पुन: बहारें।
सब जन अपना तन मन और धन भारत मां के ऊपर वारें॥

आर्यसमाज नारायणगढ़ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नारायणगढ (अम्बाला) का वार्षिकोत्सव १७ से १९ मई तक बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री महेन्द्रसिंह शास्त्री, प० चिरंजीलाल जी की भजन मण्डली तथा श्री ज्योति स्वरूप जी भजनोपदेशक ने सुन्दर कार्यक्रम पेश किया। १७-५-९० का नगर कीर्तन बडा प्रभावशाली था। २०-५-९० को सर्व सामान्य के लिए ऋषि लगर की व्यवस्था की गई।

—राम निरंजन मन्त्री,
आर्यसमाज नारायणगढ

शराबी पति को आर्य पत्नी का उपदेश

लेखक—आर्यमुनि वानप्रस्थी, भूतपूर्व भजनोपदेशक
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

(तर्ज—राजस्थानी शैली)

मानो मानो जी थे मारा भरतार परी झोड़ो दारूड़ी। टेर।
ओ सडियोडो पानी थाने पिता लाज आवे।
धन होवे बरबाद और थारी इज्जत बिगड़ी जावे।
थाने लूटे है दारू का ठेकेदार।
बडा बड़ा महाराजा मिटग्या इण दारू के माय।
पूंजी हर कंगाल बनाया सारी शान गमाय।
मिटग्या मोटा मोटा ठाकुर जागीरदार।

महनतरी कमाई सारी ठेका पर दे आओ।
घर में नाज नहीं थे दारूडी पी आओ।
इणरो करल्या थारा मन सोच विचार।
भूखा बिलख रय्या ठाबरया घर में नहीं नाज।
कपड़ा मारा ली-लार है, ढकूं किणतरी लाज।
बिखरया घाघरिया रा न्यारा-न्यारा तार।

स्याणा ने पागल कर देवे ओ दारू दुःखदाय।
गाल्या बगता घर में आवो मैं उभगू मज माय।
म्हाने मारण थे दौडो बार-बार।
अन्धा धुन्दी नशो करो थे सड़का पर पड़ जाओ।
लोग तमाशा देखे थारी हांसी क्यू करवाओ।
कुत्ता मूतरया मूंडा में मारे धार।

नशो उतरिया बाद डोलकी ढोली नशा हो जावे।
खांशी चाल कालजो बोल बुढ़ापा झट आवे।
क्यू थारा पत्र में रया कुलाडी मार।
'अभय' कहे थे दारू का सब बोतल प्यासा छोडो।
दिज्यो दारुउया की खोटी संग विसार।
मानो मानो जी थे मारा भरतार परी छोडो दारूडी।

संकलनकर्त्ता—श्रीकृष्ण मूंदड़ा वैदिक सत्संग आश्रम, पुष्कर



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि   रजि न P/RTK ४६   सृष्टि सवत् १ ६६ ०८ ५ ०६०



ओ३म् ... विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए   ज्येष्ठ २० २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक २७ १४ जून १९९० वार्षिक शुल्क ४५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश मे ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

'धर्म—अच्छे आचरण का नाम है'

[गतांक से आगे]

प्रा० भद्रसैन, होशियारपुर

और कदाचारी के पूजा-पाठ, जप-तप निरर्थक होते हैं१ ।

शास्त्रों में धर्म शब्द अनेक अर्थों में मिलता है, जैसे कि कर्मकाड (=पूजा-पाठ, जप-तप, मन्त्र तन्त्र), विश्वास, सिद्धात, आचार, स्वभाव आदि। इनमे से आचरण ही धर्म का प्रमुख अर्थ है, अन्य कर्मकाड आदि अच्छे आचरण की प्रेरणा देने के लिए ही हैं। जसे कि सड़क के बोर्ड किसी की चाल को सुरक्षित बनाने के लिए होते हैं। मनुस्मृति आदि शास्त्रो मे 'आचार परमो धर्म' १, १०८

आचार को सबसे श्रेष्ठ धर्म कहा है वहां अनेकत्र धर्म शब्द का इस अर्थ में प्रयोग भी किया है। जैसे कि मनु ने सत्य, प्रिय वाणी को सब से पुराना धर्म कहा है।२ इससे भी अर्थात् वाणी के सही प्रयोग से भी यही सिद्ध होता है, कि धर्म अच्छे आचरण का नाम है तथा इस प्रकार के धर्म के पालन से ही सभी सुखी होते हैं। तभी तो कहा जाता है—तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजे चहु ओर। धर्म का आचार ही ऐसा रूप है, जिसके सम्बन्ध मे सभी धर्म एकमत हैं। धर्म के धृति क्षमा, दम आदि दश लक्षण३ आचरण से ही सम्बन्ध रखते हैं। इसी लिए इन को सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वजनीन आचार कहा जाता है।४

---

१ वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च ।
न विप्र दुष्टभावस्य सिद्धि गच्छन्ति कर्हिचित् ॥२, ९७

आचारहीन न पुनन्ति वेदा =वेदादि धर्मग्रन्थ और उनसे होने वाला कर्मकाण्ड भ्रष्ट को पवित्र नही करता है।

२ सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रिय च नानृत ब्रूयादेष धर्म सनातन ॥४, १३८

प्रत्येक सदा सत्य और प्रिय कल्याणकारक बोले [काणे को काणा और मूर्ख को मूर्ख आदि] अप्रिय सत्य भी न बोले और जिस मिथ्याभाषण से दूसरा प्रसन्न हो, उसको भी न बोले। वस्तुत बोल-चाल के सम्बन्ध मे यह एक परखा हुआ सनातन धर्म है।

३ धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम् ॥६,९१

इन दशो की विस्तृत व्याख्या के लिए— 'सरल सुखी जीवन' देखिए।

४ आचारश्चैव शाश्वत मनु० १, १०७,
चतुर्भिरपि चैवैतैर्नित्यम् मनु० ६, ९१

योग दर्शन २,३०-३२ मे इनको ही यम-नियम के नाम से पुकारा है तथा इनको सार्वभौम महाव्रत कहा है।

इसी दृष्टि से सत्यार्थप्रकाश और गो करुणानिधि की निम्न पंक्तियां विशेष पठनीय हैं— 'रक्षक—हम तुम से पूछते हैं कि धर्म और अधर्म व्यवहार ही से होते हैं या अन्यत्र ? तुम कभी सिद्ध न कर सकोगे कि व्यवहार से भिन्न धर्माधर्म होते हैं। जिस-जिस व्यवहार से दूसरो की हानि हो वह-वह अधर्म और जिस-जिस व्यवहार से उपकार हो वह-वह धर्म कहाता है। गो करुणानिधि पृ० ११-१२

प्रश्न—आर्यावर्त्त देशवासियो का आर्यावर्त्त देश से भिन्न-भिन्न देशो मे जाने से आचार नष्ट हो जाता है वा नही ? उत्तर—यह बात मिथ्या है, क्योंकि जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी, सत्यभाषण आदि आचरण करना है, वह जहां कही करेगा आचार और धर्मभ्रष्ट नही होगा और जो आर्यावर्त्त मे रह कर भी दुष्टाचार करेगा, वही अधर्म और आचार भ्रष्ट कहावेगा। १०, २२५

'जो मनुष्य देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर मे जाने-आने मे शंका नही करते, वे देश-देशान्तर के अनेकविध मनुष्यो के समागम रीति-भान्ति देखने अपना राज्य और व्यवहार बढाने से निर्भय शूरवीर होने लगते और अच्छे व्यवहार का ग्रहण कर बुरी बातो के छोडने मे तत्पर होके बडे ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।' १०, २२६

'सज्जन लोगो को राग द्वेष, अन्याय, मिथ्या भाषणादि दोषो को छोड, निर्वैर, प्रीति, परोपकार, सज्जनता का धारण करना उत्तम आचार है और यह भी समझ ले कि 'धर्म हमारे आत्मा और कर्त्तव्य के साथ है" जब हम अच्छे कर्म करते हैं, तो देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नही लग सकता। दोष तो पाप के करने मे है।' १० २२६

महर्षि की इन्ही भावनाओ को ध्यान मे रखकर आर्यसमाज ने अपने सिद्धातो और प्रचार मे जप-तप, तीर्थ-स्नान-यात्रा आदि कर्मकाण्ड की अपेक्षा सत्य व्यवहार और जन-सेवा, समाज सुधार पर अधिक बल दिया है। गीता में अपने कर्तव्य कर्मों के द्वारा सिद्धि पाने की बात से भी 'धर्म=अच्छे आचरण का नाम है' की ही पुष्टि होती है। इसी दृष्टि से ही श्रीधर पाठक ने लिखा है—जो तन मन से करता है श्रम, उचित रीति से चलता है सारी वसुधा का क्रम-क्रम से सर्वस उसको मिलता है। हाथ पैर और आंख कान बुद्धि से काम जो लेता है जीवन का सुख पाता है वह औरो को सुख देता है।

इन उद्धरणो और इस प्रकरण के विवेचन से यह सिद्ध होता है, कि धर्म आचरण का नाम है न कि केवल कर्मकाण्ड का। कर्मकाण्ड तो व्यक्ति को प्रेरणा देने के लिए ही है पर आज कर्मकाड पर अधिक बल देने से उसका फैलाव तो खूब हो रहा है पर धर्म का फल सुख सामने नही आ रहा है, कर्मकाण्ड एक प्रकार से व्यापार का रूप धारण कर रहा है। अत धर्म का फल सुख प्राप्त करने के लिए हमें अच्छे आचरण=सत्य स्नेह, सयम, ईमानदारी की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसी लिए तो कहा जाता है—यही है इबादत यही है दीनो ईमा। इन्सान के काम आए इन्सा ॥

—: सौभाग्योदय के साथ आपत्तियां :—

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

[गतांक से आगे]

धर्मनिरपेक्षता :

भारत के राजनीतिक नेताओं का कहना है कि हम धर्मनिरपेक्ष हैं, भारत धर्मनिरपेक्ष है, यह नितान्त मिथ्या कथन है। न तो भारत के नेता ही धर्मनिरपेक्ष है और न इन लोगों की परिभाषानुसार भारत ही धर्मनिरपेक्ष है। भारत तो वर्तमान स्थिति में नितान्त "मुस्लिम राष्ट्र" है या कम से कम वह भूभाग तो अवश्यमेव है, जिसे भारत के यह तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता अपनी धर्मनिरपेक्षता की चादर में लिपट कर अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षी की पूर्ति के लिए यहां रह रहे मुसलमानों के साथ मिलकर दारुल इस्लाम में परिवर्तित कर देने के लिए प्रयत्नशील हैं। कारण स्पष्ट कि हिन्दुओं को मूर्ख बनाने के लिए यह लोग संसार में अपनी उदारता का ढोल पीटने के लिए स्वयं को और भारत को धर्मनिरपेक्ष भले ही कहते हैं किन्तु पक्ष प्रत्येक मूल्य पर मुसलमानों का ही लेते है।

गांधी जी तो भारत में बसे मुसलमानों को ही नहीं अपितु पाकिस्तान को प्रसन्न करने के लिए भी भारत की अस्मिता को न केवल स्वयं ठुकराते रहे अपितु अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक पाकिस्तान के चरणों में डालते रहे और इसका प्रमाण है अरबों रु० भारत का बंटवारे के समय का पाकिस्तान पर शेष रहते भी आमरण अनशन करके पचपन करोड राशि का ड्राफ्ट भारत से पाकिस्तान को और दिला दिया। इन्हीं महात्मा जी को अदूरदर्शिता के परिणाम स्वरूप पाकिस्तान में लाखों हिन्दुओं की हत्या हुई। पता नहीं कितने शिशुओं और महिलाओं को बलात् मुसलमान बना लिया गया और कितनी महिलाओं के सतीत्व भग हुए और अकेले पाकिस्तान के रावलपिण्डी नगर की सडकों पर ही तेरह सहस्र हिन्दु महिलाओं को निर्वस्त्र करके उनका प्रदर्शन निकाला गया, परन्तु धर्मनिरपेक्षता के इन पुजारियों को लेशमात्र भी लज्जा न आई। न महात्मा जी आमरण अनशन करने रावलपिण्डी गए और न एक दिन की भी भूख हडताल करके उन्होंने अपनी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर पश्चाताप के आंसू बहाए।

फिर उसके बाद——

पहले तो गांधी जी के मुख्य और परम शिष्य श्री जवाहर लाल नेहरू कश्मीर के भारत में विलय को तैयार नही थे तथा विलय की कश्मीर के तात्कालिक महाराजा हरिसिंह द्वारा प्रेषित दस्तावेज को लेकर आए कश्मीर राज्य के तात्कालिक प्रधानमन्त्री (दीवान) श्री मेहरचन्द महाजन को अपमानित कर अपने निवास से बाहर निकाल दिया था जब श्री महाजन यह कहकर चल दिए कि कश्मीर का विलय भारत में नहीं तो पाकिस्तान में होगा, अब मेरा हैलीकाप्टर दिल्ली से श्रीनगर नही, करांची (पाकिस्तान की तात्कालिक राजधानी) जाएगा। मैं श्रीनगर पर बम्बार्टमेंट होकर उसे बर्बाद नहीं होने दूंगा। तब शेख अब्दुल्ला के कहने पर——जो उस समय वहां उपस्थित था——नेहरू जी विलय को तैयार हुए। अब्दुल्ला ने ही दौड़कर महाजन को रोका था।

और फिर उसके बाद——

काश्मीर का विलय भारत में किया तो किन्तु धारा ३७० जोड़ कर कश्मीर की विशेष स्थिति बनाकर शेख अब्दुल्ला को मुख्यमन्त्री नहीं, प्रधानमन्त्री बनाकर उसका भारत से पृथक् ध्वज, पृथक् विधान और पृथक् प्रधान (सदर-ए-रियासत) बनाकर तथा महाराजा हरिसिंह को उनकी राष्ट्रभक्ति भारत में कश्मीर के विलय की निष्ठा के दण्ड स्वरूप उनके कश्मीर जाने पर प्रतिबन्ध लगाकर। भारत की सेनाओं ने पाकिस्तानी सेनाओं को जब मारकर भगा दिया और अन्तिम मोर्चा गिलगित का क्षेत्र शेष था, तब कश्मीर का प्रश्न संयुक्त राष्ट्र परिषद् में ले जाकर तुरन्त युद्धबन्दी के आदेश कर कश्मीर के तिहाई भाग को पाकिस्तान के हाथों में सौंप दिया, कश्मीर का विलय भारत में हो चुका था, फिर उसे संयुक्त राष्ट्र परिषद् में ले जाने की क्या आवश्यकता थी? यदि युद्धबन्दी की घोषणा शीघ्रता में न की गई होती तो कश्मीर के जिस भाग पर अब तक पाकिस्तान का अधिकार है, वह भी तभी पाकिस्तानियों से ठीक करा लिया जाता।

इस समय कश्मीर में जो कुछ हो रहा है, वह न होता यदि कश्मीर की पृथक् स्थिति बनाए रखने के लिए धारा ३७० संविधान में न जोड़ दी गई होती। उसी धारा ३७० के परिणामस्वरूप बने नागालैंड और मिजोरम पंजाब समस्या भी इसी धारा की देन है। भारत में कभी झारखण्ड की मांग उठती है तो कहीं गोरखालैंड की। कहीं बोडो आंदोलन खड़ा हो रहा है तो कहीं उत्तराखण्ड——यह सब इसी धारा के अस्तित्व का परिणाम है, सच तो यह है कि यह धारा पृथक्करण की जननी है किन्तु भारत के एक के बाद एक आने वाले सभी राजनीतिक नेता इसे अवश्य बनाए रखना चाहते हैं। पता नही इससे राष्ट्र की किस समस्या का हल करना चाहते है? इससे तो भारतीय शासनारूढ़ नेताओं की मूर्खता ही प्रमाणित होती है। यह नेता अपने पास तो इतनी बुद्धि रखते नहीं किन्तु दुराग्रही स्वभाव के कारण अन्य किसी की मानने को तैयार भी नही होते, तथ्य यह है कि यह लोग राजनीतिक तथा प्रशासनिक रूप से तो नितान्त अयोग्य हैं, साथ ही अपने अहंकारी स्वभाव के लिए दुराग्रह पूर्वक इस धारा को संविधान से नही हटा रहे। भारत के इन नेताओं को भारत की लेशमात्र भी चिन्ता नही। यह लोग घड़ियाली आंसू बहाते हैं और अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की नमाज के दो सजूद लोकेषणा तथा भोग-विलास पूरे करने में लगे है।

पाठकगण ध्यान दें कि भारत में कश्मीर का निष्ठापूर्वक विलय करने वाले महाराजा हरिसिंह को तो कश्मीर से बाहर बम्बई में ही अपना जीवन बिताने और समाप्त करने को बाध्य कर दिया किन्तु हैदराबाद के तात्कालिक निरंकुश शासक आसफजाह को जिसने खुलकर देशद्रोह का अवलम्बन लिया और शस्त्र-सज्जा के साथ अपने रजाकार सैनिकों को भारतीय सेना से युद्ध के लिए मैदान में उतारा, जिसने तीन दिन जम कर भारतीय सैन्य से लड़ाई लड़ी, उसी को हैदराबाद का राजप्रमुख बनाया। जिसे आजीवन जेल के सीखचों में बन्द रखा जाना चाहिए था उसे राजप्रमुख के पद पर शोभायमान कर पुरस्कृत किया और जिस महाराजा हरिसिंह को भारत का सम्मानित राष्ट्रपति पद देना चाहिए था, उसे उसकी जन्मभूमि कश्मीर के दर्शनों तक के लिए तरसते हुए तड़प-तड़पकर बम्बई में प्राण छोडने को बाध्य कर दिया।

चाहे जवाहरलाल नेहरू हो या उनकी पुत्री इन्दिरा गांधी अथवा अन्य कोई——हैं सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे। न्याय नैतिकता को दूर फेंक कर और धर्मनिरपेक्षता की शपथ ले-लेकर अपनी मुस्लिम तुष्टीकरण को घोर साम्प्रदायिक तथा राष्ट्रघातिनी पगडण्डी पर ही यह सब चलते हैं। मुस्लिम लीग से बार-बार समझौते करना और प्रत्येक पग पर राष्ट्रद्रोही मुसलमानों को महत्व प्रदान कर पूरे मुसलमान समुदाय को राष्ट्रद्रोह के लिए प्रोत्साहित करना इन नेताओं का कर्त्तव्य बना हुआ है। नेहरू जी के दौहित्र और इन्दिरा जी के पुत्र श्री राजीव जी प्रधानमन्त्री बने तो विदेशों में जाकर जिस दिन भारत के मुसलमान बगावत पर उतारू होकर सड़कों पर निकल आयेंगे, भारत की सेनायें उनका मुकाबला नहीं कर सकतीं। शहाबुद्दीन का विदेशों में दिया गया यह बयान (शेष पृष्ठ ८ पर)

हिन्दी के लिए ऐसा भी करें

१· केन्द्रीय परीक्षाओं में हिन्दी :

जैसा कि आपने समाचार-पत्रों में पढ़ा होगा कि संसदीय राजभाषा समिति ने अपना तीसरा प्रतिवेदन सरकार को दे दिया है जिसे दिसम्बर, १६८६ में ससद में प्रस्तुत कर दिया गया था। इसमें केन्द्रीय सरकार की सभी भर्ती परीक्षाओं में लिखित प्रश्न-पत्रों में और साक्षात्कार में हिन्दी के वैकल्पिक प्रयोग की सुविधा की सशक्त शब्दों में सिफारिश की गई है। साक्षात्कार में भी समिति ने हिन्दी के प्रयोग की सुविधा दिए जाने की संस्तुति की है। समिति ने यह भी कहा है कि जहां-जहां अंग्रेजी भाषा का एक पृथक् से प्रश्न-पत्र अनिवार्य है उसके विकल्प में हिन्दी भाषा के प्रश्न पत्र का विकल्प भी दिया जाए जैसा कि १६६८ में राजपत्रित संसदीय संकल्प के अनुसार आवश्यक भी है। अब सभी हिन्दी प्रेमियों का कर्तव्य है कि समिति की सिफारिशों का सहारा लेकर जिन-जिन भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी के विकल्प की सुविधा नहीं दी गई है उसके लिए निरन्तर प्रयास करते रहें और इसकी मांग हिन्दी सलाहकार समितियों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों, राजभाषा कार्यान्वयन समितियों और राजभाषा सम्मेलनों आदि सभी मंचों से करते रहें। इस कार्य में कर्मचारियों के संघों का भी पूर्ण सहयोग लिया जाए क्योंकि अनेक कार्यालयों ने समिति को यह कहा कि कर्मचारियों की ओर से माग न होने के कारण हिन्दी विकल्प की सुविधा नही दी गई है। अत. इस विषय में सम्बन्धित मन्त्रियों और सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली को पत्र लिखे जाने और उनकी प्रतिया केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली-२३ को भेजी जानी जरूरी हैं।

२. राज्य सरकारों की भर्ती परीक्षाओं मे अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता और उसका विकल्प हटाए जाने की आवश्यकता

देखने में आया है कि उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों की अनेक भर्ती परीक्षाओं में अभी भी अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय है और परीक्षाओं के अन्य विषयों के उत्तर अंग्रेजी में भी दिए जाने का विकल्प है। अब भारत सरकार के कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड द्वारा कृषि अनुसंधान वैज्ञानिकों की नियुक्ति हेतु जो अखिल भारतीय प्रतियोगितात्मक परीक्षा ली जाती है और जिसमें बैठने की योग्यता कम से कम स्नातकोत्तर है, उसमें भी अंग्रेजी अनिवार्य विषय नही है और अन्य व्यावसायिक प्रश्न पत्रों के उत्तर हिन्दी में देने का विकल्प है। फिर कोई कारण नहीं कि राज्य सरकारों की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय रहे। राज्य सरकारों की भर्ती परीक्षाओ में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता और अन्य प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में देने के विकल्प की सुविधा हटवाए जाने के लिए अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है। जब-जब भी आप समाचार-पत्रों में राज्य सरकारों के ऐसे विज्ञापनों में किसी भर्ती परीक्षा में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता देखें अथवा अन्य प्रश्न पत्रों के उत्तर देने में अंग्रेजी के विकल्प को देखें तो उसे हटवाए जाने के लिए सम्बन्धित राज्य के मुख्य मन्त्री और मुख्य सचिव को पत्र भिजवा कर उसकी प्रति केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली-२३ को भिजवा दें।

३. केन्द्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण में हिन्दी का प्रयोग :

सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के विवादों को निपटाने के लिए एक प्रशासनिक न्यायाधिकरण स्थापित किया गया है जिसके क्षेत्रीय कार्यालय हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी स्थित हैं। उनमे अभी तक हिन्दी के प्रयोग की सुविधा नहीं दी गई है, जिसके कारण समूह 'ख' 'ग' और 'घ' के कर्मचारियों को विशेष कठिनाई होती है। अत: केन्द्रीय गृहमन्त्री को कर्मचारियों के संघों के माध्यम से न्यायाधिकरणों में हिन्दी के प्रयोग की सुविधा के लिए मांग भिजवाई जाए और इस विषय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियो, राजभाषा कार्यान्वयन समितियों और राजभाषा सम्मेलनों में भी उठाया जाए।

४. हिन्दी के आशुलिपिकों, टाइपिस्टों और टाइपराइटरों की व्यवस्था के नवीनतम आदेश :

भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने अपने ६ फरवरी १६६० के कार्यालय ज्ञापन संख्या १४०१२/१३/८६ रा० भा० (ग) के द्वारा आदेश जारी किए है कि भारत सरकार के सभी संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, केन्द्रीय सरकार के निगमों, कम्पनियों और राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के कार्यालय में कुल आशुलिपिकों के पदों को देखते हुए 'क' क्षेत्रों (अर्थात हिन्दी भाषी क्षेत्र तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह) में ६०%, 'ख' क्षेत्रों (गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब और चण्डीगढ) में ३०% तथा 'ग' क्षेत्रों (देश के शेष भागों) में १२% हिन्दी आशुलिपिको का अनुपात होना आवश्यक है।

राजभाषा विभाग के ६ फरवरी १६६० के कार्यालय ज्ञापन संख्या १४०१२/१२/८६—रा० भा० (ग) के अनुसार इसी अनुपात में हिन्दी टाइपिस्टों की भी नियुक्ति उपरोक्त क्षेत्रों में होनी जरूरी है।

आदेशों के अनुसार इस अनुपात से भी अधिक हिन्दी आशुलिपिक/टाइपिस्ट सीधी भर्ती द्वारा अवश्य रखे जा सकते हैं, किन्तु कम नहीं।

ऐसी ही व्यवस्था राजभाषा विभाग के ६ फरवरी, १६६० के कार्यालय ज्ञापन सख्या १/१४०१३/६/८६-रा. भा (क-१) द्वारा देवनागरी टाइपराइटरों की खरीद के बारे मे हैं।

(२) अनुरोध है कि इन आदेशों की जानकारी सभी सम्बन्धित अधिकारियो और कर्मचारियों को करा दी जाए ताकि इनका पालन सुनिश्चित किया जा सके और हिन्दी में काम-काज बढ़ाया जा सके।

—जगन्नाथ, सयोजक राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् एक्स. वाई.-६८,
सरोजिनी नगर नई दिल्ली-२३

राजस्थान आर्यसमाज स्थापना शताब्दी सम्मेलन में पारित शिक्षा सम्बन्धी संकल्प

वर्ष १६६० युनेस्को के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष घोषित किया गया है। ११५ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने भारतवर्ष के पुनर्जागरण के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज का आठवां सिद्धान्त विद्या का प्रचार और अविद्या का नाश करने का सकल्प करता है। नवें सिद्धान्त के अनुसार किसी को भी अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नही होना चाहिए किन्तु प्रत्येक को सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इन्ही आदेशों को लक्ष्य में रख कर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आर्यसमाज की स्थापना की शताब्दी के अवसर पर निम्न दस सूत्रीय शिक्षा का कार्यक्रम आगामी १० वर्ष के लिए निश्चित करती है।

१. महिला शिक्षा का प्रसार, २. प्रौढ शिक्षा को जनआन्दोलन का रूप देना, ३ धार्मिक शिक्षा तथा मूल्य परक शिक्षा का प्रचार, ४. युवा वर्ग को व्यवसाय परक तथा धनुर्वेद की शिक्षा, ५. मैत्री प्रसार तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का प्रसार. ६ सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन, ७. वैदिक ऋचाओं का हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद तथा मूल्य परक लोकप्रिय साहित्य का सृजन, ८ पर्यावरण शिक्षा, ६. महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों की शिक्षा स्तर के लिए हिन्दी में ग्रन्थ निर्माण, १०. कृण्वन्तो विश्मार्यम् की भूमिका में आर्यत्व का विकास।

प्रस्तुतकर्ता—१ प्रो. सुरेशचन्द त्यागी. प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय गुरुकुल कांगडी वि वि. हरिद्वार २. प्रो. नेतिराम शर्मा ३. श्री सत्यव्रत सामवेदी ४ श्री छोटूसिंह ५ श्री बलभद्र भारती (हुजा), पूर्व कुलपति, गुरुकुल कागडी वि वि., हरिद्वार ६ श्री डा सुभाष वेदालकार ७. श्री ज्ञानेन्द्र आर्य ८ श्री ऋषिपाल त्यागी वेदालकार' ६. डा. श्री जमवीर सिंह मलिक।

शराब का ठेका बन्द कराने के लिए आंदोलन होगा

[दैनिक जन सन्देश]

मण्डी अटेली, १० जून (एस)। गांव चन्दपुरा में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए गणियार बजाड़, चन्दपुरा व सुजापुर गांवों के लोग संघर्ष का रास्ता अपनाए हुए हैं।

१९८८ में चारों गांवों के नागरिकों ने सम्बन्धित अधिकारियों को हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन दिया था। गणियार ग्राम पंचायत एवं चन्दपुरा पंचायत प्रस्ताव नं० ८ अधिकारियों को दिया गया। प्रशासन द्वारा आश्वासन देने के बावजूद भी सन् १९९०–९१ के लिए नीलामी लगा दी।

प्रशासन के इस मनमाने रवैये के खिलाफ ५ मार्च ९० को ग्रामीणों का एक विशाल विक्षोभ प्रदर्शन नारनोल में आयोजित हुआ। जिला उपायुक्त महोदय एव उप-आबकारी-कराधान आयुक्त नारनोल को ज्ञापन देकर ठेका तुरन्त बन्द करवाने की अपनी मांग को दोहराया गया। आल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन एवं डेमोक्रेटिक यूथ आर्गेनाइजेशन के तत्वावधान में आयोजित इस विशाल प्रदर्शन को उपायुक्त महोदय ने ठेका बन्द करने का आश्वासन दिया।

प्रशासन की मांग पर पचायत प्रस्ताव न० ५१ सम्बन्धित अधिकारियों को दिया गया लेकिन ठेका बन्द करने का आश्वासन भी महज एक मजाक बन कर रह गया।

आखिर १५ दिन गुजरने के बाद ग्रामीणों का एक प्रतिनिधि मण्डल कराधान, आबकारी, उपायुक्त से मिला। इस बार प्रशासन के तेवर कुछ और ही थे। मानो प्रशासन ने लोगों के आदोलन से क्षणिक राहत पाकर, होश सभाल लिए हों।

इस बार ग्रामीणों मे जो लावा उभर रहा है, शायद समय आने पर विस्फोट सा फट पडे। बच्चे से लेकर बूढों मे एक ही बात चर्चा का विषय है कि हमे अब प्रशासन के आश्वासनों पर रतिभर भी विश्वास नही लोगों का कहना है कि गाव हमारे है, हम किसी भी कीमत पर पवित्र सामाजिक मान्यताओं को टूटने नही देगे। इस बार चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े, ठेके को बन्द करके ही रहेगे।

पिछले दिनो उपरोक्त ४ गांवो की एक बैठक हुई जिसमें जायज मांगों को मनवाने एव शराब के ठेके को बन्द करवाने पर विचार किया गया।

गाय ले जाते ८ कसाई गिरफ्तार

पानीपत, ७ जून (निस)। जिला पुलिस अधीक्षक अनन्तकुमार ढुल ने बताया कि पानीपत पुलिस ने हरियाणा से उत्तर प्रदेश मे अवैध रूप से हत्या के लिए ले जा रही ५ गाए, ३ बैल, ८२ बछड़े कसाइयों के चगुल से पकड़े हैं जो वह एक नाले के रास्ते उत्तर प्रदेश ले जा रहे थे। पुलिस ने गो-हत्या निरोधक अधिनियम के तहत ८ कसाइयों को गिरफ्तार कर लिया है।

१०+२ का प्रवेश आरम्भ

महर्षि दयानन्द विद्यालय जींद रोड रोहतक का
मैट्रिक का शानदार परिणाम
४=मैरिट, २०= फस्ट डिवीजन, १० सैकिण्ड डिवीजन।
कुल प्रतिशत परिणाम=९८%

—बलराज शास्त्री काशी विद्यापीठ

समस्त संसार में चार ही वर्ण

कहा कृष्ण ने गीता में, चार वर्ण बनाए प्रभु ने।
गुण कर्मों से किया विभाग, चारों वर्णों को सम जान।१।
एक पिता के चार हैं पुत्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य व शूद्र।
हम में जो है ज्ञानी श्रेष्ठ, वही पूज्य ब्राह्मण है नेक।२।
दूसरों को दे जो पूर्ण सुरक्षा, क्षत्रिय वीर वही है सच्चा।
सदा धर्म की करे कमाई, वैश्य वही सच्चा है भाई।३।
विद्या नहीं पढ़ पाया जो, क्षत्रिय नहीं बन पाया जो।
वैश्य बुद्धि ना जिसने पाई, उसका सेवा धर्म है भाई।४।
ऊंच नीच का भेद मिटाओ, चारों वर्णों को सम जानो।
एक हाथ की चार अंगुलियां, वर्ण चार अनुरूप टहनियां।५।

मूर्ति पूजा क्यों करते हो ?

जो प्रभु है सब जगव्यापी, उसकी मूर्ति नहीं बन सकती।
प्रभु है अनन्त विश्वेश्वर, मूर्ति शांत सदा है रहती।१।
चेतन प्रभु को छोड़ कर जड़ पूजा क्यों करते हो।
जग को भोजन देता है, उसको क्यों भोग लगाते हो।२।
जग में व्यापक पर नहीं दीखे, जैसे तिल में तेल रहे।
मूर्ति में प्रभु है पर तुम नहीं, हृदय में तुम हो प्रभु भी है।३।
आंख बन्द कर अन्दर झाको, निश्चय प्रभु को तुम पा जाओ।
बातें मन की मन में हों, तुम भी उस में खो जाओ।४।
तेरा प्रभु है तेरे अन्दर, फिर क्यों बाहर ढूंढते हो।
चचल मन से कभी न मिलता, तीर्थों में क्यों भटकते हो।५।
मूर्ति पूजा ही करनी है, तो चेतन मूर्तियो को पूजो।
अपने माता पिता को सादर भगवान् समान ही पूजो।६।
गुरु को पूजो, अतिथि को पूजो, पति पूजो अरु पत्नी पूजो।
चेतन मूर्तियों को छोडके प्यारे, जड मूर्ति को कभी न पूजो।७।
भगवान् की बनाई लाखों मूर्तियां, भूखी प्यासी घूमती हैं।
उनको नहीं पूजकर प्यारे, जड़ पूजा क्यो करते हो।८।
परमेश्वर तो है घट-घट वासी, जिस में चाहो देख लो।
दीन दुखी असहाय विचारे, यही तुम्हारे ईश्वर हों।९।

—गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम० ए० एम.फिल
१७५ जयनगर जबलपुर सिटी (मध्यप्रदेश)

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचलप्रदेश का निर्वाचन

संरक्षक—श्री कृष्णलाल आर्य, प्रधान ब्र० आर्यनरेश, कार्यकारी प्रधान—श्री रोशनलाल आर्य, उपप्रधान—श्री श्यामबिहारी लाल ग्रोवर, श्री कृष्णचन्द्र आर्य, श्रीमती चांदरानी, महामन्त्री—श्री भगवान्देव चैतन्य, उपमन्त्री—श्री रामकृष्ण गौतम, श्री सुदर्शन कपूर, कोषाध्यक्ष—श्री अरुणेश कुमार, लेखापरीक्षक—श्री करतार नाथ गण्डोतरा, प्रांतीय सचालक आर्यवीर दल—श्री कृष्णचन्द्र आर्य, उपसचालक—श्री संजीव और श्री अखिलेश भारती।

अन्तरंग सदस्य:—स्वामी सुमेधानन्द चम्बा, डा० सुमन व्यास चम्बा, श्री गोविन्दराम आर्य चोलथरा, श्री वेदप्रकाश आर्य लठयाणी श्री जे० के० टण्डन शिमला, श्री अशोक कुल्लू, श्री सत्पाल कुल्लू, संसारचन्द महत्ता पपरोला, श्री मिलापचन्द नगरोटा, श्री विजय मोहन सिंघा सोलन, श्री सतीश बंसल धर्मपुर, श्री देवेन्द्र रावल सुन्दर नगर, श्री सोहनलाल आर्य देहरा, श्री एस एस. जमवाल बिलासपुर श्री सतीशकुमार ऊना, श्री ज्ञानचन्द आर्य हमीरपुर।

प्रतिष्ठित सदस्य:—स्वा० सुरेन्द्रानन्द, श्री केवलराम भ्राता, श्री धमपाल शर्मा, श्री मीयांराम, श्री जुगलकिशोर, श्री सत्यप्रकाश मेहदीरत्ता।

—भगवान्देव चैतन्य

आबू पर्वत पर नया सूर्योदय: आर्य गुरुकुल महाविद्यालय

—धर्मवीर

स्थान : आबू पर्वत प्रात:काल 27 मई को हजारों नर-नारी प्रसन्नता उत्सुकता एवं आश्चर्य से एक ऐतिहासिक क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे, गत चार वर्षों से जिस भविष्य की योजना बन रही थी आज सब उसको वर्तमान में परिवर्तित होते देख रहे थे, सबके मन में एक गर्व का भाव दिखाई दे रहा था, जिसमें उन क्षणों के साक्षी होने का गौरव था। प्रात: सामवेद परायण यज्ञ के पश्चात् ईश्वर स्तुति प्रार्थना के पाठ ध्वजोत्तलन के साथ स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के विधिवत् प्रारम्भ करने की घोषणा की। सन्यासियों, ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, सद्गृहस्थियों के तुमुल जयघोष से आबू पर्वत की श्रृंखलायें गुन्जायमान हो उठी, जो आबू पर्वत प्राचीन समय में ऋषियों की तपस्थली थी आज उसके पुरातन गौरव को पुन: प्रतिष्ठित करने का दिन था।

पुरातन काल से आबू पर्वत ऋषियों की तपस्थली रहा है। साथ ही आबू पर्वत एक महत्वपूर्ण पर्यटक केन्द्र है। राजस्थान और गुजरात की सीमा पर होने के कारण दोनों प्रांतों के निवासियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है। प्राकृतिक सुन्दरता के साथ इतिहास के प्रसंगों का स्मरण कराता है विश्व प्रसिद्ध देलवाडा के मन्दिर पौराणिक ऐतिहासिक प्रसंगों के साथ भाव एव भावनाओं को कला के माध्यम से प्रकट करते है। उसी आबू पर्वत पर यह ऐतिहासिक महत्व का विशाल आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य था आबू पर्वत पर आर्य गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना करना। गुरुकुल की स्थापना का सकल्प लिया था स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने धर्मानन्द सरस्वती एकान्तवास में आध्यात्मिक साधना करने की इच्छा से आबू पर्वत पर पधारे थे। जहा जगल में कुटिया बना कर अनेक वर्षों तक तपस्या पूवक ईश्वर भक्ति मे लीन रहे, इस अवधि मे इन्होंने अनुभव किया कि इस पवित्र तपस्थली को धार्मिक पाखण्डों एव स्वेच्छाचारी लोगो ने अज्ञानी और भोले-भाले लोगो को ठगने और अराष्ट्रीयता के प्रचार प्रसार करने का केन्द्र बना कर दूषित कर दिया है।

इसके लिए स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने अनुभव किया कि जनता को भारतीय सस्कृति की रक्षा और उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराना आवश्यक है, यह कार्य बिना गुरुकुल के सम्भव नही था। इसके लिए गुरुकुल की स्थापना का सकल्प लिया इस सकल्प के साथ ही इसको मूर्तरूप देन के लिए उचित भूमि की आवश्यकता थी, भूमि की खोज प्रारम्भ की गई और आबू की पर्वत माला के मध्य प्राकृतिक वातावरण के बीच एक सुन्दर भूखण्ड का चयन किया गया। आर्यजनों के सहयोग से एक मास से भी कम समय में १५ बीघा भूमि प्राप्त कर ली गई। यह भूमि आबू पर्वत के दर्शनीय देलवाडा मन्दिरों के सामने सड़क के दूसरी ओर एक किलोमीटर अन्दर चारों ओर से अरावली की ऊंची चोटियों के मध्य स्थित है, जहां ईश्वर प्रदत्त अनुपम सौन्दर्य का वैभव बिखरा हुआ है।

भूमि प्राप्त करने के पश्चात् १ जून १९८९ में एक समारोह में गुरुकुल की नीव रखने का दूसरा चरण प्रारम्भ किया गया इस अवसर पर यज्ञ किया यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा आधार शिला रखी गई। स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के सामने महाविद्यालय के निर्माण के लिए भूमि को समतल करना, जल की स्थाई व्यवस्था करना भवनों का उपयुक्त नक्शा बनवा कर निर्माण करना आदि की कठिन समस्या थी। केवल पानी की व्यवस्था पर एक लाख रुपया व्यय हुआ। इसके बाद ३ गुफाओं का निर्माण किया गया। कार्यकर्ताओ के रहने योग्य स्थान की और जल की व्यवस्था हो जाने पर भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया। नक्शे के अनुसार २४ कमरे एक यज्ञशाला एव हाल का निर्माण करना था ४ वर्ष के कम समय मे गुरुकुल के लिए एक हाल यज्ञशाला सहित ४ कमरों का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया तथा शौचालय स्नानगृह अतिथिशाला का निर्माण कार्य चल रहा है।

उद्घाटन समारोह का प्रारम्भ गुरुकुल की नवनिर्मित यज्ञशाला में वेदों के विद्वान् स्वामी व्रतानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य पं० भीमसेन जी वेदवागीश के ब्रह्मात्व में सामवेद पारायण द्वारा प्रारम्भ हुआ। प्रात: एवं सायंकाल वेदमन्त्रों के उद्घोष और प्रवचनों से अरावली की पर्वत माला गुन्जायमान होती रही। उत्सव का कार्यक्रम दिनांक २६, २७ एवं २८ मई को सम्पन्न हुआ। उत्सव का प्रारम्भ नक्की झील के सुरम्यतट पर स्थित आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में हजारों आर्य नर-नारियों की उपस्थिति में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने ध्वजारोहण से किया। समारोह में प्रतिदिन स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी ओमानन्द जी महाराज, स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज के प्रवचन एव भजनोपदेश से आध्यात्मिक एव धार्मिक वातावरण में हजारों व्यक्तियों ने लाभ उठाया।

गुरुकुल के उद्घाटन समारोह के अवसर पर ध्वजोत्तोलन करते हुए स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने बताया इस ससार में वास्तविक धर्म के प्रचार का और संसार को सुखी करने का मूल आर्षशिक्षा प्रणाली है आर्षशिक्षा से ही मनुष्यों मे मानवीय मूल्यो का विकास होना है। अन्य शिक्षा तो मनुष्य को मनुष्यता से दूर करती है और शोषण की प्रवृत्ति को बढाती है।

गुजरात के मुख्य सचेतक लेखराज बच्याणी ने गुरुकुल के लिए शुभ कामना व्यक्त करते हुए गुरुकुल के लिए राज सरकार से मिल कर सडक निर्माण करवाने की घोषणा की और बताया कि वह स्थान गुजरात और राजस्थान के लिए प्रेरणा और प्रकाश का केन्द्र बनेगा। स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने बताया वर्तमान शिक्षा भोगवादी प्रवृत्ति की ओर ले जाती है। जबकि आर्षशिक्षा त्यागवाद की ओर मनुष्य को प्रवृत्त करती है। पूर्व ससद सदस्य आचार्य भगवानदेव ने कहा स्वामी धर्मानन्द जी महाराज का त्याग और तप है, जिसके कारण आज आबू पर्वत पर एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुआ है। देश की जनता को तन, मन, धन से इस पवित्र कार्य में सहयोग करना चाहिए। श्री बाल दिवाकर हंस ने स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के शुभ प्रयास को जनता मे सफल बनाने का आह्वान किया और उनके प्रयासों का विवरण दिया। समारोह में उपस्थित जनसमूह ने दत्तचित्त होकर विद्वानों को प्रवचन उपदेशों का श्रवण किया साथ ही उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान किया।

गुरुकुल मे एक कमरे के निर्माण के लिए अनेक व्यक्तियों ने ३१ हजार रु० देने की घोषणा की नीचे मंजिल के सभी कमरों के निर्माण हेतु दान प्राप्त हो गया है। गुरुकुल क प्रबन्धको ने योजना बनाई जिसके अनुसार २१ हजार रु० की स्थिर निधि से एक छात्र का वार्षिक व्यय प्राप्त होगा। ११ हजार की स्थिर निधि के व्यय से गुरुकुल का एक दिन का व्यय पूरा होगा तथा ५१०० की स्थिर निधि के ब्याज से गुरुकुल का एक दिन का अन्य व्यय पूरा होगा। अनेक व्यक्तियों ने अपने परिजनों एवं मित्रों की स्मृति मे इस व्यय भार को उठाने में मुक्त हस्त योगदान प्रदान किया है और कर रहे हैं।

इस प्रारम्भिक सत्र में २५ छात्रों को रखने की व्यवस्था की गई थी जो २६छात्रों के प्रवेश से कम पडगई। २९मई को प्रात: गुरुकुल भूमि में ब्रह्मचारियों का उपनयन एव वेदारम्भ सस्कार सम्पन्न हुआ गुरुकुल के सुयोग्य वैदिक विद्वान् प० भीमसेन जी वेदवागीश की देखरेख में विद्यार्थियों के अध्ययन का कार्य प्रारम्भ हो गया है। भीमसेन जी के मार्गदर्शन मे निश्चय ही गुरुकुल दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करेगा।

व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर

जूआं जिला सोनीपत में

17 जून से 24 जून 90 तक

आप सबको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे परिवार, जाति एवं देश के भावी कर्णधार नवयुवकों एव बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक विकास के लिए 17 से 24 जून 1990तक व्यायाम एव सदाचार प्रशिक्षण शिविर का वैदिक गायत्री आश्रम के तत्वावधान में और आर्यसमाज के सहयोग से आयोजन राजकीय उच्च विद्यालय जूआं जिला सोनीपत में किया जा रहा है। जिसमें शिविरार्थी बच्चों एवं नवयुवकों को योग्य व्यायाम शिक्षकों एव विद्वानों तथा प्रचारकों द्वारा शारीरिक शक्ति एवं स्वास्थ्य के आधार आसन प्राणायाम, दण्ड बैठक, स्तूप निर्माण, लाठी सचालन क्रीडा आदि भारतीय व्यायामों को क्रियात्मक प्रशिक्षण के साथ-साथ चरित्र निर्माण, देशभक्ति, ब्रह्मचर्य, सदाचार, माता पिता एवं गुरुजनों की सेवा, धर्म-कर्म, यज्ञ परोपकार आदि सद्गुणों की शिक्षा भी प्रतिदिन दी जाएगी। आप सबसे प्रार्थना है कि अपने होनहार प्यारे बच्चों के शारीरिक एवं चारित्रिक निर्माण के लिए इनका शिविर मे प्रवेश करवाये।

शिविर सम्बन्धी नियम:—

1 शिविर 17-6-1990 से 24-6-1990 तक गांव जूआं के हाई स्कूल में होगा। 2 शिविर पूर्णतया नि:शुल्क होगा प्रवेश केवल 17 जून की शाम तक होगा। 3 शिविर में सभी जाति वर्गों के 10 से 20 वर्ष तक के युवक भाग ले सकते है। 4 शिविर के सभी नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा एवं अनुशासित रहना होगा। 5 शिविर मे भाग लेने वालो के लिए लगोट, कच्छा, बनियान व कापी पैन रखना आवश्यक होगा। 6 शिविर के विभिन्न प्रशिक्षणों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले युवको को ईनाम दिया जाएगा एव सभी को प्रमाण-पत्र दिए जाएगे।

पुरस्कार वितरण एव अद्भुत शक्ति प्रदर्शन:—

दिनाक 24 जून को साय 3 बजे यह समारोह हाई स्कूल जूआ के प्रांगण में प्रारम्भ होगा। जिसमें ब्रह्मचारी योग व्यायाम तथा शक्ति प्रदर्शन करेंगे। शिविर के युवक भी अद्भुत कलाओं का प्रदर्शन करेंगे। 17 से 24 जून तक ग्राम में शराब, मास, दहेज तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प. चिरजीलाल एव चौ० रतनसिह की भजन मण्डलिया प्रचार करेंगी। अत: आप सब से प्रार्थना है कि इस समारोह मे पधार कर बच्चो को आशीर्वाद देवे तथा समारोह की शोभा बढावे।

शिविर प्रबन्धक	शिविर सचालक	शिविर संयोजक
मा० सवानसिह	**प्रो० राजपाल**	**धर्मसिह आर्य**

संचालक वैदिक गायत्री आश्रम एव समस्त ग्रामवासी एव पचायत जूआं

कैसे शुभचिन्तक

चिठ्ठी आई है, सन्देश लाई है
एक सौ एक पत्र लिखकर भेजिए
सन्तोषी माता का 'प्रचार' कीजिए
अन्यथा दुष्परिणाम भुगतने को तैयार रहिए।
और अन्त में लिखा है—"शुभचिन्तक"!
सम्पादक जी!
उस अन्त: से रिक्त, धूर्त को पूछिए
वह कैसा शुभचिन्तक है?
जो दुआ कर रहा दुष्परिणाम की।
यह सच है वह अकेला नहीं,
ऐसे ऐरे-गैरे-नत्थू खैरों का
दुष्टों का, पथ-भ्रष्टों का
कोई छिपा हुआ गुट है,
जो जनता को कष्ट दे रहा
और भय से आतंकित कर रहा।
उससे, उनसे पूछा जाए
'गर वे सत् जानते हैं
मां की शक्ति को मानते हैं
पुन: एक सौ एक पत्र लिखने को
दूसरों को क्यों विवश करते हैं?
क्यों जनसाधारण के मनों को
मच्छरों की भांति भीं - भी कर डसते हैं?
और निज अता - पता क्यों छिपाते हैं?
सच है यह—
वे थोथे बास की तरह थोथे है
वे झूठे पौधों से चिपके है।
धन में सड़ रहे हैं तो क्या?
दिन - रात बड - बड कर रहे हैं तो क्या?
क्या वे शक्ति को पहचानते है?
कैसा उसका रूप रग है?
कहा पर वह रहती है?
क्या जनता का अहित चाहती है?
'गर ऐसा नही, तो फिर वे ऐसा क्यों करते हैं?
मेरे चिन्तन से बाहर
वे कैसे शुभचिन्तक है?

—गजेन्द्र 'नटखट'

शराब हटाओ देश बचाओ

आर्यसमाज बालसमन्द का ६१ वाँ उत्सव सम्पन्न

दिनांक २५, २६, २७ मई ६० को आर्यसमाज बालसमन्द जिला हिसार का वार्षिकोत्सव बडी धमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी जगत मुनि, महात्मा आनन्द मुनि, वानप्रस्थी ताराचन्द जी, प्रो० ओमकुमार जी, श्री प्रतापसिह शास्त्री तथा विदुषी बहन सुनीति आर्या, भगत रामेश्वरदास आदि ने आर्य समाज का स्वतन्त्रता में योगदान, महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्य, वैदिक शिक्षा, धर्म क्या है? नारी शिक्षा, देश में बढ़ रहे सम्प्रदायिकता व उग्रवाद, छुआछात, गोरक्षा तथा सरकार की शराब बढावा नीति की आलोचना एव शराब बन्दी पर विस्तार से विचार रखे। प्रतिदिन प्रात: यज्ञ पर सन्ध्या का रहस्य, आत्मा-परमात्मा, गायत्री मन्त्र की व्याख्या एवं मनुष्य के कर्त्तव्य पर अध्यात्मिक प्रवचन हुए।

इसके अतिरिक्त चौ. नत्थासिह, पं. रामनिवास, पं. आशाराम एवं महाशय झब्बेराम द्वारा समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। भयंकर गर्मी के बावजूद उत्सव पर गांव के अलावा निकट के गांव के आर्यों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। उत्सव की समाप्ति पर आर्यसमाज के प्रधान श्री दिवानसिह आर्य ने सभी विद्वानों का धन्यवाद किया।

—माईलाल आर्य
मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द

आर्यसमाज के कारण पूरा गांव शराबरूपी राक्षस से बचा

आप सबको जानकर अति हर्ष होगा कि आर्यसमाज ग्राम लोहचप जीन्द हरयाणा के महान् प्रयासों के बाद ग्राम लोहचप में अब शराब पूर्ण रूप से बन्द है। यहां के आर्यसमाज के प्रधान, मंत्री एवं सभी सदस्यों ने मिलकर एक-एक को तैयार करके ग्राम पंचायत बुलाई और शराब पीने, बेचने तथा अन्य सभी प्रकार की उत्पन्न होने वाली बुराइयों से गांव को बचा लिया। अब गांव में यह नियम है कि यदि कोई शराब बेचेगा तो उस पर पांच सौ रुपये दण्ड होगा। इसी प्रकार जो कोई शराब पीयेगा उस पर ६० रुण्ये दण्ड तथा जो शराब पीने वाले का नाम बताएगा उसको आर्यसमाज की तरफ से दस रुपये इनाम दिया जायेगा।

इस कारण शराब के बन्द हो जाने से आजकल गांव में पूर्ण शांति है। लेखक ने स्वयं देखा है कि विवाह के समय घुड़चढी पर कोई भी व्यक्ति बिना दारू पीये तथा बिना नाचते हुए पूर्ण शान्ति से गांव में घूम रहे थे।

यह आर्यसमाज की ही देन है, जो बहुत वर्षों के बाद भी गिलासों से निकलकर वैदिक आदर्शों का पालन करते हुए आनन्द पा रहे हैं। क्या अच्छा हो यदि हरयाणा की सभी आर्यसमाजें इसी प्रकार सघर्ष करके शराब को बन्द करने के लिए प्रयत्न करें। तो लेखक को आशा ही ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि हमारी पावन धरती हरयाणा वीरों की जन्मदात्री अपने रजत चरणों में वीरो को पालने वाली ये धरती शराब रूपी इस विकराल दानव से छूट जाए।

लेकिन कब हमारे अन्दर जागृति आएगी। मेरा यह स्वप्न साकार होगा भी या नही। अन्त में दो शब्दों के साथ मैं अपनी लेखनी को विश्राम दूंगा।

न पीओ शराब की प्याली,
तुम्हें ये पागल बना देगी।
लिये हैं प्रद्युम्न से तो,
तुम्हें भी नाश कर देगी॥

—यज्ञदेव याज्ञिक
आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा (जीन्द)

आवश्यकता

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के आवासीय विद्यालय में निम्न पदों को भरने के लिए आर्यसमाजी विचारधारा के योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है :—

१. आश्रमाध्यक्ष (एक पद) आयु ४० से ४५ वर्ष वेतन ६००/- रुपये प्रतिमास, योग्यता—स्नातक, भोजन एवं आवास निःशुल्क।
२. अधिष्टाता (चार पद) योग्यता—हाई स्कूल पास, आयु ४० वर्ष से ५० वर्ष, वेतन ४००/- रु० प्रति मास भोजन एवं आवास निःशुल्क।

केवल शाकाहारी एवं धूम्रपान न करने वाला व्यक्ति ही निम्न पते पर प्रार्थना पत्र भेजे। प्रार्थना पत्र विज्ञापन के १५ दिन बाद तक ही मान्य होंगे। साक्षात्कार के लिए प्रमाण-पत्रों सहित २५-६-९० को मुख्य कार्यालय में उपस्थित हों।

देशराज, सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

✱ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश

आश्रम पद्धति से चलने वाले गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में ६ वर्ष से १० वर्ष तक की आयु के बालकों का प्रवेश २ जुलाई से ३१ जुलाई तक होगा।

गंगा के तट पर विद्यालय का विशाल प्रांगण बालकों के खेल-कूद तथा व्यायाम के लिए आदर्श स्थान है। योग्य अध्यापकों द्वारा उत्तरप्रदेश के सरकारी स्कूल मे पढ़ाये जाने वाले सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्मशिक्षा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। शिक्षा नि:शुल्क है। पूर्ण जानकारी के लिए १०/- रु० का मनीआर्डर भेज कर नियमावली प्राप्त करे।

देशराज, सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

सौभाग्योदय के साथ आपत्तियाँ

पृष्ठ दो का शेष)

मां के दूध की भांति गटागट पी गए। यदि कोई राष्ट्र-भक्त उस समय प्रधानमन्त्री होता तो सैयद शहाबुद्दीन का परमिट स्थगित करा उसे तुरन्त भारत बुलाकर जेल के सींखचों में बन्द करता और उस पर देशद्रोह का अभियोग चलाकर उसे जीवन भर के लिए कारागार वासी बना देता।

दूसरा राष्ट्रद्रोही मौलाना ओबेदुल्ला खां आजमी——जिसने कहा था कि—"हम किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं। हाईकोर्ट तो दूर की बात है, सुप्रीमकोर्ट भी अगर "मुस्लिम पर्सनल ला" को चेलेंज करेगी तो हम सुप्रीमकोर्ट का भी हर फैसला जूते की नोक पर रखेंगे।" भारत के तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपनी साम्प्रदायिक और राष्ट्रघातिनी मनोवृत्ति का परिचय उस दिन दिया, जब भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपने पूर्ण बहुमत के बल पर संसद में निश्चय कराके राष्ट्र के स्वाभिमान को एक राष्ट्रद्रोही के जूते की नोक पर रखकर उड़वा दिया। जबकि ओबेदुल्ला खां को उसके इस राष्ट्रीय अपमान से भरे और राष्ट्रद्रोह पूर्ण बयान पर जेल की हवा खिलानी चाहिए थी। (क्रमशः)

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार

स्वतन्त्रता सेनानी, प्रसिद्ध पत्रकार

श्री क्षितिश जी वेदालंकार की सेवा में समर्पित

आज दिनांक २०-५-९० दिन रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समापन समारोह के अवसर पर संघेड़ विद्या सभा, जयपुर की ओर से प्रख्यात पत्रकार, निर्भीक वक्ता, स्वतन्त्रता सेनानी पं० क्षितीश वेदालंकार को आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पधारे राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत के कर कमलों से श्री क्षितिश जी को १०००/- रुपये नकद तथा जोधपुरी आर्ट का मोर भेंट किया गया।

पं० क्षितिश वेदालंकार की महान् सामाजिक सेवाओं को उद्धृत करते हुए सम्मान-पत्र भेंट किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सत्यव्रत सामवेदी ने की। अब से पूर्व यह पुरस्कार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मंच से दिया जाता रहा है, इस बार भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० सुरेशचन्द्र त्यागी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन ऋषिपाल त्यागी 'वेदालंकार' ने किया।

—ऋषिपाल त्यागी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न. २३२०७/७३ रजि

८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०९०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए.   आषाढ १४, २०४७ वि०

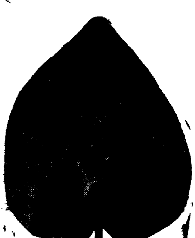
वर्ष १७ अंक २९ २९ जून १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

सर्व देवों के देव महादेव की स्तुति, प्रार्थना, उपासना कैसे करें ?

रचयिता—लालचन्द विद्यावाचस्पति, श्री मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेड़की, पत्रालय बैरावास जि. महेन्द्रगढ़ (हरयाणा)

●

ईश्वर के नाम अनगिनत (असंख्य) हैं क्योंकि उसके गुण, कर्म, स्वभाव ही अनन्त हैं। इन्हीं नामों में से एक नाम "महादेव" भी है। क्या अर्थ है महादेव का ? सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बताया है कि 'महत्' शब्द पूर्वक 'देव' शब्द से 'महादेव' शब्द बनता है। "यो महतां देवः स महादेवः" जो महान् देवों का देव अर्थात् विद्वानों का भी विद्वान्, सूर्यादि पदार्थों का प्रकाशक है इसलिए उस परमात्मा का नाम "महादेव" है। अब, स्तुति, प्रार्थना, उपासना क्या है ?



लालचन्द विद्या वाचस्पति

१. स्तुति उसे कहते हैं जिसमें ईश्वर के गुणों का गुणगान किया जाता है।

२. प्रार्थना उसे कहते हैं जिसमें ईश्वर से कुछ याचना अथवा मांग की जाती है।

३. उपासना द्वारा ईश्वर के निकट जाते हैं अर्थात् जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव शुद्ध और पवित्र हैं, वैसे स्वयं को बनाना। ईश्वर को सर्वव्यापक जानकर स्वयं व्याप्य समझना, ईश्वर के निकट हम हैं और हमारे पास ईश्वर है, ऐसा दृढ़ निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहलाती है। दूसरी तरफ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में महर्षि जी ने ३३ देवताओं की गणना इस प्रकार की है—

१. आठ वसु— अग्नि, वायु, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौः, चन्द्रमा और नक्षत्र। (आदित्य) का अर्थ सूर्यलोक और उसका प्रकाश द्यौः कहलाता है। इनको वसु इसलिए कहते हैं क्योंकि सब पदार्थ इन्हीं में बसते हैं और ये ही सब के निवास करने योग्य हैं।

२. ग्यारह रुद्र— दस प्राण अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और ग्यारहवां जीवात्मा। इनको रुद्र इसलिए कहते हैं कि जब ये इस शरीर से निकलते हैं तो मृत के सम्बन्धीजन रोते हैं।

३. बारह आदित्य—चैत्र से फाल्गुन तक बारह महीनों को बारह आदित्य कहते हैं। क्योंकि ये सब जगत् के पदार्थों का आदान अर्थात् सब की आयु को ग्रहण करते चले जाते हैं इसी से इन्हें आदित्य का नाम दिया गया है।

'इन्द्र' नाम बिजली का है क्योंकि वह उत्तम ऐश्वर्य की विद्या का मुख्य कारण है। और 'प्रजापति' यज्ञ को कहते हैं क्योंकि उस से वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा प्रजा का पालन होता है। ये सब अपने दिव्य गुणों से ३३ देव कहलाते हैं। इन में से कोई भी उपासना के योग्य नहीं है। सभी के लिए उपास्य 'देव' तो एक ब्रह्म ही है। उसी सर्व देवों के देव महादेव, सर्व स्रष्टा, सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सच्चिदानन्द की उपासना करनी चाहिए अन्य जड़ पूजा, आडम्बर आदि व्यर्थ हैं। उसकी उपासना में ही सर्वप्रथम ज्ञान फिर कर्म (ज्ञानपूर्वक कर्म) होना चाहिए। इसीलिए वेदों में तीन विषय ज्ञान, कर्म, उपासना दिए हैं। आज मनुष्य को ज्ञान होने पर भी वह कर्म विपरीत करता है यही दुःखों का कारण है क्योंकि—

ज्ञान और कुछ क्रिया भिन्न है,
इच्छा कैसे पूरी हो मन की।
एक दूसरे से मिल भी ना पाएं,
यह विडम्बना है जीवन की ॥

परन्तु यदि मनुष्य ज्ञान, कर्म, उपासना के मार्ग पर चले तो निश्चय ही उसे सुषुप्ति, समाधि और मोक्ष द्वारा उस परमात्मन् के सानिध्य से असीम, निस्सीम, सुख की प्राप्ति होगी क्योंकि—

मन, वचन, कर्म से जिसका हो 'कुशल व्यवहार'।
कोटिशः कष्ट आएं किन्तु हो पुन. उसका उद्धार ॥

यहां 'कुशल व्यवहार' का विशेष महत्व है क्योंकि गीता भी यही निर्देश करती है कि 'योगः कर्मसु कौशलम्' अर्थात् हमारा आहार, विहार, व्यवहार ठीक होना चाहिए। इधर ज्ञान, कर्म, उपासना भी तीन हैं उधर इनसे तीन प्रकार से (सुषुप्ति समाधि और मोक्ष) द्वारा तीन तरह का सुख मिलता है।

१. सुषुप्ति—इसमें शरीर सहित किन्तु ज्ञान रहित सुख की प्राप्ति होती है।

२. समाधि—इनमें शरीर सहित तथा ज्ञान सहित सुख की प्राप्ति होती है।

३. मोक्ष—इसमें (स्थूल) शरीर रहित तथा ज्ञान सहित सुख मिलता है।

वेदों में स्तुति, प्रार्थना, उपासना के अनेक मन्त्र हैं। कुछ मन्त्रों का प्रस्तुत कविता में अर्थ किया गया है जोकि यहां द्रष्टव्य है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

कुरुक्षेत्र वि. वि. में संस्कृत भाषा की उपेक्षा

कुरुक्षेत्र, 15 जून (कमलेश भटनागर)। हरयाणा प्रदेश में संस्कृति प्रेमियों की एकमात्र रक्षक हरयाणा संस्कृत परिषद् के प्रधान डा. वेदप्रकाश तथा महासचिव श्री रत्नाराम मलिक ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति ले० जनरल कृष्णा स्वामी बाला राम को नौ सूत्री मांग-पत्र देते हुए अपील की है कि वे कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, जिसकी आधारशिला संस्कृत विश्वविद्यालय के नाम से रखी गई थी, में संस्कृत प्रेमियों से हो रहे अत्याचारों पर पाबन्दी लगाने के आदेश जारी करें।

उन्होंने नौ सूत्री मांगपत्र में स्पष्ट किया है कि यह कोई पहला अवसर नहीं है जब संस्कृति प्रेमियों से भाई भतीजावाद की नीति बरती जा रही हो हरयाणा संस्कृत परिषद हरयाणा प्रदेश में संयुक्त प्राध्यापकों व विद्वानों की एक संस्था है, जिसके मान सम्मान व अधिकारों की रक्षा करने की जिम्मेवारी कुलपति की भी बनती है। ज्ञापन में दी गई मांगों का ब्यौरा इस प्रकार है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पिछले दो वर्षों से संस्कृत के महत्व को काफी कम कर दिया गया है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की भाषा नीति निर्धारण करने वाली डीन कमेटी ने बी. ए. स्तर पर संस्कृत अनिवार्य विषय लेने वाले विद्यार्थी को अनिवार्य रूप से सौ-सौ अंक की दो अन्य भाषायें (हिन्दी तथा अंग्रेजी) लेनी पड़ेगी। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी केवल अन्य विषयों में से एक विषय का ही चयन कर पाएगा, बाकी उसे तीन भाषायें लेनी होंगी इस प्रकार निर्णय से जहां संस्कृत विषय पर प्रतिकूल असर पड़ा है, वहीं हिन्दी इत्यादि को भी कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है। परिणामस्वरूप कालिज स्तर पर अनिवार्य संस्कृत विषय को लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में काफी कमी आ गई है।

भाषा पद्धति का निर्धारण करने वाली कमेटी तथा संयुक्त विषय कमेटी ने बी ए स्तर पर अनिवार्य विषय के पेपर को 100 अंक का बना दिया है तथा पाठ्यक्रम में भी काफी वृद्धि कर दी है परन्तु अभी तक इस विषय को पढ़ाने के लिए 3+1 पीरियड का ही वर्कलोड दिया गया है। विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी की एक उप समिति ने इस पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए 6 पीरियड की सिफारिश की थी, परन्तु अभी तक इस सिफारिश को लागू नहीं किया गया है जबकि अंग्रेजी विषय के लिए 9 पीरियड का प्रावधान किया गया है।

पिछले 5 वर्षों से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पत्राचार पाठ्यक्रम निर्देशालय में संस्कृत प्राध्यापक के पद को रिक्त रखा जा रहा है। जबकि संस्कृत को लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या काफी मात्रा में है। पूर्णकालिक प्राध्यापक के न होने से विद्यार्थी संस्कृत विषय को न लेने से हतोत्साहित होता है अत: पूर्णकालिक दो अध्यापकों को निर्देशालय में शीघ्र नियुक्त किया जाए।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षण महाविद्यालय में भी पिछले 10 वर्षों से संस्कृत प्राध्यापक की नियुक्ति नहीं की गई है, जिस कारण से संस्कृत विषय ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बन्धित कालिजों में बी ए तथा बी काम वर्ग में संस्कृत अनिवार्य विषय को लेने का तो प्रावधान है, परन्तु विज्ञान सकाय में ऐसा प्रावधान समाप्त कर दिया है। जबकि यह व्यवस्था दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में काफी वर्षों तक रही है। अत: विज्ञान व वाणिज्य सकायों में भी कालिज स्तर की सभी कक्षाओं में संस्कृत या हिन्दी अनिवार्य विषय लेने का प्रावधान किया जाए।

कालिज स्तर पर भारतीय संस्कृति व नैतिक शिक्षा का प्रावधान किया जाए। ताकि विद्यार्थी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की स्थापना के समय किया गया था, परन्तु बिना उचित कारण के इसे समाप्त कर दिया।

संस्कृत विषय को पढ़ाने वाले प्राध्यापकों से भी बोर्ड आफ स्टडीज व परीक्षा सम्बन्धी कार्यों में काफी भेदभाव किया जाता है। बोर्ड आफ स्टडीज में तथा परीक्षा कार्य के लिए इस प्रकार के प्राध्यापकों के नामों की सिफारिश की जाती है, जो इस विषय को अब नहीं पढ़ाते है। इसकी जांच कराने के लिए भी उन्होंने कुलपति से अपील की है। संस्कृत विषय को लोकप्रिय बनाने के लिए कालिज व विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को अधिक छात्रवृत्तियां देने का प्रावधान किया जाए तथा पहले की भांति एम.ए. हिन्दी में भी संस्कृत साहित्य का वैकल्पिक पेपर रखा जाए।

हरयाणा संस्कृत परिषद के महासचिव श्री रत्नराम मलिक जो आर के. एस. डी कालेज, कैथल में प्राध्यापक पद पर कार्यरत हैं, ने बताया कि वे किसी तरह का टकराव नहीं चाहते, लेकिन अब अधिक समय तक संस्कृत प्रेमियों के साथ अन्याय भी नहीं होने दिया जाएगा उन्होंने अपने इस नौ सूत्रीय मांग-पत्र को तुरन्त स्वीकार करने के लिए कुलपति से पुरजोर अपील करते हुए कहा है कि वे ऐसा करके संस्कृत जगत् पर भारी उपकार करेंगे। —दैनिक जन सन्देश

ठेका हटाने की मांग

इन्द्री। इन्द्री खण्ड के एक गांव भादसो के लोग अड्डे पर बनी शराब की दुकान से बेहद परेशान हैं। गांव के लोग अपनी इस परेशानी से जिला अधिकारियों को कई बार अवगत करा चुके हैं।

नए वर्ष के लिए शराब के ठेकों की नीलामी से पूर्व भी वे सम्बन्धित विभाग के उच्चाधिकारियों को लिखित रूप में शिकायतें कर चुके है, परन्तु उनकी अनसुनी करके उसी स्थान के लिए ठेके की नीलामी कर दी गई है।

सूत्रों का आरोप है कि आबकारी नियमों के अनुसार भी इस ठेके के स्थान का चुनाव भी गलत है। क्योंकि नियमानुसार शराब की दुकान स्कूल, मन्दिर अथवा बस स्टैण्ड से हटकर लगभग सौ गज की दूरी पर होनी चाहिए जबकि इस गांव के बिल्कुल बस स्टैण्ड पर यह दुकान खुली हुई है। इसके अतिरिक्त भादसों गांव का सहशिक्षा उच्चविद्यालय भी इस बस स्टैण्ड पर स्थित है।

आर्यसमाज बेगा (सोनीपत) का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बेगा (सोनीपत) हरयाणा का वार्षिकोत्सव दिनांक १—२—३ जून १९९० तदानुसार शुक्र, शनि एवं रविवार को श्री लछमनदास जी भुटानी की प्रधानता एवं श्री कवल नयन जी आर्य (मन्त्री) के प्रबन्ध निर्देशन में धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर श्रद्धेय स्वामी जीवनानन्द जी महाराज, श्रद्धेय महात्मा प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थी (गन्नौर) श्रद्धेय श्री उत्तमचन्द जी शरर, श्री ओमप्रकाश जी वर्मा (गन्नौर), श्री रामस्वरूप जी वर्मा (सोनीपत), श्री चन्द्रसैन जी वैदिक मिशनरी, श्री लक्ष्मणसिंह जी बेमोल, श्री खेमसिंह भजनोपदेशक श्री मुरालाल बेचैन एवं अन्य विद्वान् भी पधारे।

हरिचन्द स्नेही

शराब हटाओ

देश बचाओ

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है

—प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्यसमाज के मन्तव्यों को पूरी तरह न समझने वाले अज्ञानी तथा अलग-अलग सम्प्रदायों को मानने वाले बहुत से लोग आर्य-समाज को भी एक सम्प्रदाय कह डालते हैं। दुःख की बात यह है कि कुछ आर्यसमाजी भाई भी जो किसी कारण आर्यसमाज के संगठन से कटे हुए हैं या अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर पाए हैं, वे भी सीधे न कहकर घुमा फिराकर यह कहने से नहीं हिचकते कि विश्व के कई देशों में फैला हुआ हजारों शाखाओं वाला आर्यसमाज का संगठन साम्प्रदायिक हो गया है इसलिए सभी मतों के अनुयाइयों को मिला कर एक नए भारतीय आर्यसमाज का गठन करना चाहिए।

इसलिए कई प्रकार के लोगों द्वारा आर्यसमाज के सम्बन्ध में जो भ्रम जानबूझ कर या अनजाने फैलाया जा रहा है उसका प्रतिकार करना और वस्तुस्थिति सब के सामने रखना आवश्यक जान पड़ता है।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में स्पष्ट शब्दों में लिखा है— 'मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतांतर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोडना छुडवाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता।"

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में महर्षि लिखते है:—क्योकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बंध करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं। 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में मनुष्य किसको कहते हैं यह स्पष्ट किया है।

'मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियो के बल की हानि और न्यायकारियों के दल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम मे चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरूप धम से पृथक् कभी न होवे।'

महर्षि सारे जगत् का पूर्ण हित चाहते थे, इसलिए उनकी यह हार्दिक तमन्ना थी कि विभिन्न मतों के विद्वान् 'पक्षपात छोड सर्वतन्त्र सिद्धांत अर्थात् जो जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें है, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्ते वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे।'

इस पृष्टभूमि में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने की थी। इसलिए यह सबको समझ लेना चाहिए कि यही नही कि आर्य-समाज कोई सम्प्रदाय नहीं है, बल्कि आर्यसमाज साम्प्रदायिकता और सम्प्रदायवाद का डटकर विरोधी है। आर्यसमाज जन्म के आधार पर जात-पांत ऊंच-नीच या मजहब आदि का भेदभाव नही मानता है। आर्यसमाज की मान्यता है कि जन्म से ही कोई न ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्रादि होता है और न ही हिंदू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, पारसी आदि।

जन्म के आधार पर लोगों को वर्गों और सम्प्रदायों में बांटना मानव समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है। मानव की अधिकतर समस्याओं का मूल जन्म के आधार पर लोगों को वर्गों और सम्प्र-दायों में बांटना है। सब बच्चों को समुचित शिक्षासे मानव समाज के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होने का समान अवसर मिले ताकि वे मानव समाज के हित के लिए समर्पित और कृत संकल्प हों। यही स्वामी दयानन्द की परिकल्पना थी।

आर्यसमाज के नियम :

आर्यसमाज के दस नियम स्वामी दयानन्द ने सोच समझकर कर बनाए थे ताकि इन नियमों का पालन करने वाले आर्यसमाज के सदस्य अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझ कर ऐसा आचरण करें जिससे मानव समाज में वैमनस्य की जगह प्रेम, स्पर्धा की जगह सहयोग बढे और सब की उन्नति में ही वे अपनी उन्नति देखें और समझें। जो इन नियमों को हृदयंगम करेगा वह साम्प्रदायिक तो हो ही नही सकता, वह सम्प्रदायों के द्वारा मानव समाज को बांटने का विरोध करेगा और जो सर्वमान्य सिद्धात हैं उनके द्वारा सबको मिला कर मानव समाज का दुःख दर्द समाप्त करने में लग जाएगा।

आर्यसमाज का सदस्य बनने के लिए किसी विशेष जाति या सम्प्रदाय में जन्म लेना आवश्यक नही है। सदस्यता के फार्म में इस प्रकार का कोई उल्लेख नही है। वह किसी भी तथाकथित जाति या सम्प्रदाय मे जन्मा हो, बिना भेदभाव के आर्यसमाज का सदस्य बन सकता है यदि वह नियमों का पालन करे। आर्यसमाज का द्वार सब के लिए खुला है। इसलिए आर्यसमाज में ऐसा संगठन बनाने की बात करना जिसमें हिंदू - मुसलमान - ईसाई आदि सम्प्रदायों के लोग भर्ती हो सकें व्यर्थ का शोशा है। आर्यसमाज राजनैतिक दल तो है नहीं कि इसमें सभी सम्प्रदायों के लोग साम्प्रदाकि भावनाये रखते हुए भी शामिल हो सके और फिर अन्दर बैठकर अपने अपने सम्प्रदायों की लडाई लडते रहे। आर्यसमाज तो एक सार्वभौम सगठन है और सब प्रकार के भेदभाव भुलाकर मानव समाज की सेवा करने मे विश्वास रखता है। यह संगठन किसी जाति विशेष - सम्प्रदाय विशेष या देश विशेष का नही हो सकता। सभी क्षेत्रों में काम करने के लिए उसकी शाखाये तो सब जगह खुलनी चाहियें परन्तु वह है विश्व कल्याण के लिए विश्वव्यापी सगठन। वह संगठन बना हुआ है काम कर रहा है। उसके काम में कमी हो सकती है, उसमें अधिक से अधिक मे अधिक कर्मठ लोग शामिल होकर काम करें और महर्षि के मंतव्यों के अनुसार काम करें। आर्यसमाज की शिक्षा सस्थाएं साम्प्रदायिकता से बहुत ऊपर रही हैं। कन्या गुरुकुल देहरादून से १० मुस्लिम कन्याएं स्नातिका बनकर निकली है। दयानन्द कालेज जालन्धर में शिक्षा प्राप्त करने वाले स्नातक अभी पाकिस्तान में छुआछूत के विरुद्ध आंदोलन चला रहे है। लाहौर मे १९८८ में उन्होंने मुझे बताया जब मै उनके घर पर भोजन करने गया।

शुद्धि आंदोलन का स्वरूप :

प्रश्न उठ सकता है कि शुद्धि आंदोलन के रहते सम्प्रदायों में सौमनस्य कैसे उत्पन्न होगा। मानव समाज का यह दुर्भाग्य है कि वह सम्प्रदायों और मतमतांतरों में बट गया है। हर सम्प्रदाय अपने आपको बढिया और दूसरों को घटिया बताता है। परन्तु तथा-कथित हिन्दु सम्प्रदाय ऐसा है कि उसके तथाकथित धर्माचार्य छुआ-छूत, ऊंचनीच के भेदभाव को अपने धर्म या सम्प्रदाय का अग मानते है? वे अपने सम्प्रदाय के भी अधिकतर लोगों को अपवित्र मानते है और दूसरे सम्प्रदाय के लोगों को भी। यदि तिरस्कृत होने के कारण या भय अथवा प्रलोभन के कारण कुछ लोग हिन्दु सम्प्रदाय को छोड़कर दूसरे सम्प्रदाय में चले जाते हैं, तो वे उनको हमेशा के लिए अपवित्र मान लेते है और उसकी 'शुद्धि' किसी हालत में सभव नही। आर्यसमाज उसत्य और पाखण्ड तथा सम्प्रदायों के लोगों को पवित्र, अपवित्र और घटिया, बढिया नही मानता। कोई व्यक्ति किसी सम्प्रदाय में चला जाए तो वह उनके लिए बढिया और दूसरों के लिए घटिया हो जाता है या अपवित्र माना जाता है। अपवित्रता का दाग मिटाने के लिए 'शुद्धि' शब्द उपयोग किया गया है। तथाकथित छोटी जाति के लोग किसी भी सम्प्रदाय में जायें वह जाति

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सर्व देवों के देव महादेव—

[प्रथम पृष्ठ का शेष]

।। मन्त्र ।।

ओ३म् यां मेधाम् देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्यमेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।। यजु. ३२।१४।।

● कविता ●

जगत् प्रकाशक, कष्ट विनाशक, श्रेष्ठ उपास्य परमेश्वर हो।
त्रय ताप हरो, मल साफ करो, दया आप करो जगदीश्वर हो।।
भुवनेश रटें, पंच क्लेश मिटें, नहीं शेष रहें सर्वेश्वर हो।
सृष्टिधारी, प्रलयकारी, है विनय हमारी ईश्वर हो ।।
करें भक्ति, देव दीजे शक्ति, धी हम में अति प्रदान करो।
ध्यान धरें, गुणगान करें, अभिमान भरे गुणवान करो।।
तेजोऽसि तेजोमयि धेहि वीर्य्यमसि वीर्य्यं मयि धेहि
बलमसि बलं मयि धेहि ओजोऽस्योजो मयि धेयि
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि ।।
प्रभो विनय हमारी, हों बलधारी, करे तेज पुरारी आप पिता।
जगत् विधाता, सुख के दाता, कष्ट मिटाता आप पिता।।
नमो नमामी, अन्तर्यामी, विश्वस्वामी आप पिता ।
हे शिवशंकर, हमें भयंकर, किंकर के हैं आप पिता।।
हे कृपालु, दीन दयालु, करें श्रद्धालु आप पिता ।
हे अविनाशी, कण-कण वासी, सुख की राशि आप पिता।।
यनेदं भूत भुवनं भविष्यत्परिगृहीतम मृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।यजु.३४।४।।
हे भगवन्, जैसे योगीजन, मेरा मन व्यवहार करे।
त्रिकाल की जाने, शिवरूप पहिचाने, हो ईश दीवाने उपकार करें।
राग द्वेष दमन, मिटे सर्व विघ्न, हो ईश लगन सदाचार करे।।
शुभ कर्म करे, भू पर विचरे, भवसिन्धु करे ब्रह्मज्ञानी हों।
मन भाव हमारा, हो वसुधारा, करे उजियारा दानी हों।।
'लालचन्द', मिटे द्वन्द्व हो आनन्द हम ध्यानी हो ।

संकलन कर्त्ता—महात्मा सुशीलदेव
श्री मंगल भवन खेड़की, पत्रालय बैरावास
जिला महेंद्रगढ (हरयाणा)

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज दाघपुर, जिला रोहतक—वलवन्त सिह - प्रधान, जगवीर सिह - मन्त्री, राजसिह - कोषाध्यक्ष। गढी बोहर जिला रोहतक—लालचन्द - प्रधान, सत्यवीर शास्त्री - मन्त्री, शास्त्री रणवीर सिह - कोषाध्यक्ष। आसन जिला रोहतक—धारेसिह - प्रधान, बलबीर - उपप्रधान, जयदेव - मन्त्री, रणवीर - उपमन्त्री, शास्त्री जयवीर - कोषाध्यक्ष। पाकस्मा जिला रोहतक—सुरजम - प्रधान, देवव्रत - मन्त्री, किनात्र कौर - कोषाध्यक्ष। सरूपगढ जिला भिवानी—सुमेर सिह - प्रधान, आजाद सिह - मन्त्री, कर्ण सिह - कोषाध्यक्ष।

आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी प्रधान महासिह, मन्त्री आचार्य ऋषिपाल, कोषाध्यक्ष चैनसुख, खेडी जट रोहतक प्रधान-उमरावसिह, मन्त्री शास्त्री आनन्द देव, कोषाध्यक्ष वेदप्रकाश, लाढ़ोत रोहतक प्रधान मा. बलवीर सिह, मन्त्री मा० रामप्रकाश, कोषाध्यक्ष महासिह, सवाना रोहतक प्रधान धूपसिह, मन्त्री शुभराम कोषाध्यक्ष टेकराम, एचरा जींद प्रधान वजेसिह, मन्त्री चन्दगीराम, कोषाध्यक्ष महासिह, बाघडू जीद प्रधान राजेन्द्रसिह, उपप्रधान-महावीर, मन्त्री राजवीर, उपमन्त्री शमशेर, कोषाध्यक्ष सुन्द्रसिह, पलड़ा रोहतक प्रधान प्रतिपाल, मन्त्री उमरावसिह, कोषाध्यक्ष-रणधीर, मातनहेल प्रधान धर्मपाल, मन्त्री बलदेव, कोषाध्यक्ष विजय कुमार, जिहाजगढ़ रोहतक प्रधान चन्द्रभान, मन्त्री उत्तमचन्द, कोषाध्यक्ष सुलतान सिह, बराणी रोहतक प्रधान प्रतापसिह, मन्त्री-महावीर, कोषाध्यक्ष सरजीत।

सब आर्यों से एक ज्वलन्त प्रश्न

क्या आप हृदय से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अपना परम लक्ष्य मानते हैं?

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' आर्यों को वेदाज्ञा है। महर्षि इसको परम मान आयु भर प्रयत्नशील रहे और इसके लिए हर प्रकार के कष्ट झेले और जीवनोत्सर्ग किया। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि पूर्व काल की तरह संसार भर में आर्यों का बोलबाला हो और आर्य 'चक्रवर्ती राज्य' बने। उनका मानना था कि बिना आर्य राज्य बने सर्वत्र सुख शांति एवं समृद्धि न हो सकेगी।

प्रश्न उठता है कि क्या हम 'आर्य' इस लक्ष्य को हृदय से मानते है? हृदय से मानने का अर्थ होता है हर समय लक्ष्य समक्ष और इस के प्राप्त करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशीलता और स्वार्थ परित्यागता। आओ! हम अपने हृदय का निरीक्षण करें और वास्तविकता जान अपनी कमी कमजोरियों को दूर करें।

हृदय निरीक्षण निम्न प्रश्नों का स्वयं उत्तर ले अपना मार्ग प्रशस्त करें:—

१- क्या हम अपने को 'आर्य' कहने, कहलाने में 'गर्व' अनुभव करते हैं।

२- क्या हम समस्त आर्य सन्तान हिन्दू मात्र में 'आर्यत्व' जाग्रत करें, इनमें एकात्मकता लाने के हृदय से इच्छुक हैं?

३- क्या हम हृदय से अपने देश को आर्यवर्त और यहां 'आर्य राज्य' बनाना चाहते हैं?

यदि उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर आपको 'हां' में मिले तो आज से ही निम्न संकल्प 'प्रभु प्रार्थना' के रूप में अपनाने और अपने घर अपने समाज, अपने स्कूल पाठशाला में नित्य बोले या बुलवाएं। यह हमारा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' की ओर पहला महत्वपूर्ण पग होगा। आर्य-आर्य राज्य हेतु इसे नित्य रूप देना होगा। तभी सफल मनोरथ होंगे।

प्रभु-प्रार्थना' रूप में हमारा संकल्प निम्न प्रकार होना चाहिए:—

हे परम पिता परमात्मन! आपकी महान् कृपा से हमें आर्य कुल में जन्म मिला। इस नाते आपने हमें सत्य सनातन वेद-ज्ञान का अधिकारी बनाया।

हम आपका प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए प्रतिज्ञा लेते है कि:—

१- हम सच्चे अर्थों में आर्य बनेंगे। समस्त आर्य सन्तान हिन्दू मात्र जाग्रत कर उनमें एकात्मकता, सत्यसनातन आर्य धर्म पर चलने को प्रेरित करेंगे।

२- आपकी आज्ञा 'कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्' का तन-मन-धन से पालन करेंगे।

३- सर्वप्रथम अपने देश को फिर से सच्चे अर्थ में 'आर्यावर्त' बना यहां स्वच्छ 'आर्य राज्य स्थापित करेंगे।

४- समस्त संसार में वेद ज्ञान आर्य संस्कृति फेला भूमण्डल पर पूर्वकाल की भांति चक्रवर्ती आर्यराज्य स्थापित करने की ओर अग्रसर होंगे।

प्रभो! हमें इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शक्ति दो। हम आप को विश्वास दिलाते हैं एवं प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम हर चुनौती का सर्वस्व बलिदान दृढ़ता से मुकाबला करेंगे और आपके आशीर्वाद से अवश्य सफल मनोरथ होंगे।

आर्यो! हम आर्य-सन्तान हिन्दू अपने देश में ७०-७५ करोड़ हैं, बहुमत में हैं फिर भी यह छोटे-छोटे अल्पसंख्यक सम्प्रदाय हमारे देश को टुकड़े-टुकड़े करने पर तुले बैठे हैं। खुले रूप से अपनेअपने 'स्तान' बनाने में तोप-तलवार बन्दूक का प्रयोग कर रहे हैं। आओ आर्यत्व जाग्रत कर समस्त हिन्दू मात्र में एकात्मता लायें और देश की रक्षा कर इसे 'आर्यावर्त' बना यहां आर्य राज्य स्थापित करें।

विशेष:—प्रार्थना में अपनी इच्छानुसार आप प्रभु भक्ति के भाव उपरोक्त भावों के साथ सम्मिलित कर सकते हैं।

लेखक.—भोलानन्द दिलावरी, पूर्वप्रधान केन्द्रीय आर्यसभा, अमृतसर
पता:—दिलावरी स्ट्रीट, पुतलीघर, अमृतसर

आर्यसमाजों के नाम पाती

बहुत वर्षों पहले मैंने आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों में जाना बन्द किया हुआ था किन्तु कुछ विद्वानों के कहने और अनेक आर्य-समाजों के अधिकारियों व नेताओं के आग्रह पर पुनः आर्यसमाजों के उत्सवों के कार्यक्रम स्वीकार करने प्रारम्भ कर दिए थे, परन्तु अब पुनः पूर्ववत् परिणामों पर ही पहुँचा हूं कि उत्सवों पर जाना समय और सामर्थ्य का दुरुपयोग करना है। अपवादों की बात मैं नहीं कहता किन्तु सामान्यतया उत्सवों पर कार्यकर्त्तागण वक्ताओं के—चाहे दस हों या बारह—प्रत्येक बैठक में सभी के भाषण कराना चाहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वक्ता जो कहना चाहता है, वह नहीं कह पाता, केवल मंच पर उपस्थिति लिखा देता है।

न चाहते हुए भी अनेक स्थानों पर कार्यकर्त्ताओं को यह सुझाव भी दिया कि आपके पास दस या बारह वक्ता हैं तो कुछ को प्रातः कालीन सभा में बुलवाइये, कुछ को मध्याह्न की सभा में और कुछ को सांयकालीन सभा में समय दीजिए। परन्तु लगता ऐसा है कि जैसे कोई सनक सवार हो, बुलवायेंगे प्रत्येक वक्ता को प्रत्येक सभा में। पहले तो स्वयं ही अधिक वक्ता बुला लेते हैं फिर कोई अनाहूत आ जाए तो उसे भी सम्मिलित कर लेते हैं।

आजकल यात्रा कठिन हो गयी है, यह सभी जानते हैं। यात्रा की यातना भोग कर पहुंचों तो ठहरने की कोई सुविधाजनक व्यवस्था नहीं। एक-एक कमरे में अनेकानेक व्यक्ति ठहरे होते हैं, परिणामस्वरूप न पढ़ने की सुविधा होती है और न लिखने की। सम्पूर्ण समय पड़े रहने तथा बक-झक करने और सुनने में समय विनष्ट हो जाता है और तत्पश्चात् सभा स्थल पर वही पन्द्रह-बीस या तीस मिनट।

इसके अतिरिक्त एक त्रासदी यह भी है कि ऐसे वक्ता बुला लिए जाते हैं और प्रायः उन्ही को प्रमुखता दी जाती है, जो सिद्धात विरुद्ध अनर्गल प्रलाप करते रहते हैं। यदि उनके भाषण की अनर्गलताओं का निराकरण और प्रतिवाद करना चाहो तो कार्यकर्त्ता यह कहकर कि—"आर्यसमाज के विषय में जनता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा" रोकते हैं। ऐसे कार्यकर्त्ताओं से कोई पूछे कि क्या इन सिद्धान्त विरुद्ध अनर्गल भाषणों से आर्यसमाज का प्रचार होगा ? यह तो श्रोताओं को आर्यसमाज के विषय में भ्रांति मे डालने तथा श्रोताओं के सामने आर्यसमाज का भ्रांतचित्र उपस्थित करने का घृणित और दुष्प्रयत्न है। ऐसे कार्यकर्त्ताओं को या तो यह समझा जाए कि वह वास्तव में आर्यसमाजी है ही नही अपितु आर्यसमाज मे घुसकर आर्यसमाज की जड़े काट रहे हैं और या फिर इतने बुद्धिहीन है कि न तो आर्यसमाज का समझते हैं और न समझना ही चाहते है। किसी वक्ता का कभी कोई तर्क पसन्द आ गया या आर्यसमाज की कोई एक दो मान्यता पसन्द आ गई होती है, बस इतने ही आर्यसमाजी है और अब आर्यसमाज के अधिकारी बने तो तीन दिन के लिए उत्सव के नाम पर लोकेष्णापूर्ति और स्वमन मना लेने की प्रक्रिया पूर्ण कर लेते हैं।

मेरे द्वारा न तो आर्यसमाज के मंच से अनर्गल भाषणों को सहन किया जा सकता है और न मैं समय की विनष्टि को तैयार हूं। मैं हू आर्यसमाज का, आर्यसमाज के लिए हूं किन्तु आर्यसमाजों के अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि मुझे उत्सवों पर केवल वही समाजें बुलायें जो एकान्त आवास और पूरा समय दे सकें और भ्रात भाषण करने वालों की भ्रान्तिपूर्ण बातों का उत्तर देने द, अन्यथा मुझे केवल वेद-कथा के लिए ही बुलायें। अलमतिविस्तरेण।

शुभकाम
वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष
वैदिक संस्थान, नजीबाबाद।

—मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गाधी

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा क्यों ?

—सत्यवान आर्य, गाव पो० मकड़ौली कलां (रोहतक)

हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में सबसे पहले यदि किसी ने प्रयत्न किया तो वे स्वामी दयानन्द थे। उस संन्यासी ने आज से १०० वर्ष पूर्व यह देख लिया था कि यदि भारत की कोई राष्ट्रभाषा है तो केवल मात्र देवनागरी लिपि में हिन्दी है। उन्होंने गुजराती होते हुए भी अपने समस्त ग्रन्थ तथा लेख और पत्र हिन्दी भाषा में लिखे।

स्वामी दयानन्द तो शिक्षा का माध्यम भी हिन्दी ही चाहते थे। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि "जब पांच-पांच वर्ष के लड़का या लड़की हों, तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें।" स्वामी जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कुरान शरीफ का हिन्दी भाषा में अनुवाद करवाया। स्वामी जी ने अपनी पुस्तकों में सर्वत्र हिन्दी भाषा की जगह आर्यभाषा शब्द का ही प्रयोग किया। राष्ट्रभाषा प्रेमी आज भी हिन्दी के प्रचार के लिए तत्पर दिखाई देते हैं। डा० भीमराव अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक "थाटस आन पाकिस्तान" में स्वामी दयानन्द की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "हिन्दी न तो इतनी क्लिष्ट हो जिसमें संस्कृत शब्दों की भरमार हो और न एसी ही हिन्दी हो जिसमें सरलता के नाम पर अरबी और फारसी के शब्द जबरदस्ती ऊपर से थोपे गए हों। सत्यार्थप्रकाश में जो हिन्दी स्वामी दयानन्द ने लिखी है वह स्वाभाविक है।"

स्वामी दयानन्द जी तो राष्ट्रीय एकता का आधार भी हिन्दी को मानते थे। उदयपुर से श्री मोहनलाल विष्णु लाल पण्डया ने एक बार स्वामी जी से पूछा—महाराज राष्ट्र की एकता के लिए आप किन-किन बातों को महत्त्व देना पसन्द करेंगे। स्वामी जी ने तपाक से कहा—एक भाषा, एक भाव और एक धर्म राष्ट्रीय एकता के आधार हैं। इनमें भी भाषा पर उन्होंने विशेष बल दिया।

हिन्दी भाषा हमारी राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता की प्रतीक है। इसके व्यापक प्रसार-प्रचार तथा व्यवहार में प्रयोग की नितान्त आवश्यकता है। इसके प्रचलन की अधिक से अधिक व्यवस्था जरूरी है। इसी तरह से स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात महात्मा गाधी ने भी भारत देश में हिन्दी के प्रयोग पर बल दिलवाना चाहा। जब भारतीय संविधान बना तो सविधान सभा के अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद जी की हार्दिक इच्छा थी कि हमारा संविधान हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में ही तैयार किया जाए। परन्तु संविधान की धाराओं के प्रायः सभी लेखक अंग्रेजी के ज्ञाता थे। फिर भी डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने श्री घनश्यामदास गुप्त की अध्यक्षता मे सविधान को हिन्दी अनुवाद के लिए एक समिति बनाई। इस प्रकार भारतीय सविधान सभा ने हिंदी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं मे सविधान के पाठों पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी।

अब देश में भारी सत्ता परिवर्तन हुआ है और ससद में लगभग हिंदी प्रेमियों की सख्या ज्यादा है और बहुत सारे सासदों ने हिन्दी और संस्कृत भाषा में शपथ ली है और प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य भी है कि उसे अपनी राष्ट्रीय भाषा में ही शपथ लेनी चाहिए। सबसे पहले मुख्यमन्त्री चौ० मुलायम सिह यादव हैं जिन्होने पूरे उत्तरप्रदेश में हिन्दी को प्राथमिकता दी है। उन्होने यहा तक भी घोषणा का है कि अगर अंग्रेजी भाषा में पत्र आये तो उसका जवाब नही देना। घोषणा-घोषणा ही नही उन्होंने हिन्दी के प्रयोग का कड़ाई से पालन करवाया है। चौ० साहब ने तमिलनाडु के मुख्यमन्त्री से पत्राचार मे यहा तक कह दिया कि मुझे अंग्रेजी भाषा के पत्रों की अपेक्षा तमिल भाषा के पत्रों का उत्तर देने में अति प्रसन्नता होगी। लेकिन कुछ निहित स्वार्थी उनके इस कल्याणकारी कार्य में भी विघ्न डालने की कोशिश कर रहे हैं। जो देश के अहित में है। इसी तरह से हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश और हरयाणा के मुख्यमंत्रियों ने भी हिंदी की घोषणा करके एक सराहनीय कार्य किया है। लेकिन देखना ये

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हरिशचन्द्र विद्यालंकार नहीं रहे

बम्बई २० जून (स)। 'नवभारत टाइम्स' के पूर्व उपसम्पादक एवं आर्यसमाजी नेता पंडित हरिशचन्द्र विद्यालंकार का ८१ वर्ष की आयु में कल रात यहां लम्बी बीमारी के बाद देहान्त हो गया।

पं० हरिशचन्द्र लम्बे समय से कैंसर से पीड़ित थे। कुछ वर्ष पूर्व इसी रोग के सिलसिले में उनका ऑपरेशन भी हुआ था।

गुरुकुल कांगड़ी के रजत पदक विजेता पं० हरिशचन्द्र रसायन शास्त्र में स्नातक थे। वह १२ साल तक विज्ञान के अध्यापक रहे। इसके बाद धर्मयुग के सम्पादकीय विभाग में आए। फिर नवभारत टाइम्स में १८ वर्ष तक रहे और यहां से सेवानिवृत हुए।

योग में उनकी विशेष रुचि थी। ध्यान योग तथा मंत्रजाप की शक्ति पर उनकी पुस्तकें काफी लोकप्रिय हुई। देश-विदेश में योग, धर्म, विज्ञान पर उनके प्रवचन हुए। उनकी नवीनतम पुस्तक 'तनाव से मुक्ति' इस विषय पर अधिकारिक मानी जाती है।

उनके शोक संतप्त परिवार में उनकी पत्नी के अलावा पुत्र, पौत्र तथा पौत्री भी हैं। —नभाटा से साभार

कानपुर में तीन विधर्मी हिन्दू बने

कानपुर—आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में आर्यसमाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने दो मुस्लिम व एक ईसाई युवती को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा देकर हिन्दू धर्म को ग्रहण कराया।

श्री आर्य ने २४ वर्षीय एम. ए. तक शिक्षित ईसाई युवती कु० लविनो‍ीन लायल की शुद्ध होने के पश्चात् उसका नाम छवि रखा गया तथा एक सिन्धी युवक अविनाश बालचन्दानी के साथ विवाह करा दिया।

इसी प्रकार मुस्लिम युवती कु० अजम का नाम अनुराधा रखा गया एव रामकुमार नामक युवक से विवाह कराया गया।

तीसरी शुद्धि एक १३ वर्षीय मुस्लिम युवक कमर इकबाल की की गयी। उसका नाम सागर प्रसाद रखा गया।

जन्म-भूमि श्रीराम को

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सुविख्यात है पुरी अयोध्या जन्मभूमि श्रीराम की।
यहां पर कहां बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।
छाया है आतंक देश में सियार शेर सम गुर्राते हैं।
हो रहे अत्याचार प्रबल अति दीन दुखी जन चिल्लाते हैं।
राष्ट्र शक्तियां सुस्त हो रही इस भारत सुखधाम की।
यहां पर कहां बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।
यह भारत सरकार राम मन्दिर पर रोक लगाती है।
राम कृष्ण के वंशज होकर जरा शर्म नहीं आती है।।
राम मर्यादा पुरुषोत्तम जिन कीमत नही एक छदाम की।
यहां पर कहां बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।२।।
उखाड फेंको हृदय भूमि से अहंकार का खरपतवार।
स्नेह सूत्र में बन्ध जाओ लो सदविचार निज हृदयधार।।
राम नाम की ध्वनि गुंजा दो देर नहीं शुभ काम की।
यहां पर कहां बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।३।।
यही समस्या बनी रही तो फिर भविष्य में हल क्या होगा।
यह तन के उजले मन के काले इनसे कार्य सफल क्या होगा।।
जब सूख गई सारी खेती तो फिर बरसात है कौन काम की।
यहा पर कहा बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।३।।
सावधान राम भगतो सीधेपन काम नही चलता।
टेढी उगली किए बिना हांडी से घी भी नही निकलता।
बढ़े चलो निर्भय होकर क्या बाट तको परिणाम की।
यहां पर कहां बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।५।।
हम आर्यवीर श्रीराम भक्त सतपथ पर कदम बढ़ायेंगे।
पूर्ण हो सारी अभिलाषा अब मन्दिर शीघ्र बनायेंगे।।
कहे 'स्वरूपानन्द' तुम्हें सौगन्ध राम घनश्याम की।
यहां पर कहां बाबरी मस्जिद आ टपकी इस्लाम की।।६।।

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा क्यों ?

(पृष्ठ ५ का शेष)

है कि वे इसको कितना अमली जामा पहनाते हैं। हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री बनारसीदासगुप्त आर्य समाजी एवं हिंदी प्रेमी हैं। हरयाणा वैसे भी हिंदी भाषी प्रदेश है। इसलिए हरयाणा राज्य के निवासी वर्तमान मुख्यमंत्री से अपेक्षा करते हैं कि उ० प्र० सरकार की भांति हरयाणा को भी अधीनस्थ सेवाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके हिंदी में कराने के आदेश दिए जावें, साथ ही साथ हरयाणा सरकार से जो पत्राचार हों हिंदी में ही हों, तभी हरयाणा वासी अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करेंगे तथा साथ ही सत्ता परिवर्तन के साथ व्यवस्था परिवर्तन की ओर अग्रसर होंगे।

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है

(पृष्ठ ३ का शेष)

उसका पीछा नहीं छोती। तिरस्कृत होकर सम्मान की आशा में दूसरे सम्प्रदाय में जाए और वहां भी चैन न मिले तो यदि फिर पुराने सम्प्रदाय और समाज में आना चाहे उसका रास्ता पाखण्डी धर्माचार्यों ने बन्द कर दिया था, वह तथाकथित 'अपवित्र' को पवित्र' बनाने का शुद्धि का रास्ता आर्यसमाज ने खोल दिया। आर्यसमाज एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय में चले जाने का इसलिए स्वागत नही करता क्योंकि इससे साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक वैमनस्य को बढ़ावा मिलता है, जो आरम्भ में ही कहे गए महर्षि के मन्तव्यों के सर्वथा विरुद्ध है।

'आर्यसभा' या 'भारतीय समाज' जैसे नए नए नामों से संगठन खड़ाकर आर्यसमाज के स्वरूप को बिगाड़ने का ही प्रयास है। ऐसे सगठनों से महर्षि के मन्तव्यों को मानने वाले किसी भी आर्यसमाज में सदस्य को नाता नहीं जोड़ना चाहिए और ऐसे प्रयासों की निन्दा करनी चाहिए।

जुआं मे आर्य वीर दल का शिविर सम्पन्न

ग्राम जुआं जि सोनीपत के राजकीय विद्यालय के प्रांगण में दिनांक १७ जून से २४ जून १९९० तक आर्य वीर दल का सदाचार, व्यायाम तथा योगासन शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री एव वेद-प्रचाराधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री ने आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए उन्हे शिविर में सप्ताह भर रहकर अपने जीवन का निर्माण, वैदिक धर्म के सिद्धांतों के अनुसार करने का शिक्षण प्राप्त करने का सुझाव दिया। शिविर में १०२ वीरों ने बहुत ही लगन के साथ आर्य वीर दल के शिक्षक श्री हरिसिंह आर्य एव श्री राजेश आर्य से प्रभाव शाली ढंग से शिक्षा ग्रहण की। सभा के भजनोपदेशक पं चिरंजीलाल एव श्री रतनसिंह ने शिविर के अतिरिक्त सप्ताह भर ग्राम के कोने कोने में शराब, मास, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध प्रचार किया। प्रतिदिन विद्यालय में यज्ञ तथा उपदेश होता रहा।

२४ जून को समापन समारोह पर प्रातःकाल ग्राम में शोभायात्रा निकाली गई जिसमें आर्य वीरों ने वैदिक धर्म, आर्यसमाज अमर रहे ऋषि दयानन्द की जय, शराब पीना छोड दो आदि जयघोष लगाए। आर्यवीरों ने योगासन तथा व्यायाम प्रदर्शन किया, श्री दलीपसिंह की अध्यक्षता में पारितोषिक वितरण समारोह हुआ, श्री राममेहर मुख्य अध्यापक, श्री हरिश्चन्द्र स्नेही सोनीपत, डा. नरेन्द्रसिंह देशवाल ने आर्य वीरों को सम्बोधित किया, सभा को वेदप्रचार के लिए ७०० रु. दिए। —केदारसिंह आर्य

इन्दोर में अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन

हम सब जानते ही हैं कि हमारा देश अभी भी अंग्रेजी का गुलाम है। हमारी केन्द्रीय सरकार अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त होने के लिए विचार भी नहीं कर रही है। लेकिन कुछ प्रान्तीय सरकारे उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरयाणा ने भाषाई गुलामी से स्वतन्त्र होने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिए हैं, किन्तु शेष प्रान्तों को एवं केन्द्र सरकार को विदेशी भाषा की गुलामी से स्वतन्त्र होने के लिए प्रेरित करना होगा। हमें जनता की मानसिकना को भी बदलना होगा कि वह दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी को हटाकर केवल अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को ही व्यवहार में लाने का अभ्यास करें। इसके लिए सम्पूर्ण देश में एक साथ निरन्तर प्रचार एवं संघर्ष करने की तैयारी करने के लिए इन्दौर में अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

हमारी मातृभाषाये तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बंगला, असमिया, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, कश्मीरी, उर्दू, संस्कृत और हिन्दी अपने सपूत बेटे, बेटियों से ४२ वर्षों से आशा लगाए हुए है कि अब तो हमें अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त हो जाना चाहिए। हम तो अपने पूर्वजों के बलिदान का लाभ उठाकर राजा बन स्वतन्त्रता का सुख भोग रहे हैं। हमारी मातृभाषायें अंग्रेजी की दासी बनकर गुलामी की बेडियों में जकडी हुई हैं। इस दासत्व के कलंक से हमारी मातृभाषाओं को स्वतन्त्र कराना हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कराने और हमारी मातृभाषाओं को अपने अपने प्रांतों मे विदेशी भाषा अंग्रेजी के स्थान पर प्रतिष्ठित कराने के लिए सर पर कफन बाधकर सकल्प करने के लिए समर्थकों व साथियों सहित इन्दौर अवश्य पहुंच कर भावी योजना तैयार करने में सहयोग करे। कृपा कर इस सम्बन्ध में आप अपनी योजना लिखित में भेजने का कष्ट करे।

इन्दौर सम्मेलन में आपके निवास व भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था रहेगी।

२८ से ३० जुलाई अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन में मुलायमसिह जी यादव (मुख्यमन्त्री उत्तरप्रदेश), सुन्दरलालजी पटवा (मुख्यमन्त्री मध्यप्रदेश) शान्ताकुमारजी (मुख्यमन्त्री हिमाचल प्रदेश), बनारसी दास गुप्ता (मुख्यमन्त्री हरयाणा), रविरायजी (अध्यक्ष लोकसभा), देशरत्न डा० चन्द्रशेखरन (केरल) तथा आचार्य राममूर्ति आदि को आमन्त्रित किया गया है।

संकल्प करें

१- अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी में नहीं करेगे। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेगे।

२- अपने पत्रों पर पता अंग्रेजी में नही लिखेगे। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेंगे।

३- शासन से पत्र व्यवहार अंग्रेजी में नहीं करेंगे। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेंगे।

४- दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग नही करेंगे। अपनी आदत बनावेगे कि मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी के शब्दों का प्रयोग करेगे।

५- हम व्यापारी अपनी पावती व हिसाब अंग्रेजी में नही लिखेंगे। अपना समस्त कार्य मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेंगे।

६- हम कारखानेदार हमारे द्वारा निर्मित सामान पर और उसके डिब्बों पर गुलामी की निशानी अंग्रेजी नही लिखेंगे। प्रत्येक प्रांत की भाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेगे।

७- हम चिकित्सक, अभिभाषक, मन्त्री, शासकीय सेवक अपनी आदत बनावेगे कि अंग्रेजी का व्यवहार बन्द कर मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी का व्यवहार करेंगे।

८- अपने बालकों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में नहीं भेजेंगे। मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी माध्यम के विद्यालय में भेजेंगे और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के संचालकों से आग्रह करेंगे कि अंग्रेजी माध्यम को हटाकर राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही पढ़ावें। अंग्रेजी पढाकर हमारे बालकों को विदेशी नहीं बनाकर राष्ट्रभक्त बनावे।

९- हम अपने बच्चों से डेडी, मम्मी, अंकल, आंटी बुलवाना बन्द करेंगे और पिताजी, माताजी बुलवाने की आदत डालेंगे।

१०- समस्त अभिनन्दन पत्र एव निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में नही भेज कर हिन्दी में ही भेजेंगे।

११- हमारे नामपट पर और विज्ञापन पर अंग्रेजी में नही लिखवायेंगे।

१२- हम अपने बच्चों को विदेशी संस्कृति में नहीं ढालेंगे। अपनी भारतीय संस्कृति में ढालेंगे।

—जगदीशप्रसाद वदिक, अध्यक्ष

उठो धरा के अमर सपूतो

सिंह-नाद कर उठो जवानो, समय नहीं है सोने का।
भारत मां घनघोर कष्ट में, अवसर नही है खोने का॥
पुण्य धरा पर भीष्म जी ने, अपना प्रण निभाया था।
हस्तनापुर की रक्षा में ही, वीर साहसी पाया था॥
कृष्ण जो ने कस मारकर, अत्याचार हटाया था।
अपने हाथों उग्रसेन को, मथुरा नृप बनाया था॥
घोर अन्धेरा भारत में, दयानन्द जी आए थे।
अन्धकार से हटा हमें, प्रकाश के पथ दर्शाए थे॥
उठो धरा के अमर सपूतो, कौशल आज दिखाना है।
अपने पूर्वजों की भांति, फिर से ध्वज फहराना है॥
जन्म लिया है जीना सीखे, मृत्यु मे क्या घबराना।
महेश यह तो सत्य आखिरी, मौत सभी को ही आना॥

—महेश चन्द्र आर्य, पन्हैडा खुर्द,
बल्लभगढ़, फरीदाबाद (हरयाणा)

यज्ञ सम्पन्न

१६ जून को आर्य निवास नलवा (हिसार) में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ महाशय महावीर प्रसाद प्रभाकर जी के ब्रह्मत्व में हुआ। प्रभाकर जी ने बडे ही सरल एव मार्मिक शब्दों में वेदमन्त्रों के हवाले से हवन की व्याख्या की तथा यज्ञ का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी रखा। यज्ञ पर स्कूली बच्चो ने भाग लिया।

—अत्तरसिह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

करदो ये निर्भय ऐलान

भारत वीरो होश सम्भालो, क्यों सोए हो चादर तान।
मिल-जुल करके कदम बढ़ाओ, करो देश अपने का ध्यान।।
याद करो पुरखों का गौरव, जागो ऋषियों की सन्तान।
राम कृष्ण के वंशज हो तुम, बने हुए हो क्यों नादान।।
आज मिटाने को भारत को, दुष्ट रहे हैं कर षडयन्त्र।
खतरे में है आज जवानो, सुनो हमारा प्रजातन्त्र।।
यवन और ईसाई मिलके, करते हैं शैतानी रोज।
देश द्रोही लोग सुखी हैं, करते हैं मनमानी रोज।।
ऋषियों के सुत हाय विधर्मी - बनकर खोते हैं निज धर्म।
वैदिक धर्म विसार बावले - करते हैं क्यों खोटे कर्म।।
भारत को कमजोर रहे कर - तनिक नहीं आती है शर्म।
महाराणा प्रताप शिवा सा - रक्त रगों में रहा न गर्म।।
नेता वोटों के चक्कर में - रहते हैं सुनलो दिन रात।
पदलोलुप हैं बड़े स्वार्थी - सहन रहे हैं कर उत्पात।।
देश-धर्म का ध्यान नहीं है - भूल चुके अपनी औकात।
हानि-लाभ किसमें भारत का - नहीं मूर्खों को है ज्ञात।। →
देश-भक्त हैं दुखी यहां अब - हिन्दू ऋषियों की औलाद।
जिन्हें तनिक भी चैन नहीं है - ईश्वर को करते हैं याद।।
४३ वर्ष भारत को - हुऐ गए हैं हो आजाद।
फूले फले विधर्मी भारी - हिन्दू हुए बहुत बरबाद।।
अंगड़ाई ले उठो जवानो, करदो ये निर्भय ऐलान।
हिन्दू हैं मालिक भारत के, उनका है ये हिन्दुस्तान।।
जिन्हें यहां रहना है सुनलें, बात खोल वे अपने कान।
वेद शास्त्र गीता का उनको, करना होगा अब सम्मान।।

—पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक
ग्राम पो० बहीन जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

माली की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि हरयाणा के कार्यालय में एक अनुभवी माली की आवश्यकता है। वेतन अनुभव के आधार पर दिया जाएगा। इच्छुक शीघ्र सम्पर्क करें।

महाशय भरतसिंह
सभा उपप्रधान, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं. २३२०७/७३ रजि. नं. P/RTK ४२ ८,०८,९१,०८०



ओ३म् कृ

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए. आषाढ़ २३, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३० ७ जुलाई १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

रोहतक में कश्मीरी शरणार्थियों के आवास की अस्थाई व्यवस्था

कार्यालय प्रतिनिधि द्वारा

●

रोहतक—एक जुलाई रविवार को स्थानीय दुर्गाभवन भिवानी अड्डा पर नगर के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो. शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में श्रीनगर के शरणार्थियों के लिए रोहतक में अस्थायी आवास की व्यवस्था करने पर विचार किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालयाधीक्षक श्री केदारसिंह आर्य ने कश्मीरी शरणार्थियों के विषय में जानकारी देते हुए बताया कि गत सप्ताह सभा के कार्यालय में श्रीनगर के तीन शरणार्थी आए थे। उन्होंने सप्ताह भर सभा के अतिथि कक्ष में निवास किया। उन्हें सभा की ओर से वैदिक साहित्य भेंट किया गया उन्होंने अपनी दर्दभरी कहानी सुनाते हुए कहा कि पाकिस्तान से प्रशिक्षण प्राप्त करके उग्रवादी प्रतिदिन श्रीनगर में आ रहे हैं और वे असामाजिक तत्वों के साथ हिन्दू परिवारों के घरों पर आक्रमण करते हैं घर का मुल्यवान सामान छीन लेते हैं तथा बहू-बेटियों का अपमान कर रहे हैं।

मुसलमान बनने पर विवश करते हैं, इन्कार करने पर जलती हुई सिगरेट से हिन्दुओं के शरीर पर अल्लाह आदि लिख देते हैं। इस आतंक के कारण हिन्दू परिवार श्रीनगर से पलायन करके जम्मू शरणार्थी शिविर में आ गए हैं। जम्मू में रह कर रोजगार तलाश करना कठिन हो गया है क्योंकि वहां रोजगार के साधनों की बहुत कमी है। उन्होंने बताया कि हमारे लिए पजाब तथा दिल्ली की अपेक्षा हरयाणा प्रदेशको अपने लिए सुरक्षित मानते हैं यदि यहां हमारे परिवारों के लिए आवास आदि की अस्थायी व्यवस्था हो जावे तो हम सम्मानपूर्वक जीवनयापन कर सकते हैं। आतंक के वातावरण में श्रीनगर लौटना कटिन है क्योंकि वहां हमारे जीवन तथा धर्म को खतरा है।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि कश्मीरी भाइयों की इस संकट की घड़ी में हमें तन, मन तथा धन से सहायता करनी चाहिए। विदेशी ताकते पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में तोड-फोड कराने के लिए धन भेजती रही हैं, परन्तु अब परिस्थिति बदलने लगी है। अमेरिका तथा चीन में अदरूनी झगड़े आरम्भ हो गए हैं। अत अपनी समस्याओं को सुलझाने मे अधिक रुचि होने के कारण अब वे पाकिस्तान मे मुख मोडने लगे लगे है। अत: हमें अपने इन शरणार्थी भाइयों को सहारा देना चाहिए। श्रीनगर में हालात सुधरने पर वे वहां सम्मानपूर्वक जा सकेगे तब तक के लिए हमें उनके आवास तथा भोजन आदि की अस्थायी व्यवस्था करके अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

प्रो० शेरसिंह की इस अपील पर महन्त लालनाथ गीरी के शिष्य महन्त [illegible] गीरी ने सहर्ष जीन्द मार्ग रोहतक के नवनिर्मित अनाथालय के विशाल भवन जिसमें १७ कमरे हैं, को कश्मीरी शरणार्थियों के आवास के लिए देने की पेशकश की।

सनातन धर्म सभा दुर्गाभवन रोहतक के प्रधान श्री कृष्णलाल खुराना ने भी दुर्गाभवन स्थित अपने विद्यालय के कमरों को कश्मीरी भाइयों के लिए आवास हेतु देने की पेशकश की। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने दोनों नेताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ऋषिलंगर से भी भोजन की अस्थायी व्यवस्था की जावेगी। शहर तथा ग्रामों से अन्न संग्रह करके उसकी पूरी सहायता की जावेगी। डा० रविन्द्र सुपुत्र डा० विश्वम्भरदास स्वतन्त्रता सेनानी भिवानी अड्डा रोहतक ने उसी समय एक बोरी अन्न के लिए २५१ रुपए नकद दान दिया।

अन्त में कश्मीरी शरणार्थियों के आवास की अस्थायी व्यवस्था करने के लिए एक उपसमिति का गठन निम्न प्रकार किया गया:—

प्रधान— १- श्री कृष्णलाल खुराना प्रधान दुर्गाभवन रोहतक
मन्त्री— २- डा० रविन्द्र रावल भारत ओप्टिकल हस्पताल रोहतक
सदस्य—३- श्री सूबेसिंह सेवानिवृत उपमंडल अधिकारी रोहतक
४- श्री धर्मचन्द सेवानिवृत उपनिदेशक सहकारी बैंक लालचन्द कालोनी रोहतक
५- भक्त जीवनदास रोहतक
६- पं० श्यामसुन्दर कत्याल दुर्गाभवन रोहतक
७- घनश्याम दास आर्य शिवाजी कालोनी रोहतक

सभा के ऋषिलंगर में अन्नदाताओं की सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा गत अनेक वर्षों से सभा के मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में ऋषिलंगर चला रही है जिसमें आर्यसमाज के प्रचारक, कार्यकर्त्ता साधु संन्यासी तथा अन्य अतिथि प्रतिदिन भोजन करते हैं। पूर्व वानप्रस्थी रामपत जी आसन वाले ग्रामों से अन्न सग्रह करके लाते थे, उनके स्वर्गवास के पश्चात् उन्ही के ग्राम के भाई महाशय जयपालसिंह आर्य भजनोपदेशक ने सहर्ष इस कार्यभार को संभाल रखा है। वे भी उन्हीं की भांति ग्रामों से सैंकड़ों मन अन्न प्रतिवर्ष मांगकर सभा में जमा करवा रहे हैं। वे स्वयं भी एक क्विटल अन्न दान देते हैं। इस वर्ष उन्होंने निम्नलिखित दानी महानुभावों से अन्न तथा धन सग्रह किया है।

एक क्विटल देने वाले अन्नदाता:—श्री सुरेन्द्रसिंह छिक्कारा सुपुत्र श्री प्रियव्रत ठेकेदार ग्राम खेडी आसरा जिला रोहतक, श्री देवव्रत सुपुत्र वानप्रस्थी महावीर ग्राम बोहर जिला रोहतक, श्री प्रतापसिंह पूर्व सरपंच ग्राम वराही जि रोहतक, (शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्यो सावधान !

स्वामी अग्निवेश और आर्यसमाज

पं० फूलचन्द शर्मा 'निडर' भिवानी

दिनांक ३ जून १९९० के सार्वदेशिक पत्र के मुख्य पृष्ठ पर स्वामी अग्निवेश के वक्तव्य पर जो उन्होंने जयपुर में एक प्रेस कांफ्रेंस में दिया है कि "शीघ्र ही एक 'भारतीय आर्यसमाज' की स्थापना की जाएगी, जिसमें हिन्दुओं के अतिरिक्त ईसाई, मुसलमान सिख तथा बौद्ध आदि भी सम्मिलित हो सकेंगे।" स्वामी अग्निवेश के इस वक्तव्य पर डा. श्री भवानीलाल भारतीय ने जो आपत्ति की है उससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। परन्तु स्वामी अग्निवेश ने जयपुर में जो कुछ कहा है उसे पढकर मुझे बडा ही दुःख हुआ है।

स्वामी अग्निवेश सन्यास लेने से पूर्व घण्टाघर आर्यसमाज भिवानी में लगभग ६ मास मेरे पास रहे। तब उनके कुछ आर्य समाजी विचार थे। मेरी उनकी परस्पर खूब बाते होतीं और तब हम दोनों मिलकर 'भिवानी' में प्रभात फेरी भी करते थे। परन्तु उनके रोहतक में संन्यास लेने पर ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गए उनके विचारों में अन्तर आता चला गया। अब वे और चाहे जो हो परन्तु आर्यसमाज से कुछ नही होते है। जो आर्यसमाज उन्हे बुलाकर आर्यसमाज के मंच पर उनके भाषण करवाते हैं वे बडी भूल करते है आगे कोई आर्यसमाज उन्हें अपने उत्सवादि में बुलाने की भूल न करे। स्वामी अग्निवेश जी की इच्छा अब यह है कि वे भारत के ही नही अपितु सारी दुनिया के प्रमुख महापुरुषों में हों। उनकी यह इच्छा तो भगवान् जाने वह पूरी करेगा या नही, पर वे जितने भा हाथ-पांव मारते हैं वे होते है उनकी इसी इच्छा के लिए। स्वामी दयानन्द विवेकानन्द आदि जो महापुरुष हुए वे सब हिन्दुओं के महापुरुष कहलाए और भारत के महापुरुष कहलाए किन्तु स्वामी अग्निवेश चाहते हैं कि वे सारी दुनिया के और हिन्दू, मुसलमान, सिख तथा ईसाई आदि सबके महापुरुष कहलायें। वे कभी हरिजनों को लेकर उन्हें नाथद्वारे के मन्दिर में घुसेड़ना चाहते हैं, कभी अयोध्या की राम जन्मभूमि के मन्दिर तथा मुसलमानों की मस्जिद की एक सम्मिलित दीवार होने के गीत गाते हैं, इत्यादि और अब जयपुर में उन्होने यह कहकर कमाल ही कर दिया कि "शीघ्र ही एक भारतीय आर्यसमाज की स्थापना की जाएगी जिसमें हिन्दुओं के अतिरिक्त मुसलमान, ईसाई, सिख तथा बौद्धादि सभी सम्मिलित हो सकेंगे।"

मैं स्वामी जी के इस वक्तव्य पर उनसे कुछ प्रश्नों का उत्तर चाहता हूं। जो इस प्रकार हैं:—

१- क्या यह आर्यसमाज जिसके संस्थापक महर्षि दयानन्द हुए अभारती (विदेशी) आर्यसमाज है। आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करेंगे वही भारतीय होगी ?

२- यह जो महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज है वह भी मुसलमान, ईसाइयों आदि को शुद्ध करके तो उन्हे आर्यसमाज में सम्मिलित करता ही है और वे अपनी पूर्व की मान्यताओं को मानने लगते हैं। क्या आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करना चाहते हैं उसमें मुसलमान, ईसाई आदि भी रहेंगे और आर्य भी बन जायेंगे। यदि आपका बनाया आर्यसमाज ऐसा होगा तो मैं आपसे जानना चाहूंगा कि:— (क) दयानन्द के आर्यसमाज का तीसरा नियम यह है कि "वेद का पढ़ना/पढ़ाना और सुनना/सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" इसके स्थान पर आपके आर्यसमाज का क्या नियम होगा ? मुसलमानों की मान्यतानुसार यह नियम कुरान का पढ़ना/पढाना और सुनना/सुनाना तथा ईसाइयों का 'बाईबिल का पढ़ना/पढाना - होना चाहिए। दयानन्द के आर्यसमाज का सातवा नियम है कि सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।' तो क्या आपके समाज का यह नियम होगा कि काफरों को मारो लूटो, उनके घरों में आग लगा दो आदि ? स्वामी जी ! आप महापुरुष तो इतने बड़े बनना चाहते हैं कि आप से पहले इतना बड़ा सारी दुनिया में हुआ न हो परन्तु आप इतना भी नहीं जानते कि दो परस्पर विरोधी बातें दोनों ठीक कदापि नहीं हो सकती। (ख) आपके नए आर्यसमाज की स्थापना के बारे में आगे कुछ ऐसी साधारण बातें पूछना चाहता हूं जिनका आपसे कोई उत्तर न बन सकेगा।

(१- आपके समाज में जो मुसलमान आर्य बनेगा वह नमाज पढ़ेगा या संध्या करेगा या दोनों ? २- चोटी रखेगा या नहीं ? ३- मांस खाएगा या नहीं ? ४- सगोत्र विवाह करेगा या नहीं ? ५- यज्ञोपवीत रखेगा या नहीं ? क्या है कोई आपके पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर।)

महाराज ! अब हमारी और आपकी इसी में भलाई है कि यदि आर्यसमाजी बनना चाहते हैं तो शुद्ध होकर इमानदारी से पुनः आर्यसमाज में आ जाये और किसी ढोंग तथा महापुरुष बनने की इच्छा को त्याग दें। अथवा अखिलानन्द और भीमसेन की भांति आप भी आर्यसमाज को कोसते रहें और महर्षि दयानन्द को गालियां देते रहें। तथा दूसरों की चमचागिरि करते रहें। वरना आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करने जा रहे हैं उसकी स्थापना तो क्या होनी थी आपको पागलखाने में भेजना होगा।

धन और धर्म

पूरा जीवन स्वार्थ में है, परमार्थ का ध्यान नहीं।
धनके पीछे लगे हुए हैं, जीवन का भी ज्ञान नही॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, नाते बिल्कुल दूर किए।
किसी तरह से आना चाहिए, धन के पीछे लगे हुए॥
धन भी जरूरी है जीवन में, इसके बिना नहीं काम चले।
लेकिन धर्म छोड़कर धनसे, कभी न सच्चिदानन्द मिले॥
धन का संग्रह किया यदि, धन पति पुकारे जाओगे।
लेकिन जीवन सार मोक्ष से, वंचित ही रह जाओगे॥
राज-पाठ और धन-वैभव को, गौतम बुद्ध ने ठुकराया।
कितने ही महापुरुषों ने यहां, त्याग अनोखा दिखलाया॥
अंधकार को दूर करें, प्रकाश हमें लाना होगा।
भारत की इस पुण्य धरा पर, अमृत बरसाना होगा॥
भगवान मानते हैं पैसे को, यह तो भारी मूर्खता।
धन के पीछे भूल गए, जो है सृष्टि का रचियता॥

—महेशचन्द्र आर्य पन्हैड़ा खुर्द बल्लबगढ़ फरीदाबाद

शराब का ठेका नहीं रहा

अम्बाला, २० जून (निस) अम्बाला छावनी के सब एरिया कमाण्डर एवं ब्रिगेडियर कैन्टोमेंट बोर्ड के अध्यक्ष श्री ए०पी०एस० चौहान के प्रयासों से अम्बाला छावनी क्षेत्र में अब कोई शराब का ठेका नहीं रहा।

पिछले दिनों अम्बाला छावनी के प्रसिद्ध एडवोकेट एवं हरयाणा प्रदेश कांग्रेस (स) के प्रधान श्री ओमप्रकाश मलिक द्वारा श्री ए०पी० एस० चौहान के सहयोग से 'ठेका शराब' आबादी से बाहर आंदोलन चलाया था, जिसके फलस्वरूप छावनी क्षेत्र के सभी ठेकों को आबादी से उठाकर बाहर कर दिया गया है।

शराब हटाओ

देश बचाओ

तपोवन देहरादून में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

तपोवन देहरादून में अन्तर्राष्ट्रीय वेदप्रतिष्ठान, हैदराबाद के अधिष्ठाता श्री आचार्य वेदभूषण जी के संयोजकत्व व निर्देशन में दिनांक १५ मई, ९० से १५ जून ९० तक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में बंगाल, उत्तरप्रदेश, गुजरात पंजाब, हरयाणा, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश व अन्य प्रदेशों के अतिरिक्त मोरीशस से भी प्रशिक्षणार्थी पहुँचे थे जिन की संख्या लगभग ६० थी। सबसे अधिक प्रशिक्षणार्थी हरयाणा के थे। प्रशिक्षणार्थियों में स्त्री-पुरुष अनेक गुरुकुलों व आर्यसमाजों के अतिरिक्त स्वतन्त्र रूप में पुरोहित कार्य करने वाले आर्य जन सम्मिलित थे।

प्रशिक्षण के मध्य 'संस्कार-विधि' 'सत्यार्थप्रकाश' व ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का विशेष पठन-पाठन कराया गया। प्रतिदिन प्रातःकाल पौने चार बजे से रात्रि साढे नौ बजे तक के व्यस्त एवं आत्मीय कार्य क्रम में शुद्ध मन्त्र पाठ, संस्कारों की सविस्तार व्याख्या, संस्कारों की विधि, संस्कारों का मनुष्य-जीवन में महत्व आदि विषयों पर पूज्य आचार्य जी ने परिश्रम पूर्वक, विद्वता व मार्मिक शैली में प्रकाश डाला। प्रतिदिन एक घण्टे के लिए शंका-समाधान का भी कार्यक्रम चला इसके अतिरिक्त गर्भाधान संस्कार, नामकरण संस्कार उपनयन संस्कार, वेदारम्भ संस्कार, शाला कर्मविधि, शिलान्यास विधि, विवाह संस्कार,वानप्रस्थ संस्कार का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया जब कि अन्त्येष्टि संस्कार, वाग्दान यज्ञ एव उठावनी/उठाला किरया रस्म, पुत्रेष्टि यज्ञ, वृष्टि यज्ञ, व अनावृष्टि यज्ञ की भी व्याख्या एवं विधि का प्रशिक्षण दिया गया।

आचार्य जी ने संस्कारों व यज्ञों में एकरूपता लाने के लिए महर्षि दयानन्दकृत 'संस्कार-विधि' के आधार पर कुछ सिद्धांतों की सर्वत्र स्थापना पर बल दिया। इसके अतिरिक्त 'सत्यार्थप्रकाश' व 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' के कुछ समुल्लासों व विषयो की सरल, ग्राह्य व विस्तृत व्याख्या भी की। शिविर में प्रसिद्ध विदूषी श्रीमती डा० सुनीति शर्मा ने भी कुछ विषयों में मार्गदर्शन किया।

शिविर-समापन के अवसर पर दिनाक १५ जून को तपोवन के प्रधान जी की अध्यक्षता में एक दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् सन्यासी स्वामी सत्यपति जी महाराज के अतिरिक्त स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने प्रशिक्षणार्थियों को मंगलकामनाये व आशीर्वाद दिया तथा विदूषी डा० सुनीति आर्या (हैदराबाद), ब्र० दीपक (मोरिशस), इन्द्रजित् 'देव' (यमुनानगर), महेशदत्त श्रीवास्तव (टूंडला), हरिसिंह (भिवानी), रामनरेश गांधी (गोरखपुर), विमला गुप्त (मेरठ), सीतादेवी (ज्वालापुर), मधुसूदन (कलकत्ता), खगेन्द्र (दार्जिलिंग), हरकान्त (राजकोट), चन्द्रप्रकाश (रोपड) तथा कुछ अन्य विद्वानों व प्रशिक्षणार्थियो ने अपने-अपने अनुभव व विचार प्रकट किए। समारोह के अन्त में पूज्य आचार्य वेदभूषण जी ने उद्बोधन सन्देश देते हुए कहा कि आप कार्यक्षेत्र में एषणाएं त्यागकर पवित्रतापूर्वक व सेवाभाव से कार्य करें। पुरोहितों का दायित्व समाज निर्माण का है। बिना पुरोहित के समाज निष्प्राण देह के समान है। वह अपनी प्रभावशाली भूमिका के द्वारा समाज में नवोन्मेष उत्पन्न कर सकता है। अपनी शैली का यह तृतीय शिविर था। अगला पुरोहित प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने के लिए दार्जिलिंग से आर्यसमाज द्वारा निमन्त्रण प्राप्त हुआ।

—इन्द्रजित् देव

✻ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

नारनौल में आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

चिरकाल से आर्यसमाज के उत्सवों एव सत्सगों मे घटती हुई उपस्थिति एवं युवा शक्ति के अभाव को अनुभव करते हुए आर्यसमाज नारनौल की कार्यकारिणी ने आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर चलाने पर गम्भीरता से विचार किया। अतः नारनौल में प्रथम बार शिविर दिनांक ४ जून से १० जून १९९० तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा और आर्यसमाज नारनोल के तत्वावधान में चलाया गया। यह शिविर महाशय ताराचन्द जी प्रधान आर्यसमाज नारनौल की प्रेरणा से बाबू उदमीराम जी एडवोकेट की अध्यक्षता में चलाया गया।

शिविर के सयोजक श्री वेदप्रकाश जी थे। शिविर में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई। नारनौल व गावों के हृष्टपुष्ट युवकों ने भाग लिया इस शिविर में अतियोग्य एवं कुशल शिक्षकों सर्वश्री हरिसिंह जी आर्य, कृष्णपाल जी, सत्यप्रिय जी, सत्यपाल जी ने योग-आसन, प्राणायाम, दण्डबैठक लाठी जुडो कराटे व आत्म-रक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण प्रदान किया, शिविर में उमेदसिंह शर्मा प्रांतीय सचालक प्रो. ओमकुमार, उपसंचालक वेदप्रकाश जी महामन्त्री व अन्य सम्मानीय वैदिक विद्वानों द्वारा समय-समय पर संध्या, यज्ञ व आर्य सस्कृति वैदिक सिद्धातों व राष्ट्र-रक्षा सम्बन्धी बौद्धिक उपदेश भी दिए।

शिविर में सभी प्रशिक्षणार्थियों ने यज्ञोपवीत धारण करके शराब मांस अंडे तम्बाकू बीड़ी जूआ आदि जैसी बुरी आदतों से बचने तथा २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन का सकल्प किया। दिनाक १०-६-९० को शिविर समापन समारोह पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा भिन्न-भिन्न योग मुद्राओं दण्ड-बैठक जुडो-कराटे लाठी के प्रदर्शन से दर्शकों को चकित कर दिया। समापन समारोह पर उमेदसिह प्रांतीय संचालक आर्य वीर दल, वेदप्रकाश महामन्त्री व मनोहरलाल सैनी ने अपने विचार प्रकट किए।

समापन समारोह के अध्यक्ष रामसिह सैनी द्वारा शिविर में प्रथम द्वितीय व तृतीय तथा विशेष प्रदर्शन करने वाले आर्य वीरो को पुरस्कार वितरण किए। इस शिविर को सफल बनाने के लिए वैद्य हरीशचन्द्र जी, महाशय कालूराम जी उपप्रधान आर्यसमाज, मा० अयोध्या प्रसाद जी कोषाध्यक्ष, महाशय मोतीराम जी, महाशय दीनदयाल जी, रामसिह सैणी का विशेष योगदान रहा। शिविराध्यक्ष बाबू उदमीराम जी ने समापन समारोह में पधारने वालों, सभी दान दाताओं व कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद किया। इस शिविर की विशेष उपलब्धि यह हुई कि नारनौल शहर मे चार आर्य वीर दल शाखाएं चलनी प्रारम्भ हो गई हैं। गावों से भी शाखा चलने के समाचार मिले है। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में युवक आने लग गए हैं। आर्यसमाज की कार्यकारिणी ऐसे शिविर का प्रति वर्ष आयोजन करेगी।

आदर्श विवाह

जिला कैथल के प्रसिद्ध ग्राम कौल के हिन्दी ओ. टी. अध्यापक श्री ईश्वरसिंह आर्य एवं उनके भाई श्री राजेन्द्रसिह आर्य सुपुत्र श्री साधुराम का शुभ विवाह पूर्ण वैदिक रीति से १८ जून, ९० को अनीता देवी (शास्त्री अनाथालय आश्रम करनाल) एव सुनीता रानी सुपुत्रियां श्री अर्जुनसिंह ग्राम मुलतानपुर जिला करनाल के साथ हुआ। जिस में बारात के ११ सदस्य थे तथा दान केवल १ रुपया लिया गया।

भूल सुधार

सर्वहितकारी के पृष्ठ १ के अन्तिम पंक्ति में ग्राम वराणी के स्थान पर भूलवश बराहो प्रकाशित हो गया। अतः बराही के स्थान पर वराणी पढें।

—व्यवस्थापक

अन्नदाताओं की सूची—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सर्वश्री महावीरसिंह ग्राम बराणी जिला रोहतक, भोरलाल एवं रूपराम ग्राम दूबलधन जिला रोहतक, मा. चन्द्रभान आर्य ग्राम जहाजगढ़ जिला रोहतक, कर्णसिंह आर्य ग्राम फिरोजपुर बांगर जिला सोनीपत, सुरेन्द्रसिंह आर्य सुपुत्र मागेराम ग्राम सांघी जिला रोहतक, रामकरण सुपुत्र जयपालसिंह आर्य ग्राम आसन जिला रोहतक, बलबीरसिंह सुपुत्र सूरजमल नम्बरदार ग्राम आसन जिला रोहतक, बलबीरसिंह पूर्व सरपंच ग्राम सिहोटी जिला सोनीपत, राजसिंह मुतबन्ना भगवाना ग्राम खरावड़ जिला रोहतक, दयाचन्द आर्य मंत्री आर्यसमाज खरावड़ जिला रोहतक, दफेदार भीमसिंह ग्राम खरावड़ जिला रोहतक, रखेराम, मौजीराम, रामसिंह ग्राम खरावड़ जिला रोहतक, ओमप्रकाश सुपुत्र गुलजारी प्रधान आर्यसमाज रूड़की जिला रोहतक, हरिकिशन कटवाड़ा जिला रोहतक।

श्री रतनसिंह आर्य भजनोपदेशक द्वारा:—

सर्वश्री रामस्वरूप प्रधान आर्यसमाज भगोतीपुर जिला रोहतक, सुरेशकुमार सरपंच सुपुत्र चन्द्रभान ग्राम भगोतीपुर जिला रोहतक, हरिसिंह नम्बरदार ग्राम भगोतीपुर जिला रोहतक।

जयपालसिंह आर्य द्वारा ६० किलो देने वाले अन्नदाता:—

सर्वश्री सूबेसिंह ग्राम कटवाडा जिला रोहतक, ओमप्रकाश सुपुत्र हरदेराम ग्राम बिगोवा जिला भिवानी, ५५ किलो इन्द्रसिंह मन्त्री आर्यसमाज रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत, जयप्रकाश ग्राम सिहोटी जिला सोनीपत, जगमालसिंह ग्राम बिगोवा जिला भिवानी। ५० किलो चांदराम ग्राम खरावड़ जिला रोहतक, ४५ किलो चन्दन सिंह खरावड़ उमेदसिंह ग्राम नयाबास जिला रोहतक, धर्मपाल आर्य ग्राम गोछी जिला रोहतक, चन्द्रभान ग्राम खरावड़ जिला रोहतक।

४० किलोग्राम मा. सूरतसिंह गाव बिगोवा जिला भिवानी, मा. बलबीरसिंह गाव रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत, दलबीरसिंह गांव नयाबास, रघुवीरसिंह नयाबास, सूरतसिंह नयाबास, प्रतापसिंह नया बास जिला रोहतक, ईश्वरसिंह गांव खरावड़ जिला रोहतक, चन्द्रसिंह गाव खरावड, प्रह्लादसिंह गांव खरावड जिला रोहतक २० किलो दलीपसिंह, बलवन्तसिंह श्रीभगवान आर्य, महासिंह, मुख-तारसिंह, दयाचन्द, भीमसिंह, भगवाना, धर्मसिंह, आजादसिंह. मनफूलसिंह, श्रीकिशन सभी गांव नयाबास वासी, हृदयराम, कप्तान सिंह गाव बिगोवा भिवानी, जयकरण, सम्पतसिंह, ओमप्रकाश गाव गोछी जिला रोहतक, राजेराम प्रधान, रिसलदार धर्मबीर गाव रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत, कवलसिंह, अनारसिंह, प्रभुसिंह, कलीराम गाव खरावड जिला रोहतक।

श्री रतनसिंह द्वारा:—

सर्वश्री चन्द्रसिंह, धूपसिंह, उमेदसिंह, महासिंह गांव भगोतीपुर जिला रोहतक।

श्री जयपालसिंह आर्य द्वारा १५ किलो अन्नदाता.—

सर्वश्री अमरसिंह सरपच गाव कटवाडा जिला रोहतक, दिलावरसिंह, राममेहर गांव गोछी जिला रोहतक, नत्थूराम, श्रद्धानन्द नया बास जिला रोहतक।

१० किलो दयानन्द, रणसिंह, पवनकुमार, सुखवीर गांव कटवाडा जिला रोहतक, सूबेसिंह, सुखबीर, अजीतसिंह, गंगाराम गाव सिहोटी जिला सोनीपत, कलीराम खरावड़ जिला रोहतक, बहन भानी, भरतसिंह, कमला, कुन्दन, दलीपसिंह, करतार, महेंद्र, प्यारे, रणसिंह, ब्रह्मा, होश्यारा गांव नयाबास जिला रोहतक, रणधीर, दयानन्द, सुखबीर, ज्ञानचन्द, जयचन्द गांव रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत, छोटूराम गांव बिगोवा जिला भिवानी, चन्द्रसिंह गोछी जिला रोहतक, रतनसिंह आर्य भजनोपदेशक द्वारा होश्यारसिंह मौजीराम भगोतीपुर जिला रोहतक।

५ किलो समन्द्रसिंह, रतीराम, कर्णसिंह, रणबीर, जयचन्द, सतबीर, संसार गांव कटवाड़ा जिला रोहतक, सूरतसिंह, ऋषिपाल, सत्यनारायण, होश्यारा, राजसिंह, रतनसिंह, सुन्दरसिंह, देवीसिंह, दरयावसिंह, लखीराम, सुखवीर, दलीप, सूबेसिंह, अतरसिंह, सुखबीर सूबे, जगदीश, रामफल जयभगवान, गांव सिहोठी जिला सोनीपत' फतेहसिंह, कर्णसिंह, रामभज, गांव खरावड़, विजयसिह, रोहताश, भलेराम, बरखेराम, जयलाल, साधुराम, मुखत्यारा, समयराम, रणधीर, करतार, हरिराम, सूबेसिंह, सुन्दरसिंह, हुकमचन्द, मुन्शीराम, बलबीर, देईराम, गांव नया बास जिला रोहतक, मानसिंह, स्वरूपसिंह, रघुवीर गांव रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत, सत्यवीरसिंह गांव गोछी जिला रोहतक।

जयपालसिंह आर्य नकद राशि ऋषिलंगर हेतु:—

सर्वश्री कश्मीरसिंह सरपंच गांव बिगोवा जिला भिवानी 215 रु. सज्जनसिंह प्रधान आर्यसमाज खरावड़ जिला रोहतक 215 रुपए, रछेराम खरावड़ जिला रोहतक 101 रुपए, वीरेन्द्रसिंह डी. एस. पी. थाना दरयागंज दिल्ली अपनी स्वर्गीय माता जी स्मृति में द्वारा श्रीमती सुरक्षा देवी रोहतक 101 रुपए- राजेराम आर्य प्रधान आर्य-समाज रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत 100 रुपए, बलराज गांव गढ़ी कुण्डल जिला सोनीपत ८० रुपए, शीशराम आर्य गांव कुण्डल जिला सोनीपत ८० रुपए, इन्द्रसिंह गांव रामपुर कुण्डल जिला सोनीपत 51 रुपऐ, सुजानसिंह डी एस. पी. सेवानिवृत कोसली जिला रेवाड़ी 51 रुपए, भगत दरयावसिंह पूर्व पंचायत अधिकारी सांपला जिला रोहतक 50 रुपए कटारसिंह आर्य गाव दहकोरा जि. रोहतक 50 रु. रामस्वरूप गांव खरावड़ जिला रोहतक 25 रुपए, भगवानसिंह गाव नेठहरा जिला रेवाडी 21 रुपए, केदारसिंह आर्य गांव जूआं जिला सोनीपत 21 रुपए, ओमप्रकश आर्य करनाल 20 रुपए, वानप्रस्थी स्वरूपानन्द गांव दहकोरा जिला रोहतक 20 रुपए, पृथवीसिंह प्रधान आर्यसमाज खेडी साध जिला रोहतक 20 रुपए, बलजीतसिंह, जयसिंह गांव खरावड़ जिला रोहतक 12, 12 रुपए तथा बलबीरसिंह नम्बरदार 11 रुपए, भगवानसिंह गाव सांघी जिला रोहतक 11रुपए भगवानसिंह गाव कोसली जिला रेवाडी, चन्दरसिंह गाव भापडौदा जिला रोहतक, भरतसिंह तथा श्रद्धानन्द गांव नयाबास जि. रोहतक, कृष्णचन्द्र गांव साघी जिला रोहतक 11-11 रुपए, भानाराम गांव सोहटी जिला सोनीपत, कबूलसिंह गाव खरावड़ जिला रोहतक 10-10 रुपए जिनका योग = 1342 रुपए।

आशा है अन्य दानी भी इस सूची में अपना नाम लिखवा कर यश के भागी बनेंगे। —सभा मन्त्री

वैदिक यज्ञ वीडियो कैसेट

वैदिक धर्म के यज्ञों के प्रचारार्थ डा० प्रज्ञादेवी जी वाराणसी विद्यालय की यज्ञशाला में हो रहे शुद्ध मन्त्र पाठ सहित यज्ञों का विधिवत् रिकार्डिग कसेट तैयार किया गया है। जिससे यज्ञों का प्रचार प्रसार की महती संभावना है। इन कैसेटों से अर्थ लाभ की गुंजायश दृष्टिगत नही मंत्रों के शुद्धोचारण के साथ-साथ ब्रह्मयज्ञ (सध्या) देवयज्ञ (हवन) के प्रचारार्थ है। यह उपक्रम चरितार्थ हुआ है।

कैसेट प्राप्ति स्थान:— 453, बरकत नगर, टाक रोड़, जयपुर (राजस्थान)

मूल्य 150 रुपए मात्र प्रति कैसेट —शान्ति प्रकाश

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ।

शराबियों से त्रस्त महिलाओं को मुक्तद्वार में राहत मिली

पानीपत, २ जुलाई (प०)। जिला प्रशासन द्वारा यहां से ३५ किलोमीटर गांव पाढा में आयोजित मुक्तद्वार प्रशासन शिविर में उपायुक्त विजय कुमार ने गांव की महिलाओं को शराबियों से हो रही परेशानी से छुटकारा दिलवाया।

उपायुक्त श्री विजय कुमार जब ग्रामीणों की समस्याएं सुन रहे थे तो उसी समय लगभग ५० महिलाओं ने उपायुक्त के समक्ष पेश हो कर दुहाई दी कि गांव में पनघट के पास शराब के ठेके पर शराब पी कर हुल्लड बाजी करते हैं, जिससे गांव में बहु-बेटी को इज्जत को भी खतरा बना हुआ है। उपायुक्त ने तत्काल ही गांव के सरपच को बुलाकर स्थिति की पुष्टि की। भीतर से शराब के ठेके को गांव से बाहर स्थापित किया जाए। —दैनिक जनसंदेश

वेद प्रचार सप्ताह मनाने की अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदेशानुसार वेदप्रचार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। इस कार्य का विस्तार करने हेतु सभा ने जिलेवार वेदप्रचार मण्डलों का गठन किया और वहा एक उपदेशक तथा एक मण्डली का प्रचार क्षेत्र बनाया गया है।

हरयाणा के आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर मास में अपनी सुविधानुसार वेदप्रचार सप्ताह मनाने की व्यवस्था करके सभा को सूचित करें।

—सत्यवीर शास्त्री, वेदप्रचाराधिष्ठाता

११ से ज्यादा बाराती नहीं

जाजपुरा, २२ जून (निस)। गत दिवस यहां से ६ किलोमीटर दूर गांव सुरो के बाहर चार नौजवान जिनके पास असला था और मारुति कार में सवार थे, ने एक बारात को भगदड़ मे बदल दिया, जब एक युवक ने उतरते ही दो फायर करने के पश्चात ११ व्यक्तियों को ही बारात में जाने का हुकम दिया।

प्रात: विवरण के अनुसार गांव सूरों के निवासी सुबेगसिंह के लडके जसवन्त सिंह की बारात, जिसमें लगभग चार दर्जन लोग शामिल थे, गांव से निकले ही थे कि कैनाल रैस्ट हाउस के समीप एक मारुति पर सवार ४ युवकों ने बारात घेर ली। तीन कार में से नीचे उतरे और ११ व्यक्ति ही बारात में ले जाने का हुकम दिया। परन्तु दूल्हे के पिता द्वारा बारातियों का चुनाव करने में देरी करने पर एक युवक ने दो फायर किए। जिस पर बाराती गांव की ओर वापस भाग खडे हुए। बैंड वाले भी खेतों में छुप गए। भय के मारे बारात में ११ व्यक्ति ही गए (दं० ट्रि०)

देवधर गांव से शराब ठेका हटाने की मांग

यमुनानगर, १ जुलाई (एस)। जिले का छठा मुक्तद्वार शिविर यहां से २० किलोमीटर दूर गाव देवधर में आयोजित किया गया। इस शिविर में ३५ गांवों के लोगों से कुल ८४६ शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें से ८१४ का मौके पर ही निपटान किया गया।

शिविर के दौरान गांव देवधर के महिला मण्डल को सदस्याओं ने उपायुक्त से शिकायत की कि एक तरफ तो सरकार ने महिलाओं में नारी शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए गांव से गुर्जर कन्या विद्यालय का निर्माण करवाया है दूसरी ओर सरकार ने इसके विपरीत गांव के बीच शराब का ठेका भी स्थापित कर दिया है। उन्होंने उपायुक्त से शराब की दुकान गांव से बाहर स्थापित करने की मांग की। उपायुक्त ने इस मांग को शीघ्र पूरी करने आश्वासन दिया।

—दैनिक जनसन्देश

दिव्य दोहे

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

१ काम-क्रोध, मद, लोभ, मोह जिसने बस में कीन।
वही भक्त जन रहेगा, प्रभु भगती में लीन॥

२. त्यागो विषय विकार सब, ओम नाम प्रिय बोल।
निरखो प्रभु की ज्योति को, नयन ज्ञान के खोल॥

३. सूर्य चन्द्रमा दे रहे, सब जग को प्रकाश।
कर प्रभु की आराधना, होए तिमिर की नाश॥

४. व्यापक है ससार में एक ईश करतार।
कर पूर्ण विश्वास नर, हो जाए बेडा पार॥

५. उपजाता सबके लिए, फल मेवादि अन्न।
जन जन का रक्षक वह, सर्वशक्ति सम्पन्न॥

६. घट घट की प्रभु जानता, व्यापक है हर ठौर।
निराकार निर्विकार वह है सबका सिरमौर॥

७. उसकी माया का कोई, पा नही सकता पार।
ओम नाम प्रिय ईश का, सुमरो बारम्बार॥

नशा करने वालों को समाज का दुश्मन बताया

कुरुक्षेत्र, (निस)। नशा शरीर और सेहत के लिए हानिकारक है ही नही बल्कि मनुष्य के मानसिक सन्तुलन को भी बिगाडता है। नशेडी व्यक्ति अपने परिवार का ही नही बल्कि समाज का भी दुश्मन है। जहां तक हो सके मनुष्य को नशीली दवाओं से स्वयं तथा अपने बच्चो भो दूर रखे। नशीली दवाओ की लत एक जान लेवा रोग है। नशा करने वाला व्यक्ति यह समझकर हताश हो जाता है कि उसकी नशे की आदत मृत्यु के साथ ही जाएगी, यह गलत धारणा है। आज के युग मे नशा छुडवाने का इलाज सम्भव हो सकता है। इसी लक्ष्य से भारत सरकार के समाज कल्याण मन्त्रालय के सौजन्य से जिला कुरुक्षेत्र मे एकमात्र नशा मुक्ति केन्द्र जो कि युवा छात्रावास, पीपली में कार्यरत है। यह विचार गत दिवस अन्तर्राष्ट्रीय नशा विरोधी दिवस के अवसर पर नशा मुक्ति परामर्श केन्द्र मे नशा करने वाले व्यक्तियों से एक वार्तालाप मे कुरुक्षेत्र के उपायुक्त एव नशा मुक्ति परामर्श केन्द्र के अध्यक्ष श्री एम. पी. गुप्ता ने व्यक्त किए।

नशा मुक्ति केन्द्र को सफलताओं का उल्लेख करते हुए श्री गुप्ता ने बताया कि अब तक इस केन्द्र द्वारा एक हजार पच्चीस लोगों को जिसमें पाच सौ महिलाय भी सम्मिलित हैं, विभिन्न प्रकार के नशों की लत से छुटकारा दिलाया जा सका है जबकि इस केन्द्र को चले अभी एक साल तीन महीने ही पूरे हुए हैं। इसकी स्थापना मार्च १९८९ में की गई थी। श्री गुप्ता ने आगे बताया कि अब तक जो नशा करने वाले व्यक्ति नशा मुक्ति केन्द्र के सम्पर्क में आए हैं, उनमे ७१५ अफीम, २६४ शराब, १७ चरस और गाजा, १ हिरोइन, ८ नशीली दवाये, १० भाग, १० धूम्रपान तथा १ व्यक्ति स्मैक के नशे का आदी पाया गया। उन्होंने बताया कि एक वर्ष से बीस वर्ष की आयु के२%, २१ वर्ष से ४० वर्ष तक की आयु के ६७% तथा ४१ से ऊपर की आयु के ३१% व्यक्ति नशे के आदी पाए गए हैं।

श्री गुप्ता ने बताया कि नशा करने की आदत अधिकतर अनपढ़ या बहुत ही कम शिक्षित लोगो मे पाई गई है। एक विश्लेषण के अनुसार ४९ प्रतिशत अनपढ, ३० प्रतिशत प्राइमरी, १७ प्रतिशत हायर सैकेण्डरी तथा ४ प्रतिशत स्नातक व्यक्तियों को नशे की आदत पाई गई है।

अभिनन्दन समारोह

दिनांक १ जुलाई, १६६० को आर्यसमाज नागोरी गेट (हिसार) की ओर से प्रातः सन्ध्या हवन के बाद एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक श्री सुखदेव जी शास्त्री एवं प्रसिद्ध आर्यसमाज सेवी श्री फूल चन्द जी आर्य, प्रधान आर्यसमाज, माडल टाऊन, हिसार का श्रद्धापूर्वक अभिनन्दन तथा स्वागत किया गया। समारोह की अध्यक्षता वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास जी ने की। सभा में काफी संख्या में स्थानीय शहर तथा देहात के नर-नारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों तथा अनेक संस्थाओं के विद्वानों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। सर्वप्रथम पं० रामनिवास जी आर्य के प्रेरणाप्रद भजन हुए। तत्पश्चात् माल्यार्पण द्वारा प्रि. सत्यवीर विद्यालंकार (जाट कालेज हिसार), स्वामी सर्वदानन्द जी (गुरुकुल धीरणवास), आर्य मुनि जी (गुरुकुल आर्यनगर) स्वामी अग्निदेव जी भीष्म, वानप्रस्थ तारा चन्द जी, पं० दयानन्द शास्त्री एवं पं० विश्वामित्र जी (द. ब्र. विद्यालय), पं० अर्जुनदेव जी (रोहतक), क्रांतिकारी जी (कंवारी), श्री बदलूराम आर्य (मुकलान), श्री दीवान सिंह आर्य एवं रामजी लाल आर्य (बालसमन्द), श्री ज्ञानीराम आर्य (मिरजापुर), श्री जय सिंह जी योगी (हिसार), श्री धर्मसिंह आर्य (न्याणा) बहन राजकुमारी आर्या (स्त्री आर्यसमाज हिसार) आदि अनेक आर्य बन्धुओं ने स्वागत किया। स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री श्री प्रतापसिंह शास्त्री ने शास्त्री जी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया। प्रधान श्री रामधारीमल आर्य ने शास्त्री जी को एक शाल, एक शील्ड, एक स्मारिका पं० लेखराम जी का फोटो तथा ५०० रुपये भेंट किए। साथ में श्री फूलचन्द जी आर्य को भी शाल, शील्ड, स्मारिका, स्वामी दयानन्द जी का फोटो भेंट किया।

उसके बाद श्री सुखदेव शास्त्री जी ने अस्वस्थ होते हुए लोगों के विशेष आग्रह पर अपनी मोरीशस विदेश यात्रा का अनुभव, वहां जो वैदिक धम का कार्य किया तथा जो वहां देखा उसके बारे में विस्तार से विचार रखे। ज्ञातव्य है कि श्री शास्त्री जी स्थानीय समाज में पुरोहित का पद ग्रहण कर चुके है। स्थानीय लोग पहले से ही उनके कार्य एव स्पष्ट वक्तव्य से काफी प्रभावित थे। समारोह का कार्यक्रम बहुत ही रोचक एव प्रेरणाप्रद रहा।

अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

चरखी दादरी तथा नारनौल में वेदप्रचार मण्डल की बैठकें

आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी में जिला भिवानी के आर्यसमाजों की बैठक १४ जुलाई शनिवार को प्रातः १० बजे तथा उसी दिन दोपहर बाद २ बजे आर्यसमाज मन्दिर सधीवाडा नारनौल में जि० महेन्द्रगढ के आर्यसमाजों की आवश्यक बैठकें होंगी। इनमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री आदि आर्यनेता पधारेंगे और ग्रामों में आर्यसमाज के प्रचार कार्य का विस्तार तथा सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए दोनों जिलों में वेदप्रचार मण्डलों का गठन किया जावेगा।

—सभा मन्त्री

—मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूँ। —महात्मा गांधी

राज्यपाल को विशुद्ध शाकाहारी निजी सचिव की तलाश

रोपड़ 4 जुलाई (राकेश)। पंजाब राजभवन के विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि पंजाब के राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा को ऐसे निजी सचिव की तलाश है जो शराब, अण्डा, मीट व सिगरेट का प्रयोग न करता हो, लेकिन अभी तक उन्हें ऐसा सचिव नहीं मिल रहा। पंजाब के वर्तमान प्रशासनिक अधिकारियों में ऐसा कोई अधिकारी नहीं मिला जो राज्यपाल की शर्तों पर पूरा उतरता हो।

—पंजाब केसरी

बवानी खेड़ा (ढ़ाणी) में वेदप्रचार एवं शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

श्री महावीरप्रसाद प्रभाकर के पुरुषार्थ से बवानी खेड़ा (ढ़ाणी) जिला भिवानी में दिनांक २३ जून १६६० की रात्रि को वेदप्रचार एवं शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। राव जयनारायण दास जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता सभा उपदेशक श्री अत्तर सिंह आर्य क्रान्तिकारी थे जिन्होंने आर्यसमाज का इतिहास एवं आन्दोलन तथा शराबबन्दी बारे विस्तार से विचार रखे। वेद प्रचार मण्डल हासी की भजन मण्डली महाशय जबरसिंह खारी के क्रान्तिकारी शिक्षाप्रद भजन हुए।

इसी अवसर पर आर्यसमाज बवानी खेड़ा की ओर से सम्मेलन के अध्यक्ष को १०१ रुपए की मालार्पण की गई। क्रान्तिकारी जी तथा प्रभाकर जी को एक एक अटैची तथा आर्यसमाज कंवारी के सक्रिय सदस्य श्री हरिसिंह आर्य, दुदुराम आर्य, शमशेर सिंह दुहन, युद्धवीर सिंह पूनिया को ५१-५१ रुपए की मालार्पण द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रचार में नगरपालिका सदस्य एवं राव सुखीराम आर्य के अतिरिक्त काफी सख्या में महिलाओ एव नवयुवकों ने भाग लिया। प्रातःकाल जयनारायणदास की बैठक मे हवन किया गया। यज्ञ पर अत्तरसिंह आर्य, चौ० सग्रामसिंह आर्य, वानप्रस्थ ताराचन्द, प्रभाकर जी ने आत्मा परमात्मा पच महायज्ञ गोमाता एव देशी खाद के लाभ बारे विचार रखे तथा खारीजी के ईश्वर भक्ति के भजन हुए। सभा को १०१ रुपए दान दिया गया।

—राम पृथ्वीसिंह, ढ़ाणी निवासी

आर्य भजनोपदेशक पं० अमरनाथ प्रेमी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व भजनोपदेशक पं० अमर नाथ प्रेमी का ७० वर्ष की आयु में २६ जून को ग्राम फाजलपुर जि० गुरदासपुर में लम्बी बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। वे अधरग से पोड़ित थे। उनके परिवार विशेषकर उनके सुपुत्र श्री राजेश कुमार प्रेमी ने उनकी संकट के समय में श्रद्धापूर्वक सेवा की है। श्री प्रेमी जी अपने समय में विख्यात् मधुर एवं प्रभावशाली गायक थे। उनके प्रचार की मांग पंजाब के अतिरिक्त हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा जम्मू कश्मीर से आती रहती थी।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुखी परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य

पंजाब के राज्यपाल : श्रीवीरेन्द्र वर्मा

केन्द्र सरकार ने श्री निर्मल कुमार मुखर्जी के स्थान पर श्री वीरेन्द्र वर्मा को पंजाब के १४वें राज्यपाल की नियुक्ति इस आशय से की है ताकि वह आतंकवाद की आग से झुलस रहे पंजाब और पंजाबियों को अपने विवेक एवं कुशल नेतृत्व से राहत दिला सकेंगे।

श्री वीरेन्द्र वर्मा ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक नगर शामली (मुजफ्फर नगर) में स्व० श्री रघुवीर सिंह के घर में १८ सितम्बर १६१६ को जन्म लिया। इनके पूज्य पिता श्री रघुवीर सिंह एवं ताऊ जी चौ० मामराज सिंह एवं उनका परिवार आर्यसमाज एव जन सेवा के प्रति समर्पित रहा है। श्री वीरेन्द्र वर्मा जी यद्यपि पिछले ५० वर्षों से सक्रिय राजनीति में रहे हैं किन्तु फिर भी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्राणीमात्र पर किए गए उपकारों को सदैव याद रखते तथा उनके आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए उनका चित्र अपने साथ रखते हैं। यह एक सम्पन्न कृषक परिवार से सम्बन्धित हैं।

सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी स्व० चौधरी चरण सिंह के कट्टर समर्थक श्री वर्मा जी उत्तरप्रदेश विधान सभा के १६५२ से १६८० तक सदस्य रहे तथा प्रदेश के गृहमन्त्री, कृषि मन्त्री, सहकारिता मन्त्री आदि महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। यह अप्रैल १६८४ तथा इसी वर्ष अप्रैल में राज्यसभा के सदस्य चुने गए। श्री वर्मा जी की अपने प्रारम्भिक जीवन से ही खेल कूद और भारतीय शली का कुश्तियो में रुचि रही है तथा देश और जनता की सेवा ही इनका प्रमुख उद्देश्य रहा है।

पंजाब के राज्यपाल की नियुक्ति एवं शपथ ग्रहण के बाद अपने भाषण में कहा है कि—"मैं अपना जीवन राजनीति से ऊपर उठकर पंजाब की जनता की सेवा, सभी वर्गों और समुदायों की एकता, हिन्दू सिख भाईचारे एवं विश्वास की बहाली, भ्रष्टाचार की समाप्ति, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता में विश्वास, निर्धन एवं कमजोर वर्गों का उत्थान तथा आतंकवाद का उन्मूलन करूंगा।

श्री वीरेन्द्र वर्मा अपने उत्तम चरित्र, उत्साह, कर्त्तव्यनिष्ठा तथा उत्साह का परिचय देते हुए अपने पथ से विचलित लोगों को देश की मुख्यधारा से जोडने का प्रयास करेंगे तथा महर्षि दयानन्द के सच्चे भक्त होने के कारण उनसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार और यदि ना समझे तो यथायोग्य व्यवहार के सिद्धान्त का पालन करेंगे।

श्री वर्मा ने सभी दलों की मीटिंग बुलाकर एक सुखद प्रयास की शुरुआत तो की है किन्तु यह भी अनुभव लिया है कि अकाली दलों ने इस शान्ति प्रयास में भाग न लेकर अशांतमय वातावरण का रुख ही दिखाया है जिसे शक्ति से निपटना होगा।

परमपिता परमात्मा उन्हें दीर्घायु तथा असीम शक्ति प्रदान करे ताकि यह पंजाब के हिंसामय वातावरण को समाप्त करके प्रेम और भाईचारे का वातावरण तैयार करने में सफल हों सकें।

हरिचन्द स्नेही, मण्डलपति (जिलाध्यक्ष)
आर्य वीरदल सोनीपत, १-/५५ भगतपुरा सोनीपत (हर०)

महर्षि दयानन्द पुस्तकालय भवन का उद्घाटन

रोहतक, २२ जून। हरयाणा के राज्यपाल और महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलाधिपति धनिकलाल मण्डल ने कहा है कि विश्वविद्यालय जसी शिक्षा संस्थाये अपने शिक्षा विस्तार और प्रचार के मुख्य उद्देश्यों से भटक कर आज जातिवाद, क्षेत्रवाद, गुण्डागर्दी सहित सभी बुराइयों का अड्डा बन चुकी हैं।

श्री मंडल आज यहां महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय प्रांगण में ७.५० करोड़ की लागत से निर्मित पुस्तकालय के नए भवन का उद्घाटन करने के बाद एक जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने प्राध्यापक वर्ग पर कटाक्ष किया कि कक्षाओं में तो वे छात्रों को नैतिक मूल्यों और जातिवाद का विरोध करने की शिक्षा देते हैं लेकिन पदोन्नति की बात आती है तो वही प्राध्यापक जातिवाद का सहारा लेते हुए नहीं चूकते हैं। उन्होंने कहा कि जब तक हम जातिवाद, क्षेत्रवाद और भाषावाद जैसी बुराइयों से पीछा नही छुडाते तब तक शिक्षा और ज्ञान का कोई लाभ नहीं है।

राज्यपाल ने कुलपति ले. ज जो सी. अग्रवाल की ओर मुखातिब होकर पूछा कि सुविख्यात समाज सुधारक स्वामी दयानन्द के नाम पर बनाए गए इस विश्वविद्यालय के छात्रों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों पर स्वामी दयानन्द के जीवन और उनकी शिक्षाओं की छाप क्यों नहीं नजर आ रही है। उन्होंने पूछा कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के पास कौन सा ऐसा सराहनीय कार्य है जिस पर वे गौरव कर सकते हैं जैसे कि हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बीजों और फसलों को नई उन्नत किस्मों की खोज करके अपना इतिहास बनाया है।

सर्वहितकारी पत्र वास्तव में सबका हित करने वाला है

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रमुख पत्र सर्वहितकारी वास्तव में सबका हित चाहने वाला है। कई वर्षों से यह साप्ताहिक रूप में नियमित निकाला जा रहा है। इसमें विशेषकर राष्ट्रभक्ति एवं रक्षा के लेख, शराबबन्दी कार्यक्रम एवं भजन, दहेजबन्दी, छुआ-छात, हिन्दी रक्षा, गोरक्षा, विद्यार्थियों के कर्त्तव्य, आर्यसमाज के उत्सव, सम्मेलन एव व्यायाम शिविरों का कार्यक्रम, आर्यों के पर्वों की विशेष जानकारी, पंजाब समस्या, राजा एवं अध्यापक कैसा हो, आर्यसमाज के आन्दोलन व इतिहास की जानकारी, वेदमन्त्रों की व्याख्या तथा हर वर्ष दो-तीन विशेषांक भी निकाले जाते हैं। उपरोक्त लेखों एवं गुणों के कारण प्रत्येक निष्ठावान आर्य इस पत्रिका का सदस्य बनना चाहता है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव मुझे देखने को मिला है। कुछ इनके लेखों से प्रभावित होकर, कुछ स्वेच्छा से अपना कर्त्तव्य समझ कर, कुछ मेरे प्रेरणा से सैंकड़ों सदस्य बनाए और दिन-प्रतिदिन बनते जा रहे है। इसके अतिरिक्त पांच आजीवन सदस्य भी बनाए जो निम्न हैं—१- श्री रामनिवास जिन्दल (बालावास) २- प्रो० गोपीचन्द आर्य (हिसार) ३- श्री जगदीश राय आर्य (दिल्ली) ४- श्री रामस्वरूप आचार्य जी (गुरुकुल आर्य नगर) ५- पृथ्वी सिंह फौजी (बालसमन्द)। एक बार पुनः मेरा सभी आर्यों से नम्र अनुरोध है कि अगर अपना एवं अपने बच्चों का भला चाहते हो तो तुरन्त सर्वहितकारी पत्रिका के सदस्य स्वयं बनो, औरों को बनाओ जिससे घर बैठे आर्यसमाज की सभी गतिविधि एवं विद्वानों के जीवन उपयोगी लेख पढ़कर अपना एवं अपने परिवार तथा राष्ट्र का भला कर सकते हैं। —अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी

सभा के पुस्तकालय में पुस्तकें दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कार्यालय स्थित सिद्धांती भवन रोहतक के स्वा. श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय के लिए सहकारी बैंक के पूर्व निदेशक श्री धमचन्द जी मोर वाले ने अपने निजी पुस्तकालय से १३ पुस्तकें जिनमें उर्दू भाषा में सत्यार्थप्रकाश, श्री जसवन्त सिंह टोहानवी द्वारा लिखित संगीत पुस्तकें आदि विशेष उल्लेखनीय हैं, सभा को दान की हैं। आशा है कि अन्य महानुभाव भी इसी प्रकार पुस्तकें सभा के पुस्तकालय में देकर यश के भागी बनेंगे। —सभा पुस्तकाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न २३२०७/७३ ई ...११ ... ०८,११,०९०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र



सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए   आषाढ २०, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३१ १८ जुलाई १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

अथर्ववेद में गौ सम्बन्धी उच्च भावनायें

—प० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा

वेद में गौ के सम्बन्ध मे किस प्रकार की कामनाये, भावनाये, आज्ञाये तथा आशाए विद्यमान हैं—यह दर्शाने के लिए कतिपय वेद-मन्त्र प्रस्तुत किए जाते हैं—

१ माता पिता और गौ का समान स्थान—

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य ।
विश्व सुभूत सुविदत्र नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम् ॥
(अथर्व० १।३१।४)

अर्थात्—हमारी माता को सुख हो, हमारे पिता को सुख हो, गौओं और जगत् के हितकारी पुरुषो—सब के लिए सुख और शाति प्राप्त हो। समस्त ससार या उक्त सब मिलकर हमारे लिए सुखयुक्त उत्तम पदार्थों से सम्पन्न उत्तम ज्ञानो से सम्पन्न हो और चिरकाल तक अपनी चक्षुओ से सूर्य और ज्ञान के प्रकाशक परमात्मा का दर्शन करते रहें।

२ गोघातक को सीसे की गोली से बींधने की मर्यादा—

यदि नो गा हसि यद्यश्व यदि पुरुषम् ।
त त्वा सीसेन विध्यामो यथानोऽसो अवीरहा ॥
(अथर्व० १।१६।४)

अर्थात्—हे राक्षस! शत्रु पुरुष! यदि तू हमारी गौ को मारे, यदि हमारे अश्व को मारे, यदि हमारे पुरुष को मारे, उस हत्यारे तुझ को हम सीसे की गोली से बेध डाले जिससे तू हमारे वीर पुरुषो को न मार सके।

३ वात्सल्य की प्रतीक-गौ—

स हृदय सामनस्यम विद्वेष कृणोमि व ।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्स जातमिवाघ्न्या ॥
(अथर्व० ३।३०।१)

अर्थात्—मैं न्यायाधीश (प्रभु) तुम सब प्रजाओं को जो आपस मे विवाद करती हैं, समान हृदय और समान रूप से उत्तम चित्तवाला बिना द्वेष भाव के रहने का उपदेश करता हू। हे प्रजागण! जिस प्रकार उत्पन्न हुए बछडे के प्रति प्रेम से खिचकर गाय दौडी हुई चली आती है, उसी प्रकार एक दूसरे के पास मिलने के लिए तुम लोग भी प्रेम से खिचकर आओ।

४ गौए ही ऐश्वर्य हैं—

गावो भगो गाव इन्द्रोमच्छाद् गाव सोमस्य प्रथमस्यभक्ष ।
इमा या गाव स जनास इन्द्र इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम् ॥
(अथर्व० ४।२१।५)

अर्थात्—गौए ही भग-ऐश्वर्य है, गौए ही इन्द्र हैं जिनकी मैं इच्छा करता हू। गौ का गोरस (दुग्ध) सोमरस मे मिलाने योग्य द्रव्य है। हे मनुष्यो! ये गौए ही इन्द्रियो को सामर्थ्य प्रदान करती हैं। मन से हृदय से मैं उन इन्द्र—परम ऐश्वर्य युक्त गौ की कामना करता हू।

५ विशाल सभाओ मे गो-महिमा गान—

यूय गावो मेदयथा कृश चिद् अश्रीर चित् कृणुथा सुप्रतीकम ।
भद्र गृह कृणुथ भद्रवाचो बृहद् वो वय उच्यते सभासु ॥
(अथर्व० ४।२१।६)

अर्थात—हे गौओ! तुम कृश, दुर्बल, दुबले-पतले आदमी को मोटा कर देती हो और कुरूप शोभारहित पुरुष को सुन्दर-दर्शनीय बना देती हो। हे कल्याण और सुखदायी वाणी को बोलने वाली गोओ! तुम लोग घर को भी सुखकारी बनाती हो। तुम्हारे क्षीर घृतादि की प्रशसा बडी-बडी विशाल सभाओ मे की जाती है।

६ गौओ को कोई पापी अपने वश मे न करे—

प्रजावती सुयवसे रुशन्ती शुद्धा अप सुप्रपाणे पिबन्ती ।
मा वस्तेन ईशतमाघशस परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु ॥
(अथर्ववेद ४।२१।७) (अथर्व० ७।७५।१)

अर्थात—उत्तम चारा आदि युक्त देश मे शोभा देती हुई, तृणादि खाती हुई शुद्ध जलो का पान करती हुई गौओ को चोर न चुरा ले, और पापकर्मा पापी पुरुष भी तुम पर वश न करे। तुम्हारी रुद्र परमात्मा अथवा ग्वाला अपने वज्र-आयुध से सदा सब ओर से रक्षा करे और चोरो और कसाइयो का वारण करे।

७ जीतने योग्य पदार्थों मे गौ—

कृत मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित ।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनजयो हिरण्यजित ॥
(अथर्व० ७।५०।८)

अर्थात—मेरे दायें हाथ मे मेरा अपना किया हुआ कर्म-पुरुषार्थ है और मेरे बाय हाथ मे जय विजय रखी है। मैं अपने पुरुषार्थ-परिश्रम से गोधन का विजेता घोडो का विजेता और स्वर्ण का विजेता होऊ।

८ गो घातको को सर्वस्वहरण एव देश निष्कासन का आदेश—

विष गवा यातुधाना भरन्तामावृश्चन्तामदितिं दुरेवा ।
परैणान् देव सविता ददातु परा भागमोषधीना जयन्ताम् ॥
(अथर्व० ८।३।१६)

अर्थात—यदि प्रजापीडक लोग गौ आदि पशुओ को विष दे और उनको काट डाले और यदि दुष्ट चाल-चलन वाले लोग गाय को काट, तब सबका प्रेरक राजा इनको राज्य से दूर करे अर्थात् इनका सर्वस्व हरले और वे अन्न आदि एव रोग नाशक औषधियो के भाग,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

उच्चतम न्यायालय में हिन्दी के प्रयोग पर रोक क्यों?

संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाए जाने का निर्णय किया था। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४२ वर्ष बाद भी भारत के उच्चतम न्यायालय में भारत की राष्ट्रभाषा के व्यवहार पर रोक लगी हुई है। कोई न्यायाधीश राष्ट्रभाषा का प्रयोग नहीं कर सकता न ही किसी अधिवक्ता को हिन्दी के प्रयोग की अनुमति है। प्राचीन काल से महान् संस्कृति और विशाल साहित्य की धरोहर का अभिमान रखने वाले भारतवर्ष में अपनी राष्ट्रभाषा में व्यवहार की भी अनुमति भारत के उच्चतम न्यायालय में न हो, यह भारत का राष्ट्रीय अपमान है। अंग्रेजों की गुलामी का यह कलंक धो डालने के लिए भारत माता के सपूतों को संघर्ष करना चाहिए। राष्ट्र के प्रति हमारी उदासीनता और उपेक्षा वृत्ति के कारण ही हमारे देश में अनेक समस्यायें तथा अशांति उत्पन्न हो गई है और देश में देशद्रोह सिर उठा रहा है। जबकि देश भक्ति पैरों तले कुचली जा रही है।

राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा के बल पर संसार के अनेक देश उन्नति के शिखर पर पहुंच गए। किन्तु हमारे देश ने विदेशी भाषा को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाए रखने के कारण देश की २० प्रतिशत से अधिक जनता पशुओं की बेजुबान व गूंगी बना दी गई है। उनका राष्ट्र के विकास में कोई योगदान नही हो पाता। ऐसा नही है कि हिन्दी में न्यायालय का कार्य हो नही सकता। जब लखनऊ, पटना, जयपुर के उच्चन्यायालयों मे हिन्दी में काम चलता है तो दिल्ली के उच्चन्यायालय मे और उच्चतम न्यायालय में राष्ट्रभाषा में क्यों काम नही चलाया जा सकता? वास्तव में भारत की न्यायपालिका को अंग्रेजी की गुलामी मे दबाए रखने की हठधर्मी ने राष्ट्रभाषा और न्याय दोनो का गला घोंटा है। राष्ट्र को उन्नत बनाने की इच्छा शक्ति को क्षति पहुँचाई है। वादी एवं प्रतिवादी अपना-अपना पक्ष विदेशी भाषा में प्रस्तुत नही कर पाते। वकील भी प्रायः ठीक-ठीक और प्रभावी रूप में तर्क नही दे पाते। फिर भी न जाने कि अपनी भाषा से घृणा क्यों?

यदि सरकार दिल्ली के उच्चन्यायालय तथा उच्चतमन्यालय में राष्ट्रभाषा पर लगी रोक को तुरन्त नही हटाती तो देश के देशभक्त नर-नारियों को संघर्ष करना पडेगा। राष्ट्रभाषा पर लगी पाबन्दी को हटाए बिना देश की स्वतन्त्रता अधूरी है। पूर्ण स्वराज्य हमारा अधिकार है और उसे प्राप्त करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

—डा० कैलाश चन्द्र
संकट मोचन आश्रम, रामकृष्ण पुरम,
सेक्टर—६, नई दिल्ली—२२

यदि आर्यसमाज क्रांतिकारी संस्था है तो उसे अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए

उल्लू दिन में न देखे, कागा देखे न रात।
यह बन्दा गन्दा न दिन देखे न रात॥

इस समय देहात में बडा गन्दा माहोल है। इस गन्दे माहोल के कारण देहात रसातल में जा रहा है। राजनैतिक स्वार्थी कुर्सी के भूखे मनचाहा करते है। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं। वे सुधार का नाम नही लेते, न ही कोई विकास पर जोर देते है।

घर-घर में शराब बिकती है। शराबी पीते हैं और मनचाहा बकते हैं। उनके घरो की हालत बहुत बुरी है। शिक्षा के नाम पर लाखों रुपया भवनों पर खर्च कर दिया गया है, पर पढ़ाने वाले प्राध्यापक एक भी अपना कर्त्तव्य नही निभाता, जबकि उन्हें वेतन माकूल मिलता है। स्वास्थ्य के नाम पर कई-कई एकड़ भूमि ले लाखों रुपए के भवन बनाकर दीमक और चकुन्दरों के घर बना दिए हैं। ढाकला प्राथमिक स्वास्थ्य संस्थान मे कई महीनों से डाक्टर नही है।

अदालतों में न्याय नहीं वकीलों के पेट भरे जाते हैं। मामूली-मामूली केसों का निर्णय कई-कई वर्षों तक नहीं होता। सडको की बुरी अवस्था है, उनके अधिकारी आंख मीचे चले जाते हैं बुरी तरह गाव के स्वार्थी लोगों ने घेर रखा है। बेलदार, ओवरसियर चाय पानी पीकर उन्हें प्रोत्साहित कर जाते है। दुर्घटनाओं का मुख्य कारण यह गाव की रुकावटे ही हैं।

बिजली पानी की लगातार सप्लाई कभी नहीं होती। पानी तो ७-७, ८-८ दिन तक नही आता। बिजली भी प्रातः इस प्रकार आंख मिचोनी करती रहती है। अधिकारियों ने अपने कर्त्तव्य पर आखें मीच ली हैं। बड़े-बड़े अधिकारी तो किसी भी संस्था के हों वे तो अपनी ड्यूटी अपने घरेलू कार्यों पर ही देना उचित समझते हैं। इस प्रकार बिगड़े माहोल को कौन कैसे सम्भालेगा।

आज सब जगह बड़े बूढ़ कहते हैं कि राज कर्मचारी तो अंग्रेजो हकूमत में ही काम करते थे। आज तो वे भारत आजाद होने पर आजाद हो गए। यह आम बात हर जगह सुन सकते हो।

—दीपचन्द स्वयं सेवक कासनी

शराब, दहेज के विरोध में साइकिलयात्रा

गुरुकुल कालवा (जींद) के संयोजन एवं आर्य युवक परिषद् जिला जींद के सहयोग से शराब, दहेज जैसी भयंकर रूप से समाज में फैली बुराइयों के विरोध में एक साइकिल यात्रा का आयोजन २८ से २ जुलाई तक किया गया ये साइकिल यात्रा जींद के पुरान बस स्टैंड से मुख्य बाजार से जुलूस के रूप में चलते ये नवयुवक लगातार नारे लगा रहे थे। जो शराब पीता है, अपने बच्चों का खून पीता है। शराब पीना छोड़ दो, जलती बहुयें करें पुकार— बन्द करो ये अत्याचार।

इस प्रकार से ये यात्रा लगातार २५ गांवों में रधाना, पिंडारा, सिंधवी खेड़ा, भम्भेवा, मोरखी, कालवा, पिल्लू खेड़ा, गांगोली आदि गांवों में प्रचार करती हुई जिला परिषद् के लोहचब गांव में समापन समारोह हुआ। इस अवसर पर जींद के एस. डी. एम. साहब डा० रामभगत लांग्यान जी ने इन युवकों को हवन पर आजीवन नशा न करने की तथा दहेज न लेने की प्रतिज्ञा करवाई।

इस यात्रा का उद्घाटन जींद के प्रसिद्ध युवा कार्यकर्त्ता श्री चन्द्रभान जी राणा प्रधान युवा राजपूत सभा हरियाणा ने किया व एक हजार रुपए का सहयोग भी दिया। आशीर्वाद आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् एव गुरुकुल कालवा के संचालक आचार्य बलदेव जी ने दिया। इस यात्रा का संयोजन शामलो कलां के भू. पू. सरपंच श्री सत्यवीर आर्य ने किया तथा श्री सूर्यदेव आर्य योग अध्यापक ने इन का विशेष सहयोग किया। ब्र० बलदीप गुरुकुल कालवा ने युवकों को अनुशासन में रखा व नारे लगवाए। मुख्य वक्ताओं में स्वामी योगानन्द जी, आचार्य बलदेव जी, सूर्यदेव आर्य, ब्र० बलदीप एवं पं० रामकुमार आर्य भजनोपदेशक ने अपने विचार रखे। प्रत्येक गांव के लोगों ने समाज सुधार में बड़ा ही सराहनीय कदम बताया। समय-समय पर युवकों को विश्राम व भोजन का प्रबन्ध किया। ऐसे आयोजनों के द्वारा युवाओं में जागृति लाई जा सकती है।

शराब हटाओ देश बचाओ

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय समाचार

५ मई, १९९० को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नव नियुक्त कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने अपने पद का कार्यभार सम्भाल लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय की वर्तमान समस्याओं पर विश्वविद्यालय के अध्यापकों और अन्य अधिकारियों से विचार विनिमय किया और उनसे अनुरोध किया कि वे ८वीं पंचवर्षीय योजना के लिए अपने विभिन्न प्रस्ताव प्रस्तुत करें। कुलपति विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति शास्त्र तथा प्राणी शास्त्र में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए प्रयत्नशील हैं। विज्ञान महाविद्यालय के गणित विभाग तथा माइक्रोबाइलोजी विभाग में स्नातकोत्तर शिक्षा पिछले कुछ वर्षों से दी जा रही है। गणित विभाग में वैदिक गणित पढ़ाने की व्यवस्था करने के भी प्रयत्न किए जा रहे हैं।

नया शिक्षा सत्र :

विश्वविद्यालय का नया सत्र १० जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। कुलपति ने आदेश दिए हैं कि शिक्षा सत्र शुभारम्भ वृहद् यज्ञ से होगा। इस यज्ञ में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं समस्त कुलवासी उपस्थित होंगे तथा प्रतिदिन प्रातः वैदिक प्रार्थना के साथ अध्ययन अध्यापन प्रारम्भ होगा। विश्वविद्यालय में यह प्रथा पहले भी प्रचलित थी किन्तु पिछले अनेक वर्षों से इसका परिपालन नहीं किया जा रहा था। नए शिक्षा सत्र में ऐसे हर सम्भव प्रयत्न किए जायेंगे जिनसे विश्वविद्यालय में शिक्षा का समुचित वातावरण बने तथा शिक्षा से सम्बधित सभी सुविधायें और अध्यापकों का मार्गदर्शन विद्यार्थियों को दिन भर प्राप्त होता रहे।

माननीय अतिथि :

भारत सरकार के शिक्षा राज्यमन्त्री माननीय श्री चिमनभाई मेहता विश्व विद्यालय में १३ जून को पधारे। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति एवं अध्यापकों से विश्वविद्यालय के विकास तथा शिक्षा से सम्बद्ध मामलों पर विचार विमर्श किया और आश्वासन दिया कि इस विश्वविद्यालय के विकास के लिए भारत सरकार समुचित सहायता देती रहेगी। उन्होंने कहा कि इस समय देश के हर क्षेत्र में चरित्रवान नागरिकों का अभाव है। गुरुकुल की शिक्षा में चरित्र निर्माण पर सदैव बल दिया जाता रहा है, इसलिए देश एवं समाज को गुरुकुल से विशेष आशाय और अपेक्षायें है। माननीय शिक्षा राज्यमन्त्री महोदय ने कहा कि विश्वविद्यालय मे ऐसे पाठ्यक्रम शुरू किए जाने चाहियें जो आजीविका के लिए सहायक होने के अतिरिक्त निरक्षरता दूर करने में भी सहायक बन सके।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष से भेंट :

विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने 21 जून को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो० यशपाल से विश्वविद्यालय की वर्तमान परिस्थितियों और आगामी योजनाओं के बारे में विचार विमर्श किया। प्रो० यशपाल ने आश्वासन दिया कि विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य के अध्ययन अध्यापन तथा अनुसंधान के लिए एवं इस विश्वविद्यालय को वैदिक ग्रन्थों, भारतीय विद्या एवं योग का विशिष्ट अध्ययन केन्द्र बनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यथाशक्ति सहयोग देगा। प्रो० यशपाल के निर्देशों के अनुसार इस सम्बन्ध में ८वीं पंचवर्षीय योजना के प्रस्ताव तैयार किए जा रहे हैं जिन पर विश्वविद्यालय के अधिकारी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधिकारियों के साथ निकट भविष्य में ही विचार विमर्श करेंगे।

विश्वविद्यालय का नया शिक्षा सत्र प्रारम्भ होने से पहले ही वित्त समिति और कार्य परिषद् की बैठकें भी की जा चुकी हैं जिनमें महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। उक्त दोनों बैठकें विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में १२ एवं १३ जून, १९९० को आयोजित की गई। इन बैठकों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इन प्रतिनिधियों ने द्वितीय परिसर की समस्याओं और आवश्यकताओं का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण एवं आंकलन किया।

पुस्तकालय और पुरातत्व संग्रहालय :

पिछले दिनों पुस्तकालय में कम्प्यूटर यूनिट ने भी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। इसके कारण पुस्तकालय की सुविधाओं को और अधिक बढ़ाया जा सकेगा। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं पुरातत्व संग्राहलय को देखने के लिए इस मास अनेक गणमान्य व्यक्ति गुरुकुल पधारे, जिनमें उत्तर प्रदेश के महालेखाकार श्री ज्योतिस्वरूप मल्होत्रा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपसचिव डा० तिलकराज केम, शिक्षा मन्त्रालय की उपसचिव श्रीमती शोभना जोशी, महालक्ष्मी शुगर मिल के महाप्रबन्धक श्री राव तथा हरिद्वार विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री एच०सी० श्रीवास्तव के नाम उल्लेखनीय हैं।

अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षा देने वाले परिक्षार्थियों ने भी गर्मियों की छुट्टियों में पुस्तकालय का विशेष लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त दून स्कूल एव वैलहम स्कूल, देहरादून के कुछ छात्र अपने ग्रीष्मकालीन प्रोजेक्ट पूरे करने के लिए अध्ययन हेतु पुस्तकालय मे आए।

वैदिक विवाह संस्कार

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की संस्कार विधि एव नियमों के अनुसार दिनांक १-७-९० को प्रातःकाल श्री लालचन्द 'विद्यावाचस्पति' की सुपत्री विजयलक्ष्मी आर्या का पाणिग्रहण संस्कार आर्यसमाज नारनौल के पुरोहित श्री महावीर प्रसाद शर्मा ने वेदों के अनुकूल करवाया। इस शुभ अवसर पर श्री लक्ष्मीनारायण औद्योगिक प्रशिक्षण एव मन्त्री महोदय ने ५१ रु० और मन्त्री जी के छोटे भ्राता श्री ओमप्रकाश सरपच ने ५१ रु० मन्त्री जी के सुपुत्र आदि ने कन्यादान करके वर-वधू को आशीर्वाद दिया। जिला के अन्य प्रमुख अधिकारीगण तहसीलदार साहब श्री रामपाल दहिया और इस क्षेत्र के सभी सज्जनों ने इस शुभ संस्कार की शोभा बढाई। श्री मंगल मार्ग से मण्डप तक वैदिक मन्त्रों और शिक्षाप्रद सूक्तियों के पटों से सजाया गया। महिलाओं की इतनी अधिक संख्या थी कि पाण्डाल एवं मण्डप के समीप तिनका मात्र जगह खाली न थी। इस विवाह संस्कार को देखकर उपस्थित सज्जन आर्यसमाज के सिद्धांतो से प्रभावित हुए और सभी ने कहा कि हम भी इसी प्रकार वैदिक विवाह संस्कार करवायेंगे। इस शुभ अवसर पर १०१ रु० पुरोहित श्री महावीर प्रसाद शर्मा आर्यसमाज नारनौल को दान दिए। ११ रु० सर्वहितकारी के लिए, ११ रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, ११ रु० आर्यसमाज नारनौल तथा ११ रु० आर्यसमाज खेड़की को दान दिए।

—महात्मा सुशीलदेव आर्य

श्री मंगल भवन खेड़की पत्रालय बैरावास (महेन्द्रगढ़

एक आवश्यक सूचना

सभी महापुरुषों का सम्मान

प्रा० भद्रसेन, होशियारपुर

संसार में समय समय पर अनेक व्यक्ति हुए जिन्होंने मानव जाति को सुखी, समृद्ध, विकसित बनाने के लिए सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और भौतिक विज्ञान आदि के क्षेत्रों में अपने अपने समय एवं स्थान पर विशेष कार्य किया। जिस भी व्यक्ति ने जिस भी क्षेत्र में जैसा योगदान दिया, वह तदनुरूप सम्मान का पात्र है। अपने अपने समय, स्थान और क्रम पर उन उन व्यक्तियों का विशेष योगदान आज के इस विकसित रूप को यहां तक पहुँचाने में सहयोगी बना। जैसे कि जेम्स वाट और स्टीफेंसन द्वारा आविष्कृत इन्जन चाहे आज की रेलगाड़ी में कार्य नहीं कर रहा, वह चाहे अब पुरातत्त्व की ही वस्तु है, पुनरपि आज के विकसित इञ्जनों के विकास में उसके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। जार्ज का योगदान सदा स्मरणीय रहेगा, वह अब अनुकरणीय न होने पर भी कभी मन्त्र विज्ञान के आविष्कार के विकास क्रम में सहयोगी बना था। अत: वह अविस्मरणीय है।

ऐसे ही धार्मिक क्षेत्र में आज से २५ सौ या १६ सौ पूर्व या १४ सौ वर्ष पहले अपने क्षेत्र में तत्कालिक दृष्टि से जिन्होंने विशेष योगदान दिया। अपने समय पर उस क्षेत्र की इन परिस्थितियों में मानव समाज सेवा की, उस सेवा के कारण वे सदा स्मरणीय रहेंगे। उन का वह योगदान आज की परिस्थिति में अब चाहे किसी अंश में अनुकरणीय न हो, क्योंकि आज की स्थिति मे अनुकरणीय का निर्णय तो आज की स्थिति के अनुरूप ही होगा। जैसे कि चिकित्सा के लिए आज के विकसित रूप को ही लेते है न कि प्राचीन अविकसित रूप को। अत: जिस भी महान व्यक्ति ने जिस भी क्षेत्र में जिस समय जसा योगदान दिया, उस योगदान के कारण तदनुरूप वह सदा ही स्मरणीय रहेंगे। जसे कि मध्यकाल में यज्ञों मे अनेक प्राणियों की बलि दी जाने लगी, तब जैन और बौद्ध धर्म के प्रवर्तकों ने अहिंसा का प्रचार किया। ऐसे ही उन दिनों वर्णों के भेदभाव के कारण अनेक प्रकार के स्पृश्यास्पृश्य, ऊंच-नीच के व्यवहार प्रारम्भ हो गए थे। इसी स्थिति में इन दोनो ने मानव जाति की एकता की बात प्रचारित की।

जिस महापुरुष ने जितने तप-तप कर जैसे-कसे कष्ट सहकर, अभावों मे निर्वाह करते हुए भी जितनी शिक्षा, योग्यता अर्जित की तथा अर्जित शिक्षा एवं योग्यता से मानव जाति का हितसाधक कार्य जितने सयम के साथ किया, वह महापुरुष अपने सयम और कार्य के कारण तदनुरूप सत्करणीय है। वस्तुत: जनता को जितना लाभ हुआ यह बात जहां महत्त्व की है, वहां सेवा करने वाले ने कितने संयम से सेवा की, यह भी एक विशेष चीज है, क्योंकि विकार के अवसर आने पर भी जो अपने आप को भ्रष्ट नहीं होने देते, वे और अधिक महत्वपूर्ण हैं एवं विशेष अनुकरणीय हैं। जैसे कि एक पत्नी के व्रत को पालने वाले श्रीराम पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए माता कैकेयी के कहने पर १४ वर्ष वन-वन भटकते रहे, वनवास के बाद लोकोपवाद से सीता को पुन: वन भिजवा कर राजापन को निभाया, पर राजा होते हुए भी दूसरा विवाह नहीं किया। अपने विविध गुणों के कारण अतएव मर्यादापुरुषोत्तम कहलाए। महान् त्यागी पन्ना ने अपने प्राण प्रिय जिगर के टुकड़े को उदयसिंह के स्थान पर बनवीर के क्रोध का शिकार बनवा दिया। महाराणा प्रताप ने जंगलों की खाक छानने पर भी दूसरों की तरह अकबर से सन्धि न करके स्वाधीनता के दीपक को हर स्थिति में प्रज्वलित किया। उस भामाशाह को कौन भूल सकता है जिसने प्रताप के चिन्तित मन को आश्वस्त करने के लिए अपनी सारी सम्पत्ति उनके चरणों में डाल दी। शिवाजी ने अपने सैनिकों द्वारा प्रस्तुत शत्रु की युवा बेटी को स्व अन्त:पुर में न रखकर सम्मानसहित उसके घर पहुंचाया। भड़भूजन का ध्यान रखते हुए अपना मकान टेढा बनवाने वाले इरान के राजा नौशेरवां बिना किसी प्रकार के भेदभाव को सामने रखे नार्वे के धनपति नोबेल ने अपनी सारी सम्पत्ति किसी भी क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वालों के लिए अर्पित कर दी।

ऐसे ही ससार के इतिहास की यह एक अपने आप में अनोखी घटना है कि एक पण्डित २१ वर्षीय युवक सच्चे शिवदर्शन और अमरता की चाहना से घरबार छोड़ता है। चौदह वर्ष लगातार भटकने के बाद मथुरा में गुरुचरणों में पहुंचता है, फिर गुरु की प्रेरणा से उसके जीवन का कांटा ही बदल जाता है और तब उसने लम्बे समय से चले आ रहे विविध भावना भरे साहित्य का आलोडन करके जन कल्याण के लिए एक सुसंगत पथ प्रशस्त किया, जो कि जीवन्त, व्यवहारिक, तर्कसंगत और शास्त्रसम्मत है। इस कार्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती जहां आज स्मरणीय हैं, वहां अपने अनेकविध विचारों से अनुकरणीय भी हैं।

महापुरुषों द्वारा विविध क्षेत्रों में किए गए महान् कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए महर्षि ने अपनी रचनाओं में उस उस योगदान और गुण के कारण प्रशंसा की है। बिना किसी यथार्थ के किसी महापुरुष की निन्दा करने वालों को आड़े हाथों लिया है और इसी दृष्टि से पुराणों को पसन्द नहीं किया। आर्यसमाज सोत्साह रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी, सीताष्टमी आदि पर्वों को मनाता है। हां, महापुरुषों द्वारा दर्शाए गए पथ में से अब अनुकरणीय क्या है और क्या केवल स्मरणीय है? इस का निर्णय, विवेक तो आज की विकसित परिस्थिति के अनुरूप मूल्यांकन से ही हो सकता है। अत: आर्यसमाज वेद प्रामाण्य के साथ विचारशीलता को भी महत्त्व देता है, तभी तो पांचवें नियम में 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये' की भावना दी गई है।

इस सारे विश्लेपण से स्पष्ट होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन को जीवन्त बनाने के लिए एक ऐसा सुसगत राजपथ दर्शाया जो कि शास्त्र सम्मत तथा तर्कसगत है। यह पथ सब के लिए सर्वथा कल्याणकारक भी है। इस स्थिति को सामने रखकर एक कवि के शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं—

पा सके प्रत्येक मानव, पथ खुला उत्थान का।
साधना तेरी रही — सुख शान्ति हो ससार मे,
लाभ सारा विश्व पाए — मुक्ति के वरदान का।
सर्प-सा मानव न धन पर— बैठ रखवाली करे,
बन जलद धन-जल—लुटाना धर्म है इन्सान का।
पा सके प्रत्येक मानव, पथ खुला है उत्थान का।
कौन है ऊंचा यहां पर—कौन है नीचा यहां,
स्वार्थ हिंसा लोभ से—इन्सान यदि अन्धा न हो,
तो उसे मिल जाए स पथ—विश्व के कल्याण का।

—हरिकृष्ण प्रेमी

आर्यसमाज नरेला का चुनाव

प्रधान - चौ० लायकराम उपप्रधान - श्री अत्तरसिंह शास्त्री व श्री प्रेम कृष्ण मन्त्री - मा० पूर्णसिंह आर्य उपमन्त्री - डा० धर्मवीर कोषाध्यक्ष - श्री सूरजभान सहायक कोषाध्यक्ष - श्री धर्मवीर अध्यक्ष कुमार सभा - श्री जयपाल आर्य यज्ञ तथा पुस्तकालय प्रबन्धक स्वामी अमृतानन्द पुरोहित - पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री, पी. एच.डी. प्रतिनिधि - श्री लायकराम, श्री सूरजभान, मा० पूर्णसिंह आर्य, श्री देशराज।

✱ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

सुखी गृहस्थ के आधार

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

गृहस्थाश्रम को ज्येष्ठ और श्रेष्ठ माना गया है। गृहस्थाश्रम को ही स्वर्गधाम कहा गया है। गृहस्थ के कर्त्तव्य-कर्मों का पालन करते हुए मनुष्य इहलौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के सुखों को प्राप्त करता है, परन्तु आज ये स्वर्गधाम नरक बने हुए हैं। जिससे पूछो—'आप कुशल तो हैं?' वही कहेगा—'अजी! कुशल-मंगल कहां? जैसे-तैसे कट रही है।' गृहस्थ में सुख कैसे प्राप्त हो, इसके लिए कुछ सूत्र प्रस्तुत हैं—

सुखी गृहस्थ का पहला आधार है—सुन्दर स्वास्थ्ययुक्त पति-पत्नी का दीर्घायुष्य। वेद में कहा है—विश्वमायुर्व्यश्नुतम्। [ऋ० १०।८५।४२] पति-पत्नी दोनों दीर्घजीवी हों। दीर्घ और स्वस्थ जीवन के आठ उपाय हैं—

(१) प्रातः भ्रमण कम से कम ६ किलोमीटर प्रतिदिन।
(२) १५ से २० मिनट तक आसन, प्राणायाम प्रतिदिन।
(३) सादा और अल्प भोजन। दिन में अधिक से अधिक दो बार भोजन। पीने में दूध और पानी ही सर्वोत्तम है। बोतलों के पानी से बचें।
(४) सप्ताह में एक दिन उपवास रखना।
(५) मन को सुन्दर, धार्मिक भावों से सजोना।
(६) वीर्य रक्षा करना। गृहस्थ में रहते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन करना। सन्तान के लिए ही मैथुन करना।
(७) शराब आदि मादक पदार्थ, अण्डे आदि अभक्ष्य पदार्थ और मांसादि पाशविक भोजन से बचना, बुरे विचारों से दूर रहना।
(८) प्रतिदिन १५-२० मिनट दर्पण के सामने खूब खुलकर हंसना।

सुखी गृहस्थ का दूसरा आधार है—पति-पत्नी में प्रेम। वेद का आदेश है—इहैवस्तं मा वियौष्टम्। [ऋ० १०।८५।४२] हे दम्पती! तुम इस गृहस्थाश्रम में रहो, एक दूसरे से पृथक् मत होओ। गृहस्थ को सुखी बनाने में पति-पत्नी का प्रेम बहुत महत्त्वपूर्ण है। महर्षि मनु लिखते है—

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥ —मनु ३-६०

जिस कुल में स्त्री से पति और पति से स्त्री सन्तुष्ट रहती है, उस कुल में अवश्य ही सर्वदा कल्याण होता है।

वेद के शब्दों में 'चक्रवाकेव दम्पती' [अथर्व १४-२-६४]—पति-पत्नी में चकवा-चकवी जैसा प्रेम होना चाहिए। चकवा-चकवी रात्रि में अलग हो जाते हैं, परन्तु एक दूसरे का चिन्तन करते रहते हैं। प्रातः होते ही फिर मिल जाते हैं। पति-पत्नी के प्रेम का आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम राम, सती-साध्वी सीता से सीखें। दोनों एक-दूसरे के लिए व्याकुल हैं। हनुमन्नाटक में एक उत्तम प्रसग है। सरमा ने राम का ध्यान करने वाली सीता से कहा—हे सखि! भ्रमर का ध्यान करने से भ्रमर बने हुए कीट को देखकर मुझे डर लगता है कि निरन्तर श्रीराम का ध्यान करने से तुममें पुंस्त्व आ गया तो फिर उनके साथ तुम्हारा मेल कैसे होगा?' फिर स्वयं ही उत्तर देते हुए कहती है—'डर की कोई बात नहीं है। तुम्हारा निरन्तर ध्यान करने से श्रीराम में स्त्रीत्व आ जाएगा, फिर दोनों में प्रेम होगा ही।

सुखी गृहस्थ का तीसरा आधार है—उत्तम सन्तान। वेद में अनेक स्थानों पर 'प्रजा' और 'सुप्रजा' की कामना की गई है। विवाह विलास के लिए नहीं है अपितु सुसन्तान प्राप्ति के लिए है। घर में अन्न है, धन है, सुख है, परन्तु सन्तान नहीं है तो सब कुछ सूना-सूना लगता है। घर में सन्तान हो परन्तु वह सुसन्तान हो, सुप्रजा हो। सन्तान उत्पन्न न होने पर तो एक ही दुःख होता है कि सन्तान नहीं हुई, परन्तु उत्पन्न होकर सन्तान मूर्ख हो, दुष्ट हो, अयोग्य हो तो पद-पद पर दुःख होता है। अध्यापक शिकायत करते हैं कि इस बच्चे का दिमाग ही नहीं है। छः-छः बार समझाने पर भी इसकी समझ मे ही नहीं आता। एक पडौसी शिकायत कर रहा है कि आपके बच्चे ने पत्थर मारकर हमारा शीशा तोड दिया तो दूसरा पडौसी कह रहा है कि इसने हमारे बच्चे को पीट दिया।

सन्तान उत्पन्न कीजिए परन्तु उसे सुसन्तान बनाइए। माता और पिता इसके लिए तप करें। माता अपने संकल्पों से जैसा चाहे सन्तान को वैसा बना लेती है—

माता के बनाए पुत्र कायर और कपूत होत।
माता के बनाए पुत्र वीर बन जात है॥
माता के बनाए पुत्र शिवा और प्रताप जैसे।
माता के बनाए पुत्र दयानन्द की कहूँ क्या बात है॥

माता लोरियां देकर और पिता अपने सदुपदेश से, अपने आदर्श आचरण से सन्तानों का निर्माण करते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट सोलह संस्कार सुप्रजा निर्माण में अत्यन्त सहायक है।

सुखी गृहस्थ का चौथा आधार है—धन की प्रचुरता। जब ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और सन्यासी का कार्य भी धन के बिना नही चलता तो गृहस्थ का तो चल ही कैसे सकता है? गृहस्थ धन-धान्य से भरपूर होना चाहिए। हां, गृहस्थ यह ध्यान रखे कि यह धन ईमानदारी से कमाया गया हो। वेद में कहा है—

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे।
यशसं वीरवत्तमम्॥ ऋ० १-१-३

मनुष्य अपने पुरुषार्थ से उस धन को कमाए जो प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होता जाए, कभी क्षीण न हो, जो दानादि के कारण यश देने वाला हो और पुत्र, भृत्य (नौकर-चाकर) आदि से युक्त हो।

अन्याय से कमाया हुआ धन जड़मूल सहित नष्ट कर डालता है अतः दूसरों का शोषण न करके, दूसरों का गला न काटकर, दूसरों का हक न छीनकर पुरुषार्थ से ही धन कमायें।

सुखी गृहस्थ का अन्तिम परन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आधार है—पञ्चमहायज्ञों का अनुष्ठान। इनकी महिमा में कहा गया है—

आपद्यपि हि कष्टाया पञ्च यज्ञान् न हापयेत्।
स्वर्गापवर्गयो प्राप्ति पञ्च यज्ञ प्रचक्षते॥

आपत्तियां और कष्ट आने पर भी पञ्चमहायज्ञों को नहीं छोडना चाहिए। स्वर्ग—सुखविशेष और मोक्ष—इन दोनों की प्राप्ति पञ्चमहायज्ञों द्वारा ही होती है। ये पञ्चमहायज्ञ गृहस्थ के आवश्यक कर्त्तव्य है। संक्षेप मे पञ्चमहायज्ञों का स्वरूप यह है—

(१) ब्रह्मयज्ञ—सन्ध्या और स्वाध्याय। सन्ध्या का अर्थ है परमपिता परमात्मा की उपासना। प्रतिदिन कम से कम एक घड़ी (२४ मिनट) प्रातः और एक घड़ी सायं प्रभु की आराधना करना। स्वाध्याय का अर्थ है वेद का अध्ययन, चिन्तन और मनन करना।

(२) देवयज्ञ—अग्निहोत्र करना। हम प्रतिदिन श्वासों के द्वारा, मल-मूत्र के द्वारा जल, वायु आदि का दूषित करते हैं। यज्ञ के द्वारा वायु सुगन्धित होती है। उत्तम वृष्टि होती है। उससे उत्तम अन्न होता है। प्रतिदिन यज्ञ करने से घर का वातावरण भी सुगन्धित रहता है। यज्ञ के द्वारा परमात्मा का आराधन, बड़ों का सत्कार और छोटों को प्रेम प्राप्त होता है।

(३) पितृयज्ञ—जीवित माता-पिता, दादा-दादी, परदादा-परदादी—इनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करना। इन्हें अन्न, धन, वस्त्र, सेवा और सत्कार द्वारा सदा प्रसन्न रखना, इनका कभी भी अपमान न करके सदा सम्मान करना। जीवित माता-पिता आदि की सेवा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अथर्ववेद में गौ—

(प्रथम पृष्ठ से आगे)

जीवनोपयोगी अंश को भी न पा सके। अर्थात् गौ घातक लोगों का सर्वस्व छीनकर राजा देश से निकाल दे और वे अन्न एवं औषधि तक भी न पा सके और रोगों से मरे।

९. सुख सम्पत्ति का हेतु-गौ—

सूयवसाद भगवती हि भूया अधा वयं भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणमघ्न्ये पिब शुद्धमुदक माचरन्ती ॥
(अथर्व. ९।१०।२०)

अर्थात्—हे (अघ्न्ये) न मारने योग्य अघ्न्या गौ तू उत्तम जौ की भूसी खाकर निश्चय से दूध आदि सौभाग्यशाली पदार्थों से युक्त हो और हम भी सुख-सम्पत्तिमान् हों। हे (अघ्न्ये) गौ तू सदा ही घास खा और सब तरफ विचरती हुई स्वच्छ जल का पान कर।

१०. गौओं, प्रजाओं एवं शरीर-बल की अभिलाषा—

गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो अस्तु तनूबलम्।
तत् सर्वमनुमन्यन्तां देवा ऋषभ दायिने ॥
(अथर्व० ९।४।२०)

अर्थात्—हे प्रभो! हमारे पास गौएं हों सन्तानें हों और शरीर में बल हो। विद्वान् हितकारी लोग महावृषभ दान करने वाले के लिए गौ, प्रजा और बल सबको प्राप्त करने के लिए अनुमति दें, उन को प्राप्त करने का आशीर्वाद दें और उसके उपाय दर्शावें।

११. प्रजाओं के प्राण, चेतना का स्रोत गौ—

मातादित्यानां दुहिता वसूनां प्राणः प्रजानाममृतस्य नाभिः।
हिरण्यवर्णा मधुकशा घृताची महान्भर्गश्चरति मर्त्येषु ॥
(अथर्व० ९।१।४)

अर्थात् सूर्यों की रचना करने हारी, समस्त जीवों की कामना पूरी करने हारी, शरीरधारियों का प्राण जीवन शक्ति, अमृत दुग्ध का आश्रय स्थान, सुवर्ण के वर्ण वाली, देवपूजा यज्ञादि की सामग्री घृत देने वाली गौ है, इसीलिए उसका महान् 'भर्ग' चेतन्यमय तेजोरूप मरणधर्मा प्राणियों मे विचरता है अर्थात् मरणधर्मा में चेतनता के साथ तेज भी उत्पन्न करता है।

१२ ब्रह्मशक्ति द्वारा निर्मित सप्तमधुओं में दो मधु बैल और गौ-

यो वै कशायाः सप्तमधूनि वेदमधुमान् भवति।
ब्राह्मणश्च राजा च धेनुश्चानड्वांश्च व्रीहिश्च
यवश्च मधु सप्तमम्॥ (अथर्व ९।१।२२)

अर्थात् जो पुरुष समस्त जगत् को अपने शासन में रखने वाली 'कशा' ब्रह्मशक्ति के सात मधु अर्थात् जीवों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले सात पदार्थो को जान लेता है, वह स्वयं मधुमान्, मधु के समान मधुर मनोहर चित्ताकर्षक हो जाता है। सात मधु ये हैं—१ ब्राह्मण (विद्वान् पुरुष) २ राजा ३ गौ ४ बैल ५ धान्य ६ जौ और ७ मधु।

१३. नमस्कार के पात्र - गौ—

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः।
बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नमः ॥ अथर्व. १०।१०।१

अर्थात् हे (अघ्न्ये) न हिंसा करने योग्य गौ! उत्पन्न या प्रकट होती हुई को तुझको नमस्कार है। तेरे बालों और शफों के लिए भी हमारा आदर है।

१४. परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट वस्तुओं में गौ—

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामः यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः॥
[अथर्व. २०।३४।७]

अर्थात् जिस परमेश्वर के शासन में व्यापक शक्ति वाले सूर्य और जिसके शासन में समस्त गौएं हैं, जिसके शासन में समस्त इन्द्रियगण, जीवगण अथवा लोक लोकान्तर हैं, जिसके वश में सब रमणसाधन, देह और आत्मा हैं। जो परमेश्वर सूर्य को उत्पन्न करता है, जो उषा को प्रकट करता है, जो जलों वा समुद्रों का और आप्त पुरुषों के समस्त कर्मों, बुद्धियों का भी प्रवर्तक है, हे लोगो! वह परम ऐश्वर्यवान् परमेश्वर है।

हरियाणा में नौजवानों को नशीले पदार्थों की आदत डालने वाला गिरोह सक्रिय

करनाल, ८ जुलाई (गांधी)। जानकार सूत्रों से पता चला है कि युवकों एवं युवतियों को नशीले पदार्थों का 'चस्का' लगाने वाला एक गिरोह हरयाणा में आजकल सक्रिय हो रहा है जो नौजवानों को पहले अपने जाल में फंसाता है फिर उनका अपहरण करके नशीले पदार्थों की आदत डालकर उन्हें छोड़ देता है।

सूत्रों ने पहले भी इस प्रकार की घटनाओं के संकेत दिए थे लेकिन ताजी घटना गत दिनों करनाल के दो युवकों के साथ घटी है।

बताया जाता है कि अर्बन एस्टेट के एक निवासी ने करनाल से एक टी.वी. विक्रेता की दुकान से अपना टी.वी. ठीक करने के लिए एक मैकेनिक बुलाया। दो युवा मैकेनिक एक साथ टी.वी. ठीक करने पहुंचे। वहां से उन मैकेनिकों को वह व्यक्ति टी०वी० ठीक करवाने के बहाने एक निकटवर्ती गांव में ले गया। बताया जाता है कि वहां उन युवा मैकेनिकों को कोई तरल पदार्थ पिलाकर बेहोश कर दिया गया तथा बाद में जब उन्हें होश आया तो उन्होंने अपने को किसी दूसरे स्थान पर ही पाया। इस नए स्थान पर उनको नशीली सिगरेट पीने को मजबूर किया गया। उस स्थान पर और भी युवक एवं युवतियां थी जो नशीले पदार्थों का सेवन करने पर मजबूर थीं। तीन दिन के बाद करनाल के यह दोनों युवक अपहरणकर्त्ताओं के चंगुल से भागने में सफल हो गए तथा भागने के बाद उन्हें पता चला कि जहां उन्हें रखा गया था वह आगरा का कोई स्थान था।

बताया जाता है कि दोनों युवकों को नशीली वस्तु सेवन करने की आदत पड़ चुकी है जो उनके लिए मुश्किल का कारण बनी हुई है। यह भी संकेत मिले हैं कि कालेज के छात्र-छात्राओं को फंसाकर नशीले पदार्थों का चस्का' डालने का भी उद्देश्य अधिक पाया जाता है।

(प के.)

सुखी गृहस्थ के आधार

(पृष्ठ ५ का शेष)

करना ही सच्चा श्राद्ध और तर्पण है। मरने के पश्चात् उनके नाम पर बीडी-सिगरेट पीने वाले, गांजे-सुलफ का दम लगाने वाले, अनपढ ब्राह्मनों को को खिलाने से कुछ नहीं होता। पितरों को पहुंचने की बात तो कोरी कल्पना ही है।

(४) अतिथि यज्ञ—जब कभी वेदादि शास्त्रों के विद्वान्, धर्म-उपदेशक, लोगों को सन्मार्ग पर चलाने वाले, प्रश्नोत्तर के द्वारा उनके सन्देहों को निवृत करने वाले व्यक्ति घर पर आयें तो भोजन, वस्त्र आदि के दान से उनका भी स्वागत-सत्कार करना।

(५) बलिवैश्वदेवयज्ञ—कौआ, कुत्ता, कीट-पतंग, कोढ़ी, लूला-लंगड़ा आदि व्यक्ति—इनको भी अपने भोजन में से भाग देना।

इन पञ्चयज्ञों के अनुष्ठान से गृहस्थाश्रम स्वर्ग बन जाते हैं।

आर्यसमाज अर्जुन नगर गुड़गांव का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री रोशनलाल 'सेवक' उपप्रधान—किशनचन्द व श्री वासदेव मन्त्री—श्री शिवदत्त आर्य उपमन्त्री—मा० श्याम सुन्दर आर्य व श्री सोहनलाल कोषाध्यक्ष—श्री तिलकराज 'स्वर्णकार' व श्री भारत भूषण पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री भारत रत्न भण्डारी—श्री ओमप्रकाश खुराना।

आर्यसमाज शान्ताक्रुज, बम्बई का चुनाव

प्रधान—श्री रामचन्द्र आर्य उपप्रधान—कैप्टन देवरत्न आर्य व विमलस्वरूप सूद महामन्त्री—विश्वभूषण आर्य मन्त्री—लाल चन्द्र आर्य व नरेन्द्र पटेल कोषाध्यक्ष—श्री कस्तूरीलाल मदान।

जुलाना (जीन्द) में योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

ग्रीष्म अवकाश में कन्या गुरुकुल जुलाना में २२ जून से ३ जुलाई १९९० तक योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। स्वामी सत्यवेश जी महाराज ने जुलाना के समीप ग्रामों में योगासनों का प्रचार हो, इसलिए यह आयोजन किया। प्रतिदिन प्रातः ६ बजे से ८ बजे तक और सायं ४ बजे से ६ बजे तक योगासन, दण्ड, बैठक, दौड़ कुश्ती आदि का बच्चों ने अभ्यास किया। २६ जून को जुलाना मण्डी तथा गांव में जलूस निकाला गया। इस शिविर में डी. ए. वी. स्कूल जुलाना के लगभग ३० बच्चों ने भाग लिया और अनेक सज्जनों ने लाभ उठाया। प्रतिदिन प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक सन्ध्या यज्ञ, उपदेश पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। श्री सत्यवीर जी आर्य प्रधान आर्य युवक परिषद् (जीन्द), श्री सूर्यदेव जी अध्यापक, श्री सहदेव जी शास्त्री, पण्डित पोहकर जी आदि महानुभावों ने योग प्रशिक्षण में सहयोग दिया।

ब्र० सुभाषचन्द्र जी अग्निहोत्री ने यज्ञ के लिए घी सामग्री का दान किया और शिविर के लिए जिन महानुभावों ने दान देकर सहयोग प्रदान किया उन सबको हार्दिक धन्यवाद। ३ जुलाई को जुलाना के तहसीलदार महोदय ने शिविर में भाग लेने वाले बच्चों को पारितोषिक देकर उत्साहित किया।

संयोजक
चांदसिंह मुख्याध्यापक डीएवी स्कूल जुलाना

एक योगी अवधूत चाहिए

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

इस पावन भारत माता को राष्ट्र शक्ति मजबूत चाहिये।
राष्ट्र भवन की रक्षार्थ सराहनीय करतूत चाहिये॥
भारतीय सब प्रेमपूर्वक आपस में मिल रहना सीखे।
भेदभाव और ऊंचनीच यहां न कोई छुआछूत चाहिये।१।
सत् मार्ग प्रेरणादायक प्रिय अनमोल वचन धारण करिये।
साधु सज्जन से प्रीति दुष्ट दुर्जन के सिर जूत चाहिये।२।
सच्चा सैनिक बन कर जो तूफानों से टकराता है।
समराङ्गण में कूद पड़े बन अरिदल को यमदूत चाहिये।३।
हों सात पांच बेटे बेटी सारे कपूत तो क्या फायदा।
मर्यादा में बंधा हुआ श्रीराम सा पूत सपूत चाहिए।४।
जिसने तप त्याग गुणादिक से सेवक बनकर दिखलाया।
ऐसा बलधारी बजरंगी श्री हनुमान सा दूत चाहिए।५।
विष के प्याले पीये स्वयं औरों को अमृत पिला गया।
जग में ऋषिवर दयानन्द सा एक योगी अवधूत चाहिए।६।

गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश आरम्भ

आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) वेदाङ्ग–दर्शन–योग–शिक्षण संस्था है। यहां महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि के अनुसार शिक्षण देने की व्यवस्था है। इसमें आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार करने के इच्छुक युवक ब्रह्मचारियों को प्राथमिकता दी जाती है। इनका सारा व्यय गुरुकुल वहन करता है। छठी, सातवीं, आठवीं उत्तीर्ण छात्रों को भी प्रवेश दिया जाता है। ये छात्र महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरयाणा) की मध्यमा, शास्त्री और आचार्य कक्षा की परीक्षा देते हैं। घृत दुग्ध आदि सहित मासिक व्यय दो सौ रुपये होता है। शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक उन्नति करने का शुभ अवसर उपलब्ध है। शीघ्र सम्पर्क करें।

—जगदेव नैष्ठिक
आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म.प्र.) ४६१००१

आँखों की ज्योति बढ़ाता है नींबू

नींबू सभी ऋतुओं में मिलने वाला बहु उपयोगी और सस्ता फल है। नींबू मनुष्य के भोजन को शीघ्र पचाने के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसमें कीटाणु नाशक शक्ति बहुत अधिक होती है। इसमें विटामिन 'सी' तथा साइट्रिक ऐसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। नीबू रक्त को शुद्ध करता है। हाजमा दुरूस्त करता है, दांतों को मजबूत बनाता है तथा नेत्रों की ज्योति को बढ़ाता है, यह शरीर को संक्रामक रोगों से भी बचाता है शरीर के लिए इतने लाभ पहुंचाने के अतिरिक्त नीबू नारी सौंदर्य के लिए रामबाण है तथा इसका प्रयोग चेहरे की खुश्की, नेत्रों के नीचे का कालापन तथा झाइयां आदि मिटा देता है। सौंदर्य वर्धन के लिए नींबू का प्रयोग निम्नवत् करना चाहिए.—

यदि चेहरे पर फुन्सियां और कीलें हों तो दिन में दो बार नीबू का रस लगाना चाहिए तथा आधे घण्टे के बाद ताजे पानी से धो देना चाहिए। चेहरे पर चमक और निखार आ जाएगा।

अण्डे की सफेदी में नीबू का रस मिला मुंह पर चुपड़ने तथा थोडी देर बाद गुनगुने पानी से धोने से कुछ दिनों में चेहरे पर निखार आ जाएगा।

गुलाब जल में नींबू का रस निचोड लें तथा उसमें कस्तूरी व ग्लैसरीन मिला लें। नहाने से पूर्व इस योग को चेहरे पर चुपड लें। नहाते समय गुनगुने पानी से मुंह धोकर पुन. ठण्डे जल से धोये तथा रोयेदार तौलिए से चेहरा रगड़ें। त्वचा स्निग्ध कोमल व कांतियुक्त हो जाएगा।

महापुरुष

कोटि-कोटि है नमन तुम्हें, राष्ट्र सुधारा करते।
तन, मन, धन को शक्ति को, परहित में लगाया करते॥
स्वार्थ के संसार में रहकर, त्याग दिखाया करते।
देश धर्म जाति को खातिर, प्राण गवाया करते॥
हर मानव को मानवता का, पाठ पढ़ाया करते।
सोई हुई मानव जाति को, पुन. जगाया करते॥
आभूषण है क्षमा तुम्हारा, क्रोध मिटाया करते।
पापी को पावन शिक्षा दे, पुण्य कराया करते॥
भ्रमण करते भू-मण्डल का, परमेश्वर का ध्यान रहे।
जाति पाति भेद मिटाओ, मानव एक समान रहे॥
महापुरुष हों देने वाले, सब कुछ ही दे जाते हैं।
युग-युग के इतिहास में देखो, देवपुरुष कहलाते हैं॥

महेशचन्द्र आर्य, ग्राम पो. पन्हैड़ा खुर्द,
बल्लबगढ़, जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

रंग बदलेगा जमाना

'नाज' सोनीपती

बाद मरने के नया जामा मिलेगा, एक और।
जिन्दगी के बाद देखेंगे तमाशा, एक और॥
　　तेरी नजरों का तो हम भी केन्द्र बनते लाजमी।
　　काश ! मिल जाता कहीं से हम को, तुमसा एक और।
कोठियां इच्छाओं की विध्वन्स हो जाती सभी।
अपने जब मस्तिष्क में नक्शा उभरता एक और।
　　देखते ही जाइये तेवर, जमाने के हुजूर।
　　आएगा गिरगिटनुमा शायद जमाना, एक और॥
जिन्दगी भर कितने खतरे मोल लेकर मैं जिया।
सिर्फ जालिम मौत का है बाकी खटका एक और।
　　इक जगह टिकते नहीं हैं, बेठिकानों के कदम।
　　उनकी खातिर नित, नया ढूंढो ठिकाना, एक और॥
उसने तो लाखों सुना के अनसुनी कर दी मेरी।
जो नहीं सुनता है इक भी, खाक सुनता एक और॥
　　गैर तो गैरों के हैं, पर बक्ते मुश्किल में अजीज।
　　कर गया अपनों से भी अपना किनारा, एक और॥
जिस ने खोए होश अपने एक ही जलवे से 'नाज'।
किस तरह फिर देख पाता, उसका जलवा एक और॥

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री में प्रवेश आरम्भ

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री श्रेणियों के लिए ३१ जुलाई १९९० तक प्रवेश खुला है। भोजन, दूध, पुस्तकें, छात्रावास व मनोरंजन की सर्वथा निःशुल्क सुविधा के साथ ही हिन्दी टाइपिंग तथा संगीत सिखाने का प्रबन्ध। प्रवेश योग्यता कम से कम मैट्रिक पास। विद्याधिकारी तथा विद्यावाचस्पति उत्तीर्ण छात्रों को शास्त्री कक्षा में सीधा प्रवेश मिल सकेगा। स्थान सीमित हैं। प्रवेश लेने वाले शीघ्रता करें।

नरेश कुमार शास्त्री, एम. ए., आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय,
करतारपुर जिला जालन्धर

भजनोपदेशक की आवश्यकता

आर्यसमाज हावड़ा में एक भजनोपदेशक की आवश्यकता है जो प्रचार कार्य में दक्ष हो। पत्र व्यवहार आर्यसमाज के मन्त्री से करें।

—मन्त्री आर्यसमाज हावड़ा
३८, खेतरमीतर लेन सलकिया हावड़ा—६

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं. २३२०७/७३ रजि. न



कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री | सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए. | श्रावण ६, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३२ २१ जुलाई १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

जिला भिवानी तथा महेन्द्रगढ़ में वेदप्रचार मण्डल गठित

श्री समेरसिंह आर्य एवं पं० ताराचन्द वैदिक तोप ~~मण्डल~~ संयोजक मनोनीत

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के प्रस्तावानुसार हरयाणा के प्रत्येक नगर तथा ग्रामों में वेदप्रचार तथा महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुंचाने के लिए जिलेवार वेदप्रचार मण्डल गठित करने के कार्यक्रम के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद, सिरसा हिसार में जिलेवार वेदप्रचार मण्डलों का गठन किया जा चुका है। प्रत्येक मण्डल में एक-एक उपदेशक तथा एक-एक भजन मण्डली प्रचारार्थ नियुक्त की जावेगी। इसी प्रसंग में दिनांक १४ जुलाई, १९९० को जिला भिवानी के लिए चरखी दादरी तथा जिला महेन्द्रगढ़ के लिए नारनौल में आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के अधिकारियों तथा प्रतिनिधियों की बैठकें सभा के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई।

जिला भिवानी वेदप्रचार मण्डल का पुनर्गठन :

२१ जनवरी, १९९० को आर्यसमाज मन्दिर घन्टाघर भिवानी में जिला भिवानी के आर्यसमाजों के अधिकारियों की बैठक में वेदप्रचार जिला भिवानी का गठन किया गया था जिसमें श्री गणपतसिह आर्य को संयोजक नियुक्त किया गया था। उन्होंने वेदप्रचार कार्यक्रम संचालित करने के लिए प्रयत्न किया परन्तु वे अस्वस्थ रहने के कारण जिले के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क नही कर सके। अतः उन्होंने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। इसी कारण वेदप्रचार मण्डल का पुनर्गठन करने के लिए १४ जुलाई, १९९० को पुनः जिला भिवानी के आर्यसमाजों के अधिकारियों की बैठक आर्यसमाज मन्दिर चरखी दादरी में बुलाई गई। इसकी तयारी के लिए सभा की ओर से पं० ईश्वरसिह तूफान की भजन मण्डली ने ग्राम चिडिया, मन्दोला, बाघोत, चरखी तथा दादरी, प० जयपाल आर्य की भजन मण्डली ने ग्राम बिगोवा, खातीवास, रामनगर, चरखी तथा दादरी में और पं० मुरारीलाल बेचैन की मण्डली ने चरखी दादरी के उपनगरों में वेदप्रचार किया। सभा के कार्यालय से तथा आर्यसमाज चरखी दादरी की ओर से जिलाभर के आर्यसमाजों में पत्रों द्वारा सूचना भेजी गई। परिणामस्वरूप १४ जुलाई को आर्यसमाज मन्दिर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से खचाखच भरा था और सभी में आर्यसमाज के प्रचार को घर-घर पहुँचाने की उत्सुकता दृष्टिगोचर हो रही थी। प्रातः बड़ी श्रद्धा से यज्ञ किया गया। पं० जयपाल आर्य, पं० ईश्वरसिह तूफान तथा हरिसिह प्रभाकर ने भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। इस बैठक में सभा प्रधान प्रो० शेरसिह ने ११ बजे पहुँचना था परन्तु उन्हें १४ जुलाई को अचानक प्रातः ८ बजे बेरी जिला रोहतक जाना पड़ गया। वहां चौ० विजय कुमार जी की प्रेरणा से पानीपत के एक दानी ने ४० हजार रुपए का चैक आर्यसमाज मन्दिर की यज्ञशाला को पूरा करवाने के लिए सभा प्रधान प्रो० शेरसिह को भेंट किया। इस कारण सभा प्रधान जी सभा के सम्पत्ति संरक्षक श्री सूबेसिह जी के साथ चरखी दादरी पहुंच सके। सौभाग्यवश आर्यजगत् के विख्यात सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी भी हिसार से आते हुए इस बैठक में सम्मिलित हो गए। उन्हें अपने बीच में पाकर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता गदगद हो गए और स्वामी दयानन्द, स्वामी ओमानन्द, प्रो० शेरसिह तथा आर्यसमाज अमर रहे के जयघोष से आकाश गुंजा दिया। आर्यसमाज चरखी दादरी के प्रधान प० सत्यनारायण आर्य तथा सभा के पुस्तकाध्यक्ष आचार्य ऋषिपाल ने आर्यनेताओं तथा वेदप्रचार मण्डल का गठन करने की सभा की योजना का स्वागत करते हुए सभा को तन, मन तथा धन में सहयोग देने का आश्वासन दिया। श्री स्वामी रामानन्द ने सर्व प्रथम वेदप्रचार मण्डल भिवानी के सचालन हेतु १०० रु० तथा अपना समय देने की घोषणा की।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिह ने इस अवसर पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज भारत की सुरक्षा बाहर से तथा अन्दर से खतरे मे है। अमेरिका तथा मुसलमान राष्ट्र भारत को पुनः विभाजित करने के लिए धर्म तथा राजनैतिक रूप से पाकिस्तान द्वारा आक्रमण करा रहे हैं। प्रतिदिन पजाब तथा कश्मीर में उग्रवादी पाकिस्तान से तोड-फोड़ की ट्रेनिंग लेकर हिंसक गतिविधियों में संलग्न है। श्रीनगर से हिन्दू भाई-बहन अपने धर्म तथा जीवन की सुरक्षा हेतु सभा के कार्यालय मे आए और उन्होंने अस्थायी आवास की सुविधा मागी है। सभा की प्रेरणा से सनातन धर्म तथा अन्य सामाजिक सस्थाओ ने भी अपने दुःखी भाइयों की पूरी सहायता देने का वचन दिया है। इस प्रकार सारे राष्ट्र की नजर आर्यसमाज पर लगी है। आपने शराब तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को दूर करने का उल्लेख करते हुए कहा कि आज भारत के सभी राजनैतिक दल एक दूसरे दल की आलोचना करके सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु उनमें कोई भी राजनैतिक दल राष्ट्र से शराब जैसी भयंकर बीमारी को समाप्त करने के लिए कदम नहीं उठाता। आज नवयुवक तथा नवयुवतियां नशे के चक्कर में फसते जा रहे हैं। यदि युवा शक्ति नशे को इसी प्रकार आदि हो गई तो राष्ट्र की सुरक्षा कैसे हो सकेगी। पाकिस्तान में शराब पर...

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्यसमाज की स्थापना क्यों की गई ?

—यशपाल आर्यबन्धु, सिद्धान्त मनीषी
आर्य निवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद-३२

पुनर्जागरण के अद्वितीय सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने धर्म, समाज, संस्कृति, सभ्यता तथा भाषा-भूषा आदि के क्षेत्रों में नवीन मूल्यों की स्थापना करते हुए जब आर्यसमाज की स्थापना की तो उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आर्यसमाज कोई मत, मजहब, सम्प्रदाय अथवा पंथ नही है। उन्होंने स्वमन्तव्यामन्तव्यो का प्रकाश करते हुए उद्घोष किया कि "मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्रायः नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।"

अपने इस उद्घोष के पश्चात् भी महर्षि ने आर्यसमाज की अलग स्थापना क्योंकि जबकि ब्रह्मसमाज, प्रार्थना समाज और थियोसोफिकल सोसायटी आदि विभिन्न संस्थाये समाज सुधार का कार्य कर रही थीं ? महर्षि ने उन संस्थाओं के साथ सहयोग करके सुधार के कार्य को आगे क्यों नहीं बढ़ाया ? आइये ! इस पर थोड़ा विचार करें।

इतिहास इस बात का गवाह है कि महर्षि ने उन संस्थाओं के साथ मिलकर काम करने का प्रयत्न किया था। थियोसोफिकल सोसायटी तो अपने को आर्यसमाज की ही एक शाखा भी कहने लग गई थी। दिल्ली दरबार और चांदपुर के मेले पर महर्षि ने ऐसे प्रयत्न किए थे जिससे देश के सभी सुधारक एक साथ मिलकर सुधार का कार्य कर सके। पर जब उन्होंने देखा कि कई विषयों पर मौलिक मतभेद हैं, तब फिर उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करनी ही उचित समझा। जहा तक ब्रह्मसमाज आदि का प्रश्न है, महर्षि का कथन है कि उनमें देशभक्ति अति न्यून है। वे इस देश की बड़ाई न कर भरपेट बुराई करते हैं।

राष्ट्रवादी दयानन्द को यह बात गवारा नही थी। जहां समाज सुधार और धर्मसंस्थान उनका उद्देश्य था, वहां देश को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाना भी उनका एक लक्ष्य था। इस लक्ष्य की पूर्ति में उपरोक्त सस्थाओं को बाधक जानकर महर्षि ने आर्यसमाज की अलग से स्थापना करनी ही श्रेयस्कर समझा। महर्षि ने आर्यसमाज के बारे में लिखा है कि—"जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण हो सकता है, वैसा दूसरा नही हो सकता।" और "यदि उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज से मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।"

महर्षि के उपरोक्त उद्धरण से ज्ञात होता है कि महर्षि ने किसी विशेष उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की थी। आइये देखें कि वह उद्देश्य क्या था ?

आर्यसमाज के उद्देश्य का ज्ञान हमें दो बातों से होता है। प्रथम तो यह कि जब आर्यसमाज की बम्बई में १० अप्रैल सन् १८७५ को स्थापना की गई थी तो इसे पजीकरण हेतु पंजीकर्त्ता रजिस्ट्रार को जो घोषणा पत्र दिया गया था और दूसरा आर्यसमाज के उद्देश्यात्मक उसके दस नियम। रजिस्ट्रार को जो घोषणा पत्र दिया गया था, उसमें लिखा था कि आर्यसमाज का उद्देश्य संसार में वेदविद्या का प्रचार करना है। ब्रह्मसमाज आदि सुधारक संस्थायें तथा थियोसोफिकल सोसायटी को वेद का कोई लगाव नही था। लाहौर में ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज के एकीकरण की बात भी उठी थी। तब ब्रह्मसमाज वालों ने आर्यसमाज के तृतीय नियम पर आपत्ति उठाई थी और कहा था कि यदि यह नियम निकाल दिया जाए तो ब्रह्मसमाज आर्यसमाज का सहयोगी बन सकता है। पर महर्षि वेद को किसी भी कीमत पर छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए वेद-विद्या के प्रचार के लिए उन्हें आर्यसमाज की स्थापना करनी पड़ी।

महर्षि की मान्यता थी कि जैसे सूर्योदय होने पर भिन्न-भिन्न प्रकार के दीपकों के रगड़े-झगड़े मिट जाते हैं, वैसे ही वेदों का प्रचार होने से सम्प्रदायों के रगड़े-झगड़े मिट सकते है और राष्ट्रीय एकता की स्थापना हो सकती है। वेद का आधार लेकर चलने वाले स्वामी दयानन्द के लिए यह आवश्यक था कि वे वेद के वास्तविक स्वरूप और यथार्थ अर्थों को संसार के समक्ष रखते क्योंकि संसार वेदों को सर्वथा भूल चुका था। महर्षि ने संसार का ध्यान इस भूली बिसरी विद्या की ओर दिलाया। इतना ही नहीं उन्होंने वेद के सही रहस्यों को खोलकर सर्वसाधारण की भाषा में सुलभ करा दिया और इस प्रकार धर्म सम्बन्धी मिथ्या धारणाओं और भ्रामक विचारों पर कुठाराघात करना प्रारम्भ कर दिया। उनका उद्देश्य केवल वेदविद्या का प्रचार करना ही नहीं था अपितु वेद के सम्बन्ध में प्रचलित मिथ्या धारणाओं और भ्रान्त विचारों का निराकरण करना भी था।

महर्षि ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेद के प्रचार में ही लगा दिया। वे कहा करते थे कि—"वैदिक धर्म प्रचार का कार्य बहुत बड़ा है। हम जानते हैं कि सारे जीवन में पूरा न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े, मैं इस महत कार्य को अवश्य पूर्ण करूगा।" इतना ही नहीं महर्षि को उत्कट अभिलाषा थी कि वैदिक धर्म के प्रचार के लिए बहुत से उपदेशक होने चाहिएं, क्योंकि इतना बड़ा काम एक अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता। फिर भी उनका यह दृढ निश्चय था कि—"अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार जो कुछ दीक्षा ली है उसे अवश्य लाऊंगा।"

महर्षि दयानन्द स्वयं को जहां वेदमत का प्रचारक मानते थे वहां अपने अनुयायियों के लिए भी वेदमत का अनुयायी होने की व्यवस्था दिया करते थे। अतः कहना होगा कि आर्यसमाज वेदप्रचारक संघ ही हैं। इसकी समस्त मान्यतायें वेद पर ही आधारित हैं। इसका दार्शनिक आधार वेद ही है। अतः वेद के प्रचार-प्रसार के लिए ही उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी। इसीलिए आर्य समाज के तृतीय नियम में यह व्यवस्था दी गई कि—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम-धर्म है।" ध्यान रहे कि धर्म के दो रूप होते हैं—एक गौण और दूसरा मुख्य। आर्यसमाज के अन्य सभी लक्ष्य गौण धर्म हैं पर वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म है।

दुःख है आज आर्यसमाज समय के प्रवाह में बहता हुआ अपने मुख्य अथवा परम धर्म से विमुख हो रहा है। आज सम्प्रदायवाद पनप रहा है सर्वत्र झगड़े ही झगड़े दिखाई देने लगे हैं। पर जब तक वेद रूपी सूर्य का प्रकाश नहीं होता, दीपकों के रगड़े-झगड़े होते ही रहेंगे। अतः इन रगड़े झगड़ों से बचना है तो संसार में वेदों का प्रचार करना परम आवश्यक है।

शराब हटाओ

देश बचाओ

रावी ब्यास के पानी की समस्या

प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

जब से पंजाब में विधान सभा के चुनावों की चर्चा चली है और नवम्बर मास नजदीक आने लगा है, अकाली दलों तथा कांग्रेस के नेताओं में रावी-ब्यास के पानी से सम्बन्धित बेतुके वक्तव्यों की होड़ सी लग गई है। मान अकाली दल के नेता सिमरनजीत सिंह मान ने कहा है कि पंजाब हरयाणा को एक कतरा पानी भी रावी-ब्यास के पानी में से नहीं देगा। बादल का अकाली दल और उसके नेता तो जब से सतलुज यमुना लिंक नहर के निर्माण का काम आरम्भ हुआ तब से विरोध करते आ रहे हैं और उनसे प्रेरित किसान यूनियन लिंक नहर को मिट्टी डालकर भरने की धमकी देते रहे हैं। लोंगोवाल अकाली दल के प्रधान स० तोतासिंह कहते हैं कि उनके दल ने इराडी ट्रिब्यूनल के फैसले को मन्जूर नहीं किया है और वे हरयाणा का पानी में कोई हिस्सा नहीं मानते हैं। पंजाब प्रदेश कांग्रेस के महासचिव स० जगमीत सिंह बरार सब से ही आगे निकल जाना चाहते हैं, उन्होंने घोषणा की है कि वे १५ अगस्त से हजारों कार्यकर्त्ताओं को ले जा कर सतलुज यमुना लिंक नहर को मिट्टी से भरने का काम शुरू कर देंगे। पंजाब प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष तथा दूसरे महासचिव ने उनके गैरजिम्मेदाराना वक्तव्य की भर्त्सना करते हुए उनको कांग्रेस से निलम्बित करने को कहा है। परन्तु बरार ने उनके अधिकार को चुनौती देते हुए अपने १५ अगस्त से चालू किए जाने वाले कार्य पर डटे रहने का निश्चय दोहराया है। वे सेश्री बरार ३ वर्ष पूर्व मेरे साथ बात करते हुए मान रहे थे कि पंजाब में पानी इतना अधिक है कि वहां सेम बढ़ती जा रही है और बढ़ती हुई सेम के कारण मुक्तसर तहसील में कपास की खेती बन्द हो चुकी है, जहां सबसे अधिक कपास बोई जाती थी।

१९७० में जब श्रीमती इन्दिरा गांधी ने फाजिल्का अबोहर हरयाणा को, चण्डीगढ़ पंजाब को देने का फैसला किया था, तब ज्ञानी जैलसिंह ने उस फैसले पर अमल करने से इन्दिरा जी को यह कहकर रोक दिया था कि हम इस मुद्दे पर अकालियों को आने वाले १९७२ के चुनाव में हरा सकते हैं। उन्होंने नारा दिया कि संत फतहसिंह के फार्मूले के आधार पर इन्दिरा जी के फैसले से पंजाब ने भैंस तो दे दी और गधा ले लिया। इस नारे के बल पर १९७२ में कांग्रेस की विजय हो गई थी। शायद बरार को यह भ्रम है कि उसी प्रकार लिंक नहर में मिट्टी डालने का आन्दोलन शुरू करने से आने वाले चुनाव में कांग्रेस की विजय हो जाए। जगमीत सिंह वैसे कोई बेसमझ नवयुवक तो नहीं हैं परन्तु कुछ भटक गए लगते है। उनके इस आन्दोलन का लाभ इस बार कांग्रेस को नहीं मिलने वाला, क्योंकि उनसे बहुत आगे तक की बात आतंकवादी कह और कर सकते हैं। लोकसभा के चुनावों में उनके समर्थित लोग ही जीते हैं और इस प्रकार के आन्दोलन का लाभ भी जगमीत सिंह नहीं, हिंसा में विश्वास रखने वाले नवयुवक ही उठायेंगे। जगमीतसिंह को सद्बुद्धि आ जाए तो उनका और उनके दल का भला ही होगा।

यह प्रश्न उठ गया है इसलिए वस्तुस्थिति जनता के सामने रखना बहुत आवश्यक जान पड़ता है।

रावी ब्यास के पानी में संयुक्त पंजाब का हिस्सा ७० लाख एकड़ फुट था। हरयाणा और पंजाब अलग अलग होने के पश्चात् पुनर्गठन कानून के अनुसार दो वर्ष के भीतर आपसी फैसला न होने के कारण हरयाणा ने भारत सरकार को फैसला करने के लिए प्रार्थना कर दी। पंजाब के पुनर्गठन से पहले १९६४-६५ में हरयाणा विकास समिति बनी, उसके पश्चात् पंजाब चीफ इन्जीनियर वाही की समिति १९६५ में समिति की रिपोर्ट आने पर बनी। पंजाब और हरयाणा के पास कृषि योग्य भूमि का अनुपात ५३.४७ था, उसके आधार पर यदि पंजाब के बराबर हरियाणा को पानी दिया जाए तो समिति की रिपोर्ट के अनुसार कम से कम ९०% यानि ६३ लाख एकड फुट पानी हरयाणा को मिलना चाहिए। वाही कमेटी ने फसलों के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से छानबीन की और सिफारिश की कि हरयाणा को ४६ लाख एकड़ फुट और पंजाब को २४ लाख एकड़ फुट पानी मिले। डा० के० एल० राव सिंचाई मन्त्री भारत सरकार ने दो इन्जीनियरों की समितियां बनाई और पंजाब को खुश करने के लिए जैसा उन्होंने कहा उसी को आधार मानकर हिसाब लगाया और उन्होंने हरयाणा को ४० लाख एकड़ फुट तथा ३८ लाख एकड़ फुट की सिफारिश की।

१९७६ में जब ब्यास डैम का काम समापन की ओर जा रहा था तब मार्च १९७६ में लोकसभा में घोषणा की कि पंजाब को राजी करने के लिए हरयाणा और पंजाब प्रत्येक को ३५ लाख एकड़ फुट पानी दिया जाए, परन्तु क्योंकि हरियाणा में सूखी जमीन बहुत है इस लिए यदि नदियों में पानी और अधिक उपलब्ध हो तो वह सारा हरयाणा को मिले, पंजाब को ३५ लाखएकड फुट से ज्यादा न मिले। हरयाणा सरकार ने १९७६ में एक करोड रुपए ज्ञानी जैलसिंह को और १९७८ में एक करोड रुपए प्रकाशसिंह बादल को दिए ताकि लिंक नहर पर काम शुरू किया जा सके। परन्तु वे रुपया लेकर बैठ गए, कोई काम नहीं किया। दिसम्बर १९८१ में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हरयाणा और पंजाब के मुख्यमन्त्रियों को बिठाकर फैसला करवाया। उस फैसले के अनुसार नदियों का ७ लाख एकड़ अतिरिक्त पानी पंजाब को दे दिया गया और हरयाणा का वही ३५लाख एकड़ फुट रहा। १९७६ के फैसले को उलटा कर दिया। इस फैसले को मानकर अप्रैल १९८२ में लिंक नहर की खुदाई का उद्घाटन श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया, परन्तु उसी समय अकाली आन्दोलन शुरू हो गया।

अकालियों ने सब पुराने फैसले रद्द कर दिए और सुप्रीम कोर्ट के जज के द्वारा पानी के बटवारे के मामले का फैसला करवाने की जिद की। १९८५ में राजीव लोंगोवाल समझौता हो गया और उसकी धारा ९ में एक ट्रिब्यूनल को रावी ब्यास के पानी के बटवारे का काम सौंपने का निर्णय किया गया। इराडी ट्रिब्यूनल बना दिया गया। उसी फैसले में पंजाब में लिंक नहर के काम को १५ अगस्त १९८६ तक समाप्त करने की जिम्मेदारी ली थी, परन्तु उस दिशा में नाम मात्र काम ही हुआ। नहर कहां से निकले, उसके पुनर्विचार पर ही महिनों लगा दिए। अप्रैल १९८७ में इराडी ट्रब्यूनल ने फैसला दे दिया और उसके अनुसार आने वाले समय में जो अतिरिक्त पानी मिलने की सम्भावना है उसका हिसाब लगाकर ५३.३ लाख एकड़ फुट पंजाब को और ३८.२ लाख एकड फुट हरयाणा को देने का फैसला किया। यदि अतिरिक्त पानी का अन्दाजा गलत हो और कम पानी मिले तो उसका बटवारा कैसे होगा, इसकी जानकारी अभी जनता के सामने नहीं आई है। रिपोर्ट प्रकाशित और प्रसारित करना जरूरी है। दोनों सरकारों ने पुनर्विचार के दावे दायर कर दिए और वह मामला अब ठप्प है। लिंक नहर का काम जो १५ अगस्त १९८६ को समाप्त होना था वह अब १९९० में समाप्त होने का विश्वास किसी को नहीं। अकालियों की अपने ही फैसले से मुकरने की आदत और एक से एक बढ़कर धमकियां देकर अन्तिम निर्णय के रास्ते में रुकावटे बनकर खड़ी होती रही हैं और सभी सरकारे मामले को आगे से आगे धकेलने के सिवाय कुछ करने की क्षमता नहीं रखतीं। पंजाब में तो डर के मारे लोग अकालियों की कलाबाजियो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जिला भिवानी तथा महेन्द्रगढ़ ....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर प्रतिबन्ध है, पर वह हमारे नवयुवकों को नशाखोरी करने के लिए करोड़ों रुपए की नशे की वस्तुओं की तस्करी करवा रहा है। हमारी सरकार इधर ध्यान नहीं दे रही। अत: आर्यसमाज ने इस सामाजिक बुराई से नवयुवकों को सावधान करने तथा नशा छुड़ाने का कार्यक्रम अपने हाथ में ले लिया है। सभा की ओर से गत पांच वर्ष से नशाबन्दी अभियान चलाया जा रहा है। इसी उद्देश्य को पूरा करने हेतु प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डलों का गठन किया जा रहा है। मानवता का कल्याण केवल वेदप्रचार से ही हो सकता है। अत: आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को इस महान कार्य में जुट जाना चाहिए।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने वेदप्रचार के कार्य के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिला भिवानी के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की सराहना की और बताया कि यहां की आर्य जनता ने आर्यसमाज के सभी आन्दोलनों में बढ़चढ कर भाग लिया है। वेदप्रचार मण्डल के माध्यम से जहां पुराने आर्यसमाजों में जागृति आवेगी वहां उन ग्रामों में भी आर्यसमाज की स्थापना हो सकेगी जहां आज तक किसी कारणवश वेदप्रचार नहीं हो सका।

पर्याप्त विचार विमर्श के बाद वेदप्रचार मण्डल का पुनर्गठन करते हुए सुप्रसिद्ध दानवीर श्री सुमेरसिंह आर्य ग्राम स्वरूपगढ़ को संयोजक तथा श्री सत्यनारायण आर्य चरखी दादरी, श्री देवकराम सरपंच दूषवा, श्री शेरसिंह आर्य निमडी वाली (भिवानी) और श्री धर्मपाल शास्त्री भाण्डवा को सह संयोजक नियुक्त किया गया। मण्डल की अगली बैठक में कार्यकारिणी का गठन किया जावेगा।

जिला महेन्द्रगढ़ में वेदप्रचार मण्डल का गठन :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी १४ जुलाई को दोपहर बाद ३ बजे आर्यसमाज मन्दिर नारनौल पधारे। वहां उपस्थित जिला महेन्द्रगढ़ के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा प्रतिनिधियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। बा० उदमीराम जी एडवोकेट ने सभी कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध किया कि जिला महेन्द्रगढ़ में आर्यसमाज का प्रचार तथा प्रसार करने के लिए लग्नशील आर्य कार्यकर्त्ताओं पर आधारित वेदप्रचार मण्डल का गठन करें। महाशय ताराचन्द आर्य ने उपस्थित सभी कार्यकर्त्ताओं का परिचय कराते हुए सभा प्रधान जी को बताया कि महेन्द्रगढ़ जिले के आर्यसमाज के इन कार्यकर्त्ताओं ने सभा द्वारा तैयार किया गया तीन सूत्री कार्यक्रम (शराब, अंग्रेजी हटाओ तथा गौ बचाओ) को सफल करने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। इस जिला में ३-४ भजनोपदेशक स्वतन्त्र रूप से आर्यसमाज का प्रचार तथा अनेक विद्वान् वैदिक संस्कार कराने के लिए तैयार रहते हैं। उत्तरी भारत के प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक प० ताराचन्द वैदिक तोप भी इसी जिले के निवासी हैं। उन्होंने अपने कई शिष्य भी प्रचारक तैयार किए हैं।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने इस अवसर पर आर्य कार्यकर्त्ताओं तथा आर्य प्रचारकों से निवेदन किया कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचार मण्डल कार्यक्रम को सफल करने के लिए सहयोग देवें। जो अपना पूरा समय प्रचार के लिए देंगे, सभा उन्हें इसी जिले में प्रचारार्थ नियुक्त करेगी और प्रचारक वर्ष भर में जितना भी समय अपनी सुविधा के अनुसार प्रचार कार्य में देंगे उन की सेवाओं का सभा लाभ उठावेगी। वर्तमान समय में राष्ट्र संकट की घड़ी से गुजर रहा है। भारत सरकार जितना खर्च राष्ट्र की सुरक्षा तथा शिक्षा पर कर रही है, उससे अधिक राशि की शराब देशवासी पी जाते हैं और नशों में धुत होकर अपने स्वास्थ्य को तो खराब करते ही हैं, अपनी बहू तथा बेटियों की इज्जत के लिए भी खतरा बन रहे हैं। राजनैतिक क्षेत्र में भी असामाजिक तत्व घुस कर भारतीय लोकतन्त्र को समाप्त करने का षड्यन्त्र हो रहा है। किसी भले आदमी का घर से बाहर निकलना कठिन हो रहा है। बदमाश तथा भ्रष्टाचारी अपने अपने संगठन बना रहे हैं, परन्तु आर्य (श्रेष्ठ) पुरुष विघटित होते जा रहे हैं। अत: आवश्यकता है कि अब हम आर्यों को वेदप्रचार मण्डल बनाकर वेदप्रचार कार्य को आगे बढाना है। मिजोरम तथा नागालैण्ड जहां ईसाई पादरी छाए हुए हैं, ने अपनी अपनी सरकारों पर जोर देकर वहां शराब पर पाबन्दी लगवा दी है। परन्तु हरयाणा प्रदेश जिसमें आर्यों की संख्या अन्य प्रदेशों से अधिक है, में शराब की नदियां बह रहीं हैं। मैं जब संयुक्त पंजाब में मन्त्री था तो जिला रोहतक में शराब पर पाबन्दी लगवा दी थी, परन्तु हरयाणा बनने पर जो भी मुख्यमन्त्री बना उसने शराब की बिक्री को राज्य की आय बनाने की होड़ लगाई है।

सभा प्रधान जी ने आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को निर्देश देते हुए कहा कि हरयाणा सरकार के कानून के अनुसार ३० सितम्बर तक ग्राम की पंचायतों से शराब बन्दी प्रस्ताव पास करवाकर रजिस्ट्री पत्रों द्वारा हरयाणा सरकार को भिजवाने का प्रयत्न करें। इन प्रस्तावों का प्रारूप सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी में सितम्बर मास तक निरन्तर प्रकाशित किया जावेगा। अत: इस आवश्यक कार्य के लिए अभी से तैयारी आरम्भ कर देवें और प्रस्ताव भेजने पर भी जिन ग्रामों में शराब के ठेके बन्द न किए जावेंगे वहां धरणा दिया जावे और आने वाले चुनाव के अवसर पर ऐसे किसी भी उम्मीदवार को अपना मत तथा समर्थन न देवे जो स्वयं शराब पीते हैं अथवा अपने कार्यकर्त्ताओं को शराब पिलाते हैं। उम्मीदवारों से शराब बन्दी कार्य करने के लिए हस्ताक्षर भी करवा लेवें जिससे वे विजयी होकर अपना वचन पूरा करें।

सभा प्रधान जी के सम्बोधन के पश्चात् अनेक आर्य कार्यकर्त्ताओं ने वेदप्रचार मण्डल को सफल करने के लिए अपने अपने सुझाव दिए एक आर्य युवती कु० मीना कुमारी ने वेदप्रचार पर बहुत सुन्दर गीत सुनाया जिससे प्रभावित होकर सभा प्रधान जी ने उसे सभा की ओर से १०० रु० का पुरस्कार दिया। इसके पश्चात् जिला महेन्द्रगढ़ वेदप्रचार मण्डल के संयोजक प० ताराचन्द वैदिक तोप तथा सहसंयोजक म० ताराचन्द आर्य (नारनौल) एवं म० धर्मवीर आर्य (महेन्द्रगढ) को मनोनीत किया गया। मण्डल की आगामी बैठक में कार्यकारिणी का गठन भी किया जावेगा।

सर्वहितकारी का वेदप्रचार विशेषांक

श्रावणी उपाकर्म इस बार ६ अगस्त को आ रहा है। अत: सर्वहितकारी का २८ जुलाई का अंक वेदप्रचार विशेषांक प्रकाशित होगा। इसमें वेदप्रचारार्थ विद्वानों के लेख तथा कवितायें दी जावेंगी।

—व्यवस्थापक

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

७ जुलाई गुरुपूर्णिमा के शुभावसर पर हमारे घर यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। हम दैनिक यज्ञ के साथ यजुर्वेद के मन्त्रों से भी आहुतियां देते रहे। इस प्रकार प्रतिवर्ष की भांति एक वेद का पारायण यज्ञ पूरा हुआ। पूर्णिमा के अवसर पर बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार और अन्नप्राशन संस्कार भी कराया। महात्मा हरिदेव जी वानप्रस्थ (रोहतक), आर्यसमाज जंक्सन के पुरोहित आदि विद्वानों ने यज्ञ व संस्कारों पर प्रभावशाली प्रवचन किए जिससे आए हुए सज्जनों तथा माताओं ने लाभ उठाया।

—चन्द्रभानु भजनोपदेशक आदर्श नगर, जीन्द

रामराज्य की स्थापना :

काजी रशीद मसूद का वक्तव्य

केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री (राज्य) श्री काजी रशीद मसूद ने राम राज्य की स्थापना एवम् सहारनपुर में तिलक लगवाने जैसे उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करके साम्प्रदायिक एकता का जो परिचय दिया है, इसके लिए वास्तव में वे बधाई के पात्र हैं। इस स्वर्णिम कार्य को करके जहां उन्होंने हिन्दुओं के दिलों को जीत लिया है वहां उन्होंने भारतीय संस्कृति, एकता और अखण्डता को बढ़ावा दिया है। सरकार का कर्त्तव्य है कि जो धर्मान्ध व्यक्ति साम्प्रदायिक भावना को भड़काने का प्रयास कर रहे हैं उनसे सख्ती से निपटे ताकि भविष्य में उनके नापाक इरादे पूरे न हो सकें। हिन्दू मन्त्री मुसलमानों की दरगाह पर चादर चढ़ाते हैं, सिजदा करते हैं, गुरुद्वारों में जाकर माथा टेकते हैं, अरदास करते हैं, गिरजाघर और चर्चों में जाकर उनकी पूजा अर्चना में सम्मिलित होते हैं जो व्यक्ति उनकी आलोचना नहीं करते हैं क्योंकि यह भी साम्प्रदायिक एकता और सद्भावना का ही प्रयास है। मैं वयोवृद्ध नेता मौलवी इलियाश के सद्प्रयासों की सराहना किए बगैर भी नहीं रह सकता जो प्राणिमात्र की भलाई के लिए समर्पित हैं और जिन्हें हिन्दू और मुसलमानों सभी का प्यार हासिल है। हम पहले मानव हैं और फिर हिन्दू मुसलमान सिक्ख और ईसाई हैं। यदि हम इसी प्रकार लड़ते लड़ाते रहे तो हमारी मानवता का क्या होगा।

यदि हम शान्तिपूर्वक, साम्प्रदायिक भावनाओं से ऊपर उठकर गम्भीरता से विचार करें तो हम सभी राम और कृष्ण के ही वंशज हैं। आज से लगभग नौ लाख साल पहले मर्यादा पुरुष श्री राम एवं लगभग साढे पांच हजार साल पहले योगीराज श्री कृष्ण ने जन्म लिया। रामराज्य ही वास्तव में आदर्श राज्य था जिसकी स्थापना स्वयं महात्मा गांधी करना चाहते थे। उस समय हमारे अन्दर मत मतान्तरों की घृणा के बीज नहीं थे।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि आज से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व यहूदी सम्प्रदाय, दो हजार वर्ष पूर्व ईसाई सम्प्रदाय, लगभग एक हजार चार सौ वर्ष पूर्व मुस्लिम सम्प्रदाय और लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व सिक्ख अस्तित्व में आया। इससे पूर्व हम सभी आर्य पुत्र ही थे। हमें उन अतीत की यादों का स्मरण करना चाहिए जब रानी कर्मवती ने अपनी रक्षा हेतु हुमायूं को राखी बांधी थी, कश्मीरी हिन्दुओं की रक्षा गुरु तेगबहादुर ने अपना सीस कुर्बान करके की देश और जाति के लिए गुरु गोबिन्दसिंह ने अपने चारों पुत्रों को कुर्बान कर दिया।

जहां तक राम जन्मभूमि का प्रश्न है तथ्यों के आधार पर राम ने ही इस धरती पर पहले जन्म लिया। बाबर तो आक्रमणकारी के रूप में भारत आया था। मुस्लिम भाइयों को गहनता, गम्भीरता और खुले दिल से इसे राम जन्मभूमि माननी होगी इसी में ही भारतीय संस्कृति, एकता एवं अखण्डता तथा भारत का उज्ज्वल भविष्य है। प्राणिमात्र का उपकार करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। जो नेतागण अपनी राजनीतिक भूख, धर्मान्धता और स्वार्थ सिद्धि के के लिए साम्प्रदायिक भावना भड़का रहे हैं भावी पीढ़ी उन्हें कभी माफ नहीं करेगी। हम सभी मन, वचन और कर्म से एक आदर्श राज्य अर्थात् रामराज्य की स्थापना को साकार करें तभी हम सब का कल्याण होगा और भारत महान् बनेगा। —हरिचन्द स्नेही

अध्यक्ष आर्यवीर दल एवं संयोजक जिला वेदप्रचार मंडल सोनीपत

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ।

जिला सोनीपत की आर्यसमाजों से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान माननीय प्रो. शेरसिंह जी की अध्यक्षता में जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के गठन हेतु एक सभा का १ अप्रैल को आयोजन किया गया था जिसमें जिला सोनीपत की आर्यसमाजों के अधिकारी तथा सदस्य उपस्थित थे। सर्वसम्मति से सर्वश्री देवप्रिय जी आर्य (सोनीपत) को संरक्षक, श्री हरिचन्द स्नेही (सोनीपत) को संयोजक तथा श्री होशियार सिंह जी सत्यप्रिय विश्व सेवक (नाहरी) को सहसंयोजक नियुक्त किया गया था।

जिला सोनीपत के समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपनी-अपनी आर्यसमाज के पदाधिकारियों की सूची तथा दो-दो प्रतिनिधियों के नाम अविलम्ब व्यक्तिगत अथवा डाक द्वारा अति शीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि कार्यकारिणी का गठन करके वेदप्रचार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सके।

इसके अतिरिक्त अपनी अपनी आर्यसमाजों में वेदप्रचार का आयोजन का [illegible] कर सकें। अन्धविश्वास, मादक द्रव्यों, मांस, सामाजिक बुराइयों का जोरदार विरोध करें। नवयुवकों को आर्यसमाज में लाने की प्रेरणा करें।

विनीत

हरिचन्द स्नेही (संयोजक जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत)

१८/५५ भगतपुरा, सोनीपत (हरयाणा)

शतपथ ब्राह्मण के भाष्य का विमोचन

स्वामी समर्पणानन्द (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार) द्वारा लिखित शतपथ ब्राह्मण के भाष्य का लोकार्पण (विमोचन) १ अगस्त १९९० को मावलकर हाल रफी मार्ग नई दिल्ली में शाम को ५ बजे, महामहिम उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा द्वारा सम्पन्न किया जाएगा।

स्वामी समर्पणानन्द जी आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् थे और उनके वेदभाष्य, शतपथ ब्राह्मण भाष्य, गीताभाष्य अनुपम हैं।

सभी धर्मप्रेमी बन्धुओं तथा महिलाओं से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में दिल्ली पहुंच कर समारोह की शोभा बढ़ायें।

—दीक्षानन्द सरस्वती

शोक समाचार

दिनांक ३-७-९० को आर्यसमाज नलवा जिला हिसार के प्रधान श्री पुष्करलाल जी आर्य का देहान्त हो गया। वे ६९ वर्ष के थे। वे आर्यसमाज के दिवाने थे। यज्ञ प्रेम एवं वेदप्रचार की लग्न उनमें बहुत ज्यादा थी जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका ११-६-९० का लिखा मेरे नाम पत्र है उसमें लिखा था कि आप भजन मण्डली लेकर कलकत्ता आ जाओ। उन्होंने आर्यसमाज नलवा की स्थापना की तथा हावड़ा आर्यसमाज के भी प्रधान रहे। नलवा गांव में भी कई बार उत्सव वेदप्रचार तथा योग साधना के शिविर लगवाए। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रामावती आर्या भी पूर्ण धर्मात्मा देवी हैं विद्वानों की सेवा श्रद्धा से करती हैं। भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने का बल दे। वे अपने पीछे सम्पन्न ५ पुत्र तथा ४ पुत्रियां छोड़ गए हैं।

अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

—मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी

रावी व्यास के पानी की समस्या

(पृष्ठ ३ का शेष)

और धमकियों का जवाब देने से कतराते रहते हैं, सरकारें जिसके शरीर जख्मी हैं उसकी बजाए जख्म करने वालों को मरहम लगाने का राग ही अलापती रहती हैं और हरयाणा को देशहित के लिए त्याग करते चले जाने की अपीलें होती रहती हैं। हरयाणा देशहित को सर्वोपरि मानता है। इसलिए थोड़े में भी सन्तोष करके देश में शान्ति बनी रहे उसके लिए त्याग करता रहता है। परन्तु उस 'थोड़े' की भी कोई तो सीमा होनी चाहिए और वह बातों में ही न रहे मिलना भी चाहिए।

मैंने संक्षेप में वस्तुस्थिति जनता के सामने रखी है, जिससे पंजाब के राजनैतिक नेताओं की धींगामस्ती का चित्र स्पष्ट होकर उनके सामने आ जाए। न्याय देना तो साधारण जनता के बस का नहीं है, परन्तु जान तो ले कि न्याय क्या है और क्या होना चाहिए।

स्वर्ण भोज

विश्व विजय का स्वप्न संजोए, निकल पड़ा सम्राट सिकन्दर।
अपनी सैन्य विशाल साथ ले, आया एक नगर के अन्दर।।
वह नगर कि जिसमें श्री शोभा, सौन्दर्य मुक्त हो बिखर रहा।
हर ओर शान्ति का राज्य वहां, शृंगार रूप धर उतर रहा।।

वहां राज्य था महिलाओं का, था शासन उनका शस्त्रहीन।
होता अनुशासन का पालन, था एक मनुज भी नहीं दीन।।
सोच मग्न हो गया सिकन्दर, शासिका यहां की नारी है।
है अस्त्र शस्त्र से ये विहीन, मुझ पर तो दल बल भारी है।।

नर का संग्राम नारियों से, कैसे जारी हम युद्ध करें।
सोच सोच थक गया सिकन्दर, कैसे कामिनियां क्रुद्ध करें।।
इसी सोच चिन्तन में बीता, समय सिकन्दर का बहुतेरा।
किया आक्रमण तभी भूख ने, आ क्षुधा भवानी ने घेरा।।

हे देवी शासिका भूखा मैं, मुझको लाकर तुम भोजन दो।
सन्देश सिकन्दर ने भेजा, रानी हमको तुम भोजन दो।।
थालियां स्वर्ण निर्मित सुन्दर, ऊपर तक भर कर के आई।
कपड़े से ढकी थालियां वे, सामने सिकन्दर के लाई।।

था बहुत सिकन्दर भूखा तब, त्वरित उघारी थालियां सकल।
देखा भोजन आश्चर्य हुआ, कर दिया क्षुधा ने और विकल।।
सभी थालियां थीं सोने की, भोजन भी उसमें सोने का।
हर ओर स्वर्ण की धातु भरी, था अन्न नहीं कुछ खाने का।।

यह देख सिकन्दर बोल पड़ा, सोना मैं कैसे खा सकता।
सुन दिया सुन्दरी ने उत्तर, क्यों नहीं इसे तू खा सकता।।
खाने की केवल वस्तु सुखद, यदि खाद्यान्न राशि ही होती।
तो कमी कहां तव देश मध्य, घर बैठ मिली रोटी होती।।

सोना ही रोटी है तेरी, यह अन्न अगर होता रोटी।
तो करता क्यों आक्रमण भ्रमण, क्यों छीने औरों की रोटी।।
जब शब्द सुने यह नारी के, खुल गई सिकन्दर की आंखें।
क्षण नगर छोड़ वह लौट पड़ा, खिल गई नारियों की पांखें।।

नगर द्वार पर शिला लेख में, सीख सिकन्दर ने लिखवाई।
जो बात कही थी नारी ने, उसको वह बात बहुत भाई।।
अज्ञानी महा सिकन्दर को, था पाठ पढ़ाया नारी ने।
लिख दिया शिला में तथ्य अटल, दी सीख शासिका नारी ने।।

—देवनारायण भारद्वाज, आजमगढ़ (उ.प्र)

आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत में योग साधनाश्रम

आर्यसमाज मन्दिर काठमण्डी, सोनीपत में २६-१०-९० से ३०-१०-९० तक योग साधना शिविर तथा सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। योगीराज स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में ही सम्पन्न किया जा रहा है। साधना व यज्ञ के इच्छुक व्यक्ति अवश्य लाभ उठावें। भोजन आदि का प्रबन्ध समाज की ओर से होगा। ३१-१०-९० से १-११-९० को वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है।

—सत्यवीर सिंह शास्त्री
मन्त्री आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत

आदर्श विवाह संस्कार

आर्य युवक परिषद् मोहनगढ़ (जीन्द) के प्रधान जगदीश आर्य आयु० निर्मला सुपुत्री श्री रामकुमार ... रोड़ जीन्द निवासी का शुभ विवाह ... २२ जून को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। बारात में २१ बाराती थे। दहेज नहीं लिया गया। लड़के के पिता श्री रिछपाल सिंहवाल ने आर्य युवक परिषद् जिला जीन्द को १५१ रु० दान दिया।

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल में नई शिक्षा नीति के अनुसार प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। यह संस्था गंगा के सुरम्य तट पर स्थित है जहां मां भागीरथी कल-कल निनाद करती ऋषियों की वेदवाणी सुनाती हुई बह रही है।

प्रधानाचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल मुजफ्फरनगर

आचार्यकुल लोवा कलां का नवविंशतितमः जन्मदिवस महोत्सव

आचार्यकुल (कन्या महाविद्यालय) लोवा कलां का २९वां जन्म-दिन महोत्सव ५, ६ अगस्त, ९० को बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। उत्सव में पं० युधिष्ठिर मीमांसक कुलपति, स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ, चौ० नत्थासिंह महोपदेशक, तथा अन्य गणमान्य संन्यासी महात्मा पधारेंगे।

यह संस्था विशुद्ध आर्य संस्कृति का प्रचार कर रही है। मातृ-शक्ति का उत्थान ब्रह्मचर्य तथा वेदाध्ययन अध्यापन का क्रियात्मक अनुष्ठान प्रवर्तित है। आर्ष पाठ्यक्रम से शास्त्री, आचार्य तथा एम० ए० की परीक्षाएं कराई जाती हैं। सभी अध्यापिकायें अवैतनिक हैं। छात्रों के अभिभावकों से भोजनमात्र व्यय लिया जाता है। प्रवेश शुल्क ३५१/- रुपए तथा भोजन व्यय १२००/- रुपए वार्षिक लिया जाता है। आर्य पुरुष अपनी पुत्रियों को सुशिक्षित कराकर अपने जीवन को सफल बनावें।

शोक समाचार

१६ जुलाई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री के ज्येष्ठ भ्राता श्री बदरुराम जी का आज प्रातःकाल ३ बजे अपने निवास स्थान अजीतपुरा पो० नूनियां गोटड़ा, जिला झुंझुनूं में देहान्त हो गया। आप कुछ समय से बिमार चल रहे थे। आप ६१ वर्ष के थे।

टेलीफोन द्वारा सूचना मिलने पर शास्त्री जी सपरिवार वहां पहुंचे और अन्त्येष्टि संस्कार में सम्मिलित हुए।

ईश्वर दिवगत आत्मा को सद्गति एवं शोकसन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

वैरी से अड़ जाएंगे

राम जन्मभूमि को मिलकर, के आजाद कराना है।
वेद सम्यता, सदाचार का, जग को पाठ पढ़ाना है।
वैदिक पथ के राही हैं हम, नहीं किसी पर जुल्म करें।
मानवता के हत्यारों से, किंचित् भी ना कभी डरें।
श्रीराम के वंशज हैं हम, दुनिया को बतलाना है।
वेद सम्यता, सदाचार का, जग को पाठ पढ़ाना है।१।
फूट हमारी के कारण ही, भारतवर्ष गुलाम रहा।
शासक बने विदेशी पापी, बहुत बुरा अंजाम रहा।
अत्याचार किए बाबर ने, सबको हमें सुनाना है।
वेद सम्यता, सदाचार का, जग को पाठ पढ़ाना है।२।
राम जन्मभूमि के ऊपर, मस्जिद जिसने बनवायी।
मां बहिनों की इज्जत लूटी थी, था वह बाबर अन्यायी।
भारी नर संहार किया था, गम का भरा फसाना है।
वेद सम्यता, सदाचार का, जग को पाठ पढ़ाना है।३।
देशद्रोही, दुष्ट देश में, झगड़े रोज कराते हैं।
राम जन्मभूमि को बाबर, की मस्जिद बतलाते हैं।
जो रावण के पथगामी हैं, उनका वंश मिटाना है।
वेद सम्यता, सदाचार का, जग को पाठ पढ़ाना है।४।
कान खोलकर सुनो जिन्हें प्यारे भारत से प्यार नहीं।
देवों की धरती पर उनको, रहने का अधिकार नहीं।
जयचन्द से कौमी गद्दारों, का ना यहां ठिकाना है।
वेद सम्यता, सदाचार का, जग को पाठ पढ़ाना है।५।
प्राण हथेली पर रख करके, रण में कदम बढ़ाएंगे।
दुष्ट, विधर्मी, अत्याचारी, वैरी से अड़ जाएंगे।
...ल निर्भय का अब, जोशीला गाना, गाना है।
वेद सम्यता, सदाचार का, जग को पाठ पढ़ाना है।६।

—पं० नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हर०)

प्रवेश सूचना

गुरुकुल वेद मन्दिर डिग्गी मताना फतेहाबाद जिला हिसार हरयाणा, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से विद्याधिकारी परीक्षा (मैट्रिक) तक मान्यता प्राप्त है। प्रवेशार्थी ५ जुलाई से ३१ जुलाई तक अपने अभिभावक को साथ लेकर कार्यालय से सम्पर्क करें। प्रवेशार्थी न्यूनतम चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। इस सत्र में केवल तीस नए विद्यार्थियों को ही प्रवेश दिया जाएगा।

हरिसिंह 'भूषण' आचार्य

अध्यापकों की आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर हिसार में आचार्य अथवा शास्त्री उत्तीर्ण एक ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है जो शास्त्री कक्षाओं को योग्यता के साथ पढ़ा सके।

इसके अतिरिक्त एक ऐसे बी. एस-सी अध्यापक की भी आवश्यकता है जो नवमी एवं दशमी कक्षाओं को गणित और विज्ञान पढ़ाने में समर्थ हो। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। प्रार्थी निम्न पते पर ३० जुलाई तक मिलें अथवा पत्र व्यवहार करें।

गुरुकुल में पहुंचने के लिए हिसार शहर से ५ किलोमीटर की दूरी पर बालसमन्द रोड पर नहर के पुल पर उतरें।

आचार्य, गुरुकुल आर्यनगर जिला हिसार (हरयाणा)

अजीतसिंह पर सत्संग का चमत्कार

श्री अजीतसिंह जी जो पंचकूला में सर्विस करता है, दिनांक ५ जुलाई को अपने ससुर के घर हांसी आया। ६ जुलाई को आर्यसमाज हांसी में पुरोहित पं० सत्यवीर शास्त्री के पास आया वहां सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, श्री रणबीरसिंह वाचस्पति जी भी थे। कई देर तक आर्यसमाज एवं शराबबन्दी बारे चर्चा हुई। अजीतसिंह ने कहा मैंने बीड़ी छोड़ दी है, तब क्रांतिकारी ने कहा क्या और भी दोष हैं आपमें तब उन्होंने कहा कि संसार में जितनी बुराई हैं सब मेरे में हैं। तब शास्त्री जी एवं अतरसिंह जी के आग्रह एवं प्रेरणा से अजीतसिंह ने शराब, मांस आदि सब बुराइयां छोड़ने का व्रत लिया आर्यसमाज का सदस्य बना और २१ रु० हांसी आर्यसमाज को दान दिया और सर्वहितकारी पत्र का सदस्य बना। यह सब आर्य विद्वानों के सत्संग का ही प्रभाव था।

मा० अमनसिंह वाचस्पति, हांसी

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में यज्ञोपवीत संस्कार समारोह

कुरुक्षेत्र, ९ जुलाई (पवन आर्श्री)। आज के युग में गुरुकुल जैसी शिक्षण संस्थाओं की मान्यतायें दिन-प्रतिदिन घटती जा रही हैं। आज अमीर घराने के लोग अपने बच्चों को कान्वेंट व पब्लिक स्कूलों में शिक्षा दिलाना अधिक उत्तम समझते हैं जबकि प्राचीन काल में लोग अपने बच्चों को गुरुकुल में शिक्षा दिलाना अधिक अच्छा समझते थे।

उक्त उद्गार यहां हरयाणा के खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्री नरसिंह ढांडा ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र में यज्ञोपवीत संस्कार एवं श्री गायत्री विद्यालय के मुख्य द्वार के उद्घाटन समारोह में कहे।

श्री ढांडा ने कहा कि कान्वेंट एवं पब्लिक स्कूलों में बच्चों को सांस्कृतिक शिक्षा न देकर केवलमात्र अंग्रेजी शिक्षा दी जाती है जो कि हमारी प्राचीन सभ्यता के विनाश का कारण बन सकती है। उन्होंने कहा कि महाभारत तथा रामायण इस बात के प्रतीक हैं कि उस काल में गुरुकुलों में दी जाने वाली शिक्षा का कितना महत्त्व था।

उन्होंने महाभारत के गुरु द्रोणाचार्य का उदाहरण देते हुए बताया कि उनकी दी गई शिक्षा से उनके शिष्यों ने किस प्रकार ज्ञान प्राप्त किया।

उन्होंने गुरुकुल कुरुक्षेत्र में दी जाने वाली शिक्षा व उनके चमत्कारी परिणामों को देखते हुए कहा कि अगर गुरुकुल जैसी संस्थाओं में इतने सुन्दर परिणाम आने लगेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब लोग अपने बच्चों को कान्वेंट व पब्लिक स्कूलों की अपेक्षा गुरुकुलों में ही शिक्षा देना अधिक बेहतर समझेंगे।

उन्होंने कहा कि इस प्रकार के गुरुकुल महर्षि दयानन्द जी की देन है, जिनके अथक प्रयासों से गुरुकुलों में सांस्कृतिक व देशभक्ति जैसी परम्परायें पनपी और ऐसे महापुरुषों की वजह से आज हम आजाद देश के नागरिक बने।

इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष लाल अमरसिंह शोरे वाले कुरुक्षेत्र के उपायुक्त श्री महावीर प्रसाद गुप्ता, थानेसर के उपमण्डल अधिकारी चौधरी बहादुरसिंह, गुरुकुल के एक नन्हें से छात्र चिरंजीव राजेश कुमार ने भी अपने विचार रखे।

गुरुकुल के नन्हें मुन्ने छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी प्रदर्शन किया तथा अन्त में गुरुकुल के प्रधान एवं भूतपूर्व पुलिस अधीक्षक चौधरी सत्यदेव सिंह ने मन्त्री महोदय का यहां पधारने के लिए धन्यवाद किया। कुरुक्षेत्र के उपायुक्त महावीर प्रसाद गुप्ता ने अपने स्वैच्छिक कोष से १००० रुपए की राशि गुरुकुल को देने की घोषणा की। (जन सन्देश)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न २३,०७ ७२   रजि न P/RTK ४९   फोन ७४८   मुद्रित स०



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए   श्रावण १२ २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३३ २८ जुलाई १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

वेदप्रचार विशेषाङ्क

* * * * * *

आर्यसमाज का मूलाधार वेद

—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-३२

●

उन्नीसवीं शताब्दी के सर्वप्रमुख जन-आन्दोलन आर्यसमाज का मूलाधार वेद है। उसके संस्थापक ने इसे वेद के प्रचार-प्रसार के लिए ही स्थापित किया था और ऐसा ही घोषणापत्र उस समय रजिस्ट्रार के सम्मुख उपस्थित भी किया गया था। महर्षि की घोषणा थी कि—"मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।" [देखें स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश] और—"जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तो के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हूँ, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूँ।" [वही] तात्पर्य यह कि महर्षि ने आर्यसमाज के मूल मे अपनी कोई कपोल कल्पित मान्यता नही रखी अपितु वेद को ही उसका आधार बनाया है। पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री का कथन है कि—"मानव शरीर के प्रत्येक ऐच्छिक कार्यकाल का आधार जैसे कोई मानसिक प्रक्रिया होती है उसी प्रकार ससार के प्रत्येक सामाजिक सगठन का भी कोई दार्शनिक आधार होता है और उस की सम्पूर्णता के अनुपात से कार्य कारण सरणि द्वारा कार्य की पूर्ति होती है। उदाहरणार्थ ससार के प्रत्येक मत और सम्प्रदाय—हिन्दू, मुसलमान, ईसाई कम्यूनिस्ट आदि के दार्शनिक आधार—पुराण, कुरान, बाईबिल, कैपिटल आदि ग्रन्थ हैं। उनके गुण-दोषो के अनुसार ही उनके अनुयायी भी होते हैं। आर्यसमाज का मूलाधार वेद हैं, जो ससार के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं और जो बाह्य साक्षी में मतभेद तथा सशय होने पर भी अन्त साक्षी के अनुसार मानुषी सृष्टि के आदि से वर्तमान हैं [आर्यमित्र, आर्यसमाजाङ्क १२ अप्रैल १९६४]।

महर्षि दयानन्द की समस्त मान्यतायें वेद पर ही आधारित हैं। उन्होंने अपनी ओर से कोई नवीन मान्यता अथवा सिद्धान्त खड़ा नहीं किया। ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त प्राचीन ऋषि-महर्षिगण जो कुछ मानते-मनवाते तथा कहते-कहवाते आए हैं कालक्रम से उस पर पड़े आवरण को हटाकर उन्होने उसी उद्घोष को दुहराया और वेद प्रतिपादित शाश्वत सत्य-सनातनधर्म की रक्षा के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की थी। अत इस दृष्टि से आर्यसमाज कोई मत, मजहब, या सम्प्रदाय न होकर एक ऐसा

(शेष पृष्ठ २ पर)

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है

॥ गीत ॥

प्रभु की वाणी है वेदमाता इसी पै अपना यकीन रखना। टेक।
सत्य सनातन धर्म वेद मे, नित्य सदा शुभ कर्म वेद में
उपदेश करता है वो विधाता। इसी⋯ ।१।
यज्ञ हवन सस्कार वेद में, विद्या का भण्डार वेद में
सभी को मुक्ति की राह दिखाता। इसी⋯ ।२।
ओ३म् नाम वेदों ने गाया रक्षक इसका अर्थ बताया
जन्म-मरण मे जो कभी ना आता। इसी⋯ ।३।
पढ़ना और पढाना वेद का, सुनना और सुनाना वेद का
परम धर्म ऋषिवर बतलाता। इसी⋯ ।४।
ओ बेमोल' प्रभु गुण गा ले, निज जीवन को सफल बना ले
रक्षा करेगा तुम्हारी विधाता। इसी⋯ ।५।

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है

वेदो को पढना और पढाना चाहिए
पढ ना सको तो सुनना और सुनाना चाहिए ।टेक।
अग्नि, वायु, आदित्य अगिरा की यह निशानी
सृष्टि के आदि से ही हम सबने इसकी मानी
उन ऋषियों का ज्ञान तो अपनाना चाहिए ।१।
सत्य और असत्य क्या है, वेदों ने बताया
सन्मार्ग का 'पथिक' है साहित्य मुक्ति छाया
मनु का विधान तो सिखाना चाहिए ।२।
गौतम, कपिल पातञ्जलि छ भागो मे बढाया
कणाद, व्यास जैमिनि ने साक्षी कर दिखाया
छ शास्त्र पढके मुक्ति का ठिकाना चाहिए ।३।
यहा लुप्त हो चुकी थी सब वेद की प्रणाली
बिगडी दशा वतन की ऋषिराज ने सभाली
कहे बेचैन' मधुर स्वर मे गाना चाहिए ।४।

प्रस्तुतकर्त्ता मुरारीलाल बेचैन सभा भजनोपदेशक

● सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सदा उद्यत रहना चाहिए।
—स्वामी दयानन्द

आर्यसमाज का मूलाधार—वेद.........

[प्रथम पृष्ठ से आगे]

आंदोलन है, जो बुद्धिवाद का आश्रय लेकर वैदिक धर्म के शुद्ध स्वरूप को संसार के सामने उपस्थित करता है। इसलिए स्पष्ट है कि आर्य-समाज का मूलाधार वेद है।

आर्यसमाज का तृतीय नियम जहां इस बात की घोषणा करता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वहां इसमें वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को सब आर्यों का परम धर्म कहा गया है। यहां महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश आदि अपने रचे ग्रन्थों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म नहीं अपितु वेद के लिए ही ऐसा निर्देश दिया है।

वेद ही मूलाधार क्यों ?

प्रश्न उठता है कि वेद में ऐसी क्या विशेषता है कि महर्षि ने इसे आर्यसमाज का मूलाधार बना दिया? और फिर अपना सम्पूर्ण जीवन ही इसके प्रचार-प्रसार और भाष्य आदि में खपा दिया। इसके लिए उन्हें कितने कष्ट उठाने पड़े, कितनी यातनायें सहनी पड़ी इसका अपना अलग इतिहास है। आखिर कोई बात तो है कि महर्षि को कहना पड़ा कि—"वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य बहुत बड़ा है। हम जानते हैं कि इस सारे जीवन में पूरा न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े, मैं इस महत् कार्य को अवश्य पूरा करूंगा।" इतना ही नहीं महर्षि की तो उत्कट अभिलाषा थी कि वैदिक धर्म के प्रचार के लिए बहुत से उपदेशक होने चाहियें। क्योंकि इतना बड़ा कार्य एक अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता। फिर भी उनका यह दृढ निश्चय था कि—"अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार जो दीक्षा ली है, उसे चलाऊंगा।"!

महर्षि ने वेद को आर्यसमाज का मूलाधार इसलिए बनाया कि यही एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान है। ईश्वरीय ज्ञान की पहचान भी महर्षि ने बताई थी। ईश्वरीय ज्ञान वही हो सकता है कि जो मानव की उत्पत्ति के साथ सृष्टि के प्रारम्भ में दिया जाता है। ज्ञानका बीज सृष्टि के आरम्भ में ही दिया जाता है। अत: धर्म का मूल स्रोत वही हो सकता है जो मानव की उत्पत्ति के साथ साथ दिया गया हो। अन्यथा ईश्वर पर पक्षपात का दोष आता है। आज तक किसी अन्य तथाकथित ईश्वरीय ज्ञान या इल्हामी पुस्तक के सृष्टि के आदि में होने का दावा किसी ने नही किया। महर्षि का इसमें यह तर्क है कि यदि—"सृष्टि के आदि में परमात्मा जो वेदों का उपदेश नही करता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों की यथार्थ विद्या नहीं होती।" [द्रष्टव्य ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदोत्पत्ति विषय:]।

यदि सृष्टि उत्पत्ति के बहुत बाद की पुस्तकों को ईश्वरीय ज्ञान माना जावे तो फिर यह प्रश्न उठेगा कि ईश्वर ने उन असंख्य लोगों को अपने उस ज्ञान से वंचित क्यों रखा? इस अवस्था में उन कोटि-कोटि मानवों को विधि और निषेध आदि कर्मों के लिए उत्तरदायी नही ठहराया जा सकता। वेद की यह विशेषता है कि उसमें अनित्य इतिहास का लेशमात्र भी नहीं। साथ ही उसमें बुद्धि और युक्ति के विरुद्ध कोई बात कही नही मिलती। फिर वह ज्ञान मानवमात्र के लिए है न कि किसी देश अथवा जाति विशेष के लिए या फिर किसी काल विशेष के लिए। यह ज्ञान सृष्टिक्रम से पूर्ण मेल खाता है, उसमें और सृष्टिक्रम मे कही कोई विरोध नहीं। वेद ईश्वर का ज्ञान है तो सृष्टि उसका कार्य। अत: इन दोनों में विरोध नही हो सकता। अत: जो पुस्तकें सृष्टिक्रम के विपरीत ज्ञान देती हैं, वे ईश्वरीय ज्ञान कदापि नही हो सकतीं।

वेद धर्म का आदि मूल है। वह नित्य, निर्भ्रान्त तथा अपौरुषेय ज्ञान है। इसलिए ऐसी अनुपम ज्ञानराशि को छोड़कर और किसको आर्यसमाज का मूलाधार बनाया जा सकता था? वेद स्वत: प्रमाण है। जैसे सूर्य के प्रकाश को देखने के लिए किसी अन्य दीपक आदि प्रकाश की आवश्यकता नहीं रहती, इसी प्रकार स्वत: प्रमाण वेद के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। जिसकी प्रामाणिकता दूसरे पर आधारित हो अर्थात् जो परत: प्रमाण हो और अनित्य हो, उसको मूलाधार में क्यों रखते? महर्षि के ही शब्दों में जो "स्वयं प्रमाणरूप है कि जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप से स्वत: प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं।" [स्वमन्तव्यामन्तव्य-प्रकाश]।

पाठकगण स्वयं विचारें कि ऐसे अनुपम वेदज्ञान को छोड़कर अन्य किसको आर्यसमाज के मूलाधार में रखा जा सकता था? वेद शाश्वत सत्य का पुस्तक है अत: आर्यसमाज के मूलाधार में शाश्वत सत्य को प्रतिष्ठित कर महर्षि दयानन्द ने, जो सत्य के अनन्यतम उपासक थे, अपनी अनोखी सूझबूझ तथा वेदज्ञान के प्रति अपनी अपार निष्ठा का ही परिचय दिया है। पण्डित सत्यकाम विद्यालंकार के शब्दों में—"महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना शाश्वत सत्य वेद वाणी की नींव पर की है। जो समाज शाश्वत सत्य की नींव पर प्रतिष्ठापित हो, उसे ईश्वर की ओर से शाश्वत जीवन का वरदान मिला होता है।" आर्यगण यदि आर्यसमाज को शाश्वत जीवन प्रदान करना चाहते हैं, तो फिर वेद के प्रचार-प्रसार में सर्वात्मना जुट जाना पड़ेगा। वेद के प्रचार से ही आर्यसमाज का जीवन है।

धिक्कार है किसे

जो पुत्र निज माता पिता का मान न करे
वह बाप जो सन्तान को गुणवान न करे
गाली, गलौज सभी से तकरार है जिसे
धिक्कार है उसे ॥१॥

पत्नी जो पति की आज्ञा को मानती नहीं
मतिमन्द पतिव्रत धर्म क्या है जानती नहीं
नीम सम कड़वा लगे भरतार है जिसे
धिक्कार है उसे ॥२॥

जो छोड़ वैदिक धर्म को बनता है ईसाई
उस हिन्दू को जो ऊंच नीच रहा फैलाई
भाता नही है वेद का प्रचार है जिसे
धिक्कार है उसे ॥३॥

धनवान होकर धर्म हित जो दान न करे
अच्छे बुरे कर्मों की जो पहचान न करे
अपने धर्म और देश से न प्यार है जिसे
धिक्कार है उसे ॥४॥

जो आर्य बन कर दुर्व्यसन का त्याग न करे
स्वाध्याय और सत्संग से सही दिमाग न करे
नशा धूम्रपान का सवार है जिसे
धिक्कार है उसे ॥५॥

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

प्रवेश सूचना

आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी) में हिन्दी की प्रभाकर एवं संस्कृत की विशारद व शास्त्री कक्षाओं का प्रवेश १ जुलाई १९९० से प्रारम्भ है। —ऋषिपाल आर्य
आचार्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी (भिवानी)

संस्कृत साहित्य में नैतिकता

आचार्य दयानन्द शास्त्री, एम. ए. (हिसार)

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है, अतः यह निर्विवाद सत्य है कि यह भाषा सभी भाषाओं की जननी है। कुछ हजार वर्ष पहले तक यही भाषा भारत की बोलचाल की भाषा थी।

संस्कृत भाषा की भांति संस्कृत साहित्य को भी विश्व का प्राचीनतम एव विशालतम साहित्य होने का गौरव प्राप्त है। संसार की प्राचीनतम पुस्तकें ऋग्वेदादि चारों वेद भी इसी भाषा की अमूल्य निधि हैं। संस्कृत साहित्य की विविधता इसी से सिद्ध है कि इसमें काव्य, नाटक, चम्पू, गद्य, कथा आदि साहित्य की ललित-विधाओं पर तो लिखा ही गया है। धर्म, राजनीति, युद्धनीति, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, शिल्प, सगीत, दर्शन, व्याकरण, छन्द आदि शास्त्रीय विषयों पर भी उच्चकोटि का साहित्य पर्याप्त मात्रा मे विद्यमान है।

संस्कृत साहित्य में जिन मानवीय गुणों, राष्ट्रीय एकता के उपायों, राष्ट्र-निर्माण के तत्त्वों, राष्ट्र की सुख-समृद्धि, प्रगति, विकास, शान्ति और व्यवस्था, सद्भावना, प्रेम, सहिष्णुता, सत्य-निष्ठा, दीक्षा, तप, परोपकार, ईमानदारी तथा यज्ञ आदि का जो वर्णन मिलता है, वह सब संस्कृत साहित्य की नैतिकता के रूप में संसार को अमूल्य देन है।

संस्कृत साहित्य के शिरोमणि ग्रन्थ वेदों में राष्ट्रीयता के विकास के लिए नैतिकता के आठ गुणों का वर्णन किया गया है जो इस प्रकार है—

सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो यज्ञ पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥

अर्थात् सत्य, परिश्रम करना, सरल-निश्छल व्यवहार, वीरता राष्ट्र रक्षा का व्रत, तपस्या, ईश्वरभक्ति, देवपूजा-संगतिकरण, दान एवं परोपकार द्वारा यज्ञीय जीवन आदि नैतिक गुण किसी भी राष्ट्र के निर्माणार्थ सर्वोत्तम साधन हैं। वेदों में तो सत्य पर अत्यन्त बल देते हुए लिखा है कि "सत्येनोत्तभिताभूमिः" अर्थात् सत्यभूमि को उठाए हुए है। यहां सत्य कोई खम्भा नहीं है बल्कि सत्य से अभिप्राय है—सत्यनिष्ठ नागरिक जो अपनी सत्यनिष्ठा से दरिद्र राष्ट्र को भी श्रीसम्पन्न बना देते हैं। वेदों की यह नैतिकता किसी जाति-विशेष या सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं अपितु वर्ण व्यवस्था द्वारा राष्ट्र निर्माण की समर्थक है। जातपात, छुआछूत व साम्प्रदायिकता की घोर विरोधी है। वेद कहता है—"मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे" अर्थात् मैं प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखूं।

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्।

अर्थात् अपनी राष्ट्रीय एकता के लिए मिलकर चलो, मिलकर बोलो, मिलकर एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझो—ऐसी और इसी प्रकार की नैतिकता से परिपूर्ण असख्य शिक्षाएं वेदों में विद्यमान हैं।

संस्कृत साहित्य में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कहकर सम्पूर्ण पृथिवी हमारा परिवार बतलाया गया है। 'सत्यमेव जयते', अहर्निश सेवामहे', 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' आदि सन्देशों का लेकर नैतिक मूल्यों की सांस्कृतिक विजय आज भी बहुत से राष्ट्रों के मस्तकों पर दिव्य आभा बनकर चमक रही है। संस्कृत साहित्य के इन्ही नैतिक मूल्यों के कारण दुनिया ने भारत को धर्मगुरु और ज्ञानगुरु दोनों तरह से स्वीकारा। संस्कृत साहित्य के गहन अध्ययन से पता चलता है कि हिमालय की चोटी पर चढ़कर मानव जाति के आदि सम्राट महाराज मनु की घोषणा भी हमने दोहराई थी, जिससे ससार भारतीय विप्रों के चरणों में बैठकर नैतिकता का पाठ पढ़ सके और बढ़ती हुई अनैतिकता, बबर्ता और ध्वसात्मक प्रवृत्तियों पर रोक लगाई जा सके। मनु की घोषणा यह थी—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

यही थी वह भारतीय सौहार्द की द्योतक घोषणा जिसे स्मरण कर भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू ने अमेरिका के आमन्त्रण पर प्रथम बार वहां कुछ सप्ताहों के भ्रमण के बाद गौरव के साथ मस्तक ऊंचा करके कहा था—'मैं संसार की सबसे पुरानी और महान् संस्कृति का प्रतिनिधि बनकर आपके देश में आया हूं।' महाराज अश्वपति की यह घोषणा भी हमारे लिए गौरव का विषय रही है—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्नि नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः ॥

अर्थात् मेरे राज्य में कोई चोर नही, कोई कजूस नही, कोई शराबी नहीं, कोई प्रतिदिन हवन न करने वाला नही, कोई अविद्वान नहीं और कोई व्यभिचारी पुरुष नही। जब व्यभिचारी पुरुष नही तो व्यभिचारिणी स्त्री कहां से होगी? यह थी हमारी साख, हमारी नैतिकता।

कर्नल अल्काट ने आर्यनरेस' पुस्तक में लिखा है—बेबीलोनिया मिश्र, यूनान, रोम और उत्तरी यूरोप के दर्शनशास्त्र तथा धर्म भारतीय विचारों से परिपूर्ण हैं। पैथागोरस, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, होमर, जीनो, हीसिवड, सिसरोवर्जिल आदि तत्त्ववेत्ताओं के विचारों की तुलना संस्कृत साहित्य के कपिल, मनु, व्यास, गौतम कणाद, जमिनी, नारद, मरीची आदि ऋषियों से करने से स्पष्ट हो जाता है कि पश्चिमीय दर्शनशास्त्रों में पूर्वीय दर्शनों की छाप है।

महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित बाल्मीकि रामायण संस्कृत साहित्य का पहला लौकिक महाकाव्य है और बाल्मीकि प्रथम महाकवि। रामायण के नैतिक गुणों के कारण आज भी हमारी सरकार का प्रयत्न है कि भारत में रामराज्य स्थापित हो। रामायण में लक्ष्मण का चरित्र देखिए—

नाऽहं जानामि केयूरे नाऽहं जानामि कुण्डले।
नुपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ॥

अर्थात् हे ज्येष्ठ भ्राता राम! मैं सीता जी के कानों के आभूषण नहीं पहचानता। हां, मैं तो पैरों के आभूषण पहचान सकता हूं क्योंकि प्रतिदिन प्रातः साय उन्हें माता तुल्य समझकर झुककर अभिवादन किया करता था। आह! कितना ऊंचा चरित्र है? कितनी ऊंची नैतिकता है? रामायण में महर्षि बाल्मीकि ने जिसका जीता जागता चित्र खींचा यही वह संस्कृत साहित्य की नैतिकता है जो भारतीय समाज व्यवस्था का मेरुदण्ड है।

मनु ने भी जो विधान लिखा वही आगे चलकर दुनिया के राष्ट्रों के लिए विराट् राजमार्ग में परिणत हो गया जिस पर क्रमशः रघु, दशरथ, राम, जनक, अश्वपति, युधिष्ठिर, चन्द्रगुप्त, अशोक जैसे हमारे महिमामय लोकनायकों की परम्परा विकसित हुई। मनु द्वारा लिखित मानव धर्मशास्त्र (मनुस्मृति) से बेबर, मक्समूलर, बूलर जैसे पश्चिमी साहित्यकार भी प्रभावित हुए क्योंकि यह धर्मग्रन्थ नैतिकता का अथाह सागर है जिसके आधार पर ससार के राष्ट्रों ने अपने अपने सविधान बनाए है। इसमें लिखा है—

धृतिक्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

अर्थात् धृति=धैर्य, क्षमा, दम=मन का वशीकरण अस्तेय=चोरी त्याग, शौच=पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह=दश इन्द्रियों का वशीकरण, धी=पवित्र बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध=क्रोध का त्याग इन दस गुणों को धारण करने का नाम ही धर्म कहा है। महर्षि मनु का यह मूल धर्म क्या है? निःसन्देह यह वही नैतिकता है जिस के सूत्र वेदों में बिखरे हुए हैं। (क्रमशः)

'सर्वहितकारी' के आजीवन सदस्यों की सूची

1 सर्वश्री बनारसीदास आर्य, लौहड चौपटा भिवानी
2 ताराचन्द आर्य खरीटा फार्म (इण्डस्ट्रीयल इस्टेट के पीछे) माडल टाऊन हिसार
3 सुखदेवसिंह सुपुत्र श्री लालचन्द गांव-पो० मनसरवास (कैरू) जिला भिवानी
4 जगन्नाथ जी, ए-26 रोहितकुंज डाकखाना रानीबाग, दिल्ली-110034
5 चौ. चन्दगीराम हुड्डा गांव-पो. घसोला तह० चरखी दादरी जि० भिवानी
6 प्रभुदयाल आर्य गांव-पो० दरियापुर जिला भिवानी
7 सन्तकुमार सुपुत्र श्री चन्दनसिंह गांव-पो. रानी खेड़ा दिल्ली
8 मन्त्री आर्यसमाज मन्दिर सोनीफलिया महर्षि दयानन्द मार्ग सूरत (गुजरात)
9 स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी सरस्वती वेदमन्दिर परमाणु जिला सोलन (हि.प्र.)
10 अनिल कुमार गुप्ता म नं 359 लालकुर्ती बाजार अम्बाला छा०
11 मा. पूर्णसिंह आर्य पाना मामुरपुर नरेला दिल्ली-7
12 कर्मवीर वैद्य, यू-45 आर्य हस्पताल नरेला, दिल्ली
13 जगदीशलाल एण्ड ब्रादर्स प्लाट नं. 10300 मोतिया खान नई दिल्ली
14 रणसिंह आर्य यादव जीपवाला गांव सांपल वाया कलानौर जिला रोहतक
15 हरदास पहलमल अरोडा द्वारा आदर्श मैडिकल स्टोर्स आगरा रोड़ धूलिया (महाराष्ट्र)
16 प्रिंसिपल, दयानन्द पब्लिक कालेज नेहरू ग्राऊण्ड फरीदाबाद
17 प्रिंसिपल, दयानन्द पब्लिक हाई स्कूल सैक्टर 2 फरीदाबाद
18 प्रिंसिपल, दयानन्द पब्लिक हाई स्कूल सक्टर 23 फरीदाबाद
19 प्रिंसिपल दयानन्द कन्या महाविद्यालय नेहरू ग्राऊण्ड फरीदाबाद
20 सेठ रामनिवास जिन्दल गांव बालावास डा० कंवारी जिला हिसार—द्वारा अत्तरसिंह आर्य
21 प्रिंसिपल दयानन्द पब्लिक प्राईमरी स्कूल सैक्टर 18 फरीदाबाद
22 डा. भीमसैन जी स्मृति डा हिम्मतराय गांव-पो. पिनगवा जिला गुड़गांव
23 श्री आचार्य जी संस्कृत भारतीय शिक्षा कालेज खन्ना कालोनी दिल्ली रोड़ सोनीपत
24 जगदीश बत्रा म.नं. 410 सैक्टर 14 सोनीपत
25 मन्त्री आर्यसमाज नेपीयर टाऊन जबलपुर (म. प्र.)
26 जगदीश मित्र स्मृति स्व० प्राणनाथ कुमार 89 आदर्श नगर जबलपुर (म. प्र.)
27 सुरेश कुमार सुपुत्र श्री बनारसीदास गांव-पो. बोन्दकला भिवानी
28 विश्वमित्र सत्यार्थी, 3सी/244 फरीदाबाद टाऊन
29 प्रिंसिपल, दयानन्द पब्लिक स्कूल बन. ई 44 फरीदाबाद
30 मुख्याध्यापिका, दयानन्द पब्लिक स्कूल सैक्टर 16 फरीदाबाद
31 मुख्याध्यापिका दयानन्द पब्लिक स्कूल सैक्टर 5 फरीदाबाद
22 मुख्याध्यापिका दयानन्द पब्लिक स्कूल सक्टर 7 फरीदाबाद
3ɔ मुख्याध्यापिका दयानन्द पब्लिक स्कूल सैक्टर 3 फरीदाबाद
34 मुख्याध्यापिका दयानन्द पब्लिक स्कूल सैक्टर 22 फरीदाबाद
35 मुख्याध्यापक जनता हाई स्कूल गन्नौर जिला सोनीपत
36 दौलतराम सेतिया 24/11 मोतीनगर नई दिल्ली
37 मन्त्री आर्यसमाज नेहरू ग्राऊण्ड फरीदाबाद
38 मन्त्री आर्यसमाज पश्चिम सान्ताक्रूज बम्बई-54
39 खेमलाल राठी एडवोकेट ए-9/32 वसन्त विहार नई दिल्ली-57
40 विजय कुमार बत्रा सुपुत्र श्री फतेहचन्द बत्रा 12/477 ऋषिनगर सोनीपत
41 के. सी. अरोड़ा बी 141 डी.डी.ए. कालोनी नारायणा दिल्ली
42 सत्यदेव आर्य वस्त्र लोक 2643 मुख्य बाजार शादीपुर नई दिल्ली
43 नन्दलाल लूथरा इंजिनियरिंग वर्क्स दिल्ली रोड़ सोनीपत
44 वेदपाल आर्य एक्सीयन बिजली बोर्ड कोठी नं० 14 हाऊसिंग बोर्ड कालोनी झाडसा मार्ग गुड़गांव
45 श्यामलाल आर्य एस. डी. ओ. म. न० ए.ई. 2 पावर हाऊस कालोनी फरीदाबाद
46 महाराष्ट्र मेडिकल स्टोर धूलिया (महा०)
47 डा० देशराज आर्य खीरबाट 290 इन्दिरा कालोनी रोहतक
48 चौ० सत्यदेव सिंह पूर्व पुलिस अधीक्षक, कलेर भवन पीपली रोड कुरुक्षेत्र
49 प० फूलचन्द शर्मा निडर प्रधान आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी
50 मा० ताराचन्द प्रधान आर्यसमाज सब्जी मण्डी नारनौल शहर
51 बलदेव कृष्ण आर्य मुलतान ट्रेडर्स जी. टी. रोड़ करनाल
52 श्री भूषण जी द्वारा श्री मनीराम चुनाकला निर्माण उद्योग यमुनानगर
53 रामफल सिंह इन्चार्ज पशु हस्पताल गांव-पो० हैबुआना तह० डबवाली जिला सिरसा
54 प्रो० गोपीचन्द आर्य म० नं 7 डिफेन्स कालोनी हिसार द्वारा अत्तरसिंह आर्य
55 बहादुरराम यादव प्रधान आर्यसमाज रामसरा वाया अबोहर जिला फिरोजपुर (पंजाब)
56 ब्र० जीतेन्द्रदेव मलिक गांव-पो. जसराणा जिला सोनीपत
57 भरतसिंह शास्त्री कन्या गुरुकुल पंचगांव डा गोपी जि. भिवानी
58 सत्यवीर सिंह दलाल 312/21 डी. एल. एफ. कालोनी रोहतक
59 महेश्वरसिंह शास्त्री गांव-पो. सींक जिला करनाल
60 मन्त्री आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी पो.करोता जि. महेन्द्रगढ़ द्वारा म. जयपालसिंह आर्य
61 पुस्तकालयध्यक्ष रामजीलाल सोनी एवं श्रीमती गिंदोडी देवी सोनी यादगार पुस्तकालय गांव मुंगारका जि. महेन्द्रगढ़ द्वारा मुरारीलाल बेचैन
62 बलबीरसिंह मलिक म. नं. 382 सैक्टर 10 फरीदाबाद द्वारा मुरारीलाल बेचैन
63 दयानन्द सुपुत्र श्री भगवानसिंह गांव सांघी जिला रोहतक
64 मन्त्री आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत
65 श्रीमती सविता बजाज प्राध्यापिका आर्य गर्ल्ज कालेज अम्बाला छावनी द्वारा पं० शेरसिंह आर्य
66 प्राचार्य आर्य गर्ल्ज कालेज अम्बाला छावनी द्वारा पं. शेरसिंह आर्य
67 मन्त्री आर्यसमाज पुरानी मण्डी फिरोजाबाद (उ. प्र.) द्वारा मुरारीलाल बेचैन
68 महाशय मदनलाल नम्बरदार ग्वाल पहाड़ी वाले द्वारा डा. राकेश दूबे गाव-पो. मांडी दिल्ली-47 द्वारा मुरारीलाल बेचैन
69 रामेश्वरदयाल सरपंच गांव लूलवाडी पो. रसूलपुर जि. फरीदाबाद द्वारा मुरारीलाल बेचैन
70 ओमप्रकाश मन्त्री आर्यसमाज कालांवाली जिला सिरसा द्वारा मुरारीलाल बेचैन
71 मुख्याध्यापक आर्य विद्या मन्दिर डबवाली मण्डी जिला सिरसा द्वारा मुरारीलाल बेचैन
72 प्रिंसिपल आर्य सिनि. सैकण्ड्री स्कूल सिरसा द्वारा मुरारीलाल बेचैन
73 नौरंगसिंह एडवोकेट 102 द्वारकापुरी सिरसा— द्वारा मुरारीलाल बेचैन
74 मुख्याध्यापिका आर्य कन्या हाई स्कूल सिरसा द्वारा मुरारीलाल बेचैन

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सर्वहितकारी के आजीवन सदस्य.........

[पृष्ठ ४ से आगे]

75 मन्त्री आर्यसमाज सैक्टर 9, पंचकुला जि० अम्बाला
76 स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द आश्रम बनी पुण्डरी जिला कैथल
77 आचार्य गुरुकुल आर्यनगर वाया कुरड़ी जिला हिसार द्वारा अतरसिंह आर्य
78 आर. पी. शर्मा मन्त्री आर्यसमाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर (उप्र)
79 प्रधानाचार्य आर्य कन्या गुरुकुल मोरमाजरा डा० गोली (करनाल) द्वारा मुरारीलाल बेचैन
80 अरुण आर्य सु० श्री पुष्करलाल आर्य, 121 कोटन स्ट्रीट कलकत्ता
81 मन्त्री आर्यसमाज सेवासदन बल्लभगढ़ जिला फरीदाबाद द्वारा मुरारीलाल बेचैन
82 मन्त्री आर्यसमाज बल्लगढ़ जिला फरीदाबाद द्वारा मुरारीलाल बेचैन
83 मन्त्री आर्यसमाज जवाहर चौक फतेहाबाद जिला हिसार
84 मा० मांगेराम आर्य एम. ए. मु. पो बांकनेर दिल्ली
85 ला० साधुराम एच एल 135 जमालपुर कालोनी लुधियाना (पंजाब)
86 अजय कुमार द्वारा पृथ्वीसिंह फौजी सुपुत्र शोलूराम गांव पो. बालसमन्द जिला हिसार द्वारा अतरसिंह आर्य
87 चौ० दीपचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज जूआं जिला सोनीपत द्वारा पं० चिरन्जीलाल आर्य
88 सत्यनारायण आर्य मन्त्री आर्यसमाज पुन्सीका जिला महेन्द्रगढ़ द्वारा पं० ईश्वरसिंह
89 धर्मपाल आर्य, मालिक महाशियां दी हट्टी 9/44 इण्डस्ट्रीयल एरिया कीर्तिनगर नई दिल्ली-15 द्वारा स्वामी देवानन्द
90 श्रीमती सुमित्रादेवी आर्या ए-1/6 राणा प्रताप बाग दिल्ली-7 द्वारा मुरारीलाल बेचैन
91 राजपाल अग्रवाल हिन्द साईकिल वाले मेहन्दी गोदाम ओल्ड फरीदाबाद द्वारा मुरारीलाल बेचैन
92 मन्त्री आर्यसमाज आदर्शनगर दिल्ली-33 द्वारा स्वामी देवानन्द
93 चौ. हरिसिंह आर्य प्रमुख ब्लाक दनकौर चौधरी कोल्ड स्टोर सिकन्दराबाद जिला बुलन्दशहर (उप्र) द्वारा स्वामी देवानन्द
94 मन्त्री आर्यसमाज नरवाना जिला जींद
95 दलीपसिंह वान० आर्यसमाज मन्दिर मकड़ौलीकलां जिला रोहतक
96 मन्त्री आर्यसमाज जीन्द शहर द्वारा मुरारीलाल बेचैन
97 मा० प्रहलादसिंह आर्य ग्राम नंगली पो. मुंगारका जि. महेन्द्रगढ़ द्वारा मुरारीलाल बेचैन
98 वैद्य धर्मपाल आर्य यज्ञ समिति आर्यसमाज खानपुर कलां तहसील गोहाना जिला सोनीपत

—शेरसिंह व्यवस्थापक सर्वहितकारी

हरयाणा मे वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज नारनौल जिला महेन्द्रगढ़		१ से ७ अगस्त
,,	मितरोल औरंगाबाद जि. फरीदाबाद	१ से ५ अगस्त
,,	जींद शहर	४ से ६ अगस्त
,,	स्वामी दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	६ से १३ ,,
,,	लाडवा जिला कुरुक्षेत्र	१ से ६ ,,
,,	सालवन जिला करनाल	७ से १४ ,,
,,	नरवाना जिला जीन्द	६ से १४ ,,
,,	होली मोहल्ला करनाल	१६ से १६ ,,
,,	थानेसर जिला कुरुक्षेत्र	२३ से २७ ,,

आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने वेदप्रचार सप्ताह ६ से १४ अगस्त की तिथियों में न रखे क्योंकि इन तिथियों में भजनमण्डलियों के कार्यक्रम बन चुके हैं। इसके बाद की तिथियों में प्रबन्ध किया जा सकता है। —सत्यवीर शास्त्री वेदप्रचाराधिष्ठाता

जग से पाखण्ड मिटाओ तुम

श्रावणी का पर्व सुपावन, हर्षित हो इसे मनाओ तुम।
ईश्वर की वाणी वेदों को, श्रद्धा से पढ़ो पढ़ाओ तुम॥

ये सत्य सनातन वेद धर्म, कल्याण मार्ग बतलाता है।
दुर्गुण त्यागो सद्गुण धारो, हर मानव को समझाता है॥
दुर्व्यसन और दुर्भावों को, हृदय से दूर भगाता है।
जो वैदिक पथ अपनाता है, दुनिया में पूजा जाता है॥

तुम भी वेदों के पथिक बनो, पाखण्ड तजो सुख पाओ तुम।
ईश्वर की वानी वेदों को, श्रद्धा से पढ़ो, पढ़ाओ तुम॥१॥

आदि सृष्टि में परमेश्वर ने, ऋषियों को था सद्ज्ञान दिया।
आदित्य, अंगिरा, अग्नि, वायु ने था वेदामृत पान किया॥
प्रचार किया था वेदों का, सारे जग का कल्याण किया।
पाया जिसने भी वेदज्ञान, निजी जीवन का निर्माण किया॥

वेदों के पण्डित बन जाओ, मत्र महापुरुष कहलाओ तुम।
ईश्वर की वानी वेदों को, श्रद्धा से पढ़ो, पढ़ाओ तुम॥२॥

गौतम, कपिल, कनाद, जैमिनि ऋषि दयानन्द को याद करो।
सत्संग और स्वाध्याय करो, मत व्यर्थ समय बरबाद करो॥
दुनिया को स्वर्ग बनाओ तुम, मत वृथा कभी फिसाद करो।
निजी जीवन श्रेष्ठ बनाओ तुम, पैदा उत्तम औलाद करो॥

बनो सदाचारी, तपधारी, अपना कर्त्तव्य निभाओ तुम।
ईश्वर की वानी वेदों को, श्रद्धा से पढ़ो, पढ़ाओ तुम॥३॥

आज जगत में पाखण्डी, पाखण्ड रहे हैं कर भारी।
अज्ञान अन्धेरे में ठोकर, खा रही आज दुनिया सारी॥
वैदिक मर्यादा तज करके, है दुखी आज सब नर नारी।
मतवादी घूम रहे ढोंगी, सो गए कहां वेदाचारी॥

तुम लेखराम, गुरुदत्त बनो, जग से पाखण्ड मिटाओ तुम।
ईश्वर की वानी वेदों को, श्रद्धा से पढ़ो, पढ़ाओ तुम॥४॥

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री,
भजनोपदेशक ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हर०)

दुल्हन जल रही है

लता जल रही है, सुमन जल रही है।
रमा जल रही है, कुसुम जल रही है।
दुल्हा हस रहा है, दुल्हन जल रही है।

(१) बहुत धन लगा कर शादी रचाई
मगर वो किसी की समझ में ना आई
ये लालच की कैसी अग्न जल रही है।

(२) दिया इतना सामान भर गई गाड़ी
रजाई बिछौने और रंगीन साड़ी
मगर लाश फिर भी नग्न जल रही है।

(३) चिता रुकमणी की बुझने न पाई
बराबर में सीता भी जलने को आई
घर में ही अपने किरन जल रही है।

(४) आहों से इनकी जहां जल रहा है
लरजता हुआ आसमां जल रहा है
बेमोल सारी धरन जल रही है।

—सुधीर कुमार बेमोल

मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

वेदमाता और श्रावणी पर्व.........

(पृष्ठ ८ का शेष)

देवासुर-संग्राम में देवों की पराजय होने पर उन्होंने पार्वती को शंकर जी की सहायता प्राप्त करने के लिए राखी बांधी थी। तब उनकी विजय हुई। मध्यकाल में मुगलकालीन कथानक यह जुड़ गया कि चित्तौड़ की रानी कर्मवती ने शेरशाह सूरी से अपनी रक्षार्थ हेतु राखी-बंधन किया। आजकल इन्हीं ऐहित वृत्तों में यह श्रावणी पर्व उलझ कर रह गया है। अब बहनें अपने भाईयों को उनकी कुशल कामना और अर्थप्राप्ति की भावना से सुसज्जित विविध वर्णी धागे बांधती है। पहले यही यजमानों को पुरोहित दक्षिणा प्राप्त करने के के लिए बांधते थे। साथ में रक्षा की भावना जुड़ी थी। अतएव अब हमें इस पुनीत पर्व को वेदों का नियमित स्वाध्याय करके और तदनुकूल उत्तम आचरण करके पुनः महत्व देना होगा। अपने शिशुओं का यज्ञोपवीत संस्कार कराना चाहिए। उन्हें स्वाध्याय की प्रेरणा देनी चाहिये और देश-धर्म-समाज व राष्ट्र की रक्षा के लिए भी तत्पर रहना चाहिये,तभी यह सार्थक होगा।

एक हर्षवर्धक सूचना

ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट को वेद प्रचार केन्द्र बनाने का निश्चय किया गया है, जिसमें वेदप्रचार के लिए जीवन समर्पित उपदेशक, भजनोपदेशक वानप्रस्थी और संन्यासी स्वाध्याय एवं वेदप्रचार के लिये विश्राम कर सकते हैं। भोजन व्यवस्था निःशुल्क होगी।

विद्यालय में प्रवेश आरम्भ है। उपदेशक बनने के इच्छुक योग्य विद्यार्थी और वानप्रस्थी शीघ्र पत्र व्यवहार करें। स्थान सीमित हैं।

पत्र व्यवहार का पता —

कुलाधिपति
पं० ब्रह्म प्रकाश जी शास्त्री
विद्यावाचस्पति

अधिष्ठाता
वेदानन्द वैदिक

ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर
वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट पिन-245205
जिला—गाजियाबाद उ० प्र०

आर्यसमाज बेरी जिला रोहतक का चुनाव

प्रधान श्री हस्तीराम, उपप्रधान श्री साधुराम, श्री रघुवीर सिंह, मन्त्री श्री रामकिशन, उपमन्त्री श्री राजेन्द्र सिंह, कोषाध्यक्ष श्री फतहसिंह, लेखा निरीक्षक श्री सूबेदार हरिसिंह।

पं० चन्द्रसैन वैदिक मिशनरी दिवंगत

आर्य प्रादेशिक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रसिद्ध उपदेशक पं० चन्द्रसैन वैदिक मिशनरी का २१ जुलाई को ६० वर्ष का आयु में लम्बी बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। उन्होंने आर्य-समाज के हैदराबाद, हिन्दी रक्षा तथा गो रक्षा आन्दोलनों में भाग लिया था। हैदराबाद सत्याग्रह के लिए तो उनकी पेन्शन भी हो गई थी। आपने सारी आयु वैदिक धर्म के प्रचार तथा प्रसार में लगा दी। आपने सर्वहितकारी साप्ताहिक के सैकडों सदस्य बनाये थ।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति तथा उनके दुखी परिवार को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य

विषय तीन और वेद चार क्यों ?

रचयिता—लालचन्द 'विद्यावाचस्पति'
श्री मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम सेहकी (महेन्द्रगढ़)

प्र०—वेद चार हैं किन्तु वेदों में विषय तीन हैं, ऐसा क्यों है ?

उ०—यह सर्वमान्य सत्य है कि वेद चार हैं किन्तु मुख्यतः वेदों में विषय तीन हैं—१ ज्ञान २ कर्म ३ उपासना। ऋग्वेद में ज्ञान-काण्ड है, यजुर्वेद में कर्मकाण्ड है, सामवेद में उपासना काण्ड है तथा अथर्ववेद इनका पूरक है। वैसे वेदों में अनेक विषय हैं किन्तु विशेषतः ये तीन विषय ही प्रमुख हैं।

प्र०—वेदों में कितने प्रकार की विद्या है ?

उ०—वेदों में दो प्रकार की विद्या है—परा, अपरा।

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति।
अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते॥ मुण्डक. खण्ड१, मं. ५॥

अपरा विद्या उसे कहते हैं जिससे पृथिवी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान द्वारा ठीक ठीक कार्य सिद्ध करना। परा विद्या उसे कहते हैं जिससे सर्वशक्तिमान् ब्रह्म की प्राप्ति होती है। ये क्रमशः प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं।

प्र०—वेदों को 'वेद और श्रुति' इन दो नामों से क्यों कहते हैं ?

उ०—इनको वेद इसलिए कहते हैं क्योंकि वेद शब्द विद् धातु से बनता है। विद् धातु के चार अर्थ हैं।

प्रथम 'विद' धातु ज्ञानार्थ है, दूसरा विद सत्तार्थ है, तीसरा विदलृ का लाभ अर्थ है, चौथा विद का अर्थ विचार है। इन चार धातुओं से करण और अधिकरण कारक में 'घञ्' प्रत्यय करने से वेद शब्द बनता है। क्योंकि वेदों को पढ़ने से यथार्थ विद्या का ज्ञान होता है, इनको पढ़कर मनुष्य विद्वान् बनता है. इनसे सर्वश्रेष्ठ सुख की प्राप्ति होती है और इनसे मनुष्यों को सत्यासत्य का ठीक ठीक विचार होता है। इसलिए इनको वेद कहते हैं। इनको 'श्रुति' भी कहते हैं। श्रु धातु का श्रवण अर्थ में प्रयोग किया है। इससे करण कारक में क्तिन् प्रत्यय के होने से श्रुति शब्द बनता है। सृष्टि के आरम्भ से आज तक और ब्रह्मादि से लेकर आज तक के मनुष्य इनसे सब सत्यविद्याओं को सुनते आए हैं, अतः इससे इनका नाम श्रुति से भी प्रसिद्ध हो गया।

स्वास्थ्य के लिए

—राजेन्द्र 'नटखट'

सेहत सही रखने का
एक ही उपाय है,
कब्ज न होने दें
आदत के मुताबिक
पानी पी शौच जाएं
प्रातः प्रातः सैर जाएं
सेवन करें ताजा हवा—
हैं असंख्य रोगों की एक दवा
नीले नभ नीचे
प्राणायाम, व्यायाम कर
शरीर संग श्रम से जुड़े।
दिन में खूब पानी पीएं
हंसी - खुशी रहें
रात्रि को देर तक न जागें।

मोटे आटे की रोटी
दही, दाल, सलाद एवं
सब्जी के साथ सेवन करें
हरी सब्जियां खानी न भूलें
ऋतु अनुकूल फल खाएं
तली हुई मैदे की चीजों से
अरुचिकर अचारों से
अवश्य परहेज करें।
आवश्यकतानुसार उपवास रखें
रात्रि को सोते समय
गर्म दूध के साथ
दो चार दाने समान
छोटी, भुनी पिसी हरड़ लें
अन्तड़ियां कैसे न ठीक रहें

भूल सुधार—अगले पृष्ठ पर पहले शीर्षक में श्रावणी उपाक्रम छप गया है जो अशुद्ध है, कृपया शुद्ध शब्द 'श्रावणी उपाकर्म' पढ़े।

श्रावणी उपाकर्म :

वेद और आर्यसमाज

वेदों के विषय में आर्यों का यह विश्वास चला आ रहा है कि ईश्वरीय ज्ञान है। ईश्वर ने मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए सृष्टि के आरम्भ में इस पवित्र ज्ञान को अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा, इन चार ऋषियों के पवित्र हृदय में प्रकाशित किया, जिससे मनुष्य वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक कर्त्तव्य का ज्ञान यथार्थ रूप से प्राप्त कर सकें तथा जीवन में सुख और समृद्धि का साम्राज्य स्थापित कर सके। आर्यों के इस विश्वास का समस्त प्राचीन साहित्य अर्थात् स्मृति, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत, श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र आदि प्रबल समर्थन करते हैं। जैसे मनुस्मृति में लिखा है—

पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्
अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थितिः ॥
चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमा पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति ॥
बिभर्ति सर्वभूतानि वेदशास्त्रं सनातनम्।
तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम् ॥
(मनु १२/६४/६७/६६)

(१) पितर, देव और मनुष्य जाति के लिए वेद सनातन चक्षु है, मार्गदर्शक है। वेद के रहस्य को समझना कठिन है। चार वर्ण, तीन लोक, चार आश्रम और तीन काल ये सब वेद से ही सिद्ध होते हैं। वेद सब प्राणियों का धारण-पोषण करता है अर्थात् उसका उपदेश करता है, इसलिए मनुष्य मात्र का उत्तम साधन वेद है।

(२) बृहदारण्यकोपनिषद् में लिखा है कि 'एतस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्—यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः (बृ० ४/५/११) अर्थात् ऋग्वेद आदि चारों वेद मानो परमेश्वर के श्वास से प्रकट हुए हैं।

(३) शतपथ ब्राह्मण में वेदों को 'छन्द' नाम से कहा गया है—'यदेभिरात्मानकच्छायदस्तच्छन्दसां छन्दस्त्वम्' देवों ने मृत्यु से भयभीत होकर अपने आपको इनसे आच्छादित कर लिया। इसलिए वेदों को 'छन्द' कहते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि वेद-ज्ञान देवों को मृत्यु भय से मुक्त कराता है।

(४) ऐतरेय ब्राह्मण में भी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान रूप में प्रतिपादित किया गया है—'प्रजा पतिर्वा इमान् वेदान् सृजत्' अर्थात् समस्त प्रजा के पालक परमेश्वर ने वेदों को बनाया है।

(५) तैत्तिरीय ब्राह्मण की एक आख्यायिका में वेदों को समस्त ज्ञान विज्ञान के आगार और अनन्त विद्या से युक्त बतलाया गया है। आख्यायिका यह है कि महर्षि भारद्वाज ने तीन सौ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया अर्थात् वेदों का अध्ययन किया। वेद का अध्ययन करता हुआ वह वृद्ध हो गया। तत्पश्चात् इन्द्र उसके पास आकर कहने लगे—यदि तुम्हें और भी आयु प्रदान कर दूं तो तुम उससे क्या करोगे? भारद्वाज कहने लगे—हे इन्द्र! मैं चतुर्थ आयु को भी प्राप्त करके ब्रह्मचर्य का ही आचरण करूंगा। इन्द्र ने उसे पर्वताकार ज्ञान राशि को वेदों के रूप में दिखलाया और प्रत्येक राशि की मुट्ठी सी भर ली तथा भारद्वाज से कहने लगे—यह वेदज्ञान रूप राशि पर्वत रूप है अर्थात् इसके ज्ञान का कहीं अन्त नहीं है। तुमने ३०० वर्षों तक वेदों का अध्ययन किया है, फिर भी उनका अन्त नहीं पाया।

(६) महाभारत में महर्षि व्यास ने वेदों को नित्य और ईश्वरकृत बतलाया है और उनके सार्थक अध्ययन का प्रबल समर्थन किया है—

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ॥
(महा० शा० प० २३२/२४)

सृष्टि के प्रारम्भ में स्वयम्भू परमेश्वर ने वेद रूप नित्य वाणी का उत्सर्जन किया। उससे मनुष्यों की सब प्रवृत्तियां प्रारम्भ हुई।

यो वेदे च शास्त्रे च, ग्रन्थधारणतत्परः।
न च ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञो, तस्य तद्धारणं वृथा ॥
भारं स वहते तस्य, ग्रन्थस्यार्थं न वेत्ति यः।
यस्तु ग्रन्थार्थतत्त्वज्ञो, नास्य ग्रन्थागमो वृथा ॥
(महा शा० प० ३०५-१३, १४)

जो केवल वेदशास्त्रों के स्मरण में रत है और उसके अर्थ को नहीं जानता, उसका उन्हें स्मरण करना व्यर्थ है। जो ग्रन्थ के अर्थ को नहीं जानता, वह उस ग्रन्थ के केवल भार को ही वहन करता है और जो वेद शास्त्र के अर्थ को जानता है, उसका उसे स्मरण करना सार्थक है।

(७) आचार्य यास्क ने भी वेदार्थ-ज्ञान की महिमा का गान किया है—

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूद।
अधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम् ॥
योऽर्थज्ञ इत् सकलं भद्रमश्नुते।
नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा ॥ (निरु० नै० का० १, १८)

जो वेद को पढ़कर उसके अर्थ को नहीं जानता वह भारवाहक पशु के समान है। जो वेद के अर्थ का ज्ञाता है वही समस्त कल्याण तथा सुख को प्राप्त करता है। वह वेदार्थ ज्ञान से पाप का निवारण करके स्वर्ग (सुख-विशेष) को प्राप्त करता है।

(८) वेदों का आन्तरिक साक्ष्य उन्हें ईश्वरकृत बतलाता है—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ॥
(यजु० २६।२)

ईश्वर कहता है—जैसे मैं इस वेद रूपी कल्याणी वाणी का ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि के लिए उपदेश करता हूं वैसे ही हे मनुष्यो! तुम भी इसका सब मनुष्यों के लिए उपदेश करो।

आर्यसमाज का कर्त्तव्य

श्रावणी उपाकर्म का पर्व वेदाध्ययन का पर्व माना जाता है। सरकार ने इसे संस्कृत दिवस के रूप में स्वीकार किया है। वेद के पठन-पाठन को आर्यसमाज अपना परम धर्म मानता है। इस युग में वेद के प्रचार का एकमात्र श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनकी उत्तराधिकारी संस्था को है। आर्यसमाज ने वेदों के पठन-पाठन के लिए गुरुकुल, विद्यालय आदि संस्थाओं की स्थापना की। वेदों की शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए सभाओं का निर्माण किया तथा आर्यसमाज मन्दिरों के माध्यम से महोत्सव एवं वेद-सप्ताह के आयोजन से वेदप्रचार का यथाशक्ति कार्य किया है किन्तु इसे पर्याप्त नहीं किया जा सकता। आर्यसमाज द्वारा प्रचारित वैदिक धर्म समुद्र में बिन्दु तुल्य समझना चाहिए। आज का समाज पौराणिक मिथ्या धारणाओं में जकड़ा हुआ है। अभी वह सत्य वैदिक-धर्म के अमृत-पान से कोसों दूर है। एकमात्र आर्यसमाज ही समाज को वेद-अमृत का पान करा सकता है। उसके लिए आज आर्यसमाज को वेदप्रचार की पद्धति पर पुनर्विचार करना चाहिए। आर्यसमाज अपने बिखरते हुए संगठन को सर्वप्रथम सुदृढ़ बनावे। सभी शिक्षण संस्थाओं का एक वेद-विश्वविद्यालय के अधीन संचालन करे। साधारण जनता के लिए वेद शिक्षण शिविरों का आयोजन करे। अपने आर्यसमाज मन्दिरों में वेदों के पठन-पाठन की व्यवस्था करे। श्रावणी पर्व इन्हीं प्रेरणाओं से ओत-प्रोत होकर प्रतिवर्ष आर्यसमाज के समक्ष उपस्थित होता है।

—सुदर्शनदेव आचार्य
संस्कृत सेवा संस्थान, हरिसिंह कालोनी, रोहतक

इन्दोर में अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन

तिथि भाद्रपद कृष्ण ५-६-७ संवत् २०४७, ११-१२-१३ अगस्त १९९० शनिवार, रविवार, सोमवार, सम्मेलन स्थल नेहरू प्रशाल (स्टेडियम) जावनी, इन्दौर में अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन होगा।

संकल्प के लिए पधारिये

हमारी भारतीय भाषायें तेलुगु, मलयालम, तमिल, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बंगाली, असमिया, संस्कृत, पंजाबी, सिन्धी, उर्दू, उड़िया एवं हिन्दी को अपने-अपने प्रान्त में प्रतिष्ठित करना एवं राष्ट्रभाषा-सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित करना, अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन का उद्देश्य है।

अंग्रेजों की गुलामी से हम मुक्त हुए किन्तु हमारी भाषाओं को अभी भी अंग्रेजी भाषा की चेरी बनकर अपना अस्तित्व बचाना पड़ रहा है। कुछ प्रान्तों ने तो अंग्रेजी हटाकर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का कार्य आरम्भ कर दिया है किन्तु अभी भी देश पर अंग्रेजी भाषा का शिकंजा जकड़ा हुआ है। शासकीय क्षेत्र, शैक्षणिक क्षेत्र, निजी संस्थानों, कारखानों और जन सामान्य के दैनिक व्यवहार से अंग्रेजी को तेजी से हटाना है।

भाषणों से, शासकीय प्रयासों से, लेख लिखने, गोष्ठियां करने, औपचारिक सम्मेलनों से, हिन्दी दिवस मनाने से अभी तक हम देश को अंग्रेजी भाषा की गुलामी से मुक्त नहीं करा पाए हैं। देश पर अंग्रेजी भाषा का लदा रहना 'राष्ट्रीय कलंक' है। क्या यह कलंक भाषणबाजी से मिट जाएगा? अभी भी हमारे बीच अंग्रेजी की पैरवी करने वाले मौजूद हैं। उनके मन में भी यह भावना भरनी होगी कि अंग्रेजी हटाना राष्ट्रभक्ति का कार्य है। यदि सख्त शब्दों में कहें तो अंग्रेजी भाषा को बनाए रखने का विचार देशद्रोह समझा जाना चाहिए।

प्रचार-प्रसार, अनुनय-विनय, वाद-विवाद से अंग्रेजी नहीं हटी। अंग्रेजी हटेगी तब जबकि हम सड़क पर उतर कर अंग्रेजी हटाने का संकल्प लेंगे। सर पर कफन बांधकर 'करो या मरो' का नारा लगाकर, प्राणों की आहुति देने की तैयारी करेंगे। आज भी अंग्रेजी हटाकर देश की अस्मिता बचाने का समय है, शायद कल बहुत देर हो जाए।

आइये, प्राणप्रण से संकल्प कर अंग्रेजी हटाने में जुट जाइये।

लड़कियों की शिक्षा देने पर अत्यधिक बल

सोनीपत, २० जुलाई (ह.स)। सोनीपत के उपायुक्त श्री आर. सी. राव ने कहा है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, विशेषकर लड़कियों की शिक्षा पर अत्यधिक बल देने की आवश्यकता है। श्री राव ने गत दिवस यहा से २० किलोमीटर दूर गांव मोहाना में आर्य कन्या उच्च विद्यालय में एक 'हाल कमरे' की आधारशिला रखने के बाद वहां उपस्थित ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षत्रों में शिक्षा की बहुत कमी है जिसकी वजह से गांव के विकास में बाधा पदा होती है। इस अवसर पर उन्होंने विद्यालय के लिए एक लाख ५० हजार रुपए मैचिंग ग्रांट देने की घोषणा भी की।

उन्होंने गांववासियो से यह भी अपील की कि वे जातपात और पार्टीबाजी से ऊपर उठकर गाव के उत्थान के लिए मिलजुल कर और भाईचारे की भावना से काम करें

चौ. पृथ्वीसिंह जी बेधड़क का गीत

एजी एजी ऋषि जी देने लगे व्याख्यान
बिन वेदों के किसी मनुष्य का होगा ना कल्याण

१- मस्जिद के मुल्ला झूठे — मन्दिर के पुजारी झूठे
पोप जी गिरजे के झूठे — सारे मठधारी झूठे
बाईबल कुरान के भी सारे आज्ञाकारी झूठे
अढारा जो पुरान उनके सारे कर्मचारी झूठे
पढ़ने वाले सारे झूठे — श्रोता नरनारी झूठे
मन्दिर और शवाले झूठे-और उनके औतारी झूठे
(जिन्हें कहें वह भगवान)

२- कलकत्ते की काली झूठी और पुष्कर के पिण्डे झूठे
माता गुड़गांवां वाली झूठी डोरा और गण्डे झूठे
घण्टा और टाली झूठी बजाने वाले पिण्डे झूठे
पीनी शराब प्याली झूठी मांस खाने अण्डे झूठे
मण्डली सुलफे वाली झूठी फास के मसटण्डे झूठे
जुमेरात जुम्मा वाली झूठी पादरी के सण्डे झूठे
जुए की दीवाली झूठी पोप के हथकण्डे झूठे
(झूठे सब बेईमान)

३- जगने वाले जागे नहीं जाग जो थे जाग रहे
बाग बाग बिना बाग बाग बिना भाग रहे
आगरे कहां से देने आगरह आग रहे
आगे बाघ भाग रहे पीछे जाग लाग रहे
(गीदड़ का भगवान)

४- स्वामी का उपदेश सुनकर श्रोतागण हरसाने लगे
सन्ध्या करनी सीखी और हवन भी रचाने लगे
बड़े ब्राह्मण सेठ पुनर्विवाह करवाने लगे
मूर्ति पुजारी बहुत दरिया में बहाने लगे
पादरी और पोप मुल्ला देखकर घबराने लगे
कह पृथ्वीसिंह वहां वायसराय तक आने लगे
(ऋषि को शीस झुकान)

प्रस्तुतकर्ता—जयपाल सिंह आर्य सभा भजनोपदेशक

आर्यसमाज नारनौल जिला महेन्द्रगढ़ का

हीरक जयन्ती समारोह

दिनांक ५ अक्तूबर १९९० से ७ अक्तूबर १९९० तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में हरयाणा के अतिरिक्त पड़ोसी राज्य राजस्थान, पंजाब, हिमाचल, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदि के सभी आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं, प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों साधु-संन्यासियों, वानप्रस्थियों, विशेष कार्यकर्त्ताओं, योग विद्वानों, उच्च कोटि की आर्या महिलाओं, भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया जा रहा है। अत: निवेदन है कि इन तिथियों को छोड़कर सब आर्यसमाज अपने उत्सव आगे पीछे रखें।

—म० ताराचन्द आर्य, प्रधान आर्यसमाज

ग्राम सेना आर्य कुमार सभा का चुनाव सम्पन्न

प्रधान नै. कुन्जदेव शास्त्री, उपप्रधान ब्र. सतीश कुमार आर्य, महामन्त्री ब्र. जगबन्धु आर्य, उपमन्त्री ब्र. भास्कर त्यागी, कोषाध्यक्ष ब्र कर्मवीर आर्य, पुस्तकालय अध्यक्ष ब्र.सत्येन्द्र कुमार, ब्र. छत्रसाय आय।

श्री लालकृष्ण अडवानी से

'टू डे इण्डिया' के मार्च 1990 के अङ्क में श्री लालकृष्ण अडवानी अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी की भेंटवार्ता प्रकाशित हुयी है। जिसमें उन्होंने कहा है कि "मैं शास्त्रों से सिद्ध कर सकता हूं कि राम और कृष्ण मांस खाते थे।" उस भेंट में आपने यह भी कहा है कि "मैं मांस नहीं खाता॥"

अडवानी जी मांस नहीं खाते यह तो अच्छी बात है, हमें इससे कोई आपत्ति नहीं अपितु इसे जानकर प्रसन्नता ही हुई है। आपत्ति तो उनके राम और कृष्ण के विषय में कहे गए शब्दों पर है। वह जब और जहां चाहें, हम उनसे इस विषय पर सार्वजनिक रूप से विचार-विनिमय के लिए तैयार हैं। यदि वह इस कार्य के लिए कोई उपयुक्त व्यवस्था न कर सकें तो हमें सूचित कर दें। हम स्वयं इस की व्यवस्था करा लेंगे। समय भी हमें श्री लालकृष्ण जी अडवानी की सुविधानुसार ही स्वीकार होगा क्योंकि हमें सत्यासत्य का विचार कर सत्य मत की खोज और स्थापना करनी है।

हमें इस विषय में इसलिए लेखनी उठानी पड़ी क्योंकि अडवानी जी उस अखिल भारतीय दल के अध्यक्ष हैं, जो भारतीय संस्कृति का पोषक है। हमारी जानकारी के अनुसार व्यक्तियों के जीवन से सम्बद्ध विषय इतिहास का होता है, शास्त्र का नहीं। अन्त में मैं पुन: आग्रह करता हूँ कि श्री अडवानी जी इस भ्रान्ति को निकालने के लिए हमारा प्रस्ताव स्वीकार करने की कृपा कर अनुग्रहीत करें।

शुभकाम:—

—वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

श्रुति-सुधा—

वह कैसा है ?

ओम् अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन्पूर्वमर्षत्।
तद्धावतो ऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।
—यजुर्वेद ४०/४

भय - कम्पन से सदा रहित है,
मन से भी बढ़कर गतिमान।
इन्द्रियों का भोग्य नहीं है,
रूप रहित प्रभु पवन समान।
निज स्वरूप में सदा स्थिर है,
पर गतिवानों से गतिवान।
प्राणि मात्र का धारक है वह,
पावे जीव कर्म नित ज्ञान॥

हमें बन्धनों से छुड़ाओ !

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद् अवाधमं विमध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥
अथर्ववेद ७.८३.६

सूर्य समान भास्वर प्रभुवर
हो वरेण्य भी सभी प्रकार।
उत्तम, मध्यम, अधम पाश जो
पापों के हम पर दुर्वार।
दैहिक, दैविक, भौतिक हैं जो
किए-हुए हमको आच्छन्न।
काट इन्हें निष्पाप बनें हम
पालें तव नियम अविच्छिन्न॥

—डा. धर्मचन्द्र विद्यालंकार 'समवित'
प्रवक्ता
सनातन धर्म महाविद्यालय पलवल (हर.)

होना चाहिए वेदप्रचार

(तर्ज—जाने वही प्रेम की सार……)

होना चाहिए वेदप्रचार, ताकि देश भलाई हो। टेक।

जब महर्षि दयानन्द आए, पाखण्ड घटा रही थी छाए
महर्षि ने किया विचार, ताकि देश भलाई हो।१।

कुम्भ पर पाखण्ड खण्डनी गाड़, सारे ढोंगी दिए पछाड़
हो रही ऋषि की जय जयकार, ताकि देश भलाई हो।२।

लिख कर सत्यार्थप्रकाश, खोया अन्धकार अन्धविश्वास
ऐसा कर दिखाया चमत्कार, ताकि देश भलाई हो।३।

स्थापित कर दिया आर्यसमाज, वेदप्रचार करे जो आज
करना संसार परउपकार, ताकि देश भलाई हो।४।

ईश्वर जीव और प्रकृति, किसकी कितनी है शक्ति
पढो वेद ज्ञान भण्डार, ताकि देश भलाई हो।५।

निराकार ईश्वर को भूल, जड को पूजें नामाकूल
वेद हटावे सब अन्धकार, ताकि देश भलाई हो।६।

पाखण्डियों का देखो हाल, कावड लावें पैदल चाल
इन सबको दियो फटकार, ताकि देश भलाई हो।७।

पाखण्ड हैं बढते जाते, मूर्ख फिरें धक्के खाते
करो इन सबका ही उद्धार, ताकि देश भलाई हो।८।

मनुष्य को ईश्वर ने दिया ज्ञान, हिताहित को ले पहचान
करो वेदप्रचार और प्रसार, ताकि देश भलाई हो।९।

रतनसिंह कर दो कविताई, मिलकर सारे बहन भाई
गावें वैदिक धर्म मल्हार, ताकि देश भलाई हो।१०।

—रतनसिंह सभा भजनोपदेशक

हम (वैदिक प्रचारक) कौन हैं ?

कोई क्या पूछे हम कौन हैं और क्या सन्देश सुनाने वाले हैं।
हम तो प्रहरी दुनिया भर के और सबको जगाने वाले हैं॥

हम नहीं बल्कि तुम हम सब तो हैं आर्य भाई।
न कोई हम में हिन्दू मुस्लिम न कोई सिख ईसाई।
एक पिता के पुत्र हम सारे, एक हमारी माई।
एक धर्म है हम सबका हम वेदों के अनुयायी।
विश्व के हर कोने में वैदिक ज्योत जलाने वाले हैं।१।
हम उनके अनुयायी जिनको सबके द्वारा सताया गया
जिन्दा जला दिया आग में किसी को बर्फ में गलाया गया
दलदल में दिया फेंक किसी को किसी को जल में बहाया गया
फांसी छुरे, गोली खाई किसी को जहर पिलाया गया
ऐसे धर्म वीरों का हम कर्जा चुकाने वाले हैं।२।
अछूत नीच कहें जिन्हें उन्हें हमने अपना बनाया
नारी को जो देख थे नीचा उनको नीचा दिखाया
कीचड में जो पड़ हुए थे उनको शुद्ध बनाया
कितनों को दिया जीवन दान बेराहों को राह दिखाया
दीन दु:खी बेसहारों को हम गले लगाने वाले हैं।३।
नर नारी रहें सुखी दुनिया के हम तो यही चाहते हैं।
विश्व का हर बच्चा हो शिक्षित अज्ञान मिटाना चाहते हैं।
अन्न, धन के भण्डार भरें हों अभाव मिटाना चाहते हैं।
अत्याचार ना हों कहीं भी अन्याय मिटाना चाहते हैं।
देश, धर्म, जाति पर 'बलवन्त' शीश कटाने वाले हैं।४।

—बलवन्तसिंह आर्य, ठसका (अम्बाला)

वेदमाता और श्रावणी-पर्व का सम्बन्ध

—डा० धर्मचन्द विद्यालंकार 'समन्वित'

ओम् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयु प्राणं प्रजां पशु'-कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मध्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

उपरोक्त वेद-मन्त्र हमें रह-रह कर वेद के स्वाध्याय के लिए अनुप्राणित कर रहा है। इस मन्त्र का सारांश है कि 'विद्वानों को पवित्र करने वाली वेदमाता का नित्यप्रति स्वाध्याय करके जो उसका स्तवन करना है वेदरूपी यह ममतामयी मां उसे प्रसन्न हो कर के सात दिव्य वरदान देती है—दीर्घ स्वस्थ जीवन, प्राण शक्ति का अभिनव संचार, सुसन्तान, यश, द्रव्य धनधान्य और ब्रह्मज्ञान। इन सबको पाकर जीव अमरता और पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। लेकिन एक बात का विशेष ध्यान यह रहे कि वेदमाता के सुस्वाध्याय और सदाचरण से जहां ये उत्तम वरदान मिलते हैं, वहीं वेदरूपी कल्याणी वाणी मानव के उद्धार के लिए अन्त में इनके त्याग की भी पावन प्रेरणा देती है। क्योंकि एक सीमा पर पहुंचकर ये सब साधक भी बाधक बन जाते हैं। सारे ऐहिक ऐश्वर्य भोग-विलास के साधन जहां पर मानव मात्र की जीवन यात्रा के साधक हैं: मोक्ष के मार्ग में जाकर वहीं बाधक भी बन जाते हैं, अतएव त्याज्य हैं।

साधक क्यों ?

जिन सात वरदानों की प्राप्ति की वेदानुकूल विचार और आचरण से प्राप्ति की बात ऊपर की गई है, उनमें सर्वप्रथमतः आयु है। आयु का अर्थ जीवन है। जब मानव के पास आयु ही नहीं होगी तो इस विश्व का ही अर्थ और अस्तित्व शून्य है। इसलिए दुनिया में यदि सबसे बड़ा दिव्य वरदान या आशीर्वाद अथवा उपहार है तो वह जीवन का है। जीवन का अर्थ स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन से है। वह वेदानुकूल आचरण से प्राप्त होता है। वैदिक विद्वान दामोदर पाद सातवलेकर का उदाहरण हमारे सम्मुख है। उन्होंने जब यह मन्त्र पढ़ा और समझा कि वेद के स्वाध्याय और तदनुसार आचरण से सुदीर्घ जीवन मिलता है, तो उन्होंने नित्यप्रति वैदिक साहित्य का सुस्वाध्याय किया और १०८ वर्ष की लम्बी आयु भोगी।

दूसरी चीज प्राण है। प्राण का अर्थ जीवनी ऊर्जा से है। जिस मानव में यह शक्ति जितनी अधिक मात्रा में होती है, वह मानव उतना ही प्राणवान्, साहसी और सकल्प का स्वामी होता है। उसकी इच्छाशक्ति अजेय होती है। ऐसे व्यक्ति ही सदाचार द्वारा जीवनी-शक्ति पाकर महानतम सिद्ध होते हैं।

प्रजा: तीसरी बात प्रजा, सन्तान प्राप्ति की है। हम अपनी सन्तानों को वेदों का स्वाध्याय कराके और उसके अनुकूल आचरण कराकर उन्हें सुसभ्य मानव बना सकते हैं। वेद में कहा गया है कि भाई भाई से प्रेमपूर्ण वर्ताव करे, बहन बहन से द्वेष न करे, पति पत्नी के अनुरूप आचरण करे, मां अपनी सन्तान को नवजात बछड़े को जैसे स्नेह करती है वैसे ही प्रेम करे। अनुव्रत पितु पित्रो, माता भवतु संमना—पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, मां का भी भक्त हो। जहां पर ऐसी उत्तम शिक्षा होगी, वहां पर सन्तान कैसे सुसंस्कृत नहीं बनेगी। अतएव वेद का स्वाध्याय मानव निर्माता भी है।

अगला चौथा वरदान पशु'-कीर्ति और द्रविणम् बताए हैं। वेदानुकूल आचरण से ईमानदारी से अर्थोपार्जन की पुनीत प्रेरणा मिलती है। पवित्र अर्थ ही सब सांसारिक कामनाओं का सुसाधक होता है। अधर्म (बेईमानी) से अर्जित अर्थ तो बाधक ही होता है। अन्तिम वरदान ब्रह्मवर्चस को बतलाया गया है। ब्रह्मवर्चस का अर्थ ब्रह्म-तेज और आध्यात्मिक ज्ञान है। इससे ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतएव गायत्री के गुरुमन्त्र में भी- 'वरणीय भर्ग' की प्राप्ति की कामना की गई है। वेद कहता है—'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति' अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग, कैवल्य - जोकि मानव की पूर्णता का प्रतीक और परमपुरुषार्थ है, प्राप्त होता है। लेकिन यह अन्ततः उपरोक्त वरदानों के त्याग से ही सम्भव है।

श्रावणी उपाकर्म :

ग्रीष्म के असह्य उत्ताप के उपरान्त वर्षा का सुखद सुकाल आता है। इसमें देव दिवाकर की तापकारी किरण-निकर को सावन के नव जलधर की घनी मेघ मालाएं आच्छादित कर देती हैं। मन्द-मन्द फुहार रह-रह कर बरसती रहती हैं। मानव का तन-मन तृप्त हो जाता है। मन शान्त होकर धार्मिक कृत्यों की ओर उन्मुख होता है। एक लोक धारणा इस श्रावणी-उपाकर्म से यह जुड़ी हुई है कि इस दिन से देव सो जाते हैं। अतएव शादी-विवाहादि के लौकिक कर्म इस काल में त्याज्य होते हैं। इसका कारण यह है कि पुराने जमाने में वर्षा अच्छी होने से आवागमन-यातायात के सारे मार्ग अवरुद्ध हो जाते थे, क्योंकि तब रास्ते कच्चे होते थे। उनमें पानी भर जाने के कारण युद्ध और व्यापार दोनों ही लगभग अवरुद्ध हो जाते थे। तब राजा और श्रेष्ठि लोग अपने यहां पर चार माह तक चातुर्मास-यज्ञों का आयोजन करते थे, जिनमें सारे विद्वान्, पण्डित और पुरोहित समारोह पूर्वक भाग लिया करते थे। इसका प्रबल प्रमाण यह है कि यज्ञ का एक पर्यायवाचक शब्द सत्र भी है, जिस प्रकार आजकल हमारी संसदों और विधानसभाओं के शरद-कालीन और वर्षाकालीन सत्र होते है, उसी प्रकार से उस समय राजा महाराजाओं के यहां पर यज्ञीय सत्र अथवा 'ज्ञान-यज्ञ' चलते थे, जिनमें ज्ञान की गहन गुत्थियों को पारस्परिक संवादों और शास्त्रार्थों के माध्यम से सुलझाए जाते थे। महाराज जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के शास्त्रार्थ, जनक और अष्टावक्र के सवाद हमारे कथन के जीवन्त प्रमाण हैं। विद्वानों को ही उस जमाने में देव कहा जाता था। उनके यज्ञीय कार्यों में व्यस्त होने के कारण विवाहादि के लौकिक कर्म इस काल में वर्जित थे। अन्यथा देव कभी सोते नहीं हैं। वे तो निद्राजित् आलस्य प्रमाद रहित होकर अपने अध्ययन, मनन और लेखन के काय में व्यस्त रहते हैं।

दूसरा एक मुख्य कारण श्रावणी पर्व के महनीय महत्त्व का यह भी है कि वर्षाकाल के इसी दिन से (श्रावण की पूर्णिमा को) ऋषि-आश्रमों और गुरुकुलों में नवीन विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता था। आजकल भी इन्हीं दिनों में कालेजों में प्रवेश चलते हैं। लेकिन उस समय के प्रवेश-पर्व का अपना ही महत्त्व था। ब्रह्मचारी विद्यार्थी समित्पाणि (समिधा हाथ में लेकर) गुरु के सम्मुख अपने को नूतन निर्माण के लिए प्रस्तुत करता था। इसीलिए गुरुकुल में शिक्षित विद्यार्थी को ही द्विज (दो जन्मों वाला) कहा जाता था। वहां पर उसका यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न होता था। तदोपरान्त वेदों के पठन-पाठन की प्रक्रिया अनवरत रूपेण चलती थी।

श्रावणी-पर्व का वर्तमान स्वरूप :

पौराणिक और मध्यकालीन युग में आकर श्रावणी पर्व को एक ऐतिहासिक वृत से जोड़ दिया गया। जैसे कि होली के शस्येष्टि यज्ञ को प्रह्लाद और हिरण्यकशिपु के भक्ति भावापन्न कथानक रूपक से व्यक्त किया गया। क्योंकि ऐसे रूपक या आद्य-बिम्ब अथवा इतिवृत्त सामान्य जन द्वारा सहज रूप से ग्राह्य होते है। अतएव श्रावणी पर्व के साथ ही पौराणिक कहानी यह जोड़ दी गई कि एक बार

(शेष पृष्ठ १० पर)

श्रावणी उपाक्रम

—वेदप्रकाश साधक, दयानन्दमठ रोहतक

श्रावणी भारत के प्रसिद्ध त्यौहारों में से एक महान् पर्व है और श्रावण की पूर्णिमा को देश भर में मनाया जाता है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्ययन और अध्यापन से है। वेद का स्वाध्याय भारत की संस्कृति का प्रधान अंग रहा है क्योंकि वैदिक संस्कृति धर्म के तीन स्कन्धों पर आधारित है।

"त्रयो धर्म स्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति"

आर्यों के पर्वों में यज्ञ, अध्ययन और दान का विशेष रूप से सम्मिलन किया है जो मानव के हृदय को आनन्द से पूरित कर देता है।

वर्षा काल में किसान वर्ग बिजाई जुताई से निवृत हो जाता था। मण्डियों में अनाज न आने के कारण व्यापारी लोग भी लगभग व्यस्त कम होते थे। रास्ते बन्द होने के कारण क्षत्रिय भी विजय के लिए नहीं चलते थे। साधु संन्यासी वर्षा के कारण पहाडों को छोड कर शहरों में जाते थे। इसलिए सारी जनता वेद प्रवचन सुनने में अपना समय व्यतीत करती थी। इसी दिन वेद अध्ययन और पारायण करने का उपाकर्म अर्थात आरम्भ किया जाता था। इसलिए इस पर्व को श्रावणी उपाकर्म कहा जाता है। ऋषियों का आदर सम्मान करके उनको तृप्त किया जाता था। अतः इस पर्व का नाम ऋषि तर्पण भी है।

वैदिक संस्कृति में यज्ञ के अतिरिक्त स्वाध्याय का महत्त्व इस लिए है क्योंकि यह समझा गया है कि मनुष्य केवल शरीर नहीं। मनुष्य की रचना में शरीर, मन और आत्मा इन तीनों का सम्मिलन है। जैसे शरीर के लिए अन्न की आवश्यकता है वैसे मन तथा आत्मा के स्वास्थ्य हेतु चिन्तन और मनन की आवश्यता है। इस का उपाय सिवाय स्वाध्याय के दूसरा नहीं है। मनु के अनुसार स्वाध्याय से ऋषियों को, होम से देवों को, श्रद्धा से पितरों को, अन्न से अतिथियों को, बलि कर्म से प्राणियों की यथाविधि पूजा करे। इन कर्त्तव्यों का बोध, स्मरण कराने के लिए यज्ञोपवीत जो ब्रह्म-चिह्न है, ज्ञान ग्रहण करने का प्रतीक है, मनुष्य मात्र को दिया जाता था और संकल्प कराया जाता था कि मैं अज्ञानान्धकार की निवृति के लिए वेद का पारायण करूंगा। इसीलिए पुराना उतार कर नया यज्ञोपवीत बदला जाता था।

वेद पारायण को दृष्टि में रखकर चारों मास गांव गांव शहर-शहर में ज्ञान गंगा का प्रवाह चलता था। सब जगह वेदों की ध्वनि गूंजती थी। सारा वातावरण आध्यात्मिकता के रंग से रंगा होता था। ऐसा वातावरण उत्पन्न होने पर केकेय देश के राजा अश्वपति ने घोषणा कर दी थी—मेरे राज्य में न कोई चोर है न शराब पीने वाला है और न कोई व्यभिचारी है। परन्तु कालान्तर में यह प्रथा लोप हो गई। पौराणिककाल आया, लोगों ने यज्ञ और वेद के स्वाध्याय को छोड़कर सर्पों की बलि देना शुरु कर दिया। स्त्रियां भित्तियों पर श्रावण की मूर्ति गेरू से बनाकर उसको सेवियों से जिमाने लगी। इस अज्ञानपूर्वक प्रथा ने मानव को पतित अवस्था में लाकर खड़ा कर दिया।

राजपूती काल में अबलाओं द्वारा अपनी रक्षा के लिए वीरों को राखी बांधने की प्रथा चली। चित्तौड़ की महारानी कर्मवती ने अपनी रक्षा के लिए बादशाह हुमायूं को राखी बांध भाई बनाया। आजकल भी इस प्रथानुसार बहनें भाइयों को, पुत्री पिता को राखी बांधती हैं और वस्त्र और द्रव्य पाती हैं। इसलिए इस पर्व को रक्षा बन्धन भी कहते हैं।

पब्लिक स्कूल

यह पब्लिक स्कूल है
पब्लिक का तो नाम काम तो पूंजीपति का मूल है ॥१॥
प्रबन्धकारिणी समिति नहीं है पूरा मैनिजमैण्ट है
धोती कुर्ता और पाजामा नहीं शर्ट पर पैण्ट है
साधु सन्त का नाम मिटाया यहां सैण्ट परसैण्ट है
यहां न गंगा जमुना धारा टेम्स नदी का कुल है ॥२॥
हिन्दी संस्कृत या मातृभाषा का काम नहीं है
अपनी संस्कृति और सभ्यता का भी नाम नही है
नम्र नमस्ते, नमस्कार या प्यार प्रणाम नहीं है
गुड-मार्निंग, लव वेस्टर्न-कलचर के अनुकूल है ॥३॥
शिखा सूत्र का सफाचट्ट है, गले लटकती टाई
यहां गुरु जी के सर में तो सर ने लात जमाई
मम्मी, सिस्टर, डैडी, मेडम और आंटी छाई
माता, बापू, बहन श्रीमती, चाची ऊल-जलूल है ॥४॥
अन्तः स्थल में घुसा हुआ है, वही लार्ड मैकाले
काली चमड़ी वालों को जो अंग्रेजी मे ढाले
सन्ध्या, पूजा-पाठ, हवन में प्रीति न रखने वाले
अंग्रेजी गायन मे प्रेयर करना ही अनुकूल है ॥५॥
यहां विटामिन अण्डे में या आमलेट में लेटा
दूध, दही, सब्जी का खाना काम बड़ा है हेटा
केक ब्रेड बिसकुट डबल में होवे बटर लपेटा
ब्रेक फास्ट या डिनर खड़े हो खाना ही माकूल है ॥६॥
वेदव्यास तज महाभारत को रीडर बाच रहे हैं
दयानन्द के नाम काम पर नगे नाच रहे हैं
रोल्ड गोल्ड को सचमुच सोना कह कर बेच रहे है
'विश्वमार्यम् कृण्वन्तः' का आशा के प्रतिकूल है ॥७॥
रत्न-राशि में खेल सिंह की गर्जन भी है, ढीली—
विजयपाल ने द्वारपाल की भगभूल से पीला
यहां डाक्टर ने रोगी की स्वयं दवाई पीली
कुए में हो भंग पड़ी तो किसको चुभता शूल है ॥८॥
होली का हुदरंग कर रहे हम तो आज ठिठोली
दयानन्द की दिव्य दिशा को मिलकर मारो गोली
मस्त मौज की छान शान से सभी मनाओ होली
'प्रणव' आज ही करना करलो कल पर डाली धूल है ॥९॥

—'प्रणव' शास्त्री एम०ए० शास्त्रीसदन,
रामनगर कटरा, आगरा-६.

वेदाऽमृत का पान कराया

ऋषियों का यह देश हमारा, पावन परम यहां की माटी।
अनुगामी होना वेदों का, यही यहां की परिपाटी।
आदि काल में इसी सृष्टि के, दिया ईश ने अनुपम ज्ञान।
अग्नि - वायु - आदित्य - अंगिरा, हुए प्रथमतम ज्योतिर्मान।

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक, ऋषियों ने कर वेद प्रचार।
भू के हरे भरे उपवन में, रहे खिलाते मृदु अभिसार।
रही व्यवस्था वेद–धर्म की, युद्ध महाभारत के पहले।
उसके बाद धरणि के वासी, वेदों का पथ छोड़ चले।

विगत सदी में एक महाऋषि, पुनः पधारा भारत भू पर।
अपौरुषेय वेदों के ज्योतित, पथ पर स्वयं अभय चलकर।
'सत्य सनातन धर्म वेद का' है उसने उद्घोष किया।
परमेश्वर की वाणी शुचितम, का ऋषि ने जयघोष किया।

वेदोद्धारक वह महर्षि था, ऋषिवर दयानन्द संन्यासी।
वेदों के पावन प्रचार का, ही वह सदा रहा अभिलाषी।

ईश्वरोक्त हैं चतुर्वेद ही, स्वामी जी ने हमें बताया।
वेदों का कर भाष्य स्वभाषा, भ्रांति अनेकानेक मिटाया।
फैले वेदों का प्रकाश फिर, एक यही थी उसकी इच्छा।
अनुगामी हों हम वेदों के, यही दयानन्द ने दी शिक्षा।

किया अहर्निश वेद ज्ञान का, उसने दिव्य प्रचार निरन्तर।
लगी गूंजने महिमण्डल में, वेद ऋचाएं स्वर्गिक सत्वर।
अनुपमेय था वह व्यक्तित्व, दिव्य समग्र रहा कर्तृत्व।
बड़े–बड़े विद्वान् पराजित हुए, तुम्हारा सुन वक्तृत्व।
मानव की सम्पूर्ण प्रगति हित, किया अलौकिक अनुसन्धान।
दयानन्द ऋषिराज महान्।

दिव्य दिया 'सत्यार्थप्रकाश', जाग्रत हुई जनः मन आश,
तूफानों से टकराये तुम, हुए नहीं तनिक निराश।
आर्यसमाज किया स्थापित जिससे हो जग का कल्याण।
दयानन्द ऋषिराज महान्।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न. १३२०७/७३ रजि. न. ६६,०८,५३,०६०

ओ३म् ... सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए. श्रावण ३०, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३४ ७ अगस्त १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं से निवेदन

पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर भिजवावें

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर १९९० तक शराबबन्दी प्रस्ताव करवा कर प्रस्ताव की प्रतियां रजिस्ट्री पावती द्वारा हरयाणा सरकार को भिजवाने का यत्न करें। हरयाणा के कानून के अनुसार जिन पचायतों के शराबबन्दी प्रस्ताव ३० सितम्बर तक सरकार को प्राप्त हो जावेंगे, उन ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जावेगी। सुविधा के लिए प्रस्तावों के प्रारूप प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह, सभाप्रधान

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैरकानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें।

सेवा में

माननीय-मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....
में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेन्ट गैरकानूनी ढंग से खुल्लमखुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीने वाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अतः हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाए और जो गैरकानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

प्रतिलिपि सेवा में

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला.........
५. जिलाधीश ....
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

दिनांक ....   ह० सरपंच तथा पंच ग्राम पंचायत

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा

चण्डीगढ

हमारे ग्राम .... जिला ....
पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे तथा भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक ....—

प्रतिलिपि सेवा में [पहले प्रारूप के अनुसार]

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

नोट—इन प्रस्तावों के प्रारूप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक से भी मिल सकते हैं। अतः पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क करें।

आजादी किसको है

आज हमारे देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी बोलने तथा लिखने वाले करोड़ों हैं। अंग्रेजी बोलने वाले केवल दो प्रतिशत है। तब भी सर्वत्र अंग्रेजी का बोलबाला है। अंग्रेज चले गए पर अंग्रेजी छोड़ गए। आज बाहर से भारतीय तथा अन्दर से अंग्रेजी दिमाग वाले काले अंग्रेज उन्हीं नीतियों के आधार पर ९८ प्रतिशत को अछूत तथा दो प्रतिशत को संप्रभुत्तासम्पन्न समझ कर ४३ वर्ष से देश पर शासन करते रहे हैं और महाप्रभु बन बैठे हैं। अब ९८ प्रतिशत हिन्दी-भाषियों के प्रतिनिधि चौ० देवीलाल जी उप-प्रधानमन्त्री भारत सरकार तथा उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह जी यादव व

(शेष पृष्ठ ४ पर)

संस्कृत साहित्य में नैतिकता

आचार्य दयानन्द शास्त्री एम. ए., हिसार

(गतांक से आगे)

यथा—

"मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।"
"जाया पत्ये मधुमति वाचं वदतु शान्ति वाम्।"

भाई-भाई से द्वेष न करे और बहिन-बहिन से। पत्नी पति के लिए मधुभरी शान्तियुक्त वाणी बोले-आदि नतिकता का सन्देश संस्कृत साहित्य की उत्कृष्ट देन है।

महर्षि मनु का यह उपदेश भी हमारे लिये आदेश रहा है कि—

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति॥

इसमें कहा गया है कि पराई स्त्री को माता के समान समझो, पराया धन हमारे लिए मिट्टी के ढेले के समान हो और सभी प्राणियों में अपने जैसा ही जीवात्मा समझो। अहा! कितना मार्मिक उपदेश है? कितनी पवित्र नैतिकता है?

रघुवंश में महाकवि कालिदास ने राजा और प्रजा की नैतिकता के सम्बन्ध में लिखा है—

प्रजानां विनयाधानात् रक्षणात् भरणादपि।
सः पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥

अर्थात् सच्चे अर्थों में रघु अपनी प्रजा का पिता (रक्षक) था, दूसरे पिता तो केवल जन्म के ही कारण थे।

करों के सम्बन्ध में भी तत्कालीन राज्यव्यवस्था का वर्णन करते हुए महाभारत में लिखा है—

आदाय बलिषड्भाग यो राष्ट्रं नाभिरक्षति।
प्रतिगृह्णाति तत्पापं चतुर्थेन भूमिपः॥

अर्थात् छठा हिस्सा कर लेकर भी जो राजा राष्ट्र की रक्षा नहीं करता वह प्रजा के पाप के चौथे हिस्से का भागी होता है। मुगल शासकों तक ऐसे उदाहरण आते हैं जब राजा अपना निर्वाह-व्यय स्वयं निकालते थे और प्रजा का कर प्रजाहित में ही व्यय करते थे। संस्कृत साहित्य में नैतिकता के सन्दर्भ में राजा शब्द की व्याख्या की है—"राजा प्रकृतिरञ्जनात्" अर्थात् प्रजा को सन्तुष्ट करने वाला ही व्यक्ति राजा हो सकता था। राज्य संचालन के लिए योग्यता और क्षमता दोनों ही सम्पादन की जाती थी। राजकुमारों को नीतिशास्त्र की शिक्षा के लिए वशिष्ट, व्यास, चाणक्य और विष्णु शर्मा जैसे पण्डित नियत होते थे। प्राचीन राजा न कभी अपक्व अवस्था में और न कभी वृद्धावस्था मे गद्दियो से चिपके रहते थे—

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवनेविषयैषीणाम्। वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥

यह है सस्कृत साहित्य की नैतिकता जिसमें अन्य नौकरियों में रिटायरमेण्ट की भांति राजनैतिक नेताओं की भी आयु निर्धारित होती थी।

सादा जीवन और उच्च विचार का साक्षात् प्रतिनिधि, महाराजा चन्द्रगुप्त का प्रधानमन्त्री-चाणक्य, जिनके बारे में नीतिशास्त्र का विद्वान् कामन्दक लिखता है—

वंशे विशालवंशानामृषीणामिव भूयसाम्।
अप्रतिग्राहकाणां यो बभूव भुवि विश्रुतः॥

उक्त वंशपरम्परा के ब्राह्मणकुल उत्पन्न चाणक्य का वर्णन करते हुए विशाखदत्त कवि ने 'मुद्राराक्षस' नाटक में लिखा है—

उपलशकलमेतद् भेदकं गोमयानां,
वटुभिराहृतानां बर्हिषा स्तोम एषः।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभिः,
विनमित पटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम्॥

अर्थात् मौर्य साम्राज्य के प्रधानमन्त्री, भारत के महान् राजनीतिज्ञ, दूरदर्शी शासक चाणक्य का ऐसा ठाठदार बंगला था कि जिसका छप्पर यज्ञीय समिधाओं के भार से बीच से कुछ झुका हुआ था, कहीं उपले तोड़ने के पत्थर के टुकड़े पड़े थे। इस प्रकार वह अपनी सादगी से अपने भीतर रहने वाली महान् विभूति का परिचय देता था जिसमें विचारों की उच्चता झांकती थी।

गृहस्थाश्रम के नैतिक मूल्यों के सम्बन्ध में संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास ने "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" नाटक में लिखा है कि महर्षि कण्व के आश्रम से जब शकुन्तला अपने पतिगृह (राजा दुष्यन्त के घर) जाने लगी तब—जबकि आंखों में आंसू भरकर प्रायः लड़कियां पूछती ही हैं, बोली—पिता जी! अब मुझे कब बुलाओगे? पर वाह रे भारतीय आदर्श, महर्षि कण्व उत्तर देते हैं—

भूत्वा चिराय सदिगन्तमहीसपत्नी,
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं प्रसूय।
तत्सन्निवेशितधुरेण सहैव भर्त्रा,
शान्त्यै करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्॥

अर्थात् शकुन्तले! राजमहिषी बनकर जब कुछ काल पर्यन्त तू राज्यसुख का पूर्ण उपभोग कर चुकेगी और अद्भुत पराक्रमी दुष्यन्त-पुत्र को राज्यभार सौंप चुकेगी तब न केवल तू अकेली अपितु दुष्यन्त और तुम दोनों वानप्रस्थी का जीवन मालिनी के तट पर मेरे इस आश्रम में आकर बिताना।

इन्हीं नैतिक गुणों के कारण उन राज्यों में रहने वाली प्रजा राजा के मुख पर ही नही, परोक्ष में भी बैठकर उनका स्तुति गान किया करती थी। कालिदास ने रघु के लिए लिखा है—

"इक्षुच्छायानिषादिन्यः शालिगोप्त्यो जगुर्यशः"

अर्थात् महाप्रतापी रघु सम्राट का राज्य प्रजा के लिए इतना शान्तिदायक था जिससे धानों की रखवाली करने वाली ग्रामीण कन्यायें ईख की छाया में बैठकर भी उसका यशोगान करते हुए दिन व्यतीत करती थीं।

नैतिकता की आवश्यकता अनुभव करते हुए गीता में श्रीकृष्ण भगवान् ने लिखा है—'कर्मण्येवाधिकारस्ते' अर्थात् कर्त्तव्य पालन धर्म है। स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं—"जिस गली या मुहल्ले में तुम रहते हो, यदि वहां की गलियां दुर्गन्धी से युक्त हैं, मच्छर सड़ते हैं, गरीबी, शोषण, अत्याचार, अन्याय, अज्ञान से लोग दुःखी हैं, तुम उस दूषित वातावरण को यदि स्वस्थ वातावरण में बदलने का प्रयास नहीं करते हो तो कदापि तुम धर्मात्मा नहीं हो। यदि तुम्हारी सन्ध्या ने, तुम्हारी नमाज ने, तुम्हारी मन्दिर की आरती ने, घण्टे-घड़ियाल ने, तुम्हारे कीर्तन, तुम्हारी अर्दास ने तुम्हें उस अवस्था परिवर्तन के लिए विवश नहीं किया तो तुम धर्म को लेशमात्र भी नहीं जानते।" यहां धर्म की कितनी स्पष्ट परिभाषा की है। यही तो व्याख्या है नैतिकता की।

संस्कृत साहित्य बड़ा विस्तृत साहित्य है। उपनिषदों में तो बहुत उच्चकोटि की नैतिकता निहित है। औरंगजेब के बड़े भाई दाराशिकोह ने उपनिषदों की नैतिकता से प्रभावित होकर सस्कृत पढ़ी और सैकड़ों उपनिषदों का सस्कृत से अरबी-फारसी भाषा में अनुवाद करके मानवमात्र का कल्याण किया।

संसार के प्रत्येक राष्ट्र में यज्ञ हवन जैसे कर्मकाण्ड को बड़ी ख्याति है। ये यज्ञ केवल भौतिक अग्नि में स्वाहा बोल कर घी-सामग्री की आहुति देने तक सीमित नहीं हैं। वस्तुतः इनका मूल भी उच्च कोटि की नैतिकता ही है। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ,

(शेष पृष्ठ ७ पर)

नई दिल्ली में शतपथब्राह्मणभाष्य लोकार्पण समारोह सम्पन्न

दिनांक १ अगस्त १९९० को मावलंकर हाल नई दिल्ली में वेद-विद्या विशारद पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती) विरचित शतपथब्राह्मणभाष्य का लोकार्पण समारोह महामहिम उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, वेदविद्यालय गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल कांगडी हरिद्वार, गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल नरेला आदि आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी तथा छात्र छात्राओं के अतिरिक्त हरयाणा, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के आर्यसमाजों के अधिकारी तथा कार्यकर्ता हजारों की संख्या में उपस्थित थे।

कार्यवाही आरम्भ होने से पूर्व स्वर्गीय पं० बुद्धदेव विद्यालंकार के एक महत्वपूर्ण भाषण का टेप श्रोताओं को सुनाया गया जिससे पण्डित जी की ओजस्वी वाणी का स्मरण करके सभी आनन्दित हो गए। इसके पश्चात् गान्धर्व महाविद्यालय नई दिल्ली की छात्राओं ने ईशवन्दना एवं वैदिक गीत सुनाया। मंच का संचालन डा० धर्मपाल प्रधान दिल्ली सभा ने बहुत प्रभावशाली ढंग से किया। स्वामी समर्पणानन्द जी के प्रमुख शिष्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने समर्पणानन्द शोध संस्थान का परिचय कराते हुए कहा कि पं० बुद्धदेव विद्यालंकार द्वारा लिखित पुस्तकों का प्रकाशन तथा अन्य वैदिक पुस्तकों का भाष्य करवा कर शोध करना है। दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० वाचस्पति उपाध्याय ने पण्डित बुद्धदेव विद्यालंकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। पण्डित जी की सुपुत्री प्रभात शोभा विद्यालंकृता ने अपने पिता जी की महिमा का गुणगान करते हुए उन्हें महान् प्रतिभा का स्वामी तथा वैदिक विद्वान् बताया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पण्डित जी के संस्मरण सुनाते हुए आर्यसमाज द्वारा चलाए गए सभी आन्दोलनों का प्रभावशाली नेता बताया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी ने पण्डित बुद्धदेव जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उन्होंने शतपथब्राह्मण जैसे अमूल्य ग्रन्थों का भाष्य करना इस उद्देश्य से आरम्भ किया था कि वेदों की विद्या को वैज्ञानिकों तक पहुँचा कर वेद का प्रचार सरल किया जावे। उनकी मान्यता थी कि वेदज्ञान मानव को मानव तथा पाश्चात्य ज्ञान मानव को हैवान बनाता है। शतपथब्राह्मण आदि ग्रन्थ वेदों की कुंजी हैं। अतः उन्होंने इस ग्रन्थ पर सर्वाधिक समय लगाया।

उपराष्ट्रपति महामहिम डा० शंकरदयाल शर्मा ने इस ग्रन्थ के भाष्य का लोकार्पण करते हुए सर्वप्रथम आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द को भारत की आजादी आन्दोलन का प्रमुख नेता बताया और कहा कि उन्होंने वेदज्ञान दिखाकर आजादी का मार्ग प्रशस्त किया। संस्कृत के महत्व पर बल देते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि संसार भर के सभी वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है कि कम्प्यूटर के लिए सब भाषाओं में संस्कृत भाषा उपयुक्त है। उन्होंने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि आज विदेशों में संस्कृत के अध्ययन के लिए लोग लालायित हैं, परन्तु ऋषियों के देश भारत में संस्कृत की पढ़ाई की उपेक्षा की जा रही है। छात्रों को वेदज्ञान के लिए संस्कृत पढ़कर आगे बढ़ने का समय आ गया है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने अन्त में पं० बुद्धदेव विद्यालंकार को उनके जन्मदिन १ अगस्त को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि आज के दिन वेदों के महान् विद्वान् तथा प्रचारक ने जन्म लेकर सार्थक बना दिया। उन्होंने अपना सारा जीवन वेद प्रचारार्थ समर्पित कर दिया।

—केदारसिंह आर्य

पन्द्रह अगस्त की रात

एक ऐसी रात आई
सोये थे तो दासता की बेड़ी पैरों में पड़ी थी
जागे तो आजादी सम्मुख घर के आंगन में खड़ी थी
क्या अचम्भे की घड़ी थी
दे रहे थे सब बधाई
एक ऐसी रात आई

सो रहे थे सूरमा, प्राणों को धरती पर बिछा कर
सन् सतावन से प्रतीक्षा के बरस नब्बे बिता कर
इक झलक बाकी दिखा कर
फिर भी आजादी न पाई
एक ऐसी रात आई

सूली चढ़ना था अमर फल, फांसी संजीवनी जड़ी थी
नाचते थे दिल, लगी कौमी तरानों की झड़ी थी
आंख मृत्यु से लड़ी थी
कुछ न देता था दिखाई
एक ऐसी रात आई

जिन्दगी उन ही की है, अपने वतन पर मर गए जो
जुल्म का प्याला शहादत के लहू से भर गए जो
नाम जग में कर गए वो
जिन की हठ, भूनभ पे छाई
एक ऐसी रात आई

नेता थे शासक नहीं थे, मात खाई वीरता ने
खेल खेला हौंसलों ने, छल किया गम्भीरता ने
लक्ष्य रौंदा धीरता ने
कट गया भाई से भाई
एक ऐसी रात आई

क्या पता था कालों को, गोरों की मन चाही हुई है
क्या खबर थी हमको, मिस इंगलिश यहीं ब्याही हुई है
हम से गुमराही हुई है
हो गई हिन्दी पराई
एक ऐसी रात आई

—कुन्दन लाल हमदर्द एम.ए. ग्राम सन्नोठ दिल्ली-४०

आजादी किसको है

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लालु प्रसाद के हिन्दी के प्रति प्रयत्न को देखकर काले अंग्रेज महाप्रभुओं की नींद हराम हो गई है तथा तिलमिला रहे हैं। क्योंकि हिन्दी राष्ट्रभाषा बनने से उन्हें कुर्सी डोलती दिखती है। अंग्रेजी के कारण इन काले अंग्रेजों ने देश को अपना गुलाम बना रखा है। ये हिन्दीभाषियों को शूद्र समझकर अपने इशारों पर नचा रहे हैं। नेतागण भी इनकी बातों में आकर अंग्रेजी के गुणगान करते रहते हैं। हिन्दी के उत्थान के लिए जो भी योजना बनी, जो सरकारी आदेश आए उनकी अवहेलना की तथा आदेश को रद्दी की टोकरी में डाल दिया। केन्द्रीय ३९९ विभागों में से २२ में ही हिन्दी कामकाज की भाषा है। सभी मुख्य विभागों में सारा कार्य अंग्रेजी में होता है। फैसले अंग्रेजी में, परीक्षा अंग्रेजी में, हिन्दी को अंग्रेजी की दासी बना दिया है।

अंग्रेजी की अनिवार्यता के कारण हिन्दी संस्कृत के स्नातक नौकरियों से वंचित रह जाते हैं। हिन्दीभाषी युवक अधिकांशत: सेना, पुलिस, सीमा सुरक्षा बल आदि में भर्ती होकर देश-विदेश में जी-जान से भारत मां की सेवा में जुटे हैं। अपने प्राणों की आहूतियां देकर भारत का नाम ऊंचा कर रहे हैं। शेष जनता खून-पसीना बहाकर खेतों में अनाज, उद्योग धन्धों में काम करते है। जबकि इन महाप्रभुओं की सन्तान और स्वयं यह वातानुकूलित कोठी कार, फ्रिज आदि का उपभोग करते हैं। रिश्वत, भ्रष्टाचार तथा देशद्रोह फैला रहे हैं, ९८ प्रतिशत जनता के बच्चे झुग्गी-झोपड़ियों और खेतों में भूखे-प्यासे पड़े जीवन जीते हैं। वहां इनके बच्चे पांच सितारा होटलों में नाश्ते में एक साथ हजारों रु० खर्च करते हैं। अब आप ही बतायें आजादी का उपभोग कौन कर रहा। आजादी के ४३ साल बाद भी अपनी भाषा में लिखना, पढ़ना, बोलना मना हो वहां आजादी किसे मिली। हम सभी को इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना है तथा हिन्दी को अपने देश में सम्मानजनक पद दिलाना है। अंग्रेजी को हटाना है।

—महाशय बुद्धराम आर्य शिक्षा शास्त्री
गुरुकुल झज्जर, कन्होरी जिला रेवाड़ी (हर.)

शोक समाचार

ग्राम मन्दोला तह-जिला रिवाड़ी निवासी महाशय लेखराम जी का दिनाक १९-७-९० को प्रातःकाल देहान्त हो गया। वे ९६ वर्ष के थे। उन्होंने आर्यसमाज के लिए जीवनभर तन-मन-धन से सेवा की। महाशय जो वास्तव में निर्भीक, उत्साही, स्वाध्यायशील, यज्ञप्रेमी, परोपकारी और ऋषिभक्त थे। उनका जीवन सादगी से परिपूर्ण था। हमारे ग्राम पुनसीका का आर्यसमाज से अटूट सम्बन्ध रहा है। वे हर प्रकार से समाज की सहायता करते रहे हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो और शोक संतप्त परिवार को दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे।

—सत्यनारायण आर्य, मन्त्री

शराब हटाओ
देश बचाओ

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी-समारोह

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात् वैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिए समर्पित युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह दिनांक ६, ७ अक्तूबर को आर्य केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ़ के तत्त्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान वक्ता तथा गायक पधारेंगे तथा पं० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करने वाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे। इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार गोष्ठियां, कवि सम्मेलन तथा भाषण प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेंगी। अत: आपसे निवेदन है कि :—

(१) आप अपने आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था से सम्बद्ध सभी महानुभावों को इस अपूर्व समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें तथा दिवंगत विद्वान् को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए चण्डीगढ़ जैसे प्राकृतिक सुषमा सम्पन्न आधुनिक नगर में पधारें।

(२) इस विशाल एवं भव्य आयोजन को सफल करने के लिए तन, मन एवं धन से योगदान करें, विशेषत: स्वयं भी आर्थिक सहायता दें तथा अन्यों से भी दिलावें।

हरयाणा के आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि इस समारोह में तन, मन तथा धन से सहयोग करें तथा अधिक से अधिक संख्या में ६, ७ अक्तूबर को चण्डीगढ़ पहुंचें।

—प्रो० शेरसिंह, सभा प्रधान

आकाशवाणी उपसमिति की बैठक सम्पन्न

दिनांक २९-७-९० को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा द्वारा गठित आकाशवाणी कार्यक्रम उपसमिति की बैठक प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें डा० सुदर्शनदेव आचार्य, प्रो. ओमकुमार जीन्द, प्रो. प्रकाशवीर विद्यालंकार, चौ. सूबेसिंह, डा. सोमवीर और श्री महावीर शास्त्री ने भाग लिया। इसमें निर्णय किया गया कि आकाशवाणी रोहतक से अति उत्तम कार्यक्रम प्रसारित कराने के लिए उच्च कोटि के आर्य विद्वान् वक्ताओं की एक सूची बनाकर आकाशवाणी कार्यालय को भेजी जाए। वर्ष में आने वाले पर्व, त्यौहार तथा युगनिर्माता महापुरुषों के विषय में उच्च स्तरीय वार्ता प्रसारित कराने के लिए सभा का एक शिष्टमण्डल निदेशक आकाशवाणी रोहतक से मिले और उनसे सम्पर्क करके योजना कार्यान्वित करावे।

—सुदर्शनदेव आचार्य, संयोजक
आकाशवाणी कार्यक्रम उपसमिति

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

ग्राम जुगलान (हिसार) में दिनांक २२-७-९० को प्रातःकाल श्री जयपाल सिंह बेनीवाल के घर पर सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने यज्ञ किया। बेनीवाल दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया एवं जनेऊ धारण किया। साथ में एक नवयुवक श्री बलराज जी ने भी जनेऊ धारण किया। भविष्य में दोनों नवयुवकों ने बीड़ी-सिगरेट, शराब, मास न खाने पीने की प्रतिज्ञा की। बेनीवाल ने सभा को ५१/ रु दान दिया और उन्हें सर्वहितकारी पत्र का सदस्य बनाया गया।

—ब्र० सुरेन्द्रसिंह आर्य, जुगलान निवासी

जब आंख से ही न टपका तो लहू क्या है ?

—इन्द्रजित् 'देव', यमुनानगर–१३५००१

हरयाणा के नए मुख्यमन्त्री हुकमसिंह से राष्ट्रीय विचारकों को कुछ अपेक्षायें होना स्वाभाविक है। वे १५ वर्षों तक डा राममनोहर लोहिया के नेतृत्व में समाजवादी दल के सदस्य रहे हैं जो भारत में भारतीय भाषाओं के प्रचलन के समर्थक थे। अंग्रेज चला जाए, पर अंग्रेजी व अंग्रेजीयत भारत में पसरी बैठी रहे, यह डा. राममनोहर लोहिया को स्वीकार नहीं था। उन्हीं के एक शिष्य मुलायमसिंह यादव ने जिस प्रकार उत्तरप्रदेश से निकालने के लिए राजकीय यत्न किए, उन्हें सभी जानते हैं। सर्वत्र प्रशंसनीय भी हैं। शिक्षा मन्त्री के रूप में हुकमसिंह ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ७८वें वार्षिक समारोह के समापन पर भाषण देते हुए इसी वर्ष अप्रेल में कहा था कि हरयाणा में अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता पाठ्यक्रम से समाप्त कर दी जाएगी। राष्ट्रीय व प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से परम्परागत शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को अब मैडिकल व इन्जिनियरिंग कालेजों में प्रवेश मिलेगा। आपने यह भी कहा था कि अब अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग कूप में बैठ जायेंगे व हिन्दी भाषा के माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों को भरपूर सम्मान मिलेगा।

अब वे हरयाणा के सर्वोच्च पद पर हैं व निर्णय करने व उनको लागू करने के पूरे अधिकार भी उनके पास है। सत्ता बार-बार नहीं मिलती। जब मिलती है तो लोकोपयोग कार्यों के द्वारा सत्तासीन व्यक्ति जनता जनार्दन के हृदयों में सदैव के लिए आसीन रह सकता है। अतः मुख्यमन्त्री को चाहिए कि—

(१) ११ अगस्त से १३ अगस्त, ९० तक इन्दौर में आयोजित होने वाले अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन में जाकर इसके आयोजकों व अन्य राष्ट्र प्रेमियों को उत्साह व सहयोग दें। (२) स्नातक स्तर तक हरयाणा के सभी विद्यालयों व महाविद्यालयों में अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय के रूप में ही पढ़ाने की व्यवस्था की जाए। (३) प्रदेश में उर्दू अकादमी की तरह संस्कृत व हिन्दी अकादमियों की स्थापना की जाए। (४) मेडिकल व इंजीनियरिंग कालेजों में शिक्षा माध्यम हिन्दी बनाई जाए। (५) राजकाज में तुरन्त अनिवार्यतः हिन्दी का प्रयोग शुरू किया जाए। ऐसी घोषणायें बार-बार पूर्व मुख्यमन्त्रियों ने की हैं व आदेश भी जारी किए हैं पर आज तक एक भी विभाग के मन्त्री में साहस नहीं हुआ जो सार्वजनिक रूप में हाथ उठा कर कह सके कि उसके विभाग में अंग्रेजी का सर्वथा प्रयोग नहीं होता। कारण, अंग्रेजी के टाइपराइटर कार्यालयों से उठाए ही नहीं गए, न ही अंग्रेजी में कार्य करने वाले अधिकारियों को आज तक कोई दण्ड मिला है। यदि ये काम हुकमसिंह कर सके तो ही वह डा. राममनोहर लोहिया के शिष्य कहला सकेंगे:—

रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं कायल
जब आंख ही से न टपका तो लहू क्या है ?

इस सम्बन्ध में एक रोचक व प्रेरणादायक घटना का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। सन् ७८ में २६ जनवरी से हिमाचल सरकार ने राजकाज में हिन्दी को लागू करने का काम दृढ़ निश्चय से किया था। उक्त घटना से पूर्व जब हिमाचल विधान सभा में जाने पूर्व हिमाचल के तत्कालीन (व वर्तमान) मुख्यमन्त्री श्री शान्ता कुमार ने प्रदेश के तत्कालीन मुख्य सचिव, जो दक्षिणी भारत के थे, से पूछा था कि मैं विधानसभा में अभी राजकाज में हिन्दी लागू करने की तिथि २६ जनवरी घोषित करने जा रहा हूं, बताइए तब तक हिन्दी लागू हो सकती है न ?

मुख्य सचिव ने तुरन्त रटा रटाया उत्तर दिया था—सर, ऐसा कैसे हो सकेगा ? पूरे प्रदेश के सभी विभागों के सभी कार्यालयों में इस समय अंग्रेजी के टाइपराइटर पड़े है। उनके स्थान पर उतने ही हिन्दी टाइपराइटर खरीदने में सरकार को भारी व्यय व समय लगेगा।

श्री शान्ताराम के सुना और विधानसभा में जाकर यह घोषणा कर दी कि हमारी सरकार २६ जनवरी, ७८ से पूरा राजकाज हिन्दी में करेगी। अगले दिन मुख्य सचिव ने अपना अवकाश का प्रार्थना पत्र भेज दिया, वे घर बैठ गए। पांच-सात दिनों तक वे घर बैठे सोचते रहे कि मुख्यमन्त्री अपना निर्णय बदल कर नई घोषणा कर देंगे तो मैं कार्य पर चला जाऊंगा, परन्तु न ऐसा होना था न हुआ। विवशतः मुख्य सचिव ने पांच-सात दिनों के पश्चात् सचिवालय में आकर श्री शान्ताराम से भेंट की और कहा—'सर, मैंने सोच लिया है। हमें नए टाइपराइटर खरीदने नहीं पड़ेंगे और हिन्दी लागू भी हो जाएगी।' 'कैसे ?'—मुख्यमन्त्री ने पूछा।

"इसका समाधान यह है कि वर्तमान अंग्रेजी टाइपराइटरों के की-बोर्ड (Key Board) हटाकर हिन्दी के की-बोर्ड लगवा लेने से काम चलेगा।"—मुख्य सचिव ने कहा।

अफसरशाही कभी अंग्रेजी को नहीं हटने देगी परन्तु सन् ७८ वाले शान्ता कुमार के उपरोक्त दृढ़ निश्चयी जैसे श्री हुकमसिंह भी सिद्ध हों तो कोई कारण नहीं कि वे भी सफल सिद्ध हों—

कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः

अर्थात् यदि कर्म मेरे दायें हाथ में है तो विजय (सफलता) मेरे बायें हाथ में है। इस वेद वाक्य को आदर्श बनाना होगा।

भारत की वर्तमान स्थिति

ऋषि-मुनि और सन्यासी जहां योग लगाया करते थे।
योगीराज श्री कृष्ण गीता ज्ञान सुनाया करते थे।।
नीति–विदुर और चाणक्य नित्य समझाया करते थे।
अर्जुन भीम सरीखे धर्म पर युद्ध मचाया करते थे।।

कहने में भी शरमाता हूं घोर अन्धेरा छाया है।
पुत्री के संग आज पिता ने, अपना काम जगाया है।।
कितने ही महापुरुष हुए, भ्रष्टाचार न मिट पाया।
जगह–जगह इस पुण्य धरा पर, व्यभिचार नजर आया।।

मर्यादा का किया हनन, रक्षा बन्धन भी ठुकराया
भाई और बहन के अन्दर, सच्चा प्यार नहीं पाया।।
रिश्ते नाते टूट रहे, पैसा भगवान बनाया है।
पत्नी और पति के प्रेम में, दहेज शत्रु आया है।।

प वन सीता सावित्री, आज की नारी नहीं रही।
लक्ष्मीबाई, जीजाबाई मीराबाई नहीं रहीं।।
सभ्य सम्पन्न नहीं भारत, क्यों नारा व्यर्थ लगाया है।
संस्कृति को छोड़ आज, पतन मार्ग पर आया है।।

जगह-जगह आतंक देश में, मारे भाई को भाई।
प्रत्यक्ष देखकर महेश चन्द की लेखनी न रुक पाई।।

—महेश चन्द आर्य, ग्राम पो०–पन्हैड़ा खुर्द,
बल्लबगढ़, जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

गाय का दूध सुपाच्य होता है। क्षय, फेफड़े की बीमारी में लाभदायक और कफ, वात, पित-नाशक होता है। गाय का धारोष्ण दूध औषध का काम करता है। वह दो-ढाई घण्टे में पच जाता है। गाय के दूध की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें कैरोटिन नामक पौष्टिक तत्त्व सबसे अधिक होता है, जो स्वास्थ्यवर्धक-सौन्दर्यवर्धक पूर्ण आहार है।

पन्द्रह अगस्त का वो दिन आया

भारत माता गुलामी की जंजीरों में जकडी हुई थी। भारत माता के कुछ सपूतों से यह सहन न हो सका और उन्होंने यह शपथ ली कि हम रहें या न रहें भारत मां को विदेशियों एवं आततायियों की गुलामी से आजाद कराके छोड़ेंगे।

आखिर उन भारत मां के सपूतों ने भारत माता को आजाद कराने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी।

क्या हुआ गर मिट गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुलें कुर्बान होती हैं अपने चमन के वास्ते।।

यह कहते हुए अपने प्यारे देश के लिए बलिदान हो गए, जिनमें रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, मंगलपाण्डे, सुभाषचन्द्र बोस इन सबों ने भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराया। अंग्रेज युग के अन्तिम शहीद सुभाष-बाबू ने दूसरे महायुद्ध में विदेश जाकर जो महान् अभियान चलाया और आजाद हिन्द फौज का संगठन किया। उसने अंग्रेजी शासन की जड़ें हिला दी और उन्होंने समझ लिया कि अब इस देश को वश में रखना सम्भव नहीं। इस क्रान्तिकारी सुभाष ने शहीद होकर देश की स्वतन्त्रता का द्वार खोल दिया। आज इन सब अमर शहीदों को श्रद्धाञ्जलि देते हुए देश की वर्तमान दशा पर निगाह डालते हैं तो कलेजा मुंह को आने लगता है। कहां तो सत्य और न्याय पर आधारित मनुष्यमात्र के लिए कल्याणकारी समाज व्यवस्था स्थापित करने का स्वप्न देख रहे थे और कहां आज स्वार्थ और भ्रष्टाचार का ऐसा नंगा नाच देखने में आ रहा है कि आंखों पर विश्वास नहीं होता। साधारण चोर गुण्डे जैसे अपराधी ही नहीं बड़े-बड़े नेता नामधारी भी सत्ता और धन के लोभ से यह कुकर्म कर रहे हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए कमर कसकर खड़े होना ही इस समय १५ अगस्त के दिन शहीदों को सच्ची श्रद्धाञ्जलि देना होगा। आज वह पन्द्रह अगस्त का दिन फिर आ गया जिस दिन भारत माता सैकड़ों वर्षों से जकड़ी हुई गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुई थी। एक कवि के शब्दों में—

पन्द्रह अगस्त का वो दिन आया पन्द्रह अगस्त का वो दिन आया
जब यह तिरंगा लालकिले पर भारत में लहराया। पन्द्रह ·····
मुद्दत से हम जूझ रहे थे, पानी बनकर खून बहे थे
है यह मुबारिक दिन हमने जब, मेहनत का फल पाया। पन्द्रह ···
जुलमो सितम के बोझ उठाये, जेलें काटी प्राण गंवाए।
तोड़ के रख दी सब जंजीरें, देश आजाद कराया। पन्द्रह ···
जब अंग्रेज ने सब सुख छीना, मुश्किल कर दिया जिसने जीना
आज के दिन ही उस दुश्मन का, मिल तख्ता पलटाया। पन्द्रह·····
सन् सत्तावन में बिगुल बजा था एक मुसाफिर पथ पे चला था
वह मंजिल सैंतालिस की, पन्द्रह अगस्त को पाया।।
पन्द्रह अगस्त का वो दिन फिर आया।

—ब्र० धर्मप्रकाश 'कुशल' विद्यावाचस्पति
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

आकाशवाणी रोहतक से

आठ अगस्त को प्रातः ७-३० बजे "बाल्मीकि रामायण में नैतिक तत्त्व" इस विषय पर आचार्य दयानन्द जी शास्त्री, प्राध्यापक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार की एक हिन्दी वार्ता प्रसारित होगी।

जैसा काम वैसा नाम

जिसने जैसा काम किया इतिहासों में नाम लिखे गए।
ईमानदारी बेइमानी सारे ही काम लिखे गए।टेक।

प्राचीन इतिहास बाल्मीकि देता हमें गवाही सुनो।
रावण की बुद्धि बिगड़ी जा सीता सती उठाई सुनो।
विश्वसर्वा कुल में हुआ विभीषण भक्त की पदवी पाई सुनो।
लघु भ्राता सुग्रीव की भार्या बालि ने अपनाई सुनो।
मर्यादा पुजारी राम लिखा, बालि से बदनाम लिखे गए।१।
श्रीकृष्ण की नहीं मानी बात तो महाभारत यहां जंग हुआ।
ऋषि मुनि विद्वान् रहे नहीं आर्यावर्त पुनः तंग हुआ।
यज्ञ हवन की धुनी यहां थी, जंग से रंग भंग हुआ।
वेदों के उपदेश बिना देश का उल्टा ढंग हुआ।
कुरुक्षेत्र रणभूमि लिखी, हरिद्वार पर स्वर्ग धाम लिखे गए।२।
आर्यावर्त के पतन का कारण फूट बिमारी लिखी गई।
गजनी से यवन बुलाए गए जयचन्द की गद्दारी लिखी गई।
पृथ्वीराज ने भी भूल की देखो सारी लिखी गई।
भारत में पाकिस्तान बना गांधी की लाचारी लिखी गई।
श्री सुभाष की कुर्बानी लिखी गई ऊधम से जाम लिखे गए।३।

सत्य विद्या गए भूल सभी तो पाखण्ड तम यहां छाया था।
बाल जती ब्रह्मचारी ने आ वेदों का नाद बजाया था।
जगन्नाथ ने विश्वासघात किया, दूध में जहर पिलाया था।
'लालचन्द' ने यह घटना पढ़ी तो पढकर चक्कर आया था।
श्री मंगल जयकोर आश्रम लिखा खेड़की ग्राम भी लिखा गया।४।

संकलनकर्त्ता—महात्मा सुशीलदेव आर्य
श्री मंगल भवन खेड़की (महेन्द्रगढ़)

वेद तथा श्रावणी

वेद ही जग में हमारा, ज्योति जीवन सार है।
वेद ही सर्वस्व प्यारा, पूज्य प्राणाधार है।।
सत्य विद्या का विधाता, ज्ञान का गुरु गेय है।
मानवों का मुक्तिदाता, धर्म धी का ध्येय है।।
वेद ही परमेश प्रभु का, प्रेम पारावार है।
ब्रह्मकुल का देवता है, राजकुल रक्षक रहा।
वैश्य-वेश-विभूषिता है, शूद्र-कुल-स्वामी महा।
वेद ही वर्णाश्रमों का, आदि है आचार है।।

श्रावणी का श्रेष्ठ उत्सव, पुण्य पावन पर्व है।
वेद व्रत स्वाध्याय वैभव, आज ही सुख सर्व है।
वेदपाठी विप्रगण का, दिव्य दिन दातार है।।

वेद का पठन पाठन हो, वेद वाद-विवाद हो।
वेद हित जीवन मरण हो, वेद हित आह्लाद हो।
आर्यजन का आज से, व्रत विश्व वेद प्रचार है।।

विश्व भर को आर्य करना, वेद का सन्देश है।
मृत्यु से किंचित् न डरना, ईश का आदेश है।
सृष्टि सागर में हमारा, वेद ही पवार है।।
रोज रोज सरोज सम, श्रुति सूर्य से खिलते रहें।
वेद चन्द्र चकोर हम, धृतिमोद से मिलते रहें।
वेद ही स्वामी सखा सब, वेद ही परिवार है।।

—ब्र० धर्मप्रकाश 'कुशल'
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

चिता से निकालकर लाश की माटी खराब कर गया बाबा

कुरुक्षेत्र २७ जुलाई (देवेन्द्र)। लेकिन चमत्कार नहीं हो सका २५ वर्षीय जरनैलसिह का शव इतना विकृत हो गया था कि जलाने के काबिल भी नहीं रहा था। अन्ततः उसे श्मशान में दफना दिया गया। कल वीरवार जरनैलसिह के शव को उसके सम्बन्धी दाह क्रिया के लिए दिन में लगभग ११ बजे श्मशान घाट में ले गए थे। जब चिता को अग्नि दी जा रही थी तभी चन्द्रपाल नामक एक फकीर ने वहां पहुंच कर दावा कर दिया कि वह जरनैलसिह को पुनः जीवित कर सकता है। रोते धोते परिवारजनों ने शव पर से लकडियां हटाई और फकीर चन्द्रपाल के कहने के अनुसार दौड़धूप में लग गए।

युवा मजदूर जरनैलसिह एक आटा चक्की पर मजदूरी करता था। गत मंगलवार की रात को तीन बजे उसने अपने पेट में सख्त दर्द की शिकायत की। घर वाले उसे एक स्थानीय डाक्टर के पास ले गए। आराम नहीं आया तो उसे एक प्रमुख चिकित्सक डा० सोन्ती को दिखाया गया। डा सोन्ती ने उसके शरीर में किसी प्रकार का विष फैलने की आशंका जाहिर की और उन्हें तत्काल जरनैलसिह को पीजीआई ले जाने का मशवरा दिया, ताकि सही इलाज हो सके।

लेकिन मिलने जुलने वालों ने जरनैलसिह की मदद के बजाय उसके परिवार को गरीबी याद दिलाई और 'टोटकों' की सलाहें दे दी। बुधवार का सारा दिन व रात इन्हीं टोटकों में बीत गई और आखिर जरनैलसिह ने दम तोड दिया।

इसी बीच बुधवार को घर से एक सांप निकला। सबको यही शक हुआ कि सांप ने काटा होगा। ढाई फुट लम्बे उस सांप को वहीं मार दिया गया। किसी ने सलाह दे दी कि हरिद्वार में एक बाबा है वह इसे ठीक कर सकता तो एक विशेष व्यक्ति हरिद्वार भेजा गया। उस बाबा ने सारी घटना सुनकर अपनी असमर्थता प्रकट की, फिर भी सान्त्वनावश गले में डालने के लिए कुछ मनके दे दिए।

मृतक जरनैल सिंह के शव को जब चिता में से निकाला गया तो फकीर चन्द्रपाल ने उसे पुनर्जीवित करने की प्रक्रिया के लिए एक लोहे का विशाल टब विशेष रूप से बनवाया। चन्द्रपाल के आदेश पर जरनैल सिंह के परिवार वालों ने दो-दो क्विंटल दूध तीन बार अर्थात छह क्विंटल दूध का बन्दोबस्त किया।

जरनल सिंह का बूढा बीमार बाप गांवों में फेरी लगाकर चूड़ियां बेचता है, तब जाकर कहीं पेट भर भोजन जुट पता है। जरनैल सिंह विवाहित था और उसके दो बच्चे हैं।

पुनर्जीवित करने का यह तमाशा देखने के लिए हजारों लोग जिनमें उच्च पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी भी थे, आते रहे। जरनैल सिंह के बूढ़े बाप की किसी ने आर्थिक मदद नही की। इतने व्यापक चमत्कार आयोजन का सारा खर्च मृतक के परिवार पर एक कर्ज बन कर रह गया।

युवा जरनैल सिंह के शव को चिता की आग भी नसीब न हो सकी। सारी घटना एक प्रश्नचिन्ह छोड़ गई है कि क्या गरीब जरनैल सिंह को मदद देकर समय रहते पी.जी.आई. ले जाता तो निर्धन परिवार का सहारा बच न जाता? मृतक का धर्म भीरू और टूटा हुआ बाप इस सारे चमत्कार-चक्र के लिए कोसता है तो सिर्फ अपने नसीब को। (प०के०)

अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ।

संस्कृत साहित्य में नैतिकता

[पृष्ठ २ का शेष]

अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेवयज्ञ ये पांच यज्ञ प्रतिदिन करते रहने का अभिप्राय भी उपनिषद् का यही नैतिक उपदेश है कि कर्म करना और बांटकर खाना।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में नैतिकता भरी पड़ी है। इसका जितना अधिक प्रचार प्रसार होगा इससे समाज में सद्व्यवहार, आदर्शभावना, सदाचार, अनुशासन, पवित्रता, सत्यभाषण, सबका आदर आदि गुण विकसित होंगे और आजकल जो पथराव, हडताल आगजनी, परीक्षाओं का बहिष्कार, छुरेबाजी, चोरी, अपहरण आदि बातें हो रही हैं उन पर परोक्ष अंकुश बन सकेगा तथा हम सब कह सकेंगे—

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

हिन्दू बहादुर भूल गए

निज गौरव को निज वैभव को ! ऐ हिन्दू बहादुर भूल गया ।
उपदेश दिया जो वेदों में, क्यों सुनना-सुनाना भूल गया ॥
रावण ने सीया चुराई थी, सोने की लंका जलाई थी।
जब लाखों सीता हरी गई, क्यों पाक जलाना भूल गए ॥

कृष्ण ने पाठ पढाया था, अर्जुन को वीर बनाया था ।
यह रास-रचाना चला दियो, क्यों चक्र चलाना भूल गए ॥
राणा ने राह दिखाई थी, शिवराजन भी अपनाई थी।
जिस राह पर बन्दा वीर चला, उस राह चलना भूल गए ॥

भारत मां की है पुकार यही, दयानन्द की है ललकार यही ।
जिस गोदी में पलकर बड़े हुए क्यों मान बढाना भूल गए ॥
अहिंसा की होती जयकार, पर हिंसा की है भरमार ।
बापू ! राम राज्य के स्वप्न तो इस आजादी में भूल गए ।

ओ हिन्दू जवानो बुला रही है गो—करुणा कर चितलाय रही ।
जिस गो का दूध पिया तुमने, क्यों रक्षा करना भूल गए ॥
केशव ने देश जगाया है, माधव ने कर दिखा लाया है।
संघे शक्ति कलो युगे, यह वेद मन्त्र क्यों भूल गए ॥

आर्यसमाज सैक्टर-७ फरीदाबाद के

समाचार

(१) १ अगस्त से ५ अगस्त १९९० तक श्रावणी पर्व पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् महात्मा आर्यभिक्षु जी द्वारा वैदिक प्रवचन ।

(२) १५ सितम्बर से ३० सितम्बर तक आर्य जगत् के उच्चतम योगी स्वामी सत्यपति परिव्राजक द्वारा योग साधना शिविर का संचालन ।

जिज्ञासु साधक उपरोक्त कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी हेतु निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें ।

मन्त्री, आर्यसमाज
सैक्टर ७ फरीदाबाद (हरयाणा)

ऋषियों की वाणी है संस्कृत, अंग्रेजी क्यों लादी आ रही ।
हिन्दी भारत मां की बिन्दी है, क्यों नादानों भूल गए ॥
"कश्यप" ने आज पुकारा है, हिन्दू को फिर से जगाना है ।
हिन्दू ! आर्य जाति में जन्म लिया, यह वीर भावना भूल गए

संग्रहकर्त्ता
स्वामी केवलानन्द, कश्यप आरोग्य आश्रम, अजमेर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित ।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं. १३६०७/७ फोन ७४८१२ सृष्टि संवत् १,६०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए. श्रावण ३०, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३५ १४ अगस्त १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति १० पैसे

'ओ३म' के अर्थ

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

"ओ३म्" यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक "ओ३म्" समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे—अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं।

अथ ओंकारार्थ:—

(वि) उपसर्गपूर्वक (राजृदीप्तौ) इस धातु से क्विप् प्रत्यय करने से 'विराट्' शब्द सिद्ध होता है। 'यो विविधं नाम चराऽचरं जगद्राजयति प्रकाशयति स विराट्' विविध अर्थात् जो बहु प्रकार के जगत् को प्रकाशित करे इससे 'विराट्' नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है।

(अञ्चु गतिपूजनयो:) (अग, अगि, इण् गत्यर्थक) धातु हैं, इनसे 'अग्नि' शब्द सिद्ध होता है। 'गतेस्त्रयोऽर्था: ज्ञानं गमनं प्राप्तिश्चेति पूजनं नाम सत्कार:।' 'योऽञ्चति अच्यतेऽगतेऽङ्गत्येति वा सोऽयमग्नि:' जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है।

(विश प्रवेशने) इस धातु से 'विश्व' शब्द सिद्ध होता है। विशन्ति प्रविष्टानि सर्वाण्याकाशादीनि भूतानि यस्मिन्यो वाऽऽकाशादिषु सर्वेषु भूतेषु प्रविष्ट: स विश्व ईश्वर:' जिसमें आकाशादि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इसमें व्याप्त होके प्रविष्ट हो रहा है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'विश्व' है। इत्यादि अकार-मात्रा से होता है।

ज्योतिर्वै हिरण्यं तेजो वै हिरण्यमित्यैतरेय शतपथ ब्राह्मणे 'यो हिरण्यानां सूर्यादीनां तेजसां गर्भ उत्पत्तिनिमित्तमधिकरणं स हिरण्यगर्भ:' जिसमें सूर्यादि तेजवाले लोक उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं अथवा जो सूर्यादि तेज: स्वरूप पदार्थों का गर्भनाम उत्पत्ति और निवास स्थानहै; इससे उस परमेश्वर का नाम हिरण्यगर्भ है। इसमें यजुर्वेद के मन्त्र का प्रमाण है—

हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

(यजु० १३।४)

इत्यदि स्थलों में 'हिरण्यगर्भ' से परमेश्वर ही का ग्रहण होता है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक २८ अक्तूबर, १९९० रविवार को सभा मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर सभा तथा इससे सम्बन्धित आर्य शिक्षण संस्थाओं के वार्षिक वृत्तान्त आय-व्यय तथा बजट स्वीकार किये जावेंगे और सभा के लिए आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी तथा अन्तरंग सदस्यों आदि का निर्वाचन किया जावेगा। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के (जिनका सम्बन्ध कम से कम दो वर्ष पूर्व हो चुका है) के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि वे अपने आर्यसमाजों से गत वर्ष का प्राप्तव्य वेदप्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी का शुल्क १३ अक्तूबर, १९९० तक सभा के उपदेशकों द्वारा अथवा सभा कार्यालय रोहतक में धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा अवश्य भेजने का कष्ट करें। जिन आर्यसमाजों से प्राप्तव्य धनराशि समय पर प्राप्त हो जावेगी, उनके प्रतिनिधियों को ही समय पर अधिवेशन का एजेण्डा भेजा जावेगा।

वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

जिला जीन्द वेदप्रचार मण्डल के गठन हेतु बैठक

जिला जीन्द के आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक बैठक दिनांक १९ अगस्त, १९९० को प्रात: १०-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में होगी।

इस बैठक में जिला जीन्द में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार तथा शराब, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए वेद-प्रचार मण्डल का गठन किया जावेगा। जि० जीन्द के आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने जिले में आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करने तथा उपयोगी सुझाव देने के लिए अपने सहयोगियों के साथ बैठक में पहुंचने का कष्ट करें।

निवेदक—
वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

आर्यसमाज फरमाणा (महम) वार्षिक चुनाव

प्रधान श्री बनारसीदास, उपप्रधान श्री नन्दलाल, मन्त्री श्री भूपसिंह, उपमन्त्री श्री नफेसिंह, कोषाध्यक्ष मा० हवासिंह, पुस्तकाध्यक्ष म० बेगराज आर्य, पुरोहित ब्र० आजाद, संरक्षक श्री लालचन्द विसला।

हरयाणा और स्वराज्य की लड़ाई : कुछ भूली-बिसरी रोचक घटनाएं

हमारे स्वतन्त्रता संग्राम पर काफी कुछ लिखा जा चुका है। किन्तु इतना होने पर भी बहुत सी महत्वपूर्ण घटनायें अछूती रह गई हैं। इसका विशेष कारण यह है कि हमारे इतिहासवेत्ता तथा शोधार्थी ज्यादातर अभीलेखागारों में रखे दस्तावेजों, बड़े-बड़े अखबारों की फाइलों, महत्वपूर्ण नेताओं के साक्षात्कारों से प्राप्त जानकारी आदि के आधार पर काम करते हैं। कुछ लोग आम आदमी को लेकर नीचे से या 'सबाल्टर्न' को माध्यम बनाकर इतिहासलेखन का दावा करते हैं। वे ऊपरचर्चित स्रोतों से कुछ नीचे के स्रोतों तक पहुंचने की चेष्टा करते हैं। लेकिन वे भी वास्तव में पूरी तरह वहा नहीं पहुंचते। कारण भारत गांवों में बसता है। १९१९ के बाद गांव के आदमी हमारे स्वतन्त्रता से जुड कर उसे मजबूत सामाजिक आधार प्रदान करते हैं। वही हमारे स्वतन्त्रता सग्राम की जड है, उसका आधार है। वहा पहुंचे बिना भला हम इस रोमांचकारी जन संघर्ष का पूरा ब्यौरा कैसे दे सकते है? और यह काम अतीव कठिन है।

यहा हमने हरयाणा के गांवों में जाकर वहां से कुछ ऐसी भूली बिसरी रोचक घटनाओं को एकत्र करके यहां प्रस्तुत किया है जिन का जिक्र न तो अभिलेखागारों से मिलता है और न अखबारों से। और जो ऐसी घटनाये हैं जिनसे हमें एकदम सही जानकारी प्राप्त होती है कि हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन को जनाधार कैसे प्राप्त हुआ? स्वतन्त्रता का शखनाद गांव-गाव और घर-घर किसने फूंका? अंग्रेजों से लड़ने के लिए व्यापक संगठन कैसे बना? आदि आदि।

'बड़े काम' के लिए गृह-त्याग

बात १९२८-२९ की है। जसराणा (जिला रोहतक) के सरकारी प्राथमिक स्कूल के एक १९-२० वर्ष का नौजवान अध्यापक था। आर्यसमाजी परिवार से सम्बद्ध, यह अध्यापक कांग्रेस के प्रभाव में भी आ गया था। उसने खूब सारा राष्ट्रीय साहित्य पढ़ लिया था. रोहतक से निकलने वाले राष्ट्रीय विचारों के प्रतिपादक उर्दू साप्ताहिक 'हरियाणा तिलक' का वह नियमित पाठक था। विशुद्ध खद्दर पहनता था।

एक दिन स्कूलों का इन्स्पेक्टर गांव के स्कूल का मुआयना करने आया। वह सरकारपरस्त था और खद्दर तथा राष्ट्रीय विचारों से उसे सख्त चिढ थी। नौजवान अध्यापक को खद्दर में मलबूस देख कर आगबबूला हो उठा और खद्दर और नौकरी में से एक चीज को चुनने के लिए कहा। नौजवान अध्यापक ने तुरन्त त्यागपत्र दे दिया।

नौकरी छोड़ने की खबर पाते ही नौजवान अध्यापक के घरवाले बड़े दुःखी हुए। पिता ने कहा 'निरभाग सै। भूखा मरैगा अर हम नै भी मारैगा।' मां के अनुसार 'रोटी के ठोकर मारी सै, दुःखी रहैगा।' बड़े भाइयों का गुस्सा देखते ही बनता था। वास्तव में उन दिनों हर माह नकद पैसे मिलना बड़ी बात थी। अतः नवयुवक को घर पर खूब काम में पेला जाने लगा। बात बात पर खरी खोटी सुनने को मिलती।

एक दिन की बात है। ज्येष्ठ का महीना था। दोपहर का समय। खूब चिलचिलाती धूप थी और गजब की गर्मी। नवयुवक को खेतों में खाद डालने के लिए जोड़ दिया गया। बड़े भाई खाद की टोकरी खूब भर-भर कर उसे गाड़ी मे डालने के लिए देते। उस खूब टोकरिया डाली पर हिम्मत न हारी। अन्त मे बड़े भाई ने एक टोकरी बहुत ज्यादा भरकर उसके सिर पर टिका दी। यह टोकरी न थी, क्रान्ति का चाबुक था। नवयुवक इसके लगते ही सिहर उठा और जोर से टोकरी 'कुरडी' पर फकते हुए बोला 'अरे बेवकूफो, के मैंने नौकरी यो गोबर ढोवण खातिर छोड़ी थी? तम करो यो काम मैं तो चला देश सेवा करण।'

नवयुवक तेज कदमों से स्वतन्त्रता की जोखम भरी डगर पर चल पडा। ठोकरें खाईं, कांटे चुभे, भूखों मरा, प्यासा तड़फा, जेलों में सडा यातनायें सहीं, पर उस धुन के धनी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। चलता रहा, चलता रहा और तब तक चलता रहा जब तक अपनी मंजिल पर न पहुंचा। पता है वह नवयुवक, आजादी का दीवाना, स्वतंत्रता का हरकारा कौन था? मास्टर नान्हूराम जसराणा।

अभी हाल ही में हमें मास्टर जी की डायरी प्राप्त हुई है। यह डायरी हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर लाभकारी प्रकाश डालती है और बुझाती है हल इस पहेली का कि हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन से ग्राम आदमी. गांवों में रहने वाला ग्राम आदमी कैसे जुडा? मास्टर जी जैसे कर्मवीरों, संगठनकर्ताओं के कामों से। उदाहरणार्थ मास्टर जी की यह डायरी २३७ दिनों का ब्यौरा देती है। इसके अनुसार आजादी का यह हरयाणवी हरकारा २३७ दिनों में केवल २१ दिन अपने घर पर रहा। शेष दिनों गर्मी सर्दी, बरसात की परवाह किये बिना यह स्वराज्य का सन्देश लिए घर घर गली, गली गांव गांव खाक छानता फिरता रहा कभी पैदल तो कभी टटी सी एक साईकिल पर। यह अनथक वीर पुरुष किस गति से चलता था उसकी कुछ बानगी देखिए :

जुलाई १९४१ : दूसरा सप्ताह :

जुलाई ९ : २७ मील, १० : १३ मील, ११ : १३ मील, १२ को १२ मील, १३ : १२ मील, १४ : ३० मील, १५ : १८ मील।

जुलाई : चौथा सप्ताह :

जुलाई २३ : १७ मील, २४ : १६ मील, २५ : १७ मील, २६ : २० मील, २७ : २५ मील, २८ : ३० मील, २९ : ४४ मील।

आदमी-आदमी से मिलना, बाबा गांधी का पैगाम देना, कांग्रेस के मैम्बर बनाना, फिर कांग्रेस कमेटियां कायम करना, सत्याग्रहियों की सूचियां बनाना, पार्टी के लिए चन्दा इकटठा करना, लोगों को 'तामीरी प्रोग्राम' समझाना ये थे इस कर्मवीर के काम, जिन्हें सरअंजाम देने के लिए यह गांव गांव मारा मारा फिर रहा था।

सरकार से असहयोग

गांधी जी के अंग्रेजी सरकार से असहयोग करने के आदेश से प्रभावित होकर हजारों नरनारियों ने यह कार्य करने का व्रत लिया पर नाघपुर (जिला रोहतक) के रहने वाले चौधरी श्योचन्द सरीखा व्रतधारी शायद ही कोई और हो। गर्मी में घुटनों तक की, हाथ से कते सूत की गांव के जुलाहे द्वारा बनाए गए मोटे खद्दर की धोती, ऊपर बदन नगां। सर्दी में नंगे बदन पर गाढ़े की दोहर आ जाती थी। न रेल का सफर, न मोटर लारी की सवारी। अंग्रेजी सिक्कों का इस्तेमाल बन्द। बाजार से कोई भी चीज खरीदना 'अंग्रेजी' व्यापार को बढ़ावा देना था, अतः चाहे कुछ भी हो कोई वस्तु नहीं खरीदी जाती थी। कार्य या हाथ में तिरंगा झण्डा लिए गांव गांव घर घर आजादी का अलख जगाना।

एक बार घर से २० मील दूर स्थित किसी गांव में एक रिश्तेदार को कुछ संदेशा देना था। गर्मी का महीना था। चौधरी सुबह उठकर पैदल ही सन्देशा देनें चल पड़ा और बाद दोपहर रिश्तेदार के यहां जा सन्देशा पहुंचाया। रिश्तेदार ने कहा 'भई श्योचन्द, यो तेरा घर सै। तू आया मिल लिए, राजी खुशी की जान ली बहुत ठीक। पर मेरे यार इतना छोटा सा सन्देशा तो तू पोस्ट कार्ड पै लिख के भी भेज सके था। इतनी तकलीफ क्यों ठाई।'

(शेष पृष्ठ ७ पर)

युधिष्ठिर के दरबार में अरबी नहीं संस्कृत बोली जाती थी

कानपुर—केन्द्रीय आर्यसभा के अध्यक्ष तथा प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने शिवा सम्प्रदाय के गुरु मौलाना हज्ने हैदर साहब के प्रकाशित इस बयान का खण्डन किया है कि युधिष्ठिर के दरबार में अरबी बोली जाती थी।

श्री आर्य का कहना है कि महाभारत युग में संस्कृत का बोलबाला था और अरबी का अभी जन्म भी नहीं हुआ था।

श्री आर्य ने आगे कहा है कि मौलाना का यह कथन भी सरासर असत्य है कि आर्यसमाज के संथापक महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि महाभारत काल में कारोबार अरबी में चलता था।

श्री देवीदास आर्य ने मौलाना जी को सलाह दी है कि वे सत्यार्थ प्रकाश को पुन: पढ़े और अपना भ्रम दूर करे वरना प्रमाण के साथ अपनी बात को पेश करे।

—मन्त्री केन्द्रीय आर्यसभा, कानपुर

वह जग उद्धारक आया था सकल विश्व को स्वर्ग बनाने

जन्माष्टमी पर्व आया है, श्रीकृष्ण की याद दिलाने।
योगीराज कृष्ण आये थे, दुनिया से अन्याय मिटाने ।।

वैदिक पथ को भूल गई थी, सुनो सुनो तब दुनिया सारी।
मत मतान्तर पनप गए थे, जुल्म यहां होते थे भारी।
विद्वानों का मान नहीं था, गुण्डों की ही थी सरदारी।
शासक दम्भी अन्यायी थे, दु:खी बहुत थे नर और नारी।

भोली भाली प्रजा पर जो, जुल्म रहे थे कर मनमाने।
योगीराज कृष्ण आए थे, दुनिया से अन्याय मिटाने ।।

जरासंध और कंस नराधम, करते थे अपनी मनमानी।
निर्दोषों को मरवाते थे, करते थे हरदम शैतानी।
उनके पीछे ही चलते थे, अन्धे होकर नर अज्ञानी।
हरीश्चन्द्र शिवि और राम की, भूल चुके थे कथा पुरानी।

रक्षक, भक्षक हुए थे, प्रजा को थे लगे सताने।
योगीराज कृष्ण आए थे दुनिया से अन्याय मिटाने।

दुर्योधन, शिशुपाल, कर्ण के, पापों का था नहीं ठिकाना।
सत्य बात को कहने वाला, केवल था केशव मर्दाना।
वह मधुसूदन, देवकीनन्दन, मानवता का था दीवाना।
विघ्न और बाधाओं से वह, कभी न सीखा था घबराना।

बालकपन से ही सच्चाई के, वह गीत लगा था गाने।
योगीराज कृष्ण आए थे, दुनिया से अन्याय मिटाने।।

दुष्टों को है मारना, जिसने जन-जन को समझाया।
कंस और शिशुपाल पछाड़े, दुष्टों से निर्भय टकराया।
जरासन्ध, दुर्योधन, शकुनि, नीच पापियों को मरवाया।
बनवाया सम्राट युधिष्ठिर, ऐसा अनुपम त्याग दिखाया।

वह जग उद्धारक आया था; सकल विश्व को स्वर्ग बनाने।
योगीराज कृष्ण आए थे, दुनिया से अन्याय मिटाने ।।

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांत शास्त्री
ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद

● सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए। —स्वामी दयानन्द

शराबी के प्रति

ओ शराबी क्यों यह तूने, जीवन व्यर्थ गंवाया।
किया नष्ट धन, खोई बुद्धि, हाथ नहीं कुछ आया।
तू पागल हो फिरता रहता, ज्यों कुत्ते फिरते हैं।
तू मस्ती में मस्त अरे ! बच्चे भूखे मरते हैं।
नाज नहीं है घर में तेरे, कपड़े फटे पुराणे।
शर्म नहीं क्या आती तुझको ओ पापी मरजाणे।
ले ले कर तू खाणा सीखा, सीखा नहीं चुकाणा।
झूठ बोलता करता चोरी बनता है दीवाना।
सीख गया है चुगली करना सीखे उल्टे धन्धे।
किसलिए आया धरती पर सोच जरा तू बन्दे।
हीरे जैसा जीवन तूने बेचा कौडी-कौडी।
बतलाता मैं नामी ग्रामी करता छाती चौडी।
सुन ले मूढ़ी कान खोल कर तू पापी हत्यारा।
खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ तेरा उल्टा नारा।
यह बतलाता दिवस नहीं हैं तेरे अधिक रंगीले।
हाथों में गडने वाली हैं कुछ दिनों में कीलें।
क्रान्ति का बिगुल बजा है अब न होगी माफी।
'उत्साही' अब दया न होगी हुई शरारत काफी।

—महेन्द्रसिंह 'उत्साही'
द्वारा यात्री जी गुरुकुल कुम्भाखेड़ा (हिसार)

सोनीपत में वेदप्रचार कार्यक्रम

सोनीपत शहर के विभिन्न स्थानो एवं ग्रामों में वेदप्रचार कार्यक्रम रविवार एवं अन्य दिवसों पर आयोजित किए जा रहे हैं। इसी अभियान के अन्तर्गत २२-७-६० को श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर महावीर कालोनी सोनीपत, २६-७-६० को श्री ललित कुमार सुपुत्र श्री भगत ताराचन्द जी सिक्का कालोनी सोनीपत, ४ व ५ अगस्त को श्री हंसराज तनेजा शिवा शिक्षा सदन सोनीपत, श्रीमती रेवादेवी तारानगर सोनीपत, श्री भीमसेन अरोड़ा आठ मरला सोनीपत, श्री मा० सत्यपाल बत्रा मुरथल रोड सोनीपत तथा गांव मेहन्दीपुर में मा० अनूपसिंह जी के पौत्र हिमांशु के नामकरण पर वेदप्रचार कार्यक्रम आयोजित किए गए। —हरिचन्द स्नेही

जिला संयोजक, वेदप्रचार मण्डल सोनीपत

चौ० धर्मसिंह राठी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिष्ठित अन्तरंग सदस्य तथा पूर्व विधायक चौ० धर्मसिंह राठी एडवोकेट पानीपत का ८ अगस्त को अचानक निधन हो गया। उनकी आयु ७० वर्ष के लगभग थी। आपने हिन्दी रक्षा आंदोलन, गौरक्षा आंदोलन आदि में बढ़चढ़कर भाग लिया था। नेत्रहीन होते हुए वे प्राय: अन्तरंग की सभी बैठकों में उपस्थित होते थे। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति होना कठिन है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

शराब हटाओ देश बचाओ

स्वतन्त्रता दिवस-पुरानी यादें तथा नये संकल्प

—प्रो० शेरसिंह

स्वतन्त्रता दिवस पर पुरानी यादे फिर हरी हो जाती हैं। ितने लोगों ने अहिंसात्मक आंदोलनों में और कितने ही वीरों ने ंसा का बदला हिंसा से लेने के लिए अपने बहुमूल्य जीवनों का लिदान दिया। कितने वीर जनरल डायर जैसे जालिमों की गोलियों ा शिकार हुए और कितने बहादुर निजाम हैदराबाद की राष्ट्र-ारोधी साम्प्रदायिक नीतियों का विरोध करते हुए अपने प्राणों की ाहूति दे गए और कितने ही रेत मिट्टी मिली जली हुई ज्वार की दो ाटियां खा खा कर बीमार हुए, मरे और अनेक बिमारियों के ाकार बने।

स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का स्वतन्त्रता संग्राम में जो ागदान रहा, वह भी नजरों से गुजरे बिना नहीं रह सकता। आज ब उस बीते हुए जमाने के इतिहास पर नजर डालते हैं तो पता ागता है कि महर्षि की कितनी परदर्शी और पैनी नजर थी जिसके ारण उन्होंने परिस्थितियों को गहराई से समझा और भारत की ाई हुई जनता को जगाया। नमक पर टैक्स (नोन और पोन) जो ा समय लिया जाता था, उसके विरुद्ध १८७५ में महर्षि ने सत्यार्थ ाकाश के पहले संस्करण में लिखा, स्वराज और स्वदेशी का नारा सर्वप्रथम स्वामी जी ने ही दिया। महात्मा गांधी ने इन सब ार्यक्रमों को अपनाया। आज अतीत का वह इतिहास यादों के रूप ताजा होकर हमारे सामने आता है और दोनों युगपुरुषों के लिए नहीं उनके अनुयाईयों द्वारा जो बलिदान दिए गए उनका चल-ित्र आंखों के सामने गुजरता हुआ दिखाई देता है।

१८५७ से १९४७ तक स्वतन्त्रता संग्राम लाखों करोड़ों लोगों ने ड़ा इस तमन्ना से कि स्वतन्त्रता का सूर्य जब उदय होगा तो देश हर कोने में और हर महल, हर झोपड़ी में उसका प्रकाश पहुंचेगा। ान्तु चन्द लोगों ने बीच में ही उस रोशनी को अपने थोड़े से परि-ारों में बन्दी बना लिया। अंग्रेजी राज से विरासत में मिली ाकरशाही जनसेवकों को भटकाने में सफल ही नहीं हुई बल्कि उनके ारा ही ऐसे ऐसे काम करवाए जिनके विरुद्ध गांधी जी के नेतृत्व में लड़ते रहे। सन्त विनोबा के शब्दों में 'भ्रष्टाचार को इन्होंने ाष्टाचार' बना डाला। आज काले धन पर ही सब राजनीति चल ाही है। जिसके पास सबसे अधिक काला धन राजनीति चलाने के ाए है वही राजनीति में सबसे शक्तिशाली बन बैठा है। उसी धन चुनाव लड़े जाते हैं और उसी के बल पर सरकारें चलाई और ाराई जाती हैं।

दुर्व्यसनों का प्रसार इतनी तेजी से हुआ है जिसकी कल्पना ासी ने नहीं की थी। दुर्व्यसनों की स्फीति मुद्रा स्फीति से भी अधिक ाजी से हो रही है। करोड़ों महिलायें पति के रहते निस्सहाय और रोड़ों बच्चे पिता के रहते अनाथ हो गए हैं। परन्तु गान्धी का, ानन्द का, विवेकानन्द का नाम लेने वाली सरकारें शराब और ाीली वस्तुओं से धन कमाकर विकास के कामों का ढिंढोरा पीट र अपने आपको धन्य समझ रहे हैं। देश टूटने की ओर जा रहा और शासक अपनी अपनी प्रतिष्ठा की लड़ाई में मग्न, नीरों की ई अपने अपने अहम की बंसुरी बजा रहे हैं।

क्या इस दिवस पर आत्मनिरीक्षण करके कुछ नए संकल्प ले राष्ट्र के भविष्य को उज्ज्वल और गौरवपूर्ण बनाने का ध्यान ट्र के कर्णधारों को आएगा, यही प्रश्न आज जन जन के म

ओ३म् के अर्थ.......

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

(वा गतिगन्धनयोः) इस धातु से 'वायु' शब्द सिद्ध होता है। (गन्धनं हिंसनम्) यो वाति चराऽचरञ्जगद्धरति बलिनां बलिष्ठः स वायुः' जो चराऽचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता और सब बलवानों से बलवान् है, इससे उस ईश्वर का नाम वायु है।

(तिज निशाने) इस धातु से 'तेजः' और इससे तद्धित करने से 'तेजस' शब्द सिद्ध होता है। जो आप स्वयं प्रकाश और सूर्यादि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है, इससे उस ईश्वर का नाम तेजस है। इत्यादि नामार्थ उकार मात्रा से ग्रहण होते हैं।

(ईश ऐश्वर्ये) इस धातु से 'ईश्वर' शब्द सिद्ध होता है। य इष्टे सर्वेश्वर्यवान् वर्त्तते स ईश्वरः' जिसका सत्य विचार शील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का नाम ईश्वर है।

(दो अवखण्डने) इस धातु से 'अदिति' और इससे तद्धित करने से आदित्य शब्द सिद्ध होता है। 'न विद्यते विनाशो यस्य सोऽयमदिति +अदितिरेव आदित्यः' जिसका विनाश कभी न हो उसी ईश्वर की 'आदित्य' संज्ञा है।

(ज्ञा अवबोधने) 'प्र' पूर्वक इस धातु से प्रज्ञ और इससे तद्धित करने से 'प्राज्ञ' शब्द सिद्ध होता है। यः प्रकृष्टतयाचराऽचरस्य जगतो व्यवहारं जानाति स प्रज्ञः+प्रज्ञ एव प्राज्ञः' जो निर्भ्रान्ति ज्ञान युक्त सब चराऽचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है इससे ईश्वर का नाम प्राज्ञ है। इत्यादि नामार्थ मकार से गृहीत होते हैं। जैसे एक एक मात्रा से तीन तीन अर्थ यहां व्याख्यात किए हैं वैसे ही अन्य नाम भी ओंकार से जाने जाते हैं।

जो अकार, उकार और मकार के योग से 'ओम्' यह अक्षर सिद्धि। सो यह परमेश्वर के सब नामों में उत्तम नाम है। जिसमें सब नामों के अर्थ आ जाते हैं। जैसा पिता–पुत्र का प्रेम सम्बन्ध है वैसे ही ओंकार के साथ परमात्मा का सम्बन्ध है। इस एक नाम से ईश्वर के सब नामों का बोध होता है।

श्रीकृष्ण चक्र सुदर्शनधारी

भारत में फिर से आजा, ओ चक्र सुदर्शनधारी।
पाप कर रहे निश दिन, कंस दुर्योधन से अत्याचारी॥
आतंकवाद छाया है, जन जीवन नहीं सुरक्षित।
कब कहां बम फट जाय, खतरा रहता है भारी।
कत्लेआम और लूटमार नित हो रही दिन दहाड़े।
जनता में शोर मचा है, भयभीत हो रही सारी।

अज्ञान और अन्याय का छाया है घोर अन्धेरा।
यह कैसे दूर हटेगा, सरकार भी इसमें हारी।
इस दीन दुखी हालत में, वो गीता का ज्ञान सुनाओ।
दुष्टों को मार भगाने की सब मिलकर करें तैयारी।
आज बंसी की तान छोड, भीषण शंखनाद बजाओ।
उग्रवादियों से लड़ने को भेजो, भीम अर्जुन से बलधारी।
भारत में फिर से ....

शोक समाचार

आर्यसमाज मायड (हिसार) के मन्त्री श्री महाशय लालचन्द जी आर्य का अचानक हृदयगति रुक जाने से २७–७–९० को देहान्त हो गया। वे ८६ वर्ष के थे। वे गोभक्त, यज्ञप्रेमी स्वाध्यायशील इन्सान थे। वेदप्रचार एवं अतिथि सेवा में उनकी विशेष रुचि थी। उन्होंने गोरक्षा आन्दोलन में बढ़चढकर भाग लिया। वे अपने पीछे तीन लड़के एवं दो लड़की छोड़ गए हैं। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। —अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी

महिलाओं में बढ़ी शराबखोरी

गंगा बहे न बहे समाज की नदी को उलट बहने में देरी नहीं लगती। दरअसल हमारे समाज में सामाजिक, आर्थिक बदलाव के कारण भारतीय महिलाएं खासकर राजनीतिक और औद्योगिक सांस्कृतियों वाले महानगरों व बड़े शहरों में जिस तेजी के साथ आधुनिक समाज से जुड़ी हैं, उतनी ही तेजी से आधुनिक विचार भी उसके जीवन का हिस्सा बनते जा रहे हैं। हालांकि एक गतिशील समाज में यह स्वाभाविक है लेकिन यह प्रक्रिया और परिवर्तन इतना असहज है कि यह एक पतनशील समाज का लक्षण हो सकता है। महिलाओं में बढ़ती शराबखोरी से चिन्ता महज यह ही नहीं कि, 'देखो औरत शराब पी रही है।' बल्कि इसका सबसे चिन्ताजनक पहलू यह है कि इस समाज को बनाने संवारने और भविष्य के निर्माण की काफी हद तक जिम्मेदारी निभानेवाला हमारा महिलासमाज दिन-ब-दिन इन तमाम किस्म की नशीली बुराइयों में जकडता जा रहीं है। आज वे खुब नशा करने लगी हैं और यदि हम गम्भीरता से भारतीय संदर्भ में देखें तो बहुत सारी चेतावनियों, सीमाओं, सामाजिक रीति रिवाजों और अपनी एक खास सस्कृति के बावजूद महिला समाज की युवातम पीढी इस ओर तेजी के साथ अन्धेरे में लुप्त होती जा रही है। हालांकि विज्ञानियों ने औरतों के लिए शराब आदि की मनाही घोषित की हुई है ताकि उनके नशे के प्रभाव से अगली पीढी को बचाया जा सके।

नशा करनेवाली महिलाये एक खास किस्म की मानसिक परेशानी का शिकार होती हैं। वह मानसिकता आमतौर पर परिवार व समयानुसार सामाजिक बदलाव से सम्बन्धित होती है। आज के भारतीय समाज में परिवार का दिन-ब-दिन गिर रहा स्तर उस मानसिकता का एक पहलू है। कभी कभार उनकी जिन्दगी में परिस्थितिवश कुछ ऐसा घट चुका होता है जिससे वे असुरक्षा, असम्मान, अकेलापन और तिरस्कार जैसी भावनाओं के दायरे में सिमट जाती हैं और दुःखपूर्ण जीवन के कारण आत्मसीमित होने लगती हैं। किसी की भी प्रश्नपूर्ण दृष्टि का जब वे सामना नहीं कर पातीं तब अन्दर ही अन्दर पहले तो घुटती हैं। तब अपनी घुटन को कुचलने के लिए नशे की ओर प्रेरित होती हैं। उन्हें लगता है कि उनके दुःखों, निराशाओं, पीड़ाओं और हर किस्म की उलझन और विवशता का अन्त हो गया। आमतौर पर महिलायें चोरी छिपे नशा करती हैं और अगर परिवारवालों को या किसी दोस्त को दुर्भाग्यवश या सौभाग्यवश उसके बारे में पता लग भी जाता है तो उसके बारे में उसके 'अपने परायों' की विभिन्न धारणायें उसके जीवन को नीरस बनाने के स्थान पर कुण्ठित कर देती हैं। मानसिक स्तर पर कमजोर ऐसी महिलाओं का जीवन तब अत्यन्त दुःखों से भर जाता है क्योंकि जीवन के ऐसे दो राहे पर वे खड़ी कर दी जाती हैं जहां से उन्हें अपनी मंजिल सिर्फ नशा करके दिखती है। कभी कभी कभार जब वे आत्मग्लानि से भर जाती हैं तब भी वे सिर्फ नशा और नशा ही करती हैं।

आत्मसम्मान के साथ-साथ आत्मग्लानि की भाषा बोलती एक छात्रा कुलदीपकौर जो नशे के जाल में बुरी तरह से उलझ चुकी है, का कहना है "मुझे अपने घर में कभी प्यार नहीं मिला, सभी फटकारते रहते हैं। इसी वजह से मेरा मन कभी पढ़ाई में नहीं लगा। दिन में हजारों बार बात-बात पर लड़की होने का अहसास करवा कर मुझे 'औकात' से वाकिफ करवाया जाता है, बेटे तो...। बेटे तो जैसे इन्हें चांदी के बर्तनों में पानी पिलायेंगे न !

"मैंने दसवीं कक्षा में ही सिगरेट पीना शुरू कर दिया था, घरवालों से छिपकर बाथरूम में या स्कूल में धुआं छोड़ती थी। जब कालेज गई तो क्लासे छोड़कर अपने ब्वाय फ्रेंड का साथ देने लगी। तब उस वक्त उसी ने मुझे अन्य नशों की तरफ धकेला। ब्राउन शुगर के बिना तो मेरा गुजारा ही नहीं होता। आज जब मैं मना करती हूं तो वह ब्लेकमेल करने की धमकी देता है।"

वह कहती है कई बार अपने से घृणा होती है मर जाने तक को भी दिल करता है। आखिर करूं तो क्या करूं ? मैंने हाल में अपने कालेज की एक दीदी के कहे मुताबिक अपने दोस्त को बताए बिना अपना इलाज शुरू कर दिया है, दीदी मेरी इस मामले में मेरी बहुत मदद कर रही हैं पर चुपके चुपके यह सब कब तक चलेगा ? अब अगर घर के लोगों को बताती हूं तो मुसीबत और अगर नहीं बताती तो भी मुसीबत ! धीरे-धीरे अब तो·· पर मैं तो जीना चाहती हूं पर सिर्फ अपने लिए।

महिलाओं की युवातम पीढ़ी में भटकी हुई यह कुलदीप अकेली नहीं है बल्कि ऐसी कई युवा छात्राए (आमतौर पर जो कानवेंट स्कूलों से हैं) जिनके अन्तर्मन में छिपी यही और ऐसी कई दर्दनाक दास्तां हैं।

अपनी समस्याओं के दौर में अपनी मानसिकता को स्थिर बनाए रखने या बनाए रखने का ढोंग करने के लिए भी महिलायें मद्यपान करती हैं। मद्यपान करनेवाली महिलाओं से मुलाकात के बाद उनके नशा करने के कुछ कारणों पर इस तरह रोशनी पड़ती है—

—जीवन के प्रति उदासीनता।

—जीवन के किसी मोड पर एकांत की इच्छा।

—समस्या को समझते हुए, पर किए जाने वाले संघर्ष के लिए खुद को ही न समझना।

—समस्याओं के दौर में किए गये संघर्ष की सफलता या असफलता।

—किसी को भी अपने जीवन उद्देश्य में बाधा बनते देखकर भी परिस्थितिवश उसके विरोध में कोई कदम न उठाने की दशा में वह नशा करके गुस्से को दबाने या कुचलने की कोशिश करती है।

नशेड़ियों को हमारा समाज पुनः स्वीकार करने में हिचकिचाहट से पेश आता है और जहा सवाल नशा करने वाली महिलाओं का हो तो हर कोई इसे तनावपूर्ण स्थिति का जायजा आसानी से ले सकता है। तब उसका परिणाम सिर्फ यही होता है कि नशा छोड़ चुकी महिलाये नशे की तरफ फिर प्रेरित होती चली जाती हैं। ऐसे सलूक से उसमें भविष्य के दिशाहीन व अन्धकारमय होने का डर भर जाता है।

मानसिक उलझनों में घिरी नशा करती महिलाये जीवन की अनिश्चित कडवी सच्चाई से भागती है जिससे आनेवाली पीढ़ी भी प्रभावित होती है। देश के विभिन्न भागों—खासकर दिल्ली, बम्बई और इस जैसे अन्य महानगरो में मादक पदार्थों का धन्धा दिनो दिन जोर पकड़ता जा रहा है। जहा एक ओर लाखों अनगिनत युवक-युवतियां जिनसे भविष्य की सारी आशाये बन्धी हैं वे नशे में डूबे हैं। दूसरी ओर इन मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिए सरकार व पुलिस के कामकाज की ढोल की पोल भी किसी से छिपी नहीं रह गई है। आज हेरोइन, गांजा, अफीम, चरस आदि जैसे खतरनाक नशीले पदार्थ आसानी से उपलब्ध हैं।

जाहिर है नशे ने अपने पांव हर तबके, हर क्षेत्र, हर प्रांत और जहां उसे अभी तक कम से कम नैतिक रूप से प्रतिबंधित समझा जाता रहा है शिकंजा मजबूत कर चुका है। गरीब और दबे कुचले समाज के बीच उनके अपने ही स्तर का नशा है और महानगरों व बड़े शहरों में काले धन वालों के पास अपने ही स्तर का नशा।

नशे की लत में उलझी सब तरह की महिलाओं की मानसिकतायें तकरीबन एक सी हैं। हालांकि परिस्थितियां बिल्कुल भिन्न वे महिलायें नशा करने को बजाय जीवन संघर्ष की ओर क्यों नहीं बढतीं ? वे ऐसा क्यों मान लेती हैं कि आगे अन्धेरा ही अंधेरा है ? अगर नशा ही सब समस्याओं का अन्त होता तो आज हर घर की महिला के हाथ में सिगरेट और दूसरे हाथ में शराब का प्याला होता। हल शायद यही है कि समूचा स्त्री समाज आज जब तक इस समस्या को गभीरता से नहीं लेता तब तक कोई आशा बेकार ही है। जनसत्ता

दूरदर्शन पर भारतीय सभ्यता विरोधी कार्यक्रम

सम्पादक महोदय,

आजकल दूरदर्शन के प्रसारण प्रायः राष्ट्र की मुख्यधारा से कोसों दूर होते है। एक विशिष्ट वर्ग के लिए ही अधिकाश कार्यक्रम दिखाये जाते है। भारत राष्ट्रकवि मथिलीशरण गुप्त या जयशंकर प्रसाद और महाकवि निराला जिनकी एक-एक पक्ति में राष्ट्रीय स्वाभिमान छलकता था, दूरदर्शन की दृष्टि से बहुत परे हैं। बस गालिब और उसके साथ फारसी, अरबी का गल्बा दूरदर्शन पर छाया रहता है।

भारत में मुस्लिम शसकों के सीरियल भी चलते रहते हैं। ६ जून को रामपुर के नवाबों पर सीरियल था। उनकी प्रशंसा के पुल बांधे गए जबकि सब जानते हैं कि पाकिस्तान के बड़े नेता नवाबजादा याकूब खान जो पाकिस्तान में विदेशमन्त्री रहे और भारत को खाक में मिलाने के ही स्वप्न देखते हैं। वे रामपुर के खानदान के ही चिराग हैं। रामपुर के नवाबों के पुस्तकालय का जिक्र किया गया, यह नहीं कहा गया कि यह पुस्तकालय भारतीय नहीं बल्कि पाकिस्तानी अधिक दीखता है।

तुष्टिकरण की यह नीति दूरदर्शन में सर्वत्र दिखाई पड़ती है। जो भी नाटक दिखाए जाते हैं उनमें हिन्दू महात्माओं को धोखेबाज/तिलकधारी तथा मदिर में पूजा करने वाले को बेईमान/धोती पहनने वाले को गरीबों का खून चूसने वाला दिखाते हैं। जबकि मुस्लिम पात्र को समाजसेवी, लोगों का भला चाहने वाला, उदार चरित्र-युक्त दिखाया जाता है।

दूरदर्शन द्वारा हिन्दू समाज की एकता को तोड़ने के भी उपाय किए जाते हैं। वर्ग विद्वेष भड़काने वाले कार्यक्रमों की भरमार होती है। कहीं पिछड़े वर्ग पर सवर्णों द्वारा अत्याचार तो कहीं किसी ठाकुर जमीदार द्वारा उनके मजदूरों और खेती जोतने वाले छोटे किसानों पर अमानुषिक जुल्मों की कहानी।

हजार वर्षों से भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा किए गए क्रूर नरसंहारों को यदि दूरदर्शन पर दिखाया जाए। गौरी, गजनी, खिलजी और मुगलों की अत्याचारी सेनाओं से लोहा लेने वाले भारतीय वीरों के इतिहास को यदि दिखायें, अंग्रेजी दासता के फन्दे से भारत माता को मुक्त कराने के लिए प्राणों को न्योछावर करने वाले क्रांतिकारियों तथा अंग्रेजीयत और अंग्रेजी के चंगुल से देशवासियों को छुटकारा दिलाने के निमित जीवन भर तपस्या करने वाले मनीषियों के कर्तृत्व को यदि दूरदर्शन पर लाया जाए और विश्व के अनेक देशों में फैली भारतीय संस्कृति की झलक यदि दूरदर्शन से प्रसारित हुआ करे तो पिछड़े राष्ट्रों की श्रेणी में गिरा पड़ा हमारा देश फिर से प्राचीन गरिमा को प्राप्त कर उन्नति के शिखर छूने लगे। किन्तु जिन लोगों ने आजकल दूरदर्शन को अपने हाथों का खिलौना बना रखा है, उनके स्थान पर देशभक्ति की दृष्टि रखने वाले कलाकार और अधिकारियों को जब तक स्थान नही मिलता दूरदर्शन में किसी सुधार की आशा करना व्यर्थ है।

—डा० कैलाशचन्द्र

वि. हि प सकट मोचन आश्रम रामकृष्णपुरम नई दिल्ली

अग्रेजी हटाओ

देश बचाओ

स्वागतम् तुझे पन्द्रह अगस्त

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

निज स्वतन्त्रता हित वीरों ने निर्भय होकर जान गंवाई।
अंग्रेजों की नाकों में दम कर डाला न दहशत खाई।
भारत में अंग्रेजी शासन कर दिया सदैव के लिए अस्त।
स्वागतम् तुझे पन्द्रह अगस्त।

भूखे रहकर जेलें काटी तन पर भीषण कष्ट सहे।
लेते रहे प्रबल टक्कर फांसी पर झूले रक्त बहे।
दहल उठे लखकर शत्रु संघर्ष देखकर जबरदस्त।
स्वागतम् तुझे पन्द्रह अगस्त।

भारत को आजाद किया दूर विदेशी दिए भगाई।
आजादी का लालकिले पर तिरंगा ध्वज दीना लहराई।
गूंज उठा राष्ट्रीय गान गाते नरनारी होकर मस्त।
स्वागतम् तुझे पन्द्रह अगस्त।

सैनिक राष्ट्र रक्षार्थ सभी भारत सीमा पर अड़े हुए।
प्रण पालन हेतु वीर योद्धा निशवासर रहते खड़े हुए।
कुचल देय सिर दुश्मन का माने न कभी रण से शिकस्त।
स्वागतम् तुझे पन्द्रह अगस्त।

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं से निवेदन

पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर भिजवावें

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर १९९० तक शराबबन्दी प्रस्ताव करवा कर प्रस्ताव की प्रतियां रजिस्ट्री पावती द्वारा हरयाणा सरकार को भिजवाने का यत्न करें। हरयाणा के कानून के अनुसार जिन पंचायतों के शराबबन्दी प्रस्ताव ३० सितम्बर तक सरकार को प्राप्त हो जावेंगे, उन ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जावेगी। सुविधा के लिए प्रस्तावों के प्रारूप प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह, सभाप्रधान

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैरकानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ

हमारे ग्राम .... जिला ....

में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेन्ट गैरकानूनी ढंग से खुल्लमखुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीने वाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अतः हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाए और जो गैरकानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

प्रतिलिपि सेवा में

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला ....
५. जिलाधीश
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

दिनांक .... ह० सरपंच तथा पंच ग्राम पंचायत

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा

चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....

पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था मे यह पचायत माग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे तथा भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक ....

प्रतिलिपि सेवा में [पहले प्रारूप के अनुसार]

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

नोट—इन प्रस्तावों के प्रारूप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक से भी मिल सकते है। अतः पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क करें।

हरयाणा और स्वराज्य—

(पृष्ठ २ का शेष)

भई बात तो तेरी ठीक सै', श्योचन्द ने जवाब दिया, 'पर तूने नही बेरा मैं इस जालिम सरकार तैं असहयोग का व्रत ले रहया सूं। भला इस जालिम अंग्रेज सरकार का पोस्टकार्ड क्यों खरीदता। अर उस पोस्ट कार्ड पै म्हारे दुश्मन, बादशाह की तस्वीर। जिसने देखे ताप आवै, वोही बर ब्याहवन न आवै।'

इस घटना के थोडे समय बाद श्योचन्द के लडके की शादी थी। पांच आदमियो की बारात चौ. जुगलाल के यहा छेज (जि. रोहतक) पहुंची। व्रतधारी चौधरी ने न दान दहेज लिया, न कपड़े लत्ते। अपने घर से रोटी बाध कर ले गया और वही बारातियों ने खाई। आखरी मे बिदा हुई तो चौ. जुगलाल ने चादी का एक रुपया भेट में दिया। श्योचन्द ने उसे तुरन्त लौटाते हुए कहा: 'चौधरी, म्हारे बालकां के पवित्र ब्याह बन्धन के समय यो ससुरा जार्ज पंचम कड़े तै आ गया (रुपये पर जार्ज पचम की तस्वीर थी)। मेरे तैं तूने यो छुवा कै पाप चढ़ा दिया।'

थोड दिन बाद श्योचन्द ने सरकार को लगान देना बन्द कर दिया। जिला के हाकिम बड़े नाराज हो गए और उन्हें गिरफ्तार करने के आदेश जारी कर दिए। सर छोटूराम के भतीजे चौ. श्रीचन्द को जब इस बात का पता चला तो उन्होने डिप्टी कमिश्नर से कहा कि गिरफ्तार न करो मैं समझा दूंगा। चौ श्रीचन्द श्योचद के पास गए और कहा कि लगान क्यों नही देते। उन्होंने कहा हर साल गांधी जी को चार आने दयू तो सूं (कांग्रेस का सालाना चन्दा) इब मेरी सरकार गांधीजी सै और जेल चले गए। (जनसत्ता) क्रमशः

वीर भारती नारी हैं

भारत में जन्म लिया हमने, भारत को महान् बनायेंगी।
कुन्ती, गान्धारी, सीता हैं, धर्म पर मिट जायेंगी ॥
लव कुश की सच्ची माता हम, कष्ट उठाना भी जानें।
अपने पूरे जीवन को, परहित में लगाना भी जानें ॥
दयानन्द ब्रह्मचारी को हम, कोख से जनने वाली हैं।
परशुराम हनुमान भीष्म को, गोद खिलाने वाली हैं ॥
मर्दानी हैं भारत की हम, जौहर व्रत करना जानें।
आन पर मरने वाली हैं, इतिहास हमारे को जाने ॥
दुर्योधन की जंघा को, हम ही तुड़वाने वाली हैं।
भीष्म जैसे योद्धाओं का हथियार गिराने वाली हैं ॥
हम वही लक्ष्मीबाई हैं, ब्रिटिश साम्राज्य हिलाया था।
बर्छी तीर कटार चले जब, दुश्मन भी घबराया था ॥
अधर्म के राही का तो हम, जड़ से नाम मिटाती हैं।
पैदा कृष्ण राम करें, शत्रु को नष्ट कराती हैं ॥
भारत देश 'महेश' आज फिर से सरताज बनायेंगी।
भारत माता अमर रहे, सभ्य संस्कृति लायेंगी ॥

—महेशचन्द आर्य, पन्हैडा खुर्द

कुछ तो अब करके दिखाना चाहिए

लेखक—कृष्ण मदान (घड़ीसाज) सोनीपत

देश को ऊंचा उठाना चाहिए,
दर्दो गम को भूल जाना चाहिए।१।
बल्कि अपने देश की खातिर हमें,
मुश्किलों में मुस्कराना चाहिए।२।
हम तो भारत देश की सन्तान हैं,
देश ही के काम आना चाहिए।३।
मौत की बातें करें क्यों दोस्तो,
हमको जीने का बहाना चाहिए।४।
नफरतों के घुप अन्धेरों में सदा,
प्रेम का दीपक जलाना चाहिए।५।
'कृष्ण' आए हैं अगर संसार में,
कुछ तो अब करके दिखाना चाहिए।६।

संकलनकर्ता— हरिचन्द स्नेही
जिला संयोजक वेदप्रचार मण्डल सोनीपत

✱ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए वीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं. २३२०७/७३ रजि.

२ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०९०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए. भाद्रपद ६, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३६ २१ अगस्त १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ५० पैसे

भारतीयता का मूल आधार—कर्मफल व्यवस्था

प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर)

●

ससार के साहित्य में आरम्भ से ही भारत की चर्चा मिलती है। हां, समय के साथ उसकी सीमाओं तथा नाम में परिवर्तन आते रहे हैं। भारत का भूभाग अनेकविध पहाड़ी, मैदानी रेतीले, पठार और समुद्रतटीय प्रदेशों वाला है। अत: यहां छ: की छ: ऋतुएं समय, स्थान की अपेक्षा से अपना योगदान देती हैं। भारत की धरती अपने उर्वरापन से जहां अनेकविध अन्नों, फूलों, फलों, वनस्पतियों को उत्पन्न करती हैं, वहां विविध खनिजों, धातुओं से अपने वसुन्धरा नाम को भी चरितार्थ करती है।

भारत में रहने वाले या नागरिक सामान्यत: भारतीय कहलाते हैं, पर वस्तुत: भारत को अपना मानने वाले ही भारतीय हैं। ऐसे भारतीयों की जो भी उपलब्धि, पहचान है, उसी को भारतीयता शब्द से अभिहित किया जा सकता है। वह चाहे बुद्धि, विद्या या बल, श्रम, प्रतिभा, कला से अर्जित की गई हो। भारतीयों के इतिहास का परिशीलन करने से स्पष्ट होता है, कि उन्होंने सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, धर्म और परम्परा के क्षेत्र में हर तरह से भारतीयता को भरपूर किया है। इसीलिए ही भारत जगत्गुरु पद से गौरवान्वित है।

१– सभ्यता—भारतीयता का एक पहलू है—सभ्यता। सभ्यता शब्द सभ्य से ता प्रत्यय लगने पर बनता है, जिसका अर्थ है—सभा के योग्य तथा ऐसी योग्यता से युक्तपन। सभा के योग्य वही कहलाता है, जो किसी सभा=समूह, संगठन में कैसे बोला, बैठा, बर्ता जाता है, की योग्यता रखता है अर्थात् कहीं कैसे रहना—बर्तना चाहिए की योग्यता से जो युक्त होता है, वही सभ्य है। सभा शब्द स+भा का मेल है, जिसका भाव है, जो साथ-साथ चमकें, रहें, बर्तें, जीयें। जिसको समाज शब्द से भी संकेतित कर सकते हैं। अत: सभ्यता शब्द विशेषत: रहन-सहन, खान-पान, वस्त्रधारण, आपस के बोलचाल, बर्ताव जैसे शिष्टाचार को निर्दिष्ट करता है। अत: स्वयं को तत्सम्बद्ध संयम से जोड़कर दूसरों की असुविधाओं का ध्यान रखना ही सभ्यता की कसौटी है।

२– संस्कृति—संस्कृति शब्द सम् पूर्वक कृ धातु से (क्तिन्)प्रत्यय के मेल से बनता है। सम् पूर्वक कृ धातु सफाई, शुद्धि, निखारने के अर्थ में आती है। अत: किसी को अच्छा बनाने, ऊंचा उठाने, उदात्तीकरण की प्रक्रिया का नाम ही संस्कृति है। जो कि विशेषत: आन्तरिक गुणों, नैतिक मूल्यों को अभिहित करती हैं, जिसको सदाचार भी कह सकते हैं।

भारतीय साहित्य में इस भावना को चरितार्थ करने वाला एक अन्य शब्द है—सस्कार। जोकि गर्भाधान से लेकर अन्तिम संस्कार तक के लिए अधिक प्रसिद्ध है। ये संस्कार धर्म के एक अंग अर्थात् कर्मकाण्ड के अंशरूप ही हैं। अत धार्मिक कर्मकाण्ड की दृष्टि से सस्कार शब्द का विशेष तात्पर्य है कि किसी के दोषों को हटाकर उसमें गुणों का आधान करना। तभी तो गर्भाधान आदि संस्कार जीवन की मूलभूत जरूरतों की प्रक्रिया को सिखा कर बालक के जीवन को अच्छा बनाने की पद्धति के अंग होने से भारतीय धर्म में अपना विशेष स्थान रखते हैं।

संस्कार शब्द व्यवहार में प्राय: अच्छा बनाना, सफाई इस सामान्य अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे कि वस्त्रों का संस्कार, भवन का संस्कार करना अर्थात् सफाई, सफेदी, रंग रोगन करके अच्छा बनाना।

संस्कार शब्द प्रभाव, छाप के अर्थ में भी चलता है। जैसे कि दाल का संस्कार अर्थात् उसमें छौंक लगाने पर यह भाव स्पष्ट रूप में सामने आता है। ऐसे ही चमेली के फूल या फरनाइल की गोलियां कुछ समय वस्त्र में रखकर पुन: हटा लेने पर वस्त्र में उस-उस की छाप (बासना) छा जाती है। ऐसे ही दूसरों के संग और पुस्तकों का व्यक्ति पर सूक्ष्म प्रभाव होता है। उसको भी भारतीय साहित्य, धर्म में संस्कार कहा जाता है। तभी तो कहा जाता है जिस व्यक्ति के जैसे संस्कार होते हैं, वह वैसा ही बनता है।

संस्कार—संस्कृति शब्द आकार–आकृति, स्वीकार–स्वीकृति की तरह एक ही अर्थ के वाचक हैं। इन तीनों जोडों में परस्पर केवल प्रत्यय का ही भेद है, पर मूल धातु एक ही है। अत: संस्कृति का जो अर्थ है, वही संस्कार का भी है। संस्कार शब्द विवाह आदि के लिए रूढ हो जाने के कारण सदाचार (आन्तरिक गुणों) के लिए सस्कृति शब्द ही प्रचलित हो गया। हां अंग्रेजी में संस्कृति के अर्थ में कल्चर शब्द प्रयुक्त होता है। जिसका अर्थ खेती भी है और यहां भी निखार, विकास की भावना ही तात्पर्य रूप में सामने आती है।

३– साहित्य—सहित के भाव को साहित्य कहते है। सहित शब्द यहां शब्द+अर्थ के कलात्मक मेल का वाचक है। इसी अर्थ में साहित्य का अन्य नाम काव्य है और इसी दृष्टि से ही साहित्यदर्पण काव्यप्रकाश आदि विषय के विशेष ग्रन्थों के नाम हैं। पर आजकल हर विषय के ग्रन्थ को साहित्य कहा जाता है, क्योंकि सभी विषयों की पुस्तकों में शब्दों के द्वारा उस-उस क्षेत्र के अर्थ, भाव को कहा जाता है। भारतीय साहित्य भी भारत की तरह प्राचीन और विशाल है। (क्रमश:)

● दुनिया की समस्त फौजें तथा सारे हथियार मिलकर इतना विनाश नहीं कर सकते जितनी अकेली शराब कर सकती है।

—मिल्टन

हरयाणा और स्वराज्य की लड़ाई : कुछ भूली-बिसरी रोचक घटनाएं

(गतांक से आगे)

तम्बाकू की खिलाफत :

बात सन् 1938 की है। इस वर्ष कई जगहों पर अकाल पड़ गया था। अतः गांधी जी ने किसानों से अपील की कि 'कहर पड़ रहा है, इसलिए सब किसान अनाज की फसलें बोएं।

तम्बाकू आदि नशीली फसलों के तो पास भी न जाएं।' श्योकन्द गांधी जी के इस ऐलान को गांव-गांव पहुंचा रहे थे। एक दिन वह आसन गांव पहुंचे। वहां चौधरी के यहां ठहरे। अच्छे,बड़े जमींदार थे। १२ बीघे तम्बाकू बो रखी थी। श्योचन्द ने समझाया : 'चौधरी, गांधी जी का हुकम सै तम्बाकू जैसी नशीली चीज न बोवो। चौधरी बोला 'भई श्योकन्द गांधी जी का हुकम हो ठीक से पर मेरे यार इसी फायदे की चीज के छोडी जा सै।' श्योकन्द को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने खीझ कर कहा: 'चौधरी जे इस तै भी फायदे की बात बता दूं तो तम्बाकू बोणी छोड देगा?' भई पक्का वायदा रहया, चौधरी ने आश्वासन दिया। 'चौधरी तेरे दो छोरी सैं। उन ने बेच दे। बारह बीघे की तम्बाकू तै दस गुणा ज्यादा दाम मिलेंगे।' श्योकन्द का तर्क था।

बड़ा भारी झगड़ा हो गया। गांव वाले आ गए, मुश्किल से छूट छुटाव हुआ। पर इस घटना ने श्योकन्द की लगन उसकी अपने उद्देश्य के प्रति समर्पितता और अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा के दर्शन करा दिए।

सरकार की कमजोरी :

बात 1941 की है। व्यक्तिगत सत्याग्रह जोरों से चल रहा था। कृपाराम बरौदा गांव के एक दुबले, पतले वैश्य परिवार से सम्बद्ध सज्जन थे। उन्होंने सरकार के विरुद्ध, युद्ध के खिलाफ नारे लगाए और गिरफ्तारी दी। मुकद्दमा चला। मजिस्ट्रेट ने सरकार से बगावत करने व कानून तोड़ने के जुर्म में लाला जी को सजा दे डाली। लाला जी ने मजिस्ट्रेट का धन्यवाद किया और कहा,'मजिस्ट्रेट साहब,सजा तो आपने दे दी। मैं जेल भेज दिया। पर के तूने सरकार के कानून और इसकी हिफाजत कर ली? जो सरकार इतनी कमजोर सै, कि मेरा जिसा 70 वर्ष कमजोर सा बाणिया उनके चिथड़े-चिथड़े कर दे तो उस सरकार और उसके कानून ने तो भगवान भी नहीं बचा सके, तूं तो चीज के सै।'

वास्तव में कृपाराम की बात सही निकली। कमजोर सरकार को कोई नहीं बचा पाया।

गरीबराम का तर्क

भारत छोडो आंदोलन चल रहा था। सरकार ने कुछ लोगों को गिरफ्तार किया,कुछ को नजरबंद कर दिया, और कुछ पर गाव या जिला न छोडने की पाबंदी लगा दी। पुरखास के चौधरी गरीबराम पर बाद वाली पाबंदी आपद थी अर्थात वह जिला रोहतक नहीं छोड़ सकता था। पर जब देश में आग लग रही हो तो चौधरी गरीबराम घर में कैसे बैठे? उन्होंने जिला छोड़ दिया और करनाल जिले मे गाव-गाव घूम कर लोगों को स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूदने के लिए प्रेरित करने लगे, एक दिन एक अंग्रेज परस्त व्यक्ति ने चौधरी पर फब्त कर दी: दूसरा न तो जेल भिजवाव सं, अर आप छुपता फिरै सै।' चौधरी के बदन में आग लग गई और उन्होंने फैसला किया कि गिरफ्तारी दूंगा और वह भी खूब शान से। एक दिन बहुत सवेरे चौधरी जूंडला नामक गाव में जा पहुंचा। गांव में गली-गली खुद मुनादी की. भाईयो, बहनो आज दिन के बारह बजे, गाव की चौपाल में कांग्रेस का जलसा होगा। उसमें जिला रोहतक के मशहूर नेता चौ. गरीबराम जी आए गे और गांधी जी का 'ताजा सन्देश' देंगे। गांव के पटवारी ने तुरन्त थाने में खबर कर दी। थानेदार और चार सिपाही आ गए 'चौधरी गरीबराम को आज पकड़ना है। बड़े दिनों से जिले में छुप-छुप कर उत्पात कर रहा था।

बारह बजे कुछ लोग जो खुले तौर पर कांग्रेस के साथ थे चौपाल में आ गए। अन्य दूर से तमाशा देखने लगे। किसी ने एक छोटी सी मेज और दो कुर्सियां दे दी। बस जलसे की 'स्टेज' बन गई। चौधरी ने एक कुर्सी के पीछे झंडा बांध दिया और उस पर स्वयं बैठ गया। दूसरी खाली छोड दी-'चौधरी गरीबराम' के लिये।

12 बजकर 10 मिनट पर चौधरी जी खड़े हुए और बोले: 'सज्जनों,देवियों गरीबराम जी जल्दी ही आने वाले हैं। जब तक वह नहीं आए मैं जलसे की कार्यवाही चलाता हूं। पहले झंडे का अभिवादन हुआ:

तिरंगा झंडा है शान हमारी।
इसकी पूजा करो नर-नारी।।

फिर पूरे एक घन्टे का भाषण हुआ। सब कुछ कहा गया। पुलिस चौकस खड़ी रही कब गरीबराम आए और धर दबोचें।

अन्त में चौधरी जी ने कहा:'भाइयो यह सरकार ज्यादा दिन तक नही चलने वाली। इसका बखत आ लिया। यो अंधी सै। मैं गरीबराम सूं। सरकार के सामने खड़ा सूं। अर ये 'गरीबराम नें' ढूंढ रहये सैं। गरीबराम को तुरन्त पकड़ लिया गया। मुकद्मा चला-रोहतक में, श्री लक्ष्मीचन्द वशिष्ठ की अदालत में। मुकद्दमे के शुरू होते ही गरीबराम ने पूछा: मजिस्ट्रेट साहब मेरा कसूर के सै? तुम्हें पता नही? मजिस्ट्रेट कडके। तुम्हें लिखित में आदेश दिए गए थे कि तुम जिला रोहतक की सीमाओं से बाहर नहीं जा सकते। तुमने जिला करनाल में आकर कानून तोड़ा है। चौधरी साहब ने मजिस्ट्रेट को बीच में ही टोकते हुए कहा: जरा ठहरियो मजिस्ट्रेट साहब! पढ़योड़ सो! नक्शे वक्शे भी देखें होंगे एक बात बताओ: इंग्लैंड अर भारत में कितना अन्तर से? 'बहुत ज्यादा', मजिस्ट्रेट ने कहा! हां सात समुंदर बीच में पड़ें सैं, चोधरी ने बात आगे बढाते हुए दूसरा प्रश्न दागा: अर जिला रोहतक अर जिला करनाल में? बहुत थोड़ा, मजिस्ट्रेट का उत्तर था। न्यू कह ना मजिस्ट्रेट जी अक सीम तै सीम लागै से। म्हारा एक दूसरां तै जन्म जन्मातरां का संबंध सै।

भला जब मेरे रोहतक तै करनाल जिले में आण तैं कानून टूट गया तो इन सात समन्दर तैं भी परे तैं. विदेशी अंग्रेजां के आड़े आणे तैं भी तो टूटा होगा। इन नैं तू कुछ भी ना कहै, ये के तेरे फूफा लागैं से?

मजिस्ट्रेट आग बबूला हो उठा और एक वर्ष की कैद की बामुसक्कत की सजा दे डाली। चौधरी ने सजा सुनकर एक फब्ती और कसी "बस बचा ली सरकार?"

ऊपर हमने कुछ मामूली सी दीखने वाली रोचक घटनाओं की चर्चा की है। पर वास्तव में ये मामूली घटनाएं नहीं हैं, और न ही इनकी रोचकता केवल मात्र रोचकता है। इनमें बड़े गहरे तत्व छिपे हुए हैं। इनसे हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन के सगठन, कार्यविधि और रणनीति आदि विषयों पर तो काफी प्रकाश पडता ही है पर इसके साथ-साथ इस बात का भी पता चलता है कि उन दिनों हमारे गांवों में रहने वाले, सामान्य अनपढ़ लोग किस मनोवैज्ञानिक मानसिकता को लिए हुए मुक्ति संग्राम की सामाजिक पृष्टभूमि को विस्तृत कर रहे थे।

—डा० के० सी० यादव

(जनसत्ता से साभार)

अब सिमरनजीतसिंह मान लिंक नहर को मिट्टी से भरेंगे

—प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

१६८४ में प्रकाशसिंह बादल और उनकी किसान यूनियन सतलुज यमुना लिंक नहर को मिट्टी डालकर भरने की धमकी दे रहे थे। इस नहर के द्वारा हरयाणा को रावी ब्यास का पानी मिलना है। पिछले महीने पंजाब कांग्रेस के सचिव मनजीतसिंह बरार १५ अगस्त से मिट्टी डालने की घोषणा कर रहे थे। उनको तो अकल आ गई कि इस स्टण्ट का लाभ कांग्रेस आने वाले चुनाव में नहीं उठा सकेगी, आतंकवादी उनसे बढ़चढ़ कर बोलेंगे और शरारत भी कर देंगे। उन्होंने दो इन्जीनियरों को भी मार डाला और काम ठप्प हो गया। अब सिमरनजीत सिंह मान वही नारा लगाने लगे हैं।

एक बात अकालियों के सब धड़ों को समझ लेनी चाहिए कि पंजाब का साधारण सिख अपने देश से प्यार करता है और वह पाकिस्तान और उसकी मदद पर आस लगाए पंजाब पर पूरी तरह राज करने के सपने देखने वाले महत्वाकांक्षी लोगों को घास नहीं डालेगा। भारत अखण्ड रहेगा और पंजाब उसका एक प्रगतिशील और अग्रणी प्रदेश रहेगा। आतंकवादियों और उनसे मिले जुले हुए समाजविरोधी और देशविरोधी तत्वों की खुराफात के बाद भी पंजाब के किसान की पैदावार निरन्तर बढ़ती जा रही है। पाकिस्तान से वे चाहे कितने ही हाथ मिलायें, आम सिख पाकिस्तानियों का दोस्त नहीं बन सकता, पाकिस्तानी एजेण्ट हिन्दुओं के साथ साथ सिखों को भी कश्मीर घाटी से निकाल चुके हैं। पुराना और नया इतिहास यह नहीं होने देगा।

इसलिए पंजाब के सिख कुछ स्वार्थी नेताओं के उत्तेजना और नफरत फैलाने वाले बयानों के बावजूद हरयाणा के किसानों को अपना भाई मानते हैं। हरयाणा का किसान हृदय से यह चाहता है कि जिनकी जमीन लिंक नहर में गई है उसको दिल खोलकर मुआविजा दिया जाए, एक कीले का मुआविजा हजारों में नहीं लाखों में मिलना चाहिए, परन्तु कुछ सिरफिरे लोग हरयाणा का पानी ही न आने दें, इसको हरयाणा बर्दाश्त नहीं करेगा। सड़क, नहर और रेल उद्योग धन्धों को चलाने के लिए फैक्ट्रियां जमीन पर ही बनेंगी। सभी प्रदेशों को अपने विकास के लिए तथा पड़ोसी प्रदेशों और देश के विकास के लिए जमीन का अधिग्रहण तो करना ही पड़ेगा। सभी प्रदेशों को पड़ोसियों के सहयोग की जरूरत है। यदि हरयाणा को पानी लाने वाली नहर पंजाब की जमीन में से गुजरती है, तो दिल्ली से, उत्तरप्रदेश से, राजस्थान से पंजाब को आने वाली रेलें और सड़कें हरयाणा की जमीन में से होकर आती हैं, उनके द्वारा पंजाब की जरूरतें पूरी होती हैं, कोयला तेल आदि अनेक आवश्यक चीजें आती हैं।

अगर पंजाब हरयाणा का पानी अपनी धरती से होकर न आने दे तो हरयाणा भी कोयला लोहा तेल आदि पंजाब आने से रोक सकता है। भाई भाई के साथ ऐसा कभी नहीं सोचता। मान हमारा भाई है, यदि वह ऐसी शत्रुता की बात सोचता है तो कितना अनुचित काम करता है यह उसे स्वयं सोचना चाहिए।

अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ

सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक ४ नवम्बर, १६६० रविवार को सभा मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर सभा तथा इससे सम्बन्धित आर्य शिक्षण संस्थाओं के वार्षिक वृत्तान्त आय-व्यय तथा बजट स्वीकार किये जावेंगे और सभा के लिए आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी तथा अन्तरंग सदस्यों आदि का निर्वाचन किया जावेगा। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के (जिनका सम्बन्ध कम से कम दो वर्ष पूर्व हो चुका है) निर्वाचित प्रतिनिधियों से निवेदन है कि वे अपने आर्यसमाजों से गत वर्ष का प्राप्तव्य वेदप्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी का शुल्क २० अक्तूबर, १६६० तक सभा के उपदेशकों द्वारा अथवा सभा कार्यालय रोहतक में धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा अवश्य भेजने का कष्ट करें। जिन आर्यसमाजों से प्राप्तव्य धनराशि समय पर प्राप्त हो जावेगी, उनके प्रतिनिधियों को ही समय पर अधिवेशन का एजेण्डा भेजा जावेगा।

—वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

११ अगस्त १६६० को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का दीक्षान्त समारोह विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री चमनलाल महता भारत सरकार के शिक्षा राज्यमन्त्री मानव संसाधन मन्त्रालय विशेष अतिथि के रूप में पधारे।

सर्वप्रथम कुलाधिपति ने ओ३म् ध्वज फहराकर समारोह का शुभारम्भ किया। कुलवन्दना के पश्चात् यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् विश्वविद्यालय के नवस्नातकों को उपाधियां वितरित की गई। पी-एच.डी., एम ए, एम.एस-सी, बी.एस-सी, विद्यालंकार, वेदालंकार आदि के १०४ स्नातकों को कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने उपाधियां वितरित करते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति का परिचय दिया। वयोवृद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य प्रियव्रत जी ने नवस्नातकों को उपदेश देते हुए गुरुकुल की परम्पराओं के अनुसार क्षेत्र में उतरने तथा गुरुकुल की शिक्षा का प्रसार करने का अनुरोध किया। हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार श्री विजयेन्द्र स्नातक तथा ८४ वर्ष के चिकित्सा शास्त्र के महान् पण्डित डा. जतेली को विद्यामार्तण्ड की उपाधियां माननीय मन्त्री श्री चमनलाल महता ने प्रदान करके सुशोभित किया गया। शिक्षा राज्यमन्त्री महोदय ने अपना दीक्षान्त भाषण दिया। कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने नवस्नातकों को आशीर्वाद दिया और उन्हें परामर्श दिया कि आप जहां भी जावें वहां गुरुकुल की छाप बनाये रखें।

श्री जयपाल विद्यालंकार ने पुराने स्नातकों की ओर से नवस्नातकों का स्वागत करते हुए गुरुकुल परिवार में वृद्धि का शुभ समाचार सुनाया। इसी प्रकार सुरीनाम के निवासी नवस्नातक ने गुरुकुल के सभी अधिकारियों का आभार प्रदर्शित किया। संन्यासियों की ओर से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भी नवस्नातकों को आशीर्वाद देते हुए उन्हें परामर्श दिया कि वे अपने जीवन में स्वामी श्रद्धानन्द की शिक्षा को ढालें। इस अवसर पर गुरुकुल शिक्षा पद्धति के परम उपासक स्वामी ओमानन्द सरस्वती भी उपस्थित थे। गत दीक्षान्त समारोह पर इन्होंने संन्यासियों की ओर से स्नातकों को आशीर्वाद दिया था।

"आर्यसमाज और हम"

—जितेन्द्रदेव जसराणा

उस ऋषि दयानन्द जी महाराज ने आर्यसमाज से किन किन आशाओं को लेकर खड़ा किया था, इसकी तो कुछ लिखते नहीं बन पडती। लेकिन एक माली जो पौधे को वैद्यशाला में सुसंस्कारित करके उस पर नाम का ठप्पा नहीं लगाता बल्कि यही भर कहता है कि मैं कुछ नहीं जानता लेकिन भगवान से यही चाहूंगा कि ये मेरे पौधे अपने पूर्ण यौवन में स्वच्छ फलों से लदें चाहे जहां भी उगाये जावें। इन्ही पंक्तियों की आदर्श मर्यादा हमने ऋषि दयानन्द के जीवन से ही मिलती है जब उन्होंने आयसमाज के संस्थापक के रूप में आर्यसमाज का 'सर्वोच्च-पद' ठुकराया था जब किसी आर्य सभासद ने पेशकश की थी। लेकिन वह ऋषि ऐषणाओं को सूक्ष्म रूप से जान चुके थे। उनमें किसी पंथ या मत का उद्धार नहीं किया बल्कि अपने पूर्वज आर्यों के पदचिह्नों पर ही चलना अच्छा समझा। इसीलिए प्राचीन मठाधीश भी हकला गये थे। अरे किन किन विशेषताओं से अवगत कराऊं ऋषि दयानन्द तो निराले मानव धर्म संस्थापक थे। जहां श्रीकृष्ण ने धर्म की स्थापना के लिए सुदर्शन चक्र हाथ में लिया ऋषि दयानन्द ने वेद की ज्वाला हाथ में लेकर वहां भी प्रकाश फैलाया जहां पर लोगों ने घर के दरवाजे बन्द कर लिए थे। चाहे उन्होंने उनको कितना भी रोकना चाहा लेकिन आज वही आर्य सन्तान उनको भूल गयी जो उनके ऋणों से दबी हुई है।

आज आयसमाज कागजों पर सिमट कर रह गया है। दिन प्रतिदिन नये समाज बनते जा रहे हैं। और जो एक परिवार ऋषि ने बनाया था वही घर में दीवार पे दीवार बनाकर बंटता जा रहा है। अगर ऋषिवर आर्यसमाज को कागज पर ही रखते और समाज को बदलने की जरूरत न करते तो शायद हम आज गुलामी की जंजीरों से ही जकड़े होते। आर्यसमाज ने ही उस साईमन कमीशन का बहिष्कार करने के लिए लाला लाजपतराय को शेर बनाया था। तथा उसी ने शहीद भगतसिह को। जिसने अपने सिख मत के केश छेदन प्रणाली को ही तिलांजलि दे दी थी। अगर ये आर्य सुपुत्र कागजों में ही रहते तो आज हम यों न होते आज हमें आर्यसमाज को पहचानना होगा। आर्यसमाज एक जनमानस की भावना है न कि दो चार आर्य सभाओं द्वारा निर्मित सभा।

महर्षि दयानन्द का सारा जीवन सन्यास का ढिंढोरा पीट रहा है। लेकिन आधुनिक कुछ संन्यासी आर्यसमाज के बड़े बड़े पदों पर चैन से बैठे हैं। वो वैदिक होने का दावा अपने हर वाक्य में करते हैं लेकिन उनकी दिनचर्या ही नही मासिक व वार्षिकचर्या में कोई परिवर्तन नही। कोई अपना मठ में आसन लगाए बैठा है कोई गुरुकुल में अनेक व्यवस्थाओं के चिन्तन में लगा हुआ है। यह आश्रम इन चिन्तनों के लिए नही है यह तो गली गली घूमकर कुछ करने का है लेकिन यह दोष तो हम सभी आर्यों में है। लेखक का इशारा केवल आर्य संन्यासियों की तरफ नही है स्वय को भी शर्म से बचाने का प्रयत्न नही कर रहा बल्कि एक आशा को दिल में सजोए हुए है और यह आशा अगर पूरी हो सकती है तो केवल संन्यासियों की तेजोमुखी आभा से। ऋषि दयानन्द पूरे जीवन में तीन दिन-रात्री पर्यन्त ही एक स्थान पर रुकते थे। शायद कारण विशेष पर ही अधिक रुके हों लेकिन हम जहा पर भी बैठे चिपके हैं वहां पर भी आर्य परिवेश पैदा नहीं कर पा रहे हैं।

अभी हाल मे आर्यसमाज में एक और बदलाव आया है जो स्वामी अग्निवेश जी की देन है। उन्होने एक भारतीय आर्यसमाज बनाकर अपने को गुरु पद पर आसीन किया है। क्या गांव-गांव शहर शहर मे जो आर्यसमाज हैं वह इंग्लैंड में स्थापित हैं। इन्होंने इतने वर्षों के अथक चिन्तन से यह समाज खड़ा करने की सूझी। ओह क्या हो गया भगवन आर्यभद्रजनों को। एक आर्य विद्वान् महर्षि पतञ्जलि के योग का भाष्य करते हुए तो समाधि आदि के विषय में क्या क्या और कितना लिख देता है लेकिन जब उसका व्यक्तिगत प्रश्न उठता है तो पाता है शून्य। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का सन्देश यूं ही पूर्ण हो जावेगा। जिस वैदिक साहित्य को पौराणिकों ने चोट पहुंचाई थी उस से भी बढ़कर आज भय है कहीं हम ऋषि दयानन्द को भी बट्टा न लगा दें। दु:खी हृदय से लिख रहा हूँ अगर ऋषिवर आर्यसमाज न खड़ा करते तो कम से कम हम सभी आर्य (हिन्दुओं) के ऋषि होते जो केवल आज हम आर्यों (नामधारी) के बन कर रह गये हैं। वोभी कण्वऋषि संदीप्न ऋषि जैसा सम्मान पौराणिकों से पाते। ओह हमने ऋषि के नाम को बट्टा लगाया है। आर्य सन्यासियों से ही आशा है आप वैदिक धर्म के प्रचार का ही भार उठाओ। ये मठ व गुरुकुल तो तभी कामयाब होंगे।

जय हो ! जय

जिसने जाग्रत ज्योति जगाया,
सत्य — धर्म का पाठ पढ़ाया,
गीता का अमृतमय पावन—
धरती को संदेश सुनाया,
दानवता कर दिया दलित—
जिस ने इस जगती को निर्भय हो ?
कृष्ण ! तुम्हारी, जय हो ! जय हो !!

जन जन को प्रतिबद्ध किया,
'त्याग' 'मनुजता' बद्ध किया,
मोहाक्रान्त पार्थ को तुमने—
धर्म युद्ध—कटिबद्ध किया,
भारत के भगवान तुम्हीं ने—
प्राण दिया शुचि वायु मलय हो !
कृष्ण ! तुम्हारी, जय हो ! जय हो !!

जन जन को देकर नवजीवन,
किया प्रफुल्लित भू का कन कन,
युद्ध महाभारत में तुमने—
दिखलाया स्वशौर्य अप्रमन,
द्वापर के युग पुरुष तुम्हीं ने—
विश्व विजय कर लिया अभय हो !
कृष्ण ! तुम्हारी, जय हो ! जय हो !!

योगिराज हे ! धर्म-धुरन्धर

राष्ट्र तथा जनगण उन्नायक ! संस्कृति के जाग्रत प्रहरी !
जिसकी जयगाथाओं से है, आप्लावित यमुना गहरी।
गीता का पावन संदेशा, दिया तुम्हीं ने धर्म सुरक्षक !
मोह विनष्ट किया अर्जुन का, वैदिक धर्म—सदुपदेशक !
योगिराज ! हे धर्म धुरन्धर ! कर्म तुम्हारे थे निष्काम।
तुमने महिमण्डल के हित में, कर्म सुदिव्य किये सुललाम।
'कर्म करो, फल की आशा तज, यह तुमने उद्घोष किया।
कंस तथा शिशुपाल सदृश, असुरों का वध, जयघोष किया।
राजनीति के कुशल—खिलाड़ी, तुम थे हे कर्मण्य—प्रणेता !
रण—चातुर्य दिखा जगती को, बन तुम्हीं थे विश्व—विजेता।
तुमने युद्ध महाभारत में, रण—कौशल दिखलाया था।
बड़े—बड़े रथियों का दिल भी तुमने ही दहलाया था।
तेरी ही चातुर्य नीति से विजय—श्री पाण्डव पाये।
सारी धरती के योद्धा—वर, तेरे सम्मुख शीश झुकाये।
अपने सत्कर्मों से तुमने, वेद—विहित पथ दिखलाया।
जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, नूतनतम उत्क्रांति मचाया।
तुमसा महापुरुष पा कर के, धन्य हुई भारत—माता।
अपराजेय बना व्यक्तित्व, बने भारत के भाग्य—विधाता।
पूज्य बने, हे कृष्ण ! सुनिश्चय, कोटि-कोटि जन के, स्पन्दन।
हे मानवता के उद्धारक ! आज तुम्हारा दिव्यभिनन्दन ।।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

हैदराबाद सत्याग्रह की अर्द्धशताब्दी के समारोह का समापन

१७ अगस्त विट्ठल भाई पटेल भवन नई दिल्ली, सांय ५ से ७

१७ अगस्त १६३६ के दिन निजाम हैदराबाद ने और उनके प्रधानमन्त्री अकबर हैदरी ने आर्य सत्याग्रहियों के सामने हथियार डाल दिए थे। अपने जन्मदिन की खुशी का सहारा लेकर निजाम ने उस दिन सब सत्याग्रहियों को रिहा कर दिया था।

सत्याग्रह का श्रीगणेश गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के १५ छात्रों से हुआ था, महात्मा नारायण स्वामी शोलापुर से सत्याग्रह के लिए रवाना हो रहे थे और उधर हैदराबाद में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को गिरफ्तार कर लिया था। उस समय की रोचक कहानी श्री क्षितीश विद्यालंकार जो स्वयं उस जत्थे में थे, उन्होंने सुनाई।

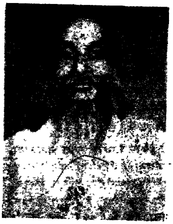
प्रो० शेरसिंह जी ने हैदराबाद सत्याग्रह को आदर्श सत्याग्रह बताते हुए कहा कि गांधी जी को यह कहना पड़ा था कि निजाम के अत्याचारों के बावजूद और कई दर्जनों वीरों के बलिदान के बावजूद सत्याग्रह पूर्ण रूप से अहिंसक रहा और सत्याग्रहियों ने हंसते हंसते जली हुई जुवार की दो दो रोटियां इमली के पानी के साथ खाकर जेल की यातनायें सही। गांधी जी को कहना पड़ा कि उस आदर्श सत्याग्रह से उनको ईर्ष्या होती है यह सत्याग्रह नागरिकता के मौलिक अधिकारों को लेकर हुई थी, बहुत से मन्दिर यज्ञशालाये तोड दी गई थी और किसी को न तो अपने विचारों की अभिव्यक्ति की आजादी थी और न पूजा उपासना की। वह सत्याग्रह राष्ट्रीय आन्दोलन था और सरदार पटेल ने माना कि वह न हुआ होता तो हैदराबाद का पुलिस एक्शन तीन दिन में सफल नहीं होता। अब देर से ही सही भारत सरकार ने सत्यग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी मान लिया है। पहले भारत सरकार हैदराबाद के सैंकड़ों भूमिगत रहकर काम करने वालों को सम्मान पेन्शन नहीं देना चाहती थी, परन्तु बाद में उसने मान लिया। ८० प्रतिशत से अधिक सत्याग्रही तो इस ससार में नहीं रहे परन्तु उनका त्याग और बलिदान हमें सदा सदा प्रेरणा देता रहेगा।

प्रो० शेरसिंह ने यह भी बताया कि कुल ढाई तीन हजार प्रार्थना पत्र ही आए और उनमें भी भारत सरकार नियम ढीले करने पर भी, तथा राज्य सरकार सम्मान पेन्शन नही दे पाई। हरयाणा के ५० के लगभग सत्याग्रही उच्चतम न्यायलय में चले गए और न्यायालय ने निर्णय दिया कि जिनको ६ महीने से अधिक सजा हुई चाहे उन्होंने कितने समय ही जेल काटी हो उनको १६८० से सम्मान पेन्शन मिलनी चाहिए। उन्होंने भारत सरकार से माग की कि इस फैसले के अनुसार सभी सम्मान पेन्शन अधिकारियों को अविलम्ब पेन्शन मिलनी चाहिए।

गृह राज्यमन्त्री बीमार होने के कारण नहीं आ सके। श्री सोमपाल सदस्य राज्य सभा आए और उनका सन्देश दिया। श्री सोमपाल जी ने सभी डिक्टेटरों और प्रमुख सत्याग्रहियों जैसे महात्मा नारायण स्वामी, कुंवर चान्दकरण शारदा, धुरेन्द्र शास्त्री, म० खुशहालचन्द, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, महाशय कृष्ण, श्री विनायकराव विद्यालंकार, आचार्य भगवानदेव, श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती आदि नेता सारे आन्दोलन के प्रबन्ध के मुखिया के रूप में अपनी श्रद्धा व्यक्त की। प्रो० शेरसिंह जी के पिता चौ० शीशराम जो ११ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर गए थे उनको भी याद किया तथा हिन्दी माध्यम के प्रथम केशव मेमोरियल स्कूल के प्रधानाचार्य के रूप में स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी द्वारा भेजे गए प्रो० शेरसिंह को भी बधाई और धन्यवाद दिया।

समारोह की अध्यक्षता श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम ने की। स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, श्री सुभाष विद्यालंकार आदि महानुभावों ने आर्य जनता को सम्बोधित किया और आशा प्रकट की कि देश को जब आवश्यकता होगी आर्य समाज बलिदानों के लिए तय्यार रहेगा। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने २२ दिसम्बर से २६ दिसम्बर १६६० तक होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की भी अपील की।

साधु का स्वर्गवास



श्री स्वामी अमृतानन्द जी पूर्वनाम श्री बलराम चित्रकार का हृदयगति रुक जाने से १३-८-६० को प्रातः काल ७-१५ बजे आर्यसमाज मन्दिर नरेला में स्वर्गवास हो गया। १३-८-६० को श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में शोक सभा में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

स्वामी जी की आयु ७० वर्ष से अधिक थी। आप गुरुकुल वेद-विद्यालय गौतम नगर नई दिल्ली के पुराने स्नातकों में थे। आपने आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर से "आयुर्वेद शास्त्री" परीक्षा उत्तीर्ण की थी। आप रजिस्टर्ड वैद्य भी थे तथा जनता की निःशुल्क चिकित्सा करते थे। एक सिद्धहस्त चित्रकार भी थे। आपने आर्य संस्थाओं यज्ञशाला आदि पर यम नियम वेदमन्त्र आदि अति सुन्दर लिपि में लिखे थे।

वेदव्रत शास्त्री

जि० जीन्द वेदप्रचार मण्डल की बैठक

दिनांक २६ अगस्त को प्रातः १० बजे आर्यसमाज जीन्द शहर में जिला जीन्द वेदप्रचार मण्डल की बैठक रखी गई है जिसमें मण्डल का आगामी कार्यक्रम तैयार किया जावेगा। अतः आर्य समाज के कार्यकर्त्ता बैठक में पधारें। रतनदेव संयोजक

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, यमुनानगर का शानदार परिणाम

यमुनानगर :-हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय का शानदार परीक्षा परिणाम आने से यहा प्रसन्नता व उत्साह फैला है। आर्ष पद्धति से महाविद्यालय के ३१ विद्यार्थियो ने इस वर्ष महर्षि दयानन्द विश्व-विद्यालय, रोहतक की विभिन्न परीक्षायें दी थी जिनमें से २८ विद्यार्थी अच्छे अङ्क प्राप्त करके उत्तीर्ण हुए हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है :-

प्रथमा = १०/१२, पूर्वमध्यमा (प्रथम वर्ष) = ११/१२, पूर्व-मध्यमा (द्वितीय वर्ष) = २/२, उत्तर मध्यमा (प्रथम वर्ष) = २/३, शास्त्री (प्रथम वर्ष) = १/२।

आचार्य वागीश्वर जी एवं उनके सहयोगी अध्यापकों व प्रबन्ध समिति के प्रति स्थानीय आर्य नर-नारी उत्साह व प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं। स्मरणीय है कि नए सत्र से ५५ विद्यार्थी अध्ययनरत हैं सीमित साधनों के कारण लगभग २५ विद्यार्थियों को प्रवेश नहीं दिया जा सका। सर्वविदित है कि महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों के लिए भोजन, निवास व अध्यापन की निःशुल्क व्यवस्था है।

इन्द्रजित् 'देव'
उपमन्त्री, प्र समिति।

गांव सारसा में अवैध शराब के ठेके को तुरन्त बन्द करवाने की मांग

कुरुक्षेत्र १६ अगस्त (कमलेश भटनागर)। गांव सारसा के ग्रामीणवासियों ने पारित एक निर्णय के अनुसार लम्बे चौड़े हस्ताक्षर अभियान के तहत उपायुक्त कुरुक्षेत्र से अपील की है कि वे गांव सारसा के सार्वजनिक स्थान पर खोले गए अवैध शराब के ठेके के तुरन्त बन्द करने के आदेश जारी कर कृतार्थ करें, ताकि सरकार के नशा विरोधी कानून का पालन करने के साथ साथ गांव की महिलाओं का मान सम्मान व सुरक्षा कायम रह सके।

महिला सांस्कृतिक कुरुक्षेत्र की प्रधान कुमारी सुदेश ने बताया कि गांव सारसा में शराब व अश्लीलता के खिलाफ काफी लम्बे समय से एक आवाज उठती रही है। जिस पर कि वर्तमान सरपंच ने एक भारी चोट मारने का एक बुरा कृत्य किया है, जो उसे बहुत ही महंगा भी पड सकता है। उनके अनुसार इस मसले पर गाव के तमाम लोग इकट्ठे हुए जिसमें सरपंच से अनुरोध किया गया कि वे खोले गए शराब के अड्डे को तुरन्त बन्द करवाये लेकिन सरपच महोदय सारे गांव की आवाज को अनसुना करके उक्त शराब के ठेके को बराबर जारी रखने पर उतारु है। तथा गाव वालों द्वारा बुलाई गई पंचायत के बीच में से उठकर बाहर चले गए।

कुमारी सुदेश से मिली जानकारी के अनुसार गाव के वर्तमान सरपंच ने शराब का ठेका एक ऐसे सार्वजनिक स्थान पर स्थापित कर दिया है जहां पर अनेक स्त्री पुरुषों को बस तांगा रिक्शा आदि के लिए घण्टों खडे रहना पडता है। उनके अनुसार यह स्थान आमतौर पर सभी के लिए और विशेष तौर पर महिलाओं के लिए परेशानी और खतरे के रूप में बदल गया है। पता चला है कि जब सरपंच महोदय को गाव की भरी पंचायत में आराम व प्यार से समझाने की चेष्टा की गई तो बिना कुछ कहे सुने सभा से उठकर चले गए। उनके इस रूखे व्यवहार से गांव वाले बहुत ही दुःखी व परेशान नजर आते हैं।

कुमारी सुदेश ने पत्रकारों को इसकी जानकारी देते हुए बताया कि गांववासियो ने एक लम्बे चौडे हस्ताक्षर अभियान के तहत जिला के उपायुक्त महोदय को अपील की है कि वे तुरन्त इस गभीर मसले पर विचार करे तथा अवैध खोला गया शराब का ठेका उक्त सार्वजनिक स्थान से बिना कोई देरी किए यहां से उठवाने के आदेश जारी करें, जिससे कि गांव के बचे खुचे सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण को बचाया जा सके। पता चला है कि उपायुक्त महोदय ने डीईटीसी कुरुक्षेत्र को इस सन्दर्भ में उचित कार्यवाही करने के आदेश जारी कर दिए हैं। जन सन्देश

आर्यनेता चौ० रूपचन्द एडवोकेट का निधन

चण्डीगढ़ के वयोवृद्ध आर्यनेता चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट का गत मास ११ जुलाई १९९० को निधन हो गया। वे लगभग ९० वर्ष के थे। आपने पाकिस्तान बनने से पूर्व लाहौर में तथा भारत विभाजन के पश्चात् शिमला तथा चण्डीगढ में केन्द्र बनाकर आर्यसमाज का कार्य बहुत ही लग्न तथा त्याग भावना से किया। आपने आर्यसमाज विषयक अभियोगो मे नाममात्र शुल्क लेकर पैरवी की।

उन्होंने २२ सैक्टर चण्डीगढ की स्थापना मे विशेष योगदान किया। आर्यसमाज के कार्यों में सदैव तत्पर तथा सादा जीवन और उच्च विचार वाले आर्यनेता के स्थान रिक्त होने की पूर्ति होना कठिन है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एवं परिवारजनो को वियोग सहन करने की शक्ति दे। सभा मन्त्री

हैदराबाद सत्याग्रहियों को सूचना

हैदराबाद सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है कि ५५ सत्याग्रहियों की ओर से भारत सरकार के विरुद्ध सम्मान पेंशन प्राप्त करने हेतु जो दावा जुलाई ८९ में सुप्रीम कोर्ट में किया गया था उसमें हम १६/७/९० को सफल हो गए हैं और अब उस मुकदमे की नकल हमको मिल गई है। न्यायमूर्ति श्री ओ० एल० ओझा एव न्यायमूर्ति श्री एम०एम० पंछी ने अपने निर्णय में भारत सरकार को ये आदेश दिए हैं कि सत्याग्रहियों को ये पेन्शन १/८/८० से दी जाएगी और तीन मास के अन्दर-अन्दर इस पेन्शन का भुगतान करने के आदेश भी दिए हैं। ५५ सत्याग्रहियों में केवल ४१ सत्याग्रहियों के हक में फैसला हुआ है १४ सत्याग्रहियों के कागज पूरे न होने के कारण उन का मुकदमा खारिज कर दिया गया है।

एतद द्वारा हैदराबाद के सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है कि जिन भाइयों ने हमारे साथ मुकदमा नही किया था यदि उनके पास जेल का प्रमाण-पत्र मौजूद है और उनको ६ महीने से ऊपर एक दो या तीन साल की सजा हुई है भले हं, जेल में बतौर कैदी वो चाहे १० दिन ही क्यों न रहे हों। यदि भारत सरकार से सम्मान पैन्शन पाने के इच्छुक हों तो इस सूचना के मिलते ही अपने प्रमाण पत्र की ११, ११ प्रतिलिपियां फोटोस्टेट करवा करके अपने जिले के किसी भी तहसीलदार अथवा एसडीएम अथवा किसी भी राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणित करवा करके हमारे पास दयानन्दमठ में भेज दे साथ ही वकील की फीस की धनराशि २ हजार रु० भी जमा करवा जावे ताकि बाकि सत्याग्रहियों की ओर से भी सुप्रीम कोर्ट मे दावा किया जा सके। जो भाई माफी मांग कर आए या जिनकी सजा ६ मास से कम है उनको इस केस में शामिल नही किया जा सकेगा।

भवदीय
महाशय भरतसिंह, संयोजक
हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पैन्शन समिति

शराब हटाओ
देश बचाओ

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं से निवेदन

पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर भिजवावें

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर १९९० तक शराबबन्दी प्रस्ताव करवा कर प्रस्ताव की प्रतियां रजिस्ट्री पावती द्वारा हरयाणा सरकार को भिजवाने का यत्न करें। हरयाणा क कानून के अनुसार जिन पंचायतों के शराबबन्दी प्रस्ताव ३० सितम्बर तक सरकार को प्राप्त हो जावेंगे, उन ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जावेगी। सुविधा के लिए प्रस्तावों के प्रारूप प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह, सभाप्रधान

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैरकानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....

में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेन्ट गैरकानूनी ढंग से खुल्लमखुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीने वाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अत: हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाए और जो गैरकानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करे तथा उन्हें कड़ी सजा देकर शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करे।

प्रतिलिपि सेवा में

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एव कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४ उप आबकारी एव कराधान आयुक्त जिला ....
५ जिलाधीश ..
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

दिनांक .... ह० सरपच तथा पंच ग्राम पंचायत

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा

चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....

पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे तथा भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक ....

प्रतिलिपि सेवा में [पहले प्रारूप के अनुसार]

सरपंच तथा पचों के हस्ताक्षर

नोट—इन प्रस्तावों के प्रारूप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक से भी मिल सकते है। अत: पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क करें।

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत।
४ मैसर्ज हरीश एजेंसीज 499/17 गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल रुडी बाजार, सिरसा।
८ मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप न० 115, मार्किट न० 1, एन० आई० टी० फरीदाबाद।
९ मैसर्ज सिंगला एजेंसीज सदर बाजार, गुड़गांव।

साम्प्रदायिकता

साम्प्रदायिकता साम्प्रदायिकता तो बहुत चिल्लाते हैं।
पर सबसे बड़े साम्प्रदायिक वे स्वयं बन जाते है।
साम्प्रदायिकता की परिभाषा वे स्वयं नहीं जानते हैं।
उसे परिभाषित करने में वे स्वयं बहुत घबराते हैं।
वे अपने को धर्म निरपेक्ष तो कहते हैं, पर उस आधार पर वही भेद करते
धर्मनिरपेक्ष तो अधर्मी ही होता है,
सम्प्रदाय निरपेक्ष ही सच्चा मित्र होता है।
धर्म तो सदा सार्वभौम ही होता है, जो सभी के लिए एक ही होता है
धर्म तो कोई छोड ही नहीं सकता, जो छोड़े वह अधर्मी होता है।
मत मजहब सम्प्रदाय बहुत हैं, पर धर्म तो केवल एक है।
असत्य के तो रूप बहुत हैं, पर सत्य तो केवल एक है।
धर्म तो न किसी व्यक्ति से बंधा है, और न किसी देश से।
वह न किसी विशेष वेश में है, और न ही परिवेश में।
धर्म तो सबका हितकर्त्ता है, मनुजमात्र के लिए एक है।
जो एक के लिए सत्य धर्म है, दूसरे के लिए भी धर्म है।
चोर तो चोर ही है चाहे वह ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या शूद्र हो
चाहे वह हिन्दू मुस्लिम सिख हो या पारसी ईसाई हो।
भारत में सभी भारतीयों के लिए एक ही कानून होना चाहिए।
जो भारतीय नहीं उसे ही विदेशी कानून से बंधना चाहिए।
जो एक भारतीय का दूसरे भारतीय से भेद करे वही साम्प्रदायिक है
एक ही देशवासी का दूसरे से भेद करना कभी नहीं प्रायिक है।
एक पुरुष के लिए एक समय में यदि एक ही पत्नी होवे।
उस एक धर्म में बंध दोनों प्राणी सुखपूर्वक सोवें।
आपद्धर्म की बात दूसरी, तो वह भी सबको ही समान हो।
पति को दूसरी पत्नी रखने की राय हो तो पत्नी दूसरा पति कर सके।
देश के कानूनों में न किसी भी जाति या सम्प्रदाय का नाम हो।
कानून देश भर का हो और सभी को एक समान हो।
न कोई अल्पसंख्यक हो और न ही बहुसंख्यक हो।
सभी तो हैं भारतवासी सबके हक एक समान हों।
यदि हिन्दू शब्द बुरा लगता है तो मुस्लिम सिख ईसाई भी मत कहो।
सबको ही भारतवासी कहो, या सबको ही फिर आर्य कहो।

—गगाप्रसाद विद्यार्थी एम. ए. एम. फिल.
१७५ जयनगर जबलपुर सिटी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३

सृष्टि संवत् १९६०८५३०९०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री | सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम.ए. | भाद्रपद १३, २०४७ वि०

वर्ष १७ | अंक ३७ | २८ अगस्त १९९० | वार्षिक शुल्क ३०) | आजीवन शुल्क २५१) | विदेश में ८ पौंड) | एक प्रति ६० पैसे

जि० जीन्द वेदप्रचार मण्डल का गठन : स्वामी रतनदेव जी संयोजक मनोनीत

(कार्यालय प्रतिनिधि द्वारा)

जिला जीन्द के आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक बैठक दिनांक १९ अगस्त १९९० को आर्यसमाज मन्दिर शहर में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इससे पूर्व आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में सभाभजनोपदेशक श्री जयपाल जगदीश की मण्डली के वेद [illegible] के महत्त्व पर भजन तथा महाशय रतनसिंह आर्य का [illegible]न हुआ। सभा प्रधान जी, सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री जी [illegible] उप प्रधान महाशय भरतसिंह जी तथा सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता [illegible] सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री के पधारने पर आर्यसमाज [illegible] के अधिकारियों ने हार्दिक स्वागत किया। श्री मोहनलाल आर्य मन्त्री ने सभा प्रधान जी से निवेदन किया कि पूर्व की भांति जींद को आर्यसमाज के प्रचार का केन्द्र बनाने तथा जिला वेदप्रचार का गठन करके में आर्यसमाज सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग देगा।

सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री ने वेद प्रचार आवश्यकता तथा इसके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आर्यसमाज के प्रचार के अभाव से धार्मिक सम्प्रदाय फैल रहे हैं। सामाजिक कुरीतियां बढ़ रही हैं और हमारी वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति को खतरा है। वेद प्रचार से ही इन समस्याओं का समाधान हो सकता है। अतः इसी उद्देश्य से सभा वेदप्रचार मण्डलों का गठन कर रही है।

कन्या गुरुकुल खरल तथा गुरुकुल कुम्भा खेड़ा के संचालक स्वामी रतनदेव जी ने सभा की वेदप्रचार मण्डल गठन करने की योजना का स्वागत करते हुए कहा कि आज समाज सुधार के लिए ग्राम ग्राम में आर्यसमाज तथा आर्य वीर दलों की स्थापना करनी चाहिए। हमारे नवयुवक विदेशी सभ्यता की ओर आकर्षित होते जा रहे हैं। आयसमाज ही उनका मार्ग दर्शक हो सकता है। मैं ३८ वर्ष से शिक्षा के कार्य में लग रहा हूं। अब इस काय के साथ वेद-प्रचार के पवित्र कार्य में अधिक समय निकालूंगा।

सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री ने आर्यकार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए सुझाव दिया कि हमें अपनी सन्तान को वैदिक धर्म से परिचित कराने के लिए स्कूलों की बजाय गुरुकुलों में शिक्षा दिलवानी चाहिए। वैदिक साहित्य का वितरण तथा पारिवारिक सत्सगो का आयोजन करे और आर्यसमाजों मे आपसी मतभेद दूर करके अपना समय वेदप्रचार में लगाव।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने वेदप्रचारमण्डल गठित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वेदप्रचार सभी के सहयोग से सफल हो सकता है। हमारी शक्ति बिखरी हुई है। वेद के विद्वान् तथा उपदेशक कम होते जा रहे हैं। अत वेदप्रचार के कार्य को गति देने के लिए और प्रत्येक आर्यसमाजी पर जिम्मेवारी सौंपने तथा इस पवित्र कार्य मे जो समय देना चाहते हैं उन्हें अवसर देने के लिए जिलेवार वेदप्रचार मण्डल बनाए जा रहे हैं।

आपने सेवा निवृत आर्य अध्यापको तथा अन्य स्वाध्यायशील आर्य कार्यकर्त्ताओ को आह्वान करते हुए कहा कि वे इस महत्वपूर्ण कार्य में जितना समय दे सकें उस से सभा को पत्र आदि लिख कर सूचित करें जिससे उनकी सुविधाओं के अनुसार उन्हें कार्यक्रम दिया जावे। प्रत्येक ग्राम तथा नगर में आर्यसमाज स्थापित करने, वैदिक सस्कार कराने यज्ञ एव सत्सगों पर उनसे लाभ उठाया जावेगा। उपदेशकों की कमी पूरी करने के लिए वेदमन्त्रो की व्याख्या सत्यार्थ-प्रकाश आदि ग्रथों को पढकर सुनाकर सर्वसाधारण जनता में वेद-प्रचार आसानी से हो सकता है।

वर्तमान राष्ट्र की समस्याओ का उल्लेख करते हुए प्रो० साहब ने कहा कि इस सकट की घडी पर जनता आर्यसमाज पर आशायें लगा रही है। अत हमें अपनी पुरानी परम्पराओ को जीवित रखने के लिए समाज सुधार के कार्यों मे जुट जाना चाहिए। भारत को स्वतन्त्र कराने में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ का सबसे अधिक योग-दान रहा है। कांग्रेस आन्दोलन मे आर्यसमाजियो की सख्या सबसे अधिक थी। आपने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि ससार मे भारत ही केवल ऐसा राष्ट्र है जहा अपनी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी जाने बिना सत्ता में बड़े से बड़ा पद प्राप्त हो रहा है। अंग्रेजों की [illegible] तथा लिखनी गौरव की बात मानी जा रही है। सस्कृत तथा हिन्दी सबसे उत्तम भाषा है। वैज्ञानिको ने कम्प्यूटर के लिए सस्कृत भाषा को सभी भाषाओ से उपयोगी माना है। अत हमे अग्रजी भाषा के स्थान पर अपनी राष्ट्रीय भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। आज अनेक राष्ट्रो के विश्वविद्यालयो मे सस्कृत तथा हिन्दी को पूरी रुचि के साथ सिखाया जा रहा है परन्तु भारत मे अग्रजी का प्रचार-प्रसार तेजी से बढ रहा है। अत हमे वेदप्रचार मण्डलों का गठन करके इन आवश्यक कार्यों की ओर अधिक समय देना चाहिए।

प्रिंसिपल मगलदेव जी मा बद्रीप्रसाद जी प्रो ओमकुमार जी, (जीद) श्री राधाकृष्ण आर्य, श्री अनिल आर्य (नरवना), ब्र राम-स्वरूप जी (सफीदो) आदि ने वेदप्रचार मण्डल को पूरा सहयोग तथा समर्थन देने का वचन दिया। विचार विमर्श के पश्चात् स्वामी रतनदेव जी को जिला जीन्द वेदप्रचार मण्डल का सयोजक तथा प्रो० ओमकुमार आर्य को सह सयोजक एव प० चन्द्रभान आर्य-भजनोपदेशक को प्रचार का कार्यभार सौपा गया। शेष मण्डल की कार्यकारिणी का गठन का समाचार आगामी अंक मे प्रकाशित किया जावेगा।

भारतीयता का मूल आधार—कर्मफल व्यवस्था

—प्रा॰ भद्रसेन डा॰ साधु आश्रम (होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

भारतीय साहित्य की प्रथम भाषा—संस्कृत है, क्योंकि यह सर्व-सम्मत है, कि संसार के पुस्तकालय की प्रथम पुस्तक (ऋग्)वेद है, जो कि संस्कृत भाषा में है। संस्कृत के साथ लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व प्राकृत-पाली और पुन: आधुनिक भारतीय भाषायें व्यवहार में आई। संस्कृत भाषा ही अन्य भारतीय भाषाओं का मूल-आधार है। यतो हि उनकी शब्दराशि, व्याकरणप्रक्रिया, कथावस्तु, काव्यतत्व संस्कृत के ही आधार पर हैं।

भारतीय संस्कृत साहित्य की परिगणना वेद, उपवेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदांग, उपांग, दर्शन, स्मृति महाकाव्य, पुराण नीतिशास्त्र के भेद-उपभेद वाले ग्रन्थों से होती है। जिनमें जीवन से सम्बद्ध सभी विषयों का वर्णन है। वह चाहे धर्म, आयुर्वेद, रसायन, भौतिक, जीव, भूगोल, खगोल, पुरातत्त्व, व्याकरण, काव्य, अर्थ, अस्त्र-शस्त्र, वास्तुकला, राजनीति, समाज से सम्बद्ध हो और तो क्या संस्कृत में कामसूत्र तथा चौर्यशास्त्र भी उपलब्ध होते हैं। इस सारे साहित्य के आधार पर ही हमें भारतीयता के विविध पहलुओं का जहां ज्ञान मिलता है, वहां यह भी पता चलता है, कि भारतीयों ने कहां-कहां क्या-क्या सफलता प्राप्त की। अत: भारतीयों द्वारा अपनी विद्या, प्रतिभा, कला, श्रम से उपार्जित धर्म, साहित्य, संस्कृति सभ्यता ही भारतीयता है। भारत का गौरवपूर्ण इतिहास इस बात का साक्षी है, कि भारतीयों ने विविध क्षेत्रों में प्रत्यधिक प्रगति की है। इन उपार्जित सर्वविध साधनाओं का भारतीय जनमानस पर जो अमिट प्रभाव पडा और इस से जो भारतीय भावनाये बनी उन्हीं को ही भारतीयता कहा जा सकता है।

भारतीयता का मूल-आधार या केन्द्र बिन्दु क्या है? यदि यह प्रश्न हमारे सामने उभरता है, तो विचार के अनन्तर हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि वह मूल-आधार कर्मफल व्यवस्था पर विश्वास ही है। अर्थात् भारतीय भावनाओं के जितने भी मूलतत्त्व हैं, उन सब का केन्द्रबिन्दु कर्मफल व्यवस्था ही है। इसी केन्द्र बिन्दु की व्याख्या ही अन्य सब तत्त्व कड़ियां हैं। जैसे कि कर्मों के कर्त्ता के रूप में जीव, कर्मफल के दाता के रूप में ईश्वर और सुकर्मों की ओर प्रवृत्ति के संस्कार देने के लिए धर्म, संस्कृति, वर्णाश्रम आदि हैं। क्योंकि बिना किसी कर्ता के कोई कर्म नहीं होता। कर्म अपना फल स्वयं देने में अक्षम है और फल के देने के लिए कर्म के स्थल, समय, सीमा का ज्ञान होना आवश्यक है। यह सब सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सर्वान्तर्यामी ईश्वर के बिना कठिन है, अत: कर्मफल दाता के रूप मे ईश्वर की सत्ता अनिवार्य हो जाती है। कर्म और उसके फल के क्षत्र के लिए जगत जहां चाहिए, वहां कर्मों के कर्ता को सुकर्म की ओर प्रवृत्त करने या ऐसे संस्कार देने के लिए धर्म, संस्कृति वर्णाश्रम आदि तत्त्व स्वत: अपेक्षित हो जाते हैं।

इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द के ये वाक्य पढने योग्य हैं—'कर्म और कर्म के फल का कर्ता, भोक्ता जीव और कर्मों के फल भोगाने हारा परमात्मा है। (स्वामी वेदानन्द सम्पादित) सत्यार्थ-प्रकाश समु॰ ११, पृष्ठ ३०५; सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है।' ७, १६४

भारतीयता से जुड़े हुए जितने भी ग्रन्थ हैं, उनमें यत्र-तत्र-सर्वत्र किसी न किसी रूप मे कर्मफल व्यवस्था की चर्चा अवश्य ही मिलती है। इसीलिए हो भारत के सभी धर्मों, वर्गों, क्षेत्रों में ऐसी अनेक लोकश्रुतियां सुनाई देती हैं। जिनसे 'जैसी करनी वैसी भरनी' की भावना परिपुष्ट होती है। भारतीय साहित्य के प्रमाणों और जन-श्रुतियों के आधार पर प्रत्येक विचारक इसी परिणाम पर पहुँचता है कि, भारतीयता का मूल-आधार-कर्मफल व्यवस्था ही है। हम सब अपने जीवनों और दुनियां में बहुत कुछ प्राप्त करते हैं। वह प्राप्ति भौतिक रूप में हो या यश, सुख, आयु आदि के रूप में। वह सब भारतीयता के अनुसार कर्मों से ही प्राप्त होता है, भर्तृहरि का भी यही भाव है। अर्थात प्रत्येक उपलब्धि किसी न किसी कर्म का ही परिणाम है। अधिकतर फल जहां अपने कर्मों के ही परिपाक के रूप में प्राप्त होते है, तो वहां कुछ परोपकार के रूप में भी। अत: कर्मफल व्यवस्था ही भारतीयता का मूल आधार है। इसी सारे रहस्य को स्पष्ट करते हुए भर्तृहरि के भाव को गोपालदास गुप्त ने इन शब्दों में व्यक्त किया है।

नमस्कार है सब देवों को, पर वे भी हैं विधिवश दीन।
है वह विधि भी वद्य, किन्तु है फल में वह भी कर्माधीन॥
है फल कर्माधीन तथा क्या विधि अरु देवों से काम।
जिन पर वश न विधाता का भी, कर्मदेव को उन्हीं प्रणाम॥

जिस संसार में हम रहते हैं और जीते हैं, उसमें अनेक तरह की विषमतायें मिलती हैं। इस विषमता का कहीं-कही तो स्पष्ट ही कोई सामयिक कारण सामने आ जाता है। जैसे कि एक ही खेल को अनेक खिलाडी खेलते हैं, पर उन में स्पष्ट ही विषमता प्राप्त होती है और वह अपनी-अपनी क्षमता, योग्यता, अभ्यास तथा रुचि या सुविधा आदि के कारण होती है। इसीलिए उनको प्राप्त होने वाले स्थानों और पुरस्कारों मे विषमता मिलती है। विषमता का दूसरा उदाहरण किसी उद्योग, शिक्षा आदि स्थल पर कार्य करने वालों के वेतन में देखा जाता है। इस विषमता का एक कारण तो उस-उस कार्यकर्ता का परिश्रम, योग्यता सूझ-बूझ होती है। अनेक बार हम स्पष्ट रूप से देखते हैं, कि एक सा कार्य करने वालों में योग्यता, क्षमता, अभ्यास के भेद से विषमता होती है। इस आधार पर जब उनके वेतन में अन्तर होता है, तो किसी प्रकार का असन्तोष नहीं उभरता। हा, कई बार कहीं पक्षपात पूर्ण अन्याय भी देखा जाता है। यहां उसका प्रसंग नहीं, क्योंकि वह स्पष्ट अन्याय होता है।

इसी प्रकार हमारे सामने एक और भी स्पष्ट सा क्षेत्र है। जहां अनेकों को अनेक तरह से अच्छा, बुरा घोषित करके तदनुसार फल दिया जाता है जिसको हम न्यायालय कहते हैं। जिसकी प्रक्रिया पूर्णत: स्पष्ट है, पुनरपि चाहे उसमें आज होशियारी दिखाते हैं, पर सामान्यत: जब कोई निर्णय न्यायपूर्वक होता है, अर्थात् जिसका जैसा कर्म है, वैसा ही फल दिया जाता है, तो हम कहते हैं, कि 'दूध का दूध-पानी का पानी' अलग हो गया।

ठीक इसी प्रकार, कर्मफल व्यवस्था की बात है। ईश्वर को मानने वाले सारे के सारे ईश्वर को कर्मफलदाता भी मानते हैं। इसीलिए ईश्वर को न्यायकारी न्यायाधीश कहा जाता है। संसारी न्यायाधीश तो अल्पज्ञ, अल्पदेशी, अल्प सामर्थ्य वाला होने से गवाहों, वकीलों आदि के आधार पर निर्भर होता है। पर ईश्वर तो सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी होने से सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। अत: वह पूर्ण न्याय करता है।

ईश्वर यह सारा न्याय कर्म करने वालों के कर्मों के आधार पर ही करता है। इसीलिए ही इसमे विषमता अनेक रूपों मे स्पष्ट देखी जाती है। जब यह विषमता कारण के आधार पर होती है, तो उसको न्यायपूर्ण कहते हैं।

इस सम्बन्ध में अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की तरह हिन्दी भाषा के ये वाक्य प्रसिद्ध हैं। जैसे कि 'जैसी करनी-वैसी भरनी' जो जस करे तसु फल चाखा, कर्म प्रधान विश्व रचि राखा; कर्म गति टारे न टरे; जैसा कर्म करे वैसा फल दे भगवान'। संस्कृत भाषा का

शेष पृष्ठ ५ पर

देश के नेताओ यदि देश बचाना है तो आरक्षण पर ऋषि दयानन्द की बात मान लो

—राममेहर एडवोकेट, रोहतक

ऋषि दयानन्द ने सन् १८७४ में सत्यार्थप्रकाश नामक ग्रन्थ लिखा और यदि सत्यार्थप्रकाश के तीसरे और छठे समुल्लास को गहराई से पढा जाए तो आरक्षण पर ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त सामने आता है। यदि इसे अपनाया जाये तो यह राष्ट्र बच सकता है नहीं तो राष्ट्र जहां भीतरी और बाहरी बहुत समस्याओं से उलझा हुआ है वहीं आरक्षण समस्या भी देश के लिए घातक होगी।

आज सारे देश में आरक्षण विषय पर चर्चायें चल रही हैं और यह बात चर्चाओं तक सीमित न रहकर सारे देश में आरक्षण के पक्ष में और विरोध में ज्वालाये उठ रही हैं दोनों ही देश की एकता और अखण्डता को अपनी लपेट में ले रही हैं। इन आन्दोलनों के बहुत भयंकर परिणाम निकलेंगे जो देश के लिए घातक सिद्ध होंगे।

जब मैं यह लाईन लिख रहा हूं तो नौजवानों के जलूस मण्डल आयोग की सिफारिश के विरोध में नारे लगाते हुए बिल्कुल मेरे साथ से गुजर रहे हैं जवानों में जोश है और प्रदर्शनकारियों की सख्या समाप्त होने को नहीं आती। कल परसों में इन्ही प्रदर्शनकारियों ने सरकारी सम्पत्ति को बहुत नुकसान पहुंचाया और पुलिस ने भी लाठीचार्ज करने में कमी नही छोड़ी। बातें दोनों ही गलत हैं। राष्ट्र की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाना भी और निहत्थे विद्यार्थियों पर लाठीचार्ज करना भी।

अभी-अभी नौजवानों का एक और भारी जलूस साथ से गुजर रहा है। वह बहुत जोर से नारे लगाते जा रहे हैं। देश के प्रधानमन्त्री के साथ अपनी बहुत सी रिश्तेदारियां बता रहे हैं और हाय-हाय के नारे भी लगा रहे हैं। जहां और नारे लगा रहे हैं उनमें एक नारा यह भी है 'एक दो दिन की बात है इन्साफ हमारे साथ है।' जहां मैं बैठा हूं आसपास इसी विषय पर गर्मागर्म चर्चायें हो रही हैं और कभी कभी कोई अफवाह भी चल जाती है जिसमें सरकारी सम्पत्ति को नुकसान, पुलिस के साथ विद्यार्थियों की भिड़न्त की बातें होती हैं। पता नही कितना सच है कितना नहीं। जहां से मैं यह लाईन लिख रहा हूं यह रोहतक न्यायालय का प्रांगण है और साथ से सडक जाती है जिला उपायुक्त को ज्ञापन पत्र देने के लिए सभी प्रदर्शनकारियों को इसी रास्ते से गुजरना पडता है। अभी मेडिकल कालेज के छात्र-छात्राओं का जलूस बड़े शिष्टाचार के साथ जा रहा है। एक विद्यार्थी को बुलाकर मैंने पूछ लिया क्या बात है ऐसा तुम क्यों कर रहे हो तो उसने कहा यदि लिखित परीक्षा मे स्वर्ण जाति के विद्यार्थी को 70% अङ्क मिलते हैं तो उसका मेडिकल कालेज में दाखिला नहीं होता और अनुसूचित जाति का विद्यार्थी 10 प्रतिशत अङ्क भी प्राप्त कर ले तो उसे डाक्टरी में दाखिला मिल जाता है। भोलाभाला विद्यार्थी कहता है कि वकील साहब अब आप ही बताओ ऐसा डाक्टर मरीजों का क्या उपचार करेगा और यही कारण है कि जब बड़े नेता बीमार होते हैं तो उन्हें विदेशों के हस्पतालों का सहारा लेना पड़ता है। कई समूहों के प्रदर्शनकारियों में से एक एक को बुला कर मैंने पूछा तो उन्होंने अपने तर्क दिए और कहा कि पानी सिर से गुजर गया है देश के नेता वोट की खातिर इस देश को पता नही कहां ले जायेंगे उन्हें वोट की चिन्ता है देश की नही।

एक पक्ष यह है कि पिछड़ी हुई जातियों को नौकरियों तथा अन्य स्थानों पर आरक्षण मिलना चाहिए क्योंकि ये जातियां बहुत दिनों से दबी रही हैं और पता नहीं समाज के कितने अत्याचार इन्होंने सहे हैं। विधान के अनुसार यदि आरक्षण नहीं मिला तो यह पिछड़े के पिछडे रह जायेंगे अतः उनका कहना है कि पिछड़ी जातियों के आधार पर आरक्षण उचित है।

दूसरा पक्ष यह है कि गरीब व्यक्ति हर जाति में हैं और यदि कोई गरीब अनुसूचित जाति में पैदा न होकर किसी दूसरी जाति में में पैदा हो तो उसे आरक्षण की सुविधायें क्यों ना मिले आरक्षण जात पात के आधार पर न होकर आर्थिक आधार पर होना चाहिए।

वैसे दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद दोनों की बातों में वजन दिखाई देता है किन्तु यह दोनों ही सिद्धान्त देश के लिए घातक है। तीसरा सिद्धान्त है मैं जिसको ठीक मानता हू वह है ऋषि दयानन्द का सिद्धांत।

ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त यह है कि "जब बच्चे आठ वर्ष के हों तभी लडकों को लड़कों की और लडकियों को लड़कियों की पाठशाला में भेज देवें और सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिए जायें चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो चाहे दरिद्र के सन्तान हों।" जातपात आर्थिक परिस्थितिया इस बीच में नहीं आनी चाहिये इस समान व्यवस्था मे बिना ऊंच-नीच के भेदभाव के यह विद्यार्थी पढ़े और जब स्नातक बनकर शिक्षा समाप्त करके निकले तो योग्यता के आधार पर इन्हे नौकरियां दी जावे। शिक्षा, खानपान, वस्त्र, दवाई आदि पर सारा खर्च सरकार स्वय करे और घर से विद्यार्थी को एक पैसा भी न देना पडे और यदि घर वाले विद्यार्थी को खान-पान के लिए कुछ देना चाहें तो वह भी वर्जित हो।

मेरे विचार से यही रास्ता देश को बचाने तथा सुसगठित करने का है। पर पता नही मेरी यह बात देश के नेताओं तक पहुंचेगी या नही और यदि पहुंचेगी तो क्या उनके गले से नीचे उतरेगी या नहीं। किन्तु मैं तो देश के नेताओं को यही कहना चाहता हूं कि—

"देश के नेताओ यदि देश को बचाना है तो
आरक्षण पर ऋषि दयानन्द की बात मान लो।"

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल के लिए एक ऐसे पुरोहित की आवश्यकता है जो सभी सस्कार करवा सके तथा आर्यवीर दल की शाखा लगा सकें। इच्छुक पुरोहित मिलें।

—सुभाष आर्य मन्त्री

आर्यसमाजों के चुनाव

नाम आर्यसमाज	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
नयाबांस (रोहतक)	बलवन्तसिह	रामकुमार	लक्ष्मणसिंह
मदाना (रोहतक)	ईश्वरसिंह	सत्यवीर	लालचन्द
बूरा खेड़ी (भिवानी)	खुशीराम	कृष्णकुमार	चैनसुख
कलावड़ (रोहतक)	सज्जनसिंह	दयाचद	राजसिंह
धामड़ (रोहतक)	दरियावसिंह	शमरसिंह	राजेन्द्रसिंह
रुड़की (रोहतक)	उदयप्रकाश	उमेदसिंह	महेंद्रसिंह
मकड़ौलीकलां (रोहतक)	दलीपसिंह	राजेंद्रसिंह	बलवंतसिंह
सोहटी (सोनीपत)	दलबीरसिंह	कवलसिंह	प्रेमसिंह
बिगोवा (भिवानी)	मुख्त्यारसिंह	धर्मसिंह	कशमीरसिंह
मालकोष (भिवानी)	कृष्णकुमार	सेवासिंह	पोहकरसिंह
रानीला (भिवानी)	रामफल	रामेश्वरदास	बलवन्तसिंह
रईया (रोहतक)	महालाराम	दिनेशकुमार	रघवीर
मिलकपुर (रोहतक)	मनफूलसिंह	होश्यारसिंह	फतेसिंह

चुनौती और आह्वान

हे आर्यजनों अब शीघ्र उठो ! प्रिय देश-धर्म बचाने को।
जो इसे मिटाना चाहते हैं उनके षड्यन्त्र मिटाने को ॥
भीतर-बाहर इसके शत्रु कर रहे हैं सब इस पर प्रहार।
हम किंकर्तव्यविमूढ बने सह रहे हैं यह सब अत्याचार ॥
दयानन्द की दया से ही हमने प्रिय वेद धर्म अपनाया है।
रचकर सत्यार्थप्रकाश सकल जग को सत्मार्ग बताया है ॥
इस ग्रंथ में ईश्वर, जीव जगत् आध्यात्म का अद्भुत ज्ञान दिया।
वर्णाश्रम, शिक्षा राजधर्म सब ही विषयों का बखान किया ॥
मजहब, मत असत् अवैदिक हैं वेदों का प्रबल प्रमाण दिया।
भारत की स्वतन्त्रता का सबसे पहले ऋषि ने आह्वान किया ॥
इस देश धर्म के लिए दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम।
बलिदान हुए, अति कष्ट सहे, त्यागी सुख सम्पत्ति और धाम ॥
इनके सब सच्चे अनुयायी आर्यों ने त्याग महान् किए।
भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी भारी बलिदान किए ॥
क्या हैदराबाद का धर्म-युद्ध, पंजाब का हिन्दी आन्दोलन।
गोरक्षा के सत्याग्रह में भी गए थे सहस्त्रों आर्य-जन ॥
उस महा यशस्वी संगठन का क्या पहला सा अब दल-बल है।
ऋषिवर के बताए वेद मार्ग पर आर्यसमाज क्या अविचल है ॥
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का हमने जो लगाया था नारा।
उसके अनुसार बनाया क्या यह वैदिक धर्मी जग सारा ॥
यह आर्यावर्त महान् देश भारत से हिन्दुस्तान बना।
इण्डिया बना फिर एक भाग खण्डित हो पाकिस्तान बना ॥
अब ऐसे ही षड्यन्त्र हैं कि यह भारत पुनः विभाजित हो।
इस्लामी राज्य हो भारत में, यह आर्य जाति निष्काषित हो ॥
इस कार्य हेतु ईसाई, मुस्लिम देशों से धन आता है।
जो हिन्दू धर्म का परिवर्तन व दंगे नित करवाता है ॥
पंजाब और काश्मीर प्रांत में होती हैं नित हत्यायें।
हिन्दुत्व और मन्दिर विनाश की बढ़ती जा रही घटनायें ॥ १
कशमीर की विकट अवस्था को शासक भी दुखद बताते हैं।
पर इसकी जननी धारा तीन सौ सत्तर नहीं हटाते हैं ॥
आतंकवाद, हत्या व लूट से ग्रस्त यह सारा भारत है।
यह पाकिस्तानी तत्वों की इस देश में घोर शरारत है ॥
मजहब व राज्य विदेशी ही इन लोगों को लगता प्यारा।
सद्भाव-एकता भाईचारे का इनका झूठा नारा ॥
जिस भारत में यह जन्मे हैं जिसके अन्न जल से पलते हैं।
उस देश धर्म की संस्कृति के विपरीत सदा ये चलते हैं ॥
गंगा-यमुना, कांशी-मथुरा, श्री राम जन्म-भूमि को तज।
मक्का व मदीना अरब देश में जाकर यह करते हैं हज ॥
इनकी हमदर्दी पाक से है, भारत के प्रति घृणा करना।
भारत के भीतर घुसी हुई, यह पाकिस्ता की है सेना ॥
सरकार ने वोटों के कारण ही इन्हें बहुत पनपाया है।
भारत में राष्ट्राध्यक्ष और गृहमन्त्री आदि बनाया है ॥
इनको प्रसन्न रखने के लिए इनकी सुविधा पर बल देती।
सुप्रीम कोर्ट तक के निर्णय व संविधान बदल देती ॥
परिवार नियोजन के कारण हिन्दू संख्या ही घटती है।
पर मुस्लिम-पत्नि तो अनेक दस-दस बच्चे तक जनती है ॥
यह हाल रहा तो भारत में हिन्दू ही अल्पसंख्यक होंगे।
तब प्रजातन्त्र में बहुसंख्यक ही भारत के शासक होंगे ॥
तब यहां धर्मनिर्पेक्ष राज्य क्या राम-कृष्ण का नाम रहेगा।
क्या वेद-शास्त्र जलने से बचेंगे, हिन्दू रक्त क्या नहीं बहेगा ॥
क्या मन्दिर फिर न टूटेंगे, नारी सतीत्व क्या नहीं लुटेगा।
ऋषि दयानन्द, गांधी सुभाष व भारत का क्या नाम बचेगा ॥
इस टी. वी. पर होता प्रचार इस्लाम और ईसाइयत का।
अश्लील और हिंसा के फिल्म कर रहे पतन इस भारत का ॥ २
अन्याय, अविद्या अंधकार से ग्रस्त है भारत की जनता।
मंहगाई भयंकर – भ्रष्टाचार से ग्रस्त है भारत की जनता ॥
आशा थी कि सरकार बदल कर जो सरकार आएगी।
सुलझेगी सभी समस्यायें जनता के कष्ट मिटाएगी ॥
पर वही पुरानी रीति-नीति परिणाम सुखद न निकला है।
है लाश पुरानी वही सड़ी बस सिर्फ कफन ही बदला है ॥
यह देश, धर्म की दुःखद अवस्था अब तक भी जो हो पाई।
सरकार और हिन्दू ही नहीं, आर्यसमाज भी है उत्तरदायी ॥
है भूल हमारी भी हमने भूले, बिछुड़े अपनाए नहीं।
श्री श्रद्धानन्द स्वामी के चलाए शुद्धि चक्र चलाए नहीं ॥
हिन्दू व आर्य मन्दिर, भवनों पर लाखों रुपए लगाते है।
पर देश-धर्म रक्षार्थ शस्त्र और सैनिक नहीं बनाते है ॥
अधिकांश आर्यसमाजों में, जो भी पौराणिक आते हैं।
वैदिक धर्मी वे बनते नहीं, पौराणिक ही रह जाते हैं ॥
सिद्धान्त और स्वाध्यायहीन अधिकांश गए अधिकारी बन।
राजनैतिक अनार्य दलों में फंस त्याग दिया वैदिक जीवन ॥
अपना दल वैदिक राजनीति का बना सका न आर्यसमाज।
इस कारण इसकी भारत में न शक्तिशाली है आवाज ॥
हे आर्यजनों अब शीघ्र उठो संगठन व शक्ति बढाने को।
स्व-धर्म, स्व-देश की रक्षा हित अपना कर्तव्य निभाने को ॥ ३
रक्षाबन्धन, श्रीकृष्ण जन्म दिन पर्व यही तो कहते हैं।
निज देश धर्म की रक्षा का यह शुभ सन्देशा देते हैं ॥
ऋषि बोध दिवस, बलिदान दिवस आते हैं यही बताने को।
ऋषि दयानन्द का सन्देशा "भास्कर" घर-घर पहुंचाने को ॥
हे आर्य जनों अब शीघ्र उठो ! प्रिय धर्म देश बचाने को।
जो इसे मिटाना चाहते हैं उनके षड्यन्त्र मिटाने को ॥

भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर।

वीर्य का प्रताप

वीर्य नष्ट करने से मृत्यु धारण से जीवन है,
सोचो समझो और विचारो यह अनमोल रत्न है।
तेल चढ़े बत्ती के द्वारा तभी तो दीपक जलता,
चढ़ता रहे वीर्य ऊपर चेहरे पर तेज झलकता।
परशुराम [illegible] सामने भीष्म नहीं परास्त हुआ,
झुकना पड़ा था कृष्ण को भी भीष्म पर हथियार लिया।
भरत-वंश विस्तार बीज को अभिमन्यु ने बोया था,
शक्ति नहीं अखण्ड रही तभी समर में सोया था।
शक्ति के बल हनुमान ने सागर क्षण में पार किया,
थप्पड़ मार काल के मुख पर अपना मार्ग साफ किया।
बिन्दु धारण करने वाला ईश्वर तुल्य हो जाता,
त्रिभुवन की हर वस्तु को बड़ी सुगमता से पाता।
शक्तियों का यही खजाना दृढ़ता से पालन कर लो,
एक साधे सब सध जाते देह वीर्य से भर लो।
करता नष्ट वीर्य को हर जगह नष्ट वह होता है,
धारण करे वीर्य को विजयी हमेशा रहता है।

महेशचन्द्र आर्य
ग्रा० व पो० पन्हैड़ा खुर्द
त० वल्लभगढ़ जि० फरीदाबाद (हरयाणा)

आर्यसमाज जसराणा जि. सोनीपत

दिनांक १४ जुलाई से १६ जुलाई ९० तक ग्राम जसराणा में आर्यसमाज जसराणा द्वारा आर्य सम्मेलन मनाया गया। वेदकथा श्री रामचन्द्र जी द्वारा प्रतिदिन की गई। १५ जुलाई को बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में ब्रह्मा का आसन स्वामी ध्रुवानन्द आश्रम गोरड़ ने विभूषित किया। पुरोहित पद श्री जितेन्द्र (शिल्प शास्त्री) व श्री सुखवीर आर्य ने ग्रहण किया। ब्रह्मचारी जितेन्द्रदेव के द्वारा ब्रह्मचारी आश्रम से विभूषित अनेक ब्रह्मचारी सम्मेलन की विशेष शोभा थे। वेदपाठ महर्षि दयानन्द विद्यापीठ के ब्रह्मचारियों ने किया। यज्ञ के उपरांत स्वामी जी ने मोक्ष के विषय में विचार रखे।

सायंकाल वेदकथा पर भी स्वामी ध्रुवानन्द जी अपने प्रवचनों द्वारा ज्ञान की गंगा बहाते रहे तथा आर्यसमाज व आर्य व्यायामशाला हेतु दान भी देते रहे। मुख्य दानी महानुभाव इस प्रकार है :

स्वामी सूर्यदेव जी व मा० रामकिशन जी ने २१२१ रु०, मा० मांगेराम जी १२०० रु०, ११०० देने वाले इस प्रकार हैं—कुंवर जोहरीसिंह के सुपुत्र, हरचरण थानेदार, हरिसिंह (अध्यक्ष), जिले सिंह (संरक्षक), नफेसिंह डीटीसी, रायसिंह, बलबीरसिंह जोगीराम, (जुलाना) ५०५) देने वाले—रमेश आर्य आईएएफ, कर्मवीर आर्य बीएसएफ पं हरज्ञानसिंह, राममेहरसिंह ५२५), जिलेसिंह डीटीसी व नरेन्द्रसिंह आईएएफ ५०१, बदलेराम ३०१)।

नाम-करण संस्कार

आर्यसमाज लोहचप जिला जीन्द के भूतपूर्व प्रधान श्री रामफल जी आर्य के सुपुत्र का नामकरण संस्कार २८-७-९० को गुरुकुल कालवा के श्री यज्ञदेव जी याज्ञिक के ब्रह्मत्व में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। याज्ञिक जी ने बच्चे का नाम सत्यदेव आर्य रखते हुए आशीर्वाद प्रदान किया कि यह बालक पूर्ण सत्यनिष्ठ हो तथा संस्कार पर उपस्थित सभी नर-नारियों ने बालक को सत्यवादी एव शतायु होने का आर्शीवाद दिया।

मन्त्री आर्यसमाज
लोहपच, जिला जीन्द

आर्य वीर दल करतारपुर

संरक्षक—श्री देवदत्त शास्त्री वेदालंकार, प्रधान—ब्र. अनन्त कुमार आर्य, मन्त्री—ब्र विमल प्रकाश आर्य, प्रधान शिक्षक—ब्र. प्रियव्रत आर्य, सह शिक्षक—ब्र. रतन कुमार आर्य, संगठन मन्त्री—श्री अजय कुमार शास्त्री, कोषाध्यक्ष—ब्र. आशीष सामन्त, प्रचार मन्त्री—ब्र. मुकेश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—ब्र. दयानन्द आर्य, सह पुस्तकाध्यक्ष—ब्र. वेदप्रकाश आर्य।

आर्यसमाज पसड़ी (मेरठ) का निर्वाचन

संरक्षक—मा० जुगल किशोर आर्य, प्रधान—आजादसिंह, उप प्रधान—राम गोपाल आर्य, मंत्री—बृजवीरसिंह, उप मन्त्री—विनोद कुमार, अशोक कुमार, कोषाध्यक्ष—दिलावरसिंह पुस्तकालय अध्यक्ष—प्रहलादसिंह, प्रचार मन्त्री—श्रीपालसिंह आर्य।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक चुनाव

म० धर्मपाल—प्रधान, सर्वश्री सूर्यदेव, सत्यानन्द आर्य, विशम्भरनाथ भाटिया, हीरालाल चावला—उपप्रधान डा० शिवकुमार शास्त्री - महामन्त्री, सर्वश्री अजय सहगल, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, विमलकांत शर्मा, हरीश कालड़ा—मन्त्री, श्री ओमप्रकाश कपूर - कोषाध्यक्ष एव श्री सुदेश मित्र - लेखा निरीक्षक।

● सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने मे सदा उद्यत रहना चाहिए। —स्वामी दयानन्द

उपनयन व वेदारम्भ संस्कार सोत्साह सम्पन्न

यमुनानगर—दिनांक ५ अगस्त ९० को प्रातःकाल श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, यमुनानगर में नवीन ब्रह्मचारियों के उपनयन व वेदारम्भ संस्कार यहां सोत्साह सम्पन्न हुए। महाविद्यालय के आचार्य श्री वागीश्वर शास्त्री के कुशलपौरोहित्य में सम्पन्न हुए इस कार्यक्रम में नगर व निकटस्थ गांवों के गणमान्य अनेक नर-नारी सम्मिलित हुए। प्रातः पौने आठ बजे से अपराह्न बारह बजे तक यह कार्यक्रम चलता रहा जिसके मध्य पूज्य आचार्य जी ने दोनों संस्कारों के महत्व व इनकी विधि के सभी कार्यों की सारगर्भित व्याख्या की। इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती, श्री चमनलाल सेठ आर्य, जीवनप्रकाश जीवन, इन्द्रजित्देव व श्रीमती शांता भाई ने विद्यार्थियों को आशीर्वचन दिए व इन सस्कारों के विभिन्न पक्षों व वर्तमान सन्दर्भ में आर्यसमाज के कर्तव्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री हरलाल वानप्रस्थ व श्री शेरसिंह ने अपने मधुर भजनों व गीतों द्वारा धार्मिक व राष्ट्रीय रसास्वादन कराया।

अन्त में ऋषि लंगर में सब आगत नर-नारियों ने भोजन किया। कार्यक्रम में अनेक विद्यार्थियों के माता पिता व अभिभावक भी पधारे हुए थे। —इन्द्रजित्देव, यमुनानगर

शोक प्रस्ताव

कन्या गुरुकुल नरेला के शिक्षकगण एवं ब्रह्मचारिणियों की यह शोक सभा स्वामी अमृतानन्द महाराज के निधन पर अत्यन्त हार्दिक शोक प्रकट करती है। स्वामी जी बड़े सरल स्वभाव के वीतराग एवं सच्चे अर्थों में परोपकारी साधु थे। गुरुकुल के उत्सव के कार्यों में भी उनका योगदान था। दूर दूर तक भ्रमण द्वारा जनता को धर्मोपदेश देते थे ऐसे महात्मा का वियोग हम सबके लिए दुःखदायक है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि स्वामी जी की दिवङ्गत आत्मा को परलोक में सद्गति शांति एव परमधाम प्रदान करे।

—सुशीला आचार्या
प्रधानाचार्या, कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली-४०

स्वामी अमृतानन्द जी का संक्षिप्त जीवन परिचय



'जननी जने तो भक्त जन,
या दाता या सूर'

उपरोक्त उक्ति के अनुसार स्वर्गवासी स्वामी अमृतानन्द जी महाराज बड़े ही प्रभु भक्त और असहायों की सहायता करने वाले एक स्वाध्यायशील कर्मयोगी थे। हर समय कोई न कोई कार्य शीघ्रता से करते रहने की उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति थी।

वे एक भ्रमणशील कर्मठ तथा सर्वधर्म ग्रन्थों के स्वाध्यायशील व्यक्ति थे। वे एक अच्छे कलाकार, सुलेखक तथा सर्वधर्म सम्भाव तथा मानवता के प्रतिमूर्ति थे। वे जहां कहीं भी गए अपनी अमिट छाप वेदमन्त्रों के लेखन के द्वारा सभी सस्थाओं गुरुकुलों और आश्रमों में छोड़ गए हैं। आर्यसमाज के अनेक नेताओं के चित्र भी इन्होंने स्वयं बनाए हैं। उन जैसा सर्वप्रिय सरल तथा मृदुभाषी आदर्श संन्यासी विरला ही होगा।

बहुत ही अल्प बीमारी के बहाने के कारण स्वामी जी का स्वर्गवास दिनांक १३/८/६० प्रात: ७-१५ बजे आर्यसमाज मन्दिर नरेला में आर्यसमाज के सदस्यों तथा पदाधिकारियों की उपस्थिति में अचानक ही हो गया।

जीवन परिचय

स्वामी अमृतानन्द जी का अपना बचपन का नाम बलराम पांडे और पिता जी का नाम श्री आद्याप्रसाद पाण्डेय था। इनकी दो बहनें जिनके नाम सुभद्रा व सावित्री हैं, जो अभी भी जीवित हैं। और दूसरी मां से इनके दो भाई श्री दुर्गाप्रसाद पाण्डेय तथा राजेन्द्र पाण्डेय हैं।

इनका जन्म स्थल ग्राम रमवापुर जिला बस्ती उत्तरप्रदेश है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा सुलतानपुर में बाद में दयानन्द वेदविद्यालय गुरुकुल कांगडी तथा आयुर्वेद शास्त्री की शिक्षा गुरुकुल झज्जर से की थी। कुछ समय ये स्वामी ओमानन्द सरस्वती के सहपाठी भी रहे थे।

इनके स्वर्गवास से आर्यसमाज नरेला ही नहीं अपितु कई संस्थाओं से रोशनी सी उठ गयी है। उनके सरल, सत्य और सादे व्यवहार ने उनको वास्तव में अमर कर दिया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि परमपिता परमात्मा की अनुकम्पा से वे वास्तव में अमृत (मोक्ष) के आनन्द को भोग रहे होंगे। ऐसे निस्वार्थ, असहाय के सहायक, स्वाध्यायशील व्यक्ति कभी-कभी ही उत्पन्न होते हैं। वे अमर हैं। प्रभु उनको शाश्वत शक्ति प्रदान करे।

—पूर्णसिंह आर्य, एम.ए. एम.एड.
मन्त्री आर्यसमाज नरेला

आर्यसमाज नांगल भिवानी) के कोषाध्यक्ष का निधन

श्री मेधाराम आर्य नांगल निवासी का देहान्त २० जून १६६० को हो गया। वे आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष थे। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के भक्त श्री मेधाराम जी ने निरन्तर श्रद्धापूर्वक अपना जीवन धर्मानुकूल बिताया और आर्यसमाज की सेवा की। दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि देने के लिए अनेक आर्यसज्जन एकत्रित हुए। अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से किया गया। —धर्मपाल आर्य

आर्यसमाजों तथा संस्थाओं के उत्सव

आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	१ से ३ सितम्बर
,, महेन्द्रगढ़	१ से २ ,,
,, कोसली जिला रेवाड़ी	१ से ३ ,,
,, सिवानी जिला भिवानी	,, ,,
,, धर्मगढ़ जिला पानीपत	,, ,,
,, अलाहर जिला यमुनानगर	४ से ५ ,,
,, सांघी जिला रोहतक	५ से ७ ,,
आर्यवीर दल हरयाणा डीएवी स्कूल करनाल	८ से ६ ,,
आर्यसमाज गन्नौर जिला सोनीपत	१४ से १६ ,,
,, करनाल मार्ग कैथल	१५ से १६ ,,
,, सेवा सदन बल्लबगढ़ जिला फरी०	२१ से २३ ,,
,, बीगोपुर जिला महेन्द्रगढ़	२२ से २३ ,,

सत्यवीर शास्त्री वेदप्रचाराधिष्ठाता

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती के जीवन चरित्र का प्रकाशन

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् नेता स्वर्गीय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री के जीवन चरित्र आचार्य सुदर्शनदेवदेव जी ने लिखकर तैयार कर लिया है। यह पुस्तक श्री सिद्धान्ती जी की ६०वीं जयन्ती पर २६ सितम्बर १६६ तक छपकर तैयार हो जावेगी और इसी अवसर पर इसका विमोचन होगा। श्री सिद्धान्ती जी का श्री पं० रघुवीरसिंह शास्त्री पूर्व ससद सदस्य का गुरु शिष्य का सम्बन्ध रहा है। अत: इस पुस्तक में उनका भी विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। आर्यसमाज के प्रमुख आन्दोलनों का इस पुस्तक में संक्षिप्त इतिहास पाठकों को पढ़ने को मिलेगा। सभामन्त्री

शोक सभा

आर्यसमाज नरेला की ओर से चौ० हीरासिंह जी (पूर्व कार्यकारी पार्षद) की अध्यक्षता में यह जनसभा स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (बलराम पाण्डेय) के आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक १३/८/६० सोमवार प्रात: ७-३० बजे पर हार्दिक शोक व्यक्त करती है।

स्वामी अमृतानन्द जी महाराज का जीवन सादगी तथा सरलता की प्रतिमूर्ति था। वे बड़े ही सुहृद सरल तथा सत्यनिष्ठा के धनी थे। स्वाध्याय तथा सत्संग में उनकी विशेष रुचि थी।

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' के वैदिक सिद्धांत पर वे अन्तिम श्वास तक अडिग रहे। कोई न कोई कार्य वे हर समय बड़ी शीघ्रता से करते रहते थे। भगवान् ने उन्हें हृदय अनोखा ही प्रदान किया था। वे वास्तव में सच्चे वीतराग और सर्वहितभिलाषी संन्यासी थे। क्रोध तो उन्हें छू तक नहीं गया था।

हम ऐसे सच्चे साधु स्वभाव संन्यासी के असामयिक देहावसान पर गहरा शोक प्रकट करते हैं और प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें अपनी शीतल चरण शरण में स्थान प्रदान करे।

प्रमुख वक्ता—चौ० हीरासिंह जी, मा० पूर्णसिंह जी आर्य, चौ० लायकराम जी प्रधान, डा० धर्मवीर जी, वैद्य कर्मवीर जी, श्री जयपाल जी, स्वामी ईशानन्द जी, स्वामी व्रतानन्द जी, श्री कृष्णभिक्षु जी आदि-आदि। —मन्त्री आर्यसमाज नरेला

शराब हटाओ
देश बचाओ

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं से निवेदन

पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर भिजवावें

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर १९९० तक शराबबन्दी प्रस्ताव करवा कर प्रस्ताव की प्रतियां रजिस्ट्री पावती द्वारा हरयाणा सरकार को भिजवाने का यत्न करें। हरयाणा के कानून के अनुसार जिन पंचायतों के शराबबन्दी प्रस्ताव ३० सितम्बर तक सरकार को प्राप्त हो जावेंगे, उन ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जावेगी। सुविधा के लिए प्रस्तावों के प्रारूप प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह, सभाप्रधान

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैरकानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ

हमारे ग्राम .... जिला ....

में शराब का ठेका नही है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेन्ट गैरकानूनी ढंग से खुल्लमखुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीने वाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अत: हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाए और जो गैरकानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

प्रतिलिपि सेवा में

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एव कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एव कराधान आयुक्त जिला ....
५ जिलाधीश..............
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

दिनांक .... ह० सरपंच तथा पंच ग्राम पंचायत

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा

चण्डीगढ

हमारे ग्राम .... जिला ....

पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम मे अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में यह पचायत माग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे तथा भविष्य मे कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनाक ....

प्रतिलिपि सेवा में [पहले प्रारूप के अनुसार]

सरपच तथा पंचों के हस्ताक्षर

नोट—इन प्रस्तावों के प्रारूप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक से भी मिल सकते है। अत. पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क करें।

आसरा देते ....

—'नाज' सोनीपती

दर्द-ए-दिल की जो वे दवा देते। हम भी दिल से उन्हें दुआ देते।
गुल खिलाने थे, गुल खिला देते। कोई फितना नया जगा देते।
आसुओं की झडी लगा देते। प्यास दिल की यूं ही बुझा देते।
आप, अपनी तलब बता देते। जान दे दी है और क्या देते?
जिन्दगी ने वफा न की वरना। मौत को हम मजा चखा देते।
बे नवाओं की तुम नवा बनकर। बेसहारों को तुम आसरा देते।
बात बनती नजर नही आती। बात बनती, तो हम बना देते।
दुश्मनों से तो वो भी बदतर है। दोस्त बनकर जो हैं दगा देते।
सरकशों से कभी न बन सकती।
'नाज' वाले जो सिर झुका देते॥

आर्यसमाज रोहिणी दिल्ली का चुनाव

रोहिणी—यहा सैक्टर १३ में आर्यसमाज की स्थापना करते हुए सर्वसम्मति से निम्नलिखित चुनाव किया गया—प्रधान—श्री यज्ञदत्त, उपप्रधान—श्री हरीश खुराना, मन्त्री—श्री रघुवीरसिह, उपमन्त्री—श्री शारदा, कोषाध्यक्ष—डा० बेताब अलीपुरी, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती चन्द्रकाता, प्रचार मत्री—श्री नरेन्द्रनाथ शर्मा।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज बेरी के मुख्य कार्यकर्त्ता आर्यसमाज बेरी निवासी श्री धनराज जी के नौजवान पुत्र रविन्द्रसिंह की अकस्मात् (दुर्घटना में) मृत्यु पर यज्ञ पर उपस्थित सभी आर्यजनों ने दुःख प्रकट किया, मृत नवयुवक की आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिए दो मिनट का मौन रखा गया और भगवान् से प्रार्थना की गई कि शोक संतप्त परिवार को यह दुःख सहन करने के लिए शक्ति प्रदान करे।

मन्त्री, आर्यसमाज बेरी

आर्यवीर दल भिवानी का चुनाव

मण्डलपति—श्री विमलेश आर्य, उपमण्डलपति—नरेन्द्र प्रभाकर, मन्त्री—ज्ञानचन्द शास्त्री, बौद्धिकाध्यक्ष—चन्द्रभान डुडेजा एवं ओप्रकाश गोयल, मुख्य शिक्षक—रामफल, शिक्षक—भूपेन्द्र कुमार, उपशिक्षक—शेरसिंह, कोषाध्यक्ष —गुणाकर आर्य, प्रचार मंत्री—पं. रामरख भजनोपदेशक।

भारतीयता का मूल.........

(पृष्ठ २ का शेष)

कोई भी ग्रन्थ ऐसा नहीं है, जिसमें कर्मफल व्यवस्था की चर्चा न हो। वेद में आता है, कि जो जब जैसा कर्म करता है, वह तदनुरूप यथा समय शरीर को धारण करता है। इस कर्मफल व्यवस्था में न तो सिफारिश चलती है और न ही पहुंच का इस पर प्रभाव होता है। यह सर्वथा अटल और पूर्ण है। उपनिषद के ऋषि ने भी स्पष्ट रूप से कहा है, कि जीव अपने कर्म तथा ज्ञान के अनुरूप ही कलेवर को धारण करता है। दर्शनों में भी यह चर्चा अनेकत्र चर्चित हुई है। जैसे कि सांख्य में आया है, कि संसार में एक से एक अद्भुत, विविध प्राणियों की स्थिति अपने-अपने कर्मों की भिन्नता के कारण ही है। प्रसन्नता और अप्रसन्नता देने वाले जन्म, आयु, भोग कर्मों पर निर्भर है। इसलिए महाभारत के गीता प्रकरण में बताया है, कि कर्म के कारण ही कोई कहीं सफलता प्राप्त करता है और कर्म से ही परम-तत्त्व की प्राप्ति होती है।

हम आपस में इस विषय की चर्चा करते हुए प्रायः दैव, भाग्य, विधि शब्दों का प्रयोग करते हैं। इन सबका विवेचन भी यही सिद्ध करता है, कि एक ऐसा देव है, जिसके विधि-विधान के अनुरूप जो जैसे कर्म करता है, वह उन-उन के कर्मों के आधार पर अपना भाग्य प्राप्त करता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए वीर प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न २३२०७/७३ रजि न P/RTK ४९ फोन ६९



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए. भाद्रपद ०, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३८ ७ सितम्बर १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

महर्षि दयानन्द का एक पत्र

—इन्द्रजित् 'देव', यमुनानगर

●

महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा "परोपकारिणी" है जिसका गठन महर्षि ने स्वय अपने जीवनकाल मे किया था। इस सभा के पास महर्षि के ग्रन्थों की मूल प्रतिया, विभिन्न लोगो को लिखे पत्र व अन्य सामग्री सुरक्षित पडी है। सभा की पत्रिका 'परोपकारी' (अजमेर) लगभग सभी अङ्को में महर्षि के किसी न किसी पत्र की फोटो प्रति प्रकाशित करती रहती है। यह शुभ कार्य ऐतिहासिक महत्व का है। इन पत्रों के प्रकाशन से सम्बद्ध विषयों पर महर्षि के विचारों का पता चलता है। उनसे सम्बद्ध कुछ घटनाओ का भी अनावरण होता है।

उक्त पत्रिका ने वैशाख सम्वत् २०४७ तदनुसार मई, १९९० सन् के अङ्क के मुख व द्वितीय पृष्ठों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के एक पत्र की फोटो-प्रति प्रकाशित की गई है। इसी पत्र को 'सार्वदेशिक' के आषाढ़ शुक्ल ९ सम्वत् २०४७ तदनुसार १ जुलाई १९९० के अङ्क में अविकल प्रकाशित किया गया है। जिस का अविकल रूप निम्नलिखित है.—

संख्या २

पण्डित कालूराम जी महाराज निवास स्थान रामगढ़, जिला सीकर जयपुर को श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने निम्नलिखित उपदेश किया।

॥ ओ३म् ॥

उपदेश

१ सब मन्त्रों के पूर्व [illegible]।

२ त्रि वर्ण का तत्सवितु: गायत्री मन्त्र, द्विजों की स्त्रियों को विश्वानि देव, मन्त्र, शूद्र और उनकी स्त्रियो को विश्वानिदेव० मन्त्र, अन्त्यजादि को परमात्मानमिति मन्त्र।

३ नमस्ते शब्द सब आपस मे बोले, छोटा प्रथम बोले, बडा पीछे बोले।

४ जो कोई ब्राह्मण हो, उसको सन्यास देकर नाम के आगे—अन्त में सरस्वती शब्द होना चाहिए। और क्षत्रिय वैश्य को आनन्द शब्दाना जैसे अच्युतानन्द और शूद्र को दास जैसे अच्युतदास शाडा सर्वात्मान यन्तर्यामित कृपमृत सागर परमात्मानमह शरण प्रपद्ये।

५ अन्त्यज सब स्वजाति के उपदेशक और अध्यापक हों।

६ वर्ण-व्यवस्था गुण कर्म से होनी चाहिए, धर्म व्यवहार मे।

७ कोई पूछेगा कि कौन साधु हो, कहे कि (वेदानुयायी) तुम्हारा धम क्या पक्षपात रहित न्यायाचरण सत्य। →

८ भगवा वस्त्र सब का होना चाहिए।

९ प्रायश्चित—जिस समय कोई मतमतान्तरस्थ पुरुष वेदमत ग्रहण करना चाहिए तभी पवित्र हो गया परन्तु पुन वेदमत छोड वेदविरुद्ध मत ग्रहण कभी न कर। उसके लिए यह प्रायश्चित है।

१० सब लोग आचरण सत्यभाषणादि धर्मयुक्त ब्रह्मचारी रहे और विद्या की उन्नति कर।

मिति चैत्रवदि १२ गुरुवार स० १९३९

(क्रमश) (दयानन्द सरस्वती)

आरक्षण को लेकर विवाद

—प्रो० शेरसिंह

आज भारत का राष्ट्रीय जीवन एक गहरे सकट के दौर से गुजर रहा है। देश की मानसिकता अहिंसा और शान्तिमयता से हटकर उत्तरोत्तर पाशविक हिंसावृत्ति में बदलती जा रही है। ऐसे वातावरण मे राजनीतिक स्वार्थों से उपजी अदूरदर्शिता समस्याओं का समाधान खोजने मे सफल होने के बजाय किस तरह से अभीष्ठ को अनिष्ट मे बदल सकती है, मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का निर्णय इसका सबसे ताजा और ज्वलन्त उदाहरण है। मनुष्य का जीवन एक बिजली से चलने वाले यन्त्र की तरह नहीं है। पुरानी रूढियों को नये, क्रातिकारी मानवीय चिन्तन के जरिये बदलना हमारा निश्चित ध्येय है। यह निर्विवाद है। तथापि किसी क्रांतिकारी परिवर्तन को फलदायी बनाने के लिए हृदय परिवर्तन की पृष्ठभूमि तैयार करने की दृष्टि से समाज के अन्य समुदायो के न्यायोचित पहलुओ को शामिल करने की दृष्टि से, उपयुक्त अवसर के चयन की दृष्टि से, मण्डल आयोग की सिफारिशो के क्रियान्वयन की घोषणा इस ढग से की गई है कि वह राजनीतिक धमाका अधिक प्रतीत होता है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड हुए लोगो की हितचिन्ता से प्ररित युगान्तरकारी कदम कम।

आरक्षण का विरोध

इसी कारण इस कदम का स्वागत कम और विरोध ज्यादा हुआ है। विश्वविद्यालयो के छात्रो का रोष उत्तर भारत तक सीमित न रहकर अब दक्षिण भारत मे भी फैल रहा है और रोकने पर भी रुक नही पा रहा है। जनता दल को छोडकर बाकी सभी राष्ट्रीय दलो ने अपने अपने ढग से इसका विरोध किया है। १९८० में श्री मण्डल द्वारा आयोग का प्रतिवेदन पेश करने से पहले श्रीमती इन्दिरा गाधी ने श्री मण्डल को सुझाव दिया था कि आरक्षण के लिए आर्थिक आधार जरूर रख परन्तु उन्होने उनके सुझाव को नही माना। आज भी जनता पार्टी, माकपा और वाममोर्चा यही बात कह रहे हैं। उन सबका आरोप है कि यह कदम जल्दबाजी मे जनता दल की अन्दरूनी

(शेष पृष्ठ ३ पर)

वेद और महर्षि दयानन्द सरस्वती

भगवानदेव 'चेतन्य' सुन्दरनगर (हि० प्र०)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का कार्यक्षेत्र बहुआयामी था। वास्तव में उनकी पैनी दृष्टि ने समाज की प्रत्येक बुराई को गहराई से परखकर उसका समाधान दृढ़ता के साथ घोषित किया। उनके उपदेश भो उनके व्यक्तित्व के समान सरल और स्पष्ट थे। दोहरी बात या लीपापोती के सिद्धान्त की उनके पास कोई जगह नहीं थी क्योंकि वे स्वयं के नहीं बल्कि मनुष्यमात्र के हितैषी थे। उन्होंने देखा कि समस्त बुराइयों की जड यही है कि व्यक्ति ने ज्ञान और धर्म की कसौटी अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर अलग-अलग निर्धारित कर रखी है। उन्होंने व्यक्ति एवं समाज की चतुर्दिक उन्नति के लिए सार्वभौमिक ज्ञान की खोज आरम्भ की जो उन्हें वेद के रूप में उपलब्ध भी हो गई। जिस प्रकार इस सृष्टि का आधार ईश्वर है उसी प्रकार समस्त ज्ञान का भण्डार ईश्वरकृत वेद हैं। वेद के प्रति महर्षि की इतनी अधिक आस्था थी कि वे उसके प्रति मन, वचन और कर्म से समर्पित हो गए। जिस प्रकार श्री रामचन्द्र जी का नाम धनुर्धारी, श्री कृष्णचन्द्र जी का नाम चक्रधारी आदि पडा उसी प्रकार महर्षि जी 'वेदावाले' के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह वह समय था जब वेदों के बारे में लोगों मे तरह-तरह की भ्रान्तियां फैली हुई थी। कोई उन्हें गडरियों के गीत कहता था तो कोई जगलियों का विधान। आश्चर्य की बात तो यह थी कि वेदों के बारे में ये फतवे उन्हें गहराई से समझे बिना ही दिए जाते थे। बड़े-बड़े वेद निन्दकों ने वेदों को देखा तक नही था। बस केवलमात्र सुनी सुनाई बातों पर हो अटकलें लगाई जाती थी। महर्षि दयानन्द एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति थे कि उन्होंने सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नही किया बल्कि स्वय वेदज्ञान गहराई से परखा और फिर ससार के लोगों को एक अमर वाक्य दिया 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'। उन्होंने अनेक प्रमाणों के आधार पर वेद को ईश्वरीय ज्ञान घोषित किया और ऐसे अकाट्य तर्क दिए कि लोगों को इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ा कि वास्तव में ही वेद प्राचीनतम और ईश्वरीय है। वेदज्ञान लुप्तप्राय हो गया था तथा सत्य और असत्य की परख की कोई भी कसौटी नहीं रही थी। मगर महर्षि दयानन्द ने पुन: मनु महाराज के इस अमर वाक्य का कार्यान्वियन किया, "धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाण परम् श्रुति:'। मनु २-१३१

महर्षि दयानन्द ने वेदों के बारे में फैली भ्रान्तियों को दूर करने के लिए उनका गहन अध्ययन किया। उन्होने अनेक भाष्यकारों के भाष्य भी पढे मगर वे पूर्वाग्रहों से ग्रसित किए गए भाष्य कितने अनिष्टकारी तथा वेदों के बारे में ही भ्रान्तियां फैलाने वाले थे। यह देखकर महर्षि जी को अत्यधिक दु:ख और आश्चार्य हुआ। अन्तत: उन्होंने स्वय वेदभाष्य करने का बीडा उटाया। अब तक उवट, महीधर, सायण तथा मैक्समूलर और मैक्डूमल आदि ने वेदों के भाष्य किए थे। मगर ये सभी पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने के कारण भ्रान्तियुक्त थे। कुछ विद्वानो ने मात्र कर्मकाण्ड को लेकर अपने भाष्य किए तो कुछ पाश्चात्य विद्वानों के सामने विकासवाद को येन केन प्रकारेण सिद्ध करने का पूर्वाग्रह था, अत: वेदो का सार्वभौमिक स्वरूप लुप्तप्राय: हो गया था। महर्षि दयानन्द की मानव जाति के प्रति यह महानतम कृपा है कि उन्होने अपने भाष्य के द्वारा वेदों का सार्वभौमिक एव वास्तविक स्वरूप लोगों के समक्ष प्रकट किया। इस सम्बध मे श्री अरविन्द जी ने लिखा है 'वेदो का अन्तिम तथा प्रमाणिक भाष्य चाहे कुछ भी हो, दयानन्द का स्थान उपयुक्त शैली के प्रथम आविष्कारक के रूप मे सर्वोच्च है। उसने अपनी दिव्य दृष्टि मे पुराने ज्ञान के द्वार को जो समय ने बन्द कर रखा था, उसकी चाबी को उसने पा लिया" अरविन्द आगे एक अन्य स्थान पर लिखते हैं कि पाश्चात्य एव भारतीय भाष्यकारो ने पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर ही वेदों का भाष्य किया मगर दयानन्द की विशेषता यह थी कि इस सम्बंध में उन्होंने कोई भी पूर्वाग्रह नहीं पाला था। पूर्वाग्रहों से ग्रसित इन विद्वानों ने ऐसे-ऐसे अनर्थकारी एवं अश्लील भाष्य कर डाले थे जो न केवल अविश्वसनीय थे बल्कि निन्दनीय भी थे। महर्षि ने तमाम रुढ़ियों को त्यागकर वेदों के यौगिक अर्थ किए। उन्होंने यह घोषित किया कि मंत्रों के अर्थ दो तरह से हो सकते हैं- पारमार्थिक तथा व्याहवारिक। उनका भाष्य विभ्रान्ति और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है। यह भाष्य निरुक्त के दृष्टिकोण के अनुरूप है। मंत्रों के अर्थों को निरुक्तकार ने तीन भागों में बांटा है—प्रत्यक्ष परक, परोक्ष परक तथा आध्यात्मक परक। उसी को महर्षि ने सरल करके दो भागों में बांटा है—व्यावहारिक तथा पारमार्थिक।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का कोई भी नया मत या मजहब चलाकर मनुष्य जाति को और अधिक छिन्न-भिन्न करने का मन्तव्य नहीं था। उनका लक्ष्य था कि सब संप्रदाय, मत तथा मजहब समाप्त होकर एक मात्र वैदिक धर्म की शरण में आ जायें जो स्वयं परमात्मा द्वारा निर्देशित है। आज अनेकता में एकता का राग अलापा जाता है मगर सम्प्रदायवाद तथा मजहबवाद किस प्रकार खूनी होली खेल रहा है यह हम सभी प्रत्यक्ष देख रहे हैं। आश्चर्य तो इस बात से होता है कि शांति स्थापित करने वाले इन सम्प्रदायों मतों तथा मजहबों को बढ़ावा देकर व तुष्टिकरण की नीति अपना कर समस्या को और भी अधिक जटिल बना रहे हैं। मानवीय एकता स्थापित करने के लिए महर्षि ने धार्मिक एकता का नारा देते हुए कहा था कि वेदों की ओर लौटो। जब तक हम एक धर्म और एक विचार को नहीं अपनायेगे तब तक एकता और शांति के प्रयास दिवास्वप्न मात्र बनकर रह जायेंगे। मत, मजहब और सम्प्रदाय शक्ति पाकर और अधिक सक्रियता के साथ मानवतावादी विचार-धारा का गला घोट रहे हैं—ऐसे में महर्षि जी द्वारा पुन:प्रतिपादित वैदिक अर्थात् मानवतावादी विचारधारा ही हमें बचा सकती है। लोग वेद के अमर संदेश को भली प्रकार समझकर उसे आत्मसात् कर सके। इसीलिए महर्षि ने वेदों का हिंदी में सरल भाष्य किया तथा उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए 'आर्यसमाज' की स्थापना की। उन्होंने वेदों को कितनी गहराई से समझा था यह उनका साहित्य पढ़कर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। हम तो श्री अरविन्द जी के शब्दों को यहां देकर इस बात की पुष्टि करना चाहते हैं, "जहां तक वेदों के समझने का प्रश्न है, दयानन्द को इस बात के लिए स्मरण किया जाएगा कि वे पहले व्यक्ति थे जिनके हाथ में वेदों का टीक-टीक अर्थ जानने की कुंजी आ गई थी। वेदों के अर्थों के विकास में सदियों से जो अव्यवस्था, अस्पष्टता तथा अज्ञान फैला हुआ था, उस सबको भेदकर उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से अज्ञानान्धकार को भेदकर सत्य पर अपनी दृष्टि जमा दीं थी"।

आर्यसमाज मन्दिर २२ सैक्टर चण्डीगढ़ का चुनाव

संरक्षक—डा. इन्द्रराज शर्मा, प्रधान—श्री रामरतन महाजन, उपप्रधान—वरिष्ठ श्री नरेन्द्रनाथ तहसीलदार, श्री ओमप्रकाश सेटी, श्री ब्रह्मदेव बहल, मन्त्री—श्री प्रेमचन्द मनचन्दा उपमन्त्री—श्री बुधराम, श्रीमती सतोष चौहान, कोषाध्यक्ष—श्री गुलशन कालड़ा, लेखा निरीक्षक—श्री विश्वामित्र महाजन।

आरक्षण को लेकर विवाद

(प्रथम पृष्ठ से आगे)

लड़ाई को ध्यान में रखकर उठाया गया है और समर्थक दलों तथा विरोधी दलों से न तो परामर्श लिया गया और न सहमति। वास्तविकता यह है कि कोई भी दल (कुछ व्यक्तियों को छोडकर) पिछडी जातियों से सम्बन्ध रखने वाले आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों के लिये सरकारी और अर्धसरकारी नौकरियों में आरक्षण का विरोध नहीं करना चाहते, उनके अधिकतर लोगों की सोच यह है कि तथाकथित ऊंची जातियों के आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों को भी इस सुविधा से वंचित न किया जाये। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो पिछड़ी जातियों के लिए ही नहीं, बल्कि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए किए गए आरक्षण का भी विरोध करते हैं। परन्तु ऐसा सोचने वाले 'बुद्धिजीवी' अधिक हैं, 'बुद्धिमान्' कम।

आरक्षण के निहितार्थों को तो समझना ही चाहिए। साथ साथ इसके द्वारा राष्ट्र के जीवन में होने वाले व्यापक और दूरगामी प्रभावों की उपेक्षा महंगी पड़ सकती है इसका भी अहसास होना चाहिए। इस प्रश्न के विवेचन के लिए मनोवैज्ञानिक व्यावहारिकता अति आवश्यक है और उतनी ही आवश्यक है जातिप्रथा की पृष्ठभूमि और क्रियाकलाप की जानकारी। इस प्रश्न पर विचार करते समय चार उद्देश्य ध्यान में रखने पड़ेंगे।

१. दलित और शोषित तथा सामाजिक एव आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोगों को न्याय तो मिले ही उनके विकास का भी समुचित प्रबन्ध हो।

२. जन्म पर आधारित जातिप्रथा की जकड ढीली होती जाये और उसका महत्व समाप्त हो, जिससे अन्दरूनी तनाव समाप्त होते जायें और भारत एक सुदृढ़ और सुगठित राष्ट्र बनकर उभरे।

३. राष्ट्र के विकास के कार्यों में कार्यकुशलता में कमी न आए बल्कि कार्यकुशलता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए, जिससे राष्ट्र स्वावलम्बी बन सके।

४. ज्ञान और विज्ञान के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष और दक्षता का मार्ग प्रशस्त हो, ताकि प्रगति की दौड़ में राष्ट्र पीछे न रहकर आगे आगे बढ़ता जाए।

द्विज संस्कृति तथा वंशज संस्कृति

द्विज संस्कृति में जन्म से सब बराबर थे उनके वर्ण का निश्चय होता था उसकी अभिरुचि, शिक्षण प्रशिक्षण, योग्यता और चारित्रिक गुणों के आधार पर। वह सस्कृति तो सदियों से मिट चुकी और अब रह गई वंशज संस्कृति। डा० अम्बेडकर ने बड़े सुन्दर शब्दों में दोनों सस्कृतियों की व्याख्या इन शब्दो में की है—

Difference in two cultures is that one recognises worth; the other recognises birth.

"द्विज कहलाने वाले लोगों ने यथापूर्व स्थिति और प्रतिष्ठा पीढ़ी दर पीढ़ी बनाए रखने के लिए द्विज संस्कृति को वंशज संस्कृति में बदल डाला। इन्हीं शक्तिशाली लोगों ने अपना शिकजा कसने के लिए अलग पेशों के नाम पर डा. अम्बेडकर के शब्दों में "श्रम के विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी विभाजन कर दिया।" श्रमिकों के इस विभाजन को पक्का करने के लिए उन्होंने श्रमिकों के दर्जे भी बांध दिए तथा उनका स्थायी क्रम भी निश्चित कर दिया, कौन कितना ऊंचा और कौन कितना नीचा। महात्मा बुद्ध, वल्लुवर, पुरन्दरदास, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, कबीर, रविदास, तुलसीदास, नानक अनेक सन्तों महात्माओं ने समय समय पर इस शिकंजे की जकड़ को ढीला करने और तोड़ने के प्रयास किए, उससे वातावरण तो बदलता रहा, कुछ लोगों के जीवन में परिवर्तन भी आया, परन्तु जन्मजात जातिप्रथा का किला नहीं टूट सका। स्वामी दयानन्द मात्र सुधारक नहीं, राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर के शब्दो मे एक क्रांतिकारी महापुरुष थे। उन्होने भारत के जनमानस में उसके अतीत के लिए गौरव की भावना जगाई और कहा कि वे ऋषि मुनियों और वीरों की सन्तान हैं, उनको अपना पुराना गौरव प्राप्त करना चाहिए और हमारे अन्दर हीनता की भावना पदा करने वाले विदेशी शासनों को उखाड़ फेंकना चाहिए। उन्होंने वंशानुगामिक रूढ़ियों को तोडकर पुन: गुणपरक प्राचीन व्यवस्था को पुनर्स्थापित करने का नारा बुलन्द किया।

इनके प्रयासों से सदियों से अछूत कहलाने वाले दलित और शोषित कहलाने वाली नीची जातियों के लोग भी कुछ जागे और आर्यसमाज द्वारा शिक्षा में द्वार उनके लिए खोले जाने पर कुछ लोगों ने शिक्षा प्राप्त करने का साहस बटोरा, उनमें से डा. अम्बेडकर भी एक थे, परन्तु इन जातियों के लगभग सब लोगों में हीनता की भावना बहुत गहरी थी, वे शक्तिशाली अत्याचारियों के मुकाबले का साहस नहीं जुटा पाए। हीनता की भावना को उखाड़ फेंकने के लिए मध्यम दर्जे की जातियों (जिनको पौराणिक ब्राह्मण शूद्र ही समझते थे) के प्रबुद्ध लोगों ने बेडा उठा लिया। प्रतिष्ठा की खोज में वे निकल पड़े और अपना नाता ऋषि मुनियों और वीर-क्षत्रियों से जोड़कर अपने आपको ब्राह्मण और क्षत्रिय कहकर अपने नाम के पीछे शर्मा और वर्मा लिखने लगे। समाज का वातावरण बदलने लगा और कुछ तो आधुनिकता की लहर, शिक्षा के प्रचार और कुछ गौरव की भावना के उदय के कारण पेशों की जकड समाप्त होने लगी और हिन्दू समाज में गतिशीलता आई। बड़े दु:ख की बात है कि इस सामाजिक गतिशीलता के प्रवाह को रोकने के लिए राजनीति दीवार बनकर खडी हो गई है। उसने इस धारा का मुह मोड दिया है और उखडता हुआ जातिप्रथा का ढांचा फिर जमने लगा है। जो प्रतिष्ठा की खोज में अपना नाता ऋषि मुनियों से जोडते थे और अपने आपको ऊंचा मानने लगे थे अब वे फिर अपने आपको नीचा कहने मे ही अपना कल्याण मानने के लिए मजबूर हो रहे हैं। जो जाट दास की नल्की से पानी पिलाये जाने पर अपमानित महसूस करता था और पंजाब हाईकोर्ट के निर्णय के विरुद्ध जिसके अनुसार उसे शूद्र बताया गया था, खडा हो गया था, आज आरक्षण की सुविधा पाने के लिए वह भी पिछडी जाति की श्रेणी में आने की तमन्ना लिए बैठा है। सविधान के अनुच्छेद ३४१-४० के तहत १९५०-५१ में अनुसूचित जातियों की जो सूची बनी थी उसमे कुछ मध्यम दर्जे की जातियों के नामो का समावेश हो गया था, उन जातियों को अपमान लगा और अपनी जातियों के नाम सूची से निकालने के लिए उन्होने मांग पेश कर दी थी। आज शायद वे पछता रहे होंगे।

अनुसूचित जातियों जनजातियों के लिए आरक्षण

स्वतन्त्र भारत के सविधान के निर्माताओं जिनमें अधिकतर गांधी के अनुयायी थे या डा अम्बेडकर की तरह भुक्तभोगी, के सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि जो जातियां अछूत कहलाई, जिन पर सदियों से सब प्रकार के अत्याचार हुए जिनका शोषण होता रहा तथा जिन्होंने नवजागरण के युग में भी मजबूरी में शूद्र और नीचा बना रहना स्वीकार कर लिया, उनको स्वतन्त्र देश के नागरिकों का गरिमापूर्ण दर्जा कैसे दिया जाए। इसीलिए ऐसी दलित जातियों और जनजातियों के लिए उनकी जनसख्या के आधार पर लोकसभा और विधानसभाओं तथा सरकारी अर्द्धसरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया गया और उनकी शिक्षा के लिए उनको आर्थिक सहायता और आरक्षण भी दिया गया। सामाजिक विषमता को दूर करने के लिए छुआछूत का निषेध और सभी सार्वजनिक स्थानों आदि के उपयोग में सबके बराबर उनको सुविधा दी गई। यह आरक्षण तो अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए चलते रहना चाहिए। परन्तु शिक्षा और सरकारी नौकरियों के लिए आर्थिक मानदण्ड जरूर लागू करना चाहिए। जो लोग राजपत्रित अधिकारी बन गए या

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भारत सरकार भेदभाव की नीति छोड़े

गजरौला में ईसाई स्कूल की दो ननों के साथ कथित बलात्कार को लेकर भारत भर के ईसाई समाज ने रोष एवं आक्रोश प्रकट किया। इस घटना को ऐसा रूप दे दिया गया मानो ईसाई समाज पर भारत में अत्याचार हो रहा है। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री तथा केन्द्र से श्री जार्ज फर्नांडीज वहां पहुंचे। सरकार ने अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा का वचन दिया तथा ईसाई संस्था को ३ लाख रुपए का अनुदान भी दिया।

किन्तु कश्मीर में अनेक स्थानों पर पाकिस्तानी नारे लगानेवाले एक विशिष्ट समुदाय द्वारा वहां के हिन्दू नर-नारियों पर जो भीषण अत्याचार किए जा रहे हैं उसके विरुद्ध न सरकार ही बोलती है और न ही भारत भर के हिंदू समाज ने संपूर्ण भारत में कोई आंदोलन किया। केन्द्र सरकार तो लोगों को यह कहकर धोखा दे रही है कि कश्मीर की घटनायें साम्प्रदायिकता से प्रेरित नहीं है अर्थात् मजहबी जनून के कारण कश्मीरी मुसलमान विद्रोह नहीं कर रहे। मुफ्ती मोहम्मद साहेब ने कई बार वक्तव्य दिया कि कश्मीर में हिंदू-मुसलमान का कोई झगड़ा नहीं है। किंतु वास्तविकता तो इसके बिल्कुल विपरीत है। जैसे—

२६ अप्रैल को ग्राम कंडीखास तहसील हल्दवाडा के महंत ब्रजनाथ गोस्वामी का मुख सीकर वृक्ष पर लटका कर फांसी दी गई। इस गांव में फिर तीन हिंदुओं को मार डाला परंतु शिकायत करने पर भी पुलिस ने कुछ नहीं किया बल्कि वहां बसे सभी हिंदुओं को गांव छोडकर चले जाने को ही कहा। भरीपुरा क्षेत्र के पं० प्रेमनाथ प्रेमी के सम्मुख ही उनके परिवार की एक महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया फिर इस महिला को आरे से चीर डाला। इस क्षेत्र की अनेक महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार करके उनके स्तन काटने, आंखें निकालने और गर्म लोहे से शरीर के अंगों को जलाने, हाथ-पैर काट देने की घटनायें हुई हैं।

३० अप्रैल को विख्यात लेखक और कवि पं० सर्वानन्द कौल तथा उनके पुत्र की आंखें निकाल ली गई। फिर जख्मों पर मिर्च डाली गई। उनके मस्तक को जहां तिलक लगा था एक गर्म लोहे के सूए से बींधा गया।

आस्ट्रेलिया में प्राध्यापक श्री बी० एल० गंजू कश्मीर आए तो उन्हें अनेक यातनायें देकर पानी में डुबो दिया। उनकी पत्नी जो अध्यापिका हैं, से कई दिनों तक सामूहिक बलात्कार करके स्तन काट डाले। उनके शरीर पर जलती हुई सिगरेटें लगाकर तड़फाया गया फिर उन्हें पानी में डुबो दिया। कई लोगों के कान, जिह्वा, बाहू और टांगें काटी गई है। ऐसी सैकडों घटनायें हो रही हैं फिर भी सम्पूर्ण भारत का हिंदूसमाज रोष और आक्रोश प्रकट नहीं कर रहा। यदि हिंदूसमाज भी हिंदुओं पर हो रहे इन पाशविक अत्याचारों के विरुद्ध सम्पूर्ण भारत में आक्रोश प्रकट करने लगे तो भारत में स्थान-स्थान पर चल रहा आतंकवाद और देशद्रोही षड्यन्त्र सब बंद हो जायें। देश में शांति तथा व्यवस्था हो जावे और हिंदुओं की मजहबी जनून की क्रूरता से रक्षा भी हो जाए।

डा० कैलाशचन्द्र, संकटमोचन आश्रम, श्री हनुमान मंदिर
सैक्टर-६, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली

वर/वधू चाहिए

आरक्षण में दूसरी जाति के युवकों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

कुरुक्षेत्र २८ अगस्त। पिछड़ी जातियों और अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षण करना कोई बुरी बात नहीं, लेकिन आरक्षण करते समय दूसरी जाति के युवकों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। ताकि सभी को नौकरी में समान अवसर प्राप्त हो सकें।

यह बात पिछले दिनों पूर्व रक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने कही। वे स्थानीय नीलम सिनेमा में आर्यसमाज थानेसर द्वारा आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द मूर्ति अनावरण समारोह में अध्यक्षीय भाषण दे रहे थे।

उन्होंने कहा कि आज देश को स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानंद द्वारा चलाई गई गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की जरूरत है। यदि हम उनके बताए हुए मार्ग पर चलें तो कोई भी समस्या न रहे।

इस मौके पर पानीपत के उपायुक्त विजय कुमार ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा कि संविधान में समान अवसर पर बात तो कही गई है लेकिन यह हमारे सामने है कि आज कितनों को समान अवसर मिलते हैं। आर्य वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल पानीपत के प्राचार्य लाभसिंह ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति में सभी छात्रों को एक समान शिक्षा व सुविधायें मिलती है, यदि देश मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली लागू कर दी जाती, तो आरक्षण की विकराल समस्या आज खड़ी न होती। स्वामी श्रद्धानंद द्वारा दिखाई गई गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जात-पात और विषमतायें भी खत्म करती हैं। आज प्रतिदिन देश में नई शिक्षा नीति पर विचार करने के लिए लंबी चौडी बैठकें आयोजित की जाती हैं उस समय इनकी जरूरत ही नहीं पड़ती।

इस समारोह को सनातन धर्म सभा के प्रधान वैद्य रामेश्वर प्रसाद और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उपाध्यक्ष आर्य भिक्षु ने भी संबोधित किया। समारोह के बाद स्वामी आर्य भिक्षु ने नीलम सिनेमा के सामने चौक पर लगभग ६५ हजार रुपए की लागत से बनी स्वामी श्रद्धानन्द की कांस्य प्रतिमा का अनावरण भी किया।

जनसत्ता

हरयाणा मन्त्रिमंडल के फैसले

मन्त्रीमंडल की बैठक में सरकारी सेवाओं में प्रवेश के लिए अधिकतम सीमा आयु ३० से बढ़ाकर ३५ वर्ष करने का फैसला लिया गया। जमा एक और जमा दो की कक्षाओं में राज्यभर में अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय घोषित किया गया है। हरियाणा में मैट्रिक तक की कक्षाओं में अंग्रेजी एक ऐच्छिक विषय है जिसमें जमा एक और दो के विद्यार्थियों को प्रवेश में अड़चनों का सामना करना पड़ता था, क्योंकि अब तक जमा एक और दो में अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय था। मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि उनकी सरकार का सारा काम हिन्दी में ही चलेगा।

दैनिक ट्रिब्यून

बीवां जि. गुड़गांव में वेदप्रचार सप्ताह

९ से १४ अगस्त तक आर्यसमाज नीवां जिला गुडगांव में वेदप्रचार सप्ताह के अवसर पर महाशय खेमसिंह आर्य की भजन मंडली के प्रभावशाली भजन हुए। सभा को ४०१) वेदप्रचारार्थ दिए गए।

—मन्त्री आर्यसमाज

राष्ट्रपति का अंग्रेजी में सन्देश अनुचित

विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद्, दिल्ली के महामंत्री डा० प्रशान्त वेदालंकार ने आज यहां स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्वारा अंग्रेजी में देश के नाम सदेश देने की कटु आलोचना की। राष्ट्रपति का भाषण सचमुच उद्बोधक था पर अंग्रेजी में होने के कारण यह स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की हंसी उडा रहा था। मानो वे यह प्रकट कर रहे हों कि तुमने हमें स्वतंत्र कराया पर हमने अभी तक अंग्रेजी भाषा की पराधीनता नहीं छोडी।

डा० वेदलंकार ने कहा कि प्रतिवर्ष राष्ट्रपति से हिन्दी या अन्य भारतीय भाषा में संदेश देने के लिए प्रार्थना की जाती है। इस वर्ष भी अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं ने पहले से ही उनसे यह प्रार्थना की थी। यदि वे हिन्दी या तमिल में अपना संदेश देते तो अंग्रेजी जानने वालों से अधिक लोग उनकी वाणी सुनते।

डा० प्रशांत वेदालंकार ने इस अवसर पर इ दौर में हुए अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आंदोलन में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायमसिंह यादव के उस प्रस्ताव को बहुत ही सामयिक और आवश्यक कहा जिसमें उन्होंने इस महीने के अन्त मे हिंदीभाषी प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों की एक बैठक बुलाकर अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को अपनाने में तीव्रता लाने के प्रयत्नों की चर्चा की। इस सम्मेलन में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शांताकुमार, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलाल पटवा तथा राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत ने भी श्री यादव के उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया और उन्होंने उक्त सम्मेलन में भी उपस्थित रहने की अपनी स्वीकृति देकर अंग्रेजी के विरुद्ध अपनी भावना की स्पष्ट अभिव्यक्ति की।

यदि हिंदीभाषी प्रदेश दृढता से अंग्रेजी के बहिष्कार का निर्णय ले लें तो हिंदी व अन्य भाषाओं के प्रतिष्ठित होने में कोई कठिनाई नहीं है। ये मुख्यमंत्री केन्द्रीय सरकार पर भी प्रभाव डाल कर वहां भी सरकारी कामकाज हिंदी में प्रारम्भ करा सकते हैं। इस सम्मेलन में श्री शेखावत ने यह अपील की कि अंग्रेजी हटाने के लिए सभी राजनीतिक दल एक मंच पर आ जायें।

इस सम्मेलन में शिक्षा का माध्यम हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को करने की चर्चा किसी ने नहीं की। प्रस्तावित मुख्यमंत्री सम्मेलन में इस विषय पर भी गम्भीरता से चर्चा होनी चाहिए। भारतीय भाषाओं को माध्यम बनाए बिना न तो शिक्षा का विकास ही हो रहा है और न इसके बिना प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग सम्भव है।

डा० वेदलकार ने अंग्रेजी हटाओ आंदोलन के अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद वैदिक व उनके अन्य सहयोगियों का इस बात के लिए अभिनन्दन किया कि उन्होंने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी की दासता से मुक्त कराने का एक सफल आयोजन किया। इस सम्मेलन में उक्त मुख्यमंत्रियों के अतिरिक्त निर्वतमान राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह, केन्द्रीय रेलमंत्री जार्ज फर्नान्डीज, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड, समाजवादी नेता श्री बालेश्वरदयाल आदि अनेक नेता उपस्थित थे। जिन्होंने एक स्वर से अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी को प्रस्थापित करने का प्रस्ताव दुहराया। इस संकल्प को क्रियान्वित रूप देने का उन्होंने निश्चय किया। वस्तुत: जब तक देश से अंग्रेजी भाषा नहीं जाएगी तब तक भारत मा गूंगी बनी रहेगी।

डा० प्रशांत वेदालंकार ने सभी देशवासियों से अपील की कि पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए इस सम्मेलन में किए गए निर्णयों व निश्चय को क्रियान्वित रूप देने के लिए पूरा सहयोग दें।

डा० प्रशान्त वेदालंकार
७१२, रूपनगर, दिल्ली –७

आर्यसमाज रिवाड़ी का धार्मिक उत्सव

आर्यसमाज रिवाड़ी का वार्षिक उत्सव गत दिनों प्रात: ४ बजे प्रभात फेरी के साथ प्रारम्भ हुआ। प्रभात फेरी में सभी गणमान्य आर्य युवक तथा महाशय खेमसिंह भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सम्मिलित हुवे। बृहद् यज्ञ उत्सव स्थल मोती चौक पर हुआ। यज्ञ स्थल पर महाशय खेमसिंह भजनोपदेशक के यज्ञ सम्बन्धी तथा ईश्वर भक्ति पर प्रेरणादायक भजन हुए।

इसके बाद प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का स्वागत किया गया। शराब राष्ट्रघातक' सम्मेलन की अध्यक्षता महाशय ताराचन्द जी प्रधान आर्यसमाज नारनौल ने की। आर्यसमाज रिवाड़ी के संरक्षण में २५–६–९० से १–७–९० तक आर्य युवक निर्माण शिविर लगाया गया जिसका संचालन व्यायामाचार्य धर्मवीर जी ने किया।

इसके पश्चात् महाशय जयपाल भजनोपदेशक ने अपने भजनों द्वारा आधुनिक समाज में व्याप्त दोषों का दिग्दर्शन कराया। महा० ईश्वरसिंह तूफान भजनोपदेशक ने निर्धारित विषय पर हृदयग्राही भजन गाए। महाशय खेमचन्द ने अपने भजनों द्वारा शराब के दोषों एव इसके अनिष्टकारी परिणामों का बडा मार्मिक वर्णन करके श्रोताओं का मन मोह लिया।

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने निर्धारित विषय के संदर्भ में प्रथम देश की राष्ट्र स्तर एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्तमान अवस्था पर विस्तार से प्रकाश डालकर शराब के घातक परिणामों के परिणामस्वरूप देश की चारित्रिक, नैतिक तथा आर्थिक क्षति हो रही है का विवरण दिया और बताया कि इससे युवकों की शारीरिक क्षमता का हनन हो रहा है जिसका दूरगामी परिणाम बडा घातक होगा जिसकी पूर्ति होना बड़ा कठिन होगा। देशवासियों को चेतावनी देते हुए बताया कि शराब राष्ट्रघातक है। इसको बन्द कराने के लिए केवल आर्यसमाज ही प्रयत्नशील है और इसके अतिरिक्त देश में जितने भी राजनैतिक दल हैं सब इसको येन केन प्रकारेण प्रोत्साहन दे रहे है। उग्रवादियों एव नक्सिलयों के सब दोषों की निन्दा करते हुए उनके शराबबन्दी अभियानों की प्रशसा की।

प्रधान आर्यसमाज रिवाड़ी महाशय रामचन्द्र आर्य ने प्रो० शेर सिंह का धन्यवाद करते हुए उनके आह्वान में पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। शराब को सर्वदोषों दुर्गुणों और दुर्विषणों की जन्मदाता बताते हुए बताया कि यदि इससे देशवासियों ने मुक्ति प्राप्त नहीं कि तो देश पतन को चला जाएगा और इसका विघटन भी सम्भव हो सकता है। रात्रि को गोरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

वैदिक रीति से नामकरण संस्कार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन के चालक श्री अशोककुमार आर्य के प्रिय सुपुत्र का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से २३/८/९० को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने यज्ञ सम्पन्न कराया और बच्चे का नाम जितेन्द्रकुमार आर्य रखा। नामकरण संस्कार के बाद श्री श्यामवीर राघवन, श्री दिनेशदत्त व प. चुन्नीलाल आर्य के मधुर भजन हुए।

अंग्रेजी हटाओ

देश बचाओ

वेदप्रचारमण्डल जिला जीन्द ने कार्य आरम्भ किया

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माननीय प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में १९/८/९० को बैठक आर्यसमाज मन्दिर जींद शहर में हुई थी। इस बैठक में सभा के अन्य अधिकारीगण व जिला जींद के बहुत से आर्य सज्जनों ने भाग लिया था। सर्वसम्मति से स्वामी रत्नदेव जी को वेदप्रचारमण्डल जिला जींद का संयोजक नियुक्त किया गया था। कार्य आरम्भ करने हेतु दूसरी बैठक रविवार २६/८/९० को प्रात: ९-३० बजे आर्यसमाज मंदिर जींद में स्वामी रत्नदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें बड़ी संख्या में इलाके के आर्य सज्जनों ने भाग लिया। सबकी सहमति एव सर्वसम्मति से संयोजक स्वामी रत्नदेव जी ने निम्नलिखित अधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्य नियुक्त किए।

सह-संयोजक—प्रो० ओमकुमार आर्य छोटूराम किसान कालिज जीन्द, कोषाध्यक्ष—श्री कर्णसिंह जी आय, उपप्रधान आर्यसमाज जींद शहर।

कार्यकारिणी के सदस्यों की सूची

सर्वश्री जयप्रकाश (पदेन) प्रधान आयसमाज जींद शहर, मोहन लाल (पदेन) मन्त्री आर्यसमाज जींद शहर, अभयसिंह आर्य आर्यसमाज रामनगर जींद, वेदपाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज जींद जक्शन वीरेन्द्र प्रधान आर्यसमाज नरवाना जिला जींद, राधाकृष्ण आर्य आर्यसमाज नरवाना जिला जींद, ब्र. रामस्वरूप आर्य आश्रम सभीदों, स्वामी सत्यवेश संचालक गुरुकुल शादीपुर जुलाना, धर्मसिंह आर्य सरपंच शादीपुर जुलाना, आचार्य बलदेव संचालक गुरुकुल कालवा, स्वामी जगत्मुनि गुरुकुल कालवा, मा. रायसिंह आय आर्यसमाज घोघड़िया, सूबेसिंह आर्य आर्यसमाज गेंडा खेड़ा, बलदेवसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज खटकड़, राजेन्द्र शास्त्री आर्यसमाज सुदकैन कलां, मा. कपूरसिंह आर्य आर्यसमाज डाहौला, मुन्शीराम आर्य आर्यसमाज सच्चा खेड़ा, विजयसिंह आर्य चूहड़पुर (सभी जि. जींद)।

सभा के पूर्व प्रचारक श्री चन्द्रभान जी आर्य जींद की भजन मण्डली को प्रचार कार्य हेतु नियुक्त किया गया। जीन्द उपमण्डल के दस गांव प्रचार के लिए चुने गए और इनके पश्चात् फिर दस चुन लिए जायेंगे और यह सिलसिला जारी रहेगा। सयोजक स्वामी रत्नदेव जी के अनुरोध पर आर्यसमाज जींद शहर ने अपने भवन में वेदप्रचार मण्डल का कार्यालय खोलने की सहर्ष अनुमति दे दी है तथा साथ ही आवश्यकतानुसार अन्य कमरे भी वेदप्रचार मण्डल से सम्बद्ध उपदेशको, प्रचारकों, अतिथियों आदि के ठहरने के लिए उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया है।

स्वामी रत्नदेव जी (संयोजक) ने आर्यसमाज जीन्द शहर, अन्य स्थानीय आर्यसमाजों, बाहर से आए हुए प्रतिनिधियों का धन्यवाद किया और सहयोग की अपील की है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने पहल करके वेदप्रचार मण्डल का गठन किया इसकी सभी ने प्रशंसा की और आशा व्यक्त की कि सबके सहयोग से जिला जीन्द में वेदप्रचार का कार्य सफलतापूर्वक तथा आर्यसमाज समाज सुधार का कार्य सफलतापूर्वक हो सकेगा कर सकेगी।

—ओमकुमार आर्य सहसयोजक
वेदप्रचारमण्डल जिला जीन्द

छपते-छपते

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक १६ सितम्बर १९९० को रोहतक मे होगी।

—सभामन्त्री

मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

आरक्षण को लेकर विवाद——

(पृष्ठ ३ से आगे)

सार्वजनिक और निजी उद्योगों में आर्थिक दृष्टि से उनके समकक्ष सुविधायें प्राप्त किए हुए हैं, या जो आयकर या सम्पत्तिकर दे रहे हैं, या उनके पास २५ बीघे सिंचित या ५० बीघे असिंचित भूमि है उनके बच्चों को इन सुविधाओं से वंचित कर देना चाहिए, ताकि एक-एक करके इन जातियों के सब लोगों को इन सुविधाओं का लाभ मिलता जाए।

आरक्षण की सुविधायें और मजहब

छुआछूत की बीमारी हिन्दू समाज तक ही सीमित है और इसी समाज ने सदियों से दलित जातियों का शोषण किया है तथा उन्नति के सब रास्ते बन्द किए रखे हैं इसीलिए यह स्वाभाविक भी था और तर्कसंगत भी कि आरक्षण की सुविधा संविधान के द्वारा इन दलित जातियों को दी गई। भारत के जो लोग मुसलमान, ईसाई आदि बने उनमें चाहे जातियां बनी रही और चाहे बहुत बड़ी सख्या में उनमें अन्तर्जातीय विवाह न होते हों, परन्तु उनको समाज में बाकी सब सुविधायें दूसरी जातियों के लोगों के बराबर ही मिलती रही और उन सुविधाओं के साथ साथ शिक्षा, चिकित्सा और नौकरी की सुविधाय भी अंग्रेजों के शासनकाल में ईसाइयों को मिलती रही। इसलिए इन जातियों के लोग उन सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए काफी बड़ी सख्या में ईसाई बन गए थे। आज जब हिन्दू समाज में रहते हुए उन जातियों के लोगों को ईसाई बन जाने वाले लोगों से अधिक सुविधायें संविधान के प्रावधानों के अनुसार मिलने लगीं, तो उन सुविधाओं का उपभोग करने के लिए वे स्वेच्छा से फिर से हिंदू समाज में प्रवेश करने लगे। वे न तो तब बाईबल पढ़कर और उस से प्रेरणा लेकर ईसाई बने थे और न आज वेद शास्त्रों का अध्ययन करके फिर से हिंदू बन रहे हैं। ईसाई पादरी चाहते हैं कि वे ईसाई ही बने रहें, इसलिए ईसाई रहते हुए उन्हें हिन्दू दलितों वाली सुविधाये दिलाने के लिए बेताब हो रहे हैं। वे यह भी कह रहे हैं कि जब इन जातियों के सिखों और बौद्धों को वही सुविधायें मिल गई तो ईसाई रहते हुए क्यों नहीं। वे ये भूल जाते हैं कि संविधान के अनुच्छेद २५(२) की व्याख्या के अनुसार "हिन्दूओं के प्रति निर्देश में सिख, जैन और बौद्ध धर्म के मानने वाले व्यक्तियों का भी निर्देश अन्तर्गत है।" १९४९ में अकालियों ने इस प्रावधान को स्वीकार करते हुए मजहबी, रामदासियां आदि जातियों को अनुसूचित जातियों की सूची में शामिल करवाया था। उनके कुछ कट्टरपंथी नेताओं ने सिख नेताओं को गुमराह करके हिन्दूओं से अलग होने की बात कही थी और धारा २५ को जलाया था, परन्तु जब उनको ये मालूम हुआ कि ऐसा करने से ये जातिया अनुसूचित जातियों की सूची से निकल जायेंगी और ऐसी अवस्था में वे सिख की बजाय हिन्दू कहलाना पसन्द करेंगी, तब उन्होंने अपनी मांग ऐसे छोड दी जैसे कभी की ही नहीं थी।

(क्रमश:)

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं से निवेदन

पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर भिजवावें

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर १९९० तक शराबबन्दी प्रस्ताव करवा कर प्रस्ताव की प्रतियां रजिस्ट्री पावती द्वारा हरयाणा सरकार को भिजवाने का यत्न करें। हरयाणा के कानून के अनुसार जिन पंचायतों के शराबबन्दी प्रस्ताव ३० सितम्बर तक सरकार को प्राप्त हो जावेंगे, उन ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जावेगी। **सुविधा के लिए प्रस्तावों के प्रारूप प्रकाशित किए जा रहे हैं।**

प्रो० शेरसिंह, सभाप्रधान

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैरकानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय
हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....
में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेन्ट गैरकानूनी ढंग से खुल्लमखुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीने वाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अतः हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाए और जो गैरकानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

प्रतिलिपि सेवा में

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एव कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला ....
५. जिलाधीश............
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

दिनांक .... ह० सरपंच तथा पंच ग्राम पंचायत

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा
चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....
पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में भ्रष्टाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे तथा भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक ....

प्रतिलिपि सेवा में [पहले प्रारूप के अनुसार]

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

नोट—इन प्रस्तावों के प्रारूप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक से भी मिल सकते है। अतः पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क करें।

हिन्दी का गौरव बढ़ाओ

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

●

शादी उत्सव के निमन्त्रण पत्र हिन्दी में छपाओ।
राष्ट्र का सन्देश सुमधुर हिन्दी भाषा में सुनाओ।
बोलकर भाषा विदेशी मत वृथा शेखी जताओ।
हंसों की महफिल में क्यों सरपंच कागा को बनाओ।
छोड़कर अनमोल हीरा हाथ ना कंकड़ उठाओ।
विदेशी भिखारिन को महारानी ना बनाओ।
देश की मझदार में मत हिन्दी नौका को डुबाओ।
कृष्ण की सन्तान बनकर गीत कंसासुर के गाओ।
अन्याय रुढिवाद की वन पवनसुत लंका जलाओ।
बोल दो हिन्दी की जय चिरनिद्रित भारत को जगाओ।
त्याग दो अंग्रेजियत कर लेखनी अपनी उठाओ।
आज मिलकर के परस्पर हिन्दी का गौरव बढ़ाओ।

● सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए। —स्वामी दयानन्द

फरीदाबाद में १५ दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज, सैक्टर ७, फरीदाबाद (हरयाणा) में श्री स्वामी सत्यपति परिव्राजक, आचार्य दर्शन योग विद्यालय आर्य वन क्षेत्र रोजड़ (गुजरात) की अध्यक्षता में आश्विन वदी १३/२०४७ से आश्विन सुदी ११/२०४७ तदनुसार १६ सितम्बर से ३० सितम्बर १९९० तक १५ दिन के लिए योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें महिलायें भी भाग ले सकेंगी।

शिविर में योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा 'क्रियात्मक योग साधना' सिखाने के साथ-साथ यम, नियम, आसन, प्राणायाम्, प्रत्याहार आदि अङ्गों पर तथा विवेक, वैराग्य अभ्यास, जपविधि, ईश्वर समर्पण व स्वस्वामिभाव सम्बन्ध को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर प्रकाश डाला जाएगा।

—बलबीरसिंह, मन्त्री.
आर्यसमाज सैक्टर ७ फरीदाबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न २३२०७/७३ रजि.   २   पृष्टि संवत् १ ९६ ०८,५३,०९०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए   भाद्रपद ३ २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक ३८ १४ सितम्बर १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

वेद में वर्ण व्यवस्था

—प० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा

इस ईश्वर की सृष्टि में ब्राह्मण अर्थात् वेद और ईश्वर का ज्ञाता अथवा इन दोनो का सेवक और उपासक मुख के तुल्य श्रेष्ठ है। जो मनुष्य विद्या, शम, दम आदि उत्तम गुणों में मुख के तुल्य उत्तम होते हैं वे ब्राह्मण कहलाते हैं। जो भुजाओं के तुल्य बल-वीर्य से युक्त होता है वह क्षत्रिय है। जो ऊरु=जघाओं के तुल्य वेग आदि कम अर्थात् व्यापार के लिए यातायात करता है एवं व्यवहारविद्या मे कुशल है वह वैश्य है। जो सेवा और निरभिमान से उत्पन्न मूर्खता आदि नीच गुणों से युक्त मनुष्य है वह शूद्र कहलाता है, इस विषय में यजुर्वेद का मन्त्र—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्य कृत ।
ऊरू तदस्य यद् वैश्य पद्भ्याᳬ शूद्रोऽअजायत ।। ३१।११।।

अर्थ—हे जिज्ञासु लोगो ! तुम (अस्य) इस ईश्वर की सृष्टि मे (ब्राह्मण) वेद और ईश्वर का ज्ञाता, इनका सेवक वा उपासक पुरुष (मुखम्) मुख के तुल्य उत्तम (आसीत्) है। (बाहू) भुजाओं के तुल्य बल वीर्य से युक्त (राजन्य) राजपुत्र=क्षत्रिय (कृत) किया है। (यत्) जो (ऊरू) ऊरु=जघाओं के तुल्य वेग आदि कर्म करने वाला है (तद्) वह (अस्य) इस ईश्वर की सृष्टि में (वैश्य) यत्र-तत्र देश में प्रवेश करने वाले का पुत्र वैश्य (आसीत्) है। (पद्भ्याम्) सेवा और निरभिमान से (शूद्र) मूर्खता आदि गुणों से युक्त मनुष्य [अजायत] उत्पन्न होता है, ये उत्तम कर्म से जानो ।।

भावार्थ—जो विद्या शम, दम आदि उत्तम गुणों में मुख के तुल्य उत्तम हैं, उन्हें ब्राह्मण, जो अधिक वीर्य=बलवाले मनुष्य बाहु के तुल्य कार्यसाधक हैं, उन्हें क्षत्रिय, जो व्यवहारविद्या में कुशल हैं, वे वैश्य और जो सेवा में श्रेष्ठ, विद्या से हीन, पगों के तुल्य मूर्खता आदि नीच गुणों से युक्त हैं, उन्हें शूद्र बनावें और मानें ।।

[महर्षि दयानन्द भाष्य]

मनु जी महाराज ने अपनी स्मृति में चारों वर्णों के कर्त्तव्य लिखे हैं। सर्वप्रथम ब्राह्मण के कर्त्तव्य—

अध्यापनमध्ययन यजन याजन तथा
दान प्रति ग्रहञ्चैव ब्राह्मणनामकल्पयत् ।। १।८८।।

अर्थ—१ निष्कपट होके प्रीति से पुरुष पुरुषो को और स्त्री स्त्रियों को पढ़ावे। २ पूर्ण विद्या पढे। ३ अग्निहोत्र आदि यज्ञ करें। ४ यज्ञ करावें। ५ विद्या अथवा सुवर्ण आदि का सुपात्रो को दान देवे। ६ न्याय से धनोपार्जन करनेवाले गृहस्थो से दान लेवे भी। इनमे से ३ कर्म पढना, यज्ञ करना, दान देना धर्म मे और ३ कर्म पढाना, यज्ञ कराना, दान लेना जीविका है, परन्तु 'प्रतिग्रह प्रत्यवर' ।। मनु० १० १०९ ।। जो दान लेना है वह नीच कर्म है। किन्तु पढाके और यज्ञ कराके जीविका करनी चाहिए।

अथ क्षत्रियस्वरूपलक्षणम्—

प्रजाना रक्षण दानमिज्याध्ययनमेव च ।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासत ।। मनु० १।८९।।

अर्थ—दीर्घ ब्रह्मचर्य से (अध्ययनम) सागोपाङ्ग वेदादि शास्त्रो को यथावत् पढना, [इज्या] अग्निहोत्रादि यज्ञो का करना (दानम) सुपात्रो को विद्या सुवर्ण आदि और प्रजा को अभयदान देना, [प्रजाना रक्षणम] प्रजाओ का सब प्रकार से सर्वदा यथावत पालन करना, यह धर्म क्षत्रियों के धर्म के लक्षणों मे और शस्त्रविद्या का पढाना, न्यायघर और सेना में जीविका करना क्षत्रियों की जीविका है।

अथ वैश्यस्वरूपलक्षणम्—

पशूना रक्षण दानमिज्याध्ययनमेव च ।
वणिक्पथ कुसीद च वैश्यस्य कृषिमेव च ।। मनु०१।९०।।

अर्थ—[अध्ययनम्] वेदादि शास्त्रो का पढना, (इज्या) अग्निहोत्रादि यज्ञो का करना [दानम] अन्नादि का दान देना ये तीन धर्म के लक्षण और [पशूना रक्षणम] गाय आदि पशुओं का पालन करना, उनसे दुग्धादि का बेचना, [वाणिक्पथम] नाना देशों की भाषा, हिसाब, भूगर्भविद्या भूमि बीज आदि के गुण जानना और सब पदार्थों के भावाभाव समझना [कुसीदम] ब्याज का लेना [कृषिमेव च] खेती की विद्या का जानना अन्न आदि की रक्षा, खात और भूमि की परीक्षा, जोतना बोना आदि व्यवहार को जानना, ये चार कर्म वैश्य की जीविका। ये गुण कर्म जिस व्यक्ति में हो वह वैश्य वैश्या और इन्ही का परस्पर परीक्षा और योग से विवाह होना चाहिए।

अथ शूद्रस्वरूपलक्षणम—

एकमेव हि शूद्रस्य प्रभु कर्म समादिशत ।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया ।। मनु० १।९१।।

अर्थ—[प्रभु] परमेश्वर [शूद्रस्य] जो विद्याहीन जिसको पढने से भी विद्या न आ सके शरीर से पुष्ट सेवा में कुशल हो, उस शूद्र के लिए [एनेषामेव वर्णानाम] इन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनो वर्णों की [अनसूयया] निन्दा से रहित प्रीति से सेवा करना [एकमेव कर्म] यही एक कर्म [समादिशत] करने की आज्ञा दी है। ये मूर्खत्वादि गुण और सेवा आदि कर्म जिस व्यक्ति मे हो वह शूद्र और शूद्रा हैं। इन्ही की परीक्षा से इनका विवाह और इनको अधिकार भी ऐसा ही होना चाहिए। इन गुण कर्मों के योग ही से चारो वर्ण होवे तो उस कुल देश और मनुष्य समुदाय की बडी उन्नति होवे और जिनका जन्म जिस वर्ण मे हो उसी के सदृश गुण कर्म स्वभाव हो तो अति विशेष है।

वेद और मनु महाराज के अनुसार चारो वर्णों के कर्त्तव्य कर्म प्रस्तुत किए।

महर्षि दयानन्द का एक पत्र

—इन्द्रजित् 'देव' यमुनानगर

[गतांक से आगे]

सन्तोष की बात यह है कि 'सार्वदेशिक' में इस पत्र की प्रति के साथ सम्पादक ने अपनी टिप्पणी में विज्ञजनों से प्रत्येक मन्त्र से पूर्व ओं शब्द बोलने के विषय में विचार करने की अपील की है। मैं उनकी भावना का समर्थन करते हुए निवेदन करना चाहता हूं कि केवल इस बात पर ही नहीं, इस पत्र में उल्लिखित अन्य बातों पर भी विज्ञजन विचार करें। चर्चा का आरम्भ करते हुए उनकी सेवा में निम्नलिखित शंकाएं प्रस्तुत करता हूं जो समाधान की खोज में हैं :

१- महर्षि के जितने भी पत्र आज तक 'परोपकारी' में प्रकाशित हुए हैं, उनमें यह स्पष्ट होता है कि पत्र किस स्थान से भेजा गया था। प्रस्तुत पत्र में यह बात स्पष्ट नहीं होती कि महर्षि ने यह पत्र कहां से लिखा/लिखवाया था।

२- अन्य सभी पत्रों में पत्र प्राप्त करने वाले को सम्बोधित करके वाक्य रचना की गई है जो स्वाभाविक व पत्र लेखन के सहज नियमों के अनुकूल है परन्तु इस पत्र में ऐसा क्यों नहीं ?

३- पत्र के आरम्भ में लिखित "श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने उपदेश किया", शब्दों से प्रतीत होता है कि यह पत्र किसी अन्य का है या महर्षि के नाम से किसी अन्य व्यक्ति ने भेजा है क्योंकि महर्षि या कोई भी अन्य व्यक्ति स्वयं अपने नाम के साथ श्री, जी व महाराज जैसे आदरसूचक शब्दों का प्रयोग नहीं करता।

४. पत्र के आरम्भ में लिखित 'संख्या २' का क्या तात्पर्य है ? क्या संख्या १ का भी कोई पत्र था ? वह पत्र जब तक उपलब्ध न हो इन उपदेशों पर अन्तिम निर्णय कैसे हो सकता है ?

५. पण्डित कालूराम जी कौन थे ? प्रस्तुत पत्र से यह स्पष्ट नहीं होता कि यह दससूत्रीय उपदेश उन्हें महर्षि ने क्यों दिया ? क्या पण्डित जी महर्षि से पत्र व्यवहार कर रहे थे ? विश्वास नहीं होता कि बिना मांगे महर्षि ने किसी को उपदेश भेज दिया हो। यदि पण्डित जी ने उपदेश मांगा या चाहा था तो महर्षि के पत्र का प्रारम्भ कुछ कुछ इस प्रकार का होना चाहिए था—आपका पत्र प्राप्त हुआ है। आपने जिन विषयों में मार्गदर्शन चाहा है, उन विषयों में मेरा उपदेश निम्नलिखित है……… ।

६. प्रारम्भ से लेकर अन्त में हस्ताक्षरों तक पूर्ण पत्र एक ही प्रकार के हस्तलेख में है (मूलपत्र की फोटो प्रति 'परोपकारी' में देखें) यदि यह माना जाए कि पत्र महर्षि द्वारा स्वयं लिखा गया है तो 'श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज' जैसे शब्द न होते और यदि (हस्ताक्षरों तक) किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखा गया है तो इसे प्रमाण की कोटि में कैसे रखा जा सकता है ?

७ (मूल) पत्र की आरम्भिक तीन पंक्तियों के बाद 'ओ३म्' लिखा गया है। तत्पश्चात् क्रमवार दस उपदेश लिखे गए हैं। सभी विज्ञजन जानते हैं कि परमेश्वर का निज व गुणवाचक नाम 'ओ३म्' पत्रों के बिल्कुल आरम्भ में ही लिखा जाता है, न कि पत्रों के मध्य में।

८. 'सब मन्त्रों से पूर्व ओ३मकार का प्रयोग करना', इस प्रथम उपदेश में 'ओ३मकार' शब्द अशुद्ध है।

९ 'संस्कार विधि' महर्षि की अन्तिम कृति है। प्रत्येक लेखक की अन्तिम कृति ही प्रामाणिक मानी जाती है क्योंकि लेखक अपनी रचना में वांछनीय परिवर्तन, परिवर्धन व परिष्कार करता है। 'संस्कार विधि' का प्रथम संस्करण सम्वत् १९३२ में लिखा गया था। इसमें संस्कृतपाठ एकत्र (एक स्थान पर) तथा भाषा (हिन्दी) पाठ एकत्र (दूसरे स्थान पर) रखा गया था। द्वितीय व अन्तिम संस्करण महर्षि ने सम्वत् १९४० में तैयार किया। संस्कारों का उपदेशार्थ, प्रमाण, वचन और प्रयोजन भी संस्कारों की विधि से पूर्व लिखा। कुछ अन्य संशोधन-परिवर्तन भी किए गए। यहां जो पत्र विचारणीय है, वह सम्वत् १९३९ में लिखा था। यदि यह मान लिया जाए कि सम्वत् १९३९ में महर्षि का यह विचार बना था कि प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में 'ओ३म्' बोलना चाहिए तो 'संस्कार विधि' के द्वितीय (संशोधित) संस्करण में जो सम्वत् १९४० में तैयार किया गया, महर्षि ने इसकी भूमिका में ऐसा आदेश क्यों नहीं दिया या इसमें स्वयं प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में 'ओ३म्' क्यों नहीं लिखा ? यदि उपदेश क्रम १ को सत्य मान लिया जाए तो फिर भी सहज अर्थ निकलेगा कि चैत्र सम्वत् १९३९ में महर्षि के विचार में प्रत्येक मन्त्र से पूर्व 'ओ३म्' बोलना चाहिये परन्तु डेढ़ वर्ष बाद आषाढ़ सम्वत् १९४० में 'संस्कार विधि' का संशोधन करते समय स्वयं ही महर्षि ऐसा आदेश देना या पुस्तक में प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में 'ओ३म्' लिखना भूल गए क्योंकि इसमें किसी मन्त्र के आरम्भ में ओ३म् लिखा है तथा किसी मन्त्र के आरम्भ 'ओ३म्' नहीं लिखा।

१०. 'रामचरितमानस' का पाठ करनेवाले लोग श्रद्धा व अज्ञानवश प्रत्येक दोहे व चौपाई के अन्त में 'रामा ! हो रामा', इन शब्दों का भी पाठ करने लगे हैं। वे नहीं जानते कि वे ऐसा करके कितनी निरर्थकता का सृजन कर रहे हैं। अभ्यासवश वे उन चौपाइयों व दोहों के अन्त में भी 'रामा ! हो रामा !!' बोल जाते हैं जिनमें रावण व मेघनाद, रावण मन्दोदरी, बाली व तारा, जैसे पात्रों के परस्पर सम्वाद होते हैं या प्रकृति की मनोहारी छटा का वर्णन होता है। इसी प्रकार की स्थितियों की कल्पना करके आप स्वयं सोच लीजिए कि प्रत्येक चौपाई व दोहे के अन्त में 'रामा हो रामा ! बोलना' कितना व्यर्थ ही नहीं, असगत भी है। इसी प्रकार कुछ उत्साही आर्यसमाजी वेद परायण यज्ञों के अवसरों पर प्रत्येक मन्त्र के अन्त में परन्तु 'स्वाहा' शब्द से पूर्व 'ओ३म् शब्द जोड़ कर आहुति देने लगे हैं। इस प्रकार से 'ओ३म्' बोलने में क्या तुक है ? अनेक मन्त्र ऐसे हैं जिनमें हम ईश्वर से प्रार्थना नहीं करते परन्तु ईश्वर मनुष्यों को उपदेश दे रहा है। ऐसे मन्त्रों से पूर्व 'ओ३म्' बोलना सर्वथा असंगत नहीं तो और क्या है ?

११. सब जानते हैं कि 'ओ३म्' शब्द मन्त्र भाग (पद) नहीं है। वेदमन्त्र काव्यबद्ध होने से गेय हैं। प्रत्येक काव्य गायन व संगीत के नियमों में गाया जाता है। यदि हम मन्त्र से पूर्व 'ओ३म्' शब्द जोड़कर मन्त्र गायन करेंगे तो फलतः सुविधाजनक गायन के नियमों में बद्ध गाने में व्यवधान उपस्थित होगा व राग बिगड़ेगा। मन्त्र नाम है, विचार का। प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में यदि 'ओ३म्' बोलना अनिवार्य है तो क्यों किसी हिंदी या अन्य भाषा के प्रत्येक गीत या भजन के आरम्भ में 'ओ३म्' नहीं बोलते ?

१२ प्रस्तुत पत्र के उपदेश क्रम २ में यह स्पष्ट नहीं होता कि त्रिवर्णों, द्विजों की स्त्रियों, शूद्रों व उनकी स्त्रियों व ईसाई मुसलमान आदि को उपदेश में वर्णित विभिन्न मन्त्रों से क्या करना चाहिए तथा क्या नहीं करना चाहिये। इस उपदेश से एक उलझन अन्य उत्पन्न होगी। वर्ण चार हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र। इनमें से जन्मना सभी शूद्र हैं। परन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य, इन तीन वर्णस्थ मनुष्यों को ही द्विज (विद्या माता से जिसका दूसरा जन्म होता है) माना जाता है। यही तीन वर्ण (द्विज) मन्त्रपाठ कर सकते हैं क्योंकि विद्या इनके ही पास होती है। उपदेश में त्रि वर्णस्थ मनुष्यों व द्विजों को मन्त्रपाठ का पृथक्-पृथक् उपदेश देने में महर्षि को क्यों आवश्कता प्रतीत हुई ?

१३. उपदेश क्रम ४ के विषय में भारी स्पष्टीकरण वांछनीय है क्योंकि यह महर्षि द्वारा 'सत्यार्थप्रकाश' में उपदिष्ट निम्नलिखित प्रसंग के सर्वथा विपरीत है :—

प्रश्न—सन्यास ग्रहण करना ब्राह्मण ही का धर्म है, या क्षत्रियादि का भी ?

(शेष पेज ४ पर)

आरक्षण को लेकर विवाद

—प्रो० शेरसिंह

(गतांक से आगे)

मण्डल आयोग की सिफारिशों पर अमल

काका कालेकर आयोग और मण्डल आयोग दोनों का कार्यक्षेत्र था मध्यम दर्जे की जातियों में से पिछडी जातियों की पहचान करना। समय-समय पर केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें पिछडी जातियों की पहचान करती रही हैं और सूचियां बनाती रही हैं। जो जातियां केन्द्र तथा संबन्धित राज्य अथवा केन्द्रशासित प्रदेश दोनों की सूचियों में सम्मिलित हैं उनको २७ प्रतिशत आरक्षण सरकारी तथा अर्द्ध-सरकारी नौकरियों में दिया जाएगा। ये सूचियां बदलती रही हैं और उन्हें अन्तिम सूचि नहीं कहा जा सकता। इसलिए जो जातियां ये सुविधायें प्राप्त नहीं कर पायेंगी उन जातियों के जानदार नेता दबाव डालकर उन जातियों को भी इन सूचियों में शामिल करवाने में लग जायेंगे, और इस प्रकार के आंदोलन उन जातियों में शीघ्र ही छिड़ जायेंगे। इससे जातियों के बीच में ईर्ष्या-विद्वेष और घृणा का वातावरण बनेगा यह निर्विवाद है। सामाजिक तथा आर्थिक न्याय के पक्ष में लच्छेदार भाषण देनेवाले नेता अब जातियों के समीकरण बैठाने में जी जान से लग जायेंगे। क्या गांधी जी और संविधान के निर्माताओं और आजादी के परवानों की हम से यही अपेक्षा थी। इस देश में तो ४००० जातियां और उपजातियां हैं कहा तक तुष्टीकरण करेंगे और सब कुछ करने के बाद भी बहुतसी छोटी-छोटी जातियां उपजातियां जानदार नेता के अभाव में दिल मसोस रह जायेंगी।

क्या करें ?

आरक्षण को लेकर राजनीतिक दलों ने एक बात तो मान ली है कि आरक्षण का आधार आर्थिक पिछड़ापन होना चाहिए जन्म के आधार पर मानी जानेवाली जात-पात नहीं। जो लोग एक सिरे से ही आरक्षण का विरोध कर रहे हैं, उनको न्यायबुद्धि से काम लेना चाहिए। क्योंकि मुकाबला उन्ही के बीच होना चाहिए जिनको शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं, उसमें अच्छे विद्यालय, योग्य शिक्षक और विद्यार्थी के परिवार की आर्थिक स्थिति तथा रहने-सहने की आधुनिक सुविधायें शामिल हैं। गांव में रहकर गांव के स्कूल में जहां ब्लेकबोर्ड और भवन तक भी नहीं हैं अयोग्य शिक्षकों से पढ़कर छोटे-छोटे मकानों की कोठरियों में परिवार के साथ रहकर वह शहर के सुविधासम्पन्न अच्छे स्कूल में योग्य शिक्षकों से स्कूल में और ट्यूशन देकर घर में पढ़नेवाले छात्र का कैसे मुकाबला करेगा ? जिन को समान अवसर मिले उनका ही आपस में मुकाबला होना चाहिए। इन बातों को ध्यान में रखकर तथा जो चार उद्देश्य गिनाए गए हैं उनकी रोशनी में ही आरक्षण की नीति बनाना उचित तर्कसंगत तथा व्यावहारिक होगा। मैं आरक्षण नीति के सम्बन्ध में निम्नलिखित सुझाव देना चाहता हूँ :—

१. अनुसूचित जातियों और जनजातियों का आरक्षण यथापूर्व रहे, परन्तु उसमें आर्थिक आधार को शामिल कर दिया जाए।

२. मध्यम दर्जे की जातियों के लिए अलग से जातियों के आधार पर आरक्षण न करके, संविधान में संशोधन करके कम से कम ४० प्रतिशत आरक्षण ग्रामों में बसे तथा ग्रामीण स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करनेवाले (चाहे वे उच्च शिक्षा की सुविधा ग्रामों में न होने के कारण शहरों में प्राप्त करें) आवेदकों के लिए करना चाहिए। आर्थिक मानदण्ड इनके लिए भी लागू होना चाहिये।

३. जिन सरकारी कर्मचारियों ने ग्राम विकास के महकमों में सेवा करनी है उन सभी पदों पर ग्रामों में बसनेवाले और शिक्षा प्राप्त करनेवालों को ही रखा जाए। आर्थिक मानदण्ड तो आवश्यक है ही।

४. जिन कर्मचारियों और अधिकारियों का रोज रोज का वास्ता समूचे समाज से पडता है उनमें से कम से कम ५० प्रतिशत कर्मचारी गांव में बसने और शिक्षा प्राप्त करनेवाले होने चाहिये। आर्थिक मानदण्ड आवश्यक रहेगा।

५. गांव के स्कूलों में योग्यता के आधार पर गांव में रहनेवाले और पढ़नेवाले प्रत्याशियों को ही लगाया जाए। शहर के लोग न तो गांव में आना चाहेंगे और न उनकी पढ़ाई में रुचि लेंगे।

६. विश्वविद्यालयों में सभी अध्यापक प्राध्यापक योग्यता के आधार पर चुने जायें।

७. पोलिटेकनिक, मैडीकल और इन्जीनियरिंग, इण्डस्ट्रीयल ट्रेनिंग स्कूलों में प्रवेश ५० प्रतिशत देहातियों को मिले। अध्यापक योग्यता के आधार पर ही रखे जायें।

८. आई० टी० आई० जैसी ऊंची तकनीकी शिक्षा तथा शोधसंस्थानों में योग्यता के आधार पर ही चयन हो।

समाचार पत्रों मे मिल रही सूचना को देखते हुए यह बात स्पष्ट है कि आरक्षण विरोधी आदोलन उग्र तथा व्यापक होता जा रहा है। सरकार कितना ही कहे कि वह अपनी घोषणा का दृढ़ता से पालन करेगी हमारा मानना यह है कि सरकार को पुन: विचार करके आरक्षण की नीति को अधिक ग्राह्य बनाना पड़ेगा। यहां राष्ट्रपति कैनेडी का कथन बहुत प्रामणिक है कि "किसी भी निर्णय पर भयग्रस्त होकर विचार नही करना, लेकिन पुनर्विचार के निर्णय के कारण भयभीत होने की आवश्यकता नही मानता"। लोकहित साधन के क्षेत्र में इस प्रकार के पुनर्विचार की सम्भावना सदा बनी रहती है और बनी रहनी चाहिए। सरकार की या समाज की हठधर्मिता अहम्मन्यता इसमें बाधक नही होनी चाहिए। गाधी जी का जीवन दर्शन इस दिशा में हमारा मार्गदर्शक है।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८—३९ में जिन भाइयों ने सक्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल में गए थे उन सबको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ऐसे सब सत्याग्रहियों को तारीख ३-११-९० को हरयाणा सभा अपने वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करेगी। इसी सिलसिले में सभा हैदराबाद आर्यसमाज का आंदोलन १९३८-३९ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमें हरयाणा के तमाम सत्याग्रहियों के फोटो और सक्षिप्त जीवन परिचय होगा। अत: सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना सक्षिप्त जीवन एवं पासपोट साईज का फोटो नही भेजा है वे यह सूचना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साईज का फोटो और ६—७ लाईन का जीवन परिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करें ताकि उनका नाम इतिहास मे लिखा जा सके।

जीवन परिचय का प्रारूप

१- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, ग्राम, जिला।

२- किसके जत्थे में थे।

३- कहा सत्याग्रह किया वहां कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल में रहे।

४- जेल मे कोई विशेष घटना हुई हो तो सक्षिप्त रूप मे लिखे।

महाशय भरतसिंह संयोजक
हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पैंशन समिति,
दयानन्दमठ रोहतक।

महर्षि दयानन्द का एक पत्र—-

(पृष्ठ २ का शेष)

उत्तर—ब्राह्मण ही को अधिकार है। क्योंकि जो सब वर्णों में पूर्ण विद्वान्, धार्मिक, परोपकारप्रिय मनुष्य है उसी का ब्राह्मण नाम है। बिना पूर्ण विद्या के धर्म परमेश्वर की निष्ठा और वैराग्य के सन्यास ग्रहण करने में संसार का विशेष उपकार नहीं हो सकता। इसीलिए लोकश्रुति है कि ब्राह्मण को संन्यास का अधिकार है, अन्य को नहीं। यह मनु का प्रमाण भी है :—

एषवोऽभि हितो धर्मो ब्राह्मणस्य चतुर्विधिः।
पुण्योऽक्षफलः प्रेत्यः राजधर्मः निबोधत ॥

—मनुस्मृति (६/६७)

यह मनु जी महाराज कहते हैं कि—'हे ऋषियो ! यह चार प्रकार अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम करना ब्राह्मण का धर्म है। यहा वर्तमान में पुण्य स्वरूप और शरीर छोड़े पश्चात् मुक्तिरूप अक्षय आनन्द का देनेवाला सन्यास धर्म है। इसके आगे राजाओं का धर्म मुझसे सुनो'।

'सत्यार्थ प्रकाश के पचम समुल्लास के उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि मनु महाराज व महर्षि दयानन्द केवलमात्र ब्राह्मण को ही संन्यास लेने का अधिकारी मानते थे। इसके विपरीत प्रस्तुत पत्र में उपदेश दिया गया है कि ब्राह्मण जब संन्यास ग्रहण करे तो नाम के अन्त में सरस्वती शब्द लगाए तथा क्षत्रिय वैश्य व शूद्र जब संन्यास ग्रहण करें तो .... ।' 'सत्यार्थ प्रकाश' व 'मनुस्मृति' के उपदेश के विपरीत इस उपदेश को कैसे मान्यता दी जा सकती है?

१४. उपदेश क्रम ४ के अन्त में 'शाडां सर्वातिमान यन्तर्यामितं कृपामृत सागरं परमात्मानमहं शरणं प्रपद्ये' वाक्य की इसी क्रम में वर्णित उपदेश से क्या संगति है?

१५. उपदेश क्रम ८ के अनुसार सभी आर्यों को भगवां वस्त्र पहनना चाहिए जबकि 'संस्कार विधि' के अनुसार (संन्यास संस्कार विधि) केवल संन्यासी को ही काषाय वस्त्र धारण करने चाहियें। परस्पर विरोधी दोनों मान्यताओं में जो विरोध है, उस पर विद्वानों को निर्णय लेना पड़ेगा।

१६. उपदेशक्रम ५ के सम्बन्ध में भी भ्रान्ति उत्पन्न हुई है। अन्त्यज (शूद्र) स्वजाति के उपदेशक कैसे हो सकते हैं? जाति तो सभी मनुष्यों की एक ही हैं। जो पढ़ा-लिखा ही न होगा, वह उपदेशक कैसे बनेगा?

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द के उक्त पत्र में शंकायें व भ्रम निहित है। विद्वानों की सेवा मे निवेदन यह है कि इन प्रश्नों के उत्तर दिए जाने चाहियें ताकि स्थिति स्पष्ट हो सके यूं 'सार्वदेशिक' में इस पत्र को प्रकाशित कर देने से ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि का दायित्व पूर्ण नही होता। धर्मार्य सभा मे इस पत्र के विषय में तुरन्त निर्णय लिया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में स्मरणीय है कि धर्म आर्यसभा के धर्माधिकारी श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने अपने पत्र दिनांक २९-१२-८४ को श्री जयनारायण द्वारका आर्य पुरोहित (मारीशियस) को यह निर्णय सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की ओर से भेजा था कि प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में ओ३म् नही बोलना चाहिए। अब धर्मार्य सभा को फिर निर्णय लेना होगा। यह अनिवार्य हो गया है।

इन्द्रजित् देव
स्पृहा, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग,
यमुनानगर—हरयाणा

शराब हटाओ देश बचाओ

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) का समारोह सम्पन्न

दिनांक १४ अगस्त १९९० जन्माष्टमी के दिन गुरुकुल धीरणवास का १८वां स्थापना दिवस समारोह उत्साह से मनाया गया। प्रातः ८ बजे संध्या हवन के बाद डा० बहल (हिसार) द्वारा ओ३म् का ध्वजारोहण के पश्चात् डा. साहब की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। महाशय झाब्बेराम आर्य एवं पं. रामनिवास जी के शिक्षाप्रद भजन हुए। इसी अवसर पर श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी (कंवारी), दिवानसिंह जी आर्य व रामजीलाल आर्य (बालसमन्द), बदलूराम आर्य (मुकलान), जेयसिंह जी योगी (हिसार), ओमप्रकाश आर्य (गोरखपुर), महेन्द्रसिंह आर्य (डोभी) फूलचन्द जी आर्य (मॉडल टाऊन हिसार) आदि ने योगीराज श्रीकृष्ण जी के चरित्र तथा गुरुकुल के सहयोग एवं प्रगति पर विचार रखे। गुरुकुल के कई छात्रों के भजन एव भाषण हुवे।

अन्त में अध्यक्षीय भाषण के बाद स्वामी सर्वानन्द जी ने आगन्तुकों एवं भजनीकों का धन्यवाद किया। सभा में उपस्थित कई सज्जनों ने आर्थिक सहयोग भी किया। श्री संतलाल जी फल विक्रेता (हिसार) ने अपनी तरफ से गुरुकुल को एक पंखा तथा फल वितरित किए। तत्पश्चात् एक बैठक हुई जिसमें गुरुकुल की कार्यकारिणी का वार्षिक चुनाव हुआ जिसमें सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गए प्रधान—श्री रामजीलाल आर्य, उपप्रधान—श्री बंसीधर आर्य, मन्त्री—सूबेसिंह आर्य, उपमंत्री जयसिंह योगी, कोषाध्यक्ष—अमर सिंह आर्य, मुख्याधिष्ठाता—स्वामी सर्वदानन्द जी, सहायक मुख्याधिष्ठाता—मालाराम आर्य, शिक्षा निरीक्षक—डा० विशम्भर बहल, लेखा निरीक्षक—महेन्द्रसिंह आर्य।

—आचार्य गुरुकुल धीरणवास, हिसार

शोक समाचार

बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि स्व० महाशय किशन सहाय लीलोढ जिला रोहतक निवासी के पुत्र श्री वैद्य सत्यदेव आर्य का स्वर्गवास २७ अगस्त १९९० को हो गया। आपकी आयु ५७ वर्ष थी। छोटी आयु में हो आप गुरुकुल झज्जर में चले गए थे और वहां गोशाला, पाकशाला, कृषिविभाग आदि में अनेक वर्षों तक गुरुकुल की सेवा लग्न और श्रद्धापूर्वक करते रहे।

इनके बड़े भाई श्री यज्ञदेव जी शास्त्री गुरुकुल झज्जर में मेरे सहपाठी रहे और स्नातक बनने के पश्चात् राजकीय सेवा में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। इनके बड़े भाई मा० दलीपसिंह जी का भी कुछ वर्ष पूर्व देहान्त हो गया था। अब इस आर्य परिवार का पूरा उत्तरदायित्व श्री शास्त्री जी पर ही आ गया है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति तथा परिवार सम्बन्धी मित्रजनों को दुःख सहन करने का धैर्य प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री

ज्ञानवर्द्धक पत्रिका

मैं आपकी पत्रिका सर्वहितकारी का नियमित पाठक हूं। आप की पत्रिका नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। आप पत्रिका में पाठकों के लिए काफी ठोस एवं महत्वपूर्ण सामग्री दे रहे है। इसके साथ-२ इसके विशेषांक भी काफी प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक होते हैं। आपके कुशल सम्पादन के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
मन्त्री आर्य युवक परिषद् गोहाना (सोनीपत)

पितृ यज्ञ—

श्राद्ध और तर्पण

आजकल आश्विन मास के प्रथम पक्ष में श्राद्ध करने की प्रथा प्रचलित है। जिस किसी का कोई पूर्वज जिस तिथि को स्वर्गवास हुआ हो, वह उसी तिथि को श्राद्ध करता है। खीर आदि बनाकर ब्राह्मणों को जिमाता है। कई लोग ऐसा विश्वास करते है कि काक (कौआ) पक्षियों को इन दिनों में खीर आदि उत्तम भोजन खिलाने से वह उनके माध्यम से उनके स्वर्गवासी पितरजनों के पास पहुंच जाता है। इसलिए वे कौओं का आह्वान करके उन्हें खीर आदि उत्तम भोजन खिलाकर पितरों का श्राद्ध करते हैं। यह एक भ्रांति एवं अवैदिक परम्परा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने श्राद्ध और तर्पण का वैदिक स्वरूप सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ सम्मुल्लास में इस प्रकार दर्शाया है।

पितृयज्ञ

जिसमें देव जो विद्वान् ऋषि जो पढने-पढ़ाने हारे, पितर माता पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परम योगियों की सेवा करनी होती है, उसे पितृयज्ञ कहते हैं एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाए उसे श्राद्ध कहते हैं, और जो श्रद्धा से कर्म किया जाए उसका नाम श्राद्ध है। जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पिता आदि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किए जायें उसका नाम तर्पण है परन्तु यह जीवितों के लिए है, मृतकों के लिए नहीं। 'विद्वांसो हि देवा:' यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है जो साङ्गोपाङ्ग, जो चार वेदों के जाननेवाले हों, उसका नाम ब्रह्मा और उनसे न्यून (कम) पढे हों उनका नाम देव अर्थात् विद्वान् है। उनके सदृश विदूषी उनकी स्त्री ब्राह्मणी, और देवी उनके तुल्य पुत्र और शिष्य तथा सदृश उनके गण अर्थात् सेवक हों, उनकी सेवा करना है, उसका नाम श्राद्ध और तर्पण है।

ऋषि तर्पण

जो ब्रह्मा के प्रपौत्र मरीचि ऋषि के समान विद्वान् होकर पढ़ावें, और जो उनके समान विद्यायुक्त उनकी स्त्रियां कन्याओं को विद्यादान करें उनके तुल्य पुत्र, शिष्य तथा उनके समान उनके सेवक हों, उनकी सेवा तथा सत्कार करना 'ऋषि तर्पण' कहलाता है।

पितृ तर्पण

१) सोमसद्—जो परमात्मा और पदार्थ-विद्या मे निपुण हों। २) अग्निदवस्त—जो अग्नि अर्थात् विद्युत आदि पदार्थों को जानने वाले हों ३) बर्हिषद्—जो उत्तम विद्या-वृद्धि युक्त व्यवहार में स्थित हों ४) सोमपा—जो ऐश्वर्य के रक्षक और महौषधि रस का पान करने से स्वय रोगरहित तथा अन्य के ऐश्वर्य के रक्षक और औषधी को देकर रोगनाशक करनेवाले हों ५) हविर्भुक्—जो मादक तथा हिंसाकारक द्रव्यों को छोडकर भोजन करनेहारे हो ६) आज्यपा—जो जानने के योग्य वस्तु के रक्षक और घृत तथा दुग्ध आदि खाने और पीनेवाले हों ७) सुकाली—जिनका अच्छा कर्म करने का सुखरूप समय हो ८) यम—जो दुष्टों को दण्ड और श्रेष्ठों का पालन करनेवाले न्यायकारी हों ९) पिता—जो सन्तानों का अन्न व सत्कार से रक्षक वा जनक हो १०) प्रपितामह—जो पितामह (दादा) का भी पिता हो ११) माता—जो अन्न और सत्कारों से सन्तानों का मान करे १२) पितामही—जो पिता की माता हो वह पितामही १३) अपनी स्त्री १४) अपनी बहिन १५) अपने संबंधी १६) संगोत्र—एक ही गोत्र के लोग १७) अन्य कोई भद्रपुरुष १८) वृद्ध—आयु आदि से वृद्धजन हों, उन सब को अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर पान आदि देकर अच्छे प्रकार से जो तृप्त करना है अर्थात् जिस जिस कर्म से उनकी आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे उस उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी है, वह श्राद्ध और तर्पण कहलाता है।

—सुदर्शनदेव आचार्य

संस्कृत सेवा संस्थान हरिसिंह कालोनी, रोहतक

आर्यसमाज सिवानी मण्डी का उत्सव

दिनांक १—२—सितम्बर १९९० को आर्यसमाज सिवानी मंडी (भिवानी) का उत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ जिसमे स्वा० सवदानन्द जी, महात्मा ताराचन्द जी, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी तथा डा० सरजीतसिंह आर्य के राष्ट्ररक्षा, स्वास्थ्य एव भोजन, गोरक्षा आर्यसमाज का इतिहास तथा शराबबन्दी बारे विस्तार से विचार हुए। प्रात: यज्ञ पर पचमहायज्ञ, आत्मा परमात्मा तथा यज्ञोपवीत पर भी प्रवचन हुए। महा० प्रेमी जी एव श्री दीपचन्द आर्य की भजन मण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए।

हनुमान आर्य मन्त्री आर्यसमाज सिवानी मण्डी

नामकरण संस्कार सम्पन्न

दिनांक २-९-९० को पण्डित सुदर्शनदेव आचार्य के पुत्र श्री सत्यपाल शास्त्री की पुत्री का नामकरण सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। श्री पण्डित विद्याव्रत शास्त्री, पण्डित अर्जुनदेव अग्निहोत्री तथा पण्डित जयपाल जी के उपदेश एवं भजन हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा को आर्यसमाज को वेदप्रचार तथा दशांश दिया गया। कार्यक्रम का प्रभाव बहुत अच्छा रहा।

—केदारसिंह आर्य

मन्दोदरी तथा रावण में प्रश्नोत्तरी संवाद

म—मानो पिया तुम भेजो सिया, जलता दिया बुझा देगी,
आर्य पतिव्रता नारी है, यह कुल का नाम मिटा देगी।
रा—रावण की पत्नी होकर तुम कायरता क्यों लाती हो,
शक्ति उनके पास नहीं जो कुल का नाम मिटाती हो।
म—स्वयं वरे माला डाले सभी को अच्छा लगता है,
पर-नारी को छल से हरणा कायरता है जडता है।
रा—चिन्तन करें ना वीर पुरुष मन में आए वह करते हैं,
कायर तो वह बालक हैं जो वन के बीच भटकते हैं।
म—विद्वान् ज्ञानी होकर हे स्वामी धोखा खाते हो,
सबके हितकारी श्री राम जिनसे बैर बढाते हो॥
रा—उस राम तपस्वी को रानी श्री राम क्यों बोल रही,
श्री-श्री १०८ श्री रावण का गुस्सा खोल रही।
म—विजय सत्य की होती है इतिहास गलत बन जाएगा,
आने वाला हर मानव इस कर्म को अधम बताएगा।
रा—रावण जो भी कर्म करे बिल्कुल ना घबराता है,
सिंह जिधर को चल देता मार्ग उधर बनाता है।
म—श्री राम सेना द्वारा इस अधर्म से टकराएगा,
मन्दोदरी चरण पडे स्वामी सग्राम घोर छिड़ जाएगा।
रा—घर को छोड़ भटकता है क्या हमसे टकराएगा,
आने का साहस किया यदि सागर में ही रह जाएगा।
म—महाराज आप अभिमानी बन स्वय कुल्हाडी मार रहे,
अधर्म पर हो खड़े हुए तल्वार धर्म पर चला रहे।
रा—शक्ति मेरे पास सभी राम का ध्वज गिराऊ गा,
काल का भी मैं महाकाल झण्डा अपना फहराऊं गा।
सोचो समझो और विचारो महापुरुषो का कहनर,
रावण भी पैर पसार मक्षा धर्म हमारा गहना।
महेश पन्हैडा खुर्द निवासी श्री राम बनना होगा।
रावण जैसे दुष्टों को फिर से खाली करना होगा।

महेश आर्य गांव व पो. पन्हैडा खुर्द, बल्लबगढ़
जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

आरक्षण की घोषणा का विरोध

आर्यसमाज के नेता व सुप्रसिद्ध समाज सुधारक डा० प्रशान्त वेदालंकार ने प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह द्वारा मण्डल आयोग के अनुसार २७ प्रतिशत पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण की बात को बिना राष्ट्रीय बहस के जल्दबाजी में राजनीतिक स्वार्थ से दिया गया वक्तव्य कहा है। डा० वेदालंकार ने कहा कि आरक्षण से इन जातियों का विकास असम्भव है।

वस्तुतः इन सभी पिछड़ी जातियों के निवास, स्वास्थ्य व शैक्षणिक विकास की वृहद् योजना से भी इन जातियों का विकास हो सकता है। प्रधानमन्त्री ने पिछड़ी जाति के लोगों के आवास, शिक्षा व स्वास्थ्य के विकास की कोई क्रांतिकारी योजना प्रस्तुत नहीं की।

वस्तुतः प्रधानमंत्री ने सवर्ण युवकों को आन्दोलन करने के लिए स्वयं बाध्य किया है। आरक्षण से जनता के किसी वर्ग के हितों की हानि होनी है तो उस हानि की पूर्ति का उपाय पहले ही सोचना चाहिए था और यदि आरक्षण से योग्यता के अभाव के कारण कार्य के स्तर में कमी आती है तो उसके स्थान पर उनके विकास की अन्य योजनाओं पर विचार अपेक्षित है।

डा० प्रशान्त वेदालंकार ने यह भी कहा कि जब तक आरक्षण की व्यवस्था से पिछड़ी जातियों के समृद्ध, शिक्षित और सरकारी लोगों को हटाया नहीं जायेगा तब तक आरक्षण का लाभ सबको प्राप्त नहीं हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति को दो बार से अधिक आरक्षण की सुविधा देने से सभी के विकास की सम्भावना कम है।

—डा० प्रशान्त वेदालंकार
७/२, रूपनगर, दिल्ली-११०००७

आरक्षण आर्थिक आधार पर होना चाहिए

राजधानी के सभी आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में पारित प्रस्ताव में यह कहा गया है कि देश की एकता अखण्डता एवं राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए आरक्षण जाति के आधार पर नहीं बल्कि आर्थिक आधार पर किया जाना चाहिए सभा की अध्यक्षता डा० धर्मपाल ने की।

महामंत्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि आर्यसमाज प्रारम्भ से ही दलितों, अछूतों, एवं कमजोर वर्गों के उत्थान एवं कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहा है। आर्यसमाज जाति के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था में विश्वास करता है। और अनुसूचित जातियों में जन्मे व्यक्तियों को आर्यसमाज में पुरोहित जैसा सम्मान जनक स्थान प्राप्त है।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि वर्तमान सरकार ने बढ़ती हुई महगाई एवं अन्य अनेक असफलताओं को छुपाने के लिए गलत नीतियों के द्वारा आरक्षण जैसी समस्यायें पैदा करके एकता व अखण्डता को खतरा पैदा कर दिया है।

केन्द्रीय मंत्री श्री रामविलास पासवान एवं श्री शरद यादव के वक्तव्य अत्यन्त गैरजिम्मेदार एवं संघर्ष भड़काने वाले हैं।

शास्त्री चाहिए

आर्ष गुरुकुल डिकाडला (पानीपत) को एक प्रशिक्षित शास्त्री अध्यापक चाहिए। वेतन एक हजार रुपये मात्र। शीघ्र पत्र व्यवहार करें अथवा मिलें।

कुलपति
आर्ष गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत (हरि०)

अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ

जिला सोनीपत में वेद-प्रचार कार्यक्रम

१२.८.९० को श्री प्रभुदयाल जी बत्रा एवं श्री आसानन्द जी बधवा के निवास स्थान पर वेदप्रचार किया गया।

१४.८.९० को विजय पब्लिक स्कूल सिक्का कालोनी सोनीपत एवं स्व. श्री अर्जुनदेव धवन दिल्ली के निवास स्थान पर कार्यक्रम हुआ।

१५.८.९० आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत में नन्दवानी कालोनी में वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

१७.८.९० श्री ठाकुर रतन लाल जी नगरपालिका पार्षद के निवास स्थान सोनीपत में वेदप्रचार किया गया।

२३.८.९० श्री मास्टर किरण सिंह जी जहांगीरपुरी दिल्ली में उनकी सुपुत्री पिंकी का जन्म दिवस वैदिक रीति से अपनाया गया।

२५.८.९० श्री हंसराज महता माडल टाऊन सोनीपत के मकान मुहूर्त पर यज्ञ एवं सत्सङ्ग का आयोजन किया गया।

३ सितम्बर ९० से ९ सितम्बर ९० तक आर्यसमाज नगर बड़ा बाजार सोनीपत में वेदप्रचार एवं वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

१४ सितम्बर ९० से १६ सितम्बर ९० तक आर्यसमाज गन्नौर शहर (सोनीपत) में श्री पं. जयदेव जी जतोईवाला की प्रधानता में वेदप्रचार एवं वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा।

६ अक्तूबर ९० से १४ अक्तूबर ९० तक स्वामी जीवनानन्द जी के ब्रह्मत्व में वेदप्रचार एवं हिन्दू मंच सोनीपत के तत्वाधान में प्राणीमात्र के कल्याणार्थ नेत्र शिविर लगाया जा रहा है।

आर्यसमाज गन्नौर मण्डी में भी रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक वेदप्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हरिचन्द स्नेही

ऋषि उपकार

[पं० ताराचन्द वैदिक, कविस्थल, महेन्द्रगढ़ (हरयाणा)]
(संयोजक जिला महेन्द्रगढ़ वेदप्रचार मण्डल)

देखो ऋषि दयानन्द, कैसा काट गया फन्द,
डूब जाता था बेड़ा वह पार कर गया—टेक
अविद्या की घनघोर घटायें, छाई थीं यहां चहुं दिशाएं
किया वेदों का प्रकाश, हुआ अन्धकार का नाश,
पड़े सोते जनों को बेदार कर गया ॥१॥
मजहबी ठग बनाके टोली, लूट रहे थे हमें दिन धोली,
ऐसे पाखण्डियों की पोल, सारी चौड़े में दी खोल
झूठे हथकण्डे पाखण्ड मिस्मार कर गया ॥२॥
राज विदेशी बुरा बताया, आजादी का पाठ पढ़ाया,
करना मत गउवे कुर्बान, समझो नफा और नुकसान
गौ करुणानिधि पुस्तक तैयार कर गया ॥३॥
जात पात का भेद हटाया, छुआछात का भूत भगाया,
कन्या विधवा और अनाथ, दुखिया रोते थे दिन रात,
अपने हाथों से सबका उद्धार कर गया ॥४॥
फिर से हवन की रीति चलाई,
शुद्ध ईश्वर भक्ति सिखलाई
ऋषि कैसा था महान्, करे कैसे कोई बयान
कहे ताराचन्द अगणित उपकार कर गया ॥५॥

आर्य समाजों के चुनाव

आर्यसमाज	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
अटायल (रोहतक)	दीपचन्द	बलजीतसिंह	[illegible]
गुमाना (सोनीपत)	जयदेव	जीता प.	धर्मवीर
जूवा (सोनीपत)	रामधारी	दीपचन्द	सत्यावती आर्या
रामपुरकुण्डल (सोनीपत)	राजेराम	इन्द्रसिंह	रामस्वरूप

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं से निवेदन

पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर भिजवावें

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर १९९० तक शराबबन्दी प्रस्ताव करवा कर प्रस्ताव की प्रतियां रजिस्ट्री पावती द्वारा हरयाणा सरकार को भिजवाने का यत्न करें। हरयाणा के कानून के अनुसार जिन पंचायतों के शराबबन्दी प्रस्ताव ३० सितम्बर तक सरकार को प्राप्त हो जावेंगे, उन ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जावेगी। सुविधा के लिए प्रस्तावों के प्रारूप प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह, सभाप्रधान

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैरकानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....

में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेन्ट गैरकानूनी ढंग से खुल्लमखुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीने वाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अत: हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाए और जो गैरकानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करे तथा उन्हें कड़ी सजा देकर शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करे।

प्रतिलिपि सेवा में

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२. मन्त्री आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एव कराधान आयुक्त जिला ....
५. जिलाधीश ....
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

दिनांक .... ह० सरपंच तथा पंच ग्राम पंचायत

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा

चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....

पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम मे अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे तथा भविष्य मे कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक ....—

प्रतिलिपि सेवा में [पहले प्रारूप के अनुसार]

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

नोट—इन प्रस्तावों के प्रारूप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक से भी मिल सकते हैं। अत: पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क करें।

अकेला

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

मिला अचानक गैल में, वृद्ध आदमी एक।
कमर झुकी दुबला बदन, चल रहा लाठी टेक।
चल रहा लाठी टेक जोर से उठ रही खांसी।
हमने पूछा नाम बताया उसने घासी।
आप अकेले फिरते हो क्यों मारे मारे।
है कितना परिवार साथ नहीं कोई तुम्हारे।
करी नमस्ते कुशलक्षेम बाबा से पूछी।
पास लिया बैठाय खोल दई जीवन सूची।
बेटी मेरी तीन हैं क्या बतलाऊं हाल।
उनको डाकू ले गए साथ गया धन माल।
साथ गया धनमाल उसी दिन से मैं दुखारी।
है दुनिया की रस्म रिवाज क्या चले हमारी।
बोला बाबा सुनो चार हैं मेरे बेटा।
समझा असली दूध मगर निकले सपरेटा।
मोहन, सोहन, रामजस चौथा बिहारीलाल।
उनको ले गई डाकिनी जाय बसे ससुराल।
बेटियों को दामाद सब ले गए विदा कराय।
बहुओं का एक एक सुत रखा पास अपनाय।
कहे 'स्वरूपानन्द' अजब दुनिया का मेला।
मतलब का संसार रह गया सिर्फ अकेला।



पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती समारोह का निमन्त्रण

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री जी की वार्षिक जयन्ती समारोह विजया दशमी के शुभ अवसर पर दिनांक २९-९-९० को सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में बड़े उल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। आप इसमें सादर आमन्त्रित हैं।

● कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया गया है ●

१– यज्ञ (विजया दशमी पर्व)	८ से ९ बजे प्रात:
२– वेद-उपदेश तथा भजन	९ से १० बजे प्रात:
३– पूज्य सिद्धान्ती जी के जीवन विषयक भाषण	१० से ११ बजे ,,
४– वेदशिक्षा शिविर के प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र तथा पारितोषिक वितरण	११ से ११-३० तक
५– श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन-चरित का विमोचन	११-०० से १२ बजे तक

वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

ग्राम खेड़ा (भिवानी) में वेदप्रचार

दिनांक २८ अगस्त १९९० को ग्राम खेड़ा में वेदप्रचार का आयोजन किया गया। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, सभा का शराबबन्दी कार्यक्रम तथा इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान बारे विस्तार से विचार रखे। इसके अतिरिक्त स्थानीय आर्य भजनोपदेशक श्री महाशय प्रेमी जी तथा श्री दीपचन्द जी आर्य की भजन मण्डली के शिक्षाप्रद भजन हुए। लोगों ने प्रचार को बड़े ध्यान से सुना।

प्रात:काल पंचायत घर में क्रांतिकारी जी द्वारा यज्ञ किया गया। यज्ञ पर एक अध्यापक सहित पांच नवयुवकों को जनेऊ दिए। तत्पश्चात् मा० दयानन्द जी के आग्रह पर डा० भीमराव अम्बेडकर पब्लिक स्कूल खेड़ा में क्रांतिकारी जी का नैतिक शिक्षा एवं विद्यार्थियों के कर्त्तव्य पर प्रवचन हुआ।

डा० जयसिंह आर्य
खेड़ा निवासी

✻ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —महर्षि दयानन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ रजि० न० P/R

सृष्टि संवत् १९६०८५३०९०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १७ अंक ४० २१ सितम्बर १९९० वार्षिक शुल्क ३०) आजीवन शुल्क १०१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के महत्वपूर्ण निश्चय

—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

रोहतक १६ सितम्बर— आज आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सभा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन में सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण निश्चय हुए —

१- सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क ३० रु० तथा आजीवन शुल्क १०१ रु० निश्चित

आगामी वर्तमान महगाई को दृष्टि मे रखते हुए सभा के मुखपत्र सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क ३० रु० तथा आजीवन शुल्क १०१ रु० निश्चित कर दिया गया है। पाठकों के लिए और अधिक प्रचारोपयोगी बनाने हेतु विशेषांक प्रकाशित किए जावेंगे।

२- पंचायतों को शराबबन्दी प्रस्ताव भेजने की प्रेरणा

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, उन्हें बन्द करवाने के लिए सभा ने ग्राम पंचायतों से अनुरोध किया है कि वे ग्रामीण जनता की भलाई के उद्देश्य से आगामी वर्ष से ठेके बन्द करवाने के लिए प्रस्ताव पास करवा कर ३० सितम्बर तक हरयाणा के मुख्यमन्त्री को रजिस्ट्री द्वारा भिजवा देवे। सभा के उपदेशक ग्रामो में जाकर सरपचों तथा पचो से सम्पर्क करके प्रस्ताव पास करने की प्रेरणा कर रहे हैं। आर्यसमाजें अपने उत्सवो पर शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन करेगी।

३- अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने पर हरयाणा सरकार को बधाई

हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री हुकमसिंह को १०+२ की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने की घोषणा करने पर उन्हें बधाई दी गई है और उनसे बी० ए० की परीक्षाओं में भी अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने की माग की है।

४- पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती की ९०वीं जयन्ती २६ सितम्बर को मनाने का कार्यक्रम

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं पूर्व लोकसभा सदस्य स्वर्गीय पंडित जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री की ९०वी जयन्ती दशहरे के पूर्व पर २६ सितम्बर को प्रात ८ बजे से सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे मनाई जावेगी। इस शुभावसर पर आचार्य सुदर्शनदेव जी द्वारा लिखित उनके जीवन चरित पुस्तक का विमोचन भी किया जावेगा।

५- हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियो का सम्मान १७ नवम्बर को होगा

सन् ३८-३९ मे ऐतिहासिक आर्यसत्याग्रह में हरयाणा प्रदेश से अन्य प्रदेशों से अधिक संख्या मे सत्याग्रही निजाम की जेलो मे गए थे। भारत तथा हरयाणा सरकार ने उन्हे स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करके पेंशन देकर सम्मानित किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से भी इन्हें १७ नवम्बर को रोहतक में सम्मानित करने का निश्चय किया है। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जावेगी।

६- सभा का वार्षिक अधिवेशन १८ नवम्बर का निश्चित

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) ४ नवम्बर की बजाए १८ नवम्बर की तिथि मे निश्चित कर दिया गया है। ३० अक्तूबर को रामजन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण आदोलन के कार्यक्रम को दृष्टि में रखते हुए तिथि मे परिवर्तन करना पड़ा है।

७- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसम्मेलन को सहयोग देने का कार्यक्रम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नई दिल्ली मे आयोजित २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसम्मेलन को सफल बनाने के लिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजो तथा आर्यसंस्थाओं से अनुरोध किया गया है कि वे इन तिथियो मे अपने उत्सव आदि के कार्यक्रम न रखें और इस सम्मेलन को तन मन तथा धन से पूरा सहयोग करें।

८- जातपात के आधार पर आरक्षण नीति का विरोध

अन्तरंग सभा की बैठक मे हरयाणा के कोने कोने से पधारे आर्यसमाज के नेताओ ने भारत के प्रधानमन्त्री द्वारा मण्डल आयोग की रिपोर्ट को जात-पात के आधार पर लागू करने का कडा विरोध किया है और सरकार से माग की गई है कि वह आर्थिक आधार पर मण्डल आयोग की रिपोर्ट लागू करे। सरकारी नौकरियों की परीक्षाओं मे ग्रामीण क्षेत्र के परीक्षार्थियों का मुकाबला ग्रामीणो से तथा शहरी क्षेत्र के परीक्षार्थियो का मुकाबला शहरियो से करवाया जावे। शिक्षा ग्रहण करने की सुविधा अमीर तथा गरीब छात्रो को समान रूप मे दी जावे।

महर्षि दयानन्द के विचार आज ज्यादा प्रासंगिक हैं

करनाल १२ सितम्बर (ससे)। सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता तथा विख्यात् इतिहासकार स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा है कि रामजन्मभूमि की समस्या केवल शिलापूजन या शख बजाने से हल नही होगी। रामजन्म भूमि की मुक्ति के लिए ऐसा आदोलन चलना चाहिए जैसा कि हैदराबाद मे मदिरो को निजाम से मुक्त कराने के लिए आर्यसमाज ने चलाया था। वे यहा आयोजित आर्यवीर दल के सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। (शेष पृष्ठ ६ पर)

द्रौपदी चीर-हरण : एक कोरी कल्पना : महाभारत की अन्त:साक्षी

(महा[...]जानकर प्रसन्नता होगी कुल कांगड़ी, हरिद्वार)
[...]सत्यदेवसिंह सिद्धान्ती

[यह लेख इतिहास [...]ऐं नई दिशा देनेवाला है। सभी को चाहिए कि इसको गम्भी[...] से पढे और अपने विचार भेजें ताकि इस विषय पर गोष्ठी करवाई जा सके तथा जन-जन तक इतिहास की इस भूल का मूल कारण पहुंचाया जा सके—सह-सम्पादक]

अभी-अभी दूरदर्शन पर दिखाया जानेवाला धारावाहिक महाभारत समाप्त हो चुका है। इसकी अनेक कड़ियों का प्रसारण विविध रूपों में किया गया। कहीं ग्रन्थीय महाभारत के कुछ अंश लिए गए, कहीं छोड़े गए और कहीं लोक में प्रचलित आम धारणाओं को भी इसमें समाविष्ट किया गया। यहां तक की संवाद-लेखक ने अपनी ओर से भी कुछ बातें डालकर इसे रोचक एवं सामयिक संदर्भ देने की कोशिश की। किन्तु महाभारत का युद्ध जो कुरुक्षेत्र की भूमि पर लड़ा गया था और जिसमें ग्यारह अक्षौहिणी सेना कौरवों की ओर से तथा सात अक्षौहिणी सेना पाण्डवों की ओर से हिरण्यवती नदी के तट पर पूर्वाभिमुख और पश्चिमाभिमुख होकर लड़ी; उसके मूल में जहां कौरवों द्वारा पाडवों को राज्याधिकार से पदच्युत करना था वहीं 'द्रौपदी अपमान' रूपी घटना ने इसमें घी का काम किया। महाभारत की अनेक घटनायें जहां प्रक्षेप की भरमार के कारण भ्रांति उत्पन्न करती हैं वहीं द्रौपदी अपमान की घटना भी आम आदमी में ही नहीं अपितु बड़े-बड़े विद्वानों के मस्तिष्क में भी भ्रांति उत्पन्न करती आ रही है। तथा कृष्ण जैसे महापुरुष के जीवन के उद्देश्य को मटियामेट कर, उनके महत्त्व को कम करती है।

वास्तव में क्या चीरहरण की घटना हुई थी? क्या कृष्ण जी ने चीर बढाया था? इन प्रश्नों का उत्तर हम महाभारत की अन्त: साक्षी के आधार पर प्रस्तुत करेंगे किन्तु उससे पूर्व एक बात पाठकों को और बताना चाहेंगे कि श्री कृष्ण जी का पाण्डवों के प्रति इतना स्नेह क्यों था और बलराम जी का दुर्योधन के प्रति इतना प्रेम-भाव क्यों था? इसमें निम्न कारण थे—कृष्ण जी के पितामह यदु हस्तिनापुर के ही राज्याधिकारी थे। कुन्ती उनकी सगी बुआ थी। अर्जुन उनकी बहिन के पति थे। कौरवों ने पाण्डवों को सदा दु:ख ही दु:ख दिया, इन सब कारणों से कृष्ण जी का स्नेह पाण्डवों के प्रति अधिक था। बलराम जी जहां दुर्योधन के गदा-गुरु थे, वहां श्रीमद्भागवत् की साक्षी अनुसार बलराम जी की लड़की का दुर्योधन के पुत्र से वैवाहिक सम्बन्ध भी था। इन कारणों से बलराम जी दुर्योधन के प्रति अधिक प्रेम रखते थे। यही कारण है कि महाभारत युद्ध में कृष्ण पाडवों की ओर रहते हुए भी लड़े नहीं तथा बलराम जी तो युद्ध के समय तीर्थ भ्रमण को चले गए तथा अन्त में गदायुद्ध के समय भीम पर बरस पड़े। अस्तु। अब हम मुख्य विषय पर आते हैं—

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के भू० पू० महानिदेशक श्री प्रो. ब्रजवासी लाल का कथन है कि रामायण और महाभारत कोई काल्पनिक इतिहास नहीं है किंतु इसके मूल में सत्यता है। भले ही उसमें बाद में कवि की कल्पना की उड़ान और सबर्द्धन के कारण बढ़-चढ़कर बातें लिखी गयी हों। श्री लाल ने महाभारत काल की सत्यता जानने के लिए हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, बरनावा, कुरुक्षेत्र, मथुरा, पानीपत आदि का उत्खनन व सर्वेक्षण करके उपरोक्त विचार अभिव्यक्त किए हैं। इसमे कोई शक नहीं कि मूल रूप मे घटना में सत्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने ग्रंथ सत्यार्थ-प्रकाश में महाभारत की श्लोक संख्या में निरन्तर वृद्धि की चर्चा की है। स्वामी जी के विचार पठनीय और मननीय हैं। यथा—"यह बात राजा भोज के बनाए 'संजीवनी' नामक इतिहास में लिखी है जो कि ग्वालियर के राज्य 'भिण्ड' नामक नगर के तिवाड़ी ब्राह्मणों के घर में है। उसमें स्पष्ट लिखा है कि व्यास जी ने चार सहस्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पांच सहस्र छ: सौ श्लोक युक्त अर्थात् सब दस सहस्र श्लोकों का प्रमाण 'भारत' बनाया था। वह महाराज विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिताजी के समय में पच्चीस और अब मेरी आधी उम्र में तीस सहस्र श्लोक युक्त महाभारत की पुस्तक मिलती है। जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक एक ऊंट का बोझा हो जाएगा" समु० ११) यह सच ही है इस समय १२५००० से भी ऊपर श्लोक संख्या है।

हम भी यहां महाभारत की अन्त:साक्षी के आधार पर उस तथ्य का निरूपण करेंगे जो हमारे हृदयों से अन्ध श्रद्धा की जड़ता वश आज भी उखड़ता नहीं है। महाभारत की विशिष्ट घटना है—"द्रौपदी का भरी सभा में अपमान"। कौरव वंश के विनाश में इस घटना का महान् महत्त्व है। न जूआ (द्यूत) होता और न यह घृणित कार्य होता। 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि:'। ज्ञानी-मानी कट-कट मर गए। वेद के ज्ञाता होने पर भी युधिष्ठर ने जूआ खेला। वेद कहता है—'अक्षैर्मादिव्य: कृषिमित्कृषस्व'। कहते हैं शकुनी की चालाकी से हार गए। क्यों जी! स्वयं हारने पर अन्यों को दाव पर लगाने का क्या अधिकार था। खैर।

द्रौपदी का भरी सभा में अपमान हुआ। उसे कटुवचन कहे गए; दुशासन ने उसकी केशराशि पकड़ कर जबरदस्ती घसीटकर सभा में लाकर अपमान किया। किन्तु द्रौपदी विदुषी थी, उसने स्पष्ट रूप से सभासदों से पूछा कि—'महाराज युधिष्ठर ने अपने आप हार जाने के बाद यदि मुझे दाव पर लगाकर हारा है तो मैं कैसे हारकर दासी-भाव को प्राप्त हो गयी'। इस बात को सुनकर जहां बड़े बूढे, गुरु लोग मुहं लटकाकर या फेरकर बैठ गए, वहां सभा के मध्य विदुर जी ने समयोचित सत्यवाणी का प्रयोग कर द्रौपदी के सभा में लाए जाने और उसके अपमान को महान् दुष्कृत्य और धर्म-हीन कृत्य बताकर कौरवों के विनाश की आशंका अभिव्यक्त की। समस्त दुष्टमण्डली की निन्दा की। वे कहते हैं—

> न हि दासीत्वमापन्ना कृष्णा भवितुमर्हति।
> अनीशेन हि राज्ञैषा पणे न्यस्तेति मे मति:।। सभा ६६।४

अर्थात् सर्वस्व से हाथ धोए पर हाथ बिके, राजा के दांव लगाने पर द्रौपदी दासी नहीं हो सकती, यह मेरी सम्मति है। वे कहते हैं अच्छे भले कुछ क्यों मृत्यु के घर में कूदने के लिए छलांगें लगा रहे हो? हे दुर्योधन! व्यर्थ पापमय बाणरूप तीखी वाणी से दु:ख न बढाइये।

तदनन्तर विकर्ण ने भरी सभा में जो साहस का परिचय दिया वह इतिहास की महान् घटना है। विकर्ण ने सब सभासदों से प्रश्न किए तो किसी ने उसे उत्तर न दिया। तब विकर्ण बोला-सब कुछ विचार कर मैं भी द्रौपदी को जीती हुई नहीं मानता। यथा—

> साधारणी च सर्वेषां पाण्डवानामनिन्दिता।
> जितेन पूर्वं चानेन पाण्डवेन कृत: पण:।।
> इय च कीर्तिता कृष्णा सौबलेन पणार्थिना।
> एतत्सर्वं विचार्याहं मन्ये न विजितामिमाम्।।

जब यह बात विकर्ण ने कही तो भरी सभा में हंगामा खड़ा हो गया। महाभारत में पढ़िए—'एतच्छ्रुत्वा महान् नाद: सभ्याना-मुदतिष्ठत'। तदनन्तर विदुर जी ने कहा— (शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्यपरिवारों से आत्म-निवेदन

वर्तमान में हमारे आर्यपरिवारों में पूर्णरूपेण आर्य मर्यादा का एवं सिद्धांतों का पालन न होने के कारण देखा जाता है कि आर्य-समाज के सम्मानित अधिकारी पद पर पुरुषों के होते हुए भी उनके परिवारजनों विशेषत: महिलाओं में आर्यत्व का प्राय: अभाव ही रहता है। इसका मुख्य कारण आर्यसमाज के सत्संगों में तो वे जाती नहीं न कभी अपने परिवारों में आर्यसमाज के पुरोहितों द्वारा सत्संग आदि कार्यक्रम रखवाते हैं इस कारण महिलाओं में प्राय: अपने पितृगृह के पौराणिक संस्कार छिपे रहते हैं।

घर की चारदिवारी में छिपे-छिपे पौराणिक त्यौहार, पर्व तो मनाते ही हैं, भ्रमण के नाम से सम्पन्न आर्य परिवार भी देखा जाता है, बद्रीनारायण, हरिद्वार, ऋषिकेश, प्रयाग, मथुरा, पुष्कर आदि कल्पित तीर्थ स्थानों में जाते हैं, खैर इस निमित भ्रमण का आनन्द तो मिलता ही है, लेकिन वह भले परिवार उपरोक्त तीर्थ स्थानों पर जाते हैं पर ठहरते अपने परम्परागत पण्डों के यहां ऐसा क्यों? उन्हें चाहिए कि जहां आर्यसमाज मन्दिर हैं वहां ठहरना चाहिए, वहा उन्हें आर्यत्व के संस्कार मिलेगे। सुव्यवस्थित आवास मिलेगा यज्ञ सन्ध्या आदि करने का पुण्य मिलेगा, वैदिक साहित्य मिलेगा, जैसे पण्डे-पुजारियों को भेंट पूजा अर्पण करते हैं, वैसे अपनी मातृ संस्था आर्य समाज को पुरोहित परिवार को भट करे तो कितना अच्छा काय हो।

हरिद्वार ऋषिकेश प्रयाग मथुरा पुष्कर अजमेर आदि नगरों में आर्यसमाज है, सुन्दर व्यवस्था है, पुष्कर में आर्य समाज अजमेर द्वारा संचालित सत्संग आश्रम में अभी आर्य विश्रामगृह हेतु दो कमरों का निर्माण सर्व सुविधायुक्त विद्यमान है।

आज अचानक जोधपुर निवासी सोनी आर्य बन्धु सेठ दाउलाल जी सोनी के ज्येष्ठ पुत्र ओमप्रकाश जी परिवार सहित भ्रमण यात्रा करते पुष्कर तीन चार दिन से अपने पारिवारिक पण्डों के यहां पर ही ठहरे थे। मेरा इस परिवार से जोधपुर स्मृति भवन में रहते हुए आत्मीय सम्पर्क रहा है।

श्री ओमप्रकाश जी की धमपत्नी ने दूर से मुझे पहचान लिया मैं एक आर्य पुरुष की दुकान पर बैठा था, दोनों दम्पत्ति ने बड़े श्रद्धा-भाव से आकर नमस्ते किया, उन्हें आश्चर्य हुआ कि मैं पुष्कर में कैसे? कारण मध्य मैंने दो वर्ष मसूदा आर्यसमाज को समय दे रखा था। उसके पूर्व मैं पुष्कर में वैदिक सत्सग आश्रम का ही संचालन करता था। अभी पुन: गत छ: सात माह से पुष्कर को अपना प्रचार क्षेत्र बनाया है। मैंने श्री ओमप्रकाश जी को अपने परिवार सहित अपने वैदिक सत्संग आश्रम में पधारने का आग्रह किया तो ठीक समय पर पधारे। आश्रम की जानकारी दी यज्ञप्रसाद के साथ वैदिक भेंटकर तथा जलपान कराकर उनका स्वागत किया तो उन्होंने कहा कि भविष्य में कहीं भी भ्रमण को जावेंगे तो आर्यसमाज मन्दिर में ही ठहरेंगे। विदा होते ओमप्रकाश जी ने 51 रुपये हमें भट किये। मैंने कहा हमें मिलने वाली भेंट या दक्षिणा की तो मैं संस्था की रसीद ही काटता हूं। उनकी धमपत्नी अति संकोचवश कहने लगी-स्वामी-जी इतनी अल्पराशि की रसीद क्या देते हो, आप जोधपुर पधारो। आश्रम के लिए दान तो बड़ी मात्रा में हम स्वयं भी देंगे, अन्य आर्य बन्धुओं से दिलवाएंगे। आर्य बन्धु भ्रमण पधारे अजमेर भिनाय कोठी ऋषि निर्वाण स्थली, ऋषि उद्यान, पुष्कर वैदिक सत्संग आश्रम में आर्य परिवारों के ठहरने की सुन्दर व्यवस्था है। पधारने की अग्रिम सूचना दें।

स्वामी केवलानन्द सरस्वती
वानप्रस्थ संन्यास आश्रम, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग अजमेर

—मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। —महात्मा गांधी

उग्रवादियों को पुरस्कार क्यों ?

पंजाब और कश्मीर उग्रवाद की भीषण आग में झुलस रहा है। हजारों युवकों ने पाकिस्तान से सैनिक प्रशिक्षण लेकर तथा हथियार लेकर भारत के विरुद्ध जंग छेड़ रखी है। वे पुलिस तथा अर्द्धसैनिक बलों पर राकेटों से आक्रमण कर रहे हैं, देशभक्त लोगों को मार रहे हैं। देश के नेता इस द्रोह का कारण बेरोजगारी कह कर उग्रवादियों को नौकरियां दे रहे हैं। गृहमंत्री मुफ्ती साहेब भी इन उग्रवादियों को मुख्यधारा में लाने के लिए उन्हें लाखों का ऋण तथा 20 से 30 हजार रुपये तक मुफ्त अनुदान देने की बाते कर रहे है। पंजाब के एक लाख युवकों को सरकारी नौकरियां दी जायेंगी। परन्तु मैं पूछता हूं कि पंजाब में यदि बेरोजगारी होती तो 30 लाख बिहारी तथा उत्तरप्रदेश की लेबर पंजाब में काम न करती। वास्तव मे बिहारी लेबर ही खेतों में, फक्ट्रियो में काम कर रही है, रिक्शा चलाना तथा अन्य प्रकार की मजदूरी कर रहे हैं।

यदि बेरोजगारी के कारण ही देश के नौजवान उग्रवादी बन कर देश के विरुद्ध जंग छेडते है तो यह काम बिहार, उड़ीसा में होना चाहिए जहां बेरोजगारी अत्यधिक है। यदि बेरोजगार ही उग्रवादी बनते हैं तो कश्मीर की पुलिस के जवान तथा अफसर क्यों उग्रवा-दियों से मिले हुए हैं। पंजाब में कितने ही पुलिस अफसर उग्रवादी होने के कारण पकड़े गये ऐसा क्यों?

मेरे विचार से भारत सरकार स्वयं बढ़ावा दे रही है। यदि अपराधियों, देशद्रोहियों, विद्रोहियों को दण्ड न मिले तो उनके हौंसले बढ़ते ही हैं और यदि उन्हें हत्याएं करने, देशविरोधी कार्य करने के कारण धन मिले, नौकरियां मिलें तब तो उनके दूसरे साथी भी उग्र-वादी बनने को लालायित होंगे।

पंजाब में उगवाद बढा तो श्री बूटासिह को देश का गृहमंत्री बना डाला फिर जब कश्मीर में भारत के प्रति विद्रोह भड़का तो उन्हीं कश्मीरियों के नेता मुफ्ती मोहम्मद सईद को गृहमत्री बना डाला और जब उग्रवाद पैदा करने वाले क्षेत्रों के ही युवकों को सर-कारी नौकरियां तथा लाख-लाख रुपये के ऋण देने की घोषणा की गयी है। *क्या इससे देश की रक्षा होगी या विध्वस ?*

—डा० कैलाश चन्द्र सी-285, प्रशान्त विहार, दिल्ली-110085

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

कभी साथ न खाइये, खिचडी मट्ठा खीर।
दुग्ध साथ हलुआ नहीं, सत्तू के सग क्षीर।।
दही खीर का मेल नही, मधु मूली के साथ।
दूध साथ इमली नही, और मूली के पात।।
खांसी और जुकाम में करो न दही प्रयोग।
खट्टी चीजें बर्फ जल, सभी बढ़ाते रोग।।
दस्तों में नहीं खाइये दूध अरहर की दाल।
गर्म मसाले चटपटे रखिये इनका ख्याल।।
चावल सिरका का नहीं करिये साथ मिलान।
मधु और घी बराबर करता है नुकसान।।
कटहल सब्जी खायके पियो न बन्धु क्षीर।
इसके पीने से तुरंत बढ़े पेट में पीर।।
करो न रात्रि के समय सत्तू का प्रयोग।
बहुत हानिकारक यह बढ़े कब्ज का रोग।।
सूर्य ताप में घूमकर और शौच के बाद।
जल ठंडा न पीजिये रखो हमेशा याद।।

द्रौपदी चीर-हरण एक कोरी कल्पना

(पृष्ठ २ का शेष भाग)

द्रौपदी प्रश्नमुक्तैव रौरवीति ह्यनाथवत् ।
न च विब्रूत तं प्रश्नं सभ्या धर्मोऽत्रपीड्यते ।।

साथ ही विकर्ण की बात को पुष्ट करते हुए विदुर जी कहते हैं कि विकर्ण ने जिस प्रकार बुद्धियुक्त प्रश्न किया है आप सब भी इसी प्रकार अपनी बुद्धि के अनुसार प्रश्न करें।

इस प्रकार विकर्ण और विदुर जी ने द्रौपदी के सभा मध्य लाए जाने का घोर विरोध किया। अन्य सभासदों को भी उकसाया। तब दुष्टमण्डली का विरोध होने लगा। भरी सभा में भयंकर विस्फोट होता देख यथा—तं वै शब्दं विदुरस्तत्ववेदी

शुश्रावघोरं सुवलात्मजा च।
भीष्मो द्रोणो गौतमश्चापि विद्वान्
स्वस्ति स्वस्तीत्यपि चैवाहुरुच्चैः।
ततो गान्धारी विदुरश्चापि विदुषा-
मुत्पातं घोरमालक्ष्य राज्ञे।
निवेदयामासातुरातवित् तदान्ततो
राजा वाक्यमिदं बभाषे ।।

पाठक! इन श्लोकों में स्पष्ट रूप से दुष्टमण्डली के विरोध में एक क्रांति का उद्घोष है। सभा में कई प्रकार के उत्पात दिखायी देने लगे। तदनन्तर धृतराष्ट्र की आंखें खुली और वे देश, काल और हिताहित का विचार कर दुर्योधन को इन शब्दों में फटकारने लगे—

हतोऽसि दुर्योधन मंदबुद्धे ! यस्त्वं सभायां नरपुंगवानाम्।
स्त्रियं समाभाषसि दुर्विनीत विशेषतो द्रौपदीं धर्मपत्नीम् ।। सभा ७१।२५

अर्थात् हे मन्दबुद्धि विनयहीन दुर्योधन! तू नष्ट हो जाएगा जो तू कुरुवंशियों की पुण्य सभा में एक देवी के साथ पापमय सम्भाषण कर रहा है, विशेषकर धर्म की पालना करनेवाली द्रौपदी से।

इस प्रकार महाराज धृतराष्ट्र ने महान् विपद आयी समझ द्रौपदी को विविध शांतिमयी वचन कहकर, उसे रनिनवास में भेजा और पांडवों को दासभाव से मुक्त कर दिया। बस, यहीं आकर यह एक अध्याय समाप्त हो जाता है। न यहां तक चीरहरण की बात है न बढ़ाने की। वह प्रसंग यहीं समाप्त हो जाता है किन्तु प्रत्येक बात में अलौकिकता का पुट देनेवालों ने प्रक्षेप की वह भरमार की है कि अगला अध्याय पूरा द्रौपदी के चीरहरण का देकर श्री कृष्ण जैसे महापुरुष को उसका वस्त्र बढ़ाते चित्रित किया है। जबकि चीरहरण जैसी घटना वहां हुई नहीं थी। वहां तो दुःशासन द्वारा रजस्वला एकवस्त्रा द्रौपदी को बालों से पकड़कर घसीटकर (ऐसे में वस्त्रों का उघड़ जाना स्वाभाविक है) क्योंकि अर्जुन आदि ने अपने ऊपरी वस्त्र उसकी ओर फेंके थे) लाकर सभा मध्य खड़ा कर दिया गया था, वही उसका घोर अपमान था। क्योंकि द्रौपदी स्वयं कहती है—'सभा में इससे पूर्व स्त्री जाति को इस प्रकार कभी अपमानित नहीं किया गया-यथा-धर्म्या स्त्रियं सभा पूर्वन नयन्तीति न श्रुतम। स नष्टः कौरवेषु पूर्वोधर्मः सनातन'।

हां, दुष्टमण्डली उसका घोर अपमान कर सकती थी, यदि विदुर और विकर्ण मण्डली ने उसका विरोध न किया होता। उनके विरोध करने का ही यह फल हुआ कि सभा में कौरव पक्ष के वीर भी इनके साथ हो गए और उत्पात की आशंका से भयभीत धृतराष्ट्र को हस्तक्षेप करना ही पड़ा।

इसी प्रकार उद्योग पर्व में कुन्ती श्री कृष्ण को संदेश देती हुई चीरहरण की बात कहीं नहीं कहती, बल्कि वह सर्वत्र ही द्रौपदी के अपमान और दुःशासन तथा दुर्योधन द्वारा कहे गए कटु व्यंग्य वचनों की बात ही कहती है। कुन्ती को सबसे अधिक दुःख इसी बात का है कि—

न राज्यहरणं दुःखं द्यूतं चापि पराजयः।
प्रव्राजनं सुतानां वा न मे तद् दुःख कारणम् ।।
यत्र सा बृहतीश्यामा सभायां रुदती तदा।
अश्रौषीत् परुषा वाचस्तन्मे दुःखतरं महत् ।।
स्त्रीधर्मणि वरारोहा क्षत्रधर्मरता सदा।
नाध्यगच्छत्तदानाथं कृष्णानाथवती सती ।।

वह कहती है—'कृष्ण मुझे राज्य के छिन जाने का इतना दुःख नहीं, जूए में हारने और वनवास होने का भी मेरे मन में उतना महान् दुःख नहीं, परन्तु भरी सभा में मेरी सुन्दरी पुत्रवधु द्रौपदी ने रोते हुए जो दुर्योधन के कटु वचन सुने थे वही मेरे लिए महान् दुःख का कारण बन गए हैं।

इसी प्रकार श्री कृष्ण महाराज जब सन्धि के लिए हस्तिनापुर जाते हैं, तब द्रौपदी जो उन्हें वचन कहती है, वे अन्तर्ज्वाला का धधकता रूप ही हैं। वह कहती है दुःशासन ने जो भरी सभा में उसे बाल खींचकर अपमानित किया था, उससे वह अब तक जल रही है। मेरे उस अपमान को मत भूलना। अर्जुन भी कृष्ण से कहते हैं कि पापबुद्धि दुःशासन ने जैसे द्रौपदी को सभा मध्य खींचा था, उस अपमान को कैसे भुलाया जा सकता है। प्रकारान्तर से हम यहां महाकवि भास के 'दूत वाक्यम' नाटक के भी कुछ उदाहरण दे रहे हैं। यथा 'द्रौपदी केशधषणमत्रालिखितम्' तथा 'एष दुःशासनो द्रौपदीं केश हस्तेगृहीतवान्' इनसे ज्ञात होता है कि भास के समय तक चीरहरण जैसी घटना अमान्य थी अपितु दुःशासन द्वारा द्रौपदी के केश पकड़कर सभामध्य लाकर उसे अपमानित करने की घटना का ही महत्त्व था। इसी प्रकार 'श्रीमद्भागवत् पुराण' के स्कन्द ११ अध्याय १ श्लोक २ के अनुसार केशापकर्षणरूप अपमान' का ही उल्लेख है।

इसी संदर्भ में हम यह भी तथ्य महाभारत की अन्तःसाक्षी के आधार पर रखना चाहेंगे कि जब जूआ खेला गया और द्रौपदी को सभामध्य अपमानित किया गया, उस समय श्री कृष्ण जी महाराज अपनी द्वारिकापुरी से भी और हस्तिनापुर से भी अति दूर थे। इसलिए एक महान् पुरुष को चीर-हरण जैसी बीभत्स घटना में चित्रित करना बुद्धिमानों की प्रज्ञा का श्रेष्ठ उदाहरण नहीं। जरा सोचिए —जो कृष्ण चेदि के शिशुपाल, मगध के जरासन्ध, मथुरा के कंस और हस्तिनापुर के कौरवों के अत्याचारों को सहन नहीं कर सका, जिसने अपनी अल्पावस्था में ही कंस को मारकर प्रजा को आनन्द प्रदान किया। जिस कृष्ण ने धृतराष्ट्र की भरी सभा में सन्धि प्रस्ताव रखते हुए दुर्योधन को खरी-खरी सुनायी और अपने कैद किए जाने की हर सम्भावना की कुटिल नीति को अपनी दूरदर्शिता से नाकाम कर दिया तथा जिस कृष्ण के जीवन का लक्ष्य ही अधर्म को मिटाना और धर्म की स्थापना करना हो वह कृष्ण ऐसे अधार्मिक, कुत्सित, घृणित कर्म में कैसे सहयोगी हो सकता है कि लो तुम चीर हटाओ, मैं बढ़ाऊं। धन्य है हमारी अन्धी श्रद्धा और बुद्धि को?

इसलिए पढ़िए उद्योग पर्व का यह श्लोक और विचारिये। यथा—

ऋणमेतत् प्रवृद्धं मे हृदयान्नापसर्पति।
यद् गोविन्देति चुक्रोश कृष्णा मां दूरवासिनम् ।।

अर्थात् जिस समय कौरव सभा में द्रौपदी का अपमान हो रहा था, मैं (श्री कृष्ण) हस्तिनापुर से बहुत दूर था, उस समय कृष्णा ने आर्तभाव से गोविन्द कहकर जो मुझे पुकारा था, उसका मेरे ऊपर ऋण बढ़ता ही जा रहा है, वह मेरे हृदय से दूर नहीं होता। वास्तव में यदि अपमान के समय कृष्ण वहां पहुंच गए होते तो महाभारत

(शेष पृष्ठ ८ पर)

क्या ये सब राष्ट्रहित में है?

—महावीर सिंह फोगाट

भारत को स्वतन्त्र हुए ४३ वर्ष हो गए हैं लेकिन ऊंचे स्तर पर बैठे कुछ लोग आज भी देश को अनेक प्रकार से गुलाम बनाए बैठे हैं। कुछ लोगों ने देश के ८० प्रतिशत कार्य पर कब्जा किया हुआ है। वे काफी प्रकार के कार्य करते हैं या थोड़ा कार्य करके भी अनेक कार्यों को अपने तरीके से दूसरे लोगों को थोड़ा सा पैसा देकर करवा रहे हैं। इस प्रकार वे अनेक कार्यों पर तथा उनसे होनेवाले लाभ को अधिक प्रतिशत में स्वय बटोर रहे हैं तथा अधिक से अधिक कार्यों पर कब्जा करते जा रहे हैं। जबकि दूसरी ओर 80 प्रतिशत लोग ऐसे भी हैं जिन्हें एक आध छोटा सा कार्य मिला हुआ है और जैसे तैसे गुजर-बसर कर रहे हैं। लेकिन इनमें से 20 से 40 प्रतिशत लोग ऐसे भी हैं जिन्हें निश्चित कार्य नहीं मिला हुआ है इन्हें कभी-कभी ही काम मिल पाता है। कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें बिल्कुल भी काम नहीं मिल पाता। वे या तो मांगकर खाते हैं या चोरी करते हैं। लेकिन पैसेवाले लोगों की नकल पर वे लोग अशिक्षित होते हुए भी नशे में फंसे हुए हैं।

कुछ लोगों ने तो इनका और भी शोषण करते हुए इनके लिए नशे की सुविधाएं जुटा दी हैं और सरकार भी इसमें शामिल हो चुकी है। विशेष रूप से शराब के ठेकेदार सरकार ने पाल लिए हैं। अफीम आदि के नशे शराब से सन्तुष्टि न मिलने पर किये जाते हैं। इस प्रकार देश नशों और फलत: अश्लीलता की नई गुलामी में फंसता जा रहा है। लोगों को असली शिक्षा और रोजगार से दूर रखने के लिए नकली अंग्रेजी शिक्षा और आरक्षण को बढ़ावा देकर वर्गभेद के संघर्ष को बढ़ाकर कुछ लोग घटिया नेता तथा घटिया शिक्षा शास्त्री बनकर ही सन्तुष्ट हो बैठे हैं। ऐसे घटिया अधकचरे शिक्षित मूर्ख लोग जब-जब भी शराबबन्दी, पशुवध विरोध या अंग्रेजी और अश्लीलता का विरोध देखते हैं तो इनकी देशभक्ति जाग जाती है और ये लोग चिल्लाने लगते हैं कि अश्लीलता शराब मांसाहार या अंग्रेजी हटानेसे देश टूट जाएगा। ये इतने चिल्लाते हैं कि इनकी बात मानली जाती है क्योंकि इन्होंने अपनी काली करतूतों से अपने बहुत से ग्राहक बना लिए होते हैं। वे ग्राहक भी इनके साथ मिल जाते हैं और भारत देश फिर अनन्तकाल तक शराब मांसाहार अश्लीलता और अंग्रेजी को ओढ़ काली पीली भेड़ों की तरह जीवन यात्रा पर अग्रसर रहता है।

जब जमीन के साथ अन्य प्रकार की सम्पत्ति की सीमा रेखा खींचने की बात चलती है तब ये कमाऊ शक्तियां एकजुट हो जाती हैं और अपने देश तोड़क, देश पिछाड़क बहानों को उछाल अपनी बात और राह साफ किए चलती हैं।

पीछे श्री खुशवन्तसिंह ने अपनी महान् पत्रकारिता का उदाहरण देते हुए लिख मारा था कि "अंग्रेजी तो भारत की मातृभाषा है।" श्री राजीव गांधी ने कहा कि "अंग्रेजी विरोध से हिन्दी का अहित होगा।" जैसे कि अंग्रेजी हिन्दी का हक छीनकर उसे पुष्ट कर रही हो। ऐसे ही अब श्री प्रेम भाटिया ने अपनी महान् सोच प्रस्तुत की "दैनिक ट्रिब्यून 24-8-90 के शीर्षक—"हिन्दी आ रही है लेकिन दिशा क्या होगी" लेख में। आपने अपनी भटकाऊ सोच में भटक कर लिख दिया कि "मैं आर्यसमाजी परिवार में जन्मा और कट्टर हिन्दी संस्कृत समर्थक रहा हूं और अब भी हूं लेकिन वे आगे लिखते हैं कि "अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन" से देश निश्चित रूप से टूट जाएगा और इसकी मुझे चिंता हो रही है।

कितनी विचित्र बात है कि कुछ लोग मानते हैं कि अंग्रेज ने देश को एक किया और अंग्रेजी भी देश को एक कर रही है यदि हिन्दी में काम होगा या भारतीय भाषाओं में कार्य होगा तब देश टूट जाएगा। तब तो श्री भाटिया जैसे लोगों को हिन्दी में एक भी श लिखना या बोलना नहीं चाहिए और यदि पूरे देश पर भी यह बन्द लगा दिया जाए तो शायद देश एक वर्ष में ही दुनिया का शिरोम बन जाएगा। आप अंग्रेजी में भले ही चूं-चूं कर लेकिन किसी स्व धीन राष्ट्र में राष्ट्रभाषा को गुलाम बनाना कोई देशभक्त सहन न कर सकता। कोई देशद्रोही ही राष्ट्रभाषा का विरोध कर सक है।

मोर्चा सरकार की विघटनकारी नीति पर आर्यसमाज की प्रतिक्रिया

—स्वामी आनन्दबोध सरस्व

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, सरकार के हाल ही उठाए गये कदमों से चिन्तित है जिनके तहत वर्तमान राष्ट्रीय मो सरकार सम्प्रदायवादी तथा देशद्रोही तत्वों को हर सम्भव उपह देने की होड़ में लगी है।

राष्ट्र की एकता और अखण्डता पर पहला प्रहार मण्ड आयोग की सिफारिशों को लागू करने का फैसला लेकर किया गय मण्डल आयोग की सिफारिशें हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के प्रक्षेपों त झूठे तथ्य पर आधारित हैं।

इसके तुरन्त बाद एक और साम्प्रदायिक घोषणा राष्ट्र के 4 स्वतन्त्रता दिवस पर मोहम्मद हजरत के जन्मदिवस को राष्ट्र अवकाश घोषित करके की गई। आर्य समाज पूछता है कि यह स कार इस प्रकार के निर्णय लेते समय राष्ट्र को एक संगठित शक्ति रूप में क्यों नहीं देखती? क्या प्रधानमन्त्री यह नहीं जानते कि रा आर्यसमाज का ऋणी है जिसके सर्वाधिक बलिदान स्वतन्त्र आन्दोलन में दिए गए और जिसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का र देशभक्त तथा समाजसुधारक के रूप में योगदान राष्ट्र के प्रत इतिहास का अखण्ड हिस्सा है।

यदि हजरतमोहम्मद का जन्मदिवस राष्ट्रीय अवकाश हो सक है तो महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस राष्ट्रीय अवकाश न होने कोई कारण ही नहीं। हमारे राष्ट्र की विभिन्न विचारधाराओं समूहों से सरकार एक समान व्यवहार क्यों नहीं करती?

सारा राष्ट्र जानता है कि ब्रिटिश सरकार अपनी हुकूमत कायम रखने के लिए ईसाईयत में धर्मान्तरण को हर प्रकार सहयोग व प्रोत्साहन देती रही है। आज यही ईसाई समुदाय दलितों व हरिजनों के लिए जो ईसाई बन गये थे, समस्त पूर्व सु धाओं की मांग कर रहा है। उनका कहना है कि जब धर्मान्त बौद्धों को सभी पूर्व सुविधाएं मिल सकती हैं तो धर्मान्तरित ईसाई को क्यों नहीं? यह कथन कहना धर्मान्तरण से सामाजिक स्थि में कोई बदलाव नहीं आता, उनके अपने धर्मान्तरण प्रचार छुपाने की एक चाल है। ईसा के नाम पर यही नेता दावा करते कि ईसाई धर्म में प्रवेश करने से हरिजनों की सामाजिक स्थिति सु जाएगी क्योंकि वे हरिजन नहीं रहेंगे। आर्यसमाज सरकार से पूछ है कि क्या सब असवैधानिक तथा राष्ट्रद्रोह नहीं है कि एक स समाज में वर्ग संघर्ष को बढ़ाने के लिए कार्यरत है और सरकार उ को मदद देना चाहती है।

जब इस प्रकार के तत्व ईसाईयत या इस्लाम के नाम हमारे राष्ट्र की एकता को तोड़ने में लगे हैं तो केन्द्रीय सरक खामोश क्यों है?

इसी प्रसंग में ईसाइयों से भी सवाल करते हैं कि:—

"क्या वे विदेश से प्राप्त धन को उन सभी हरिजन त सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ी जातियों में बांटने के लि तैयार हैं जिन्होंने धर्मान्तरण से इन्कार कर दिया है। यदि ऐसा न हो सकता तो हरिजनों को मिलने वाली विशेष सुविधाएं उन्हें व

(शेष पृष्ठ ६ पर)

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८—३९ में जिन भाइयों ने सक्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल में गए थे उन सबको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ऐसे सब सत्याग्रहियों को तारीख ३-११-९० को हरयाणा सभा अपने वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करेगी। इसी सिलसिले में सभा हैदराबाद आर्यसमाज का आंदोलन १९३८-३९ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमें हरयाणा के तमाम सत्याग्रहियों के फोटो और संक्षिप्त जीवन परिचय होगा। अत. सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना संक्षिप्त जीवन एवं पासपोर्ट साईज का फोटो नहीं भेजा है वे यह सूचना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साईज का फोटो और ६—७ लाईन का जीवन परिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करें ताकि उनका नाम इतिहास में लिखा जा सके।

जीवन परिचय का प्रारूप

१- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, गाम, जिला।
२- किसके जत्थे में थे।
३- कहां सत्याग्रह किया वहां कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल में रहे।
४- जेल में कोई विशेष घटना हुई हो तो संक्षिप्त रूप में लिखे।

महाशय भरतसिंह संयोजक
हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति,
दयानन्दमठ रोहतक।

मोर्चा सरकार की विघटनकारी नीतियाँ—

(पृष्ठ ५ का शेष)

मिलें जो अपना धर्म छोड़ चुके हैं जिसके कारण उन्हें सुविधाएं मिलती थी।"

आर्यसमाज ने देश को असंख्य शहीद जैसे पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, स्वामी श्रद्धानन्द आदि दिए, परन्तु आज किसी भी राष्ट्रीय पर्व पर सरकार द्वारा इन आर्यसमाजी नेताओं को याद करने की जगह उन लोगों के नाम लिए जाते हैं जिन्होंने कोई उल्लेखनीय राष्ट्रसेवा नही की।

आर्यसमाजियों को ब्रिटिश राज का शत्रु उस समय माना जाता था जब कांग्रेस की स्थापना भी नहीं हुई थी। उन्हें हर प्रकार की यातनाएं दी जाती थी और अपने राष्ट्र-भक्त विचारों के कारण हा आर्यसमाजियों को फौज में भर्ती के काबिल नहीं समझा जाता था।

आर्यसमाज जैसी राष्ट्रवादी ताकत का धैर्य अब लगभग समाप्त होता जा रहा है। सरकार को इसे महसूस कर लेना चाहिए और न्यायोचित कदमो पर विचार करना चाहिए।

इन सब वर्तमान समस्याओं पर निर्णय लेने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक शीघ्र ही बुलाई जाएगी।

महर्षि दयानन्द के विचार—

[प्रथम पृष्ठ का शेष]

उन्होंने कहा कि मूर्ति पूजा जैसी बुराई को किसी भी कीमत पर बढ़ावा नही मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश को सिर्फ आर्य समाज ही बचा सकता है, क्योंकि सभी प्रकार की कुरीतियों के खिलाफ आर्यसमाज ही संघर्ष कर सकता है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के विचार वर्तमान परिस्थितियो मे और भी ज्यादा प्रासगिक है।

उन्होंने आर्यसमाजियों को आह्वान किया कि वे आर्यसमाज में युवकों को लाने के लिए आर्यवीर दल को पूरा महत्व द, क्योंकि आर्यवीर दल ही युवकों का नैतिक व सामाजिक विकास कर सकता है। —ओमानन्द सरस्वती

जिला हिसार में वेदप्रचार एवं शराबबन्दी प्रचार की धूम

आर्यसमाज बालसमन्द की ओर से दिनांक ८—२२ अगस्त ९० तक ७ गांवों में वेदप्रचार एवं शराबबन्दी प्रचार का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम जिला हिसार की सीमा से लगते श्री गंगा नगर जिला (राज०) के गांव डाबड़ी में ८—९ को गांव भिराणी (राज०) १०—११ को वेदप्रचार का कार्यक्रम हुआ। प्रचार में हजारों की संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। यज्ञ पर महिलाएं बड़ी श्रद्धा से घृत लाई। दिनांक १२—१३ को गांव बुड़ाक (हिसार) में आर्यसमाज मन्दिर में सांय वेदप्रचार एवं प्रातः यज्ञ का कार्यक्रम हुआ। १४—१५ को गांव बाण्डा हेड़ी में प्रचार हुआ। श्री राजीलाल आर्य, दाताराम आर्य, डा० सदाराम आर्य के घर पर पारिवारिक यज्ञ हुआ। १६—१७ को गांव डोभी में प्रचार एवं प्रातः हनुमान मन्दिर में यज्ञ हुआ। १८—१९ को गांव खारिया में २० वर्ष बाद श्री वेदप्रकाश आर्य के आग्रह पर एक दिन चौपाल में एक दिन पंचायत घर में वेद प्रचार हुआ। प्रातः सूबेदार कांशीराम आर्य के यज्ञ हुआ। २०—२१ को गाव सरसाना में गांव के चौक में प्रचार एवं प्रातः पंचायत घर में हवन हुआ। इस गांव में यज्ञ पर भी भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। २२ को भी प्रातः यज्ञ किया गया। यज्ञ के एक घण्टा बाद जब हम दो किलोमीटर चलकर रूहेला भिवानी के बस अड्डे पर पहुंचे वहां महाशय झाबेराम जी के कांशी में रूका पडगा ये कौन स्वामी आगा तथा करेगी पीने वालों का नाश शराब जैसी बुरी चीज ना। भजन हुए ईश्वर की कृपा से २-३ अंगुल वर्षा भी अचानक हो गई। लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई।

उपरोक्त सभी गांवों में निम्न विद्वानों ने भाग लिया। स्वामी जगत्मुनि जी, स्वामी सवदानन्द जी सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, दीवानसिंह आर्य प्रधान (आर्यसमाज बालसमन्द) आदि ने आर्यसमाज, राष्ट्ररक्षा, भ्रष्टाचार तथा शराबबन्दी पर विचार रखे। सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की भविष्य में भ्रष्ट राजनेताओं से सावधान रहने की अपील की। यज्ञ पर प्रत्येक स्थानों पर आत्मा, परमात्मा, पंचमहायज्ञ, चोटी और यज्ञोपवीत का महत्व पर विचार रखे, ईश्वर भक्ति के प्रेरणा प्रद भजन हुए। नवयुवकों ने जनेऊ धारण किए, बुराइयां छोडने की प्रतिज्ञा की। गांव डोभी तक महाशय झाबेराम जी एवम् पंडित रामनिवास जी के शिक्षाप्रद भजन हुए। गांव खारिया एवं सरसाना में झाबेराम, पं० दीपचन्द जी की मण्डली, महाशय हरफूल आर्य (गोरछी) महेन्द्र आर्य के क्रांतिकारी समाज सुधार के भजन हुए।]

इनके अतिरिक्त सरसाना में स्वामी रतनदेव जी, महाशय सग्राम आर्य ने भी आर्यसमाज के सगठन को मजबूत करने तथा महिलाओं की शिक्षा एवं गोरक्षा बारे अपने विचार में विशेष बल दिया। आर्यसमाज बालसमन्द के अधिकारी प्रधान श्री दिवानसिंह आर्य, भगवानसिंह आर्य, सुनीलदत आर्य, रामजीलाल आर्य लगभग सभी गांवों में वेदप्रचार में पधारे। सभी गांवों में लोगों ने बड़ी श्रद्धा से कार्यक्रम सुना तथा विद्वानों की तन मन धन से सेवा की साथ में बालसमन्द आयसमाज की भूरि-भूरि प्रशसा की। उपरोक्त कार्यक्रम का संयोजक एवं सभा संचालन का कार्य भी कुशलतापूर्वक क्रांतिकारी जा ने किया।

—माईलाल आर्य
मंत्री आर्यसमाज बालसमन्द

शराब हटाओ देश बचाओ

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं से निवेदन

पंचायतों से शराबबन्दी प्रस्ताव करवाकर भिजवावें

हरयाणा के आर्यकार्यकर्त्ताओं तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने क्षेत्र की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर १६६० तक शराबबन्दी प्रस्ताव करवा कर प्रस्ताव की प्रतियां रजिस्ट्री पावती द्वारा हरयाणा सरकार को भिजवाने का यत्न करें। हरयाणा के कानून के अनुसार जिन पंचायतों के शराबबन्दी प्रस्ताव ३० सितम्बर तक सरकार को प्राप्त हो जावेंगे, उन ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी नहीं की जावेगी। सुविधा के लिए प्रस्तावों के प्रारूप प्रकाशित किए जा रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह, सभाप्रधान

जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं तथापि वहां गैरकानूनी ढंग से शराब बिकती है, निम्नलिखित प्रस्ताव ग्राम पंचायतें पास करके सरकार को भेजें

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय

हरयाणा चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....

में शराब का ठेका नहीं है, परन्तु निकट के ग्रामों के ठेकों से शराब के ठेकेदारों के एजेन्ट गैरकानूनी ढंग से खुल्लमखुल्ला शराब बेचते हैं। इस प्रकार ग्राम में शराब पीने वाले वातावरण को दूषित करते हैं। किसान मजदूरों की कमाई बेकार हो रही है। छात्रों पर भी इसका कुप्रभाव पड़ रहा है।

अतः हमारे गांव की पंचायत आपसे निवेदन करती है कि आगामी वर्ष में शराब का ठेका न खोला जाए और जो गैरकानूनी ढंग से ग्राम में शराब बेचकर कानून का उल्लंघन करते हैं, उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें तथा उन्हें कड़ी सजा देकर शराब की बिक्री बन्द करने की कृपा करें।

प्रतिलिपि सेवा में

१. प्रधानमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली
२ मन्त्री आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
३. आबकारी एवं कराधान आयुक्त हरयाणा चण्डीगढ़
४. उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त जिला ....
५ जिलाधीश ....
६. मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

दिनांक .... ह० सरपंच तथा पंच ग्राम पंचायत

जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, आगामी वर्ष से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव

सेवा में

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय हरयाणा

चण्डीगढ़

हमारे ग्राम .... जिला ....

पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक .... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ग्राम सभा (पंचायत) शराब की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्रामीण जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ग्राम में अनाचार, अशांति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द की जावे तथा भविष्य में कदापि यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जावे, ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

दिनांक........ ....—

प्रतिलिपि सेवा में [पहले प्रारूप के अनुसार]

सरपंच तथा पंचों के हस्ताक्षर

नोट—इन प्रस्तावों के प्रारूप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक से भी मिल सकते हैं। अतः पत्र व्यवहार अथवा सम्पर्क करें।

द्रौपदी चीर हरण : एक कोरी कल्पना

(पृष्ठ ४ का शेष)

वहीं हो गया होता। क्योंकि कृष्ण उस समय के महान् बली, पराक्रमी, धर्मज्ञ, राजनीतिज्ञ, व कूटनीतिज्ञ तथा राष्ट्रीय नेता थे।

अब हम अपने पक्ष की प्रबलता में महाभारत के वनपर्व के कुछ श्लोक पाठकों के विचारार्थ प्रस्तुत करते हैं। जिस समय पाण्डव वनवासी हो जाते हैं तब श्री कृष्ण जी उनका कुशलमंगल पूछने वहां दल बल सहित पहुंचे। बातों ही बातों में जब युधिष्ठिर ने द्यूत के समय न आने का कारण पूछा तो तब कृष्ण ने बड़े कष्ट से जो कहा वह व्यास जी के शब्दों में पढ़िए—

एवं निहत्य समरे सौभं शाल्वं निपात्य च।
आनर्तान् पुनरागम्य सुहृदां प्रीतिमाह्वम ।। वन पर्व ४०
तदेतत् कारणं राजन् यदहं नागसाह्वयम् ।
नागमं परिवीरघ्न न हि जीवेत सुयोधन ।। ४१
मय्यागतेऽथवा वीर द्यूतं न भविता तथा ।
अद्याहं किं करिष्यामि भिन्नसेतुरिवोदकम् ।। ४२

अर्थात् राजन्। क्योंकि मैं सौभ और शाल्व को युद्ध में परास्त करने के निमित्त हस्तिनापुर से दूर था। शाल्व ने महाभयंकर विस्फोटक पदार्थों से युक्त एक यान निर्मित किया था, जिसका नाम सौभ था, इसमें भयंकर मारकशक्ति थी, जिसे नष्ट करने में कृष्ण जी व उनके पुत्र प्रद्युम्न को बड़ा परिश्रम और पराक्रम करना पड़ा। इसीलिए द्यूतसभा में उपस्थित न हो सका। यदि मैं वहां पहुंच गया होता तो दुर्योधन जीवित नहीं रह सकता था अथवा मेरे वहां पहुंचने पर जूआ होता ही नहीं। किन्तु राजन् जल पर से पुल टूटे हुए के समान अब मुझे बताओ मैं आपका वही प्रिय करूंगा।

पाठक! ऊपर लिखे गए श्लोक 'चीर-हरण' की वैधता को चुनौती देकर उसे अवैध घोषित कर देते हैं। उसकी मान्यता के भ्रम को खण्डित कर देते हैं। कृष्ण स्वयं ही कह रहे हैं कि वे उस समय वहां थे ही नहीं। चीर-हरण जैसी घटना महाभारतीय इतिहास में घटी ही नहीं। इसे हमें सत्य परिप्रेक्ष्य में लेकर देखना चाहिए। द्रौपदी को भरी सभा में घसीट कर लाना, उसे वहां लज्जित करना ही नारी जाति का सबसे बड़ा अपमान था। यहां हमें विदुर और विकर्ण मण्डली के साहसिक एवं ऐतिहासिक वचनों का महत्व समझना चाहिए। द्रौपदी को अपमानित करने के लिए दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन के बढ़ते कदम ही दुष्कृत्य करने को उद्यत हाथ विकर्ण मण्डल के विक्षुब्ध होने तथा सभा में उत्पात एवं बड़ा भारी हंगामा होने की आशंका से वहीं रुक गए। समस्त सभासद और धृतराष्ट्र तथा गांधारी एक अनहोनी घटना को महाभारतीय इतिहास में जुडने से बचा गए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न १२६०७/७३ रजि नं० ॥



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए. आश्विन १२, २०४७ वि०

वर्ष १७ अङ्क ४१ २८ सितम्बर १९९० वार्षिक शुल्क ३०) आजीवन शुल्क ३०१) विदेश मे ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

सर्वखाप पंचायत तथा आर्यसमाज द्वारा मंडल आयोग की सिफारिशों का विरोध

श्री विश्वनाथप्रतापसिंह प्रधानमन्त्री द्वारा अचानक मण्डल आयोग की सिफारिशों को जाति आधार पर लागू करने की घोषणा का भारत के कोने-कोने में जोरदार विरोध किया जा रहा है। इस समस्या पर विचार करने तथा कार्यक्रम तैयार करने के लिए हरयाणा में भी सर्वखाप पंचायतों का आयोजन सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह की प्रेरणा से कई स्थानों पर किया गया है।

सर्वप्रथम बहादुरगढ़(रोहतक) में ८ सितम्बर को सर्वखाप पंचायत के प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मत निर्णय किया था कि आरक्षण का क्या रूप होना चाहिए, इस विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए हरयाणा भवन नई दिल्ली में २१ सितम्बर को एक बजे सर्वखाप पंचायत, भारतीय किसान यूनियन तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों के प्रतिनिधियों की बैठक करने का निश्चय किया गया था। इसी कार्यक्रम के अनुसार २१ सितम्बर को हरयाणा भवन नई दिल्ली में एक बैठक सम्पन्न हुई जिसमें आरक्षण के मुद्दों पर खुलकर विचार किया गया। सबने मिलकर अखिल भारतीय मण्डल आयोग विरोधी बलिदान मंच के गठन का निर्णय किया। इसके संरक्षक प्रो० शेरसिंह पूर्व केन्द्रीय मन्त्री, अध्यक्ष चौ० हीरासिंह पूर्व कार्यकारी पार्षद तथा श्री नरेश दलाल जोकि नेता जी सुभाष की आजाद हिन्द सेना के सक्रिय नेता रहे हैं, को मन्त्री बनाया गया है। बैठक में यह भी निश्चय किया गया कि आरक्षण का विरोध करने के लिए लोकसभा तथा विधानसभा के सदस्य अपने त्यागपत्र देकर मैदान में उतरें और इस आंदोलन में खुलकर भाग लेवें। अपने आंदोलन के समर्थन में बोट क्लब नई दिल्ली में एक विशाल रैली के आयोजन की तैयारी का भी कार्यक्रम बनाया गया।

प्रो० शेरसिंह ने पालम तथा बहादुरगढ़ के सर्वखाप पंचायतों के सम्मेलन में प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए बताया था कि आरक्षण ऐसा गम्भीर और संवेदनशील मसला है कि इस पर गहराई से विचार करना चाहिए तथा देश का जिससे अधिक से अधिक हित हो और जाति संघर्ष से देश को बचाया जा सके। आज देश का पढ़ा-लिखा नौजवान सड़कों पर निकल आया है और कई नौजवानों ने गोलियां खानी पड़ी हैं। इस आंदोलन में बहुत से घायल होकर हस्पतालों में पड़े है। राष्ट्र की सम्पत्ति की भी काफी हानि हुई है। बसें और रेलगाड़ी तोड़ी और जलाई गई हैं। भारी संख्या में सड़कों पर पेड़ कटे पड़े हैं। उधर भारत को तोड़ने के लिए पंजाब, कश्मीर, असम आदि में अलगाववादी व आतंकवादी शक्तियां जोर पकड़ती जा रही हैं। ऐसे नाजुक समय में आवेश में आकर राष्ट्र को नुकसान वाले कदम रुकने चाहिये और सारे प्रश्न पर गहराई से विचार करना होगा।

प्रो० शेरसिंह ने मण्डल आयोग पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि इसका दायरा बहुत सीमित है। अनुसूचित जातियों और जनजातियों का आरक्षण तो संविधान में ४० वर्ष से चल रहा है और वह संसद का सर्वसम्मत निर्णय है, वह रहेगा। अवकाश प्राप्त सैनिकों, विकलांगों और स्वतन्त्रता सेनानियों के लिए भी आरक्षण है और यह भी रहना चाहिए। मण्डल आयोग ने तो दूसरे सामाजिक दृष्टि तथा शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े लोगों के लिए आरक्षण के सम्बध में रिपोर्ट दी है। जिसको लेकर यह विवाद उग्ररूप धारण कर गया है और हुआ यह है कि मण्डल आयोग ने जन्म के आधार पर जातपात के नाम पर कुछ जातियों के लिए २७% आरक्षण की सिफारिश की है। जन्म के आधार पर जात-पात ने देश को गुलाम बनवाया और स्वतन्त्र भारत में फिर से जात-पात के नाम पर आरक्षण करने से जातियों के बीच में संघर्ष होगा जिससे देश कमजोर होगा। यह निर्विवाद है कि भारत के ग्रामों में शिक्षा का स्तर बहुत नीचा है। ३०% स्कूलों में ब्लैकबोर्ड तक नहीं, ४० प्रतिशत में केवल एक अध्यापक है और ४० प्रतिशत में स्कूलों के भवन नहीं हैं। इसलिए जो बच्चे ग्रामों के स्कूलों में पढ़ते हैं वे सभी शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, वे चाहे किसी भी जाति के हों। इसलिए आरक्षण बिना जात-पात के भेद-भाव से ग्रामों के स्कूलों से पढे हुए प्रत्याशियों के लिए होना चाहिए। आज जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ गया है उसका समाज में कोई भी आदर मान नही है। आर्थिक मानदण्ड भी अवश्य रखा जाना चाहिए। जो व्यक्ति सरकार को आयकर देता है और सम्पत्तिकर देता है, प्रथम श्रेणी का या उसके समक्ष अधिकारी है। २० एकड़ नहरी या ४० एकड़ बरानी जमीन का मालिक है उसे आरक्षण की सुविधा नही मिलनी चाहिए। प्रो० शेरसिंह के आरक्षण पर इन विचारों को ध्यान से सुना और सहमति प्रकट की थी।

इसी प्रकार १० सितम्बर को प्रो० शेरसिंह जयपुर गए और आर्यसमाज द्वारा आयोजित एक बैठक में कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने आरक्षण के सारे प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा की और आर्यसमाज का दृष्टिकोण बताया। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज जन्म के आधार पर जात-पात को नहीं मानता और उसे देश के लिए घातक समझता है। आपने स्वामी अग्निवेश द्वारा आर्यसमाज के नियमों के खिलाफ मण्डल आयोग की सिफारिशों का प्रचार करने पर भर्त्सना की। इस पर आर्यसमाज की बैठक में स्वामी अग्निवेश को आर्यसमाज के सगटन से निष्कासित करने का प्रस्ताव पारित किया।

प्रो० शेरसिंह ने उसी दिन जयपुर में विश्वविद्यालय तथा मेडीकल कालेजों के छात्रों को भी सक्षिप्त सम्बोधन मे सयम से काम

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेद में यज्ञ की व्यापकता

पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा

यज्ञ को आर्यों के नित्य कर्त्तव्य कर्मों में सर्वप्रथम कर्म माना है। यज्ञ के अनेक रूप हैं जिनमें ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ व अतिथियज्ञ को पंचमहायज्ञों की संज्ञा दी है। ब्रह्मयज्ञ को ही साधारण भाषा में संध्या कहते हैं। ब्रह्म=परमात्मा और वेद हैं और इस प्रकार 'ब्रह्मयज्ञ' से तात्पर्य प्रभु का ध्यान वेदानुकूल पद्धति से करना विहित है। 'यज्ञ' शब्द 'यज' धातु से बना है जिसके अर्थ हैं देवपूजा, संगतिकरण और दान। अर्थात् देवजनों को यथोचित आदर सम्मान, सत्कार, परस्पर प्रेम, संगठन, मेल-मिलाप करना और दान देना ये सब कर्म यज्ञ कहलाते हैं। वैसे तो यज्ञ की विशालता बड़ी विशाल है क्योंकि जितने भी अच्छे कर्म हैं तथा जिन्हें कर्त्तव्य की कोटि में ला सकते हैं वे सारे कार्य यज्ञ कहलाते हैं। अतएव श्री कृष्ण महाराज ने गीता में कहा है—

यज्ञ शिष्टाशिन: सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्विषै:।
भुञ्जते ते त्वघं पापाये पचन्त्यात्म कारणात्॥ ३।१३॥

अर्थात् यज्ञशेष खाने वालों को सब पाप छोड़ जाते हैं, किन्तु जो केवल अपने निमित्त भोजन पकाते हैं, वे निरा पाप खाते हैं। श्री कृष्ण जी महाराज का यहां यज्ञ शेष से तात्पर्य है कि मानव जो भी कार्य करता है उसी को यज्ञीय भावना से सभी के हित की इच्छा मन में लेकर करे, तो जो इस प्रकार कर्म करते हुए धनोपार्जन होता है, वह वास्तव में यज्ञ शेष है। और इस भांति जो भी जीवनयापन करते हैं, उनको तो पाप छू भी नही सकता क्योंकि उन्होने तो स्वार्थ को तिरोहित कर दिया।

'यज्ञ' के विषय में यजुर्वेद २।२३ में कहा है—

कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्चति। पोषाय रक्षसां भागोसि॥

अर्थ—(क:) कौन सुख देनेवाला यजमान मनुष्य (त्वा) उस यज्ञ को (विमुञ्चति) छोड़ देता है? अर्थात् कोई नही। और जो उस यज्ञ को (विमुञ्चति) छोड देता है, (त्वा) उसको (स:) वह यज्ञ स्वरूप परमेश्वर भी त्याग देता है। यज्ञ करनेवाला मनुष्य (कस्मै) किस प्रयोजन के लिए (त्वा) उस हवन-सामग्री को अग्नि में (विमुञ्चति) डालता है? जिससे सभी सुखों की प्राप्ति एवं (तस्मै पोषाय) जिस से सब प्राणियों का पोषण होता है, इसलिए (त्वा) उस हवन-सामग्री को याजक (विमुञ्चति) अग्नि मे डालता है। किन्तु जो पदार्थ सबके उपकारक यज्ञ में प्रयुक्त नही होता, वह (रक्षसाम्) दुष्टजनों से (भाग) उपभोग करने योग्य (असि) होता है॥

इस मन्त्र में दो प्रश्नोत्तर है। वे इस प्रकार हैं—

प्रश्न—कौन यजमान यज्ञ का परित्याग करता है?

उत्तर—कोई नही, और जो यज्ञ को छोड देता है उसे परमेश्वर भी छोड़ देता है जिससे वह सदा दु:खी रहता है।

प्रश्न—यजमान किस लिए पदार्थों का अग्नि मे प्रक्षेप करता है।

उत्तर—सब सुखों की प्राप्ति के लिए तथा सब प्राणियो की पुष्टि के लिए जो पदार्थ सर्वोपकारक यज्ञ में प्रयोग नही किया जाता वह राक्षसों का भाग है। जो यज्ञशेष पदार्थों का उपयोग करते हैं वे ईश्वर के आज्ञा-पालक देवता हैं और जो ईश्वर की इस आज्ञा का पालन नही करते वे राक्षस हैं।

यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में ही यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहकर वर्णन किया है तथा इसी आधार पर महर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में यज्ञ को 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' अर्थात् यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म कहा है। इसी बात को योगीराज श्री कृष्ण जी ने गीता मे इस प्रकार वर्णन किया है—

सहयज्ञा: प्रजा: सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति:।
अनेन प्रसविष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्टकामधुक्॥ ३।१०॥

प्रजापति ने यज्ञ सहित प्रजा को, सृष्टि को रचकर कहा कि इस यज्ञ कर्म को करते हुए तुम लोग वृद्धि को प्राप्त हो जाओ और यह यज्ञ तुम्हारी सभी इच्छित कामनाओं की पूर्ति करने वाला होवे। यह समस्त सृष्टि यज्ञ कार्य में संलग्न है, सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, पृथ्वी, समुद्र, नदी नाले, जंगल-पर्वत, सभी तो परोपकारमय यज्ञ कर्म में रत हैं। अत: मानव को तो यज्ञीय पद्धति जीवन में अपनानी होगी क्योंकि वह इस सृष्टि में श्रेष्ठतम प्राणी है, श्रेष्ठतम प्राणी को तो श्रेष्ठतम कार्य करने ही चाहियें, वरना यह संसार का जितना भी कार्य-व्यवहार है ठप्प हो जाएगा। शतपथ ब्राह्मण में ही 'यज्ञो वै विष्णु' लिखा है, अर्थात् यज्ञ ही विष्णु है और विष्णु नाम परमात्मा का है। 'वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् सर्वमिति विष्णुरीश्वर:' जो चराचर जड़ चेतन समस्त जगत् में व्यापक होकर सब की रक्षा करता है वह विष्णु परमात्मा है और उसी परमात्मा से आदि सृष्टि में चारों वेदों का ज्ञान संसार के कल्याण हेतु ऋषियों द्वारा प्राप्त हुआ। जैसे—

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत: ऋच: सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत॥ यजु० ३१-७॥

अर्थात् उस यज्ञस्वरूप परमात्मा से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद चारों वेदों का ज्ञान प्रकट हुआ, जिनमें सभी सत्यविद्याओं का समावेश है। इसीलिए वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म कहा है।

शतपत ब्राह्मण में 'यज्ञो वै पुरुष:' कहा अर्थात् यज्ञ ही पुरुष है, जिसका तात्पर्य यही है कि यज्ञ नाम है कर्म का और कर्म करने से ही मनुष्य की संज्ञा पुरुष होती है। अपने पुरुषार्थ द्वारा मानव इस संसार को सुन्दर बनाता है। उसी ग्रन्थ में लिखा 'यज्ञो वै विश्वस्य भुवनस्य नाभि:' यज्ञ ही सारे भुवन की नाभि है, अर्थात् केन्द्र है। इससे स्पष्ट होता है कि बिना कार्य व्यवहार के यह संसार कैसे चल सकता है? परन्तु सब कुछ करते हुए भी इसमें लिप्त नही होना, जैसा कि वेद भगवान् कहते हैं—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ यजु ४०।२

अर्थात् यज्ञ कर्म करते हुए, युक्त आहार-विहार से सौ वर्ष पर्यन्त जीने की इच्छा करे। हे मानव! तेरे लिए यही मार्ग है अन्य कोई नही क्योंकि इस प्रकार कर्मों में मनुष्य लिप्त नही होते। अनासक्त भाव से कर्त्तव्यों को करते हुए जीवन यात्रा पूर्ण करना ही श्रेयस्कर है और यही यज्ञभावना कहलाती है। इसी बात को श्रीकृष्ण ने गीता में इस प्रकार कहा है 'यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धन:' उक्त यज्ञ के अर्थों से भिन्न जो भी कर्म किए जाते हैं उनका फल जन्म-मरणादि बन्धनकारक होता है। साराश यही है कि यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों के करने से मनुष्य की लौकिक एवं पारलौकिक सभी इच्छायें पूर्ण होती हैं। यज्ञ सर्वोत्तम कर्म होने से उसका फल भी सर्वोत्तम होता है। यज्ञ से केवल स्वर्ग ही नहीं अपितु निष्कामना भाव यज्ञीय जीवन से मोक्ष भी प्राप्त हो सकता है। इसके अतिरिक्त कुछ अभिचार यज्ञ भी होते हैं जैसे पुत्रेष्टि, वृष्टि, अजयमेध, राजसूय, अश्वमेध आदि-आदि। इस प्रकार के यज्ञों का आज युग में ज्ञान न ही के बराबर है। वास्तव में तो यज्ञ-विज्ञान एक महान् दर्शन है, जिसको हमारे ऋषि-मुनियों ने भली प्रकार हृदयंगम करके जीवन में उतारा था।

शराब हटाओ

देश बचाओ

आर्यसमाज पर प्रहार

अभी-अभी मैं राजस्थान की यात्रा से लौटा हूं। यद्यपि इस यात्रा में मेरा स्वास्थ्य कुछ-कुछ ढ़ीला हो गया परन्तु मेरा मन अत्यन्त प्रफुल्लित है। इस यात्रा में आर्यजनों ने बताया कि आर्यसमाज के विद्वान् लेखक, गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री डा. ओमप्रकाश जी वेदालंकार "प्राचार्य" राजकीय कालेज गंगापुर सिटी के विरुद्ध किसी धर्म-द्वेषी, ने राजस्थान सरकार को यह शिकायत भेजी है कि डा वेदालंकार आर्यसमाजी हैं और आपने कालेज पुस्तकालय के लिए आर्यसमाज का साहित्य भी क्रय किया है।

इस पर किसी के हस्ताक्षर के बिना एक पत्र लेकर एक जांच अधिकारी उनकी जांच करने गंगापुर आ गया। शूरता की शान स्वामी श्रद्धानन्द जी के इस मानस पुत्र ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री जी को लिखा है कि मुझे गर्व है कि मैं आर्यसमाजी हूं। मैं जन्म से ही आर्यसमाजी हूं। नौकरी छोड़ सकता हूं, आर्यसमाज नहीं छोड़ सकता क्या आर्यसमाजी होना या आर्यसमाज की सेवा करना कोई अपराध है? ऐसा ही पत्र आपने सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को भी लिखा है।

यह लिखते हुए भी हमें गौरव होता है कि हमारे माननीय डा. ओम्प्रकाश जी श्री प्रो. रामसिह जी के, श्री हरिश्चन्द्र जी सामवेद भाष्यकार के सगे भांजे, वीर शिरोमणि लाला इच्छाराम जी के दोहित्र हैं। जिस आर्य पुरुष की पीठ पर ऐसे पूर्वजों का कमंडल हो, वह किससे दबेगा! सब लोग समझते हैं कि श्री भैरोंसिह जी शेखावत जैसे सूझबूझ वाले मुख्यमन्त्री की जानकारी के बिना किसी शरारती राज्याधिकारी ने किसी शरारती राजनेता के सकेत पर यह जांच आरम्भ करदी है।

जरा छेड़े से मिलते है, मिसाले ताले तम्बूरा।
मिलाले जिसका जी चाहे, बजाले जिसका जी चाहे॥

आर्यसमाज इस प्रहार का स्वागत करता है। आर्यसमाज के भीतर छद्मवेशी इसका नाश करने पर तुले हुए हैं और बाहर से कुछ शरारती ऐसे घिनौने षड्यन्त्र रच रहे हैं प्रभु की वाणी वेद में अटल विश्वास रखने वाले आर्यवीर इस चोट का उत्तर देने को तैयार बैठे हैं। मैं यह देखकर गद्गद् हो गया कि बीसियों आर्यवीर इस चोट का उत्तर देने के लिए सार्वदेशिक सभा के आदेश की दाट देख रहे हैं। डा वेदालकार की दृढ़ता ने सब आर्यों में एक नया उत्साह पैदा कर दिया है। मुझे भी पूछा गया कि हम क्या करें? मैंने कहा शत्रु को चोट तो करने दो फिर पता लग जाएगा कि—लेखराम की सेना को, ना जालिम मौत डराती है।

आर्यों में परस्पर प्रेम कैसा हो?

स्कूलों, पाठशालाओं व भव्य, भवनों की सम्पदा के कारण आध्यात्मिक लोगों ने और कुछ राजनैतिक लोगों ने अनेक आर्यसमाजों में वैमनस्य व झगड़े पैदा करके प्रचार व सघटन को बडी हानि पहुंचाई है। आवश्यकता इस बात की है कि आर्य लोग हृदय मे भरपूर श्रद्धा लेकर, मिलकर धर्म रक्षा करें। समाज सेवा करें।

आर्यों में परस्पर प्रेम कैसा हो? इसका उदाहरण आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पं. सत्यपाल सरल जी ने सुनाया। कुछ समय पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री श्री ओमप्रकाश झंवर व सरल जी जयपुर में में श्री पं. शांतिप्रकाश जी के निवास पर दर्शनार्थ गए। रात्रि का समय था। पं. जी का पुत्र व पुत्र-वधु किसी विवाह पर नगर में गए हुए थे।

दोनों को देखकर वयोवृद्ध तपस्वी विद्वान् झूम उठे। पण्डित जी ने दोनों से भोजन पूछा। इन्होंने कहा कि हम तो दर्शन करने आए हैं। पण्डित जी ने कहा कि मैं भोजन बनाऊंगा आपको करना होगा और यहीं सोना पड़ेगा। ये न करते रहे परन्तु पं जी ने कहा मेरा पुत्र व पुत्र-वधू क्या कहेंगे कि अतिथि घर से बिना खाए-पीए गए।

दोनों ने कहा अच्छा हम भोजन स्वयं बना लेंगे आप हमें रसोई दिखा दें। यह बात श्री पं. जी को माननी पडी। फ्रिज में रबडी तथा दही पड़ा हुआ था। उन्होंने कहा, "हम तो बस यही खा लेंगे।" परन्तु पूज्य पं. जी नहीं माने। दोनों ने जैसा तैसा आटा बनाया और रोटियां भी कच्ची-पक्की बनाई। खाकर बातें करके सो गए। रात्रि के दो बजे पं. जी का पुत्र व पुत्र-वधू आए। अतिथि तो गहरी नींद सोए हुए थे। पं. जी ने द्वार खोला, उन्होंने पूछा ये कौन सोए हुए हैं?

पण्डित जी ने बताया कि राजस्थान सभा के मन्त्री जी व आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सरल जी। उन्होंने पूछा, "इनके भोजन का क्या?" पण्डित जी ने सब कहानी बताई तो उन्होंने कहा "हमें फोन करके क्यों न बुलवा लिया?

प्रातः अतिथि उठकर चलने लगे तो उनकी आवाज सुनकर पण्डित जी का पुत्र व पुत्र-वधू भी जागगए और कहा बिना अल्पाहार किए आप नहीं जा सकते। यह है आर्यत्व! यह है धार्मिकता, यह है संघटन की जान।

यदि पण्डित जी ने अतिथियों के लिए हृदय के द्वार खोले तो श्री ओम्प्रकाश झंवर व श्री सरल जी का आटा गूंथना व स्वयं रोटियां बनाना व खाना क्या कोई कम महत्त्व की बात है। आत्मीयता इसी का नाम है। धर्म भाव इसी को कहते हैं।

क्या आर्यजन इससे कुछ शिक्षा लेंगे? दुई द्वेष व वैमनस्य को दूर कर सब आर्य पूरी श्रद्धा से प्रेमपूर्वक धर्म सेवा करें। समाजों का वातावरण बदलें। (मधुरलोक)

आर्यनगर भिवानी मे वैदिकधर्म प्रचार

दिनाक १७ १८-१९ अगस्त को आर्यनगर में धर्मप्रचार का आयोजन धर्मपाल आर्य 'धीर' शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज झण्डवा द्वारा किया गया। गांव के सब आर्यसमाजियों तथा अन्य सज्जनों ने भी पूरा सहयोग दिया। प्रचारक श्री विश्वमित्र आर्य भजनोपदेशक लूखी वासी श्री रामरख आर्य भजनोपदेशक गुजरानी वासी, पण्डित भरतसिह शास्त्री कन्या गुरुकुल पंचगाव, महाशय भरतसिह आर्य आर्यनगर, श्री तेजसिह आर्य भडौन्दा तथा श्री सुभाषचन्द्र आर्य गुडाण वाले थे। प्रभाव अच्छा हुआ।

—धर्मपाल आर्य 'धीर शास्त्री

आर्यसमाज गुरुकुल विभाग शाहबाद मारकडा जि. कुरुक्षेत्र का चुनाव

संरक्षक—श्री जयदयाल, प्रधान—श्री जीवनदास, उपप्रधान—श्री धर्मदेव, श्री गीतासागर, मन्त्री—श्री सुभाषचन्द्र, उपमन्त्री—श्री निहालचन्द, कोषाध्यक्ष—श्री वृजभूषण।

आर्यसमाज मायना जिला रोहतक का चुनाव

प्रधान—मा. बलवानसिह आर्य, उपप्रधान—श्री प्रतापसिह आर्य, मन्त्री श्री भीमसिह आर्य, उपमन्त्री—श्री बसन्तकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष श्री कवरसिह आर्य।

अंग्रेजी हटाओ
देश बचाओ

वेदप्रचार मंडल जिला जींद की गतिविधि

प्रो० ओमकुमार आर्य, सहसंयोजक, वेदप्रचार मण्डल, जींद

१६ अगस्त की बैठक में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने सर्व-सम्मति से स्वामी रतनदेव जी को वेदप्रचार मण्डल जिला जींद का संयोजक नियुक्त किया था और तत्पश्चात् २६ अगस्त की बैठक में स्वामी जी ने वेदप्रचार मण्डल के अन्य अधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्य नियुक्त किए तथा कार्यक्रम निर्धारित करके ३० अगस्त से प्रचार कार्यारम्भ कर दिया। प्रथम चरण में जिला जींद के १३ गांवों में प्रचार किया गया जोकि निम्नलिखित हैं—

निडाणा, ललित खेड़ा, निडाणी, रधाना, बराह खुर्द, कण्डला, रामचन्द वाला, पाथरी, लोहचब, शामलो कलां, गुसाई खेड़ा, घरौंडा (किशनपुरा) तथा बिरौली।

प्रचार कार्य के लिए सभा के भू०पू० भजनीक पं० चन्द्रभान जी आर्य की भजन मण्डली को नियुक्त किया हुआ है। उपरोक्त सभी गांवों में माननीय संयोजक स्वामी रतनदेव जी स्वयं साथ रहे हैं। सभी गांवों में बड़े उत्साह और रुचि से प्रचार सुना गया। हरयाणा की धरती मूलत: आर्य संस्कारों से परिपूर्ण धरती है। यहां स्वर्गीय दादा बस्तीराम जी, स्वामी भीष्म जी, स्वामी नित्यानन्द जी (चौ० न्यौनन्दसिंह), चौ० ईश्वरसिंह जी आदि महान् उपदेशकों और तपस्वी आर्य नेताओं ने अपने अनथक परिश्रम से आर्यसमाज की जड़ों को बहुत गहरे तक पहुंचाया हुआ है। आज के दूषित वातावरण ने कुछ प्रतिकूल प्रभाव जरूर डाला है लेकिन थोड़े से प्रयास से ही स्थिति फिर सुधर सकती है। वेदप्रचार मण्डल जीद इसी सुधार को अपना लक्ष्य बनाकर चला है।

शामलो कला में प्रचार में लेखक स्वयं मौजूद था और लोगों का अपूर्व उत्साह देखकर बड़ी आशाए मन में जगी। स्वामी रतनदेव जी तो अस्वस्थ होते हुए भी जी जान से प्रचार कार्य में जुटे हैं। ग्राम शामलो कला के भू पू सरपच श्री सत्यवीर सिंह आर्य का भी पूरा सहयोग मिला। लोगों ने तन, मन, धन से हमारा साथ दिया है। प० चन्द्रभान जी की भजनमण्डली बड़ी तड़प और लग्न के साथ प्रचार कार्य में जुटी हुई है।

जहां-जहां पर मण्डली प्रचार करती है वहा रात को साढे आठ से साढे दस बजे तक भजन तथा व्याख्यानादि से प्रचार किया जाता है और फिर प्रात: सात से नौ बजे तक उस गाव मे सध्या, यज्ञ आदि किए जाते हैं। बडी सख्या में युवक तथा अन्य सज्जन स्वेच्छा से यज्ञोपवित धारण करते है तथा मद्यपान, धूम्रपान, ताश, चौपड़ आदि व्यसन छोड़ने का सकल्प करते हैं। माता-पिता की सेवा सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय आर्यवीर दल की शाखाये लगाने आदि की भी प्रेरणा दी जाती है जिसका अच्छा प्रभाव देखने में आया है।

यदि सभा को इलाके की जनता और आर्य महानुभावों का इसी प्रकार सहयोग हमे मिलता रहा तो हमे पूर्ण विश्वास है कि वेद प्रचार मण्डल जिला जीद पूर्व की भांति वेदप्रचार की एक अनुकरणीय मिसाल कायम करने में अवश्य ही सफल होगा।

आर्यसमाज खेड़की जिला महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान—श्री रामस्वरूप आर्य, उपप्रधान—श्री बलवीर सिंह आर्य, मन्त्री—श्री सोहनलाल आर्य, उपमन्त्री—श्री प्रकाशवीर आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री सूबेसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री माधो प्रसाद आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री लालचन्द विद्यावाचस्पति।

सोमकीर्ति जी नहीं रहे

३० अगस्त ६० को गुरुकुल कांगड़ी के सुप्रसिद्ध स्नातक श्री सोमकीर्ति जी विद्यालंकार का देहावसान हो गया। वे मियाणी (पाकिस्तान) के निवासी थे और स्वर्गीय श्री हरिराम हकीम के सुपुत्र थे। उन्होंने सन् १६२४ में गुरुकुल कांगड़ी से रसायन शास्त्र लेकर वेदालंकार परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए। इसी कारण उन्हें अनन्तराय पदक प्राप्त हुआ।

वे आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी में रसायन शास्त्र का अध्यापन कार्य करते रहे। उनकी अभिरुचि व्यापार व औद्योगिक क्षेत्र में अधिक थी। अत: आपने गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी तथा अन्य फार्मेसियों में व्यवस्था सम्बन्धी कार्य भी किया। अपने निजी व्यापार के लिए वे केनिया, टांगानिक की यात्रा पर गए।

उनका आर्यसमाज के क्षेत्र में भी काफी कार्य रहा है। वे कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सदस्य रहे। आपने श्रद्धानन्द सेवा संघ में भी कार्य किया। वे आजकल ६६ नया गांधी नगर, गाजियाबाद में रह रहे थे। —डा० प्रशान्त वेदालंकार

महायज्ञ सम्पन्न

स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती सयोजक वेदप्रचार मण्डल जिला जींद की प्रेरणा से गांव सुदकैन कलां में श्री राजेन्द्रसिंह प्रधान आर्यसमाज ने एक महायज्ञ का आयोजन किया। जिसमें वेदों के मन्त्रों का उच्चारण बड़े ही सुन्दर व मधुर स्वर में किया गया। यज्ञ में गांव व बाहर के लोगों की संख्या तीन सौ के लगभग हो गई थी, यज्ञ में वृद्धों और स्त्रियों और नौजवानों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उपरान्त श्री सत्यपाल शास्त्री व मा. ओमप्रकाश जी ने मधुर व ज्ञान वर्धक उपदेशों से लोगों को मूर्ति-पूजा का खण्डन व अन्धविश्वास के बारे में और शराब नही पीना और मांस नहीं खाने के बारे में लोगों को कहा। इस अवसर पर राजेन्द्रसिंह प्रधान की ओर से ३५ वृद्ध आदमियों जोकि ६५ साल से ज्यादा के हैं, उन सभी को (डोगे (बेंत) बाटे गए। —जगदीपसिंह उपप्रधान

आर्यसमाज सुदकंन कलां (जींद)

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १६३८—३६ में जिन भाइयों ने सक्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल में गए थे उन सबको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ऐसे सब सत्याग्रहियों को तारीख १७-११-६० को हरयाणा सभा अपने वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करेगी। इसी सिलसिले में सभा हैदराबाद आर्यसमाज का आंदोलन १६३८-३६ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमें हरयाणा के तमाम सत्याग्रहियों के फोटो और संक्षिप्त जीवन परिचय होगा। अत: सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना संक्षिप्त जीवन एवं पासपोर्ट साईज का फोटो नहीं भेजा है वे यह सूचना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साईज का फोटो और ६—७ लाईन का जीवन परिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करे ताकि उनका नाम इतिहास में लिखा जा सके।

जीवन परिचय का प्रारूप

१- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, गाम, जिला।
२- किसके जत्थे में थे।
३- कहां सत्याग्रह किया वहां कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल में रहे।
४- जेल में कोई विशेष घटना हुई हो तो संक्षिप्त रूप में लिखें।

महाशय भरतसिंह संयोजक
हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति,
दयानन्दमठ रोहतक।

अथर्ववेद महापारायण यज्ञ

दिनांक ३०-९-९० से दिनांक ७-१०-९० तक वैद्य धर्मपाल जी गांव खानपुर कलां जिला रोहतक (हरियाणा) में अथर्ववेद महापारायण यज्ञ करा रहे हैं। यह यज्ञ राष्ट्र कल्याण की भावना से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी कराया जा रहा है। वैद्य धर्मपाल जी इस क्षेत्र के एक सामाजिक एवं धार्मिक प्रतिष्ठित सत्पुरुष हैं। भारत सरकार ने इन्हें स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में भी सम्मानित किया है। दिनांक ६, ७ अक्टूबर को ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचन होंगे।

नूह जिला गुड़गांव वेदप्रचार मंडल के गठन हेतु बैठक

जिला गुड़गांव के आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने, वेदप्रचार का प्रसार करने तथा शराब, दहेज एवं गोहत्या आदि सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए वेदप्रचार मण्डल का गठन करने पर विचार किया जाएगा। इस कार्य हेतु जिला गुडगांव के आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की एक आवश्यक बैठक सभा के प्रधान माननीय प्रो॰ शेरसिंह जी की अध्यक्षता में दिनांक ३० सितम्बर १९९० रविवार को प्रातः ११ बजे नूह में श्री टेकचन्द आर्य की धर्मशाला में होगी।

—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री

आचार्य नरेन्द्र भूषण का अभिनन्दन

सोनीपत ९ सितम्बर आर्यसमाज सोनीपत 'नगर' के ७४ व वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रतिष्ठित मलयालम मासिक 'आर्षनादम, के सम्पादक, सत्यार्थ-प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, गीता रहस्य आदि अनेक ग्रन्थों के यशस्वी अनुवादक सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य नरेन्द्र भूषण जी का अभिनन्दन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता हैदराबाद के प्रसिद्ध विद्वान पं० मदनमोहन से विद्यासागर ने की। इस अवसर पर स्वामी सत्यपति जी ने बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। और वेदो के विद्वानो के सत्कार से ही देश, जाति, धर्म की रक्षा एवं उन्नति हो सकती है।

शोक समाचार

चौ. ईश्वरसिंह गहलोत के तीसरे नम्बर के प्रसिद्ध शिष्य आर्य भजनोपदेशक श्री सत्यवीरसिंह जी मलिक गांव भैंसवाल कलां का ३-९-९० को चार महीने की लम्बी बीमारी के बाद ५२ वर्ष की आयु में उत्तम नगर दिल्ली में देहान्त हो गया है। वे डी० टी० सी० में इंस्पेक्टर के पद पर थे। वे अपने पीछे चार लड़के व एक लड़की छोड़ गये हैं।

श्री सत्यवीरसिंह जी ने स्वामी नित्यानन्द जी महाराज, कुंवर जौहरीसिंह जी के साथ गुरुकुल भैंसवाल कलां व आर्यसमाज के लिए गांव-गांव में घूमकर बहुत अच्छा प्रचार किया है। उनके भजन व उपदेश लोग बड़े ही ध्यान से सुनते थे। उनके देहान्त से गुरुकुल भैंसवाल कलां व आर्यसमाज को बड़ी हानि हुई है।

आर्यसमाज परिवार, गुरुकुल भैंसवाल कलां व भैंसवाल कलां परिवार की तरफ से परमात्मा से प्रार्थना की जाती है कि परमात्मा उनके परिवार को ये कष्ट सहने की शक्ति दे व उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—योगेन्द्रसिंह मलिक
प्रधान आर्यसमाज भैंसवाल कलां
जिला रोहतक

रघुवीरसिंह शास्त्री का जीवन चरित

आर्यसमाज के महाधन, अनेक शिक्षण-संस्थाओं के जनक एव प्रबन्धक, सार्वदेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उप-प्रधान, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति, आर्य महाविद्यालय किरठल के आचार्य, संसद सदस्य, सम्राट, आर्योदय, जाग्रत हरयाणा, आर्य मर्यादा और सार्वदेशिक पत्रों के सम्पादक स्वर्गीय प० रघुवीरसिंह शास्त्री का जीवन चरित लिखने का दायित्व डा० सुरेन्द्र सिंह कादियाण, एम० ए०, पीएच० डी० को सौंपा गया है।

शास्त्री जी के निकट-सम्पर्क में रहनेवाले समस्त महानुभावों से प्रार्थना है कि शास्त्री जी के बारे में अपने संस्मरणात्मक लेख डा० सुरेन्द्रसिंह जी को यथाशीघ्र भिजवाने का प्रबन्ध करे। कृपया इस बात का ध्यान रखे कि जो भी संस्मरण भेजे जाए उनसे शास्त्री जी की प्रतिभा, उनके गुणों व क्षमता पर समुचित प्रकाश पडना चाहिए। सामग्री संक्षेप में भेजी जाए लेकिन वह ठोस हो।

आर्योदय, जाग्रत हरयाणा और सार्वदेशिक आदि पत्रों की पुरानी फाइले यदि किसी सभा, संस्था या सज्जन के पास हों तो कृपया सूचित करें। आवश्यक सामग्री का चयन करने के बाद ये फाइलें आभार सहित लौटा दी जायेगी अथवा व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर वांछित सामग्री नोट कर ली जाएगी।

उपरोक्त विषय पर समस्त पत्र व्यवहार, सहयोग व रचनाये आदि भेजने का सम्पर्क सूत्र निम्न प्रकार है—

डा. सुरेन्द्रसिह कादियाण एम ए. पी-एच.डी.
वाई ४५४/४५५ कैम्प न १, नागलोई दिल्ली—११००४१

शराब की मार

जिसे हो ससार मे मिटाना
उसे सिखा दो शराब पीना
जो बैरी को हो सबक सिखाना, हो उसका दिल फेफडा जलाना,
हो खाली करना भरा खजाना
न सुनना कुछ भी कहे जमाना
तुम्हें अखरता हो जिस का जीना, उसे सिखा दो शराब पीना
तुम्हें जो कोई खटक रहा हो, जो नीतिपथ से भटक रहा हो,
समाज का मुख सटक रहा हो,
न ढूंढो कुछ मौत का बहाना
जो है कुकर्मी कुटिल कमीना, उसे सिखा दो शराब पीना
तुम्हारी गुण्डे से यदि तनी है, तनाव से जान पर बनी है,
उसमे अकारण ही दुश्मनी है
दिखावटी करके दोस्ताना
न दिल जलाओ न पालो कीना, उसे सिखा दो शराब पीना
किसी का मस्तिष्क हो नष्ट करना, हो उसके बच्चो को भ्रष्ट करना,
न कुछ झगड़ने का कष्ट करना
न कत्ल करना न विष पिलाना
लहू बहाओ न कुछ पसीना, उसे सिखा दो शराब पीना
किसी को बिन मौत मारना हो, उतारे बिन सिर उतारना हो,
चरन पे बिन लठ पसारना हो
जिसे भी हो बिन चिता जलाना
बिना डरे तान कर के सीना, उसे सिखा दो शराब पीना
वह घर है आई बहार जिसमें, हैं शुद्ध सब के विचार जिसमें,
है शान्ति सुख का प्रसार जिसे
वह घर है यदि खाक में मिलाना
जो चाहो सुख साज उस का छीना, उसे सिखा दो शराब पीना

—कुन्दनलाल हमदर्द एम०ए०, सन्नौठ दिल्ली

आर्यवीर दल हरयाणा का तेरहवां सम्मेलन सम्पन्न

सम्मेलन 8-9 सितम्बर 90 को डी. ए वी. सी. सै. स्कूल करनाल में सम्पन्न हुआ। पहले दिन 8 सितम्बर को भारी वर्षा के बावजूद बाहर से आए आर्य वीरों तथा नगर के सैंकड़ों गणमान्य व्यक्तियों, महिलाओं तथा बच्चों ने एक विशाल शोभायात्रा निकाली जिसमें आर्यवीरों ने लाठी, भाला, तलवार तथा योगासन का प्रदर्शन किया।

रात्रि को 9 - 11.30 बजे तक आर्यवीर सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रो० उतमचन्द शरर, प्रो० ओमकुमार, प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य श्री उमेदसिंह शर्मा, स्वामी सच्चिदानंद, स्वामी रत्नदेव आदि ने भाग लिया। वक्ताओं ने क्षात्र शक्ति का महत्व बताते हुए युवाओं का शारीरिक एवं चारित्रिक विकास का सन्देश दिया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य डा० देवव्रत ने की तथा इसका संयोजन श्री अजीतकुमार आर्य (पलवल) ने किया।

रविवार 9/9/90 को प्रात: प्रो. उत्तमचन्द शरर की अध्यक्षता में वेद तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें प्रो. ओमकुमार (जीन्द), डा देवव्रत आचार्य (दिल्ली), श्री वेदप्रकाश आर्य (रोहतक) श्री लाजपतराय, स्वामी सच्चिदानद आदि ने भाग लिया। इसका संयोजन श्री कृष्णदेव शास्त्री ने किया। सम्मेलन का उद्घाटन दयालसिंह कालेज करनाल के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. चन्द्रप्रकाश आर्य ने किया।

अपने भाषण में प्रो आर्य ने वेद के संगठन सूक्त तथा पृथिवी सूक्त का हवाला देते हुए वेद तथा राष्ट्र रक्षा का गहरा सम्बन्ध बताया। वेदों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि वेद विश्व की प्राचीनतम पुस्तक है। आज तक उनमें एक भी अक्षर की हेराफेरी नहीं हुई है। भारत सरकार ने वेदमन्त्रों के उच्चारण की रिकार्डिंग करवाई है। श्री आर्य ने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वेदों का भाष्य हिन्दी में किया।

बाद दोपहर आर्यवीर गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने अपना सन्देश दिया। सम्मेलन की समाप्ति सचालक श्री उमेदसिंह शर्मा द्वारा नए अधिकारियों तथा प्रान्तीय कार्यकारिणी के नामों की घोषणा के साथ हुई। श्री ईश्वरचन्द सरदाना तथा भोपालसिंह आर्य के कार्यों की सराहना की।

आर्यवीर दल हरयाणा के नये अधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में आर्यवीर दल हरयाणा के अधिष्ठाता के पद पर स्वामी रतनदेव जी को मनोनीत किया है। स्वामी जी कन्या गुरुकुल खरल, गुरुकुल कुम्भाखेड़ा तथा जीन्द वेद-प्रचार मण्डल का भी सचालन कर रहे हैं।

—सभा मन्त्री

आर्यसमाज पलड़ी (मेरठ) का चुनाव

संरक्षक — मास्टर जुगलकिशोर आर्य, प्रधान — आजाद सिंह, उपप्रधान—रामगोपाल आर्य, मन्त्री—बृजवीर सिंह, उपमन्त्री—विनोद कुमार, अशोक, कोषाध्यक्ष—दिलावर सिंह, पुस्तकालय अध्यक्ष—प्रहलाद सिंह, प्रचारमन्त्री—श्रीपाल सिंह आर्य।

—दुनिया की समस्त फौज व समस्त हथियार भी मिलकर इतनी क्षति नहीं कर सकते जितनी एक अकेली शराब कर सकती है।

—मिल्टन

हरयाणा में आर्यसमाज के उत्सव

गुरुकुल धासेडा किशनगढ़ जिला रेवाड़ी		१, २ अक्तूबर
आर्य समाज शेखपुरा (घरोण्डा) जिला करनाल		५ से ७ ,,
,,	रामनगर गुड़गांव	५ से ७ ,,
,,	नागोरी द्वार हिसार	५ से ७ ,,
,,	मेन बाजार बल्लबगढ़ जिला फरीदाबाद	५ से ७ ,,
,,	नारनौल जि० महेन्द्रगढ़ (जयन्ती)	५ से ७ ,,
,,	कन्या गुरुकुल पंच गांव जिला भिवानी	५ से ७ ,,
,,	२२ सैक्टर चण्डीगढ (पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जयन्ती)	५ से ७ ,,
,,	नांगल (बहल) जिला भिवानी	८ से ९ ,,
,,	रोहणा जिला सोनीपत	१६ से १८ ,,
,,	भाण्डवा जिला भिवानी	१६ से १७ ,,
,,	सिलारपुर तोताहेड़ी जिला महेन्द्रगढ़	२० से २१ ,,
,,	आर्यनगर काठमण्डी सोनीपत	३१ अक्तूबर से १ नवम्बर
,,	बड़ा बाजार पानीपत	२ से ४ ,,
,,	पलवल शहर जिला फरीदाबाद	४ से ११ ,,
,,	गान्धी नगर सोनीपत	१६ से १८ ,,

—सत्यवीर शास्त्री वेदप्रचाराधिष्ठाता

रामलीला पर चुटकले

स्टेज के पीछे धोतियों और चादरों को तानकर 'ग्रीन रूम' बना था, सभी कलाकारों को मेकप कराया जा रहा था, रामलीला करने के लिए हडकम्प मची हुई थी।

मोहल्ले में हलवाई का लडका राम का पार्ट कर रहा था, पार्टमें रोने का रिहर्सल कर रहा था, और घर्रा रहा था, तभी रामलीला कमेटी के प्रबन्धक ने डांटा, चुप बे; अभी नहीं, जब मैं वन जाऊं, तब रोना।

× × ×

अध्यापक—(छात्र से) प्राचीन लका को सोने की लंका क्यों कहा जाता था।

छात्र—इसलिए कि वहां कुम्भकरण जैसे लोग दिन-रात सोते रहते थे।

× × ×

रामलीला में राजा दशरथ का अभिनय करने वाले पात्र ने उनकी मृत्यु का बहुत ही सटीक प्रदर्शन किया, तभी दर्शकों में से किसी ने कहा 'वन्स मोर' और राजा दशरथ पुन: प्रसन्नतापूर्वक जीवित होकर मर गये।

× × ×

अध्यापक—(छात्र से) लंका कांड से पहले के काडों के नाम बताओ?

छात्र—जी .. बोफोर्स काड, फेयरफेक्स कांड और पनडुब्बी कांड........।

× × ×

रामलीला में हनुमान जी को संजीवनी बूटी लाने को कहा गया। हनुमान जी को रस्सी में बांधा गया और ऊपर उड़ने लगे। बीच में रस्सी में गांठ लगी थी। रस्सी की गांठ को किसी दर्शक ने काट दिया। हनुमान जी मुंह के बल नीचे आ गिरे तो रामचन्द्र जी ने कहा 'अरे बन्धुवर, तुम्हें संजीवनी बूटी लाने में इतना विलम्ब कैसे हो गया?

इस पर हनुमान जी ने झल्लाकर कहा— संजीवनी बूटी गई भाड़ में पहले बताओ रस्सी किसने काटी?

—महेश प्रसाद 'दद्दू' (लखनऊ)

आर्यसमाज गोहाना मंडी में वेदप्रचार सप्ताह

दिनांक १० सितम्बर से १४ सितम्बर तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। नगर व आस-पास के गांवों के धर्मप्रेमी सज्जन बड़ी संख्या में पधारे। प्रातः साढ़े सात से साढ़े नौ बजे तक यज्ञ हवन व भजन तथा प्रवचन होते थे। रात्रि को साढे आठ से ग्यारह बजे तक भजनोपदेश व प्रवचन। आर्यजगत् के प्रकाण्ड विद्वान् श्री अखिलेश्वर जी (गुरुकुल कालवा) श्री सत्यपाल जी पथिक श्री रामकंवार जी बाघडू वाले व श्री सुलतानसिंह जी आर्य तथा श्री ओ३मकुमार प्राध्यापक किसान कालेज जीन्द ने अपने प्रवचनों व भजनोपदेशों से लोगों को बड़ा प्रभावित किया, सब कार्य निर्विघ्न समाप्त हुआ। आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण-कार्य चल रहा है। —मंत्री

आर्यसमाज गोहाना बदलूराम प्रभाकर

ऋषि गुणगान

ऋषि राज दयानन्द आवो जी।
मारी सभा में रंग बरसाओ जी॥

थारी बातां प्यारी लागें जी।
वेदों का मर्म बताओ जी॥

होली का महत्व दिखाओ जी।
यह गन्दा नाच मिटाओ जी॥

मैं भटक्यो चारा धामा जी।
नहीं मिली शांति सुख नामा जी॥

वैदिक है धर्म सनातन जी।
सब पाखण्ड जाल हटाओ जी॥

मांने संध्या हवन सिखाओ जी।
पंच यज्ञों का व्रत धारां जी॥

ओ३म् नाम गायत्री का जप।
मन मन्दिर ध्यान लगावां जी॥

जीवन की ज्योति जगावां जी।
भवसागर पार लगावां जी॥

'केवल' है ओ३म् आधारा जी।
गुरु विरजानन्द ने बतलाया जी॥

—संग्रहकर्त्ता
स्वामी केवलानन्द सरस्वती
ऋषि उद्यान पुष्कर मार्ग, अजमेर

शोक-समाचार

श्री रणधीरसिंह सुपुत्र श्री तोखराम ग्राम (आहूलाना) रोहतक का दिनांक १८-८-९० को दो मास की अल्पकालीन बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उनकी आयु लगभग ८२ वर्ष की थी। वे आर्यसमाज के एक सक्रिय व कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने आर्यसमाज द्वारा चलाए गए हैदराबाद सत्याग्रह व हिन्दी रक्षा आंदोलन में भाग लिया। उनके निधन से आर्यसमाज आहूलाना को काफी क्षति हुई है। जिसकी निकट भविष्य में पूर्ति कर पाना असम्भव है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति तथा उनके शोकाकुल परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —रामकुमार आर्य

मन्त्री आर्य युवक परिषद गोहाना

सर्वखाप पंचायत तथा आर्यसमाज द्वारा—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लेने, हिंसा न करने तथा राष्ट्र हित को ध्यान में रखकर ही आरक्षण का युक्तियुक्त विरोध करने का परामर्श दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की १६ सितम्बर की अन्तरंग बैठक में भी प्रो० शेरसिंह ने आरक्षण पर अपने विचार विस्तार से सुनाये और सदस्यों ने उनके विचारों पर सहमति प्रकट करते हुए जाति के आधार पर आरक्षण के विरुद्ध प्रस्ताव पास किया। इसी प्रकार आर्यसमाज की शिरोमणी सार्वदेशिक सभा, दिल्ली, पंजाब, तथा उत्तरप्रदेश आदि की आर्य प्रतिनिधिसभाओं ने प्रस्ताव पास करके आर्य जनता का मार्ग-दर्शन किया है। —केदारसिंह आर्य

एक का महत्व

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग

१- एक ओ३म् को ध्याइये, सकल प्रपंच विसार।
सर्वोत्तम प्रिय नाम यह, सुमरो बारम्बार॥

२- देखो गाड़ी रेल में, डिब्बे लगे अनेक।
ले जाता है खींच कर, सबको इंजन एक॥

३- एक सूर्य आकाश में, देता है प्रकाश।
एक सत्य के वचन का, हो जाता विश्वास॥

४- एक ही पूत सपूत हो, कुल की रखे लाज।
एक ही शुद्ध विचार से, सफल होंय सब काज॥

५- खेल रहे हैं खिलाडी, एक गेंद से खेल।
एक नजर की चूक से हो, जाते हैं फेल।

६- एक पूर्णिमा चन्द्र से, खिले चादनी रात।
एक दूल्हे के साथ में, शोभा देय बारात॥

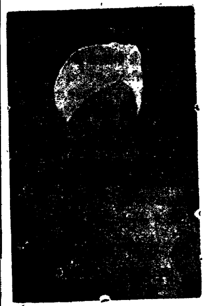
७- एक अकेले ऋषि ने, किया वेद प्रचार।
दयानन्द ऋषिराज को, जाने सब संसार॥

८- एक व्रत धारण करो, रहो स्वस्थ सानन्द।
एक ईश की शरण लो, पाओ परमानन्द॥

—मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूँ। —महात्मा गांधी

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी

आर्य केन्द्रीय सभा चण्डीगढ़ की ओर से ६ व ७-१०-९० को पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोहपूर्वक मनाई जा रही है। आर्य परिवारों को चण्डीगढ़ ले जाने हेतु देहली से स्पेशल बसें चलाई जा रही हैं। यह बसें दोपहर एक बजे आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई देहली से चलेंगी और १४-१०-९० रात्रि देहली वापिस आयेंगी। यानी चण्डीगढ़ के साथ-साथ देखेंगे : चिन्तापूर्णी, ज्वालाजी, कांगड़ा, डिलहौजी, चम्बा और वैष्वो देवी। किराया बस ५७५/- रुपये प्रति यात्री है। चण्डीगढ़ में निवास की व्यवस्था आर्य समाज में होगी, शेष रास्ते के व्यय यात्री स्वयं करेंगे। चलने वाले भाई-बहिन डा० यशपाल जी सह प्रबन्धक यात्रा से आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली [फोन : ३४३७१८] से सम्पर्क करें।



पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री

जिनकी ९०वीं जयन्ती २१ सितम्बर को सिद्धान्ती भवन रोहतक तथा गांव बरहाणा में मनाई जा रही है।

आर्यसमाज नारायणगढ़ जिला अम्बाला का चुनाव

प्रधान—श्री चौधरी राम, उपप्रधान—डॉ. वेणीप्रसाद, मन्त्री—श्री रामनिरंजन, प्रबन्धक विद्यालय—श्री चमनलाल गुप्त, उपमंत्री—श्री चन्द्रपाल शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष श्री महेन्द्र शास्त्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न [illegible]

सवत् १,९६,०८,५३,०९०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए. आश्विन ११, २०४७ वि०

वर्ष १७ अङ्क ४२ ७ अक्तूबर १९९० वार्षिक शुल्क ३०) आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती आदर्श नेता तथा वैदिक विद्वान् थे

रोहतक में उनकी ९०वीं जयन्ती पर आर्य नेताओं के उद्‌गार

रोहतक २९ सितम्बर (केदारसिंह आर्य द्वारा)। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में आर्यजगत् के प्रख्यात् विद्वान् स्वर्गीय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती शास्त्री पूर्व लोकसभा सदस्य की ९०वीं जयन्ती श्रद्धापूर्वक मनाई गई।



जयन्ती की कार्यवाही प्रातः ८ बजे यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुई। आचार्य सुदर्शनदेव जी ने यज्ञ पर वेदोपदेश करते हुए श्री सिद्धान्ती जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और उन्हें एक आदर्श वीर सैनिक, धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक नेता बताया और उपस्थित नर नारियों को उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि श्री सिद्धान्ती का जन्म विजयादशमी के दिन हुआ था और उन्होंने १० वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत लेकर आर्यसमाज के क्षेत्र में प्रवेश किया और अन्तिम दिनों तक आर्यसमाज की विभिन्न क्षेत्रों में शानदार सेवा की। आर्यसमाज के धार्मिक तथा राजनैतिक कार्यों में सदा विजयी रहे। इस प्रकार उन्होंने विजयादशमी के दिन जन्म लेकर अपने जीवन को सार्थक बनाया।

यज्ञ के पश्चात् श्रद्धाञ्जलि समारोह सभा उपप्रधान महाशय भरतसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के प्रचारक श्री रतनसिंह आर्य, श्री हरध्यानसिंह तथा हरयाणवी कवि श्री भारतभूषण ने श्री सिद्धांती जी का गुणगान मनोहर गीतों द्वारा किया।

सभा के उपमन्त्री एवं वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री, सभा के आदरी महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री, सभा उपदेशक श्री अर्जुनदेव, सभा के मंत्री श्री वेदव्रत शास्त्री, जाट इतिहास लेखक कप्तान दलीपसिंह तथा सभा उपप्रधान महाशय भरतसिंह ने श्री सिद्धांती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें आर्यसमाज का उच्चकोटि का नेता, वेद-शास्त्रों का प्रकाण्ड विद्वान्, निडर सैनिक, शास्त्रार्थ महारथी, प्रभावशाली सफल उपदेशक, समाज सुधारक, आदर्श राजनैतिक नेता, अनेक धार्मिक पुस्तकों के लेखक, आर्य पत्रिकाओं के यशस्वी सम्पादक, सादगी और ईमानदारी के प्रतीक, स्वाधीनता सेनानी बताया और इन विशेषताओं के लिए निम्नलिखित उदाहरणों तथा घटनाओं का उल्लेख किया।

१– श्री सिद्धांती जी ने सेना में भर्ती होकर अनपढ़ सिपाहियों को हिन्दी भाषा पढ़ाई।

२– सेना में जब मांस खाने का आदेश दिया तो सिद्धांती जी ने इसका डटकर विरोध किया और मांस न खाने वालों के लिए पृथक् से खीर तथा हलवा बनवाने पर अंग्रेज अधिकारियों को विवश कर दिया। इसी प्रकार जबरी शराब पिलाने का आदेश रद्द करवाया।

३– सिद्धांती जी ने अपने साथी सैनिकों को हवन सन्ध्या करना सिखाया तथा उन्हें सत्यार्थप्रकाश पढ़कर सुनाया। एक बार अपनी जाट रेजिमेंट के सैनिको के साथ मार्च के समय आगरा के बाजार में 'वैदिक धर्म की जय' तथा 'महर्षि दयानन्द की जय' के जयघोषों से शहर को गुंजा दिया।

४– सिद्धांती जी ने कांठ रियासत के एक मुकद्दमे में जाटों को शूद्र कहने वालों को वेद शास्त्रों के प्रमाण प्रस्तुत करके हराया। अदालत ने अपने निर्णय में लिखा कि जाट शूद्र नहीं अपितु क्षत्रिय हैं।

५– सिद्धांती जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, आचार्य भगवान् देव जी आदि आर्यनेताओं के साथ १९४५ में हरयाणा के गांवों का एक मास तक भ्रमण किया और सेना से अवकाश पर आए हुए सैनिकों को अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत करने की प्रेरणा की, इस प्रकार राष्ट्र को स्वाधीनता दिलाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

६– सिद्धांती जी ने साप्ताहिक पत्र सम्राट्, आर्य, आर्योदय, आर्य मर्यादा आदि का विद्वत्तापूर्वक सम्पादन किया।–अनेक दैनिक समाचार पत्रों में भी सैंकडों लेख लिखे।

७– सिद्धांती जी ने हैदराबाद आर्यसत्याग्रह, हिन्दीरक्षा आंदोलन, कुण्डली बूचडखाना बन्द कराने का सत्याग्रह, गोरक्षा आंदोलन, शुद्धि आंदोलन, हरयाणा निर्माण आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई।

८– सिद्धांती जी ने गुरुकुल किरठल, मटिण्डू, झज्जर, उपदेशक विद्यालय यमुनानगर तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की उन्नति में प्रमुख योगदान किया।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

हरयाणा में सभी सरकारी कार्य हिन्दी में होंगे

—हुकम

रेवाड़ी २५ सितम्बर (ससे)। हरयाणा में सारे सरकारी कार्य हिन्दी में होंगे। हरयाणा सरकार इस विषय में पूरे आदेश जारी कर चुकी है। स्कूल में विद्यार्थियों को प्रवेश के लिए अंग्रेजी में पास होने की अनिवार्यता की पाबन्दी अब भविष्य में नहीं झेलनी पड़ेगी, क्योंकि सरकार राष्ट्रभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए कृतसंकल्प है। यह घोषणा हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० हुकमसिंह ने वहां से १८ कि.मी. दूर धारूहेडा में की। उन्होंने धारूहेडा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय को १०+२ का दर्जा देकर वरिष्ठ उच्च माध्यमिक विद्यालय में अपग्रेड किया।

स्कूल को अपग्रेड करने की पुरानी मांग को स्वीकार करते हुए मुख्यमन्त्री ने कहा कि अंग्रेजी भाषा पढ़े बिना लोग डाक्टर अथवा इन्जीनियर नहीं बन पाते हैं। विदेशी भाषा लोगों की मानसिकता पर बुरी तरह हावी हो चुकी है, जबकि अंग्रेजी के भारत में आने से पहले हिन्दी एवं संस्कृत के विद्वान् लोग ही महान् चिकित्सक और इन्जीनियर बनते थे। उन्होंने कहा कि आगे से अंग्रेजी पढ़ने की पाबन्दी हटने से राष्ट्रभाषा को बढ़ावा मिलेगा। इस दिशा में वह विश्वविद्यालयों में लागू अंग्रेजी पुस्तकों का अनुवाद भी हिन्दी में कराने पर बल दे रहे हैं। ताकि भविष्य में छात्र हिन्दी माध्यम से डाक्टरी शिक्षा ले सकें।

उन्होंने कहा कि शिक्षा का माध्यम एक ही होना चाहिए ताकि अमीर और गरीब छात्रों के बीच असमानता की खाई दूर हो सके। आज अमीर व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करवाने में सक्षम हैं, लेकिन गरीब व्यक्तियों के बालक महंगी शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ होने के कारण पिछड़े ही रह जाते हैं।

उन्होंने खेद व्यक्त किया कि केवल इसी कारण हिन्दी में पढ़े छात्र बड़े अफसर एवं उच्च पदों पर नहीं जा पाते हैं। उन्होंने कहा कि कितने आश्चर्य की बात है कि आज किसान व दलित वर्ग मेहनतकश व बुद्धिमान् होते हुए भी शिक्षा की दोहरी प्रणाली के कारण पिछड़ गया है। इसलिए वे पूरे हरयाणा में शिक्षा को एक ही माध्यम द्वारा लागू करेंगे ताकि शिक्षा की असमानता दूर हो सके।

मण्डल आयोग की सिफारिशों के सन्दर्भ में फैली भ्रांतियों को दूर करते हुए श्री हुकमसिंह ने कहा कि हरयाणा में जो आरक्षण पहले से ही लागू है, वही रहेगा। उन्होंने कहा कि मण्डल आयोग की रिपोर्ट केन्द्र की नौकरियों के लिए है, जिसका हरयाणा या अन्य राज्यों पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

मुख्यमन्त्री ने जोर देकर कहा कि जातिवाद पर आरक्षण कदापि लागू नहीं किया जाएगा। क्योंकि वह स्वयं जातिवाद पर विश्वास नहीं करते और न ही स्वयं को किसी एक जाति का मानते हैं। उन्होंने कहा कि मैंने इसीलिए गुरनामसिंह आयोग गठित किया है। यह आयोग हर पिछड़े वर्ग का पता लगाएगा, चाहे वह किसी भी जाति से सम्बन्धित हो। उन्होंने फिर दोहराया कि किसी भी जाति से सम्बन्धित पिछड़े वर्ग को पूर्ण बढ़ावा मिलेगा।

उन्होंने छात्रों से अपील की कि वह सरकारी सम्पत्ति को नुकसान न पहुंचायें, क्योंकि यह सम्पत्ति स्वयं उनकी है। उन्होंने कहा कि छात्र लोकतांत्रिक तरीकों से अपना विरोध किसी भी बात के प्रति प्रकट कर सकते हैं। लेकिन स्वार्थी तत्त्वों के बहकावे में न आएं। उन्होंने छात्रों से कहा कि वह विध्वंसक कार्यों की बजाय अपने चरित्र को उठाने पर बल दें। उन्होंने अध्यापकों पर भी बल दिया कि उनके कन्धों पर ही छात्रों को चरित्रवान् बनाने का भार है। ताकि आगे जाकर यह वर्ग देश का भार अपने कन्धों पर उठा सके। यदि अध्यापकों ने अपना कर्त्तव्य नहीं निभाया तो इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि आज कुछ कमियां छात्रों में आई हैं तो कुछ अध्यापकों में भी उपजी हैं, जो चिन्ताजनक है। —(दैनिक नवभारत टाइम्स)

संस्कृत की उपेक्षा क्यों ?

सरकार द्वारा संस्कृत की घोर उपेक्षा की जा रही है। संस्कृत भारत की आत्मा है। भारतीय संस्कृति का आधार है। कम से कम पांच हजार वर्षों से निरन्तर सब प्रकार के साहित्य एवं विज्ञान की समस्त विद्याएं संस्कृत माध्यम से ही पुष्पित पल्लवित होती रहीं। भारत की समस्त भाषाएं संस्कृत से जीवन रस प्राप्त करती रहीं। दक्षिण पूर्वी एशिया के सभी देश संस्कृत की शब्दावली से ही अपनी भाषाओं को सजाते संवारते रहे हैं। १९वीं शताब्दी में यूरोप की भाषाओं में नवीन क्रांति का संचार संस्कृत से ही हुआ। इसीलिए तो १५० वर्षों से यूरोप के विद्वान् एशिया के देशों में संस्कृत के व्यापक प्रभाव की खोज में लगे हुए हैं। उन्हीं की खोजों के कारण ही तो भारतीय विद्वानों को भी पता चला कि चीन का सम्पूर्ण साहित्य संस्कृत ग्रन्थों के अनुवादों पर ही आधृत है। मंगोल, तिब्बत में संस्कृत की पूजा है। जापान, कोरिया में संस्कृत मन्त्रों से आराधना की जाती, और कोरिया जापान की लिपियां भी संस्कृत के आधार पर ही निर्मित की गई हैं। यूरोपीय विद्वानों ने ही तो १३००० से अधिक संस्कृत शिलालेख केवल कम्बुज देश (कम्पूचिया) में खोजे जहां आठ सौ वर्ष संस्कृत राजभाषा रही। उन्हीं ने तो थाई देश और इण्डोनीशिया के जन जन में व्याप्त संस्कृत पर बृहत्काय ग्रन्थ लिखे। श्री गोन्डा द्वारा संस्कृत इन इन्डोनीशिया। संस्कृत से ही भारत का गौरव बढ़ा। संस्कृत पढ़ने के लिए है। संस्कृत में रचे ग्रंथों का अध्ययन करने के लिए संसारभर के देशों से विद्वान् नालन्दा आदि विश्वविद्यालयों में आकर पढ़ा करते थे, जिनके यात्रा वृत्तान्त भी अब इतिहास का आधार बन गए हैं।

संसार भर को सुसंस्कृत करनेवाली संस्कृत, विश्वभर को विश्व कल्याण की ओर उन्मुख करनेवाली संस्कृत, मानव संस्कृति के परिष्कार का मार्ग प्रशस्त करनेवाली संस्कृत आज भारत में ही, भारतीय शासन द्वारा ही तिरोहित की जा रही है, मारी जा रही है।

समय आ गया है कि राष्ट्र की गरिमा को आघात पहुंचाने वाली तथा देश के मूलाधार पर ही चोट करनेवाली नीतियों के विरुद्ध हम आवाज उठायें। भारत मां की इस विपदा के समय हम अपना कर्त्तव्य समझें। राष्ट्र की अखण्डता और भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिये प्राणपण से जुट जायें। कहीं ऐसा न हो कि नागालैंड या बोडोलैंड ही नहीं दर्जनों ऐसे लैंडों में बंटकर भारत खण्ड-खण्ड हो जाये।

—डा० कैलाशचन्द्र
प्रशान्त विहार, दिल्ली-85

तपोवन का शरद् महोत्सव १० अक्तूबर से

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून का महोत्सव दिनांक १० अक्तूबर से १४ अक्तूबर तक चलेगा। इस अवसर पर बृहद् यज्ञ, योग-साधना-शिविर तथा वेद-प्रवचनों की व्यवस्था की गई है।

यज्ञ के प्रभारी श्री महात्मा चयनमुनि वानप्रस्थी, योगसाधना शिविर के निदेशक श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती और मुख्य प्रवचनकर्त्ता श्री स्वामी दयानन्द 'विदेह' होंगे।

—देवदत्त बाली, मन्त्री वैदिक साधन आश्रम सोसायटी तपोवन

बरहाणा में श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती
जन्म महोत्सव

दशहरे के पावन पर्व पर श्री जगदेवसिंह सिद्धांती का जन्म दिवस उनके जन्म गांव बरहाणा (रोहतक) में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। दिनांक २८-९-९० को सायंकाल गांव में श्री जयपाल जी आर्य भजनोपदेशक का प्रचार कार्यक्रम हुआ। जिसे श्रोताओं ने खूब पसन्द किया। महाशय जी ने अपने ओजस्वी प्रचार कार्यक्रम में आर्यसमाज के सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हुए सामाजिक बुराइयों का जोरदार ढंग से खण्डन किया। प्रातःकाल श्री सिद्धांती जी की स्मृति में बने आर्यसमाज मन्दिर सिद्धांती भवन में श्री आचार्य वेदपाल जी की अध्यक्षता में यज्ञ सत्संग का कार्यक्रम ३ घण्टे चला जिस में महायज्ञ के पश्चात् १७ नवयुवकों को यज्ञोपवीत दिए गये तथा बहिनों ने ईश्वर भक्ति के मनोहर भजन प्रस्तुत किये। श्री जयपाल जी आर्य भजनोपदेशक ने आध घण्टे का मनमोहक आध्यात्मिक प्रभावशाली कार्य रखा तथा अन्त में श्री आचार्य वेदपाल जी ने अध्यक्षीय भाषण दिया जो बड़ा प्रभावशाली रहा। यज्ञ में स्त्री पुरुषों ने श्रद्धा से धन एवं घी दान दिया। सभा को १०१ रु० दान प्राप्त हुआ। —राजपाल

मन्त्री आर्यसमाज बरहाणा

पं० जगदेवसिंह शास्त्री 'सिद्धांती' को समर्पित

श्रद्धा—सुमन गीत

टेक :—श्री जगदेवसिंह "सिद्धान्ती" करया देश उद्धार तनै।
श्रद्धा-सुमन समर्पित करता, आर्यों का संसार तनै॥

(१)

जग का देव जगदेव था, जग को देता रहा सदा।
वेदविद्या और धर्म को, नैया खेता रहा सदा।
शास्त्रार्थ का सिंह यशस्वी, परम विजेता रहा सदा।
सिद्धान्ती था सिद्धान्तों पर अटल अगेता रहा सदा।
दूर करी कुरीति-कुनीति, तारया भू का भार तनै॥
श्रद्धा-सुमन समर्पित करता, आर्यों का संसार तनै॥

(२)

सेना में जा अंग्रेजां पै, अपणा रौब जमाया था।
वैदिकधर्म, स्वामी दयानन्द का जयकारा लाया था।
शराब-मांस का सेवन करना, ऊड़ै बन्द कराया था।
सत्यार्थ प्रकाश पढाके, सत का मार्ग दिखाया था।
अपणे तर्कों तीरां तैं थे, करे कसूते वार तनै॥
श्रद्धासुमन समर्पित करता, आर्यों का ससार तनै॥

(३)

सारी जनता कुणबा समझी, काट्या मोह का जाल तनै।
किरठल-झज्जर-मटिंडू गुरुकुल का दकल्या ढग ढाल तनै।
पंजाब सभा गुरुकुल कांगड़ी की, पूरी करी सभाल तनै।
प्रधान सर्वखाप का बण क, रोकी बुरो चाल तनै।
सांसद बण, संसद में जाके, दिए अमूल्य विचार तनै॥
श्रद्धा-सुमन समर्पित करता, आर्यों का संसार तनै॥

(४)

घूम-घूम के वेदज्ञान का, दीप जलावण आला था।
सौकर प्रजापति यज्ञ में, तू रंग लावण आला था।
आर्यसमाज का हर आन्दोलन, सफल बणावन आला था।
खुद दुःख सह कै, औरा नै तू, सुख पहुंचावण आला था।
भारतभूषण "सारी जनता, देती है यों प्यार तनै॥
श्रद्धा-सुमन समर्पित करता, आर्यों का संसार तनै॥

—लोककवि भारतभूषण 'साधीवाल'
१७७.३२ जनताकालोनी, रोहतक

आज से ४० वर्ष पूर्व चौ० पृथ्वीसिंह बेधड़क द्वारा लिखा गया

एक गीत

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक

एजी-एजी जगत में आवैगा तूफान।
कौन मरेगा कौन बचेगा यह जाने भगवान्॥

(१)

थोड़े ही दिनों में यहां क्रान्ति का दौर होगा।
कोई जगह बचे नही दौर ठौर-ठौर होगा।
सारे हिन्दुस्तान भरके अन्दर चारों ओर होगा।
शहरों में जोर होगा गाव में जोर शोर होगा।
लखनऊ दिल्ली में होगा कलकता बंगलौर होगा।
ढाका रावलपिण्डी होगा करांची और लाहौर होगा।
सबसे ज्यादा क्रान्ति में अमरीका कमजोर होगा।
अरब और ईरान देश चीन और तोहराम होगा।
(होवे जर्मन और जापान)

(२)

क्रान्ति के बिना जग में कोई जगह पावे नही।
ऐसी मार वो काट होगी कोई भी छुटावै नही।
जहां तहां लाश होंगी कोई भी उठावै नहीं।
हिन्दू तो जलावै नही मुसलमान दफनावै नही।
जोगी और गुसाईं साधू पानी में बहावे नहीं।
राकिट और जहाज तक पार कुछ बसावै नहीं।
समय ऊपर पेट भराई अनाज कोई खावै नहीं।
हजारों के नोट की भी एक रोटी आवै नहीं।
(गड़बड़ के दरमियान्)

(३)

पादरी पुजारी मुल्ला हिन्दुओं की सफाई होगी।
मन्दिर मस्जिद गिरजे अन्दर बच्चों की पढाई होगी।
जात-पात छुवाछात मजहब को ना खाई होगी।
जेवर वाली पर्दे वाली कोई ना लुगाई होगी।
गुण कर्म स्वभाव देख ब्याह और सगाई होगी।
भिखारी की झोली खोस-खोस के पिटाई होगी।
किसी की भी राष्ट्र सेवा बैंक में ना पाई होगी।
सबसे ज्यादा क्राति की वहां पर करडाई होगी।
(जहा पर बने विधान)

(४)

क्रांति के साथ साथ हरियाणा विशाल होगा।
जिसके अन्दर मेरठ आगरा करनाल होगा।
हिन्दू मुसलमान सिख बहुत ही खुशहाल होगा।
यहा का व्यापारी बनिया बहुत मालोमाल होगा।
हरिजन मजदूर कोई यहां नहीं कगाल होगा।
राष्ट्रपिता गाधी जी का जब पूरा सवाल होगा।
(भारत बने महान)

(५)

सन १९९१ में बहुत भारी जंग होगा।
मजदूर और किसानों का पूंजीपति के संग होगा।
लड़ाई के बाद यहा बहुत अच्छा ढंग होगा।
मेहनत करने वाला यहां कोई नही तग होगा।
आज का विधान यहा बुरी तरह भंग होगा।
नया जो विधान होगा उसका अच्छा ढग होगा।
पृथ्वीसिंह बेधड़क को उस दिन उमग होगा।
(अखण्ड होवे हिन्दुस्तान)

जातीय आधार पर आरक्षण सामाजिक विषमताओं में वृद्धि कर रहा है।

—डा० धर्मपाल, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज जन्म के आधार पर किसी जाति की बात को स्वीकार नहीं करता। यहा पर गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था पर बल दिया गया है। वैदिक धर्म में कही पर भी जन्म के आधार पर किसी को अछूत अथवा पिछडा या अगडा कहने की बात को नही माना गया। ये जातियां समय के प्रवाह में फलस्वरूप बनती चली गयी और एक ऐसा समय आया जब जन्म को ही आधार माना जाने लगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुनः इस विषय को सामाजिक व्यवस्था को बदलने के उद्देश्य से और वे स्वयं तथा बाद में उनके अनुयायी, आर्यसमाज के सिद्धांतों में आस्था रखनेवाले लोग इस दिशा में सफल भी हुए, परन्तु जब जाति के आधार पर आरक्षण की सुविधा दी जाने लगी, तो वही लोग पुनः अनुसूचित कहलाने की दिशा में प्रवृत्त हो गए। आर्यसमाज के गुरुकुलों मे किसी को पता भी न होता था कि वे किस जाति में जन्मे हैं, पर जब वे जीवनयापन के लिए बाहर निकले तो सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के लोभ को वे भी सवरण न कर सके। किसी का नाम लिखना उचित नही है, पर अपनी बात को कहने के लिए नामों का स्मरण आवश्यक है। श्री रामचन्द्र 'विकल' सांसद सुनाया करते हैं कि उनके दादा के समय एक हरिजन ने प्रश्न उठाया कि मेरी बेटी के साथ विवाह कौन करेगा, तो उन्होने कह दिया कि यह लडका सामने खड़ा है इस के साथ विवाह कर दीजिए। यह आर्यसमाज का आदर्श था। कुछ दिन बाद वही हरिजन आरक्षण की सुविधा लेने लगे। प्रसिद्ध आर्यनेता श्री पृथ्वीसिंह आजाद ने कहा कि हमारे साथ रोटी बेटी का व्यवहार नहीं हो रहा है। इस पर श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित ने कहा कि निश्चय ही आपके साथ रोटी-बेटी का व्यवहार होगा, पर आप आर्य समाजी तो बनिए। वे बोले कि मै तो आयसमाजी हूं। श्री दीक्षित ने कहा कि आप राजनीति में तो हरिजन है क्योंकि आरक्षित स्थान से चुनाव लड़ते हैं। आपको सबके बराबर स्थान दिया जा रहा है, पर आप उस स्थान को कुछ सुख-सुविधाओं के कारण ठुकरा रहे हैं। आर्यसमाज आपको जो देना चाहता है, वह आप ले नहीं रहे। निश्चय ही आर्यसमाज तो गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार जाति का निर्धारण करना चाहता है, पर हमारे हरिजन भाई आरक्षण की चकाचौंध से भ्रमित हो गए हैं। एक बार किसी शास्त्रार्थ के दौरान विपक्षी ने कहा कि हम आपकी वर्णव्यवस्था को तब मानेंगे जब आप इन हरिजनों के घर का दूध पीलेंगे। श्री रघुवीर सिंह शास्त्री वहां पर थे। उन्होने दो युवकों की ओर वहीं पर इशारा किया और वे गटगट दूध पी गए और आर्यसमाज की जय का नारा लग गया। इसी प्रकार श्री ब्रह्मानन्द दण्डी कहा करते थे कि मैं अपने शिष्यों को ब्राह्मण बनाने की कोशिश कर रहा हूं पर ये अब भी जब विवाह आदि की बात चलती है, तो अपना जन्मना जाति की ओर उन्मुख होते है। देश मे जो हरिजनो ने सामाजिक आर्थिक पिछड़ापन भोगा है, आर्यसमाज तो उन्हे समान अधिकार देना चाहता है, पर वे लेना ही नही चाहते क्योंकि सरकार उन्हें जो सुविधायें दे रही है, वे ज्यादा लुभावनी हैं। इस प्रकार सरकार ही उन्हें आरक्षण देकर ऊपर उठने देना नही चाहती।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक वक्तव्य ध्यान देने योग्य है- "जो कोई जन्म से वर्णव्यवस्था माने और गुण कर्म के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिए कि जो कोई अपने वर्ण को छाड़ नीच अन्त्यन्त अथवा क्रिश्चियन, मुसलमान हो गया हो, उसको भी ब्राह्मण क्यो नही मानते ? तब यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कम को छाड़ दिया, इसलिए वह ब्राह्मण नही है, इससे यह भी सिद्ध होता है कि जो ब्राह्मणादि उत्तम कम करते हो, वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कम स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना ही अवश्य चाहिए।" जो जैसा करे उसे वैसा ही वर्ण मिले हम कर्मफल में विश्वास करते हैं— 'अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभम्' जब हम भगवान् श्रीकृष्ण के इस उपदेश को अन्य जन्म के लिए सत्य मानते हैं तो यहां क्यों नही मानते। हमारे सिद्धान्त तो सर्वत्र एक समान ही होने चाहियें। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के आठवें अध्याय में 'चातुर्वण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः' की सुन्दर व्याख्या की है— ब्राह्मण क्षत्रिय विशां शूद्राणां च परंतप, कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवैर्गुणः।' ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के स्वभाव और गुणों से उत्पन्न हुए 'कर्माणि प्रविभक्तानि' कर्म विभाग किए हैं। आगे चलकर भगवान् कृष्ण ने विभिन्न वर्णों की विशेषतायें भी बताई हैं। यहां विस्तारमय से उनको देने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु एक श्लोक बहुत ही प्रासंगिक है जो आर्यों के लिए भी ग्राह्य है :—

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्या द्वैश्यात्तथैव च ॥ १०।६५

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को, वैसे ही विद्या आदि की प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय व वैश्य भी ब्राह्मणत्व को, और अच्छे गुणों तथा उच्च वर्णों के कर्त्तव्य कर्मों को छोड़कर शूद्रत्व को प्राप्त होते हैं।

कुछ लोग मनुस्मृति की दुहाई देते हैं कि वहां पर जन्मना जाति व्यवस्था की बात कही है। यह भी नितान्त भ्रामक है। मनु का विधान इस प्रकार है—लोकानां तु विवृद्धयर्थं मुख बाहूरूपादतः। ब्राह्मणं क्षत्रिय वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्। (१।३१) ऐसी ही मान्यता वेदों में भी प्राप्य है। 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद बाहू राजन्य कृतः, उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत। (यजु० ३१।११) इस प्रकार मनु के विचार निश्चय ही वैदिक है। यदि कहीं पर कुछ अकथनीय है तो वह प्रक्षेप है। मनुस्मृति के अध्याय-१ के ८८, ८६, ६०, ६१ श्लोकों के पढने से यह स्पष्ट हो जाता है कि चारों वर्णों के गुण धर्म अलग हैं और ये जन्म के आधार पर नही बल्कि गुणों और कर्मों के आधार पर व्याख्यायित किए जाते हैं।

जो हमारे सनातनी भाई महाभारत, रामायण, पुराण व अन्य ग्रंथों की बात मानते हैं, वे भी यदि खुली आंखों तथा खुले मन से इन ग्रंथों का अध्ययन करें तो वे पायेंगे कि वहां पर भी जाति जन्म से नही, अपितु वर्णव्यवस्था कर्म के आधार पर मानी गई है। 'इन्द्रो ब्राह्मणः पुत्र. क्षत्रियाः कर्मस्य कारणम्' (महाभारत, शान्तिपर्व ४३। ११), 'गणिका गर्भसम्भूतो वशिष्ठश्च महामुनिः। तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्ते न कारणम् ॥ (भविष्यपुराण ब्रह्मपर्व ४३। २८), 'शूद्रोऽपि आगम सम्पन्नो द्विजो भवति संस्कृतः।' (ब्रह्मपुराण ५३। २२३) 'कर्म प्रधान विश्व रचिराखा। जो जस करहि सो तस फल चाखा।।' (गोस्वामी तुलसीदास)। 'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।'

अच्छा तो यह रहता कि उपर्युक्त संस्कृत पंक्तियों की सही व्याख्या करते हुए अपने विषय का प्रतिपादन किया जाता पर स्थान की सीमायें हैं और इस लेख का आवश्यक पहलू है कि हमारी सरकार क्या करना चाहती है।

हमारे इतिहास में ऐसे नाम अनेक हैं जो निम्न कुल में उत्पन्न होने पर भी ऊंचे स्थान को प्राप्त हुए, विदुर दासीपुत्र थे, पर वे महामन्त्री थे। सुदामा जन्म से ब्राह्मण थे, पर वे आर्थिक रूप से पिछड़े थे। फिर भी वे मांगना नहीं चाहते थे। वे आरक्षण नहीं चाहते थे। बाल्मीकि का स्थान कितना ऊंचा था ? भक्त शिरोमणि रविदास की आराधना की जाती है। ऐसे नामों की लम्बी सूची बनेगी।

साम्प्रदायिक जातीयता का विरोध महात्मा गांधी ने भी किया था। १६३३ में अंग्रेज सरकार ने विभिन्न साम्प्रदायिक वर्गों को एसेम्बली

[शेष पृष्ठ ५ पर]

श्री जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धांती जी की ९०वीं जयन्ती

[प्रथम पृष्ठ का शेष]

९- श्री सिद्धांती जी देहली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उच्च अधिकारी रहे।

१० श्री सिद्धांती जी सर्वखाप पंचायत के अनेक वर्षों तक प्रधान रहे तथा विवाह आदि अवसरों पर दहेज आदि पर पाबन्दी लगवाई तथा बारातों में कम से कम बाराती ले जाने के नियम बनवाए।

११- श्री सिद्धांती जी ने वैदिक धर्म विषयक छः पुस्तकें लिखकर प्रकाशित करवाईं।

१२- श्री सिद्धांती जी ने हरयाणा लोकसमिति के टिकट पर लोकसभा के चुनाव में विजय प्राप्त की, चुनाव प्रचार में अपनी गाडी पर ओ३म्ध्वज लगाने पर चुनाव याचिका में भी विजयी हुए।

ऊपर लिखित घटनाओं का विस्तार से वर्णन श्री जगदेवसिंह सिद्धांती अभिनन्दन ग्रन्थ तथा प. जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित में पढने को मिल सकता है। उनके जीवन चरित का विमोचन समारोह के अन्त में सभा उपप्रधान महाशय भरतसिंह ने किया। यह पुस्तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय रोहतक से १०) में प्राप्त को जा सकती है।

इसी अवसर पर वैदिक शिक्षा शिविर के सफल विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य के रूप में पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र भी दिए गए।

गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा नहीं होगी

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने एक प्रेस वक्तव्य में सरकार को एक चुनौती दी है कि गुरुकुल कांगड़ी में किसी भी हालत में सहशिक्षा शुरू नहीं होगी चाहे सरकार अनुदान दे या ना दे, गुरुकुल कांगड़ी आर्यसमाज के ही आदर्शों का पालन करेगा। कुलपति श्री सुभाष ने दिनांक ७-९-९० को वेद मन्दिर ज्वालापुर में अपने भाषण में कहा कि सरकार कांगडी के आदर्शों से बहुत अधिक प्रभावित हुई है। तथा कांगड़ी को विगत वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष अधिक अनुदान दिया है। —संवाद सूत्र

रोहतक में ऋषि-निर्वाण दिवस

रोहतक नगर की सभी आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं के सम्मिलित से आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्वावधान मे आर्यसमाज के प्रवर्तक, आधुनिक युग के समाज सुधारक, स्त्री जाति एव अछूतोद्धार के प्रबल समर्थक-महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का बलिदान दिवस रविवार दिनांक १४ अक्तूबर, १९९० को अपराह्न २-३० से ५-३० बजे तक डी. ए. वी. स्कूल समीप धनवन्ती आर्य कन्या उच्च विद्यालय आर्यनगर में सोत्साह मनाया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के विद्वान् प्रो० वीरपालसिंह वेदालंकार (गाजियाबाद) से पण्डित रविन्द्र कुमार वेदालंकार, आचार्य बलवीर जी, श्री राममेहर जी एडवोकेट (रोहतक) तथा पण्डित श्यामवीर जी राघव भजनोपदेशक (दिल्ली) से पधार रहे हैं।

शोक प्रस्ताव

श्री ईश्वरसिंह जी आर्य भजनोपदेशक के अतिम शिष्य श्री सत्यवीर जी मलिक के स्वर्गवास पर शोक प्रस्ताव पास किया गया।

इसी प्रकार आर्य जगत् के विख्यात् विद्वान् श्री श्री सिद्धांती जी को भी आर्यसमाज सांघी की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

—ओमप्रकाश मन्त्री

आर्यसमाज का सत्संग तथा चुनाव

ग्राम सलीमसर माजरा जिला सोनीपत में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से पण्डित रतनसिंह आर्य भजनोपदेशक ने २३-९-९० को. चौ जयचन्द सुपुत्र चौधरी तुलसीराम के मकान पर गृहप्रवेश सस्कार करवाया जिस पर चौधरी जयचन्द जी ने सभा के लिए ५१ रुपए दान दिया और २६-९ ९० को गाव में मनादी कराकर गाव की बड़ी चौपाल में यज्ञ किया जिस में सभी जातियों के भाई सम्मिलित हुए, यज्ञ पर उपदेशक जी ने आर्यसमाज के उद्देश्य शराब दहेज तथा अंग्रेजी के विरुद्ध सभा के चलाए हुए अभियान पर लोगों को प्रेरणा दी और आरक्षण आंदोलन की जानकारी दी और कहा कि आरक्षण का विरोध करें परन्तु आपस में सब प्रेम से रहें जिस का लोगों पर बडा प्रभाव पडा और २७-९-९० को आर्यसमाज का चुनाव करवाया जिसमें प्रधान चौधरी चन्द्रभान गहलौत वकील, मन्त्री चौधरी सतबीरसिंह गहलौत, कोषाध्यक्ष सू० कर्णसिंह गहलौत को सर्वसम्मति से चुना गया और सभा को गाव की ओर से ४०१ रुपए प्राप्त हुए।

—सतबीरसिंह मन्त्री आर्यसमाज सलीमसर माजरा

गायत्री महायज्ञ

दिनांक १९ से २५ सितम्बर तक श्री मदनलाल जी एवं श्री प्रेमराज गाव ग्वालपहाडी, जिला गुडगांव में स्वामी परमानन्द जी जी की अध्यक्षता मे गायत्री महायज्ञ हुआ। जिसमे अनेकानेक स्त्री-पुरुषों ने आहुतिया दी और यज्ञोपवीत भी लिए स्वामी देवानन्द आर्य प्रतिनिधि सभा भजनोपदेशक के ईश्वर भक्ति के गाने और रात्रि को देश भक्ति और शराब, दहेजबन्दी पर भजन होते रहे जिसमें मोहन लाल आर्य और रतनलाल आर्य भी सहयोग देते रहे। सभा को ३५१ रुपए दान प्राप्त हुआ।

जातीय आधार पर आरक्षण—

[पृष्ठ ४ का शेष]

में प्रतिनिधित्व देने के लिए 'कम्यूनल एवार्ड, के नाम से सुझाव रखा था। गांधी जी ने इसका विरोध किया था। वे यरावदा जेल में थे। उन्होंने वहीं भूख हडताल शुरू कर दी। यह वास्तव में ब्रिटिश सरकार की शरारत थी। वे हिन्दुओं के पिछड वर्गों को तथा सिखों को भी मुसलमानों और ईसाईयों की भांति प्रतिनिधित्व देना चाहते थे गांधी जी ने इस बात को पहचाना था। वे मानते थे कि इसमे देश कमजोर होगा। यह अवश्य है कि इसमे शासक सबल होगा।

सम्भवतः यही मनोविज्ञान अब भी कार्य कर रहा है। लोगों को टुकड़ों में बाट देने से वर्तमान शासक सबल हो सकता है। वी.पी. मण्डल ने इतनी जातियां गिनाई है, जिनकी कल्पना करना भी मुश्किल है। सम्भवतः सरकारी रिकार्ड में भी उनका अस्तित्व नहीं है। आश्चर्य यह है कि सभी राजनीतिक पार्टियां इसको अपनाने से कतरा रही हैं। साथ ही इसका विरोध करने से भी कतरा रही हैं। इसका एकमात्र कारण, उनकी दृष्टि वोट बैंक पर लगी होना है।

आर्यसमाज के कुछ नेता भी जब तक आर्थिक स्थिति का निर्धारण नहीं हो जाता, जातीय आधार पर ही आरक्षण देने की बात करते हैं। यह सामाजिक न्याय नहीं है। सामाजिक न्याय तो महर्षि दयानन्द के दर्शन में है जहां पर वे सभी के लिए समान शिक्षा व्यवस्था की बात कहते हैं और बाद में योग्यता के आधार पर काय व्यापार चयन की बात कहते हैं। वे राजा और रक सभी के लिए समान वातावरण एव समान शिक्षा व्यवस्था की बात कहते है। उन्होंने स्त्री और शूद्रों के लिए वेद वाक्य उद्धत करके उनके अध्ययन वकालत की है।

[क्रमश]

एक स्वर से अंग्रेजी का विरोध

रोहतक १४ सितम्बर। यहां स्थित महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में "हिन्दी दिवस" पर हुई संगोष्ठी में अनेक शिक्षाविदों, डाक्टरों, विधिवेत्ताओं तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने अंग्रेजी की अनिवार्यता का डटकर विरोध किया।

प्रमुख वक्ता अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन दिल्ली के श्री पुष्पेन्द्र चौहान ने कहा कि हमारे सगठन ने अंग्रेजी के सबसे बड़े गढ़ "संघ लोक सेवा आयोग" से अंग्रेजी के एकाधिकार को तोड़ने का सकल्प लिया है। हम सतीशचन्द्र कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित करने तथा सघ लोक सेवा आयोग की समस्त परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के माध्यम की छूट देने के लिए विगत एक वर्ष से धरना दे रहे हैं। गोष्ठी के मुख्य अतिथि डा० श्री नन्दकिशोर वर्मा शल्य-चिकित्सक ने कहा कि अंग्रेजी थोपे रखना बिल्कुल गलत है। किसी भी विकसित देश में अंग्रेजी जरूरी नहीं है। फ्रांसीसी, रूस और जर्मन जापान के लोग जिस देश में उन्हें जाना होता है छः महीने में उम देश की भाषा सीख लेते हैं। ऐसे ही हम भी कर सकते हैं। वास्तव में तो संस्कृत ही हमारी सम्पर्क भाषा बनने लायक है।

विधि विभागाध्यक्ष श्री रायजादा ने कहा कि नई पीढ़ी को हिन्दी अपनाने में कोई कठिनाई नहीं है।

भौतिकी विभाग अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रपाल सिंह ने कहा कि विज्ञान विषयों को हिन्दी माध्यम से पढाने में कोई कठिनाई नही है। इससे देश समृद्ध होगा और शिक्षा फैलेगी।

श्री महावीरसिंह फोगाट ने कहा कि हमें प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाना चाहिए और संस्कृत को अनिवार्य करना चाहिए। संस्कृत सभी भाषाओं को पुष्ट करके सम्पर्क भाषा का भी कार्य बखूबी निभा सकती है। अंग्रेजी कोरे भोगवाद, अश्लीलता, शराब मांसाहार, प्रदूषण, भेदभाव और अशिक्षा की मां बनकर अपनी संतति बढा रही है। श्री फोगाट ने कहा कि हरियाणा प्रान्त में आज भी अंग्रेजी अध्यापकों को तो पदोन्नति के अवसर सुलभ हैं लेकिन भारतीय भाषाओं के शिक्षकों पर अंग्रेजों के समय से ही पदोन्नति पर बन्धन चला आ रहा है। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री ओ३म्प्रभात अग्रवाल विभागाध्यक्ष रसायन विभाग तथा संचालक विज्ञान परिषद इलाहाबाद ने कहा कि मातृभाषाओं में शिक्षा देने से शिक्षा बढेगी। आपने कहा कि हमें हिन्दी माध्यम अपनाने में कोई कठिनाई नही है।

संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष श्री सुधीकान्त भारद्वाज ने कहा कि सस्कृत पूर्ण भाषा है अनुवाद इसके सामने कोई समस्या नहीं है। विश्वविद्यालय का समस्त कार्यकलाप हिन्दी में होना चाहिये। विश्वविद्यालय में हिन्दी टाईपराइटर उपलब्ध कराये जाएं। हमारे पास लिपिक हिन्दी टंकण में प्रशिक्षत हैं लेकिन हिन्दी टाईपराइटर न हों तो वे क्या करे।

सत्यवीर शास्त्री हरयाणा अध्यापक संघ ने कहा कि हिन्दी भारत की आत्मा है। इस में हमारी सस्कृति सुरक्षित है जब हम सब काम हिन्दी में करते हैं तब कक्षा तथा कार्यालयों में हिन्दी से परहेज क्यों।

रोहतक के विधिवक्ता श्री राममेहर ने कहा कि सभी न्यायालयों में हिन्दी में काम होना चाहिए। मैं अपना सारा कार्य हिन्दी में निपटाता हूं।

गोष्ठी मे "भारतपुत्र सघ" द्वारा तैयार की गई चित्र प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इसका उद्घाटन श्री भीमसिंह ललित कला निदेशक राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक ने प्रमुख चित्रों का विमोचन करके किया। प्रदशनी मे 'अंग्रेजी परिवार' नाम से अंग्रेजी और अंग्रेजियत पर व्यगात्मक चित्र प्रस्तुत किए गए थे। इनमें मांसाहार अश्लीलता, शराब, प्रदूषण अंग्रेजी, दहेज आदि बुराई पर अनेक आकर्षक चित्र रखे गए थे।

आयोजन के स्वागताध्यक्ष श्री प्रदीपकुमार जैन ने कहा है कि भाषा का कोई सम्प्रदाय नहीं होता। यहां हिन्दू मुस्लिम ईसाई सब हिन्दी या प्रादेशिक भाषाएं ही बोलते हैं। हमें तुरन्त अंग्रेजी को विदा करके सिंहासन पर राष्ट्रभाषाओं को बैठा देना चाहिए। मंच संचालन बहादुरगढ़ से जनसत्ता के संवाददाता श्री शीलकुमार भारद्वाज ने किया।

—ललित वत्स
प्रचार सचिव भारतपुत्र सघ रोहतक

आर्यसमाज और आरक्षण

आरक्षण के कारण भारत में धधक रही भीषण ज्वाला।
तोड़ फोड़ हड़तालों ने विध्वंस देश में कर डाला।।
रेल, बसें, मोटर कारें आगे बढ़ने नहीं पाती हैं।
पत्थर वर्षा होती उन पर या आग लगा दी जाती है।।
इसलिए राज्य सरकारों ने विद्यालय आदि बन्द करे।
लाठी व गोली काण्डों से कितने ही छात्र व युवक मरे।।
अविवेकपूर्ण आरक्षण से यह दुखद दशा हो पाई है।
सम्प्रदायवाद व जातिवाद की भीषण आग जलाई है।।
कश्मीर, असम, पंजाब और लंका में आग तो रही धधक।
यह बुझ न सकी आरक्षण की नई भीषण ज्वाला और भड़क।।
पथ भ्रष्ट नेताओं के झगड़ों से जनता परेशान।
छिड़ रहा परस्पर युद्ध यहां महाभारत जैसा ही महान्।।
जाति आधार पे लड़ने को दुर्योधन बन गये पासवान।
धृतराष्ट्र बने हैं वी. पी. सिंह इस भारत के मंत्री प्रधान।।
शकुनि की नीति चला रहे श्रो ताऊ जी नेता किसान।
कौरव दल में है घिरा हुआ अभिमन्यु रूपी हिन्दुस्तान।।
दुखी द्रौपदीरूपी भारत कृष्ण-कृष्ण पुकार रही।
यह दशा देख जो मौन उन्हें वह बार-बार धिक्कार रही।।
जाति धर्म के नाम पे क्या भारत को फिर से काटोगे?
यह तो अनेक हैं फिर इसको कितने टुकड़ों में बाँटोगे?
इस भांति देश विभाजन के सब ही प्रबन्ध हैं कर डाले।
अपनी सरकार से अपने देश रक्षा के पड़ गए हैं लाले।।
तज आर्थिक आधार जाति आधार पे होगा आरक्षण।
तो इसके कारण हो सकता है भारत का फिर से विघटन।।
यह आरक्षण की राजनीति है केवल वोटों के कारण।
सत्ता न हाथ से छिन जावे, इस देश का चाहे हो विघटन।।
आरक्षण के कारण अयोग्य ऊंचे पद तक पा जाते हैं।
योग्य युवक सेवा के लिये दर-दर की ठोकरें खाते हैं।।
यह सहन नहीं होगा युवकों का जीवनघाती आरक्षण।
प्रत्येक क्षेत्र में युवकों का योग्यता अनुसार होवे चयन।।
ऋषि दयानन्द ने जन्म-जातिगत सब अधिकार मिटाया है।
गुण-कर्म योग्यता के बल पर ही अधिकार बताया है।।
सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि कोई भी हो विद्यार्थीजन।
सबको समान सुविधाएं हों चाहे धनवान हो या निर्धन।।
'भास्कर' इस ही सिद्धांत से भारत का जन-जन उन्नत होगा।
गुण-कर्म योग्यता के कारण ही बलशाली भारत होगा।।

—भगवतीप्रसाद सिद्धान्त भास्कर, प्रधान
नगर आर्यसमाज १४३० पं० शिवदीनमार्ग कृष्णपोल, जयपुर

संशोधन

"सर्वहितकारी" के दिनांक १४ सितम्बर, १९९० के अंक में मेरे लेख "महर्षि दयानन्द का एक पत्र" की द्वितीय किस्त प्रकाशित हुई है। इसके अन्तर्गत पृष्ठ ४ पर "सत्यार्थप्रकाश" में उल्लिखित मनुस्मृति के एक श्लोक का वर्णन किया गया। यह मनुस्मृति के छठे अध्याय का ९७ वां श्लोक है। प्रेस की भूल के कारण मनुस्मृति (६/६७) प्रकाशित हो गया है। विज्ञजन संशोधन करके पढ़ेंगे, यह आशा है।	—इन्द्रजित् देव

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८—३९ में जिन भाइयों ने सक्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल में गए थे उन सबको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ऐसे सब सत्याग्रहियों को तारीख १७-११-९० को हरयाणा सभा अपने वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करेगी। इसी सिलसिले में सभा हैदराबाद आर्यसमाज का आंदोलन १९३८-३९ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमें हरयाणा के तमाम सत्याग्रहियों के फोटो और संक्षिप्त जीवन परिचय होगा। अतः सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना संक्षिप्त जीवन एवं पासपोर्ट साईज का फोटो नहीं भेजा है वे यह सूचना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साईज का फोटो और ६—७ लाईन का जीवन परिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करें ताकि उनका नाम इतिहास में लिखा जा सके।

जीवन परिचय का प्रारूप

१- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, गाम, जिला।
२- किसके जत्थे में थे।
३- कहां सत्याग्रह किया वहां कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल में रहे।
४- जेल में कोई विशेष घटना हुई हो तो संक्षिप्त रूप में लिखें।

महाशय भरतसिंह संयोजक
हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति,
दयानन्दमठ रोहतक।

दो बातों का महत्व

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

- जो चाहो निरोग तन, इतना रखिए ध्यान।
  सैर प्रातः काल की, तैल मले स्नान।।
- चोरी और व्यभिचार से, रहो हमेशा दूर।
  प्रभु चिन्तन सत्संग से, सुख मिलता भरपूर।।
- आदत बुरी सुधार कर, मन की रोक तरंग।
  दुष्ट जनों का साथ तज, सत् पुरुषों का संग।।
- एक ईश्वर एक मौत को, कभी न मन से भूल।
  सत्य वचन विनम्रता, दोनों सुख के मूल।।
- तन मन से रखिए सदा, देश धर्म हित प्यार।
  स्वजनों से सद्ज्ञान लो, अतिथि का सत्कार।।
- एक कंचन एक कामिनी, लेते तुरन्त लुभाय।
  त्याग तपस्या से मनुज, ऊंची पदवी पाय।।
- इस जग में दो जाति है, एक पुरुष एक नार।
  ताने बाने से बना, यह सारा संसार।।
- जीवन मूल्य जगत् में, प्रतिदिन जग में होय।
  दो पाटों के बीच में, साबित बचा न कोय।।
- काया माया पर कभी, करो नहीं अभिमान।
  तन मन से रखिए सदा, देश धर्म का ध्यान।।
- सुबह शाम संध्या हवन, करते जो नर नार।
  दुर्गुण और दुष्कर्म तज, दया धर्म उर धार।।

शराब हटाओ
देश बचाओ

भाषण प्रतियोगिता आयोजन

अरावली पर्वत शृंखलाओं की गोद में बसे हरयाणा के ऐतिहासिक नगर फिरोजपुर झिरका में स्थानीय आर्यसमाज के तत्वावधान में कार्तिक शुक्ला सप्तमी सम्वत् २०४७ (२६ अक्तूबर शुक्रवार सन् १९९०) को प्रान्तीय स्तर पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। भाषण प्रतियोगिता में निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर आप ५ से १० मिनट के बीच अपने विचार रख सकते हैं।

विषय—१ वेद और विज्ञान।
२ भारत की स्वाधीनता में आर्यसमाज का योगदान।
३ शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुलों की भूमिका।
४ सत्यार्थप्रकाश और मानवीय मूल्य।
५ परमात्मा का सच्चा स्वरूप।
६ गोपालन और श्वेत क्रान्ति।
७ महर्षि दयानन्द और मिथ्या ग्रन्थ।
८ राष्ट्रीय भाषा के विकास में बाधक काले अंग्रेज।
९ दिशाहीन युवा और आर्य दीक्षा शिविर।
१० नारी के उत्थान में आर्यसमाज की पृष्ठभूमि।

पात्रिता—क) हरयाणा प्रान्त की किसी भी शैक्षणिक संस्था से दो प्रतियोगी भाग ले सकते हैं।

ख) प्रतियोगिओं की आयु सीमा दो वर्गों में विभाजित है।
(अ) १२ से १६ वर्ष एवं १७ से २५ वर्ष।

ग) प्रतियोगी छात्र/छात्राओं को सम्बन्धित संस्था के मुखिया से अपनी प्रमाणीयता लिखवाकर लानी होगी।

घ) व्यक्तिगत छात्र/छात्रा प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकता।

ङ) भाषण प्रतियोगिता में अपने विचारों को गायन (संगीत) द्वारा भी व्यक्त किया जा सकता है।

च) प्रतियोगिता का समय २६ अक्टूबर शुक्रवार रात्रि ८ से १२ बजे तक निश्चित है। परन्तु प्रत्येक प्रतियोगी को अपना नाम, आयु एवं विषय, भाषण प्रतियोगिता कार्यालय आर्यसमाज, फिरोजपुर झिरका में प्रातः १० बजे से १२ बजे तक उसी दिन अंकित कराना अनिवार्य है।

मुख्य संयोजक
सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, के लिए दीप प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा ... का ...

ऋषि निर्वाण विशेषांक :–

ऋषिवर की पावन स्मृति में

विक्रमी वर्ष 1940 की दीपावली को सायंकाल साढ़े पांच बजे, जब देश-देशान्तर में बसे भारतीय अपने-अपने घरों में दीपमाला के दीपप्रज्वलित कर रहे थे, तब विश्वमानवता के हितार्थ ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण वेद-दीप प्रज्वलित कर महर्षि दयानन्द का जीवन-दीप अनन्त आकाश में विलुप्त हो गया।

उस महामानव के महाप्रमाण की सूचना जहां-जहां पहुंची—न केवल भारत और आर्य जाति में ही अपितु समस्त भूमण्डल पर निवास करने वाले मनीषियों के मन और मस्तिष्क पर शोक छा गया।

यद्यपि वह महान विभूति 1940 विक्रमी की दीपावली की सायं काल से इस ससार में कहीं दिखायी नहीं देती किन्तु उसके द्वारा प्रकाशित किया गया यह ज्ञान-विज्ञान परिपूर्ण दीप, अनादि पुरुष का वह शाश्वत ज्ञान-जो शताब्दियो से लुप्त प्राय था और जिसके विषय में अविद्यान्धकार के गर्त्त में भटकती आर्यजाति में यह किंवदन्ती प्रसिद्ध थी कि "वेद को शंखासुर लेकर पाताल चला गया — — उस महामानव ने पुन: प्रकाशित कर विश्व-मानवता के विशाल प्राङ्गण में उसका प्रकाश फैला दिया। केवल उस प्रकाश को स्वय ही फैलाया हो, ऐसी बात भी नही अपितु युग युगान्तर तक इस विशाल पृथ्वी पर उसे प्रज्वलित करते रहने के लिये अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्यसमाज का सघठन बनाकर "वेद को पढ़ना-पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" इस सूत्र के रूप में उसे दायित्व सौंप दिया।

महर्षि के उत्तराधिकारी आर्य समाज ने भी उस दायित्व के निर्वहन में अपने पूर्ण सामर्थ्य का उपयोग किया और निरन्तर कर रहा है। महर्षि की इस घोषणा के अनुरूप कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" आर्यसमाज ने वेद के विविध विज्ञानों से सम्बद्ध अब तक सैंकड़ों ग्रन्थ प्रकाशित कर संसार के पुस्तकालय की श्रीवृद्धि की है।

आर्यसमाज का ऐसा मन्तव्य नही है कि यान्त्रिकीय ही विज्ञान है अपितु आर्यसमाज की यह मान्यता है कि प्रत्येक विषय का अपना विज्ञान होता है। यह तो सभी जानते हैं कि प्रत्येक विषय का अपना विज्ञान होता हैं किन्तु इससे आगे बढकर प्रत्येक विषय के विज्ञान तक सब नहीं पहुंच पाते हों, ऐसी ही बात नही है अपितु प्रत्येक विषय का विज्ञान भी होता हैं, ऐसा विचार भी तब नही कर पाते तथा तथ्य तो यह हैं कि सर्व सामान्य की तो बात ही क्या, बड़े बड़े ज्ञानी मनीषियों का भी इस ओर ध्यान नहीं जाता। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक विषयक ज्ञान का विवेचन और विश्लेषण तथा उसके परिणाम स्वरुप होने वाली उपलब्धि उस विषय का विज्ञान होता है।

यदि केवल यान्त्रिकीय दृष्टि से भी देखा जाये तो वेद में इस परिमाण में विज्ञान भरा पड़ा है कि न केवल हमारी पृथिवी पर अपितु विश्व ब्रह्माण्ड में "यावत् चन्द्रदिवाकरौ" जब तक चन्द्रमा और सूर्य सहित यह सृष्टि रहेगी, तब तक उस प्रभु-प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान में से विज्ञान के सूत्रों की उपलब्धि होती रहेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही वेद को "सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहकर वेद की वैज्ञानिकता की चर्चा की हो, ऐसी बात भी नहीं है अपितु अब से दीर्घ समय पूर्व महर्षि भारद्वाज के "यन्त्र सर्वस्व" नामक ग्रन्थ के टीकाकार श्री बोधानन्द ने अपने द्वारा की गई टीका के मंगलाचरण में लिखा है :-

निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनि:।
नवनीत समुद्धृत्य यन्त्रसर्वस्वरूपकम् ॥

अर्थात् महामुनि भारद्वाज ने वेदरूपी समुद्र को मथकर उसमें से "यन्त्र सर्वस्व" ग्रन्थ के रूप में नवनीत (मक्खन) निकाल लिया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन ~~11~~ 25 नवम्बर को रोहतक में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन ~~11~~ नवम्बर 1990 रविवार को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक में होगा। वार्षिक अधिवेशन मे हरयाणा प्रदेश से आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा तथा आगामी वर्ष के लिये सभा के अधिकारियो तथा अन्तरग सदस्यों आदि का चुनाव किया जावेगा। इस अधिवेशन में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजो के स्वीकृत प्रतिनिधि भाग लेंगे।

—वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

यदि यन्त्र सर्वस्व को ही हम उद्धृत करने लग जाये तो लेख का कलेवर बहुँत बढ जायेगा। किन्तु फिर भी इतना कह देना अनुचित न होगा कि उक्त ग्रन्थ के वैज्ञानिक प्रकरण को ही लिया जाये तो भी वैज्ञानिक यान्त्रिकी के साथ-साथ उसमें युद्धोपयोगी अन्य भी अनेक यान्त्रिकीय उपकरणों के निर्माणार्थ उनके यन्त्र भी वर्णित किये गये हैं, जिनमें प्रयुक्त होनेवाली धातुओ तथा वनस्पतियों के अतिरिक्त आग्नेय आदि पदार्थों के प्रयोग का भी वर्णन है और शत्रु के विमानों में आग लगाकर उन्हें नष्ट कर देने के लिये तैयार किये गये दर्पण तथा भूगर्भ में छिपाकर रक्खे गये भयंकर आग्नेय गोलों का पता

(शेष पेज 12 पर)

दयानन्द दर्शन

प्रा. भद्रसेन डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) १४६०२१

प्रस्तुत शीर्षक में दो का समास है, अतः क्रमशः प्रथम इन दोनों शब्दों पर विचार करते हैं।

दयानन्द नाम उस महान् महर्षि का है, जो मूलशंकर से शुद्धचैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी के रूप में साधना करके सिद्ध हुआ। जिस सिद्धपुरुष ने उन्नीसवी शताब्दी में एक वैचारिकक्रान्ति की। क्योंकि देव दयानन्द का दर्शन व्यावहारिक, प्रगतिशील, जीवन्त और तर्कसंगत ही नहीं, अपितु भारतीय शास्त्रों से भी प्रमाणित था और है। अर्थात् जो भारतीय साहित्य और संस्कृति सहस्र वर्षों से विद्यमान थी परन्तु कुछ ने उसके समग्र स्वरूप को सामने न रखकर उसका एकांगीपन ही प्रचलित कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं का पूजन तथा जन्मना जात-पात तथा ऊंच-नीचपन, सामाजिक छुआ-छूत, स्त्री शिक्षा का विरोध और अनमेल (बाल वृद्ध) विवाह आदि मान्यताएं चल निकली। महर्षि दयानन्द ने भारतीय शास्त्रों के प्रमाणो से उपर्युक्त रूढियों का निराकरण करके जीवन के दर्शन का एक तर्कसंगत, जीवन्त, व्यावहारिक रूप उपस्थित किया।

दर्शन का यह सुसंगत रूप महर्षि दयानन्द ने एक लम्बी साधना से सिद्ध किया। यतो हि इतिहास का प्रत्येक पाठक इससे परिचित है कि भारत के गुजरात प्रान्त में एक टंकारा नाम का कस्बा है। वहां १८२४ में मूलशंकर का जन्म हुआ। उसका १३ वर्ष तक का बालपन दूसरे बच्चों की तरह बीता, चौदहवें वर्ष पिता जी ने एक दिन मूल को कहा कल शिवरात्रि है, अतः शिवपुराण की कथा सुनने चलते हैं। मूल पिता जी के साथ वहां गया, कथावाचक ने शिव की वीरता की कई घटनायें सुनाई और शिवव्रत रखने की पद्धति तथा महिमा बताई। लौटते समय मूल ने अपने पिता जी से कहा- इस बार मैं भी शिवरात्रि का व्रत रखूंगा।

व्रत वाली रात में मन्दिर में जब मूल ने चूहों को अर्पित मिठाई, फल खाते हुये देखा, तो पिता जी को जगाकर पूछा शिवजी इनको हटाते क्यों नही? पिता जी ने मूल के प्रश्नों का उत्तर देते हुये प्रसंगवश कहा- सच्चे शिव तो कैलाश में रहते हैं प्रश्नों के उन उत्तरों से सन्तुष्ट न होकर मूल ने पिता जी से घर जाने की आज्ञा ली और अपने मन में सच्चे शिव दर्शन की प्रतिज्ञा करते हुये वह घर लौट आया। इसके दो वर्ष पश्चात् मूल को बहन की मृत्यु होगई, मूल के लिए मौत का यह पहला अनुभव था। अतः गुमसुम होकर मूल सब कुछ देखता भर रह गया। इसके दो वर्ष बाद मूल के चाचा जी की मृत्यु हो गई। चाचा जी मूल से बहुत स्नेह करते थे। अतः मूल को तब अनुभव हुआ, कि किसी प्रिय की मृत्यु पर क्या स्थिति होती है? मूल बहुत रोया, सब चुप कराते ही रह गये और इससे मूल के मन में वैराग्य पैदा हुआ।

इसके कुछ दिन पश्चात् मूल ने पिता जी से कहा मैं संस्कृत का विशेष अध्ययन करने के लिए काशी जाना चाहता हूं। पर समीप की पाठशाला में पढने का निर्णय हुआ और वहां मूल ने अपनी पढाई के साथ साथ जब एकान्त में गुरु जी के पास जाकर कभी पूछा, कि सच्चे शिव के दर्शन कैसे होते हैं? और कभी मौत को कैसे जीता जा सकता है? तब गुरु जी ने योगाभ्यास की बात बताकर टाल दिया, पर यह क्रम जब बार-बार चलने लगा तो शिक्षक ने मूल के पिता जी को कहा आप का बेटा कुछ अनोखे-अनोखे प्रश्न पूछता है अतः अभी से प्रबन्ध कर लो।

इस चेतावनी के बाद माता-पिता ने मूल को घर पर वापिस बुला लिया और उसके विवाह की तैयारियां शुरू कर दीं। मूल ने जब यह नया रूप देखा तो उसका अपना आपा छटपटा उठा। अतः घर छोड़ने का निश्चय करके एक दिन सायंकाल को मूल ने जल का पात्र लिया और चल पड़ा। योग सिखाने वाले गुरु की खोज में मूल ने पहले शुद्धचैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर लगातार चौदह वर्ष जंगलों, नदियों, पहाड़ों की खाक छानी और जहां कहीं पता चला कि अमुक स्थान पर विशेष विद्वान्, साधु, योगी, महात्मा रहता है, वहीं विनीत शिष्य बनकर वह पहुँचा। शास्त्र के नाम पर जिसने जो पढाया सो पढा तथा योग के नाम पर जिसने जो सिखाया सो सीखा। अन्त में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया पर मथुरा पहुंचा, वहां लगभग तीन वर्ष अष्टाध्यायी, महाभाष्य का विशेष रूप से अध्ययन किया।

एक दिन किसी से लौंग लेकर गुरुचरणों मे विदाई लेने के लिये दयानन्द पहुंचे और निवेदन किया, कि अब सच्चे शिवदर्शन की साधना और मृत्युविजय का पथ पकड में आया लगता है। अतः मुझे इस पथ का पथिक बनने की आज्ञा दीजिए। यह सुनते ही गुरु विरजानन्द जी दण्डी ने कहा- मैंने इन लौंगो के लिए तो तुझे नहीं पढाया था, मुझे इनकी जरूरत नही है। तब दयानन्द ने कहा मेरे पास इन मांगी हुई लौंगो के अतिरिक्त और देने के लिये है ही क्या? बड़े विश्वास के साथ ब्रह्मर्षि गुरु ने कहा- दयानन्द तू युवा है, तेरे पास स्वस्थ शरीर है, तू शिक्षित और विचारशील है तथा भावनाभरा दिल रखता है। तू आखे और दिमाग रखते हुये भी अपने चारो ओर क्यों नहीं देखता, कि जनता किस प्रकार अन्धविश्वास, रूढिवाद और अन्धकाररूपी अज्ञान मे ठोकरे खा रही है? तब दयानन्द जी ने पूछा गुरुदेव मेरे लिए फिर क्या आज्ञा है? ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी ने अपने अन्तःस्थल की भावनाओ को उण्डेलते हुये कहा- दयानन्द! आर्षज्ञान के प्रकाश से सभी को प्रकाशित करो। शिष्य ने विना ननुनच के इस आज्ञा को शिरोधार्य किया और अन्तिम श्वास तक प्राणपण से निभाया।

स्वामी दयानन्द ने पहले सामान्य विचारों के प्रचार के साथ भारत के एक बडे भूभाग की जनता को समझा और भारतीय संस्कृत साहित्य आदि का गहरा आलोडन किया। बहुत कुछ देखने, पढने, सोचने के बाद ऋषि दयानन्द ने १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की, जिससे आर्षज्ञान की ज्योति सदा जगमगाती रहे।

अपनी योगसाधना को भी गौण करके महर्षि दयानन्द ने जहां १८८३ तक जनता को एक सुसंगत जीवन का दर्शन दर्शाने का सर्वात्मना प्रयास किया, वहां सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका वेदभाष्य आदि बडे-छोटे बीस ग्रन्थ भी लिखे। इस सारे का निष्कर्ष यह है कि संसार के इतिहास की यह एक अपूर्व घटना है कि एक पठित इक्कीस वर्षीय युवक लगातार चौदह वर्ष घाट घाट का पानी पीने के पश्चात् गुरु को प्राप्त करता है। वहां विशेष शिक्षा प्राप्त करके जब अपने पूर्व संकल्प को साधने के लिए विदा मांगता है तो गुरुदेव उसके जीवन का कांटा ही बदल देते हैं। एतदर्थ महर्षि अपनी योगसाधना को भी गौण करके जनताजनार्दन को सत्पथ दर्शाने में जुट जाते हैं।

दर्शन — इस शीर्षक में दूसरा शब्द है - दर्शन। यह दृशिर् (प्रेक्षणे) धातु से बनता है, जिसका प्राथमिक अर्थ है देखना। इस के साथ दर्शन शब्द नेत्र, बुद्धि, धर्म दर्पण आदि अनेक अर्थों में भी मिलता है। दर्शन शास्त्रों में प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय, प्रमा शब्द केन्द्रबिन्दु हैं, जिनके दर्शन का भाव ज्ञान, समझ सिद्ध होता है और प्र+ईक्षण=गहराई से देखना, जानना, समझना से भी इसी का समर्थन होता है। तभी तो कहते हैं-जिन खोज्या तिन पांइयां, गहरे पानी पैठ। अर्थात् गहराई से देखना, जानना ही दर्शन शब्द का मूल अभिप्राय है।

विशेष रूप से दर्शन शब्द उस विद्या, शास्त्र के लिये प्रयुक्त होता है, जिससे पदार्थों के धर्म, स्वभाव, कार्य-कारण सम्बन्ध आदि का बोध होता है। अधिकतर प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, धर्म और जीवन के अन्तिम लक्ष्य का निरूपण करनेवाले शास्त्र को दर्शन कहा जाता है। जिसको अध्यात्म के नाम से भी स्मरण करते हैं। जब एक व्यक्ति संसारी चिन्ताओं से निश्चिन्त होता है, तो उसके अन्दर

(शेष अगले अक में)

अणुबम से भी खतरनाक है 'अखिल इस्लामवाद'

प्रो० शेरसिंह

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हीरोशिमा और नागासाकी पर अणुबमों से किया गया हमला बीसवी-सदी की सबसे बड़ी त्रासदी है, ऐसा सभी मानते हैं। लेकिन युद्ध की समाप्ति के बाद जहां एक और आणविक शस्त्रों की होड में विश्व की महाशक्तियां विलक्षण मानवीय प्रतिभा और दुर्लभ नैसर्गिक संसाधनों को झोकती रही, सम्पूर्ण विश्व समाज में इस होड़ को समाप्त कर देने का दबाव भी उत्तरोत्तर बढता गया। परिणाम यह है कि आणविक शस्त्रों के विसर्जन की प्रक्रिया का श्रीगणेश हो चुका है।

लेकिन इक्कीसवी शताब्दी में जिस भयकर त्रासदी की कल्पना से आज विश्व आतंकित व चिन्तित है वह आधी से ज्यादा दुनियां मे फैली कट्टरपंथी मुल्लाओ द्वारा संचालित अखिल इस्लामवाद और उससे जनित अलगाववाद और आतंकवाद की मुहीम है। इसमे तनिक भी सन्देह नहीं कि इस्लामी कट्टरपंथी का यह बम अणुबम से कही अधिक विनाशकारी हो सकता है, क्योकि इसकी प्रक्रिया में दूसरे मजहबो में भी कट्टरवाद फैलेगा और यह टकराव मानवसमाज के विनाश के लिये उत्तरदायी होगा। ब्रिटेन की प्रधानमन्त्री श्रीमती थैचर विश्व को यह चेतावनी दे रही है कि इक्कीसवी शताब्दी मे इस्लामी कट्टरपंथी मुल्ला ही विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती बनेंगे।

अखिल इस्लामवाद के नजरिये को अमलीजामा पहनाने के लिये जो साधन चाहिये थे, अरब देशो से वे मिलने लगे। छप्पर नही पाताल फोडकर, बेतहास पैट्रोडालर अरब देशों के हाथ लगे। इसके लिए न उनको कुछ तप करना पडा और न परिश्रम। इन देशों की मरुभूमि के नीचे तेल निकल आया और उसको निकालने के लिए अन्य परिश्रमी देशो द्वारा विकसित यत्र और तकनीक सेवा में उपस्थित हो गए। पहले लीबिया ने इस्लामिक परमाणु बम बनाने के लिये अरबों रुपए पाकिस्तान और उसके वैज्ञानिकों को देने की घोषणा की और बाद में अमेरिका और लीबिया का विवाद छिड़ने के बाद वही काम सऊदी अरब ने किया। पाकिस्तान परमाणु बम बना पाया है या नहीं और यदि बना पाया है तो इस्तेमाल कर पाएगा कि नही, यह तो निश्चय से नहीं कहा जा सकता। परन्तु अखिल इस्लामवाद द्वारा जनित अलगाववाद तथा आतंकवाद रूपी इस्लामिक बम विस्फोट तो जगह जगह हो रहा है।

अखिल इस्लामवाद के चलते अब ईरान, सऊदी अरब तथा अन्य मुस्लिम कट्टरवादिता में विश्वास रखनेवाले देश, जिन जिन देशों में मुसलमान रहते है उनके अन्दरूनी मामलो मे दखल देना अपना अधिकार मान बैठे हैं, और उन देशों को अस्थिर करने और तोडने के लिए अलगाववादियो को सब प्रकार की सहायता पहुचाने को हक बजानिब कहने में जरा भी संकोच नही करते। कुछ तो अरब देशो के नेताओं सुल्तानों व अमीरों की महत्त्वाकांक्षाओं के कारण, कुछ आर्थिक स्वार्थों के टकराव से उपजे विवादो के कारण और कुछ पश्चिमी देशो की कूटनीति के कारण अरब देश आपस मे बटे हुए हैं, नही तो अलगाववाद और आतंकवाद भारत, रूस और चीन में और भी विकराल रूप धारण कर लेते। इन देशों में जो खेल हो रहा है वह दिन प्रतिदिन बढ रहा है और इनमें सबसे बड़ी भूमिका पाकिस्तान की है, क्योकि मध्य एशिया में वह फ्रण्ट लाइन देश माना जाता है और उसकी पीठ पर है अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के देश।

पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों ही अपने आपको मुस्लिम देश कहते हैं। पाकिस्तान में हिन्दू तो नाममात्र ही रह गये, सिन्ध से वे भी पलायन कर रहे है। बांग्लादेश से भी बहुत बड़ी सख्या में हिन्दू और बौद्ध निकल आए हैं। जो हैं उनको बराबर के नागरिक का अधिकार नही है। पाकिस्तान में अहमदियो को कोई नागरिक अधिकार नहीं। मुजाहिर भी जैसे तैसे दिन काट रहे हैं।

अफगानिस्तान की हुकुमत का तख्ता पलटने के लिये अमेरिका ने जैसे ही पाकिस्तान को अफगान मुजाहिदीनो के लिए हथियार, धन और अन्य साधन दिए, वैसे ही पाक ने मुजाहिदीनो के साथ साथ पजाब के सिख नौजवानों और कश्मीर के पाकसमर्थक जवानों को हथियार प्रशिक्षण और दूसरे साधन देने शुरू कर दिए। जब भारत ये तथ्य दुनियां के सामने रखता है तो वह भारत को अस्थिर करने और तोड़ने के लिए दी जानेवाली प्रमाणित मदद से भी साफ इंकार कर देता है और प्रतिक्रिया मे और अधिक मदद देने लगता है। अब जब अफगानिस्तान से रूसी फौजे वापस चली गई और मुजाहिदीन अफगानिस्तान की सरकार को नही उखाड़ सके, तब अमेरिका ने रूस से मिलकर सैनिक की बजाय समस्या का राजीतिक हल निकालने की सोची। परन्तु बिल्ली के भागो छीका टूटा, इराक का द्वन्द्व अमेरिका और सऊदी अरब के साथ छिड़ गया। पाकिस्तान की सेना के अध्यक्ष और राष्ट्रपति ने बेनजीर को चलता किया और सऊदी अरब में अमेरिकी सेना आगई। फारस की खाडी में अमेरिका की सहायतार्थ पाकिस्तान अग्रिम पक्तिवाला देश बनकर खडा होगया। अब फिर अमेरिका की नौसेना के तथा दूसरे आधुनिक हथियार और साधन उसके पास आगए और उनके राष्ट्रपति इसहाकखा ने कश्मीर को पाकिस्तान मे मिलाकर अपनी अधूरी क्रान्ति को पूरा करने की बात कह डाली।

२० अप्रैल १९९० को चीनी दूरदर्शन पर अचानक सूचना प्रसारित की गई जो तिब्बत मे किए गए आजादी के लिए विरोध प्रदर्शनों से कही अधिक भयप्रमारक थी। ५ और ६ को सिक्यांग मे हुई बर्बरतापूर्ण लड़ाई और हत्याओ के दृश्य दिखाए गए। उसके एक महीने बाद २४ मई को बी बी सी लन्दन के पेईचिग स्थित संवाददाता ने विस्तार से बताया कि सिक्यांग मे अलगाववादी मुस्लिम नेताओ ने उस क्षेत्र को चीन से अलग करने के लिए जेहाद की तैयारी कर ली थी और १३ अप्रैल को अबुल कासिम के नेतृत्व मे बगावत का शख क्षेत्र के बड़े बड़े नगरो में एक साथ बजाना था। परन्तु चीन के गुप्तचरों को सारी योजना का पता चल गया इसलिए ५ और ६ अप्रैल को ही धमाका हो गया। यह भी पता चला कि विदेशी व्यक्तियो द्वारा प्रेरित मुस्लिम कट्टरपंथी संगठनो के द्वारा इस क्षेत्र में अवैध रूप से गावों तक में अनेक स्कूल खोल दिए थे जिनके द्वारा स्कूल के बच्चों में साम्प्रदायिक और जातीय घृणा फैलाई जा रही थी। इन्ही कारणों से ५ और ६ अप्रैल की घटनाओ के बाद सिक्यांग को पीपल्ज कांग्रेस ने धार्मिक गतिविधियों पर नियत्रण के कानून बहुत कड़े कर दिए हैं। फलस्वरूप न तो अब यहां कोई नई मस्जिद बन सकती है और न मुल्लाओ के द्वारा प्रचार हो सकता है। सिक्यांग को २०वी शताब्दी के दूसरे दशक और उसके बाद बहुत दिनो तक पूर्वी तुर्किस्तान गणराज्य के नाम से जाना जाता था, उसका चीन मे विलय १९५० में हुआ था। रूस के तुर्कमेनिस्तान और सिक्यांग के युघुर लोगों मे गहरा सम्बन्ध रहा है और युघुरो मे जब अशान्ति फैली तब ५०,००० युघुर सिक्यांग छोड़कर रूस के तुर्कमेनिस्तान मे चले गए थे।

मुस्लिम अलगाववाद और अखिल इस्लामवादी का प्रहार विशेष रूप से तीन देशों को झेलना पड़ रहा है और आनेवाले बहुत समय तक झेलना पड़ेगा। ये तीन देश हैं भारत, रूस और चीन। भारत में मुस्लिम आबादी करीब दस करोड़ है। रूस में सात-आठ करोड़ और करीब करीब इतनी ही चीन में है।

अफगानिस्तान, तुर्की, ईरान, चीन आदि देशो में घिरे हुए तुर्कमेनिस्तान, अजरबैजान, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान आदि रूस के रिपब्लिकों में जहां मुसलमानों का बहुमत है, रूस से अलग होने की बात चल पड़ी है। अमीनिया ने अपने आपको बाल्टिक के रिपब्लिकों की तरह स्वतन्त्र भी घोषित कर दिया है। उन

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ऋषि दयानन्द का एक विवादास्पद पत्र

ले. डा. भवानीलाल भारतीय

परोपकारी के मई १९९० के मुख पृष्ठ पर ऋषि दयानन्द का ाक पत्र (मूल की फोटो) छपा है जिसका शीर्षक है-"पंडित कालूराम जी महाराज निवास स्थान रामगढ जिला सीकर इलाके जयपुर को श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने पत्र द्वारा निम्नलिखित उपदेश किया।"

इसी पत्र को सार्वदेशिक साप्ताहिक ने भी उद्धृत किया है। प्रस्तुत पत्र को लेकर अनेक व्यक्तियों को शंका हुई। यमुनानगर के स्वाध्यायशील आर्य श्री इन्द्रजितदेव ने मुझे पत्र लिखा, प० युधिष्ठिर जी मीमांसक जी से भी इस पर चर्चा हुई तथा सार्वदेशिक के सम्पादक डा. सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी इस पर मेरे विचार जानने का यत्न किया। अतः इस पत्र के कथन पर विचार करना आवश्यक है :-

मेरे विचार से यह पत्र प्रामाणिक नहीं है कारण कि
१) उपदेश संख्या २ के अन्तर्गत इसमें लिखा है -
अ) त्रिवर्ण को तत्सवितु गायत्री मंत्र (दिया जाय)
आ) द्विजों की स्त्रियों का (विश्वानि देव) मंत्र (दिया जाय)
इ) शूद्र और उनकी स्त्रियों को (विश्वानि देव) मंत्र (दिया जाय)
ई) ईसाई मुसलमान आदि को भी विश्वानि देव मंत्र (दिया जाय)
उ) अन्त्यजादि को परमात्मानभिति मंत्र (दिया जाय)

हमारा कथन - स्वामी दयानन्द ने गायत्री मंत्र का विधान आर्यमात्र (आशूद्र स्त्री द्विज पर्यन्त) के लिये किया है। यह पत्र चैत्र बदि १४ गुरुवार सं. १९३९ को लिखा बताया गया है। किन्तु स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश लेखन के समय ही अपना यह मत स्थिर कर लिया था कि गायत्री मंत्र वर्ण लिंग भेद के बिना सभी स्त्री पुरुषों को दिया जाना चाहिये। यथा तृतीय समुल्लास में महाराज लिखते हैं - "पिता माता वा अध्यापक अपने लड़का लड़कियों को अर्थसहित गायत्री मंत्र का उपदेश कर दें"। इसी समुल्लास में स्त्री और शूद्रों के वेद पठनाधिकार का निरूपण यथेमां वाचं कल्याणी० (२६।२) इस यजुर्वेदीय श्रुति के प्रमाण से किया है। अतः यह लिखना निरा बेतुका है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को तो यजुर्वेदोक्त गायत्री मंत्र देना चाहिये और द्विजों की स्त्रियों तथा शूद्र तथा शूद्र स्त्रियों को 'विश्वानि देव' मंत्र दिया जाय। संस्कारविधि के गृहाश्रम प्रकरण में महाराज ने सध्योपासना नित्यकर्म स्त्री पुरुष दोनों के लिये समान रूप से कर्तव्य बताये हैं। यथा - "सदा स्त्री पुरुष दस बजे शयन और रात्रि के पहले प्रहर वा चार बजे उठके प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म, अर्थ का विचार किया करें ………।" इसी प्रकरण में आगे सध्या और हवन (अग्निहोत्र) की विधि स्त्री पुरुष दोनों के लिये एकसी लिखी है। उदाहरणार्थ -

अथाग्निहोत्रम्

जैसे सायं प्रातः दोनों सन्धिवेलाओं में सध्योपासना करें इसी प्रकार दोनों स्त्री पुरुष अग्निहोत्र भी दोनों समय में नित्य किया करें।" इस प्रकार स्वामी जी के मतानुसार संध्या तथा अग्निहोत्र के कर्तव्य चातुर्वर्णिक स्त्री पुरुषों के लिये समान रूप से कर्तव्य हैं। जब सध्या-विधि में गायत्री मंत्र (तत्सवितुर्वरेण्यं) के जप का समान रूप से विधान है तो द्विजों अथवा शूद्रों की स्त्रियों के लिये पृथक्शः 'विश्वानि देव' मंत्र की व्यवस्था देना परस्पर विरुद्ध है। अतः यह आदेश ऋषि दयानन्द का नहीं हो सकता।

इस पत्र का चौथा अनुच्छेद भी दयानन्दीय सिद्धान्त के विरुद्ध है उसमें लिखा है - "जो कोई ब्राह्मण हो उसको सन्यास देकर नाम के अन्त में सरस्वती शब्द होना चाहिए औ र क्षत्रियं वैश्य को आनन्द शब्दान्त जैसे अच्युतानन्द और शूद्र को दास जैसे अच्युतदास।"

यह तो सारा कथन ही ऋषि की भावना के विपरीत है। इसमे निम्न कारण हैं :-

१) सत्यार्थप्रकाश के पंचम समुल्लास में संन्यास ग्रहण के अधिकार की मीमांसा करते हुए महाराज स्पष्ट लिखते है कि चतुर्थाश्रम ग्रहण करने का अधिकार मात्र ब्राह्मण को ही है। (यहां यह नहीं भूलना चाहिये स्वामी दयानन्द गुण, कर्म स्वभाव से ही ब्राह्मणादि की व्यवस्था मानते है) फिर विवादास्पद पत्र मे सभी वर्णवालों को सन्यास का अधिकारी कहना अनुपयुक्त है।

२) ब्राह्मण संन्यास लेवे तो उसके नाम के अन्त में 'सरस्वती शब्द हो यह भी प्रचलित नियम के विपरीत है। शंकराचार्य के पश्चात् संन्यासियों के दशधा भेद होगये थे जो निम्न प्रकार हैं :-
१- गिरी २- पुरी ३- भारती ४- सरस्वती ५- वन ६- पर्वत ७- अरण्य ८- सागर ९- तीर्थ १०- आश्रम।

(शेष अगले अंक में)

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ में जिन भाइयों ने क्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल में गये थे उन सबको आर्य तिनिधि सभा हरयाणा के ऐसे सब सत्याग्रहियों को तारीख २४-११-० को हरयाणा सभा अपने वार्षिक अधिवेशन में एक दिन पूर्व म्मानित करेगी। इसी सिलसिले में सभा हैदराबाद आर्यसमाज का ान्दोलन १९३८-३९ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमे रयाणा के तमाम सत्याग्रहियों के फोटो और संक्षिप्त जीवन रिचय होगा। अतः सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना क्षिप्त जीवन एवं पासपोर्ट साइज का फोटो नहीं भेजा है वे यह चना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साइज का फोटो और ६-७ ाइन का जीवन परिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करें ताकि नका नाम इतिहास में लिखा जा सके।

जीवन परिचय का प्रारूप

- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, ग्राम, जिला।
- किसके जत्थे मे थे।
- कहां सत्याग्रह किया, वहा कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल मे रहे।
- जेल मे कोई विशेष घटना हुई हो तो संक्षिप्त रूप मे लिखे।

महाशय भरतसिंह
संयोजक हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पैंशन समिति
दयानन्दमठ रोहतक।

(पृ० ५ का शेष)

ुछ ब्लकों मे कुछ जगहों पर फसाद भी हुए है और लोग हताहत हुए । चीन के प्रदेश सिंक्याग, जिनस्वाग मे भी अवस्था बिगड़ रही है। ुस्लिम अलगाववाद और आतंकवाद ही तीनों देशों को अस्थिर करने ौर तोड़ने में लगा हुआ है। इसी कारण इस क्षेत्र में राजनैतिक रिवर्तन आया है और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के समीकरण बदल रहे । अब रूस और चीन एक दूसरे के मित्र है, भारत और चीन के म्बन्धों मे भी सुधार आया है और आशा है उनमे उत्तरोत्तर सुधार ोता जायेगा। इन तथ्यों से यह वास्तविकता विश्व के सम्मुख स्पष्ट ा गई है कि आतंकवाद जहां कहीं भी वार करता है उसके पीछे ुस्लिम अलगाववादियों का ही हाथ होता है। (युगवार्ता)

"महर्षि दयानन्द का त्रैतवाद"

(आचार्य डा० सुरेन्द्रदेव स्नातक, शास्त्री, शिरोमणि, एम० ए० (हिन्दी), एम० ए० (संस्कृत),
पी-एच० डी०, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष भोगांव जिला मैनपुरी)

महर्षि द्वारा रचित सम्पूर्ण वैदिक-साहित्य उनके त्रैतवाद का साक्षी है। उनके इस त्रैतवाद को हम "सच्चिदानन्द" शब्द द्वारा सरलतापूर्वक समझ सकते हैं। यह 'सच्चिदानन्द" पद तीन शब्दों के संयोग से बना है १- सत् (२) चित् और (३) आनन्द सत् का अर्थ है कि जो चैतन्य हो अथवा चेतनता से जो युक्त हो। 'आनन्द' का अर्थ है कि जो आनन्दस्वरूप हो।

महर्षि द्वारा प्रतिपादित त्रैतवाद के अन्तर्गत नित्य तथा अनादि तीन पदार्थों का समावेश हुआ है। ये तीन पदार्थ है १-परमात्मा (२) जीव अथवा जीवात्मा और प्रकृति। ३- इन्हीं तीनों को यदि इस क्रम से रखा जाये तो 'सच्चिदानन्द' पद की सार्थकता स्वयं ही सिद्ध हो जाती है। यह क्रम है - १- प्रकृति २- जीवात्मा और ३- परमात्मा। ये तीनों अनादि हैं तथा नित्य हैं। इन तीनों में प्रथम स्थान है प्रकृति का। नित्य होने से प्रकृति 'सत्' है। उसकी सत्ता अथवा उसका अस्तित्व सदैव विद्यमान रहा करता है। जीवात्मा की सत्ता अथवा अस्तित्व तो है ही। सत् होने के साथ ही वह चित् भी है अर्थात् चेतनता से युक्त भी है। परमात्मा की सत्ता और चेतनता के साथ ही वह आनन्दस्वरूप भी है। इस भांति प्रकृति सत् है औरजीवात्मा सत् तथा चित् है तथा परमात्मा सत्+चित् तथा आनन्दस्वरूप है। सर्व-व्यापक होने से उसकी सत्ता सर्वत्र विद्यमान है, चैतन्य होने से उसकी चेतनता को समस्त विश्व अनुभव किया करता है और आनंदस्व-रूपता केवल उसी के साथ विद्यमान रहा करती है। अत एव वह "सच्चिदानन्द" है।

१- प्रकृति का लक्षण तथा स्वरूप- 'सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः' अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण की साम्यावस्था का नाम है 'प्रकृति'।

"अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः।।"
श्वेताश्व० उप० अ०४, मन्त्र ५।।

अर्थात् जो जन्मरहित सत्व, रज और तमोगुण रूप प्रकृति है वही स्वरूपाकार होकर प्रजारूप हो जाया करती है प्रकृति मूलरूप और प्रवाह से अनादि है तथा स्थूलरूप मे परिणामिनी होने से अवस्थान्तर हो जाया करती है।

हमें जो कुछ भी दृष्टिगोचर हो रहा है पचतत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) अथवा इन्हीं के संयोग से निर्मित मानव का शरीर, पिता, माता, पुत्र, पुत्री आदि के शरीर, महल, मकान, बाग, बगीचे, वृक्ष आदि अर्थात् सम्पूर्ण दृश्यमान जगत् स्थूलरूप मे विद्यमान प्रकृति का ही स्वरूप तथा यह सब अनित्य हैं तथा विनाशकारी हैं। मूलरूप में विद्यमान प्रकृति परमाणुरूप मे है तथा नित्य है।

२- जीवात्मा-नित्य है, अनादि है, अल्पज्ञ है, अनेकरूपों में विद्यमान है, परिच्छिन्न अथवा एकदेशी है। अपने सामर्थ्यानुकूल सभी प्रकार के कर्मों का कर्त्ता होने से स्वतन्त्र और कर्मों के फलों को भोगने मे परतन्त्र है।

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति"
।। न्यायद० १।१।१०।।

अर्थात् इच्छा (पदार्थों के प्राप्ति की अभिलाषा), द्वेष (दुःख आदि की अनिच्छा), प्रयत्न (पुरुषार्थ बल) सुख, दुःख तथा ज्ञान ये जीवात्मा अथवा आत्मा के चिह्न हैं। तथा -

"प्राणापाननिमेषोन्मेषमनोगतीन्द्रियान्तरविकाराः सुखदुःख—इच्छाद्वेषौ प्रयत्नश्चात्मनो लिङ्गानि ।। वैशेषिक दर्शन ३।२।४।।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार प्राण अर्थात् प्राणवायु को बाहर निकालना, अपान अर्थात् प्राण को बाहर से भीतर लेना, निमेष अर्थात् आंखों को मीचना, उन्मेष अर्थात् आंखो का खोलना, जीवन अर्थात् जीवन-कार्य-वृद्धि, क्षत प्ररोहण इत्यादि मन अर्थात् निश्चय स्मरण, और अहङ्कार करना, गति अर्थात् गमन करना-चलना, इन्द्रिय अर्थात् सभी इन्द्रियों को चलाना, अन्तरविकार (भिन्न-भिन्न क्षुधा (भूख), तृषा (प्यास), हर्ष शोकादि युक्त होना तथा न्यायदर्शन में वर्णित इच्छा, द्वेष आदि आत्मा अथवा जीवात्मा के गुण हैं। इन्हीं के द्वारा आत्मा की प्रतीति हुआ करती है।

जिस समय तक जीवात्मा शरीर के अन्दर निवास करता है उसी समय तक जीवात्मा के ये गुण प्रकाशित हुआ करते हैं और जब जीवात्म शरीर का त्यागकर चला जाया करता है तब ये गुण शरीर के अभ्यन्तर नहीं रहा करते है जिसके होने से जो रहे और जिसके न रहने से जो न रहे वे गुण उसी के हुआ करते है।

३- परमात्मा :- नित्य, अनादि, अनन्त, अजर, अमर, विभु (सर्व व्यापक), एक (अद्वितीय), चेतन, सर्वज्ञ, प्रकृष्टज्ञानस्वरूप, कर्मों का अकर्ता, कर्मफलों का अभोक्ता, निराकार, निर्विकार, सर्वान्तर्यामी सर्वदेशी सर्वशक्तिमान् आदि गुणों से सम्पन्न है। सच्चिदानन्दादि लक्षणों से युक्त है। सब जीवात्माओं के कर्मानुसार फलों का दाता, न्यायकारी, दयालु आदि लक्षणों से सम्पन्न है। निम्नलिखित मन्त्र द्वारा जीवात्मा तथा परमात्मा के अन्तर को स्पष्ट किया गया है :-

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ।।
।। ऋ. म. १ सू. १६४ मंत्र २०।।

इस वृक्षरूपी संसार में ब्रह्म (परमात्मा) और जीवात्मा दोनों निवास करते है। परमात्मा सर्वव्यापक होने से सर्वत्र विराजमान रहा करता है और जीवात्मा एकदेशी होने से किसी एक स्थान पर निवास किया करता है। इन दोनों मे एक जो जीवात्मा है वह इस वृक्षरूपी संसार मे पापपुण्यरूपफलों को भलीभांति भोगता है और दूसरा परमात्मा कर्मों का अकर्ता होने से कर्मों के फलों को न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर-बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है।

कहने का अभिप्राय यह है जीवात्मा कर्मों के करने में स्वतन्त्र है अत वह कर्मों का कर्त्ता कहलाता है साथ ही किये हुये कर्मों के फलों का भोक्ता भी है। परमात्मा तो कर्मों का कर्त्ता न होने के कारण कर्मों के फलों का भोक्ता भी नहीं है। किन्तु वह परमात्मा जीवात्माओं द्वारा किये गये कार्यों का फलदाता अवश्य है।

जीवात्माओं की दृष्टि में जो हो चुका है अथवा व्यतीत हो चुका है वह भूत, जो हो रहा है वह वर्तमान और जो आगे होगा वह भविष्यत्काल का द्योतक है। अत एव वह जीवात्मा तीनों कालों का ज्ञाता कहलाता है। परमात्मा की दृष्टि मे तो काल एक ही है और वह नित्य है। उसका काल के विभागों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

जीवात्मा और परमात्मा दोनों का 'पुरुष' शब्द द्वारा कथन किया जाता है। 'पुरुष' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की जाती है :

"पुरि शेते इति पुरुषः"

अर्थात् जो शरीररूपी पुरी (नगरी) में शयन (निवास) करता है वह जीवात्मा पुरुषवाच्य होता है, और जो ब्रह्माण्डरूपी पुरी मे शयन करता है अर्थात् जो सर्वत्र व्याप्त है वह परमात्मा 'पुरुष कहलाता हैं।

परमात्मा कभी भी शरीर धारण नहीं करता हैं क्योंकि—

"अज एकपात्" (यजु० ३४।५३।। तथा
"स पर्य्यगाच्छुक्रमकायम्" ।।यजु० ४०।८।।

अर्थात् वह परमात्मा 'अज' है अर्थात् जन्म ग्रहण नहीं करता तथा "अकायम्" वह परमात्मा शरीररहित है। अत एव हाथ पैर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आदि अंगों से भी रहित है :-

"अपाणिपादो जवनो ग्रहीता
पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः ।
स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता
तमाहुरग्र्यं पुरुष पुराणम्" ॥ श्वेताश्व०उप० ३।१९॥

परमात्मा के हाथ पैर आदि नहीं हैं। वह तो अपनी शक्ति रूप हाथ के द्वारा जगत् की रचना करता है। पैर न होने पर भी सर्वाधिक वेगवान्, नेत्र न होने पर भी सभी को यथावत् देखना, श्रोत्र न होने पर भी सभी की बातों का श्रवण करना, अन्तःकरण न होने पर भी सम्पूर्ण ससार का ज्ञाता है किन्तु उसका ज्ञाता कोई भी नहीं है। उसी परमात्मा को प्राचीनतम तथा सभी में पूर्ण होने से पुरुष कहा जाता है। वह तो अपनी सामर्थ्य से सब कुछ किया करता है।

ससार मे निवास करते हुये सभी जीवात्माओं के जीवन का लक्ष्य है परमात्मा के उस आनन्द को प्राप्त कर लेना। इस आनन्द की अनुभूति का होना ही सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा प्राप्त कर लेना है जैसा कि न्यायदर्शन के निम्नलिखित सूत्र मे कहा भी गया है :

"तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः" ॥ न्याय सूत्र अ० १। आ० १ सूत्र-२२॥

अर्थात् जब सभी प्रकार के दुःखो का अत्यन्त विच्छेद हो जाया करता है तब उसी को अपवर्ग, मोक्ष, मुक्ति, परमधाम, परमगति आदि शब्दो द्वारा कहा जाया करता है।

कठोप० अध्याय दो, बल्ली ६ के दशम मन्त्र मे कहा भी गया है :-

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह ।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम् ॥

जब पवित्र मन से युक्त पांचो ज्ञानेन्द्रिया जीवात्मा के साथ रहा करती है तथा बुद्धि का निश्चय भी स्थिरता सपन्न हो जाया करता है तब उसी को "परमगति" अथवा "मोक्ष" आदि शब्दो द्वारा कहा जाया करता है।

जीवात्मा के जीवन का चरम लक्ष्य इस चतुर्थ पुरुषार्थ 'मोक्ष' की प्राप्ति कर लेना ही है। इसी का नाम है उस परब्रह्म परमात्मा के उस आनन्द की अनुभूति।

जीवात्मा इस आनन्द अथवा मोक्ष की प्राप्ति कर लेने पर भी अल्पज्ञ तथा सीमित गुण, कर्म, स्वभाववाला ही रहा करता है। वह परमात्मा के सदृश कभी भी नहीं हो पाता है।

सुरेन्द्रदेव शास्त्री

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री

जीवन-चरित्र

(लेखक - डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य)

(प्रकाशक - आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक)

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत् के महान् विद्वान् नेता पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री का जीवन-चरित्र छपकर तैयार हो गया है। यह जीवन-चरित्र प्रत्येक आर्यसमाजी बहिन भाई के लिये जीवन पथ का प्रदर्शक है। अतः इसकी एक प्रति प्रत्येक आर्य के घर पर तथा आर्यसमाज के पुस्तकालय मे अवश्य होनी चाहिये। इसका मूल्य १०) दस रुपये है।

—वेदव्रत शास्त्री

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

आवश्यक सूचना

हरयाणा सभा से सम्बधित जिन आर्यसमाजों ने अभी तक प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का धन नहीं भेजा है वे ३ नवम्बर तक अवश्य भेज देवें। -सभामन्त्री

मेरी सत्ता रही तो राज्य में अंग्रेजी नहीं रहेगी : हुकमसिंह

(दैनिक नवभारत टाइम्स)

नारनौल, ८ अक्तूबर (ससे)। हरयाणा सरकार ने दसवीं कक्षा तक अंग्रेजी विषय पास करने की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया है। यदि हरयाणा की बागडोर मेरे हाथ मे रही तो राज्य में अंग्रेजी का नाम भी नहीं छोड़ूगा।

उक्त घोषणा हरयाणा के मुख्यमन्त्री मास्टर हुकमसिंह ने यहां आर्यसमाज के हीरक जयन्ती समारोह में की। समारोह में उन्हें मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया था।

इस अवसर पर मुख्यमन्त्री ने बताया कि आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ मे मुंबई मे की थी। आर्यसमाज तभी से समाज मे व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन, चरित्रनिर्माण व समाज को जोड़ने के काम मे लगा हुआ है।

उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ने देश को एक नया रास्ता दिखाने के साथ ही जातपात की खाई पाटने जैसा सराहनीय कार्य किया। आर्यसमाज द्वारा सचालित गुरुकुलों में युवको को जातपात के खिलाफ जनमत तैयार किया जाता है, वहीं अंग्रेजी माध्यम के शिक्षण संस्थान युवकों में अज्ञानता को बढावा दे रहे है। यहां से अंग्रेज तो चले गए, लेकिन यहां काले अंग्रेजो की भरमार है।

श्री हुकमसिंह ने बताया कि मैंने मुख्यमन्त्री पद सभालते ही हरयाणा मे सरकारी कामकाज हिन्दी मे करने के आदेश दे दिये थे। सब तकनीकी व विज्ञान की पुस्तको का अनुवाद हिन्दी में कराया जा रहा है, जिससे कि शिक्षणसंस्थाओं में हिन्दी माध्यम अपनाया जा सके। उन्होने कहा कि देश में दोहरी शिक्षाप्रणाली की वजह से ही हिन्दीभाषियों के साथ भेदभाव होता रहा है।

उन्होंने कहा कि आर्यसमाज शिक्षा के क्षेत्र में भी समाज की महत्त्वपूर्ण सेवा कर रहा है। आर्यसमाज भेदभाव मिटाता है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज को प्रत्येक कार्य मे सरकार का पूरा सहयोग मिलेगा। इस अवसर पर उन्होंने नारनौल में आर्यसमाज मन्दिर के लिये सरकारी भूमि दिलाने व महर्षि दयानन्द सरस्वती पुस्तकालय के लिये ५० हजार रुपये का अनुदान देने को घोषणा भी की।

समारोह को गुरुकुल झज्जर के स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती व आर्यसमाज के अनेक नेताओ ने भी सम्बोधित किया। आर्यवीर दल के युवको द्वारा व्यायाम के करतब भी दिखाये गए।

—मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूँ। महात्मा गांधी

हमारे प्रेरणास्रोत :-

स्वाधीनता के मंत्रद्रष्टा : महर्षि दयानन्द

तिमिराच्छन्न धरती पर ज्ञान का प्रकाश बिखेरनेवाले जिन महा-पुरुषों का नाम विश्व के इतिहास में अमर होगया है उनमें महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम अग्रगण्य है। भारत की पावन वसुन्धरा पर सदैव महान् पुरुषो का जन्म होता रहा है। उसी शृंखला में स्वामी जी का जन्म भी एक कड़ी है। स्वामी जी का जन्म सन् १८२४ ई. में गुजरात प्रांत के टकारा नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता पंडित कर्षन लाल जी कट्टर शैव थे। स्वामी जी का बचपन का नाम 'मूलशकर' था। जिस समय स्वामी जी का जन्म हुआ, वह पतनोन्मुखी भारत के इतिहास का लज्जाजनक समय था। समस्त राष्ट्र धीरे-धीरे विदेशी चंगुल में फसता जा रहा था। मुगलसाम्राज्य का बुझता हुआ दीपक भारतीय स्वाधीनता पर छारहे अन्धकार को नष्ट करने में असमर्थ होगया था। विदेशी पादरी विभिन्न प्रकार के मायाजाल फैलाकर भारतीय सस्कृति को नष्ट विनष्ट करने पर तुले हुए थे। सामाजिक व्यवस्था विखण्डित हो गयी थी। अशिक्षा का साम्राज्य छाया हुआ था। अबलाओं तथा विधवाओं का चीत्कार दिशाएं हिला रहा था। अनाथ बच्चो का करुण क्रन्दन हृदय दहला देता था। समाज मे अन्यान्य प्रकार के पाखण्डों, अन्धविश्वासो ने जड़ जमा ली थी। राजनैतिक स्थिति पूर्ण-तया अस्थिर थी। अज्ञानान्धकार मानव मस्तिष्क पर शासन कर रहा था।

राष्ट्र की ऐसी ही विषम वेला को कठिन परिस्थितियों ने स्वामी दयानन्द को भारत की पुण्य धरनी पर जन्म दिया। बचपन मे समस्त सामाजिक संस्कार शैव पद्धति के अनुसार सम्पन्न हुए। चौदह वर्ष की कोमल वय में उन्हें शिवरात्रि का कठिन व्रतपालन करने का सुअवसर मिला। स्वामी जी की बुद्धि बचपन से तीव्र एव प्रखर थी। शिवरात्रि व्रत की एक विचित्र घटना ने उनके मस्तिष्क को एक आश्चर्यजनक मोड़ दिया। रात्रि के ठीक बारह बजे जब शिव मन्दिर में समस्त भक्तजन ऊंघ रहे थे, शिवभक्ति मे लीन, जागरित बालक मूलशकर ने शिवलिंग पर कुछ क्रीड़ारत चूहो को देखा। इस दृश्य को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ - "जो शिव इन क्षुद्र जन्तुओं से अपनी रक्षा नही कर सकता, वह हमारी रक्षा कैसे कर सकता है? उनके विचार उद्विग्न हो उठे। पिता जी को उठाकर कुछ प्रश्न किए। प्रश्नो के उचित उत्तर न पाकर उनका अन्तर कुतूहल से भर गया। उन्होंने व्रत तोड़कर उसी समय सच्चे शिव को प्राप्त करने की प्रतिज्ञा की। उसके मन में वैराग्य उत्पन्न होगया। उसकी इस मनोदशा का आभास कर उनके पिता ने उन्हें वैवाहिक बन्धन में बांध देने का निर्णय किया। पर ····· व्यर्थ हुआ। तरुण मूलशकर बीस वर्ष की अवस्था मे घर छोड़कर सच्चे शिव का अन्वेषण करने निकल पड़ा दक्षिण भारत में नर्मदा-ताप्ती की घाटियो मे घने जंगलों में साधु-सन्यासियों के पास भटकता रहा। उसी मध्य में मूलशंकर सन्यासा-श्रम ग्रहण कर स्वामी दयानन्द सरस्वती बन गया था। शिव के दर्शन की पिपासा शान्त करने हेतु वह हिमालय की दुर्गम घाटियों गगा के तटवर्नी घने वनों में अथक प्रयास करता रहा। लेकिन उसे चारों ओर पाखण्डों के अतिरिक्त कुछ भी न मिला। न जाने कितने साधु संन्यासियों की उसने सेवा की लेकिन उसे सच्चा गुरु न मिल सका। अन्त में मथुरा में उन्हें अभीष्ट गुरु मिल ही गया - वे थे स्वामी विरजानन्द। जिनके साथ तीन वर्ष पर्यन्त कठिन त्याग तथा तप का जीवन बिताते हुए आदर्श शिष्य के रूप मे दयानन्द जी ने वेद-वेदांगों का गहन अध्ययन किया। आत्मा-परमात्मा-प्रकृति के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान प्राप्त किया। वेदाध्ययन समाप्त करने के उपरान्त दयानन्द जी थोड़ीसी लौंग लेकर गुरुदक्षिणा हेतु उपस्थित हुए। लेकिन जिस गुरु ने तीन वर्ष तक कठिन परिश्रम करके वेद-निहित गूढ़ रहस्यों का अध्यापन किया था वह इस क्षुद्र गुरुदक्षिणा से कैसे संतुष्ट होता - "दयानन्द! मैं तो तुमसे कुछ और ही चाहता हूँ।" "मेरे पास जो कुछ भी है,वह आप का है गुरुवर। तन-मन-धन सब आपकी सेवा में समर्पित है।" दयानन्द जी ने कहा। स्वामी विरजानन्द अपने प्रिय शिष्य की दृढ़प्रतिज्ञ वाणी सुनकर गद्गद् हो उठे — "पुत्र मैं चाहता हूँ कि तुम जाकर वेदों का ज्ञान पुन: भारत तथा धरती के जन-जन तक पहुचाओ। आज प्यारा स्वदेश दासता की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। यदि तुम वास्तव में गुरुदक्षिणा देना चाहते हो तो जाकर डूबती हुई आर्य जाति की रक्षा करो, मानवता का उद्धार करो।" आज्ञा शिरोधार्य कर स्वामी दयानन्द निकल पड़े, एक बहादुर सैनिक बनकर, गुरुदक्षिणा चुकाने के लिये। गांव गाव, नगर-नगर घूम घूमकर स्वामी जी ने सारे भारत में जागृति को उत्पन्न किया। १८५७ की क्रान्ति की विफलता से नैराश्य गर्त मे डूबी हुई भारतीय जनता को उन्होने नवजागरण का शख बजाकर आन्दोलित कर दिया।

अपनी अतर्क्य तर्कशक्ति, निर्भीक वाणी, अदम्य उत्साह से उन्होने पाखण्डो, अन्धविश्वासो के गढ़ो पर भयावह आक्रमण करके उन्हें तहस नहस कर दिया। समाज मे फैली हुई विभिन्न बुराइयों, मूर्तिपूजा, अवतारवाद तथा जीव-प्रकृति व परमात्मा के संबंध में फैली हुई भ्रान्त धारणाओं का उन्होने अपनी अकाट्य तर्कशक्ति से वेदों का दृष्टान्त देकर, खण्डन किया। वैदिक सत्य सनातन धर्म को मानवता के समानुरूप बताकर प्रतिस्थापित किया। नारियों की दशा में सुधार, दलितोद्धार, अनाथों का पालन, अछूतोद्धार, वेदाध्ययन हेतु उन्होने तीव्र आन्दोलन चलायो। बालविवाह, अन-मेल विवाह गोवध, जाति-पांति, छूआछात, दहेजप्रथा आदि बुराइयों को दूर करने के लिये उन्होंने समाज को ललकारा। स्वामी जी स्वाधी-नता के प्रथम मन्त्रद्रष्टा थे। एक बार उन्होने वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक से वार्तालाप करते समय निर्भीक वाणी में कहा था-"मैं प्रतिदिन सायं प्रात. अपने देश की स्वाधीनता के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूं" स्वामी जी की निर्भीक वाणी सुनकर वायसराय ने उन्हें बागी फकीर की सज्ञा से सम्बोधित किया। जागरण का शखनाद करते हुए उन्होने भारतीय स्वाधीनता के महान् संग्राम की पृष्ठभूमि का निर्माण कियो। अपनी प्राचीन गौरवमयी संस्कृति के प्रति प्यार एवं स्वाभिमान उत्पन्न करके उन्होंने भारतीयो को अपनी अपार शक्ति का ज्ञान कराया। स्थान-स्थान पर अपने प्रतिपक्षियों को शास्त्रार्थ कर पराजित किया।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलाने का समस्त श्रेय स्वामी जी को ही है। अपनी मातृभाषा गुजराती तथा संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी उन्होंने अपने उपदेश हिन्दी में दिए तथा अपना ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि हिन्दी में ही लिखा। वे सारे संसार का कल्याण करना चाहते थे जिसकी पूर्ति हेतु उन्होंने आर्यसमाज जैसी क्रान्तिकारी संस्था की स्थापना की। भारत में राजनैतिक, सामाजिक आर्थिक, नैतिक धार्मिक समस्त क्षेत्रों के उत्थान हेतु उन्होंने मार्गदर्शन किया। स्वामी जी की वाणी में प्राचीन ऋषियो की आत्मा बोलती थी। भारत के पुनर्जागरण व मानवता की रक्षा हेतु दिया गया उनका योगदान इतिहास में बेजोड़ है। उन्होने कुटियों से लेकर राजमहलों तक को ललकारा जगाया। सारा भारत नई चेतना प्राप्त कर अंग-ड़ाई लेने लगा। आधुनिक भारत चिरकाल तक स्वामी दयानन्द की सेवाओं का ऋणी रहेगा। इस प्रकार जागरण का शखनाद करते हुए मानवता का वह महान् सेनानायक सन् १८८३ ई० में दीपावली के दिन महीमण्डल को प्रकाशित कर स्वयं बुझ गया।

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

(पृ० एक का शेष)

लगानेवाले यन्त्रों (राडारों) को तैयार किये जाने के लिये प्रयोग में लाये जानेवाले तापमानो के अंश तक वर्णित है।

इसके अतिरिक्त भी हम वेद में दैवी अर्थात् अणुचालित नावों और पनडुब्बियों तक का वर्णन "गर्भे अतः समुद्रे" अन्दर समुद्र के गर्भ में तथा "सिन्धोरूर्मा कारं बिभ्रतः" समुद्र की लहरों पर कार को चलाने का वर्णन पाते है।

आकाश में सूर्य के चारों ओर "शकमयं धूमं सूर्यमारात्" सूर्य को चारों ओर से घेरे हुए श्वेत धूम (हीलियम गैस) वर्णित है तो सूर्य में खाद्य पदार्थों के भरे होने की बात कहकर सूर्य की ऊर्जा, उसकी किरणों के माध्यम से प्राप्त होनेवाली भोज्य सामग्री की भी चर्चा है यहां इस लघु निबन्ध मे इन सब उद्धरणों को वेद से प्रस्तुत करने का हम प्रयत्न नहीं कर रहे वह तो पृथक् से एक ग्रन्थ का विषय है फिर कभी किसी लेख मे वेद-विज्ञान विषय पर पृथक् से चर्चा की जायेगी।

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के दिवगत होने के पश्चात् अभी तक एक ही महापुरुष योगीराज अरविन्द घोष ऐसे मनीषी हुए है, जिन्होंने महर्षि दयानन्द की वेद में विज्ञान होने की बात कहकर कुछ अतिशयोक्ति नहीं की है अपितु न्यूनोक्ति से ही काम लिया है, क्योंकि वेद के असंख्य विज्ञानों के रहस्य तो अभी तक अज्ञात ही है" यह स्मरण रहे कि श्री अरविन्द घोष आर्यसमाजी नही थे किन्तु उन्होंने जब वेद का अध्ययन किया तो आधुनिक युगप्रवर्तक तथा वेदोद्धारक देव दयानन्द के वेदभाष्य के अतिरिक्त उनकी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका भी — जिसमें "तार विद्या" तथा "नौविमानादि विद्या" प्रकरण भी हैं — अवश्य पढ़ी होगी। परिणामस्वरूप उन्होने उक्त घोषणा करके महर्षि दयानन्द के वेद में विज्ञान होने के दृष्टिकोण का उनसे भी आगे बढ़कर समर्थन किया।

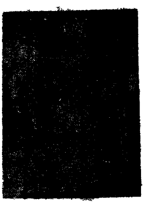
पश्चिमीय जगत् में महर्षि दयानन्द के समकालीन जर्मन निवासी प्रोफेसर मैक्समूलर ने ऋग्वेद के नासदीय सूक्त का जब अध्ययन किया तो वह आश्चर्यचकित रह गये और वेद में प्रलयावस्था की वैज्ञानिकता के वर्णन को स्वीकार किया उन्होंने अपनी "भारतीय दर्शन के छः सिद्धान्त" नामक पुस्तक में लिखा है कि "मैं अब तक वेदो को ऋषियों की खोज मानता था किन्तु ऋग्वेद के नासदीय सूक्त को पढ़कर इस परिणाम पर पहुंचा कि प्रलयकाल में क्योंकि ऋषि आदि कोई भी प्राणी नही था, अत एव यह ऋषियो की खोज नहीं हो सकता। प्रलयकाल में मानवो की उपस्थिति न होने पर भी उस काल के इतने स्पष्ट आंखो देखे जैसे वैज्ञानिक वर्णन के होने से तो यह ज्ञान परमात्मा की ओर से ऋषियों की ओर आता प्रतीत होता है। इस प्रकार ऋषिवर दयानन्द ने वेद को शंखासुर द्वारा पाताल ले जाने की भ्रान्ति का निवारण कर वैदिक विज्ञान की दुन्दुभि बजाकर विश्वमनीषियों का ध्यान वेद की ओर आकर्षित किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए तारीफ प्रिन्टर्स रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. न २३२०७/७३ रजि न
सर्वहितकारी
आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र
मम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री
वर्ष १७ अंक ४४ २१ अक्तूबर १९९०

पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अभिनन्दन

समस्त आर्यजगत् को यह जानकर अत्यधिक हर्ष होगा कि वैदिक यतिमण्डल के अध्यक्ष वीतराग सन्त पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी



महाराज का अभिनन्दन आगामी दिसम्बर मास में सार्वदेशिक सभा द्वारा किये जारहे आर्यमहासम्मेलन के अवसर पर समारोहपूर्वक किया जायेगा। पूज्य स्वामी जी महाराज के अभिनन्दन मे जो धन एकत्रित होगा उससे शुद्धि वेद प्रचार, साहित्य प्रकाशन, निर्धन छात्रो को छात्रवृत्ति एव रुग्ण व अशक्त अवस्था में साधुओ व प्रचारको की सेवा व सहायता मे व्यय किया जाएगा।

अत आयसमाज से सम्बन्धित सस्थाओं, आर्यसमाजो एव पूज्य स्वामी जी महाराज के श्रद्धालुओ से निवदन है कि इस पुनीत कार्य के लिए दिल खोलकर सहयोग करने की कृपा करें। धन की राशि चैक, ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा निम्न यतियो के पते पर भेजें —

(१) श्री स्वामी ओ३मानन्द जी महाराज
गुरुकुल झज्जर, जिला रोहतक (हरयाणा)
(२) श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती
आर्यसमाज, श्री गगानगर (राजस्थान)
(३) श्री आचार्य हरिदेव जी, दयानन्द वेद विद्यालय,
११९ गौतमनगर, निकट यूसुफ सराय, नई दिल्ली ४९

निवेदक —

स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती	स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन २५ नवम्बर को रोहतक में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २५ नवम्बर १९९० रविवार को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे होगा। वार्षिक अधिवेशन मे हरयाणा प्रदेश मे आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा तथा आगामी वर्ष के लिये सभा के अधिकारियों तथा अन्तरग सदस्यों आदि का चुनाव किया जावेगा। इस अधिवेशन में सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजो के स्वीकृत प्रतिनिधि भाग लेंगे। —वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

वैदिक यतिमण्डल के प्रस्ताव

२३ सितम्बर १९९० को गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली मे सम्पन्न वैदिक यतिमण्डल की विशेष बैठक मे आर्य प्रादेशिक ... तथा डी०ए०वी० कालिज मैनेजिग कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी को स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा ८ जुलाई १९९० को रजिस्ट्री द्वारा भेजे गये पत्र पर विचार हुआ। इस पत्र मे स्वामी विद्यानन्द जी ने प्रो० वेदव्यास जी के वेद ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाजविरोधी मन्तव्यो का उल्लेख करते हुए उनसे अनुरोध किया था कि क्योकि आपकी ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की मान्यताओ मे आस्था नही है इसलिए आपको स्वेच्छापूर्वक आर्यसमाज का परित्याग कर देना चाहिए। प्रो० वेदव्यास जी के सन् १९३३ से १९८७ तक के लेखो के आधार पर उनकी मान्यताओ की ऋषि दयानन्द की मान्यताओ से तुलना करते हुए स्पष्टतः सिद्ध किया गया था कि दोनो मे ३–६ का सम्बन्ध होने से प्रो० वेदव्यास जी का आर्यसमाज मे कोई स्थान नही है।

सबसे पहले सन् १९३३-३४ मे लिखी अपनी पुस्तक **Ancient India** में श्री वेदव्यास जी ने ऋषि दयानन्द की वेदविषयक मान्यताओ के विरुद्ध लिखा था। यही विचार उन्होने १९५० के आसपास मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित अपनी रचना **Destruction of Harappa** मे दुहराये। १९... मे पेरिस मे हुई **Word Confarance of S... Scholars** मे और फिर १९८१ मे बनारस मे हुई विद्वद्गोष्ठी मे उन्होने वेद के विषय मे दयानन्द के विपरीत पाश्चात्यो की विचारधारा का प्रचार किया। यह सब १९८७ मे डी०ए०वी० द्वारा प्रकाशित **Felicitations** (अभिनन्दन ग्रन्थ) मे लिखे गये स्वय उन्ही के लेखो से सिद्ध है। सत्यार्थप्रकाश मे प्रतिपादित महात्मा हसराज जी द्वारा प्रवर्तित शिक्षापद्धति का परित्याग कर लार्ड मैकाले की इच्छानुसार **English Medium Co-educational Public Schools** खोलकर उनमें लड़के लड़किया तैयार करने लगे जो केवल देखने मे (क्योकि चेहरा बदला नही जा सकता) भारतीय रह गये है। अन्यथा बोलचाल रहन सहन खान पान आचार विचार आदि की दृष्टि से पूरे अग्रेज या ईसाई बन गये हैं। डी०ए०वी० द्वारा प्रकाशित मासिक **The young world** मे समय समय पर प्रकाशित लेखो द्वारा भी इसी प्रकार के दूषित घृणित तथा मिथ्या एव आर्यसमाजविरोधी विचार फैलाये जा रहे है। यह **Young Word'** लाखो की सख्या मे छपकर घर घर पहुचाया जाता है और यह सब प्रो० वेदव्यास जी की आखो के सामने उनके निर्देशन मे हो रहा है।

आर्यसमाज मे उच्च पदस्थ किसी व्यक्ति का निरन्तर ६० वर्ष से उसी की विचारधारा के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला प्रचार करते रहना आर्यसमाज के लिये खुली चुनौती है। आर्यसमाज के पत्र पत्रिकाओ मे एतद्विषयक लेख प्रकाशित होने के बाद वैदिक यतिमण्डल के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने जून १९८९ मे प्रो० वेदव्यास जी के नाम पत्र लिखकर इन बातो की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया। किन्तु श्री वेदव्यास जी ने उसका उत्तर देना

तो दूर, उसकी पावती स्वीकार करने के सामान्य शिष्टाचार का पालन करना भी आवश्यक नहीं समझा। सार्वप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने प्रो० वेदव्यास जी को अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए शास्त्रार्थ की चुनौती भी दे डाली।

बैठक में गत एक वर्ष में प्रचार सामग्री के अतिरिक्त स्वामी विद्यानन्द जी तथा श्री रामनाथ सहगल के बीच हुए पत्र-व्यवहार पर भी विचार किया गया। पत्र-व्यवहार से स्पष्ट है कि श्री सहगल जी ने स्वामी जी द्वारा लिखी गई बातों में से किसी एक का उत्तर भी देने का साहस नहीं किया। बातों ही बातों में बातों को टालने का प्रयत्न करते रहे।

वैदिक यतिमण्डल की निश्चित सम्मति है कि ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज और वेद के विरुद्ध प्रचार करने में स्वतन्त्र नहीं है। इसलिए संसार भर के आर्यसंन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों से निर्मित वैदिक यतिमण्डल—

१- प्रो० वेदव्यास को आर्यसमाज और उसके द्वारा संचालित संस्थाओं में किसी भी प्रतिष्ठित पद के लिए अयोग्य घोषित करता है।

२- आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्यसंस्थाओं, प्रान्तीय सभाओं से अपील करता है कि वे प्रो० वेदव्यास जी के वेद और ऋषि दयानन्द विरोधी अभियान को समाप्त करने के लिए अपने-अपने स्तर पर अपेक्षित कार्यवाही करें जिससे आर्यसमाज में रहते किसी व्यक्ति को आर्यसमाज की मान्यताओं के विरुद्ध प्रचार करने का साहस न हो।

३- सार्वदेशिक सभा से अनुरोध करता है कि जिस प्रकार अतीत में आर्यसमाज के सिद्धान्तों के विरोधी पं० भीमसेन शर्मा, पं० अखिलानन्द, स्वामी सत्यानन्द, पं० विश्वबन्धु, स्वामी विद्यानन्द विदेह आदि के विरुद्ध सार्वदेशिक स्तर पर आदेश दिये गये थे, उसी प्रकार प्रो० वेदव्यास जी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करे।

४- स्वामी ओ३मानन्द तथा स्वामी सुमेधानन्द जी से अनुरोध करता है कि वे सार्वदेशिक सभा को लिखें कि सभा की अगली बैठक में इस विषय को विचारार्थ प्रस्तुत किया जाये और इसके अनुकूल वातावरण बनाने का प्रयास करें।

५- स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा प्रो० वेदव्यास जी को ८ जुलाई १९९० को लिखे गये पत्र को बड़ी संख्या में देशभर में वितरित किया जाये।

६- अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर समस्त संन्यासियों, वानप्रस्थियों, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों, विद्वानों व उपदेशकों का एक सम्मेलन किया जाये।

—स्वामी सुमेधानन्द
मंत्री, वैदिक यतिमण्डल

"दयानन्द-दर्शन"

गताक से आगे

स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा होती है कि मेरे चारों ओर जो रचनाओं का समूह है, वह कैसे, कब, किससे बना है। इसको बनानेवाला कौन है तथा उसका स्वरूप क्या है? मैं इस दुनियां में कैसे, क्यों आया? मैं किसी की व्यवस्था में परतन्त्र हूं या स्वतन्त्र? ऐसी जिज्ञासाओं को शान्त करना ही दर्शन का प्रयोजन है। इसीलिए ही वेदान्त और मीमांसा दर्शन का सुभारम्भ क्रमशः ब्रह्म तथा धर्मजिज्ञासा से होता है।

इन दोनों शब्दो के विश्लेषण के आधार पर 'दयानन्द-दर्शन' रूपी समस्तपद का अभिप्राय होगा कि महर्षि दयानन्द द्वारा गहराई से देखा, जाना, समझा गया या दार्शनिक तत्त्वो के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द की दृष्टि, विचारधारा। जैसे कि प्रथम विवेचन मे यह प्रतिपादित किया गया है कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में विविध रूपो से बहुत कुछ देखा, समझा।

२- अपने से पूववर्ती साहित्य का आलोजन किया और उस साहित्य के सम्बन्ध मे अपने विचार स्पष्ट रूप मे रखे।

३- दर्शनशास्त्रों के अध्ययन तथा मनन के अनन्तर महर्षि ने दार्शनिक तत्त्वो का एक सुनिश्चित, सुसंगत रूप प्रतिपादित किया।

'दयानन्ददर्शन' की इन तीनो अवधारणाओं में से यहां इस शीर्षक का मुख्य तात्पर्य तीसरी अवधारणा ही है। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वविध जिज्ञासाओं को शान्त करनेवाला जीवन के निस्तारे के लिए जो सुनिश्चित, सुस्पष्ट सोचा, समझा। वही 'दयानन्ददर्शन' है, वह क्या है? यह सारा ही इस रचना का प्रतिपाद्य है। इससे स्वतः रचना की उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है। इस सम्बन्ध में सबसे बड़ी बात यह है कि यह रचना तैयार होकर पाठको के हाथ में पहुंचे। इसके लिए महर्षि दयानन्द के अनुरागी सज्जनों, समाजों सभाओ की जरूरत है। जो इस पर व्यय होनेवाले धन को वहन करें। आज महर्षि का प्रत्येक प्रेमी यह अनुभव करता है कि इस समय साहित्यिक क्रियाकलाप में महर्षि को केवल आर्यसमाज तक और कुछ अंश में समाजसुधार तक ही सीमित कर दिया गया है। महर्षि का प्रखर प्रताप इस तरह तिरोहित किया जा रहा है। देखें! कौन दयानन्द का दीवाना स्वयं आगे आता है या अपनी समाज, सभा को इसके लिए प्रोत्साहित करता है।

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीज 499/17 गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन० आई०टी० फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज सदर बाजार, गुड़गांव।

गतांक से आगे—

ऋषि दयानन्द का एक विवादास्पद पत्र

लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय

संन्यास ग्रहण करनेवाले गुरु का जो भेद होता है वही शिष्य का भी होता है। उदाहरणार्थ स्वामी दयानन्द के दीक्षा गुरु पूर्णानन्द सरस्वती थे। अतः उन्होंने शुद्धचैतन्य (दयानन्द) को भी दयानन्द सरस्वती का नाम प्रदान किया। आलोच्य वाक्य का यह कथन भी प्रमाणरहित है कि क्षत्रिय, वैश्य यदि संन्यास लेवें तो उनके नाम के अन्त में 'आनन्द' शब्द आवे। प्रथम तो स्वामी दयानन्द के मतानुसार क्षत्रिय और वैश्य को संन्यास लेने का अधिकार ही नहीं है। यदि यही लोग संन्यासी बनकर आनन्द शब्द को अपने नाम के साथ लगावें तो स्वामी दयानन्द से ही यह पूछा जाएगा कि वे तो जन्मना ब्राह्मण थे। फिर उन्होंने संन्यास के समय अपना नाम आनन्दान्त क्यों रक्खा? शूद्र को तो संन्यास का अधिकार ही नहीं है फिर स्वामी जी ने 'दासान्त' नाम रखने का तो निषेध किया है और दास नामवाले को शूद्र तथा गर्हित कहा है। पुनः दासान्त नाम रखनेवाला सन्यासी कैसे हो सकता है। ध्यातव्य है कि प्रचलित सनातनधर्मी संन्यासियों में भी दासान्त नाम रखने की प्रथा नहीं है। यह पूरा वाक्य ही स्वामी जी की विचारधारा और मान्यताओं के प्रतिकूल है।

चतुर्थ 'उपदेश' के बाद एक वाक्य लिखा मिलता है—"ओं सर्वात्मानमन्तर्यामिनं कृपामृतसागरं परमात्मानमहं शरणं प्रपद्ये" इस वाक्य की पूर्वापर क्या संगति है। क्या यह स्वामी दयानन्द ने कोई मंत्र बनाया है? तथ्य तो यह है कि वेदोक्त मन्त्रों के अतिरिक्त स्वामी जी ने अन्य सभी साम्प्रदायिक मन्त्रों का निषेध किया है। यथा प्रथम समुल्लास में ही महाराज ने श्रीगणेशाय नमः आदि दस कपोल कल्पित वाक्यों का खण्डन किया है। फिर वे उक्त वाक्य क्यों लिखने बैठे और इसकी संगति क्या है?

अन्य बिन्दु भी आपत्तिजनक हैं। यथा—अन्त्यजों को उपदेशक और अध्यापक बनने का विधान शास्त्रों और स्वयं ऋषि के आदेश के विपरीत है। उपदेशक और अध्यापक का कार्य ब्राह्मणों का ही है। बिन्दु आठ में कहा गया है कि भगवा वस्त्र सबको होना चाहिए। यह भी विपरीत बात है। काषाय (भगवा) वस्त्र संन्यासी धारण करते हैं न कि गृहस्थ या ब्रह्मचारी। सब मन्त्रों के आरम्भ में ओ३म्कार का प्रयोग करना, यह भी संस्कारविधि निर्दिष्ट विधान के प्रतिकूल है। क्योंकि संस्कारविधि में निम्न मन्त्रों को बिना ओ३म् का उच्चारण किये ही बोलने का लिखा है—(१) स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के मन्त्र, (२) समिधाग्नि दुवस्यत तथा सुसमिद्धाय मन्त्र, (३) तन्त्वा मंत्र, (४) विवाहविधि में ममेयमस्तु, त्वष्टा वासो, इन्द्राग्नी, द्यावापृथिवी, अहं विष्यामि, जीवं रुदन्ति, पूषा त्वेतो आदि अनेक मन्त्र, (५) संध्योपासना में अघमर्षण के ऋतं च सत्यं को छोड़कर अन्य दो मन्त्र, (६) मनसा परिक्रमा के प्रथम प्राची दिगग्नि को छोड़कर अवशिष्ट पांच मन्त्र, (७) शालाकर्म में वास्तोष्पते प्रतरणो, वास्तोष्पते शग्मया, अमीवहा वास्तोष्पते, सर्पदेवजनान् तथा अवशिष्ट अनेक मंत्र। इस प्रकार जब स्वयं ऋषि ने ही मंत्र के आरम्भ में ओ३म् बोलने या न बोलने का पृथकशः विधान कर दिया है तो यह आदेश वदतोव्याघात युक्त है।

तब इस पत्र की स्थिति क्या है?

(१) यह तो स्पष्ट है कि यह लेख स्वयं ऋषि का नहीं है।

(२) यह स्वामी जी के निकट रहनेवाले किसी लेखक का है क्योंकि ऋषि के आदेश से लिखे गये तथा हस्ताक्षरित अन्य पत्रों से इसका लेख बहुत मिलता जुलता है।

(३) पं० कालूराम के विषय में श्री इन्द्रजितदेव ने जिज्ञासा की है। तत्सम्बद्ध निवेदन है कि पं० कालूराम जी शर्मा सीकर (राजस्थान) जिले के रामगढ़ कस्बे के निवासी ऋषि के समकालीन तथा उनके भक्त थे। उनको लिखे तथा उनके द्वारा लिखे (स्वामी जी द्वारा तथा स्वामी जी को) कुछ पत्र ऋषि के पत्र-व्यवहार में संगृहीत हैं।

(४) एक अनुमान यह हो सकता है कि पं० कालूराम ने स्वामी जी से कुछ प्रश्न पूछे हों, कुछ जिज्ञासायें की हों और उनका उत्तर लिखने के लिए स्वामी जी ने अपने लेखक को कहा हो। किन्तु लेखक ने महाराज के वास्तविक आशय और अभिप्राय को समझे बिना ही स्वमत से कुछ (वे दस बिंदु) लिखकर स्वामी जी के हस्ताक्षर करा लिये हों। अनवधानतावश महाराज ने भी इस पर हस्ताक्षर कर दिये हों।

(५) यह पत्र उस समय का लिखा है जब स्वामी जी शाहपुरा में विराज रहे थे क्योंकि उनका शाहपुरा गमन फाल्गुन कृष्णा १४ सं० १९३९ को हुआ था और वे ज्येष्ठ कृष्णा ४ सं० १९४० पर्यन्त वहां विराजे थे।

(६) सेठ जयनारायण पोद्दार द्वारा लिखित तथा सं० १९६८ (१९११ ई०) में प्रकाशित पं० कालूराम जी की जीवनी के पृष्ठ २६ से यह तो संकेत मिलता है कि उक्त पण्डित जी ने पत्र लिखकर स्वामी जी से उपदेश प्रदान करने की याचना की थी, जिसके उत्तर में स्वामी जी का निम्न आशय का पत्र उन्हें मिला था—श्रीयुत पं० कालूराम शर्माभ्यो दयानन्द सरस्वती स्वामिनः आशिषो भूयासुस्तमाम् शमिहास्ति तत्र भवदीयञ्च नित्यमाशास्महे। आपने धर्मजिज्ञासा की उसका उत्तर यह है कि इस विषय में जो सत्यार्थप्रकाशादि मद्रचित ग्रन्थ हैं उनमें स्वमन्तव्यामन्तव्यादि सर्वधर्म विषय लिखा हुआ है उसी रीति से कार्य करो इत्यादि। पोद्दार जी की पुस्तक में न तो पत्र पूरा उद्धृत है और न उसके लिखे जाने की तिथि ही बताई गई है यही पत्र (इतना ही) पं० भगवद्दत्त द्वारा संगृहीत पत्र-व्यवहार द्वितीय संस्करण के पृष्ठ ३९४ पर उद्धृत किया गया है। इसकी अनुमानित तिथि १७ मार्च १८८३ अंकित है, इस आधार पर कि स्वामी जी ८ मार्च को शाहपुरा पहुंचे थे और वहीं से उन्होंने यह पत्र लिखा होगा।

(७) यदि पं० कालूराम की जीवनी में उद्धृत पत्र तथा सार्वदेशिक एवं परोपकारी में प्रकाशित स्वामी जी के उपदेशात्मक पत्र की पृष्ठभूमि का विचार किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं :-

(१) पं० कालूराम ने स्वामी जी से लिखित रूप से उपदेश भेजने के लिए कहा।

(२) इसके उत्तर में स्वामी जी ने पत्र-व्यवहार तथा सेठ पोद्दार लिखित पुस्तक में उद्धृत पत्र के आधार पर इतना ही लिखा कि उनके द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाशादि में वर्णित स्वमन्तव्यामन्तव्यादि धर्म विषय को पढ़कर वे यथोचित उपदेश ग्रहण करलें। परन्तु आलोच्य पत्र तो सत्यार्थप्रकाश में व्यक्त मत से नितान्त विसंवादी स्वर प्रस्तुत करता है।

(३) ऐसा अनुमान होता है कि स्वामी जी के किसी पौराणिक लेखक ने उक्त पत्र-व्यवहार की ओट में अपनी ओर से ही कुछ ऊटपटांग बातें (आलोच्य पत्र में अंकित उपदेश के बिन्दु संख्या १, २, ३, ५, ८) लिखकर पं० कालूराम जी को पुनः भेजने का विचार किया होगा तथा महाराज के हस्ताक्षर भी करा लिये होंगे अथवा स्वामी जी ने उस पर कर दिये होंगे। किन्तु यह पूरी सम्भावना है कि यह पत्र पं० कालूराम जी को भेजा नहीं गया, तभी तो इसका मूल आलेख परोपकारिणी सभा के संग्रह में मिला।

(४) हस्ताक्षर तो स्वामी जी के ही हैं। किन्तु उनके हस्ताक्षर प्रायः कोष्ठकों में मिलते हैं जो उलटे होते हैं। विवादास्पद पत्र में किये गये हस्ताक्षर सीधे कोष्ठक में हैं। इससे भी इस पत्र की विश्वसनीयता पर शंका होती है।

(५) मेरी आज की डाक में गुजरात प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मासिक मुख-पत्र आर्य वैदिकदर्शन (अगस्त १९९०) मिला है। इसके माननीय सम्पादक ने भी इस पत्र पर विद्वानों के विचार आमंत्रित किये हैं।

(६) अभी तो इस विषय में इतना लिखना ही सम्भव है। आगामी मास में ऋषि मेले के अवसर पर अजमेर जाने पर विवादास्पद पत्र पर कुछ अधिक जानकारी प्राप्त करूंगा।

वी.पी. सिंह इस्तीफा दें : पंचायत की मांग

७ अक्तूबर सन् १९९० को गांव मायना, जिला रोहतक में सतगामा खाप तपा बालन्द की एक पंचायत हुई जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किए गये। इसकी अध्यक्षता रिटौली गांव के कप्तान रिसालसिंह ने की।

१. पंचायत यह जोरदार मांग करती है कि ७ अगस्त सन् १९९० को प्रधानमन्त्री श्री वी० पी० सिंह ने सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े जिन वर्गों के लिये जातिगत आधार पर जो २७% आरक्षण घोषित किया है वह जातिगत आधार पर न होकर आर्थिक आधार पर किया जाये क्योंकि प्रधानमन्त्री के इस फैसले से देश में भयंकर जातिगत लड़ाई की चिंगारी फूट पड़ी है और देश एक प्रकार से गृहयुद्ध की ओर बढ़ रहा है। आज हम देख रहे हैं कि इसी गलत आरक्षण की नीति के कारण हमारे देश का युवावर्ग इतना निराश, क्रुद्ध और क्षोभ में भरा हुआ है कि जिसके फलस्वरूप वह आत्मदाह, आत्महत्या और आत्मबलिदान के क्रूर रास्ते की ओर बढ़ गया है और सैंकड़ों बहुमूल्य जानें इसके कारण जा चुकी हैं। हमारी यह पंचायत युवा छात्रों से यह अपील करती है कि वे आत्मदाह और आत्महत्या जैसे महाक्रूर रास्ते को छोड़कर शांतिपूर्वक तथा बिना किसी सरकारी सम्पत्ति को हानि पहुँचाए अपने इस आंदोलन को उन राजनीतिज्ञों के घेराव की ओर मोड़ें जोकि हमारी वोटों से विधायक व सांसद बने बैठे हैं और अपने वोट की राजनीति की खातिर सारे देश को जातिगत आधार पर बांटकर लड़ा रहे हैं।

पंचायत मांग करती है कि प्रधानमन्त्री श्री वी० पी० सिंह तुरन्त अपने पद से त्यागपत्र दें तथा इस जातिगत युद्ध की आग को भड़काने वाले अपने दो मन्त्रियों—कपड़ा मन्त्री-शरद यादव और श्रममन्त्री श्री रामविलास पासवान को तुरन्त बर्खास्त करके उनपर मुकद्दमा चलाएं।

पंचायत इस सम्बन्ध में गलत आरक्षण नीति के विरोध में अपनी संसदसदस्यता से त्यागपत्र देनेवाले भरतपुर के पूर्व सांसद और भरतपुर के महाराजा सूरजमल के पड़ौते श्री विश्वेन्द्रसिंह का धन्यवाद करती है और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करती है और आशा करती है कि और भी बहुत से विधायक व सांसद इसी रास्ते पर चलेंगे अन्यथा उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा।

२. पंचायत यह महसूस करती है कि आजकल कानूनी लड़ाई और अदालती न्याय बहुत महंगा होगया है। इसलिए सभी आपसी झगड़े व मुकद्दमें लोग पंचायतों के माध्यमों से सुलझाने की कोशिश करें और सतगामा पंचायत उनकी इस मामले में पूरी पूरी मदद करेगी ताकि वकीलों के पास लुटना-पिटना कम हो।

३. पंचायत यह भी महसूस करती है कि आजकल शराब का बेहद प्रचलन होगया है और जिसके कारण हमारे लोगों का शारीरिक आर्थिक और मौतिक विनाश हो गया है। किसी भी युवक के मुख पर पहले जैसी लाली दिखाई नहीं देती। हमें चाहिए कि हम घर-घर में इस शराब के प्रयोग को बन्द करें और हम सरकार से भी यह जोरदार मांग करते हैं कि वह हमारे गांव से शराब के सभी ठेके उठाले अन्यथा पंचायत उन्हें जबरदस्ती बन्द करवाने को मजबूर होगी।

४. पंचायत यह भी महसूस करती है कि आजकल विवाह-शादियों पर बेतहाशा मंहगाई के बावजूद बेतहाशा फिजूलखर्ची की जा रही है और अमीर लोगों की देखा-देखी गरीब लोग भी दहेज की बीमारी में फंसते जा रहे हैं। सभी लोग पांच या पच्चीस से ज्यादा बाराती न लायें न ले जाएं तथा एक या एक सौ एक से अधिक दान दहेज न दें। दहेज की नुमायश न लगाएं। दहेज की लम्बी लिस्ट बनानी व सुनानी बन्द करें। एक ही नारा लगायें—"बेकार टी० वी० कुर्सी-मेज है, दुलहन ही दहेज है।"

५. इन नौ गांवों की पंचायत ने सतगामा का तपा बालन्द को ही देने की सर्वसम्मति से पुष्टि की। पहले झगड़ा यह था कि सुनारियां सतगामा का तपा लेना चाहती थी मगर वह न तो इस पंचायत में आप आई और न ही इन नौ गांवों के नौ व्यक्तियों द्वारा बुलाने पर ही आई। इसलिए इन नौ गांवों ने इनको सतगामे से अलग छोड़ दिया और तपा बालन्द गांव को दे दिया। नौ गांव ये थे—मायना, छिमली, करौंथा, कन्हैली, बालन्द, रिटौली, गरणावठी, माड़ौदी, ककराना।

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल

शुक्रताल का वार्षिक महोत्सव कार्तिक शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा तक तदनुसार ३० अक्तूबर से २ नवम्बर, १९९० तक बड़े धूम-धाम से मनाया जायेगा।

महोत्सव में अनेक विद्वानों, महात्माओं, भजनोपदकों केन्द्रीय एवं प्रान्तीय नेताओं तथा गणमान्य अधिकारियों को आमंत्रित किया गया है।

आचार्य इन्द्रपाल
(प्रधानाचार्य)

राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली (जीन्द) का शिलान्यास

दीपावली के शुभ पर्व पर आचार्य श्री बलदेव जी गुरुकुल कालवा के करकमलों द्वारा १० एकड़ भूमि पर गोशाला का शिलान्यास हुआ। इस अवसर पर स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती गाजियाबाद, स्वामी गोरक्षानन्द उचाना, स्वामी रत्नदेव कन्या गुरुकुल खरल, स्वामी जगतमुनि, स्वामी रुद्रवेश व हरयाणा राज्य गोशाला संघ के उपाध्यक्ष ब्र० ओमस्वरूप संचालक गुरुकुल डिकाडला उपस्थित थे। यज्ञ के पश्चात् सैंकड़ों गोप्रेमियों की उपस्थिति में शिलान्यास सम्पन्न हुआ। गुरुकुल कालवा ने दो एकड़ भूमि तथा ३५ हजार रुपये गोशाला को दानस्वरूप दिये। क्षेत्रीय जगत् में अपार उत्साह था। हरयाणा की ये ९३वीं गोशाला है।

मेला कपाल मोचन पर वेदप्रचार शिविर का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति हरयाणा प्रदेश के प्रसिद्ध मेला कपाल मोचन निकट जगाधरी में १ से ३ नवम्बर तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रातः यज्ञ तथा शेष समय सभा के उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों द्वारा वेदप्रचार किया जावेगा। इसका प्रबन्ध स्वामी सदानन्द जी, श्री जयपाल आर्य, श्री गेन्दाराम आर्य तथा पं० शेरसिंह आर्य भजनोपदेशक कर रहे हैं। आर्यसमाजों से निवेदन है कि इस शुभ कार्य में सहयोग प्रदान करें।

—वेदप्रचार अधिष्ठाता

शोक समाचार

अति शोक का समाचार है कि श्री रणवीर जी शास्त्री, ग्राम आसन के सुयोग्य एवं होनहार पुत्र श्री रवीन्द्रकुमार जो महाविद्यालय की कक्षा तेरहवीं में पढ़ रहा था, उसकी १५-१०-९० को असामयिक मृत्यु हो गई जिससे समस्त आर्यपरिवार शोकाकुल है। भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि भगवान् शोकसंतृप्त परिवार को कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करे। शांतियज्ञ २६-१०-९० प्रातः ९-०० बजे ईश्वर कालोनी, बवाना, दिल्ली-३९ में होगा। —चन्द्रपालसिंह राणा

शोक सभा

आर्यसमाज नरेला, श्री रवीन्द्र सुपुत्र श्री रणवीरसिंह शास्त्री (आसनवाले) के होनहार सुयोग्य एवं अतिसुशील ज्येष्ठ पुत्र के दिनांक १५-१०-९० को दुर्घटना में असामयिक असह्य एवम् दर्दनाक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता है।

श्री रणवीरसिंह जी शास्त्री बड़े ही उत्साही आर्य कार्यकर्ता, बड़े विद्वान् तथा सभी को हर कार्य में पूर्ण सहयोग देनेवाले श्रेष्ठ आर्य हैं। प्रभु इनको इस बिछोह को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—मा० पूर्णसिंह आर्य,
मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय–विकास की सतत यात्रा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह ११ अगस्त १९९० को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री चिमन भाई मेहता भारत सरकार के शिक्षा राज्यमन्त्री, मानव संसाधन मंत्रालय विशेष अतिथि के रूप में पधारे। इस वर्ष विश्वविद्यालय के पीएच. डी., एम. ए., एम. एस. सी., बी. एस. सी., विद्यालंकार आदि के 104 स्नातकों को कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने उपाधियां वितरित करते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति का परिचय दिया। वैदिक विद्वान् आचार्य प्रियव्रत जी ने नवस्नातकों को उपदेश देते हुए गुरुकुल की शिक्षा का प्रसार करने का अनुरोध किया।

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार श्री विजयेन्द्र स्नातक तथा ८४ वर्ष के चिकित्सा शास्त्र के महान् पंडित डा० जेतली को विद्यामार्तण्ड की उपाधियां माननीय मंत्री श्री चिमनभाई मेहता द्वारा प्रदान की गईं। अपने दीक्षान्त भाषण में प्रो० शेरसिंह जी ने नवस्नातकों को आशीर्वाद दिया और उन्हें परामर्श दिया कि आप जहां भी जावें वहां गुरुकुल की छाप बनाये रखें। संन्यासियों की ओर से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने नवस्नातकों को आशीर्वाद दिया।

पत्रकारों के अखिल भारतीय सम्मेलन में पधारे पत्रकारों के सम्मान में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से रात्रिभोज का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम एक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजेन्द्र माथुर, श्री राजमोहन गांधी, श्री जयपाल रेड्डी, श्री बी. एस. सिन्हा, श्री एडन व्हाईट, श्री आर. प्रभु, श्री वीरेन्द्र ढल आदि पत्रकारों व नेताओं का स्वागत किया गया। इस अवसर पर सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री सुभाष विद्यालंकार की मांग पर मुख्यमन्त्री महोदय ने इस विश्वविद्यालय में आचार्य किशोरीदास वाजपेयी की स्मृति में शोधपीठ की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की तथा स्वागताध्यक्ष के रूप में कुलपति महोदय की इस मांग को मुख्यमन्त्री जी ने स्वीकार कर लिया कि हरिद्वार में एक पत्रकार कालोनी तथा एक पत्रकार भवन का निर्माण किया जाये। प्रो० विष्णुदत्त राकेश ने उपस्थित पत्रकारों को गुरुकुल की पत्रकारिता के योगदान में भूमिका के बारे में अवगत कराया। उन्होंने पत्रकारों को अवगत कराया कि गुरुकुल की भूमि से ही हिन्दी पत्रकारिता का प्रारम्भ हुआ था।

विश्वविद्यालय में रिक्तपदों पर नियुक्तियों हेतु यू. जी. सी. द्वारा 7वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। लेकिन कुलपति जी के अथक प्रयत्नों द्वारा यू. जी. सी द्वारा यह प्रतिबन्ध हटा लिया गया है तथा अधिकांश पदों हेतु चयनप्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है तथा अधिकांश चयनित व्यक्तियों ने अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

आरक्षण के विरोध में यद्यपि स्थानीय सभी स्कूल एवं कॉलेज पिछले दो माह से बन्द हैं लेकिन इस विश्वविद्यालय में निरंतर निर्देशन, अध्ययन, अध्यापन का कार्य चल रहा है।

ग्लोबल एक्सचेन्ज कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक ४-१०-९० को १५ छात्रों का एक दल इस विश्वविद्यालय में आया। उन्हें पुस्तकालय के संदर्भ विभाग में भारतीय दर्शन एवं वैदिक साहित्य से परिचित कराया गया। तथा उन्होंने वैदिक साहित्य संस्कृतसाहित्य आर्य साहित्य एवं दुर्लभ ग्रन्थों का अवलोकन किया। पुस्तकालय हाल में विश्वविद्यालय के छात्रों से उनका एक परिचय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें दोनों विश्वविद्यालय के छात्रों ने एक-दूसरे के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्हें गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में औषधियों की निर्माणप्रक्रिया से भी परिचित कराया गया।

१८ सितम्बर १९९० को विश्वविद्यालय के पूर्वकुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के जन्मदिवस को "इतिहास दिवस" के रूप में मनाया गया। डा० सत्यकेतु जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए डा० के. एस. वाजपेय, आचार्य प्रियव्रत जी, डा० रामनाथ जी तथा डा० राकेश जी ने यह कहा कि डा० सत्यकेतु एक व्यक्ति नहीं संस्था थे। इस अवसर पर स्व० डा० सत्यकेतु जी की धर्मपत्नी भी उपस्थित थीं। उन्होंने डा० सत्यकेतु जी के अद्भुत जीवनप्रसंगों को उपस्थित समुदाय को सुनाया। इस कार्यक्रम का आयोजन डा० जबरसिंह सेंगर अध्यक्ष, इतिहास विभाग द्वारा किया गया।

दिनांक ४-१०-९० को वेद मन्दिर में डा० रामनाथ जी वेदालंकार भूतपूर्व आचार्य एवं प्रोफेसर दयानन्द पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ को उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के उपलक्ष्य में पुरस्कृत किये जाने के फलस्वरूप उनका अभिनन्दन विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा डा० रामनाथ जी को २५,००० रुपये के वेद विद्वान् पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। ❀

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

२८-२९-३० सितम्बर १९९० को गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) का वार्षिकोत्सव आरक्षण विरोधी आन्दोलन के कारण कर्फ्यू लग जाने के बाद भी ईश्वर कृपा एवं आचार्य रामस्वरूप जी के पुरुषार्थ एवं प्रयत्न से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। २४ सितम्बर से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ नैष्ठिक ब्र० जीवानन्द जी वेदाचार्य के ब्रह्मत्व में आरम्भ हुआ। २८ सितम्बर को गुरुकुल के संस्थापक स्वामी देवानन्द जी की स्मृति में संस्कृत भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता हुई। प्रथम एवं द्वितीय को श्रीमती सूरजमुखी (जिला शिक्षा अधिकारी हिसार) ने पारितोषिक वितरित किया। इसी अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने छात्रों को ब्रह्मचर्य का महत्व बताया तथा आशीर्वाद दिया।

इसके अतिरिक्त आचार्य रामस्वरूप जी, स्वामी अग्निदेव जी भीष्म, वानप्रस्थी देवव्रत जी, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा श्री जयसिंह जी योगी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन, गुरुकुलों का महत्व, विजयदशमी पर्व का उद्देश्य, यज्ञोपवीत तथा संस्कारों का लाभ, शराब, धूम्रपान एवं चाय से होनेवाले नुकसान, गोरक्षा, हिन्दी रक्षा, शराबबन्दी, मनुष्य की दिनचर्या तथा आसनों से बिमारियों का निराकरण, विद्यार्थियों के कर्तव्य पर विस्तार से विचार रखे। पं० प्रभुदयाल प्रभाकर तथा गुरुकुल के छात्रों के शिक्षाप्रद मधुर भजन हुए। प्रथम बार ४० विद्यार्थी गुरुकुल धीरणवास से वानप्रस्थी व्यायमुनि जी तथा पहलवान सूबेसिंह के साथ उत्सव पर पधारे। ब्र० दीपकुमार आर्य

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

३ अक्टूबर १९९० को ग्राम बालावास (हिसार) में सूबेदार प्रभुराम जी के घर में यज्ञ किया गया। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी एवं सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने पंचमहायज्ञ मनुष्य के कर्त्तव्य, सत्संग का लाभ तथा आत्मा-परमात्मा पर विचार रखे। यज्ञ पर काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। प्रधान सूबेदार हरचन्द आर्य ने गुरुकुल धीरणवास हेतु ५१ रु० दान दिया।

४-१०-९० को आर्यसमाज कंवारी को ओर से चौपाल में यज्ञ पर स्वामी सर्वदानन्द जी धर्म के दस लक्षण एवं कर्त्तव्य पालन पर विचार रखे। श्री क्रान्तिकारी जी ने भी अपने आर्य सहयोगियों को पारावारिक यज्ञ करने तथा आर्यसमाज के सदस्य बनाने का सुझाव दिया। डा० ओमप्रकाश आर्य

२ अक्टूबर के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन

नलवा (हिसार) में २ अक्टूबर १९९० को आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी एवं सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी जी एवं पूर्व प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त यज्ञ के महत्त्व पर भी विचार रखे। कृष्णकुमार आर्य

आर्यसमाज जातिगत आधार पर आरक्षण का समर्थन कैसे कर सकता है?

—डा० प्रशान्त वेदालंकार ७१२, रूपनगर दिल्ली-११०००७

९ सितम्बर १९९० को भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तथाकथित अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश, महासचिव स्वामी अग्निवेश, उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष व सांसद कैलाशनाथसिंह और बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के महासचिव बनारसीसिंह विजयी द्वारा किये पत्रकार सम्मेलन में मण्डल आयोग के अनुसार जातिगत आरक्षण का समर्थन पढ़कर सारा आर्यजगत् स्तब्ध रह गया। दु:ख और आश्चर्य तब और अधिक हुआ जब उनका यह समर्थन दूरदर्शन व समाचार पत्रों ने उनके व्यक्तिगत विचारों के आधार के स्थान पर आर्यसमाज के नाम से प्रसारित व प्रकाशित किया।

इस पत्रकार सम्मेलन में स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि जाति प्रथा के विरुद्ध आर्यसमाज ने प्रारम्भ से ही संघर्ष किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मगत जाति पर आधारित हिन्दू समाज व्यवस्था के विरुद्ध थे। उन्होंने इसके विरुद्ध विद्रोह का भी आह्वान किया था। अब केन्द्र सरकार ने मण्डल आयोग की संस्तुतियों को लागू करके स्वामी दयानन्द के सपने को पूरा किया है। इससे समाज के दबे दुबले लोगों को न्याय और समानता का अधिकार प्राप्त होगा। इसके लिए उन्होंने प्रधानमन्त्री वि० पी० सिंह को बधाई भी दी।

इन नेताओं ने सरकार से यह मांग भी की है कि पिछड़े वर्ग को दिये गये २७ प्रतिशत आरक्षण में से सात प्रतिशत आरक्षण इस वर्ग की महिलाओं के लिए सुरक्षित किया जाए तथा यह आरक्षण नीति शैक्षिक संस्थाओं को सेवाओं में भी लागू होनी चाहिए।

स्वत: इन तथाकथित 'आर्यसमाजी' नेताओं ने उक्त बयान देकर स्वयं परस्पर विरुद्ध बातें कही हैं। मण्डल आयोग को संस्तुति के आधार पर दिये जानेवाले आरक्षण पर सबसे बड़ी आपत्ति यही है कि यह जातिप्रथा को जन्मानुसार मानकर चलता है। जबकि महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज जन्म के आधार पर मनुष्य का मनुष्य से भेद करने के सर्वथा विरुद्ध है। मण्डल आयोग में यह व्यवस्था नहीं है कि शिक्षा, राजनीतिक व सामाजिक सम्मान व धन आदि की दृष्टि से प्रतिष्ठित लोगों को आरक्षण का लाभ प्राप्त नहीं होगा। आर्यसमाज की दृष्टि में भी जो लोग शिक्षितहो गये हैं, जिनकी सन्तान उच्च शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ है, जो राजनीति व समाज में ऊंचे स्थानों पर पहुंच गये हैं और जो आयकर देने में समर्थ हैं, वे पिछडी जाति के नहीं कहलाए जा सकते। मण्डल आयोग की सबसे बड़ी विडम्बना ही यही है कि वह रामविलास पासवान, शरद् यादव व मुलायमसिंह यादव को भी पिछड़ा हुआ मानता है। जबकि आर्यसमाज की दृष्टि में गुण कर्म के अनुसार ये ऊंची जातियों के हैं।

यह सत्य है कि इस युग में पिछड़ेपन के विरुद्ध सबसे पहली और ऊंची आवाज महर्षि दयानन्द व उन द्वारा स्थापित आर्यसमाज की थी। पर दयानन्द ने यह कभी कल्पना नहीं की थी कि इस प्रकार के राजनीतिक 'आरक्षण' व विशेषाधिकार के द्वारा प्रजा का पिछड़ापन दूर किया जाएगा।

महर्षि दयानन्द का स्पष्ट अभिमत था कि जन्म के समय सभी शूद्र होते हैं। अगड़े और पिछड़े दोनों प्रकार के वर्गों के बच्चों में बुभुक्षा और अज्ञान समान रूप से होता है। इस कारण दोनों के पालन पोषण व आहार आदि की समान व्यवस्था होनी चाहिए। क्या मण्डल आयोग ने पिछड़े वर्गों व बच्चों के लालन-पालन व आहार की दृष्टि से अगड़ों के समान किसी आरक्षण की व्यवस्था की है? वस्तुत: महर्षि दयानन्द ने इस प्रकार के भेदभाव के विरुद्ध ही क्रान्ति का बिगुल बजाया था।

समान रूप से लालन-पालन के उपरान्त महर्षि दयानन्द पिछड़ी जातियों के लिए विशेष आरक्षण शिक्षा के क्षेत्र में चाहते थे। उनका स्पष्ट कथन था कि यह राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवे अथवा आठवे वर्ष से आगे कोई अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवे। जो न भेजें वे दण्डनीय हों। (दे० सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)। श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने ऐसी कोई घोषणा की या किसी योजना का निर्माण किया जिससे देश मेंव्याप्त अशिक्षा की समस्या का समाधान हो सके? मण्डल आयोग की संस्तुतियों में एक संस्तुति यह भी है कि आवासीय विद्यालयों का विस्तार किया जाएगा। अब तक आवासीय विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्रों के उन्हीं बालकों को प्रवेश प्राप्त होता है जो मेरिट में उनकी परख परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं। नौकरियों में आरक्षण से पूर्व पिछड़े वर्गों के प्रत्येक बालक की शिक्षा की समान व्यवस्था आवश्यक है।

आर्यसमाज की दृष्टि में पिछड़ों को विशेषाधिकार इस दृष्टि से मिलना चाहिए कि उनके बच्चों को ७-८ वर्ष की आयु से लेकर २४-२५ की आयु तक घर के दूषित वातावरण से दूर किसी स्वस्थ वातावरण में रखा जाए और उनके खान-पान, परिधान व शिक्षा आदि का सम्पूर्ण व्यय राज्य करे। गत हजारों वर्षों से उनके साथ सचमुच अमानवीय उपेक्षा का व्यवहार होता रहा है अत: आज उनका यह पूरा अधिकार बनता है कि उनके उत्थान के लिए यह व्यय राज्य अपने ऊपर ले। वस्तुत: जिलाधिकारी स्तर के उस व्यक्ति का यह दायित्व बनता है कि वह देखे कि उसके जिले का प्रत्येक बालक व बालिका शिक्षा ग्रहण कर रहा है या नहीं। यदि नहीं कर रहा है तो उसको प्रेरणा देकर अथवा बलात् विद्यालय भेजने का कार्य उसके कर्तव्य में शामिल होना चाहिए। जो ऐसा न कर सके उसकी पदोन्नति आदि पर रोक लगानी आवश्यक है। यदि सरकारी अधिकारी ऐसा नहीं कर सकते तो यह कार्य आर्यसमाज व अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं को सौंप देना चाहिए।

पिछड़ी जाति के मल्लाहों, जुलाहों, मछियारों के सामने अपने बच्चों को पढने के लिए आवासीय विद्यालयों में भेजने में एक व्यावहारिक कठिनाई है। वस्तुत: उनकी सन्तान—वह चाहे लड़का हो या लड़की—उनके घर व व्यवसाय में सहायक सिद्ध हो रही होती है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े इन जातियों के लोग अपनी सहायता के लिए कोई अन्य सहायक नहीं रख पा रहे होते हैं। ऐसी स्थिति में सरकारों का यह दायित्व बनता है कि उनकी आर्थिक मदद करें। जो सरकार किसानों के १० हजार रुपये तक के कर्जे माफ कर सकती हैं, नौकरियों में आरक्षण की घोषणा कर सकती है वह पिछड़ी जाति के लोगों को आर्थिक सहायता देकर उनके लघु उद्योग का संवर्द्धन क्यों नहीं कर सकती? मण्डल आयोग की संस्तुतियों में एक संस्तुति यह भी है कि लघु उद्योगों को संवृद्ध करने के लिए सरकारों को विशेष प्रयत्न करने चाहियें।

महर्षि दयानन्द का स्पष्ट अभिमत था कि राजा व रंक सभी की सन्तान की व्यवस्था समान स्तर के विद्यालय में होनी चाहिए। हमारा आदर्श 'द्रोण' और एकलव्य का उदाहरण नहीं है, हमारा आदर्श कृष्ण और सुदामा का गुरु सन्दीपनी के आश्रम में समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का है। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में सीता जैसी नारियों का निवास है।

हमें इस बात का अत्यन्त दु:ख है कि १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह सौ राजनीतिक व कूटनीतिक बातें करते रहे पर शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने एक भी शब्द नहीं कहा। वस्तुत: उन्हें पिछड़ों की उन्नति की चिन्ता प्रतीत नहीं होती। उनको यादवों व पासवानों को प्रसन्न करके अपने मत बटोरने में अभिरुचि अधिक है। भेदभाव-पूर्ण पब्लिक स्कूलों की समाप्ति कर समान शिक्षा पद्धति पर जब तक बल नहीं दिया जाएगा तब तक नौकरियों में आरक्षण से कोई लाभ नहीं है।

उक्त 'आर्यसमाजी' नेताओं को इस मांग से हम शतप्रतिशत सहमत हैं कि सरकार को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की सरकारी सहायता व मान्यता समाप्त कर देनी चाहिए। पर श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को बधाई देते समय ये नेता यह भूल गये कि प्रधानमन्त्री यह घोषणा कर चुके हैं कि उनकी भाषा नीति पं० नेहरू के विचारों से भिन्न नहीं है। वि० प्र० सिंह ने स्वाधीनता दिवस पर भारतीय भाषाओं के विकास के लिये भी एक शब्द नहीं कहा। यह सत्य है कि बिना अंग्रेजी समाप्त किये व बिना भारतीय भाषाओं की शिक्षा व प्रशासन का माध्यम बनाए पिछड़ों को उन्नति नहीं हो सकती।

(क्रमश:)

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती—एक आदर्श राजनीतिज्ञ

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी की पुण्यस्मृति प्रत्येक विजयदशमी (दशहरा) के अवसर पर मनाकर हरयाणा आर्यप्रतिनिधि सभा एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृतज्ञता का पुण्य कार्य कर रही है। स्वर्गीय श्री सिद्धान्ती जी के साथ हिन्दी आन्दोलन १६५८ के दौरान बोस्टल जेल हिसार में तथा १६६२ में चुनाव प्रचार आदि अनेक अवसरों पर मुझे उनके अत्यन्त निकट रहने का लम्बा शुभ अवसर मिला है, जिससे उनके अनेक अद्भुत विशेष गुणों ने मेरे मन पर अमिट छाप छोड़ी। यहां मैं उनके राजनीतिक जीवन की कुछ विशेषताओं का उल्लेख करके उनके स्मृति-महायज्ञ में अपनी श्रद्धा की आहुति डालना चाह रहा हूं।

जनवरी १६६२ में मैं बनारस से मीमांसा दर्शन पढ़कर अपने कुल गुरुकुल झज्जर में आया ही था कि हरयाणा में विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव घोषित होगये। प्रो० शेरसिंह जी उन दिनों हरयाणा प्रान्त को पंजाब से अलग करके एक स्वतन्त्र प्रदेश बनाने की मांग करके वस्तुत: एक नया इतिहास निर्माण कर रहे थे, उन्होंने "हरयाणा लोकसमिति" बनाकर अनेक उम्मीदवारों को विधानसभा के लिये खड़ा किया। श्री सिद्धान्ती जी उसी पार्टी से लोकसभा का चुनाव लड़ने के लिये खड़े हुए।

पूजनीय आचार्य भगवानदेव (वर्तमान स्वामी ओ३मानन्द जी महाराज) ने मुझे चुनाव प्रचार में कूदने का आदेश दिया। प्रो० शेरसिंह जी का विधानसभा का हल्का झज्जर था और श्री सिद्धान्ती जी का लोकसभा का क्षेत्र रेवाड़ी से लेकर राई (सोनीपत) तक था। मुझे इसी हल्के में काम करने को कहा गया। हरयाणा लोकसमिति का वास्तविक मुद्दा और घोषणा-पत्र हिन्दी और हरयाणा ही थे अत: समूचा प्रचार इन्हीं दो विषयों पर लोगों को जागरित करने के लिये था। उन दिनों के श्री सिद्धान्ती जी के भाषण यदि टेपरिकार्ड किये मिल जायें तो यह भी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य है। मुझे स्मरण है, श्री सिद्धान्ती जी के भाषणों में पंजाब के वर्तमान आतंकवाद और खालिस्तान की मांग के भविष्य के खतरों का स्पष्ट वर्णन होता था और इस दिशा में जनता और सरकार को कड़ी चेतावनी हुआ करती थी।

रेवाड़ी में एक रात्रि को चुनाव प्रचार का कार्यक्रम रखा। प्रो० शेरसिंह जी से पहले श्री सिद्धान्ती जी का भाषण हुआ। श्री सिद्धान्ती जी ने रेवाड़ी की वीर जनता को गरजते हुवे ललकार कर कहा—"राव तुलाराम के वीरसैनिको! एक लड़ाई आपने १८५७ में भारत की स्वतन्त्रता के लिये लड़ी थी, दूसरी लड़ाई आपने अब वीर हरयाणा की स्वतन्त्रता के लिये लड़नी है।" इसी प्रकार के भाषणों का परिणाम यह हुआ कि चुनाव का दिन आया, हरयाणा लोकसमिति का निशान उगता हुआ सूर्य था जिसके झण्डे के नीचे श्री सिद्धान्ती जी लोकसभा का चुनाव लड़ रहे थे। चुनाव के दिन सूर्य के उदय के साथ श्री सिद्धान्ती जी के नाम के आगे 'सूर्य' पर मोहर लगाकर लोगों ने मतपत्रों से मतदान पेटियां भरनी प्रारम्भ करदी। मतगणना हुई, श्री सिद्धान्ती जी की विजय भारी बहुमत से हुई, यद्यपि पार्टी के अन्य अनेक उम्मीदवार उस समय हार गये थे।

श्री सिद्धान्ती जी के मुकाबले में स्वर्गीय श्री प्रतापसिंह दौलता खड़े थे। चुनाव हारने के बाद श्री दौलता जी ने श्री सिद्धान्ती जी की चुनावी विजय के विरुद्ध याचिका दायर की। श्री दौलता जी स्वयं हाईकोर्ट के वरिष्ठ वकील थे, अत: उन्होंने तो अपनी याचिका की अगुवायी स्वयं ही करनी थी, किन्तु श्री सिद्धान्ती जी भी तर्क शास्त्र (न्याय-दर्शन) के उद्भट विद्वान् थे, अत: उन्होंने भी अपना केस बिना वकील की सहायता के स्वयं लड़ा। परिणाम विदित है, श्री सिद्धान्ती जी के मुकाबले में श्री दौलता जी के सारे वकीली पैंतरे विफल होगये और याचिका का निर्णय श्री सिद्धान्ती जी के पक्ष में हुआ।

श्री सिद्धान्ती जी चुनाव के पश्चात् याचिका भी जीतकर बड़े बड़ल्ले से लोकसभा पहुंचे और १६६२ से १६६७ तक पूरा काल लोकसभा के सदस्य रहे। मैं १६६३ से दिल्ली में आगया था और श्री सिद्धान्ती जी का लोकसभा का जीवन बड़े निकटता से देखता था। लोकसभा में वे अनेक राजनीतिकरूप समस्याओं पर बोले। सामाजिक और शैक्षिक समस्या उनके प्रखर रूप में मुखर होने का प्रमुख कारण रहती थी। शिक्षा के सम्बन्ध में सरकार की डावांडोल नीति और योजनाहीन दिशाहीनता को लेकर श्री सिद्धान्ती जी अत्यन्त उग्रवादी हो उठते थे, यद्यपि सामान्य जीवन में वे अत्यन्त व्यावहारिक और नम्र थे।

एक बार उनके हल्के के कुछ लोग उनसे उनके निवास स्थान पहाड़ीधीरज पर मिलने आये। श्री सिद्धान्ती जी आदर्श त्याग और अपरिग्रहवृत्ति के थे। इसलिए उन्होंने सरकारी आवास लेने से यह कहकर इन्कार कर दिया था कि मेरे पास अपना निजी आवास है अत: सरकारी आवास की मुझे आवश्यकता नहीं है। इलाके के लोगों ने श्री सिद्धान्ती जी को कहा कि राजनीतिक जीवन में सफलता का एक ही गुर (मन्त्र) है कि चाहे लोगों के लिये कुछ भी न करो परन्तु लोगों से मिलते रहो, उनसे मौखिक सहानुभूति जताते रहो, अत: आप भी ऐसा ही कुछ करते रहो। श्री सिद्धान्ती जी ने उत्तर दिया, ऐसी सस्ती नेतागिरी मुझे नहीं चाहिये। तुम बताओ कि जब सीमा पर लड़ाई चल रही हो क्या तब सिपाही को अपने घर होना चाहिये या सीमा पर? आपके अधिकारों की लड़ाई जब लोकसभा में चल रही है तो मुझे वहां होना चाहिये या केवल चातुरीपूर्ण औपचारिकता दिखाने के लिये और केवल सहानुभूति प्रकट करने के लिये इलाके में घूमता रहूं? उनका यह निश्छल और निष्काम उत्तर सुनकर सब चुप रह गये। यही था श्री सिद्धान्ती जी का आदर्श राजनीतिक जीवन, जो झूठी सहानुभूति जताकर सस्ती लोकप्रियता जीतनेवाले और लोकसभा में लोगों के हितों के लिये अपने ठाठ बन्द रखनेवाले अवसरवादी राजनीतिज्ञों के प्रति जनता को सावधान करता रहेगा और राजनीतिज्ञ और जनता के लिये सर्वदा प्रकाशस्तम्भ का काम करता रहेगा।

– ले० डा० महावीर

ए-३/११, पश्चिम विहार, देहली-११००६३

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह १६३८—३६ में जिन भाइयों ने सक्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल में गये थे आर्य-प्रतिनिधि सभा हरयाणा ऐसे सब सत्याग्रहियों को तारीख २४-११-६० को अपने वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करेगी। इसी सिलसिले में सभा हैदराबाद आर्यसत्याग्रह १६३८-३६ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमें हरयाणा के तमाम सत्याग्रहियों के फोटो और संक्षिप्त जीवन परिचय होगा। अत: सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना संक्षिप्त जीवन एवं पासपोर्ट साइज का फोटो नहीं भेजा है वे यह सूचना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साइज का फोटो और ६-७ लाइन का जीवनपरिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करें ताकि उनका नाम इतिहास में लिखा जा सके।

जीवनपरिचय का प्रारूप

१- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, ग्राम, जिला।
२- किसके जत्थे में थे।
३- कहां सत्याग्रह किया, वहां कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल में रहे।
४- जेल में कोई विशेष घटना हुई हो तो संक्षिप्त रूप में लिखें।

महाशय भरतसिंह
संयोजक हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति
दयानन्दमठ रोहतक

आर्यसमाज शेखपुरा का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज शेखपुरा (घरौण्डा) जिला करनाल का ३३वां वार्षिक उत्सव ५, ६, ७, अक्तूबर को सम्पन्न हुआ। आरक्षण विरोधी आन्दोलन के कारण यातायात व्यवस्था अवरुद्ध होने से प्रथम दिन उपदेशकों के न पहुंच सकने के कारण दो दिन ही कार्यक्रम चला। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रातः यज्ञ का अनुष्ठान हुआ। आठ युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किए। इस अवसर पर श्री हरिश्चन्द्र जी शास्त्री ने यज्ञ का महत्व तथा यज्ञोपवीतधारकों को संयमित जीवन अपनाने को कहा। मध्यान्ह तथा रात्रि को चार सभाओं का आयोजन हुआ। जिनमें मधुर भजन तथा उपदेशों द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों, भावी कार्यक्रम तथा देश की वर्तमान स्थिति के बारे में वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक की ओर से श्री खेमसिंह की भजन मण्डली ने सुमधुर भजनों द्वारा श्रोताओं को प्रभावित किया। सभा के विद्वान् उपदेशक श्री हरिश्चन्द्र जी शास्त्री ने बताया कि देश की वर्तमान समस्याओं का समाधान अज्ञान, अभाव और अन्याय का निराकरण करके ही किया जा सकता है। जातिगत आधार पर नियुक्त मण्डल आयोग की अनुशंसाओं को लागू करने के सरकारी निर्णय से प्रतिक्रिया-स्वरूप देश के युवकों में जो कुण्ठा व निराशा की स्थिति पैदा होगई है और वे आत्मदाह जैसे जघन्य कार्य कर रहे हैं, उसका समाधान वैदिक वर्णाश्रम-व्यवस्था को अपनाकर किया जा सकता है। महाशय नत्थासिंह जी आर्य भजनोपदेशक ने महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज द्वारा किए गए कार्यों का स्मरण कराते हुए बताया कि आज आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता पहले से भी अधिक है, किन्तु खेद है कि त्यागी, तपस्वी, कर्मठ कार्यकर्ताओं का अभाव है।

श्री ओमप्रकाश मुख्योध्यापक ने अपनी विशिष्ट शैली में भजनों द्वारा वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषों पर प्रकाश डाला। श्री हवासिंह 'तूफान' ने सामाजिक कुरीतियों को त्यागने का आग्रह किया। उत्सव की समाप्ति पर आगामी वर्ष के लिये निम्न पदाधिकारियों का चुनाव किया गया :—

प्रधान—श्री रामसिंह मुख्याध्यापक।

उपप्रधान—श्री जयकवार।

मन्त्री—श्री रणधीरसिंह शास्त्री। उपमन्त्री—श्री धर्मपाल।

कोषाध्यक्ष—श्री बलबीरसिंह नम्बरदार।

—रणधीरसिंह शास्त्री
मन्त्री, आर्यसमाज शेखपुरा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए तारीफ प्रिन्टर्स रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं. २३२०७/७३ | अग्रिम प्राप्ति संख्या १, ६६, ०८, ५३,०६०



ओ३म् | कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री | सहसम्पादक - प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए. | ६ कार्तिक २०४७ वि०

वर्ष १७ | अंक ४५ | २८ अक्तूबर १९९० | वार्षिक शुल्क ३०) | आजीवन शुल्क ३०१) | विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

जातियों पर आधारित आरक्षण न उचित है और न ही सम्भव

—प्रो० शेरसिंह

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री

सरकारी नौकरियों में आरक्षण के संवेदनशील प्रश्न ने दूसरे अधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्नों को पीछे डाल दिया है। इसलिए इस प्रश्न के सभी पहलुओं पर तटस्थभाव से और निष्पक्षता के साथ विचार करना आवश्यक हो गया है।

१ अक्तूबर १९९० को उच्चतम न्यायालय ने मण्डल आयोग की सिफारशों के अमल पर रोक लगा दी है और २५ अक्तूबर १९९० से पांच न्यायमूर्तियों की पीठ उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों में दायर की गई याचिकाओं को सुनना आरम्भ करेगी। मुझे इस बात में पूरा पूरा सन्देह है कि उच्चतम न्यायालय जन्म के आधार पर जातियों के लिये सरकारी नौकरियों में आरक्षण की अनुमति दे देगा। हो सकता है कि इस महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न को यह पीठ अपने से बड़े न्यायपीठ को सौंप दे। इस प्रकार इस प्रश्न के निर्णय में काफी समय लग सकता है। इस दौरान सभी सम्बद्ध पक्षों को मिल बैठकर सहमति से हल निकालना चाहिये।

यह ध्यान देने की बात है कि संविधान के अनुच्छेद ३४(१) और ३४२(१) के अनुसार राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया है कि वे लोक अधिसूचना द्वारा उन जातियों या आदिम जातियों का उल्लेख कर सकेंगे जिन्हें इस संविधान के लिये अनुसूचित जातियां या अनुसूचित आदिम जातियां समझा जायेगा।

परन्तु राष्ट्रपति को यह अधिकार नहीं दिया गया है कि वे लोक अधिसूचना द्वारा उन जातियों का उल्लेख कर सकेंगे जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिये "पिछड़ी जातियां" समझा जायेगा। मुझे ऐसा लगता है कि इस सम्बन्ध में जारी की गई सभी लोक अधिसूचनायें संविधान का उल्लंघन करनेवाली और अधिकारातीत हैं।

यह भी ध्यान देने की बात है कि पिछड़े नागरिकों के इन दो वर्गों में जान बूझकर विभेद किया गया है। जिन जातियों का "अनुसूचित जातियों" के रूप में उल्लेख किया गया है उन सभी जातियों को सदियों से "अस्पृश्य" माना जाता रहा और उनको कुओं, तालाबों स्नान घाटों, सड़कों, सार्वजनिक समागम स्थानो से वंचित किया जाता रहा और सार्वजनिक भोजनालयों, होटलों तथा मनोरंजन के स्थानों और मन्दिर आदि में इनका प्रवेश बन्द रहा। परन्तु बिचले दर्जे की मानी जानेवाली तथाकथित पिछड़ी जातियों को छुआछूत तथा अन्य सामाजिक नियोग्यताओं का शिकार नहीं होना पड़ा। दयानन्द और गांधी ने जो जन जागरण किया उसके परिणामस्वरूप इन जातियों ने हीनता की भावनाओं को उखाड़ फेंका और अपने आपको ऋषिमुनियों और वीर क्षत्रियों का वंशज घोषित करते हुए अपने नामों के साथ [illegible] वर्मा लगाना शुरू किया।

इसलिये संविधान के निर्माताओं ने "अनुसूचित जातियों" को [illegible]पूर्ण जीवन प्रदान करने के लिये अनुच्छेद ३३० के अनुसार लोक [illegible] सभाओं की सीटों के लिये जनसंख्या के आधार पर आर[illegible] और अनुच्छेद ३३५ के अनुसार राज्य की सेवाओं और पदों के लिये उनके आरक्षण का दावा कबूल किया।

आर्थिक सामाजिक तथा शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े नागरिक वर्गों की उन्नति, सामाजिक अन्याय और शोषण से उनकी मुक्ति, उनके शिक्षा तथा अर्थसम्बन्धी हितों के उन्नयन, उनकी प्रगति में बाधक कठिनाइयों के निराकरण तथा आर्थिक अनुदानो द्वारा उनके धन्धों को लाभकारी बनाने के लिये संविधान के अनुच्छेदों (१५)४,४६ और ३४०) में इस प्रकार के विशेष प्रावधान करने की छूट दी गई है। संविधान के अनुच्छेद १६(४) के अनुसार राज्य को पिछड़े हुए किसी नागरिक वर्ग के [illegible] करने का अधिकार होगा, जिनका प्रतिनिधित्व राज्य की राय में राज्याधीन सेवाओं में पर्याप्त नहीं है।

यह ठीक है कि राज्याधीन सेवाओं की संख्या सब नौकरियों का एक प्रतिशत के लगभग है, परन्तु यही सेवायें तो सारे प्रशासन को चलाती हैं और इस देश में प्रशासन की सहायता और संरक्षण के बिना खेती, उद्योग व्यापार कोई भी धन्धा नही चल सकता। इसलिए इन सेवाओं में पर्याप्त नहीं है।

जिस कोटि की शिक्षा ग्रामीण बालक बालिकाओं को, ग्रामीण स्कूलों में मिल रही है उसको सविस्तार प्रतिपादित करना मैं आवश्यक नहीं समझता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के प्रवर्तकों ने ग्रामीण स्कूलों की दशा का जो चित्रण किया है और टीका-टिप्पणी की है उनको मैं दोहराऊंगा नहीं। परन्तु इस संदर्भ में, मैं मण्डल आयोग के उत्कट समर्थक श्री मुलायमसिंह यादव की उक्ति को उद्धृत करना आवश्यक समझता हूं। अप्रैल १९९० में उन्होंने कहा था, "ग्रामों में

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन २५ नवम्बर को रोहतक में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २५ नवम्बर १९९० रविवार को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में होगा। वार्षिक अधिवेशन में हरयाणा प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा तथा आगामी वर्ष के लिये सभा के अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों आदि का चुनाव किया जावेगा। इस अधिवेशन में सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के स्वीकृत प्रतिनिधि भाग लेंगे।

—वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

"गोपालन"

भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है। निर्धन वर्ग मशीनें नहीं खरीद सकता। ज्यादातर खेती गरीब करते हैं, ७० प्रतिशत कृषि पर निर्भर रहते हैं। यह बेरोजगारी, गरीबों का हल है, गाय हमारी माता है। यह यतीम बच्चों को पालती है, खेती के लिए बैल, बाखरदारी के लिए बैल का खाद, चमड़ा हड्डी सब कुछ काम आता है फिर खर्च केवल घास, अन्न ईश्वर की देन। प्राचीन काल में देश में घी दूध की नदिया बहती थी, आज तो अमरिका से दूध, घी-मक्खन आता है और हम दिन-प्रतिदिन घी, दूध के अभाव मे शक्तिहीन हो रहे है। एक गाय अपनी पीढी में ४०००00 को पालती है। जब इसके मांस से केवल २० ही तृप्त हो सकते हैं। अतः कसाई सज्जनों से इस गरीब पशु को न मारने की प्रार्थना है, ईश्वर ने खाने को कई पदार्थ दिए है। भारत सरकार गौ को आरक्षित पशु घोषित करे और राष्ट्र को शक्तिशाली करे।

"शराब खाना खराब"

भारत की जनसख्या अब ८० करोड़ से ८८ करोड़ होगई है। ८८ करोड़ भारतीय हर साल २०० अरब रुपये की शराब पी जाते है कोई भी प्रान्त इससे नही बचा है। हरयाणा में डेढ करोड़ निवासी हर साल ८ अरब रुपये की शराब पी जाते हैं। यह लक्षण अच्छे नही, हालांकि शराब के विरुद्ध काफी प्रचार आर्यसमाज कर रहा है। हिमाचल मे ४६ लाख की जनसख्या है, एक गरीब छोटा प्रदेश है परन्तु यहा भी १०-१२ करोड़ आमदनी शराब के ठेकों से है। सरकार ठेकों से आय का साधन समझती है। रक्षा पर सरकार १४० अरब व शिक्षा पर ६० अरब खर्च करती है। शराब से लाखों घर तबाह होते हैं। चोरी, कतल, जूआ, डाके अथवा बीमारी, अचानक मौतें सब इसकी पैदावार है। सरकार को पुलिस, अदालतो, मुकदमों, वकीलो, हस्पतालो पर इस नामुराद शराब के कारण बड़ा खर्च करना पड़ता है। सदैव के लिए आपसी दुश्मनी इसकी पैदावार है। बीबी-बच्चे मिट्टी में रल जाते है, भूमि, सम्पत्ति बिक जाती है। वेश्यावृत्ति चरित्र-हीनता इसकी पैदावार है, भ्रष्टाचार इससे फैलता है। खाने-पीने को अनेक पदार्थ प्रभु ने दिए है, उनकी बजाए गले-सड़े पदार्थों से बनी शराब क्यो पी जाए। अमरीका, रूसवाले इसे छोड़ रहे हैं और भारतवासी दिन प्रतिदिन इसके रसिया बन रहे है। युद्धों मे इतने नही मरते जितने इस नामुराद शराब से मरते है, अतः सरकार व जनता से प्रार्थना है कि शराब बन्द करके राष्ट्र व जनता को बचाए व इनका हित सोचें।

"हम में राष्ट्रीयता कब आएगी"

महाभारत के युद्ध में हमारा कला-कौशल बहुत नष्ट होगया। उसके बाद माण्डलीक राज्य बनते गए। सगठन न रहा और देश विदेशी लुटेरों, हमलावरों का शताब्दियों शिकार रहा। बुतप्रस्ती आरम्भ होगई थी और देश का अपार धन इन मन्दिरों मे सुरक्षित समझकर रखा जाता रहा। लुटेरों का मुकाबला न करके मूर्ति ही रक्षा करेगी, मौन बैठे रहे। करोड़ो के हीरे-जवाहरात, सोना-चान्दी, लुटेरे ले गए। यही नहीं, लाखो को कतल किया गया, लाखो विधर्मी बनाए गए, हमारी बहु-बेटियां दो-दो रुपये में बाहर जाकर बिकीं, परन्तु हमें अक्ल न आई। पठान, लोधी, खिलजी, तुगलक राज्य के बाद मुगल राज्य आया। उसने भी अत्याचार ढाने में कसर न रखी। फिर १६० साल अंग्रेजों ने राज्य किया। उसके समक्ष सुअर, गाय एक समान थे। उसने अंग्रेजी का जाल फैलाकर हमें पाश्चात्य सभ्यता में रगना शुरू किया। कुछ देशभक्तो, क्रान्तिकारियो, महर्षि दयानन्द व उनके उत्तराधिकारी आर्यसमाजी, महात्मा गान्धी व उसकी कांग्रेस, सुभाषचन्द्र बोस व आजादहिंद फौज सबने मिलजुलकर १६४२ में एकत्र होकर यह घोषणा की कि "अंग्रेजो भारत छोड़ो"। अंग्रेज एक कतरा खून अपना बहाए बिना वापिस चले गये और देश के टुकड़े-टुकड़े करके सदैव के लिये विघटनकारी तत्त्व पैदा कर गये। १६४७ में अंग्रेज चला गया। ४३ साल होगये हमने कोई सबक नही सीखा। आपा-धापी है, देश मे रहनेवाले, देश का अन्न जल खानेवाले, सच्चे व सुच्चे न बन सके। २ प्रतिशत अंग्रेजी जाननेवाले हैं, उन पर २००० के लगभग विधायक, लोकसभाई, राज्यसभाई हम पर न्याय-पालिका व प्रशासन द्वारा शासन कर रहे हैं। परन्तु राष्ट्रीयता का अभाव है जिसका कारण यह अंग्रेजी भाषा है। भारत की १६ प्रांतीय भाषाएं हैं वह हमे बुरी लगती हैं। प्रदेशों मे अपनी-अपनी प्रान्तीय भाषा व केन्द्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी होकर ही राष्ट्रीयता आयेगी। केन्द्र सरकार कब तक इसे टालती रहेगी?

—सुबोधानन्द
दयानन्दमठ घडरा (कांगड़ा)

दयानन्द की मानो बात

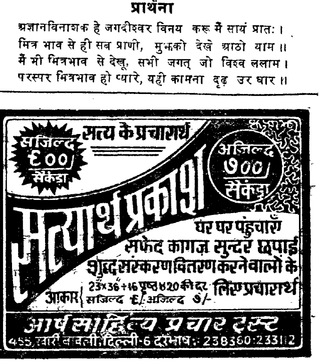
(ले० प० गंगाप्रसाद विद्यार्थी १७५ जयनगर जबलपुर)

दयानन्द की मानो बात, नहीं करो तुम निज से घात।
दयानन्द जी कहता सत्य, निश्चय वह वेदो का भक्त ॥१॥
तुम दयानन्द की करो परीक्षा, सच जानो तो कितना अच्छा।
सच को जान असत्य को त्यागो, सबको छोड़ निज को मानो ।२।
पहिले दयानन्द की जीवनी पढ़ो, सोचो विचारो और कुछ गुनो।
आत्मकथा तो सर्वोत्तम है, पर वह अधूरी और सक्षिप्त है ॥३॥
जिस जीवनी मे उनके मन्तव्यों के विरुद्ध बात न हो।
वही ठीक अन्यथा विषसम्पृक्त अन्नवत् त्याज्य है ॥४॥
वेद क्यों सर्वोत्तम ग्रन्थ है, नही इसमे किसी का पक्ष है।
अन्य ग्रन्थों में भरा पक्षपात, वेद सदा कहता न्याय की बात ॥५॥
वेद की सभी बातें सत्य हैं, मानव हित मे सभी कथ्य हैं।
वेद की बात विज्ञान से सिद्ध है, विज्ञान विरुद्ध निश्चय असत्य है
वेद वेद बस चिल्लाते हैं, नही वेद को जानते हैं।
जो नहो वेद से करते न्याय, उन पर है निज का अन्याय ॥७॥
वेद ज्ञान जभी तुम जानो, तुरन्त उसे आचरण में लाओ।
वेदाचरण जो करते हैं, निश्चय उत्तम फल पाते हैं ॥८॥
वेदो के पढो प्रामाणिक भाष्य, हिन्दी उर्दू अंग्रेजी मे प्राप्य।
दयानन्द का उत्तम भाष्य, अन्यो ने भी किए प्रयास ॥६॥
होवे विचार कभी यदि तुम्हे वेद पढ़ने का।
तो पहिले पढ़ो 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ॥१०॥
निज जीवन उत्तम बनाने का, यदि तुम्हे शौक हो।
तो ऋषिकृत 'सत्यार्थप्रकाश को, तुम बहुत बार पढ़ो ॥११॥

— —

प्रार्थना

अज्ञानविनाशक हे जगदीश्वर विनय करू मैं सायं प्रातः।
मित्र भाव से ही सब प्राणी, मुझको देखे आठो याम॥
मैं भी मित्रभाव से देखू, सभी जगत् जो विश्व ललाम।
परस्पर मित्रभाव हो प्यारे, यही कामना दृढ़ उर धार॥



(पृष्ठ १ का शेष)

जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है उसका नतीजा हमारे सामने है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४२ वर्षों बाद भी देहाती युवकों को बड़े और महत्त्वपूर्ण पद सरकारी नौकरियों में नहीं मिल पाये हैं। केवल मुट्ठीभर लोगों को ही आई०ए०एस० तथा सहवर्गी पद मिल सके हैं। वे भी उनको जिनके पिता या अभिभावक सरकारी अफसर हैं। "शुद्ध गांव वाले" तो आई०ए०एस० तक पहुंच ही नहीं सकते।

हरयाणा की कुल आबादी का ५१ प्रतिशत, अहीर, गूजर, जाट, सिख जाट, राजपूत, सैनी, रोड, मेव, बिश्नोई, कम्बोज इत्यादि का प्रतिनिधित्व आई०ए०एस० में केवल ८.५ प्रतिशत ही है। यदि इनमें से उन अफसरों को निकाल दिया जाए जिनके पिता या अभिभावक सरकारी अफसर थे या जिनके पास शहर के स्कूलों में पढ़ाने के साधन थे, तो पता चलेगा कि शुद्ध गांव वालों का प्रतिनिधित्व ४ प्रतिशत भी नहीं। दूसरे प्रदेशों की अवस्था हरयाणा से बेहतर नहीं हो सकती।

इन तथ्यों के प्रकाश में और भारत के सबसे बड़े प्रदेश के मुख्यमन्त्री की राय में, राज्याधीन सेवाओं में यदि पिछड़े हुए किसी नागरिक वर्ग का सबसे कम प्रतिनिधित्व है तो वह है "शुद्ध ग्रामीण" जिसने गांव के स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है। इसलिये बिना लिहाज जाति और मजहब के "शुद्ध गांव वालों" जिसने शिक्षा गांव के स्कूल में पाई है, राज्याधीन सेवाओं में आरक्षण का अधिकारी बनता है। प्रधानमन्त्री "पिछड़ी जातियों" को लोकसभा और विधानसभाओं में ४० प्रतिशत सीटें देने की घोषणा करते हैं, फिर सरकारी सेवाओं में आरक्षण २७ प्रतिशत क्यों? वह भी ४० प्रतिशत ही होना चाहिए। इस आरक्षण के अन्तर्गत वे सभी जातियां आ जायेंगी, जिनके लिए मण्डल आयोग ने २७ प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश की है।

शहरों की गन्दी बस्तियों और शहरीकृत ग्रामों की अवस्था गांव वालों जैसी ही है, इसलिए बिना लिहाज जाति और मजहब के ५ प्रतिशत आरक्षण इनके लिए भी होना चाहिए।

अनुसूचित जातियों, जनजातियों का आरक्षण यथापूर्व रहे और भूतपूर्व सैनिकों, विकलांगों और स्वतन्त्रतासेनानियों का आरक्षण भी यथापूर्व रहे।

शिक्षासंस्थाओं में प्रवेश के लिए आरक्षण अनिवार्य

प्रधानमन्त्री ने यह कहकर कि शिक्षासंस्थाओं में प्रवेश में आरक्षण नहीं होगा, सब गुड़ गोबर कर दिया। इस घोषणा से आरक्षण के द्वारा जो पद पिछड़े वर्गों को मिल सकते थे उनसे तो वञ्चित कर ही दिया इसके अलावा स्वावलम्बन स्वरोजगार के भी रास्ते बन्द कर दिये हैं। यह सर्वविदित है कि व्यावसायिक और पेशावर शिक्षा के महाविद्यालयों और संस्थानों में प्रवेश के लिए न्यूनतम अंक ७५ प्रतिशत होने चाहिएं, स्नातक आनर्स आदि में प्रवेश के लिए न्यूनतम अंक ६५ प्रतिशत होने चाहिएं। स्नातक स्तर के अच्छे महाविद्यालयों में भी अच्छे अंक प्राप्त किये बिना प्रवेश सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में कम से कम योग्यता के अभाव में शुद्ध गांववालों को बड़े पद और नौकरियां कैसे मिल सकेंगी, यदि न भर जाने पर व जगह खाली रखी जाये तो वे पद खाली ही पड़े रहेंगे। इसलिये जब तक प्रत्येक तहसील या ताल्लुका में एक-एक निवासीय नवोदय स्कूल गांव के स्कूलों में पढ़नेवाले लड़के और लड़कियों के लिए सरकारी खर्चे से नहीं खोले जायें और गांव के स्कूलों की शिक्षा का स्तर ऊंचा न किया जाए, तब तक शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के लिए "शुद्ध गांववाले" बच्चों के वास्ते आरक्षण रहना चाहिए। ऐसे बच्चों के लिए विशेष क्लासें छुट्टियों में लगानी पड़ें तो लगानी चाहिएं, ताकि वे जिन कक्षाओं में प्रविष्ट किये गये हैं उनमें चल सकें।

आर्थिक मानदण्ड :-

आरक्षण का लाभ नये से नये और अधिक से अधिक लोगों को मिल सके। इसके लिए सभी आरक्षणों के लिए आर्थिक मानदण्ड आवश्यक है। जो प्रथम श्रेणी के अधिकारी राज्याधीन सेवाओं में या उसके समकक्ष पद, सार्वजनिक क्षेत्र या निजी क्षेत्र के धन्धों में नियुक्त हैं या जो आयकर या सम्पत्ति कर दे रहे है या जिनके पास २० एकड़ से अधिक सिंचित अथवा ४० एकड़ से अधिक असिंचित भूमि है उनके लड़के लड़कियों को आरक्षण का लाभ नहीं मिलना चाहिए।

उपसंहार :-

मण्डल आयोग देश को जातियों में बांटनेवाली रेखाओं को प्रतिष्ठापित करके सदा-सदा के लिए जन्मना जातियों के आधार पर बांटने का दोषी कहा जायेगा। कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों तथा केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के सदस्यों समेत कुछ राजनेताओं की अदूरदर्शिता से जातियों में टकराव की स्थिति पैदा होगई है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि अनेक नवयुवकों, नवयुवतियों और अन्य नागरिकों को अपने मूल्यवान् जीवनों की आहुति देनी पड़ी और अरबों रुपये की सार्वजनिक सम्पत्ति बर्बाद हुई है। आज भी आत्महत्याओं, आत्मदाहों का सिलसिला जारी है और आरक्षणसमर्थक और आरक्षणविरोधी रैलियों में सर फुटव्वल हो रहे है। कैसी विडम्बना है कि आज चारों तरफ ताप और गरमागरमी तो है परन्तु आलोक नहीं है। शायद हम भूल गये हैं कि हमारे मूलभूत कर्तव्य भी हैं, केवल मौलिक अधिकार ही नहीं और दोनों का उल्लेख हमारे संविधान में है।

संविधान के मूलभूत कर्त्तव्यों सम्बन्धी भाग ४-ए, अनुच्छेद ५१ए (ई) के अनुसार" भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह मजहब, भाषा, क्षेत्र तथा वर्गों से ऊपर उठकर देश के सभी लोगों में सद्भाव, सौमनस्य और सर्वनिष्ठ भाईचारा बढ़ावे।"

समय की माग है कि हम अपने नवयुवकों का हृदय छूकर उनके हृदयों के घाव भरें और देश की टूटती राज्यव्यवस्था को संभालें। हम अपने देश के पिछड़े और शोषित सभी वर्गों को सब प्रकार का न्याय इस ढंग से दें, जिससे हमारा सर्वनिष्ठ भाईचारा मजबूत हो।

तथाकथित भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में यतिमण्डल का प्रस्ताव

श्री स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता मे वैदिक यतिमण्डल के प्रमुख सदस्यों की एक आवश्यक बैठक २३-९-९० को गुरुकुल गौतमपुर में सम्पन्न हुई जिसमें श्री स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी इन्द्रवेश द्वारा निर्मित तथाकथित भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध मे विचार किया गया। सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किया गया—

आर्यसमाज के संविधान के अनुसार बिना सार्वदेशिक सभा की अनुमति के कोई भी नया सगठन नहीं बन सकता। जहां तक श्री स्वामी अग्निवेश व श्री स्वामी इन्द्रवेश का सम्बन्ध है वे सार्वदेशिक सभा द्वारा पहले ही निष्कासित हैं अतः उन्हें आर्यसमाज के संगठन में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए उनके द्वारा स्थापित सगठन सर्वथा अवैधानिक एवं आर्यसमाज के लिए घातक है। अतः उसे अमान्य घोषित किया जाता है।

—स्वामी सुमेधानन्द
मन्त्री, वैदिक यतिमण्डल

हरयाणा के बुजुर्ग का निधन

रोहतक, २० अक्तूबर (काप्र)। इस जिले के पाकस्मा गांव में प्रदेश के सबसे ज्यादा उम्र के व्यक्ति श्री फूलसिंह का १०८ साल की आयु में निधन होगया। वे अपने पीछे पांच पीढ़ियों वाला परिवार छोड़ गये हैं। उनकी पांचवीं पीढ़ी में पोते की उम्र १७ साल है।

हरयाणा के लिए गम्भीर चुनौती

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि और ६ महीने के लिये बढ गई है, अब चुनाव मई १९९१ के पहले सप्ताह में अवश्य होने चाहिए। यह निश्चित ही जान पडता है कि अब राष्ट्रपति शासन की अवधि और नही बढ़ाई जा सकेगी, क्योंकि एक ओर जहां लोकसभा के मध्यावधि चुनाव होना तय लग रहा है जिसके कारण नई लोक सभा अप्रैल से पूर्व गठित नहीं हो पायेगी, वहां दूसरी ओर यदि लोक सभा भग न की हो तो भी दो तिहाई मत प्राप्त होना भी असम्भव सा ही लगता है। यदि मार्च के अन्तिम सप्ताह में पंजाब विधानसभा के चुनाव हों, जिसकी पूरी पूरी सम्भावना है तो पंजाब में चुनाव जीतने के लिये तथाकथित पंजाब समस्या का पूरा नही तो अधूरा हल तो निकालना ही पड़ेगा। पंजाब की समस्या का हल निकालने की प्रक्रिया शुरू होते ही एक बहुत बड़ी चुनौती हरयाणा के लिये उपस्थित हो जायेगी। समस्या के अधूरे हल के लिये भी चण्डीगढ़ तो पंजाब को देना ही पड़ेगा और उस समय यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से खडा होगा कि चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को फाजिलका अबोहर का इलाका मिले या नही।

मैथ्यू आयोग तथा वेंकटरमैया आयोगो ने जो रिपोर्ट दी है उन्होंने इस प्रश्न को पूरी तरह सुलझाया नही। मैथ्यू आयोग ने दो बातें तो मान ली एक यह कि फाजिलका अबोहर के ८५ गांव हिन्दी भाषी हैं और उनसे घिरे हुये दस गांव भी उनके साथ ही रखने पड़ेंगे और दूसरी यह कि १९८१ की जनगणना गलत थी, १९६१ की जनगणना ही सही साबित हुई। ये दोनो बातें मानकर हरयाणा को दे देना या दूसरा आयोग बिठाना यह बात भारत सरकार को सोप दी यह कहकर कि एक पजाबीभाषी गांव कन्दूखेड़ा बीच में पड़ने से फाजिल्का अबोहर के हिन्दीभाषी ग्राम हरयाणा की सीमा से नहीं जुड़ सके। मैथ्यू कमीशन की इस सिफारिश मे तथा उनकी अपनी मान्यता जो उन्होने खुले रूप मे घोषित की, विरोधाभास है। जब अकालियों ने पेशकश की कि वे ११ हिन्दी भाषी गांव पटियाला जिले मे से हरयाणा को राजधानी बनाने के लिये देने को तैयार है और वे ११ गाव हरयाणा से सीधे जुडे हुए है, तब न्यायमूर्ति मैथ्यू ने स्पष्ट कहा कि वे गांव तो हरयाणा के साथ जुड़े होने का कारण सीमा समायोजन के लिये राजीव लौंगोवाल समझौते की धारा ७.४ के अनुसार गठित आयोग हरयाणा को देने के लिये पाबन्द है, इसी प्रकार के और गांव होगे तो आप बताइये वे भी हरयाणा को धारा ७.४ के तहत आयोग के द्वारा को वैसे ही मिल जायेंगे। चण्डीगढ के बदले में तो हरयाणा को ऐसे ग्रामों से अलग गाव देने पड़ेगे और वे गाव धारा ७.२ के तहत फाजिल्का अबोहर क्षेत्र के ग्रान ही हो सकते हैं। यह तो सहज बुद्धि का तकाजा था कि जब हरयाणा की सीमा से जुड़े हुये हिन्दीभाषी गाव धारा ७.४ के तहत सीमा समायोजन के लिये हरयाणा में तत्सम्बन्धी आयोग को देने ही पडेगे और चण्डगढ़ के बदले में दिये जानेवाले ग्रामो से धारा ७.२ के अन्तिम वाक्य के अनुसार अलग होने चाहिये तब फाजिल्का अबोहर के ८५ हिन्दीभाषी गांव और उनके बीच में फसे हुए करीब दस गाव चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को दिये जाने चाहिये। कन्दूखेड़ा (पजाबी भाषी गाव) क्योंकि उन ९५ ग्रामो के हरयाणा की सीमा से जुड़ने मे रुकावट है, इसलिये ये ९५ गांव सीमा समायोजन के लिये दिये जानेवाले ग्रामों से अलग श्रेणी के गांव हो जाते है और इसीलिये यही गाव हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले मे दिये जाने चाहियें।

सीमा समायोजन के लिये दिये जानेवाले गांव चण्डीगढ के बदले मे दिये जानेवाले ग्रामों से अलग होने चाहियें, यह बात वेंकटरमैया आयोग ने भी मानी है, इसीलिये उस आयोग ने हरयाणा की सीमा से जुड़े हुये ३२ हिन्दीभाषी गांव चण्डीगढ़ के बदले में देने से इन्कार कर दिया और सिफारिश की कि इन ग्रामो को छोड़कर (जो सीमा समायोजन के लिए वैसे ही हरयाणा को मिलनेवाले हैं) ७०,००० एकड़ भूमि के दूसरे गांव देने पड़ेंगे। मेरे इस तर्क को उस समय के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी ने ठीक माना और इसलिये चौ० बंसी लाल को कहा कि शायद ये फाजिल्का अबोहर के हिन्दीभाषी गांव ही हरयाणा को देने पड़ेंगे। इसके बाद ही चौ० बन्सीलाल ने अपना रुख बदला और वेंकटरमैया की सिफारिश जिसका वे समर्थन मुख्यमन्त्री बनते ही कर चुके थे उससे हटकर बात करने लगे।

कोई भी प्रधानमन्त्री हो या सरकार हो इस सच्चाई से नहीं भाग सकते, और यदि हरयाणा डटकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिये खड़ा हो जाये तो ये गांव हरयाणा को देने ही पड़ेगे। यह चुनौती आने वाली है और सभी हरयाणावासियों को एकजुट होकर तथा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर अपनी सब प्रकार से उचित मांग को मनवाना चाहिये। यह दोहराना आवश्यक है कि चण्डीगढ के बदले हरयाणा को फाजिल्का अबोहर के गांव देने की पेशकश स्वयं अकालियों के नेता संत फतेहसिह ने की थी, जिसके कारण श्रीमती इन्दिरा गांधी ने जनवरी १९७० में अपना निर्णय दिया था। सन्त लोगोवाल भी अपनी हत्या से एक सप्ताह पहले सिद्धान्त रूप में इस निर्णय को मान चुके थे और उन्होंने सार्वजनिक रूप से इसकी घोषणा फिरोजपुर में की थी।

हरयाणा की वर्तमान सरकार तो बनी ही न्याययुद्ध के आन्दोलन के फलस्वरूप और उसमें फाजिल्का अबोहर और रावी व्यास के पानी के मुद्दे ही न्याययुद्ध के प्राण थे। इसलिये इस सरकार को तो आगे बढ़कर इस चुनौती का मुकाबला करना ही चाहिये और मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपना कर्तव्य निभायेगी।

रावी व्यास का पानी :-

रावी व्यास के पानी के बारे में इराडी पंचाट का फैसला अप्रैल १९८७ में आगया था। मार्च १९७६ के फैसले के अनुसार हरयाणा को ३५ लाख एकड़ फुट के अलावा जितना भी अतिरिक्त पानी आगे चलकर उपलब्ध होगा वह मिलेगा और पंजाब को किसी हालत में ३५ लाख एकड़ फुट से अधिक पानी नही मिलेगा। परन्तु इराडी पंचाट ने १८ लाख फुट से कुछ अधिक अतिरिक्त पानी उपलब्ध होने की संभावना के आधार पर पंजाब को ५० लाख एकड़ फुट से कुछ अधिक और हरयाणा को ३८ लाख २० हजार एकड़ फुट पानी दिया है, परन्तु यह स्पष्ट नही किया कि यदि अतिरिक्त पानी इससे कम मिले या बिल्कुल न मिले उस अवस्था में किसको कितना मिलेगा? वर्तमान हरयाणा सरकार ने १९८७ में ही इराडी पंचाट के पास पंजाब की तरह ही निगरानी की हुई है। तीन वर्ष बीतने पर भी उसका अभी तक कोई फैसला इराडी पंचाट ने नहीं किया है।

हरयाणा सरकार को सक्रिय होकर निगरानी का फैसला शीघ्र से शीघ्र करवाना चाहिये। राजीव लौंगोवाल समझौते के अन्तर्गत १५ अगस्त १९८६ तक सतलुज यमुना लिंक नहर पंजाब सरकार को बना देनी चाहिये थी, परन्तु उसके बाद भी ४ साल बीतने पर अभी लिंक नहर के निर्माण का काम अधूरा पड़ा है और मार्च १९९१ तक बनाने के वायदे पर भी भरोसा नहीं जमता। उधर कभी कांग्रेसी और कभी अकाली लिंक नहर में मिट्टी डालकर नहर को भरने की बात एक दूसरे से बढ़ चढ़कर करते रहते हैं। कभी राजनैतिक नेता और कभी पंजाब के पूर्व इन्जीनियर श्री पालसिंह ढिल्लो आदि रावी व्यास का पानी हरयाणा को दिये जाने से इन्कार करते रहते हैं। अकाली तो स्वयं आयोग और पंचाट की बातें करते हैं और फिर उनके फैसलों को मानने से इन्कार कर देते हैं। यह तो उनके लिए छोटी बात है, वे तो स्वयं अपनी पेशकश पर किये गये फैसलों, अकाल तख्त पर बैठकर किये गये फैसलों और अपने हस्ताक्षरों के द्वारा माने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज जातिगत आधार पर आरक्षण का समर्थन कैसे कर सकता है ?

डा० प्रशान्त वेदालंकार, रूपनगर, (दिल्ली)

गतांक से आगे

महर्षि दयानन्द नौकरियों की व्यवस्था व्यक्ति की योग्यता के ही आधार पर करते थे। २४-२५ वर्षों की आयु तक सबको समान शिक्षा, निवास आदि की सुविधा देने के उपरान्त जो गुण कर्म स्वभाव से (जन्म से नहीं) ब्राह्मण हैं उन्हें बौद्धिक कार्य दिये जाएं, जो शौर्य और उत्साह में आगे हैं वे सेना और पुलिस में जाकर देश की बाह्य और आन्तरिक शत्रुओं से रक्षा करें। जिनकी कृषि व उद्योगों के विकास में विशेष अभिरुचि व योग्यता प्राप्त है वे इन कार्यों को सम्भाल लें। जिनकी इन कार्यों में से किसी भी कार्य में योग्यता उत्पन्न न हो सकी हो वे इनके सहायक बन जाए। पर उनके खान-पान, परिधान आदि में भी कोई कमी नहीं रखनी चाहिए।

नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था से प्रतिभा पलायन की अथवा प्रतिभा के कुण्ठित होने की समस्या उत्पन्न होती है।

इस दृष्टि से आर्यसमाज के सिद्धान्तों के अनुसार मण्डल आयोग में उद्धृत तथा उनके अनेक पक्षधरों द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित उदाहरण का कोई मेल नहीं है "श्री मण्डल ने मोहन और लल्लू नामक दो बालकों के उदाहरण से इस बात को सिद्ध किया है कि श्रेष्ठ समाज में योग्यता जन्मना दान व परिवेशगत विशेषाधिकार से प्राप्त होती है। मोहन के मा-बाप मध्यवर्गीय शिक्षित लोग है। वह शहर के एक बड़े स्कूल में पढ़ता है, जहा पढ़ने के अलावा वह स्कूल की ढेर सारी अन्य गतिविधियों में भाग लेता है। घर में उसके लिए एक अलग कमरा है और उसके अध्ययन में उसके मा-बाप दोनों सहायता करते है। घर में रेडियो और टैलीविजन है। पिता ढेर सारे अखबार और पत्र-पत्रिकाए लाते है। मोहन क्या पढ़ेगा, कौनसा कोर्स करेगा, इस बाबत उसके अभिभावक हमेशा उससे चर्चा करते है और निर्देश देते हैं। मोहन के मित्र भी उस वर्ग के हैं और उसे यह भी पता है कि भविष्य में उसे कहा पहुचना है।

जबकि लल्लू गांव में रहता है। पिछड़ी जाति के उसके मां-बाप की गांव में सामाजिक स्थिति निम्न है। गाव में उसके चार एकड़ खेत है, जिसके उपार्जन से उसका आठ सदस्यीय परिवार दो कमरों के कच्चे मकान में जीवन यापन करता है। किसी तरह वह गाव से प्राइमरी शिक्षा पूरी करके पास के कस्बे से हाई स्कूल करता है और उच्च शिक्षा के लिए तहसील मुख्यालय में अपने दूर के चाचा के घर रहकर पढ़ाई करता है। परिवार, अभिभावक या अपने मित्रों से उसके कैरियर के बारे में भी कोई बात नहीं होती, न ही कोई सहायता मिलती है। किन्हीं सांस्कृतिक गतिविधियों में वह भाग नहीं ले पाता, पर किसी तरह अपनी पढ़ाई पूरी कर लेता है। ग्रामीण वातावरण में पलने-बढ़ने के कारण उसके स्वभाव में एक अनगढ़ता है, उसका उच्चारण भ्रष्ट, व्यवहार अकुशल और आत्मविश्वास की उसमें थोड़ी कमी है।

मान लें कि जन्म के समय दोनों की बुद्धिमत्ता का स्तर यदि समान था, तो भी वातावरण, परिवार, रहन-सहन तथा परिवेश के कारण किसी भी प्रतियोगिता में मोहन लल्लू से मीलों आगे रहेगा। यदि लल्लू का जानकारी कोर्स मोहन से बहुत ज्यादा भी रहा होता तो भी मोहन अब किसी भी प्रतियोगिता में अपनी 'योग्यता' के आधार पर लल्लू से बहुत काबिल सिद्ध होगा। इसलिए सिर्फ योग्यता की बात करना या योग्य बनाने के लिए सही शिक्षा और अवसर की बात करना एक तरह से इस सामाजिक विषमता को बढ़ाने में ही मदद करेगा, क्योंकि आज यदि लल्लू जैसे लोगों को योग्य बनाने के लिए ईमानदारी से ठोस प्रयास प्रारम्भ भी किए जाएं, तो जब तक लल्लू मोहन के 'स्तर' पर पहुंचेगा, मोहन योग्य से योग्यतर और योग्यतम तक पहुंच चुका होगा।

महर्षि दयानन्द इस प्रकार के उदाहरणों से परिचित थे। इसी कारण उन्होंने पिछड़ों की मां की गर्भावस्था से लेकर उसकी सन्तान की २४-२५ वर्ष की आयु तक प्रत्येक के लिए समान स्तर की चर्चा पर ही बल दिया। यदि विश्वनाथ प्रतापसिंह और उनकी सरकार सबकी शिक्षा के लिए समान अवसर नहीं जुटा पाती तो उसे केवल नौकरियां में आरक्षण की घोषणा करने का भी कोई अधिकार नहीं है। यदि वे पब्लिक स्कूलों की समाप्ति की घोषणा नहीं कर सकते तो उन्हें उन स्कूलों में कम से कम ५० प्रतिशत स्थान पिछड़ों के लिए आरक्षित करने चाहियें थे। पर देश में अंग्रेजी रहते पिछड़ों के विकास की कल्पना करना मूर्खों के स्वर्ग में रहना है।

मण्डल आयोग के अनुसार आरक्षण की घोषणा करते समय हमें श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह का यह कथन सत्य होते हुए भी निरर्थक प्रतीत हुआ। उन्होंने कहा था—आज से ४० वर्ष पूर्व हमारे सविधान में यह परिकल्पना की थी कि सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों की पहचान की जाएगी। उनकी कठिनाइया दूर की जाएगी और उनकी दशा में सुधार किया जाएगा। लेकिन दुर्भाग्य से यह अपेक्षा आज तक पूरी नहीं की जा सकी जो हमारे सविधान के बुनियादी ढांचे के विपरीत है।" यह सत्य है कि पहले की सरकारें यह कार्य नहीं कर सकीं, वी० पी० सिंह को कहना चाहिए था कि मैं यह काम करके दिखाऊंगा। स्वामी अग्निवेश व उनके साथियों को 'आर्यसमाजी' के रूप में यदि वि० प्र० सिंह का साथ देना भी था तो वे यह कहते कि इनके विकास में हम आपके साथ हैं। पता नहीं इन महानुभावों ने केवल सरकारी व अर्धसरकारी नौकरियों में जो नौकरियों की दृष्टि से कुल १ प्रतिशत है, में आरक्षण से पिछड़ों की उन्नति की कल्पना कैसे करली। नाथद्वारा में हरिजनों के प्रवेश का आन्दोलन चलानेवाले नेता ने उनकी शिक्षा मन्दिरों में प्रवेश की मांग क्यों नहीं की ?

जातिगत आरक्षण से जातीय युद्ध भड़कने की आशंका है। इस प्रकार का आरक्षण देने के उपरान्त यदि पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण का गोरखधन्धा एक बार आरम्भ होगया तो कुछ ही वर्षों में प्रत्येक पिछड़ी जाति भी अपनी-अपनी संख्या के अनुसार अपना प्रतिशत तय करने की मांग करेगी। फिर सवर्णो की विविध जातियां भी अपनी-अपनी संख्या की दुहाई देकर कोई पद प्राप्त करना चाहेगी। क्योंकि सवर्णों में भी समस्या है कि नौकरी ब्राह्मण को मिले या वैश्य को? अनुसूचित जातियों और जनजातियों में अभी इस प्रकार का संघर्ष नहीं है, पर इस बात से इन्कार कौन कर सकता है कि उनकी भी कुछ ही जातियां आरक्षण से लाभान्वित हो सकी हैं।

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री जीवन-चरित्र

(लेखक - डा० सुदर्शनदेव आचार्य)

(प्रकाशक - आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक)

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत् के महान् विद्वान् नेता पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री का जीवन-चरित्र छपकर तैयार हो गया है। यह जीवन-चरित्र प्रत्येक आर्यसमाजी बहिन भाई के लिये जीवन पथ का प्रदर्शक है। अतः इसकी एक प्रति प्रत्येक आर्य के घर पर तथा आर्यसमाज के पुस्तकालय में अवश्य होनी चाहिये। इसका मूल्य १०) दस रुपये है।

—वेदव्रत शास्त्री

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव २५ नवम्बर को रोहतक में होगा। सभा मन्त्री

ऋषि निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में यज्ञों का कार्यक्रम

दिनांक १८-१०-९० को महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर्व के उपलक्ष्य मे सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी द्वारा आर्यसमाज नलवा मे प्रातः यज्ञ किया गया। २ बजे तक आर्यसमाज कंवारी की ओर से चौपाल मे यज्ञ किया गया। इस अवसर पर आर्य-समाज के अधिकारियों के अतिरिक्त गांव के प्रतिष्ठित लोगों एवं स्कूली बच्चों ने भी बढ चढ़कर भाग लिया। प्रधान श्री क्रान्तिकारी जी तथा सूबेदार रामेश्वर आर्य ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला तथा दीपावली के महत्त्व पर भी विचार रखे। लोगो से जुए तथा शराब जैसी भयंकर बुराइयों से दूर रहने का आग्रह किया।

सायं ५ बजे खेतों की ढाणी (आर्य निवास) पर भी यज्ञ किया गया। आज ही श्री अत्तरसिंह जी के कनिष्ठ सुपुत्र श्री राजबीरसिंह आर्य का १३वाँ जन्म दिवस भी मनाया गया।

डा० ओम्प्रकाश आर्य

राजलूगढ़ी में वेदप्रचार की धूम

आर्यसमाज राजलू गढी जिला सोनीपत में सभा की ओर से १२ से १५ अक्तूबर तक म० जयपाल आर्य की भजन मण्डली ने भजनों द्वारा प्रभावशाली वेदप्रचार किया। ग्राम के नर-नारियों ने उनके प्रचार को ध्यान से सुना। श्री जयपाल जी ने अपने प्रचार में जाति के आधार पर आरक्षण नीति का विरोध किया तथा सबको समान शिक्षा तथा आर्थिक आधार पर कार्य देने का सुझाव दिया। नवयुवकों से अपने राष्ट्र की सम्पत्ति को नष्ट न होने देने की प्रेरणा की और शराब आदि सामाजिक बुराइयो से दूर रहने का परामर्श दिया। इस अवसर पर सभा को ३२०) तथा वेदप्रचार १०१) श्री सिद्धान्ती जयन्ती के लिए दान प्राप्त हुआ।

—केदारसिंह आर्य

(पृष्ठ ४ का शेष)

हुए फैसलों से भी मुकर जाते है। वे कानून की, भाईचारे की, प्रेम की किसी बात को मानते ही नही, सदा मुकरते है और धमकी देते हैं। हरयाणा को इस चुनौती का भी मुकाबला करना पड़ेगा। हरयाणा चाहता तो यह है कि दो भाई अलग हुए है तो मिल बैठकर या अदालत से फैसला करवाले और भाई-भाई की तरह रहे। परन्तु धमकी और धौंस अगर वे हरयाणा को दबाना चाहें और उधर उनकी धौंस मानकर हरयाणा को राष्ट्रहित का वास्ता देकर देश के नेता दबायें, उन दबावों में आते-आते हरयाणा बहुत कुछ खो बैठा है, अब हद हो चुकी है और यदि अकालियों की अनुचित बातें मानते ही चले गये तो उसमें देश को रोज-२ अधिक से अधिक अहित ही होगा और राष्ट्र की एकता और अखडता के लिये खतरा बढता जायेगा। इसलिये हरयाणा देशहित के लिए और अपने सब प्रकार से उचित अधिकारों के लिए चुनौती का मुकाबला करेगा। रावी व्यास का पानी न्याय के अनुसार तो ६० प्रतिशत हरयाणा को मिलना चाहिये था, परन्तु वह हर मरहले पर घटते-घटते आधे से भी कम रह गया है और इसको भी छोड़ेगा तो न हरयाणा ही अपनी और अपनी जनता की समृद्धि कर पायेगा और न तुष्टीकरण की आत्मघाती नीति के कारण देश की एकता और अखण्डता के नित्यप्रति बढ़ते खतरे से राष्ट्र को बचा सकेगा। हरयाणा और राष्ट्र के हित इस सदर्भ में बिल्कुल एक होगये है और उनकी रक्षा करना हरयाणा के अधिकारों की-ही नहीं राष्ट्र की रक्षा करना होगा। इस पुनीत कर्त्तव्य पालन के लिये हरयाणा को एकजुट होकर अकालियो की चुनौतियों का मुकाबला करना होगा और यदि अकालियों ने अपनी धरती से लिंक नहर और पानी न को आने दिया तो उसका जवाब भी बराबर के प्रतिबन्ध लगाकर देना होगा। हम चाहते हैं यह नौबत न आये, परन्तु इसके लिये तैयार रहना अब अनिवार्य होता जा रहा है।

महर्षि निर्वाण उत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द का १०७ वां निर्वाणोत्सव १८-१०-९० को आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में रामलीला मैदान में मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता पं. रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने की। अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. प्रकाशवीर विद्यालंकार ने कहा कि आज के युग में महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों का अनुसरण करने की बड़ी आवश्यकता है। अन्य प्रमुख वक्ताओं में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, डा. सुषमा मल्होत्रा, डा. वाचस्पति उपाध्याय, श्री रामचन्द्र विकल आदि के नाम उल्लेख के योग्य हैं। इस अवसर पर प्रो. प्रकाशवीर का दिल्ली सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने स्वागत किया और आशा की कि श्री विद्यालंकार विद्यासभा के मन्त्री पद के भार को योग्यता से निभायें।

—डा० शिवकुमार शास्त्री मन्त्री

डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य का अभिनन्दन

कार्तिक पूर्णिमा तदनुसार २ नवम्बर १९९० वार शुक्रवार को प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक वैदिक विद्वान् डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य (संस्कृत प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, झज्जर) का हिसार में अभिनन्दन किया जायेगा।

प्रातः ८ से १० बजे तक सन्ध्या हवन होगा और बाद में १२ बजे तक विद्वानों के उपदेश होंगे जिसमें अनेक संन्यासी-महात्मा-विद्वान् पधारेंगे।

निवेदक :-
स्वामी अग्निदेव भीष्म अध्यक्ष
वैदिक योग आश्रम, हिसार

आर्य माता का उपदेश

जा मेरी बेटी ससुराल, करिये आर्यत्व का ख्याल।
म्हारा कहण पुगाणा है॥ टेक॥

आर्यकुल की बेटी सै वेद धर्म का ख्याल करिये।
सास-ससुर और पति का हरदम तू सम्मान करिये॥
नित्य प्रति हवन ऋषि ग्रन्थ का फरमान करिये।
विदुषी बनी नाम कमा म्हारे पूरे अरमान करिये।
बनाले घर खुशहाल, पाखण्ड की करिये टाल।
सत्य सन्देश सुनाणा है॥ १॥

पत्थर धोकण मन्दिर में भूल के जाइये मतना।
पाखण्डी मस्टण्डे पण्डे इनको गुरु बनाइये मतना।
जादू टोणे गण्डे ताबीज इनसे बनवाइये मतना।
श्रद्धा से श्राद्ध कर जीवित को भुलवाइये मतना।
खाइये गोघृत दाल, सात्विक भोजन का हो थाल।
म्हारा यो हे खाणा है॥ २॥

पीर सैय्यद की कब्रों में श्रद्धा नहीं जमानी है।
मुसलमान चालाक बणे म्हारी ये नादानी है।
झूठे देवी-देवतो ना गुड़गांवें धोक लगाणी है।
घर में रह स्वाध्याय कर चुगली नहीं खाणी है।
करिये अच्छे ख्याल, बिगड़े ना थारा हाल।
वेद धर्म बचाना है॥ ३॥

नीडर बनके रहना सीख दुःख नहीं पावेगी।
प्रण कर ससुराल जा अनपढ़ को पढ़ावेगी।
आर्ष ग्रन्थ पढ़ के सभी को सुनावेगी।
आर्य बना परिवार ओ३म्ध्वज फहरावेगी।
बजा 'रामचन्द्र' सुरताल, अपनों को ले संभाल।
ये आर्यों का गाणा है॥ ४॥

रचयिता—मा० रामचन्द्र आर्य
मु० पो० नलवा (हिसार)

स्त्री जाति और महर्षि दयानन्द

स्त्री जाति भी दयानन्द की उतनी ही ऋणी है जितने कि मानव जाति के अन्य वर्ग हैं। यदि स्वामी दयानन्द पर प्रकाश डाला जाये जो कि मानस विशेषतः हिन्दू मानस को अदृश्य रूप से प्रभावित करते हैं तो यह ऋण और भी स्पष्ट हो जायेगा।

१९वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द आए और उन्होंने मानवीय विधान में पुरुष एवं स्त्री रूप से निम्नवर्गीय एव कुलीन, दास सामन्त ब्राह्मण एव अछूत सब एक दूसरे के बिना काम चला सकते हैं। परन्तु पुरुष के बिना स्त्री जाति मानवरूपी ईकाई के दो भाग हैं और एक का दूसरे के विना सोचना भी असंभव है फिर भी स्त्री जाति के साथ सदैव कुछ दुर्भाग्यपूर्ण जुड़ा है।

स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया कि हिन्दू स्त्री की दशा भी दूसरी स्त्रियों से किसी तरह भिन्न नहीं थी। गृहस्थी में उसका स्थान निम्नस्तरीय था। उसे चिन्ता परदे मे रखा जाता था। अर्थात् बाहर नहीं निकलने देते थे। बाहर निकलते समय घूघट निकालना आवश्यक था। उसके लिये ज्ञानप्राप्ति आवश्यक नहीं समझी जाती थी बल्कि यह सकटपूर्ण मानी जाती थी।

स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् अर्थात् स्त्री को शूद्र कहकर पुकारते थे और उनको पढ़ाया भी नहीं जाता था। संस्कृत पण्डितों की प्रिय सूक्ति थी। वेदों के बारे में कोई भी ज्ञान देने का भयकर पाप करने का साहस भी कर सकते थे। पवित्र धार्मिक ग्रन्थो से परिचय भी नहीं कराया जाता था। हजारों पाठशालाये थी परन्तु लड़कियो के लिये एक भी नही थी। हिन्दुओ की अपनी माताओ, बहनो, पत्नियों और पुत्रियो के प्रति ऐसी धारणायें थी और अपने साधन और अभिरुचि के अनुसार जितनी चाहे पत्नियां रख सकता था जिनकी स्थिति दासियो से बढ़कर नही थी।

देश के अन्य भागों में दशा इतनी बुरी थी कि पुत्री का होना ही सबसे बड़ा शाप समझा जाता था। इसलिए लड़की उत्पन्न होते ही मार दी जाती थी और बालविवाह की प्रथा होने से कभी कभी तो एक वर्ष की बालिका भी विधवा हो जाती थी और ऐसी विधवाओं की कमी नहीं थी। अभी भी यह बिमारी विद्यमान है। स्त्रियो में भी दूसरी अयोग्यतायें थी। जिनमें सबसे बुरी बात यह थी कि उनमें अपनी स्थिति को अनुभव करने की क्षमता भी नहीं थी।

स्त्री जाति की दशा से स्वामी दयानन्द बहुत दुःखी थे परन्तु उन को यह देखकर आश्चर्यमिश्रित हर्ष हुआ कि वेदों में नारी की इस हीनता की स्वीकृति नहीं है। वैदिक साहित्य पढ़कर उन्हें पता चला कि प्राचीन वैदिक धर्म स्त्री को पुरुष के सम्भावित जीवन साथी के रूप मे देखता है और वैदिककाल में स्त्री को समाज से. बहुत उच्च-स्थान प्राप्त था। भवभूति की प्रसिद्ध पक्ति :-

"गुणाः पूजास्थान न तु लिंग न च वयः" अर्थात् गुण ही पूजे जाते हैं न तो लिंग और न आयु, पुरुष या स्त्री दोनों के समान रूप से लागू होती थी। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थप्रकाश मे उन्होंने इस विषय में चर्चा की है और वेदों तथा अन्य प्रवित्र ग्रन्थों से पुष्टि के लिये उदाहरण दिये हैं :—

१) स्त्री को भी पुरुष के समान पढ़ाना चाहिये।
२) स्त्री को पुरुष के समान अधिकार हो।
३) प्रत्येक कन्या को अपने भाई के समान यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार हो और उसका यज्ञोपवीत सस्कार हो।
४) उसका विवाह बाल अवस्था मे न हो और न ही उसकी इच्छा के विपरीत हो।
५) विवाह के पश्चात् ससुराल में उसे पुरुषों के समान सब सुविधायें मिलनी चाहिएं। स्वामी दयानन्द ने स्त्री जाति के उद्धार के लिये अधिक सुदृढ और विशाल आधार प्रदान किया है। स्वामी दयानन्द की स्थिति में यह स्पष्ट समर्थन है। जब वैदिक ज्योति और अधिक चमकती है और पुरुष वैदिक सिद्धान्तों के मूल्य को समझता है तब निश्चय ही स्त्री गर्व से अपना मस्तक ऊचा उठाकर ऋग्वेद के शब्दों में कह सकती है :—

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी। (१०।१५९।२)
मैं पताका हूँ, मैं मस्तक हूँ, मैं यथार्थ निर्णायक हूँ।

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह १९३८—३९ में जिन भाइयों ने सक्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल मे गये थे आर्य-प्रतिनिधि सभा हरयाणा ऐसे सब सत्याग्रहियो को तारीख २४-११-९० को अपने वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करेगी। इसी सिलसिले मे सभा हैदराबाद आर्यसत्याग्रह १९३८-३९ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमे हरयाणा के तमाम सत्याग्रहियों के फोटो और संक्षिप्त जीवन परिचय होगा। अतः सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना सक्षिप्त जीवन एवं पासपोर्ट साइज का फोटो नहीं भेजा है वे यह सूचना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साइज का फोटो और ६-७ लाइन का जीवनपरिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करें ताकि उनका नाम इतिहास मे लिखा जा सके।

जीवनपरिचय का प्रारूप

१- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, ग्राम, जिला।
२- किसके जत्थे मे थे।
३- कहां सत्याग्रह किया, वहां कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल में रहे।
४- जेल में कोई विशेष घटना हुई हो तो संक्षिप्त रूप में लिखें।

महाशय भरतसिंह
संयोजक हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति
दयानन्दमठ रोहतक।

(पृष्ठ ८ का शेष)

अपराह्न तीनसूत्री कार्यक्रम सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता प्रो० ओमकुमार जी जीन्द ने अपने ओजस्वी विचार रखे। सायं चार बजे से ६-३० बजे तक गुरुकुल झज्जर से आचार्य विजयपाल एव ब्रह्मचारियों द्वारा बहुत सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन करके दर्शकों को आनन्दित किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्रसिंह उपायुक्त महेन्द्रगढ़, जिन्होंने ब्रह्मचारियों के प्रदर्शन की प्रशंसा की। रात्रि में भजनोपदेशक एव विद्वानों के विचारो के पश्चात् जयन्ती का समापन हुआ। जयन्ती के तीनों दिन स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, स्वामी ओ३मानन्द जी सरस्वती, प्रो० ओमकुमार जी, आचार्य प्रद्युम्न जी, मा० निहालसिंह जी, बहिन किरणमयी, आचार्या सुमित्रा जी सरीखे विद्वानों एव प० ब्रजलाल जी शर्मा, म० आशाराम जी. पं० रामरख जी, बहन कौशल्या जी शास्त्री व स्थानीय भजनोपदेशकों ने आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विषयों पर व्याख्यानों तथा पं० जयपाल ने भजनोपदेशों के माध्यम से आर्यजनों को लाभान्वित किया।

शराब हटाओ देश बचाओ।

आर्यसमाज नारनौल का हीरक जयन्ती समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज नारनौल का हीरक जयन्ती समारोह स्थानीय कन्या हाई स्कूल मे दिनांक ५, ६ व ७ अक्तूबर को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। दिनांक २ अक्तूबर १९९० को कन्या गुरुकुल जसात (गुड़गांवा) की आचार्या बहन सुमित्रा जी के नेतृत्व में गुरुकुल की कन्याओं द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ किया गया जिसकी पूर्णाहुति दिनांक ७ अक्तूबर को डाली गई।

जयन्ती उद्घाटन मान्यवर चौ० हुकमसिंह जी मुख्यमन्त्री हरयाणा सरकार द्वारा दिनांक ५ अक्तूबर को दिन में २ बजे किया गया। मुख्यमन्त्री महोदय ने ओ३म्ध्वज लहरा कर जयन्ती का शुभारम्भ किया। आर्यसमाज के प्रधान म० ताराचन्द जी आर्य द्वारा मुख्यमन्त्री को केसरिया पगड़ी भेंट की गई। जयन्ती के अध्यक्ष सेठ मंगलदास व समाज के अन्य पदाधिकारियों ने माल्यार्पण द्वारा मुख्य मन्त्री का स्वागत किया। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी ओ३मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर, महाशय भरतसिंह जी वरिष्ठ उपप्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, राव लक्ष्मीनारायण जी मन्त्री हरयाणा सरकार, बाबू उदमीराम जी स्वागताध्यक्ष, ओमकार कौशिक जिला प्रधान जनता दल, जगदीशचन्द्र आदि महानुभावों ने अपने विचार रखे। आर्यवीरदल के सैनिकों ने श्री वेदप्रकाश जी यतिमण्डल के नेतृत्व में बहुत सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन किया। श्री रामलाल आर्य, कार्यालय मन्त्री द्वारा मुख्यमन्त्री को अभिनन्दनपत्र भेंट किया गया। मुख्यमन्त्री महोदय ने जयन्ती उद्घाटन पर बोलते हुये आर्यसमाज के सिद्धान्तों में अपनी पूरी निष्ठा व्यक्त की और समाज के हर कार्य में सहयोग देने का आश्वासन दिया। आर्यसमाज के लिये भूमि देने की घोषणा की और 50,000 रु. नकद देने की घोषणा की। जयन्ती अध्यक्ष द्वारा मुख्यमन्त्री को सत्यार्थप्रकाश भेंट किया गया। दिनांक ६ अक्तूबर को नगर के मुख्य बाजारों में विशाल शोभायात्रा सर्वश्री वेदप्रकाश जी महामन्त्री आर्यवीरदल, छोटेलाल जी मुण्डिया खेड़ा व कालूराम जी शर्मा के नेतृत्व में निकाली गई। स्थान-स्थान पर आर्य-वीरदल द्वारा लाठी, तलवार, जिमनास्टिक, आसनों का आकर्षक प्रदर्शन किया गया। कई भजनोपदेशकों की भजन मण्डलियां ऋषि-गुणगान करती हुई आगे बढ़ रही थी। रात्रि को महिला सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रीमती किरण जीन्द ने की। दिनांक ७ अक्तूबर को प्रातः यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई इस अवसर पर आचार्य प्रधान जी ने यज्ञ के महत्व पर सुन्दर विचार रखें। स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती द्वारा आर्यसमाज की हाल की उपलब्धियों का विस्तार से वर्णन किया।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए तारीफ प्रिन्टर्स रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि न २३२०७/७३ रजि न P/R1K ४६ क्रम

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए कार्तिक २०४७ वि०

वर्ष १७ अक ४७ ७ नवम्बर १९९० वार्षिक शुल्क ३०) आजीवन शुल्क २०१) विदेश में [illegible] पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ गोहाना रोड, रोहतक

साधारण सभा के सदस्यो की सेवा में वार्षिक साधारण सभा की बैठक का एजेण्डा

माननीय प्रतिनिधि महोदय, सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 25 नवम्बर, 1990 रविवार को प्रात. 11 बजे सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे होना निश्चित हुआ है। सभा के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि यथासमय पधारें।

विचारणीय विषय :

1. गत वर्ष दिवगत हुए आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओ को श्रद्धाजलि।
2. गत सभा अधिवेशन 21 मई 1989 की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
3. सभा कार्यालय, वेदप्रचार विभाग, सर्वहितकारी साप्ताहिक, आर्य विद्या परिषद्, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला, महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र आदि के गत वर्ष के कार्य वृत्तान्त तथा आय-व्यय की सम्पुष्टि एव आगामी वर्ष के प्रस्तावित आनुमानिक आय-व्यय (बजट) की स्वीकृति।
4. वेदप्रचार, शराबबन्दी गोरक्षा तथा आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने पर विचार।
5. प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, प० रघुवीरसिंह शास्त्री यज्ञशाला, स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय भवन निर्माण को पूरा करने पर विचार।
6. आगामी वर्ष के लिए सभा के अधिकारियों, अन्तरग सदस्यो, आर्य विद्या सभा हरयाणा, विद्या सभा गुरुकुल कागडी, राजार्य सभा, न्याय सभा तथा सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधियो आदि का निर्वाचन।

अन्य आवश्यक विषय सभापति की अनुमति से।

विशेष ज्ञातव्य

1. प्रतिनिधियों को प्रवेश पत्र 25 नवम्बर को प्रात 6 से 10 30 बजे तक सभा कार्यालय रोहतक मे प्राप्त हो सकेंगे।
2. सभापति को विचारणीय विषयो के क्रम मे आवश्यक परिवर्तन करने का पूर्ण अधिकार होगा।
3. भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से होगी।
4. यदि कोई प्रतिनिधि अपना सुझाव अथवा प्रस्ताव अधिवेशन मे रखना चाहता है तो लिखितरूप से 20 नवम्बर तक कार्यालय मे भेज देवे।
5. अधिवेशन से एक दिन पूर्व 24 नवम्बर को दोपहर पश्चात् हरयाणा प्रदेश के हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को सम्मानित किया जावेगा।

वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन २५ नवम्बर को रोहतक में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २५ नवम्बर १९९० रविवार को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे होगा। वार्षिक अधिवेशन मे हरयाणा प्रदेश मे आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा तथा आगामी वर्ष के लिये सभा के अधिकारियो तथा अन्तरग सदस्यो आदि का चुनाव किया जावेगा। इस अधिवेशन मे सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजो के स्वीकृत प्रतिनिधि भाग लेंगे।

—वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

हरयाणा के हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो का सम्मान समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व 24 नवम्बर को दोपहर पश्चात् सभा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक मे हरयाणा प्रदेश के जिन आर्य सत्याग्रहियो ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह मे जेलयात्रा की थी, उन्हें सम्मानित किया जावेगा। अत सभी सत्याग्रहियो से निवेदन है कि वे अपने पहुचने की सूचना यथाशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें। इस अवसर पर सभा की ओर से हैदराबाद आर्य सत्याग्रह पर एक विशेष स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

—सभामन्त्री

मेरी सासरोली की अविस्मरणीय यात्रा

लेखक:- प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, अबोहर १५२११६

हरयाणा प्रदेश के अधिकांश आर्यो ने तो सासरोली का नाम सुन रखा होगा। हरयाणा के भी बहुत थोड़े आर्य इस लेख के शीर्षक का महत्व समझ पाए होंगे। हमारी कई वर्षो से रोहतक जिला के सासरोली ग्राम की यात्रा करने की प्रबल इच्छा थी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य से एतद्विषयक कई बार विचार किया। श्री केदार सिंह ने कहा कि वह भी हमारे साथ सासरोली जावेंगे। सासरोली ग्राम का इतना आकर्षण क्या है? यह प्रश्न पाठक पूछेंगे।

आर्यजगत् के सर्वोच्च सन्यासी, तीनो एषणाओं और षड्रिपुओं के विजेता, मनुजता के मान पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की जन्मस्थल यही ग्राम है। किसी भी आर्य के लिए सासरोली का आकर्षण कितना हो सकता है, यह अब सब समझ गए होंगे। जब पूज्य स्वामी जी के अभिनन्दन का यतिमण्डल ने निश्चय किया तो उनका जीवन चरित्र व अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार करने का दायित्व लेखक को सौपा गया। तीन वर्ष पूर्व भी ऐसा निश्चय किया गया। पूज्य स्वामी जी को इसका पता चल गया। आपने मुझे पत्र लिखकर कड़ाई से आदेश दिया कि मैं उनके जीवनकाल मे उनकी जीवनी न लिखू। श्री महाराज की आज्ञा टालना हमारे बस में नही। क्या किया जा सकता था?

अब पुन: अगस्त मास मे कुछ कृप लु, साधु महात्माओ ने यह आदेश दिया कि यह कार्य कर डालो। पाठक सर्वहितकारी में महाराज के अभिनन्दन की सूचना पढ चुके हैं। समय थोडा होने पर भी हम इस कार्य मे जुट गए। कई वर्षो से हम स्वामी जी की छोटी बडी घटनाओ का संग्रह अपने मस्तिष्क में करते आ रहे थे इसलिए कार्य आरम्भ कर दिया। कहां-कहां से सामग्री और लेनी है इसके लिए देशभर मे प्रतिदिन पत्र लिखने का कार्य चालू किया। देश में फैली अराजकता के कारण शीघ्र सासरोली न जाया जा सका।

बीस अक्तूबर को जैसे-कैसे हम गुरुकुल झज्जर पहुचे। यातायात साधन ठप्प से ही थे। बडी कठिनाई का सामना करना पड़ा। झज्जर पहुचने पर पता चला कि श्री स्वामी सुमेधानन्द जी अबोहर हमे लेने गए हैं। ब्र० श्री जीवानन्द जी, श्री विरजानन्द जी आदि ने साथ चलना था। इनमे से कोई भी वहा न था। आचार्य गुरुकुल झज्जर किसी ग्राम से लौटे तो उनसे विनती की कि अच्छा होगा यदि आप साथ चले। वह तैयार हो गये। यह उनका आर्यत्व था। श्री महेन्द्र जी पहले भी सासरोली जा चुके थे। आपने गुरुकुल की गाड़ी निकाली और हम तीनों सात बजे साय सासरोली को चल दिये। वहां पर हम किसी को भी नही जानते थे।

वहां पहुंचकर हमने आचार्य जी से कहा कि स्वामी जी के बाल्यकाल के सखा स्वामी विद्यानन्द जी का पता करें। एकबार उनसे भेंट हुई थी। ग्राम के बाहर एक मन्दिर में उनके डेरे में पहुंचे। दुर्भाग्य से वह वहां नही थे। हमने कहा कि आचार्य जी गुरुकुल से आये है। मैंने कहा मैं दीनानगर दयानन्द मठ की ओर से आया हूं। मन्दिर में हमारा बड़ा स्वागत सत्कार एक बाबा जी ने किया। सारा ग्राम दयानन्द मठ दीनानगर को जानता है। यात्रा के सब कष्ट व कठिनाइयां इस प्रेम व श्रद्धाभाव को देखकर एकदम भूल गये। हमारे विश्राम का प्रबन्ध वह करने लगे। हमने कहा कि हमें श्री रिछपाल सिंह (पं० रामचन्द्र जी सिद्धान्त शिरोमणि) के पुत्रों के पास पहुचा दें तो अच्छा होगा। स्मरण रहे कि स्वामी जी का पूर्वनाम रामचन्द्र जी था।

मन्दिर से थोड़ी दूरी पर पं० रामचन्द्र जी का पैतृक घर था। वहां जाकर मठ का नाम लिया। दूरदर्शन देखकर बीस-पचीस लोग दीनानगर सुनते ही झूम उठे। दो युवक तत्काल गुरुकुल की गाड़ी में बैठे और हमें ग्राम से बाहर खेतों में श्री मातुराम व श्री अमीरसिंह (श्री रिछपालसिंह के सुपुत्र) के ट्यूबवेल पर ले आये। गुरुकुल की गाड़ी देखकर वे बड़े गद्गद हो गए। घर की स्त्रियां, बच्चे सब श्रद्धा से बाहर आगए। श्री अमीरसिंह कभी मठ में पढ़ा करते थे। हम दोनों ने एक दूसरे को न पहचाना। वार्तालाप के पश्चात् पुरानी स्मृतियां ताजा हो गई।

उन्हें बताया कि हम स्वामी जी महाराज के आरम्भिक जीवन की घटनायें जानने के लिए सासरोली आए है। जिस-जिसको भी हमारी यात्रा के उद्देश्य का पता चला वह बड़ा प्रसन्न हुआ। आप ऐसा समझिए कि ग्राम का कण-कण इतराने लगा कि सासरोली में जन्मे वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी का जीवन चरित्र लिखा जा रहा है। सासरोली की धरती जिस महामानव को जन्म देकर धन्य हुई आज उस पूज्य पुरुष के कारण भक्तजन सासरोली की यात्रा करने लगे हैं।

ग्रामवासियों ने बडे अभिमान से कहा कि पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी यहां एक सप्ताह के लिए आए थे। उनकी अमृतवर्षा यहां होती रही। यह धरती कैसी भाग्यशाली है कि हमारे प्यारे व पूज्य राम के गुरु यहां पधारे। शिष्य तो गुरु की जन्मस्थली की यात्रा करते है परन्तु राम के गुरु शिष्य की जन्मस्थली पर पधारे, यह सासरोली की विलक्षणता है।

हमने वृद्धों से पूछा, दोहरा-दोहरा कर – प्रश्नों की भाषा बदलकर पूछा यह बताओ कि हमारे श्रद्धेय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज राम के रूप में कैसे थे? राम का बचपन कैसा था? राम की बाललीला बताइए? राम की शरारत कोई याद हो तो बताओ। राम के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह १९३८—३९ में जिन भाइयों ने सक्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल मे गये थे आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ऐसे सब सत्याग्रहियों को तारीख २४-१२-९० को अपने वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करेगी। इसी सिलसिले में सभा हैदराबाद आर्यसत्याग्रह १९३८-३९ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमें हरयाणा के तमाम सत्याग्रहियो के फोटो और संक्षिप्त जीवन परिचय होगा। अत: सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना संक्षिप्त जीवन एव पासपोर्ट साइज का फोटो नही भेजा है वे यह सूचना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साइज का फोटो और ६-७ लाइन का जीवनपरिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करें ताकि उनका नाम इतिहास में लिखा जा सके।

जीवनपरिचय का प्रारूप

१- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, ग्राम, जिला।
२- किसके जत्थे में थे।
३- कहां सत्याग्रह किया, वहां कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल मे रहे।
४- जेल मे कोई विशेष घटना हुई हो तो संक्षिप्त रूप में लिखें।

महाशय भरतसिंह
संयोजक हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति
दयानन्दमठ रोहतक।

शराब हटाओ

देश बचाओ।

प्रसिद्ध आर्य विद्वान् संन्यासी स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का अभिनन्दन

आर्यसमाज के प्रमुख शिक्षाशास्त्री एवं विद्वान् संन्यासी, अनेक पुस्तकों के लेखक स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती पूर्व प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित का ४ नवम्बर को आर्यसमाज बडा बाजार, पानीपत की ओर से समारोहपूर्वक अभिनन्दन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री विजय कुमार जी उपायुक्त पानीपत ने की तथा इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो. शेरसिंह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री डा. धर्मपाल जी के अतिरिक्त आर्यसमाज के प्रमुख साहित्यकार स्वामी जगदीश्वरानन्द जी एवं पानीपत के गणमान्य आर्यसमाजी भारी संख्या में उपस्थित थे।

आर्य कन्या उच्चविद्यालय पानीपत में आयोजित इस समारोह में स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती का आर्य वरिष्ठ विद्यालय पानीपत के प्रधानाचार्य एवं आर्य विद्या परिषद हरयाणा के प्रस्तोता श्री लाभसिंह, जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के सयोजक श्री राम लाल सिंहल आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत के प्रधान श्री कडवाल, आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत, आर्यसमाज खेल बाजार, माडल टाऊन, थर्मल कालोनी, उर्वरक कालोनी हुड्डा कालोनी, देशराज कालोनी, स्त्री आर्यसमाज पानीपत तथा जिला पानीपत के अन्य प्रमुख आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों की ओर से किया गया। आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत ने एक अभिनन्दन पत्र २१०० रु. तथा एक शाल भेंट किया।

इसके पश्चात स्वामी धर्मानन्द जी, पानीपत के विधायक श्री बलबीर वीरपाल शाह, श्री ओमप्रकाश सह-सयोजक जिला वेद-प्रचार मण्डल, प्रो. उत्तमचन्द शरर, डा. योगेश्वर दत्त, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, श्रीमती सुनीता आर्या दिल्ली ने स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा की गई आर्यसमाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में शानदार सेवाओं का वर्णन किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आर्यसमाज में बहुत ही कम ऐसे नेता हैं जो आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुसार समय पर वानप्रस्थ तथा सन्यास आश्रम में प्रवेश करते हैं और वे जिस आर्य समाज के आर्य सभासद रहते हैं, वहां अपनी आय का शताश देते हैं। स्वामी जी जब तक आर्य कालेज पानीपत में प्रिंसिपल रहे वे यहां के आयसमाज में नियमानुसार २५०/- वार्षिक शुल्क देते थे और सेवानिवृत होने पर वे जब दिल्ली आ गए तो समाचार पत्रों में एक विज्ञापन छपवाकर जानकारी प्राप्त की कि किस आयसमाज में ११ तक आर्य सभासद हैं और वे अपनी आयसमाज को नियमपूर्वक शतांश देते हैं। इस विज्ञापन को मैंने पढकर अपनी आयसमाज शालीमार्ग दिल्ली का रिकार्ड स्वामी जी को दिखाकर सतुष्ट किया कि हमारे समाज को ११ आर्यसमाज शतांश देते हैं तथा २५ प्रतिशत तक साप्ताहिक सत्सगों में अपनी उपस्थिति अंकित करवाते हैं। इस प्रकार स्वामी जी ने हमारे आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की थी। दिल्ली में रहते हुए स्वामी जी आर्यसमाज की गतिविधियों में भाग लेकर आर्य जनता का मार्ग दर्शन कर रहे हैं और अपनी सम्मति निर्भीकता-पूर्वक देने में संकोच नही करते। हमे इनके साहसी जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह ने स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की विद्वत्ता तथा कर्मठता का उल्लेख किया। विदेशों से वैदिकधर्म का प्रचार करने के लिये प्राय: मांग आती रहती है मैंने स्वामी जी का नाम उन्हें दे दिया और विदेश में जाने तथा आने का प्रबन्ध करके स्वामी जी से सम्पर्क किया परन्तु इनकी अस्वस्थता के कारण विदेशों मे प्रचारार्थ नहीं जा सके। स्वामी जी हैदराबाद सत्यग्रह में गये तथा जेलों में यातना सही। जब इनकी पेन्शन की चर्चा चली तो स्वामी जी ने सरकारी पेन्शन लेने से इन्कार कर दिया। यह इनकी त्याग भावना का प्रमाण है। आप जितने समय तक आर्यकालेज के प्रधानाचार्य रहे तब कालेज तथा अन्य आर्यसंस्थाओं को आर्यसमाज का केन्द्र बनाये रखा। आपने आर्य विद्यापरिषद् का गठन करके आर्य विद्यालयों में धर्मशिक्षा की व्यवस्था की तथा आर्य विद्यालयों को एक सूत्र में पिरोने का श्रेय प्राप्त किया। वैदिकधर्म के प्रचारार्थ आपने कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे यही ग्रन्थ स्वामी जी स्मारक होगा और आने वाली पीढ़ियां इनसे लाभान्वित हो सकेंगी। सभा स्वामी जी को २४ नवम्बर को २ बजे हरयाणा के अन्य हैदराबाद सत्याग्रहियों के साथ प्रान्तीय स्तर पर सम्मानित करना चाहती है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वे स्वस्थ रहें और आर्यसमाज की सेवा करते रहें।

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने अपने अभिनन्दन के लिए आर्यसमाज के लिए आभार प्रदर्शित किया। आर्यसमाज बम्बई ने सबसे पूर्व वैदिक विद्वानों को सम्मानित करने की परम्परा आरम्भ की थी। उसके पश्चात् पानीपत तथा अन्य आर्यसमाजों ने इस कार्य-क्रम को अपनाया है।

आज वेदप्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है। आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं है। धर्म एक है और वह केवलमात्र वैदिक धर्म है। अत: आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यकर्ता से अपील करते हुए कहा कि वे तन, मन तथा धन से आर्यसमाज की सेवा करें। नित्यप्रति वैदिक सिद्धान्तो के ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। स्वामी जी ने श्री आडवानी की रामरथ यात्रा को ढोंग बताया क्योंकि वे राम तथा कृष्ण को मासाहारी बताते हैं।

चौ विजयकुमार उपायुक्त महोदय पानीपत ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा ५० वर्ष शिक्षाजगत् की सेवा करने तथा आयुभर आर्यसमाज के कार्यों में संलग्न रहने पर बधाई दी। इस प्रकार के आप्त सन्यासियों के कारण ही आर्य समाज का इतिहास गौरवशाली बना है। इनका स्थान लेने के लिए नवयुवक आर्यसमाज में नहीं आ रहे। यह विचारणीय विषय है। यदि इस ओर शीघ्र कोई ठोस पग नहीं उठाया गया तो आर्यसमाज की हानि होगी युवकों को आर्यसमाज में आकर्षित करने के लिए साप्ताहिक सत्सगों को प्रभावशाली बनाना चाहिए तथा उन्हें आर्य समाज का कार्यभार सौंप कर उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।

आपने आर्य कन्या विद्यालय के अधिकारियों की माग पर उसके सामने मांस की मार्केट बनवाने की योजनाओं को रद्द करने तथा विद्यालय के लिए २५ हजार रु० अनुदान देने की घोषणा की। मैचिंग ग्रान्ट भी अधिक से अधिक दिलवाने का आश्वासन दिया इस घोषणा का सभी उपस्थित आयजनो ने हार्दिक स्वागत किया। दोपहर पश्चात् पूर्व इनाम श्री महेन्द्रपाल आर्य, श्रीमती सुनीता आर्या डा. धर्मपाल जी, प्रो. शेरसिंह जी आदि के व्याख्यान हुए। उत्सव के उपलक्ष में पानीपत के उपनगरों में नगर कीर्तन का आयोजन किया गया तथा ३ नवम्बर को स्त्री शक्ति जागरण सम्मेलन श्रीमती शकुन्तला देवी धर्मपत्नी श्री विजयकुमार उपायुक्त की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। उत्सव के अन्य कायक्रमों में स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती, आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय जी आदि के व्याख्यान तथा पं. चिरन्जीलाल जी, चौ नत्थासिंह जी, श्री मुन्शीलाल जी तथा आर्य कन्याओं के मनोहर भजन हुए। इस अवसर पर ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया था। आर्यसमाज के मन्त्री श्री राममोहन राय एडवोकेट ने सभी विद्वानों तथा बाहर से पहुचे आर्य नर नारियो का हार्दिक धन्यवाद किया। केदारसिंह आर्य

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की गतिविधियाँ

दिनांक २३ सितम्बर को प्रातः ६-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर जींद शहर में वेदप्रचार मण्डल जिला जींद की मासिक बैठक संयोजक श्री स्वामी रत्नदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें स्थानीय आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों एवं अनेक आर्य सदस्यों ने भाग लिया।

आर्य सदस्यों ने प्रसन्नता प्रकट की कि मण्डल ने ३० अगस्त से २२ सितम्बर तक सतत् प्रचार कार्य जारी रखते हुए लगभग दो दर्जन गांवों में वेदप्रचार किया। स्वामी रतनदेव जी का कुशल नेतृत्व हमारे मण्डल की वास्तविक शक्ति एवं प्रेरणा है।

आगामी प्रचार कार्य की रूपरेखा तैयार की गई। आर्यसमाजों से अपना अपना अंशदान प्रत्येक महीने होनेवाली मासिक बैठक में अपने साथ लाने की प्रार्थना की गई। मासिक बैठक प्रत्येक महीने के अन्तिम रविवार को हुआ करेगी। अक्तूबर मास की बैठक आर्यसमाज मन्दिर नरवाना में होनी तय हुई।

मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री कर्णसिंह जी रेढू को अधिकार दिया गया कि वे बैंक में मण्डल का खाता खुलवा लें जिसका संचालन सर्वश्री संयोजक, सहसंयोजक, कोषाध्यक्ष, इन तीन में से किन्हीं दो के हस्ताक्षरों से होगा इनमें भी श्री संयोजक जी के हस्ताक्षर अनिवार्य होंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना की जायेगी कि वह मण्डल को इस रचनात्मक कार्य में हर कदम पर यथासंभव मार्गदर्शन एवं सहयोग देती रहे। वेदप्रचार मण्डलों के जिलावार गठन के अभियान में जींद प्रथम जिला है जिसमें तुरन्त गठन ही नहीं अपितु प्रभावशाली ढंग से प्रचार भी कार्य प्रारम्भ हो गया है। स्वामी रतनदेव जी ने सभी उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद किया। कार्यवाही का संचालन प्रो० ओमकुमार आर्य, सहसंयोजक, वेदप्रचार मण्डल जिला जींद ने किया।

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हरयाणा के आर्यवीरों ने १६३८, ३६ के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में बढ़चढ़ कर भाग लिया था। सरकार ने जेल काटनेवाले सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करके उन्हे पेन्शन देकर सम्मानित किया है। इनके बलिदानी कार्यों से आर्यसमाज की प्रसिद्धि हुई है अतः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने म हरयाणा के सभी सत्याग्रहियो (यदि सत्याग्रही जीवित नही रहा तो उनकी धर्मपत्नी) को २४ नवम्बर को सभा के वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करने का निश्चय किया है। अतः हरयाणा प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाले सभी हैदराबाद सत्याग्रहियों से निवेदन है कि वे अपना एक चित्र तथा संक्षिप्त परिचय लिखकर ७ नवम्बर तक भेज देवें तथा १४ नवम्बर को दयानन्दमठ रोहतक पधारें।

हरयाणा के आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि वे इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका तथा सत्याग्रहियों को शाल आदि भेंट करने में अपना योगदान देने के लिए अधिक से अधिक राशि ८ नवम्बर तक सभा को भेजने की कृपा करें।

—सभामन्त्री

—दुनिया की समस्त फौज व समस्त हथियार भी मिलकर इतनी क्षति नही कर सकते जितनी एक अकेली शराब कर सकती है।

—मिल्टन

सत्यार्थप्रकाश के १०० ईश्वर-नामों का संग्रह

।। अथ ओंकार-स्तोत्रम् ।।

(१)

ओं खं ब्रह्म मनुमग्निं प्राणमिन्द्रं प्रजापतिम् ।
ब्रह्माणं विष्णुं रुद्रं च स्वराजं शिवमक्षरम् ।।

(२)

कालाग्निं च सुपर्णं च गरुत्मन्तं हि दिव्यकम् ।
मातरिश्वानं भूमिं च विराजं विश्वनामकम् ।।

(३)

हिरण्यगर्भं वायुं च तेजसमीश्वरं तथा ।
आदित्यं वरुणं प्राज्ञं मित्र बृहस्पतिं च तम् ।।

(४)

उरुक्रमार्यमाणं च सूर्यं च सर्वप्रकाशकम् ।
आत्मानं परमात्मानं सवितृ देव संज्ञकम् ।।

(५)

पृथिवीं कुबेराऽऽकाशं जलं नारायणं तथा ।
अन्नमन्नादमत्तारं वसु रुद्रं च मंगलम् ।।

(६)

चन्द्रं बुधं तथा शुक्रं राहु-केतुं शनैश्चरम् ।
यज्ञं बन्धुं च होतारं पितरं च पितामहम् ।।

(७)

मातारं गुरुमाचार्यम् अजं च प्रपितामहम् ।
सत्यं ज्ञानमनन्तं च सच्चिदानन्दरूपकम् ।।

(८)

नित्यं शुद्धमनादिं च बुद्धं मुक्त निरञ्जनम् ।
निराकर गणेशं च गणपतिं विश्वेश्वरम् ।।

(९)

शक्तिं देवीं च कूटस्थं लक्ष्मीं सरस्वतीं श्रियम् ।
सर्वशक्तिभूतं कालं दयालु न्यायकारिणम् ।।

(१०)

अद्वैत निर्गुणं शेष सगुणमन्तर्यामिणम् ।
धर्मराज यमयाप्तं भगवत् पुरुषं प्रियम् ।।

(११)

विश्वम्भर महादेवं शंकर च स्वयम्भुवम् ।
कविमनन्तनामानं नमामि च स्मरमि च ।।

(१२)

आयः प्रातस्तथा सायं यः स्तोत्र प्रत्यहं जपेत् ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो ब्रह्मलोकं स गच्छति ।।

।। इति ओंकार-स्तोत्रम् ।।

—सुदर्शनदेवाचार्यः

आवश्यकता

आर्यसमाज नरेला (दिल्ली-४०) के लिए एक संन्यासी, वानप्रस्थी वा समाजसेवक की आवश्यकता है जो आर्य सिद्धान्तों तथा संस्कारों का ज्ञाता हो।

पूर्णसिंह आर्य, मन्त्री

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में नया कुलपति वैदिक विद्वान् हो हरयाणा के राज्यपाल से मांग

हरयाणा के प्रसिद्ध नगर एवं आर्यों के केन्द्र स्थल रोहतक नगर में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद पिछले १३–१४ वर्ष के अन्तराल में इस विश्वविद्यालय में अनेक कुलपतियों की नियुक्ति हुई हैं लेकिन हरयाणा की जनता को हर बार निराशा ही हुई क्योंकि कोई भी नियुक्त कुलपति व्यक्ति महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों एवं सिद्धान्त से बिल्कुल भी परिचित नहीं था। अब एक बार फिर इस निराशा को आशा में बदलने का अवसर आया है। अतः हरयाणा के राज्यपाल से निवेदन है कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति के पद पर किसी ऐसे व्यक्ति की नियुक्ति की जावे जो महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों व वैदिक सिद्धांतों से परिचित हो, संस्कृत का उच्चकोटि का विद्वान् हो तथा जिसका विश्वविद्यालयों के प्रशासन से गहरा सम्बन्ध रहा हो। इस विषय में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान से भी राय ली जावे ताकि महर्षि के सपनों को उनके किसी अनुयायी द्वारा पूरा किया जा सके।

(वेदव्रत शास्त्री)
सभामन्त्री

आवश्यकता है

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) में एक योग्य आदर्शवादी आचार्य की आवश्यता है जो संस्कृत एवं धर्मशिक्षा विषय को अच्छे ढंग से पढ़ा सके। साक्षात्कार के बाद योग्यता के आधार पर सभी सहयोग प्रदान किया जावेगा। इच्छुक सज्जन शीघ्र अति शीघ्र नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करे।

स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास जि० हिसार

शोक सभा

दिनांक १८–१०–८० को प्रातः २ महीने की लम्बी बिमारी के कारण श्री हनुमान आर्य मन्त्री (आर्यसमाज सिवानी) की धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्रावती आर्या का देहान्त हो गया। उनकी यज्ञ में एव भगवान की भक्ति में अटूट श्रद्धा थी, विद्वानों की श्रद्धा से सेवा करती थी, वह ५५ वर्ष की थी, अपने पीछे सम्पन्न ५ पुत्र छोड़ गई। दिनांक २८–१०–८० को शोक सभा का आयोजन किया गया। प० विश्वामित्र जी ने यज्ञ करवाया तथा कहा भगवान उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे एव शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी, सभा उपदेशक श्री अतर सिंह जी क्रान्तिकारी, पं० रामप्रकाश आर्य के अतिरिक्त क्षेत्र के आर्य समाजों के अधिकारी तथा स्थानीय मण्डी के सैकड़ों नर-नारियों ने भाग लिया। हनुमान जी आर्य ने १०१ रु० स्थानीय गऊशाला, १०१ रु० ब्रह्म विद्यालय हिसार, १०१ रु० कन्या गुरुकुल पचगांवा, १०१ रु० गुरुकुल धीरणवास ५१रु० हरयाणा सभा एवं चार सर्वहितकारी सदस्य बनवाए व दान दिया तथा रेलवे स्टेशन सिवानी पर उनके नाम से एक धर्मशाला बनाने की घोषणा की। शान्ति पाठ के बाद कार्यवाही समाप्त हुई।

डा० सरजीत आर्य, सिवानी मण्डी

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन

पटना, १५ अक्तूबर, कल बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का ६४वां वार्षिक सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न हुआ। बिहार राज्य के कोने-कोने से आये हजारों प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूज्य प्रधान स्वामीआनन्द बोध सरस्वती ने किया।

इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की देखरेख में बिहार रजय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव भी सम्पन्न हुआ। चुनाव निर्विरोध, सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें श्री भूपनारायण शास्त्री सभा प्रधान, श्री प्रो० योगेन्द्र नारायण सभा मन्त्री तथा श्री रामचन्द्र प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये। इस अवसर पर नवनिर्वाचित प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने आर्यसमाज के उद्देश्यो पर प्रकाश डाला तथा अपना जीवन समाज को समर्पित करने की घोषणा की जिसका स्वागत उपस्थित आर्यजनों ने करतल ध्वनि से किया।

आराह्न के सम्मेलन की अध्यक्षता पूर्व मन्त्री श्री रामलखन सिंह ने की। इस सम्मेलन में मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव का अभिनन्दन सभामन्त्री प्रो० योगेन्द्र नारायण द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने आर्यसमाज की अपेक्षाओं और आकाक्षाओं को पूरा करने का आश्वासन दिया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस अवसर पर समाज परिसर में नवनिर्मित विशाल, भव्य दयानन्द अतिथिशाला का उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्वामी जी ने आर्यसमाज की विशिष्ट सेवा के लिये सर्वश्री गंगाधर शास्त्री, सर्वेन्द्र शास्त्री, पं० बासुदेव शर्मा, तथा उमाकान्त शास्त्री का अभिनन्दन किया तथा उन्हें शाल भेट की।

योगेन्द्रनारायण
सभामन्त्री

आर्यवीर दल हरयाणा की प्रांतीय बैठक

आर्यवीर दल हरयाणा प्रान्त की प्रान्तीय बैठक २४-११-८० को रात्रि ७-३० बजे आर्यसमाज माडल टाउन पानीपत में होगी। समस्त अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि समय पर पहुंचकर बैठक को सफल बनाये। इसमे विचारणीय विषय निम्नलिखित हैं।

१ करनाल सम्मेलन की समीक्षा २- नई शिक्षकों की नियुक्ति
३ आय व्यय का ब्यौरा। ४ २२ से २६ दिसम्बर को सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिल्ली पर भाग लेने का विचार।

वेदप्रकाश आर्य
प्रान्तीय मन्त्री,
कार्यालय आर्य समाज शिवाजी कालोनी, रोहतक

प्रभात आश्रम की प्रभा

गुरुकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री वाचस्पति मिश्र ने मानव संसाधन एव विकास मन्त्रालय (भारत सरकार) के स्वायत्त प्रतिष्ठान "राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान" (दिल्ली) द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित आचार्य (प्राचीन व्याकरण) की परीक्षा सत्र (८९–९०) में सर्वप्रथम आकर मेरिट में सर्वोच्च स्थान द्वारा गुरुकुल एव आर्यजगत् को गौरवान्वित किया है।

इस अवसर पर अपने स्नातक बन्धु को बधाई देते हुए स्नातक मण्डल उनके भावी जीवन के प्रति शुभकामनायें प्रकट करता है।

स्नातक मण्डल, गुरुकुल प्रभात आश्रम,
भोला, मेरठ–उ०प्र०

वेदप्रचार मंडल जिला जीन्द की मासिक बैठक

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठक मण्डल के संयोजक स्वामी रत्नदेव जी की अध्यक्षता में 28-10-90 रविवार को सुबह 11-00 बजे आर्यसमाज मन्दिर नरवाना में सम्पन्न हुई। बैठक में मण्डल की कार्यकारिणी के 21 में से 14 सदस्य उपस्थित थे। निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय सर्वसम्मति से लिये गये :—

१. सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा उनके माध्यम से हरयाणा सभा को हार्दिक धन्यवाद दिया गया कि उन्होंने मण्डल के सुयोग्य संयोजक स्वामी रत्नदेव जी को आर्यवीर दल हरयाणा का सभा में अधिष्ठाता मनोनीत किया है। स्वामी जी के मनोनयन से आर्यवीर दल हरयाणा और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मध्य बेहतर तालमेल स्थापित होगा तथा कार्य में गति आयेगी।

२ मण्डल का प्रचार कार्य अक्तूबर मास के दौरान स्थगित रखा गया था जो कि १ नवम्बर १९९० से फिर आरम्भ कर दिया जायेगा। नवम्बर के प्रथम पखवाड़े के लिये नरवाना के समीपवर्ती 10 गांव चुने गये हैं। पं० चन्द्रभान जी आर्य की भजनमण्डली के साथ माननीय स्वामी रत्नदेव जी, श्री सत्यपाल जी शास्त्री (नरवाना) श्री राजेन्द्र जी शास्त्री (सुदकैन कलां) श्री अनिलकुमार मन्त्री आ० स० नरवाना, श्री राधाकिशन जी भू० पू० मंत्री आर्यसमाज नरवाना आदि सज्जन बारी-बारी से सुविधानुसार प्रचार कार्य में सहयोग देंगे।

३. नरवाना आर्यसमाज ने उदारतापूर्वक सहायता का आश्वासन दिया है तथा फिलहाल ५०० रु० मासिक का अंशदान स्वीकृत किया है, मण्डल ने नरवाना आर्यसमाज का धन्यवाद किया।

४. सभी ने अनुभव किया कि वेदप्रचार की अत्यधिक आवश्यकता है और हमें सतत् कार्यक्षेत्र में रहना होगा जिससे कि आर्यसमाज का सन्देश घर घर तक पहुंचाया जा सके और ऋषिमिशन को आगे बढ़ाया जा सके तथा समाज को कुप्रथाओं, दुर्व्यसनों, पाखण्ड से बचाया जा सके।

—प्रो ओमकुमार आर्य
सह संयोजक, वेदप्रचार मण्डल जिला जींद

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी जिला महेन्द्रगढ़

प्रधान—श्री रामेश्वर दयाल शर्मा, उपप्रधान—श्री करतार सिंह बोहरा, —श्री मूलचन्द शर्मा, मन्त्री—श्री राधेश्याम आर्य, उपमन्त्री—श्री जितेन्द्र कुमार आर्य, उप-मन्त्री—श्री निरजनलाल आर्य कोषाध्यक्ष—श्री मामचन्द आर्य लम्बरदार, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रतीराम आर्य, निरीक्षक—श्री कुन्दनलाल आर्य

आर्यसमाज सेहलंगा जिला महेन्द्रगढ़

प्रधान—सूबेदार जीराम, उप-प्रधान—सूबेदार रामपत, मन्त्री श्री प्रभुसिंह आर्य, उपमन्त्री— श्री मा. रूपराम, कोषाध्यक्ष श्री शीशराम, पुस्तकाध्यक्ष—श्री उदयभान, पुरोहित श्री ब्रह्मप्रकाश शास्त्री।

अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों के सम्मान समारोह को सफल करने की अपील

आर्यसमाज के ऐतिहासिक तथा प्रमुख हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में हरयाणा प्रदेश से अन्य प्रदेशों से अधिक सत्याग्रहियों ने भाग लिया था और बलिदान देकर आर्यसमाज के संघटन तथा शक्ति का परिचय दिया था। सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानी मानकर ३०० के लगभग सत्याग्रहियों को पेन्शन देकर सम्मानित किया है, परन्तु जेलों से सजा काटने के प्रमाण-पत्र आदि रिकार्ड न मिल सकने के कारण से अनेक सत्याग्रही सरकारी पेंशन से वंचित भी रह गये हैं।

इन सत्याग्रहियों पर आर्यसमाज को गर्व है कि इन्होंने आर्यसमाज के स्वर्णीय इतिहास का निर्माण किया है। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने हरयाणा प्रदेश के सभी जीवित सत्याग्रहियों तथा स्वर्गवासी सत्याग्रहियों की धर्मपत्नियों को सम्मानित करने का कार्यक्रम सभा के अधिवेशन से एक दिन पूर्व २४ नवम्बर, ९० को रोहतक में बनाया गया है। इस शुभावसर पर इन्हें एक एक शाल, प्रशंसा-पत्र तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की स्मारिका सादर भेंट की जावेगी और हरयाणा के आर्य प्रतिनिधियों की ओर से उनका स्वागत किया जावेगा।

इस आयोजन पर हजारों रुपया व्यय होगा। अतः दानियों तथा आर्यसमाजों से निवेदन है कि इस महत्वपूर्ण कार्य को सफल करने के लिए अपने आर्यसमाज की ओर से अधिक से अधिक धनादेश अथवा बैंक ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक के नाम शीघ्र भेजकर अपना योगदान देवें।

आशा और विश्वास सहित

प्रो० शेरसिंह, सभा प्रधान

आर्यसमाज प्रधानामोहल्ला रोहतक का उत्सव सम्पन्न

२६ से २८ अक्तूबर को वार्षिक उत्सव पर श्रीमती तारानन्दा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। युवा सम्मेलन प्रि० राजेश जैन डी. ए वी विद्यालय, रोहतक की अध्यक्षता में भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। आचार्य सुदर्शन देव जी की अध्यक्षता में वेद-सम्मेलन किया गया जिसमें प्रो रामविचार, आचार्य बलबीर ने वेदों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री राममेहर एडवोकेट की अध्यक्षता में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन हुआ इसमें डा० सुरेन्द्र, आचार्य बलबीर प्रो० रामविचार ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्तिक मास में यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी किया गया जिसमें सभा के प्रचारक श्री धर्मवीर आर्य, श्री वीरेन्द्र विद्यालंकार, स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ स्वामी दयानन्द जी आदि विद्वानों के प्रवचन हुए।

—गुरुदत्त आर्य प्रधान

रोहतक में भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य वीरदल की ओर से १७ अक्तूबर को प्रातः आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला रोहतक में प्रभात फेरी निकाली गई। १८ अक्तूबर को आर्य उच्च विद्यालय के प्रांगण में बच्चों की एक भाषण प्रतियोगिता की गई। इसमें ५१ बच्चों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहने वालों को पारितोषिक दिये गए।

—मुलखराज आर्य

(पृष्ठ २ का शेष)

गुण बताइए। किसी ने राम में कोई दोष देखा हो तो वह दोष ही बता दो।

बड़ी आयु के सब लोग जिन्होंने राम का बाल्यकाल देखा है सब एक स्वर से एक ही रट लगाते रहे, "राम तो बचपन से ही साधु हैं। राम पहले ही एक ऊंचे महात्मा थे। राम परोपकारी थे। राम सदाचारी थे। राम सर्वथा निष्कलंक हैं। राम में पहले ही अद्भुत सेवा-भाव था। राम हंसमुख थे। राम बड़े सुन्दर थे। राम सबके प्यारे थे। राम सबका मेल कराते थे। राम झगड़ निपटाते थे। राम एक कुशल खिलाड़ी थे। राम गऊ आदि प्राणियों के पालक थे। राम परिवार व ग्राम के लाडले थे।" यह भी कहा, "राम में कतई मोह नहीं है। राम के कुल में देवीसहाय नाम का उसका एक जवान भाई मर गया, राम यहां नहीं आया। राम का सगा भाई रिछपाल मर गया, राम ग्राम में नहीं आया। अब तो संन्यासी हो गये। संन्यास से पूर्व भी किसी की मृत्यु होने पर नहीं आते थे।

राम के एक बाल्यकाल के सखा नम्बरदार रूपचन्द जी कहते हैं, "वह तो मेरे गुरु हैं। हम तो पहले ही उन्हें गुरु मानते थे। राम में कतई कोई दोष नहीं था। राम ने कभी झूठ नहीं बोला। राम ने बालकपन में ही यहां बड़े-बड़े उपकार सुधार कार्य किए।"

पाठकों को यह जानकर आश्चर्य व गौरव होगा कि जिस कुल में राम का जन्म हुआ उस कुल में प्रत्येक पीढ़ी में एक व्यक्ति साधु बनता आया है। जिस पीढ़ी में हमारे स्वामी जी हैं, इस पीढ़ी मे स्वामी जी के अतिरिक्त उनके ताऊ के सुपुत्र भी साधु बने थे।

एक विचित्र बात यह है कि स्वामी जी महाराज संन्यास धारणा करने से पांच वर्ष पूर्व सासरोली गए थे फिर कभी नहीं गए। ग्राम के लोग बाहर कम निकलने वाले हैं कुछ एक तो समय समय पर दीनानगर जाकर स्वामी जी के दर्शन करने आए हैं परन्तु जिस कुल में आपका जन्म हुआ है उस कुल की अगली पीढ़ी में केवल एक बाला कु० सन्तोष एम. ए. ने स्वामी जी के दर्शन किए हैं। ग्राम के सब युवक स्वामी जी का नाम जानते हैं और स्वामी जी के व्यक्तित्व पर अभिमान करते हैं परन्तु कुछ एक युवकों ने ही आपके दर्शन कर रखे हैं।

ग्राम में आर्यसमाज का कभी अच्छा प्रचार रहा है। अब तो प्रचारक, साधु महात्मा यहां जाते ही नहीं। जाना भी यहां कोई इतना कठिन नहीं। छोटी लाईन पर सासरोली एक स्टेशन है। हमारे साधुओं को इधर ध्यान देना चाहिए।

जीवन चरित्र कहां तक ?

सासरोली से लौटा तो परिवारवालों ने बताया कि श्रद्धेय स्वामी जी का एक पत्र आया है। श्री महाराज ने फिर यह कड़ा आदेश दिया है कि उनके जीवनकाल में उनकी जीवनी व अभिनन्दन ग्रन्थ कुछ न छापा जावे। यह पढ़कर हम स्तब्ध रह गए। अब क्या करें? सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया। जीवन चरित्र तो तैयार हो ही चुका था परन्तु इस आज्ञा का टालना हमारे बस की बात नहीं। एक बार तो यह काम रोक ही दिया है। इससे स्वामी जी के भक्तों को विशेषरूप से एक धक्का सा लगेगा। हमें भी बड़ा धक्का लगा है परन्तु हमने स्वामी जी की आज्ञा कभी टाली नहीं। अब कैसे टालें।

कुछ वर्ष पश्चात् भले ही उनके जीवनकाल में यह जीवन चरित्र छप जावे परन्तु अब एक बार तो उनकी इच्छा का आदर करना ही होगा। ऐसा पूज्य पुरुष, सच्चा साधु, वीतराग है कोई ? जिसे अपने सम्मान की, मान की, प्रतिष्ठा की पद की कतई लालसा न हो। सासरोली की यात्रा करके स्वामी जी के प्रति श्रद्धा और बढ़ी। वहां से जीवनी की सामग्री लाकर जीवन चरित्र के प्रकाशन के लिए बड़ा उत्साह बढ़ा था परन्तु स्वामी जी का पत्र पाकर यह उत्साह ठण्डा पड़ गया।

वैदिक दर्शनों को पढ़ें

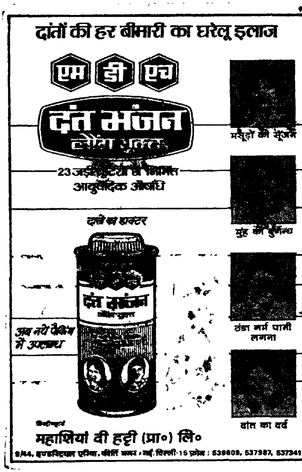
योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, मीमांसा, इन छः दर्शनों का संस्कृत भाष्यों सहित अध्ययन तथा वैदिक योग प्रशिक्षण प्राप्त करें।

विशेषताए: - प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण; आदर्श गुरुकुलीय दिनचर्या; प्रतिदिन २ घण्टे व्यक्तिगत साधना; व्यवहार में यम-नियमों का उच्च-स्तर से पालन; भोजन, वस्त्र, आवासादि की निःशुल्क व्यवस्था; लिखित एवं मौखिक परीक्षाएं, व्यवहार की भाषा संस्कृत।

उपाधियां:- दर्शनाचार्य, दर्शनविशारद, दर्शनप्राज्ञ।

नोट:- आजीवन ब्रह्मचारी को प्राथमिकता, व्याकरणाचार्य, शास्त्री वा समकक्ष योग्यता वाले विद्यार्थी प्रवेशार्थ निम्न पते पर पत्राचार करें। स्थान सीमित है। प्रवेश मार्च १९९१ से प्रारम्भ होगा।

आचार्य : दर्शन-योग विद्यालय
आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड़, प० सागपुर,
जि० साबरकांठा, गुजरात-पिन-३८३३०७



हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीज 499, 17 गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन० आई०टी० फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिगला एजेंसीज सदर बाजार, गुड़गांव।

बताएं तुम्हें हम—दयानन्द क्या थे?

प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम, होशियारपुर

संस्कृत विद्वानों का एक मण्डल हरिद्वार घूमने के लिए जा रहा था। छुटमलपुर के बाहर जल पीने के लिए उनका वाहन एक जलयंत्र को देखकर रुका। जल पीने के पश्चात् टहलते हुए कुछ व्यक्ति मानव सेवा आश्रम में प्रविष्ट हुए। वहां की स्थिति को देखकर विद्याधर ने कहा—चाहे यहां के प्रबन्धक मानवमात्र की सेवा से जुड़े हुए हैं। फिर भी ऋषि दयानन्द से प्रभावित लगते हैं। इतने पर धर्मवीर ने कहा—ये दयानन्दी भी अजीब ही है, क्योंकि महर्षि दयानन्द तो अपनी हर चर्चा में वेद प्रमाण देते हैं या संस्कृत ग्रन्थों का आदर करते हैं, पर आर्यसमाजवाले अधिकतर दयानन्द की जय या बात करते हैं। इस पर विजयपाल ने कहा—आप कहना क्या चाहते हैं? तब उसने कहा—जब महर्षि का परम प्रमाण वेद एवं संस्कृत साहित्य है, तो दयानन्द का अपना योग दान अलग क्या है?

तभी सामने सारी बातें सुनते हुए आश्रम के सहयोगी मिले। उन्होंने सब का स्वागत किया और बैठकर यह चर्चा आगे चलाने का आमन्त्रण दिया। सभी ने इसको स्वीकार किया और सभी आराम से निर्दिष्ट स्थान पर बैठ गये। तब आश्रम का सामान्य परिचय लेने-देने के पश्चात् सहयोगी ने कहा—एक प्राध्यापक यहां ठहरे हुए हैं, उनको भी बुला लेते हैं। प्राध्यापक के सामने जब पूर्ण प्रकरण आया, तो परिचय के पश्चात् उन्होंने कहा—हां, इस चर्चा के सम्बन्ध में मेरा विचार यह है—

'आओ बताये तुम्हें हम दयानन्द क्या थे?

प्रा०—निःसन्देह महर्षि दयानन्द संस्कृत साहित्य और उसमें भी वैदिक वाङ्मय को प्रमुखता देते हैं, परन्तु उनकी स्थिति या योगदान यह है, कि संस्कृत साहित्य के परस्पर विरोधी, असम्बद्ध, विचित्र वर्णनों भरे विशाल भण्डार से महर्षि ने एक जीवन का सुसगतपथ दर्शाया है। जैसेकि एक कुशल विशेषज्ञ सारे देश की एकता की दृष्टि से एक राजपथ बनाए, जोकि यातायात की दृष्टि और देश की एकता के परिप्रेक्ष्य से उपयुक्त हो, तो वह यही करेगा, कि जो भी उसमें बाधक बनता है वह उस को छोड़कर सरल-सपाट-सक्षम राजपथ बनाएगा। ठीक ऐसे ही महर्षि दयानन्द ने सारे संस्कृत साहित्य का मन्थन करके उसके आधार पर जीवन का एक सुसगत पथ दर्शाया। उससे जो भी असगत, असम्बद्ध, विपरीत था, उसको छोड दिया और सुसगत रूप को ही प्रस्तुत किया। तभी तो कहा है—

'जब ललाट पर चेतनता के चिह्न अनिश्चय का अंकित था,
दिखलाया निश्चय-पथ तुम ने शोषित कर शका का सागर।'
[परमानन्द शर्मा—एकबार फिर आओ प्रभुवर]

विद्याधर—क्या इसका कोई उदाहरण दगे।

प्रा०—पहला उदाहरण विवाह वर्णन का ही देखिए! संस्कृत साहित्य में विवाह की आयु की दृष्टि से परस्पर विरोधी और असम्भव चित्रण भी मिलता है। पर महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में विवाह विषयक सभी बातों का स्पष्ट वर्णन किया है। इस दृष्टि से एक उद्धरण देखिए—'आठ, नौ और दशवें वर्ष पर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होते है।'

समु० ४, पृ० ७६ स्थूलाक्षर संस्करण

हां, इस बात को केवल तर्क से ही नही, वेद के मन्त्रों से भी प्रमाणित किया है।

दूसरा उदाहरण अभिवादन का लीजिए। महर्षि ने संस्कृत के सभी शास्त्रो के प्रमाण देते हुए कहा है—हमें परस्पर अभिवादन के लिए 'नमस्ते' का प्रयोग करना चाहिये।

इसका तीसरा उदाहरण है—आर्य नाम। महर्षि का मन्तव्य है, कि जैसे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से नाम होते हैं। ऐसे ही हमारा सामूहिक नाम आर्य है। जिसका अर्थ है—अच्छा, भला और सभी यही सर्वत्र चाहते है। इस सम्बन्ध मे सब से बड़ी बात यही, कि हमारे सारे के सारे शास्त्र भी यही बताते हैं कि हमारा एकमात्र सांझा नाम आर्य ही है।

जगदीशचन्द्र—श्रीमान् जी! आप इस आधार पर सिद्ध क्या करना चाहते हैं?

प्रो०—मेरा भाव बिल्कुल स्पष्ट है, कि महर्षि दयानन्द ने सारे संस्कृत साहित्य का आलोडन करके एक सुसंगत जीवनपथ दर्शाया है। जैसे कि उसके ऊपरवाले विवाह, अभिवादन और आर्य शब्द स्पष्ट प्रमाण हैं। ऐसे ही महर्षि की मान्यता है कि इस जगत् का कर्त्ता-धर्त्ता-नियन्ता एक ईश्वर ही है। अतः उसकी ही उपासना करनी चाहिये। २- परमात्मा की एक जैसी सन्तान होने से सारी मानव जाति एक ही है। ३- धर्म शब्द का मूल भाव अच्छा आचरण ही है और इसी के लिए ही अन्य सब कुछ अर्थात् धर्म से अभिप्रेत कर्मकाण्ड है। ४- जिस भी महापुरुष ने जिस भी क्षेत्र में जो भी महान् कार्य किया है, उसके आधार पर वह उतना ही वन्दनीय है। ये हैं, वे मूल मन्तव्य, जो महर्षि ने सारे साहित्य के आधार पर सुसगठित जीवनपथ के रूप में दर्शाए हैं और यही महर्षि का अपूर्व योगदान है। इसी की दृष्टि से दयानन्दी दयानन्द को इतना अधिक महत्त्व देते हैं और जय-जयकार करते हैं। चाहे यह सब संस्कृत साहित्य के आधार पर ही महर्षि ने दर्शाया है, पुनरपि इसको सुसंगत रूप देना ही महर्षि का अनोखा योगदान है।

गंगाप्रसाद—संस्कृत के सम्बन्ध में यह तो कुछ भ्रम फैलाने वाली ही बात है।

प्रा०—आप सब संस्कृत साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण करें, तो इसी परिणाम पर पहुंचेंगे जैसे कि वहां एक ईश्वर की मान्यता की अपेक्षा अनेक देवी-देवताओं और इष्टों की चर्चा अधिक है। इस का प्रभाव प्रायः अधिकतम संस्कृत विद्वानों पर भी देखा जा सकता है। आज के अनेक शंकराचार्य भी इस बात को स्वीकार करते हैं।

विद्याधर—इसका कोई प्रमाण?

प्रा०—कुछ वर्ष पूर्व जात-पात को लेकर हरिजन समस्या के सम्बन्ध में विश्व हिन्दू परिषद् ने सुधारवादी भावना व्यक्त की थी। उन्ही दिनों होशियारपुर में सनातनधर्म के वार्षिक समारोह पर सम्भवतः श्री निरञ्जनदेव जी शंकराचार्य आए थे। उन्होंने अपने भाषण में इस प्रसग पर कहा—शंकराचार्य पद का अभिप्राय है, अपने शास्त्रों के सिद्धान्तों का सरक्षण। हमारे शास्त्रों में जन्मना जात-पात का समर्थन मिलता है। उनमें हरिजनों के सम्बन्ध में सुधारवादी दृष्टिकोण नही है। अतः शंकराचार्य के लिए आवश्यक है कि उस पद की प्रतिष्ठा का ध्यान रखे।

ऐसे ही कुछ कार्यकर्त्ता एक अन्य शंकराचार्य जी के पास गए। प्रसंगवश सुधारवादी विचारधारा की बात चली। इस पर शंकराचार्य जी ने कहा—सामयिक दृष्टि से और जातीय संगठन के कारण आप सब सुधारवादी विचारधारा को उपयुक्त समझते, हैं तो विश्वस्त होकर ऐसा कार्य कीजिए। हां, आप हम से शास्त्रों की मोहर न लगवाइये। क्योंकि वहां तो दोनों तरह की बातें हैं।

महर्षि दयानन्द ने इस स्थिति में भी एक सुसंगत रूप स्पष्ट किया और यही उनका अनोखा योगदान है।

सभी संस्कृतज्ञ—आप गहरे पानी पैठने की बात कर रहे हैं। इस के लिए हम लौटते समय आपसे आगे की चर्चा चलायेंगे।

अतः बहुत-बहुत धन्यवाद।

शराब हटाओ देश बचाओ

वानप्रस्थ आश्रम का नया रूपान्तर

लेखक—डा० रामेश्वरदयाल गुप्त, एम. ए., पी.एच.डी., सिद्धान्तशास्त्री

सन् १९७४ में मैंने वानप्रस्थाश्रम प्रवेश का विधिवत् संस्कार करवाया था, क्योंकि पुत्र को पुत्र प्राप्त हुआ था और मनुस्मृति में प्रावधान था कि जब पुत्र को पुत्र प्राप्त हो जावे तब पितामह को चाहिए कि वह वन की ओर चल पड़े—

गृहस्थस्तु यदा पश्येद् वलीपलितमात्मनः ।
अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत् ।।

मनुस्मृति ६/२

अर्थ—गृहस्थी के जब बाल पक जायें, पुत्र के पुत्र हो जावे तब उसे वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश ले लेना चाहिए। यद्यपि चारों वेदों में वानप्रस्थ शब्द या इस आश्रम की व्याख्या या व्यवस्थापरक वर्णन कहीं नहीं आया है।

कविवर कालिदास ने जो महाराज विक्रमादित्य के समकालीन थे, रघुवंश में रघुओं की परम्परा उद्भासित करते हुए अवश्य कहा है कि रघुकुल में व्यक्ति शैशव में विद्या में अभ्यस्त, यौवन में सद्-गृहस्थ, वार्धक्य में मुनिवृत्ति वाले तथा अन्त में आध्यात्मिक वातावरण में देह त्यागते थे। पर वहां भी प्रयुक्त शब्द मुनि-वृत्ति ही है। सो, जब महाराज दशरथ वार्धक्य को प्राप्त हुए तब उन्हें जरठपन ने अन्तःप्रेरणा दी। रामचरित मानस ने भी यह चेतना तो वर्णित है—

श्रवन समीप भये सित केसा।
मनहुं जरठपन अस उपदेसा ।।
नृप जुवराज राम कहुं देहू।
जीवन जनम लाहु किन लेहू ।।

अयोध्याकाण्ड, दोहा-१ के बाद

और उन्होंने राज्य का चार्ज रामचन्द्र जी को देने की घोषणा करदी। यदि व्यवधान न पड़ा होता और महाराजा दशरथ का जीवन बना रहता तो वे, कालिदास के अनुसार मुनिवृत्ति लेकर जंगल को चले गए होते। और वानप्रस्थी के रहन-सहन के बारे में मनु, व्यास, बौधायन, आपस्तम्ब और वशिष्ठ ने जो कड़े नियम बनाये थे वे यों हैं—

१. सन्त्यज्य ग्राम्यमाहारं सर्वं चैव परिच्छदम्।
ग्रामादरण्यं निस्सृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः ।।

मनुस्मृति ५/३

अर्थ—वानप्रस्थी को ग्राम्य भोजन और वस्त्र का परित्याग कर देना चाहिए। जितेन्द्रिय बनकर ग्राम से निकलकर अरण्य (वन) में निवास करे।

२. अप्रयत्नः सुखार्थेषु ब्रह्मचारी धराशयः (मनु. ६/२६)

अर्थ—वानप्रस्थी सुखों से दूर रहे। ब्रह्मचारी बनकर भूमि पर शयन करे।

३. वैखानसो वने मूलफलाशी तपश्शीलः ।

(बौधायनसूत्र २/६/२७)

अर्थ—वैखानस (वानप्रस्थी) वन में कन्द, मूल तथा फल खावे और तपश्चर्या करे।

४. चीरवल्कलसंवीतैर्मृगचर्मधारिभिः ।
कार्या यात्रा यथाकालं यथाधर्मं यथाविधि ।।

(महाभारत, अनु. प. अ. १४२/३२)

अर्थ—वानप्रस्थी वन में मोटा कपड़ा पहने। वल्कल, सूती वस्त्र या मृगचर्म पहनकर यथासमय, धर्म के अनुसार तथा यथाविधि वानप्रस्थ जीवन की यात्रा करे।

५. वानप्रस्थो जटिलः चीराजिनवासाः ग्राम्यञ्च न प्रविशेत्।
न फालकृष्टमधितिष्ठेत्। अकृष्टं मूलफलं सञ्चिन्वीत ऊर्ध्वरेता ।।

(वसिष्ठ धमसूत्र)

अर्थ—वानप्रस्थी जटा बढ़ाकर रहें। मृगचर्म या वल्कल वस्त्र धारण करें। ग्राम में प्रवेश न करें। हल से जोती हुई भूमि पर न बैठे। जंगली फलों का ही सदा सेवन करें। ऊर्ध्वरेता (ब्रह्मचर्य पूर्वक) बनकर रहें।

६. ततो मूलैः फलैः पर्णैस्तृणैरिति वर्तयश्चरेत्।
शिलोञ्छेन वर्तयेत्। न चात ऊर्ध्वं प्रतिगृह्णीयात्।
अनुपस्तीर्णे शय्यासने ।।

(आपस्तम्ब धर्मसूत्र २७९/२, १०, ११, १२)

अर्थ—वानप्रस्थी वन में कन्दमूल, फल, पत्तों तथा तृणों का सेवन करते हुए जीवन बितायें। खेत में गिरे हुए अन्नकणों को चुन-चुन कर खावें। आवश्यकता से अधिक ग्रहण न करें। कठोर बिस्तर पर शयन करें।

७. मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैः शाकमूलफलेन वा।
एतैरेव महायज्ञं निर्वपेद्विधिपूर्वकम् ।। (मनु. ६/५)

वानप्रस्थी का कर्त्तव्य है कि वह मुनियों के योग्य अन्न से नाना प्रकार के पवित्र शाक, मूल और फूल से विधिपूर्वक दैनिक महायज्ञ करे।

यह नियम बड़े कड़े और अव्यवहार्य है। उस समय की धन-धान्य रहित गरीबी से जकड़ी अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में बनाए गए थे। तब तो गृहस्थ को भी कहते थे—

सूखी रोटी खाएकर ठण्डा पानी पी।
जो इतना मिल जाए तो क्यों इतराये जी ।।

और यह मुनिवृत्ति तो स्वयं जैन-बौद्ध दर्शन की देन है। ऋषि और मुनि का युग्म तो वैदिक एवं जैन-दर्शन के सम्मिलन के बाद निर्मित हुआ है। ऊपर प्रयुक्त वैखानस शब्द ही बौद्ध वाङ्मय का है। आर्य संस्कृति तो ऋषि बनाना चाहती थी। हमारे महाकाव्यों में ऋषियों के आश्रमों का उल्लेख है। मुनिवृत्ति का नहीं। इन आश्रमों में उनके शिष्य ब्रह्मचारी भी ऋषियों के संग में ही निवास करते थे। राजा राम के काल में भी ऐसे अनेक आश्रम देश में बहुत प्रसिद्ध थे।

भारतीय जनता वहां महर्षियों के चरणों में बैठकर अपने जीवन को सफल बनाया करती थी। अत एव यहां के निवासियों के चरित्र का स्तर बहुत ऊंचा था। ऋषि दुःखियों के दर्द की दवा भी थे। इसलिए कई दुःखी लोग आश्रमों में रहकर शान्तिलाभ करके लौट जाते थे। राजा-महाराजा भी समित्पाणि होकर महर्षियों के चरणों में अपने मुकट मस्तक झुकाया करते थे। वे ऋषि प्रजाओं के लिए आचार मर्यादाओं की स्थापना किया करते थे। आश्रमों में बैठकर ही आरण्यक, श्रुति, स्मृति शास्त्रों की रचना की गई थी। इन श्रुतियों व स्मृतियों को ही जनता अपना संविधान मानती थी। संक्षिप्त रूप से इतिहास वर्णित कुछेक ऋषियों के आश्रमों की रूपरेखा भी यहां प्रस्तुत की जाती है।

अ. महर्षि भारद्वाज का आश्रम

इनका आश्रम तीर्थराज प्रयाग के समीप था। इस आश्रम में हजारों ऋषि-महर्षि, विद्वान्-ब्राह्मण, ब्रह्मचारी रहते थे। इस आश्रम में हर्म्य और प्रासाद आदि भी थे। दशरथपुत्र भरत जब अपनी सेना सहित राम को वापिस लिवाने के लिए जा रहे थे तो इन्हीं महर्षि ने उनका तथा उनकी सेना का भारी आतिथ्य सत्कार किया था। ये महात्मा प्रचुर विद्वान् थे। इन्होंने व्याकरण शास्त्र, आयुर्वेद शास्त्र और विमान शास्त्र आदि अनेक शास्त्र रचे थे।

ब. वाल्मीकि आश्रम

यह दूसरा आश्रम था प्रचेतसवंशी महर्षि वाल्मीकि मुनि का। इनके आश्रम में भी हजारों ब्रह्मचारी वेदादिशास्त्रों का अध्ययन करते थे। राजनीति तथा इतिहास के प्रशिक्षण का भी यहां पूर्ण प्रबन्ध था। इन्होंने करुणातिरेक में सर्वप्रथम कविता श्लोक लिखा और फिर रामायण का महाकाव्य। तदनन्तर वेद की शाखाओं का प्रवचन भी किया। गर्भवती सीता माता को रामचन्द्र ने लोकापवाद

के भय से इन्हीं के सांनिध्य में छुड़वाया था और वहीं लव कुश का जन्म हुआ था और उन्हें अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी थी।

स. अगस्त्य आश्रम

अगस्त्य महर्षि दक्षिण में अपना आश्रम बनाकर रहते थे। उस स्थान के चारों ओर दण्डकारण्य था। उसके समीप एक सुरम्य पहाड़ी पर इनका आश्रम था। ये अपने शिष्यों को वेदप्रवचर के अतिरिक्त अस्त्र-शस्त्र विद्या का ज्ञान दिया करते थे। रामायण के नौवें सर्ग में वर्णन आता है कि जिस समय राम लक्ष्मण दण्डकारण्य में थे, उस समय वे अगस्त्य मुनि जी से मिलने उनके आश्रम पर गए थे। वे मुनि अगस्त्य से मिले। मुनि ने उनका भव्य स्वागत किया। स्वागत सत्कार करने के बाद अगस्त्य जी ने उन्हें कहा

इदं दिव्यं महच्चापं हेमरत्नविभूषितम्।
वैष्णवं पुरुषव्याघ्र निर्मितं विश्वकर्मणा॥

हे पुरुषसिंह ! विश्वकर्मा द्वारा निर्मित, स्वर्ण और रत्नों से विभूषित यह दिव्य तथा विशाल वैष्णव नामक धनुष है। इसे ब्रह्मा जी ने मुझे दिया था। इसे ले लीजिए और इससे दुष्ट राक्षसों का हनन कीजिए। इसके साथ ही जंगल में इनकी अपनी वेधशाला भी थी, अस्तु। स्पष्ट है कि अपने जीवन अनुभवों को इन आश्रमों में वानप्रस्थी ऋषि नि.शुल्क राजपुत्रों से लेकर सामान्यजनपुत्रों तक के मानस में उण्डेल देते थे। वे आश्रम प्रचुर सामग्री से भरपूर होते थे।

आज के युग में हमारी कल्पना उनके ही पुनरुद्धार करने की है। क्योंकि अब न वन रहे, न वनश्री। व्यवस्था को राजकीय प्रोत्साहन प्राप्त नहीं है। नोन तेल का प्रबन्ध भी वानप्रस्थी को करना ही पड़ेगा और परम शत्रु है इन दशाब्दियों की राज्य-पोषित तेजी की अर्थ-व्यवस्था। पर एक वैकल्पिक व्यवस्था अवश्य विचारणीय है और वह है शिक्षा-तन्त्र का वानप्रस्थियों को सौंपा जाना। आज विद्यालयों में अध्यापक गृहस्थ है, अपनी भोगलिप्सा और महत्त्वाकांक्षाओं के सहित उसका सम्पर्क विद्यार्थी से कुछ घण्टों के लिए ही है और उनकी संख्या में 1 और 50 तक का अनुपात है। यदि अनिवार्य वानप्रस्थ की व्यवस्था होती तो नि.शुल्क, निस्पृह अध्यापक और प्रचारक प्राप्त होते, जिनके त्यागमय जीवन की छाप उनके सांनिध्य में आने वालों पर पड़ेगी। ध्येय यह नहीं है कि सारे वानप्रस्थी शिक्षक ही बन जावें। कुछ उनमें अशक्त हो सकते हैं। परन्तु आज के भौतिकवादी चिन्तन में उनकी फिक्र कौन करे ? नगरों के जिन एक-एक कमरों के आवासों में अधूना मजदूर, क्लर्क और अध्यापक अपना जीवन काट देते हैं, उनमें वृद्धजनों की चारपाई तक का ही स्थान कहां है ? हमारी परिवारप्रणाली को समाप्त करने के लिए साम्यवादोन्मुख समाजों और संस्कारों ने जो साधन प्रयोग किये हैं, उनमें यह कबूतरखाने जैसे मकान भी हैं। वह दर्शन जीवित पितरों की पूजा अभ्यर्थना को एक अनावश्यक ढोंग करार देता है क्योंकि वे अनुत्पादक हैं—धन और वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं। इन वृद्धों की विचारधारा पुरानी और धर्म-प्रवीण है। वे देश की मर्यादा और संस्कारों एवं पर्वों से चिपके हैं। साम्यवाद तो नई संस्कृति के निर्माण का डिमडिम पीटता है और उसे वे सब अध्यात्म-निष्णात चिन्तन ढोंग लगते हैं। हा वृद्धजन ! तुम अपने घर में ही अवांछनीय होगये। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पढ़ा-लिखा तुम्हारा पुत्र और पौत्र तुम्हारी हर प्रक्रिया की हंसी उड़ाता है। वह तो ८ बजे सोकर उठता है। शेव करना ही उसका प्रातः का नित्यकर्म है। उपरान्त अण्डे का आमलेट उसका प्रिय प्रातराश है। किंवा सिनेमा एवं टी. वी. में युवतियों के नग्न-नृत्य देखता है या फिल्मी गाने सुनता रहता है। उसकी बैठक में अर्धनग्न या निर्वसना सुन्दरियों के फोटो टंगे हैं। वह अपने को माडर्न कहकर अपने वृद्धों का उपहास करता है। इन वृद्धों की इस सांस्कृतिक अव-रोध से रक्षा होनी चाहिये; और वह इनको वानप्रस्थ आश्रमों में लाकर रखने से ही की जा सकती है।

फिर अनेक ऐसे वृद्ध-जन भी हैं जिन्होंने विधना ने सन्तान से और विशेषकर पुत्ररत्न से वंचित रखा है। जब तक जोड़ा जीवित है, ये चकवा-चकवी एक दूसरे का दुःख निवारण करते रहते हैं, पर युग्म टूटने पर विधुर या विधवा के आंसू कौन पोंछे ? दुख-दर्द और बीमारी में सेवा-शुश्रूषा कौन करे और कौन करे इनकी मरणोपरान्त अन्त्येष्टि, ताकि उनका शव ठेला-गाड़ी में रखा जाकर चुंगी के श्वपचों द्वारा जल-प्रवाह या मिट्टी के तेल द्वारा अग्निदाह से बचाया जा सके। और कौन करे उनका चौथा, शुद्धि, त्रयोदशा, वर्षी और पौराणिक होने पर श्राद्ध, पिण्डदान और तर्पण ताकि वे जन्म-जन्मान्तर तक बन्धु-बान्धवों की स्मृति में रहें और उनसे अपना अंश पाते रहें। पुत्र न होने पर उन्हें नरक से कौन तारे ? इस प्रकार की असीम जनसंख्या की परवाह करने की व्यवस्था इन आश्रमों में ही हो सकती है। ऐ कृतघ्न समाज, जिन वृद्धों ने भरी जवानी समाज के लिए उत्पादन में और उसकी विविध-मना सेवा में आहूत करदी, वार्धक्य में उनके अशक्त होने पर उनकी सेवा-शुश्रूषा का प्रबन्ध न करके तूने अपने को न केवल उन वृद्धों के पुनीत आशीर्वाद से वंचित किया है, वरन् कृतघ्नता का महापाप किया है। इनके निराकरण के लिए वानप्रस्थ आश्रमों की शृंखला स्थापित करनी ही पड़ेगी।

यह कितनी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि भारतीय समाज और सरकार ने यह कार्य अब तक अपने हाथ में नहीं लिया और कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में वृद्ध-जन-आश्रम खोले हैं, जहां वृद्धों को स्थान मिले हैं और वे अपने जीवन के अन्तिम दिन राहत से बिता रहे हैं। परन्तु ईसाई मिशनरियों के औषधि-वितरण से लेकर वृद्धजनाश्रम निर्माण तक के सारे कार्य अपने प्रभु ईसा के ईसाईधर्म में मानवता को लाने का उपक्रम मात्र होते हैं। यह छिपी हुई अन्तर्भावना उनके सब कार्यों में से पर-सेवा के महानतम पुण्य को नष्ट कर देती है। दुख तो इस बात का है कि आश्रम-चतुष्टय की योजना के अन्तर्गत प्रस्तुत ऋषियों और स्मृतियों का यह निदान हमारे स्वतन्त्र भारत की व्यवस्थाओं में स्थान नहीं पा सका। लगभग दस करोड़ रुपया भारत सरकार मदर टैरेसा को दे चुकी है। पर वानप्रस्थ आश्रमों की ओर ध्यान उनका नहीं गया है। यदि सिविल कानून के अन्तर्गत राज्य निःसन्तान लोगों की सम्पत्ति का उनके मरणोपरान्त उत्तराधिकारी हो सकता है, तो जीवन की सन्ध्या में उनके भोजनाच्छादन का उत्तरदायित्व राज्य क्यों नहीं लेता ? मेरा विचार है कि भारतीय प्रजातन्त्र बुद्धिवादी (Rationalistic) है और यदि हम इसके स्तम्भों और जनसमुदाय को वानप्रस्थ-संस्कृति की उपयोगिता समझा सकें तो यह निःसन्देह इधर अपना कर्त्तव्य पूरा करेगा। पेंशन व्यवस्था इस शताब्दी में राज्य ने अवश्य की है पर वह अत्यल्प है और फिर उसका वस्तुओं में विनि-मय कौन करे, यह पेंशन राशि एकमुश्त राज्य संचालित वानप्रस्थ आश्रमों को देनी चाहिये जहां वृद्धजनों के दिन काटने की सम्पूर्ण व्यवस्था हो।

भारतीय समाज तथा विधि ने नारी का सदा संरक्षण किया है, पर उसका उत्तरदायित्व उसके पति अथवा पतिकुल पर ही डाला है। पर आधुनिक समाज क्लिष्टतर होता गया है और पश्चिमीय साम्य-वादी चिन्तन ने सम्मिलित परिवार नष्ट कर दिये हैं। तेजी की अर्थ-व्यवस्था ने मानवीय मूल्य धराशायी कर दिये हैं। अत एव निरा-श्रित महिला या विधवा की दारुण दुःखव्यथा कल्पनातीत-सी है। वह कहां जावे, कहां रहे, कैसे अपने सतीत्व और पवित्रता की रक्षा करे ? सरकार ने बाजार से उठाकर पवित्र जीवन की ओर ले जाने के लिए वेश्याओं के लिए नारी-निकेतन बनाये हैं, जो स्तुत्य कार्य है; पर अन्य असहाय या दुष्काल द्वारा वैधव्य से ग्रसित नारियां कहां जावें। पुनर्विवाह सबका न तो हो सकता है, न सब करना ही चाहती हैं, और न सब कर ही सकती हैं। आयु का भी प्रश्न होता है। मध्य-युगीन अन्धकारमय भारत में उन्हें सती कर देते थे। सती प्रथा और उसके अवशेष अब कानूनन बन्द कर दिए गए हैं। पर जीवनयापन का विकल्प निरूपित नहीं हुआ। अतः आवश्यक है कि महिला वान-प्रस्थाश्रमों का भी जाल देश में बिछाया जावे और प्रत्येक अन्य आश्रम में भी पृथक् महिला-विभाग हो।

हरेक सम्प्रदाय में मनुष्य प्रभुमिलन, स्वर्ग या मुक्ति का महत्त्वा-कांक्षी है। वृद्धावस्था में यह महत्त्वाकांक्षा अति बलवती हो जाती है। उसके भोग भोगने की शक्ति सन्तुष्ट हो चुकी होती है और भूला-बिसरा भगवान् उन्हें याद आता ही है। अतः आवश्यकता है कि इन आश्रमों में भगवद् भजन और योग प्रक्रिया का प्रबन्ध हो। हर सम्प्रदाय के वानप्रस्थाश्रम हों, जिनमें उनकी मान्यता के अनुसार आध्यात्मिक वातावरण प्रस्तुत किया जाता हो और इनमें वे रह सकें। जिनके अपने पेन्शनादि फण्ड हों वे और वे भी रह सकें जो निराधार हों पर उनके व्यय का उत्तरदायित्व समाज और सरकार का हो। परोपकार एवं

शेष पृष्ठ ५ पर

अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

दिनांक २-११-९० को वैदिक योगाश्रम ऋषिनगर हिसार की ओर से आर्यजगत् के प्रकाण्ड विद्वान् डा० सुदर्शनदेव आचार्य एम ए., पी-एच. डी. का अभिनन्दन समारोह विधिवत् सम्पन्न हुआ। प्रातः



८ बजे आचार्य दयानन्द जी शास्त्री ने यज्ञ किया। तत्पश्चात् प्रि० सर्वदानन्द जी आर्य की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन हुआ। प्रथम पुष्प माल्यार्पण द्वारा उनका स्वागत किया गया। सभा संचालक प्राचार्य सत्यकाम ने अभिनन्दनपत्र भेट किया। आश्रम संचालक स्वामी अग्निदेव भीष्म ने आचार्य जी को एक शाल ११०० रुपये भेंट किए तथा ५०० रुपए स्वामी रत्नदेव जी ने गुरुकुल कुम्भाखेड़ा की ओर से भेंट किए।

आचार्य जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। आचार्य जी की विद्वत्ता पर आर्यजगत् को गर्व है। ऐसे नेक इन्सान का सम्मान एवं अभिनन्दन होना ही चाहिए। जब तक आर्य विद्वानों का सम्मान नहीं होगा संसार का भला नहीं हो सकता। प्रायः राजनेताओं का सम्मान होता है। यह बहुत ही उत्तम कार्य किया है। उपरोक्त विचार इन विद्वानों ने प्रकट किए—सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, पं० प्रभुदयाल प्रभाकर, डा० भवानीलाल भारतीय, वानप्रस्थी आनन्दमोहन, स्वामी रत्नदेव जी, वानप्रस्थ ताराचन्द, प्रो० रामविचार, नगरपालिका प्रधान रामभगत गुप्ता जी तथा स्वामी अग्निदेव जी भीष्म आदि। डा० सुदर्शनदेव जी ने भी सभी का आभार व्यक्त किया। इस समारोह में गुरुकुल आर्यनगर, गुरुकुल धीरणवास के अध्यापक एवं विद्यार्थियों के अतिरिक्त शहर के सैकड़ों नर-नारियों ने भाग लिया। ब्र० दीपकुमार आर्य ट्रस्टी योग आश्रम हिसार

आर्यसमाज के शिक्षाक्षेत्र में योगदान पर उपाधि

आर्यसमाज के युवा कार्यकर्ता, आर्यसमाजस्थ अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी श्री धर्मदेव विद्यार्थी को मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ से आर्यसमाज पर शोध कार्य करने के कारण पी-एच.डी. उपाधि दी है। उनका विषय था "१८८३ से १९४७ तक पंजाब में आर्यसमाज का शिक्षाक्षेत्र में योगदान" सम्प्रति आप डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल टोहाना (हिसार) में प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं।

आर्यसमाज बीगोपुर का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बीगोपुर जि० महेन्द्रगढ़ ने अपना वार्षिक उत्सव दि० २२ एवं २३ सितम्बर १९९० को मनाया जिसमें सभा के तीन सूत्री कार्यक्रम का पूरा प्रचार किया गया। इससे प्रभावित होकर अनेक युवकों ने जीवन पर्यन्त कोई भी नशा न करने का व्रत लिया। कई ऐसे महानुभावों ने भी यज्ञोपवीत ली जो पहले कभी शराब के आदी थे और आर्यसमाज के प्रभाव में आकर अब शराब को सर्वदा के लिए त्याग चुके थे।

—आर्य मुसद्दीलाल एम.ए. मन्त्री, आर्यसमाज बीगोपुर

आर्यसमाज भठिण्डा का चुनाव

१. श्री कृष्णकुमार जी—सरक्षक, २. श्री रोशनलाल जी—प्रधान, ३. श्री अशोककुमार जी अग्रवाल—उप-प्रधान, ४. श्री जितेन्द्र कुमार जी—मन्त्री, ५. श्रीमती कमला जी भाटिया—उप-मन्त्री।

शोक प्रस्ताव

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरयाणा) के प्राचार्य श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री एम.ए. की पूज्या माता श्रीमती श्रद्धादेवी जी का दिनांक ३१-१०-९० को अचानक देहावसान हो गया। विद्यालय के प्राध्यापक, छात्र तथा कर्मचारियों ने शोक सभा में माता जी के देहावसान पर गहरा शोक प्रकट किया तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रभु से प्रार्थना की। प्राध्यापक, छात्र तथा कर्मचारीगण

सत्याग्रही सम्मान समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दिनांक २४ नवम्बर, १९९० शनिवार को दोपहर पश्चात् २ से ५ बजे तक हैदराबाद सत्याग्रह (१९३९) स्वतन्त्रता सेनानी समारोह दयानन्दमठ रोहतक में मनाया जा रहा है। इस समारोह में आप सभी निमन्त्रित हैं। परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पधारकर समारोह की शोभा बढ़ाएं।

—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

पारिवारिक यज्ञ

वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी के तत्वावधान में पारिवारिक यज्ञ श्री के० एल० भण्डारी जी के निवास स्थान पर बड़े उत्साह पूर्वक हुआ है। यजमान उनके सुपुत्र जो कि इराक में डाक्टर हैं बने, जिन्होंने यज्ञ के कार्य को बड़े ध्यान और रुचि से सम्पन्न कराया। इस अवसर पर बड़े लोग उपस्थित थे।

इस अवसर पर मंडल की रूपरेखा बताते हुए मंत्री ने निर्माण कार्य में अधिक से अधिक दान देने की अपील की तथा बताया कि निर्माण कार्य शुरु हो गया है। कृपया निम्न पते पर धन भिजवावें।

—वेदमित्र हापुड़ वाले, मन्त्री
वैदिक प्रचार मंडल
७२-बी गोविन्द नगर, अम्बाला छावनी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का १४वां अधिवेशन २३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली में होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक दिल्ली के रामलीला मैदान में १४वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की जोरदार तैयारियां प्रारम्भ हो गई हैं। दिल्ली की सभी आर्यसमाजें महासम्मेलन की सफलता के लिए कार्य कर रही हैं।

इस समागम में देश-विदेश के १० लाख आर्यजन भाग लेंगे। सम्मेलन में देश की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता से विचार किया जाएगा। सच्चिदानन्द शास्त्री सभामन्त्री

आर्यसमाज बूबका जि० यमुनानगर का चुनाव

प्रधान–बाबूराम आर्य, उप-प्रधान–ताराचन्द आर्य, मन्त्री–हुकम सिंह आर्य, उप-मन्त्री–बनारसीलाल आर्य, कोषाध्यक्ष–जगदीशचन्द्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष–हुकमचन्द आर्य, प्रचार मन्त्री–सरदारा राम।

पृष्ठ ४ का शेष

शिक्षा-दीक्षा के प्रसार के तप का विकल्प उनकी इच्छा पर छोड दिया जावे। इस प्रकार यह आश्रमव्यवस्था बहुद्देशीय तथा बहुविधि एवं भिन्न-भिन्न साधनों से सम्पन्न होगी।

हरिद्वार में पुण्य-तोया-जाह्नवी के तट पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आकर पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराई थी और धर्म-चक्र का प्रवर्तन किया था। यह आर्यसमाजियों का तो सारनाथ है। यहीं महात्मा मुंशीराम नेह्म ब्रह्मचर्याश्रम की वैदिक मर्यादा के निर्माणार्थ गुरुकुल आन्दोलन का श्रीगणेश किया था और गंगा के इस ओर यहीं हमारे पूज्य महात्मा नारायण स्वामी ने वनोय-संस्कृति के परीक्षणार्थ विरक्त आश्रम को स्थापित किया था। आर्यसमाज में जो युग-द्रष्टा हुए हैं, वे सूत्र-रूप में भविष्य की समस्याओं का निदान प्रस्तुत करते हैं। स्वामी समर्पणानन्द जी ने आदर्श गृहस्थाश्रम के रूप में प्रभात आश्रम की प्रक्रिया प्रस्तुत की थी। भारतीयों को क्रान्ति साधु, सन्तों और महात्माओं द्वारा ही उद्भूत और प्रस्फुटित होती रही है। आइये इन संस्थाओं को वृहद् रूप दें। देश-विदेश में फैली आर्यसमाजों तथा प्रतिनिधि सभाओं से यह अपेक्षित है कि विद्यालय खोलने के बाद अब वे जिले में एक-एक वानप्रस्थ आश्रम बनावें जहां से न केवल निःशुल्क शिक्षा और प्रचार की व्यवस्था हो, वरन् जहां व्यवसाय-निवृत्त, ससन्तान और निःसन्तान दोनों प्रकार के वृद्ध नर-नारी स्व-व्यय या समाज और सरकार के व्यय पर अपना शेष जीवन प्रकृति माता की गोद में सुगमता से और आध्यात्मिक वातावरण में बिता सकें। निश्चय ही वृद्धजनों के आशीर्वाद से हमारे आर्यसमाज की वाटिका और देश का उद्यान फले-फूलेगा।

घर का वैद्य–

नेत्र रक्षा के साधन

चक्षुहीन ही जानता है कि यह अंग कितना मूल्यवान् है। मनुष्य को स्त्री, पुत्र, पुत्री और धन ये सब बार बार मिल सकते हैं किन्तु नेत्र एक बार चले जाने से किसी मूल्य पर भी प्राप्त नहीं हो सकते। अतः चक्षु रक्षा के उपायों पर अमल करना अत्यावश्यक है तथा इनका प्रयोग सोने पर सुहागा है।

१–चक्षु:स्नान

प्रात.काल शुद्ध जल लेकर इससे मुख को इतना भर लो कि इसमें और जल न आ सके। इस जल को मुख में ही रख। दूसरे शुद्ध जल से दोनों आंखों में बार-बार छींटे लगाये जिससे मैल व उष्णता सर्वथा दूर हो जाय। इस क्रिया को प्रतिदिन करना चाहिये।

२–उष:पान

इसके पश्चात् कुल्लो करके मुख नाक आदि को साफ करके नाक के एक वा दोनों छिद्रों द्वारा ही आठ दस घूंट जल पी लो। नाक के द्वारा जलपान करने से कब्जी दूर होकर शौच साफ होता है। यह क्रिया बवासीर, जुकाम आदि रोगों से बचाती और आंखों की ज्योति बढ़ाती है।

३–नंगे पाव घास पर चलना

नंगे पैर ओस पड़ी हुई घास पर चलना आंखों की ज्योति के लिए अत्यन्त लाभदायक है। प्रातः और सायं हरी-हरी घास, फसलों तथा वृक्षों को देखें। सम्पादक

दयानन्द सा सत्यवक्ता नहीं है

(ले० पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी १७५ जयनगर, जबलपुर)

दयानन्द सा सत्यवक्ता नहीं है।
दयानन्द सा धर्मप्रवक्ता नहीं है॥
दयानन्द को सत्यार्थप्रकाश में पाओ।
जितना विचारो उतना ही जानो॥
दयानन्द की वाणी में मूढ़ता नहीं है।
दयानन्द की बात में चालाकी नहीं है॥१

कर्मकाण्ड का ग्रन्थ बनाया।
'संस्कार विधि' है नाम धराया॥
कल्पसूत्रसम अनुपम ग्रन्थ।
गागर में सागर है बन्द॥
इसमें कहीं छल छद्म नहीं है॥२
'व्यवहार भानु' सा छोटा ग्रन्थ।
सत्य व्यवहार का दिखलाता पन्थ॥
'गोकरुणा निधि' यदि पढ़ जाओ।
गो माता में भक्ति जगाओ॥
दयानन्द में कुटिलता नहीं है।
दयानन्द सा सत्य वक्ता नहीं है॥३

वेदों को यदि जानना चाहो।
'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लाओ॥
फिर तुम वेदभाष्य पढ़ डालो।
उसमें भी भावार्थ विचारो॥
ऋषि वाक्यों में विफलता नहीं है॥४
उपदेशक यदि बनना चाहो।
'उपदेश मंजरी' चट कर डालो॥
कहीं नहीं थोथे व्याख्यान।
उनसे होवे जगत् कल्याण॥
दयानन्द सा हितकारी नहीं है॥५

न किसी को देखो न किसी को सुनो।
ऋषि को ही देखो ऋषि को ही गुनो॥
दयानन्द सा वेदवक्ता नहीं है।
दयानन्द सा सत्यवक्ता नहीं है॥६

आर्यसमाज कानपुर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर का १११वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर शनिवार ९ फरवरी से मंगलवार, १२ फरवरी १९९१ तक श्रद्धानन्द पार्क में समारोहपूर्वक मनाया जाना निश्चित हुआ है। यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं सम्मेलन आदि होंगे।

(डा०) विजयपाल शास्त्री मन्त्री

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल का चुनाव

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल का वार्षिक चुनाव 2-12-90 दिन रविवार प्रातः 9 बजे साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् होना निश्चित हुआ है।

मन्त्री, आर्यसमाज होली मोहल्ला

बूबका में वेदप्रचार की धूम

आर्यसमाज बूबका जि० यमुनानगर में २४, २५ अक्टूबर को वेदप्रचार तथा यज्ञ हुआ। यज्ञ पर १० युवकों ने यज्ञोपवीत लिए। सभा के भजनोपदेशक श्री पं० चिरंजीलाल जी को भजनमण्डली एवं पं० शेरसिंह आर्य के मधुर भजन हुए जिसका जनता के ऊपर अच्छा प्रभाव पड़ा। यज्ञ के ब्रह्मा श्री वानप्रस्थी हरलाल जी थे। सभा को वेद प्रचार दशांश एवं सर्वहितकारी शुल्क ४०० रु० दिया।

आर्य सम्मेलन पिनगवा स्थगित

१८-११-९० रविवार को पिनगवा (गुड़गांव) में होनेवाला आर्य महा सम्मेलन विशेष परिस्थियों के कारण स्थगित करने का निश्चय किया है। —पदमचन्द आर्य

पं० पनमेश्वरीदत्त आर्य का तृतीय स्मृति दिवस सम्पन्न

गत वर्ष की भांति ११ अक्तूबर १९९० को वैदिक विद्वान् स्वर्गीय पं० पनमेश्वरीदत्त (बालसमन्द) निवासी का स्मृति दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। प्रातःकाल यज्ञ किया गया। आर्यसमाज बालसमन्द के अधिकारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। महाशय रामजीलाल आर्य की अध्यक्षता में एक सभा हुई। प्रधान श्री दीवानसिंह आर्य ने पं० जी के जीवन एवं कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनका जीवन सादा, पवित्र, चरित्र के धनी निर्भीक, शादियों में आडम्बर एवं दिखावा नहीं करते थे। अभयदान १९४७ में गांव में मुसलमानों को हवन करके शुद्ध किया। संस्कार एवं यज्ञों में अटूट श्रद्धा थी। स्वामी दयानन्द जी के सच्चे भक्त एवं आर्यसमाज बालसमन्द के स्तम्भ थे। इनके अतिरिक्त मन्त्री जी मा० देवेन्द्र शर्मा, मा० जगदीश आर्य सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी वानप्रस्थ ताराचन्द जी श्री दुलीचन्द जी शास्त्री आदि विद्वानों ने भी श्रद्धांजली अर्पित की।

क्रान्तिकारी जी की प्रेरणा से गांव से दो शराब के ठेके बन्द करवाने पर भी विस्तार से चर्चा हुई।

—माईलाल जी आर्य, मन्त्री आर्यसमाज, बालसमन्द।

उपासना योग के शत्रु और उनके दूर करने के उपाय

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

योगदर्शन में उपासना में आने वाले नव विघ्न बताये हैं, वे इस प्रकार हैं—

व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ।। योग० १।३०।।

ये नव विघ्न इस प्रकार हैं—(व्याधि) एक व्याधि अर्थात् धातुओं की विषमता से ज्वर आदि पीड़ा का होना। दूसरा—(स्त्यान) अर्थात् सत्यकर्मों में अप्रीति। तीसरा—(संशय) अर्थात् जिस पदार्थ का निश्चय किया चाहे उसका यथावत् ज्ञान न होना। चौथा—(प्रमाद) अर्थात् समाधि साधनों के ग्रहण में प्रीति और उनका विचार यथावत् न होना। पांचवां—(आलस्य) अर्थात् शरीर और मन में आराम की इच्छा से पुरुषार्थ छोड़ बैठना। छठा—(अविरति) अर्थात् विषय सेवा में तृष्णा का होना। सातवां—(भ्रान्तिदर्शन) अर्थात् उल्टे ज्ञान का होना, जैसे जड़ में चेतन और चेतन में जड़बुद्धि करना, ईश्वर में अनीश्वर और अनीश्वर में ईश्वरभाव करके पूजा करना। आठवां—(अलब्धभूमिकत्व) अर्थात् समाधि की प्राप्ति न होना और नववां—(अनवस्थितत्व) अर्थात् समाधि की प्राप्ति होने पर भी उसमें चित्त स्थिर न होना ।। अब इनके फल लिखते हैं—

दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ।।
योग० १।३१

अर्थात् दुःख की प्राप्ति, मन का दुष्ट होना, शरीर के अवयवों का कम्पना, श्वास और प्रश्वास के अत्यन्त वेग से चलने में अनेक प्रकार के क्लेशों का होना, जो कि चित्त को विक्षिप्त कर देते हैं। ये सब क्लेश अशान्त चित्त वाले को प्राप्त होते हैं, शान्त चित्त वाले को नहीं। और इनके छुड़ाने का मुख्य उपाय यही है कि—

तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः ।। योग० १।३२।।

जो केवल एक अद्वितीय ब्रह्मतत्त्व है उसी में प्रेम और सर्वदा उसकी आज्ञापालन में पुरुषार्थ करना है, वही एक विघ्नों के नाश करने को वज्ररूप शस्त्र है, अन्य कोई नहीं। इसलिये सब मनुष्यों को अच्छी प्रकार प्रेमभाव से परमेश्वर के उपासना योग में नित्य पुरुषार्थ करना चाहिये, कि जिससे ये सब विघ्न दूर हो जायें। आगे जिस भावना से उपासना करने वाले को व्यवहार में अपने चित्त को प्रसन्न करना होता है, सो कहते हैं—

मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम् ।। योग० १।३३।।

अर्थात् इस संसार में जितने मनुष्य आदि प्राणी सुखी हैं उन सबके साथ मित्रता करना। दुःखियों पर कृपादृष्टि रखनी। पुण्यात्माओं के साथ प्रसन्नता। पापियों के साथ उपेक्षा, अर्थात् न उनके साथ प्रीति रखना और न वैर ही करना। इस प्रकार के वर्तमान से उपासक के आत्मा में सत्यधर्म का प्रकाश और उसका मन स्थिरता को प्राप्त होता है।

प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य ।। योग० १।३४।।

जैसे भोजन के पीछे किसी प्रकार से वमन हो जाता है, वैसे ही भीतर के वायु को बाहर निकाल के सुखपूर्वक जितना बन सके उतना बाहर ही रोक दे। पुनः धीरे-धीरे भीतर लेके पुनरपि ऐसे ही करे। इसी प्रकार बारम्बार अभ्यास करने से प्राण उपासक के वश में हो जाता है। और प्राण के स्थिर होने से मन, मन के स्थिर होने से आत्मा भी स्थिर हो जाता है। इन तीनों के स्थिर होने के समय अपने आत्मा के बीच में जो आनन्दस्वरूप अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके स्वरूप में मग्न हो जाना चाहिए। जैसे मनुष्य जल में गोता मारकर ऊपर आता है, फिर गोता लगा जाता है, इसी प्रकार अपने आत्मा को परमेश्वर के बीच में बारम्बार मग्न करना चाहिए।

योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः ।। योग० २।२८

आगे जो उपासना योग के आठ अंग लिखते हैं, उनके अनुष्ठान से अविद्यादि दोषों का क्षय और ज्ञान के प्रकाश की वृद्धि होने से जीव यथावत् मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि ।। योग० २।२९।।

अर्थात् एक (यम) दूसरा (नियम), तीसरा (आसन), चौथा (प्राणायाम), पांचवां (प्रत्याहार), छठा (धारणा), सातवां (ध्यान) आठवां (समाधि) ये उपासना योग के आठ अंग कहाते हैं।

त्रयमेकत्र संयमः ।। योग० ३।४।।

जिस देश में धारणा की जाय, उसी में ध्यान, और उसी में समाधि, अर्थात् ध्यान करने योग्य परमेश्वर में मग्न हो जाने को 'संयम' कहते हैं। जो एक ही काल में तीनों का मेल होना है, अर्थात् धारणा से संयुक्त ध्यान, और ध्यान से संयुक्त समाधि होती है उसमें बहुत सूक्ष्म काल का भेद रहता है। परन्तु सब आनन्द के बीच में तीनों का फल एक ही हो जाता है।

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः ।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ।। कठोप० १।२।२४

यह उपासनायोग दुष्ट मनुष्य को सिद्ध नहीं होता क्योंकि जब तक दुष्ट कामों से अलग होकर, अपने मन को शान्त और आत्मा को पुरुषार्थी नहीं करता तथा भीतर के व्यवहारों को शुद्ध नहीं करता, तब तक कितना ही पढ़े वा सुने, उसको परमेश्वर की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। ॐ

चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

हमारे घर चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। हमने ६ नवम्बर १९८९ से १३ दिनांक तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया। पुनः २५ मार्च १९९० से ३ अप्रैल तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ कराया तदनन्तर १८ अक्टूबर १९९० दीपावली से २५ दिनांक तक सामवेद और अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुए। इस प्रकार हमने एक वर्ष में ही चतुर्वेद पारायण यज्ञ पूरा किया। इन यज्ञों में स्वामी धर्मानन्द जी महाराज, पं० मोतीराम जी 'वेदपाठी' (कुरुक्षेत्र), पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदमार्तण्ड गुरुकुल कालवा तथा स्थानीय विद्वानों ने सहयोग प्रदान दिया।

जयचन्द आर्य
ब्रह्मप्रकाश, क्लोथ मर्चेण्ट पटियाला चौक, जीन्द

(पृष्ठ १ का शेष)

इससे पीड़ित रहा। एलौपैथी वालों ने तो प्रोस्टेट ग्रन्थि की शिकायत का भी अनुमान किया। रोग एक बार तो इतना विकराल हो गया कि मेरे लिये यात्रा करना तथा उपदेशार्थ प्रवास पर जाना कठिन होगया। मैं १९८७ के ऋषि मेले पर अजमेर गया। स्वामीजी भी अजमेर पधारे थे। हम दोनों को एक ही गाड़ी से दिल्ली आना था। स्वामीजी से प्लेटफार्म पर ही थोड़ी देर साथ बैठने का अवसर मिला। मैंने अपनी कष्ट कथा उन्हें बताई। स्वामीजी ने मुझे तुरन्त आश्वस्त किया और मठ में जाते ही औषधि भेज दी। साथ ही उचित पथ्य तथा आहारादि का भी निर्देश किया। कहना नहीं होगा कि मैं स्वस्थ होगया। और मेरी पीड़ा का सहज ही निवारण होगया।

स्वामीजी मितभाषी तथा स्थितप्रज्ञ हैं, अतः उनकी असाधारण शास्त्रीय योग्यता का सहज ही अनुमान नहीं होता। गतवर्ष की ही बात है। परोपकारिणी सभा की बैठक में ऋषि उद्यान में स्थापित किये जानेवाले उपदेशक विद्यालय के पाठ्यक्रम की चर्चा चली और किसी समस्या पर विचार प्रकट करने का अवसर आया तो मैं यह देखकर दंग रह गया कि महाराज का शास्त्रों में कितना गम्भीर प्रवेश है। साधारण जन तो उन्हें तपस्वी सन्त ही जानते हैं, किन्तु उनके पाण्डित्य से तो वे ही लोग अवगत होंगे जो उनके निकट सम्पर्क में आते हैं अथवा उनके शिष्य रहे हैं। दस वर्ष से चण्डीगढ़ में रहने पर भी मुझे दयानन्द मठ में जाने का तथा वहां के अमूल्य पुस्तक संग्रह को देखने का अवसर नहीं मिला। इसबार स्वामीजी ने मुझे वर्षा ऋतु में मठ में आने का अनुरोध किया है तब मुझे मठ वासियों के समक्ष दयानन्द जीवन कथा कहने का भी अवसर मिलेगा।

पातंजल ध्यान योग शिविर सम्पन्न

हरिद्वार, आर्यनगर योगधाम मे दिनाक १० अक्टूबर से आयोजन किया गया ध्यान योग शिविर दिनाक १७ अक्टूबर, १९९० को सम्पन्न हुआ। शिविर में देश के विभिन्न प्रदेशो से योगाभिलाषी सम्मिलित हुए। वर्तमान मे यान्त्रिक जगत् की भागदौड से उत्पन्न अशान्ति, असन्तोष, स्वार्थ काम-वृत्ति तथा लोभ के बढ जाने से मानव जगत् पूर्णरूप से बेचैन है। इन सभी परिस्थितियो से अपने आपको बचाने के लिए पातजल ध्यान योग की पद्धति का आश्रय बताया गया। यही पद्धति वेदानुकूल प्राचीन पद्धति है। विश्व मे प्रचलित विभिन्न योग-पद्धतियों का विश्लेषण करते हुए अन्य सभी पद्धतियों का एकागी अनुभव किया गया। शिविर मे आयोजित सगोष्ठी में वदिक योग पद्धति जो मानवमात्र के लिए हितकारी है, साथ ही मत-पन्थों से भिन्न, वैज्ञानिक पद्धति है, उसी का प्रसार करने पर बल दिया गया।

—स्वामी योगानन्द सरस्वती

विशेषांक संग्रहणीय रहा

सर्वहितकारी का ऋषि निर्वाण विशेषाक प्राप्त हुआ। विशेषाक वास्तव में काफी सुन्दर एव आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। अत पत्रिका का यह अक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय रहा है। विशेषाक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई वर्क्स जोशी चौहान (सोनीपत)

ऋषि की आवाज सुनो

[illegible] की [illegible] सुनो।

ऋषि ने जो सन्देश दिया था उसपर पुन विचार करो॥
पैदा होते ही बच्चा अग्रेजी भाषा सीख रहा है।
हिन्दी की गिनती नहीं आती, वन टू थ्री बोल रहा है॥
यज्ञोपवीत का नाम न जाने, नकटाई को धार रहा है।
नमस्ते करना भूल गया है, अकल गुडमानिंग सीख रहा है।
विदेशी भाषा से पहले, मातृभाषा का ज्ञान करो॥
ऋषि की आवाज सुनो॥

जिस कालेज में लडका पढ़ता उसी में पढ़ती है लडकी।
आकर्षण पैदा करने में फैशन की है धू भडकी॥
फिल्मी गाने गा गा करके प्रेम की पींग बढ़ाते हैं।
नहीं सुनाई होती है तब प्रेम-पत्र भिजवाते हैं॥
दुष्परिणामों से बचने को, सहशिक्षा को बन्द करो।
ऋषि की आवाज सुनो॥

लडकी पैदा हो जाने पर घर में मातम सा छाता है।
लडका यदि जन्म ले तो घर खुशियों से भर जाता है॥
लड़की का पालन-पोषण भी लापरवाही से होता है।
लडका शीघ्र जवान हो जाय ध्यान विशेष दिया जाता है॥
लडकी को लडका समझो, नारी का मत अपमान करो।
ऋषि की आवाज सुनो॥

—देवराज आर्य
प्रचारमन्त्री, आर्यसमाज बल्लबगढ़

'प्रकर'—[illegible] १०७१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि. नं० P/RTK-४६ ८१२ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३,०६०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए० २३ कार्तिक २०४७ वि०

वर्ष १८ अंक १ २१ नवम्बर १९९० वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

वेद में परमेश्वर का अनन्त बल

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

परमात्मा का अनन्त बल वेदों में इस प्रकार बतलाया है—

यदा ते हर्यता हरी वावृधाते दिवे दिवे ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥
(ऋ० अ० ६ । अ० १ । व० ६ । मं० ३)

हे इन्द्र परमेश्वर ! आपके अनन्त बल और पराक्रम गुणों से सब संसार का धारण आकर्षण और पालन होता है । आपके ही सब गुण सूर्यादि लोकों को धारण करते हैं । इस कारण से सब लोक अपनी-अपनी कक्षा और स्थान से इधर-उधर चलायमान नहीं होते ।

दूसरा अर्थ—इन्द्र जो वायु, सूर्य है, इसमें सूर्य के रचे आकर्षण, प्रकाश, बल आदि बड़े-बड़े गुण हैं । उनसे सब लोकों का दिन-दिन और क्षण-क्षण के प्रति धारण, आकर्षण व प्रकाश होता है । इस हेतु से सब लोक अपनी-अपनी ही कक्षा में चलते रहते हैं, इधर-उधर विचल भी नहीं हो सकते ।

यदा ते मारुतीर्विशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥
(ऋ० अ० ६ । अ० १ । व० ६ । मं० ४)

हे परमेश्वर ! आपकी जो प्रजा उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय धर्मवाली और जिसमें वायु प्रधान है, वह आपके आकर्षणादि नियमों से तथा सूर्यलोक के आकर्षण करके भी स्थिर होरही है । जब इनके प्रजाओं को आपके गुण नियम में रखते हैं, तभी भुवन अर्थात् सब लोक अपनी-अपनी कक्षा में घूमते और स्थान में बस रहे हैं ।

यदा सूर्यममुं दिवि शुक्रं ज्योतिरधारयः ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥
(ऋ० अ० ६ । अ० १ । व० ६ । मं० ५)

हे परमेश्वर ! जब उन सूर्यादि लोकों को आपने रचा और आपके ही प्रकाश से प्रकाशित होरहे हैं और आप अपने अनन्त सामर्थ्य से उनका धारण कर रहे हो, इसी कारण से सूर्य और पृथिवी आदि लोकों और अपने स्वरूप का धारण कर रहे हैं । इन सूर्य आदि लोकों का सब लोकों के साथ आकर्षण से धारण होता है । इससे यह सिद्ध हुआ कि परमेश्वर सब लोकों का आकर्षण और धारण कर रहा है ।

व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो अद्भुतोऽन्तर्वावदकृणोज्ज्योतिषा तमः ।
वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद् वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम् ॥
(ऋ० अ० ४ । अ० ५ । व० १० । मं० ३)

हे परमेश्वर ! आपके प्रकाश से ही वैश्वानर सूर्य आदि लोकों का धारण और प्रकाश होता है । इस हेतु सूर्य आदि लोक भी अपने-अपने आकर्षण से अपना और पृथिवी आदि लोकों का भी धारण करने में समर्थ होते हैं । इस कारण आप सब लोकों के परममित्र और स्थापन करनेवाले हैं और आपका सामर्थ्य अत्यन्त आश्चर्यरूप है, सो सविता आदि लोक अपने प्रकाश से अन्धकार को निवृत्त कर देते हैं तथा प्रकाशरूप और अप्रकाशरूप इन दोनों लोकों का समुदाय धारण और आकर्षण व्यवहार में वर्तते हैं । इस हेतु से इनसे नाना प्रकार का व्यवहार सिद्ध होता है । वह आकर्षण किस प्रकार से है कि जैसे त्वचा में लोकों का आकर्षण होरहा है, वैसे ही सूर्य आदि लोकों के आकर्षण के साथ सब लोकों का आकर्षण होरहा है और परमेश्वर भी इन सूर्य आदि लोकों का आकर्षण कर रहा है ।

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
(यजु० ३३।४३)

सविता जो परमात्मा, वायु और सूर्यलोक हैं, वे सब लोकों के साथ आकर्षण, धारण गुण से सहित वर्तते हैं, सो हिरण्यय अर्थात् अनन्त बल, ज्ञान और तेज से सहित 'रथेन' आनन्दपूर्वक क्रीडा करने के योग्य ज्ञान और तेज से युक्त है । इसमें परमेश्वर सब जीवों के हृदयों में अमृत अर्थात् सत्य विज्ञान को सदैव प्रकाश करता है और सूर्यलोक भी रस आदि पदार्थों को मर्त्य अर्थात् मनुष्यलोक में प्रवेश करता और सब लोकों को व्यवस्था से अपने-अपने स्थान में रखता है, वैसे ही परमेश्वर धर्मात्मा ज्ञानी लोगों को अमृतरूप मोक्ष देता और सूर्यलोक भी रसयुक्त जो औषधि और वृष्टि का अमृतरूप जल को पृथिवी में प्रविष्ट करता है । सो परमेश्वर सत्य असत्य का प्रकाश और सब लोकों का प्रकाश करके सबको जानता है तथा सूर्यलोक भी रूपादि का विभाग दिखलाता है ।

इस मन्त्र से पहिले मन्त्र में 'द्युभिरक्तुभि' इस पद से यही अर्थ आता है कि दिन-रात अर्थात् सब समय में सब लोकों के साथ सूर्यलोक का और सूर्य आदि लोकों के साथ परमेश्वर का आकर्षण होरहा है तथा सब लोकों में ईश्वर ही की रचना से अपना-अपना आकर्षण है और परमेश्वर की तो आकर्षणरूप शक्ति अनन्त है । यहां लोकों का नाम 'रज' है और रथ शब्द के अनेक अर्थ हैं, इस कारण से कि जिससे रमण और आनन्द की प्राप्ति होती है, उसको 'रथ' कहते हैं ।

इन वेदमन्त्रों में सूर्यादि सब लोक-लोकान्तर परमेश्वर के अनन्त बल से टिके हुए हैं इस प्रकार बतलाया है ।

आर्यसमाज भाण्डवा का छठा सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक १३–१४ अक्तूबर को आर्यसमाज भाण्डवा, जिला भिवानी का छठा जलसा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ । इसमें स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं० विश्वामित्र आर्य, पं० ताराचन्द वैदिक तोप, बहिन कौशल्या शास्त्री, पं० भरतसिंह शास्त्री एवं श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के व्याख्यान और भजनोपदेश हुए । मार्ग बाधा होते हुए भी बाहर के सैकडों आर्य सज्जन, माता-बहिनों ने पहुंचकर उत्सव की शोभा बढाई । आर्यसमाज भाण्डवा के प्रधान श्री रामफल आर्य इसी कार्य से सेना से अवकाश लेकर पहुँचे और अपने उत्साह और पुरुषार्थ से उत्सव सफल बनाया । प्रभाव अच्छा हुआ ।

—धर्म शास्त्री, मन्त्री : आर्यसमाज

मद्य-निषेध

वैसे तो नशा कई प्रकार का होता है। जैसे ताकत, कुर्सी, जवानी, दौलत, चरस, भांग, गांजा, स्मैक, शराब इत्यादि। परन्तु शराब का प्रचलन आजकल अमीर तथा गरीब में एक फैशन सा बन गया है। पश्चिमी सभ्यता के अनुकरण ने ही शराब सेवा को बढ़ावा दिया है। खुशी या गमी के सभी अवसरों पर इसका बोलबाला रहता है तथा इससे हर वर्ग का मनुष्य प्रभावित हो चुका है। हमारा समाज अभी तक विकसित मानसिकता पर नहीं पहुंच सका है। यहां पाप से नहीं पापी से घृणा की जाती है। हमारे समाज में वैचारिक क्रांति की कमी पाई जाती है। इसका परिणाम पूरा परिवार भोगता है।

दुर्भाग्य से यदि परिवार का मुखिया ही शराब पीने लगता है तो उसकी पत्नी और बच्चे भी सामाजिक अवहेलना का शिकार बन जाते हैं और उन्हें अपमानित होना पड़ता है। शराब का सेवन करने वाले की दिनचर्या अनियमित रहती है। परिवार के सदस्य उनके समय पर घर न लौटने से चिंतित रहते हैं। पीने वाले के साथ दुर्घटना व लड़ाई-झगड़े की सम्भावना बनी रहती है। शराबी व्यक्ति अपनी पत्नी की मनोव्यथा का कभी अनुमान भी नहीं लगा पाता। शराबी अपने अवगुणों को छुपाने के लिए पत्नी को सार्वजनिक रूप से अपमानित करता है। जब पीने से रोकती है तो कहता है कि अपनी कमाई की पीता हूं तेरे बाप की नहीं पीता। कभी-कभी अपनी दुर्बलता को ढापने के लिए पत्नी के चरित्र पर भी दोषारोपण करता है। नशे में पत्नी पर हाथ भी उठाता है।

नशे करने वाले व्यक्ति की आय का एक बड़ा भाग शराब इत्यादि पर व्यय हो जाता है। फलस्वरूप परिवार में आर्थिक अभाव बने रहते हैं। उधार न दे पाने पर परिवार को समाज में अपमानित होना पड़ता है। रहन-सहन का स्तर भी ऊंचा नहीं रह पाता। धनाभाव के कारण परिवार के सदस्य गलत मार्ग भी अपना लेते हैं। नशे से पत्नी, परिवार, बच्चों व समाज पर बुरा असर पड़ता है। पत्नी व निरीह बच्चों को अपमानित करनेवाला समाज यदि शराबी व्यक्ति को ही सही तस्वीर दिखाए तो शायद कुछ परिवर्तन आ सके। वे मित्र, सम्बन्धी, पति जिनका आदर करता है उसे समझाएं, परिवार को साहस बंधाये तो शायद कुछ सुधार आए।

ऋग्वेद के अनुसार "एक शराबी व्यक्ति पापी है।" दयानन्द जी का कहना है कि शराब मनुष्य को राक्षस बना देती है। शराब एक धीमा जहर भी है।

शराब पीना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी के समान है तथा चरित्र भी गिर जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि जब धन गया तो कुछ नहीं गया, जब स्वास्थ्य गया तो कुछ गया लेकिन अगर चरित्र गया तो सब कुछ चला गया।

शराबी से नाखुशी प्राप्त होती है और वह व्यक्ति स्वयं, परिवार समाज तथा राष्ट्र के लिए कुछ नहीं कर सकता। सभी धार्मिक ग्रंथों ने नशे का खंडन किया है। शराब दिल तथा जिगर को बुरी तरह प्रभावित करती है। नशा शरीर की आन्तरिक तथा बाहरी बिमारियों को पैदा करता है। शराब पीने से मनुष्य स्वार्थी, भावुक, शक्की तथा गुसैला बन जाता है। शराब आंखों पर भी प्रभाव डालती है तथा व्यक्ति अपनी सतर्कता खो बैठता है। शराब का आदी मनुष्य अपनी स्मरण शक्ति भी खो बैठता है। भगवान् कृष्ण ने 'भगवद् गीता' में कहा है कि जब स्मरण शक्ति कमजोर होती है तो मनुष्य अपने श्रेय साधन से गिर जाता है। शराबी व्यक्ति विलासी बन जाता है। सुरा है तो उसे सुन्दरी भी चाहिये। कभी-कभी तो शराबी मनुष्य Leg, Peg and Egg की नीति में ही विश्वास करने लग जाता है। नशा सेवन परिवार, समाज व कलान्तर में देश के लिए दुर्भाग्य पूर्ण है। महात्मा गांधी ने कहा था कि शराब शरीर और आत्मा दोनों का नाश करती है परन्तु तिरस्कार व उपहास इस समस्या का निदान नहीं है। इस अभिशाप से मुक्ति पाने का उपाय चिकित्सा क्षेत्र में है क्योंकि शराब पीना भी एक प्रकार की लत या बिमारी है। यह एक ऐसा भयानक रोग है जिससे पूरा परिवार तबाह हो जाता है। बहुत सी दुर्घटनाएं, अपराध, हत्याएं इसी वजह से होती हैं।

मद्य-निषेध के लिए समय-समय पर प्रयास हुए हैं पर वे विशेष कारगर साबित नहीं हुए। इसका प्रमुख कारण भारतवासियों में संयम का अभाव तथा सरकार की ढीली नीति है। कुछ राज्यों ने अवश्य ही मद्य-निषेध को अपने क्षेत्र में प्रभावी बनाया है। जनता सरकार का प्रतिनिधित्व करनेवाले प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई मद्यपान के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने तो यहां तक कह दिया था— "अगर नशाबंदी करने से सरकार गिरती है तो मुझे इसका जरा भी अफसोस न होगा।" परन्तु अफसोस तो इस बात का है कि ठेकों की मात्राएं अधिक बढ़ती जा रही हैं तथा अवैध शराब का धंधा भी जोरों पर है। सरकार की तरफ से ऐसा कठोर कानून बनाया जाए जिसके अन्तर्गत शराब सेवन करनेवालों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था हो। शराब का निर्माण करनेवाले कारखाने बन्द कर दिये जाएं तथा चोरी-छिपे शराब बनानेवालों को कड़ी सजाएं दी जाएं। समाज-सेवी संस्थाओं को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिये तभी भारत मद्यपान जैसे रोग से मुक्त हो सकता है।

नशाखोर व्यक्ति सहानुभूति का पात्र है प्रताड़ना का नहीं। उसके परिवार को अपमानित करना स्वस्थ मानसिकता का परिचायक नहीं है। शराब सेवन का दृढ़तापूर्वक विरोध करना चाहिये पर पत्नी व बच्चों का नहीं। उन्हें स्वाभिमानपूर्वक जीने का अधिकार है।

राव सुबेसिंह एम० ए०, एल० एल० बी०
१६२ अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र

लुधियाना में पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्य युवक सभा पंजाब का पं० मुनिवर गुरुदत्त जी विद्यार्थी शताब्दी समारोह का आयोजन स्थानीय आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार में ११.११.१९९० को सम्पन्न हुआ। यज्ञ में २५ यजमान एवं अन्य जनता ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। इसके पश्चात् ध्वजारोहण श्री मनोहरलाल आर्य मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने किया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय मन्त्री सरदारीलाल आर्यरत्न ने युवकों का आह्वान किया कि जाति-पांति को समाप्त करने, दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए संघर्ष करें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि युवकों के सहयोग से पंजाब में आर्यसमाज के प्रचार तथा प्रसार का कार्य तेजी से बढ़ेगा। समारोह के मुख्य अतिथि श्री जे.बी. गोयल, पी.सी.एस. अतिरिक्त उपायुक्त लुधियाना ने कहा कि आर्यसमाज ने शिक्षा के क्षेत्र में, सामाजिक उत्थान एवं अन्धविश्वास समाप्त करने, देश को आजाद कराने के लिए सराहनीय भूमिका निभाई है। आज की विषम परिस्थितियों में आर्य युवकों को रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

श्री सतीशचन्द्र नन्दा प्रिंसीपल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलते हुए यदि सभी को शिक्षा के समान अवसर दिये जायें तो मण्डल कमीशन की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है। उन्होंने युवकों को चरित्र निर्माण तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया है।

इस अवसर पर देश की एकता और अखण्डता और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने तथा युवकों को सम्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने के लिए अमृतसर से डा० हरभगवान् आर्य, लुधियाना से गरीब दास, ललित जसवाला, महेंद्रप्रताप आर्य, राजेन्द्र महेन्द्रू, सुरेशकुमार चड्ढा, वीरेन्द्र ढींगरा, बरनाला से रामशरण दास गोयल, सतीश सिंधवानी, फिरोजपुर से ललित बजाज, तपा से चांदराम विद्यालंकार, मलेरकोटला से रमेश कौशल, तलवाड़ा से मनोहरलाल आर्य, पटियाला से श्री गुलाबसिंह आर्य, प्रकाशचन्द्र शास्त्री अहमदगढ़ को आर्य युवक सभा पंजाब की ओर से सम्मानित किया गया।

वैदिकधर्म के प्रचारकार्य को गति देने के लिए कुछ सुझाव

ब्र० विवेकभूषण दर्शनाचार्य, दर्शन योग विद्यालय, आर्य वनविकास क्षेत्र रोजड़, साबर कांठा

आर्यसमाज के क्षेत्र में यह निर्विवाद सत्य है कि वेद के सिद्धान्त संसार में सर्वोत्कृष्ट एवं पूर्ण सत्य हैं। फिर भी आर्यसमाज की ओर से जो वैदिक धर्म का प्रचार किया जा रहा है, उसमें पिछले कुछ वर्षों से प्रचार के कार्यों में न्यूनता प्रायः सभी लोग अनुभव करते हैं। जब मैं इसके कारणों पर विचार करता हूं, तो मुझे मुख्य रूप से दो कारण समझ में आते हैं।

पहला—वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कम करने के कारण आर्यों को "वैदिक सिद्धान्तों का ठीक से ज्ञान न होना।" दूसरा—जिन्हें वैदिक सिद्धान्तों का ठीक से ज्ञान है, उनकी "कथनी और करनी में एकता कम होना।"

कारणों को ध्यान में रखते हुए आर्यों के व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की उन्नति के लिए तथा वैदिकधर्म के प्रचार को प्रभावशाली बनाने के लिये मैं यथामति कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा हूं। आशा है बुद्धिजीवी लोग इन सुझावों से लाभ उठायेंगे।

१) प्रत्येक आर्य यह नियम बनाये कि प्रतिदिन यज्ञ और सन्ध्या किये बिना प्रातः सायं भोजन नहीं करूंगा। इसी नियम को अपनी सन्तानों पर भी लागू करे। प्रत्येक आर्य व्यवहार (दैनिक जीवन) में यथाशक्ति यम-नियमों का पालन करे और अपनी सन्तानों से भी कराये।

२) प्रतिदिन रात्रि में शयन से पूर्व परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे होकर "आत्मनिरीक्षण" करें अर्थात् अपनी-अपनी त्रुटियों को स्वयं सुनायें। त्रुटियों का प्रायश्चित्त करें और "अगले दिन वे त्रुटियां न हों" ऐसा संकल्प और पुरुषार्थ करें। इस कार्यक्रम का संचालन परिवार का मुख्य व्यक्ति करे।

३) प्रतिदिन परिवार का प्रत्येक सदस्य कम से कम १५-२० मिनट वैदिक साहित्य या स्वाध्याय अवश्य करे। स्वाध्याय के लिए वेद, दर्शन, उपनिषद् और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के या अन्य ऋषियों के बनाये ग्रन्थ हो सकते हैं।

४) प्रत्येक आर्य अपनी आय का कम से कम शतांश (सौ में से एक रुपया) वैदिक धर्म के प्रचार में दान अवश्य दे। इससे अधिक भी दे, तो अच्छा है।

५) प्रत्येक आर्य का खान-पान शुद्ध हो (मांस, मदिरा आदि रोगोत्पादक एवं बुद्धिनाशक पदार्थों का सेवन न करे)।

६) प्रत्येक वेदप्रचारक, आर्यसमाज के प्रधान, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान, मन्त्री और इसी प्रकार के अधिकारी लोग अपनी सन्तानों में से कम से कम एक सन्तान को ऋषि निर्दिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से वेद आदि शास्त्रों का विद्वान् बनाये। (इससे गुरुकुलों की स्थिति में भी सुधार होगा, आर्यसमाज को प्रचारक मिलेंगे और वैदिक धर्म का सच्चा प्रचार होगा। अन्यथा वैदिक धर्म के ठोस प्रचार की आशा कम ही है। क्योंकि आज पत्र-पत्रिकाओं में जो लेख छपते हैं, उनके बारे में अधिकांश पाठकों की मान्यता यह बन चुकी है कि जैसा लेख यह लेखक लिख रहा है, क्या ऐसा आचरण लेखक स्वयं करता भी होगा।) अतः "कथनी-करनी में एकता" लाने की आवश्यकता है।

७) आर्यसमाज द्वारा संचालित सभी विद्यालयों में सहशिक्षा समाप्त हो। इससे अनेक हानियां समाज को हुई हैं और हो रही हैं।

८) प्रत्येक आर्यसमाज में कम से कम एक विद्वान् स्थायी रूप से रहे, जो वैदिक रीति से संस्कार कराये और प्रतिदिन आर्यसमाज में सत्यार्थप्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्यापन भी करे। आर्य सभासद् इस कार्यक्रम से सैद्धान्तिक ज्ञान बढ़ायें और यथाशक्ति आचरण भी करें।

९) प्रत्येक प्रचारक की योग्यता का परीक्षण हो। अर्थात् उसके पास आर्यसमाज के किसी भी विद्यालय अथवा गुरुकुल का दिया हुआ कोई प्रमाण-पत्र हो, जिसमें उसकी योग्यता लिखी हो। उस प्रमाण-पत्र के आधार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा सम्बन्धित प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें उस प्रचारक को एक परिचय-पत्र जारी करके देवें, जिसे दिखाने पर किसी भी आर्यसमाज या आर्य संस्था में उस प्रचारक के ठहरने, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था हो सके। यह परिचय-पत्र दुर्घटना होने या मिथ्या आरोप लगा दिए जाने जैसे अनेक आपत्तिकालों में भी लाभदायक होता है।

१०) जो व्यक्ति ऐसा संकल्प ले कि—"मैं आजीवन ब्रह्मचारी रहकर केवल वैदिक धर्म का ही प्रचार, अध्यापन, लेखन आदि कार्य करूंगा, अन्य किसी सम्प्रदाय का कार्य नहीं।" उसके अध्ययन काल में उसका भोजन, वस्त्र पुस्तक आदि का समस्त व्यय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओर से दिया जाए। परन्तु यह तभी दिया जाए, जब उस ब्रह्मचारी का आचार्य उसकी परीक्षा करके उसकी योग्यता का प्रमाण-पत्र सम्बन्धित आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजे।

११) आर्यसमाजों में वार्षिकोत्सवों के अतिरिक्त वेद-कथा, दार्शनिक प्रवचन वैदिक दर्शनों का अध्यापन और योग प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन समय-समय पर किये जायें जिससे सब प्रकार की उन्नति हो सके।

१२) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हठयोग का निषेध और पातञ्जल योग को स्वीकार किया है। अतः आर्यसमाजों में नेति, धौती आदि हठयोग की क्रियायें छोड़कर, पातञ्जल योग के अनुसार "यम नियम" आदि योग के अंगों का ही प्रशिक्षण दिया जाए।

१३) आकाशवाणी (रेडियो) और दूरदर्शन (टेलिविजन) पर आर्यसमाज की ओर से वेदप्रचार के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायें।

१४) जो प्रचारक कम से कम २५ वर्ष तक केवल वैदिकधर्म का प्रचार, अध्यापन, लेखन आदि कार्य करे और इसके अतिरिक्त कोई व्यवसाय न करे, उसे आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओर से मासिक पुरस्कार राशि (पेंशन) आजीवन मिलती रहे। यह व्यवस्था केवल उन्हीं प्रचारकों के लिए हो, जिन्हें अन्यत्र कहीं से भी कोई पेंशन न मिलती हो। जो प्रचारक सरकारी विद्यालयों या महाविद्यालयों में अध्यापन आदि कार्य भी करते रहे हों और उन्हें वहां से पेंशन भी मिलती हो, तो उन्हें इस योजना में सम्मिलित न किया जाए।

१५) जो प्रचारक वृद्धावस्था के कारण प्रचार करने में असमर्थ हो जायें, ऐसे वानप्रस्थी और संन्यासी प्रचारकों के लिए "वृद्धाश्रमों" की व्यवस्था की जाए, जहां उनकी चिकित्सा और सेवा आदि की समुचित व्यवस्था हो तथा वे अपने जीवन का अन्तिम काल सुखपूर्वक व्यतीत कर सकें। (इस सुविधा के अभाव में वानप्रस्थी और संन्यासी प्रचारकों को विवश होकर अपने पूर्व सम्बन्धियों (पुत्र-पौत्रादि) की शरण लेनी पड़ती है, जिससे वैदिक आश्रम व्यवस्था भंग होने से समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है।)

मैं नम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि धर्म का प्रचार, प्रचारकों पर ही आधारित होता है। अतः प्रचारकों को यथोचित सुविधायें अवश्य ही देनी चाहियें, जिससे वे अधिक उत्साहित होकर अधिक प्रचार कर सकें। ❀

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर का चुनाव

प्रधान—मा० राममेहरसिंह, उपप्रधान—मा० सत्यपाल, मंत्री—मा० धर्मवीरसिंह, उपमंत्री—श्री चिरञ्जीलाल, कोषाध्यक्ष—डा० महेन्द्रकुमार, प्रचारमंत्री—म० रामनारायण, निरीक्षक—मा० दयाराम।

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज

—जितेन्द्रदेव शास्त्री जसराणा, (सोनीपत)

महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज को आधुनिक भारत का एकमात्र अग्रणी अपनी सूक्ष्म योग चक्षुओं द्वारा देख लिया था। यही उनकी दूरदृष्टि थी जो आज भारतवर्ष में विद्यमान है। धार्मिक अन्ध-विश्वासों तथा राजनैतिक-व्यवस्था इतनी चरमरा गई थी कि कुछ नहीं कह सकते। वेदों को सभ्य समाज एक अनर्थ का भारी भरकम बोझ ही समझने लगा था। भारतवर्ष में जहां संस्कृत का बाहुल्य प्रचार था, आज क्षेत्रीय टूटी-फूटी भाषाओं ने अपने पैरों नीचे दबा दिया था। धार्मिक व्यवस्था के शिथिल पड़ते ही सामाजिक व राज-नैतिक क्षेत्र ढीले पड़ गये। इसी कारण भारतवर्ष उनसे शासित होरहा था जो यहां की शिक्षा आदि ग्रहण करने के लिए नालंदा व तक्षशिला आदि में पढ़ने आया करते थे। इसी समय परिवर्तन की एक आशा ऋषि दयानन्द ने ली और जंगलों-झंखाड़ों तथा गली-गली घूमकर आमूल परिवर्तन का बिगुल बजा दिया। किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ यहां तक मथुरा व काशी के विद्वानों ने भी उसे अंग्रेजों का बिचोलिया कह दिया। लेकिन वे आगे बढ़ते रहे और इन गालो-गलोचों को प्रसाद समझकर मनु महाराज की अमरवाणी का स्वयं प्रमाण दे दिया। हमारे राजाओं को भी ऋषि दयानन्द जगाना चाहते थे, बहुत कुछ किया भी लेकिन वे ऋषि हम आर्यपुत्रों के हाथों सदा के लिए चिरनिद्रा सुला दिये गये। ओह महान् आश्चर्य तो यही है। हमने उन्हें पहचाना ही नहीं।

आजकल भी हम आर्य (मात्र कहलानेवाले) अपने ऋषियों द्वारा लिखित साहित्य पढ़ते भर रहते हैं लेकिन अपनी मर्यादाओं का पालन नहीं कर रहे हैं। आर्यसमाज किसी कागजी कार्यवाही का नाम नहीं था। जैसा आजकल होरहा है। आज हमें शिक्षा-प्रसार का माध्यम भी आर्यभाषा में कर देना चाहिए क्योंकि स्वयं भारत सरकार विद्या-लय आदि चला रही है। आर्य-संस्थाओं का सदुपयोग विद्वान् तथा ब्रह्मचारी (जो आजीवन व्रतधारी हों) को तैयार करना चाहिए। जैसा ईसाई आदि करते हैं। इस सम्पत्ति को राजनीति के मंचों पर आने के लिए आर्यो मत खर्चो। जो आर्यसमाज पूरे वैदिक-धर्म की अगुआ संस्था होनी चाहिए थी वह चन्द आर्यों का नेतृत्व ही कर रही है। ऋषि दयानन्द ने इतनों को पाखण्ड से उठाकर यह समाज बनाया था लेकिन आज हम कम होते जारहे हैं। इसके लिए हम सभी कहीं न कहीं शामिल हैं। जरा सोचो तो आर्यो! ऐसे हम ऋषि-ऋण से मुक्त ही जायेंगे।

आज हम आर्यसमाज को तथा ऋषि दयानन्द को भुलाते जारहे हैं। हमारा चारित्रिक पतन भी हमें आर्यत्व से पतित कर रहा है। ऋषि दयानन्द जी महाराज कितने उदार व विद्वान् थे। उनमें क्या अनोखा तेज था। जब हम उनकी जीवनी पढ़ते हैं तो पाते हैं कि स्वामी जी महाराज ने मुसलमानों में भी इंसानियत जगा दी थी। अनेकों बार वे किसी मुसलमान की कोठी व बाग में धर्म-प्रचार किया करते। लेकिन आज के संन्यासी तो ऋषि-पद्धति को भूल-सा गये हैं। मुझे आज तक ऐसा आर्यसंन्यासी नहीं मिला है जो गांव-गांव में घूमकर धर्म-प्रचार कर रहा हो। देखते हैं तो बस साधुवेश में घूसे हुए भिखारी या सपेले ही दिखाई देते हैं वो भी दिन-दिन में ही क्योंकि उन्होंने अपनी वेशभूषा सुबह धारणकर भीख मांगनी है तथा सायं को भीख में आई हुई सामग्री बेचकर पुनः अपना वेश बदल लेना है और फिर शराब आदि पीकर ही निश्चिन्त हो जाते हैं। भला है इनका कि ये साधुवेश में शराब नहीं पीते बल्कि वेश बदलकर ही पीते हैं। आज संन्यासियों ने संस्थाओं में पदग्रहण करने की चिन्ता है तो फिर धर्म का प्रचार संस्था कैसे करें, क्योंकि वह तो मानवों से बनी है। कोई मशीन भी नहीं जो धर्म को ढांचे में लाकर लोगों को दे दे। आर्यो क्या होगया है हमें! ऋषिवर की जीवनी जो रात्रि के पहर में आंसू बहाकर टहलने की है सभी ने पढ़ी होगी, उनको नींद भी नहीं आती थी और हम अपने धर्म की जड़ें कटते देख रहे हैं कटते क्या स्वयं काट रहे हैं। इसीलिए तो हमें अपने आर्यावर्त कहलानेवाले देश भारत में भी अधर्मियों का डर-सा लग रहा है। चारों तरफ दूसरे (धर्म कहलानेवाले) मत हमें धक्का दिए जारहे हैं।

आर्यसंन्यासियों से ही एक आशा है वे ही हम सोते आर्य-पुत्रों व पुत्रियों को जगा सकते हैं। लेकिन जब वे ऋषि के जीवन की तरह सच्चा संन्यास ले लेंगे। केवल ईश्वर पर निर्भर रहकर सर्वहितकारी मान्यताओं का प्रचार करेंगे। यह तभी होगा जब वे संस्थाओं के संचालन के चिन्तन तथा गुरुकुलों में अनेक व्यवस्थाओं के चिन्तन से मुक्त होंगे। आज स्वामी अग्निवेश जी एक और प्रपंच रच रहे हैं। इतने वर्षों के बाद इन्होंने भारतीय आर्यसमाज को बनाने की सोची है। क्या हमारे गांव-गांव व शहर-शहर में आर्यसमाज चीन व इंग-लैण्ड के अन्तर्गत था। अरे विश्व में नाम करवाने से कुछ नहीं होता जरा आर्य-संस्कृति को तो छोड़ दो इसने क्या बिगाड़ा है। वेद का प्रचार ऋषि दयानन्द ने संस्था का पदग्रहण करके नहीं किया था। आर्यो जागो!

स्वामी अग्निवेश जी ने अभी आर्य मन्तव्यों को पढ़ा नहीं है। अगर पढ़ भी लिया है तो वह आर्य नहीं। अगर आर्य होते तो जाति-पाति को बढ़ावा भी न देते। जिस ऋषि दयानन्द ने जाति-पाति के बन्धन को अपना जीवन देकर खत्मसा कर दिया था, आज ये उन्हीं को गलत साबित कर रहे हैं। स्वतंत्र भारतीय संविधान में जो आरक्षण का विषय है वह भी जाति-पाति के आधार पर नहीं है। लेकिन सामाजिक पिछड़ेपन पर अगर पूर्व सरकार ने आरक्षण दे भी दिया था तो आज हमें उनका हिसाब किताब लगाकर देखना चाहिए कि कितनी सफलता मिली है। लेकिन सरकार की हां में हां लगाकर अपने नाम को फैलाने की घोषणा हेतु स्वामी अग्निवेश जी ऐसा करते चले जा रहे हैं। सभी आर्यों को सार्वजनिक तौर पर स्वामी अग्निवेश को आर्यसमाज से बहिष्कृत कर देना चाहिए। इनके भारतीय आर्यसमाज की एक या दो आर्यसमाजों को भी ऐसा ही पाठ पढ़ाना चाहिए। सरकार को भी यह चेतावनी दे देनी चाहिए कि कोई अन्य राष्ट्रीय स्तर पर या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दूसरी आर्यसमाज नहीं गठित कर सकता क्योंकि यह हमारे आर्यसमाज के उपनियमों में पंजीकृत है। सो भारतीय आर्यसमाज का पंजीकरण नहीं होना चाहिए।

श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा) का आरक्षण का जातीय आधार पर विरोध आर्य मन्तव्यों के अनुकूल है सो यही आर्यमर्यादा है। बहुत से बन्धु जो अगर्यल इतिहास पढ़कर जाति-पाति का जन्मदाता महर्षि मनु को बताते हैं उनको इन भारतीय आर्यसमाज के जन्मदाता स्वामी अग्निवेश ने तिनके का सहारा दे दिया है। लेकिन स्वामी अग्निवेश 'आप्त' पुरुष नहीं हैं कि इनका प्रमाण ही मान लिया जाये। आर्यो महर्षि मनु ने वैदिकधर्म की संस्कृति को चार-चांद लगाये थे लेकिन इन नामधारी आर्यों ने ही उनको बदनाम करने की चालें चलीं। सो हमें पौराणिक पाखण्डों का विरोध कम करके पूर्व स्वामी अग्निवेश आदि को सबक सिखाना चाहिए तभी हम जनता में आर्य संस्कृति का सही व परिष्कृत रूप विकसित कर सकेंगे।

शोक समाचार

श्री रघुवीरसिंह

श्री फतहसिंह जी भण्डारी गुरुकुल झज्जर के ज्येष्ठ भ्राता श्री रघुवीरसिंह जी रैय्या निवासी का देहान्त १८-१०-९० को ८७ वर्ष की आयु में होगया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्री इन्द्राजसिंह

श्री इन्द्राजसिंह जी सेहला (झज्जर) निवासी का देहावसान १८-१०-९० को हुआ। आप ९० वर्ष के थे। आर्यसमाज के सभी कार्यक्रमों में विशेष भाग लेते थे। गुरुकुल झज्जर के आजीवन सदस्य थे। गोरक्षा हिन्दी रक्षा आंदोलनों में भी भाग लिया।

दिनांक १३-११-९० को शान्ति यज्ञ पर इनके पुत्र सुखवीरसिंह ने गुरुकुल झज्जर को ११११ रुपए दान दिया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —वेदव्रत शास्त्री

निराला सन्त—महर्षि दयानन्द

भारत की पुण्य भूमि पर एक सन्त निराला आया।
मानवता का प्रहरी बन जिसने सोया देश जगाया।।टेक।।
झूठे शिव से नाता तोड़ धर्म को पहचान लिया।
मूर्तिपूजा फिजूल समझा ईश्वर निराकार जान लिया।
पाखण्डवाद हटाने खातिर चार वेदों का ज्ञान दिया।
मिथ्या कलंक हटा जिसने रामकृष्ण को सम्मान दिया।
बहुत किया उपकार ऋषि ने सत्य सनातन वेद बताया।।१।।
जात पात की आन्धी हटा कर्मप्रधान बताया।
वर्णव्यवस्था कायम कर छुआछूत मिटाया।
बिछड़ गये थे भाई-भाई इन्हें मिलाया।
सोई पड़ी थी हिन्दू जाति ऋषि ने आन जगाया।
आजादी की प्रेरणा दे वीरों को उकसाया।।२।।
ओ३म् पताका ली हाथ पोपों को दी ललकारी।
सत्यार्थप्रकाश लिख ऋषि ने पोल खोली सारी।
पोप पुजारी पण्डे सारे भागे दे किलकारी।
विधवा विवाह चला के किया उपकार भारी।
शिक्षा को अधिकारी बता नारी सम्मान दिलाया।।३।।
नाम सन्त का दयानन्द था वो पक्का वीर ब्रह्मचारी।
सारे जग का भला करण को उसने बात विचारी।
पर दानवता के आगे एक मानवता थी हारी।
बहकावे में जगन्नाथ ने पाप किया भारी।
विष दिया उस माली को जिन चमन गुलजार बनाया।।४।।
रामचन्द्र भूल सके ना कितने थे परोपकारी।
कर-कर के उपदेश किया जग उपकार भारी।
धर्म का रखवाला बन के सही बात उचारी।
वैदिक धर्म को जिन्दा कर दिया प्यारा अमृत वारि।
वेद की जोत जलती रहे आर्यसमाज बनाया।।५।।

ले०—मा० रामचन्द्र आर्य, नलवा (हिसार)

आर्य वीरो जागो

अभी समय है यदि जागना चाहो जागो।
जाग गये तो बच जाओगे शोर मचा है भागो।
आतंकवाद की आग फैल रही है तेजी से।
उग्रवाद भी चोट मार रहा है पीछे से।
इसकी लपटों से बचने को नींद को त्यागो।
अभी समय है……
बेईमानी व भ्रष्टाचार का है धुआं छाया।
दूषित वातावरण होगया दम घुट आया।
इसे मिटाने की सोचो, आलस्य को त्यागो।
अभी समय है……
बलात्कारी रिश्वतखोरी भी सीमा को लांघ चुकी हैं।
दानवता मानवता को मजबूती से पीस रही है।
दुष्टों से टक्कर लेने को हे आर्य वीरो जागो।
अभी समय है……
पति-पत्नी को, भाई-भाई को छल कपट से मार रहा है।
खत्म हुआ विश्वास परस्पर जड़ें निरन्तर काट रहा है।
जीना चाहो यदि खुशी से, प्रेम बढ़ाओ, स्वार्थ को त्यागो।
अभी समय है……

—देवराज आर्य,
प्रचारमन्त्री आर्यसमाज
बल्लभगढ़

शोक समाचार

श्री दयाराम आर्य पूर्व खजांची आर्यसमाज मुसलाना जिला जींद का मार्च १९९० में स्वर्गवास होगया। श्री दयाराम जी आर्य आर्यसमाज मुसलाना के साथ-साथ कन्या गुरुकुल मोर-माजरा (पानीपत), आर्यसमाज सफीदों, सालवण, डिडवाड़ा तथा मडलौडा के कार्यक्रमों में भी भाग लेते थे।

हैदराबाद सत्याग्रह संग्राम

रचयिता—पं० पन्नालाल "पीयूष" सिद्धान्तशास्त्री
स्वतन्त्रता सेनानी उदयपुर

हैदराबाद नवाब ने पूजा यज्ञों पर प्रतिबन्ध लगाया।
आर्य हिंदु वीरों ने जा वहां क्रांति का बिगुल बजाया।।
निजाम के अत्याचारों से आर्य हिन्दू तंग आ गये।
भाई बन्सीलाल श्याम जी करने उनसे जंग आ गए।।
सार्वदेशिक सभा दिल्ली के प्रधान को भेजा सन्देशा।
जुल्म, ज्यादती, कोड़े गोली चलने का भेजा अन्देशा।।
हैदराबाद नवाब ने जब पूजा पर प्रतिबन्ध लगाया।
आर्य, हिन्दू वीरों ने तब सत्याग्रह संग्राम मचाया।।१।।
यज्ञ हवन घड़ियाल शंख मन्दिरों में बजना बन्द कराया।
कथा कीर्तन भजन गीत उपदेशों पर प्रतिबन्ध लगाया।।
तुर्की टोपी पहने हर हिन्दू, था यह फरमान सुनाया।
मन्दिरों की मरम्मत, आरती भी करना बन्द कराया।।
नारायण स्वामी जी ने तब धर्मयुद्ध का शंख बजाया।
आर्य हिन्दू वीरों ने तब सत्याग्रह संग्राम मचाया।।२।।
शोलापुर महाराष्ट्र में तब सत्याग्रह कैम्प लगाया।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को उसका सेनापति बनाया।।
प्रथम डिक्टेटर महात्मा नारायण स्वामी को है बनाया।
चांद करण शारदा दूसरे, तीसरे खुशहालचन्द को पाया।।
अजयमेरी जियालाल पंडित ने ये कर्त्तव्य दिखाया।
राजगुरु ध्रुवेन्द्र, स्पेशल ट्रेन ले करके भिजवाया।।
प्रकाशचन्द्र कविरत्न के प्रचार ने ऐसा रंग लाया।
दूसरी स्पेशल ट्रेन देवेन्द्रनाथ जी द्वारा पहुंचाया।।
आर्य हिन्दू वीरों ने तब सत्याग्रह संग्राम मचाया।।३।।
महाशय कृष्ण, ज्ञानेन्द्र नेता, पंजाब से ये बनकर आये।
कितनों ने बलिदान दे दिये धर्म पे अपने प्राण गंवाये।।
निजामशाही कांप उठी अब आर्यवीरों का दल आया।
नवाब ने अपने घुटने टेके नीचे अपना शीश नवाया।।
ओ३म् पताका फहराई, "पीयूष" विजय का शंख बजाया।
हैदराबाद नवाब ने जब पूजा पर प्रतिबन्ध लगाया।
आर्य हिन्दू वीरों ने तब सत्याग्रह संग्राम मचाया।।४।।

ऋषि गुणगान

(रागमांड, ताल कहरवा)

स्वामी धर्म प्रचारक देश सुधारक बेगा आज्यो जी।। टेर।।
सुख सांसारिक त्याग के जी, विद्या पढ़ो चितलाय।
वैदिक सूर्य प्रकाश के जी, दियो तिमिर मिटाय।।
स्वामी बेगा आज्यो जी।।१।।
योग्यां ने योगी जच्या जी, गुणियां ने गुणवान्।
धर्म्यां ने धर्मि ऋषि थे, बलियां में बलवान्।।
स्वामी बेगा आज्यो जी।।२।।
त्याग्यां ने त्यागी जच्या जी, धनियां ने धनवान्।
फक्कड़ां ने निर्भय ऋषि थे, भक्तां ने भगवान्।।
स्वामी बेगा आज्यो जी।।३।।
पाखड्यां ने काल समजी, छलियां ने यमराज।
दीना ने रक्षक जच्या जी, कवियां ने कविराज।।
स्वामी बेगा आज्यो जी।।४।।
धर्म कारणे ऐ ऋषि जी, आप लियो अवतार।
धर्म ही जीवन जान धर्महित, दियो प्राण विसार।।
स्वामी बेगा आज्यो जी।।५।।
वैदिक नैया समंद बीच जी, रहो है गोता खाय।
कर दया-दयानन्द भेजियो प्रभु, आकर पार लगाय।।
स्वामी बेगा आज्यो जी।।६।।
द्वेष ईर्ष्या त्याग "जगन" थे, गावो ऋषि गुणगान।
विपत्ति समय में धर्म को जी, निज ऊंचो कियो जी निशान।।
स्वामी बेगा आज्यो जी।।७।।

—स्वामी केवलानन्द सरस्वती
वैदिक सतसंग आश्रम पुष्कर

जिला हिसार में वेदप्रचार एवं शराबबन्दी प्रचार पदयात्रा कार्यक्रम सम्पन्न

दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे पाखण्ड, अन्याय, अत्याचार तथा शराब के प्रचलन को देखते हुए समाज के प्रहरी आर्यसमाज की ओर से मनुष्यमात्र की भलाई को मद्दे नजर रखते हुए वेद प्रचार एवं शराबबन्दी प्रचार अभियान चलाकर जनजागरण करने का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ। दिनांक २ नवम्बर से ११ नवम्बर तक आर्यसमाज कंवारी के प्रधान एवं सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी के नेतृत्व में हाथ में ओ३म् का ध्वज लेकर ८ आर्य विद्वानों एवं कार्यकर्त्ताओं का पैदल जत्था "शराबबन्दी एवं वैदिक धर्म की जय हो, महर्षि दयानन्द जी की जय हो, जो शराब पीता है अपने बच्चों का खून पीता है, शराब पीना पाप है, शराब के ठेके बन्द करो, शराब की बोतल फोड दो आदि नारे लगाता हुआ जिला हिसार के २० गावों में रात्रि, दोपहर, प्रातः यज्ञ तथा शराबबन्दी सम्मेलन द्वारा धुआंधार प्रचार किया। सर्वप्रथम २ नवम्बर १९९० को ग्राम डावड़ा में रात्रि को शराबबन्दी सम्मेलन किया। श्री लज्जेराम आर्य के घर प्रातः हवन किया। इनका प्रचार में विशेष सहयोग रहा। ३ ता० को दोपहर ग्राम मिरकां में प्रचार किया। यहां श्री सरजीतसिंह का विशेष सहयोग रहा। रात्रि को ग्राम भोजराज में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। प्रातः पंचायतघर में यज्ञ किया गया। यज्ञ पर काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया। श्री जीसुख नम्बरदार मा० गुलाबसिंह तथा श्री चन्दगीराम सरपंच का विशेष सहयोग रहा।

४ नवम्बर को दोपहर ग्राम दाहिमा में बंगले में प्रचार हुआ। डा० सुन्दरसिंह शर्मा तथा शेरसिंह सरपंच के परिवार का पूरा सहयोग रहा। रात्रि को ग्राम गुंजार में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। श्री चन्दगीराम यादव टेकराम नम्बरदार, निहालसिंह सरपंच तथा सीताराम आर्य के घर यज्ञ हुआ। इन सभी का प्रचार में विशेष सहयोग रहा। ५ नवम्बर दोपहर ग्राम धमाना में प्रचार हुआ। श्री अमरसिंह आर्य प्रधान का अच्छा सहयोग रहा। रात्रि को ग्राम कंवारी में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। जब पैदल जत्था बस अड्डे पर पहुंचा तब आर्यसमाज कंवारी के अधिकारीगण उनके स्वागत में बस अड्डे पर तैयार मिले। प्रातः चौपाल में यज्ञ किया गया। शमशेरसिंह, डा० ओमप्रकाश, रामचन्द्र आर्य, ज्ञानीराम आर्य तथा क्रान्तिकारी के परिवार का विशेष सहयोग रहा। ६ नवम्बर को दोपहर ग्राम बालावास में चौपाल में प्रचार किया। प्रधान सूबेदार हरचन्द आर्य एवं सूबेदार प्रभुराम के परिवार का पूरा सहयोग रहा। रात्रि को ग्राम नलवा में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। प्रातः आर्यसमाज मन्दिर नलवा में यज्ञ किया गया। डा० पोहलूराम, रामपत दहिया का परिवार व कृष्णकुमार का विशेष सहयोग रहा।

७ नवम्बर को खेतों की ढाणी आर्य निवास पर प्रचार हुआ। निकट की ढाणियों की औरतें एवं बच्चे अपना खेत का कार्य छोड़ कर प्रचार में पधारे। श्रीमती सुनेहरो आर्या ने बड़ी श्रद्धा से आर्य विद्वानों को हलवे का भोजन करवाया। रात्रि को ग्राम मुहजादपुर में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। प्रातः श्री धर्मवीर मलिक के घर में यज्ञ किया। प्रचार में परसाराम आर्य, रणबीर आर्य, उजालाराम आर्य, रामचन्द्र सरपंच तथा धर्मवीर आर्य के परिवार का विशेष सहयोग रहा। ८ ता० को दोपहर ग्राम रतेरा में प्रचार हुआ। रात्रि को ग्राम उमरा में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। प्रातः बलवान्सिंह आर्य की बैठक में यज्ञ किया। राममेहर सरपंच तथा बलवन्तसिंह के परिवार का विशेष सहयोग रहा। ९ ता० को दोपहर ग्राम सुलतानपुर में बड़ी चौपाल में प्रचार हुआ। श्री केहरसिंह का विशेष सहयोग रहा। रात्रि को ग्राम ढण्डेरी में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। प्रातः चतरूराम के मकान पर पारिवारिक यज्ञ किया गया। मा० सुलतानसिंह के परिवार का विशेष सहयोग रहा। १० को दोपहर ग्राम रामायण में प्रचार किया। श्री हरनारायण मलिक जे.इ., सुखलाल पूर्व सरपंच, महेन्द्रसिंह सरपंच का पूर्ण सहयोग रहा। रात्रि को ग्राम देपल/मामनपुरा में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। आर्य विद्वानों के पैदल जत्थे का भारतीय किसान यूनियन नवयुवक शाखा देपल के अधिकारियों ने स्वागत किया। यूनियन की तरफ से भोजन की सामूहिक बहुत ही उत्तम व्यवस्था थी। प्रातःकाल चौपाल में यज्ञ किया। यूनियन के प्रधान श्री दशरथ, विकास जी आदि सभी नवयुवकों का विशेष योगदान रहा।

११ नवम्बर को दोपहर ग्राम भगना में प्रचार हुआ। श्री बलदेवसिंह आर्य प्रधान, मा० जगदीश आर्य तथा सहदेव जी आर्य के परिवार का विशेष योगदान रहा। रात्रि का अन्तिम कार्यक्रम ग्राम लाडवा में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। श्री दलीपसिंह पूर्व सरपंच का परिवार एवं स्वतन्त्रता सेनानी पं० संतलाल जी का विशेष योगदान रहा।

उपरोक्त सभी गावों में कार्यक्रम बहुत ही रोचक एवं प्रेरणाप्रद रहा। जब आर्य विद्वान् केसरिया पगड़ी पहने हुए हाथ में ओ३म् ध्वज लिए पैदल यात्रा करते हुए गांव की गलियों में प्रवेश करते हुओं का दृश्य तो देखते ही बनता था। समय-समय पर निम्न विद्वान् पधारे जिनमें सर्वश्री सभा उपदेशक क्रान्तिकारी जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी अग्निदेव जी भीष्म, महात्मा ताराचन्द जी, श्री लजेराम जी आर्य, श्री जयसिंह जी योगी, श्री महावीर प्रसाद प्रभाकर, मुख्याध्यापक श्री भगवानदास जी (पटेल नगर हिसार), पहलवान वजीर सिंह जी तथा पं० ईश्वरसिंह जी तूफान की भजन मण्डली व इनके सहयोगी महाशय धर्मसिंह एवं ढोलक वादक श्री सुभाष जी आदि ने सभी गांवों में शराबबन्दी बारे तथा शराब से होने वाले नुकसान से इतिहास के उदाहरण देकर लोगों को समझाया "शराब से करलो किनारा वरना जीवन है अन्धियारा"। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाए गए शराब बन्दी अभियान की भी जानकारी दी। सभी विद्वानों ने हरयाणा सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की तथा देहात से शराब के ठेके तुरन्त बन्द करने तथा नहर सुन्दर ब्रांच का पानी टीलों पर पहुंचाने की मांग की। ज्ञातव्य है कि ग्राम डावड़ा, दाहिमा, नलवा, रतेरा, भगाना आदि में शराब के ठेके हैं। गांव के लोगों को संगठित होकर ये पाप के अड्डे उखाड़ फेंकने की प्रेरणा दी। अवैध शराब की बिक्री भी तुरन्त बन्द करने बारे सरकार से मांग की। ग्राम शराब बन्दी समिति तथा आर्यसमाज स्थापित करने बारे भी बल दिया।

इसके अतिरिक्त दहेज, पत्थर पूजा, पाखण्ड से दूर रहना तथा आर्यसमाज क्या है क्या चाहता है, गोरक्षा, नारी उत्थान, राष्ट्र रक्षा, पंच महायज्ञ, आत्मा-परमात्मा, धर्म क्या है, छूआछात, चरित्र निर्माण पर विद्वानों ने अपने अपने ढंग से विचार किया रखे। तूफान जी के बहुत ही शिक्षाप्रद समाजसुधार के भजन हुए। सभी गांवों में लोगों ने इस नेक कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की तथा साथ में पुनः प्रचार हेतु विद्वानों से नम्र आग्रह किया।

—ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्य समाज, कंवारी।

प्राकृतिक चिकित्सा योग-शिविर

(२ दिसम्बर १९९० से ३ दिसम्बर १९९० तक)

आर्यसमाज मन्दिर रामनाम, रोहतक मार्ग जींद

आर्य वीर दल जींद उक्त तिथियों में और उक्त स्थान पर एक प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन कर रहा है। यह शिविर आरोग्यधाम आश्रम बिठूर (कानपुर) के सुविख्यात डा० श्री रामाशीष जी मिश्र के मार्गदर्शन में लगेगा जिसमें असाध्य समझे जानेवाले रोगों का प्राकृतिक पद्धति से सफल उपचार किया जायेगा। यथा:— गठिया, पोलिया, पीलिया, ब्लडप्रेशर, हार्ट टर्बल, गैस्ट्रिक ट्रबल, नजला, जुकाम, शुगर, अनिद्रा, सब प्रकार के दर्द, एलर्जी, महिलाओं के रोग आदि आदि। शुल्क १५१ रु० समय सुबह ७ से ११ सायं ३ से ६ बजे तक। कृपया सम्पर्क करें—दलबीरसिंह आर्य, आर्य वस्त्र भण्डार, रामनगर, रोहतक रोड जीन्द। श्री कर्णसिंह आर्य, आर्य वैल्डिंग वर्क्स, काठ मण्डी, चक्कर रोड जीन्द। आर्यसमाज रामनगर रोहतक मार्ग जीन्द।

स्थान सीमित, कृपया ३० नवम्बर ९० तक रजिस्ट्रेशन करवालें।

—प्रो० ओमकुमार आर्य उपसंचालक, आर्यवीर दल हरयाणा

दिल्ली में आर्ययुवा महासम्मेलन सम्पन्न

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में ७-वें आर्ययुवा महासम्मेलन का भव्य समापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आज देश समाज के सामने बड़ी विकट परिस्थितियां हैं। उन्होंने छात्रों एवं युवाओं का आह्वान किया कि वे समाज व राष्ट्र उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज के कायक्रमों को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा करें। स्वामी जी ने प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित इस आकर्षक व भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभा अधिकारियों को हार्दिक बधाई दी।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने सभा के श्रेष्ठ कार्यों, गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी दी। आर्यजगत् के प्रख्यात पत्रकार पं० क्षितिश वेदालंकार ने कहा कि युवकों को अपने मन से निराशा की भावना निकाल देनी चाहिए और अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आत्मदाह का मार्ग त्याग देना चाहिए। देश व समाज से यदि उन्हें कोई शिकायत है तो वे अपने प्रयासों द्वारा परिस्थितियों को बदल दें। उन्होंने युवकों से आह्वान किया कि वे समाज व देशसेवा का संकल्प लें।

स्वामी दीक्षानन्द ने प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के ३५० विजेताओं को शील्ड, पदक, वैदिक साहित्य आदि भेंट कर सम्मानित किया। स्वामी जी ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे बहुत सौभाग्यशाली हैं कि वे आर्यसमाज की छत्र-छाया में उनका सर्वांगीण विकास होरहा है। स्वामी जी ने छात्रों व ब्रह्मचारियों द्वारा भव्य प्रदर्शन के लिए तथा आयोजन के लिए सभा को साधुवाद दिया।

प्रख्यात वैदिक विद्वान् पं० यशपाल सुधांशु ने बच्चों को राष्ट्र का कर्णधार बताया।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कार्यक्रम का सुचारु संचालन करते हुए कहा कि यह धारणा गलत है कि आर्यसमाज में बच्चे नहीं आते हैं। ५ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक एक मास तक चले इन कार्यक्रमों में दिल्ली के ५० स्कूलों के हजारों बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया है। श्री सूर्यदेव ने २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर ९० तक होनेवाले अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के लिए आर्यसमाज दीवानहाल की ओर से ५१,००० रु० की सहायताराशि देने की घोषणा की। उन्होंने सभी उपस्थित महानुभावों से तन-मन-धन से राजधानी में होरहे इस सम्मेलन को हर दृष्टि से सफल बनाने का आह्वान किया।

उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम के प्रारम्भ में लगभग २० विद्यालयों के छात्रों एवं कर्मचारियों ने योगासन, शस्त्र-प्रदर्शन, पी० टी० प्रदर्शन का अत्यन्त आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत कर स्टेडियम में उपस्थित भारी जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। आर्षकन्या गुरुकुल नरेला की ब्रह्मचारिणी द्वारा आँख से सूई उठाने का अत्यन्त रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। आज के कार्यक्रमों में प्रथम आनेवाले स्कूल एवं गुरुकुलों को प्रथम पुरस्कार के रूप में शील्ड समारोह के स्वागताध्यक्ष एवं आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल की ओर से प्रदान की गई।

इस कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम्, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की श्रीमती सरला मेहता, प्रकाश आर्य, श्रीमती कृष्णा रसवन्त एवं राजधानी के समाजों के पदाधिकारियों सहित स्कूलों एवं गुरुकुलों के हजारों बच्चों ने उत्साहपूर्वक समारोह में भाग लिया।

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्यवीर दल के सर्वश्री प्रीतमदास रसवन्त, पं० खुशीराम शर्मा, डा० ज्ञानप्रकाश शर्मा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सक्रिय सहयोग दिया। उल्लेखनीय है कि पी० टी० प्रदर्शन के लिए रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनीनगर को प्रथम, बिरला आर्यकन्या स्कूल कमलानगर एवं महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किए गए। शस्त्र-प्रदर्शन में गुरुकुल गौतमनगर, आर्यवीर दल नांगलराय एवं कन्या गुरुकुल नरेला को क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे इनाम में शील्डें दी गई। योगासन प्रदर्शन के लिए प्रथम पुरस्कार गुरुकुल गौतमनगर, द्वितीय पुरस्कार कन्या गुरुकुल नरेला व तृतीय पुरस्कार राजकीय बाल वरिष्ठ विद्यालय घोंडा को प्रदान किया गया।

एक महीने तक भाषण, वाद-विवाद, निबन्ध, चित्रकला, खेलकूद आदि की प्रतियोगिताओं एवं इन कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य स्कूली छात्रों के शैक्षिक, बौद्धिक, शारीरिक, सर्वांगीण विकास के लिए किया जाता है।

विमलकान्त शर्मा
प्रचारमन्त्री

मा० बद्रीप्रसाद आर्य को समाजरत्न की उपाधि

सभा के कोषाध्यक्ष तथा जीन्द के समाजसेवक मा० बद्रीप्रसाद जी को श्री अंगिरा शोध संस्थान की ओर से गत दिनों समाजरत्न की उपाधि देकर सम्मानित किया है। इस समारोह की अध्यक्षता श्री रामभगत लांग्यान उपमण्डल अधिकारी जीन्द ने की थी।

—केदारसिंह आर्य

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्ज सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीज 499/17 गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन सर्राफा बाजार, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मैसर्ज कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन० आई० टी० फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज सदर बाजार, गुड़गांव।

उपकार तुम्हारे इतने हैं....

उपकार तुम्हारे इतने हैं, जिनको मैं गिना नहीं सकता।
कण-कण में आप समाये हो, जग को मैं दिखा नहीं सकता॥

क्या अनुपम, अद्भुत, देन तेरी, दाता हो दीख नहीं पड़ते।
सब काम पूर्ण कर देते हो, कर्त्ता हो, कर्म नहीं करते।
तुम सर्वाधार बने जग के, मैं तुमको भुला नहीं सकता···

जब चिड़िया चहक-चहक गाती, मीठी सी तान सुना जाती।
जब भोर की किरण आकरके, निज स्वर्ण-प्रभा फैला जाती।
आनन्द विभोर हुआ मन तब, अनुभव को बता नहीं सकता···

रोते को कभी हंसा देते, हंसते को कभी रुला देते।
सब खेल तुम्हारे अद्भुत हैं, भोले हम समझ नहीं पाते।
हो पारब्रह्म परमेश्वर तुम, कोई तेरा पार न पा सकता···

दो आंख दिए, दो कान दिये, रसना रसभरी बना डाली।
दो हाथ दिये, दो पैर दिए, अद्भुत यह देह रचा डाली।
सब चकित देख कौशल तेरा, तू अद्भुत खेल दिखा सकता··

क्या नहीं दिया तूने हमको, हम खुद ही लेना भूल गये।
हर भूल पे समझाया तूने, हम खुद ही खुद को भूल गये।
इस भूल-भुलैय्या से हमको, बस तू ही पार लगा सकता·

ठोकर खाकर जो चेत गये, वे द्वार तुम्हारे आये हैं,
जो तुमसे दिल की कहते हैं, वे दिलवाले भी आये हैं।
तेरे द्वार पे आकर के कोई, खाली हाथों नहीं जा सकता···

क्या अद्भुत महिमा जाल तेरा, रंगों-रंगों की क्यारी हैं।
आश्चर्यचकित सब देख रहे, तेरी रचना बलिहारी है।
बीता है अनहद काल प्रभु, कोई पार तेरा पा सकता।

ये धवल हिमाच्छादित पर्वत, यह कल-कल, छल-छल, नदियों का
कहीं मोती टंके तृणों पर हैं, कहीं नृत्य मयूर, मृग छौनों का।
कर रहा सृष्टि का नव शृंगार, तुझसा कर्त्ता नहीं हो सकता···

कहीं झूम रही डाली-डाली, रस भरे रंगीले फूलों की,
कहीं अमृत निर्झर झरता है, गुंजन गूंज है भौरों की।
तू सुन्दरता का मानदण्ड, कोई तेरा भेद न पा सकता।

जब आंख से आंसू बहते हैं, मन विह्वल सा हो जाता है।
खुद की करनी आती है याद, मन धिक-धिक हमको करता है।
तू फल का दाता है भगवन्, मैं दोष तुम्हें नहीं दे सकता···

जैसा बोया, वैसा काटा, अब पछताते से क्या होगा।
शुभ कर्मों की बहती नदियां कुछ कण चख ले फिर क्या होगा।
प्रभु ! सुपथ दिखानेवाला है, हमको पथ दीख नहीं पड़ता...

क्या कहें, सुनाएं, गुण तेरे, अब 'नीर' मूक बन बैठा है।
क्या खोज रहा उसको बाहर, वह तेरे अन्दर बैठा है।
उस निर्विकार की महिमा का, साकार न वर्णन कर सकता···

—महावीर 'नीर', विद्यालंकार
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि० नं० P.RTK [illegible] २१,६६, ०८, ५३, ०६०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक २ २८ नवम्बर १९९० वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव सम्पन्न

प्रो० शेरसिंह प्रधान, श्री सूबेसिंह मन्त्री, श्री रामानन्द सिंहल कोषाध्यक्ष तथा श्री हरिराम आर्य पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित

रोहतक २५ नवम्बर (केदारसिंह आर्य द्वारा) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा की सभा उपप्रधान महाशय भरत सिंह वानप्रस्थी की अध्यक्षता में दयानन्दमठ रोहतक में हुई। इसमें हरयाणा भर के आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

डा० रणजीतसिंह ने प्रधान पद के लिए प्रो० शेरसिंह का नाम प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज सारा राष्ट्र संकट में है। जातपात तथा सम्प्रदायों के आधार पर राष्ट्र को बांटा जा रहा है। बाहरी शक्तियां मुसलमान तथा ईसाई बनाने के लिए करोड़ों रुपया भारत में भेज रही हैं। इस अवस्था में आर्यसमाज का राष्ट्ररक्षा करने का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। अतः हमें इस समय ऐसे अनुभवी नेता के नेतृत्व की आवश्यकता है जो कि इन समस्याओं के समधान कराने के लिए आर्यसमाज का मार्गदर्शन कर सके। प्रो० शेरसिंह इस कसौटी पर खरे उतरे हैं।

इस प्रस्ताव का अनुमोदन प्रि० लाभसिंह, ला० रामानन्द सिंहल (पानीपत), डा० सोमवीर (रोहतक), ला० लक्ष्मणदास (बल्लभगढ़), श्री रामगोपाल आर्य (सोनीपत), मा० बद्रीप्रसाद (जीन्द), श्री खेमचन्द आर्य (कालका) ने किया।

प्रधान पद के लिए अन्य किसी प्रत्याशी का नाम प्रस्तुत न किये जाने पर प्रो० शेरसिंह को आगामी तीन वर्षों के लिए सर्वसम्मति से प्रधान घोषित किया गया।

डा० रणजीतसिंह ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार प्रान्तीय सभाओं के चुनाव भी सार्वदेशिक सभा की भांति ३ वर्ष के लिए किये जाएं। अतः इस आदेश के अनुसार हरयाणा सभा का चुनाव भी तीन वर्ष की अवधि के लिए माना जावे। और सभा के लिए शेष पदाधिकारियों, अंतरग सदस्यों, आर्य विद्या सभा हरयाणा, आर्य विद्या सभा कुरुगुल कांगड़ी, राजार्य सभा, न्याय सभा तथा सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधि चुनने का अधिकार भी सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह को दिया जावे। इस प्रस्ताव का समर्थन श्री सुखदेव शास्त्री (आसन), प्रो० सत्यवीर शास्त्री भिवानी, श्री राममेहर एडवोकेट (रोहतक), प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार (रोहतक), मा० बद्रीप्रसाद (जीन्द), प्रि० लाभसिंह (पानीपत), श्री रामचन्द आर्य (रेवाड़ी) ने किया। इस प्रकार यह प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

प्रो० शेरसिंह ने छठी बार सभा का प्रधान सर्वसम्मति से चुने जाने पर हरयाणा प्रदेश के सभी आर्य प्रतिनिधियों का आभार प्रदर्शित करते हुए कहा कि आपने मेरे ऊपर जो विश्वास प्रकट किया है और सभा का जो कार्यभार डाला है उसके लिए मैं सभी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं और विश्वास दिलाता हूं कि आपकी आशाओं के अनुसार सभा को उन्नत करने और आर्यसमाज की वर्तमान समस्याओं के समाधान के लिए पूरी शक्ति लगाकर अपने कर्तव्य का पालन करूंगा। आशा है मुझे सभी का सहयोग और प्यार यथापूर्व मिलता रहेगा।

प्रो० शेरसिंह ने सभी जिलों के सक्रिय प्रतिनिधियों से विचार विमर्श के पश्चात् सभा के शेष पदाधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों के चुनाव की घोषणा निम्न प्रकार की :-

१. महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी, दयानन्दमठ रोहतक (उपप्रधान)
२. पद्मश्री बहन सुभाषिणीदेवी आचार्या कन्या गुरुकुल खानपुर कलां (उपप्रधान)
३. ला० लक्ष्मणदास आर्य सेवा सदन बल्लभगढ़ (उपप्रधान)
४. डा० रणधीरसिंह सांगवान, प्रधान आर्यसमाज सिरसा (उपप्रधान)
५. श्री सूबेसिंह सेवानिवृत्त उपमण्डल अधिकारी नागरिक रोहतक (भागी जि० भिवानी) (मन्त्री)
६. डा० सोमवीरसिंह सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी (रिटोली रोहतक) (उपमन्त्री)
७. श्री सत्यवीर शास्त्री ग्राम गढ़ी बोहर जि० रोहतक, (उपमन्त्री)
८. श्री रामानन्द सिंहल ६२, सुखदेव नगर पानीपत, (कोषाध्यक्ष)
९. श्री हरिराम आर्य सेवानिवृत्त लोक-सम्पर्क अधिकारी (कारोली जि० रेवाड़ी) (पुस्तकाध्यक्ष)

अन्तरंग सभा के सदस्य

१०. स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक
११. श्री वेदव्रत शास्त्री संचालक आचार्य प्रिंटिंग प्रेस दयानन्द मठ रोहतक
१२. प्रो० सत्यवीर शास्त्री, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय भिवानी।
१३. श्री धीरपाल, आर्यसमाज बादली जि० बादली।
१४. वैद्य गेन्दाराम आर्य, प्रधान आर्यसमाज छोटा माडल टानउ यमुनानगर।
१५. श्री श्यामलाल आर्य, ९०-आर नई कालोनी गुड़गाव।
१६. श्री सुमेरसिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज सरूपगढ़ जि० भिवानी।
१७. श्री रामचन्द्र आर्य, पूर्व खण्ड विकास अधिकारी (रेवाड़ी)।
१८. श्री बलवानसिंह पूर्व मन्त्री गुरुकुल सिंहपुरा (ग्राम टिटोली जिला रोहतक)
१९. प्रिंसिपल लाभसिंह प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा (सिवाह जिला पानीपत)
२०. प्रिंसिपल सत्यवीरसिंह विद्यालंकार छाजूराम जाट कालेज हिसार
२१. प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार मन्त्री आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी (चाणक्यपुरी रोहतक)
२२. श्री रामगोपाल आर्य प्रधान आर्यसमाज सोनीपत नगर

२३. ला० विश्वबन्धु आर्यसमाज ठोल जिला कुरुक्षेत्र
२४. मा० बदरीप्रसाद आर्यसमाज जीन्द शहर
२५. डा० अमीरसिंह मनोविज्ञान विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
२६. महाशय ताराचन्द आर्य प्रधान आर्यसमाज नारनौल जि० महेन्द्रगढ
२७. महाशय फतहसिंह भण्डारी गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक
२८. डा० रणजीतसिंह मकान ६०५/१६ फरीदाबाद (नारनौन्द हिसार)
२९. डा० मनोहरलाल आर्य हस्पताल रेलवे मार्ग कैथल।
३०. श्री कुलभूषण आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत।
३१. श्री चन्द्रपालसिंह राणा, ईश्वर कालोनी बवाना-दिल्ली।
३२. श्री देवराज विद्यालंकार ग्राम आंवली तहसील गोहाना।
३३. श्री जयपालसिंह आर्य ग्राम नंगला साधान जि० यमुनानगर।
३४. आचार्य सुरेन्द्र जी आर्य ग्राम लूखी जि० रेवाड़ी।

साधारण सभा में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव संख्या—१. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि राष्ट्र का सबल प्रचार माध्यम दूरदर्शन जिस पर राष्ट्र का करोड़ों रु० खर्च किया जाता है। वह दूरदर्शन अपने कार्यक्रमों द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी तथा भारतीय संस्कृति पर क्रूर आघात कर रहा है। यह सभा मांग करती है।

१. दूरदर्शन पर हिंदी भाषा के कार्यक्रम हिंदी भाषा में प्रस्तुत किये जाय उनमें आधे से अधिक अंग्रेजी भाषा में प्रसारित किए जा रहे हैं। इस धांधली को रोका जाए और हिंदी के वाक्य तथा हिंदी कार्यक्रम हिंदी भाषा में प्रस्तुत किये जाएं।

२. चित्रहार, चित्रगीत आदि कार्यक्रमों के अन्तर्गत अश्लील गीतों के साथ छाया चित्रों में अश्लील हाव-भाव एवं चित्र दिखाये जाते हैं जिनका श्रोताओं पर विनाशक प्रभाव पड़ता है। अतः ऐसे कार्यक्रम राष्ट्रप्रचारमाध्यमों से प्रचारित तथा प्रसारित न किये जाये।

३. देखने में आरहा है कि दूरदर्शन नाटकों में शराब, सिगरेट पीने तथा पिलाने के दृश्य दिखाये जाने लगे हैं। यह घोर निन्दनीय है। अतः इसे तुरन्त बन्द किया जाना चाहिये।

४. बालकार्यक्रम, प्रतियोगिता कार्यक्रम सैरसपाटे अथवा खोजपूर्ण अथवा ऐतिहासिक जानकारियां प्रायः अंग्रेजी भाषा में दी जाती है जो कि न बच्चे समझ पाते हैं और न ही बिना अंग्रेजी जानने वाले अन्य श्रोता। अतः उपर्युक्त कार्यक्रम हिन्दी अथवा प्रादेशिक भाषाओं में दिये जायें।

५. दूरदर्शन से मांस, शराब तथा अंडों का प्रचार न किया जाए। इससे शाकाहारी श्रोताओं तथा दर्शकों के दिलों पर ठेस पहुंचती है और बच्चों में अस्वस्थ खाद्य के प्रति रुचि जागती है जोकि भारतीय संविधान के विरुद्ध है।

प्रस्ताव संख्या—२. आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने आदेश तथा संयुक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के १९७५ के साधाराण सभा के अम्बाला छावनी के प्रस्तावानुसार पंजाब सभा का त्रिशाखन पंजाब, हरयाणा तथा दिल्ली में राजकीय सीमाओं के आधार पर करते हुए निर्णय किया था कि जो सम्पत्ति जिस प्रदेश में स्थित है, वह उसी प्रान्तीय सभा की होगी और संयुक्त पंजाब सभा के कोष में जो १८ लाख रुपये के लगभग बैंकों में जमा है, उसे भी ३५ प्रतिशत पजाब, ३५ प्रतिशत हरयाणा तथा ३० प्रतिशत राशि दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं को दी जावेगी। परन्तु १५ वर्ष व्यतीत होने पर भी हरयाणा सभा की प्राप्तव्य राशि जो कि बैंक में सावधि जमा राशि पांच गुणा लगभग ३० लाख है, हरयाणा सभा को नहीं दी गई जबकि हरयाणा सभा ने अनेक बार पंजाब सभा तथा सार्वदेशिक सभा से लिखित तथा मौखिक रूप में मांगी है, परन्तु अभी तक एक पैसा भी पंजाब सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने हरयाणा सभा को नहीं दिया है। अतः हरयणा प्रतिनिधि सभा इस अन्याय और धींगामस्ती के व्यवहार की घोर निन्दा करती है और सार्वदेशिक सभा के प्रधान से पुनः अनुरोध करती है कि वे अपने आदेश को क्रियान्वित कराने के लिए पंजाब सभा से हरयाणा सभा की प्राप्तव्य राशि एक मास के अन्दर दिलवाने की व्यवस्था करें अन्यथा जरूरत पड़ने पर हरयाणा सभा को ओर से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय के सामने विवश होकर धरना देना पड़ेगा।

प्रस्ताव संख्या ३. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा अपने हरयाणा के आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों को निर्देश देती है कि वे उपरलिखित प्रस्ताव को पास करके उसकी एक प्रति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली-१ दूसरी प्रति श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक कृष्णपुरा जालन्धर शहर तथा तीसरी प्रति मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक को यथाशीघ्र डाक द्वारा भेज देवें।

प्रस्ताव संख्या ४. यह सभा हरयाणा की आर्य जनता से अनुरोध करती है कि मार्च १९९१ में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर की जानेवाली नीलामी के विरुद्ध प्रदर्शन करने की अभी से तैयारी करे।

प्रस्ताव संख्या ५. यह सभा हरयाणा के गोप्रेमियों से अनुरोध करती है कि वे अपने घरों में गोपालन करें तथा अपने अपने परिवारों को गोदुग्ध पिलावें जिससे गोरक्षा हो सके और गोदुग्ध के सेवन से सारा परिवार बलवान्, निरोग, वीर तथा बुद्धिशाली बन सके।

प्रस्ताव संख्या ६. यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि वह केन्द्रीय सरकार की सेवाओं के चयन में भाषा माध्यम हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किया जावे।

प्रस्ताव संख्या ७. यह सभा हरयाणा के सभी आर्य विद्यालयों गुरुकुलों के अधिकारियों को निर्देश करती है कि वे अपनी संस्थाओं में वैदिकधर्म की शिक्षा तथा परीक्षा की व्यवस्था अनिवार्य रूप से करे और प्रतिदिन शिक्षण कार्य यज्ञ आदि करके आरम्भ की जावे।

प्रस्ताव संख्या ८. यह सभा हरयाणा के सभी आर्यसमाजों से अनुरोध करती है कि वे प्रतिवर्ष वार्षिक उत्सव अथवा वेदप्रचार कार्यक्रम अवश्य रखें और अपने आर्य सभासदों से उनकी मासिक अथवा वार्षिक आय का शतांश (१००वां भाग) समाज के कोष में प्राप्त करें तथा अपने सदस्यों की सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत उपस्थिति अवश्य अंकित करें।

प्रस्ताव संख्या ९. यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि अयोध्या में मर्यादापुरुषोत्तम राम की जन्मभूमि पर विदेशी आक्रमणकारी बाबर ने बलात् मन्दिर को तोड़कर वहां बाबरी मस्जिद बना रखी है, उसे वहां से तुरन्त हटाकर वह स्थान पूर्ववत् सुरक्षित किया जावे और आर्य जनता की भावनाओं का आदर किया जावे।

प्रस्ताव संख्या १०. यह सभा भारतीय जनता पार्टी के प्रधान श्री लालकृष्ण आडवाणी की इस टिप्पणी का घोर विरोध तथा निन्दा करती है जिसमें उन्होंने श्री रामचन्द्र तथा श्रीकृष्ण को मांसाहारी होना बताता है। आर्यजनता श्री आडवाणी से इस टिप्पणी को वापिस लेने का अनुरोध करती है। आर्यसमाज के विद्वान् इस विषय पर उनसे शास्त्रार्थ करने का चैलेन्ज देते हैं।

आकाशवाणी रोहतक से सुनिये

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह पर आर्य नेता स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० शेरसिंह तथा श्री महेश्वर शास्त्री की भेंटवार्ता आकाशवाणी रोहतक से ३० नवम्बर को रात्रि ८ बजे हरयाणा दर्शन कार्यक्रम में सुनिये।

शराब पीना जलती आग निगलना

—बचिये।

गोवध बन्दी—एक राष्ट्रीय मांग

भारत वर्ष की इस पवित्र-पावन धरती पर गोहत्या का अधर्म प्राचीन काल से लेकर मुस्लिम शासन काल तक नहीं था। परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य के भारत में पदार्पण के साथ ही इस अधर्म की नींव रखी गई। इससे पहले हिंदू-मुस्लिम दोनों ही गाय को पूजनीय मानते थे।

गाय के प्रश्न पर सबसे पहले आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आवाज उठाई और उन्हीं कदमों पर चलते हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी स्वराज्य मिलने के पश्चात् पूर्ण गोवध रोकने का आश्वासन भी दिया। महात्मा गांधी तो गोहत्या और नरहत्या को समान समझते थे। शासन संभालने के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तो "केटिल प्रिजरवेशन एण्ड डेवलपमेंट कमेटी" भी बना दी थी।

गोहत्या का प्रश्न न तो सांप्रदायिक है और न किसी के हृदय को आघात पहुँचाने वाला। विडम्बना ही है कि हमारी सरकार ने इस ओर कभी पहल करने की सोची ही नहीं। स्वतन्त्र भारत की सरकार भी ब्रिटिश सत्ता की तरह आज तक इसी गलतफहमी में है कि यह हिन्दुओं की धार्मिक मांग ही है और इस पर दूसरे समुदायों द्वारा विरोध होगा।

राजनैतिक विचार—श्री बाल गंगाधर तिलक ने जनता को यह आश्वासन दिया था कि जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तब पांच मिनट में पहली कलम की नोक पर गोवध निषेध कानून पास कर देंगे। डा० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने एक रेडियो भाषण में कहा था कि जो देश कभी घी और दूध का भण्डार कहा जाता था, आज वहां विदेशों से डिब्बाबन्द पाउडर का दूध और मक्खन मंगाया जाता है, वनस्पति घी भारतवासियों के पेट में विकार उत्पन्न कर रहा है, रोगों की भरमार बढती है, भारत का सात्विक जीवन आज समाप्त होता नजर आरहा है।

तुगलक वंश के बादशाहों ने भी समय-समय पर गाय की रक्षा हेतु कानून बनाए। मुगल बादशाहों के पहले शासक बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं को एक वसीयत में लिखा कि अपने राज्य में गाय की कुर्बानी कभी मत होने देना। हुमायूं को भी गोमांस से अत्यन्त घृणा थी। हुमायूं के कुछ संस्मरण फारसी में लिखे गए जिनका अंग्रेजी अनुवाद सन् १९०४ में मेजर चार्ल्स स्टुअर्ट ने किया, जिसके अनुसार एक बार अपनी ईरान यात्रा के दौरान अपने सौतेले भाई कामरान और मां की राय की बेगम के पड़ाव पर आराम करते हुए हुमायूं ने भोजन मंगवाया तो उन्हें उस भोजन में गाय का मांस होने की शंका हुई। पता लगाने पर उनका संदेह ठीक निकला तो वह क्रोधित हुए और बोल उठे—हाय रे कामरान पेट भरने का तेरा यह रास्ता? अपनी पवित्र मां को भी तू ये गो-मांस खिलाता है? उसके लिए चार बकरियां लाने में तू असमर्थ होगया। हमारे तो पिता की कब्र को भाड़ने वालों तक के लिए गो-मांस खाना अनुचित है। पिता जी ने जिस तरह अपने कुटुम्बवालों का गुजारा किया क्या उस तरह हम चारों पुत्र नहीं कर सकते? इन शब्दों के साथ दुःखी बादशाह हुमायूं ने भोजन का थाल एक तरफ सरका दिया और शरबत का गिलास पीकर ही उठ खड़े हुए।

गोरक्षा के सिलसिले में यही दृष्टिकोण हुमायूं के पुत्र अकबर का था। अकबर के राज्य का पूरा विवरण "आइन-ए-अकबरी" नाम की किताब में मिलता है जिसमें गौरक्षा का तो एक पृथक् अध्याय ही है, उसके दूध, घी, मक्खन आदि से भारतवासियों का पेट भरता है। इसके बैल खेती करके सारे भारत के लिए अन्न उपजाते हैं। इसलिए गाय तथा उसके वंश की हत्या करना जुर्म है। महाराजा अकबर की स्वयं अपनी गोशाला बड़ी विस्तृत थी।

अकबर की इस परम्परा को उसके पुत्र जहांगीर ने भी उसी प्रकार निभाया। ब्रिटिश नेताओं के अतिरिक्त भारत की धरती पर आज तक राजनीति करनेवाले सभी प्रकार के लोगों ने गौ तथा उसके वंश की रक्षा पर आवश्यक बल दिया। १९२४-२५ में कांग्रेस के एक सम्मेलन में गोरक्षा पर बोलते हुए पण्डित मदनमोहन मालवीय तो रो ही पड़े थे। गांधी जी तो सदैव यही कहते थे कि देश की सुख समृद्धि गाय के साथ ही जुड़ी है।

गाय भारतीय संस्कृति का प्रतिरूप—सत्य, न्याय और शांति जहां भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखे हुए थे। अतिथि सेवा इस देश की अमर मर्यादा थी। सदाचार और स्वावलम्बी जीवन इस देश का चरित्र था। इन सबका आधार एवं प्रेरणास्रोत गाय ही थी। उसका परोपकारी जीवन, उसकी सौम्य आकृति, परिश्रम रूप और शान्त वातावरण ही तो भारतीय संस्कृति का उद्गम है।

हिंदू, सिख, ईसाई और इस्लाम की दृष्टि में गाय—उपरोक्त समस्त फायदों के कारण ही जहां हिंदू समुदाय में गाय को माता के समान पूजनीय माना गया है वहीं अन्य मतों में भी गोरक्षा को बड़ा महत्त्व दिया गया है। सिखों के गुरु रामदेव जी का तो बलिदान ही गौरक्षा के उद्देश्य से हुआ था। गाय के दूध की प्रशंसा तो सिखों के धार्मिक ग्रन्थ तक में भी की गई है। ईसाई समुदाय के धार्मिक ग्रंथ बाइबल में भी गाय को देवता माना गया है। स्वयं मुहम्मद साहब ने तो गाय को जानवरों का सरदार कहा है और आदेश दिया कि उसकी बुजुर्गी और इहतराम किया करो। स्वयं हजरत ने भी कभी गाय की कुर्बानी नहीं की और न ही मक्के में आज तक गाय की कुर्बानी होती है। कुरान में तो यहां तक लिखा है कि हरा पेड़ काटने वाले, मनुष्य खरीदनेवाले, गाय को मारनेवाले और दूसरों की स्त्री के साथ कुकर्म करनेवाले खुदा के यहां कभी माफ नहीं किए जायेंगे।

गोवंश की रक्षा तथा देश की अर्थव्यवस्था—यदि गाय तथा उसके वंश से प्राप्त सहायता को आर्थिक आंकड़ों में मापा जाए तो स्पष्ट होगा कि हमारा भारत देश का ही नहीं बल्कि विश्व के समस्त देशों का आर्थिक ढांचा गाय के कन्धों पर ही खड़ा प्रतीत होगा। जिन देशों ने गोवंश की रक्षा के लिए सख्त कदम उठा लिए हैं उन देशों में आरोग्यता, खुशहाली, समृद्धि और खाद्यान्नों की बाहुल्यता दूर से ही देखी जा सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो गाय तथा इसके वंश से प्राप्त आर्थिक लाभ का स्पष्ट नक्शा अपनी लघु पुस्तिका "गो-करुणानिधि" में खींचकर ही रख दिया है। उनके अनुसार गाय के दूध और अन्य उत्पादों से गाय के पूरे जीवन में कई हजार मनुष्यों को तृप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक गाय अपने जीवन में अनुमानतः ५ या ६ बछड़े और बछिया पैदा करती है। पुनः बछिया के दूध से भी देश में इन उत्पादों की वृद्धि होगी। दूसरी बछड़े बड़े होकर बैल बनते हैं और प्रत्येक बैल अपने जीवन में हजारों मन अन्न का उत्पादन कराने में सहयोग करते हैं। इस प्रकार बैल से भी लाखों मनुष्यों के अन्न की आवश्यकता पूरी होती है।

अतः भारत सरकार को गाय तथा गोवंश की रक्षा के लिए राष्ट्रहित में सख्त से सख्त कदम उठाने चाहियें जिससे भारत देश फिर से प्राचीन रूप से सुख-समृद्धि को प्राप्त कर सके।

(दैनिक वीर अर्जुन से साभार)

सोनीपत में योगसाधना शिविर एवं उत्सव समापन

आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत में स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में २६-१०-९० से १-११-९० तक योगसाधना शिविर बड़े ही उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में लगभग ५० योग साधकों ने भाग लिया। बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश देहली आदि दूसरे प्रान्तों से भी बहुत साधक आए हुए थे। सोनीपत की जनता ने इस शिविर का अत्यधिक स्वागत किया है। आर्यसमाज के इस ओर योगदान की सर्वत्र प्रशंसा की गई। दूसरे मतावलम्बियों ने भी इसमें आकर भाग लिया और आर्यसमाज के कार्यों में रुचि ली। सामवेद यज्ञ में भी गुरुकुल कालवा के ब्रह्मचारियों के वेदगान से यहां के लोग बड़े प्रभावित हुए। ३१-१०-९० को तथा १-११-९० को बड़ी धूमधाम से उत्सव हुआ। इसमें श्री सहदेव जी बेधड़क श्री रामनिवास तथा श्री हरध्यानसिंह सभा प्रचारक श्री रतनसिंह आर्य ने लोगों को बड़ा मन्त्रमुग्ध किया। श्री देवव्रत आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र के भाषणों का सबसे अधिक प्रभाव पडा। श्री सुखदेव शास्त्री ने भी बड़ा ओजस्वी भाषण दिया।

भारत की वर्तमान स्थिति

जिधर देखिये नजर आ रहे कायरता के बोल,
फुटपाथों पर काट रहे दिन, यहां करोड़ों लोग।
जहां देखिये रूढिवादी अपनी ही फरमाते,
शिक्षित तथा विद्वानों की बात नहीं सुन पाते।
ईर्ष्या द्वेष भावना के रहते अन्दर बोल,
फुटपाथों पर काट रहे दिन यहां करोड़ों लोग।
लिप्त हुये स्वार्थ के अन्दर कर्म करें हैं खोटा,
वर कन्या का योग नहीं है बड़ा है कोई छोटा।
इन दोनों के बीच में आया दहेज शत्रु मोटा,
स्वार्थ, मतलब और गरज का अन्दर बाजे ढ़ोल।
फुटपाथों पर··· ···
बिना श्रम के दो नम्बर की आज कमाई चाहते,
देखो चारों तरफ लोग अपना ईमान गिराते।
डुपलीकेट सामान चाहे ओरीजनल उसे बताते,
भ्रष्टाचार रिश्वत घोटाला शिष्टाचार हुआ गोल।
फुटपाथों पर·········
लोग करोड़ों तरस रहे सूखी रोटी कैसे खाये,
लेकिन धनपतियों का कुत्ता, डबल रोटियां खाये।
अपना लीडर खुश होकर अपना ही भवन बनाये,
सच्चा पथिक महेश रहा नहीं जीवन डांवाडोल।
फुटपाथों पर काट रहे दिन यहां करोड़ों लोग,
जिधर देखिये नजर आरहे कायरता के बोल।

मानव–चोला

दुर्लभ है देह ये देवों को भी महादेव न पाये तो मैं क्या करूं।
देनेवाले ने चोला ग्रनोखा दिया विषयों में लगाये तो मैं क्या करूं॥
इस देह में तत्व रमाया है
चेहरे पर तेज दिखाया है
बल की है अन्दर कमी नहीं
वीर शक्ति घटाये तो मैं क्या करूं।
देनेवाले ने चोला अनोखा दिया विषयों में लगाये तो मैं क्या करूं॥
यह मुख है अच्छा गाने को
रसना है रस बरसाने को
किसी का इसमें दोष नहीं
तू विष उगले तो मैं क्या करूं।
देनेवाले ने चोला अनोखा दिया विषयों में लगाये तो मैं क्या करूं॥
बुद्धि दी सोच समझने को
अच्छे पथ पर चलने को
कम्प्यूटर ऐसा बना नहीं
तू मलिन बनाये तो मैं क्या करूं।
देनेवाले ने चोला अनोखा दिया विषयों में लगाये तो मैं क्या करूं॥
योगी बन अमृत नहीं पीया
भोगी बन सबकुछ नष्ट किया
मिला रोगों से छुटकारा नहीं
वैराग्य न लाये तो मैं क्या करूं।
देनेवाले ने चोला ग्रनोखा दिया, विषयों में लगाये तो मैं क्या करूं॥
अमृत जल है पीने के लिए
फल-फूल अन्य खाने के लिए
पीने-खाने की कोई कमी ही नहीं
मांस मदिरा को खाये तो मैं क्या करूं।
देनेवाले ने चोला अनोखा दिया विषयों में लगाये तो मैं क्या करूं॥
ध्यान करो उस ईश्वर का
यह जीवन क्षणभंगुर सबका
कहे महेश पन्हैडा खुर्द नहीं
शिष्टाचार न आये तो मैं क्या करूं।
देनेवाले ने चोला ग्रनोखा दिया विषयों में लगाये तो मैं क्या करूं॥

ले०—महेशचन्द आर्य फरीदाबाद (हरयाणा)

धन्य है हे ! आर्यसमाज

धर्म की धवल ध्वजा के धारक,
सत्पथ के प्रहरी नगराज।
क्रांति-किरण तुम वेद-सूर्य की,
धन्य तुम्हीं हो आर्यसमाज।
मानव-मानव की समता का,
किया तुम्हीं ने तो उच्चार।
भेदभाव का भूत भगाया,
मान सभी को तो इकसार।
अन्धतमस् में भटक रही थी,
देखो मानव जाति सारी।
वेद-विहान खिलाकर तुमने,
विकसायी मुरझायी क्यारी।
नारी जाति के समुद्धर्ता,
खोले सारे कपट-कपाट।
शिक्षा का सन्मार्ग सुझाया,
नव-जीवन का उमगा ठाठ।
छिन्न लता-सी जो बेचारी,
जीवन्मृत होकर जीती थी।
विष वैधव्य विषमता का हां,
कितना घूट-घूंट पीती थी।
पुनर्विवाह का मण्डप रचकर,
बुझता हुआ दीप जलाया।
वर्जित करी वर्जना सारी,
सूखी कलिका को सरसाया।
जो निज बन्धु पतित बने हां,
समता का अधिकार नहीं था।
देखे कैसे धर्मध्वजी ये,
अपनों से हो प्यार नहीं था।
शुद्धि का वह चक्र चलाकर,
बिछुड़ों को फिर गले लगाया।
माला के जो मोती टूटे,
उनको फिर से आन मिलाया।
रूढ़ि रोषग्रस्त जो जाति,
अन्ध आस्था में सोती थी।
राम-राम और कृष्ण-कृष्ण कह,
अपना सब कल मल धोती थी।
जकड़ी थी जो परबन्धन में,
आजादी हित भरती आहें।
तुमने ही तो सुनी वीरवर,
माता की वे करुण कराहें।
कर-कर समर बना सेनानी,
किया अपना सब उत्सर्ग।
जाति-मुक्ति में ही देखा,
तुमने स्वर्ग और अपवर्ग।
भारत मां के भव्य भाल पर,
तुम ही चमके बनकर बिन्दी।
पुण्य प्रताप तुम्हारा ही यह,
बनी राष्ट्र-भाषा जो हिन्दी।
वन्दन करता शत-शत आज,
धन्य तुम्हें हे ! आर्यसमाज।

—डा० धर्मचन्द्र, विद्यालंकार "समन्वित"

पुरोहित की आवश्यकता है

जय माता दी

दिवाली से पहले और दशहरे से दस दिन पूर्व एक मातृशक्ति का त्यौहार पूरे भारत भर में मनाया जाता है। मातृशक्ति को कई रूपों में जन साधारण ने अपनाया है। बंगाल में काली मा का रूप है तो गुजरात में अंबा का, दक्षिण में इसे चामुंडी देवी के नाम से जानते हैं, तो उत्तर में ज्वाला देवी के नाम से, हर क्षेत्र में इस माता के नाम बदलते रहते हैं। बम्बई में मुंबा देवी तो राजस्थान में कैला देवी। मध्यप्रदेश में जय भवानी तो पंजाब में वैष्णो देवी। इस तरह एक माता के रूप और कई नाम प्रसिद्ध हो गये हैं।

वैष्णो देवी मां की कथा तो आपने सुनी ही होगी। वैष्णो देवी का मन्दिर जम्मू से दूर कटरे से लगभग १५ कि०मी० पहाड़ों के ऊपर है। यहां श्रद्धालु भक्तजनों की भीड़ लगी रहती है। रात दिन इस मन्दिर में देवी के दर्शन के लिये लोग जाते हैं। इस देवी मां की इतनी प्रसिद्धि हो गयी है कि लोग रात रात भर नहीं सोते और माता का जागरण करते हैं। माता के भक्तों का कहना है कि माता के जगराते से सबके मन की मुरादें पूरी होती हैं।

आधी रात को यह जागरण प्रारम्भ होता है। लगभग ११.३० बजे जागने वाले श्रद्धालु भक्त इकट्ठे होते हैं। भजन मंडली बड़े जोर शोर से माता को भेंटं (भजन) गाती हैं, (अपने पड़ोसियों की नींद में बाधा करते हैं) रात के दो बजे मध्यान्तर होता है, उस समय नाश्ता और चायपान का प्रबन्ध भी होता है। फिर वही महफिल माता के दरबार की लगती है। भजन मंडली के गायकों को अच्छी खासी रकम मिल जाती है। एक रात के जागने से उसे हजारों रुपयों का मुनाफा होता है। भक्तजन भी खूब अपनी श्रद्धानुसार भेंटें (रुपयों की) देवी मां के नाम पर उसके चरणों में चढ़ाते हैं जो अन्त में पुजारी के परिवार का पेट पालती है। आजकल वैष्णो माता बाकी दूसरी माताओं से अधिक प्रसिद्ध हो गयी है। दूसरी मातायें नैनादेवी, कैलादेवी, ज्वालादेवी, कालीदेवी, चामुंडी देवी, चंडीदेवी, मंशादेवी, सीतलादेवी, अंबादेवी, जगदम्बादेवी, उमादेवी, अम्बा माता, सन्तोषी माता, सरस्वती माता, गिरिजादेवी, कालकादेवी, दुर्गादेवी, लक्ष्मी माता, न जाने कितनी मातायें और भी हैं।

अंधविश्वासी माता की मूर्ति पर सोना-चांदी-मोती-हीरे के आभूषण और नकद रुपये चढ़ाते हैं। क्या माता जी को इन भेंटों की आवश्यकता है? अगर है तो वह पत्थर की मूरत जीवित लोगों को क्या सहायता कर सकती है। असली घी की जोत जलाते हैं। क्या माता को ज्योति की जरूरत है? अगर है तो वह अपने भक्तजनों को रास्ता कैसे दिखा सकती है। माता की मूर्ति के सामने गायक बड़े बड़े लाउड स्पीकर लगाकर जोर जोर से माता को रिझाने की कोशिश करते हैं जिससे माता प्रसन्न होये और उन्हें वरदान दे सके। तो क्या माता ऊंचा सुनती है? अगर यही सच है तो किसी के मन की बात कभी भी नहीं सुन सकती। तालियों की आवाज से सुनने की शक्ति भी कम हो गयी होगी।

जय माता दी—जय माता दी कहने से अगर माता जी प्रसन्न होती है, तो कोई कर्म करने की आवश्यकता नहीं है। इससे वह माता अपने भक्तों को निकम्मा बना रही है।

ईश्वर ने रात सोने के लिये और दिन कर्म करने के लिये बनाये हैं। परन्तु माता का जागरण रात में ही होता है। रात भर जागने से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। लगातार माता का जागरण करेंगे तो एक दिन ऐसा भी हो सकता है जब जगराता करने का अवसर ही प्राप्त न हो सके। या यूं कहें कि माता रात को ही जागती है तो क्या दिन में माता किसी की बातें नहीं सुनती सोती रहती है। (हम ईश्वर को ही माता-पिता, बन्धु व सखा कहते हैं और मानते हैं। वह ईश्वर तो सदा एकरस रहता है। हर समय जीवात्मा के पास रहता है। किसी भी पल जीवात्मा की प्रार्थना सुन सकता है। ईश्वर कभी भी नहीं सोता।

सबसे पहले और असली माता वेदमाता है वैसे जन्म देनेवाली को भी हम माता जानते और मानते हैं। जिस धरती पर हमने जन्म लिया है वह भी हमारी पृथ्वी माता है। सही मानो में माता वही है जो माप तोल कर सके। अपने पुत्र पुत्रियों को सर्वदा ज्ञान का वर्षा से फलता फूलता देख सके। इसलिये मा को माना जाता है। मां के सिवाय कोई नहीं जानता कि मेरे पुत्र का पिता कौन है। मा ही पिता के दर्शन करा सकती है। सचमुच में वेदमाता ही हमारी सच्ची मां है, क्योंकि वेद की वाणी परमपिता परमात्मा की ही वाणी है।

देवी वही हो सकती है जो सवदा सबको सबकुछ देती रहे। पृथ्वी मां से हमें प्राप्त होता है। बदल में धरती माँ ने हमसे कुछ भी नहीं चाहा। जीवनभर हम पृथ्वी मा के सीने पर चलते हैं, उसकी गोद में सोते रहे और अपनी जरूरत की हर चीज (रोटी, कपड़ा और मकान) इसी से ही प्राप्त करते हैं।

जन्म देने वाली माता का क्या कहना। स्वयं भूखे रहकर भी अपनी संतान को पेट भर खिलाती है। स्वयं गीले पर सोती है, परन्तु अपने बच्चों को सूखे पर सुलाती है। बच्चों के सुख के लिये न जाने कितनी रातें अपनी आंखों में काटती है। मां के इतने उपकार हैं कि इस जन्म में क्या, किसी जन्म में भी उतारे नहीं जा सकते। बच्चों की खुशी में ही माता-पिता की खुशी होती है। माता-पिता की आज्ञा का पालन करना ही माता-पिता के लिये संतान की ओर से सबसे बड़ी उपलब्धि है।

वेद माता ने मानव मात्र के लिये कुल मिलाकर २०३७९ मन्त्र उपहार में दिये हैं, जिसे पाकर मनुष्य अपना जीवन संवार सकता है और अपने परमपिता परमात्मा के दर्शन कर सकता है। महर्षि व्यास कहते हैं कि विश्व में विभिन्न वस्तुओं पर जो भी पुस्तकें हैं उन सबका आदि मूल वेदों में ही है।' वेदों में मुख्य चार विषय हैं, ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान। ईश्वर, जीव, प्रकृति के कर्म एवं पारस्परिक सम्बन्धों का विस्तृत ज्ञान है। इन्हीं बातों को जानकर जीवन में आस्तिकता आती है। वेद माता हमें दो विद्याओं का ज्ञान देती है, एक परा दूसरी अपरा। परा विद्या ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव, ईश्वर जीव सम्बन्धी जीवात्मा का स्वरूप एवं आध्यात्मिक विषयों का बोध कराती है तो दूसरी ओर अपरा विद्या में सांसारिक सुखों, सम्पत्ति, राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान, तकनीक, एवं बाह्य जगत् का विषय है। वेद माता ने स्वयं मनुष्य से कहा कि

'अहं सत्यमनृतं यद् वदामि देवो परिवाचं विशश्च' (अथर्ववेद)

अर्थात् मैंने ही सत्य असत्य का भेद करके प्रजा के लिये देवी वाणी (वेदवाणी) को कहा है। वेद माता की कही हुई बातों को टालना अनार्यों का काम है। हम तो आर्य हैं। जब हम वेद माता को जानेंगे व मानेंगे तभी हम सच्चे मन से कह सकेंगे 'जय माता दी'।

अन्धश्रद्धा और अन्धविश्वास की वजह से ही पापी लोग लाभ उठाते हैं। लिखे पढ़े विद्वान् भी कुछ जाने बगैर ऐसे लोगों के चगुल में फंस जाते हैं और फसते जा रहे हैं। रात के अन्धेरे मे सज्जन लोग भी अपना सर्वस्व खो बैठते हैं। न जाने कब मां को अपने बच्चों पर दया आयेगी (पुराणिक माता को)। जिस दिन लोग वेद माता का गान करेंगे (वेदों के सही अर्थ को समझेंगे और अपने जीवन में उतारेंगे) उस दिन हम भी बोलेंगे, 'जय माता दी'।

श्री मदन रहेजा

श्रीराम जन्मभूमि अयोध्याकांड

श्रीराम जन्मभूमि विवाद क्यों नहीं सुलझने पाया है।
क्योंकि सरकार ने ही इसको वोटों के लिये उलझाया है॥
सरकार की मुस्लिम तुष्टिकरण के कारण ही यह नीति है।
हिन्दुत्व विरोधी कांग्रेस की बनी हुई यह रीति है॥
श्रीराम अयोध्या में जन्मे इतिहास से यही प्रमाणित है।
उनका मन्दिर बाबर से सहस्रों वर्ष पूर्व स्थापित है॥
बाबर द्वारा मन्दिर खंडित कर जब मस्जिद बनवाई थी।
भीषण संग्राम हुआ था तब सहस्रों ने जान गंवाई थी॥
फिर मन्दिर निर्माण हुआ, यवनों ने खुद मस्जिद तोड़ी।
टूटी-फूटी दीवार एक बस गुंबज वाली ही छोड़ी॥
मुस्लिम जाति का एक वर्ग इसको न मस्जिद मान रहा।
वह कई बार कहीं दूर इसे ले जाने की भी ठान रहा॥
पर शासन व मुस्लिम नेता इसको ही मुस्जिद बतलाकर।
दोनों ही वोट लेना चाहते भोली जनता को बहकाकर॥
इस खंडहर को मस्जिद कहते पर नवाज न कोई पढ़ते हैं।
पर श्रीराम के मन्दिर में हिन्दू नित पूजा करते हैं॥
न्यायालय ने मुस्लिम प्रवेश सन् इक्कावन से रोका है।
श्रीरामचन्द्र की पूजा से हिन्दू को कभी न टोका है॥
अब मन्दिर भव्य बनाने की हिन्दू जनता ने है ठानी।
अक्टूबर तीस को पहुंच गये लाखों हिन्दू जन बलिदानी॥
सरकार ने रोकी रेल, बसें घर-घर में कर्फ्यू लगा दिया।
सारी ही अयोध्या नगरी को सैनिक युद्धस्थल बना दिया॥
साधु-संतों, नेतागण पर, लट्ठ प्रहार किया भारी।
पकड़-पकड़ बीहड़ जंगल में छोड़े सहस्रों नर-नारी॥
बच्चे-बूढ़े व युवकों पर घर-घर में घुस गोली मारी।
कर दिया मात औरंगजेब, जनरल डायर अत्याचारी॥
हिन्दू वीरों ने इस पर भी अद्भुत कर्त्तव्य दिखाया है।
श्रीराम जन्मभूमि गुंबज पर ओम् का ध्वज फहराया है॥
सरकार की घेराबन्दी को हिन्दू वीरों ने तोड़ दिया।
लाठी, गोली संगीनों का मुख एकबार तो मोड़ दिया॥
इस धर्मयुद्ध में जिन वीरों ने अपने प्राण गंवाये हैं।
वे मरे नहीं होगये अमर उनके यश जग में छाये हैं॥
इन वीरों के बलिदानों पर आर्य जाति को गौरव है।
जीवन में ऐसा यश गौरव किसको मिलता कब-कब है॥
आर्यों ने राम जन्मभूमि को इसी भांति स्वीकारा है।
जिस भांति महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा है॥
इस आन्दोलन का आर्यसमाज करता पूर्ण समर्थन है।
इसमें शहीद जो आर्य हुए उनको श्रद्धांजलि अर्पण है॥
यह वीर हमें देते हैं प्रेरणा निज कर्त्तव्य निभाने की।
"सिद्धान्त भास्कर" देश, धर्म पर निज सर्वस्व लुटाने की॥

—श्री भगवतीप्रसाद सिद्धांत भास्कर

सर्वहितकारी वास्तव मे सर्वहितकारी है

सर्वहितकारी की प्रतियों को पढ़कर पता चला कि यह नाम सार्थक ही है। महत्त्वपूर्ण लेखों को पढ़ने से एक नए ज्ञान का संचार होता है। एक तरफ कविता व हरयाणवी भजन के रूप में जो शिक्षा दी जाती हैं वे वास्तव में ग्रहणीय है। रामचन्द आर्य द्वारा लिखित हरयाणवी भजन में आर्य माता का उपदेश अत्यन्त पसन्द आया। मैं इसके लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेरित करता हूं।

जे० सी० जांगड़ा मुख्याध्यापक

आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत का वार्षिक चुनाव

श्री रामनिवास जी प्रधान, श्री ज्ञानसिंह जी उपप्रधान, श्री महावीरसिंह जी उपप्रधान, श्री सत्यवीरसिंह जी शास्त्री मंत्री श्री सजानसिंह जी उपमंत्री, श्री किशनचन्द जी आर्य कोषाध्यक्ष, श्री राज सिंह जी पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री धर्मवीरसिंह जी लेखानिरीक्षक।

श्रीराम जन्मभूमि, रथयात्रा और सरकार का पतन

सत्ता के लिये इन लोगों ने कैसे-कैसे रंग बदले हैं।
सिद्धान्तहीन, नकली चेहरे यह रंगे सियार ही निकले हैं॥
सत्ता के लिये जो शत्रु थे वे पुनः परस्पर आन मिले।
वर्षों से जो अपमानित थे फिर उनको सम्मान मिले॥
इस प्रकार के नेतागण की जीती-जागती है मिसाल।
श्री राजीव, चन्द्रशेखर, वी. पी. सिंह व देवीलाल॥
कांग्रेस हटाने के लिये जिस जनता दल का गठन हुआ।
उसका सत्ता की खींचतान झगड़े से भारी पतन हुआ॥
जिस कांग्रेस को महाभ्रष्ट श्री चन्द्रशेखर ने बतलाया।
उसको ही देवीलाल-चन्द्रशेखर ने फिर से अपनाया॥
कुर्सी के लिये वी. पी. ने कांग्रेस का त्याग किया।
अपने समर्थन सत्ता हेतु भाजपा को साथ लिया॥
पक्के साथी श्री देवीलाल को मंत्री पद से हटा दिया।
विश्वास परस्पर दोनों ने अपना-अपना मिटा दिया॥
अपने समर्थन हेतु ताऊ ने किसान दल को जुटा लिया।
वी. पी. ने अपना समर्थन पिछड़े दल से पटा लिया॥
इसके लिए उसने झट-पट आरक्षण का पासा फैंका।
जिसने अनेकों छात्र व छात्रा को ज्वाला में झौंका॥
श्रीराम जन्मभूमि विवाद इस कारण नहीं सुलझ पाया।
क्योंकि वी. पी. सिंह ने इसे वोटों के लिये ही उलझाया॥
सरकार की मुस्लिम तुष्टिकरण के कारण ही यह नीति है।
हिन्दुत्व विरोधी कांग्रेस की बनी हुई यह रीति है॥
वह मन्दिर का निर्माण इसी कारण से नहीं होने देते।
यह मस्जिद की रक्षा के नाम पर वोट मुसलमान से लेते॥
इस ही कारण से लालकृष्ण आडवानी का रथ रोक दिया।
इस ही कारण सद्भाव और शांति को आग में झोंक दिया॥
उत्तरप्रदेश व नगर अयोध्या भर में कर्फ्यू लगा दिया।
गोलीकाण्ड कर रामभक्त जन का भारी संहार किया॥
भारतीय जनता पार्टी ने शासन से समर्थन हटा लिया।
उसने भी जनता दल की सरकार का शासन मिटा दिया॥
वी. पी. ने समर्थन हटाये जाने पर भी कुर्सी को नहीं छोड़ी।
प्रजातंत्र के सारे नियम व सारी मर्यादाएं तोड़ी॥
आखिर सात नवम्बर को जनता दल की सरकार गई।
पाकर के समर्थन कांग्रेस शेखर की बनी सरकार नई॥
यह कांग्रेस की इस बैशाखी पर कितने दिन टिक पायेगी?
जिस भांति पहले गिरी है यह उस कारण फिर गिर जावेगी॥
सरकार की ओर से इसी भांति हिन्दुत्व का यदि दमन होगा।
तो निश्चय है ऐसे शासकदल का घोर पतन होगा॥
चल पड़ा भयंकर भारत में अब राजनीतिक चक्कर है।
हो रहा स्पष्ट अब देशभक्त हिन्दू से इसकी टक्कर है॥
एक और वैदिक धर्म और आर्यत्व विरोधी दलबल है।
तो दूजी ओर हिन्दू भी अपनी आन-बान पर निश्चल है॥
श्रीराम जन्मभूमि के लिये अपना सर्वस्व लुटाने को।
उद्यत हैं "भास्कर" नरनारी प्राणों की भेंट चढ़ाने को॥

भगवतीप्रसाद सिद्धान्त भास्कर
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, (जयपुर)

श्रद्धांजली

सर्वहितकारी के अंक में श्रीमती इन्द्रावती देवी धर्मपत्नी श्री हनुमान आर्य की मृत्यु का समाचार सुनकर महान् दुःख हुआ आदरणीया श्रीमती आर्या बड़ी नेक योग्य व सकुशल गृहिणी थी। जब-जब आर्यसमाज सिवानी में श्री हनुमान आर्य के घर जाते तो उनका अतिथि सत्कार देखकर दंग रह जाते। परन्तु ईश्वर कृपा सर्वोपरि। भगवान् आर्य परिवार को यह महान् क्षति सहन करने की शक्ति प्रदान करे भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे।

रामचन्द्र आर्य नलवा (हिसार)

चण्डीगढ़ पर हरयाणा का दावा नहीं छोड़ेंगे

चण्डीगढ़ पंजाब को देने के पंजाब के राज्यपाल वीरेन्द्र वर्मा के सुझाव पर हरयाणा के मुख्यमन्त्री हुकमसिंह ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

श्री वर्मा ने कल दिल्ली में कहा था कि प्रधानमन्त्री को सौंपी अपनी पंजाब योजना के दस्तावेज में उन्होंने सुझाव दिया कि चण्डीगढ़ पंजाब को दे दिया जाना चाहिये तथा इसके लिए कोई पूर्व शर्त नहीं होनी चाहिए। दूसरी तरफ हरयाणा को अपनी राजधानी बनाने के लिए पैसा दे दिया जाना चाहिये। श्री वर्मा ने कहा था कि पंजाब के कई राजनीतिक दलों के नेताओं की भी यही राय है।

श्री हुकमसिंह ने कहा कि हरयाणा चण्डीगढ़ पर अपना दावा नहीं छोड़ेगा। उन्होंने कहा कि शाह आयोग ने चण्डीगढ़ को हरयाणा को देने की कोशिश की थी क्योंकि यह हिन्दीभाषी क्षेत्र है। उन्होंने कहा कि इन्दिरा गांधी अवार्ड के मुताबिक चण्डीगढ़ के बदले हरयाणा को हिन्दीभाषी अबोहर-फाजिल्का मिलने चाहिये तथा इसके अलावा नयी राजधानी के लिए उसे पैसा दिया जाना चाहिये।

श्री हुकमसिंह ने कहा कि अतः या तो शाह आयोग की रिपोर्ट या फिर इन्दिरा गांधी अवार्ड को लागू किया जाए। उन्होंने जोर देकर कहा कि चण्डीगढ़ एक हिन्दी भाषी क्षेत्र है।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि राज्यपाल को ऐसे राजनीतिक बयान नहीं देने चाहियें। उन्होंने कहा कि वे जल्दी ही पंजाब के राज्यपाल से बातचीत करेंगे। उन्होंने कहा कि हरयाणा को कमजोर राज्य नहीं समझा जाना चाहिए। हरयाणा अपने हितों के लिए पूरे दमखम से संघर्ष करेगा।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि उन्होंने पंजाब के राज्यपाल जोकि चण्डीगढ़ के प्रशासक भी हैं, को लिखा है कि वे चण्डीगढ़ प्रशासन में हरयाणा को 40:60 के अनुपात में हिस्सा दें। (ट्रीब्यून २३-११-९०)

दयानन्द कीर्ति स्तम्भ निर्माण योजना

स्व० पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने अपने निधन से कुछ समय पूर्व महर्षि दयानन्द शिला निर्माण समिति का गठन कर 'दयानन्द कीर्ति स्तम्भ' एवं 'दयानन्द विजय स्तम्भ' नामक शिलालेख निर्मित कराये जाने की एक वृहद् योजना बनाई थी और स्वय वैराटपाटन ढिकुली नैनीताल उत्तर प्रदेश में एक शिला का निर्माण करा उसका उद्घाटन भी किया था। उनके निधन से यह कार्य प्रभावित हुआ किन्तु अब अखिल भारतीय स्तर पर गठित एक समिति इस कार्य को सम्पन्न कराएगी जिसके पदेन सदस्य हैं—

प्रधान सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा नई दिल्ली, प्रधान एवं मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा प० बंगाल, प्रधान आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली, प्रधान आर्यसमाज करौल बाग नई दिल्ली, मन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा कुमायूं, मन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढवाल। आजीवन सदस्य हैं— श्री कांठेलाल कंसल नैनीताल, इन्द्रवर्मा चौहान रामनगर, देवीदत्त छिम्बल पूर्व विधायक ढिकुली, निर्वाचित सदस्य हैं—श्री राममूर्ति कैला एवं श्री रतनलाल सहदेवा नई दिल्ली। मनोनीत सदस्य हैं—पूर्व एम०पी० श्री सत्येन्द्रचन्द्र गुड़िया श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य, सुश्री विन्दु सहगल।

इसके अतिरिक्त अनेक प्रतिष्ठित एवं विशेष आमंत्रित सदस्य भी हैं। यह समिति हरिद्वार, ऋषिकेश, द्रोणसागर, काशीपुर, बद्रीनाथ, केदारनाथ, टिहरी आदि स्थानों पर दयानन्द कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कराएगी। हरिद्वार एवं काशीपुर में कीर्ति स्तम्भ निर्माण की योजना प्रारम्भ की जा रही है। शिला तेरह फुट ऊंची होगी जो आठ फुट लम्बे व आठ फुट चौड़े चबूतरे पर निर्मित होगी। स्तम्भ पर महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज से सम्बन्धित विवरण के साथ-साथ स्वामी जी के उस स्थान से जुड़े होने के तथ्यों को भी मार्बल के पत्थरों पर अंकित कराएगी। आर्यसमाजों से अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देने का अनुरोध किया जा रहा है। —इन्द्रवर्मा चौहान

महामन्त्री, महर्षि दयानन्द शिला निर्माण समिति

कार्यालय—आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल) उ०प्र०

आर्यसमाज खारवन जिला यमुनानगर का चुनाव

संरक्षक—चौ० रतिराम। प्रधान—डा० सत्यप्रकाश गोयल, उप प्रधान—चौ० दौलतराम, चौ० प्रीतमसिंह आजाद, कोषाध्यक्ष—चौ० स्वर्णलाल नम्बरदार, प्रचारमन्त्री—ओ३म्प्रकाश आर्य, उप-प्रचार मन्त्री—श्री कर्मवीर आर्य, लेखाकार—चौ० श्याम राज आर्य, मन्त्री—श्री राजेश्वर प्रसाद, उपमन्त्री चौ० मदनलाल, पुस्तकाध्यक्ष-श्री सत्यपाल आर्य आपके आशीर्वाद से हम स्वामी दयानन्द जी महाराज के सपनों को पूरा करते रहेंगे। आर्यसमाज के प्रचार में लगे रहेंगे। धन्यवाद राजेश्वर प्रसाद

मन्त्री, आर्यसमाज खारवन, जिला अम्बाला

अथर्ववेद पारायण यज्ञ तथा वेद-प्रचार

स्व० महाशय हरगोविन्द राम आर्य की स्मृति में उनके सुपुत्रों ने ट्रस्ट के तत्वावधान में अथर्ववेद पारायण यज्ञ तथा वेदप्रचार का पुनीत आयोजन किया। उक्त आयोजन नवम्बर 9 से नवम्बर 11, 1990 तक महाशय हरगोविन्दराम आर्य धर्मशाला, रोहतक मार्ग जीन्द में किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सुयोग्य आचार्य श्री देवव्रत एम. ए यज्ञ के ब्रह्मा थे तथा गुरुकुल कालवा (जीन्द) के ब्र० श्री बुद्धदेव एवं ब्र० धर्मदेव मनीषी वेदपाठी थे। सभा के भजनी पं० चिरंजीलाल आर्य की भजनमण्डली भी प्रचारार्थ आमंत्रित थी। नवम्बर 9. 10. 11 के सुबह 7 से 9-30 तक यज्ञ पश्चात् भजन एवं प्रवचन तथा नवम्बर 9. 10 को रात्रि में 8 से 10-30 बजे तक महाशय चिरंजीलाल जी के भजन तथा आचार्य देवव्रत जी का वेदोपदेश होता रहा। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार नवम्बर 11 के सुबह 10 बजे हुई और पश्चात् प्रीतिभोज का आयोजन हुआ जिसमें जीन्द नगर के लगभग 400-500 आर्य नर-नारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुये। स्थानीय एस. डी. एम. डा० रामभक्त लांग्याण एच.सी.एस. भी सपरिवार यज्ञ तथा प्रीतिभोज में शामिल हुए, वे एक धार्मिक रुचि के निष्ठावान् कुशल अधिकारी हैं। स्व० महाशय हरगोविन्द राम आर्य का सारा परिवार अत्यन्त श्रद्धालु एवं ऋषि भक्त है। उल्लेखनीय है कि उनके सुपुत्र श्री जयप्रकाश आर्य, आर्यसमाज जींद शहर के प्रधान हैं। ट्रस्ट की ओर से स्थानीय आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं, आर्य वीर दल जींद ईकाई को दान दिया गया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा और स्थानीय आर्यसमाजों के अपूर्व सहयोग का अनुकरणीय दृश्य उपस्थित करनेवाला था। हमारी शुभकामना है कि स्व० महाशय जी के परिवारजनों में यह धर्मरुचि बनी रहे ताकि नगर निवासी ऐसे पुनीत आर्यजनों से लाभान्वित होते रहें।

—प्रो० ओमकुमार आर्य, सह-संयोजक, वेद प्रचार मण्डल, जिला जीन्द।

वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १९९१

आर्यसमाज सान्ताक्रुज अपने आगामी वार्षिकोत्सव पर जनवरी १९९१ में निम्न दो पुरस्कारों से आर्य विद्वानों को सम्मानित करेगा।

१. वेद वेदांग पुरस्कार

जिन विद्वानों ने जीवन पर्यन्त वेद वेदांगों पर अनुसंधान किया हो एवं ग्रन्थ लिखे हों—उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। जिसकी पुरस्कार राशि २१०००/- होगी।

२. वेदोपदेशक पुरस्कार

वेद वेदांग के अनुसंधानकर्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान् ने जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्त्ता के रूप में सेवा की हो—इस पुरस्कार की राशि ११०००/- होगी।

उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त जिन विद्वानों को पुरस्कृत किया जाएगा उन्हें अभिनन्दन-पत्र, शाल एवं रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जाएगा।

उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ योग्य विद्वानों के प्रस्तावों को आमन्त्रित करती है। जो आर्य बन्धु किसी विद्वान् के नाम उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं वे विद्वानों के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गये ग्रन्थों की सूची सहित विस्तृत पत्र दिनांक ३१-१२-९० तक भेजने की कृपा करें।

जो विद्वान् अपने नाम का स्वयं प्रस्ताव करेंगे वे अयोग्य माने जायेंगे। भवदीय-कैप्टिन देवरत्न आर्य

संयोजक, वेद वेदांग पुरस्कार समिति।

जागो जगाने आये

गफलत की नींद में सोने वालो जागो जगाने आये ।।टेक।।
कहां गया वो ताज कभी जो तुम्हारे सर पे लहराता था।
हमें गुरु मानकर विश्व चरणों में शीश झुकाता था।
भारत की मिट्टी का अपने माथे पे तिलक लगाता था।
सोने की चिड़िया बताता था, ऋषि-मुनियों के गुण गाता था।
वेदों की महिमा सुनाता था।
मिटा हुआ जो गौरव फिर से उसे दिलाने आये ।।१।।
विश्व था ये आर्य सारा बिगाड़कर हिन्दू बनाये गये।
कुछ लालच दे कुछ जबरन, मुसलमान बनाये गये।
जनेऊ चोटी न कटने दी चाहे फांसी पर लटकाये गये।
कुछ जल में गिराये गये, सरे आम कतल कराये गये।
जिन्दा आग में जलाये गये।
पड़ी हुई जो मुर्दा जाति उसे जिलाने आये ।।२।।
देखो अयोध्या में यवन आज क्या-क्या उद्धम मचाते हैं।
शेरों की मांद पर स्यार जबरन कब्जा अजमाना चाहते हैं।
स्वार्थी नेता दुष्टों के आगे कान तलक नहीं हिलाते हैं।
मन्दिर बनवाना रुकवाते हैं, दुष्टों से हाथ मिलाते हैं।
इन सांपों को दूध पिलाते हैं।
तैयार रहो हक पर मिटना सन्देश सुनाने आये ।।३।।
पंजाब, काश्मीर में देखो निश दिन जुल्म ढाया जा।
गोली मारकर निर्दोषों का समस्त परिवार खपाया जा।
विधवा और अनाथों का नहीं दुःख शब्दों में बताया जा।
हिन्दुओं का निशान मिटाया जा, कहीं खालिस्थान बनाया जा।
काश्मीर का भू-भाग दबाया जा।
बचाओ वतन को देशभक्ति का पाठ पढ़ाने आये ।।४।।
नशे विषयों में डूबे जवान तो कौन ये देश बचायेगा।
कोई विदेशी गजनवी आकर हम पर रोब जमायेगा।
धनमाल को लूट यहां से गजनी ग़ौरत पहुंचायेगा।
सरेआम धर्म मिटायेगा, देश गुलाम हो जायेगा।
हर भारती दुःख उठायेगा।
हम प्रहरी बनकर भारत को सतर्क बनाने आये ।।५।।
अपनी संस्कृति को छोड़ विदेशी भेष अपनाते हैं।
अंग्रेजी के गुलाम बने और हिन्दी को ठुकराते हैं।
भारत के बच्चे-बच्चे को अंग्रेजी का विष पिलाते हैं।
अंग्रेजी स्कूल खुलवाते हैं, नहीं गुरुकुल बनवाते हैं।
नहीं संस्कृत को अपनाते हैं।
राष्ट्रभाषा हिन्दी को सम्मान दिलाने आये ।।६।।
सावधान ! सम्भलो ! सब अपने जीवन का सुधार करो।
नशे विषयों को छोड़ दो अब शुद्ध आचार-विचार करो।
बन जाओ सब शुद्ध आर्य सबसे उचित व्यवहार करो।
एक टोली भी तैयार करो, धर्म पर सर उतार धरो।
और वेदों का प्रचार करो।
कहे बलवन्त हम गाने नहीं दिल दर्द सुनाने आये ।।७।।

लें०—बलवन्तसिंह आर्य ठसका (यमुनानगर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि. [illegible] ७४८१२ मुद्रिमवत्र १,९६, ०८, ५३, ०९०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष १८ अंक ३ ७ दिसम्बर, १९९० वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठकों हेतु

विशेष आमन्त्रित सदस्यों की सूची

२५ नवम्बर, १९९० को सभा के चुनाव में सभा प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह ने साधारण सभा द्वारा प्रदत्त अधिकार से निम्नलिखित महानुभावों को अन्तरंग सभा में विशेष आमन्त्रित सदस्य मनोनीत किया है–

१ श्री रघुवीरसिंह आर्यसमाज बाहू अकबरपुर जि० रोहतक
२ श्री बलदेवकृष्ण आर्य मुलतान ट्रेडर्स जी.टी. मार्ग करनाल
३ मा० जसवन्तसिंह आर्य जाटान मोहल्ला बांकी गली करनाल
४ ला० पंजूराम आर्यभवन दिल्ली मार्ग कृष्णपुर सोनीपत
५ श्री सत्यवीरसिंह शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज काठमण्डी आर्यनगर सोनीपत
६ श्री कन्हैयालाल महता ई-४१ नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद
७ श्री नेकीराम आर्य ग्राम विसोहा तहसील कोसली जि० रेवाड़ी
८ श्री भरतसिंह शास्त्री अधिष्ठाता आर्यकन्या गुरुकुल पंचगांव डा० गोपी जिला भिवानी
९ श्री भरतसिंह सरपंच ग्राम दूबलधन ज़ि० रोहतक
१० श्री कपिलदेव शास्त्री सांसद आचार्यनगर गोहाना जि० रोहतक
११ श्री सुजानसिंह आर्य पूर्व डी०एस०पी० आर्यसमाज कोसली जि० रेवाड़ी
१२ महाशय दरयावसिंह आर्यसमाज रोहणा जि० सोनीपत
१३ श्री रिसालसिंह एडवोकेट आर्यसमाज झज्जर जि० रोहतक
१४ श्री वीरसिंह आर्य ग्राम चबूतरों जि० यमुनानगर
१५ मा० चन्द्रभानु आर्य ग्राम जहाजगढ़ जि० रोहतक
१६ श्री भगवानसिंह आर्य ग्राम नयाबांस (सांपला) जि० रोहतक
१७ प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री छोटूराम किसान कालेज जीन्द शहर
१८ वैद्य भरतसिंह आर्य एजेन्सी गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी गोहाना मार्ग रोहतक
१९ श्री राममेहर एडवोकेट सोनीपत मार्ग रोहतक
२० पं० सत्यनारायण आर्य काठमण्डी चरखी दादरी जि० भिवानी
२१ ठा० प्रतापसिंह आर्य पूर्व सरपंच ग्राम बराणी जि० रोहतक
२२ श्री प्रियव्रत जी कोठी नं० जे/१/१६० राजौरी गार्डन नई दिल्ली (खेड़ी आसरा रोहतक)
२३ मा० निहालसिंह आर्य म०नं० बी ११ ओम् भवन यादव पार्क नांगलोई दिल्ली (दिसावर खेड़ी रोहतक)
२४ डा० परमानन्द अम्बा हस्पताल नीलोखेड़ी जि० करनाल
२५ श्री सुखवीरसिंह आर्य मकान नं० २२२७ सैक्टर ३ बल्लभगढ़ जि० फरीदाबाद
२६ श्री भूपेन्द्रसिंह मलिक एडवोकेट शान्ति निवास आर्यनगर रोहतक
२७ श्री रणवीरसिंह शास्त्री ईश्वर कालोनी बवाना-दिल्ली (आसन जि० रोहतक
२८ श्री राजकुमार आर्य काटन मिल रेलवे मार्ग नरवाना जि० जींद
२९ श्री लालचन्द्र चौधरी ट्रांसपोर्टर निकट आटा चक्की खजान माडल टाउन रोहतक
३० प्रिंसिपल मंगलदेव लाम्बा छोटूराम कसान कालेज जीन्द शहर
३१ श्री मनफूलसिंह आर्य निकट पुरानी कचहरी जि० सिरसा
३२ मा० रामप्रकाश आर्य ग्राम लाढौत जि० रोहतक
३३ वैद्य बलवन्तसिंह आर्यसमाज बलियाना जि० रोहतक
३४ श्री महावीरसिंह शास्त्री हैफेड मार्ग प्रेमनगर रोहतक
३५ मा० दीपचन्द आर्य ग्राम कासनी जि० रोहतक
३६ आचार्य बलदेव आर्ष गुरुकुल कालवा जि० जीन्द
३७ श्री रामगोपाल आर्य एडवोकेट गोशाला मार्ग पानीपत
३८ डा० योगानन्द शास्त्री सी-२४ गीताञ्जलि इन्कलेव नई दिल्ली (भदानी जि० रोहतक)
३९ स्वामी योगानन्द द्वारा आर्ष गुरुकुल कालवा जि० जींद
४० श्री धनपतराय आर्य जवाहर नगर पलवल जि० फरीदाबाद
४१ डा० सुदर्शनदेव आचार्य हरिसिंहकालोनी रोहतक
४२ रिसलदार इन्द्रसिंह आर्य घोड़वाले आर्यनगर झज्जर जि० रोहतक
४३ मा० रामस्वरूप आर्यसमाज नाहरी जिला सोनीपत
४४ श्री होशियारसिंह आर्य विश्वहितैषी आर्यसमाज नाहरी जि० सोनीपत
४५ श्री सतीश मित्तल अध्यक्ष हरयाणा खादी बोर्ड १६०/७ पंचकूला जि० अम्बाला
४६ श्री ऋषिपाल आचार्य आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी जि० भिवानी
४७ श्री हरकिशनसिंह ३१४/२१ जगदीश कालोनी रोहतक
४८ श्री धर्मचन्द सेवानिवृत्त सहायक निदेशक सहकारी म०नं० २०/८१९ लालचन्द कालोनी रोहतक
४९ प्रिंसिपल गुगनसिंह म०नं० ४४५/२० शिवाजी कालोनी रोहतक
५० श्री विद्याभूषण शास्त्री म० नं० १/६ शिवाजी नगर गुड़गांव
५१ मा० रामनिरंजन आर्यसमाज नारायणगढ़ जि० अम्बाला
५२ श्री धर्मचन्द शास्त्री ६१ एल माडल टाउन रोहतक—(पाथरी जिला पानीपत)
५३ डा० जयकिशन आर्य हस्पताल लाडवा जि० कुरुक्षेत्र
५४ श्री खजानसिंह आर्य ग्राम जाजनपुर जि० कैथल
५५ श्री खेमलाल राठी एडवोकेट ए/९/३२ बसन्त मार्ग नई दिल्ली (राजलूगढी सोनीपत)
५६ श्री क्षेमचन्द आर्यसमाज कालका जि० अम्बाला
५७ श्री सुरेशकुमार बढाणा एडवोकेट मुकेश कालोनी बल्लभगढ़
५८ श्री राजेन्द्रसिंह बिसला एडवोकेट ४५५ बी० सैक्टर १५ ए फरीदाबाद
५९ स्वामी रत्नदेव संचालक आर्य कन्या गुरुकुल खरल जि० जींद
६० श्री शम्भुदयाल आर्य एम.आर. प्रिंटिंग प्रेस बहादुरगढ़ मण्डी जि० रोहतक
६१ ठा० महावीरसिंह आर्य ग्राम बराणी जि० रोहतक
६२ हवलदार किशनचन्द ग्राम अमरोली तह० पलवल जि० फरीदाबाद

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, यमुनानगर का कार्यवृत्तान्त

—इन्द्रजीत 'देव', उपमन्त्री—

संयुक्त पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान, हिंदी रक्षा आंदोलन के संचालक व यतिवर्य स्व० स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने देश विभाजन के पश्चात् यमुनानगर में एक साधना-स्थली स्थापित की जिसे महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय तथा वैदिक साधना आश्रम, शादीपुर, यमुनानगर नाम से अभिहित किया गया। बहुत थोड़े साधनों व बड़े स्वप्नों के साथ आरम्भ हुई यह संस्था अनेक उतार-चढ़ाव का सामना करती रही है। पूज्य स्वामी जी ने आरम्भ में यहां उपदेशक विद्यालय ही चलाया था। अनेक ख्यातिप्राप्त उपदेशक इसी संस्था ने तैयार किए जो आज भी यत्र-तत्र वैदिक-सिद्धांतों की अलख जगा रहे हैं। आर्यसमाज इन से पुष्पित-पल्लवित है।

कालान्तर से यहां कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की संस्कृत परीक्षाओं के लिए स्नातक तैयार करने के लिए पढ़ाई की व्यवस्था की गई पर गत वर्ष प्रबन्ध समिति ने यहां महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाई आरम्भ की है। यह व्यवस्था आर्ष पाठ विधि के अधीन है व इसके अन्तर्गत संस्कृत के अतिरिक्त हिंदी; इतिहास, भूगोल, गणित, वेद व अंग्रेजी आदि विषय भी पढ़ाए जाने लगे हैं। विगत वर्ष महाविद्यालय के ३१ विद्यार्थियों ने विभिन्न परीक्षाएं दीं जिनमें से २१ विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण हुए। विवरण निम्नलिखित हैं :—

प्रथमा=१२/१२, पूर्वमध्यमा (प्रथम वर्ष)=११/१२, पूर्व मध्यमा (द्वितीय वर्ष)=२/२, उत्तर मध्यमा (प्र० वर्ष)=२/३, शास्त्री (प्र० वर्ष)=१/२

आचार्य वागीश्वर जी एवं उनके सहयोगी अध्यापकों व प्रबन्ध समिति के प्रति स्थानीय आर्य नर-नारी उत्साह व प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं। यहां यह स्मरणीय है कि पढ़ाई के स्तर व आश्रम के वातावरण से प्रभावित होकर इस बार चालू वर्ष में अनेक विद्यार्थी आश्रम में प्रवेश हेतु आए परन्तु सीमित साधनों के कारण सभी को प्रवेश नहीं दिया जा सका व लगभग २५ विद्यार्थियों को निराश होकर वापस लौटना पडा। इस समय आश्रम में ६० विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

महाविद्यालय में दोनों समय संध्या व यज्ञ आदि का कार्यक्रम यज्ञशाला में सामूहिक रूप में होता है तथा प्रत्येक शनिवार को दोपहर बाद वाक्वर्धिनी सभा का आयोजन होता है जिसमें विद्यार्थियों को भाषण कला का अभ्यास कराया जाता है। विद्यालय के आचार्य वागीश्वर जी के अतिरिक्त कुछ विद्यार्थी भी यमुनानगर व जगाधरी की आर्यसमाजों में प्रचारार्थ जाते रहते हैं।

स्वामी आत्मानन्द औषधालय

इस वर्ष आश्रम में एक आयुर्वेदिक औषधालय भी स्थापित किया गया जिसका नाम आश्रम के संस्थापक के नाम पर स्वामी आत्मानन्द आयुर्वेदिक औषधालय रखा गया है। यह औषधालय एक दानी श्री वीरेंद्र आर्य के सात्विक दान से चलाया गया है व इसका सञ्चालन श्री स्वामी सदानन्द जी कर रहे हैं। औषधालय में उपचार निःशुल्क होता है। केवल प्रति रोगी एक रु० पर्ची बनाने पर लिया जाता है। औषधालय में प्रतिदिन औसतन २५ रोगी उपचारार्थ आते हैं। सात वर्षों के सिरदर्द के एक रोगी को केवल एक सप्ताह में, पुराने प्रमेह के एक रोगी को चार दिनों में व संग्रहणी के ३ रोगियों को पूर्ण स्वस्थता प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त नपुंसकता व क्षय जैसे रोगों के दो रोगी भी तीन मास में पर्याप्त स्वस्थ हुए हैं। सामान्य अवस्था के उपचारों की भी व्यवस्था है।

स्वामी आत्मानन्द गोशाला

दिनांक ११-१२-८८ को आश्रम के प्रांगण में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन उप-मुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास ने एक गोशाला के निर्माणार्थ सरकारी कोष से २१,००० रुपए अनुदान देने की घोषणा की थी व उनके करों से ही प्रस्तावित गोशाला का शिलान्यास भी सम्पन्न कराया गया था। उक्त राशि प्राप्त होने पर आश्रम में ही स्वामी आत्मानन्द गौशाला की स्थापना विगत वर्ष में की गई है जो अभी भी निर्माणाधीन है। यह गोशाला ३०० फुट लम्बी व ८५ फुट चौड़ी भूमि के क्षेत्र में स्थापित की गई है तथा ७ फुट ऊंची चार दीवारी भी बनाई गई है। गोशाला में १०० फुट लम्बी व १७ फुट चौड़ी टीन की एक शैड बनाई गई है। इस समय गोशाला में दो बैल व आठ गाय उपलब्ध हैं। वर्णनीय वर्ष में लगभग दो लाख रुपए दान स्वरूप जनता से प्राप्त करके उपरोक्त कार्य किया जा सका है। एक नलकूप लगवाना, चारे की अधिक अच्छी व्यवस्था करना, अधिक संख्या में व अधिक स्वस्थ गायों की व्यवस्था करना हमारी भविष्य की योजना में सम्मिलित है।

विविध

(१) वर्णनीय वर्ष में आश्रम में तीन नए बड़े कमरे तैयार किये गए जिन पर लगभग एक लाख रुपए का व्यय हो चुका है। ये कमरे भी दानी महानुभावों के सहयोग से तैयार हुए हैं और इनमें अभी पलस्तर, बिजली व सफेदी की व्यवस्था कराना शेष है। तभी ये कमरे छात्रों के निवास के योग्य हो सकेंगे। दानी सज्जनों के सात्विक दान की प्रतीक्षा में शेष कार्य रुका पड़ा है। तीनों कमरों का कुल आकार ८५'×२७' है।

(२) शादीपुर गांव के सामने मुख्य सड़क पर चार बड़ी दुकानें भी इस वर्ष बनाई गई हैं। ये उपयुक्त किराएदारों की प्रतीक्षा में इस समय बिल्कुल तैयार हैं।

(३) वर्णनीय वर्ष में आश्रम में दो नए नलकूप स्थापित किए गए हैं। एक नलकूप पहले था। इस प्रकार अब ३ नलकूप आश्रम में हो गए हैं जिनसे अधिक अच्छी सिचाई फसलों की होने लगी है।

(४) आश्रम मे ११ दिसम्बर, ८८ को आश्रम के संस्थापक श्री स्वामी आत्मानन्द जी स्मृति समारोह धूमधाम से मनाया गया जिसकी अध्यक्षता ससद सदस्य श्री गुरदयालसिंह ने की थी व इसमें भाजपा विधायक रत्नलाल कटारिया, विधायक श्रीमती कमला वर्मा, भजनोपदेशक पं० रवेलसिह, प० चिरजीलाल, श्री हरलाल आर्य, श्री शेरसिंह आदि ने शोभा बढ़ाई थी। श्री पूज्य आचार्य वागीश्वर जी ने इस अवसर पर एक सारगर्भित उपदेश दिया। समारोह में यमुनानगर, जगाधरी व निकटस्थ ग्रामों के अनेक नर-नारियों ने सोत्साह भाग लिया।

(५) दिनांक ५ अगस्त, ९० को आश्रम में ही नवीन ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार श्री वागीश्वर जी के आचार्यत्व में धमधाम से सम्पन्न कराया गया। उपनयन संस्कार व श्रावणी पर्व भी इस अवसर पर आयोजित किये गये। आयोजन में अनेक ब्रह्मचारियों के संरक्षक व माता-पिता व स्थानीय आर्यजन भी सम्मिलित हुए व स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती, महाशय हरलाल जी, पं० शेरसिंह, श्री चमनलाल सेठ, श्री जीवन प्रकाश "जीवन" व इन्द्रजीत 'देव' आदि विद्वानों व संन्यासियों ने भी सम्बोधित किया था।

उक्त दोनों समारोहों में विशाल ऋषि लङ्गर की भी व्यवस्था की गई थी।

(६) आगामी योजना में आश्रम के बाहर मुख्य सड़क पर ५०० फुट लम्बी व ७ फुट ऊंची चारदीवारी बनाना व एक प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना करना भी है।

प्रबन्ध समिति के अधिकारियों के नाम

श्री जयपालसिंह प्रधान।
श्री मदनलाल वासुदेव, वरिष्ठ उपप्रधान।
श्री गेन्दाराम, उपप्रधान।
श्री रवीन्द्र आर्य, मन्त्री।
श्री स्वामी सदानन्द जी पुस्तकाध्यक्ष।
श्री मनोहरलाल दीवान, कोषाध्यक्ष।
श्री इन्द्रजीत 'देव' उपमन्त्री।

सतलुज यमुना लिंक नहर भारत सरकार बनाये

(प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी)

अक्तूबर १९६६ में संसद के दोनों सदनों में पंजाब पुनर्गठन कानून पास किया गया। उस कानून में यह प्रावधान किया गया था कि पंजाब और हरयाणा दोनों राज्य आपस में सलाह मशवरे से रावी-ब्यास के पानी का फैसला कर लेवें। यदि दोनों का इस मुद्दे पर फैसला न हो पावे तो कोई भी राज्य जिसको यत्न करने पर भी अपना अधिकार न मिले वह दो वर्ष बीतने के पश्चात् भारत सरकार से इस मुद्दे का फैसला करने के लिए प्रार्थना कर सकेगा और ऐसी प्रार्थना मिलने पर भारत सरकार रावी ब्यास के पानी के बटवारे का फैसला करेगी।

१९६८ में जब हरयाणा सरकार ने समझ लिया कि पंजाब सरकार फैसला करने में कोई रुचि नहीं दिखा रही, तत्कालीन हरयाणा सरकार ने अपना दावा भारत सरकार के पास कर दिया। पंजाब के पुनर्गठन से पूर्व १९६५ और १९६६ में हरयाणा विकास समिति और तत्कालीन चीफ इन्जीनियर श्री वाही की अध्यक्षता में गठित भूमि उपयोग समिति (Land use Commitee) क्रमश: अपनी सिफारिशें दे चुकी थी। हरयाणा विकास समिति (जिसका मैं भी एक सदस्य था और मैंने गहराई से पानी के न्यायपूर्ण बटवारे को लेकर उसका अध्ययन किया था) का स्पष्ट मत था कि यदि हिन्दी भाषी तथा पंजाबी भाषी क्षेत्रों (जो बाद में हरयाणा और पंजाब बन गये) की कृषि योग्य भूमियों के अनुपात से कुल उपलब्ध पानी का बटवारा करें तो रावी-ब्यास के ७० लाख एकड़ फुट पानी का ९०% (६३ लाख एकड़ फुट) पानी हरयाणा को मिलना चाहिए। इन्जीनियरों का मानना था कि यदि वैज्ञानिक ढंग से पानी का बटवारा करना हो तो यह अध्ययन करना पड़ेगा कि किस क्षेत्र में कितनी भूमि पर अलग-अलग फसलों की खेती की जा रही है। क्योंकि सब फसलों के लिए अलग-अलग मात्रा में पानी चाहियें, इसलिए केवल खेती के लिए उपलब्ध भूमि ही मापदण्ड नहीं होना चाहिए मापदण्ड होना चाहिए विभिन्न फसलों की खेती का रकबा। वाही समिति ने यह अध्ययन किया और उसी अध्ययन के आधार पर उसने सिफारिश की कि हरयाणा को ४६ लाख २४ हजार एकड़ फुट पानी मिले और २३ लाख ७६ हजार एकड फुट पानी पंजाब को मिले।

१९६८ में हरयाणा का दावा पेश होने पर भारत सरकार के सिंचाई मन्त्री डा० के०एल० राव ने पंजाब की पूरी तसल्ली करने के लिए दो समितियां केन्द्रीय सिंचाई बोर्ड के इन्जीनियरों की बनाई, परन्तु एक ने ४० लाख एकड फुट से अधिक और दूसरी ने ३८ लाख एकड़ फुट से कुछ अधिक हरयाणा को देने की सिफारिश की। परन्तु पंजाब के दबाव में आकर और ७ वर्ष से अधिक लटके हुए पानी के मामले को हल करने के लिए मार्च १९७६ में तत्कालीन सिंचाई मन्त्री बाबू जगजीवन राम जी ने भारत सरकार का फैसला सुना दिया। उस फैसले के अनुसार पंजाब और हरयाणा को बराबर-बराबर पानी पेंतीस (३५)-पेंतीस (३५) लाख एकड़ फुट पानी मिलना तय किया, परन्तु साथ-साथ यह भी लिख दिया कि हरयाणा में अभी भी काफी जमीन सूखी पड़ी है इसलिए आगे चलकर नदियों में जो अतिरिक्त पानी उपलब्ध होगा वह सारा हरयाणा को मिलेगा।

मैंने लोकसभा में इस फैसले का विरोध किया, क्योंकि यह सभी सिफारिशों को ताक पर रखकर पंजाब के तुष्टीकरण के लिए किया गया था। बाबू जगजीवन राम जी ने कहा कि तुम इस विरोध पर अड़े रहे तो पंजाबवाले तो मामले को टालते आरहे है, उनको फिर से टालने का अवसर मिलेगा, क्योंकि पानी तो एक दो साल के बाद बांध बनने पर उपलब्ध हो जायेगा, इसलिए इस दो साल के भीतर ही हरयाणा को अपना पानी लेने के लिए सतलुज यमुना लिंक नहर बनाने के काम में लग जाना चाहिए। यह बात मेरे मन को लगी और मैं चुप होगया।

हरयाणा सरकार ने १९७६ में ही पंजाब सरकार को लिंक नहर बनाने के लिए जमीन अधिग्रहण का काम आरम्भ करने के लिए एक करोड़ रुपये की राशि दे दी। ज्ञानी जैलसिंह ने (जो उस समय पंजाब के मुख्यमन्त्री थे) रुपये तो ले लिये परन्तु कोई कार्यवाही नहीं की। १९७८ में वही काम स० प्रकाशसिंह बादल (जो उस समय पंजाब के मुख्यमन्त्री थे) ने किया, चौ० देवीलाल जी से एक करोड़ रुपया और ले लिया, परन्तु वायदा करने के बाद भी वे टस से मस नहीं हुए। उस समय यदि नहर का काम शुरू होता और दो वर्ष में बनाई होती तो १०० करोड़ से भी कम व्यय होता। पंजाब ने फिर हरयाणा को पानी देने से आनाकानी शुरू कर दी और भारत सरकार पर १९७६ का फैसला बदलने पर जोर डालना शुरू कर दिया। सितम्बर १९८१ में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पंजाब, हरयाणा और राजस्थान के मुख्यमन्त्रियों की बैठक की। उस बैठक में निर्णय लिया गया कि हरयाणा को केवल ३५ लाख एकड़ फुट पानी मिलेगा और नदियों का अतिरिक्त पानी पंजाब को मिलेगा, इसलिए पंजाब को ४२ लाख एकड़ फुट पानी मिलेगा। तत्कालीन मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल ने इस अन्यायपूर्ण फैसले को मान लिया, जब पूछा गया तो कहा कि "मैंने तो लिंक नहर के निर्माण का काम जल्दी शुरू करवाने के लिए मजबूरी में किया था।" राजस्थान और हरयाणा ने पंजाब पुनर्गठन कानून के इस प्रावधान की पंजाब द्वारा की गई अवमानना पर भी मुहर लगा दी कि रोपड़ और अन्य दो हैडवर्क्स (जहां से पानी का बटवारा होता है) का नियन्त्रण भाखड़ा ब्यास प्रबन्धक बोर्ड के पास रहेगा। पंजाब ने वह नियन्त्रण कानून का उल्लंघन करते हुए अपने पास ही रखा हुआ है, हरयाणा और राजस्थान के मुख्यमन्त्रियों ने इस फैसले को मानकर इन दोनों राज्यों के किसानों को पंजाब के रहम पर छोड़ दिया।

अप्रेल १९८२ में सतलुज यमुना लिंक नहर का काम तो आरम्भ हो गया, परन्तु जिस दिन श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नहर की खुदाई का श्रीगणेश किया, उसी दिन से अकाली आन्दोलन का भी श्रीगणेश होगया। नहर का काम तो चल पडा, परन्तु धीमी गति से, उसमें भूमि अधिग्रहण का तथा अन्य प्रकार के मामले छेड़कर पंजाब के लोग और पंजाब की सरकार गतिरोध पैदा करते रहे। जुलाई १९८५ में राजीव लोंगोवाल समझौता हुआ। उस समझौते के अनुसार पंजाब पर जिम्मेदारी डाली गई कि वह लिंक नहर का काम १५ अगस्त १९८६ तक पूरा कर देगी। पंजाब में चुनाव कराये गये और जिनके अकाली दल की ओर से समझौते पर हस्ताक्षर किये गये थे उनकी सरकार बन गई। लिंक नगहर का काम कुछ आगे बढ़ा परन्तु बहुत-से व्यवधानों के साथ, उनमें से कुछ व्यवधान उस सरकार ने भी खड़े किए। साढ़े आठ वर्षों से अधिक बीतने पर भी लिंक नहर के निर्माण का जो काम १९८२ अप्रेल में शुरु किया था वह अभी अधूरा है। इस नहर निर्माण के दौरान पंजाब वालों ने नहर काटी, बारी-बारी से सभी राजनैतिक दलों ने खुदी हुई नहर को मिट्टी से भरने की धमकी दी, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार से आये नहर पर काम करनेवाले मजदूरों की हत्यायें की गईं, और अन्त में इन्जीनियरों की भी हत्या करदी गई। अब ६ महीने से भी अधिक होने लगे हैं, काम ठप्प पड़ा है। अप्रेल १९८७ में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने इस नहर के निर्माण का सारा खर्च भारत सरकार की ओर से देने की घोषणा की। उस समय अनुमान था कि ४०० करोड़ रुपया व्यय आयेगा, अब तीन वर्ष बाद उस पर १५० करोड़ से भी अधिक खर्चा बढ गया है और बनने तक ६०० करोड़ तक जा सकता है। १९७७ में पंजाब के अनुभवी और प्रतिभावान् चीफ इन्जीनियर श्री एस० एन० कपूर ने मुझे बताया कि दो वर्ष की अवधि में वे जमीन के नीचे बड़े-बड़े ७ या ८ नलों के द्वारा मात्र ४५ करोड़ रुपये से ३५ लाख एकड़ फुट पानी हरयाणा की नहरों में डाल सकते हैं। उनकी योजना के अनुसार किसानों की जमीन दो वर्ष के लिए लेकर फिर उनको हमवार करके वापिस दी जा सकती थी और जमीन के नीचे से पानी नलों द्वारा ले जाने से बीच में पंजाब की सीमा में नहर काटे जाने का भी खतरा नहीं रहता। परन्तु श्री कपूर तो अवकाश प्राप्त अधिकारी थे, सिंचाई के चीफ इन्जीनियरों ने उनकी बात आई गई करदी।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

राष्ट्रीय संगठन और धार्मिक उन्माद

—महावीर 'नीर' विद्यालंकार, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार—

जब हम अपने प्यारे भारत-राष्ट्र के इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो उसकी संस्कृति और सभ्यता पर भी हमारी दृष्टि अनायास ही चली जाती है। प्राचीन काल से ही यहां का निवासी धर्म-भावना से ओत-प्रोत रहा है। नैतिक मूल्यों को जीवन का अंग बनाकर कुछ प्रतीकों को साथ लेकर चला है। इसलिए गंगा, गौ गायत्री उसके व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन के आधार रहे हैं। राम और कृष्ण जैसे महापुरुष उसके लिए महान आदर्शों और जगत्-व्यवहार के प्रतीक रहे हैं। वास्तव में यदि इस राष्ट्र से राम और कृष्ण के जीवन दर्शन को समाप्त करदिया जाए तो यह राष्ट्र काल के गर्त में समा जाएगा। इसलिए उनका जीवन-दर्शन हमारी सांस्कृतिक विरासत ही नहीं अपितु परम्परागत राष्ट्रीय चेतना को अभिभूत करनेवाली धरोहर भी है। इतिहास के स्वर्णपन्नों पर अंकित वृहत्तर भारत के स्याम, मलाया, जावा, सुमात्रा, जापान कम्बोडिया आदि देशों में स्थित विशाल अंकोरवाट और अंकोर थोम जैसे मन्दिर आज भी राम और कृष्ण की कथाओं के ज्वलन्त प्रतीक हैं। गांधी जी का जीवन-दर्शन रामराज्य स्थापना की जीती-जागती तस्वीर है।

भारत का प्राचीन ढांचा धर्ममूलक था। राजा और प्रजा धार्मिक प्रवृत्तियों में लीन रहते थे। वे राज्याधिकारी प्रजा को पुत्रवत् प्रेम करते थे, उन्हें 'वोट' प्राप्त करने का खिलौना नहीं समझते थे। जनता की भावनाओं से खिलवाड़ नहीं करते थे। सिंहासन उनके चरणों में लौटता था, वे सिंहासन के पीछे नहीं दौड़ते थे। धर्म के लक्षणों को वे अपने जीवन की आचार संहिता समझते थे। ईश्वरीय शक्ति को मानते हुए समस्त प्राणियों का पालन करना राजा और अधिकारीगण अपना कर्त्तव्य समझते थे, किन्तु मुस्लिम और आंग्ल प्रभाव में आने के पश्चात् इस देश का ढांचा ही बदल गया है। यह आर्यावर्त देश कभी हिंदुस्तान, कभी इण्डिया, कभी भारत के नाम से पुकारा जाता है। आज आजादी के बाद के भारत को हम बहुसंख्या-वादी होने पर भी हिंदुओं का हिंदुस्तान नहीं कह सकते। जबकि अन्य देश इसे हिंदुस्तान ही कहते हैं और इस हिंदुस्तान की अस्मिता, इसकी पहचान हजारों वर्ष की परम्पराओं से जुड़ी है। केवल स्वतंत्रता पश्चात् के ४३ वर्ष से नहीं। अपने अतीत को भूल जाना उससे सीख न लेना—राष्ट्र के वर्तमान और भविष्य को अन्धकार में धकेल देने के समान है।

आज इस राष्ट्र में विभिन्न मतों, सम्प्रदायों और फिरकों को मानने वाले, विभिन्न जातियों के लोग निवास करते हैं। इसलिए संविधान में इसे 'धर्म-सापेक्ष' न मानकर 'धर्म-निरपेक्ष' माना है। यदि हम इस बात को यों कह दें कि राष्ट्रीय स्तर पर हमारा कोई धर्म नहीं है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं होगा। किंतु दूसरी ओर राष्ट्र के आवरण में लिपटी प्रजा विविध धार्मिक भावनाओं को व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व जातिगत आधार बनाए बैठी है। इसलिए आए दिन धार्मिक विवाद, राष्ट्रीय विवाद बनकर हमारे मानस को झिंझोड़ते रहते हैं और जब राजनीतिनिपुण नेताओं से ये प्रभावित होते हैं तो दूसरा ही गुल खिला देते हैं इसलिए जब हम सांप्रदायिक सद्भाव की बात करते है तो हमें धार्मिक कट्टरपने के पिशाच को नजरन्दाज नहीं करना चाहिए। देखा जाए तो धर्म का सीधा सम्बन्ध एक ईश्वर, खुदा या गॉड की प्रार्थना या इबादत से है और है जीवन में नैतिक मूल्यों के आचरण से। इबादत कहीं करलो, कुछ फर्क नहीं पड़ता, वास्तव में झगड़ा उसकी इबादत या प्रार्थना करने अथवा न करने का नहीं है अपितु इसके मूल में दूसरे ही कारण हैं जो भाई को भाई से, मानव को मानव से अलग करते हैं। इसलिए हमारी यह मान्यता ही नहीं अपितु दृढ विश्वास भी है कि यदि कोई सरकार इस राष्ट्र को जबरदस्ती धर्मनिरपेक्ष बनाना चाहे तो यह कभी नहीं बन सकता—यह तो सहज भाव से भारतीय जनता के आपस के सौहार्दपूर्ण व्यवहार तथा संत-फकीरों की शिक्षा तथा आपस की कट्टता को छोड़कर समझदारी से ही सम्भव है तथा इसमें समान मातृभाषा, समान संस्कृति और समान मातृभूमि के भाव का होना परम आवश्यक है। हमें इसी ओर सच्चे दिल से प्रयास भी करना चाहिए।

स्पष्ट रूप से देखा जाए तो वर्तमान भारत के संगठन में धार्मिक उन्माद सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए समस्त भारतवासियों को इसका हल खोजना ही होगा। याद आजाते हैं प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रेंकलिन के ये शब्द कि—"यदि मानव धर्म की उपस्थिति में इतने दुष्ट हैं तो धर्म की अनुपस्थिति में उनकी क्या दशा होगी।" भारत का ही नहीं अपितु संसार का इतिहास भी हमें पुकार-पुकार कर कह रहा है कि धर्म के ढकोसलेबाजों और धार्मिक उन्मादियों ने अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए क्या नहीं किया। एक खुदा या ईश्वर का बन्दा होने पर भी इन्सान धर्म की दीवारों में बंदकर लड़ता और झगड़ता तो रहा है तथा अपने धार्मिक विवेक को खोकर धर्मान्धता सडान्ध से मानव इतिहास को कलंकित करता रहा है। यदि आप जानना ही चाहते हैं तो जाकर पूछो उन यूरोपियनों से जिनके रक्त से रंजित इतिहास के पन्ने आज भी धर्मान्धता की गवाही दे रहे हैं। फ्रांसिस प्रथम ने १५४५ ई० में अपनी मृत्यु से पूर्व आल्पस पर्वतमाला के तीन हजार निरीह कृषकों के कत्ले आम की आज्ञा देकर शांति प्राप्त की। उन कृषकों का एकमात्र अपराध यह था कि वे ईसाई मत के मूल सिद्धांतों में विश्वास रखते हुए भी पोप तथा पादरियों की प्रभुता नहीं मानते थे। अतीत में भारत में भी वेदवाणी को भूलकर लोग धार्मिक पाखण्डों में इतने उन्मत्त हुए कि मन्त्र सुन लेने पर कान में राग या सीसा डालकर और मानव को अस्पृश्य समझकर पूजाघरों में पूजा न करने देने को ही धर्म का बहुत बड़ा काम समझते थे। मुस्लिम आक्रान्ताओं को तो एक बड़ी सेना का रक्तरंजित इतिहास ही यहां अंकित है। इन धार्मिक उन्मादियों और लुटेरों ने भारत की तमाम सांस्कृतिक विरासत को ही उलटने की कोशिश की। आज भी अनेक राष्ट्र इन धार्मिक कठमुल्लाओं से तंग हैं। अभी पिछले दिनों चीन और रूस में घटी मुस्लिम अलगाव की कुछ घटनाएं इसकी साक्षी हैं। इसलिए वहां की सरकार ने लोगों के लिए कुछ नियम घोषित किए हैं। जैसे प्रत्येक मुसलमान को अपने नाम के पीछे 'माओ' लगाना पड़ेगा तथा पूजाघरों आदि के भी कुछ नियम बनाये हैं। खुमैनी कठमुल्लावाद से तो सारा विश्व ही परिचित है। धार्मिक ढकोसलेबाजी और धर्मान्धता के घिनौने रूप को यदि देखना है तो याद करो १९४७ का वह दुर्दिन जब लाहौर, दिल्ली, पंजाब और दक्षिण की गलियों में खून की होली खेली गयी। धर्म के नैतिक मूल्यों को भूलकर उस दिन मानव सचमुच दानव बन गया। कितनी मां-बहिनों के सतीत्व लुटे, कितने भाई-बहिनों से विलग हो गए। कितने स्तनपान करते बच्चे अपनी मांओं से छीन लिए गए, कितनी तरुणियां विधवाएं बन गयी, कितने घर उजड़ गये, जिनके आंसू पोंछनेवाला भी कोई न रहा। वास्तव में धार्मिक उन्माद की परिणति विनाश में ही होती है। यह उन्माद मानव जाति को गहरे गर्त में डुबाकर मार डालता है। यह आज भी उग्र रूप में व्याप्त है। इसलिए इसका उपचार आवश्यक है। नहीं तो बड़े-बड़े बलिदानों से निर्मित भारत का यह मन्दिर ध्वस्त हो जाएगा।

सच है कि आज से ४३ वर्ष पूर्व हम लम्बे-लम्बे स्वप्न संजोया करते थे। कल्पना के मनचाहे चित्र खींचा करते थे। जेल की सींकचों में बन्द रहकर फांसी का फन्दा चूमकर भी चातक की भांति स्वातन्त्र्य सुधारस का पान करने की आशा लगाया करते थे। समय पलटा, गुलामी की निशा का अन्त हुआ, स्वप्न फूले, आकांक्षाएं फलीं, कल्पनाएं साकार हो उठीं। आजादी का मंगल प्रभात झूमता हुआ आ पहुँचा। आज वह ४३ वर्ष पुराना हो चुका है। किन्तु आज़ादी के इस पावन काल में भी भारत का मानव जहां वैज्ञानिक चकाचौंध से भौतिक साधनों का अम्बार लगा रहा है, वहीं वह भूखा है, नंगा है,

असहाय है, महंगाई, बेरोजगारी, धोखाधड़ी व फिरकापरस्ती में अकड़ा है। धर्म के जंजाल में फंसकर आपसी वैर-वैमनस्य में जकड़ा शंकित व भयभीत है। कश्मीर से कन्याकुमारी और राजस्थान से बंगाल की खाड़ी तक में फैले इस देश में हिंदू, मुसलमान, पारसी, (सिख, जैन, हिंदुओं से अलग नहीं) आदि सभी जातियों व संप्रदायों को माननेवाले लोग निवास करते हैं। सबके अपने-अपने विशाल मन्दिर हैं, गुम्बदाकार मस्जिदें हैं, क्रास के चिन्ह से अंकित गिरजाघर है, सत् श्री अकाल के उद्घोष से अंकित गुरुद्वारे हैं। यहां सबके अपने-अपने मजहब हैं, फिरके हैं। रहन-सहन व खान-पान के ढंग हैं, ऐसे में क्या यह आशा की जा सकती है कि राष्ट्र के संगठन में धर्म (जो विविध मतमतान्तरों में बंटा है) साधक होगा। ऋषि दयानन्द ने कहा था—"भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।

वास्तव में जितने राजनैतिक दल हैं, वे परस्पर पक्षपातपूर्ण होने के कारण स्वयं सम्प्रदाय हैं, इनसे देश में राष्ट्रीयता का अभाव होकर अपने दलों के मतवाद की वृद्धि होती है। बहुत मतवाले होने से बहुत सा दुःख विरोध बढ़ना स्वाभाविक है। इसीलिए स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि जब तक एकमत, एक हानि-लाभ, एक सुख-दुःख परस्पर न माने तब तक उन्नति होना कठिन है।

हमारा अपना विचार है कि यदि ये मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजाघर आदि न होते तो प्रत्येक मनुष्य की सोच कुछ और ही होती। खैर ! आज मनुष्य इन्हें अपनी आस्थाओं के पुञ्ज माने बैठा है। सबकी भावनाय इनसे जुडी हैं। एक प्रकार से किसी पूज्य की स्मृति में बने ये स्मारक ही हैं। जिनमें बैठकर लोग उस ईश्वर की आराधना के साथ पूज्य पुरुषों का स्मरण भी किया करते थे। वैसे ये पूजाघर मानव-जाति को सदाचार, संयम, संगठन, प्रेम, सौहार्द और भाईचारे का सन्देश दिया करते थे। इसीलिए 'संगच्छध्वम् संवदध्वम्' या 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सन्देश यहां प्रचारित हुआ। इसी सन्देश को लेकर हमारे राजाओं, प्रचारकों, भिक्षुकों, साधु-महात्माओं ने दूर-दूर विदेशों में जाकर, खून का एक कतरा बहाए बिना भारत का सन्देश सारे विश्व को दिया। इसीलिए विश्व में जहां अनेक साम्राज्य बने और मिटे; तथा उनकी संस्कृति और सभ्यता नष्ट-भ्रष्ट होगई वहां भारत की सांस्कृतिक विचारधारा जो इसकी मिट्टी से सम्भूत है आज भी अक्षुण्ण है। आततायियों के अत्याचार भी इसे मिटा न सके, किन्तु आज कुछ पूजाघर राजनैतिक अखाड़ेबाजी का शिकार होकर हमारे सामने एक प्रश्न खड़ा कर रहे हैं ? इसलिए केवल सहिष्णुता व धर्म-निरपेक्षता की बातें कहकर इन तथ्यों को झुठलाया नहीं जा सकता। जो खाते यहां का हैं, पीते यहां का हैं, रहते यहां हैं और गीत दूसरों के गाते हैं। ऐसे उन्मादी-अराष्ट्रीय तत्वों का निराकरण आवश्यक है। वेद भगवान् कहते हैं कि ऐसे अराष्ट्रीय या उन्मादी तत्वों को जैसे घोड़ा अपने ऊपर लगी धूल को झाड़कर परे फक देता है, ऐसे ही इस राष्ट्र से परे फेंक दो–यथा "अश्व इव रजो दुधुवे विततान। अथर्ववेद।" यही नहीं इस अराष्ट्रीय और धार्मिक उन्माद की प्रवृत्ति ने ही इस राष्ट्र के बड़े-बड़े नेताओं की हत्या तक करवा डाली। आर्यसमाज के अधिकतर नेता तो इन उन्मादियों के ही शिकार हुए। सचमुच यदि देखा जाए तो यहां के लोग स्वार्थवश, भयवश अथवा शक्तिवश ही एकजुट या संगठित हुए हैं। ये धार्मिक उन्मादी भावनाये अछूतपन और अस्पृश्यता को भी बढ़ावा देती हैं। इससे समाज में विघटन ही पैदा होता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था—"मैं उस धर्म को धर्म नहीं मानता जो भूखे को रोटी नहीं दे सकता।" स्वामी दयानन्द और अन्य सुधारकों ने भी भूखी और नंगी, दुःखी तथा धर्माडम्बरों में भटकी भारतीय जनता को देखकर, उसे जीवनभर जगाने का प्रयास किया। इसलिए भूखे व नंगे, गरीब मानव को भी ये उन्मादी भावनायें बहुत जल्दी ग्रस्त कर लेती हैं, इसलिए इस समस्या का समाधान आवश्यक है।

इसी सन्दर्भ में यदि हम इस राष्ट्र में मनाये जानेवाले त्यौहारों या पर्वों की चर्चा करें तो वहां भी हमें गड़बड़ नजर आती है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी धार्मिक रूढ़िता को छोड़ने में बड़े कष्ट का अनुभव करता है। त्यौहार भी राष्ट्र के जीवन का अभिन्न अंग हैं। ये किसी भी राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक हुआ करते हैं। जागरूक जनता के प्रेम और सौहार्द के प्रतीक हुआ करते हैं। राष्ट्र को एकता के संगठन-सूत्र में पिरोनेवाले हुआ करते हैं, किन्तु इस प्रसग में भी जब हम गूढता से विचार करते हैं तो हमारा मन और मस्तिष्क झनझना उठता है। हृदय वेदना से भर जाता है। बड़े-बड़े त्यौहारों पर नगरों में धारा १४४ लगानी पड़ती है। पुलिस और पी.ए.सी. का इन्तजाम करना पड़ता है। हम शंकित हो उठते हैं कि कहीं झगड़ा न होजाए। साम्प्रदायिक उपद्रव न होजाएं। इसलिए हमारे धार्मिक त्यौहार भी उन्मादिता का शिकार हो; हमारे राष्ट्रीय संगठन का उपहास कर रहे हैं। वास्तव में भारत राष्ट्र के संगठन में धार्मिक उन्माद एक बड़ी बाधा ही नहीं अपितु चुनौती भी है। आज राष्ट्र और धर्म दोनों में समन्वय नहीं है। एकरूपता नहीं है। कट्टर धर्मवादी आज भी इस राष्ट्र के संगठन को, इसके संविधान को स्वीकार नहीं करते तथा तरह-तरह के फतवे देकर इस राष्ट्र की काट-छांट करने को तैयार रहते हैं। यह उन्मादी आग, एक ऐसी आग है जब धधक जाती है तो न गरीब का झोंपड़ा देखती है न अमीर का बंगला। न वर्षों का पड़ोस देखती है, न प्यार न मोहब्बत। न नानक देखती है न रसखान। न मीरा, न रहीम, न अमरनाथ, न बद्रीनाथ, न सोमनाथ, न चिश्ती के उपदेश। न गीता याद रहती है न कुरान। भर जाती है आदमी में बर्बरता और दानवता। यह ऐसी आग है, यह ऐसा उन्माद है जिसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। अतः इस विद्वेष की बेल को समूल विनष्ट करना ही होगा।

सत्य तो यह है कि जब-जब इस राष्ट्र के अन्दर मजबूत शक्तिशाली शासन रहा तब-तब किसी भी धर्मान्ध की हिम्मत इस राष्ट्र के संगठन को भंग करने की नहीं हुई। आज भी जो पंजाब जल रहा है, असम जल रहा है, कश्मीर स्वतन्त्रता पश्चात् से ही अशान्त है और अब अयोध्या विवाद से सारा राष्ट्र जल रहा है। कभी यह झगड़ा है, कभी वह झगड़ा है। कभी यह रोना है, कभी वह समस्या है। कभी आरक्षण है, कभी भक्षण है। इन सबके मूल में कुछ ज्वलन्त समस्यायें हैं और ये समस्याये कुछ कारण रखती हैं। वास्तव में इन ज्वलन्त समस्याओं के मूल में तीन चरण अपना असर डाल रहे है—धर्मान्धता की संकीर्ण मनोवृत्ति, राजनीति की घिनौनी मिलावट तथा मजबूत राष्ट्रीय संकल्प का न होना। राजनीति का अर्थ यदि झूठ, कपट, छल, छद्म और स्वार्थ ही है तो ऐसी राजनीति से कल्याण सम्भव नहीं। फिर तो 'सत्यमेव जयते' के राष्ट्रीय चिह्न का क्या महत्त्व। राजनीति में भी तो कुछ मर्यादाये रखनी ही पड़ती हैं। कहा जाता है कि धर्म अपने आप में सत्य का रूप है। ईश्वर का रूप है। धर्मो रक्षति रक्षितः। यतो धर्मस्ततो जयः। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्। यह सिद्धान्त रूप में ठीक है आर्यावर्त में ऐसा ही होता था। तब धर्म से नीति और नीति से राज चला करते थे। अब बिल्कुल विपरीत है। अब राज से नीति और नीति से धर्म चलाया जारहा है, इसलिए सब गड़बड़ है। साधारण लोग धर्म के असली मर्म को न समझकर उसकी मजहबी बाह्य बातों पर अमल करते हैं और आपस में भिड़ जाते हैं। कहने को तो कहा जाता है कि 'मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना' किंतु समय आने पर ये सभी लोग अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग अलापने लगते हैं अतः इस समय जिस रूप में लोग धर्म को मान रहे हैं, उससे राष्ट्र के उद्धार या संगठन की बात करना व्यर्थ गाल बजाना है। वास्तव में बिना धर्म के आचरण के राजा, राज्य कर्मचारियों और प्रजा के चरित्र महान् बन ही नहीं सकते। जो दूसरों को त्याग और तपस्या का उपदेश देते हैं पहले उन्हें उस कठिन व्रत का स्वयं पालन करके देखना चाहिए। इसीलिए प्रश्न होता है कि फिर वह धर्म कौन-सा है, क्या है ? जिस धर्म का पालन सभी को करना चाहिए, वह है मनु महाराज द्वारा प्रतिवादित सत्य-सनातन मानव धर्म। जो आज के बड़े-बड़े उन्नत देशों के पास भी नहीं है और जो विविध भाषा-भाषी, विविध मत-मतान्तरों, सम्प्रदायों को माननेवाले राष्ट्र निवासियों के लिए एक महान् आदर्श और व्यावहारिक धर्म है। यह किसी भी राष्ट्र के निवासियों की आचार-संहिता है और ऐसी आचार-संहिता न बनी है और न बनेगी। मनु महाराज के शब्दों में ही इसे पढ़ और इस पर विचार करने की कोशिश करे। यथा— क्रमशः

होडल में लोगों ने भ्रष्ट अधिकारियों को सबक सिखाया

होडल, २८ नवम्बर (निस)। आजकल नगर में 'रिश्वत देना बन्द करो—जूतों का प्रबन्ध करो' नारा काफी चर्चित है। बिजली बोर्ड के कुछ भ्रष्ट अधिकारियों को सबक सिखाने के बाद यह नारा चर्चित हुआ है।

स्थानीय अंघुआ पट्टी का ट्रांसफार्मर फुंक जाने पर पट्टी के लोगों में [illegible] बिजली की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई। उन्होंने इसकी शिकायत स्थानीय बिजली बोर्ड के अधिकारियों से की, लेकिन उन्होंने कोई सुनवाई नही की। वास्तव में ये भ्रष्ट अधिकारी इस पट्टी में स्थित [illegible] वालों से मोटा पैसा वसूलना चाहते थे।

जब कई दिनों तक बिजली बोर्ड के अधिकारियों ने इसकी सुनवाई नहीं की। तो अंघुआ पट्टी के कुछ चौधरी अनेक लोगों के साथ बिजली दफ्तर गए। उस समय बिजली दफ्तर में गांव बंचारी के लिए एक ट्रांसफार्मर जारहा था। चौधरियों ने बिजली बोर्ड के जे. ई. से शिकायत की। जे. ई. ने वही पुराना राग अलापना शुरु कर दिया कि ट्रांसफार्मर तो पलवल से एक्सियन साहब ही मंजूर करेंगे।

चौधरियों को गुस्सा आगया, उन्होंने भ्रष्ट जे. ई. की जमकर पिटाई करदी लौर बंचारी वाले ट्रांसफामर को जबरदस्ती अंघुआ पट्टी ले गये। पिटाई होने के बाद जे.ई. के सिर से भी रिश्वत का भूत उतर गया और उसने कागजी कार्यवाही पूरी कर ट्रांसफार्मर अंघुआ पट्टी में लगवा दिया।

लोगों को जब इस मामले का पता चला तो जे.ई. की तो जैसे आफत आगई। सौंध गांव का ट्रांसफार्मर फुंका तो उन्होंने भी जे.ई. को रिश्वत देने से इन्कार कर दिया और शिकायत बड़े अफसरों को करदी। कोट गांव के एक चक्की वाले का कनैक्शन जे.ई. ने रिश्वत खाकर बदलवा दिया था, उन्होंने भी इसको शिकायत बड़े अफसरों से करदी।

जब जे.ई. के खिलाफ ज्यादा शिकायतें पहुंचने लगीं तो ऊपर के अधिकारी भी सक्रिय होगए। हरयाणा बिजली बोर्ड के चीफ इन्जीनियर के.के. चोपड़ा इन शिकायतों की जांच के लिए अपने दल-बल के साथ स्वयं होडल आए। यह तो जे.ई. के खिलाफ कोई कार्यवाही होने के बाद ही पता चलेगा कि उन्होंने इन शिकायतों को सही पाया या गलत, लेकिन स्थानीय चौधरियों ने 'रिश्वत देना बन्द करो—जूतों का प्रबन्ध करो' नारे पर अमल करना शुरू कर दिया है। दैनिक ट्रिब्यून

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

६३ श्री विजयकुमार उपायुक्त जिला पानीपत
६४ श्री एस० पी० लाम्बा उपायुक्त जि० अम्बाला
६५ श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द अतिरिक्त उपायुक्त नारनौल जिला महेंद्रगढ़
६६ प्रो० राममेहर राठी निकट चारखम्बा माडल टाउन रोहतक
६७ डा० सत्यवीर ग्राम कन्हेटी (भिवानी)
६८ श्री वेदपाल एडवोकेट पूर्व विधायक करनाल

—सूबेसिंह
सभा मन्त्री

आवश्यक सूचना

पाठकों को यह सूचना दी गई थी कि पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अभिनन्दन २२-२३ दिसम्बर को दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर होगा।

किन्तु पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज किंचित् अस्वस्थ हैं और इस कारण उन्हें शीत ऋतु में यात्राएं न करने का सुझाव दिया गया है। दूसरी बात यह भी है कि वे अपने अभिनन्दन सम्बन्धी कार्यक्रम को अति साधारण ढंग से करवाने के इच्छुक हैं। इस अवसर पर किसी आडम्बर से बचना चाहते हैं।

अत: उनसे परामर्श करके सूचित कर रहा हूं कि अभिनन्दन सम्बन्धी कार्यक्रम अब शीत ऋतु समाप्त होने पर मार्च/अप्रैल में किसी भी समय सुविधानुसार किया जाएगा, जिसकी विधिवत् सूचना आपको ठीक समय पर दे दी जाएगी। सुमेधानन्द
मन्त्री, वैदिक यतिमण्डल दयानन्द मठ, चम्बा (हि०प्र०)

वर की आवश्यकता

एक आन्ध्रप्रदेश की कन्या जो कि कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका है और शिक्षा शास्त्री की द्वितीय वर्ष तक पढ़ी हुई है। इसकी आयु २० वर्ष, कद ५ फुट २ इंच, रंग सांवला है। स्वस्थ तथा व्यवहारशील है, के लिए एक वर की आवश्यकता है जो कि कम से कम मैट्रिक पास हो तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो तथा चरित्रवान् हो। जाति-पाति का कोई बन्धन नहीं है। इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर सम्पर्क करें—दलबीरसिंह आर्य सी.ए.ओ. मकान नं० ३१० डिफेन्स कालोनी, हिसार।

(पृष्ठ ३ का शेष)

वह बात तो बीत गई, अब हाथ लगने वाली नहीं। परन्तु एक बात तो अब सबके समझ में आजानी चाहिए कि पंजाब की कोई भी सरकार इस नहर को नहीं बनायेगी, और इसका निर्माण टलता जायेगा, हरयाणा ३५ लाख एकड़ फुट पानी से वंचित रहेगा। यदि १९७६ में इस नहर का काम शुरु होकर १९७८ नहीं तो १९८० तक भी पूरा हो जाता और हरयाणा को पानी मिल जाता तो ४०० करोड़ रुपये से अधिक तो नहर की लागत का बचता और दस वर्षों में जो फसलों की पैदावार हरयाणा में होती, उसका हिसाब लगायें तो वह भी १५०० करोड़ से अधिक बनती है। इस प्रकार हरयाणा को आज के दिन नहर के न बनने से २००० करोड़ रुपये का घाटा हो चुका है।

भारत सरकार का कर्त्तव्य

यह स्पष्ट है कि जब तक भारत सरकार का सिंचाई विभाग अपनी देखरेख में सरकार द्वारा बनाये गये निगम के द्वारा यह काम नहीं करवायेगा तो यह काम लटकता रहेगा और हरयाणा २०० करोड़ का घाटा प्रतिवर्ष भुगतता रहेगा। पंजाब समस्या के शोर में हरयाणा पर होते जारहे अन्याय की ओर तो किसी का ध्यान ही नहीं जाता। पंजाब के राज्यपाल सब बातों को जानते हुए भी लिंक नहर के निर्माण के बारे में चुप हैं, नहर का काम ठप्प पड़ा है, उसे तो पूरा करवाने के लिए मौन साधे हुए हैं और बिना सोचे समझे चोट हरयाणा पर और कर गये। वे कह रहे हैं कि पंजाब की समस्या के समाधान के लिए हरयाणा को फाजिल्का अबोहर का इलाका दिए बिना ही पंजाब को बिना किसी शर्त के चण्डीगढ़ दे देना चाहिए।

भारत सरकार को जिसके उप प्रधानमन्त्री, न्याय युद्ध के संचालक भी थे, हरयाणा के साथ न्याय करना चाहिए। भारत सरकार को चाहिये कि वह सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस या अर्द्धसैनिक बल का सहारा ले, और अपनी एजेन्सी के द्वारा सतलुज यमुना लिंक नहर का काम ३१ मार्च १९९१ तक पूरा करे। ऐसा करने से हरयाणा के लाखों किसानों को तो लाभ होगा ही, देश को भी लाखों टन अन्न अपने भण्डारों के लिए मिलेगा और देश अन्न, चीनी, तेल आदि के मामले में आत्मनिर्भर होकर, निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकेगा।

शुभ विवाह संस्कार

श्री नशीबसिंह मुख्याध्यापक ग्राम माजरा (दुबलधन) के सुपुत्र देवेश का विवाह श्री सूबेदार जापानसिंह जी की पुत्री सौ० प्रमोद के साथ झज्जर में आदर्श रूप से सम्पन्न हुआ। वैदिक विधि से संस्कार किया गया। दोनों बालक शिक्षित होने से सब कार्यवाही विधिपूर्वक सम्पन्न हुई। आर्यव्रत शास्त्री, झज्जर

हैदराबाद सत्याग्रहियों के स्वागतार्थ दानदाताओं की सूची

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत	३००)
महाशय गुरुदत्त जी हरयाणा कोच बाडी, रोहतक	१०१)
ला० लक्ष्मणदास जी आर्य, आर्यसमाज सेवासदन वल्लभगढ़	११००)
आर्यसमाज नेहरू ग्राऊण्ड फरीदाबाद	१०००)
आर्यसमाज नं० ३ सेक्टर, फरीदाबाद	५०१)
आर्यसमाज मेन बाजार, फरीदाबाद	२०१)
आर्यसमाज सेक्टर १९ ,,	१०१)
आर्यसमाज एन०एच० फोर ,,	५१)
श्री राजकुमार आर्य सेक्टर १५ फरीदाबाद	५१)
आर्यसमाज सेक्टर १७-१८ फरीदाबाद	११)

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को कम्बल तथा सम्मान-पत्र भेंट

सन् १९३८-३९ में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सबसे अधिक हरयाणा प्रदेश से सत्याग्रही जेलों में गये थे, उनमें से अधिकांश सत्याग्रही स्वर्ग सिधार चुके हैं। केन्द्रीय तथा हरयाणा सरकारों ने २०० के लगभग सत्यग्रहियों को जिनके पास जेल प्रमाण-पत्र हैं, स्वतन्त्रता सेनानी मानकर सम्मान पेन्शन दे दी है। परन्तु अनेक ऐसे सत्यग्रही हैं, जिन्हें यत्न करने पर भी जेल प्रमाण-पत्र प्राप्त नहीं हो सके। इनकी सहायता के लिए सभा की ओर से भरसक प्रयत्न किया जा रहा है कि इनके जेलों के प्रमाण मंगवाये जावें।

गत सप्ताह २४ नवम्बर को सभा की ओर से हरयाणा प्रदेश के सत्यग्रहियों को सभा के कार्यालय रोहतक में आमन्त्रित किया गया और एक भव्य समारोह का आयोजन आर्यजगत् के वयोवृद्ध त्यागी तपस्वी संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में किया। इस शुभ कार्य को सफल करने के लिए पानीपत के उपायुक्त श्री विजयकुमार ने सभा को २०० कम्बल दान में दिलवाकर महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसी प्रकार श्री लछमनदास आर्य बल्लबगढ ने ११०० रु० श्री कन्हैयालाल मेहता फरीदाबाद ने १००० रु० इस कार्य में अपना योगदान सभा को भेजा है। महाशय भरतसिंह सभा उपप्रधान, श्री दुलीचन्द बेरी तथा महासिंह वर्मा ने भी इन सत्यग्रहियों को पेन्शन दिलवाने में परिश्रम किया है।

इस समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने इन सभी सत्यग्रहियों की प्रशंसा की और बताया कि आर्यसमाज के तत्कालीन आर्य नेताओं महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, महात्मा भक्त फूलसिंह आदि के आदेश पर आर्यसमाज तथा राष्ट्र रक्षा के लिए हैदराबाद की जेलों की यातनाऐं सहन की और आर्य-समाज के संघटन का परिचय दिया था। भारत सरकार ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की प्रेरणा तथा प्रयत्नस्वरूप हैदराबाद आर्य सत्याग्रह को राष्ट्रीय आन्दोलन स्वीकार किया और इन्हें भी स्वतन्त्रता सेनानी मानकर सम्मानार्थ पेन्शन दी है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को इन वीरों पर गर्व है। इन्होंने कठोर तपस्या करके आर्यसमाज के इतिहास को चार चांद लगाये हैं। इसी कारण सभा ने इन आर्यवीरों को सम्मानित किया है। इनके बलिदान से हमारी भावी पीढियां प्रेरणा लेगी। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने इनको सभा की ओर से सम्मान करते हुए एक-एक कम्बल, हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान पुस्तक तथा सम्मान-पत्र भेंट किया और इनके ऐतिहासिक योगदान के लिए कृतज्ञता प्रकट की। आपने हैदराबाद सत्याग्रह के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भारतवर्ष के इतिहास में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह प्रमुख स्थान रखता है। इसमें निजाम हैदराबाद से टक्कर लेने के लिए भारत के कोने-कोने से हैदराबाद गये और जेलों में कठोर कष्ट सहन किये और जवार बाजरे की रोटी खाकर भी साहस नहीं छोड़ा। महात्मा गान्धी ने भी कहना पड़ा था कि आर्यसमाज जैसा संघठन मैंने नही देखा। सत्यग्रही भूखे-प्यासे रहकर अपना बलिदान देने में एक-दूसरे से आगे रहने का प्रत्यन करते थे। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने पहाड़ से टक्कर लेकर शक्तिशाली शासक को झुकने पर विवश कर दिया।

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र ने इस समारोह का संक्षिप्त विवरण ३० नवम्बर को रात्रि ८ बजे हरयाणा दर्शन में सुनाया तथा सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा स्वामी ओमानन्द सरस्वती की भेंट वार्ताओं का प्रसारण किया। —केदारसिंह आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

प्रतिवर्ष की भांति सर्वहितकारी का २१ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्रकाशित किया जावेगा। सम्पादक

अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ

हमारी अपनी भाषा नहीं सरकारी भाषा अंग्रेजी भाषा गुलामी की निशानी है केन्द्र सरकार अंग्रेजी नहीं हटाना चाहती परन्तु हिन्दी भाषाई प्रदेश उत्तरप्रदेश, हरयाणा, हिमाचल, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि भाषाई गुलामी से नहीं जीना चाहते हैं। हमारे देश की १५ के लगभग भाषाएं हैं हमारी भाषाएं अंग्रेजी की दासी बन गई हैं। कांग्रेस सरकार ४३ साल में कुछ न कर सकी। कसूर हमारा है अंग्रेजी दासता की निशानी है इस कलंक को धोना हमारा कर्तव्य है। जनता जागरूक हो और एकजुट होकर सगठित हो जावे। हमारी स्वन्तत्रता अंग्रेजी हटाए बिना अधूरी है। संसार के २५० देशों की अपनी-अपनी भाषा है केवल अमरीका, इंगलैंड, आस्ट्रेलिया की भाषा अंग्रेजी है।

हमारे नेता जब विदेश जाते हैं और अंग्रेजी में भाषण देते हैं तो वहां बडी बदनामी व खिल्ली उड़ती है। हमारी वैदिक संस्कृति करोड़ों अरबों सालों की है। फिर यह अंग्रेजी २००० साल की अधूरी भाषा कहां से आ टपकी। यह अंग्रेज कूटनीतिज्ञ ने हमें दास व बुद्धू बनाने हेतु १८३५ ई० में चलाई। अब तो अंग्रेज भाग गये। इसे भी भगाओ और अपना सिर ऊंचा करो। यह दासता की निशानी है।

ले०—लेखक सुबोधानन्द स्वामी दयानन्द मठ, (घड़रा)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए समस्त आर्यसमाजों से सहयोग की अपील

माननीय प्रधान जी/मन्त्री जी सप्रेम नमस्ते।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आगामी २३ से २६ दिसम्बर १९९० को दिल्ली के रामलीला मैदान में सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जारहा है, जिसमें देश-विदेश से लाखों आर्यजन सम्मिलित होंगे। आर्य-समाजों का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि सम्मेलन को सफल बनाने में उनका तन, मन और धन का पूरा सहयोग मिलना चाहिए। इसके अतिरिक्त बाहर से आनेवाले लोगों के आतिथ्य सत्कार में भी आपकी समाज का पूरा योगदान रहना चाहिए।

सम्मेलन में श्री रामलाल जी मलिक के संयोजकत्व में ऋषि लंगर की व्यवस्था की जारही है। आप अपनी समाज की ओर से चावल, आटा, दाल आदि का संग्रह करके आर्यसमाज दीवानहाल, आर्यसमाज करौलबाग, आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१ अथवा आर्यसमाज राजौरी गार्डन जहां भी सुविधा हो जमा करा देवे। यह बहुत बड़ा कार्य है इसके लिए बहुत बड़ी धनराशि की भी आवश्यकता है। आप अपनी समाज तथा दानी महानुभावों से अच्छी धनराशि नकद, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सार्वदेशिक सभा में भिजवाने का कष्ट करे।

मुझे आशा है कि आर्य महासम्मेलन की सफलता में आपकी समाज का पूरा योगदान प्राप्त होगा।

भवदीय

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान

क्या देश की तरक्की है ?

(ले०—स्वामी स्वरूपानन्द १५ हनुमान मार्ग, नई दिल्ली)

क्या ! देश की तरक्की है।

सुखद शान्तिमय वह सुन्दर वातावरण फरार हुआ।
संकटल काल भयानक सबके सिर पर आज सवार हुआ।
गेहूं के संग में चक्की पर पीसी जारही मक्की है।
क्या ! देश की तरक्की है ॥१॥

छाया है आतंक चहुंदिश दीन दुखी जन परेशान हैं।
कितने ही निर्दोषी जन मारे जाते दे चुके जान हैं॥
जहां देखो चल रही दनादन दानवता की चक्की है।
क्या ! देश की तरक्की है ॥२॥

राष्ट्र सुरक्षा की नैया भंवर बीच में डोल रही।
जिसकी लाठी भैंस उसी की ऐसी तूती बोल रही॥
अहंकार मदिरा की प्याली पीकर धक्का धक्की है।
क्या ! देश की तरक्की है ॥३॥

जाने कब तक खत्म होयेंगी सभी शक्तियां आसुरी।
घर-घर में खुशहाली हो जब बजे चैन की बांसुरी॥
पापा हो चाहे मम्मी हो काका चाहे कक्की है।
क्या ! देश की तरक्की है ॥४॥

'प्रखर'—वैशाख'२०४१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० ... रजि. न० P/R

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०

वर्ष १८ अंक ४ १४ दिसम्बर, १९९० वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५

अयोध्या में रामजन्म मन्दिर या मस्जिद

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

सन् १९८९ में हमने एक अभ्यर्थना बिरादराने वतन मुसलमान बन्धुओं के प्रति इन शब्दों में "मुसलमान बन्धुओ—विचार करो, अयोध्या में रामजन्म मन्दिर या मस्जिद" प्रकाशित कर प्रसारित की थी। हमारे इस निवेदन पर सद्भावना से विचार करके किसी मुसलमान नेता अथवा विद्वान् ने कोई न्याय, नैतिकता और सद्भावना का वक्तव्य तो क्या देना था? हां, एक धमकीभरा पत्र हमें प्राप्त हुआ, जिसके अन्त में लिखने वाले ने अपने हस्ताक्षर और पते के स्थान पर "बाबरी मस्जिद का एक सिपाही" केवलमात्र इतना लिखा था।

इस अभ्यर्थना को हमने एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर प्रसारित किया था, जिसमें चार लघु लेख थे। उनमें प्रथम लेख श्री अमरेश आर्य का था, जिसमें अयोध्या के उस भवन की उन्होंने स्वयं निरीक्षण की हुई जानकारी दी थी। श्री अमरेश आर्य का जन्म दक्षिण भारत के एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। आपका जन्म नाम भी अमीर बेग था। शिक्षण के क्षेत्र में उन्होंने 'अफजल उलमा, एम० ए०, पी-एच० डी' की उपाधियां प्राप्त की थीं।

सन् १९८० में तामिलनाडु के मीनाक्षीपुरम् आदि के दलित बन्धुओं को बलात् इस्लाम में दीक्षित किये जाने के अवसर पर आपने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शाल वाले (अब श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) का वहां भाषण सुना। उसे सुनने के पश्चात् आपने वैदिक सिद्धान्त ग्रन्थों का अध्ययन किया, उससे आपके विचार परिवर्तित हुए। उसके पश्चात् आप २१ दिसम्बर, १९९० को दिल्ली आये तथा ला० रामगोपाल जी शालवाले से मिलकर अपने विचार परिवर्तन की बात कही और वैदिक धर्म में दीक्षित होने की इच्छा प्रकट की। २३, दिसम्बर को आपको वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई, तब आपने अपना जन्म नाम परिवर्तित कर अमीर बेग के स्थान पर अमरेश आर्य स्वीकार किया। २५ दिसम्बर, १९८० को वैदिक धर्म में दीक्षित होने के दो दिन बाद आपने प्रथम बार उस महती सभा में जो श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के अवसर पर गांधी मैदान दिल्ली में मेरी ही अध्यक्षता में आयोजित की गई थी एक संक्षिप्त वक्तव्य दिया था।

श्री अमरेश आर्य के उक्त लेख को हम ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहे हैं। यह एक अहले कमीशन की रपट से कुछ कम नहीं है। हमारा विश्वास है कि बुद्धिमानों को इससे उक्त भवन की वास्तविकता का पता लगेगा। लेख निम्नांकित है—

राम जन्मभूमि मस्जिद नहीं हो सकती

"प्रमाणित आधार"

आजकल राम जन्मभूमि के सम्बन्ध में उसको मस्जिद सिद्ध करने हेतु तथा मस्जिद का रूप देने के लिए बड़े पैमाने पर कोशिशें चल रही हैं - हंगामी जुलूस, जेल भरो आन्दोलन निरन्तर क्रियाशील हैं। साधारण जनता अधिकांशतः शिक्षित नहीं होती और जो मजहब के बहुत बड़े दिलदादा लोग हैं, ऐसी अशिक्षित और सीधी-सादी जनता को रामजन्म भूमि को मस्जिद का रूप दिलाने के लिए अपना कीमती खून बहाने को भड़का रहे हैं। हजारों मुस्लिम नवजवानों को अपने खून से हस्ताक्षर कराते हुए एक महीना पूर्व हैदराबाद में बाबरी सेना के नाम से एक सेना भी तैयार की गई है। इन सब हालातों को देखते हुए हमें यह भय और आशंका है, कि यह बाबरी मस्जिद की समस्या हमारे पवित्र देश में एक नई बर्बरी समस्या को जन्म देने जा रही है।

मैंने २४ अप्रैल १९८६ से लेकर २८ अप्रैल, १९८६ तक अयोध्या तथा फैजाबाद में रहकर कथित "बाबरी" मस्जिद जो कि वास्तविक में श्री रामचन्द्र जी का जन्मस्थान है—का बड़े गम्भीर रूप से अध्ययन किया है और उसी के आधार पर यह रिपोर्ट प्रकाशित करने को दे रहा हूं।

रामजन्म भूमि पर किसी आधार से एक मस्जिद का रूप लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि—

१— इस इमारत का रूप स्वयं बता रहा है कि सचमुच यह है कि यह इमारत मस्जिद के रूप में निर्मित ही नहीं है, क्योंकि इसमें "मेहराब" (वह स्थान जहां पर नमाज में इमाम साहब खड़े होते हैं) का रुख ठीक तरह से "किबला" (मक्के का वह घर जिसको तरफ नमाजी को अपना मुंह करना अत्यन्त आवश्यक है) की ओर नहीं है।

२— इस इमारत के अन्दर और बाहर की दीवारों पर जो दस्तकारी पायी जा रही है, वह किसी भी रूप में एक मस्जिद में नहीं पाई जाती, यह दस्तकारी तो सिर्फ हिन्दू मन्दिरों में पाई जाती है।

३— इस इमारत के आस पास "वजु" करने के लिए स्थान नहीं है और न ही ऐसे स्थान का कोई निशान है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रो. शेरसिंह योजना आयोग के सदस्य नियुक्त

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह को योजना आयोग का सदस्य नियुक्त किया गया है। उपप्रधानमन्त्री देवीलाल ने ११ दिसम्बर को ग्राम सिसौली (उ० प्र०) में आयोजित एक विशाल किसान रैली में सम्बोधित करते हुए कहा कि आयोग में ग्रामीण प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए यह नियुक्ति की गई है।



समाचारपत्रों में यह सूचना पढ़ते ही आर्यजनता में प्रसन्नता की लहर फैल गई। सभा के कार्यालय में अनेक महानुभावों ने प्रो० साहब को बधाई के सन्देश भेजे हैं। —केदारसिंह

आकाशवाणी रोहतक से प्रसारित—

ठण्ड से होने वाले रोग तथा उनका उपचार

(डा० सोमवीर, एम० ए० एम० एस०, सभा उपमन्त्री)

आयुर्वेद के ग्रन्थों में वर्ष को ६ ऋतुओं में बांटा है—

शिशिर—जनवरी, फरवरी; बसन्त—मार्च, अप्रैल; ग्रीष्म—मई, जून; वर्षा—जुलाई, अगस्त; शरद—सितम्बर, अक्तूबर; हेमन्त—नवम्बर, दिसम्बर।

अपितु हम मुख्यत: ४ माह यानी १५ नवम्बर से १५ मार्च तक सर्दी के महीने कहते हैं।

हेमन्त व शिशिर—४ महीने सर्दी के होते हैं। १५ नवम्बर के बाद थोड़ी-थोड़ी ठण्ड आरम्भ होती है।

दिसम्बर व जनवरी के महीनों में ठण्ड का प्रकोप अधिक होता है। अतः इन महीनों मे ठण्ड से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए। ऊनी कपड़े पहनने चाहिएं, शरीर को ढांपकर रखे।

इस मौसम में प्राय: खांसी (कास), जुकाम (नजला), गले के रोग, शिर:शूल, बच्चों में हरे-पीले दस्त, निमोनिया, वायु के कारण जोड़ों में दर्द; हाथ-पैरों में पीड़ा आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

ग्रीष्म व वर्षा के दिनों मे हमारे पेट की जठराग्नि मन्द पड जाती है परन्तु नवम्बर व दिसम्बर में ठण्ड के कारण शरीर की उष्मा बढ़कर जठराग्नि को प्रबल कर देती है इसलिए इन ठण्ड के ४ महीनों में पौष्टिक व स्निग्ध पदार्थों का सेवन करना चाहिए तथा व्यायाम करके शरीर को शक्तिशाली व पुष्ट करना चाहिए।

ठण्ड से बचना चाहिए, गरम वस्त्र धारण करने चाहिये। सर्दी के मौसम में होनेवाली वर्षा व ठण्डी तेज हवाएं रोगग्रस्त करती हैं। इसके इलाज के लिए कुछ नुस्खे ये हैं—

- लौंग ५ नग, काली मिर्च ५ नग, पीपल छोटी ३ नग, तुलसी के पत्ते ४ नग इनको ४०० ग्राम पानी में डालकर उबालें, १५० ग्राम पानी रहने पर उतारकर छान लेवे तथा १५ ग्राम मिश्री मिलाकर गरम-गरम पीने को देवें, थोड़ी देर विश्राम कराये, २ दिन में जुकाम ठीक हो जायेगा।
- बनपशा पुष्प ६ ग्राम, गाजवा पत्र ५ ग्राम, उन्नाव ५ नग, लसोड़ा १० नग, मुलहठी ४ ग्राम, सौंफ ३ ग्राम सबको आधा किलो पानी में उबालें, चौथाई शेष रहने पर उतारकर छान लेवें, १५-२० ग्राम मिश्री मिलाकर दिन में २ बार सेवन करायें, बहुत लाभदायक है।
- बादाम की गिरी १० नग, खशखश १० ग्राम, छोटी इलायची ३ ग्राम, काली मिर्च ३ ग्राम, धनियां १० ग्राम सबको बारीक कूटकर इनके बराबर मिश्री मिला लेवें, ४ से ५ ग्राम की मात्रा दिन में ३ बार गरम पानी से देवे। गर्मी से पैदा होनेवाला जुकाम तुरन्त ठीक होता है।
- गोदन्ती भस्म १२५ मि.ग्राम से २५० मि.ग्राम तक, लक्ष्मीविलास रस ६०० मि.ग्राम, श्रृग भस्म १२५ मि.ग्राम, सुहागा भस्म १२५ मि.ग्राम सबको मिला लेवें। यह एक खुराक है। शहद के साथ मिलाकर दिन में २-३ बार चटाने से जुकाम व खांसी दोनों में लाभ होगा।
- पुराने नजले व जुकाम के लिए पीने के लिए द्राक्षारिष्ट २०-२५ मि.ग्राम बराबर पानी मिलाकर भोजन के बाद दो बार देवें तथा चित्रक हरीतकी को प्रातः सायं ५ से १० ग्राम शहद के साथ चटाकर ऊपर से गरम दूध पिलावे। बहुत लाभकारी है।
- रोजाना २-३ बार गरम पानी में नमक डालकर गरारे कराये।

खांसी—

यह ५ प्रकार की होती है। यह बहुत भयानक रोग नहीं है। किंतु यदि खांसी कई दिन रह जाए और सावधानी व चिकित्सा न की जावे तो यह दमा, तपेदिक जैसे भयानक रोगों को जन्म देती है। सांप और बीमारी को कभी छोटा न समझना चाहिए अतः बीमारी का तुरन्त इलाज करना चाहिए।

खांसी के लिए कुछ नुस्खे इस प्रकार हैं—

- लौंग १ भाग, कालीमिर्च १ भाग, बहेड़ा १ भाग, कत्था शुद्ध ३ भाग सबको पृथक् कूटकर कपड़े से छान करके रखें तथा कीकर या बबूल की छाल का कषाय मिलाकर ५-६ घण्टे तक रगड़ तथा १-१ रत्ती की गोली बना लेवें, यह गोली चूसने से खांसी ठीक होती है। बाजार में लवङ्गादि वटी के नाम से मिलती है यह Tonsil के बढ़ जाने पर भी उपयोगी है।
- एलादि वटी—छोटी इलायची १ भाग, पिप्पली १ भाग, तेजपत्र १ भाग, दालचीनी १ भाग, मिश्री २ भाग, मुनक्का २ भाग, महुआ २ भाग, खजूर २ भाग, शहद जरूरत के अनुसार। तेजपत्र, इलायची, दालचीनी इनको अलग-अलग पीस लेवें, खजूर के बीज निकालें, मुनक्का और मिश्री को भी साथ कूटकर थोड़ा-थोड़ा शहद डालते रहें, मटर के बराबर गोली बनाएं, ये गोलियां गले की बीमारियां व खांसी के लिए अच्छी हैं।
- सितोपलादि चूर्ण—दालचीनी १ भाग, छोटी इलायची २ भाग, पिप्पली छोटी ४ भाग, वंशलोचन ८ भाग, मिश्री १६ भाग सबको बारीक कूटकर कपडा छान कर लेवे, इसको ५-६ ग्राम की मात्रा शहद के साथ दिन में ३ बार चाटने से सभी प्रकार की खांसी, जुकाम ठीक होता है। दमा व तपेदिक के लिए भी उपयोगी है।

  यदि हमारा शरीर पुष्ट होगा तो हमारी रोगप्रतिरोधक शक्ति अधिक होगी और रोगों का आक्रमण कम होगा।

इस मौसम में सूखे मेवे जैसे काजू, किशमश, अखरोट, बादाम, खजूर, मूगफली आदि का सेवन करना चाहिए।

खजूर व गुड़ दो पदार्थ ऐसे हैं जो अपेक्षाकृत सस्ते हैं और पौष्टिक भी हैं। यदि ५० ग्राम खजूर सर्दियों में दूध के साथ रोजाना सेवन की जावे तो बल व शक्ति को बढाती है तथा नजला व कास यानी (खांसी) बिल्कुल नहीं होगी। बवासीर के रोगी इसका प्रयोग न करें।

ठण्ड के कारण होनेवाली बीमारियों में पहले जुकाम के बारे में थोड़ा वर्णन करता हूं। जुकाम व प्रतिश्याय इसे नजला व Corygn भी कहते हैं। ठण्ड आरम्भ होते ही इस रोग के होने की संभावना हो जाती है। इसमें भूख कम हो जाती है शरीर में भारीपन महसूस होता है। नाक में सरसराहट होता है कभी थोड़ा पानी आता है। छींके आती हैं। २ दिन बाद पक जाने पर गाढ़ा मल निकलता है। शिर में दर्द व शरीर में ज्वर जैसी उष्मा बढ जाती है। गले में खर-खर होती है।

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसे कभी न कभी जुकाम न हुआ हो। यह रोग वैसे तो साधारण मालूम होता है किन्तु रोगी को बहुत बेचैन व परेशान कर देता है।

यह दवाई बहुत महत्त्वपूर्ण है। अनेक रोगों में इसका प्रयोग किया जाता है।

- द्राक्षारिष्ट—२० मि.लि. दवाई बराबर पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय प्रयोग करे। यह खांसी, दमा और शरीर की दुर्बलता को दूर करता है।
- वासारिष्ट—२० मि.लि. दिन में २ बार पानी मिलाकर सेवन करायें।
- वासावलेह—१ से २ चम्मच प्रातः सायं दूध के साथ लेवें।
- तालीसादि चूर्ण—१ ग्राम से २ ग्राम दिन में २ बार मधु से देवे।
- च्यवनप्राश—आयुर्वेद की महान् उपयोगी औषधि है जिसे आज प्राय: सभी जानते हैं।

  च्यवनप्राश अवलेह—१-१ चम्मच प्रातः सायं दूध के साथ सेवन करें, खटाई का परहेज रखें। यह बहुत ही उत्तम औषधि है। यह जीर्ण ज्वर, कास, नजला, दमा व यक्ष्मा यानि तपेदिक में भी बहुत प्रभावकारी औषधि है यह बूढ़ों के लिए रामबाण है।
- घरेलू नुस्खे—काकड़ासीगी अर्जुन वृक्ष की छाल, अश्वगंध, नागवला, हरड, पुष्कर मूल, गिलोय, कालीमिर्च, सोंठ, पीपल, तालीसपत्र इन सबको बराबर लेकर बारीक कूठकर रखें, इसे शहद के साथ या मिश्री मिलाकर ३ ग्राम की मात्रा दिन में २ बार देवें, यह जुकाम, सभी प्रकार की खांसी (कास), गले के रोग व दमा को भी ठीक करती है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

नाम समाजवाद का—काम पूंजीवाद का

गांव और शहर तथा नगरों और महानगरों की दूरी बढ़ी

—प्रो० शेरसिंह

एक अनुभव के अनुसार प्रतिवर्ष ४०,००० करोड रुपये से अधिक आमदनी टैक्स से बचाई जाती है। यही धन कहलाता है काला धन या दूसरे नम्बर का पैसा। देश की सारी पूंजी पर एक लाख से भी कम पूंजीपतियों का कब्जा है। इतनी बड़ी पूंजी जिनके कब्जे में हो उनका प्रभाव तो सत्ताधारियों पर सहज रूप से पड़ेगा ही। इस पूंजी का जहर समाज के पूरे शरीर में फैल चुका है और समाज के दिल और दिमाग पर आज उसका कब्जा है। १९८१ में जिन २० घरानों की परिसम्पत्ति ४,३९९ करोड़ रुपये थी वह ५ वर्ष के भीतर ही २३,१५४ करोड़ होगई। चाहे सूखा हो या अकाल, देश के गरीब से गरीब परिवारों का धन एकतरफा निकलकर इन्हीं परिवारों में इकट्ठा होने से इनकी परिसम्पत्तियों के पहाड़ खड़े होगये और दूसरी तरफ उन्हीं महानगरों में गन्दी बस्तियों की संख्या बढती जा रही है। जब तक इन पहाड़ों को समतल कर गरीबी की खाई नहीं भरी जाती तब तक समाजवाद का बीज कैसे अंकुरित हो सकेगा।

उद्योगों एवं सेवाओं का महानगरों में केन्द्रीयकरण होने से ग्रामीण युवाशक्ति नगरों में रोजगार पाने के लिए बड़े पैमाने पर शहरों में आने के लिए मजबूर है जहां उन्हें उचित रोजगार और मजदूरी भी बहुत थोड़े पारिश्रमिक पर ही मिल पाती है ऐसे लोगों के लिए भवन तो बने हुए हैं नहीं वे गन्दी बस्तियों में ही रहते हैं।

एकाधिकारी घराने

गांव में जो गृह-उद्योग जिस क्षेत्र में हैं, उन्हीं क्षेत्रों में इन घरानों को उद्योग लगाने की छूट के कारण, गांव में बचे खुचे उद्योग और धन्धे भी चौपट होते जारहे हैं। दूसरी पंचवर्षीय योजना से लेकर सातवीं पंचवर्षीय योजना तक विनियोग नीति, सरकारी और गैर सरकारी कम्पनियों के केन्द्रीकरण, बैंकिंग संस्थाओं द्वारा गांवों और उपनगरों का धन महानगरों में लगाने की योजना, विदेशी संस्थाओं की भी इन्हीं महानगरों में धन लगाने की प्रवृत्ति के कारण रोजगार के अवसर भी महानगरों में ही उपलब्ध हैं, इसलिए रोजगार की तलाश में गांवों और छोटे नगरों के लोग महानगरों की ओर दौड़ते हैं। १९५१ में दिल्ली में जहां ६९,००० लोगों को रोजगार मिला वहां २५ वर्ष बाद १९८६ में ६ लाख लोगों को रोजगार मिला। उद्योगों के साथ-साथ व्यापार के केन्द्र भी यही महानगर हैं। एक अनुमान के अनुसार ११ महानगरों में गैर सरकरी कम्पनियों ने अपनी ७९ प्रतिशत प्रदत्त पूंजी लगाई। सरकारी कम्पनियों की संख्या १२ महानगरों में कुल संख्या का ४३% थी। गांव और नगर तो दीनता का शिकार होने के कारण महानगरों की तरफ ही दौडते हैं।

बैंकों के राष्ट्रीयकरण के समय उभरी आशायें

जब बैंकों अथवा वित्तीय संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण किया गया तब यह प्रचार किया गया था कि अब बैंकों की शाखायें और वित्तीय संस्थायें गांव में खोली जायेंगी और उसका लाभ गांव के लोगों को उनकी गरीबी दूर करने के लिए मिलेगा। परन्तु ऋण और जमा का अनुपात देखें तो पता लगेगा गांवों और उपनगरों में लोगों का पैसा अधिक जमा हुआ और उनको ऋण कम मिला। इसका अर्थ यह हुआ कि ग्रामों और उपनगरों का जमा किया हुआ पैसा भी बैंकों ने महानगरों को ही ऋण के रूप में दिया। रिजर्व बैंक की पिछले दिनों प्रकाशित रिपोर्ट में यह बात खुलकर आई है कि महानगरों में जो १० प्रतिशत शाखायें बैंकों की हैं उनमें जमा धन तो ३८.८ प्रतिशत है और उनको ऋण मिला है ४७ प्रतिशत। देश के १०० नगरों ने पैसा जमा कराया ६० प्रतिशत और ऋण लिया ६५.४ प्रतिशत। बाकी ३४.६ प्रतिशत पैसा देश के उपनगरों और पौने ६ लाख गांवों को मिला है। उत्तरप्रदेश पिछड़ा हुआ प्रदेश है, वहां के लोगों ने जमा कराया १२ हजार करोड़ से भी अधिक और उन्हें ऋण मिला ५ हजार करोड़। उत्तर प्रदेश का ७ हजार करोड़ रुपया देश के दूसरे प्रदेशों के शहरों में चला गया। यह एक विडम्बना है कि जो प्रदेश ज्यादा पिछड़ा हुआ है, वहां धन तो बैंकों में जमा हुआ ज्यादा और वहां के लोगों को ऋण उससे आधा भी नहीं मिला। यह स्पष्ट होगया कि गरीबों का धन खिचकर धनी परिवारों के पास जा रहा है।

पंचवर्षीय योजनाओं का चिट्ठा

देश में उत्पादन के तीन मुख्य स्रोत हैं, खेती, खान और उद्योग। १९८१ की जनगणना के अनुसार ८६.१ प्रतिशत जनसंख्या खेती पर निर्भर है और १३.९ प्रतिशत खान और उद्योगों में लगी है। मोटे तौर पर खेती का मतलब गांव और खान तथा उद्योग का मतलब शहर। पहली पंचवर्षीय योजना के पश्चात् दूसरी पंचवर्षीय योजना से लेकर सातवीं पंचवर्षीय योजना तक चिन्तन बिल्कुल बदल गया है यह आंकड़ों से स्पष्ट है। पहली पंचवर्षीय योजना में कृषि और ग्रामीण उद्योगों के लिए ७४.९ प्रतिशत और खान तथा उद्योग के लिए २५.१ प्रतिशत विनियोग किया गया। इसका अर्थ यह हुआ कि खेती अथवा ग्रामों के लिए तीन चौथाई धन विनियोजित किया गया। योजना का आकार छोटा था और उस पंचवर्षीय योजना के समय धनराशि बहुत कम थी। परन्तु जैसे-जैसे योजना का आकार बड़ा होता गया, अधिक पूंजी उपलब्ध होती गई, गांवों और खेती के लिए विनियोग घटता गया। दूसरी पंचवर्षीय योजना से लेकर सातवीं पंचवर्षीय योजना तक, इन ६ योजनाओं का हिसाब लगाने वाले इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इन योजनाओं में खेती के लिए विनियोजित धनराशि ३५ प्रतिशत। से भी कम रह गई तथा ग्रामीण और लघु उद्योगों के लिए ४.५ प्रतिशत इसका अर्थ यह हुआ कि ८६ प्रतिशत जनसंख्या के लिए ४० प्रतिशत से कम और १४ प्रतिशत जनसंख्या के लिए ६० प्रतिशत से अधिक। दूसरे शब्दों में गांव के एक व्यक्ति की तुलना में शहर के एक व्यक्ति के लिए ९ गुणा से भी अधिक धनराशि नियोजित की गई।

आठवीं पंचवर्षीय योजना

आठवीं पंचवर्षीय योजना का ढांचा तैयार है, अभी उस पर विचार होना है और उसे अन्तिम रूप दिया जाना है। देखते हैं इस बार गांव और उपनगरों के साथ कितना न्याय किया जाएगा।

महात्मा गांधी क्या कहते थे ?

गान्धी जी को यह देखकर चिन्ता होती थी कि गांवों पर शहरों का प्रभुत्व बढ़ रहा है। उन्होंने बार-बार घोषणा की थी कि सच्चा भारत उसके मुट्ठी भर शहरों में नहीं, बल्कि पौने ६ लाख गांवों में बसा है। परन्तु नगरवासियों की यह मान्यता रही है कि भारत शहरों में ही बसा है, और गांव तो उनकी जरूरतें पूरी करने के लिए खड़े किए गये हैं।

पश्चिमी सभ्यता शहरी सभ्यता है। इंगलैण्ड या इटली जैसे छोटे देशों के लिए, अपनी सामाजिक व्यवस्थाओं को शहरी बनाना शायद लाभदायक हो सकता है। यही स्थिति अमरीका और रूस की भी है, जहां संसाधनों के हिसाब से जनसंख्या कम है, परन्तु एक बड़े देश, जिसकी करोड़ों करोड़ आबादी को बेकारी और अर्ध-बेकारी की भीषण समस्या से जूझना पड़ रहा है, में पश्चिमी जटिल उद्योगवाद की उपयोगिता संदिग्ध होगी। भारत को ग्रामीण परम्पराओं में ही सोने की चिड़िया की संज्ञा मिली थी और देश धनधान्य से परिपूर्ण था, तब पश्चिमी नकल की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती थी। जब काम करने वालों की संख्या सीमित हो तब यन्त्रों का उपयोग लाभदायी साबित हो सकता है। लेकिन भारत जैसे देश में जहां काम करने वालो की अपार जनशक्ति है, वहां इस तरह का यन्त्रीकरण हानिकारक होगा।

स्पष्ट है कि देश की परिस्थितियों के अनुसार ही विज्ञान और तकनीक के उपयोग को ढालना पड़ेगा और गांव और छोटे नगरों मे सीधे-साधे मजबूत छोटे-छोटे यन्त्रों की मदद से छोटे-छोटे उद्योग वहीं पर लगाने होंगे जिससे घर के पास सबको रोजगार मिल सके और महानगरों की भीड़ खत्म हो तथा गन्दी बस्तियों का नारकीय जीवन भी। गांधी जी के विचारों की उपादेयता आज कम नहीं हुई, वास्तव में जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ उनके विचारों की उपादेयता भी बढ़ती जारही है।

सभा को सहयोग एवं सुझाव दीजिए

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के चुनाव में प्रो० शेरसिंह को सर्वसम्मति से सभा का प्रधान चुनकर हरयाणा के आर्य प्रतिनिधियों ने बहुत ही सूझबूझ का परिचय दिया है। वास्तव में इस समय उनके कुशल नेतृत्व तथा मार्गदर्शन की आर्यसमाज को नितान्त आवश्यकता है। अनेक समस्याओं के समाधान करने तथा हरयाणा में आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करना समय की मांग है। राष्ट्र संकट की घडी से गुजर रहा है। इस अवस्था में राष्ट्र की दृष्टि आर्यसमाज की ओर है। कश्मीर से पलायन करने वाले शरणार्थी भी आर्यसमाज की सहायता की आशा लगाये बैठे हैं। पंजाब से आये भाई भी इसी प्रकार सहायता के पात्र हैं। इन सभी का यथासम्भव प्रबन्ध करना समय की मांग है और इस बारे आपके अमूल्य सहयोग की आवश्यकता है। सभा अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों के चयन का अधिकार भी सभा प्रधान को देकर उनपर पूरा विश्वास प्रकट किया है। उन्होंने अपने सहयोगियों से विचार-विमर्श करके अन्य अधिकारियों आदि की घोषणा की है जोकि सर्वहितकारी में प्रकाशित हो चुकी है। मन्त्रीपद का भार इस वर्ष उन्होंने मेरे को सौपा है। मैंने हरयाणा प्रदेश के सभी आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से पूरा समर्थन मिलने तथा आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी आर्य संन्यासी के आशीर्वाद के उपरान्त ही यह कार्यभार सम्भाल लिया है।

मैं हरयाणा प्रदेश के समस्त आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं और सर्वहितकारी के पाठकों से सभा के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने तथा वेद प्रचार के प्रसार को प्रभावशाली बनाने के विषय पर सुझाव आमन्त्रित कर रहा हूं। अतः आप अपने सुझाव को संक्षिप्त रूप से साफ-साफ शब्दों में लिखकर मेरे पास सभा के पते पर भेजने का कष्ट करें। आपके सुझावों को कार्यान्वित करने का भरसक प्रयास किया जायेगा।

आशा है आपके सहयोग एवं सुझावों के अनुसार हम सब मिलकर आर्यसमाज के स्वप्नों को साकार करने में सफल होंगे।

सूबेसिंह
सभा मन्त्री

सभामन्त्री द्वारा हरयाणा की आर्य संस्थाओं का भ्रमण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नये मन्त्री श्री सूबेसिंह ने हरयाणा के आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं से सम्पर्क करने के लिए भ्रमण करना आरम्भ कर दिया है।

२९ नवम्बर को सभामन्त्री ने हरयाणा में आर्यसमाज की प्रमुख शिक्षण संस्था गुरुकुल झज्जर पहुंचकर स्वामी ओमानन्द सरस्वती से आर्यसमाज के संचालन विषयों पर विचार-विमर्श किया और उसके उसके पश्चात् सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह के नई दिल्ली स्थित आवास पर उनसे मिलकर आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं की प्रगति करने के कार्यक्रम पर वार्ता की तथा हरयाणा के अन्य नेताओं से सम्पर्क करके सहयोग की मांग की। ४ दिसम्बर को प्रातः पानीपत पहुंचकर सभा के नये कोषाध्यक्ष श्री रामानन्द सिंहल से उनके निवास पर भेंट की तथा सभा सम्बन्धी कार्यों पर उनसे विचार-विमर्श करने के पश्चात् करनाल, कुरुक्षेत्र तथा अम्बाला होते हुए दोपहर पश्चात् चण्डीगढ गए वहां हरयाणा में आर्यसमाज की वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु विचार-विमर्श किया। ५ दिसम्बर को आपने अम्बाला स्थित सभा द्वारा संचालित श्रीमद्दयानन्द आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय के लिए जिला अम्बाला के उपायुक्त द्वारा दस हजार की आर्थिक सहायता स्वीकार करवाई। इसके पश्चात् कुरुक्षेत्र स्थित सभा के उपकार्यालय एवं महर्षि दयानन्द वैदिक धाम मार्केट का निरीक्षण किया और वहां सभा के सम्पत्ति निरीक्षक श्री भगवान् सिंह के साथ विचार-विमर्श किया। उसी दिन सायंकाल पानीपत में जिला उपायुक्त से आर्य शिक्षण संस्थाओं के सफलतापूर्वक संचालन में सहयोग करने पर वार्ता की। सभा उपप्रधान म० भरतसिंह तथा सभा उपमन्त्री डा० सोमवीर के साथ ८ दिसम्बर को पुनः गुरुकुल झज्जर पहुंचकर स्वामी ओमानन्द सरस्वती के स्वास्थ्य की जानकारी ली तथा आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं से मिलकर उनसे सभा के कार्यों के लिए सहयोग मांगा। उनकी प्रेरणा पर डा० दयानन्द दहिया रोहणा वासी तथा श्री महेन्द्रसिंह अहलावत हाऊसिंग बोर्ड कालोनी रोहतक ने सभा के साप्ताहिक पत्र की सदस्यता ग्रहण की तथा सभा मन्त्री जी को इसके अधिक से अधिक सदस्य बनवाने का वचन दिया और आर्यसमाज के अन्य कार्यों में भी पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया। सभा मन्त्री जी रोहतक स्थित आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से भी सम्पर्क करके उनका सभा के कार्यों में सहयोग लेने का यत्न कर रहे हैं।

— केदारसिंह आर्य

रोहतक में स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
धर्म पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जिन्होंने आर्यावर्त देश की स्वतंत्रता के लिए शहीदी जलूस का नेतृत्व करते हुए अंग्रेजों की संगीनों के समक्ष चांदनी चौक में अपनी छाती तान दी थी तथा अपने देश और जाति के लिए २३ दिसम्बर १९२६ ई० को एक धर्मान्ध यवन द्वारा गोली का निशाना बना दिए गए थे। उनका ६४वां बलिदान दिवस आर्य वीर दल रोहतक के तत्वाधान में २ से ५ बजे तक आर्यनगर रोहतक के बड़े पार्क में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

जिसमें सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वामी जगदीश्वरानन्द एवम् श्री श्यामवीर राघव के सुन्दर भजन होंगे।

भूल सुधार

१. सर्वहितकारी दिनांक ७ नवम्बर के पृष्ठ ३ के स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के अभिनन्दन समारोह के समाचार में श्री रामानन्द सिंहल का नाम भूल वश श्री रामलाल सिंहल छप गया था, इसी समाचार में आर्यसमाज पानीपत के स्थान पर विद्वानों को सम्मानित करने की परम्परा आरम्भ करनेवाले आर्यसमाज का नाम बम्बई भी भूलवश लिखा गया था।

२. सर्वहितकारी के २८ नवम्बर के प्रथम पृष्ठ पर सभा के चुनाव के समाचार में सभा प्रधान पद पर प्रो० शेरसिंह का नाम प्रस्तुत करने के लिए डा० रणजीतसिंह का नाम छप गया। वास्तव में यह प्रस्ताव श्री महेश्वर शास्त्री ने प्रस्तुत किया था और डा० रणजीतसिंह ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया था। अतः पाठक भूल सुधार कर पढ़ें।

—केदारसिंह आर्य

शोक समाचार

गत मास चौ० सुर्जाराम आर्य प्रधान आर्यसमाज बालु (कैथल) के परिवार में एक पोता लाजपत का तथा भतीजा श्री भरतसिंह पटवारी का अचानक निधन होगया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—चिरंजीलाल आर्य भजनोपदेशक

गतांक से आगे—

राष्ट्रीय संगठन और धार्मिक उन्माद

—महावीर 'नीर' विद्यालंकार, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार—

यथा—धृतिः क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

अर्थात्—(धृतिः) धारण करना, धैर्य रखना अर्थात् प्रत्येक राष्ट्र-निवासी में किसी अच्छे भाव को धारण करने की शक्ति होनी चाहिये, अपनी भूमि माता को जिसका वह अन्न-जल सब कुछ खाता है, उसको धारण करने की शक्ति रखता हो (क्षमा) क्षमा का भाव प्रत्येक निवासी में हो। आपस के व्यवहार में एक दूसरे के प्रति क्षमा का भाव हो। एक दूसरे की गलतियां निकाल-निकालकर आपस में कटुता का भाव न आ पाये। (दमः) अपने आप पर नियंत्रण की शक्ति हो, शरीर के आवेगों (काम-क्रोध-लोभ-मोह) आदि को वश में करना बहुत बड़ी बात है। 'मद' को 'दम' से ही वश में किया जा सकता। (अस्तेय) चोरी की भावना न हो, किसी भी वस्तु पर गीध की दृष्टि रखना झगड़े-फसाद को निमन्त्रण देना है। (इन्द्रिय-निग्रहः) इन्द्रियों पर नियन्त्रण की शक्ति हो। इस विषय पर रहीम जी का एक दोहा देखिये—रहिमन जिह्वा बावरी, कहत आकाश पाताल।
आप कहत भीतर गयी, जूती खात कपाल॥

इसलिए इन इन्द्रियों का परस्पर के व्यवहार में हम जितना सदुपयोग करेंगे उतना हो परस्पर सौहार्द बना रहेगा। दूसरा इन्द्रिय-निग्रह से परिवार-नियोजन को भी बल मिलेगा। राष्ट्रवासी शक्तिसंचय करके बलिष्ठ होंगे। (धीः) बुद्धि का होना आवश्यक है। अच्छे और बुरे को विचारने की शक्ति प्रत्येक राष्ट्र-निवासी में हो, अन्यथा अफवाहों और गलतबयानी से समाज तबाह हो सकता है। (विद्या) प्रत्येक राष्ट्र-निवासी पढ़ा-लिखा हो। ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करने तथा उसे क्रियान्वित करने की शक्ति उसमें हो, जिससे राष्ट्र नये-नये आविष्कारों व अनुसंधानों से प्रगतिशील हो। कोई भी अपढ़ या मूर्ख न हो। (सत्यम्) प्रत्येक राष्ट्रनिवासी में सत्याचार का भाव हो। झूठ और कपट, छल-छद्म व्यक्ति और समाज को रसातल में धकेल देता है। झूठे को हमारे यहां पापी कहा है। सत्य को ही ईश्वर का दूसरा रूप कहा है। सत्यम् (स+ति+यम्) ईश्वर, जीव, प्रकृति अर्थात् सत्यम् में सारा ब्रह्माण्ड समाया है। सच्चा आदमी समाज की धरोहर है। (अक्रोधः) क्रोध न करना। किसी के प्रति व्यर्थ ही, अकारण ही क्रोध की भावना रखना ठीक नहीं। क्योंकि क्रोध समस्त विनाश की जड़ है। गीता में कहा है—

क्रोधाद् भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति॥

अर्थात्—क्रोध से मोह, मोह से स्मृति का नाश, स्मृति के नाश से बुद्धि का नाश और बुद्धि के नाश से मनुष्य मरकट जाता है, विनष्ट हो जाता है :

इस प्रकार उपर्युक्त धर्म के ये लक्षण, केवल लक्षण मात्र नहीं हैं अपितु राष्ट्रनिवासियों के लिए चाहे वे किसी मजहब को मानने वाले हों सार्वभौम धर्म है। यह किसी भी राष्ट्र के निवासियों की आचरण संहिता है। इस आचरण संहिता पर चलकर ही, इसे धारण करके ही राष्ट्र संगठित रहा करते हैं। अन्यथा मिथ्यावाद से पनपे ये धार्मिक उन्माद इस राष्ट्र को विनाश के कगार पर ले जाकर रहेंगे।

आइये, अब हम वर्तमान में उभरे 'राम जन्मभूमि मन्दिर' के ज्वलन्त प्रश्न पर आते हैं, जिसे साम्प्रदायिकता का रंग देकर देश को विद्वेष की अग्नि में झोंक दिया गया है। आज आम हिन्दू जितना राम के नाम से अभिभूत है, उतना आम मुसलमान बाबरी मस्जिद के नाम से नहीं। नहीं तो वह भी अयोध्या की ओर कूच करता। इससे स्थिति स्पष्ट है। वैसे ये जो दंगे हुए हैं, ये अधिकतर सरकारी तंत्र की उपज है, धार्मिक उन्मादियों का भी इसमें हाथ है। यहां यह भी सोचने की बात है कि जब अधिकतर नेतागण व कारसेवक या तो अयोध्या में थे या जेलों में बन्द थे तथा सारा उत्तरप्रदेश में रेलों, बसों तथा मार्गों और घरों तक में पुलिस का जबरदस्त आतंक था तब दंगे कैसे हो गए? इसलिए इस पर गहन विचार करना होगा। हिन्दू और मुसलमानों के बीच वह पटरी कब बैठेगी, जिस पर दोनों सवार होकर इस राष्ट्र को ऊपर ले जायेंगे। वह भाईचारे की भावना, वह बड़े-बूढ़ों का जवान लड़कों को यह कहना कि 'अरे किसी को राम-रहीम तो कर लिया करो' हमारे दिलो-दिमाग में कब उतरेगा। हम इस देश को इण्डिया बनाने चले हैं, भारतवर्ष बनाने चले हैं या हिन्दुस्तान बनाने चले हैं? आजादी के ४४ वर्षों के बाद भी अभी हम यही सोच रहे हैं कि इसे क्या बनायें? समस्या गम्भीर है। लगता है सब स्वप्न-मात्र है। इसलिए जहां भारतीय जनता के सोच में गलती हो सकती है वहां सरकार का सोच भी स्पष्ट नहीं है। इसे तुष्ट करके उसे सतुष्ट करके क्या सर्वधर्म समभाव हो जाएगा।

जहां जनता साम्प्रदायिक उन्माद के लिए जिम्मेदार है वहां सरकार भी अपनी छवि को बनाये रखने के लिए धार्मिक भावनाओं को भड़काती है। राम जन्मभूमि विवाद की यदि भूमिका में जाएं तो जनता कम और तत्कालीन सरकार अधिक दोषी है। सोमनाथ से चले दिल्ली तक पहुंचे रामरथ को शुरू से रोका नहीं। यहां तक कि बिहार में भी जाने दिया। रेडियो और टेलिविजन में भी इसके जगह-जगह पहुँचने और स्वागत सत्कार आदि के प्रचार में बातें की गयी किन्तु समस्तीपुर (बिहार) में पहुंचते ही, सरकार को उसमें से साम्प्रदायिक गंध आने लगी। सरकार ने दूरदर्शन और रेडियो से वह दुष्प्रचार किया, जिसका सानी नहीं मिल सकता। अध्यादेश जारी करके उस स्थान का ग्रहण किया, फिर अध्यादेश वापिस ले लिया। उत्तरप्रदेश सरकार ने तो आपातकाल को भी मात कर दिया। मुख्यमन्त्री ने अनेकों सभायें करके एक हो पक्ष को पुष्ट करते हुए स्थान-स्थान पर साम्प्रदायिकता का जहर फैलाया। एक तबके का मसीहा बनने की कोशिश की गयी। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि भा.ज.पा. के नेताओं ने कभी-भी तथाकथित मस्जिद के ढांचे को तोड़ने की बात नहीं कही, बल्कि बाइज्जत आधुनिक उपकरणों से ढांचे को हटाकर दूसरी जगह रखकर मस्जिद बनाने की बात कही, किन्तु सरकार ने हमेशा अपने वक्तव्यों में तोड़कर बनाने की बात कहकर तथा विवादित स्थल बताकर आग में घी का कार्य किया। एक अच्छे माहौल को बनते-बनते विकृत माहौल में बदल देने की कुचेष्टा की। इसी प्रकार १९८९ में जन्मभूमि मन्दिर का शिलान्यास करवाने वाली कांग्रेस आज अपने को दूध का धुला बताकर भा.ज.पा. को साम्प्रदायिक बता रही है। अगर ये अयोध्या पहुंचे रामभक्त कारसेवक उन्मादी होते तो क्या वहां की मस्जिदें बचती, क्या बाबरी मस्जिद बचती? यह सोच किधर इशारा करती है? इस पर स्वस्थ व राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से बहस हो। हमने तो पिछले ४० वर्षों के भारतीय इतिहास का आलोडन करते हुए यही पाया कि जब-जब भारत के बहुसंख्य समाज ने किसी बात पर उठकर अंगड़ाई ली, तो चाहे वह हिन्दी-भाषा का आन्दोलन हो, चाहे गौ हत्या बन्दी का आन्दोलन हो, चाहे काश्मीर समस्या का आग्रह हो, बूचडखाने और शराबखाने बन्द करने का आन्दोलन हो, आरक्षण का मुद्दा हो और अब रामजन्मभूमि का ज्वलन्त आन्दोलन हो, वह सदा नकारा गया है, साम्प्रदायिक कहकर दुत्कारा गया है। सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय-भावनाओं को धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देकर लांछित व प्रताडित किया गया है। अयोध्या के इस स्थल पर परम्परा और इतिहास की दृष्टि से ही नहीं अपितु पुरातत्व की दृष्टि से भी मन्दिर निर्माण के स्पष्ट चिह्न अंकित हैं। दूर न जाकर दिल्ली के महरौली (मिहिरालय) में खड़ी कुतुब मीनार व उसके पास के लोहे के गरुड स्तम्भ को देखें—जो आज भी इतिहास के झरोखे में तोड़-फोड़ की गवाही दे रहा है।

जैसे तथाकथित कुछ इतिहासकारों ने इतिहास के पन्नों पर यह अंकित कर देने की कुचेष्टा की कि—"आर्य (हिन्दू) लोग बाहर से आये थे।" ऐसे ही अयोध्या के सम्बन्ध में भी इतिहास और पुरातत्व को झुठलाकर यह सिद्ध करने का कुप्रयास किया गया है कि अयोध्या में राम हुए ही नहीं, वह उनकी जन्मभूमि थी ही नहीं, किन्तु अयोध्या

—क्रमशः

हरयाणा के नाम को बट्टा लगा रहे हैं डाक्टर स्वरूपसिंह

(हरीराम आर्य सभा-पुस्तकाध्यक्ष एवं प्रधान आर्यसमाज कारोली पो० नाहड, जिला रेवाड़ी)

पूर्व जनता दल सरकार के वरिष्ठ नेताओं की शिफारिश पर हरयाणा में जन्मे डाक्टर स्वरूपसिंह को केरल का राज्यपाल नियुक्त किया गया था। हरयाणा में डाक्टर स्वरूपसिंह के प्रतिद्वन्द्वी सन्त हरद्वारीलाल हरयाणा में डेढ आदमी को पढा-लिखा मानते थे। एक पूरा अपने आपको (हरद्वारीलाल) और आधा डा० स्वरूपसिंह को। संविधान के अनुसार कर्त्तव्यपालन और बुद्धि चतुराई के साथ जीवन-यापन, दोनों मिलाकर पूरा शिक्षित कहलाता है। राज्यपाल का पद प्राप्त करने के बाद डा० स्वरूपसिंह वास्तव में सन्त हरद्वारीलाल के विचारों की सार्थकता सिद्ध करने में लगे हैं। संवैधानिक कर्त्तव्य निर्वाह की अपेक्षा अंग्रेजी के प्रति उनके पूर्वाग्रह उन्हें पद की गरिमा से गिरा रहे हैं। उनका हिन्दी विरोध चाहे वे अपनी सुरक्षा के लिए कवच समझें वास्तव में राष्ट्रीय विकास की दिशा में घातक है,

दक्षिण भारत के हैदराबाद नगर से प्रकाशित होनेवाली एक मासिक विवरण पत्रिका के अक्तूबर १९९० के सम्पादकीय में डा० स्वरूपसिंह के हिन्दी विरोध की कटु आलोचना की गई है, जिसमें जिस ढंग से डा० स्वरूपसिंह ने अंग्रेजी का समर्थन किया है उसे केरल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में उनके उस समर्थन भाषण को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है।

डाक्टर स्वरूपसिंह ने अपने एक उद्घाटन भाषण में कहा है कि अंग्रेजी भाषा के बहिष्कार से सारे देश को बहुत बड़ा नुकसान होगा और राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का पतन हो जायेगा। उनकी भारत में अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजियत के बहिष्कार की जो लहर चल रही है उसके लिए डा० स्वरूपसिंह कहते हैं ईर्ष्या और द्वेष की भाववा है। डा० स्वरूपसिंह ने अपने उक्त उद्घाटन भाषण में हिन्दी के विरोध में अथवा अंग्रेजी के समर्थन में अनेक भ्रांत बातें कही हैं, जिनसे प्रभावित होकर सम्पादकीय में लिखा है—

सम्माननीय राज्यपाल का अंग्रेजी समर्थन सम्बन्धी वक्तव्य अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण एवं चिन्ताजनक है, परन्तु हम पूछना चाहते है कि सर्वोच्च राष्ट्राध्यक्ष के एक प्रतिनिधि के रूप में उनका यह वक्तव्य क्या संवैधानिक एवं राष्ट्रीय गरिमा के अनुकूल है ?

पत्रिका लिखती है, देश में केरल एक ऐसा प्रदेश है जहां राज्य सरकार और उसका प्रशासन, विश्वविद्यालय आदि संगठनों की प्रबुद्ध जनता और आम आदमी अंग्रेजी का मोह त्यागकर मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी को अधिकाधिक अपनाते जारहे हैं। केरल इस दृष्टि से एक आदर्श राज्य है, जिसके शिक्षामन्त्री के० चन्द्रशेखरन आवास मन्त्री लौमप्पन नेम्पाटन, विधान सभाध्यक्ष वर्कला वी० राधाकृष्णन आदि राजनैतिक नेताओं तथा शिक्षाविदों का स्पष्ट अभिमत है कि—

अंग्रेजी और अंग्रेजियत ने भारतीय संस्कृति को काफी नुकसान पहुंचाया है। इस भाषा (अंग्रेजी) को बरकरार रखने से और विनाशकारी परिणाम होंगे। आज जबकि समस्त देश अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजियत के अभिशाप के विनाशक, राष्ट्रघातक परिणामों से आगाह हो चुका है और मातृभाषा एवं राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए सक्षम राष्ट्रभाषा हिन्दी को आगे लाना चाहते हैं वहां हरयाणा का यह विचित्र विद्वान् सम्भवतः भूल रहा है कि कुछ वर्षों पूर्व ही हरयाणा के चालीस हजार नागरिकों ने हिन्दी भाषा के सम्मान के लिए सरदार प्रतापसिंह कैरों की जेलें भरदी थीं और अनेक ने जामे शहादत पिया था। उसी धर्मभूमि, कर्मभूमि का एक भ्रमित व्यक्ति हरयाणा के नाम को बट्टा लगा रहा है।

आर्यसमाज कच्चा बाजार, अम्बाला छावनी का चुनाव

प्रधान—श्रीमती शान्ति देवी, उप-प्रधान—श्रीमती लाजवन्ती देवी, मन्त्राणी—श्रीमती कस्तूरी देवी, उप-मन्त्राणी—श्रीमती यशोदा देवी, प्रबन्धक—श्री सतीश मित्तल, कोषाध्यक्ष—श्रीमती सुशीला देवी, पुस्तकालयाध्यक्ष—मधु टुडेजा।

शराब बेचने वाले होटल ढाबों को चेतावनी

मोहाली, ८ दिसम्बर (निस)। खाड़कू आजकल सुधार अभियान चला रहे हैं। गत रात फेज एक बेरियर के पास एक शराब के अहाते के ऊपर आकर कुछ नौजवानों ने सभी शराबियों को एकत्र करके शराब पीने के लिए खूब डांटा। शराबियों ने आगे मद्यपान न करने का आश्वासन देकर जान छुड़ाई। खाड़कू उन्हें चेतावनी देकर चले गए।

इसी तरह मोहाली के फेज दो में एक होटल पर छापा मारा गया। तलाशी भी ली गई। अज्ञात नौजवान होटल के सभी कमरों में गये और ग्राहकों से मीट व शराब से परहेज करने को कहा। वे जाते हुए कह गए कि हम ग्राहकों से नहीं होटल मालिकों से निपटेंगे।

—दैनिक ट्रिब्यून

(पृष्ठ २ का शेष)

- वासा, कण्टकारी १–१ तोला। दोनों का क्वाथ बनाकर, छानकर शहद मिलाकर पिलाने से कास ठीक हो जाती है।
- अदरक का रस शहद में मिलाकर चटाये कास को ठीक करेगा।
- मुलहटी, काकड़ासींगी, लाक्षा, मिश्री इन सबको बारीक पीसें, शहद के साथ चटाने से कास को दूर करता है।

बच्चों को एक विशेष प्रकार की कास होती है जिसे कुकर खांसी कहते हैं। इसके लिए अनुभूत योग है।

- सितोपलादि चूर्ण २ रत्ती, फिटकड़ीभस्म आधा रत्ती, सुहागाभस्म आधा रत्ती, बालरस १ रत्ती। सबको मिलाकर शहद के साथ देवें। ४ दिन में काली खांसी ठीक हो जायेगी।
- काकड़ासीगी, पीपल, अतीस, नागमोथा सबको बराबर मात्रा मात्रा में लेकर कूटकर कपड़छान करके रखें। १ रत्ती की शहद या बच्चे की माता के दूध के साथ दो बार देने से ३-४ दिन में काली खांसी ठीक हो जाती है।
- सर्दी के मौसम में बूढ़ों को प्रायः हाथ-पैरों में दर्द, जोड़ों में दर्द आदि उपद्रव होते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अच्छा भोजन करें।
- महायोगराज गुग्गुल २-२ गोली दूध के साथ लेने से ७ दिन में आमवात व सन्धिवात ठीक होता है।
- एरण्ड पाक—१ चम्मच प्रातः सायं दूध के साथ सेवन करावें।
- घृतकुमारी जिसे ग्वारपट्ठा भी कहते हैं, इसका प्रयोग बहुत ही उत्तम है। इसके गुद्दे को सूखे आटे में मिलाकर गौंद लेवें। छोटी-छोटी रोटियां बनाकर, सेककर इनका चूरमा-सा बना लें, घी व खाण्ड मिलाकर दूध के साथ खाने से सभी प्रकार के वातिक शूल ठीक होते हैं।
- दूध में ग्वारपट्ठे के गुद्दे को डालकर खोया निकाल लेवें, थोड़ा घी डालकर उसे भून लेवें, आवश्यकतानुसार घी व मीठा मिलाकर रोगी को खिलाएं बहुत लाभकारी है।

  इसी प्रकार हल्दीपाक व लहसुनपाक बनाया जाता है। ये दोनों योग खांसी, वायु रोग व कमजोरी के लिए अच्छे हैं।
- वातकुलान्तक रस १ गोली, आमवातारि रस २ गोली दूध के साथ दो बार लेने से वायु रोगों में बड़ा लाभ होता है।
- मालिस के लिए महानारायण तैल बहुत उपयोगी है।
- विषगर्भ तैल, प्रसारणी तैल व लाक्षादि तैल भी गुणकारी हैं।

शास्त्रों में अनेक औषधियां हैं जो रोगी के बल, आयु के अनुसार दी जाती हैं।

सर्दी में शरीर में रूक्षता आजाती है। अतः शरीर पर तैल मालिस करनी चाहिए। चेहरे को भी क्रीम व तैल, उबटन लगाने चाहिएं। बहुत से लोगों को हाथों व पैरों में बिवाई फट जाती हैं जिनमें बहुत पीड़ा होती है।

उनको रोजाना गर्म पानी से हाथ पैर धोने चाहिएं। पानी में थोड़ा नमक या सुहागा डाल सकते हैं। सोते समय थोड़ी वैसलीन लगाकर मल लेने से दर्द व बिवाई ठीक हो जाती हैं।

सर्दी के मौसम में गर्म वस्त्र धारण करें ताकि ठंड का दुष्प्रभाव न हो। स्नान के लिए बूढ़े व बच्चों तथा स्त्रियों को गर्म जल का प्रयोग करना चाहिए।

वेद में राजा का स्वरूप

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

जो कोई राजा सभाध्यक्ष होने के योग्य हो उसका हम लोग अभिषेक करें और उससे कहें कि :—

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि ।
इन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥
(यजु० अ० २० । मं० ३)

अर्थ—(देवस्य त्वा सवितुः) हे सभाध्यक्ष ! आप सब जगत् को प्रकाशित और उत्पन्न करने वाले परमेश्वर को (प्रसवे) सृष्टि में प्रजा पालन के लिए (अश्विनोर्बाहुभ्याम्) सूर्य चन्द्रमा के बल और वीर्य से (पूष्णो हस्ताभ्याम्) पुष्टि करने वाले प्राण को ग्रहण और दान की शक्ति रूप हाथों से आपको सभाध्यक्ष होने में स्वीकार करते हैं। (अश्विनोर्भैषज्येन) परमेश्वर कहता है कि पृथिवीस्थ जल और शुद्ध वायु इन औषधियों से दिन रात में सब रोगों से तुझको निवारण करके (तेज से) सत्यन्याय के प्रकाश (ब्रह्मवर्चसाय) ब्रह्म के ज्ञान और विद्या की वृद्धि के लिये तथा (इन्द्रस्येन्द्रियेण) परमैश्वर्य विज्ञान से (बलाय) उत्तम सेना (श्रियै) सर्वोत्तम लक्ष्मी और (यश से) सर्वोत्तम कीर्ति की प्राप्ति के लिये मैं तुम लोगों को सभा करने की आज्ञा देता हूं कि यह आज्ञा राजा और प्रजा के प्रबन्ध के अर्थ है। इससे सब मनुष्य लोग उसका यथावत् प्रचार करें।

कोऽसि कतमोऽसि कस्मै त्वा काय त्वा । सुश्लोक सुमङ्गल सत्यराजन् ॥ (यजु० अ० २० । मं० ४)

अर्थ—हे महाराजेश्वर ! आप (कोऽसि कतमोऽसि) सुखस्वरूप, अत्यन्त आनन्दकारक हैं, हम लोगों को भी सब आनन्द से युक्त कीजिये (सुश्लोक) हे सर्वोत्तम कीर्ति के देनेवाले ! तथा (सुमङ्गल) शोभन मङ्गलरूप आनन्द के करनेवाले जगदीश्वर ! (सत्यराजन्) सत्यस्वरूप और सत्य के प्रकाश करने वाले ! हम लोगों के राजा तथा सब सुखों के देनेवाले आप ही हैं। (कस्मै त्वा काय त्वा) उसी अत्यन्त सुख श्रेष्ठ विचार और आनन्द के लिये हम लोगों ने आपका शरण लिया है, क्योंकि इसी से हमको पूर्ण राज्य और सुख निर्वाह निस्सन्देह होगा ।

शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ।
राजा मे प्राणो अमृतँ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥
(यजु० २०।५)

अर्थ—सभाध्यक्ष, सभासद् और प्रजा को ऐसा निश्चय करना चाहिये कि—(शिरो मे श्रीः) श्री मेरा शिर स्थानी (यशो मुखम्) उत्तम कीर्ति मेरा मुखवत् (त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि) सत्यगुणों का प्रकाश मेरे केश और डाढ़ी मूछ के समान, तथा (राजा मे प्राणः) जो ईश्वर सबका आधार और जीवन हेतु है, वही प्राणप्रिय मेरा राजा (अमृतँ सम्राट्) अमृत स्वरूप जो ब्रह्म और मोक्ष सुख है, वही मेरा चक्रवर्ती राजा, तथा (चक्षुर्विराट्श्रोत्रम्) जो अनेक सत्य विद्याओं के प्रकाशयुक्त मेरा श्रोत्र है, वही मेरी आंख है।

बाहू मे बलमिन्द्रियँ हस्तौ मे कर्म वीर्यम् आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥
(यजु० २०।७)

अर्थ—(बाहू मे बलम्) जो पूर्ण बल है वही मेरी भुजा (इन्द्रियँ हस्तौ०) जो उत्तम कर्म और पराक्रम से युक्त इन्द्रिय और मन है वह मेरे हाथों के समान (आत्मा क्षत्रमुरो मम) जो राजधर्म, शौर्य, धैर्य और हृदय का ज्ञान है यही सब मेरे आत्मा के समान है ॥

पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमँसौ ग्रीवाश्च श्रोणी ।
ऊरूऽअरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः ॥
(यजु० २०।८)

अर्थ—(पृष्ठीर्मे राष्ट्रम्) जो उत्तम राज्य है, सो मेरी पीठ के समतुल्य (उदरमँसौ) जो राज्य-सेना और कोष है, वह मेरे हस्त का मूल और उदर के समान तथा (ग्रीवाश्च श्रोणी) जो प्रजा को सुख से भूषित और पुरुषार्थी करना है सो मेरे कण्ठ और श्रोणी अर्थात् नाभि के अधोभागस्थान के समतुल्य (ऊरू अरत्नी) जो प्रजा को व्यापार और गणित विद्या में निपुण करना है सो हो अरत्नी और ऊरू अंग के समान तथा (जानुनी) जो प्रजा और राजसभा का मेल रखना यह मेरी जानु के समान है। (विशो मेऽङ्गानि सर्वतः) जो इस प्रकार से प्रजा पालन में उत्तम कर्म करते है, ये सब मेरे अंगों के समान हैं।

क्षत्रं वै स्विष्टकृत् । क्षत्रं वै साम । साम्राज्यं वै साम ॥
(शत० का० १२। अ० ८। ब्रा० २)

राजसभा प्रबन्ध से जो यथावत् प्रजा का पालन किया जाता है, वही स्विष्टकृत् अर्थात् अच्छी प्रकार चाहे हुए सुख का करने वाला होता है। जो राजकर्म दुष्टों का नाश और श्रेष्ठों का पालन करनेवाला होता है, वही साम्राज्यकारी अर्थात् राजसुखकारक होता है। ❁

(पृष्ठ १ का शेष)

४— इस इमारत के आसपास की आबादी, उपासना-गृह तथा अन्य इमारतें यह साबित कर रही हैं कि यहां पर किसी मस्जिद का वजूद ही नहीं था।

५— इस इमारत में लगे पत्थर में खुले रूप में नक्श किया गया है कि "इस इमारत को मस्जिद में समान्तर करने से पूर्व यह एक ऐसा उपासना-गृह था, जहां पर श्री राम, सीता और हनुमान की पूजा की जाती थी। किसी पीर या मुर्शिद को खुश करने के लिये इस इमारत के ऊपरी हिस्सों में थोडा सा रूपान्तर करके अधूरा मस्जिद का रूप दिया गया है।"

६— इस इमारत में पाई जाने वाली दस्तकारियों और अन्य तमाम प्रमाणों से यह साफ जाहिर है कि बाबरी मस्जिद का नाम जिस इमारत को दिया गया था वह वास्तव में एक मन्दिर था, जो जबरदस्ती मस्जिद में रूपान्तरित किया गया है। इस्लामी शरीयत के प्रमाणित पुस्तकों में लिखा गया है कि जबरदस्ती कब्जा किए हुए इमारत को यदि मस्जिद में रूपान्तरित किया जाय तो ऐसे मस्जिद में नमाज पढ़ना निषेध है। ऐसी इमारत को किसी भी आधार पर मस्जिद की पवित्रता नहीं दी जाएगी।

(आलमगीरिया में मुजमरात व बहरुल शईक के हवाले से)

इस्लामी शरीयत के नियमों के अनुसार "बाबरी मस्जिद" का दावा जिस इमारत पर किया जा रहा है, वह मस्जिद बन ही नहीं सकती। यदि किसी के अन्दर यह हिम्मत है कि वह खुले मञ्च पर इस इमारत को मस्जिद के रूप में सिद्ध कर सके तो हमारी तरफ से उसे खुला चैलेन्ज है, कि वह आये और अपनी सचाई जनता के सामने रखे। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक साधारण मुस्लिम जनता को मजहब के नाम से भडकाना एक ऐसा अत्याचार है जिसको न खुदा, न रसूल और न ही नेक लोग कभी पसन्द करते हैं।

इस लेख में श्री अमरेश आर्य द्वारा इस प्रकार खुले मञ्च पर सार्वजनिक रूप से अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए किसी मुस्लिम नेता तथा विद्वान् का—चाहे वह इमाम अब्दुला बुखारी हों या सैयद शहाबुद्दीन—इस चैलेन्ज को स्वीकार न करना और बाद में इमाम बुखारी का यह कहना कि न्यायालय का निर्णय भी नहीं मानेंगे, पूरी हठधर्मी और दुराग्रह है।

इस लेख को उद्धृत करने के पश्चात् हम उसी अभ्यर्थना में छपे श्री सीताराम गोयल नई दिल्ली के 'रामजन्म भूमि की ऐतिहासिकता' लेख की भी इतनी सी चर्चा कर देना उचित समझते हैं कि उन्होंने अपने लेख में "दी रिपोर्ट आफ दी आर्कयोलोजीकल सर्वे आफ इण्डिया न्यू सीरीज वोल्यूम—१" की पृष्ठ संख्या-६-६८ पर अंकित की चर्चा की है तथा "दी इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, युनाइटेड प्राविन्सेज आफ आगरा एण्ड अवध वोल्यूम-१" में लिखे हुए "राम-कोट अथवा राम का किला" के कोने पर वह पवित्र स्थान है, जहां उस वीर नायक का जन्म हुआ था। उसका अधिकांश भाग बाबर द्वारा निर्मित मस्जिद ने घेर लिया है। पुराने मन्दिर के कुछ खण्डहर और एक छोटे से मञ्च का बाहरी भाग तथा मूर्तिगृह जन्म स्थान के रूप में विद्यमान है।" (पृष्ठ ३८८) यह वर्णन उद्धृत किया है। ❁

आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी जि० महेन्द्रगढ़ का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज का चतुर्थ वार्षिक महोत्सव दिनांक १७–१८ नवम्बर १९९० को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें आचार्य प्रद्युम्न जी आर्ष गुरुकुल खानपुर, वानप्रस्थी दलीप आर्य मुनि जी बीजोरावास, श्री लक्ष्मणसिंह जी 'निगोल' उत्तरप्रदेश, श्री रामरख जी भिवानी, श्री ईश्वरसिंह जी 'तूफान' आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, महाशय नन्दलाल जी डूमडोली, महाशय धर्मसिंह जी कारोली, महाशय सूरजभान जी खातोली जाट, महाशय सन्तलाल जी सिलारपुर महता, श्रीमती कौशल्या देवी कनीना, ब्र० मीनाकुमारी नारनौल, महाशय खेमचन्द, महाशय रामेश्वरदयाल, म० ताराचन्द आर्य प्रधान आर्यसमाज नारनौल, पं० कालूराम जी शर्मा नारनौल, महाशय प्यारेलाल आदि भजनोपदेशकों ने भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डली श्री ईश्वरसिंह जी 'तूफान' का विशेष प्रभाव रहा। इस उत्सव की सफलता के लिए आर्यसमाज नारनौल के अधिकारियों के अतिरिक्त राव मनभरदयाल बोहरा, म० छोटेलाल जी मूंडिया खेड़ा, डा० हरिदेव आर्य तथा स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का विशेष सहयोग रहा। यह उत्सव म० जयनारायण नारनौल एवं म० रामजीलाल मोहदीपुर की पुण्यस्मृति में मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि हरयाणा को २६१) दो सौ इकसठ रु० दिए गए।

—राधेश्याम आर्य, मन्त्री आर्यसमाज सिलारपुर, तोताहेड़ी

खरावड़ जिला में वेद प्रचार

आर्यसमाज खरावड़ जि० रोहतक में ३० नवम्बर से १ दिसम्बर तक स्वामी देवानन्द की भजन मण्डली ने भजनों द्वारा वेदप्रचार किया तथा ग्रामीण नर-नारियों को शराब, दहेज आदि की सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा की। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर अश्लील तथा गन्दे राग-रागनियों के प्रसारण की निन्दा की। सभा को वेद प्रचारार्थ १०१) रु० का दान तथा सर्वहितकारी के दो सदस्यों का शुल्क प्राप्त हुआ।

—दयाचन्द आर्य, मन्त्री

शुभ विवाह संस्कार पर गुरुकुल को दान

चौ० ओमप्रकाश पूर्व विधायक बेरी की सुपुत्री कु० नीलम का शुभ विवाह संस्कार श्री सन्दीप सुपुत्र चौ० रघुवीरसिंह के साथ दिनांक ८ दिसम्बर १९९० को आर्य नगर झज्जर में सम्पन्न हुआ। सभा के आदरी महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री ने यह विवाह संस्कार वैदिक रीति से एवं प्रभावशाली ढंग से करवाया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य नेता उपस्थित हुए। चौ० ओमप्रकाश ने सादगी का परिचय देते हुए कन्यादान में केवल एक-एक रुपया स्वीकार किया। महिलाओं ने भी आर्यसमाज की परम्परा के अनुसार मनोहर गीत गाये। वर तथा कन्या पक्ष की ओर से गुरुकुल झज्जर को १०१–१०१ रुपया दान दिया गया।

—केदारसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि. नं० २३२०/७३ रजि. नं० P.RTK[illegible] सवत् १,६६, ०८ ६०

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक ६ २८ दिसम्बर, १९९० वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

प्रभो ! हमें निर्भय बना दो

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम.ए. आर्यसमाज, गोरखपुर)

इन्द्र सुत्रामा स्ववां अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।।
ऋ० ६.४७.१२

(सुत्रामा) उत्तम रक्षक (स्ववान्) आत्मशक्ति से युक्त (सुमृडीकः) उत्तम सुख देने वाला (विश्ववेदाः) सर्वज्ञ (इन्द्रः) प्रभु (अवोभिः) अपनी रक्षाओं के साथ हमारा रक्षण करने वाला (भवतु) होवे (द्वेषः बाधतां) शत्रुओं का नाश करे, हमें (अभयं कृणोतु) अभय करे, और हम (सुवीर्यस्य पतयः स्याम) उत्तम वीर्य=सामर्थ्य के स्वामी होवें।

इस मन्त्र में निर्भय रहने के लिए कहा गया है कि परमात्मा सबका उत्तम रक्षक है और स्वकीय आत्मशक्ति से युक्त सर्वज्ञ है। अपनी रक्षक शक्ति से वह हमारी पूर्ण रक्षा करे, हमारे शत्रुओं को दूर करे, हमें पूर्ण रीति से दूर करे और उसका पराक्रम हमारे पास सदा जागृत रहे।

'भय' संहारक है और 'आशा' जीवनदायिनी है, अर्थात् भय शिथिल कर देने वाला विष है, आशा जीवनदायिका अमृत है। भय किंकर्तव्यविमूढ़ता, निराशा और मृत्यु को जन्म देता है; आशा प्रसन्नता, शक्ति और जीवन को। भय ने किसी की कोई सहायता नहीं की, आशा ने अनगिनत ऐसे व्यक्तियों के जीवन बचाये हैं जो मृत्यु के मुख में गए हुए से प्रतीत होते थे। पर यह भय का भूत है क्या ? भय का कोई अस्तित्व नहीं। कल्पना इसे जन्म देती है। यह एक छाया है, मस्तिष्क का एक रोग है। दुनियां में भय नामक कोई व्यक्ति नहीं, न कोई शक्ति ही है। यदि इसके जीवन-नाश के असर के सामने घुटने न टेके जायं, इसे अपने पर हावी होने में सहायता न की जाय तो किसी को कोई हानि पहुंचाने की इसमें कोई शक्ति नहीं।

भय मस्तिष्क का कीड़ा है। भयपूर्ण भावनाएं नाशक हैं। ये हमारे सामने अड़चनें पैदा करती हैं। भय पर विश्वास करना उतना ही हास्यास्पद है जैसे पक्षी का थपेड़ों से, असंस्कृत का भूत से या बच्चे का जू जू से।

अतः यह मंत्र कहता है कि भगवान् हमें भय से मुक्त करें। वास्तव में जिस शक्ति ने हमें जन्म दिया है, वह ऐश्वर्यशालिनी शक्ति प्रभु की है और वह सर्वद्रष्टा और ओ३म् अर्थात् अवतीति ओ३म् रक्षा करने वाला है। वह अपने ज्ञान और सर्वशक्तिमत्ता से हम सबकी रक्षा करता है।

भारतवर्ष के एक ग्राम कालड़ी की सच्ची घटना सुनिये। यह ग्राम स्वामी शंकराचार्य की जन्मभूमि है। जिन दिनों की यह घटना है उन दिनों वहां हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा रहा था। धड़ाधड़ लोग ईसाई बन रहे थे। यह देखकर हिन्दू-सुधारक दुःखी और चिन्तित हुए। उन्होंने एक संगठन बनाया। विरोधियों ने उसे भंग करने का प्रयत्न किया। एक महात्मा बुलाये गए। उनके प्रवचन से पूर्व विरोधियों ने ईंट पत्थर फेंकने शुरू किए। लोग कुछ घबराये। पर यह क्या ? महात्मा जी ने ईंट पत्थरों की वर्षा की परवाह किये बिना बोलना जारी रखा। उनके लिए ईंट पत्थर फूल बन गए। वे उन फूलों की वर्षा की बिना परवाह किये अपने शब्दों से अमृत वर्षा किए जा रहे थे। परन्तु पत्थरों की चोट से घायल महात्मा गिर पड़े। मूर्च्छित होने से पूर्व उन्होंने गर्जना की "अच्छा तो तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं यहीं रहूंगा और जब तक हिन्दूधर्म का उद्धार नहीं होगा यहां से हिलूंगा नहीं।" इसके बाद वे वहां रुक गए और धीरे धीरे वहां सब ईसाई बने हिन्दू पुनः हिन्दू धर्म में आगए।

इस वेद मन्त्र में भयों से बचने के लिए और अपने जीवन मार्ग को सफल बनाने के लिए बताया गया है कि लोगो ! तुम भयभीत मत होओ ! डरो मत ! क्योंकि सर्वज्ञ, सर्वद्रष्टा शक्तिशाली प्रभु हमारा उत्तम रक्षक है वह अपनी रक्षा शक्ति द्वारा सदा हमारी रक्षा कर रहा है। उसके प्रति विश्वास लाने से हम सर्वत्र अभय हो सकते हैं। उस प्रभु पर विश्वास से हममें असीम साहस की प्राप्ति होगी कि संसार की कोई भी कठिनाई हमारा मार्ग न रोक सकेगी। वास्तव में होता यह है कि प्रभु के प्रति विश्वास रखकर कोई भी कठिनाई हमारा मार्ग न रोक सकेगी। वास्तव में उस पर विश्वास से उसके जितना निकट होते जाते हैं, उतनी ही हमारी शक्तियां बढ़ती जाती हैं। यदि हम उस प्रभु के साथ एकता का अनुभव करेंगे तो हमारे जीवन में एक नया उत्साह, नया उल्लास और नई शक्ति आ जाएगी।

सद्विचार भी मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाते हैं। उस प्रभु के स्मरण से ही हमारा उससे एक विशेष सम्बन्ध हो जाता है, उस समय हमें कभी भी अकेलापन अनुभव नहीं होता। उस ईश्वर विश्वास का फल यह होता है कि वह 'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः' परमेश्वर अपनी सम्पूर्ण शक्तियों से हमारी रक्षा में लग जाता है। तब हमें कहां दुःख, कहां वेदना, कहां पीड़ा, कहां भय और कहां अविश्वास रह जाता है। उस समय हमारा जीवन भी सच्चा मानव जीवन हो जाता है जब हम प्रभु द्वारा निर्मित पृथ्वी के सुन्दर रूप को और भी सुन्दर बनाने में लगेंगे, मनुष्यता को ईश्वरत्व के पास ले जायेंगे। मनुष्य के अन्दर प्रभु का सुन्दर, शक्तिशाली और निष्कलंक रूप बसा है जिसके उसी स्वरूप को कायम रखना हमारा उद्देश्य है। हमारा कर्त्तव्य है। महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द का यही रूप था। बलिदानी लेखराम ईश्वर के अटूट विश्वासी थे।

याद रखिए भयपूर्ण विचार हमारी शक्ति का नाश करते हैं, रोगों को जन्म देते हैं, शक्ति का अपहरण करते हैं। जब सफलता आप से मिलना चाहती है तो उसे ढककर असफलता का दर्शन कराते हैं।

अतः निराशा और भय के काले बादलों पर आंख लड़ाना बन्द कीजिए और आशा तथा अपनी आत्मशक्ति को जगाइये। उषा का

(शेष पृष्ठ ४ पर)

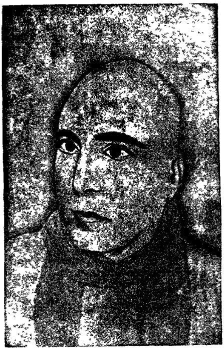
एक आग्नेय महापुरुष

आदर्श संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर-१५२११६

आर्यसमाज के इतिहास में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज एक आग्नेय महापुरुष हुए हैं। वह आजन्म ब्रह्मचारी थे इसलिए हम सबके लिए पूजनीय हैं। उन्होंने इस व्रत का पालन ऐसी कड़ाई से किया कि अपनी इस दृढता के कारण वे इतिहास में वर्णित ब्रह्मचारियों की कोटि में आते हैं। स्वामी जी वर्षों तक कभी साधु मण्डली में और कभी-कभी अकेले भी भ्रमण किया करते थे। भक्त लोग मिलने आते तो वैदिक सिद्धान्तों की चर्चा कर देते। वे एक उच्च कोटि के वैद्य व हकीम भी थे अतः दुखियों को औषधि भी बता देते थे।

एक बार भटिण्डा के निकट एक ग्राम के बाहर एक बड़े गुरुद्वारे में श्री महाराज का डेरा था। श्रद्धालु प्रातः सायं आते। कुछ उपदेश ग्रहण करते और रोगी अपने-अपने रोग के निवारण के लिए औषधि भी पूछ लेते। एक दिन जाद दोपहर श्री स्वामी जी ने एक स्त्री को गुरुद्वारे की ओर जाते देखा। गर्मियों के दिन थे। दूर से गर्जना करते हुए स्वामी जी ने कहा कि तू इस समय यहां क्या लेने आगई। यह



सुनकर भी वह स्त्री नहीं लौटी। गुरुद्वारा में पहुंची तो स्वामी जी ने कुछ डांट डपटकर कहा कि चली जा, तू कैसे इस समय आई। उसने कहा, मै औषधि लेने आई हूं। स्वामी जी ने डांटकर कहा यह औषधि लेने का कौन-सा समय है? इस पर उसने सच-सच बतलाया कि मैं तो कामुकता की मारी हूं। पुत्रप्राप्ति के लिए आपके पास आई हूं।

यह सुनकर बाल ब्रह्मचारी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने कहा, मेरे वैद्यक के ज्ञान मे न जाने कितने दुखियों का उपकार होता। अब तेरे कारण मैं आज से वैद्यक का परित्याग करता हूं परन्तु ब्रह्मचर्य व्रत को नही तोड़ सकता। इतिहास साक्षी है कि इसके पश्चात् महाराज ने महात्मा रामचन्द्र जी (तपोधन स्वामी सर्वानन्द जी महाराज) सहित बीसियों वैद्यों को आयुर्वेद व यूनानी चिकित्सा शास्त्र के ग्रंथ पढ़ाए परन्तु किसी रोगी को कभी भी औषधि नहीं बताई। हम उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहदें तो यह उचित ही है।

वेदाविद् स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ ने एक बार लिखा था कि साधु की रीति, नीति, उठना, बैठना, बोलना कैसे होना चाहिए इसको जैसा स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज जानते हैं, दूसरा कोई नहीं जानता। स्वामी जी महाराज इसे रहनी, सहनी, कहनी, बहनी (बैठना) कहा करते थे। पुराने आर्य संन्यासी स्वामी जी महाराज सरीखे साधुओं के संग रहकर संन्यासियों की रीति नीति सीखा करते थे। तब स्वामी सर्वानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, स्वामी वेदानन्द जी महाराज जैसे कई ऊंचे संन्यासी समाज में थे अब तो बाबू टाईप बाबों ने आर्यसमाज में संन्यास का वह आदर्श ही दूषित कर दिया है। कुछ एक के लिए संन्यासी वेष लीडरी का साधन है।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज अजमेर किसी सामाजिक कार्य के लिए गये। प्रो० घीसूलाल जी के साथ कहीं जा रहे थे। होली के दिन थे। किसी शरारती लड़के ने रंग की पिचकारी चलादी। महाराज के भगवे वस्त्र खराब होगये। आपने प्रो० घीसूलाल जी से तत्काल कहा कि वापिस चलिए। मैं साधु वेष पर कोई धब्बा नहीं सह सकता। ये वस्त्र अब मेरे काम के नहीं रहे। संयोग की बात तो यह रही कि महाराज के पास तब और कोई कपड़े ही न थे। यात्रा में उन्हीं को धोकर सुखाकर पहनते रहे। अब इन्हें धोया न जा सकता था। रंग ही ऐसा था।

कौपीन धारकर अपने डेरे पर बैठ गये। प्रो० घीसूलाल जी ने नये वस्त्र सिलवाये। स्वामी जी ने गेरू डालकर रंगे फिर पहनकर सामाजिक कार्यों के लिए निकले। इसीलिए हम उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। कितना है आदर्श का, मर्यादा का उन्हें ध्यान।

एक बार श्री पं० निरञ्जनदेव जी के साथ श्री महाराज किसी उत्सव पर जा रहे थे। एक ही गाड़ी में जाना था। प्लेटफार्म पर सूचना दी गई कि गाड़ी दूसरे प्लेटफार्म पर जावे तो समय लगना ही था। पण्डित जी ने कहा, "स्वामी जी यहीं से लाईने पार करले, वह सामने ही तो प्लेटफार्म है।"

स्वामी जी ने कहा, "यह ठीक है कि प्लेटफार्म सामने ही है परन्तु आप यहां से लाईनें पार करके जा सकते हैं, हम नहीं जा सकते। हम साधु हैं। हमें यह शोभा नही देता।"

इसी कारण हम उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम मानते हैं।

भारत छोड़ो आन्दोलन चल रहा था। आजाद हिन्द सेना भी सजाई जा चुकी थी। स्वाधीनता संघर्ष में संन्यासी कभी भी पीछे नहीं रहा था। रोहतक जिला के एक-एक ग्राम से एक-एक घर से लोग सेना में भर्ती थे। स्वामी जी महाराज ने श्री पं० जगदेवसिंह जी सिद्धांती, आचार्य भगवानदेव आदि भक्तों को आज्ञा दी कि ग्रामीण चौधरियों की एक बैठक बुलवायें। महाराज कमण्डल लेकर हरयाणा की यात्रा पर निकल पड़े। भापड़ौदा में एक ऐतिहासिक बैठक हुई।

श्री महाराज ने चौधरियों से कहा, "सेना में अपने जवानों से कह दो कि हम इस देश पर आक्रमण करनेवाले विदेशियों से लड़ने के लिए हैं। कांग्रेस के सत्याग्रहियों पर या आजाद हिन्द सेना के वीरों पर गोली न चलावें।" विद्रोह की यह घुट्टी हरयाणवी चौधरियों को साधु ने पिला दी। गुप्तचरों को सारी रिपोर्ट मिल गई। वायसराय के आदेश से अग्नेय ब्रह्मचारी बन्दी बना लिये गये। शाही किला लाहौर के एक Cell (काल कोठरी) में रखे गये। यातनाय दी जाने लगीं। पूछा गया कि बैठक में आए चौधरियों के नाम बताओ। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने कहा, "मैं कि का नाम नहीं जानता।"

क्या यह महा झूठ नहीं था?

जिस सत्यव्रतधारी ने जान पर खेलकर भी कभी असत्य भाषण नहीं किया था आज आर्यजाति का वह महामुनि वह ऋषिराज काला झूठ बोल रहा है। क्या पूज्य स्वामी जी को पं० जगदेवसिंह सिद्धांती का नाम नहीं पता था? पुराने आय जानते हैं कि श्री महाराज को तो अपने भक्तों के बच्चों के नाम भी याद रहते थे। भापड़ौदा, सांपला, नयाबांस, बेरी, फरमाना, मदीना, खरखौदा के ग्रामीण आर्यों के नाम

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ओ३म्



श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट

टंकारा, जिला राजकोट–३६३६५०–(गुजरात)

दिल्ली कार्यालय : आर्यसमाज, 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण

एवं

आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते ।

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव १२, १३, १४ फरवरी, १९९१ तदनुसार मंगल, बुध, गुरुवार को ऋषि जन्मस्थली टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है । इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा । देश-देशान्तर से पधारे ऋषिभक्त आर्य विद्वान् तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्याएं, टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी, आर्यवीर दल ध्रांगध्रा एवं अन्य संस्थाओं के युवक, समारोह में कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। अभ्यागतों के आवास, भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा, किन्तु बाहर से पधारने वाले सज्जन ऋतु अनुकूल अपने-अपने बिस्तर अवश्य साथ लायें ।

सम्प्रति टंकारा ट्रस्ट के अधीन निम्न कार्य चल रहे हैं :—

१. ऋषि जन्मगृह प्रबन्ध	५. अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
१. गो-संवर्धन केन्द्र (गोशाला)	६. दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र गृह
३. अतिथि गृह	७. आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र
4. वेद प्रचार	८. पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय

ऋषि जन्म स्थली टंकारा में अभी और भी अनेक विशेष करणीय कार्य हैं जैसे—ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार में लेना, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा जन्म स्थली को विश्वदर्शनीय बनाना। टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा अन्यान्य कठिनाइयों को दूर करने का प्रबल प्रबन्ध कर रहे हैं । इन सब कार्यों के लिए कम से कम छः सात लाख रुपयों की और आवश्यकता है ।

टंकारा की गोशाला में आजकल २५ से अधिक गायें हैं। इस गोशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है । परन्तु हर वर्ष इस गोशाला में घाटा हो जाता है। यह घाटा ऋषि-भक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

अतः आप से विनम्र निवेदन है कि आप इष्ट मित्रों सहित ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पधारिये और इस सारे कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए। यह दान राशि आप क्रास चेक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से टंकारा सहायक समिति अथवा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम से इसके दिल्ली कार्यालय, आर्यसाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

आप से सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से अपनी आर्यसमाज, अपनी शिक्षण संस्था अन्य संबंधित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनिए।

विशेष सूचना : टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि पर आय-कर की छूट है।

निवेदक:—

ओंकारनाथ	शान्तिप्रकाश बहल	रामनाथ सहगल
मैनेजिंग ट्रस्टी	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में—

गुरुकुल झज्जर चमका

(निज संवाददाता द्वारा)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्त्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में २४ दिसम्बर को "आर्यों का आदि देश" सम्मेलन के अन्तर्गत गुरुकुल झज्जर के स्नातक-विद्वानों श्री आचार्य दयानन्द जी एम. ए. (हिसार), श्री डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य (रोहतक), श्री आचार्य राजवीर जी शास्त्री (दिल्ली) ने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषणों से यह सिद्ध कर दिया कि आर्यों का आदि देश यही आर्यावर्त (भारत) है, गुरुकुल की कीर्ति को चार चांद लगा दिये। इसके साथ ही गुरुकुल के प्राचार्य श्री पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने अपने उद्बोधनपूर्ण भाषण में यह स्पष्ट किया कि हमें अपनी स्टेजों पर राजनेताओं की अपेक्षा आर्य संन्यासियों, वैदिक, विद्वानों व कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का ही सम्मान करना चाहिये।

इस सम्मेलम का सभापतित्व भारत सरकार के योजना आयोग के सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह जी ने किया। इनका अध्यक्षीय भाषण भी बड़ा मार्मिक व तथ्यपूर्ण रहा जिसमें उन्होंने यह सत्य उजागर किया कि ईरान के लोग भी आर्यों का आदिदेश आर्यावर्त (भारत) ही स्वीकारते हैं।

इस विशाल आर्य महासम्मेलन के जलूस में भी गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों का प्रदर्शन सभी के आकर्षण का विषय बना रहा एवं दर्शक गण मन्त्र-मुग्ध सा देखता रह जाता था।

महर्षि दयानन्द की शिक्षाएं ही देश में प्रकाश फैला सकती हैं

१४वें अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में प्रधानमंत्री का वक्तव्य

नई दिल्ली, २४ दिसम्बर (वार्ता) प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर और पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने आज कहा कि संकट की इस घड़ी में महर्षि दयानन्द की शिक्षायें देश में प्रकाश फैला सकती हैं और आर्यसमाज इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। श्री चन्द्रशेखर और श्री गांधी चार दिन के १४वें अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आज भाषण कर रहे थे जिसमें विश्व के कई देशों से आर्य प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर ने कहा कि आज इर्द-गिर्द अंधेरा दिखाई दे रहा है और धर्म के नाम पर एक भाई दूसरे भाई के खून का प्यासा हो रहा लगता है ऐसी स्थिति में स्वामी दयानन्द के दिखाये रास्ते पर चलकर ही मंजिल तक पहुंचा जा सकता है।

श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि राष्ट्र स्वामी दयानन्द का सदा ऋणी रहेगा क्योंकि उन्होंने देशवासियों में उस समय नयी चेतना फूंकी जब छुआ-छूत और अन्य कुरीतियों के कारण समाज में अस्थिरता फैल चुकी थी और धर्म लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने के बजाय पैरों की बेड़ियां बनकर रह गया था। इसके अलावा स्वामी दयानन्द ने महिला शिक्षा की तरफ भी विशेष ध्यान दिया।

उन्होंने कहा कि देश में सभी जगह घर-घर में यह कहा तो जाता है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं लेकिन विडंबना यह है कि मातृ शक्ति आज भी उपेक्षित है और यह बात हमारी कई समस्याओं का एक मूल कारण भी है। प्रधानमन्त्री ने कहा कि उन्होंने स्वयं वैदिक विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी और तब स्थिति यह थी कि आर्यसमाज को राष्ट्रीय आंदोलन का पर्यायवाची समझा जाता था। 'आइये फिर से ऐसे प्रयास करेंगे।'

श्री राजीव गांधी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने भाषण में कहा कि पंजाब में आज जो स्थिति है, उसका कारण यह है कि पंजाब में समस्या के समाधान के लिये एक वर्ष तक कुछ किया ही नहीं गया। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ने विदेशी हुकुमरानों को बाहर निकालने की राष्ट्रीय चुनौती जिस साहस और उत्साह के साथ स्वीकार की थी, आज उसी भावना से देश को बचाने की चुनौती को स्वीकार करना होगा।

प्रो. शेरसिंह को कृषि, सिंचाई व पंचायती राज

नई दिल्ली। योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोहन धारिया ने आयोग के सात पूर्णकालिक सदस्यों के बीच काम के विभाजन की आज घोषणा की।

प्रोफेसर एस.आर. हशीम को वित्तीय संसाधन, संभाव्यता योजना, विकास नीति, निरीक्षण, परियोजना, मूल्यांकन, अनुसंधान और सांख्यिकी से संबंधित काम सौंपा गया है।

प्रोफेसर शेरसिंह, कृषि, सिंचाई, पंचायती राज, सहकारिता, ग्रामीण और कुटीर उद्योग तथा खाद्य संसाधन से संबद्ध मसलों को देखेंगे जबकि सदस्य सचिव ए.एन. वर्मा को उद्योग, अन्तर्राष्ट्रीय, अर्थ व्यवस्था, दूरसंचार, परमाणु उर्जा, अन्तरिक्ष, योजना समन्वयन तथा प्रशासन का कामकाज सौंपा गया है।

सरकारी सूत्रों के अनुसार ग्रामीण विकास, रोजगार, पर्यावरण और वनीकरण, न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम, परिवहन तथा उर्जा से संबंधित मसलों को प्रोफेसर जी.एस. भल्ला देखेंगे।

श्रीमती ज्योत्स्ना बेन शाह को महिलाओं और बच्चों से संबंधित कामकाज, समाज कल्याण, स्वास्थ्य एवं पोषाहार, परिवार कल्याण, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी जातियों से सम्बद्ध मसलों का दायित्व सौंपा गया है।

प्रोफेसर सी.एन.आर. राव को विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा उच्च तकनीकी शिक्षा का काम दिया गया है। जबकि डा. डी. स्वामीनाथन को शिक्षा (मानव संसाधन विकास), शहरी विकास, आवास, जलापूर्ति, सूचना और संस्कृति सम्बन्धी मुद्दे सौंपे गये हैं।

३१ दिसम्बर को उनके जन्म-दिवस पर

वह बाल ब्रह्मचारी गुरुदेव थे हमारे

जिनको था वेद प्यारा, ईश्वर के थे जो प्यारे।
वह बाल ब्रह्मचारी, गुरुदेव थे हमारे॥
निबलों के थे सहारा, दलितों के दिल की बस्ती।
सब इन्द्रियों को जीता, ऐसी महान् हस्ती॥
मोही में जन्म पाया निर्मोही सन्त प्यारे
सबके भले की खातिर, दुःख कष्ट सब उठाये।
जब सामने वह आए, अंग्रेज लड़खड़ाये॥
स्वामी कौपीनधारी, राजों के मद उतारे.........
ऐ देश के जवानो, भूलो न यह कहानी।
कैसे तुम्हें सुनाएं, नयनों में बहता पानी॥
जिसने सहे कुल्हाड़े, स्वामी वह थे हमारे.........
ब्रह्मचारियों में नामी, ज्ञानी गुणी सुनामी।
वह एकता के हामी, भारत की शान स्वामी॥
ऋषियों के नामलेवा, वह देव के दुलारे.........

रचयिता—प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

(पृष्ठ १ का शेष)

दर्शन कीजिए। निराशापूर्ण विचार और भयपूर्ण आदतों का भार लादकर अपने सिर को न झुकाइये। गर्दन ऊंची कर सुन्दर भविष्य को देखिये। जिस शक्ति ने आपको जन्म दिया है वह अपने पांखरे में भरकर भय, शोक, दुःख और रोग से मुक्ति का रसायन लिए आपके चारों ओर, आपकी रक्षा के लिए उड़ रही है, तैर रही है। सर्वत्र आपकी रक्षा की चिन्ता कर रही है। फिर भय कहां, निराशा कहां, दुःख कहां? जरा आप मुस्कराइये और उस शक्ति का स्वागत कीजिए। यही तो प्रभु की शक्ति है। कवि के शब्दों में उससे कहें—

पहचान न पाया था जबतक तुमको हे मेरे जीवनधन।
तब तक जीवन दुःख स्रोत रहा, तब तक सारा जग था बन्धन।१।
बाधाओं पर थी बाधायें, वैरीदल पर था वैरीदल।
कठिनाई पर थी कठिनाई, दुर्जय था यह संसार सकल।२।
हे विश्वनाथ हे विश्वंभर, पर जब से शरण गही तेरी।
तब से तो मैं दिग्विजयी हूं, तब से संस्कृति दासी मेरी।३।
तेरे चरणों में जब मन को लगा चुका तो क्या डर है?
वांछित अब देने को उद्यत, आहा! अब दुनियाभर है।४।
मन को जीता, सब को जीता, तुमको पाया सबको पाया।
है मरना जीना खेल मुझे, अब तेरे रस्ते पर आया।५।
मुझको अब कोई कमी नहीं, है विश्वकोष मेरा ही धन।
मुझ में अब कोई कमी नहीं, हूं पूर्ण पूर्ण अब मैं भगवन्।६।

मुन्शी इन्द्रमणि

ले०—डा० भवानीलाल भारतीय

जो ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में आये :—

उर्दू फारसी तथा अरबी के प्रसिद्ध विद्वान् एवं इस्लाम के मर्मज्ञ मुन्शी इन्द्रमणि का जन्म १८६५ ई० में मुरादाबाद के एक अग्रवाल वैश्य परिवार में हुआ था। आपने इस्लाम के कुछ कट्टरपंथी लेखकों द्वारा हिन्दू धर्म की निंदा में लिखित पुस्तकों का प्रभावशाली उत्तर अनेक पुस्तकें लिखकर दिया था। इन पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है—औबेदुल्ला नामक किसी व्यक्ति ने १२७४ हिजरी में तुहफतुफ हिन्द नामक एक उर्दू पुस्तक लिखी। इसका उत्तर मुन्शी इन्द्रमणि ने उसी वर्ष में तुहफतुल इस्लाम लिखकर दिया। मौलवी सैयद महमूद हुसैन ने मुन्शी जी की उक्त पुस्तक के खण्डन में 'खिलअत् अल हनूद' फारसी भाषा में १२८१ हिजरी (१९२२ वि०) में लिखी। मुन्शी जी ने इसके उत्तर में पादाशे इस्लाम लिखी जो १९२५ वि० (१८६८ ई०) में प्रकाशित हुई। बरेली के एक अज्ञातनामा मुसलमान ने मसनवी असूले दीने हिन्दू लिखी जिसका उत्तर मुन्शी जी ने १८६६ ई० में असूले दीने अहमद लिखकर दिया। १८७३ ई० में पुनः एक अत्यन्त आपत्तिजनक पुस्तक तेगे फकीर बर गर्दने शरीर नामक प्रकाशित हुई। इसी प्रकार मुरादाबाद के दो लेखकों मौलवी अहमददीन तथा मौलवी कुतुब आलम ने क्रमशः 'एजाजे मुहम्मदी' तथा 'हदिया उल इस्लाम' लिखी। इनके उत्तर में मुन्शीजी ने तीन पुस्तकें लिखीं—(१) हमलए हिन्द तथा समसामे हिन्द १८६५ ई० में तथा (३) सौलते हिन्द १८६८ ई० में प्रकाशित हुईं।

स्वामी दयानन्द से मुन्शी इन्द्रमणि की प्रथम भेंट १८७३ ई० में अलीगढ़ में हुई थी। १८७६ में जब स्वामीजी मुरादाबाद आये तो मुन्शीजी पुनः उनसे मिले और उनके विचारों से प्रभावित हुए। स्वाजी ने भी मुन्शीजी की इस्लामविषयक जानकारी की उपयोगिता को समझा। यही कारण है कि जब शाहजहांपुर जिले के चांदापुर कस्बे में स्वामी दयानन्द का मौलवी मुहम्मद कासिम से शास्त्रार्थ हुआ तो उसमें मुन्शी इन्द्रमणि स्वामी जी के सहायक प्रवक्ता के रूप में उपस्थित रहे। १८७७ ई० के आरम्भ में जब लार्ड लिटन द्वारा आयोजित दरबार के अवसर पर स्वामी जी ने भारत के अनेक धार्मिक नेताओं की एक सभा दिल्ली में आमन्त्रित की, तो उसमें भी मुन्शीजी उपस्थित थे। स्वामीजी ने मौलवी मुहम्मद कासिम के नाम १५ अगस्त १८७८ को लिखे एक पत्र में यह स्वीकार किया है कि इस्लाम विषयक उनका ज्ञान मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी तथा मुन्शी इन्द्रमणि की अपेक्षा अधिक नहीं है। इस पंक्ति से स्वामीजी का मुन्शीजी के इस्लाम विषयक अध्ययन तथा उनकी धार्मिक निष्ठा के प्रति प्रशंसाभाव ही प्रकट होता है। १८७६ में जब स्वामीजी के मुरादाबाद आने पर आर्यसमाज की स्थापना हुई तो मुन्शी इन्द्रमणि उसके सभासद बने। यद्यपि मुन्शीजी अपने आपको स्वामी दयानन्द का अनुगामी मानते थे, किन्तु कई बातों में वे अपना भिन्नमत भी रखते थे। उन्होंने आर्य जाति में समान अभिवादन के रूप में मुसलमानों के सलाम वालेकुम और वालेकुम सलाम के ही अनुकरण पर 'परमात्मा जयति' और 'जयति परमात्मा' का प्रचलन करना चाहा किन्तु स्वामी दयानन्द आर्य शास्त्रों में वर्णित नमस्ते को आर्य जाति के समान अभिवादन के रूप में प्रचलित करने के इच्छुक थे। कुछ और भी छोटी-बड़ी बातों को लेकर मुन्शीजी अपने स्वतन्त्र विचार रखते थे।

जब मुन्शी इन्द्रमणि की हमलए हिन्द और समसामे हिन्द पुस्तकें निकलीं तो मुसलमानों ने १८८० ई० में उन पर अभियोग चलाया जिसके फलस्वरूप मुन्शीजी को मुरादाबाद के मैजिस्ट्रेट ने ५०० रु० के जुर्माने का दण्ड दिया। जब स्वामीजी को इस अभियोग का पता चला तो उन्होंने मुन्शीजी के बचाव के लिये सहायतार्थ धन के लिये एक अभ्यर्थना प्रकाशित कराई। स्वामीजी की इस अपील पर भारत के अनेक नगरों से पर्याप्त धन एकत्रित हुआ। जब अभियोग समाप्त हो गया तो मुन्शीजी ने चाहा कि यह सारा धन उन्हें ही दे दिया जाय, जबकि स्वामी जी चाहते थे कि मुन्शीजी के मुकदमे मे व्यय होने के पश्चात् जो धनराशि बची है उसे एक स्थायी कोष के रूप में रक्खा जाय जिससे कि भविष्य में भी किसी ऐसी परिस्थिति के उत्पन्न होने पर इस धन से सहायता ली जा सके। इसी बात को लेकर मुन्शीजी स्वामी से रुष्ट होगये और अन्ततः आर्यसमाज से भी अलग होगये। स्वामी दयानन्द ने मुन्शी इन्द्रमणि को अनुशासनभंग का दोषी पाया। फलतः उनकी अनुशंसा पर मुन्शीजी तथा उनके शिष्य जगन्नाथदास को आर्यसमाज मुरादाबाद के प्रधान तथा पुस्तकाध्यक्ष के पदों से पृथक् कर दिया। मुन्शीजी का अवशिष्ट जीवन आर्यसमाज से असहयोग में ही बीता। १९२१ ई० में उनका निधन हो गया।

आर्यसमाज की पद्धति पर लड़कियों को शिक्षा

करनाल से २८ मि. मी. दूर गांव मोर माजरा में शैक्षणिक कार्य में जुटी संस्था आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ने अल्प साधनों के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में मिसाल कायम की है। गुरुकुल में चल रही आठवीं और दसवीं कक्षाओं का परिणाम पिछले कई वर्षों से ९० प्रतिशत से ऊपर आ रहा है जबकि इसे सरकार की ओर से कोई सुविधा प्रदान नहीं की गई।

गुरुकुल में प्राइमरी से लेकर शास्त्री तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। गत वर्ष यहां आठवीं का परिणाम ९५ प्रतिशत, दसवीं का ९६ प्रतिशत तथा शास्त्री का परिणाम ९० प्रतिशत रहा है।

पिछले १७ वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में सेवा कर रही इस संस्था में धन की व्यवस्था करने के लिये काफी रोचक तरीका अपनाया जाता है। गांव के बड़े-बुजुर्गों के नेतृत्व में लोग विभिन्न टोलियों में गांव-गांव जाकर अनाज और धन एकत्रित करके लाते हैं जिससे गुरुकुल की विभिन्न आवश्यकतायें पूरी की जाती हैं।

यहां शिक्षा प्राप्त करनेवाली छात्राओं को छात्रावास में रहकर शिक्षा पूरी करनी होती है। छात्राओं से शिक्षा, भोजन एवं रहने के लिये प्रतिमाह ८० से १२५ रुपये तक लिये जाते हैं। लेकिन जो छात्राएं यह धनराशि नहीं दे पातीं उन्हें पूर्णतया निःशुल्क शिक्षा एवं रहने-खाने की सुविधा भी दी जाती है। इस समय गुरुकुल में कुल ४७५ छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं जिनमें से १२५ को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

गुरुकुल में आर्यसमाज के नियमों का पालन किया जाता है। गुरुकुल की २५ सदस्यों की एक प्रबन्धक समिति है जो प्रत्येक ३ वर्ष के पश्चात् सर्वसम्मति से अपना प्रधान चुनती है। गुरुकुल के मुख्य संरक्षक तेजिन्द्र पाल मान बताते हैं कि इस शैक्षणिक संस्था को प्रारम्भ करने का विचार गांव के बड़े-बुजुर्गों के मन में २५ वर्ष पूर्व आया था। प्रारम्भ में कुछ लोगों ने लड़कियों को छात्रावास में अकेले रखने का विरोध भी किया। लेकिन बाद में सब ठीक हो गया। अब यहां आस-पास के गांवों की ही नहीं बल्कि भिवानी, रोहतक और दिल्ली की छात्रायें भी शिक्षा पा रही हैं।

गुरुकुल में कुल १६ अध्यापिकायें हैं। उन्हें गुरुकुल के नियमों के मुताबिक छात्राओं के साथ ही रहना पड़ता है। इनमें से ५ जे. बी. टी. और शेष एम. ए. बी. एड. की शिक्षा प्राप्त हैं। विवाहित अध्यापिका का ५ वर्ष तक का बच्चा साथ रह सकता है। उसके पति को वहां रहने की इजाजत नहीं है। यहां कार्यरत मुख्य प्राध्यापिका संतोष देवी के अनुसार यहां प्रवेश परीक्षा पास करने के पश्चात् दिया जाता है।

ले०—विजय शर्मा

सर्वहितकारी की सराहना

सर्वहितकारी का गत अंक पढ़ा। इसमें प्रायः सभी लेख पाठकों के लिए बहुत उपयोगी हैं। विशेषकर डा० सोमवीर द्वारा लिखित ठण्ड से होनेवाले रोग तथा उनके उपचार बहुत ही लाभदायक हैं। वास्तव में सर्वहितकारी अपने नाम के अनुसार सभी का हितकारी है।

वजीरसिंह आर्य काठमण्डो रोहतक

संस्कृत विद्वानों तथा प्राच्य विद्याविदों का अद्भुत संगम

हर दो वर्ष के अंतराल में सम्पन्न होने वाला अखिल भारतीय प्राच्यविद्या परिषद् का ३५वां अधिवेशन पिछले माह स्वामी श्रद्धानंद द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भव्य प्रांगण में सम्पन्न हो गया। यद्यपि देश की वर्तमान अस्थिर हालत तथा बसों एवं रेलों के आवागमन में व्याप्त अनियमितताओं के कारण इस अधिवेशन में लगभग साढ़े सात सौ प्रतिनिधि ही पहुंच सके। (१९८९ के आरम्भ में विशाखापट्टनम में सम्पन्न ३४वें अधिवेशन में प्रतिनिधियों की संख्या १६०० थी)। किन्तु बंगाल, बिहार, आंध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र आदि सुदूरवर्ती प्रांतों के अतिरिक्त राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश आदि से आने वाले बहुसंख्यक प्रतिनिधि इस सम्मेलन के अखिल भारतीय रूप को प्रमाणित कर रहे थे। पंजाब तथा हरयाणा के प्रतिनिधि कम थे।

विगत वर्षों में इस सम्मेलन को लगातार नेतृत्व देनेवाले प्रो० आर० एन० दाण्डेकर, जो प्राच्य विद्या-परिषद् के प्राण समझे जाते हैं, इस बार उपस्थित नहीं थे, किन्तु इस अधिवेशन के अध्यक्ष तथा रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रो० रमारंजन मुखर्जी के प्राणवान् नेतृत्व ने संस्कृत के विद्वानों तथा पुरातन विद्याओं के अध्येता प्रतिनिधियों का समुचित मार्गदर्शन किया।

उद्घाटन समारम्भ कांगड़ी विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न हुआ। गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति तथा भूतपूर्व केन्द्रीय रक्षा राज्यमंत्री प्रोफेसर शेरसिंह ने जब प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० राजा रमन्ना को औपचारिक उद्घाटन के लिये आमंत्रित किया तो डा० रमन्ना ने यह कहकर श्रोताओं में हंसी की एक लहर पैदा कर दी कि दस दिन पूर्व वे खुद अपना रक्षा राज्यमंत्री का पद खो बैठे हैं। डा० रमन्ना ने आद्य शंकराचार्य के दार्शनिक चिंतन की व्याख्या करते हुए उसका आधुनिक विज्ञान से सामञ्जस्य सिद्ध किया। उद्घाटन समारोह में उस समय थोड़ा व्यवधान पैदा हो गया जब मध्य प्रदेश से आये कुछ प्रतिनिधियों ने प्राच्य विद्या परिषद् के महामंत्री प्रो० जोशी द्वारा अंग्रेजी में अपना प्रतिवेदन पढ़ने पर आपत्ति की। उनका आग्रह था कि सम्मेलन की कार्यवाही संस्कृत या हिन्दी में ही होनी चाहिये। आपत्तिकर्ताओं को यह समझाया गया कि प्राच्य विद्या परिषद् केवल संस्कृत के विद्वानों की ही सभा नहीं है। इसमें इस्लामिक अध्ययन, जैनमत, पारसी अध्ययन आदि के अतिरिक्त इतिहास, पुरातत्व तथा तकनीकी ज्ञान आदि विषयों का भी समावेश रहता है। अतः यह मनवाने में सम्मेलन के अधिकारी सफल होगये कि अंग्रेजी प्रयोग के विरोधी कम से कम डा० राजा रमन्ना तथा सम्मेलन के सभापति डा० रमारंजन मुखर्जी के भाषणों में कोई बाधा नहीं डालेंगे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने अपने स्वागत भाषण में कांगड़ी विश्वविद्यालय के विगत आचार्यों, उपाध्यायों तथा स्नातकों की संस्कृत सेवा पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा यह आशा प्रकट की कि गुरुकुल की इस पावन भूमि में आयोजित प्राच्य विद्या के पंडितों का यह सम्मेलन भारत के सांस्कृतिक वैभव को विश्वव्यापी बनाने में सफल होगा।

परिषद् के अध्यक्ष प्रो० मुखर्जी ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में वर्तमान परिस्थितियों में संस्कृत के पठनपाठन में उत्पन्न कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए शासन से अनुरोध किया कि यद्यपि १९८६ में स्वीकृत राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संस्कृत को महत्त्वपूर्ण स्थान देने की बात कही गयी है, किन्तु अभी तक इस बारे में बहुत कुछ करना शेष है। तथापि उन्होंने इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि पूना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संस्कृत के उच्चतर अध्ययन संस्थान, लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान जैसी संस्थाओं के माध्यम से बहुत सा कार्य किया जा रहा है।

उद्घाटन कार्यक्रम के पश्चात् सम्मेलन का कार्य वेद, दर्शन, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास जैसे लगभग एक दर्जन विभागीय सत्रों में विभक्त होकर सम्पन्न होता है। इन पृथक् विभागीय परिषदों में आगत प्रतिनिधि अपने शोधपत्रों, का वाचन करते हैं और उसके पश्चात् उन पर प्रश्नोत्तर भी होते हैं। किसी विभाग में तो शोधपत्रों की संख्या सौ से अधिक होती है। वैदिक सत्र की अध्यक्षता पं० जयदेव मिश्र ने की तथा संयोजन डा० सत्यव्रत राजेश ने किया। इस अवसर पर संस्कृत तथा प्राच्य विद्याओं में प्रकाशित हजारों ग्रंथों की एक विशाल प्रदर्शनी भी लगाई गयी। प्रतिनिधियों के मनोरंजन के लिये अभिज्ञान शाकुन्तल का अभिनय तथा संस्कृत कवि सम्मेलन आयोजित किये गये।

—डा० भवानीलाल भारतीय
(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

—※—

(पृष्ठ २ का शेष)

वे यदा-कदा अपनी कथाओं में लेते ही रहते थे। आज साधु सब नाम भूल गये। क्यों? किसी गृहस्थी को क्रूर सरकार यातनाएं न दे। इसी कारण हमने श्री महाराज को मर्यादा पुरुषोत्तम लिखा है। शाही किले में यातनायें देनेवालों ने पूछा क्या आपने उस समय चल रहे विश्वयुद्ध में अंग्रेजी सेनाओं की हार के लिए ये शब्द कहे थे?

लौहपुरुष, आग्नेय विभूति स्वामी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने कहा, "हां मैंने ये शब्द कहे थे।"

अपने ऊपर सब कष्ट सहन, झेलने को वे तत्पर थे। तभी तो हम उन्हें पुरुषोत्तम मानते हैं।

यद्यपि महाराज जी का जन्म एक कुलीन समृद्ध जाट परिवार में हुआ था परन्तु आपने कभी भी अपनी लेखनी व वाणी से अपने जन्म, कुल, परिवार, जाति-पांति, धन-सम्पदा की चर्चा न की। आर्यजाति पर विश्वनाथ प्रताप सिंह ने वज्रपात किया है। जाति-पांति का बखेड़ा बहुत गंदे ढंग से खड़ा किया है। आर्य मात्र को यह भूल जाना चाहिए कि हमारी जाति बिरादरी क्या है व क्या थी। अपने नाम के पीछे जाति-पाति सूचक शब्दों का प्रयोग एक घृणास्पद पाप मानकर सबको तजना होगा। श्री स्वामी जी इस संबंध में कितने निष्पक्ष थे इस सम्बन्ध में एक घटना है। एक बार कुछ जाट व कुछ अहीर भक्त महाराज के दरबार में बैठे थे। किसी ने एक विचित्र प्रश्न पूछ लिया, "स्वामी जी! जाट बड़े कि अहीर?"

स्वामी जी विनोदप्रिय बहुत थे। झट से उत्तर दिया कि रोहतक में जाट बड़े और रिवाड़ी में अहीर बड़े। प्रश्न करनेवाला यह उत्तर पाकर चकित रह गया। वह सोच रहा था कि देखें स्वामी जी पक्षपात करके जाटों को बड़ा कह सकते हैं या कुछ और उत्तर देते हैं।

लाहौर में दंगा हुआ। भाई परमानन्द जी महाराज व पूज्य श्री पं० चमूपति जी के मकान मुसलमानों की आबादी में थे। स्वामी जी ने दोनों महापुरुषों की रक्षा के लिए अपने शिष्यों को रक्षक का कार्य सौंपा। पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जैसे रणबांकुरे सदैव उनके संकेत मात्र पर जान पर खेलने को तैयार रहते थे। कर्फ्यू लगा हुआ था। टेढ़े-मेढ़े रास्तों से स्वामी जी महाराज सिद्धांती जी को श्री भाई परमानन्द जी के घर छोड़कर आए थे। ऐसे ही पं० चमूपति जी के घर किसी शिष्य की ड्यूटी लगाई। कर्फ्यू में साधु वेष में तो भीमकाय साधु दूर से पहचाना जा सकता था। गोली भी लग सकती थी परन्तु इस आग्नेय पुरुष को, इस मृत्युञ्जय को मृत्यु का क्या भय? उनके जन्म-दिवस पर भावभरित हृदय से हम उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

जिनका बलिदान दिवस १९ दिसम्बर को मनाया गया

क्रांतिकारियों के सम्राट्-आर्यवीर

अमर शहीद—पं० रामप्रसाद बिस्मिल

ले०—स्वतन्त्रता सेनानी डा० स्वरूप शर्मा जरनलिस्ट कुरुक्षेत्र

क्या ही लज्जत है कि रंग-रंग से यह आती है सदा।
दम न ले तलवार जब तक जान बिस्मिल में रहे॥

अमर शहीद पंडित रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में १९ दिसम्बर सन् १९२७ को सवेरे ६ बजे फांसी दी गई। आप स्नान संध्या करके सवेरे ५ बजे अपनी अंतिम इच्छा लिखने बैठ गये। आपने लिखा "कि मैं एक घण्टे के पश्चात् फांसी पर लटका दिया जाऊगा। यह तो सब उस सर्वशक्तिमान् परमपिता परमात्मा की लीला है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि मैं पुन: अपने प्यारे भारत में ही जन्म लूंगा और अपनी आहुति देश जब तक स्वतन्त्र न होगा दूंगा। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि वह सभी देशवासियों को शक्ति प्रदान करे ताकि वह परतन्त्रता की बेडियों को अति शीघ्र काट सके। मेरा पूर्ण विश्वास है कि बृटिश तानाशाही जल्दी समाप्त होकर रहेगी।"

आपने अपनी माता को लिखा "कि मेरी प्यारी मां आपका सुपुत्र आज भारत माता के चरणों में अपना बलिदान दे रहा है पर आपको गर्व होना चाहिए। आपने अपने नौजवान साथियों को सन्देश देते हुए लिखा कि "वह उन्हें भारत माता को स्वतन्त्र कराने के लिये अपनी जान निछावर करने के लिये आगे बढ़े।"

६ बजे फासीघर ले जाने के लिये जेल अधिकारी और कर्मचारी बिस्मिल साहब को ले जाने के लिये आ धमके। ३० वर्ष का यह नवयुक मुस्कराया और वन्दे मातरम् का नारा लगाया। वह गीता के ग्रंथ को बगल में दबाया और बाहर निकल आये। फांसी पर ले जाने के लिये नियम है कि वह फांसी के स्थान पर ले जाने से पहले दोनों हाथ पिछे बांध देते हैं और आंखों पर काला परदा डाल देते हैं परन्तु वीर बिस्मिल ने कहा कि वह यह दोनों कामों का विरोध करते हैं क्योंकि वह तो बाट देख रहे थे कि कब उन्हें बलिदान का अवसर प्रदान हो। वह वन्दे मातरम् और भारत माता का जय घोष करते हुए फांसी घर पहुंच गये। मौके पर मौजूद मजिस्ट्रेट ने बिस्मिल से उसकी अन्तिम इच्छा नियम अनुसार पूछी तो आपने कहा कि "अंग्रेजी तानाशाही का नाश हो।" मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि वह मुझे बार-बार भारत में जन्म दे ताकि मैं अपने देश की स्वतन्त्रता के लिये बार-बार अपना बलिदान दे सकूं। "एक हसरत दिल में बिस्मिल मिट जाने की है।" फांसी के तख्ते पर खड़े होकर आपने वेदों का प्रार्थना मन्त्र ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि—उच्चारण किया और फासी का फंदा गले में डालकर शहीद होगये।

अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल की लाश को जेल के फाटक पर उनके रिश्तेदारों और हजारों लोगों ने लेकर गोरखपुर शहर में भारी जलूस निकाला। एक भारी जनसभा में इस बहादुर शहीद को श्रद्धांजलि भेंट की गई। वह क्रान्तिकारी राष्ट्रकवि थे जिनकी जोशिली कविता से भारतीय नवयुवकों में देशभक्ति की भावना भरदी और उन्हें स्वतन्त्रता के लिये जान निछावर कर दी और बीस वर्ष के पश्चात् भारत आजाद होगया।

आपका दाह संस्कार आपकी इच्छानुसार वैदिक रीति से हुआ। उत्तरप्रदेश के एक नगर शाहजहांपुर में पं० मुरलीधर के घर रामप्रसाद का जन्म ११ संवत् १९५४ में हुआ। बाप स्टामफरोश थे इसलिये आपके पिता अपने बच्चे को केवल उर्दू हिन्दी ही पढ़ा सके। आप कुछ बड़े हुए तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ को पढा जिससे उन्हें देशभक्ति कूट-कूटकर भरदी। बिस्मिल साहब ने लिखा था कि उन्हें देश पर मर-मिटने की शिक्षा सत्यार्थप्रकाश से मिली। आपने लिखा है कि उनकी माता बड़ी देशभक्त थीं इसलिये देशभक्ति की भावना उन्हें अपनी माता जी से मिली। उनका सम्पर्क क्रान्तिकारियों से होगया और वह क्रान्तिकारी बन गये। उनकी माता ने उन्हें दो सौ रुपये देशभक्ति पर एक किताब छपवाने के लिये दिये। आपने किताब और एक पोस्टर छपवाया। अंग्रेजी सरकार ने उस पुस्तक और पोस्टर को जब्त कर लिया। इस सरकार ने बिस्मिल साहब की निगरानी आरम्भ करदी।

उत्तरप्रदेश में क्रान्तिकारी शचीन्द्र सानियाल ने क्रांतिकारी दल बनाया। जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल अपने साथियों अशफाक उल्ला खां, रोशनसिंह, प्रेम कृष्ण खन्ना सम्मिलित होगये। बिस्मिल साहब को अस्त्र-शस्त्र खरीदने का अनुभव था जिसके लिये धन की आवश्यकता थी। बिस्मिल साहब ने सरकारी खजाना लूटने की योजना बनाई योजना के अनुसार आपने साथियों के साथ सहारनपुर से लखनऊ जानेवाली गाड़ी पर काकोरी रेलवे स्टेशन पर रेल गाडी को रोककर रेलवे का खजाना लूट लिया। इस डकैती में केवल दस क्रांतिकारी सम्मिलित थे। कुछ दिनों के पश्चात् बिस्मिल और सैंकड़ों नवयुवकों को पकड़ लिया गया। १८ मास यह मुकदमा चलता रहा जिसमें बिस्मिल और उनके तीन साथियों को फांसी की सजा दी गई और कई नवयुवकों को लम्बी सजाए दी गईं। बिस्मिल साहब के बलिदान को कभी भूला नहीं जा सकता। हम उन्हें श्रद्धांजलि भेंट करते है।

पं० आशुरामजी आर्य का निधन

आर्यजगत् को यह जानकर दु:ख होगा कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् वेदों के उर्दू अनुवादक तथा विश्ववेद परिषद् चण्डीगढ के महामन्त्री पं० आशुराम आर्य का १० नवम्बर १९९० को पी. जी. आई. चण्डीगढ में हृदयाघात के कारण निधन होगया। वे ७७ वर्ष के थे। पं० आशुरामजी तीन दिन पूर्व ही अपनी इंग्लैण्ड में बसी पुत्रियों से मिलकर भारत लौटे थे। अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया गया। १९१३ में मुलतान जिले के खानगढ में जन्मे प० आशुराम आर्य देश विभाजन के पश्चात् अम्बाला तथा बाद में चण्डीगढ के निवासी बन गये। उन्होंने कुछ काल तक डी. ए. वी. स्कूल में अध्यापन किया तथा इसके बाद पौरोहित्य कर्म को स्वीकार किया। वे एक सफल कर्मकाण्डी पुरोहित थे और चण्डीगढ तथा समीपवर्ती नगरों में उन्हें संस्कारों, यज्ञों तथा कर्मकाण्डों के लिये आमंत्रित किया जाता था। विगत कुछ वर्षों से उन्होंने चारों वेदों का उर्दू में अनुवाद करने का बीड़ा उठाया था। तीन खण्डों में वे ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद के कुछ अंशों के उर्दू अनुवाद प्रकाशित भी कर चुके थे जिनका उर्दूभाषी वर्ग में स्वागत हुआ था। पं० आशुरामजी आर्यसमाज के लिये सर्वथा समर्पित रहे। ईश्वर उनको दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। उनकी अन्त्येष्टि में चण्डीगढ के अनेक प्रतिष्ठित पुरुष उपस्थित थे। —भवानीलाल भारतीय

आर्य लेखककोश का प्रकाशन शीघ्र

जिन महानुभावों ने आर्य लेखककोश के लिये अग्रिम शुल्क भेजा है उनसे तथा अन्य सभी बन्धुओं को सूचित किया जा रहा है कि कोश का मुद्रण कार्य गत अप्रैल से ही आरम्भ हो चुका है। छपाई वैदिक यन्त्रालय अजमेर में हो रही है और प्रूफ मैं स्वयं चण्डीगढ में मगाकर देखता हूं ताकि मुद्रण शुद्ध तथा त्रुटिरहित हो। तथापि इधर आरक्षण विरोधी आन्दोलनों के कारण डाक व्यवस्था गड़बड़ रही है अत: ग्रन्थ के तैयार होने में विलम्ब होना स्वाभाविक है। ग्रन्थ लगभग ५०० पृष्ठों का सुन्दर गेट अप युक्त तथा सजिल्द होगा। अग्रिम मूल्य मात्र १०० रु. ही है जिसमें डाकव्यय भी सम्मिलित है। अपना शुल्क आज ही भेज दें ताकि समय पर ग्रन्थ आपको भेजा जा सके।

निवेदक—डा० भवानीलाल भारतीय,
कोठी नं० ४१, सक्टर १४ ए०
चण्डीगढ—१६००१५.

सही उच्चारण कीजिए ! योगा नहीं, योग बोलिए !!

बातचीत के दौरान एक मित्र बोले—"आजकल मैं योगा कर रहा हूँ, बडा फायदा मालूम पड रहा है"। हम समझ तो गये थे पर अनजान बनकर बोले—यह योगा क्या होता है ? वे मित्र बड़ी हैरत से बोले—यह तुम पूछ रहे हो ? उस दिन तो विद्यालय के वार्षिक उत्सव पर घण्टे भर तक बड़े भाषण झाड़ रहे थे योगा और योगा के आसनों पर ! अच्छा-अच्छा ! हम ने मुस्करा कर कहा—तो तुम योग के बारे में कह रहे हो। भले आदमी, यह योगा क्यों बोल रहे हो ? योग नहीं बोल सकते ? अंग्रेजी में पढ़कर योगा सीखा है या विदेश से सीख कर आये हो ?

मित्र तो बेचारा सिटपिटा कर रह गया। पर यह हकीकत है कि कई लोग जो सिर्फ भारतीय ही नहीं बल्कि हिन्दीभाषी भी हैं वे भी विदेशियों की नकल करते हुए योग को योगा बोला करते हैं। योग को अंग्रेजी भाषा में YOG की जगह YOGA लिखा जाता है इसलिए इसका उच्चारण योग की जगह योगा किया जाता है। अंग्रेजियत ने भारत के अनेक लोगों और शहरों के नामों का उच्चारण अपने ढंग से किया जैसे वसु को बोस, ठाकुर को टैगोर, चाटुर्ज्या को चटर्जी, शिन्देल को सिन्धिया, अशोक को अशोका, जयकिशन को जैकसन, श्यामलाल को सेमूअल, राम को रामा, कृष्ण को कृष्णा तथा शहरों में मुंबई को बोम्बे, पुणे को पूना, वाराणसी को बनारस इत्यादि अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं पर जरा सोचिए कि गलत उच्चारण करना क्या अच्छी बात है ? अगर इसी तर्ज पर कमर को कमरा और सरल को सरला बोला जाये तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा या नहीं ?

प्राकृतिक चिकित्सा योग शिविर का भव्य उद्घाटन

जीन्द दिसम्बर २, १९९० ! आर्य वीर दल जीन्द की ओर से आयोजित किये जाने वाले इक्कीस दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा योग शिविर का भव्य उद्घाटन आर्यसमाज मन्दिर रामनगर जींद में २-१२-९० रविवार को सुबह ९-३० बजे डा० रामभक्त लांगायन एच.सी एस., एस.डी.एम. जीन्द के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय आर्यसमाजों के सदस्य, सदस्यायें तथा आमन्त्रित महानुभाव बड़ी संख्या में उपस्थित थे। यज्ञ, ईशभक्ति के भजन तथा वेदमन्त्र की व्याख्या के पश्चात् डा० रामाशीष जी मिश्र, प्राकृतिक चिकित्सक ने प्राकृतिक चिकित्सा का महत्त्व बताया तथा आर्यसमाज तथा आर्य वीरदल जो समाज सेवा कर रहे हैं उस पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। डा० लांगायन जी एस डी.एम. जीन्द ने शिविर का उद्घाटन दीप जलाकर किया तथा स्वास्थ्य की सुरक्षा तथा रोगों से बचाये रखने में ऐसे शिविरों के योगदान पर प्रकाश डाला। दानदाताओं ने मुक्तहस्त से दान दिया। नगर के प्रसिद्ध आर्य नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भू०पू० कोषाध्यक्ष मा० बद्री-प्रसाद जी आर्य ने समारोह की अध्यक्षता की।

—प्रो० ओमकुमार आर्य
आर्यसमाज जीन्द शहर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।